Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

112583

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल पुस्तकालय
26-2-87

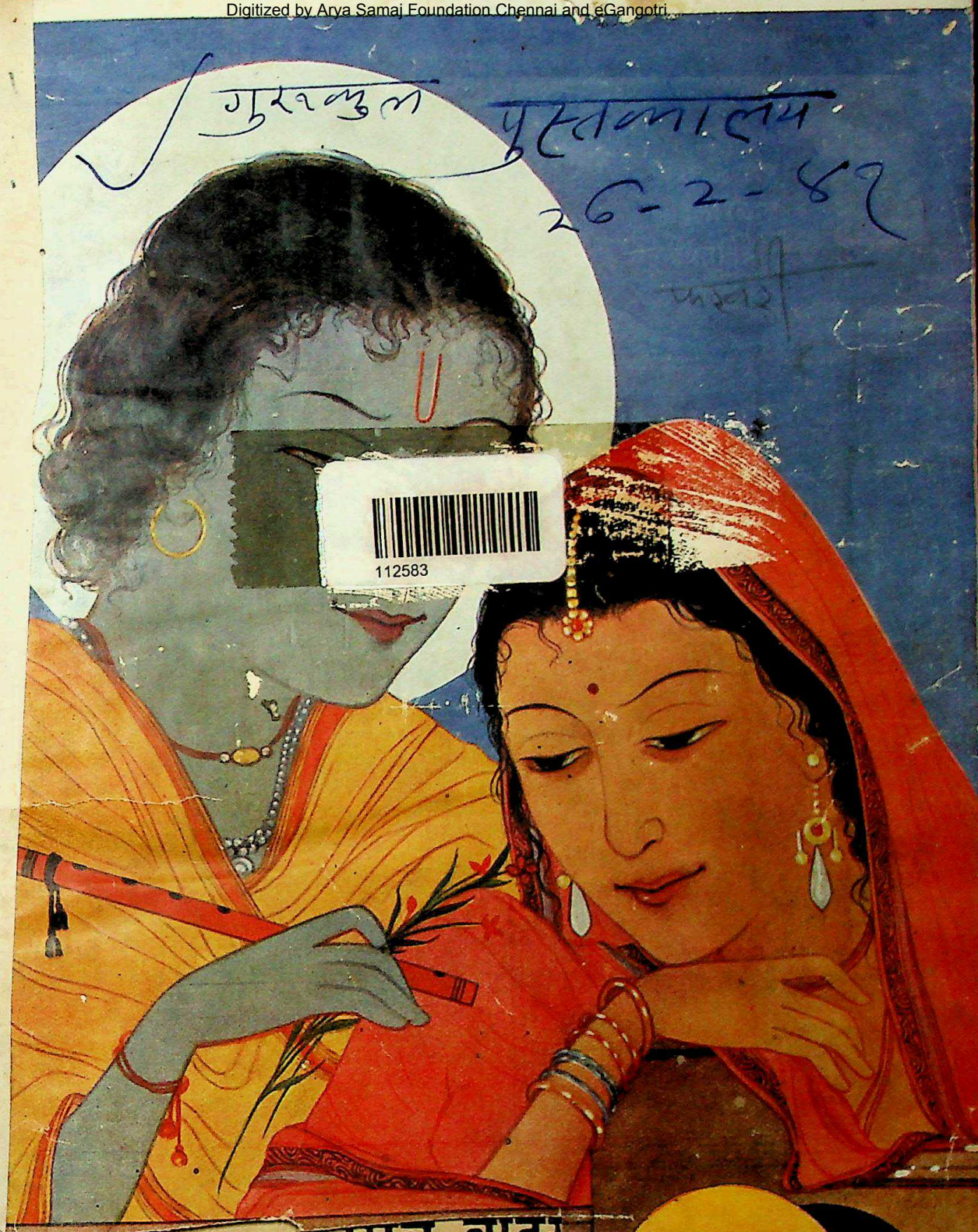

112583

मित्र ब्रादर

चीफ़ एजेंट्स यू० पी०, ल

प्रधान संपादक
श्रीदुलारेलाल
श्रीसावित्री

माघ, १९९७
FEBRUARY, 19

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यू० पी०, सी० पी०, बिहार आदि के शिक्षा-विभागों द्वारा स्वीकृत

बाल-विनोद

[बच्चों के लिये सर्वश्रेष्ठ मासिक पत्र]

का

कोई भी शानदार पिछला विशेषांक

वसंतांक

होलिकांक

बचपन-अंक

नटखट-अंक

जनवरी, १९४१ से ग्राहक बनकर मुफ़्त मँगा लें !

—:o:—

थोड़ी - सी ही प्रतियाँ बची हैं !
देर से ग्राहक बननेवालों को नहीं मिलेंगी !!
आज ही पत्र लिखकर अपनी रिज़र्व करा लें !!!

पिछले १९४० का नया

शानदार सेट

पृष्ठ - संख्या लगभग ४२०
चित्र - संख्या लगभग ३००
केवल ३ सेट बिक सकते हैं।

मूल्य ५)

मैनेजर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशाल पूँजी-शक्ति [illegible]

HL
SUDHA
RT-0672
1977
G.K.V.
Lib
HARDWAR

राष्ट्र

स्थापि

बॉम्बे

गत हिसाब से वार्षिक मुनाफ़ों की दर—

२३) रु० आजीवन और १८) रु० मियादी

प्रति १०००) रु० के बीमों पर

मित्र ब्रादर्स

चीफ़ एजेंट्स यू० पी०, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रीय बीमा-कंपनी

स्थापित सन् १८७१ ई०

बॉम्बे म्युचुअल

गत हिसाब से वार्षिक मुनाफ़ों की दर--

२३) रु० आजीवन और १८) रु० मियादी

प्रति १०००) रु० के बीमों पर

मित्र ब्रादर्स

चीफ़ एजेंट्स यू० पी०, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'सुधा' के नियम

['सुधा' के २ संस्करण निकलते हैं—(१) राजसंस्करण, (२) साधारण संस्करण]

मूल्य

'सुधा'के राजसंस्करण का डाक-व्यय-सहित वार्षिक मूल्य १२), छ मास का ६) और प्रति संख्या का १) है। साधारण संस्करण का वार्षिक ६), छ मास का ३) और एक प्रति का ॥) है। वी० पी० से मँगाने में ≡) रजिस्ट्री के और देने पड़ेंगे। इसलिये ग्राहकों को मनीऑर्डर से ही चंदा भेज देना चाहिए। भारत के बाहर सर्वत्र वार्षिक मूल्य वही है, जो भारत में। सुधा की यह भी एक विशेषता है—वर्षारंभ श्रावण (अगस्त) से होता है, लेकिन ग्राहक चाहे जिस संख्या से बन सकते हैं।

अप्राप्त संख्या

अगर कोई संख्या किसी ग्राहक के पास न पहुँचे, तो उसी महीने के अंत तक कार्यालय को सूचना मिलनी चाहिए। लेकिन हमें सूचना देने के पहले स्थानीय पोस्ट-ऑफ़िस में उसकी जाँच करके डाकख़ाने का दिया हुआ उत्तर सूचना के साथ आना चाहिए। उन्हें उस संख्या की दूसरी प्रति भेज दी जायगी। लेकिन उक्त तारीख़ के बाद सूचना मिलने से उस पर ध्यान नहीं दिया जायगा, और उस संख्या को ग्राहक १) या ॥) के टिकट भेजने पर ही पा सकेंगे।

पत्र-व्यवहार

उत्तर के लिये जवाबी कार्ड या टिकट आना चाहिए, अन्यथा पत्र का उत्तर विलंब से दिया जाना संभव है। पत्र के साथ ग्राहक-नंबर का भी उल्लेख होना चाहिए। मूल्य या ग्राहक होने की सूचना मैनेजर 'सुधा', नं० ३६, लाटूश रोड, लखनऊ के पते से आनी चाहिए।

पता

ग्राहक होते समय अपना नाम और पता बहुत साफ़ अक्षरों में लिखना चाहिए। दो-एक महीने के लिये पता बदलवाना हो, तो उसका प्रबंध डाक-घर से ही कर लेना ठीक होगा। अधिक दिन के लिये बदलवाना हो, तो संख्या निकलने के १५ दिन पेश्तर उसकी सूचना देनी चाहिए।

लेख आदि

लेख या कविता स्पष्ट अक्षरों में, काग़ज़ की एक ओर, संशोधन के लिये इधर-उधर जगह छोड़कर, लिखी होनी चाहिए। क्रमशः प्रकाशित होने लायक़ बड़े लेख संपूर्ण आने चाहिए। किसी लेख अथवा कविता के प्रकाशित करने या न करने का, उसे घटाने-बढ़ाने का तथा उसे लौटाने या न लौटाने का सारा अधिकार संपादक को है। जो नापसंद लेख संपादक लौटाना मंज़ूर करें, वे टिकट भेजने पर ही वापस किए जा सकते हैं। यदि लेखक लेना स्वीकार करते हैं, तो उपयोगी और उत्तम लेखों पर पुरस्कार भी दिया जाता है। सुधा में प्रकाशित पुरस्कृत लेखों और कविताओं को पुस्तकाकार या किसी संग्रह में निकालने का अधिकार सुधा के अध्यक्ष को रहेगा। अपुरस्कृत रचनाओं पर लेखकों और सुधा-अध्यक्ष, दोनों का अधिकार होगा। सचित्र लेखों के चित्रों का प्रबंध लेखकों को करना चाहिए। चित्र प्राप्त करने के लिये आवश्यक ख़र्च प्रकाशक देंगे।

लेख, कविता, समालोचना के लिये पुस्तकें और बदले के पत्र इस पते से भेजने चाहिए—

श्रीदुलारेलाल
गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय
कवि-कुटीर, लखनऊ

विज्ञापन

किसी महीने में विज्ञापन बंद करना या बदलवाना हो, तो एक महीने पहले सूचना देनी चाहिए।

अश्लील विज्ञापन नहीं छपते। छपाई पेशगी ली जाती है। विज्ञापन की दर नीचे प्रकाशित है—

साधारण १ पृष्ठ या २ कालम की छपाई २५) प्रतिमास
,, ½ ,, या १ ,, ,, ,, १५) ,, ,,
,, ¼ ,, या ½ ,, ,, ,, १०) ,, ,,
,, ⅛ ,, या ¼ ,, ,, ,, ६) ,, ,,

कम-से-कम आधा कालम विज्ञापन छपानेवालों को सुधा मुफ़्त मिलती है। विज्ञापनदाता द्वारा छपे हुए सुधा-साइज़ के ८ पृष्ठ के क्रोड़-पत्र की सिलाई, बटाई के चार्जेज़ ६०), ४ पृष्ठ के ३५) और २ पृष्ठ के २०) लिए जाते हैं।

सुधा में विज्ञापन छपाने से बड़ा लाभ रहता है। कारण, इसका प्रत्येक विज्ञापन लाखों पढ़े-लिखे, धनी-मानी और सभ्य स्त्री-पुरुषों की नज़रों से गुज़र जाता है। हिंदी की सर्वश्रेष्ठ पत्रिका होने के कारण इसका प्रचार उत्तरोत्तर बढ़ रहा है।

कृपया शीघ्र ही अपना विज्ञापन सुधा में छपाकर लाभ उठाइए। कम-से-कम एक बार परीक्षा तो कर लीजिए।

मैनेजर 'सुधा', लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

112583

लेख-सूची

पृष्ठ

१. प्रेमी (कविता)—[लेखक, श्रीयुत पं० उमाशंकर वाजपेयी एम्० ए० ... १

२. आकुल आह्वान (कविता)—[लेखक, श्रीसोहनलाल द्विवेदी एम्० ए०, एल्-एल्० बी० ... ... २

३. पृथ्वीराज-रासो के संबंध की नवीन चर्चा—[लेखक, महामहोपाध्याय, रायबहादुर, साहित्यवाचस्पति डॉ० गौरीशंकर हीराचंद ओझा डी० लिट्० ३

४. ख्याति का मूल्य (कहानी)—[लेखक, श्रीयुत 'अरुण' बी० ए० ... १७

५. जाति-पाँति या मृत्यु ?—[लेखक, श्रीयुत संतराम बी० ए० ... ... २६

६. आत्मार्पण (कविता)—[लेखक, श्रीयुत 'वचनेश'जी ३१

अमृतांजन

सर्वश्रेष्ठ दर्दनाशक भारतीय महौषध। सिर-दर्द, जलन, पीड़ा, फोड़ा, सूजन, कटना, घाव, वात, गठिया, कमर का दर्द, सरदी, खाँसी, कीड़ों का डंक आदि सभी वेदनाओं में 'अमृतांजन' आश्चर्य-जनक फ़ायदा करता है।

अमृतांजन लिमिटेड

बंबई, कलकत्ता, मदरास

पो० बॉक्स नं० ६,८२५

[ई० सन् १९०१ में स्थापित]

च्यवनप्राश-३) सेर अध्यक्ष मथुरा बाबू का मकरध्वज-४) भरी

शक्ति औषधालय-ढाका

आयुर्वेदिक संसार में युगांतर उपस्थित कर दिया है।

कारखाना और हेड ऑफ़िस ढाका, बंगाल। तार का पता 'शक्ति' ढाका।

कलकत्ता हेड ऑफ़िस—५२। १, बीडन स्ट्रीट। चौरंघी

बंगाल से बाहर की शाखाएँ—देहली, कानपुर, इलाहाबाद, पटना, भागलपुर, गया, बनारस, गोरखपुर, बुलानाला, जमशेदपुर, गौहाटी, तिनसुकिया (आसाम), मदरास, कटक, रंगून, वेसिन, मांडले (बरमा), बंबई, लखनऊ ब्रांच—२ श्रीराम रोड, लखनऊ आदि।

ब्रांच भारतवर्ष में सर्वत्र और बरमा में

मृतसंजीवनी सुरा (गवर्नमेंट से लाइसेंसशुदा) भारतवर्ष और बरमा में हमारी सभी ब्रांचों में मिलती है।

अध्यक्षगण—श्रीमथुरामोहन, लालमोहन, फणींद्रमोहन मुखोपाध्याय चक्रवर्ती।

प्रोप्राइटर्स—श्रीमथुरामोहन मुखोपाध्याय चक्रवर्ती बी०ए०

हिंदू केमिस्ट और फ़िज़िशियन

पत्र और मनीऑर्डर आदि मथुरा बाबू मैनेजिंग प्रोप्राइटर के नाम भेजिए

आयुर्वेदीय चिकित्सा-प्रणाली-संबलित सूचीपत्र मुफ़्त मिलता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

	पृष्ठ
७. अब्दुल्ला इस्माइल क़ाज़ी (सचित्र, संस्मरण)—[लेखक, श्रीयुत भवानी-दयाल संन्यासी	३२
८. सीसे की चवन्नी (हास्य)—[लेखक, श्रीयुत कालीचरण चटर्जी एम्० ए०	४३
९. किधर ? (कविता)—[लेखक, श्रीयुत तेजनारायण 'काक' एम्० ए०	४६
१०. हिंदी-नाटक—[लेखक, काव्यतीर्थ, साहित्य-शास्त्री, सांख्याचार्य प्रो० श्रीधर पंत एम्० ए०	५०

पेशाब के भयंकर दर्दों के लिये

एक नई और आश्चर्यजनक ईजाद ! याने—

सूज़ाक (गनोरिया) की हुक्मी दवा

डॉ० जसानी का

जगत्-विख्यात

'गोनोकिलर'

रजिस्टर्ड

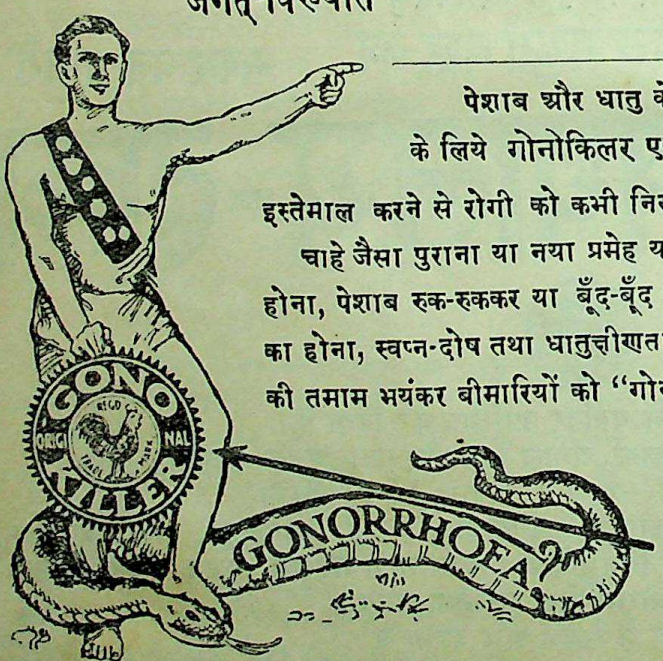

पेशाब और धातु के दर्दों को मार हटाने व निर्मूल करने के लिये गोनोकिलर एक ऐसी ही आश्चर्यजनक दवा है, जिसका इस्तेमाल करने से रोगी को कभी निराश होना ही नहीं पड़ता।

चाहे जैसा पुराना या नया प्रमेह या सूज़ाक, पेशाब में मवाद आना, जलन होना, पेशाब रुक-रुककर या बूँद-बूँद आना, मूत्राशय के अंदर घाव या सूजन का होना, स्वप्न-दोष तथा धातुक्षीणता और औरतों तथा मर्दों की इस क़िस्म की तमाम भयंकर बीमारियों को "गोनोकिलर" जड़ से नष्ट कर देता है।

नक़ली से सावधान !
ख़रीदने से पहले
दवा का नाम गोनोकिलर
और मुर्ग़ा-छाप सीलबंद
पैकेट देख लीजिए

मूल्य ५० गोलियों की शीशी का ३) रु०, वी० पी० डाक-व्यय आठ आना अलग।

एकमात्र बनानेवाले—डॉ० डी० एन्० जसानी S. L. गिरगाँव, बैंक रोड, बंबई नं० ४

लखनऊ-स्टाकिस्ट—किंग मेडिकल हॉल, अमीनाबाद-पार्क

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

	पृष्ठ
११. कौन ? (कहानी)—[लेखक, श्रीयुत सुरेंद्रदेव मिश्र	५६
१२. मध्य-भारत का एक और बौद्ध स्तूप (सचित्र)—[लेखक, ज्योतिषाचार्य श्रीयुत सूर्यनारायण व्यास ...	६०
१३. हिंदी में प्रमत्त रचना—[लेखक, श्रीयुत अध्यापक चेतराम शर्मा ...	६६
१४. चयन—[लेखकगण, क़ाज़ी अशरफ़-महमूद, श्रीअविनाशचंद्र पांडेय 'चातक' बी० ए०, साहित्याचार्य, श्रीबुद्धिसागर वर्मा विशारद, बी० ए०, एल्० टी०, श्रीयुत अमरनाथ शर्मा 'अमर', श्रीयुत गंगाधर जोशी और श्रीयुत प्रेमनाथ शांडिल्य ...	७३
१५. परिचय—[लेखक, श्रीयुत गोपाल व्यास एम्० ए०, साहित्यरत्न और साहित्याचार्य पं० जितेंद्र भारतीय शास्त्री ...	८२
१६. कुसुम...	८६
१७. धारा (संपादकीय विचार) ...	८७

इनाम १००)

सर्वार्थसिद्ध-यंत्र—जिसे आप चाहते हैं, वह पत्थर-हृदय क्यों न हो, इस यंत्र की अलौकिक शक्ति से आपसे मिलने चली आएगी। इसे धारण करने से व्यापार में लाभ, मुक़द्दमा, कुश्ती, लाटरी में जीत, परीक्षा में सफलता, नवग्रह की शांति, नौकरी की तरक़्क़ी और सौभाग्यवान् होते हैं। मूल्य ताँबा, १)), चाँदी २), सोना ५) कोकशास्त्र का मूल्य २॥)

पता—सर्वार्थसिद्ध-आश्रम, नं० २२, पो० मिरचाईगंज, पटना

हिंदी की सुंदर, सचित्र मासिक पत्रिका

वीणा

संपादक

श्रीकालिकाप्रसाद दीक्षित 'कुसुमाकर'

प्रकाशक

श्रीमध्य-भारत-हिंदी-साहित्य-समिति

डॉक्टर बाबूराम सक्सेना एम्० ए०, डी० लिट्०, प्रधान मंत्री हिंदी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग—'वीणा' हिंदी की उच्च कोटि की पत्रिका है, और मातृभाषा और साहित्य की प्रचुर सेवा कर रही है।

दीवाली के अवसर पर बृहद् विशेषांक

वार्षिक मूल्य ४) **ग्राम-सुधार-अंक** एक प्रति ।=)

नमूने का अंक फ्री नहीं भेजा जाता।

व्यवस्थापक—'वीणा', इंदौर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्र-सूची

पृष्ठ

(क) रंगीन

१. लक्ष्मीजी—[स्व० मियाँ वसंतसिंह जागीरदार की कृपा से प्राप्त ... १

(ख) सादे

२. श्रीसोहनलाल द्विवेदी एम्० ए०, एल्-एल्० बी० ... ... २

३. महामहोपाध्याय, रायबहादुर, साहित्य-वाचस्पति डॉ० गौरीशंकर हीराचंद ओझा डी० लिट्० ... ... ४

४. श्रीयुत संतराम बी० ए० ... २६

५. श्रीअब्दुल्ला इस्माइल क़ाज़ी ... ३२

६. १. श्रीअब्दुल्ला इस्माइल क़ाज़ी, २. श्रीमगनलाल, ३. श्रीमती गायत्रीदेवी और ४. श्रीभवानीदयाल संन्यासी (सामूहिक चित्र) ३५

७. १. सर रहीमतुल्ला चिनोइ, २. डॉ० टी० एम्० क़ाज़ीजी, ३. हिंदुस्थान-सरकार के शिक्षा, स्वास्थ्य और भूमि-विभाग के वज़ीर कुँवर सर जगदीशप्रसाद, ४. सर पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास, ५. स्वामी भवानीदयाल संन्यासी और ६. श्रीमावजी सेठ (सामूहिक चित्र) ३७

८. श्रीयुत कालीचरण चटर्जी एम्० ए० ४३

९. १. श्रीयुत नारायणरावजी सोटी एम्० ए०, २. स्व० श्रीकरंदीकरजी, ३. श्रीकरंदीकरजी के भानजे और ४. ज्योतिषाचार्य श्रीयुत सूर्यनारायण व्यास (सामूहिक चित्र) ६०

१०-१६. मध्य-भारत का एक और बौद्ध स्तूप-संबंधी ७ चित्र ६१-६४

१७. श्रीयुत अध्यापक चेतराम शर्मा ... ६६

१८. श्रीबुद्धिसागर वर्मा विशारद, बी० ए०, एल्० टी० ... ... ७७

१९. स्व० आचार्य पं० रामचंद्र शुक्ल ... ९४

२०. स्वर्गीया श्रीमती बच्चनकुमारी ... ९९

श्वेतकुष्ठ की अद्भुत दवा

प्रिय सज्जनो ! औरों की भाँति मैं अधिक प्रशंसा करना नहीं चाहता। यदि इसके ३ दिन के लेप से सफ़ेदी के दाग़ जड़ से आराम न हों, तो मूल्य वापस। जो चाहें ⅁ का टिकट भेजकर शर्त लिखा लें। मूल्य १।); गलित कुष्ठ एक माह में आराम। मूल्य ४)

बवासीर १५ दिन में आराम। मूल्य २)

बाल काला तैल—इस तैल से बाल का पकना रुककर पका बाल जड़ से काला पैदा होता है। यदि स्थायी काला नरहे। तो दूना दाम वापस की शर्त। बाल कम पका हो १।), चौथाई से अधिक ३), कुल पका हो, तो ४) का तैल मँगा लें।

पता—हितैषी औषधालय, नं० ७७, हब्बीपुर, पो० एकंगरसराय (पटना), इंडिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिरीज़ का प्रकाशन
पहली जनवरी से आरम्भ

हमारी प्रथम योजना १०० पुस्तकें प्रतिवर्ष के हिसाब से ५ वर्ष में ५०० पुस्तकें निकालने की है। ये पुस्तकें सभी मुख्य-मुख्य विषयों पर होंगी और इनसे एक सुन्दर

घरेलू-पुस्तकालय

बन जायगा। प्रत्येक पुस्तक की पृष्ठ-संख्या २००-२५०, गेट-अप सुन्दर और मूल्य आठ आना होगा।

ग्राहक बनने के नियम

प्रत्येक पाठक (क) सिरीज़ की कुल पुस्तकों के लिए, (ख) कुछ विभागों की कुल पुस्तकों के लिए या (ग) चुनी हुई किन्हीं २० पुस्तकों के लिए ग्राहक बन सकता है।

पेशगी चंदा १७ है।

२० पुस्तकें मिल जाने के बाद यह फिर ३ जमा होगा। पोस्टेज-पैकिंग माफ़ रहेगा। चुनने के लिए पूरी पुस्तकों की सूची फ़ार्म भर कर आने पर भेज दी जायगी।

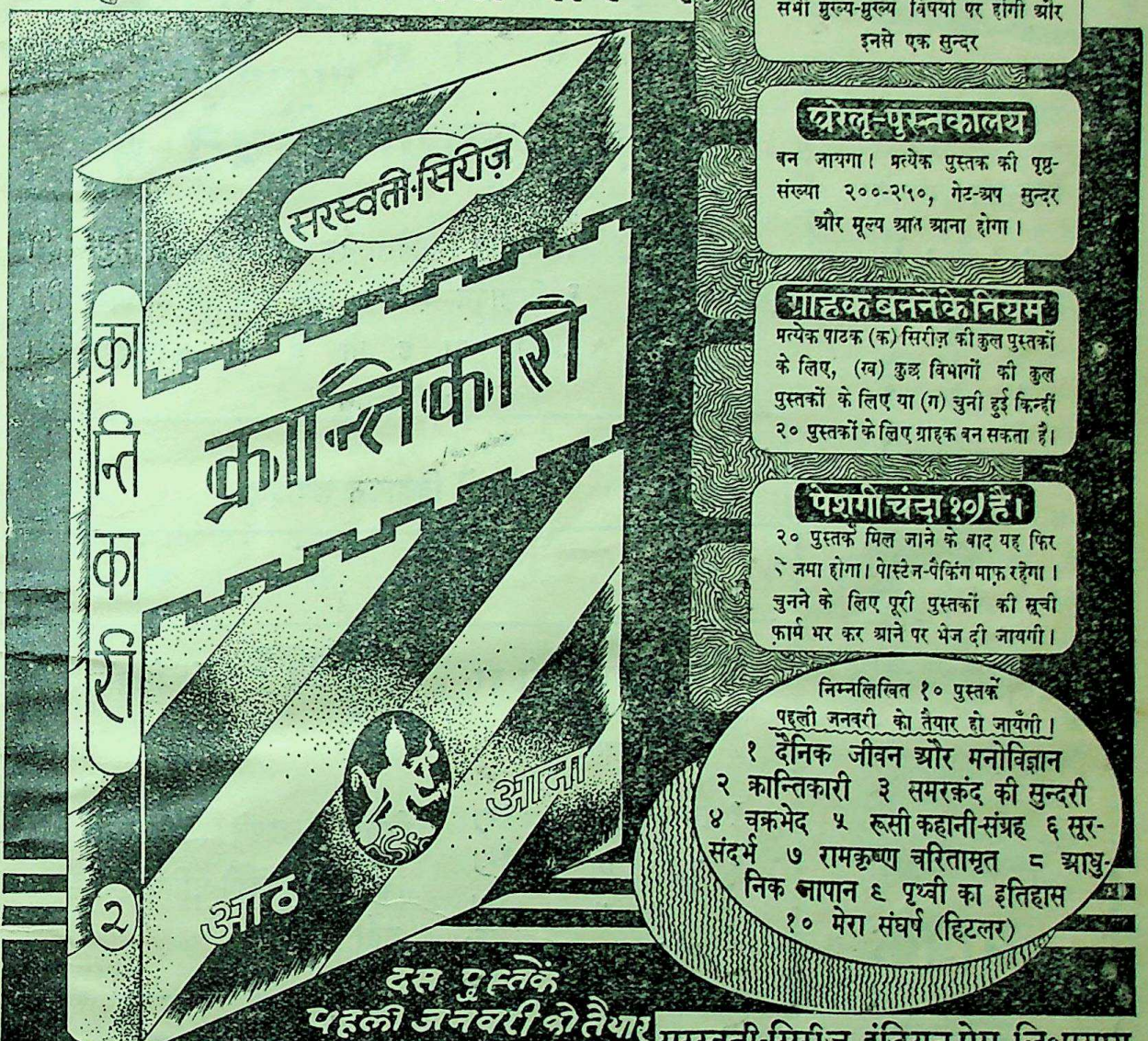

निम्नलिखित १० पुस्तकें पहली जनवरी को तैयार हो जायँगी।

१ दैनिक जीवन और मनोविज्ञान २ क्रान्तिकारी ३ समरकंद की सुन्दरी ४ चक्रभेद ५ रूसी कहानी-संग्रह ६ सूर-संदर्भ ७ रामकृष्ण चरितामृत ८ आधुनिक जापान ९ पृथ्वी का इतिहास १० मेरा संघर्ष (हिटलर)

दस पुस्तकें पहली जनवरी को तैयार

५०० पुस्तकें निम्न प्रकार से १० विभागों में निकलेंगीं—

विचारधारा ५०	विश्व उपन्यास ५०	आधुनिक उपन्यास और नाटक ५०
कहानी-संग्रह ५०	रहस्य-रोमांच १००	ऐतिहासिक विचित्र कथा ५०
विज्ञान ३०	जीवनचरित्र २०	हिन्दी-साहित्य ६०
	धर्मग्रन्थ ५०	

सरस्वती-सिरीज़, इंडियन प्रेस, लि०, प्रयाग

मेरा नाम ___ पूरी सिरीज़ के / विभाग के / २० पुस्तकों के ___ ग्राहकों में लिख लीजिए।

चन्दा ___ वी० पी० भेजकर वसूल कर लीजिए। / मनीआर्डर से भेज रहा हूँ।

नाम _____

पता _____

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यापार की चाभी
विज्ञापन छपाना
: : है : :

व्यापार की मंदी होने पर भी

१. ठीक-ठीक लिखे हुए
२. उपयुक्त माध्यम में दिए गए
३. सुंदरता से छपे हुए

विज्ञापन

हमेशा रुपया खींचते हैं

सुधा

१. में दक्ष, मनोवैज्ञानिक विज्ञापन-लेखक नियुक्त हैं।
२. विज्ञापन देने के लिये सर्वोत्तम माध्यम है।
३. की टा इ पो ग्रै फ़ी कला-पूर्ण है।

इसीलिये

सुधा में विज्ञापन छपाइए

आपके लाभ की बात

साधारण विज्ञापन की दर सुधा में जितने

प्रतिमास

१ पृष्ठ की छपाई	२५)
½ ,, ,, ,,	१५)
¼ ,, ,, ,,	१०)
⅛ ,, ,, ,,	६)

विज्ञापन छपते हैं, उतने किसी भी हिंदी-पत्रिका में नहीं छपते !

मैनेजर 'सुधा'
[विज्ञापन-विभाग]
नं० ३६, लाटूश रोड, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृथ्वीराज-रासो के संबंध की नवीन चर्चा

(संख्या १)

[महामहोपाध्याय, रायबहादुर, साहित्यवाचस्पति डॉ० गौरीशंकर हीराचंद ओझा डी० लिट्०]

'पृथ्वीराज-रासो' चंद बरदाई का बनाया हुआ माना जाता है। उसका परिमाण १,०५,००० (अनुष्टुप् छंद) होना लगभग दो सौ वर्ष पूर्व होनेवाले चंद के ही वंशधर यदुनाथ-रचित 'वृत्तविलास' में मिलता है ❀। संभव है, अन्य ग्रंथों के समान 'पृथ्वीराज-रासो' में पीछे से प्रक्षिप्त अंश मिला दिया गया हो, किंतु जिस स्थिति में इस समय रासो मिलता है, और जिसे काशी की नागरी-प्रचारिणी सभा ने प्रकाशित किया है, अभी तो वही 'पृथ्वीराज-रासो' माना जाता है। उसमें कौन-सा अंश प्रक्षिप्त है, और कौन-सा मूल, इसका निर्णय अभी तक नहीं हो सका।

उदयपुर के महारावल समरसिंह का विवाह अंतिम हिंदू-सम्राट् पृथ्वीराज की बहन पृथाबाई से होने और पृथ्वीराज के साथ रहकर शहाबुद्दीन ग़ोरी के मुक़ाबिले में उस (समरसिंह) के काम आने की बात जो रासो में मिलती है, वही रासो के उल्लेख के साथ मेवाड़ के महाराणा राजसिंह (प्रथम) के समय, वि० सं० १७३२ (ई० स० १६७६) में, बने हुए 'राजप्रशस्ति-महाकाव्य' में भी अंकित है †। यह काव्य चौबीस सर्गों में समाप्त हुआ है, और बड़ी-बड़ी पच्चीस शिलाओं पर खुदा हुआ उक्त महाराणा के बनवाए हुए राजसमुद्र-तालाब के बाँध पर पच्चीस बड़े-बड़े ताक़ों में लगा है। उक्त काव्य से यह तो निश्चित है कि वि० सं० १७३२ (ई० स० १६७६) के आस-पास 'पृथ्वीराज-रासो' की जो प्रति उपलब्ध थी, उसमें समरसिंह के मारे जाने की कथा विद्यमान थी, और ऐसा ही राजपूताने में माना जाता है।

पृथ्वीराज का देहांत वि० सं० १२४६ (ई० स० ११९२) में हुआ, और समरसिंह के अब तक आठ शिला-लेख मिल चुके हैं, जो वि० सं० १३३० से १३५८ ❀ (ई० स० १२७३ से १३०२) तक के हैं। इन शिला-लेखों से यह निश्चित है कि पृथ्वीराज की मृत्यु से १०९ वर्ष पीछे तक महारावल समरसिंह मौजूद थे।

रासो में अधिकतर ऐसी अनर्गल और कल्पित बातें तथा कल्पित संवत् हैं, जो प्राचीन शोध की कसौटी पर शुद्ध नहीं ठहरते। इन्हीं बातों से

❀ यदुनाथ-कृत 'वृत्तविलास'—नागरी-प्रचारिणी पत्रिका (नवीन संस्करण), भाग ५, पृष्ठ १९७।

† ततः समरसिंहाख्यः पृथ्वीराजस्य भूपतेः;
पृथाख्यायां भगिन्यास्तु पतिरित्यतिहार्दतः ॥ २४ ॥
गोरीसाहिबदीनेन गज्जनीशेन संगरं;
कुर्वतोऽखर्वगर्वस्य महासामन्तशोभिनः ॥ २५ ॥
दिल्लीश्वरस्य चोहाननाथस्यास्य सहायकृत्;
सद्वादशसहस्रैः स्ववीराणां सहितो रणे ॥ २६ ॥
बध्वा गोरीपतिं दैवात्स्वर्यातः सूर्यबिम्बभित्;
भाषारासापुस्तकेऽस्य युद्धस्योक्तोऽस्ति विस्तरः ॥२७॥
(तृतीय सर्ग; मूल-लेख की छाप से)

❀ इन लेखों के लिये देखो मेरा उदयपुर-राज्य का इतिहास; जिल्द १, पृष्ठ १७३-७९।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शोधक विद्वानों का रासो पर से विश्वास उठता गया, और कर्नल टॉड को भी, जो राजपूताने का पहला इतिहास-लेखक था, रासो में उल्लिखित संवतों पर विश्वास न हुआ, और उसने संदेह प्रकट कर कहीं-कहीं उन्हें ठीक करने का प्रयत्न किया। इसके पीछे उदयपुर के महामहोपाध्याय कविराजा श्यामलदास ने रासो की नवीनता पर एक विस्तृत लेख लिखकर बंगाल एशियाटिक सोसाइटी के ई० स० १८८६ के जर्नल (जिल्द ५५, खंड १, पृष्ठ १-६५) में छपवाया, और उसी आशय का एक हिंदी-लेख, भी 'पृथ्वीराज-रहस्य की नवीनता'-शीर्षक, पुस्तकाकार प्रकाशित किया, जिससे साक्षरवर्ग का ध्यान इधर आकर्षित हुआ। तदनंतर ई० स० १८९९ में उदयपुर - निवासी बाबू रामनारायण दूगड़ ने पृथ्वीराज-रासो के सारांश-रूप में 'पृथ्वीराज-चरित्र'-नामक पुस्तक लिखकर उसकी विस्तृत भूमिका में रासो की त्रुटियाँ बतलाईं।

महामहोपाध्याय, रायबहादुर, साहित्यवाचस्पति
डॉ० गौरीशंकर हीराचंद ओझा डी० लिट्०

कविराजा श्यामलदास की 'पृथ्वीराज-रहस्य की नवीनता'-शीर्षक पुस्तक के उत्तर में पं० मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या ने चौहानों के इतिहास में टॉड का बतलाया हुआ सौ वर्ष का अंतर देखकर, एक नए 'भटायत'-संवत् की कल्पना कर, वि० सं० १९४४ में, 'पृथ्वीराज-रासो की प्रथम संरक्षा'-नामक पुस्तिका लिखी; परंतु इस कल्पना से भी 'पृथ्वीराज-रासो' के संवतों की अशुद्धि दूर न हुई। 'भटायत'-संवत् के अनुसार पृथ्वीराज के जन्म-संवत् ११५५ में उसकी आयु के ४३ वर्ष जोड़ने पर ११९८ हुए, जिससे पृथ्वीराज की मृत्यु 'भटायत'-संवत् ११९८ अर्थात् वि० सं० १२५८ (ई० स० १२०१) में माननी पड़ती थी; परंतु अन्य ऐतिहासिक प्रमाणों से वि० सं० १२४९ (ई० स० ११९२) में उस (पृथ्वीराज) की मृत्यु होना सिद्ध है। इसलिये इन नौ वर्षों की कमी पूरी करने के लिये उन्हें 'भटायत'-संवत् की युक्ति से संतोष न हुआ, और उन्होंने पृथ्वीराज के जन्म-संबंधी दोहे में 'अनंद'-शब्द देखकर 'अनंद-संवत्' की नई कल्पना की, और उक्त शब्द का अर्थ अनंद अर्थात् नौ-रहित सौ करते हुए रासो में उल्लिखित संवतों में ९१ वर्ष का अंतर बतलाकर कहा कि 'पृथ्वीराज-रासो' में दिए हुए सब संवतों में ९१ जोड़ देने से वे शुद्ध विक्रम-संवत् हो जाते हैं। परंतु इस कल्पना से भी संवत् शुद्ध नहीं हो सके।

राजपूताने में प्राचीन शोध करते समय मुझे चौहानों के कई सौ शिला-लेख और ताम्र-पत्र मिले। उनमें मिलनेवाली वंशावली तथा संवत्

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न तो रासो के संवतों से मिलते हैं, और न पंड्याजी के माने हुए 'भटायत' अथवा 'अनंद-विक्रम-संवत्' से। इसलिये मैंने, ई० स० १९२१ में, 'अनंद-विक्रम-संवत् की कल्पना'-शीर्षक लेख लिख काशी की नागरी-प्रचारिणी पत्रिका में प्रकाशित कराया ❀, और इस विषय की विस्तृत विवेचना करते हुए 'भटायत' तथा 'अनंद-विक्रम-संवत्' की कल्पना को निर्मूल बतलाया। राजपूताने के इतिहास के संबंध में रासो की बातों का बंद न बैठने के कारण फिर मैंने इस पर संपूर्ण रूप से विचार करते हुए जाँच के परिणाम-स्वरूप, वि० सं० १९८५ (ई० स० १९२९) में, 'पृथ्वीराज-रासो का निर्माण-काल'-नामक विस्तृत और विवेचनात्मक लेख लिखकर 'कोपोत्सव - स्मारक-संग्रह' में प्रकाशित कराया †। उसमें पृथ्वीराज-रासो और अग्निवंशी क्षत्रिय प्रतिहार-वंश की उत्पत्ति, चालुक्य-वंश की उत्पत्ति, चौहान-वंश की उत्पत्ति, पृथ्वीराज-रासो और पृथ्वीराज की माता, पृथ्वीराज-रासो और उसकी बहन पृथाबाई, पृथ्वीराज-रासो और सोमेश्वर की मृत्यु, पृथ्वीराज-रासो और पृथ्वीराज का विवाह, पृथ्वीराज-रासो में दिए हुए भिन्न-भिन्न संवतों की जाँच, पृथ्वीराज का दिल्ली गोद जाना, मेवाती मुग़ल से युद्ध, संयोगिता का स्वयंवर, रावल समरसी के ज्येष्ठ पुत्र कुंभा का बीडर के सुलतान के पास जाना, पृथ्वीराज और शहाबुद्दीन ग़ोरी की मृत्यु, पृथ्वीराज-रासो का समय-निर्णय, उसकी भाषा, पृथ्वीराज-रासो का परिमाण, पृथ्वीराज-रासो को प्राचीन सिद्ध करनेवालों की अन्य युक्तियाँ आदि मुख्य-मुख्य बातों की मैंने सप्रमाण जाँचकर बतलाया कि रासो इतिहास का साधन नहीं, और उसकी रचना वि० सं० १६०० के आस-पास हुई है।

मेरी निर्णय की हुई उपर्युक्त बातों में से किसी एक का भी किसी विद्वान् ने खंडन न किया, और न किसी ने सप्रमाण यह बतलाने की चेष्टा की कि जो 'पृथ्वीराज-रासो' इस समय उपलब्ध है, वह प्रामाणिक है। किंतु नवंबर, ई० स० १९३४ की 'सरस्वती' मासिक पत्रिका में, अपने 'पृथ्वीराज-रासो और चंद बरदाई'-शीर्षक लेख ❀ में, पंडित मथुराप्रसादजी दीक्षित ने इस विषय की फिर चर्चा उठाकर यह सिद्ध करना चाहा है कि चंद पृथ्वीराज का समकालीन कवि था, और उसने 'पृथ्वीराज-रासो' नाम का ग्रंथ अवश्य रचा था; परंतु जो 'पृथ्वीराज-रासो' नागरी-प्रचारिणी सभा तथा कलकत्ते से प्रकाशित हुआ, वह उसकी कृति नहीं, उसकी वास्तविक कृति तो 'रोड़ोवाला' रासो है, जो उन्हें मिला है। फिर उन्होंने, ई० सं० १९३८ में, महाकवि चंद बरदाई - कृत 'असली पृथ्वीराज-रासो' का प्रथम समय सटीक २२० छंदों में लाहौर के प्रसिद्ध पुस्तक-विक्रेता मोतीलाल-बनारसीदास द्वारा प्रकाशित करवाया, जिसकी सूचना 'हिंदी-साहित्य - सम्मेलन - पत्रिका' में पढ़कर हमें बड़ा हर्ष हुआ कि 'असली पृथ्वीराज-रासो' का एक समय तो प्रकाशित हुआ, जिसके लिये हिंदी-संसार लालायित हो रहा था, एवं हमें भी उसके पढ़ने और उसकी जाँच करने की उत्कंठा हुई। निदान दीक्षितजी - संपादित रासो मँगवाकर जब हमने देखा, तो हमें बड़ी निराशा हुई, क्योंकि उसमें न तो असली प्रति के लिखे जाने का संवत् दिया गया है, और न यही बतलाया है कि वह कहाँ उपलब्ध हुई। उन्होंने पुस्तक के आरंभ में

❀ नवीन संस्करण, भाग १, पृष्ठ ३७७-४५४।

† नागरी-प्रचारिणी सभा, काशी द्वारा प्रकाशित; पृष्ठ २९-६६।

❀ इस लेख पर अपने विचार हम लेख-संख्या २ में प्रकट करेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राक्कथन भी लिखा, पर उसमें अपने असली 'पृथ्वीराज-रासो' पर कुछ भी प्रकाश न डालकर न तो उसके पर्वों की संख्या और नाम बतलाए, और न उक्त रासो में उल्लिखित घटनाओं, उसमें दिए हुए संवतों तथा अन्य राजवंशों के संबंध की बातों पर ऐतिहासिक दृष्टिकोण से प्रकाश डाला। जब हमने दीक्षितजी द्वारा प्रकाशित असली रासो के प्रथम समय के समस्त छंदों का सभा द्वारा प्रकाशित रासो के प्रथम खंड से मिलान किया, तो ज्ञात हुआ कि उनके संपादित रासो के समस्त छंद सभा द्वारा प्रकाशित रासो के अनुसार ही हैं। केवल कहीं-कहीं कुछ पाठांतर है, और कहीं-कहीं सभा द्वारा प्रकाशित रासो के एक से अधिक छंद-वाले रूपकों में से पृथक्-पृथक् छंदों के टुकड़ों को जोड़कर एक-एक छंद बनाया गया है*। अब हम पाठकों की जानकारी के लिये दीक्षितजी-संपादित असली रासो का प्रत्येक छंद सभा के प्रकाशित रासो में कहाँ-कहाँ है, यह नीचे बतलाते हैं—

दीक्षितजी के असली रासो से छंद-संख्या	सभा द्वारा प्रकाशित रासो से पृष्ठ	छंद
१	१६	५४
२	१६	५३
३	२१	६६
४	२१	६८
५	२१	७०-७२
६	२१	७१-७३
[७]	२०	५५-६
[८]	२०	५७-८
[९]	२०	५९-६०

* दीक्षितजी के रासो की छंद-संख्या ६ में सभा द्वारा प्रकाशित रासो के रूपक २१ की छंद-संख्या ७१ से ७३ तक के टुकड़े लिए गए हैं। ऐसे और भी उदाहरण मिल सकते हैं।

दीक्षितजी के असली रासो से छंद-संख्या	सभा द्वारा प्रकाशित रासो से पृष्ठ	छंद
[१०]	२०	६१-२
[११]	२०	६३-४
१२	२१	६५-६
१३	२१	६७, ७४-५
१४	८	२
१५	९	३
१६	२२	७६
१७	२२	७७
१८	२२	७८
१९	१०-१	[५]
[२०]	११	[६-७]
[२१]	११	[७-८]
[२२]	११	९-१०
२३	१८	४३
२४	१८	४४
२५	२२	७९
२६	२२	८०
२७	२२	८१
२८	२५	९०
२९	२३	८२
३०	२३-४	८४
३१	२४	८५
३२	२४	८६
३३	२४	८७
३४	२४	८८
३५	२५	८९
३६	२५	९१
३७	२५	९२
३८	५०	२५१
३९	५०	२५२
४०	५०	२५३
४१	३३	१३६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीक्षितजी के असली रासो से छंद-संख्या	सभा द्वारा प्रकाशित रासो से पृष्ठ	छंद	दीक्षितजी के असली रासो से छंद-संख्या	सभा द्वारा प्रकाशित रासो से पृष्ठ	छंद
४२	३३-४	१३७-८	७३	३९	१८१-२
४३	३४	१३८-९	[७४]	३९	१८३
४४	३४	१३९-४०	७५	३९	१८४
४५	३४	१४०-१	[७६]	३९	१८५-६
[४६]	३४	१४१-२	[७७]	३९	१८६-७
४७	३४	१४३, १४६-७	७८	४०	१८९
४८	३४	१४८	७९	४०	१९०
[४९]	३५	१४९	८०	४०	१९२
५०	३५	१५०	८१	४०-१	१९३-४
५१	३५	१५१	८२	४१	१९५-६
[५२]	३५	१५२	८३	४१	१९७
[५३]	३५	१५३	८४	४१-२	१९८
५४	३५	१५४	८५	४२	१९९
५५	३५	१५५	८६	४२	२०१
५६	३५	१५६	८७	४२	२०२
५७	३५	१५७	८८	४३	२०३
५८	३६	१५८	८९	४३	२०४
[५९]	३६	१५९	९०	४३	२०५
६०	३६	१६०-१	९१	४३	२०६
६१	३६	१६८	९२	४३	२०७
६२	३७	१६९	९३	४३	२०८
६३	३७	१७०	९४	४३	२०९
६४	३७	१७१	९५	४३	२१०
६५	३७	१७२	९६	४३	२११
६६	३७	१७३-४	९७	४३	२१२
[६७]	३७	१७५	९८	४४	२१३
६८	३७	१७६	९९	४४	२१४
६९	३८	१७७	१००	४४	२१५
७०	३८	१७८	१०१	४४	२१६
७१	३८	१७९	१०२	४४	२१७
७२	३८-९	१८०	१०३	४५	२१८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीक्षितजी के असली रासो से छंद-संख्या	सभा द्वारा प्रकाशित रासो से पृष्ठ	छंद
१०४	४५	२१६
१०५	४५	२२१
१०६	४५-६	२२२
[१०७]	४६	२२३-२४
१०८	४६	२२५
१०९	४६	२२६
११०	४६	२२७
१११	४६	२२८
११२	४६	२२९
११३	४६	२३०
११४	४६	२३१
११५	४७	२३२
११६	४७	२३३
११७	४७	२३४-६
११८	४७	२३७-४०
११९	४७	२४१
१२०	४७	२४२
१२३ (१२१)	४८	२४३
१२३*	४८	२४४
१२४	४८	२४५
११५ (१२५)	४८-९	२४६
११६ (१२६)	४९	२४७
१२० (१२७)	४९	२४८-९
१२८	४९	२५०
१२९	५०	२५४
१३०	५१	२५६
१३१	५५	२८०
१३२	५५	२८१

दीक्षितजी के असली रासो से छंद-संख्या	सभा द्वारा प्रकाशित रासो से पृष्ठ	छंद
१३३	५१-२	२५७-८
१३४	५२	२५९
१३५	५२	२६०
१३६	५२	२६१
१३७	५२	२६२
१३८	५२	२६३
१३९	५२	२६४
१४०	५३	२६५
१४१	५३	२६६
१४२	५३	२६७
१४३	५३	२६८
१४४	५३	२६९
१४५	५३	२७०
१४६	५३	२७१
१४७	५३	२७२
१४८	५३	२७३
१४९	५३	२७४
१५०	५३	२७५
[१५१]	५३	२७६
१५२	५५	२८२
[१५३]	५५	२८३
१५४	५६	२८४
१५५	५६	२८५-६
१५६	५६	२८७
१५७	५७	२८८
१५८	५७	२८९
१५९	५७	२९०
[१६०]	५७	२९१
[१६१]	५९	२९९-३०२
[१६२]	६०	३०७
१६३	६०	३०८

* दीक्षितजी की प्रति में संख्या १२२ छंद-संख्या छूट गई है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीक्षितजी के असली रासो से छंद-संख्या	सभा द्वारा प्रकाशित रासो से पृष्ठ	छंद	दीक्षितजी के असली रासो से छंद-संख्या	सभा द्वारा प्रकाशित रासो से पृष्ठ	छंद
१६४	६०	३०६	१६६ (१६५)	११०	५४८
[१६५]	६१	३१०-११	१६६	११०	५४६
[१६६]	६१	३१२	१६७	१११	५५२-३
[१६७]	६१	३१३	१६८	१२१	६०५-७
[१६८]	६१	३१४	१६६	१२१	६०८
१६६	६१	३१५	२००	१२१	६०६
[१७०]	६२	३१६	[२०१]	१२१	६१०
१७१	६३	३२१	[२०२]	१२१	६११
१७२	६३	३२२-३	२०३	१२२	६१२-१३
१७३	६३	३२४	२०४	१२२	६१३
१७४	६३	३२५	२०५	१२२	६१४
[१७५]	६४	३२७	२०६	१२२	६१५
१७६	६४	३२८	२०७	१३२	६७०
१७७	१०४	५२०	२०८	१३५	६८५
१७८	१०५	५२१	२०६	१४७	७०३
१७६	१०५	५२२	२१०	१५७	७५६
१८०	१०५	५२४	२११	१५७	७६०
१८१	१०६	५२५	२१२	१५७	७६१
[१८२]	१०६	५२७-८	२१३	१५८	७६२
[१८३]	१०६	५२८-६	२१४	१५८	७६३
१८४	१०६	५२६	२१५	१५६	७६६
१८५	१०६	५३१	२१६	१५६	७६७
१८६	१०७	५३२	२१७	१५६	७६८
[१८७]	१०७	५३३	२१८	१६१	७८१
१८८	१०७	५३४-५	२१६	१६२	७८२
१८६	१०८	५३६-७	२२०	१६२	७८३
१६०	१०८	५३८			
१६१	१०६	५४२			
१६२	१०६	५४३			
१६३	११०	५४६			
१६४	११०	५४७			

ऊपर दी हुई तालिका से स्पष्ट है कि दीक्षितजी-संपादित असली रासो में दिए हुए समस्त छंद सभा द्वारा प्रकाशित रासो में विद्यमान हैं। अधिकांश छंद तो उसमें ज्यों-के-त्यों हैं। कुछ छंदों में पाठ-भेद अवश्य है। अंतर इतना ही है कि सभा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वारा प्रकाशित रासो का वर्णन कहीं-कहीं विस्तृत और सरस है, तो दीक्षितजी के असली रासो का संक्षिप्त और नीरस। दोनो की भाषा समान है, इसकी जाँच के लिये हम असली रासो के आदि के छ छंद, बीच के आठ छंद तथा अंत के छ छंद और सभा के रासो के उन्हीं छंदों के पाठ नीचे उद्धृत करते हैं, जिनसे दोनो रासों की भाषा की समानता या अंतर का स्पष्टीकरण हो जायगा*—

दीक्षितजी-संपादित असली रासो से

छत्रंजा मदगंधरागरुचयं
आलीभिराच्छादिता ,
गुंजाहार अधार सार गुनजा
झंझा पयाभासिता ।
अग्रेजा श्रुतिकुण्डलं करिकर
स्तुद्दीर उद्दारयं ,
सोऽयं पातु गनेस सेवितकजं
प्रथ्राज काव्ये हितं ॥ १ ॥
मुक्ताहार विहारसार सुबुधा
अब्धा बुधा गोपनी ,
सेतं चीर सरीर नीर गहिरा
गौरी गिरा जोगनी ।
वीनापानि सुबानि जानि दधिजा
हंसारसा आसिनी ,
लंबोजा चिहुरार भारजघना
विघ्नाघना नासिनी ॥ २ ॥
साधन भोग सँयोग रजि ,
मंडन आव अखूठ ।
नमो उमा उर आभरन ,
जय मंडण जट जूट ॥ ३ ॥
नमस्कार संकर करिय,
सरस बुद्धि कविचंद ।
सति लंपट लंपट न वी,
अबुधि मंत्र सिसु इंद ॥ ४ ॥
जटा जूट बंदं लिलाटीय चंदं
भुजंगी गलहं सिरोमाल लहं ।

सभा द्वारा प्रकाशित रासो से

छत्रंजा मद गंध राग रुचयं ,
अलिभूराछादिता ॥
गुंजा हार अथार सार गुनजा ,
झंझापयाभासिता ॥
अग्रेजा श्रुति कुंडलं करि कर ,
स्तुद्दीर उद्दारयं ॥
सोयं पातु गनेस सेस सफलं ,
पृथ्राज काव्यं कृतं ॥ छं० ५४ ॥
मुक्ताहार बिहार सार सुबुधा ,
अब्धा बुधा गोपिनी ॥
सेतं चौर सरीर नीर गहिरा ,
गौरी गिरा जोगनी ॥
बीना पानि सुबानि जानि दधिजा ,
हंसा रसा आसिनी ॥
लंबोजा चिहुरार भार जघना ,
बिघ्ना घना नासिनी ॥ छं० ५३ ॥
साधन भोग सँयोग रजि ।
मंडन आव अखूट ॥
नमो उमा उर आभरन ।
जय बंधन जट जूट ॥ छं० ६६ ॥
नमस्कार संकर कियौ ।
सरसैं बुधि कवि चंद ॥
सति लंपट लंपट नवी ।
अवुधि मंत्र सिसु इंद ॥ ६८ ॥
जटा जूट बंदं । लिलाटंत चंदं ॥
बिराजंत छंदं । भुजंगी गलिंदं ॥ ७० ॥

* रेखांकित शब्द पाठांतर-सूचक हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीक्षितजी-संपादित असली रासो से

बिराजंत छंदं गिरिजाय नंदं
उरोश्रृंगनद्दं सिरे गंगहद्दं ॥ ५ ॥

रणे वीरभद्दं करीचर्म छद्दं
चषे अग्ग जद्दं जरे काम तद्दं ।
करे काल पद्दं जयो जोग सद्दं
प्रलै जद्द तद्दं घटा जानि भद्दं ॥ ६ ॥

अग अचल दिष्षि वाचिट्ठ रिष्ष
मन मुदित भयौ सम आय सिष्षि ।
हर वासदेव सब गुन समान
आवन्न रिद्धि चित चिंतिथान ॥
आभास रिष्षि गौतमह तत्थ
आचरयौ वास अनरिष्ष सत्थ ।
आभास रिष्षि अन्नेक ताम
संबोधि बोधि प्रिथु प्रिथुक नाम [१०७]

देवलह असित अरु गाधिसूअ
सोमित्र सर्पमाली विभूव ।
महिसिरा सनक जैनेय पैल
दालभ्य वक्क सूमंत ऐल ॥ १०८ ॥

द्वैपायकिस्न स्थूलंस राय
तैतरिय जनक वक्कीय ताय ।
जैमनिय धुम्म वैसंपयान
हर्षनह लोम असिहोत्र जान ॥ १०९ ॥
मंडव्य अरति कौसिक्क दाम
उष्णीष त्रिवन प्रन्नादि बाम ।
घटजात सुबल मौजायनेय
बलवाक परासर वायवेय ॥ ११० ॥

सचिवाक जातक्रन क्रन्नमाल
सनिवाक क्रिताश्रम सुचिपाल ।
सिषिवान्त सुपर्वत पारिजात
आगस्ति मारकंडे सुभाति ॥ १११ ॥

सभा द्वारा प्रकाशित रासो से

शिरो माल इंदं । गिरीजा अनंदं ॥
सिरे सिंधि नद्दं । रनैं बीर मद्दं ॥ ७१ ॥

करी चर्म सद्दं । करं काल खद्दं ॥
उनै गंग हद्दं । चखी अग्गि दद्दं ॥ ७२ ॥
प्रलै जानि जद्दं । जयो जोग सद्दं ।
घटा जानि भद्दं । जरै काम तद्दं ॥ ७३ ॥

अग अचल दिष्षि वाशिष्ट रिष्ष ।
मन मुदित भयौ सम आय सिष्ष ॥
हर वासदेव सब गुन समान ।
आवरन रिद्धि चित चिंत थान ॥ २२३ ॥
आभासि सिष्ष गौतमह तथ्थ ।
आचर यौ बास अनि रिष्ष सथ्थ ॥
आभासि रिष्ष अनेक तान ।
संबोधि बोलि प्रथु प्रिथुक नाम ॥ २२४ ॥

देवलह असित अंबाबि सूअ ।
सौमित्र सर्प माली विभूव ॥
मह महन सनक जैनेय पैल ।
दालभ्य बक्क सुमंत अैल ॥ २२५ ॥

दीपाय किस्न थूलंसि राय ।
तैतरिय ज अवक्री सुताय ॥
जैमनिय ध्रव्व वै संपायन ।
हर्षनह लोम असुहोत्र जान ॥ २२६ ॥

मंडव्य अरति कौसिक्क दाम ।
उष्णीष त्रिवन पर्णाद बाम ॥
घट जात सुबल मोजायनेय
बलवाक परासर वायवेय ॥ २२७ ॥

सचिवाक जात क्रन क्तन्न माल ।
सनिवाक क्रिताश्रम सुचि पाल ॥
सिषि वांनसु पर्पत पारिजात ।
अगस्ति मारकंडे सुभाति ॥ २२८ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीक्षितजी संपादित असली रासो से

पावित्र पानि सावन्यरिभ्य
किरनाष्यकेत कामंकि सभ्य ।
जंघाव भालुकी कोपवेग
गालब्भ भृगू हरि बब्भ्रएग ॥ ११२ ॥

कौंडिन्न बन्धुमाली सनक्क
सानंद सनातन कच्छि वक्क ।
सांडिल्ल करक बाराह पंग
कौमार अश्व हयघोष मंग ॥ ११३ ॥

वेनीय जघन जघनासकेतु
कन्वह कलाप जैक्रीव सेत ।
अष्टाह वक्र उद्दालकेय
च्यवनाह कपिल मातंग जेय ॥ ११४ ॥

कह्यौ कंत सूं कंति इमि
हूं पूछौं गुन तोहि ।
को मानव दानव सु को
को नृप कित्तिय होहि ॥ २१४ ॥

चित्र निहारे चिंति तूं
रे चतुरंगी नाह ।
का चहुआन रु कव्वि का
मन मनुच्छु हरिलाह ॥ २१५ ॥

तत्त हीन पुत्तरी पंच बंधी कर नच्चै,
असानदी सपूर जीय मंनोरथ संचै ।
बहु तरंग तृस्नाह ग्राह जिमि गेह कुरंगी,
का चहुवानी कित्ति जंपि जद्दव जसवंगी ।

मन मूढ मोह बिस्तरि रह्यौ
चिंता तट घट भंजई,
उत्तरहि पार दुत्तर सुकवि
का चहुवानै रंजई ॥ २१६ ॥

कहे गुरू गुन तैं भले
मो जिय इय अंदेस ।

सभा द्वारा प्रकाशित रासो से

पावित्र पानि सर्वन्य रभ्य ।
किरनाषकेत भ्रगु मेष सभ्य ॥
जंघाव भालकी कोप वेग ।
गालभ हरीय ब्रह्म भ्रगेग ॥ २२६ ॥

कौडिन्न बंध माली सनक्क ।
सानंद सनातन कच्छ वक्क ॥
सांडिल करक बाराह पंग ।
कौमार अश्व हय घोष मंग ॥ २३० ॥

वेनीय जघन जघ नासकेत ।
कन्हं कलाप वक्रीव सेत ॥
अष्टाह वक्र उद्दालकेय ।
च्यवनह कपिल मातंग जेय ॥ २३१ ॥

कह्यौ कंत सौं कंति इम ।
हौं पूछों गुन तोहि ॥
को दानव मानव सुको ।
को नृप कित्तिक होहि ॥ ७६३ ॥

चित्र नहारे चित्रि तूं ।
रे चतुरंगी नाह ॥
का चहुआन सु कित्ति कवि ।
मन मनुछ्य हरि लाह ॥ ७६६ ॥

तत्त हीन पुत्तरी । पंच बंधी कर नंचै ॥
आसा नदी सपूर । जीय मनोरथ संचै ॥
बहु तरंग तिश्नाह । राग बहु ग्रेह कुरंगी ॥
का चहु आना कित्ति । कंत धीरज तिरभंगी ॥

मन मोह मूढ बिस्तरि रह्यौ ।
चिंता तट घट भंजइय ॥
उत्तरहि पार दुत्तर कवी ।
का चहुआना रंजइय ॥ ७६७ ॥

कहे गुपत गुन तैं भले ।
मो जिय इय अंदेस ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीक्षितजी-संपादित असली रासो से

रिण अप्पो चहुआन कू
पुव्वह पित्थ नरेस ॥ २१७ ॥
त्रिय बरजौ नर जौ सुकवि
नर कित्ती नन गाइ ।
अंग अंग हरि रूप रस
वर्न दिखाय सुनाइ ॥ २१८ ॥
अंग अंग हरि रूप रस
विविध विवेक वरण ।
मुकति समप्पन कंति रस
जुगतिन जोग सरण ॥ २१९ ॥
कह्यो कंति सूं भासि यह
जो पुच्छै तत मोहि ।
कन्नि धरै रसना सरस
वन्नि दिषा वूं तोहि ॥ २२० ॥

भाषा की समानता के विषय में हम अपनी ओर से कुछ भी कहना नहीं चाहते, क्योंकि विद्वान् पाठक उपर्युक्त उद्धरण पढ़कर स्वयं उसका अनुमान लगा लेंगे।

अब नव-प्रकाशित दीक्षितजी के असली रासो में वर्णित घटनाओं में से कुछ की ऐतिहासिक दृष्टि से समीक्षा करना यहाँ आवश्यक प्रतीत होता है।

वंशोत्पत्ति की कथा

सभा के रासो के समान ही असली रासो में भी स्तुतियों आदि के अनंतर अग्निवंशी क्षत्रियों अर्थात् प्रतिहारों, चौलुक्यों, पँवारों और चौहानों का वशिष्ठ द्वारा अग्नि-कुंड से उत्पन्न होने का वर्णन है। इनमें से परमार तो अपनी उत्पत्ति वशिष्ठ के अग्नि-कुंड से ही मानते हैं, और ऐसा ही उनके शिला-लेखों, दान-पत्रों तथा परिमल (पद्मगुप्त)-रचित भोज के पिता सिंधुराज के संबंध के 'नवसाहसांकचरित'-नामक काव्य में

सभा द्वारा प्रकाशित रासो से

रिन अप्पौं चहुआन कौ ।
पुव्वह पिथ्थ नरेस ॥ ७६८ ॥
त्रिय वर ज्यौ नर ज्यौ सु कवि
नर कित्ती नन गाइ ॥
अंग अंग हरि रूप रस ।
व्रन्न दिषाइ सुनाइ ॥ ७८१ ॥
अंग अंग हरि रूप रस ।
विविध विवेक वरेन ॥
मुकति समप्पन कंत रस ।
जुग तिनि जोग सरेन ॥ ७८२ ॥
कह्यौ भांमि सौं कंत इम ।
जो पूछै तत मोहि ॥
कान धरौ रसना सरस ।
व्रन्नि दिषाऊं तोहि ॥ ७८३ ॥

भी लिखा मिलता है*, एवं अब तक परमारों का गोत्र भी वशिष्ठ ही चला आता है। प्रतिहार नाम वंशकर्ता के नाम से नहीं, अपितु राज्याधिकार के पद से बना है। राज्य के विभिन्न अधिकारियों में एक प्रतिहार भी हुआ करता था, जिसका काम राजा के बैठने के स्थान या रहने के महल के द्वार (ड्योढ़ी) पर रहकर उसकी रक्षा करना था। इस पद के लिये जाति-विशेष का विचार नहीं रहता था, राजा के भरोसे के आदमी ही इस पद पर नियत किए जाते थे। अब तक के शोध से ब्राह्मण †, राजपूत ‡ (क्षत्रिय) और गूजर § प्रतिहारों का पता लगा है। प्रतिहार

* मूल-अवतरणों के लिये देखो कोषोत्सव-स्मारक-संग्रह ; पृष्ठ ३३-३४।

† मेरा राजपूताने का इतिहास; जिल्द १, पृष्ठ १६५-७२ तथा १४, टि० २।

‡ वही; जिल्द १, पृष्ठ १७२-८६।

§ वही; जिल्द १, पृष्ठ १४६।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नरेशों से संबंध रखनेवाली किसी प्राचीन पुस्तक या शिला-लेख आदि में उनका अग्निवंशी होना नहीं लिखा है। क्षत्रिय प्रतिहार अपने को रघुवंशी मानते रहे। 'प्रतिहार-रासो' बनने के बाद वे अपने को अग्निवंशी मानने लगे हैं। चौलुक्य अपने को चंद्रवंशी और पांडवों की संतान मानते रहे, उन्होंने कभी अपने को अग्निवंशी नहीं माना। उनकी उत्पत्ति के संबंध में जो प्रमाण प्राचीन पुस्तकों, शिला-लेखों आदि में मिले, वे सब हमने अपने 'सोलंकियों के प्राचीन इतिहास' भाग १ के प्रथम अध्याय में संग्रह कर दिए हैं। 'पृथ्वीराज-रासो' के प्रकाश में आने के बाद अपने प्राचीन इतिहास के अज्ञान में चौलुक्य अपने को अग्निवंशी मानने लगे हैं। पृथ्वीराज के पिता सोमेश्वर के बड़े भाई विग्रहराज (वीसलदेव चौथा) की बनवाई हुई अजमेर की संस्कृत-पाठशाला (अब ढाई दिन का झोंपड़ा) से दो नाटकों के अतिरिक्त शिलाओं पर खुदे हुए चौहानों के ऐतिहासिक काव्य की पहली शिला प्राप्त हुई है, जिसमें चौहानों को सूर्यवंशी लिखा है। 'पृथ्वीराज-विजय' महाकाव्य में भी जगह-जगह उन्हें सूर्यवंशी ही लिखा है, और वि० सं० १४३० के लगभग बने हुए कवि नयचंदसूरि-रचित 'हम्मीर-महाकाव्य' में भी उन्हें सूर्यवंशी ही माना है*, न कि अग्निवंशी। इससे निश्चित है कि वि० सं० १४६० तक तो चौहान अपने को सूर्यवंशी क्षत्रिय ही मानते थे। यदि 'पृथ्वीराज-रासो' पृथ्वीराज के समय का ही बना होता, तो उसमें चौहानों को अग्निवंशी नहीं, सूर्यवंशी लिखा मिलता।

वंशावली की जाँच

उत्पत्ति-वर्णन के पश्चात् दीक्षितजी के रासो में भी सभा द्वारा प्रकाशित रासो के समान ही चहुआन से लेकर पृथ्वीराज तक की वंशावली दी है। उसमें दिए हुए प्रायः सभी नाम सभा द्वारा प्रकाशित रासो के नामों से हूबहू मिल जाते हैं, पर कुछ में भिन्नता पाई जाती है। नामों की संख्या भी कम है—दीक्षितजी के रासो में कुल ३३ नाम हैं, और सभा द्वारा प्रकाशित रासो में ४४। इसका कारण यही है कि सभा के रासों में जिसे नाम माना है, उसे कहीं-कहीं इस नए रासो में विशेषण मान लिया है, और कुछ नाम छोड़ भी दिए गए हैं। सभा द्वारा प्रकाशित रासो के समान ही दीक्षितजी के रासो में आए हुए पृथ्वीराज के निकट के पूर्वजों के नाम तक ग़लत हैं। इससे पाया जाता है कि आना के बाद जयसिंह हुआ। उसका पुत्र आनंद-मेव (देव) था, और आनंदमेव का सोमेश्वर, जिसका पुत्र पृथ्वीराज हुआ। वि० सं० १२३६ में पृथ्वीराज ने महोबा जीता था। इस संबंध का शिला-लेख मदनपुर (मध्य-भारत) की बारा-दरी में लगा है *। इससे स्पष्ट है कि पृथ्वीराज अर्णोराज (आना, आनाक) का पौत्र और सोमेश्वर का पुत्र था। यदि उक्त काव्य पृथ्वीराज के समय का बना होता, तो उसमें ऐसे नज़दीक के नामों में ग़लती न होती। कुछ इधर-उधर के नामों को छोड़कर इस रासो में भी सभा के रासो के समान ही कृत्रिम नामों की ही भरमार है, जो चौहानों की वि० सं० १०३० की हर्षनाथ के मंदिर की प्रशस्ति, चौहान राजा सोमेश्वर के समय के वि० सं० १२२६ के बीजोल्यां के बृहत् शिला-लेख, जिसमें चौहानों की उस समय तक

* मूल - अवतरणों के लिये देखो कोषोत्सव-स्मारक-संग्रह; पृष्ठ ३८।

* ॐ अर्णोराजस्य पौत्रेण श्रीसोमेश्वरसूनुना ;
जेजाकभुक्तिदेशोऽयं पृथ्वीराजेन लूनितः ॥
(सं० १२३६)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्ञात सोमेश्वर तक की विस्तृत वंशावली दी है, एवं पृथ्वीराज - विजय महाकाव्य, वि० सं० की १५वीं शताब्दी के आस-पास लिखे प्रबंध-कोष के अंत में दी हुई चौहानों की वंशावली, वि० सं० १४६० के आस - पास बने हुए हम्मीर-महाकाव्य और वि० सं० १६३५ के लगभग बने हुए बूँदी के राव सुर्जन हाड़ा के चरित्र के ऐतिहासिक संस्कृत-काव्य (सुर्जन-चरित) में दिए हुए नामों से नहीं मिलते*। इसके विपरीत उक्त शिला-लेखों एवं पुस्तकों के अधिकांश नाम परस्पर मिल जाते हैं। कहीं-कहीं कुछ नामों में अंतर पाया जाता है। उसका कारण यही है कि समय बीतने के साथ-साथ कुछ नाम लोग भूल गए, और किसी-किसी नाम के प्राकृत रूप के स्थान में संस्कृत-रूप दे दिया गया है, जैसे 'गूवक' के स्थान में 'गोविंद-राज,' 'वप्पराज' के स्थान में 'वाक्पतिराज' आदि। ऐसी स्थिति में हम इस रासो को भी सभा द्वारा प्रकाशित रासो के समान ही शिला-लेखों और प्राचीन काव्यों के आगे कोई महत्त्व नहीं दे सकते। यदि रासो किसी समकालीन लेखक की रचना होती, तो उसमें दिए हुए नाम 'पृथ्वीराज-विजय महाकाव्य और बिजोल्यां के शिला-लेख आदि से अवश्य मिल जाते।

सोमेश्वर के विवाह की कथा

इसके आगे एक ही छप्पय में सोमेश्वर का दिल्ली के तंवर अनंगपाल की पुत्री से विवाह होना वर्णित है, जो कुछ शब्दों के हेर-फेर के अतिरिक्त सभा द्वारा प्रकाशित रासो के समान ही है। इसके उदर से ही पृथ्वीराज का उत्पन्न होना लिखा है। यह कथा केवल कवि-कल्पना ही है, क्योंकि उस समय अनंगपाल दिल्ली का राजा न था। दिल्ली का राज्य तो पहले ही सोमेश्वर के बड़े भाई विग्रहराज (चतुर्थ) ने अपने राज्य (अजमेर) में मिला लिया था, ऐसा पृथ्वीराज के पिता सोमेश्वर के वि० सं० १२२६ के शिला-लेख से स्पष्ट है‡। पृथ्वीराज की माता तंवर अनंग-पाल की पुत्री नहीं, बल्कि त्रिपुरी (चेदि अर्थात् जबलपुर के आस-पास के प्रदेश की राजधानी) के हैहय (कलचुरि)-वंशी राजा तेजल (अचल-राज) की पुत्री थी, जिसका नाम कर्पूरदेवी था। ऐसा ही 'हम्मीर-महाकाव्य' में भी लिखा है। 'सुर्जन - चरित' में भी उसका नाम कर्पूरदेवी ही दिया है, और उसे दिल्ली के राजा की पुत्री नहीं, अपितु दक्षिण के कुंतल-देश के राजा की पुत्री बतलाया है†।

सभा द्वारा प्रकाशित रासो का वर्णन विस्तृत होने से उसमें अनंगपाल का विशेष हाल और सोमेश्वर को ब्याही जानेवाली उसकी पुत्री का नाम कमला दिया है। दीक्षितजी के रासो में उसका नाम तक नहीं और उसमें अनंगपाल तथा उसकी दोनो पुत्रियों आदि का विशेष विवरण भी नहीं मिलता।

पृथ्वीराज का जन्म

पृथ्वीराज के जन्म की बात तो दीक्षितजी के रासो में है, परंतु उसमें उसका संवत् नहीं दिया है। पृथ्वीराज के समकालीन कवि के काव्य में ऐसी त्रुटि रह जाय, यह आश्चर्य-जनक बात है, क्योंकि पृथ्वीराज के पूर्वजों के जन्म-संवत् भले ही चंद को न मालूम रहे हों, पर पृथ्वीराज

---

* इनके दिए हुए नामों के लिये देखो कोषोत्सव - स्मारक-संग्रह; पृष्ठ ३८ के सामने का नक़्शा।

* प्रतोल्यां च वलभ्यां च येन विश्रामितं यशः [।]
ढिल्लिकाग्रहणश्रांतमाशिकालाभलंभितम् ॥ २२ ॥
(बिजोल्यां के शिला-लेख से)।

† देखो कोषोत्सव-स्मारक-संग्रह; पृष्ठ ४२-३।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का जन्म-संवत् तो उसे अवश्य मालूम होना चाहिए।

इन सब बातों पर विचार करने से तो हम इसी निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि सभा द्वारा प्रकाशित रासो के समान ही दीक्षितजी का रासो, जिसे वह असली मानते हैं, जाली ही है। जान तो यह पड़ता है कि वि० सं० १६०० के आस-पास अथवा पीछे की जिन प्रतियों के आधार पर सभा का रासो प्रकाशित हुआ है, उन्हीं के समान किसी प्रति में काट-छाँटकर, छंदों की संख्या कम कर यह रासो भी तैयार किया गया है। जैसा ऊपर स्पष्ट कर दिया गया है, सभा के रासो और इस रासो की भाषा में ज़रा भी अंतर नहीं। इसके छंदों की संख्या अवश्य कम है, जो स्वाभाविक ही है, क्योंकि दीक्षितजी ने रासो का परिमाण ७,००० (सत्त सहस) छंद माना है, १,००००० (सत-सहस) नहीं। दीक्षितजी ने रासो की भाषा प्राकृत मानी है, जो ठीक नहीं। इसकी भाषा प्राकृत नहीं, बल्कि प्राकृत के एक भेद 'अपभ्रंश' का विकृत रूप डिंगल है। बीकानेर-राज्य के हस्त-लिखित पुस्तकों के महान् संग्रह में 'पृथ्वीराज-रासो' की भिन्न-भिन्न छ प्रतियाँ इसी ऑक्टोबर-मास में मेरे देखने में आईं। उन सब पर लगे हुए परचों पर उसकी भाषा डिंगल ही लिखी है। शायद दीक्षितजी प्राकृत और डिंगल में भेद न समझते हों।

दीक्षितजी ने अपने रासो की भूमिका में एक स्थल पर लिखा है—"इस चालीस-पचास वर्ष के मध्य में कोई प्राकृत-वेत्ता विद्वान् नहीं हुआ।" यह कथन निराधार ही है। हमारे मित्र और परिचित विद्वानों में कई प्राकृत-भाषा के धुरंधर विद्वान् इस समय भी विद्यमान हैं। वि० सं० १९८५ में कलकत्ता-विश्वविद्यालय के पंडित हरगोविंद विक्रमचंद सेठ ने 'पाइय-सद्द-महण्णवो' (प्राकृत-शब्द-महार्णव) नाम से हिंदी-अर्थ-सहित प्राकृत का बृहत्काय कोष बड़े आकार के १,२७८ पृष्ठों में प्रकाशित किया है, और शतावधानी जैन मुनि श्रीरत्नचंद्रजी महाराज ने ई० स० १९२३ से ई० स० १९३८ तक 'अर्द्ध-मागधी कोष'-नामक प्राकृत का बृहत् कोष बड़ी-बड़ी पाँच जिल्दों में छापा है। यदि दीक्षितजी इन जिल्दों को देख लेते, तो उपर्युक्त वाक्य लिखने का साहस न करते। सच बात तो यह है कि इतिहास की कसौटी पर सत्य न ठहरने के कारण ही शोधक विद्वानों ने रासो की ओर उपेक्षा का भाव रक्खा है।

---

४० से ऊपर उम्रवालो ! इसे पढ़ो !!

अब बूढ़ा होने की चिंता छोड़ दो, नई बूटी सेवन करो। यह बुढ़ापे का एक-एक चिह्न दूर कर आपको जवान-सा बना देगी। क़ब्ज़ दूर कर, पेट सुधारकर काम-शक्ति बढ़ा देगी। आँख की रोशनी तेज़कर, बाल का पकना रोककर पका बाल खूँटी से काला पैदा करेगी। झुर्रियाँ नष्ट कर, दाँत को दृढ़ बना अंतिम बुढ़ापे में बहरा न होने देगी। दाम ४) । झूठा होने से १०००) देने की शर्त।

पता—जड़ी-बूटी-दवाख़ाना, पो० बिहार, नरसरी (दरभंगा)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामाजिक अवसरों पर

आगतों का स्वागत करने में कुशल, **श्रीमती श्रीवास्तव** का कथन है : "अपने अनुभव से मैं जानती हूँ कि कैसा भी अवसर हो, भारतीय चाय आदर्श पेय है।" चाय की लोकप्रियता का यह कैसा ज्वलन्त उदाहरण है। भारतके सामाजिक जीवन में चाय ने जो खास स्थान ग्रहण कर लिया है, यह उसका भी प्रमाण है। सचमुच, किसी भी विशेष अवसर या त्योहार को सफल बनाने के लिये, चाय पिलाना अत्यन्त आवश्यक है। व्यवहार-कुशल बननेके लिये अपने आगत अभ्यागतों को भारतीय चाय पिलाइये।

सम्भ्रान्त व्यक्ति सर्वदा भारतीय चाय पीते हैं

इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित

IK 128 S

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राकृतिक चिकित्सा
का
सचित्र मासिक
पत्र

जीवन-सखा

का
विशेषांक प्रकाशित
हो गया !

विशेषांक के कुछ लेख और उनके लेखक

औषधोपचार व्यर्थ—महात्मा गांधी
स्वास्थ्य और प्राकृतिक चिकित्सा—प्रिंसिपल केदारनाथ गुप्त
प्राकृतिक चिकित्सा का इतिहास—एक प्रकृतिवादी
आधार-निदान—डॉ० बालेश्वरप्रसाद सिंह
इंद्रिय-निग्रह की समस्या—डॉ० वरनर मैकफेडेन
गांधीजी की दिनचर्या—श्रीघनश्यामदास बिड़ला
योग और स्वास्थ्य—स्वामी शिवानंद
बेवक़ूफ़ी की भी हद होती है—भदंत आनंद कौसल्यायन
प्रकृति बनाम दवा—श्रीआनंदवर्धन
रोग और जड़ी-बूटियाँ—डॉ० एल्० कामेश्वरम्
हम क्या अवश्य खायें ?—श्रीमहेशचंद्र अग्रवाल
विटामिन की कहानी—डॉ० एस्० जे० सिंह
फल और भाजियाँ—श्रीजानकीशरण वर्मा
भोजन और धूप—श्रीयुत ए० विजय घोष
विद्युत्-चिकित्सा—डॉ० दिलकश
जीर्ण रोग, उनका कारण और निवारण—श्रीविट्ठलदास मोदी
बद्धकोष्ठ-चिकित्सा—प्रो० भवानीप्रसाद
आँखों का सौंदर्य कैसे सुरक्षित रहे ?—डॉ० आर० एस्० अग्रवाल

पचास से अधिक चित्रों से सुसज्जित बृहद् विशेषांक का मूल्य केवल १) है, पर यह सभी नए और पुराने ग्राहकों को मुफ़्त मिलेगा। वार्षिक चंदा ३) आज ही भेजकर इसे प्राप्त कीजिए।

मैनेजर जीवन-सखा, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ख्याति का मूल्य

[श्रीयुत 'अरुण' बी० ए०]

ह कई वर्ष पहले की बात है, आज अचानक स्मरण आने पर लिखने का प्रयत्न कर रहा हूँ—ज्ञात नहीं, क्यों। वे दुःखद संस्मरण आज भी वैसे ही ताज़े हैं, जैसे तब थे। मानव-जीवन के व्यावहारिक पहलू को समझने की चेष्टा करने में मैंने क्या भूल की थी, उसे उस समय न जानता था, अब समझ में कुछ-कुछ आने लगा है। परंतु वह घटना—भावी के अभिशाप-सी—नियति के क्रूर हाथों का विधान बनकर कभी-कभी अपनी स्मृति ले आती है, और मन अशांत हो उठता है—न-जाने क्यों। सत्य का रूप इतना रहस्यमय क्यों रहता है, यह जानना कठिन है—कठिन नहीं, तो दुरूह अवश्य है। मानवता का कृत्रिम अभिमान, स्वार्थ की उत्कट भावना, अहंत्व का उल्लास और अधिकार-लिप्सा कितने दिनों तक मनुष्य को ऐसा ही बनाए रक्खेंगे—ऐसा कभी-कभी सोचता हूँ। श्वास-प्रतिश्वास में मन की शून्यता टटोलता हुआ मैं भी उस परिभाषा से अलग नहीं, उपेक्षित नहीं। फिर—जीवन का मोल ?

❀ ❀ ❀

मैंने पूछा—"तुम्हारा नाम ?"

उसने धीमे स्वर में उत्तर दिया—"गोपालचंद्र।"

काग़ज़ों की फ़ाइल उलट-पुलटकर मैंने उसका आवेदन-पत्र छाँट लिया, और पढ़ते हुए बोला—"तुम हिंदी बोल सकते हो ?"

"जी हाँ, अच्छी तरह से। मैं मुरादाबाद का रहनेवाला हूँ।"

आवेदन-पत्र पढ़ते हुए मैंने देखा कि उसने अपना मकान मुरादाबाद में ही बतलाया था। मैंने सिर ऊपर उठाया। आशा से उद्दीप्त उसकी आँखें मेरे मनोभावों को मेरे चेहरे पर पढ़ने की चेष्टा कर रही थीं। बाईस वर्ष का वह हृष्ट-पुष्ट, सुंदर युवक नौकरी चाहता था—दासत्व की सीढ़ी पर शीघ्र-से-शीघ्र चढ़ने के लिये उतावला हो रहा था। क्या दासत्व इतना प्रिय है मनुष्य को ? मैं सोचने लगा।

लेकिन सब कुछ सोचते हुए भी अपना अंतःकरण न टटोल सका। उस समय मैं यह भूल गया कि अपने घर से डेढ़ हज़ार मील दूर आकर मैं भी उसी दासत्व के सहारे जी रहा हूँ। अधिकार की एक बनावटी शृंखला, जिसे मैं सौभाग्य-चिह्न समझ रहा था, अवश्य मेरे हाथ में थी—मैं कंपनी का फ़िल्म-डाइरेक्टर था।

मैंने कहा—"गोपालचंद्र ! मैं एक सवाल तुमसे और पूछूँगा।"

व्यग्रता से उसने उत्तर दिया—"पूछिए।"

"तुम फ़िल्म-ऐक्टर क्यों बनना चाहते हो ?"

मैंने देखा, मेरा प्रश्न सुनकर उसके चेहरे पर गंभीरता की छाया-सी आ गई। कुछ देर वह चुपचाप सिर नीचा किए खड़ा रहा, संभवतः कुछ सोच रहा था। फिर धीरे से खाँसकर बोला—"महोदय ! मैं आपका आशय नहीं समझ पाया, क्षमा कीजिएगा।"

मैंने मुस्किराकर कहा—"देखो, तुम नवयुवक हो। तुम्हारे आवेदन-पत्र से जान पड़ता है, अच्छे घर के लड़के हो। फ़िल्मों की दुनिया बहुत गंदी है, अव्यवस्थित है, मानवता के प्रचलित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यवहार से एक निराली वस्तु—जिसकी बाहरी तड़क-भड़क, कृत्रिम सौंदर्य तुम लोगों को सुहावना दिखाई देता है। कंपनी की नौकरी में सोने की बौछार का स्वप्न देखकर, तुम लोग घर-बार छोड़कर उसकी ओर भागते हो। मगर सच पूछो, तो मैं अपने प्रांत के किसी भी व्यक्ति को इस मार्ग पर जाने से रोकना चाहता हूँ। इसीलिये मैं तुम्हारे विचार जानना चाहता हूँ।"

उसने तुरंत उत्तर दिया—"आप सच कहते होंगे, आपका अनुभव होगा। परंतु मेरे आवेदन-पत्र का विचार करते समय आप ये सब बातें न सोचें, तो अच्छा होगा। मैं नौकरी चाहता हूँ। मुझे निराश न कीजिएगा।"

उसके उत्तर से मुझे स्मरण आया—कहता ठीक है। मेरा उपदेश तो वैसा ही हुआ, जैसे एक शराबी दूसरे व्यक्ति से कहे कि शराब पीना बुरा है, या शराब के दुर्गुणों की व्याख्या करता हुआ किसी को शराब पीने से रोकने की चेष्टा करे।

मैंने अपने विषय में सोचा—अच्छी तरह सोचा, यही दुर्बलता मुझमें भी थी। दूसरे को उपदेश देने की चेष्टा में मेरा उद्देश्य अच्छा था, परंतु उसमें सार ही क्या ? मगर के आँसुओं-जैसी सहानुभूति से प्रयोजन ?

मैंने कर्तव्य-पालन की चेष्टा में दूसरे के अहित का ध्यान न किया। नौकरी का कर्तव्य उस समय पुनः मुझे याद आया। मैंने कहा—"गोपालचंद्र, मैं तुमसे अब कुछ न पूछूँगा। हाँ, तुम्हारा आवेदन-पत्र मैं कंपनी-मालिक के पास भेज रहा हूँ, शायद तुम्हें कंपनी में रख लिया जाय।"

"अनेक धन्यवाद ! आपकी ही कृपा से मेरी आशा पूरी होगी।"

मैंने लाल पेंसिल उठाकर, उसके आवेदन-पत्र पर अपनी स्वीकृति लिखकर नंबर दो डाला, और चपरासी द्वारा मालिक के पास भेज दिया।

मेरे संकेत पर गोपालचंद्र बाहर चला गया।

उसी दिन शाम को मुझे मालूम हुआ कि गोपालचंद्र को बीस रुपए मासिक पर कंपनी में नौकर रख लिया गया।

घर जाते वक्त जब मैं मोटर में बैठने लगा, तो गोपाल ने मेरे पास आकर, दोनों हाथ जोड़कर मुझे प्रणाम करते हुए कहा—"श्रीमान् की कृपा से मुझे नौकरी मिल गई !"

मैंने कहा—"बड़ी ख़ुशी की बात है।"

मैं घर चला आया। रात को बड़ी देर तक जागता रहा। गोपाल की बात सोच रहा था। उस युवक के व्यवहार में जाने कैसा आकर्षण था।

❀ ❀ ❀

कुछ दिनों बाद—हमारी कंपनी का 'उजाला'-नामक सामाजिक फ़िल्म बन रहा था।

एक रात को जब शूटिंग की पूरी तैयारी के साथ हम लोग सेट पर आए, तो देखा—हरी-भरी वाटिका, फूलों से लदी हुई लताएँ और छोटे-छोटे वृक्ष, आकाश में हँसता हुआ पूर्ण चंद्रमा और झिलमिलाते हुए तारे—सब कुछ कृत्रिम, मगर सत्य के कितने निकट जान पड़ता था।

हमारे आर्ट-डाइरेक्टर ने बड़ी मिहनत से यह नया सेट तैयार किया था।

दृश्यावली का चार्ट उठाकर मैंने देखा—उस रात कथानक का उपनायक हरीश, एक ज़मींदार का पुत्र, अपने यहाँ मेहमान आई हुई डॉक्टर वसंत की लड़की राधा से अपना प्रेम प्रकट करता है, यही सीन लिया जानेवाला था।

गोपाल उपनायक हरीश की भूमिका करने को था, और एक अभिनेत्री, जिसका नाम सुशीला-बाई था, राधा का अभिनय करने के लिये चुनी गई थी।

सेट की पूरी तैयारी ठीक पाकर मैंने अभिनेता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और अभिनेत्री को बुलाया, और सावधानी से अपना-अपना पार्ट करने की सूचना दी।

सुशीलाबाई पर मुझे भरोसा था, क्योंकि वह कई फ़िल्मों में काम कर चुकी थी, परंतु गोपाल की ओर से मुझे शंका थी। वह नया था, यद्यपि रिहर्सल काफ़ी हो चुका था।

मेरे संकेत पर सुशीलाबाई, राधा के रूप में खेलती, इठलाती सेट पर आई, और अपना संवाद बोलकर उसने मेरी ओर देखा। बिजली की बत्तियाँ जल उठीं। 'स्टार्ट' की आवाज़ के साथ-ही कैमरा और रेकार्डिंग-मशीन अपना-अपना काम करने लगे। वृक्ष से झूलती हुई एक लता से फूल तोड़ते हुए राधा ने काँटा लगने का भाव प्रकट करके कहा—"उँह, काँटे भी हैं?"

वह अपनी घायल उँगली देखने लगी। मैंने संकेत किया। हरीश का अवसर था। हरीश धीरे से उसके पीछे आकर खड़ा हो गया। राधा ने मुँह फेरकर लता को देखा, हरीश पर नज़र पड़ी। हरीश बोला—"क्यों? राधा!"

राधा ने अपनी घायल उँगली उसे दिखा दी। हरीश ने कहा—"अरे, ख़ून निकल रहा है! हुआ क्या?"

हरीश ने राधा का हाथ अपने हाथ में ले लिया। राधा सिर नीचा किए हुए बोली—"काँटा लग गया। मैं फूल तोड़ रही थी।"

हरीश ने मुस्किराकर कहा—"फूलों के साथ काँटे होते हैं, और तोड़नेवाले को घायल कर देते हैं राधा!"

राधा ने अपना हाथ छुड़ाकर पूछा—"क्या कहा तुमने?"

हरीश बोला—"समझ नहीं पाईं? मैं यह कह रहा था कि जहाँ फूल होते हैं, वहाँ काँटे भी होते हैं। तुम्हें फूल चाहिए था या काँटा?"

"फूल। मैंने फूल ही तोड़ा था।"

"झूठी बात। काँटा तोड़ रही होगी।"

"आपको काँटे शायद बहुत पसंद हैं?"

"और तुम्हें?"

"मैं फूल पसंद करती हूँ।"

"लेकिन सुनो राधा! बिना काँटों से उलझे हुए फूल नहीं मिला करते।"

"झूठ कहते हो।"

"..... ....."

मैं चिल्ला उठा—"कट्।"

कैमरा और रेकार्डिंग-मशीन बंद, बिजली की बत्तियाँ बुझ गईं। गोपाल घबराकर मेरी ओर देख रहा था। उसके हाथ-पैर काँप रहे थे। वह अपने संवाद का वाक्य भूल गया था। सीन अधूरा रह गया। मुझे बड़ा क्रोध आया, मैंने कहा—"गोपाल! ऐसी नादानी करने से काम न चलेगा। तुम्हारी वजह से बड़ा नुक़सान हो गया।"

गोपाल सिर नीचा किए जहाँ-का-तहाँ खड़ा रह गया। मैंने कहा—"जाओ, तुम लोग मेक-अप उतारकर घर जाओ। अब यही सीन कल लिया जायगा, रात में। कल पूरे तौर से याद करके आना।"

वे लोग चल दिए। मैं पास में लगे दूसरे सेट पर जाने की तैयारी करने लगा। नौकरों को आज्ञा दी, सब अपने-अपने काम में व्यस्त हो गए। दो अन्य अभिनेताओं से तुरंत ही मेक-अप करके आने को कहा।

कुरसी पर बैठकर मैंने चाय मँगाई, और पीने लगा। लगभग पंद्रह मिनट बाद, कपड़े बदलकर, गोपाल मेरे पास आकर बड़े दीन भाव से खड़ा था। मैंने पूछा—"क्यों? गए नहीं घर?"

"जा रहा हूँ।"

इतना कहकर वह फिर खड़ा रह गया, गया नहीं।

चाय का प्याला ख़ाली करके ट्वाय को लौटाते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुए मैंने गोपाल से कहा—"गोपाल ! तुम्हारी ग़लती पर मुझे अफ़सोस होता है, तुम्हें क्या हो गया था ?"

वह कुछ न बोला। मैंने फिर कहा—"अपने संबाद भी तुम याद नहीं रख सकते ?"

वह चुप रहा। उसकी आँखों में आँसू आ गए। मुझे उस पर दया आई। मैं बोला—"अच्छा, कोई बात नहीं। आइंदा होशियारी से काम करना। जाओ।"

अब उसने मुँह खोला। उसने कहा—"आपसे एक प्रार्थना है, माफ़ी मिले, तो कहूँ।"

"कहो।"

"आप नाराज़ तो न होंगे ?"

"नहीं, नाराज़ी की क्या बात है। कह डालो।"

उसने अपने को बहुत सँभालकर धीमे स्वर में कहा—"मेरा पार्ट किसी दूसरे को दे दें। मैं नहीं कर पाऊँगा।"

मैंने चौंककर उसकी ओर देखा, वह नीची निगाह किए खड़ा था। मैंने पूछा—"इसकी वजह ?"

"आपका काम ख़राब होता है, कंपनी का नुक़सान हो जाता है, और मेरा काम इस-जैसे सीन में कभी अच्छा न होगा, मुझे ऐसा जान पड़ता है।"

"ऐसा विचार तुम्हारे मन में कैसे आया ?"

"यों ही।"

"कोई कारण-विशेष है ?"

"हाँ।"

"वह क्या ?"

उसने एक ठंडी साँस लेकर अपनी आँखें मेरी ओर उठाते हुए उत्तर दिया—"मैं प्रेम का अभिनय करना पसंद नहीं करता। मुझे हार्दिक पीड़ा होती है।"

"पीड़ा होती है ?"

"तीव्र वेदना, जिसे मैं सहन नहीं कर सकता। वह मेरे जीवन की अपनी बात है।"

मेरा कौतूहल बढ़ रहा था। मैंने पूछा—"गोपाल ! क्या वह ऐसा रहस्य है ?"

"रहस्य तो नहीं, पर रहस्य की स्मृति-मात्र है। जाने दीजिए उस बात को। अब आज्ञा दीजिए, चलूँ, देर होगी।"

मैं कुछ कहना चाहता था और, परंतु गोपाल मुझे प्रणाम करके चल दिया। मैं सोचता रह गया, उसके जीवन की अपनी बात।

❀ ❀ ❀

दूसरे रोज़ संध्या-समय, जब मैं कंपनी से घर वापस आने लगा, गोपाल को अपने साथ लेता आया। उस दिन वह कुछ उदास-सा दिखाई देता था। घर आकर मैंने उससे पूछा—"गोपाल ! तुम जानते हो, तुम कंपनी के नौकर हो ?"

उसने धीरे से जवाब दिया—"जी।"

"कंपनी जो काम तुम्हें देती है, उसे अच्छी तरह पूरा करने का प्रयत्न करना तुम्हारा कर्तव्य है।"

"जी हाँ।"

"अब तुम अपने हृदय से इस प्रश्न का उत्तर पूछो कि क्या तुमने अपना कर्तव्य पालन किया है ?"

गोपाल मौन था। वह कुछ गहरे सोच में पड़ गया।

मैं बोला—"गोपाल ! तुमने मुझसे अपने हृदय की बात कह डाली, परंतु क्या यह जानते हो कि सेवा-धर्म पालन करनेवाले को अपने हृदय की पुकार सुनने और उस पर विश्वास करने का कोई अधिकार नहीं रह जाता—उस समय तक, जब तक वह दूसरे की अधीनता में काम कर रहा हो।"

"....."

गोपाल मेरी ओर देखता रहा, कुछ बोला नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैंने फिर कहा—"कंपनी तुम्हें वेतन देती है। ऐग्रीमेंट की शर्तों के बमूजिब तुमसे जो काम चाहे, ले सकती है। तुम्हारी इच्छा, प्रार्थना और रुचि का कंपनी की दृष्टि में कोई मूल्य नहीं। कंपनी एक व्यावसायिक संस्था है। उसकी आर्थिक हानि-लाभ का उत्तरदायित्व उसके कार्यकर्ताओं पर है। ऐसी दशा में तुम कैसे आशा कर सकते हो कि तुम्हारी रुचि के अनुसार ही तुम्हें पार्ट दिया जाय ?"

गोपाल ने कहा—"मैंने तो आपसे प्रार्थना की थी। स्वीकार करना या न करना आपकी इच्छा पर है।"

गोपाल के विचार जानकर भी मैंने फिर कहा—"गोपाल ! मैंने तुम्हें पहले ही मना किया था नौकरी करने से, मगर तुम न माने, और अब काम से दूर भागना चाहते हो। मेरी बात जाने का तुम्हें ज़रा भी ध्यान नहीं ?"

गोपाल ने कुछ उत्तर न दिया। मैंने कहा—"तुम्हारे आगे उज्ज्वल भविष्य है। तुम उन्नति कर सकते हो। ख्याति पाकर तुम बड़ा पैसा पैदा कर सकते हो, मगर इसके लिये लगन, साहस, अध्यवसाय और धीरज की ज़रूरत है। तुम हताश क्यों होते हो ? एक बार फिर कोशिश करो गोपाल !"

इस बार उसके ओंठ काँप उठे। उसने उदासी से कहा—"यदि आप मेरे मन की बात जान लेते, तो—तो कदापि ऐसा न कहते।"

मुझे क्षणिक हँसी आ गई। मैं बोला—"मन की बात ! अरे, उसे जान लेने पर होगा क्या ? मनुष्य की कार्यात्मक प्रवृत्ति और व्यावहारिक कर्तव्य कुछ और ही हुआ करता है। भावुकता और मानसिक विचारों का ध्यान लाना अकर्मण्य बना देता है। फिर ऐसी भूल क्यों करते हो ?"

मेज़ पर रक्खा हुआ एक साप्ताहिक पत्र उठाकर गोपाल उसके पन्ने उलटने लगा। मेरी बात उसे अच्छी न लगी, यह स्पष्ट था। गोपाल का मन अशांत था, हृदय में भावुकता का तूफ़ान उठ रहा था। वह क्या सोच रहा था, इसे जानकर भी अनजान बनकर उसे उसकी कटुतम, परंतु सत्य स्थिति का अनुभव कराना मैं अपना कर्तव्य समझता था। इसमें मेरा स्वार्थ था या नहीं, इसे मैंने सोचने की आवश्यकता न समझी। उस समय थोड़ा ठहरकर मैंने पूछा—"गोपाल ! एक बात पूछूँ, बताओगे ?"

चौंककर उसने मेरी ओर देखा, और धीरे से बोला—"पूछिए।"

"तुम इतने साहस-हीन क्यों हो रहे हो ?"

"मैं नहीं जानता, केवल अनुभव करता हूँ। सच मानिए, इस पापी पेट के लिये मैंने नौकरी की है, क्योंकि इसे भरने के लिये चाँदी के टुकड़ों की ज़रूरत होती है। अब देखता हूँ, जीवन को इतना महँगा समझना भी मेरी एक भूल है। मेरी नौकरी रहे, या छूट जाय, आज से इस चिंता को भी छोड़ देने का निश्चय कर लिया है मैंने—सचमुच मैंने निश्चय कर लिया है, और आपसे कह भी दिया। मुझे क्षमा कीजिएगा, आपकी कृपा, सहानुभूति और स्नेह का मैं कोई फ़ायदा न उठा पाया।"

गोपाल की स्वाभाविक अधीरता और आदर्शवाद की बातों पर मुझे और भी सहानुभूति उत्पन्न हो गई। मैं बोला—"देखो गोपाल ! मैं तुम्हें जाने न दूँगा कहीं—और न नौकरी ही छोड़ने दूँगा अब। तुम्हें मेरे कहने के अनुसार चलना होगा, तुम्हें किसी योग्य बनाकर ही यहाँ से भेजूँगा। मेरे एक कथानक में काम कर लेने के बाद तुम्हें स्वतंत्रता होगी। जी चाहे जहाँ चले जाना, समझे ?"

उसने जवाब दिया—"आपकी शुभ भावनाओं का कृतज्ञ हूँ, परंतु मेरी इच्छा के विरुद्ध एक क़ैदी

पुस्तकालय 112583 हरिद्वार विश्वविद्यालय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की-सी ज़िंदगी बिताने को आप मुझे मजबूर क्यों करते हैं ?"

मैंने हँसकर कहा—"गोपाल ! क़ैदी बनकर ही तो मनुष्य इस संसार में आया है, क़ैदी बनकर ही उसे यहाँ जीना पड़ता है। इसमें नवीनता तो नहीं ? सोचो ज़रा।"

वह चुप हो गया। मैं कहता गया—"जीवन का कोई उद्देश्य, कोई लक्ष्य, कोई ध्येय, कोई आदर्श होना ही चाहिए। क़ैद और बंधन ! स्वभावतः अनुभव करते हुए भी मानव लाचारी से उसे स्वीकार करता है। तुमने अभी संसार की विषमता उतनी नहीं समझी, जितनी मैं समझ चुका हूँ। हृदय पर एक ही ठेस खाकर तुम्हारी भावुकता तुम्हें अकर्मण्य बना रही है। क्या साहस और उत्साह खोकर तुम इतनी जल्दी जीवन के अंधकार में अपना कर्तव्य-मार्ग भूल जाओगे ? नहीं गोपाल ! ऐसा नहीं होने का।"

गोपाल की ओर मेरा ध्यान था, और गोपाल जाने किन-किन विचारों की गुत्थियों में उलझा हुआ था। कुछ देर बाद उसने कहा—"महोदय ! मैं हारा, आप जीते। आत्मा को कुचल देने का नाम ही अगर कर्तव्य है, तो ऐसा ही सही, मैं आपकी बात मान लेता हूँ।"

उस दिन के बाद गोपाल ने कभी मेरी इच्छा के विरुद्ध अपनी ज़बान नहीं खोली।

❀ ❀ ❀

गोपाल के पिछले जीवन के अनेक दुःखांत प्रसंग मुझे धीरे-धीरे ज्ञात हो गए, उसी ने उनका उल्लेख किया। मैं समझ गया, मेरा अनुमान ठीक था। परंतु मैंने यथाशक्ति गोपाल के विचार बदलने का प्रयत्न किया। मैं उसे आदमी बनाना चाहता था—कर्मशील, उत्साही और प्रगति का पुजारी।

और, फिर वातावरण की परिधि ने धीरे-धीरे गोपाल को घेर लिया। असत्य को सत्य और अंधकार को प्रकाश मानने पर उसे विवश होना पड़ा। अब वह उतना गंभीर और भावुक न था, जितना पहले। अपने साथी अभिनेताओं और अभिनेत्रियों से उसका ख़ासा मेल-जोल हो गया था।

उसे उन लोगों के संपर्क में आते मैंने देखा—कभी होटलों में, सिनेमा-घरों में, म्यूज़िक-पॉर्टियों में भी वह मुझे मिला। मैंने समझा, अब गोपाल अपने मन को किसी-न-किसी तरह बहलाए रखने का प्रयत्न करने लगा है।

कंपनी के काम में भी पूरी दिलचस्पी और परिश्रम से अपना सहयोग देते हुए गोपाल ने धीरे-धीरे अभिनय-कला में भी दक्षता प्राप्त कर ली।

मेरी फ़िल्म की शूटिंग समाप्त हो चली थी। उस दिन अंतिम दृश्य था। एक सुनसान और जन-शून्य स्थान में हरीश, जो पागल हो गया है, घटना-वश राधा के साथ आता है। दोनो वहाँ ठहर जाते हैं। हरीश बैठ जाता है। उसकी ओर आँसू-भरी आँखों से देखती हुई राधा भी बैठ जाती है। हरीश दूर पर, क्षितिज की ओर देख रहा है।

राधा अपनी उँगली से ज़मीन पर, धूल में, अपना नाम लिखती है—'राधा'। फिर हरीश के कंधे पर हाथ रखकर कहती है—"सुनो।"

हरीश उसकी ओर आश्चर्य से देखता है, मानो उसे जानता ही नहीं।

राधा ज़मीन पर लिखे हुए नाम की ओर उँगली से संकेत करती और पूछती है—"इसे क्या भूल गए ?"

हरीश ज़मीन की ओर क्षण-भर देखता है, फिर धूल में लिखे हुए उस 'राधा' नाम को अपने हाथों से शीघ्रता से मिटा देता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राधा का हृदय मसोस उठता है। उसकी आँखों से आँसू की दो बूँदें धरती पर गिरकर धूल में मिल जाती हैं। सीन यहीं पर फ़ेड-आउट हो जाता है।

हरीश और राधा की भूमिकाओं में गोपाल और मिस सुशीला का अभिनय बहुत ही स्वाभाविक और हृदयस्पर्शी हुआ। मैंने दोनो को बधाई देते हुए उस दिन का कार्य समाप्त किया, और घर वापस आया।

गोपाल की उन्नति देखकर मुझे बड़ा संतोष था। फ़िल्म प्रकाशित होने पर निश्चय ही गोपाल के नाम की धूम मच जायगी, उसका बड़ा नाम होगा, मुझे विश्वास होने लगा। उसकी ख्याति मानो मेरी ही ख्याति थी।

रात के वक़्त, क़रीब साढ़े नौ बजे, गोपाल आया। मैंने उससे पूछा—"आज बेवक़्त कैसे? क्या सिनेमा देखने नहीं गए?"

उसने कहा—"नहीं, आज जी नहीं चाहता कहीं आने-जाने को। घर पर भी तबियत नहीं लगी। सोचा, आप ही को जाकर कष्ट दूँ। क्षमा कीजिएगा मुझे।"

मेरे पलँग के पास ही कुरसी पर वह बैठ गया। मैंने अपने हाथ का अख़बार मेज़ पर रखते हुए कहा—"गोपाल! एक बात तो बताओ। आज तुमने बड़ा ही स्वाभाविक अभिनय किया, इसका क्या रहस्य है?"

गोपाल ने मुस्किराकर मेरी ओर देखा, और बोला—"वह अभिनय नहीं था, उसमें सत्यता थी। अपनी आत्मा का अनुभव व्यक्त करने में मुझे संभवतः सफलता मिली हो।"

"सत्य कैसे?"

"मेरी अपनी अनुभूति के संस्मरण—ऐसा ही समझ लीजिए।"

"क्यों गोपाल! तुम्हें कैसा लगा था उस समय?"

"अनुकूल और स्वाभाविक, लेकिन इसका श्रेय तो आप ही को है। एक और भी कारण उपस्थित हुआ।"

"वह क्या?"

"कह डालूँ, तो शायद मुझे शांति मिले, मगर वह ऐसी भद्दी बात है, जिसे मैं कोई महत्त्व नहीं देता।"

"फिर भी, बतलाओ तो?"

मैंने गोपाल की ओर उत्सुकता से देखा। गोपाल बोला—"शूटिंग समाप्त होने पर जब मैं और सुशीला ड्रेपरी उतार रहे थे, सुशीला ने मुझसे बहुत कुछ कह डाला।"

"क्या कह डाला?"

"वह बोली—'तुम भी मेरे नाम से नफ़रत करते हो, क्यों न गोपाल? एक दिन मेरा नाम भी ऐसे ही मिटा डालोगे?'"

"और कुछ?"

"मेरे पूछने पर उसने कहा—'वह मुझसे प्रेम करती थी, यद्यपि वह अपने को इस योग्य नहीं समझती। समाज की पतिता उसने अपने को कहा।'"

"तुमने क्या उत्तर दिया उसे?"

"मैं हँसकर चला आया वहाँ से। उत्तर क्या देता।"

"क्यों?"

"क्योंकि उसने भावुकता में वह बात कही थी।"

"तुम भावुकता को कोई महत्त्व नहीं देते गोपाल?"

"नहीं, मैं उसे पागलपन समझता हूँ। वह भी एक प्रकार का अभिनय-मात्र है। आवेश की क्षणिक भावना, जिसमें सत्य नहीं, सार नहीं, अनुभूति नहीं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैंने एक ठंडी साँस ली। गोपाल के स्वभाव में इतना परिवर्तन! मैं कल्पना भी नहीं करता था।

थोड़ी देर तक हम दोनो चुपचाप बैठे रहे। फिर मैंने पूछा—"गोपाल! यदि सुशीला सचमुच तुमसे प्रेम करती हो, तो?"

"संभावना का विचार मन में लाना मैं भूल समझता हूँ।"

"किसलिये?"

"समय ने सब कुछ सिखा दिया है साहब!"

"बड़े दार्शनिक बन गए अब तो?"

"नहीं, यह भी अनुभूति का ही परिणाम है।"

"क्या सत्य ही?"

"एकदम सत्य, जिसमें संदेह के लिये अवकाश ही नहीं।"

❀ ❀ ❀

पंद्रह दिन बाद—

बंबई के रॉक्सी थिएटर में तिल रखने की जगह न थी। मेरा फ़िल्म 'उजाला' रिलीज़ हो चुका था। गोपाल के अभिनय ने दर्शकों को मंत्र-मुग्ध बना दिया था। सबकी ज़बान पर गोपाल की तारीफ़ थी।

शो ख़त्म होने पर फूल-मालाओं से लदे हुए हम दोनो—गोपाल और मैं—थिएटर-हॉल से बाहर निकले। बंबई के सिनेमा-व्यवसायियों का दल हमें हर्ष-ध्वनि के साथ बिदा दे रहा था। हम दोनो मोटर में आकर बैठ गए। मोटर चल दी।

रास्ते में मैंने पूछा—"गोपाल! सोचता हूँ, मेरा कर्तव्य आज समाप्त हो गया।"

गोपाल के ओंठों पर एक मुस्किराहट आई। उसने उत्तर दिया—"मैं भी यही सोचता हूँ, महोदय!"

"तुम एक नामी अभिनेता हो गए हो, यही मेरी आकांक्षा थी।"

उसने सिर झुकाकर मुझे प्रणाम किया।

❀ ❀ ❀

दूसरे दिन, सबेरे-ही-सबेरे, अख़बार में मैंने पढ़ा—"सुशीलाबाई-नामक 'उजाला'-फ़िल्म की अभिनेत्री ने पिछली रात को ज़हर खाकर आत्म-हत्या कर ली। कारण किसी को ज्ञात नहीं।"

मैं चौंक पड़ा। सचमुच ही कारण किसी को ज्ञात नहीं!

मैंने ड्राइवर से मोटर लाने को कहा उसी समय। जब मैं गोपाल के घर पहुँचा, मैंने देखा, गोपाल अपने कमरे में ज़मीन पर बैठा था। आग की अँगीठी सामने दहक रही थी। गोपाल के हाथ में कुछ काग़ज़ थे, जिन्हें एक-एक कर वह अँगीठी में छोड़ता जाता था।

मैंने जाते ही कहा—"गोपाल! यह क्या कर रहे हो?"

उत्तर में उसने अपने हाथ के सारे काग़ज़—पत्र-जैसे थे—एक साथ ही आग में रख दिए। एक ऊँची लौ उठी, फिर बुझने लगी। बुझते-बुझते वे जले हुए काग़ज़ हवा के झोंके से उड़-उड़कर कमरे-भर में फैल गए।

कुछ मेरे तथा गोपाल के कपड़ों से जा लिपटे। मैं मूर्ख-जैसा खड़ा-खड़ा यह सब देखता रहा।

गोपाल ने कहा—"आइए।" उसने कुरसी उठाकर आगे बढ़ाई। मैं कमरे में दाख़िल हुआ। मेज़ पर देखा मुरझाते हुए फूलों के ढेर में चमकते हुए स्टैंडदार फ़्रेम में सुशीलाबाई का एक चित्र। गोपाल मेरी आँखों को देख रहा था।

उसने चित्र उलटते हुए कहा—"होगा भी, इसे यों ही रख छोड़ा है।"

मेरे मुँह से निकला—"यों ही?"

"जी हाँ, यह मेरी ख्याति का मूल्य है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरे हाथ का अख़बार छूटकर गोपाल के पैरों के पास जा गिरा। मैं कुरसी पर अनायास ही गिर-सा गया।

मैंने देखा, जले हुए काग़ज़ों के वे काले कुछ टुकड़े गोपाल के कुरते के दामन से अब भी लिपट रहे थे।

मैंने गोपाल की ओर आँखें उठाईं। वह ज़मीन की ओर देख रहा था।

दस हज़ार रुपए की घड़ियाँ इनाम में !

हमने नीचे लिखी तीन चमत्कारी दवाओं की मशहूरी के लिये अपने ग्राहकों को दस हज़ार रुपए की घड़ियाँ इनाम में मुफ़्त देने का फ़ैसला किया है। जल्दी कीजिए !

* काला तेल *

यह बार-बार लगानेवाला ख़िज़ाब नहीं, एक अद्भुत चमत्कारी तेल है, जो मामूली तेलों की तरह इस्तेमाल किया जाता है, और इसकी ख़ूबी यह है कि इसका व्यवहार करनेवाले दंग रह गए। इससे सफ़ेद बाल एकदम काले हो जाते हैं, और फिर हमेशा काले ही पैदा होते हैं। यह हमारे पूज्य स्वामीजी की एक अमूल्य भेंट है, जो दिमाग़ को भी हर तरह की ताक़त पहुँचाता है, आँखों की ज्योति को बढ़ाता है, और सर में ठंडक पहुँचाता है, बालों की यह ख़ूराक है। मूल्य फ़ी शीशी १॥), ३ शीशी ३॥) और हरएक शीशी के साथ एक फ़ैंसी म्यूट रिस्टवाच मुफ़्त भेजी जाती है, जिसकी मज़बूती और ख़ूबसूरती की गारंटी १० साल है। गारंटी का इक़रारनामा घड़ी के साथ भेजा जाता है। डाक-ख़र्च अलग, ३ शीशी मँगाने से ख़र्च माफ़।

* काले भी गोरे कर दिखाए *

यदि आपके शरीर और मुख का रंग काला पड़ गया हो, तो इस दवा का व्यवहार कीजिए। इससे चेहरे की झाँइयाँ, काले दाग़, कील, फुंसियाँ, चेचक के दाग़ वग़ैरा मिटकर चमड़े का रंग फूल की तरह निखर आता है। हमारी यह 'पेरिस-ब्यूटी' एक आज़मूदा वस्तु है, जो शर्तिया शरीर का रंग पलटकर दिखा देती है। मूल्य फ़ी शीशी १॥), ३ शीशी ३॥), खच अलग। ३ शीशी मँगाने से ख़र्च माफ़। हरएक शीशी के साथ एक फ़ैंसी म्यूट रिस्टवाच मुफ़्त दी जाती है, जिसकी मज़बूती व ख़ूबसूरती की गारंटी १० साल है। गारंटी का इक़रारनामा घड़ी के साथ भेजा जाता है।

* बाल उम्र-भर नहीं उगते *

यह बाज़ारी चीज़ नहीं, वैज्ञानिक ढंग से बनाई गई है। इसका व्यवहार करने से नरम-से-नरम स्थान के बाल जड़ से उखड़ जाते हैं, और फिर कभी पैदा नहीं होते। चमड़ी रेशम की तरह मुलायम हो जाती है। मूल्य १॥), ३ शीशी का ३॥), ख़र्च अलग। ३ शीशी मँगाने से ख़र्च माफ़। हरएक शीशी के साथ एक फ़ैंसी म्यूट रिस्टवाच मुफ़्त दी जाती है, जिसकी मज़बूती और सुंदरता की गारंटी १० साल है। गारंटी का इक़रारनामा घड़ी के साथ भेजा जाता है।

नोट—इन दवाओं के नापसंद होने से दाम वापस दिया जाता है।

हिमालय मेडिकल स्टोर, पोस्ट-बॉक्स नं० १२ (S. M. L.), अमृतसर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाति-पाँति या मृत्यु ?

[श्रीयुत संतराम बी० ए०]

दूर मीलों तक फैला हुआ बीहड़ वन है, और घटाटोप अँधेरी रात। हाथ पसारा नहीं सूझता। बिजली की कड़क और बादल की गरज से हृदय काँप रहा है। चारो ओर हिंसक बनैले जंतुओं के भयानक शब्द सुनाई दे रहे हैं। कहीं सिंह दहाड़ रहा है, कहीं हाथी चिंघाड़ रहा है, कहीं चीता ग़ुर्रा रहा है, और कहीं अरना भैंसा जंगल के वृक्षों को चीरता हुआ दौड़ रहा है। इसके अतिरिक्त पग-पग पर डाकुओं और उठाईगीरों का डर है। ऐसे भयानक समय में बटोहियों का एक दल इस वन से जा रहा है। बटोहियों में से कुछ पोथियाँ लिए हुए हैं, कुछ धनुष-बाण लिए इतरा रहे हैं, कुछ आटा-दाल बेचने जा रहे हैं, और कुछ मेहनत-मज़दूरी से पेट भरने चले हैं। रात हो जाने से सब एक जगह ठहर गए हैं, परंतु खान-पान और मेल-मिलाप की दृष्टि से उनका आपस में कुछ भी संबंध नहीं। प्रत्येक बटोही अपना-अपना चूल्हा अलग जला रहा है। जिनके पास पोथियाँ हैं, वे धनुष-बाणवालों के साथ मिलना नहीं चाहते। इतना ही नहीं, वरन् सफ़ेद जिल्द की पुस्तकोंवाले काली जिल्द की पुस्तकोंवालों को अपने से नीचा मानकर उनके हाथ का खाने को तैयार नहीं। आटा-दाल बेचनेवाले अपने को मेहनत-मज़दूरी करनेवालों से श्रेष्ठ तथा ऊँचा समझकर उनसे दूर डेरा लगाए हैं। जब

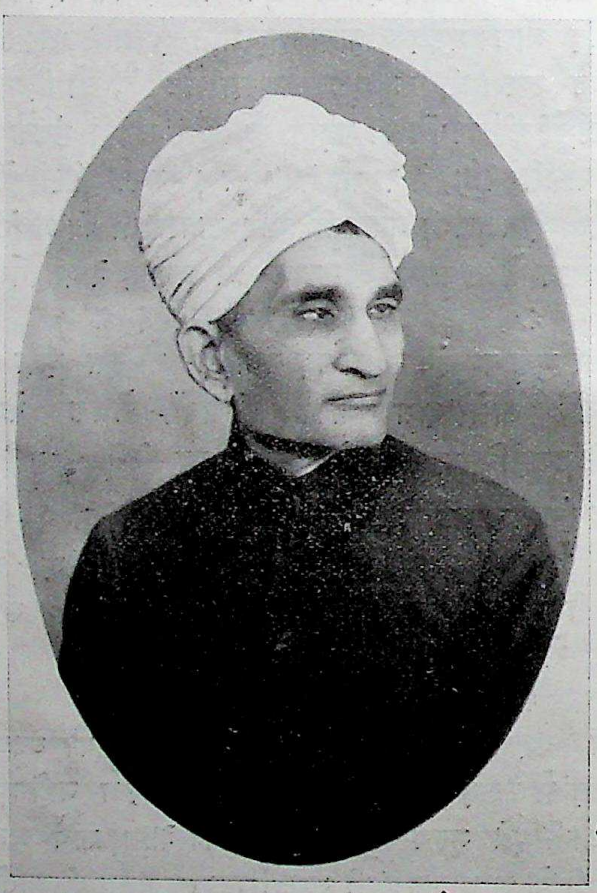

श्रीयुत सतराम बी० ए०

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोई हिंसक जंतु एक बटोही पर आक्रमण करता है, तो दूसरा बटोही उसकी सहायता को नहीं पहुँचता। जब डाकू एक को लूटने आते हैं, तो दूसरा पास खड़ा हँसता है। इस प्रकार यह बटोही-दल क्षण-क्षण घटता जा रहा है। प्रत्येक बटोही अपने को तो बचाने की चेष्टा करता है, परंतु दूसरों के साथ उसकी कोई सहानुभूति नहीं। प्रत्येक अपने को दूसरे से विभिन्न वंश का समझकर उससे कोई सरोकार ही नहीं रखता। वह अपने में ही मस्त पड़ा है। क़ाफ़िले के दूसरे मुसाफ़िरों के सुख-दुःख, हानि-लाभ और जीने-मरने की उसे कुछ भी परवा नहीं। ऐसा ही संस्कार है, जो जाति-भेद-रूपी महारोग में ग्रस्त हिंदू-समाज देखनेवाले पर डालता है।

इस समय जगत् में भीषण रक्तपात और नर-संहार हो रहा है। आकाश से बम बरस रहे हैं। पृथ्वी पर सुरंगें फट रही हैं। सागर में जहाज़ डूब रहे हैं। बड़े राष्ट्र छोटों को निगल रहे हैं। सबल दुर्बल को दबा रहा है। छोटे राज्य इकट्ठे होकर बड़े राज्यों से अपनी रक्षा का उपाय कर रहे हैं। इस समय जो अकेला है, वही दुर्बल है। इस कलिकाल में संघ में ही शक्ति है। यह देखते हुए भी हिंदू अपने को चार नहीं, चार सहस्र जातियों और उप-जातियों में बाँटे पड़े हैं। इन चार सहस्र से भी अधिक जातियों का रोटी-बेटी-व्यवहार की दृष्टि से आपस में उतना भी संबंध नहीं, जितना चिड़िया-घर के जंतुओं का आपस में होता है। सहस्रों हिंदू प्रतिवर्ष मुसलमान और ईसाई बन रहे हैं। दिल्ली की अकेली जामे मसजिद में ही प्रतिदिन औसतन् १६ हिंदू मुसलमान होते हैं, और सारे भारत में ईसाई बननेवालों की संख्या सामान्यतः ३००_मनुष्य दैनिक है। प्रत्येक मनुष्य-गणना में हिंदू घटते और मुसलमान बढ़ते हैं। प्रसिद्ध इतिहासकार स्टेनले लेन पूल अपनी पुस्तक 'मिडीवल इंडिया अंडर मुहम्मडन रूल' में लिखता है—"भारत में लगभग पचास सहस्र हिंदू प्रति-वर्ष मुसलमान बनते हैं (पृष्ठ ४)। जब कोई हिंदू इस्लाम ग्रहण कर लेता है, तो वह एक ऐसे समाज में चला जाता है, जिसमें समता एवं बंधुता है (पृष्ठ ६२)।" आज से ग्यारह सौ वर्ष पूर्व पंजाब में सौ प्रतिशत हिंदू बसते थे। किंतु आज उनकी संख्या घटकर केवल २८ प्रतिसैकड़ा रह गई है। परंतु क्या मजाल कि किसी हिंदू के मन में अपने समाज को इस प्रकार प्रतिदिन मृत्यु-मुख में जाते देख इसका मूल-कारण खोजने तथा उसे दूर करने का विचार तक भी आए। सिंध में दिन-दहाड़े हिंदू नेताओं की हत्या हो रही है। सीमा-प्रांत में हिंदू स्त्री-पुरुषों के अपहरण की घटनाएँ प्रति-दिन सुनने में आती हैं। परंतु क्या मजाल, जो दूसरे प्रांतों के हिंदुओं के कान पर जूँ तक भी रेंगे!

विद्वानों ने सजीव पदार्थ के जो लक्षण बताए हैं, उनमें एक यह भी है कि सजीव पदार्थ बाहर से भोजन खाकर उसे अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शरीर का अंग बना सकता और दुख-सुख का अनुभव करता है। अब यह बात किसी से छिपी नहीं कि हिंदू किसी विधर्मी को शुद्ध करके उसे अपने में पचा नहीं सकते, क्योंकि जाति-पाँति के कारण उसके साथ इनका रोटी-बेटी-व्यवहार नहीं होता। यही कारण है कि जितने भी ईसाई और मुसलमान शुद्ध होकर हिंदू-समाज में आए, उनमें से एकप्रति सैकड़ा को भी हिंदू-समाज आत्मसात् नहीं कर सका। वे लगभग सब-के-सब वापस चले गए। जिस समाज से निकलकर दूसरे धर्मों में जानेवालों की संख्या तो कई सहस्र है, परंतु जो एक भी विधर्मी को हज़म न कर सके, वह कब तक जीता रह सकता है? उसकी दशा उस मरणासन्न रोगी के सदृश है, जो अगणित अतिसार से पीड़ित है, और भोजन एक माशा-भर नहीं पचा सकता।

जाति-भेद के कारण हिंदू-समाज का अंग-प्रत्यंग कटकर अलग हो रहा है। आठ करोड़ अछूत पृथक् हो रहे हैं। चौदह करोड़ शूद्र अलग रुदन कर रहे हैं। जाट बनियों के रक्त के प्यासे हैं। बनिए चमारों की खाल खींचना चाहते हैं। हिंदुओं की धन-दौलत और बहू-बेटियाँ लुट रही हैं। परंतु ये कुंभकर्ण के सहोदर टस से मस नहीं होते। उस दिन श्रीमती भागदेवी (मिसेज़ दुनीचंद) एम्० एल्० ए० (पंजाब) ने सुनाया कि गत वर्ष अंबाला-ज़िले के एक गाँव में बनियों के घर डाका पड़ा। गाँव के जाट बनियों की रक्षा के लिये डाकुओं से लड़ने आए। इस पर उन्होंने कहा कि हम तुम्हारे जाट भाई हैं, ये बनिए तुम्हारे क्या लगते हैं? तुम्हारा हमारे साथ लड़ना उचित नहीं। बस, गाँव के जाट अलग हट गए, और डाकू दिन-दहाड़े बनियों को लूट ले गए। इस प्रकार जाति-पाँति समाज में पृथक्ता का भाव उत्पन्न करके उसका नाश कर रही है।

किसी देश में बसनेवाले लोगों को एक राष्ट्र का रूप देने के लिये उन लोगों का आपस में खान-पान और ब्याह-शादी होना आवश्यक है। जब तक उनका परस्पर रोटी-बेटी-व्यवहार नहीं होता, वे एक राष्ट्र नहीं कहला सकते। एक दूसरे से बेटी-व्यवहार न करने से उनमें एक दूसरे को ऊँचा-नीचा समझने का भाव उत्पन्न हो जाता है, और यह भाव उत्पन्न होते ही उनका ऐक्य नष्ट हो जाता है। उनका दुख-सुख का साझा नहीं रहता, वे आपस में ही लड़-भिड़कर नष्ट हो जाते हैं। जाति-भेद हिंदुओं की विभिन्न बिरादरियों में रोटी-बेटी-व्यवहार का निषेध करता है। इसलिये यह इनके विनाश का कारण है।

इस समय एक राजा की लड़ाई दूसरे राजा से नहीं, वरन् एक समूची जाति की लड़ाई दूसरी समूची जाति से होती है। जब तक चर्चिल हीं हिटलर से नहीं, वरन् अँगरेज़ लोहार जर्मन लोहार से, अँगरेज़ जुलाहा जर्मन जुलाहे से और अँगरेज़ इंजीनियर जर्मन इंजीनियर से श्रेष्ठ न हो, तब तक जर्मन-जाति का पराजित होना कठिन है। इसलिये पश्चिमी देशों में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समस्त राष्ट्र को ऊँचा करने का यत्न किया जाता है। वहाँ भंगी से लेकर पादरी तक सभी को युद्ध-विद्या सिखाई जाती है। परंतु हिंदुओं की वर्ण-व्यवस्था में थोड़े-से ब्राह्मणों को लोकोत्तर मनुष्य और थोड़े-से क्षत्रियों को युद्ध-विद्या-विशेषज्ञ बनाने के लिये करोड़ों मनुष्यों को शूद्र और अछूत बना दिया गया। यहाँ केवल क्षत्रियों को ही शस्त्र-धारण का अधिकार है। दूसरा कोई वर्ण देश की रक्षा के लिये नहीं लड़ सकता। इससे थोड़े-से क्षत्रियों के हार जाने पर समूचा देश गुलाम बनता रहा है। इस सिद्धांत पर चलते हुए इस युग में कोई जाति देर तक स्वतंत्रता-पूर्वक जीवित नहीं रह सकती।

आज के युग में किसी राष्ट्र के जीवित रहने के लिये उसके उद्योग-धंधे एवं वाणिज्य-व्यापार की उन्नति करना आवश्यक है। परंतु जाति-भेद ने लोहार, बढ़ई, जुलाहा, जाट, चमार, तेली आदि लोगों के कामों को नीच, शूद्रों के काम और वाणिज्य-व्यापार के लिये समुद्र-पार जाने को पाप ठहराकर देश के कला-कौशल और वाणिज्य-व्यापार का गला घोंट डाला है। जो व्यक्ति लोहे का काम करने के कारण ही समाज में नीच और तिरस्कृत है, वह अपने काम से प्यार और उसकी उन्नति कैसे कर सकता है? यही कारण है कि पंजाब में प्रायः सब-के-सब हिंदू शिल्पकार मुसलमान हो गए, और जो अभी हिंदू हैं, उनकी दशा निहायत रद्दी है।

हिंदुओं की कई जातियों में लड़कियाँ अधिक हैं, और लड़के कम। वहाँ लड़कियों के लिये लड़के नहीं मिलते। बड़े-बड़े दहेज माँगे जा रहे हैं। तीस-तीस वर्ष की लड़कियाँ काँरी बैठी हैं। कुछ जातियों में लड़के अधिक हैं, और लड़कियाँ कम। इससे बहुत-से युवक अविवाहित रह जाते हैं, और दुराचार फैलता है। दोनो दशाओं में हिंदुओं की संख्या घट रही है। यदि जाति-भेद न हो, तो सब लड़के-लड़कियाँ ब्याही जा सकें, और समाज में दुराचार कम हो जाय।

आठ करोड़ अछूत जाति-भेद का ही स्वाभाविक परिणाम हैं। ऊँच-नीच-मूलक वर्ण-व्यवस्था की सबसे ऊँची चोटी पर ब्राह्मण बैठा है, और सबके नीचे भंगी पड़ा कराह रहा है। यह अछूतपन हिंदू-समाज-रूपी शरीर में कोढ़ लगा है। जिस जाति का तृतीयांश कोढ़ से गल रहा हो, वह कितने दिन जीवित रह सकती है?

इसलिये हिंदू-समाज और भारत-भूमि के सभी हितचिंतकों से—विशेषतः नवयुवकों से—प्रार्थना है कि वे देश और जाति की सबसे बड़ी शत्रु जाति-पाँति का एकदम अंत कर दें। यह काम कोई बहुत कठिन भी नहीं। स्वर्गीय स्वामी श्रद्धानंद, महात्मा गांधी, भाई परमानंद, श्रीजवाहरलाल नेहरू, डॉक्टर सर गोकुलचंद, लाहौर, हाईकोर्ट के जज बख्शी टेकचंद, श्रीराजगोपालाचार्य, सुधा-संपादक श्रीदुलारेलाल इत्यादि नेता और मध्यम स्थिति के बहुसंख्यक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गृहस्थ इसे कार्यतः तोड़ चुके हैं। इसके लिये कोई उनका बाल बाँका नहीं कर सका। जब इतने लोग जाति-पाँति तोड़ चुके हैं, तो आप क्यों नहीं तोड़ सकते? आपके केवल दृढ़ संकल्प करने की आवश्यकता है। जाति-भेद का बोदा क़िला अपने आप गिर जायगा। इस समय हिंदू-समाज का अस्तित्व ख़तरे में है। यदि जाति-भेद न मिटाया गया, तो हिंदुओं के गला फाड़कर चिल्लाने और समाचार-पत्रों के स्तंभ काले करने से भी पाकिस्तान-योजना पूरी होकर रहेगी, क्योंकि मुस्लिमों की जन-संख्या दिन-पर-दिन द्रुतगति से बढ़ रही है, जाति-पाँति में ग्रस्त हिंदू उसकी बढ़ती रोकने में असमर्थ हैं। सिंध में बीस वर्ष बाद एक भी हिंदू देख न पड़ेगा। जब पंजाब, सिंध और सीमा-प्रांत में सब मुसलमान-ही-मुसलमान होंगे, तो पाकिस्तान बनने में कसर क्या रह जायगी। जाति-भेद एक रूढ़ि है, जो हिंदुओं को रसातल ले जा रही है। पुरानी रूढ़ियों के झूठे मोह में जाति की नाव मँझधार में डूबने न दीजिए। याद रखिए—

लीक-लीक गाड़ी चलै, लीके चलै कपूत;
तीनो लीके ना चलैं—सायर, सिंह, सपूत।

साहस की कमर बाँधिए। इस पुण्य-कार्य में जगत्-पिता का आशीर्वाद आपके साथ होगा।

५ घड़ियाँ और १,९७५ सुंदर इनाम केवल १॥।=) में

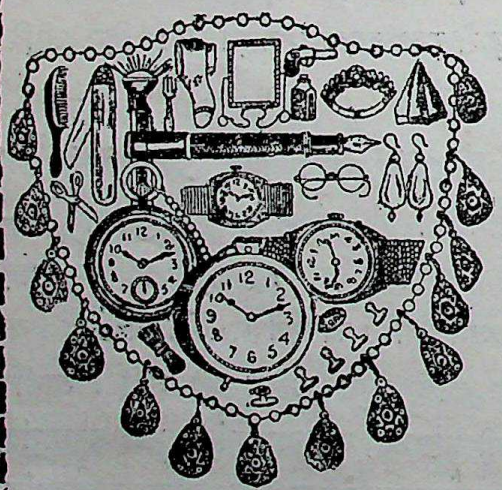

हमारी सुगंधित ओटो रोज़ की १६ शीशी केवल १॥।=) में लेनेवाले को दो रेलवे टाइम डमी पाकेट वाच, दो रोल्ड गोल्ड गिल्ट डमी रिस्ट-वाच मय फ़ीता के, १ डमो टाइमपीस, १ सेफ़्टी रेज़र, १ चाक़ू, एक साबुन और एक अदद फ़ाउंटेन पेन मय १४ केरिट रोल्ड गोल्ड निब और एक अदद १,५०० फ़ीट रेज की टॉर्च लाइट इत्यादि मुफ़्त दी जायँगी। पैकिंग पोस्टेज ।॥-), जल्दी मँगवा लें, वरना यह मौक़ा हाथ न आएगा।

पता—जी०वाच-कंपनी, पोस्टबक्स नं० २७ (S.M.L.) अमृतसर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्मार्पण

[श्रीयुत 'वचनेश'जी]

गोविंद, यह ले अपनी गैयाँ❀ ।
दस गैयाँ दस ही दिसि भागैं, होयँ नाहिं इकठैयाँ ;
हारि गयो मैं हाथ न आवैं, ऐसी हैं हरहैयाँ ।
मो पै भार डारि चारन को आप रहत अलगैयाँ ;
बातन अब आवौं नहिं तोरी, जानि लई लँगरैयाँ ।
दौरत बीते तीन जाम मोहिं, आई साँझ-समैयाँ ;
तापित तन-बल ज्वाब दै गयो, ल न सकौं छन छैयाँ ।
तेरी गाय मान की तेरे, मानै न आन मनैयाँ ;
तनि 'वचनेस' बजाव बाँसुरी, जुरि अइहैं इकठैयाँ ।

❀ गैयाँ (गोगण)=गाएँ या इंद्रियाँ ।

पि० वेंकटाचल पंडित की आयुर्वेदीय लोकामयहर कस्तूर-गोलियाँ

ये गोलियाँ बहुमूल्य पदार्थों से—जैसे सोना, चाँदी, नेपाली कस्तूरी, मूँगा आदि से—बनाई गई हैं । इनको अलग-अलग या २ से ४ तक पान में खाने से हाज़मा बढ़ता है । हर प्रकार का बुख़ार दूर होता है । जल-वायु और भोजन के परिवर्तन का असर बराबर होता है, रक्त साफ़ होता है, तथा उसकी चाल अबाध्य होती है, खाँसी, सरदी, ज़ुकाम, पेट का दर्द, क़ब्ज़ियत, कमर और छाती का दर्द, कमज़ोरी, जूड़ी-बुख़ार और प्लेग को नाश करती हैं । जिस स्थान में छूत की बीमारियाँ फैली हों, वहाँ नित्य पान के साथ ३-४ गोलियाँ दीजिए । बच्चों के रोग में जादू के समान असर दिखाएँगी । दाम ३०० गोलियों की बोतल का ।), डाक-महसूल अलग । ६ बोतलों का १॥

मिलने का पता—

१२ बोतलों का मूल्य डाक-व्यय-सहित २॥।-) }
२५ ,, ,, ,, ५≡) } श्रीसीताराघव वैद्यशाला, मैसूर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब्दुल्ला इस्माइल क़ाज़ी

[श्रीयुत भवानीदयाल संन्यासी]

(१)

आज से बीस साल पहले की बात है। साँझ की सुंदर वेला थी, और ऋतु थी बड़ी सुहावनी। मैं डरबन में श्रीसोराबजी रुस्तमजी के घर पर बैठा दक्षिण-आफ़्रिका की तत्कालीन परिस्थिति पर कुछ मित्रों से बातचीत कर रहा था। अचानक मेरी दृष्टि एक युवक पर पड़ी, जो मेरे पास ही बैठा था, और जिसे मैंने पहले कभी नहीं देखा था। शरीर पर साधारण अँगरेज़ी पोशाक थी, और सिर पर देशी काली टोपी। क़द मँझोला और रंग साँवला, मुँह चौड़ा और ललाट ऊँचा। दिमाग़ साफ़ और बोली तेज़। आँखों में प्रतिभा, चंचलता और बुद्धिमानी की झलक। सूरत साधारणतया अच्छी, देह की गठन मज़बूत और स्वास्थ्य-संपन्न। उसकी ओर मेरा ध्यान खिंच गया, और जानने की इच्छा हुई कि यह है कौन? पूछने पर मालूम हुआ कि यह नौजवान कहीं बाहर से आया है, और डरबन में कोई रोज़गार करने का मंसूबा बाँध रहा है। मुझे भला व्यापार से क्या वास्ता? मैंने तो बहुत दिन पहले ही उससे नाता तोड़ लिया था, और अपना जीवन जनता की सेवा में निछावर कर चुका था। इसलिये युवक के लक्ष्य की ओर मेरी कोई दिलचस्पी न थी। कुछ ही वर्षों बाद यह युवक प्रवासी हिंदुस्थानियों के भाग्याकाश में शानदार सितारे की तरह चमक उठेगा, और अपनी योग्यता, विद्वत्ता एवं कार्य-दक्षता से दक्षिण-आफ़्रिका के इतिहास में अपना नाम अमर कर लेगा, इस बात की कल्पना करना भी उस दिन मेरे लिये कठिन था। मैंने तो यहाँ तक उपेक्षा की कि उसका नाम याद रखने की भी ज़रूरत नहीं समझी।

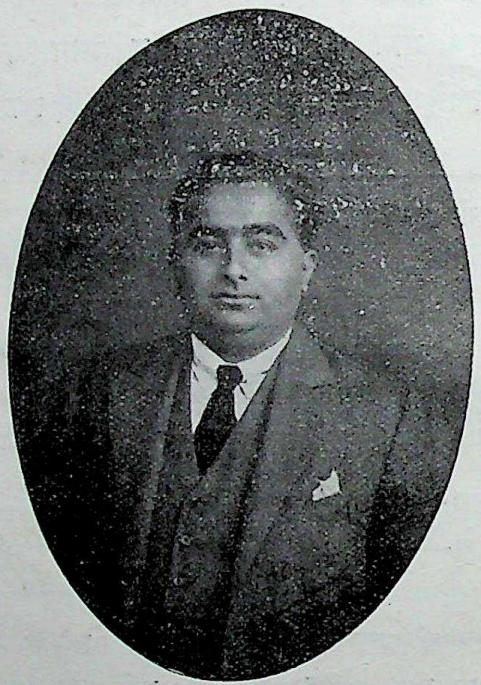

अब्दुल्ला इस्माइल क़ाज़ी

कुछ दिनों बाद युवक ने डरबन की ग्रे-स्ट्रीट पर एक दफ़्तर खोला, और आढ़तिए का धंधा शुरू किया। उसे काम करने के लिये दो कुमार मिल गए—मगनलाल और हरी। एक हिंदी-भाषी और दूसरा मदरासी। मैं कभी-कभी उस दफ़्तर में जाता था, और वह भी मगनलाल से मिलने के लिये; क्योंकि मगनलाल को आर्य-समाज की हवा लग चुकी थी, और उसने वैदिक धर्म और हिंदी-भाषा-प्रचार के लिये सिकौलेक में एक संस्था खोली थी। धीरे-धीरे मुझे उस युवक का नाम याद हो गया—अब्दुल्ला इस्माइल क़ाज़ी। धंधे में बरक़त हुई, रोज़गार चल निकला। सौदागर-मंडली में साख जम गई, जनता पर भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोब पड़ने लगा। फिर भी मैं उसकी ओर से उदासीन ही रहा।

(२)

तीन वर्ष बाद, सन् १९२५ में, दक्षिण-आफ्रिका के हिंदुस्थानियों पर एक भारी संकट आ पड़ा। जनरल स्मट्स की सरकार का अंत हो चुका था, और उसकी जगह जनरल हर्टजोग की नई राष्ट्रीय सरकार क़ायम हुई थी। डॉक्टर मलान आंतरिक मंत्री (Minister of Interior) बनाए गए थे। उन्होंने हिंदुस्थानियों के विरुद्ध एक नवीन क़ानूनी मसविदा (Bill) यूनियन पार्लियामेंट में पेश किया, जिसका नाम था क्षेत्र-सुरक्षित-विधान (Areas Reservation Bill), और उद्देश्य था भिन्न-भिन्न वर्गों के लिये अलग-अलग बस्ती बसाने की व्यवस्था। इस नई बला से हिंदुस्थानी जनता काँप उठी। उसके बचे-खुचे मानवीय अधिकारों पर भी प्रहार होने लगा। हिंदुस्थानियों का एक डेपुटेशन डॉक्टर मलान के दरवाज़े पर पहुँचा, अर्ज़-मिन्नत की, चिल्ल-पों मचाई, लेकिन सब बेकार। वह टस से मस नहीं हुआ, और अपने संकल्प पर दृढ़ रहा। अंत में केपटाउन में साउथ अ़फ्रीकन इंडियन-कांग्रेस (South African Indian Congress) की परिषद् हुई, और उसमें एक डेपुटेशन हिंदुस्थान भेजने का निश्चय किया गया। नेटाल, ट्रांसवाल और केप-प्रांत से सात प्रतिनिधि चुने गए, जिनमें एक मैं भी था। डेपुटेशन जाने की तैयारी हो गई। उसमें अच्छे-अच्छे कार्यकर्ता चुन लिए गए। अब कांग्रेस के सामने यह सवाल आया कि यहाँ की स्थिति कौन सँभालेगा, जनता का नेतृत्व कौन करेगा, इस विपद् की घड़ी में उसे शांत कौन रक्खेगा, उसे सजग और सचेत रखने की ज़िम्मेदारी कौन लेगा, और 'साउथ-अ़फ्रीकन इंडियन-कांग्रेस' का संचालन कौन करेगा? इधर-उधर निगाह दौड़ाई गई, किंतु ऐसा कोई कहीं दिखाई नहीं पड़ा। अंत में लाचार होकर यह भार श्रीअब्दुल्ला इस्माइल क़ाज़ी को सौंप देना पड़ा। एक अनुभव-शून्य नवयुवक को इतनी बड़ी ज़िम्मेदारी का पद सौंप देना, जनता के नेतृत्व की बागडोर उसके हाथ में थमा देना कुछ कम ख़तरे की बात न थी, लेकिन दूसरा कोई उपाय न था। क़ाज़ी साहब पर विश्वास किया गया, और वह केवल जनता के विश्वास-पात्र ही नहीं सिद्ध हुए, बल्कि अपनी प्रखर प्रतिभा और कार्य-दक्षता का परिचय देकर दक्षिण-आफ्रिका के हिंदुस्थानियों के श्रद्धा-भाजन भी बन गए। उनमें नेतृत्व की शक्ति तो थी ही, उसके विकास और उत्कर्ष का अवसर मिल गया। उन्होंने अपने नेतृत्व का ऐसा चमत्कार दिखाया कि प्रवासी भाई मंत्र-मुग्ध हो गए। उधर हिंदुस्थान में घोर आंदोलन हो रहा था, और इधर क़ाज़ी साहब ने लोकमत को सावधान और जाग्रत् रक्खा।

उसी समय हिंदुस्थान से पेडीसन-डेपुटेशन आया। उसके साथ क़ाज़ी साहब ने देश-भर का दौरा किया, और डेपुटेशन के सदस्यों को यहाँ की स्थिति समझने में सहायता पहुँचाई। उस डेपुटेशन में सर देवप्रसाद सर्वाधिकारी, सैयद सर रज़ाअली और सर गिरिजाशंकर वाजपेयी भी थे। हमारे आंदोलन का परिणाम यह हुआ कि केपटाउन में गोलमेज़-परिषद् हुई, जिसमें दक्षिण-आफ्रिका और हिंदुस्थान-सरकार के प्रतिनिधि शामिल हुए, और अंत में यहाँ के प्रवासी भाइयों के संबंध में एक समझौता हो गया। उस समय तक क़ाज़ी साहब ने सार्वजनिक क्षेत्र में अपनी ऐसी हैसियत बना ली थी कि राइट ऑनरेबुल श्रीनिवास शास्त्री-जैसे धुरंधर विद्वान् को भी क़ाज़ी साहब की सलाह उपयोगी और महत्त्व-पूर्ण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मालूम हुई। केपटाउन-समझौते के बाद ही शास्त्री-जी हिंदुस्थान के प्रथम राजदूत बनकर यहाँ पधारे। फिर तो वह क़ाज़ी साहब के प्रेमी बन गए, और क़ाज़ी साहब उनके अंध-भक्त। इस अंध-भक्ति का परिचय मुझे किंबर्ली-कांग्रेस में मिला, जहाँ उन्होंने शास्त्रीजी के इशारे से स्कूलों में देशी भाषा पढ़ाए जाने के मेरे प्रस्ताव का ज़ोरदार विरोध किया था।

कहने का मतलब यह कि सन् १९२५ में पहले-पहल यहाँ के सार्वजनिक क्षेत्र में क़ाज़ी साहब की प्रतिभा, दूरदर्शिता और नीतिज्ञता की किरणें छिटकीं, और शीघ्र ही समस्त दक्षिण-आफ्रिका में फैल गईं। वह सन् १९२५ से आज तक, बीच में दो वर्ष छोड़कर, साउथ-आफ्रिकन इंडियन-कांग्रेस' के मंत्री हैं। सर मुहम्मद हबीबुल्ला और सर फ़ज़लहुसैन के शिष्ट मंडल को राय और सलाह देने के लिये जो कमेटी बनी, उसके भी आप सदस्य थे। क़ाज़ी साहब दक्षिण-आफ्रिका के प्रश्नों के ऐसे विशेषज्ञ हो गए हैं—"एक बार डरबन के डिप्टी मेयर श्रीमती बेंसन ने उन्हें हिंदुस्थानी समस्या का विश्व-कोष कहकर पुकारा था। एक अँगरेज़ी अख़बार ने लिखा था—"क़ाज़ी यदि दुर्भाग्यवश हिंदुस्थानी न होता, तो उसमें ऐसी विलक्षण शक्ति, प्रतिभा और क्षमता है कि वह यहाँ के मंत्रिमंडल में स्थान पा सकता था।" ऐसे व्यक्ति के जीवन का थोड़ा-सा पूर्व-परिचय देकर आगे बढ़ना उचित होगा।

(२)

अब्दुल्ला इस्माइल क़ाज़ी का जन्म सूरत-ज़िले के कठोर-गाँव में हुआ था। यह गाँव गायकवाड़ी-रियासत में ताप्ती-नदी के तट पर बसा है। इस गाँव में एक बार स्वर्गीय साधु ऐंड्रयूज़ भी गए थे, और वहाँ व्याख्यान देते हुए उन्होंने कहा था कि यह गाँव मुझे इसलिये प्रिय है कि इसने अब्दुल्ला क़ाज़ी-जैसे सार्वजनिक सेवक को जन्माया है। ऐंड्रयूज़ साहब इन्हें बहुत चाहते थे, और जब डरबन आते, तो प्रायः इन्हीं के साथ ठहरते थे।

इनका जन्म सन् १८९८ में हुआ था, अतएव इनकी उम्र अभी केवल ४२ साल की है। इनके पिता का नाम श्रीइस्माइल मुहम्मद क़ाज़ी था, जो ख़ासकर 'भाई चाचा' नाम से मशहूर थे। अठारह महीने की आयु में इनकी माता का देहांत हो गया। सन् १९०१ में अपनी बहन के साथ दक्षिण आफ्रिका चले आए। पिताजी पहले से ही यहाँ मौजूद थे।

अब्दुल्ला क़ाज़ी यहाँ के वातावरण में पलने लगे। इस्पिंगो नाम की एक छोटी-सी बस्ती में रहते और डरबन के हाईग्रेड-स्कूल में पढ़ते थे। आज भी नेटाल में कुछ ऐसे व्यक्ति हैं, जो इस बात पर अभिमान करते हैं कि वे क़ाज़ी के सहपाठी हैं। किंतु शायद महा-कवि तुलसीदास की यह बात भूल जाते हैं कि "उपजहिं एक संग जल माहीं; जलज-जोंक जिमि गुन बिलगाहीं।" आठ वर्ष की अवस्था में, सन् १९०६ में, वह अपने देश चले गए, और वहाँ की शिक्षा-संस्कृति का कुछ प्रभाव लेकर, सन् १९०८ में, फिर नेटाल लौट आए।

यहाँ आकर फिर उसी हाईग्रेड-स्कूल की शरण लेनी पड़ी। उस समय हिंदुस्थानी विद्यार्थियों के लिये यही सर्वोपरि स्कूल था। इसमें केवल प्रारंभिक शिक्षा दी जाती थी, आगे बढ़ने की कोई व्यवस्था न थी। उस समय शिक्षा-विभाग ने यह नियम बना दिया था कि चौदह वर्ष की अवस्था के बाद किसी हिंदुस्थानी बच्चे को शिक्षा न दी जाय। यदि वे पढ़-लिखकर समझदार हो जायँगे, तो यहाँ के गोरों की ग़ुलामी कौन करेगा? यह थी उस समय हिंदुस्थानी शिक्षा के संबंध में नेटाल-सरकार की नीति और मनोवृत्ति।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उच्च शिक्षा प्राप्त करने की इच्छा मृग-तृष्णा ही थी। अतएव हमारे क़ाज़ी महाशय मिनिक्स में महात्मा गांधी के आश्रम में दाख़िल हो गए। कुछ दिनों तक महात्माजी के सत्संग और सहवास का अवसर मिल गया।

हिंदुस्थान की ओर रवाना हुए। पिताजी तो सीधे देश चले गए, लेकिन यह पूर्व-आफ्रिका में छ सप्ताह ठहर गए। अभी किशोरावस्था थी, सैर-सपाटे का शौक़ था, इसलिये पूर्व-आफ्रिका में इनका ख़ूब मनोरंजन हुआ। इनके हृदय में

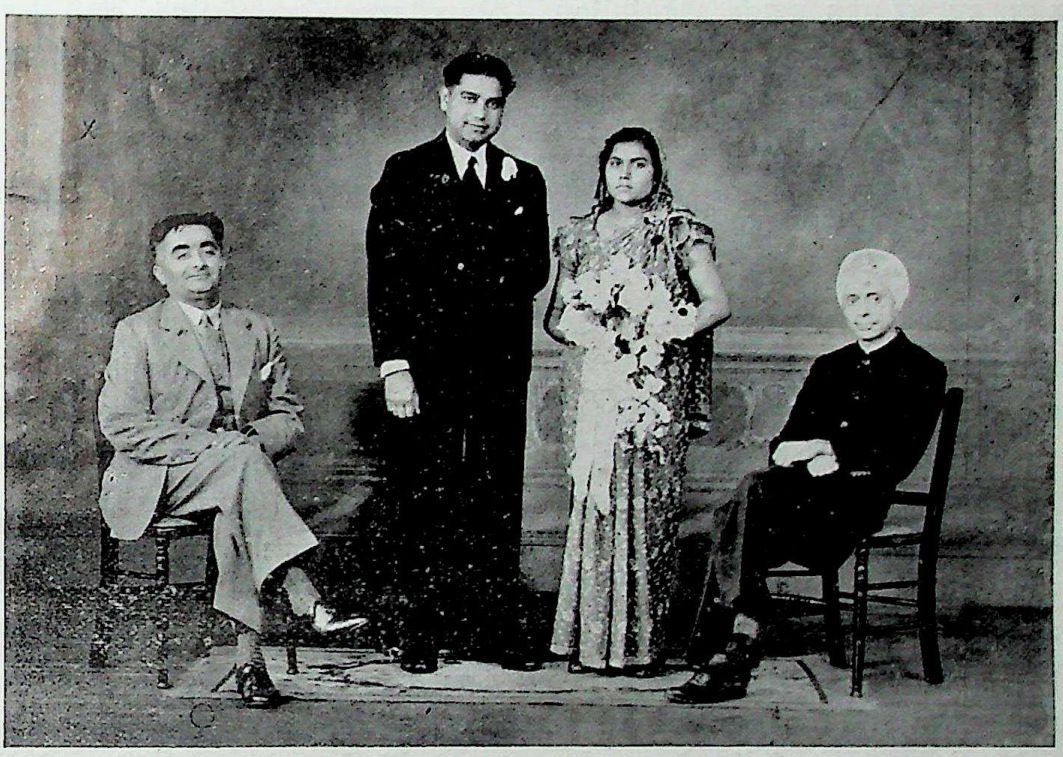

१. श्रीअब्दुल्ला इस्माइल क़ाज़ी, २. श्रीमगनलाल, ३. श्रीमती गायत्रीदेवी, ४. श्रीभवानीदयाल संन्यासी।

किंतु यह थे आख़िर व्यापारी के बच्चे! यद्यपि जन्म तो हुआ था क़ाज़ी-कुल में, किंतु पिताजी करते थे नेटाल में व्यापार, इसलिये उन्होंने अब्दुल्ला को दूकानदारी का काम सीखने के लिये एस्कोर्ट भेज दिया। वहाँ यह तीन साल एक दूकान में नौकरी करते रहे, वह भी केवल दो पौंड मासिक वेतन पर।

सन् १९१३ में यह अपने पिता के साथ

उच्च शिक्षा प्राप्त करने की लालसा थी, डिगरी हासिल करने की तमन्ना थी, अतएव हिंदुस्थान पहुँचते ही अलीगढ़-कॉलेज में भरती हो गए। किंतु वहाँ इनका ठिकाना नहीं लग सका, अधिक ठहरना असंभव हो गया। बात यह हुई कि कॉलेज में एक डिबेटिंग सोसाइटी थी, उसमें इनका भाषण हो गया। देह में ताज़ा ख़ून था और दिमाग़ में उमड़ता हुआ जोश, इसलिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन्होंने राजभक्ति के विरुद्ध कुछ कह डाला। इनकी दलील यह थी कि हिंदुस्थानियों की राजभक्ति का अर्थ है दिमाग़ी ग़ुलामी। जब अपना राज्य ही नहीं, तो फिर भक्ति किसकी? विदेशी सत्ता के प्रति भक्ति-भाव प्रदर्शित करना हद दर्जे की ग़ुलामी है। इससे कॉलेज के अधिकारियों में हलचल मच गई। एक प्रवासी लौंडे में ऐसी हिम्मत, उसके मुँह से ऐसी बेहूदी बातें? उपेक्षा करने से तो कॉलेज की कीर्ति में कलंक लगेगा। अंत में कॉलेज के कर्णधारों ने ऐसे उद्दंड विद्यार्थी को वहाँ रहने देना उचित नहीं समझा, और इन्हें कॉलेज से निकालकर ही दम लिया।

लाचार होकर यह अलीगढ़ से बंबई लौटे। बंबई में इन्होंने ख़ासकर हिसाब-किताब या बहीखाता की शिक्षा प्राप्त की। यह परीक्षा में बैठे, और पास भी हो गए। हिंदुस्थानी मा-बाप को सबसे बड़ी यही इच्छा होती है कि बेटे की शादी हो जाय, और वे बहू का मुँह देख लें। परंपरा के अनुसार सोलह साल की अवस्था में अब्दुल्ला क़ाज़ी की शादी हो गई, किंतु यह गृहस्थाश्रम के जंजाल में पड़ने से पहले देशाटन के लिये निकल पड़े। सोचा, पैर में तो मज़बूत बेड़ी पड़ ही गई, अब तो घर से निकलना भी कठिन होगा। मन के सारे अरमान मन में ही दबे रह जायँगे, और देशाटन का अवसर फिर हाथ नहीं लगने का। अतएव यह साहस करके घर से निकल पड़े। पास केवल १८०) थे। कभी धर्मशाला में ठहर जाते और कभी सराय में। जो कुछ मिलता, खा लेते। कभी अच्छी चीज़ों का भोग लग जाता, कभी रूखे-सूखे पर सब्र करना पड़ता, और कभी-कभी अनशन-व्रत भी हो जाता। डेढ़ साल तक यात्रा का सिलसिला जारी रहा, और इन्होंने हिंदुस्थान के सिवा रंगून तक का चक्कर लगाया। वास्तव में देशाटन शिक्षा का एक महत्त्व-पूर्ण अंग है। इन्होंने डेढ़ साल देशाटन करके अनुभव का एक ख़ज़ाना तैयार कर लिया।

सन् १९१५ में देशाटन करके बंबई आ गए। वहाँ स्वर्गीय मौलाना शौकतअली से भेंट हो गई। मौलाना साहब आबकारी-महकमे से इस्तीफ़ा दे चुके थे, और बंबई में उन्होंने 'काबा में ख़ुदा'-सोसाइटी खोल रक्खी थी। हमारे क़ाज़ी साहब भी अब क़ौमी सेवक बन गए, और इस सोसाइटी के एक सदस्य। इनकी ड्यूटी थी हज से जहाज़ आने पर बंदरगाह पर जाकर यात्रियों को मदद पहुँचाना। इस काम को अच्छी तरह करके यह मौलाना साहब के स्नेह-भाजन बन गए। यह काम तो कभी-कभी आ पड़ता था, अन्यथा खाने-पीने और चैन करने में ही दिन कटते थे। मौलाना साहब अपने आदमियों को खिलाने-पिलाने का बड़ा ख़याल रखते थे। उनके यहाँ खाने-पीने का बड़ा मज़ा था; 'समूसा' खानेवालों की भीड़ लगी रहती थी। यहाँ आकर अब्दुल्ला क़ाज़ी की यात्रा की सारी थकावट मिट गई, और खाने-पीने में तकलीफ़ की वजह से शरीर को जो घाटा हुआ था, वह सूद-सहित पूरा हो गया।

पर अब्दुल्ला क़ाज़ी के पैर में एक ऐसी रेखा थी, जो इन्हें चैन से नहीं बैठने देती थी। इस बार इन्होंने केवल देशाटन के विचार से एक स्टीमर में नौकरी कर ली। पढ़े-लिखे तो थे ही, इसलिये जहाज़ में क्लर्क का काम मिल गया। इस ढंग से सिंगापुर, नानर्किंग, संघाई और कंटोन तक का सैर-सपाटा कर आए, और सुदूर पूर्व की एक झलक देख ली।

सन् १९१६ के एप्रिल-मास में अब्दुल्ला महाशय फिर दक्षिण-आफ्रिका आ गए, और इस बार दो साल तक डेकनबर्ग के पास इंकोनजा-क्राइटना में रहे। वहाँ दूकानदारी करते थे, और काश्तकारी भी। पिता और भ्राता भी साथ ही थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वहीं इन्हें राजनीति का कुछ ज्ञान और प्रवासी भाइयों की सेवा करने का अनुराग हुआ। वहाँ से, सन् १९१८ में, यह डरबन आ गए, और स्वर्गीय अमद भयात के यहाँ नौकरी करने लगे।

सन् १९२१ में आप दक्षिण-आफ्रिका के हिंदुस्थानी फ़ुटबाल-खेलाड़ियों का एक दल (South African Indian Sporting Contingent) लेकर हिंदुस्थान गए। इस टीम ने बंबई, कलकत्ता, मदरास, दिल्ली, आगरा, बनारस, पूना आदि नगरों में १५ मैच खेले, जिनमें सात में हार हुई, और आठ में जीत। इसी साल यह अहमदाबाद-कांग्रेस में भी शामिल हुए। कांग्रेस के निर्वाचित प्रधान देशबंधु चितरंजन दास बंदीघर में थे, अतएव उनकी जगह हकीम अजमलख़ाँ प्रधान बनाए गए। इस बार की यात्रा में इन्होंने तत्कालीन वायसराय लॉर्ड रिडिंग से भी भेंट की। प्रवासी भारतीयों के संबंध में इंपीरियल इंडियन सिटीजनशीप-एसोसिएशन के एक डेपुटेशन में शामिल होकर स्वर्गीय श्रीपी० के० नायडू भी, दक्षिण-आफ्रिका के प्रतिनिधि की हैसियत से, इस डेपुटेशन में सम्मिलित हुए थे।

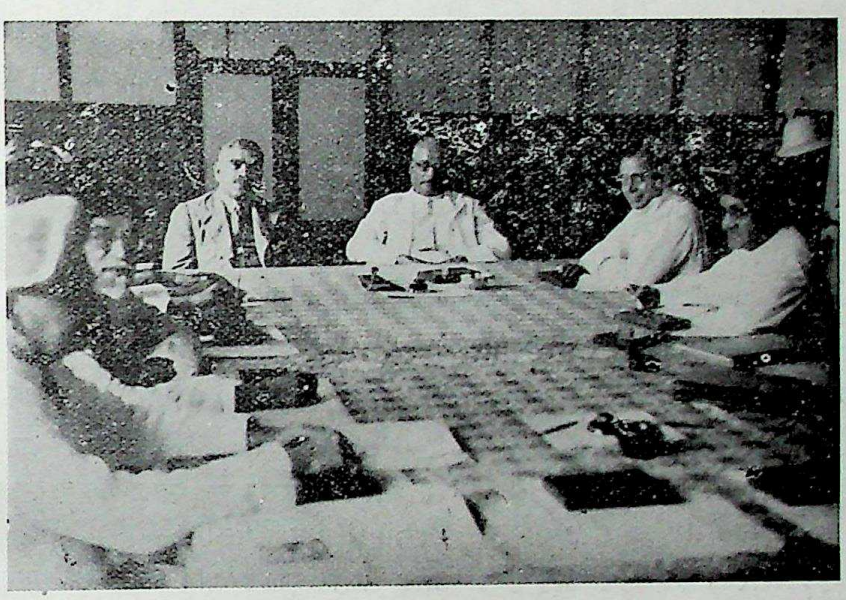

बंबई की इंपीरियल इंडियन सिटीजन शीप-एसोसिएशन में स्वामी भवानीदयाल संन्यासी के साथ दक्षिण-आफ्रि.का की स्थिति पर चर्चा। (१४वीं अगस्त, सन् १९३९)

[बाईं ओर से—(१) सर रहीमतुल्ला चिनोइ, (२) डॉ० टी० एम्० क़ाज़ीजी, (३) हिंदुस्थान-सरकार के शिक्षा, स्वास्थ्य और भूमि-विभाग के वज़ीर कुँवर सर जगदीशप्रसाद, (४) सर पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास, (५) स्वामी भवानीदयाल संन्यासी, (६) श्रीमावजी सेठ।]

(४)

सन् १९२२ में हिंदुस्थान से अब्दुल्ला क़ाज़ी दक्षिण-आफ्रिका वापस आ गए। इस बार इन्होंने स्वतंत्र व्यवसाय शुरू किया, और 'ए० आई० क़ाज़ी (प्रोप्राइटरी) लिमिटेड'-नामक फ़र्म को जन्म दिया, जो आज सारे दक्षिण-आफ्रिका में मशहूर है। क़ाज़ी साहब ने जो कुछ कमाया, वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने परिश्रम, पुरुषार्थ और प्रतिभा से। इन्होंने बाप-दादे की कमाई पर गुलछर्रे नहीं उड़ाए। इनकी आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी है। यह अब केवल एक आढ़तिया ही नहीं रह गए, ज़मींदार भी बन गए हैं। डरबन-शहर में इनकी कई अच्छी-अच्छी ज़मीनें हैं, जिनमें मकान बने हैं, और काफ़ी किराया आता है। इनके फ़र्म का आलीशान दफ़्तर हिंदुस्थानियों के लिये एक गौरव की चीज़ है। हाल ही में इन्होंने एक सिनेमा-कंपनी भी खोली है। जिस तरह यह मेहनत और बुद्धिमानी से कमाना जानते हैं, उसी तरह अच्छा खाना-पीना और ढंग से रहना भी। इनका रहन-सहन बहुत ऊँचा है। मेहमानदारी में इन्हें बड़ा आनंद आता है। इनके बाल-बच्चे अलग मकान में रहते हैं, और यह अलग एक मकान में अकेले ही। इनका घर इधर-उधर के सार्वजनिक नेताओं और कार्य-कर्ताओं के लिये तो मानो धर्मशाला ही बन गया है। ख़ैर, ऐसे तो अनेक हिंदुस्थानी हैं, जो धनोपार्जन में सिद्धहस्त हैं, किंतु क़ाज़ी साहब की विशेषता है उनकी सार्वजनिक सेवा।

(५)

सन् १९३८ में जब मुझे नेटाल-इंडियन-कांग्रेस का प्रधान चुना गया, तो मैंने इसी शर्त पर इस पद को स्वीकार किया था कि क़ाज़ी साहब कांग्रेस का मंत्रित्व ग्रहण करें। कुछ लोग क़ाज़ी साहब के स्वभाव से घबराते हैं, किंतु मुझे तो इनके साथ काम करने में बड़ा आनंद आता है। यदि मैं अपने सभापतित्व के समय कुछ काम कर सका, तो वह मंत्री क़ाज़ी साहब के ही सहयोग और सहायता का परिणाम था। १८९४ में महात्मा गांधी ने नेटाल-इंडियन-कांग्रेस की स्थापना की थी। यह महात्मा गांधी की पहली कृति है, और प्रवासी भाइयों की पहली संस्था। इसके सदस्यों की संख्या हज़ार-डेढ़ हज़ार से अधिक न थी, किंतु सन् १९३८ में पाँच सहस्र से अधिक हो गई। यह क़ाज़ी साहब के ही प्रोत्साह का फल था। इन्होंने डरबन-नगर में कांग्रेस का बाक़ायदा दफ़्तर खोला, जहाँ दो क्लर्क हमेशा ग़रीब-दुखियों की सेवा में तैनात रहते थे। यहाँ से वृद्ध, रोगी और अपंग हिंदुस्थानियों को सरकारी पेंशन दिलाने में मदद दी जाती थी। ऐसे एक हज़ार आदमियों को सरकारी सहायता मिलने लगी थी। बच्चों के लिये इन्होंने कांग्रेस के अंतर्गत शिशु-सुखदायक विभाग (Child Welfare Department) खोला। विधवा और बेकारों को रसद देने के लिये एक कांग्रेस-डिपो क़ायम किया। इन्हीं की प्रेरणा से नेटाल-इंडियन-कांग्रेस की पहली परिषद् हुई, जिसमें नेटाल की बीस कांग्रेस-शाखाओं के प्रतिनिधियों ने भाग लिया था। उसमें सबसे महत्त्व की बात यह हुई थी कि छुट्टी के दिनों में ग़रीब बच्चों के लिये विश्रांति-गृह (Holiday Home for Poor Children) बनाने का निश्चय हुआ था, और उसी समय एक हज़ार पौंड दान का अभिवचन भी मिल गया था।

क़ाज़ी साहब अपनी सेवा के प्रताप से ऐसे लोक-प्रिय हो गए कि कुछ स्वयंभू नेताओं की आँखों में काँटे की तरह खटकने लगे। जिस समय सैयद सर रज़ाअली ने एक प्रवासी हिंदू-महिला से विवाह कर लिया, उस समय कुछ लोग इतना बिगड़े कि 'खिसियानी बिल्ली खंभा नोचे' की भाँति कांग्रेस से ही अलग हो गए। इसमें क़ाज़ी साहब का क़सूर यही था कि इन्होंने कांग्रेस को इस सांप्रदायिक झमेले से पृथक् रखना ही उचित समझा। हिंदू-हित के हिमायतियों का कथन यह था कि कांग्रेस सर रज़ाअली से असहकार कर दे, और यदि वह इस बात को मंज़ूर न करे, तो कम-से-कम क़ाज़ी साहब उससे अलग हो जायँ। इसका यह मतलब था कि यदि कांग्रेस उनकी हाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में हाँ न मिलावे, तो उसकी हस्ती ही मिटा दी जाय। मगर क़ाज़ी साहब न तो कांग्रेस से विरक्त हुए, और न उसके अस्तित्व पर कुठाराघात होने दिया। उस समय इन्होंने ऐसी दृढ़ता का परिचय दिया कि विरोधियों के छक्के छूट गए। यही नहीं, बल्कि इन्होंने कांग्रेस का इतना सुंदर संगठन कर दिया, जैसा पहले कभी नहीं था। यहाँ यह कह देना अप्रासंगिक न होगा कि जो लोग उस समय हिंदू-हित के ठेकेदार बनकर सैयद रज़ा-अली के विरुद्ध ज़मीन-आसमान के क़ुलाबे मिला रहे थे, उन्हीं महानुभावों के हस्ताक्षर से आज पुस्तिका छपती है, और उसमें सैयद साहब का चित्र आदर के साथ निकलता है।

ख़ैर, क़ाज़ी साहब कुछ नामधारी नेताओं की आँख पर बेतरह चढ़ गए। इनके विरुद्ध प्रचंड प्रचार होने लगा। यह दोष मढ़ा गया कि क़ाज़ी महाशय दक्षिण-आफ्रिका के हिंदुस्थानियों के डिक्टेटर बन गए हैं; इन्हें सार्वजनिक जीवन से हटा देने में ही क़ौम का कल्याण है। कट्टरपंथियों से यह कहा जाने लगा कि वह पक्का मुसलमान है, और उसके नेतृत्व के कारण हिंदू-हित ख़तरे में है। क़ाज़ी साहब की पीठ के पीछे यह सब गंदा प्रचार हो रहा था, किंतु इनका मुक़ाबिला करने की किसी में हिम्मत न थी। सच बात तो यह है कि क़ाज़ी साहब ने कभी डिक्टेटरी नहीं चलाई, वह हरएक बात में कांग्रेस-कमेटी की राय और सलाह लेते रहे हैं। मज़े की बात तो यह है कि जिन लोगों ने सैयद साहब की शादी के बहाने प्रवासी भाइयों में सांप्रदायिक कलह की आग लगाई थी, उनकी ओर से क़ाज़ी साहब पर संप्रदायवाद का दोष मढ़ा जाना वैसा ही है, जैसा शैतान के मुँह से बायबिल की शिक्षा। वास्तव में क़ाज़ी साहब एक राष्ट्रवादी मुसलमान हैं, और इन्होंने हिंदू-हित की कभी उपेक्षा नहीं की। पंद्रह वर्ष के अनुभव के बाद मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि दक्षिण-आफ्रिका में इनके जोड़ का राष्ट्रवादी मुसलमान विरला ही कोई होगा। इसीलिये तो कुछ कट्टरपंथी मुसलमान इनसे नाराज़ रहते हैं।

(६)

सन् १९३९ में यहाँ के प्रवासी हिंदुस्थानियों पर एक भारी आफ़त आ गई। आंतरिक मंत्री श्रीस्टाटाफ़ॉर्ड ने फिर हिंदुस्थानियों को गोरों की बस्ती से हरिजनों की भाँति अलग बसाने की एक योजना तैयार की। जहाँ कांग्रेस-कर्मी रचनात्मक काम में लगे थे, वहाँ अब उन्हें इस खटपट में उतरना पड़ा। कांग्रेस का एक डेपुटेशन केपटाउन गया। वहाँ उसने प्रधान मंत्री जनरल हर्टजोग और आंतरिक मंत्री श्रीस्टाटाफ़ॉर्ड के दरवाज़े खटखटाए, और बार-बार दुहाई दी कि 'केपटाउन'-समझौते की मौजूदगी में ऐसा विधान बनाना हिंदुस्थानियों के साथ सरासर अन्याय है, किंतु यह सब अरण्य-रोदन ही सिद्ध हुआ। इसलिये झटपट मुझे दक्षिण-आफ्रिका के हिंदुस्थानियों का—नेटाल-इंडियन-कांग्रेस, ट्रांसवाल-इंडियन - कांग्रेस और केप-इंडियन - कांग्रेस का एकमात्र प्रतिनिधि चुनकर हिंदुस्थान भेजा गया। मैं उधर चला गया, और इधर कुछ लोग कांग्रेस की हस्ती मिटाने और सार्वजनिक क्षेत्र से क़ाज़ी साहब को हटाने के मंसूबे बाँधने लगे। इस काम में उन्हें जो कुछ सफलता हुई, वह भी क़ाज़ी साहब की ही सहायता से। डरबन के सिटी-हॉल में उपस्थित दो-ढाई हज़ार कांग्रेस-सदस्य क़ाज़ी साहब के सिवा और किसी की बात सुनने को तैयार न थे, यहाँ तक कि नवीन सभापति महाशय की ऐसी दुर्गति हुई कि जनता ने उन्हें बोलने का अवसर ही नहीं दिया। किंतु जब क़ाज़ी साहब ने ही सदस्यों से ज़ोरदार अपील की कि जो पद-प्रतिष्ठा के भूखे हैं, उन्हीं को कांग्रेस की बाग-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डोर सौंप देनी चाहिए, तब तो जनता लाचार हो गई, और हृदय थामकर बैठ गई। यह क़ाज़ी साहब के जीवन में सबसे बड़ी राजनीतिक भूल थी, जिसका फल क़ौम को आगे चलकर भोगना पड़ा।

कांग्रेस के इन नए अधिकारियों ने विधि-विरुद्ध कांग्रेस का नाम बदलकर 'एसोसिएशन' रख दिया। हिंदुस्थान की राष्ट्रीय महासभा की कार्य-समिति में केवल १५ सदस्य हैं, किंतु इस नवीन छोटी-सी संस्था की कमेटी में १५० मेंबर चुने गए। रचनात्मक कार्य का अंत हो गया। यही नहीं, बल्कि यूनियन-सरकार और भारत-सरकार के एजेंट जनरल की वाहवाही लूटने और कृपा-पात्र बनने के लिये 'एसोसिएशन' ने एक ऐसा आश्वासन-पत्र (Assurance) लिखकर दे दिया कि भविष्य में यदि कोई हिंदुस्थानी योरपियनों की बस्ती में ज़मीन ख़रीदने का साहस करेगा, तो 'एसोसिएशन' उसे रोकने में कोई बात उठा नहीं रक्खेगी। 'रोगी चाहे, सो वैद्य बतावे'—सरकार ने तुरंत सिटी-कौंसिल और 'एसोसिएशन' के कुछ मेंबरों की एक कमेटी बनाकर यह गंदा काम उसे सौंप दिया। जिस पृथक्करण-नीति (Segregation policy) के विरुद्ध कांग्रेस गत सोलह वर्षों से आंदोलन करती आई थी, उसे 'एसोसिएशन' के अधिकारियों ने स्वेच्छा-पूर्वक स्वीकार कर लिया।

जब यह बात प्रकट हुई, तो हिंदुस्थानी जनता में सनसनी फैल गई। सुषुप्त कांग्रेस को फिर जाग्रत् किया गया, और उसके द्वारा यह घोषणा कर दी गई कि 'एसोसिएशन' का आश्वासन एक गोष्ठी की ओर से है, समग्र हिंदुस्थानी क़ौम की ओर से नहीं। इसके बाद नेटाल-इंडियन-कांग्रेस का वार्षिकाधिवेशन हुआ, जिसमें हज़ारों सदस्यों ने शामिल होकर कांग्रेस में अटल विश्वास प्रकट किया। हाल ही में नेटाल-इंडियन-कांग्रेस की दूसरी परिषद् भी हुई थी, और नेटाल-भर के प्रतिनिधियों ने उसमें भाग लेकर कांग्रेस की नीति में केवल विश्वास ही नहीं प्रकट किया, बल्कि 'एसोसिएशन' के आश्वासन का तीव्र प्रतिवाद भी किया। क़ाज़ी साहब के व्यक्तित्व, त्याग और सेवा की बदौलत ही कांग्रेस फिर अपने पैरों खड़ी हो सकी। इस समय क़ाज़ी साहब कांग्रेस के उप-प्रधान ही नहीं, उसके प्राण भी हैं।

(७)

दक्षिण-आफ़्रिका के सार्वजनिक सेवकों में क़ाज़ी साहब का स्थान बहुत ऊँचा है। कई सभा-समितियों से उनका संबंध है, और कई हिंदुस्थानी पाठशालाओं के यह व्यवस्थापक हैं। प्रवासी बालकों में शिक्षा-प्रचार की ओर इनका विशेष ध्यान रहता है। इधर यूनियन-सरकार की ओर से जितने कमीशन बैठाए गए, उनमें इन्होंने ही हिंदुस्थानी प्रतिनिधियों का नेतृत्व किया है। पार्लियामेंट की सिलेक्ट कमिटियों में भी समय-समय पर यह हिंदुस्थानी नेता की हैसियत से बयान देते रहे हैं। इधर पंद्रह साल से दक्षिण-आफ़्रिका में ऐसा कोई सार्वजनिक कार्य नहीं हुआ, जिसमें इनका हिस्सा न हो। हिंदुस्थानियों में सबसे पहले आप ही को यूनियन-सरकार ने डरबन का 'कमिश्नरऑफ़् औथ्स' (Commissioner of Oaths) बनाया था। गौरांग जनता पर भी इनका अच्छा प्रभाव है।

यह एक प्रभावशाली वक्ता हैं। इनका भाषण बड़ा ओज-पूर्ण होता है। इनके बोलने का ढंग इतना अच्छा है कि श्रोताओं पर गहरा प्रभाव पड़ता है। इनकी लेखनी भी बलवती है—भाषा मनोहर, शैली निराली, विवेचन-पद्धति गंभीर और भाव हृदय-स्पर्शी होते हैं। इनके युक्ति-पूर्ण और प्रामाणिक लेख और वक्तव्य पढ़कर तबियत फड़क उठती है, किंतु इन्होंने आज तक कोई ग्रंथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं लिखा। इनकी सारी लेखन-शक्ति ख़र्च होती रही है सरकार के पास भेजने के लिये अर्ज़ी और स्मृति-पत्र (Memorandum) तैयार करने में, हिंदुस्थानियों के सवाल पर अख़बारों में वक्तव्य देने में और कांग्रेस की सालाना रिपोर्ट लिखने में। यह बड़े स्वाध्यायशील हैं, कार्य - व्यस्त होते हुए भी संसार के सर्वश्रेष्ठ लेखकों की रचना पढ़ा करते हैं।

(८)

जहाँ इनमें अनेक सद्गुण हैं, वहाँ कुछ दुर्गुण भी हैं। गुलाब में काँटे होते ही हैं। यह समय की पाबंदी करना नहीं जानते। सभाओं में देर करके आना इनका स्वभाव बन गया है। कोई भी काम अंतिम घड़ी में करने बैठते हैं, और वह भी उतावली और जल्दबाज़ी में। इससे इनके सहकर्मियों को बड़ी हैरानी होती है। सबसे भारी दुर्गुण इनमें यह है कि ज़बान क़ाबू में नहीं रहती, संयम से बाहर चली जाती है। जब कभी यह बिगड़ते हैं, और इनके मुख से दुर्वचन निकलने लगते हैं, तो कोई भी संस्कारी आदमी कान में उँगली डाले बिना नहीं रह सकता। किंतु इनका हृदय इतना स्वच्छ है कि इस अवगुण को ढक लेता है। मैंने स्वयं देखा है कि एक व्यक्ति पर नाराज़ होकर यह अंट-संट बक रहे हैं, लेकिन घड़ी-भर बाद उसी व्यक्ति के सामने आँसू टपका रहे और क्षमा-याचना कर रहे हैं। यदि यह अपनी वाणी सँभाल सकते, तो इनकी जोड़ का आदमी मिलना मुश्किल होता। मेरे सिवा शायद ही इनका कोई सहयोगी और सहकर्मी हो, जो इनके दुर्वचन की चोट से मर्माहत न हो चुका हो। जो लोग इनसे परिचित हो चुके हैं, वे इनकी इस प्रकृति की उपेक्षा ही करते हैं। अदालत-फ़ौजदारी से यह दूर भागा करते हैं; कभी किसी को कचहरी में घसीटकर परेशान करना इनके स्वभाव के बाहर की बात है।

(९)

यहाँ क़ाज़ी साहब की प्रवृत्तियों का सविस्तर वर्णन करना असंभव है। इधर पंद्रह साल से इनका काम दक्षिण-आफ्रिका के हिंदुस्थानियों के इतिहास का एक महत्त्व-पूर्ण अंग बन गया है। जब से क़ाज़ी साहब से मेरी मित्रता हुई, तब से वह गाढ़ी ही होती गई, उसमें कभी कुछ फ़र्क़ नहीं पड़ा। दक्षिण-आफ्रिका में मुझे जो इने-गिने सच्चे स्नेही मिले, उनमें श्रीअब्दुल्ला क़ाज़ी का नंबर बहुत ऊँचा है। यह हैं एक राष्ट्रवादी मुसलमान और मैं हूँ एक राष्ट्रवादी आर्य-समाजी। अतएव राष्ट्रीयता के नाते हमारे बीच में जो भाईचारा है, वह हिंदू-मुस्लिम-मेल का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। हम दोनो का यह सिद्धांत है कि हम हिंदुस्थानी पहले हैं, बाद में और कुछ।

मैं इन्हें प्यार करता हूँ, और यह मेरा आदर। इनसे अनेक राजनीतिक विषयों में मेरा मतभेद है। इनकी कई सार्वजनिक नीतियाँ और प्रवृत्तियाँ मुझे पसंद नहीं आतीं, इसलिये अक्सर मैं इनका विरोध भी किया करता हूँ। फिर भी हमारे व्यक्तिगत संबंध में कोई अंतर नहीं पड़ता। हम एक दूसरे के दृष्टिकोण को सहानुभूति के साथ देखते और विचार-विनिमय के बाद समझौते का कोई रास्ता ढूँढ़ निकालते हैं।

मेरी धारणा है, इस समय क़ाज़ी साहब से बढ़कर दक्षिण-आफ्रिका में प्रवासी-प्रश्न का विशेषज्ञ दूसरा कोई नहीं। इधर कुछ दिनों से ट्रांसवाल के श्रीसुलेमान नाना की योग्यता की प्रभा अवश्य छिटकने लगी है। मुझे खेद है, तो यही कि शीघ्र ही मुझे क़ाज़ी साहब - जैसे स्नेही और सहकर्मी से बिछुड़ना पड़ेगा। मैं सदा के लिये हिंदुस्थान जा रहा हूँ—अजमेर के आदर्श नगर में 'प्रवासी-भवन' बनाकर स्थायी रूप से बसने, और यह दक्षिण-आफ्रिका में ही रहेंगे। इस भूमि को अंतिम नमस्ते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने में मुझे जिन कारणों से दुःख होगा, उनमें क़ाज़ी साहब का बिछोह भी है। फिर भी मुझे भरोसा है कि चाहे हम कहीं रहें, हमारी मित्रता जीवन-भर निभेगी। क़ाज़ी साहब दीर्घायु होकर प्रवासी भाइयों की सेवा में सदैव कटिबद्ध रहें, यही परमात्मा से मेरी नम्र प्रार्थना है।

सब तरफ़ से इलाज कराकर निराश हुई देवियों

वंध्या व संतान-हीन स्त्रियों को शुभ संदेश !

स्त्रियों के सब तरह के रोगों का

शर्तिया इलाज

औरत का इलाज औरत ही ठीक तरह कर सकती है

क्योंकि

औरत एक औरत को ही अपने गुप्त रोगों का पूरा हाल निःसंकोच बता सकती है।

स्त्रियों के प्रदर-रोग, पानी पड़ना, गर्भाशय के दोष, योनि-रोग, बच्चेदानी की ख़राबी, नसों व नलों की ख़राबी, मासिक धर्म का ठीक न होना, समय पर न होना, चढ़-उतरकर होना, ख़ून का कम-ज्यादा जाना, मासिक धर्म के समय पीठ (कमर) में ज्यादा दर्द होना वग़ैरा कोई भी गुप्त रोग है, और आप इलाज कराकर निराश हो चुकी हैं, तो एक बार नीचे लिखे पते पर ज़रूर मिलें या पत्र-व्यवहार करें।

विश्वास रक्खो

यहाँ से तुम्हें निराश न होना पड़ेगा, शर्तिया आराम हो जायगा। आपका पैसा हराम में नहीं जायगा।

एक बार परीक्षा ज़रूर करें।

[सरकार से रजिस्टर्ड]

चपलादेवी वैद्या, चपला-भवन, गली रावलिया, मथुरा (यू० पी०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सीसे की चवन्नी

[श्रीयुत कालीचरण चटर्जी एम्० ए०]

नावटी ताज्जुब कालिख-सा मेरे चेहरे पर फैल गया, जब पानवाले ने चवन्नी लेने से साफ़ इनकार कर दिया। मैंने बेबसी से फिर पूछा—"बिलकुल नहीं चलेगी?"

"हरगिज़ नहीं बाबूजी! देखिए न, बिलकुल सीसे की बनी है।"

लाचार होकर मैंने पानवाले को एक चलनेवाला पैसा दिया, और पान का बीड़ा मुँह में डाल, उस चवन्नी को पॉकेट में रख पान की दूकान से निकलते हुए कहा—"देखो तो, सीधे आदमी से सभी दग़ा करते हैं। न-जाने किसने और कब मेरे मत्थे मढ़ दिया है इसे, मुझे मालूम ही नहीं। ख़ैर, परमेश्वर मालिक हैं।"

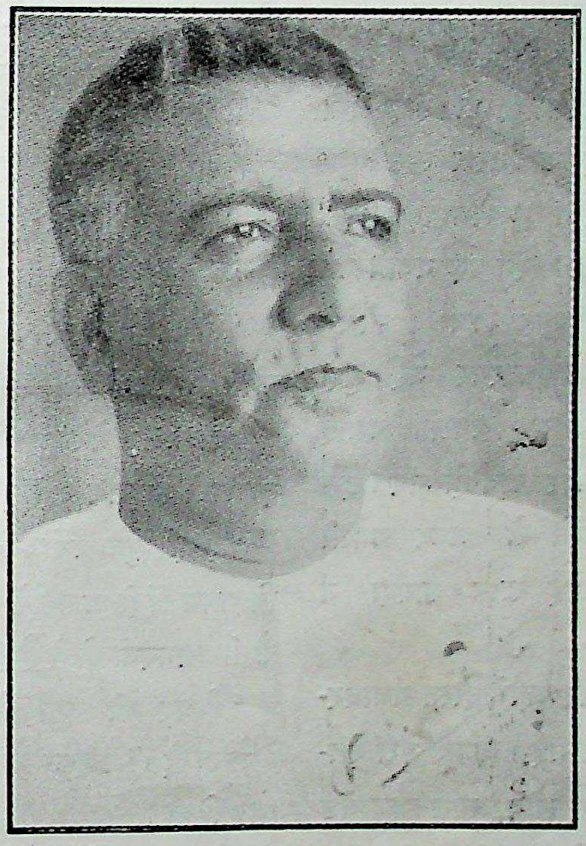

श्रीयुत कालीचरण चटर्जी एम्० ए०

रास्ते-भर दिल में रह-रहकर अफ़सोस होता रहा कि एक पैसा यों ही ख़राब गया। लेकिन करता क्या? अगर पान वापस करता, तो शैतान का पिल्ला ठीक समझ जाता कि पान ख़रीदना एक सीसे की चवन्नी चलाने का महज़ बहाना था। अच्छा, देखूँ और एक जगह।

लॉरी-स्टैंड से एक लॉरी छूटने ही वाली थी, और उसी के पास एक पान-सिगरेट् की दूकान भी थी। मैंने सोचा, अब की बीड़ी ख़रीदी जाय, हालाँकि मेरे लिये दोनो ही बराबर हैं। बस, जल्दी का भाव दिखलाते हुए दूकानदार से कहा—"पैसे की बीड़ी तो देना, मुझे इसी लॉरी से जाना है।"

दूकानदार ने बीड़ी तो दी, मगर चवन्नी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेने को किसी तरह राज़ी न हुआ। अपनी शान में बट्टा लगने के डर से एक पैसा देकर उससे भी पिंड छुड़ाना पड़ा; मजबूरी का इलाज ही क्या? नतीजा यह हुआ कि चवन्नी फिर जेब में आ गई, और लॉरी चल दी। मैंने सोचा था, जल्दबाज़ी का भाव दिखलाने से दूकानदार विना परखे चवन्नी ले लेगा, पर दूकानदार था खुर्राट, पान-सिगरेट-वाले अमूमन् खुर्राट ही होते हैं, उनकी आँखों में धूल झोंकना आसान काम नहीं। वह शायद मेरी सारी कारस्तानी ताड़ गया था, क्योंकि मेरे मुँह की तरफ़ ताकते हुए उसने ताने से भरी ऐसी मुस्कान छोड़ी कि मारे शर्म के मेरे चेहरे का रंग उड़ गया। मैंने झटपट रास्ता नापना शुरू किया। सोचने लगा, दोनो चालाकियाँ कारगर नहीं हुईं, अब किस तरकीब से यह चवन्नी चलाई जाय? दो पैसे तो बेकार खर्च हो गए। इस तरह फ़िज़ूल खर्च करने से अगर चवन्नी चल भी गई, तो कोई खास फ़ायदा न होगा।

चलते-चलते सड़क पर अपने दोस्त गजाधर-प्रसाद से मुलाक़ात हो गई। गज्जू मेरा बचपन का साथी था। हम लोग साथ-साथ थर्ड से लेकर सेविंथ तक पढ़े थे; फिर तीन-तीन साल उसी क्लास में फ़ेल होकर स्कूल से निकाले गए थे। अर्से के बाद उसे एकाएक देखकर मुझे अचरज हुआ। मैं निहायत खुश हो गया। खास तौर से गज्जू की जेब से दो-एक बार पैसे की खनक सुनकर मुझे बड़ी तसल्ली हुई। मैंने पुकारा—"गज्जू!"

गज्जू रुका, उसने मेरी तरफ़ देखा, और मुझे पहचान लिया—"कौन? अनमोलक! अरे! तुम यहाँ कहाँ?"

मैंने जवाब दिया—"ऐसे ही मटरगश्ती को निकला था।"

गज्जू मुझे पाकर बहुत खुश हो रहा था। उसके ओंठों के किनारे मुस्किराहट जैसे हिलकोरे लेती थी। उसने पूछा—"हो तो मज़े में?"

मैंने कहा—"बस, चल रहा है किसी तरह। तुम्हारा क्या शग़ल है?"

"मैं दलाली करता हूँ।"

"दलाली! उसमें तो खासी आमदनी है।"

"सो तो भगवान् की कृपा है। तुम क्या करते हो भइ?"

"डॉक्टरी। मेरे 'मायूसों की पनाह'-नामी दवाखाने का नाम नहीं सुना क्या?"

"हाँ-हाँ, सुना क्यों नहीं। कभी-कभी उसका विज्ञापन हिंदी-अखबारों में भी देखा है। इससे कैसी आमदनी होती है?"

"ईश्वर की कृपा से खाने-भर को मिल जाता है।" कहकर मैंने परमात्मा को धन्यवाद दिया।

"लेकिन तुमने डॉक्टरी कब पास की थी? या किसी अच्छे डॉक्टर के कंपाउंडर थे?

"नहीं भइ, यह सब कुछ नहीं। मेरी दवाएँ कुछ तो निजू पेटेंट हैं, और कुछ साधु-संतों से मिली हैं। इतने दिनों बाद तुम्हें देखकर मुझे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतना आनंद हुआ कि मैं कह नहीं सकता। तुम्हें देखकर न-जाने कितनी पुरानी बातें याद आ रही हैं।" कहते-कहते और उसके साथ चलते-चलते मेरी आँखें भर आईं। "इंटरवल के वक्त, बैरिस्टर साहब की कोठी में हर रोज़ लीची चुराना, मास्टर साहब से एक दिन माली की शिकायत, सज़ा गोशमाली—ये सब वाक़या एक-एक करके आँख के सामने आ रहे हैं।"

इतने में हम एक अँधेरी गली के मोड़ पर पहुँच गए। मैंने विचारा, ऐसा बढ़िया मौक़ा हाथ से न निकल जाने देना चाहिए। अपना काम कर फ़ौरन् से पेश्तर गली के अंदर ग़ायब हो जाऊँगा। इस नीयत से मैं वहीं एकाएक रुक गया, और उससे पूछा—"हाँ भइ गज्जू, तुम्हारे पास एक चवन्नी का चेंज होगा?"

"हाँ, होगा तो।" कहकर गज्जू ने चार इक-न्नियाँ निकालकर दे दीं।

मैं झट उन्हें ले "फिर मुलाक़ात होगी।" कहकर भेद खुल जाने से पहले टल जाने की कोशिश कर रहा था। मगर गजाधर ठहरा दलाल, लोगों को चराना उसका काम था। पानवाले से कम चंट थोड़े ही था। चवन्नी लेते ही बोला—"ज़रा ठहरो अनमोलक! यह कैसी चवन्नी? यह तो बिलकुल सीसे की मालूम होती है।"

मैं एकदम मानो आसमान से गिरने का भाव प्रकट करते हुए बोला—"ऐं! क्या कहा? सीसे की? अरे भइ, भलेमानुस को सभी लोग ठगते हैं। दुनिया में किसी का यक़ीन नहीं किया जा सकता।"

झख मारकर गजाधर की चारो इकन्नियाँ मुझे लौटानी पड़ीं। मैं भगवान् से मनाने लगा कि धरती फटे, और भगवती सीता की तरह मैं उसमें समा जाऊँ। लेकिन इस युग में यह मुमकिन नहीं समझकर बग़ल की गली में घुस पड़ना ही मैंने ग़नीमत समझा। "यहाँ कुछ काम है।" कहते हुए मैं भाग निकला, और गजाधर भी अपने काम पर चला गया।

ओफ़्को! गज्जू कितना बड़ा चमार है। मैंने चवन्नी दी, वह उसे विश्वास कर न ले सका, उसे बजाकर देखा। अफ़सोस, आजकल दोस्त भी दोस्त का एतबार नहीं करता! जिस दुनिया में ऐसी बात है, उसमें रहने से कोई फ़ायदा है या नहीं, इस समस्या को सुलझाने में बड़ी कोशिश से रोके गए आँसू मेरी आँखों से बरसाती नाले की तेज़ी से लुढ़क आए, और मेरा दिल एक अजीब दर्द से भर गया।

❀ ❀ ❀

जिस गली में मैं दाख़िल हुआ था, वहाँ कोई काम तो था नहीं, इसलिये जब मुझे इतमीनान हो गया कि गजाधर अब दूर निकल गया होगा, बंदे ने भी अपना रास्ता पकड़ा, और साथ ही सोचता गया कि इस कमबख़्त चवन्नी को चलाने के लिये कौन-सा रास्ता अख़्तियार करना चाहिए।

थोड़ी दूर आगे बढ़ते ही गोकुल बाबू मिले।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं बहुत ही प्रफुल्लित हुआ, मेरी बाँछें खिल गईं, क्योंकि बाबूजी निहायत भले आदमी हैं। आदमी धोखेबाज़ हो सकता है, यह बात उनके दिमाग़ में कभी नहीं आ सकती; उनका ख़याल था, सभी आदमज़ाद युधिष्ठिर हैं। मेरे व्याकुलता-पूर्ण हृदय में फ़ौरन् यह बात पैदा हुई कि गोकुल बाबू के पास शायद चवन्नी का चेंज हो। अगर हो, तो यह सीसे की चवन्नी उनके सिर आसानी से मढ़ी जा सकती है। इस कारण मैं इतना हर्षोत्फुल्ल हुआ कि एक गीत गाने की तीव्र इच्छा को दबा रखने के लिये मुझे यथेष्ट प्रयत्न करना पड़ा।

मगर एकबारगी चेंज माँगना शराफ़त के ख़िलाफ़ है, इस ख़याल से इधर-उधर की बातें करते-करते मैं उनके साथ कुछ दूर तक चला गया। एक गली के सामने आते ही मैंने उनसे कहा—"क्यों गोकुल बाबू, चवन्नी के पैसे तो न होंगे?"

गोकुल बाबू को कुछ समय पहले शहर के किसी शरीफ़ आदमी से एक चवन्नी के एवज़ में दो दुअन्नियाँ मिली थीं, लिहाज़ा उन्होंने कहा—"पैसे तो नहीं, दो दुअन्नियाँ हैं।"

"वे ही दे दीजिए।" कहकर सीसे की चवन्नी मैंने गोकुल बाबू को दे दी, और "नमस्कार।" कहकर तीर की चाल से उस गली के अंदर चंपत हो गया। थोड़ी देर बाद दोनो दुअन्नियों को ग़ौर से देखकर मैं हाय-हाय करने लगा; क्योंकि दोनो का चेहरा तालीमयाफ़्ता बेकार नौजवानों-सा म्लान था।

तब तक गोकुल बाबू बहुत दूर निकल गए थे। मैं उनके पीछे उन्हें पुकारता हुआ सरपट दौड़ा। मुझे दौड़ते आते देख वह फ़ौरन् खड़े हो गए, और भौंचक्के होकर पूछा—"क्या माजरा है, अनमोलकरामजी?"

जब मैं उनके पास पहुँचा, मेरी साँस फूल रही थी। किसी तरह बड़बड़ाकर मैंने कहा—"माफ़ कीजिएगा गोकुल बाबू! मेरी चवन्नी मुझे वापस कीजिए, अपनी दुअन्नियाँ आप ले लीजिए। मुझे तोड़ की ज़रूरत नहीं।"

"क्यों-क्यों, क्या बात है?"

मैंने कहा—"आपको धोखा हो गया है। दोनो दुअन्नियाँ बिलकुल घिसी और निरे सीसे की हैं।"

"सीसे की! सच?" गोकुल बाबू हैरत में आ गए। दम-भर बाद बोले—"उन सज्जन ने ज़रूर ग़लती से दी होगी, इसमें कोई शक नहीं। ओह! अपनी ग़लती पर अब तक जाने वह कितना अफ़सोस करते होंगे।" कहते-कहते गोकुल बाबू की आँखों से झर-झर आँसू गिरने लगे। रूमाल से पोंछते हुए वह आगे बढ़े।

जब मेरी इतनी तरकीबें न चल सकीं, तब मेरे मुँह से एकाएक निकल गया—"अब यह मनहूस चवन्नी चलाई नहीं जा सकती।" निराश होकर मैं आगे बढ़ा, लेकिन ग़ैर-मुमकिन को मुमकिन यानी अचल चवन्नी को सचल बनाने का आसान-सा ज़रिया सोचता गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं जिस पगडंडी पर होकर वेमन से जा रहा था, उस पर केले का छिलका पड़ा था। नतीजा यह हुआ कि मेरा पैर फिसला, और मैंने अपने को चित पड़ा पाया, और जिस्म-भर में काफ़ी दर्द महसूस हुआ। कुछ दूर खड़े हुए चार-पाँच भलेमानुस साबित कर रहे थे कि भारत के लोग हँसना बिलकुल नहीं जानते, यह इलज़ाम बिलकुल झूठ है। आख़िरकार एक मामूली मज़दूर ने मुझे उठने में मदद दी।

अब पैदल घर लौटना मेरे बूते की बात न रही, अतः सवारी के लिये इंतज़ार करना पड़ा।

इत्तिफ़ाक़ की बात, जिस सड़क पर मैं खड़ा था, वह बाज़ार के नज़दीक होने की वजह से गुलज़ार थी। जाड़े के दिन, कड़ाके की सरदी, उस पर पुरवैया हवा का ज़ुल्म। इतने ही में बदनसीबी के मारे १०-१२ बरस के एक अंधे लड़के ने, अपने दुबले-पतले बदन को एक चिथड़े से ढककर बहुत ही दुःखदायक शब्दों में, करुणोत्पादक स्वर में अपना दुखड़ा रोना शुरू किया। हम लोग ऐसा रोना सुनने के इतने आदी हो गए हैं कि पहलेपहल इससे हमारे दिल पर कोई असर नहीं पड़ता। इसलिये उसका दो-चार मिनट तक रोना बिलकुल फ़िज़ूल हुआ। परंतु उस मुफ़लिस, अंधे लड़के की ग़रीबी का हाल—दुख-दर्द से भरी कहानी सुनकर मेरा पर-दुःख-कातर दिल दहल उठा। मेरे मुलायम दिल में रहम और मुहब्बत ने खलबली मचा दी। उसका एक-एक शब्द ऐसा था कि पत्थर भी पसीज जाय। आँखों से रूमाल लगाए मैंने एक नन्हे बच्चे की तरह रोते हुए कहा—"चुप रह बेटा, चुप रह। मुझसे तेरा दुखड़ा सुना नहीं जाता।"

मैं फिर फफक-फफककर रोने लगा। मेरे रोने से उस लड़के ने और भी ज़ोर से, वेदना-भरी आवाज़ में, अपनी दुर्दशा बयान करना शुरू कर दिया। "ओफ़्, इतनी तकलीफ़ में भगवान् इंसान को डाल सकते हैं!" कहकर मुझे इतना तरस आया कि मैं अपने को सँभाल न सका। उस लड़के के दुख में मेरी ग़ैर-मामूली हमदर्दी देखकर सब लोग आहें भरने लगे। कुछ देर बाद मैंने कहा—"इस लड़के का दुख सुनकर जो लोग उदासीन रह सकते हैं, लानत है उनकी ज़िंदगी पर!" यह कहकर मैंने पॉकेट से चवन्नी निकाली।

"मेरे पास इस वक़्त तो ज़्यादा कुछ है नहीं, ताँगे के किराए के लिये सिर्फ़ एक चवन्नी है। ख़ैर, देखा जायगा।" कहते हुए वह चवन्नी इस तरह मैंने उस लड़के की मुट्ठी में ठूँस दी कि सब लोग देख पाएँ। ऐं, एकदम एक चवन्नी! फिर क्या था? पैसे-दो पैसे, आने-दो आने देकर सबने आत्मसम्मान की रक्षा की, और लानत से जान बचाई।

इतने में एक ताँगा आ गया। मेरी जान में जान आई, और मैं वहाँ से खिसक पड़ा। ताँगे पर चढ़ते वक्त, मैंने चैन की गहरी साँस ली, और उतरते वक्त, अपने दिल में कहा—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हँसिए ! हँसाइए !! मुस्किराइए !!!

हिंदी-साहित्य का एकमात्र हास्य-रस-प्रधान

मासिक पत्र

'नोक-झोंक'

का

विशेषांक आगामी मार्च १९४१

में

बड़ी सज-धज से निकल रहा है। प्रायः १०० पृष्ठ तथा बीसियों चित्रों से सुसज्जित मजेदार विशेषांक का मूल्य केवल ।=) फ़रवरी तक ग्राहक बननेवालों को मुफ्त।

नमूने के लिये ढाई आने का टिकट भेजना ज़रूरी है। एजेंट तथा विज्ञापनदाता शीघ्रता करें!

मैनेजर 'नोक-झोंक', आगरा

पुस्तकालयों और हिंदी-प्रेमियों को !

शुभ सूचना

❀ सचित्र, साप्ताहिक ❀

लोकमत : लोकमान्य

(नागपुर से प्रति रविवार को प्रकाशित) वार्षिक मूल्य ३॥)

(कलकत्ते से प्रति गुरुवार को प्रकाशित) वार्षिक मूल्य ३॥)

केवल ५) रु० में एक साल तक दिए जायँगे

ये दोनो पत्र साप्ताहिक के रूप में अर्द्ध-साप्ताहिक की भाँति आपका मनोरंजन करेंगे।

—: मनीऑर्डर भेजकर शीघ्र ग्राहक बनें :—

लोकमत-कार्यालय अथवा **लोकमान्य-कार्यालय**

नागपुर सिटी, १६०, हैरिसन रोड, कलकत्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किधर ?

[श्रीयुत तेजनारायण काक एम्० ए०]

किधर जा रहे हैं पग मेरे ?
क्यों ये चलते ही जाते हैं ?
काँटों में विंधकर भी कैसे
पथ पर बढ़ते ही जाते हैं ?
मैं तो थककर चूर हो गया,
नहीं चला जाता अब डग-भर ;
डगमग-डगमग पग करते हैं,
पर चलते जाते हैं मग पर।
मुझ निर्जीव लोथड़े को ये
कैसे खींचे ले जाते हैं ?
कैसे इस दुर्वह बोझे को
ये दुर्बल ढोए जाते हैं ?
जगह-जगह है फटी बिवाई,
छाले छिलकर घाव हो गए,
पर चलने के मधुर चाव में
इनके सभी अभाव खो गए।
छिपकर मेरे इन पैरों में
क्या जीवन - इच्छा चलती है ?
इस अछोर पथ-सी ही जिसको
दुख-सुख की छलना छलती है !
चलना ही इनका जीवन है,
रुकना मानो मर जाना है ;
जीने-मरने का रहस्य क्या
इन परों ने ही जाना है ?
मैंने तो रुकना चाहा था,
पर इनकी गति तीव्र हो गई ;
मैं भी इनसे हार मानकर
चलता हूँ इनके पीछे ही।

अशक्ति का कट्टर दुश्मन

आतंक-निग्रह गोलियाँ

शरीर में खरा जोश पैदा करके कैसा भी अशक्त पुरुष हो, उसे नौजवान बना देती हैं।
३२ गोलियों की डिब्बी की क़ीमत १)

आतंक-निग्रह-औषधालय
जामनगर, काठियावाड़

लखनऊ-एजेंट—मेसर्स इंदरचंद ऐंड कंपनी, चौक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी-नाटक

[काव्यतीर्थ, साहित्य-शास्त्री, सांख्याचार्य प्रो० श्रीधर पंत एम्० ए०]

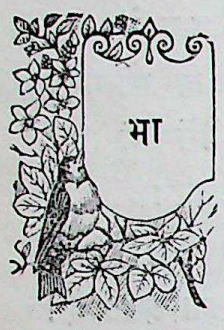

भाषा-शास्त्री हिंदी का निकास संस्कृत से मानते हैं। यही कारण है, हिंदी-साहित्य को संस्कृत से बहुत-सी विद्याएँ विरासत में मिलीं। पर जब हिंदी का उदय हुआ, तब संस्कृत के सजीव एवं प्रभावशाली नाटकों की परंपरा समाप्त हो चुकी थी, अतः इस क्षेत्र में हिंदी को संस्कृत से कुछ भी न मिला। आरंभ ही में नहीं, बल्कि मध्य-काल में भी हिंदी में नाटक नहीं लिखे गए। इसका कारण स्पष्ट है, और वह यह कि लोगों को नाटक-तमाशा देखने की इच्छा सुख-समृद्धि के समय ही होती है, लड़ाई-झगड़े के काल में नहीं। नाटक के अभाव का दूसरा कारण यह है कि शासक मुसलमान थे, और वे संगीत तथा नाटक को धार्मिक दृष्टिकोण से अच्छा न समझते थे। किसी-किसी आलोचक की सम्मति में वैराग्य भी एक स्वतंत्र कारण था, पर वास्तव में सुख-समृद्धि एवं स्वतंत्रता के अभाव को वैराग्य न कहकर बेबसी कहना अधिक उपयुक्त होगा। सारांश यह कि हिंदी-नाटक आधुनिक वस्तु है। यह ठीक है कि अन्वेषकों ने सोलहवीं शताब्दी से लेकर हिंदी के नवजीवन के आरंभ तक के समय में लिखे गए २०-२५ नाटकों का पता लगाया है। पर इनमें राजा लक्ष्मणसिंह की अमर कृति शकुंतला को छोड़ शेष सब कृतियाँ अजायब-घर की शोभा बढ़ाने लायक़ हैं।

हिंदी के सबसे पहले महान् नाटककार भारतेंदु हरिश्चंद्र हैं। नवीन हिंदी-साहित्य में भारतेंदु का दर्जा बेजोड़ है। इन्होंने गद्य-पद्य, काव्य, निबंध, आलोचना आदि हिंदी के जिस किसी अंग में हाथ लगाया, उसी को चमका दिया, और नाटक-क्षेत्र में तो सचमुच क्रांति ही उपस्थित कर दी। भारतेंदु की सूझ-बूझ एकदम मौलिक और प्रभावशालिनी थी। यही कारण है कि उन्होंने न केवल स्वयं ही दर्जनों नाटक लिखे, बल्कि लेखकों का एक ऐसा दल संगठित किया, जिसने नाटक, उपन्यास, कविता, लेख आदि से हिंदी-साहित्य की बहुमूल्य सेवा की। भारतेंदु अँगरेज़ी, बँगला, फ़ारसी, संस्कृत आदि अनेक भाषाएँ जानते थे। उन्होंने भारतीय तथा योरपीय, दोनो तरह की नाटक-शैली (Technique) की पूरी अभिज्ञता रखते हुए भी भारतीय शैली को ही अपनाया। पर इसका यह अर्थ नहीं कि इनके नाटकों में आधुनिकता का अभाव है ; नहीं, इनमें आधुनिकता की गहरी छाप है।

भारतेंदु प्रेम के पुजारी और सच्चे देश-सेवक थे। प्रेम की पूजा और देश की चिंता उनके नाटकों के हर पन्ने में मिलती है। उन्होंने देश की दुर्दशा पर जगह-जगह आँसू बहाए हैं। यह बात 'सत्य हरिश्चंद्र' और 'भारत-दुर्दशा' नाम के नाटकों में स्पष्ट दिखलाई पड़ती है, और यही कारण है कि ये दोनो नाटक हिंदी-भाषियों के गले का हार बने हैं, और बने रहेंगे। भारतेंदु के नाटकों की सबसे बड़ी विशेषता उनकी अभिनेयता है। भारतेंदु कुशल अभिनेता थे, उन्होंने अनेकों नाटकों का अभिनय किया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहना न होगा कि यह विशेषता* भारतेंदु को छोड़कर दूसरे नाटककारों में नहीं के बराबर है।

इस काल के प्रसिद्ध नाटककारों में निम्न-लिखित नाम उल्लेख-योग्य हैं—श्रीनिवासदास (रणधीर-प्रेममोहिनी), बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन,' राधाचरण गोस्वामी, बालकृष्ण भट्ट, प्रतापनारायण मिश्र, काशीनाथ खत्री, शालग्राम, राधाकृष्णदास (महाराणा प्रताप), केशवराम भट्ट (मुसलिम-जीवन से संबंध रखनेवाले नाटकों के लेखक), पुरोहित गोपीनाथ (शेक्सपियर के नाटकों के अनुवादक), अंबिकादत्त व्यास, अयोध्यासिंह उपाध्याय, किशोरीलाल गोस्वामी तथा बलदेवप्रसाद मिश्र। ये नाटककार समूचे उत्तरी भारत में फैले हुए थे, और यद्यपि भारतेंदु के नाटकों की तरह इनके नाटकों में भी आधुनिकता की अमिट छाप दृष्टिगोचर होती है, तो भी इन नाटकों की शैली प्राचीन ही है। और, अधिकांश नाटककारों को अभिनय-कला का ज्ञान न होने के कारण उनके अधिकतर नाटक अभिनय की दृष्टि से सफल नहीं।

भारतेंदु का प्रभाव संक्रामक था। उनके समकालीन लेखकों में कोई भी ख्यातनामा लेखक ऐसा न मिलेगा, जिसने नाटक-रचना न की हो। ऐसा प्रतीत होता है कि भारतेंदु-काल में जितने नाटक हिंदी-साहित्य में प्रस्तुत किए गए, उतने उतने ही सीमित समय में फिर कभी न लिखे गए। नाटक लिखनेवालों की संख्या इस काल में ५० से कम न थी, और २०० से ऊपर नाटक लिखे गए होंगे। भारतेंदु के पश्चात् हिंदी में नाटक-रचना का काम कुछ शिथिल हो गया, पर इधर पिछले ४० वर्षों में हिंदी-साहित्य की दिन दूनी, रात चौगुनी उन्नति हुई है, और इस उन्नति का प्रभाव नाटक-रचना में भी पूरा-पूरा दिखलाई पड़ता है।

यों तो हिंदी-नाटक भारतेंदु के समय में ही अँगरेज़ी नाटक से प्रभावित हो चुके थे, पर यह प्रभाव आरंभ में बँगला से छनकर आया था। आज-कल अँगरेज़ी का प्रभाव हिंदी-नाटकों पर सीधा पड़ रहा है। पिछले समय में अनुवादक संस्कृत, अँगरेज़ी तथा बँगला तक ही दृष्टि दौड़ाते थे, पर संप्रति उन्होंने जर्मन, फ्रेंच तथा फ़ारसी तक से अनुवाद करने का साहस किया है। पुरानी प्रथाओं का सर्वथा परित्याग किया जा रहा है। उदाहरणार्थ नए हिंदी-नाटकों में नटी, सूत्रधार, निष्कंभक, गर्भांक, संधि, भरत-वाक्य आदि परि-भाषाओं का कहीं नाम भी नहीं दिखलाई पड़ता। नाटक के अंकों की संख्या भी क्रमशः घटती जा रही है। अब प्रायः नाटक ५ या ३ ही अंकों में समाप्त हो जाते हैं, और पिछले १० वर्षों में तो एकांकी नाटकों का चलन ही सर्वाधिक रहा है, और ऐसे नाटकों के अनेक संग्रह भी प्रकाशित हो चुके हैं। गद्य का प्रयोग बढ़ता जा रहा है, यद्यपि पद्य का सर्वथा लोप नहीं हुआ है। गद्य और पद्य दोनो के लिये खड़ी बोली काम में लाई जाती है, जब कि भारतेंदु के समय में गद्य के लिये खड़ी बोली और पद्य के लिये ब्रज-भाषा का प्रयोग किया जाता था। अभिनय तथा दृश्य-संबंधी संकेत, जो पुराने नाटकों में अत्यंत संक्षिप्त होते थे, अब विस्तृत होते जा रहे हैं। भारतीय नाटक-साहित्य में अत्यंत प्राचीन काल से यह नियम माना जाता था कि सभी नाटक सुखांत होने चाहिए। भारतेंदु-काल तक इस नियम का सम्मान होता रहा, पर अब तो अनेकों नाटककार इस नियम की अवहेलना कर

* यह विशेषता हिंदी के वर्तमान सर्वश्रेष्ठ नाटककार पं० गोविंदवल्लभ पंत के वरमाला, अंगूर की बेटी, राजमुकुट, अंतःपुर का छिद्र आदि नाटकों में भी है। वे दृश्य और श्राव्य दोनो ही हैं।—लेखक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुःखांत नाटकों की सृष्टि करने लगे हैं। ये सब परिवर्तन पाश्चात्य शिक्षा के प्रभाव के द्योतक हैं। वस्तुतः आजकल के प्रायः सभी नाटककार पाश्चात्य शिक्षा-दीक्षित हैं, अतः उनके दृष्टिकोण में भारतीयता और अँगरेज़ियत का सम्मिश्रण स्वाभाविक ही है।

यहाँ यह बतला देना आवश्यक है कि नई और पुरानी या यों कहिए कि योरपीय और भारतीय शैलियों में कितना ही अंतर क्यों न हो, किंतु असली बातों में न कोई अंतर है, और न हो सकता है। दूसरे शब्दों में यों कह सकते हैं कि नाटक के तीन मूल-तत्त्व सबमें एक-से ही हैं। ये मूल-तत्त्व हैं कथावस्तु, नायक और रस। जिस प्रकार पत्रों के आरंभिक लंबे शिष्टाचार को सदा के लिये बिदा कर देना अच्छा ही प्रमाणित हुआ है, इसी प्रकार नई आवश्यकताओं के अनुसार नवीन शैली कुछ अंशों में निःसंदेह अच्छी है, पर इसका यह अर्थ नहीं कि प्रत्येक दृष्टि से अच्छी है। उदाहरणार्थ, नई शैली के नाटक की कहानी पाँच भागों में बाँटी जाती है। ये पाँच भाग इस प्रकार हैं—आरंभ—जिसमें झगड़े उत्पन्न करनेवाली घटनाएँ रहती हैं, विकास—जिसमें विरोध बढ़ता है, चरम सीमा—जिसमें किसी एक पक्ष की जीत का आरंभ होता है, उतार—जिसमें एक दल की जीत निश्चित हो जाती है, और समाप्ति—जिसमें विरोध का अंत हो जाता है। पुरानी शैली में भी कहानी पाँच ही भागों में विभक्त की गई है। इनके नाम ये हैं—आरंभ, यत्न, प्राप्त्याशा, नियताप्ति और फलागम। इन नए और पुराने विभागों में कोई विशेष अंतर नहीं। अंतर केवल इतना ही है कि पुरानी शैली में कहानी के मूल में कोई उद्योग रहता है, जिसके सफल होने पर कहानी समाप्त हो जाती है, और नई शैली में कहानी की बुनियाद में कोई विरोध रहता है, जो एक पक्ष की विजय होने पर समाप्त हो जाता है। इन पुरानी और नई शैलियों के विभाग-क्रम की तुलना करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि पुरानी शैली का क्षेत्र विस्तृत तथा नवीन का संकुचित है। अतः यह बतलाने की आवश्यकता नहीं रह जाती कि कौन-सा विभाग-क्रम अच्छा है। इस नए विभाग का एक और भी दुष्प्रभाव पुराने विभाग पर पड़ा है, और वह यह कि मशीन से तैयार किए हुए माल की भाँति नाटकों की कथाएँ लगभग एक ही ढाँचे की देखने में आती हैं, अर्थात् किसी भले आदमी के काम में रोड़े अटकानेवाला एक बदमाश (villain) प्रतिनायक खड़ा कर दिया जाता है, जो खुली बदमाशी पर उतारू हो जाता है। प्रसिद्ध उपन्यास-लेखक शरत् बाबू ने 'गृहदाह'-नामक एक उपन्यास लिखा है। इसमें सुरेश और महिम दो मित्रों का ज़िक्र है। सुरेश परोपकारी और महिम का शुभचिंतक है। सुरेश ब्रह्म-समाज से घृणा करता है, अतः जब वह सुनता है कि महिम अचला नाम की किसी ब्रह्म-समाजी बाला से विवाह करना चाहता है, तो वह इसे रोकने का प्रयत्न करता है। पर इस प्रयत्न में अचला से साक्षात्कार होने पर वह स्वयं उस पर मुग्ध हो जाता है। सुरेश किसी प्रकार अपना मन वश में करता है, और अचला का विवाह महिम से हो जाता है। आगे चलकर सुरेश घटना-चक्र का शिकार बनता है, और न केवल अपने को ही पतन के गर्त में गिराता है, बल्कि अपने साथ अचला का भी सत्यानास करता है। इस कहानी का 'मंज़िल'-नामक फ़िल्म तैयार हुआ है, जिसमें सुरेश को आरंभ ही से पक्का बदमाश दिखलाया गया है। यह है साहब, नई शैली का एक परिणाम।

नई शैली के नाटकों के अंत में गीतों की स्वर-लिपि भी रहती है। हम पहले बतला चुके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं कि अधिकतर नाटककार अभिनय-कला का ज्ञान नहीं रखते, अतः उनके नाटक अभिनय-योग्य नहीं होते, और न उनके खेलने की नौबत ही आती है। ऐसी दशा में गीतों की स्वर-लिपि देना नितांत निरर्थक है। इसके अतिरिक्त यदि उन नाटकों के खेलने का अवसर भी आए, तो क्या आवश्यक है कि संगीत-निर्देशक उन्हीं तर्ज़ों को पसंद करें ? क्या उनसे अच्छी तर्ज़ें गढ़ना संभव नहीं ?

अस्तु। इस बहस से हमारा तात्पर्य पुरानी शैली की वकालत करने का नहीं, प्रत्युत यह दिखलाने का है कि कोई वस्तु केवल पुरानी अथवा नई होने के कारण ही अच्छी या बुरी नहीं हो जाती, बल्कि उसका अच्छा या बुरा होना उसके निजी गुण-दोष पर निर्भर करता है।

अब हम भारतेंदु-काल के नाटकों के उपरांत बीसवीं शताब्दी के हिंदी-नाटकों पर दृष्टिपात करते हैं। यहाँ यह बतला देना अनुचित न होगा कि १५ मिनट की सामग्री के स्वल्पकाय लेख में समस्त नाटककारों के प्रत्येक नाटक का पूर्ण विवरण प्रस्तुत करना नितांत असंभव है, अतः हमें इन पर सरसरी दृष्टि डालकर ही संतोष करना पड़ेगा। आधुनिक नाटकों को हम तीन भागों में विभक्त करते हैं—

(१) साहित्यिक नाटक, (२) कंपनियों के नाटक और (३) अनूदित नाटक।

पहले हम साहित्यिक नाटक लेते हैं। इस श्रेणी में श्रीजयशंकर'प्रसाद'जी सर्वोपरि हैं। 'प्रसाद'जी हिंदी के सुकवि, नाटककार, उपन्यास-लेखक तथा गल्पकार थे। इन्होंने अनेक प्रकार से, विशेषतया नाटक लिखकर, हिंदी की अमूल्य सेवा की। शोक है, ऐसे प्रतिभाशाली हिंदी-सेवक को काल ने अकाल ही कवलित कर लिया ! इन्होंने तेरह नाटक लिखे हैं, जिनमें ८ ऐतिहासिक, ३ पौराणिक और २ भावात्मक हैं। 'प्रसाद'जी के नाटकों में 'स्कंदगुप्त', 'चंद्रगुप्त', 'अजात-शत्रु' तथा 'कामना' बहुत प्रसिद्ध हैं। इनके नाटकों का विषय प्रेम और संस्कृति है। इनकी शैली सर्वथा योरपियन है, और इनकी भाषा संस्कृतमयी हिंदी, जिसका समझना ज़रा टेढ़ी खीर है। साथ ही भाव भी कहीं-कहीं अस्पष्ट हो गए हैं। इस प्रसंग में एक मनोरंजक घटना भी सुन लीजिए—एक हिंदी-प्रोफ़ेसर को इनके नाटकों के कुछ अंश अस्पष्ट मालूम हुए। सोचा, चलो, स्वयं नाटक-कार से उनका अर्थ पूछ लें। अतः वह 'प्रसाद'जी से मिले, और जब अर्थ के संबंध में प्रश्न किया, तो उन्होंने कहा—"भाई, हमारी जो मौज में आया, लिख दिया। तुम प्रोफ़ेसर हो, अर्थ निकालना तुम्हारा काम है।" हम पहले कह चुके हैं कि अधिकतर नाटककारों को रंगमंच का अनुभव न था। 'प्रसाद'जी भी इसी श्रेणी में आते हैं, अतः इन नाटकों का रंगमंच पर सफल होना संदेह की बात है। जो कुछ भी हो, भारतेंदु के बाद नाटककारों में 'प्रसाद'जी का स्थान सबसे ऊँचा है।

'प्रसाद'जी के अतिरिक्त कविवर बाबू मैथिली-शरणजी गुप्त ने 'चंद्रहास', 'तिलोत्तमा', वियोगी हरिजी ने 'प्रबुद्ध यामुन' और 'छद्मयोगिनी', मिश्र-बंधुओं ने 'नेत्रोन्मीलन', 'पूर्व-भारत' तथा 'शिवाजी' और स्वर्गीय प्रेमचंदजी ने 'कर्बला', 'संग्राम' तथा 'प्रेम-बलिवेदी'-नामक नाटक लिखे हैं। ये नाटक साधारणतया अच्छे हैं, पर इन लेखकों को क्रमशः कविता, आलोचना तथा उपन्यास के क्षेत्र में जो सफलता प्राप्त हुई, वह यहाँ न मिल सकी।

पं० रामनरेश त्रिपाठी ने 'जयंत' और 'प्रेमलोक', श्रीचतुरसेन शास्त्री ने 'अमर राठौर' और 'उत्सर्ग' तथा प्रो० सत्यकेतु ने 'मुक्ति'-नामक नाटक रचकर हिंदी का कुछ-न-कुछ उपकार ही किया है। हास्य-रसावतार पं० जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी ने 'मधुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिलन' और 'तुलसीदास'-नामक दो नाटक मातृ-भाषा को भेंट किए हैं। ये नाटक अभिनय की दृष्टि से अच्छे हैं। 'उग्र'जी ने 'महात्मा ईसा' तथा 'चुंबन'-नामक दो नाटक और कुछ एकांकी नाटक तथा प्रसिद्ध कवि पं० सुमित्रानंदन पंत ने 'ज्योत्स्ना-' नामक नाटक लिखे हैं। 'ज्योत्स्ना' कहने को ही नाटक है, वास्तव में यह कविता-ग्रंथ ही है। हाल में प्रसिद्ध कहानी-लेखक सुदर्शनजी ने भी इस ओर ध्यान दिया है, और 'अंजनो' तथा 'ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट'-नामक नाटकों से हिंदी-साहित्य की श्री-वृद्धि की है।

प्रसिद्ध देश-सेवक पं० माखनलाल चतुर्वेदी ने 'कृष्णार्जुन-युद्ध'-नामक एक ही नाटक लिखा है, पर कविता तथा अभिनय, दोनो दृष्टियों से यह एक उत्तम वस्तु है, और प्रायः खेला भी जाता है। इसी प्रसंग में दूसरे देश-सेवक सेठ गोविंददास का ज़िक्र भी उचित प्रतीत होता है। आपने जेल-निवास के काल में पूरे दर्जन-भर नाटक लिख डाले। इन नाटकों में पर्याप्त गरमी दिखलाई पड़ती है। आपके नाटकों का विषय ऐतिहासिक, सामाजिक और राजनीतिक है। ये नाटक सामान्य कोटि के हैं, जिनमें कोई विशेषता नहीं दिखलाई पड़ती। यदि कोई विशेषता है, तो यही कि इनके लिखने में आपकी क़लम ने पंजाब-मेल से भी बाज़ी मार ली।

लखनऊ-युनिवर्सिटी के भूतपूर्व प्रोफ़ेसर पं० बदरीनाथ ने भी कई नाटक लिखे हैं—'दुर्गावती', 'चंद्रगुप्त', 'तुलसीदास', 'चुंगी की उम्मीदवारी, आदि। ये नाटक रंगमंच पर खेले जाने लायक़ हैं, और इनमें 'दुर्गावती' का स्थान ऊँचा है। पं० गोविंदवल्लभ पंत ने (यू० पी० के प्रधान मंत्री नहीं) 'वरमाला', 'राजमुकुट', 'अंगूर की बेटी' और 'अंतःपुर का छिद्र'-नामक चार नाटक लिखकर हिंदी-साहित्य का गौरव बढ़ाया है। आपको अभिनय-कला का अच्छा ज्ञान है, और इस दृष्टि से ये नाटक बहुत सफल हैं। श्रीजी० पी० श्रीवास्तव ने 'दुमदार आदमी', 'मरदानी औरत' आदि बहुत-से हास्य-रस के नाटक लिखे हैं, और मौलियर के कुछ नाटकों का अनुवाद भी किया है। क्या ही अच्छा होता, यदि इनका हास्य शिष्ट होता।

वर्तमान नाटककारों में पं० लक्ष्मीनारायण मिश्र और पं० उदयशंकर भट्ट का स्थान ऊँचा है। मिश्रजी ने 'अशोक', 'संन्यासी', 'राक्षस का मंदिर' आदि अनेक अच्छे-अच्छे नाटक लिखे हैं। आप पर इब्सन और शा का प्रभाव परिलक्षित होता है। हिंदी को आपसे बहुत कुछ आशा है। इधर पं० उदयशंकर भट्ट ने 'विक्रमादित्य', 'दाहर', 'अंबा', 'सगर-विजय', 'मत्स्यगंधा' आदि अनेक नाटक लिखे हैं। इनमें आपको पर्याप्त सफलता मिली है। आप सुकवि और अच्छे नाटककार हैं। 'प्रसाद'जी और आपकी शैली में बहुत कुछ समानता है।

हम ऊपर कह आए हैं कि पिछले १०-१२ वर्षों में एकांकी नाटकों की ही रचना सर्वाधिक हुई है। इनके कई संग्रह भी प्रकाशित हो चुके हैं। इनमें भुवनेश्वर-कृत 'कारवों', गणेशप्रसाद द्विवेदी का 'सोहाग-बिंदी' तथा रामकुमार वर्मा का 'पृथ्वीराज की आँखें' अच्छे हैं।

यहाँ तक तो हुई साहित्यिक नाटकों की चर्चा। अब आइए, थिएट्रिकल कंपनियों द्वारा तैयार कराए हुए नाटकों पर दृष्टि डाली जाय। इन कंपनियों को प्रायः पारसी मालिकों ने खड़ा किया था, और इनका उद्देश्य था धनोपार्जन। अतः इनसे किसी उच्च कोटि की साहित्यिक वस्तु की आशा करना व्यर्थ है। पर फिर भी इन कंपनियों की कृपा से हिंदी तथा उर्दू, दोनो भाषाओं को कुछ अच्छे नाटक अवश्य मिले हैं। कंपनियों के लिये नाटक लिखनेवालों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में पं० राधेश्याम कथावाचक, पं० नारायणप्रसाद 'बेताब', श्रीयुत आग़ा हश्र और श्रीयुत तुलसीदत्त 'शैदा' आदि प्रधान हैं। पं० राधेश्यामजी के 'वीर अभिमन्यु', 'श्रवणकुमार' और 'ईश्वर-भक्ति' बहुत प्रसिद्ध हुए। अभिनय की दृष्टि से तो कुछ पूछना ही नहीं, साहित्यिक और नैतिक दृष्टि से भी इनका मूल्य कम नहीं। पंजाब-युनिवर्सिटी में इनके नाटक कोर्स में रह चुके हैं। भारत-व्याकुल कंपनी का 'बुद्धदेव' भी साहित्यिक दृष्टि से अच्छा है। इसके लेखक बाबू विश्वंभरसहाय 'व्याकुल' से हिंदी को बहुत कुछ आशा थी, पर शोक, वह कीर्ति-शेष ही रह गए।

अंत में हिंदी में जो दूसरी भाषाओं के नाटकों के अनुवाद किए गए हैं, उनकी भी कुछ चर्चा सुन लीजिए। संस्कृत-नाटकों का अनुवाद भारतेंदु हरिश्चंद्र, पं० सत्यनारायण कविरत्न, लाला सीताराम तथा श्रीसत्यजीवन वर्मा आदि ने किया है। इनमें भारतेंदु और सत्यनारायणजी के अनुवाद हिंदी की स्थायी संपत्ति हैं। अनुवाद के लिये भास, कालिदास, शूद्रक, भवभूति आदि के नाटक चुने गए हैं। बँगला से रवींद्रनाथ ठाकुर, द्विजेंद्रलाल राय तथा गिरीशचंद्र घोष के नाटकों के अनुवाद किए गए हैं, और अनुवादकों में प्रधान हैं पं० रूपनारायण पांडेय तथा श्रीराम्रचंद्र वर्मा। अँगरेज़ी नाटकों का अनुवाद सर गोपीनाथ, लाला सीताराम बाबू प्रेमचंद, पं० लक्ष्मीनारायण मिश्र आदि सज्जनों ने किया है, और अनुवाद के लिये शेक्सपियर, गाल्सवर्दी तथा इब्सन को चुना है। श्रीयुत जी० पी० श्रीवास्तव ने मौलियर के कई नाटकों का अँगरेज़ी से अनुवाद किया है। हाल में लाहौर के डॉ० लक्ष्मणस्वरूप ने मौलियर के एक नाटक का मूल-फ्रेंच से हिंदी-अनुवाद 'कौआ चला हंस की चाल' नाम से किया है। दिल्ली के डॉ० हरदत्त शर्मा ने शिलर के एक नाटक का अनुवाद मूल-जर्मन से 'चचा-भतीजा' के नाम से किया है। इसी प्रकार बनारस के डॉ० मंगलदेव शास्त्री ने लैसिंग के एक नाटक का जर्मन से अनुवाद किया है। इधर बरेली के प्रो० भोलानाथ शर्मा ने भी गेटे के 'हाउस' तथा शिलर के 'टैल' का मूल-जर्मन से अनुवाद किया है।

यह है साहब, संक्षेप में हिंदी-नाटकों का ख़ाका।

छप रही है! हिंदी में नवीन पुस्तक !! छप रही है !!!

सत्ययुग-मीमांसा अर्थात् चेतावनी-रहस्य; इसका मूल्य ।=) रक्खा गया है, किंतु एक मास के भीतर =) के डाक-टिकट भेजनेवालों को इसकी एक प्रति प्रचारार्थ भेजी जायगी। शीघ्रता कीजिए, मौक़ा न चूकिए।

चंद्र-कार्यालय, हालू बाज़ार, भिवानी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कौन ?

[श्रीयुत सुरेंद्रदेव मिश्र]

(एक)

वनगर के पास एक छोटा-सा गाँव शिहोर है। उत्तर की ओर शैलमाला-वेष्टित निविड़ अरण्य। पर्वत की नीरव, जन-शून्य उपत्यका में संसार से विरक्त एक शिव-मंदिर का भग्नावशेष अपना उन्नत ललाट उठाए मूक वन-पादपों की ओर शून्य दृष्टि से देख रहा था। मंद समीर इठलाती हुई नव-किसलय से घिरे सुंदर वन्य प्रसूनों को झकझोरती-चूमती चलती, सुंदर नव-प्रसून समीर की शोख़ी पर खिलखिलाकर हँस देते। उनकी हँसी की मधुर थिरकन चारो ओर महक उठती।

बेचारा जरा-जीर्ण मंदिर भी अपने विगत यौवन के दिनों, स्वर्ण-प्रभातों तथा कल्पना के समान रंगीन संध्या की याद कर उनकी बाल-क्रीड़ा शून्य दृष्टि से देख रहा था। यौवन-काल में उसका वक्ष सदा जन-समुदाय के नाना कलरवों से आंदोलित रहता था। आज भी अपने जन-शून्य अरण्य के साम्राज्य में, नीरव निशीथ में, एक छोटा-सा दीपक उसके गत यौवन की उमंगों की याद दिलाता हुआ टिमटिमाया करता है।

जीर्ण रसाल-सा वृद्ध, नैराश्य-सा नीरस, आकाश-सा शून्य, सागर-सा गंभीर तथा सूर्य-सा तेजस्वी एक वृद्ध नित्य वहाँ जाकर अपने काँपते हाथों से एक दीपक रख आता है। उसे कोई नहीं जानता, दिन में वह क्या करता है, कहाँ रहता है, कैसे पेट पालता है। छायावाद की कविता के समान अज्ञात, रहस्यवाद की कविता के समान रहस्यमय।

(दो)

एक अत्यंत वृद्ध संन्यासी अक्सर उक्त गाँव के आस-पास भ्रमण किया करता है। अत्यंत वृद्ध होने पर भी उसके सौम्य, झुर्रियोंवाले चेहरे से तेज टपकता है, पर उसका मुख-मंडल सदा नैराश्य के मेघों से आच्छादित रहता है—हमेशा गंभीर। उसे कभी किसी ने हँसते नहीं देखा। उसके माथे तथा शरीर पर तल वार के कई निशान हैं।

गाँव में आने पर लोग उसे घेरकर कहानियाँ सुनते हैं। बच्चे उसके काषाय वस्त्र से लिपटकर मचलते हुए कहते हैं—"बाबा, हम तो ग़दरवाली कहानी सुनेंगे।"

जब वह लोगों को ग़दर की गाथाएँ सुनाने लगता है, तब उत्तेजना के कारण उसकी वृद्ध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आँखें लाल हो जाती हैं, मुख चमकने लगता है, तथा माथे पर तीन लंबी रेखाए खिंचकर उसकी उत्तेजना अंकित कर देती हैं। जब वह १८५७ के ग़दर के विश्वास - घातियों की गाथाएँ सुनाने लगता है, तब तो पागल-सा हो जाता है। आगे बैठे, बड़ी उत्सुकता - पूर्वक कहानी सुनते हुए बालक उसका उत्तेजित मुख देखकर, भयभीत हो वृद्धों की गोद से चिपक जाते हैं, नवयुवकों का गरम ख़ून तेज़ी से दौड़ने लगता है। वह कहा करता है—"जब तक विदेशियों के शासन का अंत न हो जायगा, हमारा देश कभी सुखी न होगा।"

(तीन)

लोग कहते हैं, वह कोई १८५७ का भागा हुआ क्रांतिकारी है, जो पुलिस तथा अँगरेज़ी सरकार की गृद्ध-दृष्टि से छिपा अपना जीवन बिता रहा है। चारो ओर यही चर्चा है। अब तो पुलिस के कानों में भी यह बात पहुँच गइ है कि ग़दर की असफल क्रांति का सूत्र-धार अब भी पुलिस की आँखों में धूल झोंके जीवित फिर रहा है।

पुलिस ने अब घोषणा कर दी है—"जो कोई इस विद्रोही नेता को पकड़वा देगा, उसे २०,०००) इनाम दिया जायगा।"

लोगों में तरह-तरह का कौतूहल है। उदाराशय सज्जन बेचारे की वृद्धावस्था पर सहानुभूति प्रदर्शित कर ईश्वर से उसकी रक्षा की प्रार्थना करते हैं। पुलिस के कर्मचारी स्वयं उसे बंदी करने का श्रेय प्राप्त करने के लिये बड़ी सर-गरमी से दौड़-धूप कर रहे हैं। नीच प्रकृति के मनुष्यों के लिये २०,०००) का लोभ संवरण कर सकना असंभव है; उन्हें रुपया चाहिए, चाहे वह कहीं से आवे।

सबेरे का समय था—आश्विन-कृष्ण-पक्ष का महीना। एक वृद्ध अश्वारोही राजकोट की गलियों में चला जा रहा था। यद्यपि वृद्धावस्था ने उसके मुख पर झुर्रियाँ डाल दी हैं, फिर भी उसका तेजस्वी मुख - मंडल उसकी युवावस्था के महत्त्व-पूर्ण, रंगीन दिवसों की याद दिलाता है, जिस पर तरह - तरह की रेखाएँ तरह - तरह के भाव अंकित कर रही हैं।

एक ब्राह्मण के द्वार पर वह रुका, और ब्राह्मण से बोला—"कुल श्रेष्ठ, मुझे अपने पिता का श्राद्ध करना है। मैं महाराष्ट्रीय हूँ। कृपया श्राद्ध की व्यवस्था कर दीजिए।"

ब्राह्मण ने ग़ौर से उसके मुख की ओर देखते हुए कहा—"आइए, यजमान, विराजिए। हमारा तो यह काम ही है।" दाँत निपोरते हुए ब्रह्मदेव ही-ही करके हँस दिए, जिससे तंबाकू तथा मिस्सी-मंडित दाँत ज़बरदस्ती बाहर निकल पड़े।

"अच्छा, तो आप विराजिए, मैं पाँच ब्राह्मणों की व्यवस्था कर आऊँ, क्योंकि पाँच ब्राह्मणों की आवश्यकता तो होगी ही कम-से-कम ?" कहते हुए ब्राह्मण देवता अश्वारोही को आसन पर बिठाकर चल दिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्राह्मण देवता के हृदय में आज ज्वार-भाटे-सी हलचल थी, जिसमें उनका शरीर-रूपी जलयान लंबे-लंबे डगों पर डगमगाता उड़ा जा रहा था। धूप के कारण उनका स्थूल शरीर पसीने-पसीने था, पर उन्हें शायद इसका तनिक भी ध्यान न था। "हाँ, है तो यह वही—हूँ, बस ठीक। अब बड़े साहब से कहने-भर की देर है, २०,०००) जेब में।" जेब टटोलते हुए ब्राह्मण देवता गुनगुनाने लगे—"५,०००) लड़की के विवाह में खर्च होगा, लगभग १,०००) दहेज़-दक्षिणा में समझो, बाक़ी से तो तमाम बुढ़ापा मज़े में कट जायगा। रोज़-रोज़ की हाय-हाय से पिंड छूटेगा। उँह क्या रक्खा है आजकल की पंडिताई में। आठो पहर यजमान के द्वार पर नाक रगड़ो, तब भी कोई बात नहीं पूछता। २०,०००) से तो बस, मौज हो जायगी, मौज।"

कल्पना के उड़नखटोले पर उड़ते हुए पंडित-जी पसीने में लथपथ कर्नल स्मिथ के बँगले पर जा पहुँचे। बेचारा स्मिथ पंडितजी के पहाड़-से शरीर को पसीने में लथपथ देख बड़ा हैरान हुआ, पर सब बात सुनकर, खुश होकर बोला—"वेल पंडित, हम तुमसे भौट खुस है, तुमको २०,०००) रुपया डिलाएगा। हम अपना पाँच आडमी तुमारे साट करटा है, तुम उनको वहाँ पहुँचा डो।"

झट पाँच सार्जेंट कपड़े उतार, जनेऊ पहन, खड़ाऊँ पर सवार हो, पूरे ब्राह्मण बन पंडितजी के साथ हो लिए।

इधर सशंक वृद्ध काफ़ी देर हो जाने पर भी ब्राह्मण देवता को न आया जान और भी शंकित हो बाहर की ओर देखने लगा। इतने ही में उसे क़दम मिलाते हुए एक दूसरे के पीछे पाँच ब्राह्मण पंडितजी के साथ आते देख पड़े। भला, ब्राह्मण के पैरों को लेफ़्ट-राइट की आदत कहाँ। अँगरेज़ सार्जेंट ब्राह्मण का रूप धारण कर अपने को भले ही छिपा लें, पर उनके पैरों को जो लेफ़्ट-राइट की आदत पड़ चुकी थी, उसे वे कहाँ छिपा सकते थे। पाँचों आ रहे थे—एक दूसरे के पीछे लेफ़्ट-राइट की गत पर नाचते हुए। वृद्ध अश्वारोही समझ गया, दग़ा है। उसके नेत्रों से चिनगारियाँ निकलने लगीं, पर यत्न-पूर्वक अपने चेहरे को शांत बनाए हुए उसने पुरोहितजी से कहा—"धन्यवाद पुरोहितजी! बस, अब सब काम मैं कर लूँगा, आप क्या करेंगे अंदर आकर? बाहर हवा में बैठकर पसीना सुखा लीजिए। श्राद्ध-विधि मैं जानता ही हूँ, आप ब्राह्मणों को अंदर भेज दीजिए।"

रेशमी वस्त्र पहने ब्राह्मण अंदर आ गए। "आइए ब्राह्मण देवता!" आसन देते हुए वृद्ध ने उन्हें बैठा दिया।

"श्राद्ध-विधि तो आप जानते ही हैं। अच्छा, मैं मंत्रोच्चारण करता हूँ, आप पात्र से जल ले नेत्रों में लगाइए, तथा नेत्र बंद कर इष्टदेव का ध्यान कीजिए।"

भेद खुलने के डर से बेचारे सिपाहियों ने ऐसा ही किया। इधर वृद्ध दबे-पाँव निकल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भागा। जाते हुए उसने पुरोहितजी से कहा—"पंडितजी, प्रणाम। मैं अब जाता हूँ। आपने जो कुछ किया, अपनी समझ में ठीक ही किया होगा, पर देश-द्रोह तथा विश्वासघात ब्राह्मणोचित नहीं। ख़ैर।" कहते हुए उसने घोड़े के एँड़ लगाई, और क्षण-भर में ही अदृश्य हो गया। ब्राह्मण देवता भौंचक-से देखते ही रह गए।

लोग कहते हैं, ये तीनो व्यक्ति और कोई नहीं, नाना साहब ही हैं, पर यथार्थ अंतर्यामी ही जानें, ये कौन हैं* ?

---

* एक अख़बारी समाचार के आधार पर। पात्रों के नाम सब कल्पित हैं।—लेखक

दांपत्य-सुख की कुंजी !

शीघ्रपतनांतक वटी

स्त्री-पुरुषों में प्रेम न होने का मुख्य कारण 'शीघ्रपतन' है। जब तक नारी को नर से संतोष न होगा, तब तक वह कभी नर को प्यार नहीं कर सकती। वह सदा जली-कटी सुनाती रहेगी, भुन-भुन करती रहेगी। इस दुख के दूर करने के लिये ही—

चिकित्सा-चंद्रोदय के लेखक

हरिदासजी वैद्य ने

सत्तर साल की अवस्था में लासानी, बेजोड़, स्वर्ग-सुख दिखानेवाली

शीघ्रपतनांतक गोलियाँ

ईजाद की हैं। इनको नित्य खाकर दूध पीने से बल-वीर्य बढ़ता है, संभोग की इच्छा अत्यंत बलवती होती है। संभोग में रुकावट होती है। नर और नारी दोनो को संतोष और अकथनीय सुख मिलता है। इन गोलियों के सेवन करनेवाले को संभोग की मनाही नहीं है, हाथ-की-हाथ सुख-स्वर्ग-सुख मिलेगा। सबसे बड़ी बात यह कि बल-वीर्य नहीं घटेगा, बल्कि रोज़ बढ़ेगा। अब तक ऐसी दवा किसी ने नहीं निकाली। आप एक छोटी शीशी मँगाकर ही परीक्षा कीजिए। आधा मूल्य छोटी शीशी का ३) और बड़ी का ६), डाक-ख़र्च ॥) है।

हरिदास ऐंड कंपनी, मथुरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मध्य-भारत का एक और बौद्ध स्तूप

[ज्योतिषाचार्य श्रीयुत सूर्यनारायण व्यास]

मध्य-भारत में ऐसे अनेक महत्त्व-पूर्ण स्थल हैं, जहाँ प्राक् - इतिहासकालीन साहित्य उपलब्ध होता है। ग्वालियर और होल्कर-राज्य के कुछ स्थानों को तो वैदिक और पौराणिक काल का महत्त्व प्राप्त है। 'सुधा' के विगत विशेषांक में हम मध्य-भारत की वैदिक-पौराणिक माहात्म्यवाली नगरी उज्जयिनी के भू-गर्भ से प्रकट हुए स्तूपों तथा उपलब्ध साहित्य का संक्षिप्त परिचय पाठकों को करा चुके हैं। आज 'सुधा' - संपादकजी की कृपा से पुनः एक विशिष्ट स्थान का, जो होल्कर-राज्य में उत्खनन से प्राप्त हुआ है, परिचय देना चाहते हैं। होल्कर-राज्य में दो-तीन स्थान तो अत्यंत प्राचीन हैं। इक्कीस बार पृथ्वी निःक्षत्र करनेवाले महर्षि परशुराम के पिता जमदग्नि की तपोभूमि महू से आगे चलकर कुछ दूरी पर है। पहाड़ी के अत्युन्नत शृंग पर मंदिर और सुंदर जलाशय विद्यमान हैं। यह वैदिक काल की भूमि है। इसी प्रकार सहस्रधारा-नामक स्थान, जहाँ सहस्रार्जुन ने नर्मदा की धारा को सहस्र हाथों से रोकने का यत्न किया था, और वह सहस्रधा होकर गिरी है, अत्यंत महत्त्व का है। पश्चिम की मालव-राजधानी माहिष्मती इतिहास-विदों की प्रिय वस्तु है। ऐसे अनेक स्थल महिमा-मयी देवी अहल्या की राजधानी में आज भी विद्यमान हैं।

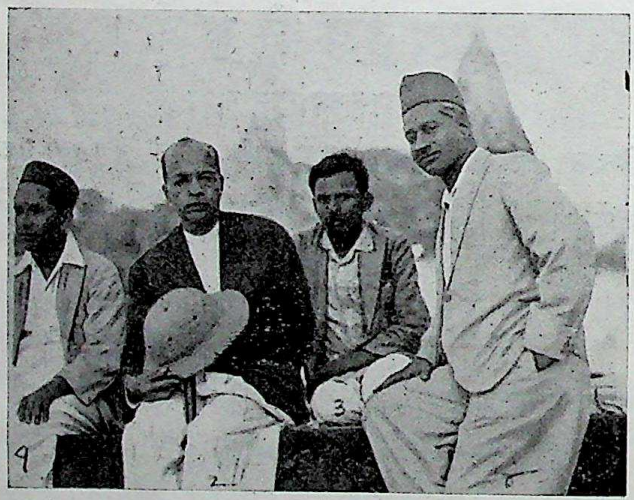

१. श्रीयुत नारायणरावजी सोर्टी एम्० ए०, २. स्व० श्रीकरंदीकरजी, ३. श्रीकरंदीकरजी के भानजे और ४. लेखक

सन् ३६ की बात है, सतारा के श्रीविष्णु रघुनाथ करंदीकर महाशय (अब स्वर्गीय) मालव की यात्रा के लिये आए थे। उन्होंने इस यात्रा का आरंभ उज्जैन से किया था। उज्जैन के निकटवर्ती अनेक स्थलों पर उन्हें ऐतिहासिक महत्ता प्रतीत हुई। श्रीयुत नारायणरावजी सोर्टी एम्० ए० और लेखक के साथ घूम-घूमकर उन्होंने बहुत-से स्थलों का निरीक्षण किया। और जनता, राज्य तथा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरातत्त्व-विभाग, दिल्ली में इन स्थानों के प्रति आकर्षण उत्पन्न किया। लेखक के साथ वह उन भू-गर्भ की खंदक़ों में घुसे, अगम्य, कंटकाकीर्ण टीलों, गड्ढों में भी निर्बल शरीर के साथ गए। आज उस दुर्गम यात्रा का सुपरिणाम उज्जैन की खुदाई के रूप में विदित हो रहा है।

इसी प्रकार होल्कर-राज्य में भी श्रीकरंदीकर महाशय ने घूम-घूमकर कुछ स्थलों का अवलोकन किया। उन्हें एकाधिक स्थान बड़े आकर्षक मालूम हुए, परंतु उनमें भी एक ऊबड़-खाबड़, विचित्र भूमि ने उन्हें विशेष रूप से आकृष्ट किया। यह एक साधारणतम स्थान था, जो सर्वथा एकांत, उपेक्षित था। परंतु श्रीकरंदीकरजी की पैनी दृष्टि ने उसे चुन लिया। उन्होंने तत्कालीन प्रधान मंत्री श्रीबापना साहब को सूचना दी, और कुछ व्यय की माँग भी की, जिसे श्रीबापना साहब ने स्वीकार किया। वह रक़म यद्यपि बहुत साधारण थी, परंतु आरंभ करने के लिये पर्याप्त थी। श्रीकरंदीकरजी ने कुछ ही समय में उस भयावह स्थान में अपना अड्डा जमाया। वहाँ पीने का पानी तक बहुत दूर से लाना पड़ता था। सूर्यातप की भीषण, असह्य ऊष्मा, गाड़ी-मोटर जाने का कोई मार्ग नहीं, ऐसी हालत में भी उन्होंने खुदाई का श्रीगणेश किया। वह ज़रा ही अंदर पहुँचे होंगे कि उन्हें अनेक वस्तुओं ने दर्शन दिए। २०-२० इंच लंबी-चौड़ी ईंटों के जुड़े हुए हौज़-जैसे विचित्र दृश्य दिखाई देने लगे। सिक्के भी प्राप्त हुए, तब तो उनका उत्साह दुगना बढ़ा। लेखक पर उनका अकृत्रिम स्नेह रहा है, और वह जब तक अपनी प्रत्येक कल्पना और विचार की चर्चा कर या लिखकर परामर्श नहीं कर लेते, आगे नहीं बढ़ते। उन्होंने तुरंत इन वस्तुओं पर मेरा ध्यान आकृष्ट किया, मुझे बुलवाया भी। विस्तृत वृत्तों से भरी हुई रिपोर्टें आने लगीं। खुदाई के पूर्व भी उन्होंने इस स्थान की रूप-रेखा ध्यान में रखकर विचार-विनिमय किया। हम लोगों ने यहीं यह कल्पना भी की कि आश्चर्य नहीं, मालवे में अनेक स्थानों पर जो बुद्धकालीन स्तूप-विहार आदि व्याप्त हैं, उनमें से यह भी कोई स्थल है। उन्होंने अथक प्रयत्न से इस स्थल को निकालने का श्रम किया, बहुत कुछ धूलि-पटल हटाकर इस रहस्यमयी भूमि की अंतः-सुषमा के दर्शन किए। यह एक विचित्र और सुंदर स्तूप मालूम हुआ।

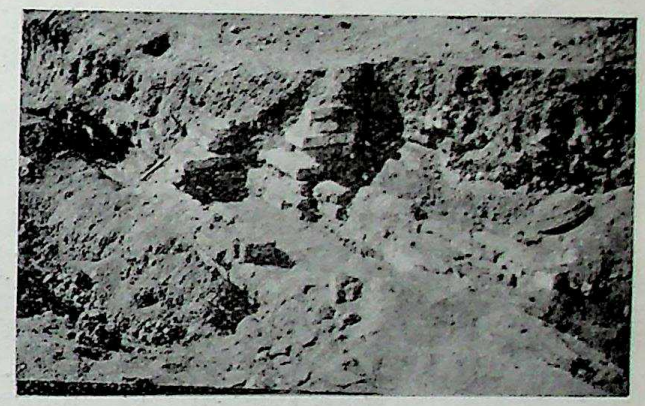

स्तूप का हौज़ के समान खुदा हुआ भाग, जिसमें प्रस्तर-खंड मिले हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

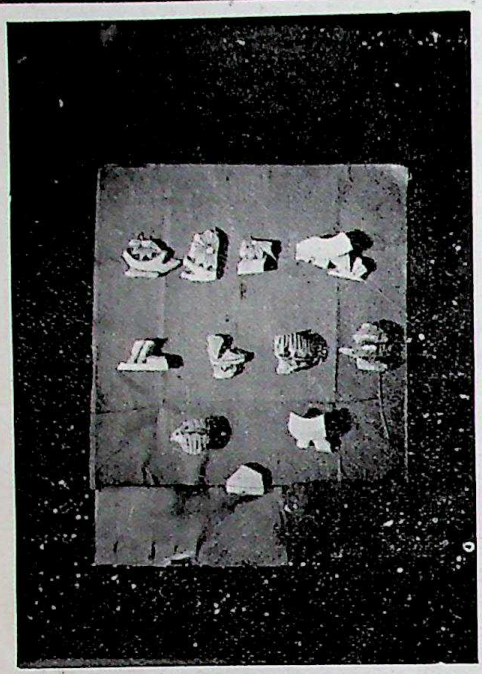

स्तूप के निकट प्राप्त विविध प्रस्तर-खंड

खुदाई के बाद ईंट की जुड़ाई का भाग (स्तूप के ऊपर का भाग)

अब तो श्रीकरंदीकरजी हर्षातिरेक से उछल पड़े। उन्होंने इस हर्ष में अपने स्वास्थ्य की चिंता न की, और निरंतर पहाड़ी पर डेरा डाले रहे। आख़िर उन्हें ज्वर ने आ घेरा, पर वह न माने। जब विवश हो गए, कोई चारा न रहा, इस प्रिय कार्य को अधूरा छोड़ वह कर्मवीर व्यक्ति की तरह उसी कर्मक्षेत्र से इंदौर के हॉस्पिटल में दाख़िल किए गए, जहाँ उन्होंने अपना शरीर इसी कार्य की निरंतर तन्मयता-चिंता रखते हुए छोड़ दिया, पुरातत्त्वानुसंधान की वेदी पर आत्मसमर्पण कर दिया। इस खुदाई के अधूरे कार्य को इंदौर के पुरातत्त्व-विभागाध्यक्ष और सुयोग्य सज्जन श्रीबैजनाथसिंहजी एम्० ए०, एल्-एल्० बी० ने उठाया, और यशस्विता के साथ संपन्न किया। इनके अथक श्रम और अनुसंधान से इंदौर-राज्य में एक गौरव की वस्तु प्राप्त हो गई, जिस पर मध्य-भारत ही को नहीं, समस्त भारत को गौरव है।

इस 'ईंट-बर्डी' स्थान पर जो वस्तुएँ उपलब्ध हुई हैं, उनमें एक विशालकाय स्तूप है, जो मौर्य-काल का है। इसके पूर्व में छोटे-छोटे पाँच स्तूप और हैं। स्तूपों का ऊपरी भाग सीमेंट-कंकरीट के खंडों द्वारा निर्मित और हौज़ की तरह विचित्र रूप में है। लंबा स्तूप १५-२०

ईंट-बर्डी (कसरावद) इंदौर-राज्य
(ईंट बर्डी का वह टीला, जहाँ स्तूप निकला है। श्रीकरंदीकर महोदय निरीक्षण कर रहे हैं।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फ़ीट आयताकार है। इस बड़े स्तूप और लघु स्तूप के पास भू-गर्भ से अनेक वस्तुएँ प्राप्त हुई हैं। अशोककालीन स्तंभों की तरह के खंड भी मिले हैं। मालूम होता है, यहीं कहीं यह स्तंभ भी होगा।

इसी प्रकार 'एप्सिडल-टेंपल' (बौद्ध-मंदिर) भी विस्मयप्रद वस्तु है। बौद्ध-विहार और यहाँ रहनेवाले नागरिकों की बस्ती होने के चिह्न—

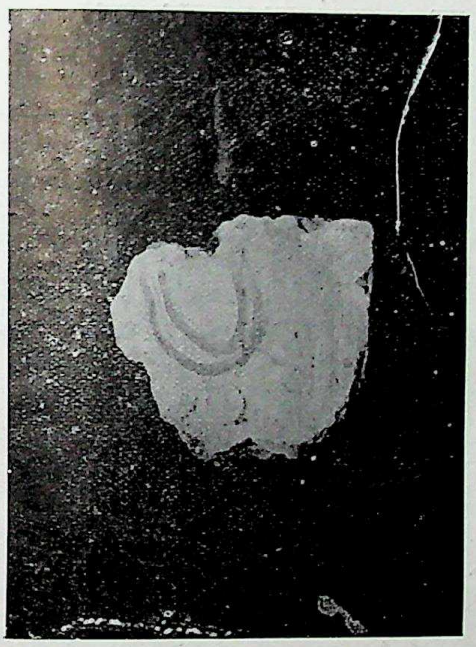

चिह्न-युक्त ईंटें

(ऐसी ही कुछ ईंटें उज्जैन की खुदाई में भी प्राप्त हुई हैं।)

मकान, सड़कें, नालियाँ, जलाशय, कुएँ, स्नानागार वग़ैरह अनेक स्थान—दिखाई दिए। इससे स्पष्ट मालूम होता है कि यह स्थान बड़ा रम्य, सुव्यवस्थित रहा होगा, और उस समय यहाँ जनावास रहा होगा, अथवा यात्रा-धाम होगा। बौद्धों की महत्त्व-पूर्ण भूमि होगी। यह अवश्य सुसंस्कृत समाज का प्रतीक है। इस जगह से अनेक सिक्के प्राप्त हुए हैं। पंच-मार्क्ड सिक्कों में भी यहाँ विशेषता है। अन्यान्य चिह्नों के अतिरिक्त एक पर खड़े हुए पुरुष का चित्र है, और एक बैठे हुए मानव का भी चिह्न है। और भी कई प्रकार के चिह्न हैं। अनेक प्रकार के सिक्के हैं। ईंटों पर भी कुछ विशेष प्रकार के चिह्न हैं। जहाँ तक मुझे स्मरण है, १३

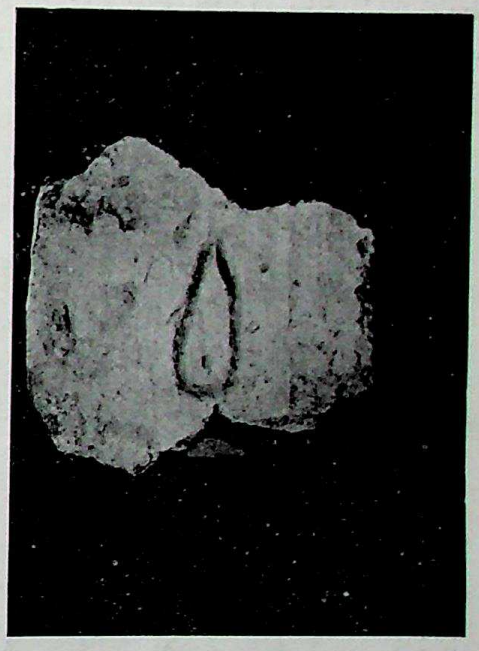

चिह्न-युक्त ईंटें

(ऐसी ही ईंटें उज्जैन की खुदाई में भी मिली हैं।)

प्रकार के चिह्न हैं। ईंटें पुख्ता २०-२० इंच लंबी हैं। तिकोनी, छोटी-छोटी और बड़ी-बड़ी तिकोनी ईंटों के भी २०-२५ नमूने मिले। ये 'तौल' की तरह बनी हुई हैं, क्या हैं, और इस प्रकार तिकोनी बनाने का कौन-सा हेतु था, विदित नहीं होता। आयताकार छोटी-छोटी ईंटें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी अनेक हैं। गोल पॉलिश्ड खंड भी बहुत-से हैं। चिकने, पॉलिश किए हुए, काले बर्तनों के खंड भी प्राप्त हुए। हेराकोटा की मूर्तियाँ भी बहुत सुंदर हैं। मृत्तिका के छोटे-बड़े अनेकों पात्र प्राप्त हुए। पात्रों के ढक्कन, मुँह, प्याले, डिशेस, छोटी-छोटी तश्तरियाँ और थालियाँ भी बहुत सुंदर हैं। एक सुराही बहुत महत्त्व की प्राप्त हुई। उस पर ब्राह्मी-लिपि में स्पष्ट ही 'सु विशाखाय' लिखा है। ऐसे ही एक पर 'तिस्स गुप्त' सेठिम, मम आदि अक्षर

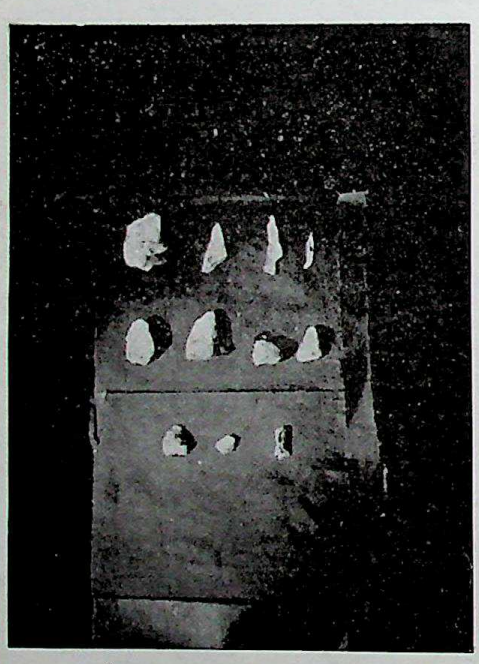

कुछ प्रस्तर के औज़ार स्तंभ-खंड

अंकित हैं। इससे इतिहास पर बहुत प्रकाश पड़ सकता है। एक सुराही पर तो स्पष्ट ही स्तूप का सुंदर मान-चित्र अंकित है। मालूम होता है, इस बुद्ध-तीर्थ के निवासी किसी कुंभकार ने यह पात्र सचित्र स्थानीय स्तूप की प्रतिकृति के रूप में बनाया है। सिक्कों में भी ताँबे, चाँदी के कई हैं, कार्षापण भी हैं। पात्रों की विचित्र आकृतियाँ मिलती हैं। इसी प्रकार ताँबे का अलंकार भी मिला है। शायद वह सिर पर पहनने का हो। मृत्तिका के आकाश-दीप, सछिद्र सुंदर पात्र भी अनेक हैं। मिट्टी के कई नल भी प्राप्त हुए।

इन वस्तुओं पर विचार, अध्ययन और अनुसंधान करने की परमावश्यकता है। श्रीयुत सिंह महोदय (क्यूरेटर नररत्नमंदिर) ने इंदौर में इस समस्त प्राप्त साहित्य को बहुत व्यवस्थित रूप में लाकर रक्खा है, जिसके लिये वह हमारे धन्यवाद के पात्र हैं! इंदौर-प्रवासी को, जिन्हें इतिहास से अभिरुचि है, इस महत्त्व-पूर्ण बौद्धकालीन साहित्य का अवलोकन करना चाहिए। अभी इस स्थान पर और भी अनुसंधान की आवश्यकता है। यहाँ के विस्तृत भू-भाग में चतुर्दिक् व्यापी टीलों और भू-भागों में बहुत कुछ इतिहासावशेषों की संस्कृति-परिचायक साहित्य प्राप्त होने की आशा है। ईंट-बर्डी (उक्त स्तूपवाला स्थान) स्तूप की रचना, उससे प्राप्त साहित्य एवं मुद्रा-पात्रों आदि से यह स्पष्ट मालूम होता है। यह स्तूप ईसवी-पूर्व तीसरी, चौथी शताब्दि का है।

मंडलेश्वर-नगर से नर्मदा-नदी पार कर खरगोण की रोड पर होल्कर-राज्य का कसरावद-नामक ग्राम है। कसरावद से तीन मील

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कच्ची सड़क पर यह स्तूपवाली पुनीत भूमि है। पवित्र स्थान है। मध्य-भारत के गौरव का होल्कर-राज्य की सत्कीर्ति का यह बुद्धकालीन विषय है *।

---

* मैं चाहता था, इस लेख के साथ और भी विवरण और प्राप्त वस्तुओं के चित्रादि देता। मैंने मित्रवर श्रीसिंह महोदय को लिखा भी था, किंतु प्राप्त न कर सका। मेरे पास के चित्रादि स्व० करंदीकरजी के निकाले हुए हैं, और लेख का आधार प्रत्यक्षावलोकन एवं स्मृति है।—लेखक

भारत-सरकार से रजिस्टर्ड

ताक़त की मशहूर दवा

कैलाश-वीर्य-वज्र-चूर्ण

कैसा ही वीर्य पानी के समान क्यों न निकल जाता हो, केवल ७ दिन में १४ ख़राक से वीर्य का निकलना, स्वप्नदोष, शीघ्रपतन और नामर्दी को दूर कर मनुष्य को पुरुषार्थी बना देता है। मूल्य २); लाभ न हो, तो दाम वापस।

कैलाश-तिला—यह तिला अपना सानी नहीं रखता। इसके इस्तेमाल से न छाले पड़ते हैं, न कोई तकलीफ़ होती है। इंद्रिय की प्रत्येक कमज़ोरी को दूर करता है। मूल्य २), डाक-व्यय अलग। फ़ायदा न होने पर दाम वापस।

कैलाश-प्रदर-निवारण-चूर्ण

यह दवा स्त्रियों के प्रदर के लिये अचूक है। बदबूदार पानी का निकलना, हथेली की जलन, हाथ-पैरों का ऐंठना, झुनझुनाहट, कमर तथा पिंडली में दर्द, सिर में हमेशा दर्द का रहना, मुँह का सूखना, प्यास का लगना, ये कुल बीमारियाँ इस दवा से शीघ्र ही आराम होती हैं। धब्बा पड़ना, कमर तथा पिंडली के दर्द को केवल तीन ही दिन में आराम करता है, और सात दिन में जड़ से खो देता है। मूल्य एक डिब्बा २); डाक-व्यय पृथक्।

पता—कैलाश ऐंड कंपनी, सेंट्रल धर्मशाला, कानपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी में प्रमत्त रचना

[श्रीयुत अध्यापक चेतराम शर्मा]

अध्यापक का कर्तव्य कुलिश-कठोर और संयम-कठिन होता है। उसे अशुद्ध और भ्रष्ट पुस्तकें पढ़ानी ही पड़ती हैं। यदि वह अशुद्ध ग्रंथों के दोष न बताए, तो कर्तव्य-च्युत होता है; बता दे, तो ग्रंथकार या लेखक का कोप-भाजन होने की उसे आशंका रहती है। कच्चे, भूखे और अयोग्य लेखक अपने दोष देख-सह नहीं सकते। भ्रष्ट रचना के दोषों की चर्चा न करने पर भी अध्यापक को अपनी योग्यता पर लांछन लगने का भय रहता है — उसकी मूर्खता व्यक्त होती है। कुछ विद्यार्थी लेखकों और ग्रंथकारों से अध्यापक को छोटा—हलका समझते हैं। जब उनसे नियत पाठ्य पुस्तकों की अशुद्धियों की चर्चा की जाती है, तो उन्हें विश्वास ही नहीं होता। इस चर्चा से विद्यार्थियों को आश्चर्य होता है—छपी पुस्तकों में भी दोष ! इस दशा में अध्यापक के लिये विद्यार्थियों को पढ़ाना कठिन हो जाता है।

ऐसी कठिनाइयों का सामना उन्हीं अध्यापकों को करना पड़ता है, जो कृतविद्य, स्वाधीनचेता, अंतरात्मा के आदेश-पालक, साहसी एवं सत्य, ज्ञान और भाषा-साहित्य के शुद्ध भक्त होते हैं। जिन्हें गुण-दोष की विवेचना नहीं, उन्हें सब धान बाइस पसेरी—'सबसे अच्छे मूढ़, जिन्हें न ब्यापे जगत-गति'—उनके सामने कोई कठिनाई नहीं, वे सुखी हैं।

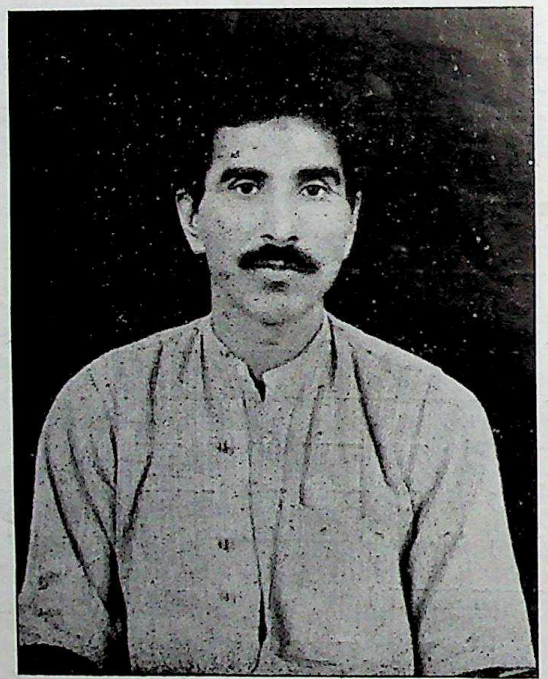

श्रीयुत अध्यापक चेतराम शर्मा

इस लेख में छपने-छापने की भूलों और दोषों का उल्लेख नहीं। प्रमत्त रचना के ये उदाहरण हिंदी-भाषा-भाषियों की पुस्तकों और लेखों से लिए गए हैं, अन्य प्रांतीय, इतर भाषा-भाषी, हिंदी-लेखकों की रचना से नहीं। इस लेख के अनेक पद-वाक्यों को हमने रेखांकित और अनेक को कोष्ठांतर्गत किया है।

हिंदी-भाषा में हमें चार प्रकार की रचना मिलती है—१. विषय के विचार से अच्छी, पर भाषा के विचार से कच्ची (अनभ्यासी लेखकों की रचना), २. भाषा के विचार से अच्छी, पर विषय के विचार से कच्ची (अल्पज्ञ लेखकों की रचना), ३. विषय-भाषा (उभय) के विचार से कच्ची (बच्चों के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख), और ४. विषय-भाषा (दोनों) की दृष्टि से प्रौढ़ (प्रौढ़ लेखकों की रचना)। लक्ष्य या उद्देश्य के विचार से भी लेख, रचना या पुस्तकें चार ही प्रकार की हैं—१. लोक-कल्याणकारिणी (सात्त्विक रचना), २. तथ्य-निर्णय, सत्य-रक्षा और मातृभाषा-गौरव के लिये लिखे गए खंडन-मंडनात्मक लेख (जो प्रायः उत्तेजित होने पर भी लिखे जाते हैं—सात्त्विकता-युक्त राजस लेख), ३. पैसे की प्रेरणा के लेख और ४. प्रसिद्धि की प्रेरणा के लेख (पाँच सवारों में गिने जाने को लिखे गए लेख)। तीसरे और चौथे प्रकार के लेखों को हम तामस या पैसे और प्रसिद्धि के भूखे लेख कहते हैं। कृतविद्य, विचारशील, व्याकरण-सम्मत भाषा-लेखक हिंदी में विरले हैं। प्रसिद्धि को हम लेखक की कसौटी नहीं मान सकते। जितनी अंधी, अनर्थकारिणी और प्रमत्त रचना की भर-मार हिंदी में है, उतनी बँगला, मराठी, गुजराती, उर्दू आदि किसी में नहीं ; राजरानी अँगरेज़ी में तो होगी ही नहीं, क्योंकि उसके लेखक, प्रेमी, सेवक और भक्त उसकी रक्षा, शृंगार, सेवा और पूजा में सदा जागरूक रहते हैं। हम ऐसे हिंदी-लेखकों को जानते हैं, जो विषय-भाषा-ज्ञान-शून्य हैं, पर प्रसिद्ध हैं। प्रसिद्धि के अनेक कारण हैं। अयोग्य लेखकों की प्रसिद्धि का कारण उनकी अपनी लेखन-योग्यता नहीं ; चाटूक्ति-चतुरता, दल-विशेष की सदस्यता, जन-विशेष की मित्रता, अधिकारारूढ़ व्यक्तियों की प्रशंसा और चरण-वंदना एवं छल-कपट-परायणता है। हमने देखा, एक विश्वविद्यालय द्वारा स्वीकृत-पुरस्कृत एक अति-शय भ्रष्ट पुस्तक की खरी आलोचना प्रकाशित हुई। विश्वविद्यालयवाले, बस, इसी बात पर आलोचक से तो चिढ़ गए, पर अयोग्य लेखक से और अधिक हिल-मिल गए। उसका पक्ष लेकर उसकी प्रत्येक भ्रष्ट पुस्तक को पाठ्य पुस्तक नियत करने लगे। हिंदी-भाषा और विद्यार्थियों के हित की उपेक्षा की गई, अंध-पक्षपात और अनु-चित सहायता का और भी समर्थन किया गया। लेखक को अपनी भूलों और दोषों पर कुछ भी खेद, लज्जा तथा पश्चात्ताप नहीं। अपने मित्रों और कृपालु सहायकों के बल पर वह अपराधी होने पर भी अकड़कर चलता है। ऐसे बहुसंबंध-विशिष्ट, अनाड़ी, दुर्विदग्ध लेखकों से आलोचक भी डरते हैं। मार्च, १९३७ के 'विशाल भारत' में एक विद्वान् सज्जन ने हिंदी की चार पुस्तकों की आलो-चना तो प्रकाशित करवा दी, पर वचन-बद्ध होने पर भी वह पाँचवीं पुस्तक की आलोचना अब तक न कर सके। ईश्वर जाने, 'विशाल भारत' के किसी नियत पाठक ने उनसे इसका कारण पूछा कि नहीं ; पर हमने उनसे अब तक पाँचवीं पुस्तक की आलोचना प्रकाशित न करने का कारण पूछकर अपनी धृष्टता और दुःसाहस दिखा ही दिया। उन्होंने उत्तर से तो अवश्य अनुगृहीत किया, पर उस उत्तर से हमें हिंदी-आलोचकों की दुर्बलता या सर्वप्रिय होने की इच्छा पर बहुत क्षोभ हुआ। वह जीवित कवियों की आलोचना करने से डरते हैं। उक्त 'पाँचवीं पुस्तक' की आलोचना उन्होंने इसी भय से नहीं की। बात भी कुछ ऐसी ही है। इसकी आलोचना करने से कई मान्य जनों और बड़े विद्वानों की भी आलोचना हो जाती। सत्साहित्य और हिंदी की रक्षा के लिये उक्त पुस्तक की यथार्थ आलोचना आवश्यक थी। पाठक देखते, हिंदी में कैसा अनर्थ हो रहा है। कैसा भेड़िया-धसान चल रहा है ! 'विशाल भारत' के उक्त विद्वान् सज्जन को पता न था कि उस 'पाँचवीं पुस्तक' के प्रसव-स्थान के पास ही किसी अप्रसिद्ध साहसिक ने उसकी निर्भीक आलोचना कर डाली है। विद्वान् यदि सत्यार्थ-प्रकाश करने से डरेंगे, तो भारती-भवन में भी अंधेर मच

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयगा । अस्तु । आजकल की समाचार-पत्र-सूचीपत्र-पुस्तकगत प्रसिद्धि सदा सच्ची न होने से योग्यता की यथार्थ कसौटी नहीं मानी जा सकती । स्व० लाला हरदयालु एम्० ए० ने एक बार अपने एक व्याख्यान में कहा था—यदि मेरे साथ कुछ सच्चे, अच्छे प्रचारक हों, तो मैं योरप की गलियों में राम-कृष्ण की मूर्तियाँ स्थापित करवा उन्हें पुजवा दूँ । यह ठीक है । दृढ़ प्रचारक हों, तो साधारण सिद्धांत भी प्रचार पा जाते हैं । लेखक बहुसंबंधी हो, चतुर-चालाक हो, प्रकाशक प्रभावशाली और साधन-संपन्न हो, तो अधम लेखक भी प्रसिद्ध हो जाते हैं । जो स्वाध्याय नहीं करता, जिसे जिज्ञासा नहीं, अभ्यास का यौवन नहीं, साहित्यिक रुचि की रति नहीं, विद्वज्जन-सहवास नहीं, ज्ञान-गर्भ नहीं, विचार-प्रसव-पीड़ा नहीं, वह बाँझ लेखक क्या प्रसव करेगा, क्या विचार व्यक्त करेगा, क्या लिखेगा ? इन गुणों से रहित प्रसिद्धि बाघ के चमड़े से ढकी गधी है ।

हिंदी की एक पुरानी पुस्तक में 'कौवेररंभाभिसार' के बदले 'कौवेरंभाभिसार' छप गया । बस, हिंदी के अनेक बड़े-बड़े लेखकों ने उसे वैसे ही उद्धृत कर पढ़-पढ़ा दिया । नाटक की प्रस्तावना का एक भेद 'अवलगित' भी है ; पर अनेक हिंदी-पुस्तकों में अंधपरंपरा-वश अब तक भी वह 'अवगलित' ही छपता आ रहा है । कई संभ्रांत लेखक भी 'जागुरित' न लिखकर 'जागृत्', 'जाग्रत्' ही लिखते हैं । 'सृजन' (सर्जन), 'एकत्रित' (एकत्र), 'श्रीयुत्', 'अद्भुत्' (त), 'अड़चन' (अड़चल) आदि अशुद्ध शब्द प्रचलित हो गए हैं । 'जब कि', जैसा कि, 'जितना कि', जिसका कि में 'कि' व्यर्थ, निष्प्रयोजन है—व्याकरण में इसके लिये कोई स्थान नहीं, फिर ऐसा क्यों लिखा जाय ? 'यहीं पर', 'यहाँ पर', 'वहाँ पर' आदि अशुद्ध और अनावश्यक रूपों का प्रयोग हमारा बुद्धि-शैथिल्य व्यक्त करता है । 'यहाँ' का अर्थ ही 'इस स्थान पर' है, फिर इस स्थान-वाचक अव्यय पर एक और 'पर' क्यों लगाया जाय ? भाषा-शब्दों के लिये भी संक्षिप्तता, यथार्थता और उपयुक्तता सर्वथा आवश्यक हैं । जब 'निर्दय' से ही भाव भली भाँति व्यक्त हो जाता है, तब उसे 'निर्दयी' अशुद्ध बनाकर क्यों लिखा जाय ? छंद या पद्य में शब्दों की साधारण अशुद्धियाँ सही जा सकती हैं, क्षंतव्य हो सकती हैं, पद्य में बड़े गुण की रक्षा करने के लिये छोटा-मोटा दोष नगण्य हो जाता है—मात्रा-समता या वर्ण-समता के लिये ऐसा करना ही पड़ता है; पर गद्य में ऐसे अशुद्ध रूप क्यों लिखे जायँ ? 'निर्दोषी,' 'निर्धनी', 'कृतघ्नी', 'निरपराधी' आदि रूप अशुद्ध हैं । 'हज़ारों', 'लाखों' ठीक रूप हैं, 'सहस्रों', 'लक्षों' नहीं । (संस्कृत) तत्सम संख्या-वाचक बहुवचन विशेषणों पर 'ओं' लगाना व्यर्थ है, भद्दा है । 'निराश' और 'नैराश्य' उचित ही है, 'निराशा' नहीं । 'आधीन', 'अधीनस्थ' भी व्यर्थ रूप हैं । 'आधीन' तो यों ही चल पड़ा है । 'अधीन' स्वयं विशेषण है, 'स्थ' जोड़कर उसे तुंदिल नहीं बनाना चाहिए । 'पठित पुस्तक', 'पठित विषय' शुद्ध प्रयोग हैं, 'पठित व्यक्ति', 'पठित समाज' हमारे प्रमाद-जनित हैं । पढ़े-लिखे व्यक्ति या समाज के अर्थ में 'शिक्षित व्यक्ति', 'शिक्षित समाज' ही तर्क-व्याकरण-सम्मत रूप हैं । पठित तो उसी पर लगेगा, जिसे किसी ने पढ़ा हो । पठित कर्मत्व लिए है, शिक्षित कर्तृत्व-युक्त । आत्मा, प्रकार, समाज सब प्रकार से पुंलिंग हैं । हमने उन्हें अपने अज्ञान से ठोक-पीटकर स्त्रीलिंग बना दिया है । महात्मा और परमात्मा (सर्वात्मा) का प्रयोग सब पुंलिंग में करते हैं, पर 'आत्मा' का स्त्रीलिंग में । क्या विशेषण लग जाने या समस्त पद हो जाने पर शब्दों के लिंग-परिवर्तन हो जाते हैं ? इनके पुंलिंग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रयोग मिलते हैं—'हते पराया आत्मा जीभ लिए तलवार'—कबीर, इसके दो प्रकार, रचने का प्रकार; 'जनु दंभिन कर जुरा समाजा', 'गुरु-जन लाज समाज बड़' (रामच० मा० में तुलसीदास ।) 'नदिएँ', 'लिपिएँ', 'आवश्यकीय' भी अशुद्ध हैं, 'नदियाँ', 'लिपियों', 'आवश्यक' शुद्ध । हिंदी-संस्कृत दोनो में सुर का अर्थ देवता है, स्वर नहीं; फिर भी न-जाने (ध्वनिवाची) स्वर के अर्थ में सुर का प्रयोग क्यों किया जाता है ? विदेशी भाषा और शब्दों के दास होने के कारण हमारे अनेक शब्दों के रंग-रूप और लिंग बदल गए हैं । हमारी अंध-परंपरा, भेड़िया-धसान और दम्भ प्रवृत्ति-प्रकृति के कारण हमारे अनेक शब्द विकृत हो गए हैं । 'रूह', 'क़िस्म' और 'अंजुमन' के ग़ुलामों ने आत्मा, प्रकार और समाज को स्त्रीलिंग बना दिया । पुस्तक भी किताब के कारण ही स्त्रीलिंग है । बहिन, पहिला, पहिचान शुद्ध तद्भव रूप हैं—प्राकृत से हिंदी में आए हैं । पुरानी हिंदी में (हिंदी-शिक्षावली में भी) ये ही रूप हैं, पर विदेशी लिपि के दासों ने इनका इकार फेंककर इन्हें विकृत (बहन, पहला, पहचान) कर दिया । हमारी भाषा के लिये संस्कृत-प्राकृत का बुद्धि-पूर्वक अनुकरण और शरण-ग्रहण पथ्य और उचित है, विदेशी भाषाओं का अंधानुकरण नहीं । विदेशी भाषा का अंधानुकरण दासता और अपनी संस्कृत-प्राकृत का अनुकरण-अनुसरण सेवा और मर्यादा-रक्षा है ।

'यद्यपि' और 'तथापि' में जो संबंध है, वह 'यद्यपि' और 'परंतु' में नहीं । फिर भी अनेक प्रसिद्ध हिंदी-लेखक 'यद्यपि'-युक्त वाक्य के पश्चात् 'तथापि' से नहीं, 'परंतु' से अन्य या अंतिम वाक्य आरंभ करते हैं । 'यद्यपि' के संबंध में 'परंतु'-प्रयोग व्याकरण-सम्मत नहीं । कई बड़े-बड़े लेखक भी 'स्त्री-पुरुष' या 'औरत-मर्द' के अर्थ में 'स्त्री और मनुष्य' या 'औरत और आदमी' लिखते हैं । इन लेखकों के मत से 'स्त्री' मनुष्य और 'औरत' आदमी नहीं क्या ? 'जीवनी' का अर्थ 'जीवन-चरित' न था, न होना ही चाहिए ; पर अब अनेक लेखक इसे इसी अशुद्ध अर्थ में प्रयुक्त करते हैं । 'तुम बाद में आना' भी अशुद्ध ही है । बाद ही पर्याप्त है । हमारे एक पर्वतीय भाई ने टिहरी को 'मेरी निजी जन्म-भूमि' लिखा है । न-जाने यहाँ इस निजी का क्या अर्थ है । यदि यह शुद्ध प्रयोग है, तो 'मेरी निजी माता', 'मेरी निजी पत्नी' और 'मेरे निजी पिता' भी शुद्ध ही हैं । हिंदी के मासिक पत्रों में 'दो गीत', 'चार कविताएँ'-शीर्षक पाठक पढ़ते ही हैं । इन शीर्षकों के नीचे कभी एक ही कवि की और कभी भिन्न-भिन्न कवियों की रचनाएँ प्रकाशित होती हैं । क्या इन गीतों और कविताओं का कोई विषय नहीं, कोई शीर्षक नहीं ? गीतों या कविताओं की संख्या ही इनका शीर्षक या विषय है ? आलोचना-शास्त्र-विषयक एक आधुनिक पुस्तक के वक्तव्य में तीन बार 'इधर की ओर' लिखा हुआ है । इस वाक्यांश का प्रयोग लेखक ने इन दिनों—आजकल और इस ओर—इस विषय पर इन (दो) अर्थों में किया है । 'इधर' ही पर्याप्त था । 'दूसरों की सुनो', 'दूसरों से कहो' में दूसरों का प्रयोग तर्क-व्याकरण-सम्मत नहीं । यहाँ पहिलों, दूसरों, तीसरों का प्रयोग सर्वथा अशुद्ध है । संस्कृत-अँगरेज़ी में भी द्वितीय, तृतीय, सेकेंड, थर्ड्स नहीं कहते । दूसरों के बदले औरों या और का प्रयोग शुद्ध और उचित है । (बड़ों के समान औरों भी ठीक है ।) दूसरों कहने से तीसरों, चौथों आदि का भी विधि-निषेध अपेक्षित रहता है, फिर दूसरों के बदले औरों क्यों न कहें । दिल्ली के एक प्रसिद्ध उपन्यास-कहानी-लेखक अँगरेज़ी-शब्दों के विना एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छोटा-मोटा अनुच्छेद भी नहीं लिख सकते। हिंदी-लेख-पुस्तकों में अँगरेज़ी-पद-वाक्य देने अनिवार्य ही हों, तो उन्हें अर्थ-सहित लिखना चाहिए, और पद-वाक्यों को देवनागरी में।

हिंदी के साथ जैसा घोर अनर्थ पंजाब में हो रहा है, वैसा कदाचित् ही किसी अन्य प्रांत में होगा। हिंदी-परीक्षाओं के लिये नियत प्रायः सभी पुस्तकें भाव-भाषा (दोनो) के विचार से सर्वथा भ्रष्ट, अतएव त्याज्य, हैं। जिन्होंने कभी कहीं हिंदी-हिंदोस्तानी की शिक्षा नहीं पाई, उनका अभ्यास नहीं किया, वे भी अपनी निर्लज्जता और उद्दंडता के बल पर हिंदी के लेखक, महाविद्वान् और कलाकार, नाट्याचार्य बने हुए हैं। ये भूखे—चोर-चाटुकार लिक्खाड़ अनाप-शनाप, ऊट-पटाँग जो कुछ काग़ज़ पर लिख मारते हैं, सब सहज ही में स्वीकृत हो जाता है—"साईं घोड़न के अछत गदहन पायो राज, कवा लीजिए हाथ में, दूर कीजिए बाज।" इन स्वयंभू लेखकों की तो चाँदी है, पर भोले-भाले, असहाय अध्यापकों और परीक्षार्थियों की विवशता और दुर्दशा पत्थरों—ठीकरों से लदा एक गड्ढा वैसे-का-वैसे ही रहने पर भी पंजाब में आकर रत्न-भरा कहलाता है। पंजाब में रहनेवाले एक कलाकार, कवि, महाविद्वान्, नाटकाचार्य (ये उपाधियाँ उस लेखक को अपने मित्रों से प्राप्त हुई हैं।) उसी गति से पुस्तक-प्रसव करते हैं, जिस गति से मक्खी कीड़े प्रसव करती है। ये अल्पावधि-प्रसूत पुस्तकें कीड़ों से भी दुष्ट और भयंकर हैं। जिन्हें हमारे कथन पर विश्वास न हो, संदेह हो, वे इन्हें स्वयं पढ़ने की कृपा करें। इनके मुद्रक, प्रकाशक और मित्रों के अतिरिक्त और किसी ने इनकी बड़ाई नहीं की। एक स्वयंभू लेखक के एक 'मौलिक अद्वितीय काव्य' में (उज्ज्वल के बदले) आठ बार 'उज्वल' ही लिखा गया है। इस काव्य में कुल ५३० छंद हैं। इनमें बीस छंद भी भाषा-व्याकरण और छंद-शास्त्र के विचार से शुद्ध, निर्दोष और रम्य नहीं। छंद में बहुत ऊँचे भाव और रसात्मकता न हो, तो छंद की वर्ण-मात्रा और भाषा तो ठीक हो। जिस लेखक से यह भी न हो सके, वह अभी अभ्यास करे, लिखना सीखे। यदि पाँच सवारों में नाम लिखाए बिना चैन न पड़े, तो गद्य लिखे, पद्य नहीं। छंदों की भाषा असंबद्ध, वाक्य-योजना अशुद्ध, पद-विन्यास भद्दा और छंदो-रचना अतिशय भ्रष्ट होने पर भी कोई भरती की रचना काव्य कैसे कहला सकती है। 'छंद-सूची' में जिन छंदों का उल्लेख है, इस 'मौलिक अद्वितीय काव्य' में उनमें से कुछ छंद हैं ही नहीं। इस दूषित काव्य का यह पहला ही पद्य ('पंजाब-प्रशस्ति' का) पढ़िएगा—

"आर्य जाति का उज्वल भूतल
पंचनदों का सुंदर देश
स्वर्ग विभूतिभरा संसृति का
भूतिमान भारत राकेश
स्वर्ग छटा की स्वच्छच्छविसा
क्षौणीरमणी का मृदुहास
झलक रहा है भारत भू पर
जिसका उज्वल सा इतिहास"

(मूल-पुस्तक में यह पद्य दो समूहों की आठ पंक्तियों में छपा है। इनमें कहीं कोई विरामादि चिह्न नहीं हैं।) प्रशस्ति-पद्य को प्रशंसा-पूर्ण होना चाहिए था; पर इसमें प्रयुक्त कुछ पदों का संकेत प्रशस्ति-प्रतिकूल है। 'संसृति'-'क्षौणी' पद तो यहाँ सर्वथा अनुचित हैं। 'संसृति' के बदले 'वसुधा' और 'क्षौणी' के बदले 'धरणी' हो, तो छंद का भाव और संगीत दोनो ही सज जायँ। विभूति 'वसुधा' में है, 'संसृति' में कहाँ; रमणीयता 'धरणी रमणी' में है, क्षौणी—क्षरणशीला-क्षीणोन्मुखी—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में नहीं। "यवनों से पद-दलित हुए थे तक्षशिला के ध्वंस विशेष"—यह वाक्य भी प्रशस्ति में है। (हमारे पास प्रथम संस्करण की प्रति है।) हम आलोचना नहीं कर रहे हैं; इसलिये इस काव्य के सभी गुण-दोष यहाँ नहीं लिख सकते। यह भ्रष्ट पोथी प्रयाग के एक प्रसिद्ध भारतीय प्रेस से मुद्रित-प्रकाशित हुई है। आश्चर्य है, ऐसी आमूल-चूल, आद्योपांत अशुद्ध पुस्तक पर भी पंजाब-सरकार से पुरस्कार मिला है। इस काव्य का एक वाक्य है 'कांचन में काठिन्य' यहाँ 'कांचन' को न-जाने क्या समझ लिया गया। कांचन तो कठिन होता ही नहीं, हीरा कठिन-कठोर होता है। इसके लेखक की गर्वोक्ति है कि 'तक्षशिला' को छोड़कर 'अब तक प्रायः कोई भी काव्य देश या नगर के नाम पर नहीं बना।' इस शिला-काव्य में प्रायः सभी आकारांत तत्सम (संस्कृत) स्त्रीलिंग शब्दों के बहुवचन ऐंकारांत हैं—सेनाऐं, मालाऐं, वासनाऐं, पाठशालाऐं, परिचारिकाऐं, भावनाऐं। 'तक्षशिला' रावलपिंडी-सड़क पर लाहौर से लगभग दो सौ मील दूर है; पर ग्रंथकार उसे 'लवपुर से पचास योजन पर रावलपिंडी के कुछ पास' और 'सिंधु, विपाशा के सुमध्य में' बताते हैं। तक्षशिला को 'सिंधु, विपाशा के सुमध्य में' बताना ऐसा ही प्रमत्त कथन है, जैसा दिल्ली को सिंधु और ब्रह्म-पुत्र के मध्य में कहना। अव्याप्ति और अति-व्याप्ति-दोष तो पाठकों ने पढ़े-सुने होंगे, पर यहाँ (लाहौर) के एक नाटक के प्रथम संस्करण में 'व्याप्ति'-दोष भी गिना गया है। इस नाटक का नाम 'दा०' रख लीजिए। इसे नाटककार ने 'हिंदी-साहित्य में प्रथम वियोगांत नाटक' और 'मौलिक' लिखा है। पर इसमें एक वाक्य भी तो मौलिक नहीं, न यह वियोगांत ही है। इतने बड़े कवि-नाटकाचार्य को 'वियोग'-शब्द का अर्थ और प्रयोग भी नहीं आता। इसमें न वियोग है, न वियोगी, न वियोगिनी। इसमें भी ऐंकारांत स्त्रीलिंग बहुवचनों की भरमार है—'इच्छाऐं' आदि। इस नाटक की परिभाषा में कला की बड़ी विचित्र परिभाषा दी हुई है—"किसी...जब विशेषता या सौंदर्य की ओर हृदय आकृष्ट होने लगता है, तब उस वस्तु के सर्वांग-व्यापी सौंदर्य को कला के नाम से पुकारा जाता है।" पाठक, इस परिभाषा की परीक्षा कीजिएगा। प्रमत्त रचना की परा काष्ठा हो गई। 'मृगया' का अर्थ 'मृग' समझ लिया गया—"फँसने दे कोई मृगया"—'दा०'-नाटक २ पृ०; "इस निर्जन प्रांत में मृगया की खोज करते हुए"—२५ पृ०। राजा लक्ष्मणसिंह के शकुंतला-नाटक की टीका-टिप्पणी में भी तीन-चार बार मृगया को मृग के अर्थ में प्रयुक्त किया है। मृगया का अर्थ तो मृग-हनन-क्रिया है, मृग नहीं (मृग्यन्ते पशवोऽस्यां इति मृगया)। इस नाटक की भूमिका में भारतीय (प्रसादांत) नाट्य-शैली, स्वगत और आकाशभाषित पर भी आक्षेप हैं, संयोगांत या प्रसादांत नाटकों को बहुत घटिया बताया गया है। 'नाट्यकला का जो वास्तविक तत्त्व है, वह वियोगांत नाटकों में ही प्रतिफलित होता है। पात्रों की विवशता उन्हें अपनी ओर खींचे रहती है।' इत्यादि। यह नाटक स्वयं बहुत लंबे-चौड़े—१, १६, २३ और ४३ पंक्तियों के नीरस भद्दे—नौ से अधिक स्वगत कथनों और आकाशभाषितों से दूषित है। 'ननुनच' को आठ-दस बार 'नूनच' ही लिखा है। यह 'नूनच' नाट्य-कार का नवाविष्कार है। इस नाटक का एक छंद भी शुद्ध, संबद्ध और सार्थक नहीं। ऐसे नाटक और ऐसे काव्य हिंदी-भाषा के कलंक और हिंदी-पाठकों की उपेक्षा, अपमान तथा नगण्यता की डौंडी हैं। इस पर भी 'दा०' नाटक पंजाब-सरकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वारा पुरस्कृत हुआ है ! हिंदी की 'रत्न'-परीक्षा के लिये नियत 'अंबा-नाटक' भी ऐसा ही भ्रष्ट है। इसके एक-दो वाक्य देखिए—"अबलाओं के छलछलाते हुए मंद-मंद अश्रुपात", "एक ही दिशा में हमारा अनभ्र संसार मनुष्यता की भ्रामक कल्पनाओं के भीतर धीरे-धीरे घुसता है", "मनुष्य लड़कियों को पकड़ ले जाता है", "मनुष्य और स्त्री स्वर्ग के पुजारी हैं", "हम सदा से मनुष्य की इच्छाओं की दासी हैं"—('अंबा-नाटक' की भूमिका और प्राक्कथन से ।) उर्दू में उफ़् ही है; पर 'अंबा' में 'ओफ़' भी है—१०५ पृ०। 'मुर्दे नीरंग का पीला'—८६ पृ०, हरे-भरे घाव पर बिच्छू के डंक के समान—८७ पृ०, 'भूकंप की आवाज़ सुनाई दे रही है'—१०१ पृ०। 'फुप्फुस' को १२३ पृ० पर 'फुफ्फुस' ही लिखा है। 'पुरुष के स्तन के समान मैं निरर्थक हूँ'—३७ पृ०, 'उसके तीर पेट में भूख की तरह चुभते थे'—४० पृ०। प्रभाकर-परीक्षा-पुस्तक 'हिंदी-नाट्यकला' के २२७ पृ० से 'श्रीजयशंकर प्रसाद'-शीर्षक एक लंबा लेख आरंभ हुआ है। उसके भी एक-दो वाक्य अवलोकन कीजिए—"इससे पूर्व और भारतेंदु के बाद जिन लोगों ने भी नाटक लिखे या अनुवाद किया, उनमें मौलिकता और नाट्यकला का सर्वथा अभाव है।" "नाटककार प्रसाद की कला बिंब और प्रतिबिंबवाद के आधार पर चली है"—२२६ पृ०, 'नाटकों की मूल-घटना में पात्रों के प्राण, प्राणों की चेतना, चेतना के व्यापार पर अवलंबित है'—२३३ पृ०। इन उद्धृत वाक्यों का मूल-लेखक 'बिंब-प्रति-बिंबवाद' का अर्थ ही नहीं समझता। २३४ पृ० पर 'वैयिविध्य' का क्या अर्थ है ? विविध से तो वैविध्य बनता है, 'वैयिविध्य' नहीं।

(आगामी अंक में समाप्य)

मत चूको ! ऐसा मौक़ा फिर हाथ आए, और न भी आए।
सारा भारत जानता है कि चिकित्सा-चंद्रोदय के लेखक सत्तर साल के वयोवृद्ध

बाबू हरदासजी वैद्य

प्रमेह, धातुरोग, शीघ्रपतन, नामर्दी, वात-रोग बवासीर, आतिशक, सूज़ाक आदि कई रोगों में अद्वितीय अनुभवी हैं। कौन जानता है ?
अगले शीत-काल में आप ऐसे सत्तर साल के अनुभवी वैद्य से फ़ायदा उठा सकें, या न उठा सकें।

अतः

जल्दी कीजिए। आप बाबूजी को अपने रोग का पूरा हाल लिखिए, साथ ही आठ आने के टिकट फ़ीस के लिये भेजिए। वह आपके रोग का निदान करके आपको लिख देंगे। कानोकान किसी दूसरे को ख़बर न होगी। वह बुड्ढों को नौजवान बनाते हैं, जवानों की तो बात ही क्या ? हज़ारों नामर्द पूरे मर्द बना दिए।

हरदास एंड कंपनी, मथुरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरुषों के सैक्षुअल

(पुंस्त्व-संबंधी) रोग

पुरुषों के पुंस्त्व-संबंधी रोगों के अनगिनत विज्ञापन निकलते रहते हैं, और इतनी प्रशंसा लिखी हुई होती है कि अगर सब सत्य समझी जाय, तो इस समय तक संसार में कोई क्षीण-पौरुष (पुरुषत्व-शक्ति से हीन) रोगी न रहना चाहिए था। तिला ऐसे कि लगाते ही प्रभाव हो, और आयु-भर के लिये छुट्टी। पौष्टिक वाजीकरण ओषधियाँ ऐसी कि आध घंटे में प्रभाव हो, और २४ घंटे में फिर से मर्द हो। ऐसी तारीफ़ों को पढ़-पढ़कर लोग सारी आयु ओषधियाँ मँगवाते रहते हैं, और हैरान होते हैं कि लाभ या प्रभाव कुछ भी न हुआ, प्रत्युत कई बार तो हानि हुई। कुछ लाभदायक ओषधियाँ भी होती हैं, परंतु इतनी नहीं, जितनी कि तारीफ़ें लिखी जाती हैं। साधारण ओषधियों की भी अत्याधिक प्रशंसा देखकर हम आश्चर्य-चकित होते हैं। कुछ सज्जन एक फ़ौलाद के भस्म का विज्ञापन दे रहे हैं। इसकी प्रशंसा में हमारे पं० ठाकुरदत्त शर्मा वैद्यजी का नाम भी दिया जाता है। उन्होंने लिखा था कि इससे उत्तम योग बतलानेवाले को १०००) रु० इनाम दिया जावेगा, परंतु किसी ने वह इनाम अभी तक नहीं लिया। वह फ़ौलाद भस्म एक अच्छा नुस्ख़ा है। हमारे यहाँ कुश्ता फ़ौलाद दर्जा अव्वल के नाम से ५) रु० तोला बिकता है, और इससे उत्तम कितनी ही और फ़ौलाद की भस्में हैं—२०) रु० तोला, १००) रु० तोला और फिर १०००) रु० तोला तक तैयार होती हैं। अन्य ओषधियों का तो कहना ही क्या। सवा सौ के लगभग पौष्टिक अक्सीरें और तिला हर समय तैयार रहते हैं, और एक-से-एक बढ़कर हैं। परंतु हम इतनी तारीफ़ किसी की भी लिखना पसंद नहीं करते, जितनी कि केवल ५) रु० तोलेवाली भस्म की लोग कर देते हैं। वाजीकरण पौष्टिक ओषधियों का सेवन प्रायः इन्हीं दिनों में किया जाता है, इसलिये जिन्हें आवश्यकता हो, उन सज्जनों को हम सूचना देते हैं कि इधर-उधर न भटककर पुरुषों के विशेष रोगों के विशेषज्ञ श्रीपं० ठाकुरदत्त शर्मा वैद्य आविष्कारक 'अमृतधारा' की देख-भाल में तैयार हुई ओषधियों को मँगाकर लाभ उठावें, या इनको हालात लिखकर ओषधि तजवीज़ करावें। इनसे उत्तम अन्य ओषधि आपको मिलनी कठिन है। विस्तृत वर्णन ओषधियों का सूचीपत्र और 'पुरुषों के विशेष रोग'-नामक पुस्तक लिखने से मुफ़्त भेजी जाती है।

शीत कौतूहल १९४०—पुस्तक में पं०जी ने मौसमी खाद्य, पौष्टिक खीर, हलवे, जलेबी, पिन्नियाँ, दालें, लड्डू आदि के प्रयोग दिए हैं। -)॥ के टिकट डाक-व्यय के वास्ते भेजने से 'पुरुषों के विशेष रोग'-नामक पुस्तक के साथ यह पुस्तक मुफ़्त भेजी जावेगी।

पत्र व तार का पता—अमृतधारा, ११, लाहौर।

विज्ञापक—मैनेजर अमृतधारा-औषधालय, अमृतधारा-भवन, अमृतधारा रोड, अमृतधारा पोस्ट-आफ़िस, लाहौर

नोट—टाइलेट (शृंगार) की वस्तुएँ ख़रीदते समय 'राजज़ीनत-वर्क्स, लखनऊ' को स्मरण रक्खें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिचयांक

मार्च में प्रकाशित हो रहा है !

यह

साहित्यिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक मासिक पत्रिका

साधना

संपादक
श्रीसत्येंद्र
एम्० ए०

संचालक
गयाप्रसाद
ऐंडसंस

साधना

का

विशेषांक होगा

इसमें

हिंदी-साहित्य के धुरंधर विद्वानों और लेखकों के महत्त्व-पूर्ण लेख और सारगर्भित रचनाएँ तथा उनका पूरा परिचय दिया जायगा। इसकी पृष्ठ-संख्या साधारण अंक से चौगुनी होगी। इसका अलग से मूल्य १) है, किंतु

३० मार्च तक ग्राहक बननेवालों को

विशेषांक मुफ्त

यों तो हिंदी-जगत् में अनेकों पत्र-पत्रिकाएँ हैं, पर

साधना

ही एक ऐसी मासिक पत्रिका है, जो केवल २) वार्षिक मूल्य में ही उच्च कोटि की विविधि विषय विभूषित सामग्री भेंट करती है, आप भी ग्राहक बनिए !

मनीऑर्डर भेजने का पता

साधना-कार्यालय, बाँके-विलास, आगरा

सभी प्रकार की पुस्तकें मिलने का पता—गयाप्रसाद ऐंडसंस, आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिश्रबंधु (रावराजा डॉक्टर श्यामविहारी मिश्र एम्० ए०, डी० लिट्० तथा रायबहादुर पंडित शुकदेवविहारी मिश्र बी० ए०)

की

अमर कृतियाँ अवश्य पढ़िए

(१) हिंदी-साहित्य का इतिहास—पृष्ठ ३७०; मूल्य अजिल्द १॥), सजिल्द २)। इस पुस्तक में न केवल हिंदी-साहित्य का पूर्ण तथा अप-टु-डेट वर्णन है, वरन् भारतीय धार्मिक, सामाजिक तथा राजनीतिक विकास का भी मनोरंजक इतिहास सूक्ष्मरीत्या कथित है। इसमें कई बड़े ही नवीन विचार मुसलमान-पूर्ववाले भारत के संबंध में मिलेंगे। पुस्तक पढ़ने ही योग्य है।

		सजिल्द	अजिल्द	संस्करण
(२) मिश्रबंधु-विनोद—	प्रथम भाग	२॥)	२)	चौथा
इस ग्रंथ के लेखक ज्येष्ठ	द्वितीय भाग	३॥)	३)	तीसरा
बंधु पंडित गणेशविहारीजी मिश्र	तृतीय भाग	२॥)	२)	,,
भी थे। विविध भागों के विविध	चतुर्थ भाग	४॥)	४)	पहला
संस्करण हुए हैं। चौथा भाग सं० १९९१ में ही छपा था।				

सब भागों में मिलाकर ४,५०० से अधिक कवियों तथा १२,००० से अधिक ग्रंथों के वर्णन हैं। ग्रंथ आधुनिक तथा नवीन खोजों का भांडार है। किसी भी कवि के विषय में कुछ लिखने के लिये इसकी खोजें आवश्यक होंगी।

(३) हिंदी-नवरत्न (सचित्र)—मूल्य अजिल्द ४॥), सजिल्द ५), ११ चित्र हैं, जिनमें कई रंगीन भी हैं। छठा संस्करण निकल रहा है।

इसमें हिंदी के सर्वोत्कृष्ट दस कवियों के समालोचना-गर्भित पूर्ण विवरण हैं। पृष्ठ-संख्या प्रायः ७५० है। ग्रंथ में पांडित्य का ख़ासा विकास तो है ही, वर्ण्य विषयों से पूर्ण सहृदयता के कारण विवरण भी बड़े ही हृदयहारी और भड़कीले बन पड़े हैं। उदाहरण इस प्रचुरता से प्रस्तुत हैं कि कवियों की रचनाओं के चित्र सामने खड़े हो जाते हैं। ग्रंथ कई विश्वविद्यालयों में एम्० ए० की पाठ्य पुस्तक है, तथा इतर कई परीक्षाओं में भी सत्कारित है। ग्रंथ पढ़ने ही योग्य है।

(४) संक्षिप्त हिंदी-नवरत्न—मूल्य अजिल्द १), सजिल्द १॥); द्वितीय संस्करण। पृष्ठ-संख्या २०० से अधिक। हिंदी-नवरत्न बहुत बड़ा ग्रंथ है। इसीलिये छोटे आकार में उसका स्वाद देने के विचार से यह पुस्तक बनी है।

(५) पद्य-पुष्पांजलि—पृष्ठ-संख्या २४५; सजिल्द २), अजिल्द मूल्य १॥)। इसमें व्रजभाषा तथा खड़ी बोली के अमर पद्यमय साहित्य के मुख्य भाग एकत्र किए गए हैं, जिसमें पाठक थोड़े में कवियों की विस्तृत रचनाओं की बानगी पा सकें। इसे एक प्रकार से 'मिश्रबंधु-सुधा' समझना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(६) पूर्व-भारत नाटक—चतुर्थ संस्करण; मूल्य अजिल्द ॥।=), सजिल्द १।=) । यह एक मौलिक नाटक है, जिसमें महाभारत की कथा का रूप विराट-पर्व-पर्यंत आया है । ग्रंथ पंजाब में कोर्स-बुक भी रह चुका है । बड़ा ही मनोहर नाटक है । इन्हीं का उत्तर-भारत नाटक भी हमारे यहाँ से मिल सकता है ।

(७) शिवाजी नाटक—प्रथम संस्करण ; मूल्य अजिल्द १।), सजिल्द १॥) । यह अभी हाल ही में छपा है । इसमें छत्रपति शिवाजी की अलौकिक जीवनी की हृदयग्राही कथा उत्तम प्रकार से कही गई है । ग्रंथ नाटकत्व से कमनीय और कवित्व-शक्ति से सौरभित है, जिसे एक बार उठा लेने से विना अंत-पर्यंत पढ़े चित्त न मानेगा । मिश्रबंधु-कृत 'ईशानवर्मन'-नामक ऐतिहासिक नाटक भी हमारे यहाँ से मिल सकता है ।

(८) जापान का इतिहास—मूल्य अजिल्द ॥।=), सजिल्द १) । यह ग्रंथ बड़ी सहृदयता-पूर्वक जापान का विवरण थोड़े में देता है ।

(९) धर्म-तत्त्व—इसमें १२२ पृष्ठों में हिंदू-धर्म का ऐतिहासिक तथा इतर कथन थोड़े में किया गया है । तीन अध्याय हैं, जिनमें पहले में तो विकास का हृदयग्राही कथन है, दूसरे में हिंदू-धर्म के नवयुगों का और तीसरे में दशोपनिषदों तथा गीता से चुना हुआ मूल और अनुवाद-सहित १२० वाक्यों द्वारा हिंदू-धर्म का शुद्ध रूप दिया हुआ है । ग्रंथ पढ़ने से हिंदू-मत की महत्ता, वास्तविकता और सत्यता पर आँखें खुल जाती हैं । मूल्य ।॥)

(१०) देव-सुधा—मूल्य अजिल्द ॥), सजिल्द १) । इसमें प्रसिद्ध महाकवि 'देव' के २७१ उत्तमोत्तम छंद पूर्ण अर्थों के साथ चुने गए हैं । मिश्रबंधु का दावा है कि यह व्रजभाषा का सर्वोत्कृष्ट ग्रंथ है ।

(११) बिहारी-सुधा—मूल्य अजिल्द ॥), सजिल्द १) । इसमें सुकवि बिहारीलाल के २७० उत्तमोत्तम दोहों का संग्रह है, जिसमें अर्थों के साथ मुख्य काव्यांग भी दिखला दिए गए हैं । देव-सुधा और बिहारी-सुधा को मिलाकर पढ़ने से इन दोनो महाकवियों के अपेक्षाकृत साहित्योत्कर्ष पर भी विचार करने का मौक़ा मिलता है । ये दोनो ग्रंथ पढ़ने ही योग्य हैं ।

(१२) कवि-कुल-कंठाभरण—ग्रंथ कनिष्ठ मिश्रबंधु तथा ज्येष्ठ भ्राता पं० गणेशविहारीजी मिश्र के सुपुत्र पं० प्रतापनारायण मिश्र ने मिलकर बनाया है । दूलह-कृत 'कवि-कुल-कंठाभरण' की अनमोल टीका है । इसे पढ़ने से विना गुरु-मुख की सहायता के अलंकार-सा कठिन विषय कोई सुगमता-पूर्वक जान सकता है । मूल्य अजिल्द ॥), सजिल्द १) । ग्रंथ अलंकार कंठस्थ करने के लिये अच्छा समझा जाता है ।

मिश्रबंधुओं की अन्य सब कृतियाँ भी हमसे ही मँगाइए ।

मैनेजर गंगा-ग्रंथागार, ३६, लाटूश रोड, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

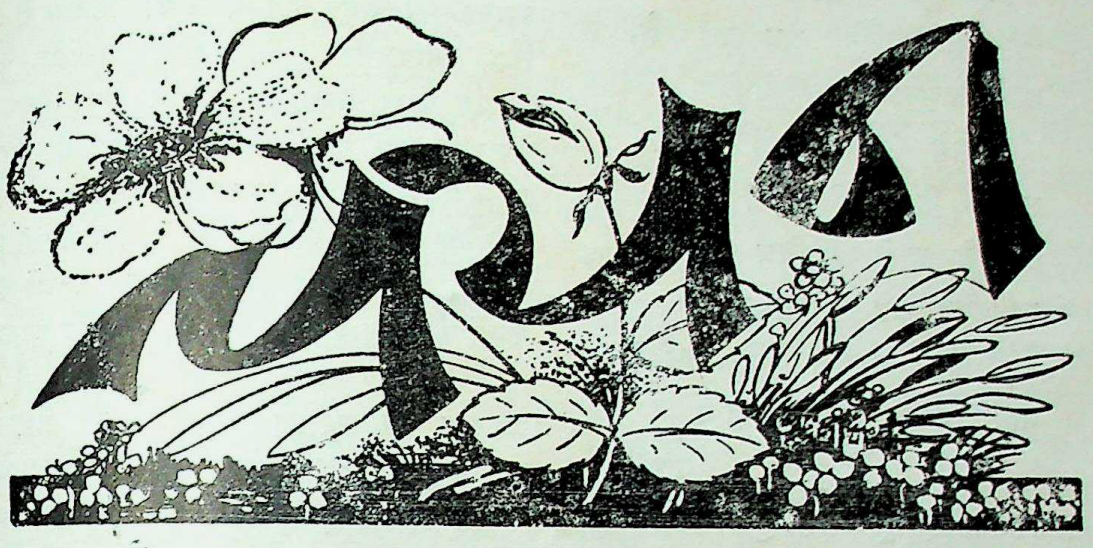

१. विनय

मा ! अब जग में निर्भय हो मैं
कैसे तेरे गुण गाऊँ,
कितनी है तू प्यारी मुझको,
कैसे जग को दर्शाऊँ ?
तेरे कविता - मंदिर में तो
कीर्तन करते किन्नर हैं,
मा ! अब उनके सम्मुख आ मैं
गाऊँ भी, तो क्या गाऊँ ?
तू तो रहती कवियों के है
रसमय रसना - सागर में,
मा ! इन अपने छंदों से फिर
कैसे तुझको हर्षाऊँ ?
तू तो रहती है भाषा की
अंतिम सीमा के बाहर,
मा ! इन अपने शब्दों को फिर
कैसे तुझ तक पहुँचाऊँ ?

तेरे उज्ज्वल उर में तो है
अमरों की अनुपम माला,
मा ! इन अपने हाथों की फिर
माला कैसे पहनाऊँ ?
मेरे मन के मंदिर में तो
केवल तेरी प्रतिमा है,
मा ! फिर अपने प्रेम-अश्रु से
कैसे तुझको नहलाऊँ ?
तव पूजा की विधियों से भी
हूँ मैं तो अनजान निरा,
मा ! उस तेरी प्रतिमा ही को
अब फिर कैसे अपनाऊँ ?
मैंने तो है तुझको देखा
केवल धुँधले सपनों में,
मा ! अब तुझको चित्रित कर फिर
जग को कैसे दिखलाऊँ ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब तक तेरे नूपुर की ही
ध्वनि मैंने सुन पाई है,
मा ! तव मुख की मधुता को फिर
कैसे शब्दों में लाऊँ ?
तू तो केवल निद्रा में ही
दे जाती है निज परिचय,
मा ! फिर तेरी महिमा को मैं
कैसे जागृति में गाऊँ ?
मा ! अब जग में निर्भय हो मैं
कैसे तेरे गुण गाऊँ,
कितनी है तू प्यारी मुझको,
कैसे जग को दर्शाऊँ ?

(क़ाज़ी) अशरफ़महमूद

× × ×

२. साहित्य की सार्वभौमिकता

मनुष्य को पशुओं से पृथक् रखनेवाली विशेषता उसका हृदय और मस्तिष्क है। वह अनादि, अनंत काल से विचार और अनुभव करता आया है। उसके हृदय में नौ प्रकार के भाव स्थायी रूप से वर्तमान रहते हैं। इन्हीं भावों की व्यंजना वह पहले मौखिक, पीछे लिखित भाषा में करता आया है। इससे पूर्व कि हम साहित्य के विषय में कुछ विचार करें, हमें भाषा और साहित्य का संबंध जान लेना परमावश्यक है।

भावों के प्रकटीकरण में प्रयुक्त स्वर-पद्धति एवं शाब्दिक योजना को ही हम भाषा कह सकते हैं। भाषा अर्थ-प्रकाशन का सार्थक तथा शाब्दिक संकेत-मात्र है। किसी भाषा का साहित्य उस भाषा में लिपि-बद्ध भावों तथा विचारों का समूह होता है, अथवा यों कहिए कि शब्द-रूप में एकत्र भाव और विचार ही साहित्य हैं। साहित्य की परिधि पर विचार करते हुए हमें उसका अतीव व्यापक एवं विस्तृत क्षेत्र देखने को मिलता है। किंतु साधारणतः संकीर्णरूपेण साहित्य के अंतर्गत काव्य, महाकाव्य, नाटक, चंपू, निबंध, उपन्यास तथा गल्प इत्यादि ही आते हैं। यह हमारे समझ लेने का विषय है कि साहित्य की यथोचित सीमाएँ निर्दिष्ट नहीं की जा सकतीं। कारण, रसायन और गणित आदि अन्य शास्त्रों के शब्दों की तरह उसकी परिभाषा निर्धारित करना नितांत असंभव नहीं, तो कठिन अवश्य है। गद्य तथा पद्य, इन्हीं दो रूपों में समस्त संसार का साहित्य निरूपण होता है। स्थानाभाव के कारण यहाँ इतना ही कह देना पर्याप्त होगा कि लगभग सभी विद्वद्वरों, साहित्य-वेत्ताओं और आचार्यों ने साहित्य के ये ही दो मुख्य अंग माने हैं। किस प्रकार की रचना गद्य अथवा पद्य की गणना में आती है, हम इस समय इस पर विचार न करेंगे।

हम कह आए हैं कि मानव-हृदय में कतिपय भाव स्थायी रूप से वर्तमान रहा करते हैं, और यह मानवीय प्रकृति है कि उनमें से किसी भाव के जाग्रत् हो जाने पर वह उन्हें प्रकट किए बिना नहीं रह सकता। उन भावों को व्यक्त करने में उसे एक प्रकार के अनिर्वचनीय आनंद का भान होता है। इस प्रकार की रचनाएँ अथवा साहित्य 'स्वान्तःसुखाय' होता है। साथ ही मानव-जीवन को देखने और समझने में भी उसे सुख मिलता है। वह प्राणी-मात्र की उन्नति करता और सुधार तथा प्रकृति-ज्ञान की उलझनें सुलझाता है; आर्थिक तथा सामाजिक परिस्थिति को उच्चतम बनाने का प्रयत्न और सत्य का अनुसंधान करता है।

किसी भी देश का साहित्य वहाँ की धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और भौगोलिक आदि कितनी ही प्रकार की परिस्थितियों से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किस प्रकार प्रभावित होता रहता है, यह उस देश के साहित्य पर ऐतिहासिक दृष्टि-निक्षेप करने पर सरलता से ज्ञात हो सकता है। इनकी साहित्य से घनिष्ठता प्रकट करते हुए एक अँगरेज़ समालोचक ने कहा है—

"साहित्यिक रचना केवल व्यक्तिगत कल्पना अथवा उष्ण मस्तिष्क की असंलग्न कल्पना नहीं, वरन् सामयिक आचारादि का अनुलेख तथा विशेष मानसिक अवस्था की अभिव्यक्ति है।"

निश्चय ही साहित्य युग-निर्माता है, और निर्माण में उस युग की परिस्थितियाँ भी उपादान-स्वरूप उपस्थित रहती हैं। साहित्य अपने को युग-विशेष के प्रभाव से नहीं बचा सकता। वह एक अमल दर्पण है, जिसमें किसी काल का मानव-जीवन प्रतिबिंबित होता है। यही कारण है, भिन्न-भिन्न जाति, देश तथा काल का साहित्य हमें भिन्न दिखाई देता है। एक भारतीय लेखक का कथन है—

"जीवनानुभूति की अभिव्यक्ति ही साहित्य है, और इसी कारण किसी देश के साहित्य पर वहाँ की सामाजिक व्यवस्था का प्रभाव पड़े बिना नहीं रह सकता।"

किसी देश का साहित्य अन्यदेशीय साहित्य से भिन्न होता है, क्योंकि उस देश के सामाजिक जीवन के विभेद की स्वाभाविक छाप दोनो ही साहित्यों पर पड़ी दिखाई देती है।

अस्तु। एक समय, देश तथा परिस्थिति में पली विचार-धारा, कला और शैली में सामंजस्य होना स्वाभाविक है। किंतु विश्व-विभिन्न साहित्यिकों में भी हमें एक विशेष प्रकार का साम्य दृष्टिगोचर होता है। महान् कवियों के विशाल मानस-मुकुर पर केवल देश और समाज का ही नहीं, प्रत्युत अधिकतर व्यापक और विस्तृत विश्व-जीवन का भी प्रतिबिंब पड़ता है, और इसी कारण उनके भाव अन्यदेशीय भावों से मिलते हैं। उस समय उन्हें प्राणी-मात्र के दुःख से दुःख और सुख से सुख होता है। उनके भाव भौतिक तथा स्थूल जगत् में नहीं, वरन् आध्यात्मिक और सूक्ष्म संसार में विचरण करनेवाले होते हैं, जहाँ देश, काल और समाज, कोई भी अंतर डालने का दुःसाहस नहीं कर पाता। वे उस समय विश्व-नागरिक होते हैं, तथा विश्व की रहस्य-ग्रंथियाँ सुलझाने का विश्ववंदनीय प्रयत्न करते हैं। वास्तव में एक महाकवि देश और काल की क्षणस्थायी रज्जुओं में बँधे भी कैसे, उसकी विचार-धारा, उसकी सूझ और उसकी अंतर्वर्तिनी प्रतिभा का सामंजस्य विश्व-व्यापिनी अव्यक्त सत्ता से जो रहता है। एक विश्व-साहित्यिक के हृदयाकाश में क्षण-प्रतिक्षण रंग बदल-बदलकर कल्पना-बादल साहित्य-मर्मज्ञों के हृदय में जो भावोद्रेक उत्पन्न करते हैं, अंतर्देशीय होने पर भी उनका साम्य स्पष्ट झलकता है, और ऐसा ही भाव-प्रवाह उच्च साहित्य का प्राण है। देश और काल के संग परिवर्तित हो जानेवाला 'कला-पक्ष' भले ही हमें विभिन्न रूप में दिखाई दे, किंतु सूक्ष्म भाव-जगत् में तो साम्य का ही एकच्छत्र एवं चिरस्थायी राज्य है।

उदाहरणार्थ हम इँगलैंड की महारानी विक्टोरिया के समसामयिक दो कवियों, टेनिसन तथा ब्राउनिंग, को लेते हैं। दोनो ही प्रतिभा-संपन्न कवि थे, किंतु टेनिसन स्थूल जगत् के भावों को लेकर चले। उन्होंने अपनी कविता में सामाजिक तथा राजनीतिक उन्नति की पताका फहराई। उधर ब्राउनिंग ने सूक्ष्म जगत् के भावों को लेकर मानव-जाति के चिरस्थायी मनोविकारों की आलोचना की। फलतः प्रथम का उस समय आदर और द्वितीय का अनादर हुआ। किंतु परिस्थिति के परिवर्तित होते ही द्वितीय का आदर बढ़ता गया, और आधुनिक समालोचक उन्हें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाकवि के परम गौरवान्वित पद पर सुशोभित करते हैं।

अँगरेज़ी-साहित्य-गगन के राका-शशि, उत्कृष्ट मनोवैज्ञानिक, नाटककार, हृदयराज्याधिराज, कुशल विश्व-कवि शेक्सपियर को तो प्रायः सभी अँगरेज़ी-शिक्षा-प्राप्त विद्वान् जानते हैं। उन्होंने इँगलैंड में बैठे-बैठे अपने नाटक 'टेंपेस्ट' में एक पात्र से कहलवाया था—"वी आर मेड ऑफ़् सच स्टफ़ ऐज़ ड्रीम्ज़ आर मेड ऑफ़्।" और, ३५० वर्ष पश्चात् एक भारतीय आधुनिक कवि आज भी उनके स्वर में स्वर मिलाकर गा उठता है—"मानव-जीवन जाग्रत् सपना।" यदि शेक्सपियर को "डेथ ए लाइवली ज्वाय" प्रतीत हुआ, तो हमारी वियोग-विधुरा राधा को "मरण सोहावन" हुआ। किंतु एक बार फिर बिना यह दोहराए नहीं रहा जाता कि उक्त भाव सूक्ष्म तथा आध्यात्मिक जगत् के हैं। संभव है, 'पार्लियामेंट' हमारे हृदय में राजनीतिक तथा 'मिल' के निर्धन मज़दूर धनाभाव का ही भाव उत्पन्न करने में समर्थ हों। इन भिन्न भावों का अनुगमन करने-वाला साहित्य अवश्य ही भिन्न होगा। किंतु उच्च होते हुए भी ये भाव हैं तो भौतिक और स्थूल जगत् के ही।

कल्पना विश्व-साहित्य की जननी है, और प्रकृति उसकी सहोदरा। इसीलिये भाषा, देश, काल, समाज और राजनीति, कोई भी साहित्य को अपनी परिधि में नहीं बाँध सकता। वही इन पर विजय प्राप्त करता है। पक्षियों का स्वर न समझने पर भी वह हमें सुमधुर प्रतीत होता है, ठीक उसी प्रकार अन्य परिस्थितियों का ज्ञान हुए बिना ही, केवल भाव-साम्य के कारण, विश्व-साहित्य का भी रसास्वादन संभव है। साहित्योद्यान के विश्व-कवि-कोकिल का मृदुल संगीत सुनकर, सूक्ष्म भाव-रश्मियों की कलित थिरकन निरखकर मर्मज्ञ उसकी सत्यं, शिवं, सुंदरं-रूपिणी कला पर विमुग्ध होते हैं।

अविनाशचंद्र पांडेय 'चातक'
(बी० ए०, साहित्याचार्य)

× × ×

३. व्यापार की कुंजी

इँगलैंड में मिस्टर ड्रेग एक प्रसिद्ध व्यापारी हो गए हैं। भारत में बहुत कम लोग इनका नाम जानते हैं। इनके जीवन से भारतीय व्यापारी अमूल्य शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं। इँगलैंड में ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं हुआ, जिसने स्वा ड्रेग की भाँति अपने परिश्रम से धन कमाया हो। इन्होंने ग़रीबी-हालत में फ़र्नीचर की एक दूकान पर नौकरी करके अपना जीवन प्रारंभ किया था। साधारण रहन-सहन और मितव्ययिता के कारण १६ वर्ष की आयु में ही ८०) कमा लिए थे। रुपया बचाने का ढंग भी अनोखा था। अपनी दैनिक आवश्यकताओं पर ख़र्च करके जो कुछ बचता था, उसे यह एक संदूक़ची में डालते जाते थे, और जमा होने पर प्रतिमास डाकख़ाने में जमा कर आते थे। इस एकत्र थोड़ी-सी पूँजी से इन्होंने एक साधारण व्यापार प्रारंभ किया। एक वर्ष में इनके पास ४००) हो गए। दूसरे वर्ष वह रक़म बढ़कर ७००) हो गई। २५ वर्ष की आयु में इनके पास एक लाख रुपया हो गया, और पचास वर्ष की आयु में एक करोड़ की संपत्ति के स्वामी बन गए। जब इनसे इस व्यापार की सफलता के विषय में प्रश्न किया गया, तो इन्होंने कहा—"यह कठिन परिश्रम और ईमानदारी से व्यापार करने का ही फल है।" इन्होंने बचपन और जवानी में बिलकुल विश्राम नहीं किया। दिन-रात अपने काम में जुटे रहते थे। प्रतिसप्ताह एक बार दिन-भर और सारी रात विश्राम कर लेते थे। इनका फ़र्नीचर का व्यापार ख़ूब चमका।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इनकी उन्नति, सफलता और प्रसिद्धि की कुंजी एक फ़ार्मूले (सूत्र) में व्यक्त की जा सकती है। यदि व्यापारी इस गुर को याद रक्खें, और इसी के अनुसार व्यवहार करें, तो बल-पूर्वक कहा जा सकता है कि वे कभी निराश और असफलता के गर्त में नहीं गिर सकते। जिन व्यापारियों ने यह फ़ार्मूला किसी-न-किसी रूप में अपनाया है, वे कभी असफल नहीं रहे। जितने बड़े-बड़े व्यापारी

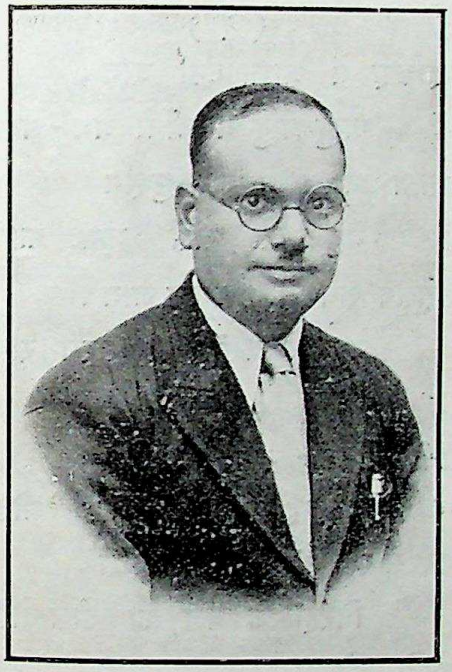

श्रीबुद्धिसागर वर्मा

विशारद, बी० ए०, एल्० टी०

आज दिखाई देते हैं, वे सभी—जान में या अन-जान में - इसी फ़ार्मूले को पकड़े हुए हैं।

वह गुर अँगरेज़ी में इस प्रकार याद रक्खा जा सकता है—

RIDSAC

(१) इस फ़ार्मूले के पहले अक्षर 'R' का अर्थ है Reception (स्वागत), अर्थात् ग्राहक की आव-भगत। ग्राहक एक प्रकार का मेहमान है, इसलिये जब कभी कोई ग्राहक दूकान में प्रवेश करे, तो दूकानदार को उसका स्वागत अत्यंत शिष्टता-पूर्वक करना चाहिए। उसके बैठने के लिये उपयुक्त स्थान, पीने के लिये उत्तम जल, यदि गरमी हो, तो पंखा आदि तथा और भी उत्तम प्रबंध रहना चाहिए, जिससे ग्राहक अपनी थकावट भूल जाय, और पूरा-पूरा सुख अनुभव करे। इस प्रकार उसके हृदय में दूकानदार के प्रति श्रद्धा और प्रेम उदय होगा, और वह उसी की दूकान पर माल ख़रीदने को विवश होगा।

(२) दूसरा अक्षर 'I' Inquiry अर्थात् प्रश्न-सूचक है। दूकानदार को ग्राहक से एकदम यह प्रश्न न करना चाहिए कि वह क्या चाहता है। बात-चीतका सिलसिला ग्राहक की तबियत और दिल-चस्पी के अनुसार शुरू करना चाहिए। अर्थात् यदि ग्राहक विद्यार्थी है, तो उसके स्कूल के अध्यापक और उसकी पढ़ाई-लिखाई के विषय में, यदि नौकरी-पेशा है, तो उसके ऑफ़िस और अफ़सर के संबंध में, और यदि दूकानदार है, तो मंडी के भाव, ख़रीदारी, बिक्री और उसकी दूकान के बारे में बातचीत प्रारंभ करनी चाहिए। अत्यंत मीठे शब्दों में और सहानुभूति-सूचक ढंग से उससे पूछा जाय कि वह क्या वस्तु ख़रीदना चाहता है।

(३) तीसरा अक्षर 'D' Display अर्थात् प्रदर्शन-सूचक है। अपनी दूकान की कई चीज़ें ग्राहक के सामने रखनी चाहिए। यदि ग्राहक के सामने केवल एक ही चीज़, जिसे वह चाहता है, रख दी जायगी, तो केवल २० फ़ीसदी सफलता की आशा हो सकती है। अतः ग्राहक को कई डिज़ाइन और नमूने की चीज़ें दिखानी चाहिए, जिनमें सस्ती-से-सस्ती और महँगी-से-महँगी सभी चीज़ें होनी चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(४) चौथा अक्षर 'S' Selection अर्थात् चुनाव-संबंधी है। वस्तु पसंद करना और चुनना ग्राहक का काम है। दूकानदार को इसमें बिलकुल दख़ल देने की आवश्यकता नहीं। जो वस्तु ग्राहक पसंद करे, उसमें कोई दोष निकालना अथवा ग्राहक की पसंद को बुरा बताना अनुचित है। यदि ग्राहक दूकानदार की दिखाई हुई चीज़ में कोई दोष निकाले, या उत्तम चीज़ को रद्दी या घटिया बतावे, तो भी दूकानदार को अप्रसन्न होकर उसका प्रतिरोध न करना चाहिए। ग्राहक से तर्क-वितर्क करना अपना व्यापार बरबाद करना है। उसकी हाँ में हाँ मिलाना ही सफलता की कुंजी है।

(५) पाँचवाँ अक्षर 'A' Acceptance अर्थात् स्वीकृति-बोधक है। जब ग्राहक अपनी पसंद की हुई चीज़ निकाल ले, तो उसके सामने उसी नमूने की और चीज़ उपस्थित करना या और बढ़िया चीज़ ख़रीदने की सिफ़ारिश करना भूल है। इससे कालांतर में हानि ही की संभावना है। अतः ग्राहक जब अपनी पसंद की हुई चीज़ अलग कर ले, तो और सारी चीज़ें उसी दशा में खुली हुई पड़ी रहने दे, और ग्राहक से इस प्रकार की बात-चीत शुरू करे कि उसका विचार और निश्चय अपनी पसंद की हुई चीज़ से बाहर न जाने पावे।

(६) छठा अक्षर 'C' Comments अर्थात् अनुमति-द्योतक है। जब ग्राहक चीज़ पसंद कर ले, तो दूकानदार का फ़र्ज़ होना चाहिए कि वह अपनी अनुमति उसी चीज़ के लिये दे, और उसी की प्रशंसा करे। इसके कई ढंग हो सकते हैं। जैसे ग्राहक से कहें—"महाशय, आपको माल की बड़ी परख है। आपने निहायत उम्दा चीज़ पसंद की। यह चीज़ यद्यपि मूल्य में सस्ती है, तथापि बड़ी मज़बूत और टिकाऊ है। पहचाननेवाले इसी प्रकार की चीज़ें ले जाते हैं।" इत्यादि। किंतु साथ ही उस चीज़ को सुंदर काग़ज़ में लपेटकर, छोटा-सा पैकेट बनाकर ग्राहक के सामने पेश करना न भूले। मूल्य ले चुकने पर ग्राहक को धन्यवाद देकर उसे दूकान के द्वार तक पहुँचा दे।

ये सभी बातें व्यापार चमका देती हैं। अतः प्रत्येक व्यापारी इन्हें अपना पहला कर्तव्य समझे।

बुद्धिसागर वर्मा (विशारद, बी० ए०, एल्० टी०)

× × ×

४. वसंत

मधुमय वसंत का सरस राग!

(१)

कण-कण में आशा उठी जाग;
अणु-अणु ने बाँधी प्रेम-पाग।
कलियाँ अंचल में ले सुहाग
मधुपों से खेलें झूम फाग।
किशलय लय से हिल उठे जाग।
मधुमय वसंत का सरस राग!

(२)

लोनी लतिका, द्रुम उठे डोल,
मारुत, हिंडोले उठे बोल,
स्वर 'स र ग म' अमृत घोल-घोल,
विरही के बल को तोल-तोल।
मधुपी, कोयल का खुला भाग।
मधुमय वसंत का सरस राग!

(३)

ले चले सुमन अपना पराग;
चर और अचर हैं सानुराग।
सोती जगती अब उठी जाग,
वन-बाग़ हो उठे बाग-बाग।
स्वागत में गाते हैं बिहाग।
मधुमय वसंत का सरस राग!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(४)

कलियों के कच, कचनार खोल,
सहसा ही उठे अनार बोल।
मलयानिल - तस्कर कर टटोल
नर्तन करता दल-द्वार खोल।
होगा विराग को यहीं राग।
मधुमय वसंत का सरस राग!

अमरनाथ शर्मा 'अमर'

× × ×

५. जीवन-आँधी

भयंकर आँधी चल रही है। अंधकार हो गया है। बादल गरज रहे हैं। विद्युत् की कड़क भय से कलेजा टूक-टूक कर रही है। भीषण वर्षा का जल मेरी जीर्ण कुटी के द्वार पर आ गया है। महती वेगमयी जल-तरंगें भावी प्रलय की सूचना दे रही हैं। मैं अकेला, ठिठुरा हुआ इस कुटी में निराशा-पूर्ण हृदय से बैठा हूँ। मेरी कुटी का आशा-दीपक भी, जो मेरी कुटी में धुँधला-सा प्रकाश फैला रहा था, इस तूफ़ान में बुझ चुका है। हे प्यारे, क्या तू आकर फिर इस कुटी में शांति का साम्राज्य स्थापित न करेगा? और उस दीपक को प्रज्वलित कर पुनः इस कुटी को प्रकाशित न कर देगा?

गंगाधर जोशी

× × ×

६. हमारी राष्ट्र-भाषा

सन् १९१८ की बात है, जब पूज्य बापूजी के मन में यह भावना उत्पन्न हुई थी कि भारत को स्वाधीनता दिलानेवाले अन्य साधनों में से देश में राष्ट्र-भाषा का होना भी एक साधन है। यों तो समस्त उत्तर-भारत में—ख़ास कर बिहार, संयुक्त प्रांत, मध्य-प्रांत, राजपूताना, गुजरात आदि प्रांतों में—हिंदी अच्छी तरह बोली और समझी जाती है, और कुछ-कुछ बंगाल और पंजाब में भी। यद्यपि बँगला, पंजाबी, गुजराती आदि भाषाएँ भी अपनी-अपनी लिपियाँ रखती हैं, पर हम उन्हें हिंदी की ही बहनें कह सकते हैं। अब दृष्टि जाती है भारत की जन-संख्या की ओर। देश की आबादी, सन् ३१ की जन-संख्या के अनुसार, ३५ करोड़ के ऊपर है। इस विशाल भूखंड में बसने-वाले इन ३५ कोटि नर-नारियों में हिंदी-भाषा-भाषी १५ करोड़ से ऊपर हैं, और समझ तो लगभग देश के २१ करोड़ लोग लेते हैं।

इस प्रकार हिंदी-भाषा के इस विशाल स्वरूप की ओर ध्यान देकर पूज्य बापूजी ने आज से २५ वर्ष पहले ही देख लिया था कि हिंदी ही हिंदुस्थान की एक ऐसी भाषा है, जो राष्ट्र-भाषा बन सकती है। अतएव इस हिंदी को राष्ट्र-भाषा के सिंहासन पर सुशोभित करने के लिये वह व्यग्र हो उठे। फल-स्वरूप उन्होंने दक्षिण-भारत को, जहाँ इस भाषा का किंचित् नामोल्लेख आदि नहीं मिलता, इसका क्रिया-क्षेत्र बनाया। यह निर्विवाद है कि दक्षिण में हिंदी किसी भी रूप में न तो बोली, न समझी जाती थी। दक्षिण तो सदियों तक एक भिन्न देश समझा जाता रहा है। उत्तर-भारतवालों का दक्षिण में तथा दक्षिण-भारतवालों का उत्तर में आना-जाना बहुत कम रहता था। संपर्क न होने से दोनो एक दूसरे से सदियों पृथक् रहे हैं।

भौगोलिक एवं प्राकृतिक दृष्टि से तो संपूर्ण भारत एक देश है ही, किंतु सामाजिक और धार्मिक आचार-विचार भी हमें बतलाते हैं कि भारत सदैव एक देश रहा है। यह बात दूसरी है कि हम इसे अपने आप ही योरप बना बैठें। एक समय था, जब हिंदुस्थान एक राष्ट्र था, और था हिंदुओं का एकाधिपत्य। पुराने ज़माने से चले आए हुए हिंदुओं के मुख्य चार तीर्थ हमें बताते हैं कि हिंदुस्थान किस प्रकार एक सूत्र में बँधा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तर में हिमालय-पर्वत पर लगभग १३-१४ हज़ार फ़ीट पर बदरीनारायण और धुर दक्षिण में रामेश्वर का स्थान है। इसी प्रकार पूर्व में जगन्नाथपुरी और पश्चिम में द्वारकाधीश हैं। आजकल हम यह भले ही मान लें कि तीर्थों में जाना ढोंग है, पर यह स्मरण रहे कि ये तीर्थ ही हमें आज दिन भी एक दूसरे से मिलने की सूचना दे रहे हैं। वे कहते हैं, मेरे भारत के सपूतो ! कम-से-कम इसे ढोंग मानकर ही कि तीर्थ-यात्रा एक अंध-विश्वास है, इनमें आ जाया करो, ताकि उत्तर-दक्षिण, पूर्व-पश्चिम का भेद न रहे, और यह भारत एक सूत्र में बँधा रहे। आपस में एक दूसरे के प्रति हमदर्दी हो, और प्रेम बढ़े। यद्यपि उस समय, जब इन तीर्थों की रचना की गई थी, हमारे पास ऐसे कोई साधन न थे कि आसानी से इनमें आया-जाया करते। साथ ही कुछ प्राकृतिक बाधाएँ भी थीं। लेकिन अब तो वैज्ञानिक युग है, रेल, तार, डाक के आविष्कार हमारे सामने हैं, जिन्होंने सैकड़ों मील की दूरी पास ही लाकर रख दी है।

अब हमें यह देखना है कि जब हमारी दूरी इस प्रकार घटाई जा सकी है, और हमें एक दूसरे के पास पहुँचने के इतने सुलभ साधन प्राप्त हैं, तो फिर यह भाषा का बंधन क्यों बीच में त्रिशंकु की तरह हम लोगों को लटकाए रहे, जो मेल-जोल का प्रथम साधन है। मनुष्य सामाजिक प्राणी है। वह सदा अपने समाजवालों से मिलना-जुलना चाहता है। एक दूसरे से मेल-मिलाप तो तभी हो सकता है, जब हमारी भाषा एक हो। अगर हमारी बात हमारा मिलनेवाला नहीं समझता, तो फिर मिलना-जुलना कैसा ? क्या एक दूसरे का खड़े-खड़े मुँह ताकना ही मिलना-जुलना कहा जा सकता है ? कदापि नहीं। इसीलिये तो एक भाषा की ज़रूरत है, और वह भी ऐसी भाषा, जिसे आसानी से सारे देश-वासी समझ-बोल सकें।

अभी कुछ दिन पहले की बात है, स्वामी सत्यदेवजी परिव्राजक दक्षिण-पथ पर पधारे थे। (सन् १९१८ में पूज्य बापूजी ने इन्हें और श्री-देवदास गांधी को दक्षिण [मदरास] में हिंदी-प्रचार के निमित्त भेजा था) एक दिन स्वामीजी ने हिंदी-प्रचार के संबंध में बातचीत करते हुए कहा—"जब मैं अमेरिका में था, तो हमेशा अपने विद्यार्थी साथियों से हिंदुस्थान के संबंध में कुछ-न-कुछ बखान किया ही करता था।" जो कुछ भी वह कहते थे, सब अँगरेज़ी-भाषा में ही कहते थे। एक रोज़ एक साथी ने पूछा—"मिस्टर देवा, आप यहाँ विद्याध्ययन के लिये आए हैं, और हमारी भाषा बोल रहे हैं। क्या आपके देश की कोई भाषा नहीं ?" स्वामीजी ने बड़े गर्व से कहा—"क्यों नहीं। लेकिन आपसे किस प्रकार अपनी भाषा में बोलूँ, जब कि आप उसका एक शब्द भी नहीं समझ सकते।" इतने ही में एक अन्य अमेरिका में रहनेवाले हिंदुस्थानी सज्जन स्वामीजी के आने का हाल सुनकर उनसे मिलने आए। कहते हैं, शहर में अपने गाँव का कोई आदमी आकर मिले तो बड़ी ख़ुशी होती है। इसी प्रकार दूसरे प्रांत में अपने प्रांत का व्यक्ति मिल जाने पर अपार हर्ष होता है। लेकिन जब विदेश में किसी को अपने देश का कोई मिल जाय, तो उसे कितनी ख़ुशी होगी, इसे बतलाना मुश्किल है। अतः आए हुए व्यक्ति से स्वामीजी बड़े तपाक से मिले, और बातें होने लगीं। कुछ धारा ही ऐसी बह चली है कि अँगरेज़ी में बोलना भी सभ्यता का एक चिह्न है। स्वामीजी से उक्त भारतीय सज्जन अँगरेज़ी में ही बोलने लगे। बातचीत से मालूम हुआ कि वह महाशय मदरासी हैं। स्वामीजी और नवागंतुक से बातचीत हो ही रही थी कि स्वामीजी के उसी विद्यार्थी साथी ने पूछा—"मिस्टर देवा, आप तो अँगरेज़ी में ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बोल रहे हैं, यह तो हमारे देश की भाषा है। क्या आपके देश की भी यही भाषा है ?" स्वामीजी कहने लगे—जब ये शब्द मैंने सुने, तो मेरी आँखों से आँसू की दो बूँदें टप से ज़मीन पर गिर पड़ीं। बड़ी लंबी साँस लेकर बोले—"मित्र, यह सज्जन मदरासी हैं, और मैं उत्तर-भारत का रहनेवाला हूँ। इनकी मातृभाषा तामिल है और मेरी हिंदी।" यह सुनकर वह अमेरिकन दोस्त बहुत चकित हुआ, और बोला—"मिस्टर देवा, क्या आपके देश में कोई एक भाषा नहीं, जिसे सारा देश समझता हो ? क्या सभी लोग अपनी-अपनी अलग-अलग भाषा बोलते हैं ? आख़िर एक दूसरे से मिलते वक्त कैसे बातचीत करते होंगे ?" स्वामीजी उसके इन प्रश्नों को सुनकर, नत-मस्तक होकर बैठ गए, और करुण स्वर में बोले—"भाई, यही कारण है कि हम लोग आज ग़ुलाम हैं। जब हम आपस में किसी एक भाषा में बोलकर एक दूसरे के मनोभावों को न तो समझ सकते हैं, और न समझा सकते हैं, तो फिर हमारे देश का उद्धार कैसे हो ?"

पाठको ! यह दृष्टांत पढ़कर आपके दिलों में भी एक हूक-सी उठने लगी होगी कि यह कितनी शोचनीय बात है कि हम एक देश हिंद के रहनेवाले एक भाषा हिंदी न बोल सकें ! इससे ज़्यादा और पतन क्या हो सकता है ?

प्रत्येक देश को अपनी संस्कृति एवं भाषा पर गर्व होता है, लेकिन हम भारतवासी तो दूसरों की नक़ल करने में लगे हैं। दूसरों का मुँह ताक रहे हैं। अँगरेज़ी राज्य की स्थापना के साथ-साथ अँगरेज़ी-भाषा का प्रचार हुआ, और भारतीय अपना साहित्य खो बैठे, लगे विदेशी (अँगरेज़ी) साहित्य का धड़ाधड़ अध्ययन करने। उनकी आँखों के सामने शेक्सपियर, मिल्टन, कार्लाइल, रस्किन, एमर्सन, मोपासा, तुर्गनेव नाचने लगे, और सूरदास, तुलसीदास, बिहारी, कबीर, जयशंकर 'प्रसाद', प्रेमचंद का पता तक न लगा। कहने का यह तात्पर्य नहीं कि विदेशी साहित्य न जाना जाय, अपितु अपने साहित्य से भी प्रेम हो। पर ऐसा नहीं देखा जाता। उन्हें इस नशे में अपनी संस्कृति और सभ्यता का ज्ञान भी नहीं रहा, यहाँ तक कि खाना हो, तो विदेशी ; पहनावा हो, तो विदेशी ; नाच-रंग हो, तो विदेशी ! विदेशी की चटक-मटक में स्वदेशी तो कुछ भी नहीं रहा। उन्हें भारत-वसुंधरा इँगलैंड का लंदन, फ्रांस का पेरिस नज़र आने लगी। सभा, सोसाइटी, भोज, जातीय उत्सव आदि सबमें बातचीत का माध्यम अँगरेज़ी ने ग्रहण किया। अगर इन देश के दुलारे हिंदियों से पूछा जाय कि बताओ, जिस प्रकार इँगलैंड की भाषा इँगिलश, फ्रांस की फ्रेंच, जर्मनी की जरमन है, तो तुम्हारे हिंदुस्थान की कौन भाषा है ? इसका इनके पास उत्तर ही नहीं। हाँ, अलबत्ता सभी अपनी-अपनी भाषाओं को ले बैठेंगे, और पंजाबी बड़े तपाक से बोलेगा—"वाह साहब, हमारी भाषा है कैसे नहीं ? पंजाबी तो हमारी भाषा है।" बंगाली अपनी बँगला बताएगा। मदरास से तो पूछना ही क्या, वह बेचारा किसे अपनी भाषा बतावे। उसके यहाँ चार भाषाएँ (तामिल, तेलगू, कन्नड़ी, मलयालम) हैं। कहाँ तक दुखड़ा रोया जायगा। हम तो विदेशी रंग में ऐसे रँगे कि अपनी भाषा को भी डुबा बैठे, और देश की ग़ुलामी के साथ-साथ भाषा के भी ग़ुलाम बन गए।

क्या हम हिंद-वासी एक बार फिर ऊँची गरदन करके एक स्वर में नहीं कह सकते कि हमारा एक देश है हिंदुस्थान, एक पार्टी है कांग्रेस, एक झंडा है तिरंगा, एक लीडर है महात्मा गांधी और एक भाषा है हिंदी ?

जब तक तन में बाक़ी प्रान,
जय-जय हिंदी, हिंदुस्तान।

प्रेमनाथ शांडिल्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

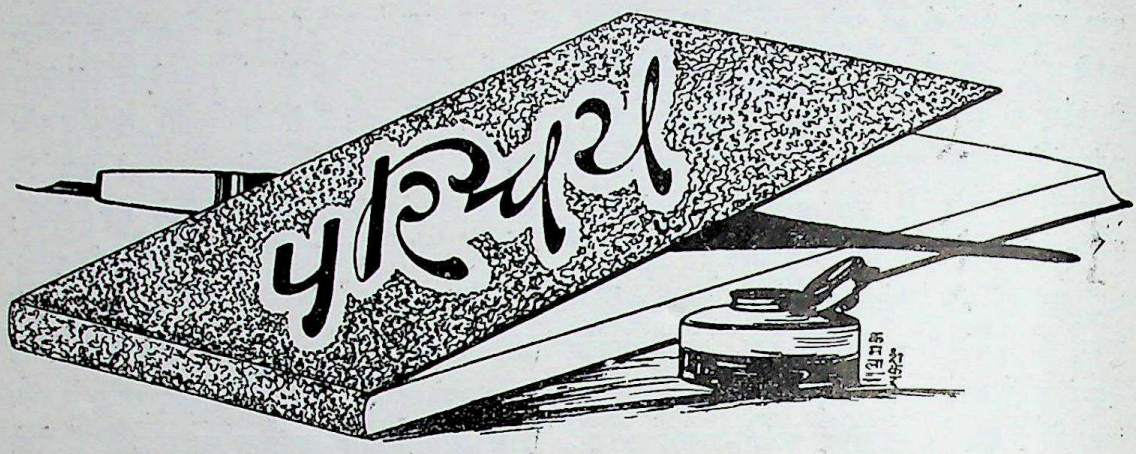

महाकवि 'हरिऔध' का प्रिय-प्रवास—लेखक, श्रीधर्मेंद्र ब्रह्मचारी शास्त्री, एम्० ए० (त्रितय); प्रकाशक, श्रीयुत रामनारायणलाल, इलाहाबाद; पृष्ठ-संख्या १७०; सजिल्द; मूल्य १)

महाकवि 'हरिऔध' उन गिने-चुने महारथियों में से हैं, जिन्होंने अपनी उत्कृष्ट काव्य-कृतियों से आधुनिक हिंदी-साहित्य की श्री-वृद्धि में योग दिया है। उन्होंने 'प्रिय-प्रवास' के रूप में हिंदी के खड़ी बोली-काव्य को वह अमूल्य उपहार दिया है, जिसका महत्त्व सदा अक्षुण्ण रहेगा। वास्तव में वह उनकी युगांतरकारिणी कृति है। उसके प्रकाशन-काल से ही वह काव्य-रसिकों का कंठ-हार रही है। विश्वविद्यालयों की उच्चतम पाठ्य पुस्तकों में उसे गौरव-पूर्ण स्थान मिला है। ऐसी उत्कृष्ट रचना के संबंध में वैसी ही उत्कृष्ट आलोचनात्मक पुस्तक का अभाव हमारे समीक्षा-साहित्य की दरिद्रता का परिचायक था। कुछ वर्षों पूर्व श्री-गिरिजादत्त शुक्ल 'गिरीश' ने 'महाकवि हरिऔध'-नामक ग्रंथ लिखकर इस दिशा में अवश्य स्तुत्य प्रयत्न किया था, परंतु उनकी उक्त पुस्तक में 'प्रिय-प्रवास' की अपूर्ण आलोचना है। हर्ष का विषय है, पटना-कॉलेज के हिंदी-अध्यापक श्रीधर्मेंद्र ब्रह्मचारी शास्त्री, एम्० ए० (त्रितय) ने 'महाकवि हरिऔध का प्रिय-प्रवास' लिखकर 'प्रिय-प्रवास'-विषयक सुंदर आलोचना प्रस्तुत की है।

पुस्तक के पूर्वरंग में उपाध्यायजी की जीवनी एवं उनकी प्रमुख कृतियों पर प्रकाश डाला गया है। फिर वैज्ञानिक रूप से 'प्रिय-प्रवास' की विस्तृत आलोचना की गई है। विद्वान् लेखक ने काव्य की अंतरंग और बहिरंग विशेषताओं का अच्छा उद्घाटन किया है।

'काव्यगत विशेषताएँ'-शीर्षक देकर 'प्रिय-प्रवास' के महाकाव्यत्व, भिन्न-तुकांतता, संस्कृत-वृत्तता, भाषा-शैली और अलंकारों का विवेचन किया गया है। 'साहित्य-दर्पण' में उल्लिखित महाकाव्य के लक्षणों के आधार पर 'प्रिय-प्रवास' के महाकाव्यत्व की विस्तृत परीक्षा करते हुए आप इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि "उसमें महाकाव्य की सब विशेषताएँ सन्निविष्ट हैं। 'प्रिय-प्रवास', महाकाव्य की दृष्टि से, अपने-ऐसा आप ही है।" उक्त विवेचन में शास्त्रीजी का दृष्टिकोण शास्त्रीय और परंपरा-युक्त अधिक है, अन्यथा पं० रामचंद्र शुक्ल के शब्दों में "इसकी कथावस्तु एक महाकाव्य क्या, अच्छे प्रबंध-काव्य के लिये भी अपर्याप्त है। अतः प्रबंध-काव्य के सब अवयव इसमें कहाँ आ सके हैं।"

इसी प्रकार संस्कृत-वृत्तता और संस्कृतमय भाषा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शैली का विवेचन करते हुए आपने लिखा है—"'हरिऔध' ने वर्णिक वृत्तों और संस्कृत-शब्दावली का प्रयोग करके प्रगतिशील हिंदी की प्रतिमा के प्रति अन्याय किया है।...फलतः 'प्रिय-प्रवास' में नैसर्गिक माधुर्य का अभाव है।" यद्यपि लेखक ने अपने दृष्टिकोण-विशेष का प्रतिपादन करने का प्रयत्न किया है, परंतु उक्त निष्कर्ष से हम सहमत नहीं। यह मानते हुए भी कि 'प्रिय-प्रवास' में संस्कृत-तत्समता की धूमधाम है, 'प्रगतिशील हिंदी की प्रतिमा (या प्रवृत्ति) के प्रति' उपाध्यायजी ने कोई बड़ा भारी अन्याय किया है, ऐसा समझते नहीं बनता। वास्तव में उक्त 'प्रिय-प्रवास' द्वारा उपाध्यायजी ने हिंदी को एक अभिनव मार्ग दिखाया है। यह ठीक है कि हिंदी के मात्रिक छंदों में भावों की क्रीड़ा और नर्तन के लिये जो विस्तृत क्षेत्र रहता है, वह समास-बहुला, विभक्ति-प्रत्यय-युक्त भाषा की अपेक्षा रखनेवाले वर्णिक वृत्तों में नहीं। यही कारण है कि 'प्रिय-प्रवास' में संस्कृत का रंग अधिक है। परंतु उसमें माधुर्य तो लबालब भरा है, चाहे वह नैसर्गिक हो अथवा अनैसर्गिक। अन्य विभागों के अंतर्गत कथावस्तु, चरित्र-चित्रण, प्रकृति-चित्रण, रस-परिपाक, वृत्त-विधान आदि विषयों पर कवि की अंतःप्रकृति में पैठकर विश्लेषणात्मक रूप से गहरी छान-बीन की गई है। कवि के प्रति सर्वत्र श्रद्धा रखते हुए भी निष्पक्ष रूप से आपने 'प्रिय-प्रवास' की विशेषताओं का मार्मिक उद्घाटन किया है। आपकी भाषा-शैली पुष्ट, अलंकृत और विवेचन के सर्वथा उपयुक्त है।

पुस्तक के परिशिष्ट में उपाध्यायजी की नवीनतम रचनाओं—'पारिजात' और 'वैदेही-वनवास'—की चलती हुई समीक्षा है। 'वैदेही-वनवास' के कथानक की आलोचना करते हुए लेखक ने ज्ञात या अज्ञात रूप से एक भारी त्रुटि की है। लेखक के कथनानुसार "तुलसी ने, रजक-कृत अपवाद सुनने पर किस प्रकार राम ने जनकसुता के त्याग का निश्चय किया, और किस प्रकार धोखे से उन्हें वन में भेज दिया गया, इन सब घटनाओं का बहुत ही छिछला निरूपण किया है, जिससे राम-सीता, दोनो के चरित्रों पर एक महान् अन्याय हुआ है, .. किंतु 'हरिऔध' ने इस दिशा में महती क्रांति की है।" लेखक के उक्त कथन से तो यह ज्ञात होता है कि कदाचित् उसने गोस्वामीजी के 'रामचरित-मानस' का अध्ययन ही नहीं किया। 'मानस' में उत्तर-रामचरित्र अथवा लवकुश-कांड का समावेश ही नहीं। नागरी-प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित मानस अथवा किसी भी प्रामाणिक संस्करण में उक्त कथा का अभाव है। तुलसी का सामान्य विद्यार्थी भी यह जानता है कि वह एक प्रक्षिप्त अंश है। वास्तव में यदि 'मानस' के स्वरूप पर दृष्टि डाली जाय, तो उसमें सीता-निर्वासन-जैसी घटना के लिये गुंजायश ही नहीं। तुलसी ने अपने आराध्य को राज्यासीन कराने के पश्चात् ही लिखा है—

"पति-अनुकूल सदा रह सीता;
सोभा-खानि, सुसील, बिनीता।
❀ ❀ ❀
दुइ सुत सुंदर सीता जाए;
लव-कुस नाम बेद जस गाए।
दुउ बिजयी, बिनयी, गुन-मंदिर;
हरि-प्रतिबिंब मनहुँ अति सुंदर।
दुइ-दुइ सुत सब भ्रातन केरे—
भए रूप-गुन-सील-घनेरे।"

फिर ज्ञान-वैराग्य-भक्ति का वर्णन करते हुए मानस की, सुखांत रूप में, समाप्ति की है। उपर्युक्त चौपाइयों पर ध्यान देने से यह स्पष्ट हो जाता है कि गोस्वामीजी ने सीता-निष्कासन की ओर संकेत तक नहीं किया। ऐसी अवस्था में 'रामचरित-मानस' का अविवेक-पूर्ण पारायण अथवा प्रक्षिप्त मानस के अवैज्ञानिक अध्ययन के कारण ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रबंध-पटु गोस्वामीजी पर 'घटनाओं का बहुत ही छिछला निरूपण करने' एवं उनके परमाराध्य 'राम-सीता, दोनो के चरित्रों पर एक महान् अन्याय' करने का महापातक लगाकर लेखक ने ठीक नहीं किया।

इन छोटी-मोटी, प्रमाद-जन्य त्रुटियों के होते हुए भी (मूल-ग्रंथ में नहीं, परिशिष्ट में) आपकी रचना अत्यंत उपादेय है। वास्तव में 'प्रिय-प्रवास'-जैसे ग्रंथ पर निष्पक्ष और विद्वत्ता-पूर्ण आलोचना लिखकर आपने हिंदी के समीक्षा-साहित्य को एक उत्कृष्ट भेंट दी है। 'प्रिय-प्रवास' की विशेषताओं का मार्मिक विवेचन होने के कारण आपकी कृति साहित्यिकों एवं परीक्षार्थियों के लिये समान रूप से उपयोगी है। हम हृदय से उसका अभिनंदन करते हैं! आशा है, आप शीघ्र ही उपाध्यायजी की अन्य कृतियों के संबंध में भी ऐसी ही सुंदर आलोचनाएँ प्रस्तुत कर हिंदी के आलोचनात्मक साहित्य की अभिवृद्धि करेंगे।

गोपाल व्यास (एम्० ए०, साहित्यरत्न)

× × ×

पचास कहानियाँ—लेखक, श्रीविनोदशंकर व्यास; प्रकाशक तथा विक्रेता, भारती-भंडार, लीडर-प्रेस, प्रयाग; मूल्य २); सजिल्द; पृष्ठ-संख्या ३०८; काग़ज़ मोटा तथा चिकना।

संसार की सभी वस्तुएँ परिवर्तनशील हैं। परिवर्तन ही उन्नति का मूल-कारण है। कुछ समय पहले साहित्य-क्षेत्र में कविताओं की एक लहर चली थी, तब लोग कविताएँ करते एवं पढ़ते थे। समयानुसार उपन्यासों की उत्पत्ति हुई। सर्वत्र उपन्यासों का ही साम्राज्य था। उनकी उत्पत्ति के साथ-साथ कहानियों का प्रादुर्भाव हुआ। आज-कल कहानी-ही-कहानी दिखाई पड़ती हैं। कहानी मनुष्य-जीवन से बहुत संबंध रखती है। मनुष्य का जीवन भी एक कहानी है। प्रत्येक की उमंग, गुप्त व्यथा, चिर आशा, गूढ़ रहस्य, ये भी तो कहानियाँ ही हैं। कहानियों की श्रेणी उच्च कोटि की है। कहानियों में हृदय की मूल-संवेदना की तीव्रता रहती है। कहानियाँ कल्पना ही नहीं, प्रत्युत जीवन में उपदेश देनेवाली कांता की भाँति हित करनेवाली वस्तु हैं। इनसे हम सभी भाँति के उपदेश ग्रहण कर सकते हैं। कोरा उपदेश ही नहीं, अपितु मानसिक सांत्वना तथा मनोरंजन की सामग्री भी हमें मिलती है। समाज की प्रथाओं का दुष्परिणाम कितना भयानक होता है। एक बाल-विधवा, जो अभी सुनहरे संसार के स्वप्न देख रही हो, किस प्रकार समाज के अत्याचारों से ऊबकर नीच वृत्ति (वेश्या-वृत्ति) अंगीकार कर लेने को बाध्य होती है। एक स्वार्थी नर-पिशाच एक रूपवती सुंदरी के लावण्य का प्यासा उसे कहाँ तक ढकेल देता है, प्रायश्चित्त द्वारा पापी पाप से कैसे मुक्त होता है, दुखियों के प्रति हमारा कर्तव्य, प्रेमियों की अदूरदर्शिता, प्रेम की हल्की मिठास का अनुभव, दुखियों का प्रत्यक्ष दुख इत्यादि की स्पष्ट झलक का दिग्दर्शन श्रीविनोदशंकर व्यास की इन वर्तमान कृतियों में कराया गया है। इन पचास कहानियों के शीर्षक हृदय की कसक, पतित, पूर्णिमा, कहानी-लेखक, प्रेम की चिता, प्रमदा, उलझन, तूलिका, भूली बात, पगली, लीला, स्वराज्य कब मिलेगा, इत्यादि हैं। कहानियों के लक्षण की तुला पर इन्हें तौला जाय, तो कुछ अधिक ही निकलेंगी। सफल कहानियाँ या सफल लेखक वे ही होते हैं, जिनकी कृति से सामाजिक, नैतिक और देश-सेवा की भावना उदय हो।

समाज का क्या कर्तव्य है, उसकी बुराइयाँ किस भाँति दूर हो सकती हैं, इत्यादि का भव्य स्वरूप कहानियों द्वारा इससे विदित हो जाता है। कहानियाँ मन-बहलाव की सामग्री हैं। शून्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन में हम अपने दिन काटने में भी कहानियों को शांति का साधन समझ सकते हैं। अनेक मनुष्यों के स्वभाव तथा चरित्र से हम अच्छी तरह परिचित हो जाते हैं। लौकिक व्यवहार-पटुता, वार्तालाप करने का सुगम एवं भावुक ढंग भी कहानियों से सीखा जा सकता है। अनेक जटिल ग्रंथों से जो प्रतिभा बहुत काल पश्चात् हम पाते हैं, वह कहानियों से अल्प समय में मिल जाती है। कहानियों को यदि मानवीय अंतस्तल की गुप्त वेदना कह दिया जाय, तो भी कुछ अत्युक्ति न होगी। यह बात एक बार 'व्यास'जी की 'पचास कहानियाँ'-नामक पुस्तक पढ़ने से प्रत्यक्ष हो जायगी। इसमें न तो बहुत बड़ी-बड़ी कहानियाँ हैं, और न भाषा ही जटिल है। जिन्होंने 'व्यास'जी की एकतालीस कहानियाँ पढ़ी होंगी, वे जान सकते हैं कि इनकी कहानियाँ किस प्रकार की होती हैं। इन कहानियों के लिखने में लेखक अपने उद्देश्य में सफल-प्रयत्न रहा। आशा है, प्रत्येक कहानी-प्रेमी इस पुस्तक की एक प्रति अपने पास अवश्य रक्खेगा। इसे पढ़ने से चित्त की एक अद्भुत दशा का अनुभव होता है।

(साहित्याचार्य) पं० जितेंद्र भारतीय (शास्त्री)

सुन्दर बनने का निश्चित उपाय

यह है कि अपने रोज़मर्रा के इस्तेमाल के लिये उपयुक्त शृंगार-सामग्री का चुनाव करो, और उस पर क़ायम रहो।

साबुन एक ऐसी चीज़ है, जिसकी रोज़ ही ज़रूरत पड़ती है; लेकिन कठोर और अनुपयुक्त साबुनों के प्रयोग से स्वास्थ्य एवं सौन्दर्य नष्ट हो जाता है।

बेंगल केमिकल ऐंड फ़ार्मेस्युटिकल वर्क्स

का

ट्रान्सपेरेन्ट

ग्लिसरिन

अपनी पारदर्शिता, शुद्धता, टिकाऊपन और फेनों की सुगन्धि एवं स्वास्थ्यप्रदता में

अपने प्रतिस्पर्धियों में सर्वोपरि है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस स्तंभ में हम हिंदी-प्रेमियों की जानकारी और सुबीते के लिये प्रतिमास नई-नई पुस्तकों के नाम देते हैं। पिछले महीने में निम्न-लिखित पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं—

(१) 'स्त्री-सौंदर्य और स्वास्थ्य' (स्त्रियोपयोगी)—लेखक, श्रीबुद्धिसागर वर्मा बी० ए०, एल्० टी०; मूल्य २), सजिल्द २॥)

(२) 'कुबेर' (उपन्यास)—लेखक, श्रीयुत देवीप्रसाद धवन 'विकल'; मूल्य १), सजिल्द १॥)

(३) 'भोजन और स्वास्थ्य' (स्वास्थ्य)—लेखक, डॉक्टर सत्यप्रकाश डी० एस्-सी०, एफ़्० आई० ए० एम्० और डॉक्टर संतप्रसाद टंडन एम्० एस्-सी०, डी० फ़िल०; मूल्य १), सजिल्द १॥)

(४) 'निःसहाय हिंदू' (उपन्यास)—लेखक, श्रीराधाकृष्ण दास मूल्य ॥), सजिल्द १)

(५) 'अंतःपुर का छिद्र' (नाटक)—लेखक, श्रीयुत पंडित गोविंदवल्लभ पंत; मूल्य ।=), सजिल्द ॥=)

(६) 'बिहारी-सुधा' (काव्य)—लेखक, श्रीयुत मिश्रबंधु; मूल्य ।=), ॥)

(७) 'मनुष्य का विकास' (बालोपयोगी) लेखक, श्रीज्योतिलाल भार्गव बी० ए०, एल्-एल्० बी०; मूल्य ।=), सजिल्द ॥=)

(८) 'मज़दूर' (उपन्यास)—लेखक, श्रीश्यामू संन्यासी; मूल्य ॥)

(९) 'कलयुग' (कहानियाँ)—लेखक, श्रीरामकृष्ण; मूल्य १)

(१०) 'कांग्रेसी हौवा' (प्रहसन)—लेखक, श्रीसुबोध मिश्र 'सुरेश'; मूल्य ॥)

(११) 'काली कहानियाँ' (एक सेट—चार भाग कहानी)—लेखक, श्रीशिवरामदास गुप्त; मूल्य चारो भाग ॥)

(१२) 'सज्जाद संबुल' (नाटक)—लेखक, श्रीकेशवराम भट्ट; मूल्य १)

(१३) 'देश की आन पर' (कहानियाँ)—लेखक, श्रीगणेश पांडेय; मूल्य ।॥)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१. युद्ध का अंत कब होगा ?

यो रप में छिड़े हुए युद्ध का अंत कब होगा ? यह प्रश्न सब ओर से पूछा जाता है। पूछनेवालों के मंतव्य भिन्न-भिन्न होते हैं, पर सबके लिये जवाब एक ही हो सकता है। आज सिवा भविष्य-वाणी के और कोई भी व्यक्ति युद्ध के अंत का समय बताने की दोटूक बात नहीं कह सकता। परिस्थितियाँ और भी जटिल होती जाती हैं। अब जो मुख्य प्रश्न है, वह तो यह है कि क्या यह युद्ध विश्वव्यापी होगा ? क्या अमेरिका युद्ध में कूदेगा ? फिर एक तरफ़ ब्रिटेन और अमेरिका, दूसरी तरफ़ इटली, जर्मनी और जापान दो अलग-अलग पालियों में बँटकर दुनिया-भर में कबड्डी खेलेंगे, तब रूस क्या करेगा ? क्या वह तब भी चुप बैठेगा ? रूस में जो भारी सामरिक तैयारियाँ हो रही हैं, वे किस दिन के लिये ? ये प्रश्न इतने महत्त्व के हैं, जिनके उत्तर के साथ ही पहला प्रश्न भी हल हो जाता है। पर जवाब इन प्रश्नों का भी आसान नहीं। जहाँ तक परिस्थितियों को हमने समझ पाया है, और अब तक का जो तजुर्बा हमें है, उससे इतना हम कह सकते हैं कि आजकल जिस रूप में लड़ाई लड़ी जा रही है, और वह इससे भी विशाल रूप धारण कर सकती है, उसमें सोवियट रूस कोई भाग न लेगा—अंत तक तटस्थ बना रहेगा। इस उत्तर के साथ हमारी कितनी ही शंकाएँ, भय तथा हर्ष - विषादमयी कल्पनाएँ दूर हो जाती हैं। जो यह पूछा जाय कि फिर रूस युद्ध-संबंधी तैयारियाँ इतने ज़ोरों से क्यों कर रहा है, तो यह बात भी रूस के तटस्थ बने रहने का ही सबूत है। इससे प्रकट होता है कि रूस किसी एक पक्ष का बनकर युद्ध में नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कूदेगा। और, जैसा उसे हमेशा से डर बना रहा है, अगर और सब ताक़तें एक होकर उस पर आक्रमण कर दें, तो उसके लिये उसे तैयार रहना चाहिए। इस तैयारी के लिये यह उपयुक्त समय है। यह ख़याल भी ग़लत है कि रूस अपनी सीमा से लगे हुए किसी मुल्क पर आक्रमण करेगा, और इस युद्ध से अपने राज्य-विस्तार का लाभ उठाएगा। यदि ऐसा होता, तो जिस वक्त इटली-जर्मनी-जापान की संधि हुई थी, उस वक्त वह काफ़ी लाभ उठा लेता। जर्मनी ने उसके जापान के साथ मेल स्थापित करने और चीन का मामला तय करने की कोशिश की थी, पर रूस चीन के मामले में अपनी नीति छोड़ने को तैयार न हुआ। इसी प्रकार सोवियट के प्रधान मंत्री मोलोटोव की बर्लिन-यात्रा के समय हिटलर ने एशिया-भूखंड पर सोवियट का विशेष अधिकार स्वीकार करने का बड़ा प्रलोभन दिया था, पर रूस अपनी निश्चित नीति से विचलित नहीं हुआ। परिस्थितियों पर विचार करके अब रूस इसी निर्णय पर पहुँचा दिखलाई देता है कि जब और देश युद्ध में अपनी शक्तियाँ ख़र्च कर रहे हैं, तब वह अपने देश की आर्थिक स्थिति इतनी अच्छी कर ले कि युद्ध के बाद जब लड़ाकू देशों में तबाही और आर्थिक संकट का समय आए, तब उन देशों की जनता में रूस की दशा देखकर सोवियट-शासन-पद्धति अपनाने की भावना स्वतः पैदा हो। अतः रूस की आज की नीति अन्य देशों के साथ आर्थिक और राजनीतिक संधियाँ करना तथा अपने देश की चहुँमुखी उन्नति करना है। यह तो रही रूस के संबंध की बात।

रूस के साथ दूसरी बड़ी ताक़त अमेरिका है, जो अब तक युद्ध से तटस्थ है, पर अब उसका झुकाव ब्रिटेन की तरफ़ हो गया है। प्रेसिडेंट रूज़वेल्ट की नीति ब्रिटेन को लड़ाई में अधिक-से-अधिक सहायता पहुँचाने की है। पर जो कठिनाइयाँ उनके सामने हैं, उनके कारण वह ब्रिटेन के साथ सौदा करने (Bargain) की नीति से आगे नहीं बढ़ सके। इसके और भी कई कारण हैं। पहले युद्ध में जब अमेरिका मित्र राष्ट्रों का पक्ष लेकर युद्ध में शामिल हुआ था, तो उसकी ताक़त मित्र राष्ट्रों की विजय के रूप में युद्ध का शीघ्र अंत करने में कामयाब हुई। इससे अमेरिका की प्रतिष्ठा बढ़ी, उसकी शक्ति की दुनिया पर धाक बैठ गई। पर वर्तमान युद्ध अभी उस निर्णयात्मक स्थान पर नहीं पहुँचा। जर्मनी के सामने पहली-जैसी कठिनाइयाँ इस वक्त नहीं हैं। अब उसके अधिकार में योरप का बड़ा भूखंड आ गया है, जिससे उसे लोहे का इतना सामान मिल सकता है, जितना इँगलैंड और अमेरिका, दोनो के पास है। इसलिये अगर अमेरिका ब्रिटेन के साथ लड़ाई में शामिल होता है, तब भी जर्मनी के पास काफ़ी दिनों तक उसके सामने पैर टेकने की सामग्री मौजूद है। अमेरिका तभी फूँक-फूँक-कर आगे क़दम रख रहा है। जब से उसने देखा है कि जर्मनी इँगलैंड के साथ लड़ने में वह जौहर नहीं दिखा सका, जो उसने फ्रांस के साथ लड़ने में दिखलाए थे, और इटली की आफ्रिका में हार पर हार हो रही है, तब से वह ब्रिटेन के पक्ष में अधिकाधिक झुकता जा रहा है। जर्मनी के विजयी होने में अमेरिका को प्रत्यक्ष ख़तरा नज़र आता है, इसलिये वह नाज़ियों के हाथ में अटलांटिक महासागर की प्रभुता न जाने देने की भरसक चेष्टा करेगा। साथ ही ब्रिटेन के संग वह जिस वणिक्-नीति से काम ले रहा है, उसमें उसका छिपा हुआ उद्देश्य यह भी है कि ब्रिटेन समुद्री ताक़त में अब दुनिया-भर में सर्वोपरि शक्ति न रहे, और उसका स्थान अमेरिका को मिल जाय। अमेरिका के संबंध में अब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तक की घटनाओं से हम यही नतीजा निकाल सके हैं।

जापान राज़ और पहेली है। एक ही समय पर जापान के परराष्ट्र-सचिव मि० मत्सुका और जर्मन डिक्टेटर हिटलर ने अमेरिका को एक ही तरह की धमकियाँ दी हैं। इसका उद्देश्य एक ही है, और वह यह कि अमेरिका ब्रिटेन के साथ लड़ाई में शामिल न हो, और बहुत सोच-समझकर ब्रिटेन को अपनी सहायता दे। अमेरिका और ब्रिटेन की विजय के साथ पैसफ़िक महासागर में जापान की प्रभुता का अंत होता है, यही जापान को डर है। चीन के साथ लड़ते हुए उसकी शक्तियाँ काफ़ी नष्ट हो चुकी हैं, और अब वह ब्रिटेन या अमेरिका-जैसी बड़ी शक्तियों के साथ जूझने में अपने को असमर्थ पाता है। इसीलिये वह खुल्लमखुल्ला धुरी राष्ट्रों के प्रश्न में लड़ाई की घोषणा नहीं करता।

इन बातों से हम वर्तमान युद्ध के भविष्य के संबंध में अपना अनुमान लगा सकते हैं। युद्ध का अंत जल्द होनेवाला नहीं, यह उक्त विवेचन से मालूम हो जाता है। हिटलर की धमकियों और दर्पोक्तियों का भी कोई बड़ा मूल्य नहीं। वह गत वर्ष ही अगस्त-महीने में संसार-भर में शांति स्थापित कर देना चाहता था, पर अब दूसरी अगस्त तक भी उसके मंसूबे पूरे होने के लक्षण दिखाई नहीं देते। इटली का मुसोलिनी जिस जोश और आशा के साथ लड़ाई में शामिल हुआ था, उसके इतनी जल्दी ताज़िए ठंडे हो गए! अब उसके सामने दो सूरतें हैं—या तो मित्र-पक्ष के सामने अपनी हार स्वीकार कर ले, या जर्मन डिक्टेटर के इशारे पर नाचता हुआ अपनी रही-सही प्रतिष्ठा और शान खो बैठे। हमें ख़ुशी है कि दुनिया की एक बड़ी बीमारी फ़ैसिज़्म का इतनी शीघ्रता से अंत हो रहा है। इटली में ही फ़ैसिज़्म का उदय हुआ था, और वहीं वह अस्त हो रहा है। उसका नया संस्करण नाज़ीवाद है। उसकी उग्रता के दिन हम देख चुके। बिस्मार्क, नेपोलियन और क़ैसर विलियम की ऐतिहासिक मिसालों को हम भूल नहीं सकते। किसी व्यक्ति की महत्त्वाकांक्षा और उसके अल्प-कालीन जौहर ऐतिहासिक परंपरा मेट नहीं सकते। दुनिया में वही व्यवस्था टिकाऊ रहती है, जिसके आधार वे सिद्धांत हैं, जिनमें मानव-समाज को सुख-शांति से रहने, अपनी उन्नति करने का पूर्ण अवकाश और सुविधा हासिल करने तथा असमानता, राजनीतिक दंभ, आर्थिक हथकंडे आदि कलह-पूर्ण वातावरण से निकलकर चिरशांति और स्थायी सुख ग्रहण करने का आदेश है। अतः फ़ैसिज़्म, नाज़ीवाद और साम्राज्यवाद, इन तीनों बुराइयों से मानव-समाज को मुक्ति मिलेगी, और इस युद्ध का अंत इसी रूप में होगा।

× × ×

२. पत्रकार-सम्मेलन

जनवरी के अंतिम सप्ताह में दिल्ली में हिंदी-पत्रकारों का सम्मेलन, श्रीमूलचंदजी अग्रवाल के सभापतित्व में, हुआ। अब तक इस दिशा में कई बार प्रयत्न किया गया था, पर हिंदी-पत्रकार-संघ का छकड़ा अपनी सामान्य गति से अधिक प्रगति-शील नहीं हुआ। 'आवश्यकता आविष्कार की जननी है।' कहावत के अनुसार वर्तमान स्थिति में पत्रों और पत्रकारों पर एक नई मुसीबत आई। सरकार ने अपने युद्ध-प्रयत्नों के दौरान में प्रेस की स्वाधीनता पर भी आघात किया, और वह इस सीमा तक बढ़ गया कि पत्रकारों का दम घुटने लगा। उनमें असंतोष के साथ एक हलचल पैदा हुई। फलतः दिल्ली में पत्रकारों का एक सम्मेलन हुआ, और यह जानकर संतोष हुआ कि सरकार ने इस सम्मेलन के निश्चयों के साथ अपनी सहानुभूति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकट की, और इसका सबूत कुछ तात्कालिक कठिनाइयाँ दूर करने का आश्वासन देकर दिया। इसी आधार पर प्रांतों में परामर्शदायिनी समितियों की स्थापना की गई, जिसके साथ पत्रकारों ने सहयोग किया। लेकिन खेद है, इन परामर्श-समितियों से कोई अच्छा फल नहीं निकला, और सरकार के इस रुख़ के बावजूद भी कई प्रांतों में वहाँ के पत्रों के साथ कठोर नीति बरती गई।

दिल्ली का यह सम्मेलन कई दृष्टियों से महत्वपूर्ण रहा। कारण, इसमें पत्रकारों के संगठन की ठोस बुनियाद डाली गई। इस सम्मेलन में तीन प्रस्ताव पास किए गए, और तीनो ही महत्व पूर्ण हैं। इनमें एक प्रस्ताव हिंदी-पत्रकारों के संगठन के संबंध में है। इसके लिये एक समिति की स्थापना की गई, और उसके पदाधिकारी भी चुन लिए गए। इस संगठन के उद्देश्य निम्न-लिखित होंगे—

(१) पत्रकारों का संगठन और उनमें परस्पर सौहार्द्र, सहयोग और सद्भाव की वृद्धि करना।

STOP

Every sensible man on this planet of ours desires money as necessarily as every plant desires earth, water, air and sunshine for its nourishment. If you want MONEY for your daily necessities or for the filling in of the mental pictures which you have been sketching out in your mind or for materializing the airy earths upon which you have been dwelling in moments of hopeful cestasy, I sincerely advise you to get yourself possessed of my easy, short, practical Special Scientific Instructions on **"How to Invite Money and Become Rich ?"** The Instructions are useful alike to ambitious ladies and gentlemen, rich and poor employed and unemployed, educated or not, etc, desirous of rolling in riches, hoarding money or gaining livelihood, freedom, and the ability to do great things. The beauty of the unique Method is that it does not require any investment or physical labour at all. It may be mastered on one reading only within five minutes and brought into use immediately. Cheap at any price. Special Fee **Rupees Five**, Foreign (Ten Shillings) only **in advance**. No V. P. P.

Mr. A. S. D., Karachi says:—"I received your very kind letter of the 15th current together with your valuable Instructions.....I have read the beautiful essay with pleasure and profit.....The Course is really short but quite to the point.....I shall put in my request for other courses in the next month." The original may be seen in our office.

विद्या, धन, तन-बल नहीं, कुइ सहाय नहिं होइ ;
वैज्ञानिक विधिमात्र सों धनी बनहु सब कोइ।

Apply mentioning this paper to:—

Dr. G. S. D. SHARMAN, M. A, D. Sc., Ps. D, Ph. D.
Occulist and Specialist in Drugless Healing,
17, Success House, Fatehpur-Sikri, Agra, (India).

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२) पत्रकार और पत्रकला के गौरव तथा मर्यादा की रक्षा करना।

(३) पत्रकारों के हितों और अधिकारों की रक्षा करना।

(४) पत्रकार-कला की उन्नति के अन्य आयोजन करना।

इस प्रकार हिंदी-पत्रकारों के इस सम्मेलन के साथ उनके संगठन की बुनियाद पड़ गई। हम आशा करेंगे कि यह संगठन आगे दृढ़ होगा, और अपना स्थायित्व ग्रहण करेगा। सम्मेलन ने हिंदी-पत्रकारों के प्रतिनिधियों को, अपने दूसरे प्रस्ताव में, यह आदेश दिया है कि वे प्रांतीय परामर्श-समितियों से बाहर निकल आएँ, क्योंकि उनके वहाँ रहने से हिंदी-पत्रों को कोई लाभ नहीं हुआ। सरकार अपनी रफ़्तार पर चल रही है। हिंदी-पत्र और पत्रकारों के संबंध में सरकार जिस नीति से काम लेती है, उसकी तीसरे प्रस्ताव में निंदा की गई। इस संबंध में सम्मेलन के सभापति ने अपने भाषण में कहा कि वैसे तो सरकार हिंदी-पत्रों को उपेक्षा की दृष्टि से देखती है, और उनकी टिप्पणियों, विज्ञप्तियों आदि की ओर विशेष ध्यान नहीं देती, लेकिन इसके साथ यह उनका ही सबसे अधिक दमन क्यों करती है। वास्तव में सरकार जानती है कि सर्व-साधारण के निकट हिंदी के ही अख़बार पहुँचते और वे ही लोक-मत का प्रतिनिधित्व करते हैं। यह खेद की बात थी कि और सब लोगों को संगठन का उपदेश करनेवाले पत्रकारों का अपना ही कोई संगठन न था। हम चाहते हैं, सब जगह, जहाँ से दो-चार पत्र निकलते हैं, जहाँ लेखक, पत्रों के संवाददाता आदि हैं, स्थानीय पत्रकार-संघ स्थापित हों, अखिल भारतीय हिंदी-पत्रकार-संघ से उनका संबंध हो। केंद्रीय संस्था के आदेश और नियमों के अनुसार कार्य किया जाय। यही एक उपाय है, जिससे हिंदी-पत्रकार सरकार और जनता को अपनी आवाज़ का मूल्य बता सकते हैं। यही उपाय है, जिससे हिंदी-पत्रकार अधिकारियों के अनुचित रवैए और ग़लत निर्णयों को बदलवा सकते हैं।

× × ×

३. मि० जिन्ना की बहक

मुसलिम-लीग के अधिनायक मि० मुहम्मदअली जिन्ना का शरारती दिमाग़ कुछ-न-कुछ हरकत किया ही करता है। इसके विचित्र नमूने समय-समय पर हमें मिलते रहते हैं। अभी आपके दो भाषण सुनने को मिले हैं—एक दिल्ली में, मुसलमान-छात्रों की सभा में और दूसरा बंबई की मुसलमानों की एक मीटिंग में। दोनो भाषणों में आपने प्रायः एक-सी बातें कही हैं। आपका कहना है—कांग्रेस सरकार के साथ इसलिये लड़ाई लड़ रही है कि सरकार कांग्रेस को देश की प्रतिनिधि-संस्था मान ले। कांग्रेस बहुमत हिंदू-दल का शासन स्थापित करना चाहती है। मुसलमान ऐसा नहीं होने देंगे, और यह समस्या पाकिस्तान-योजना को कार्य-रूप में परिणत करने से ही हल होगी। जहाँ तक पाकिस्तान-योजना का संबंध है, मि० जिन्ना ने इन शब्दों में कोई नई बात नहीं कही। पर जब आप कांग्रेस के लिये यह कहते हैं कि वह देश में बहुसंख्यक हिंदू-दल का शासन स्थापित करने के लिये लड़ रही है, तो आपका कांग्रेस-द्रोह अधमता की सीमा में आ जाता है। कांग्रेस समस्त देश का प्रतिनिधित्व उस अर्थ में न करती हो, जिसमें जिन्ना साहब चाहते हैं, पर वह अपने इस दावे से कभी विचलित नहीं हुई कि इस देश में रहनेवाली सभी जातियों—चाहे वे बहुमत-वाली हों, या अल्पमतवाली—के अधिकारों की रक्षा करना उसका (कांग्रेस का) धर्म है। वह भारत में प्रजातांत्रिक ढंग का शासन स्थापित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने के लिये लड़ रही है, जिसका अर्थ सभी क़ौमों, सभी विचारों के लोगों को देश के शासन-कार्य में हाथ बटाना है। ऐसा शासन एक जाति या एक धर्म के लोगों का नहीं हो सकता—जो फ़ैसिज़्म का लक्षण है। हाँ, पाकिस्तान-योजना का स्पष्ट अर्थ एक धर्म या एक जाति के लोगों का शासन स्थापित करना है। पता नहीं, फ़ैसिज़्म के बारे में मि० जिन्ना के विचार क्या हैं। पर उनकी हरकतें हिटलर और मुसोलिनी की विचार-पद्धति को बढ़ावा देनेवाली हैं। संसार का काया-कल्प हो रहा है, और मि० जिन्ना अपनी अँधेरी दुनिया में बैठे बेसुरा राग अलाप रहे हैं। अपनी अवस्था का ख़याल करते हुए शायद आपने सोचा हो कि अपनी ज़िंदगी के दिनों में तो कुछ होना-हुआना नहीं, इसलिये क्यों न एक जाति की लीडरी करते-करते अख़ीरी

सफल जीवन का महामंत्र

बाँझ स्त्रियाँ

१०० में ९९ स्त्रियाँ 'कनसैप्टो' के सेवन से पुत्र उत्पन्न कर चुकी हैं। सब डॉक्टरों का कहना है कि बाँझपन दूर करने के लिये इससे बढ़कर अन्य कोई ओषधि नहीं। केवल १ शीशी सेवन करके ही ख़ाली गोद में पुत्र खिलाएँ। क़ीमत ५), डाक-ख़र्च ॥)

हिस्टीरिया का अचूक इलाज

इसके सेवन से हिस्टीरिया के दौरे, रोगी का उछलना, कूदना, चिल्लाना, रोना, पागलपन, बेहोशी आदि एक सप्ताह में ही दूर हो जाते हैं।

क़ीमत २), डाक-ख़र्च ॥)

विद्युत्-तैल

इसमें बिजली-जैसी ताक़त भरी हुई है। यह तत्कालीन ज़रूरत की चीज़ है। ज़रूरत के ख़ास समय से थोड़ी देर पहले इस्तेमाल करने से अर्थात् एक ही बार सेवन करने से गए-बीते नामर्द की नपुंसकता भी जाती रहती है, और ४ मिनट में ही तरुण युवक के समान मर्द बन जाता है। शिथिल नसों की कमज़ोरी को दूर करके अपना गुण दिखा देना यह इसका तत्कालीन चमत्कार है। वास्तव में वृद्ध पुरुषों का अचूक शस्त्र और नव-विवाहित नामर्दों का आधार है। जीवन का वसंत और प्रकृतिदेवी की अमूल्य भेंट है। क़ीमत २), डाक-ख़र्च ॥)

अमर सुंदरी

रक्त-प्रदर, श्वेत-प्रदर, गर्भाशय की पीड़ा, गर्भ न रहना, गर्भ का गिर जाना, मासिक धर्म का अनियमित होना, दर्द या कष्ट के साथ होना, सिर-दर्द, अशक्ति, हल्का ज्वर, जी घबड़ाना, सोम-रोग, रक्त की कमी आदि रोगों के लिये एकमात्र अव्यर्थ महोषधि है। इसके सेवन से शरीर सुंदर, हृष्ट-पुष्ट और फुर्तीला हो जाता है। क़ीमत ॥।=), डाक-ख़र्च ॥)

गर्भ-रोक

निर्धनता व स्त्री की बीमारी के कारण और संतान पैदा न करनी हो, तो इस दवा का सेवन करें। इससे स्त्री के गर्भ नहीं रहता और सांसारिक सुख को बंद करने की ज़रूरत भी नहीं होती। सर्वथा हानि-रहित दवा है। क़ीमत २), डाक-ख़र्च ॥)

ब्रेस्टोन

ज्यों मोर अपने पाँवों को देखकर रो देता है, त्यों स्त्रियाँ भी अपने ढीले, गिरे तथा लटके स्तनों को देखकर निराश हो जाती हैं। यह ४५ वर्ष तक की स्त्रियों के लटके हुए ढीले स्तनों को फिर से षोड़शीय नवयुवती के समान सुंदर, कठोर, गोल तथा छोटे बना देता है। क़ीमत केवल २॥), डाक-ख़र्च ॥)

पता—रसायन-फ़ार्मेसी,
(सु) संगरिया (बीकानेर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साँसें लें। पर अब तो उन्हें भी पता लग रहा होगा कि दुनिया में परिवर्तन वायु-वेग से हो रहे हैं। इन तूफ़ानों में उनकी पाकिस्तान-रूपी काग़ज़ की नौका का क्या हश्र हो सकता है।

× × ×

४. सिंध-प्रांत के हिंदू

सीमा-प्रांत के हिंदुओं की आतंक-पूर्ण अवस्था के संबंध में शेष भारत के हिंदुओं में काफ़ी चिंता प्रकट की जा रही थी, पर सिंध के हिंदुओं पर मुसीबतों का जैसा पहाड़ टूटा है, उससे लोगों का अधिक ध्यान सिंध की तरफ़ ही आकर्षित हो गया है। असल में सीमा-प्रांत, बिलोचिस्तान और उससे मिले हुए सिंध-प्रांत की सीमाओं पर इस तरह की आतंक-पूर्ण कार्यवाहियों का संबंध एक ही है। इस तरह कश्मीर से लेकर कराँची तक का सारा भू-भाग इन अराजकता-पूर्ण कार्यवाहियों का स्थल बन गया है। आजकल सिंध में उनका सबसे अधिक ज़ोर है। हिंदुओं का जान-माल ख़तरे में है। आए-दिन कुछ-न-कुछ हिंदुओं के जान से मारे जाने, उनके माल, जायदाद लूटे जाने के समाचार मिलते रहते हैं। सिंध-प्रांत की नए ढंग की सरकार इस संगीन रोग का इलाज करने में असफल रही! दवा करने के साथ-साथ मर्ज़ बढ़ता ही गया। सक्खर के हिंदुओं पर जैसी बीती, उसकी याद करते हुए दिल काँप जाता है। अब सवाल यह है कि क्या इन प्रांतों की हिंदू-जनता इसी भय और संकट का सामना करते हुए वहाँ टिक सकेगी? या उसे अपने पूर्वजों से प्राप्त हुई भूमि, जायदाद, मकान और सब कुछ छोड़कर वहाँ से चल देना चाहिए? क्या पाकिस्तान-योजना का मक़सद भी यही है? सक्खर के हिंदुओं को महात्मा गांधी ने सलाह दी थी कि उन्हें ऐसी जगहें छोड़कर चल देना चाहिए, जहाँ वे अपनी रक्षा नहीं कर सकते। बात ठीक है, पर इस तरह न तो कोई अपना वतन छोड़ ही सकता है, न यह कार्य ऐसा आसान ही है। आख़िर फिर वहाँ गवर्नमेंट किसलिये? जनता के जान-माल की रक्षा का पूरा भार तो जनता पर डाला नहीं जा सकता। फिर इस तरह घटनाएँ, जो सिंध में घटित हो रही हैं, न आकस्मिक हैं, न कुछ बदमाशों और पेशेवर लुटेरों या दंगाइयों का काम हैं। उनकी तह में तो और बातें हैं। लुटेरों या डाकुओं में जातीय द्वेष की भावना प्रबल नहीं होती। उनका उद्देश्य तो आतंक फैलाकर पैसा हासिल करना होता है। इसके लिये वे जाति और मज़हब के पाबंद नहीं होते। जहाँ किसी भी जाति या मज़हब का ऐसा आदमी मिला, जिससे उनकी मंशा पूरी हो सकती है, वहाँ उन्होंने उसे अपने तीर का लक्ष्य बनाया। सिंध में यह लूट-मार, ख़ून-ख़राबी मज़हबी शक्ल अख़्तियार कर रही है। हिंदुओं का ही जान-माल बरबाद होता है। इसलिये स्पष्टतः वह सांप्रदायिक ज़हरबाद है, और इस मवाद को दूर करने के लिये उस पर तेज़ नश्तर लगाने की ज़रूरत है। यह ज़हर उस व्यापक रोग का परिणाम है, जो मुसलिम-लीग ने सारे देश में फैलाया है। सीमा-प्रांत में कांग्रेस के व्यापक असर से और बिलोचिस्तान में अंजुमनए-वतन-जैसी राष्ट्रीय संस्थाओं के प्रचार के कारण यह रोग वहाँ संक्रामक नहीं हो पाया है, पर सिंध में उसके कीटाणु ज़ोर पकड़ रहे हैं। पिछले दिनों राष्ट्रपति मौलाना अबुलकलाम आज़ाद इसी उद्देश्य से सिंध-प्रांत में गए, और वहाँ उन्होंने प्रांतीय सरकार के ढाँचे को ठीक करने का प्रयत्न किया, क्योंकि सिंध में अभी तक कोई स्थायी, दृढ़ मंत्रिमंडल क़ायम नहीं हो सका। सिंध-एसेंबली में जितने दल हैं, उनकी अजीब हालत है। कोई भी एक दल इतना ज़ोरदार नहीं, जो अपने बल पर शासन का कार्य सँभाल सके। फलतः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनमें तोड़-फोड़ लगी रहती है। एक तरफ़ जनता का दबाव, दूसरी तरफ़ वैयक्तिक और सांप्रदायिक स्वार्थ, इन दोनो के बीच में सिंध-एसेंबली के हिंदू और मुसलमान-सदस्यों की हालत त्रिशंकु की-सी हो गई है। इस दशा में क्यों न वहाँ के गवर्नर को सिंध का शासन-भार अपने हाथ में ले लेना चाहिए? इससे इस बात का पता चल जायगा कि सिंध को पृथक् प्रांत बनाने का क्या परिणाम हुआ। हिंदू-जनता ने तभी इसका घोर विरोध किया था। अब मौलाना आज़ाद के बाद मि० जिन्ना फिर सिंध तशरीफ़ ले गए हैं। आप वहाँ के वातावरण में जो कुछ सुधार हुआ है, उसे फिर गंदा कर आएँगे। हमारा यह आग्रह है कि भारत-सरकार इस मामले को अपने हाथ में ले, और सिंध के हिंदुओं के जान-माल की रक्षा का प्रबंध करे। हिंदू-नेता सिंध-प्रांत का दौरा करके वहाँ हिंदू-संगठन की बुनियाद क्यों नहीं दृढ़ करते?

× × ×

५. आचार्य पं० रामचंद्र शुक्ल का निधन!

हिंदी-प्रेमियों, साहित्यिकों और विद्वानों के लिये यह संवाद कितना दुःखदायी और शोकप्रद होगा कि आचार्य पं० रामचंद्र शुक्ल अब इस संसार में नहीं रहे! काशी में, अपने निवास-स्थान पर, गत २ फ़रवरी की रात्रि में, आपका देहावसान हो गया। आपके उठ जाने से हिंदी-भाषा और साहित्य का एक सुदृढ़ स्तंभ टूट गया। पं० रामचंद्र शुक्ल हिंदी के उन विद्वानों में से थे, जिनकी लेखनी का लोहा सभी मानते हैं। आपने हिंदी की सेवा में अपना जन्म व्यतीत किया।

स्व० आचार्य पं० रामचंद्र शुक्ल

अनेक ग्रंथ लिखे, जिनमें से 'चिंतामणि'-नामक ग्रंथ पर आपको मंगलाप्रसाद-पारितोषिक प्राप्त हुआ। हिंदी-शब्द-सागर के संपादन में आपका मुख्य सहयोग रहा। हिंदी की सेवा करते हुए आप साधारण स्थिति से बहुत ऊँचे उठे। आपके पिता मिरज़ापुर-ज़िले में पटवारी थे। शुक्लजी की शिक्षा मैट्रिक तक ही हुई थी, इसके पश्चात् हिंदी से आपका इतना प्रेम बढ़ा कि अपनी सारी शक्तियाँ इसी ओर लगा दीं। काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा के साहित्य-प्रकाशन में आपका मुख्य सहयोग रहा। हिंदू-विश्वविद्यालय में हिंदी का अध्यापन करते हुए आप शेष समय अध्ययन और हिंदी के ग्रंथ लिखने में बिताते थे। जो स्थान श्रीप्रेमचंदजी को उपन्यास और कहानी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिखने में प्राप्त हुआ, वही स्वर्गीय शुक्लजी को आलोचना लिखने में प्राप्त था। हिंदी के आप सर्वश्रेष्ठ समालोचक थे। हिंदी में इस प्रवृत्ति को पैदा करने में आपको युग-प्रवर्तक कहना चाहिए। तीव्र मेधा, ऊँची सूझ, गंभीर अध्ययन और प्रबल कटाक्ष, आपकी लेखनी में ये बातें सर्वत्र पाई जाती हैं। आपकी जैसी गंभीर मुख-मुद्रा थी, वैसा ही गंभीर ज्ञान था। बाबू श्यामसुंदरदासजी के अवकाश ग्रहण करने पर आप हिंदू-विश्वविद्यालय में उनके स्थान पर हिंदी के प्रधान शिक्षक थे। इधर कुछ वर्षों से आपको दम का रोग हो गया था, और उससे आप अस्वस्थ रहने लगे थे। पर यह किसी को ख़याल न था कि आप इस तरह एकाएक उठ जायँगे। परमात्मा आपकी आत्मा को शांति प्रदान करें, और आपके शोक-संतप्त परिवार को धैर्य दें, यही हमारी प्रार्थना है।

× × ×

६. हिंदू और मुसलिम-राज्य

श्रीजिन्ना ने अपने एक वक्तव्य में, हाल ही में, यह कहा है कि भारत में सांप्रदायिक समस्या हल करने का इसके अतिरिक्त और कोई उपाय नहीं कि जिन प्रांतों में मुसलमानों का बहुमत है, वहाँ मुसलमानों का शासन हो। इस प्रकार सीमा-प्रांत, पंजाब, बिलोचिस्तान, सिंध और बंगाल-प्रांत के मंत्रिमंडल विशुद्ध मुसलिम-मंत्रिमंडल होंगे। शेष प्रांतों में हिंदू-मंत्रिमंडल होंगे। फिर भी मुसलिम-प्रांतों में हिंदू अल्पसंख्यक और हिंदू-प्रांतों में मुसलमान अल्पसंख्यक रहेंगे, क्योंकि मि० जिन्ना भी इस बात के लिये राज़ी न होंगे, और न वह इसे संभव ही समझेंगे कि पाँच प्रांतों की हिंदू-जनता को वहाँ से हटाकर हिंदू-प्रांतों में भेज दिया जाय, और हिंदू-प्रांतों के मुसलमान मुसलिम-प्रांतों में जाकर बस जायँ। तब अल्पसंख्यकों की समस्या जहाँ-की-तहाँ पड़ी रही। इस बात को हम इससे पहले भी कह चुके हैं। पर एक दूसरे दृष्टिकोण से भी इस बात को और परखना चाहिए। इन पाँचो मुसलिम-प्रांतों में केवल पंजाब-प्रांत ही ऐसा है, जो अपनी आमदनी से अपना कुल ख़र्च चला सकता है। शेष प्रांतों को भारत-सरकार की आर्थिक सहायता पर निर्भर रहना पड़ता है। अगर सिंध, सीमा-प्रांत और बिलोचिस्तान पंजाब के साथ एक मुसलिम-फ़ेडरेशन के अंदर आ जाते हैं, तो शेष तीन प्रांतों का घाटा पंजाब पूरा न कर सकेगा। तब क्या हिंदू-फ़ेडरेशन से सहायता की आशा की जायगी? इसके साथ ही रियासतों का सवाल खड़ा होता है। हैदराबाद-रियासत का शासक मुसलमान है, पर वहाँ की प्रजा में हिंदुओं का बहुमत है। इसी प्रकार काश्मीर का शासक हिंदू है, और प्रजा में मुसलमानों का बहुमत है। यह समस्या कैसे हल होगी? काश्मीर में मुसलिम-राज्य और हैदराबाद में हिंदू-राज्य किस प्रकार क़ायम किया जायगा? क्या यह उम्मीद की जा सकती है कि पंजाब में, जहाँ यूनियनिस्ट-दल की स्थापना में हिंदुओं का भी उतना ही हाथ है, जितना मुसलमानों का, और इस दल के हाथ म ही पंजाब के शासन की बागडोर है, मुसलिम-राज्य स्थापित हो सकेगा? क्या सिक्ख अपना अस्तित्व मिटाने के लिये तैयार होंगे? क्या स्वयं सर सिकंदर हयातख़ाँ इस तरह का मुसलिम-राज्य पसंद करते हैं? सीमा-प्रांत में तो कांग्रेस का बोलबाला है। वहाँ की बाबत मि० जिन्ना क्यों चिंता करते हैं? सीमा-प्रांत और बिलोचिस्तान, दोनो ही मुसलमान-प्रांत राष्ट्रीयता के उपासक हैं। वहाँ श्रीजिन्ना की दाल नहीं गलने पाती। तब वह पाकिस्तान की योजना में भी कब शामिल हो सकते हैं? रह गया सिंध, सो वहाँ मुसलिम-लीग की हुकूमत अब तक नहीं बन पाई, हालाँकि मि० जिन्ना ने सिर-एड़ी का पसीना एक कर दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बंगाल में, जहाँ सर्व-प्रथम भारत की राष्ट्रीयता ने जन्म लिया, जो राष्ट्रीय क्षेत्र में अब भी शेष भारत का अगुआ बनने का दावा करता है, एक क़ौम का सांप्रदायिक राज्य स्थापित होकर चल सकेगा, यह असंभव है। कांग्रेस के इतने दिनों के आंदोलन को देखकर ही मियाँ फ़ज़लुल-हक़ कांग्रेस और मुसलिम-लीग में समझौता होने की चर्चा करने लगे हैं, जब कि मि० जिन्ना अपनी पाकिस्तान-योजना से अंत तक चिपके रहना चाहते हैं। श्रीएम्० एन्० राय की नया संयुक्त मंत्रिमंडल बनाने की आयोजना का मि० जिन्ना की ओर से जैसा जवाब दिया गया है, उससे तो यह आशा नहीं की जा सकती कि मुसलिम-लीग और कांग्रेस में समझौता होने का समय आ गया है। श्रीजिन्ना कहते हैं कि वह किसी दल के साथ तब तक संयुक्त मंत्रिमंडल बनाने के लिये तैयार नहीं, जब तक वह दल पाकिस्तान-योजना को स्वीकार नहीं कर लेता। मि० जिन्ना की यह हठधर्मी न-जाने उन्हें कहाँ ले जाकर पटकेगी। वह चाहे कुछ भी सोचें, पर बंगाल में मुसलिम-राज्य का स्वप्न कैसे पूरा हो सकेगा, इसे फ़ज़लुलहक़ साहब अच्छी तरह जानते हैं, और तभी आपने कांग्रेस और मुसलिम-लीग में सुलह करने की चर्चा की है। पर आपकी इस अपील का कोई अच्छा नतीजा इस समय नहीं निकलेगा। समय स्वयं बतला देगा कि यह हिंदू और मुसलिम-राज्य शेख़चिल्ली के मंसूबों के सिवा और कुछ न था।

× × ×

७. प्रांतीय सम्मेलन

आगरे में प्रांतीय हिंदी-साहित्य-सम्मेलन होने-वाला था। प्रांत के प्रमुख हिंदी-हितैषी और हिंदी-जगत् के नेताओं की यह राय थी कि यह सम्मेलन पूना-अधिवेशन के पूर्व ही हो जाना चाहिए था, जिसमें पूना-सम्मेलन में पेश होनेवाले महत्त्व-पूर्ण मामलों पर संयुक्त प्रांत का मत पहले ही मालूम हो जाता, और प्रांतीय सम्मेलन के निर्णय का प्रभाव अखिल भारतीय हिंदी-साहित्य-सम्मेलन पर पड़ता। यह अच्छा ही होता, यदि आगरावाले अपने यहाँ प्रांतीय हिंदी-नेताओं को निमंत्रित कर पूना-सम्मेलन के लिये एक मार्ग प्रदर्शित करने का अवसर देते। इस संबंध में आगरा-नागरी-प्रचारिणी सभा की बड़ी ज़िम्मेदारी थी। प्रांतीय सम्मेलन को आगरा के लिये निमंत्रण देनेवाले स्वर्गीय अध्यापक रामरत्न थे, जो अब इस संसार में नहीं। हिंदी के नाम पर आगरे में आगरा-नागरी-प्रचारिणी सभा ही प्रतिनिधि-संस्था है। उसके अधिकारी अपने यहाँ प्रांतीय सम्मेलन करने के इच्छुक थे। यह भी पता है कि सभा की प्रबंध-समिति ने प्रस्ताव पास करके इसकी तैयारियाँ भी शुरू कर दी थीं, पर न-जाने किस कारण सभा द्वारा निश्चित तिथियों में वहाँ सम्मेलन नहीं बुलाया जा सका। इसका गुप्त-प्रकट भेद तो आगरावालों को ही मालूम होगा, पर हरएक व्यक्ति तो इतना ही सोच सकता है कि इसमें किसी एक ही व्यक्ति की ज़िम्मेदारी नहीं। एक या कुछ ख़ास व्यक्तियों की इच्छा या अनिच्छा से कोई काम हो या न हो, तो इससे संस्था की ज़िम्मेदारी का महत्त्व घटता है। आगरे के हिंदी-हितैषी और हिंदी-प्रेमी इसे नोट कर लें।

× × ×

८. पंजाब का प्राइमरी एजुकेशन-बिल

पूना - हिंदी - साहित्य - सम्मेलन के सभापति श्रीसंपूर्णानंदजी ने अपने भाषण में कहा है कि इस समय हिंदी पर चारो ओर से प्रहार हो रहा है। इसका एक उदाहरण पंजाब है। सर सिकंदर हयात-ख़ाँ की सरकार ने प्रारंभिक शिक्षा-क़ानून नाम से शिक्षा की जिस नई व्यवस्था का निर्माण किया है, उसका बाहरी स्वरूप कैसा ही हो, उसका एकमात्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्देश्य पंजाब से हिंदी और वहाँ की स्थानीय भाषा गुरुमुखी का गला घोंटकर उर्दू को समस्त पंजाबियों की मातृभाषा बना देना है। पंजाब के शिक्षा-मंत्री श्रीअब्दुल हई ने तो यह बात स्पष्ट रूप से स्वीकार की है। आपका कहना है, उर्दू को माध्यम बना देने से प्रांत में भाषा की एकता हो जायगी। ऐसा आप इसलिये कहते हैं कि पंजाब में मुसलमानों की आबादी अधिक है, जो उर्दू लिखते-पढ़ते हैं। यदि इसी बात को स्वीकार किया जाय, तो भारत के शेष प्रांतों में, जहाँ हिंदुओं की आबादी अधिक है, केवल हिंदी को माध्यम बना देना चाहिए। फिर वहाँ के लिये भी उर्दू की पुकार क्यों की जाती है? हम तो इस पक्ष को इस प्रकार सांप्रदायिक दृष्टिकोण से देखते ही नहीं। हम तो कहते हैं, प्रांतीय भाषाओं का जो स्थान है, वह क़ायम रहे। प्रारंभिक शिक्षा स्थानीय भाषा में ही होनी चाहिए, और शिक्षा का माध्यम वह भाषा हो, जो सारे देश में व्यापक रूप से बोली और लिखी-पढ़ी जाती हो। इसी कारण तथा भाषा के लालित्य, सुबोधता आदि गुणों के कारण हमने हिंदी को राष्ट्र-भाषा स्वीकार किया है। यू० पी०, बिहार, सी० पी०, मदरास आदि प्रांतों में मुसलमानों की आबादी १४ प्रतिशत के लगभग है, फिर भी उनकी भावना का आदर करते हुए वहाँ उर्दू की शिक्षा के लिये विशेष प्रबंध किया गया है। पंजाब में तो हिंदू और सिख मिलाकर अल्पसंख्यक जाति रह ही नहीं जाती, फिर उनकी भाषा की उपेक्षा करने का साहस वहाँ की सरकार को कैसे हो सकता है? पंजाब-सरकार ने इससे पहले भी कई बेवक़ूफ़ियाँ की हैं। एक बार ऐसा सर्कुलर निकाला कि जिन पाठशालाओं में उर्दू नहीं पढ़ाई जायगी, उन्हें सरकारी मदद न दी जायगी। पंजाब के डाक-विभाग में हिंदी में लिखे गए पते की चिट्ठियों की बड़ी दुर्दशा होती थी। जब इन बातों का विरोध किया गया, तो सरकार ने अपनी ग़लती ठीक की। इसी तरह पंजाब-सरकार के उक्त प्राइमरी-शिक्षा-बिल का भी विरोध किया जाना चाहिए। यदि पंजाब के हिंदू और सिख मिलकर इस बिल के विरोध में आवाज़ उठावें, तो शेष भारत के हिंदी-भाषा-भाषी लोग भी उनका साथ देंगे। इस तरह पंजाब-सरकार को जनता की इच्छा के विरुद्ध उस पर नए क़ानून लादने का साहस न होगा। पर यह भी अच्छा ही होगा कि सर सिकंदर हयातख़ाँ की सरकार स्वयं अपनी इस भूल को स्वीकार कर उक्त क़ानूनी मसविदे में संशोधन कर दे। पाकिस्तान-योजना के विरोधी होते हुए सर सिकंदर इस पाकिस्तानी योजना को पंजाब में लागू करना चाहते हैं, यह आश्चर्य की बात है!

× × ×

९. वैज्ञानिक शब्द-समिति

वह दिन अब अधिक दूर नहीं, जब उच्च शिक्षा के सभी विषय देशी भाषाओं में पढ़ाए जायँगे। इसीलिये देशी भाषाओं का वाङ्मय प्रशस्त होने की आवश्यकता है। हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के सभापति ने हिंदी-वाङ्मय पर अधिक ज़ोर देकर वास्तव में समय की एक महती आवश्यकता स्पष्ट कर दी है। आज आवश्यकता इस बात की है कि विभिन्न विषयों की उच्च शिक्षा में जिन वैज्ञानिक पारिभाषिक या 'टेक्निकल' शब्दों का प्रयोग होता है, उनके स्थानापन्न शब्द हिंदी में खोज निकाले जायँ। इसके बिना भाषा-भांडार अधूरा रहेगा, और आगे उच्च विषयों की शिक्षा के लिये हमें या तो विदेशी शब्दों का सहारा लेना पड़ेगा, या अन्य भाषाओं के शब्द हमारे ऊपर लाद दिए जायँगे। यही हो भी रहा है। भारत-सरकार की तरफ़ से अब यह एक नया अनुसंधान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुरू हुआ है कि देशी भाषाओं के लिये वैज्ञानिक शब्दों का एक कोष तैयार किया जाय। इसके लिये एक वैज्ञानिक शब्द-समिति बनाई गई है। इस वैज्ञानिक शब्द-समिति में जिन सदस्यों को लिया गया है, उनमें अधिकांश ऐसे हैं, जिनके पास अरबी-फ़ारसी के शब्दों का भांडार है। हैदराबाद की उस्मानिया-युनिवर्सिटी में ऐसा ही हुआ, और वहाँ बलात् अरबी के शब्द प्रचलित किए गए। उक्त वैज्ञानिक शब्द-समिति में सर अकबर हैदरी के साथ निज़ाम-सरकार या उस्मानिया-युनिवर्सिटी के तीन सदस्य हैं। शेष सदस्यों में डॉ० सर जियाउद्दीन, कई अन्य मुसलिम सदस्य तथा सरकारी विभाग में काम करनेवाले व्यक्तियों की संख्या ही अधिक है। केवल पं० अमरनाथ झा ही एक ऐसे सदस्य हैं, जो हिंदी या संस्कृत-भाषाओं के प्रतिनिधि-स्वरूप कहे जा सकते हैं। शेष प्रांतीय भाषाओं के प्रतिनिधियों का इस समिति में सर्वथा अभाव है। यह कितने खेद की बात है कि एक दर्जन प्रतिनिधियों में मराठी, बँगला, गुजराती और तामिल-भाषाओं का कोई भी प्रतिनिधि नहीं लिया गया। सदस्यों की संख्या बढ़ जाने का तो कोई बहाना नहीं, फिर अरबी, फ़ारसी के इतने अधिक, आवश्यकता से अधिक, प्रतिनिधि क्यों लिए गए? हिंदी तथा अन्य देशी भाषाओं की संस्थाओं की ओर से इसका तीव्र विरोध होना चाहिए, और सरकार को उसकी ग़लती सुधारने के लिये मजबूर करना चाहिए।

× × ×

१०. पं० कृष्णकांतजी का स्वर्गवास!

केंद्रीय धारा-सभा के सदस्य, 'अभ्युदय' के सर्वे-सर्वा, हिंदी के अनन्य सेवक श्रीकृष्णकांत मालवीय का असामयिक स्वर्गवास इस देश की और हिंदी की महान् क्षति है। स्वर्गीय कृष्णकांतजी मालवीय-परिवार के एक रत्न थे। मालवीय-परिवार अपनी धार्मिक प्रवृत्ति, हिंदू-समाज की सेवा और राजनीतिक बलिदानों के लिये मशहूर हो चुका है। पूज्यपाद पं० मदनमोहन मालवीय के बाद मालवीय-परिवार में पं० कृष्णकांत मालवीय का ही नाम लिखा जाता था। किसे ख़याल था, महामना वृद्ध मालवीयजी की आँखों के सामने उनका कृष्णकांत धरती से उठ जायगा। पं० पद्मकांत मालवीय से उनके 'बाबू' के विछोह में हम किस तरह धैर्य रखने को कहें। आज जब देश में राजनीतिक आंदोलन छिड़ा हुआ है, बेटा जेल में है, तो बाप बीमारी की हालत में जेल जाने की कामना कर रहा है। बाप की अति रुग्णावस्था में पुत्र जेल से अवकाश ग्रहण कर पिता की शय्या के समीप आता है, और वह शय्या मृत्यु-शय्या हो जाती है। देश-सेवा और करुणा का कैसा उदाहरण! पं० कृष्णकांत जीवन-भर देश, समाज और साहित्य के भक्त रहे, और अपने बाद अपने पुत्र में उन सब गुणों को छोड़ गए, जिसमें सेवा का स्रोत बंद न हो। स्वर्गीय कृष्णा बाबू को हमने जैसे 'मर्यादा' और 'अभ्युदय' के संपादक के रूप में, 'सुहागरात' और 'बहूरानी को सीख'-नामक श्रेष्ठ पुस्तकों के लेखक के रूप में तथा धारा-सभा और सार्वजनिक जीवन में प्रबल वक्ता के रूप में देखा, वैसे ही वैयक्तिक जीवन में श्रेष्ठ और उच्च व्यक्ति तथा सहृदय मित्र के रूप में। हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के आप तीन वर्ष तक मंत्री रहे। भारत में वायुयान-संबंधी शिक्षा के लिये आपने एक बड़ी योजना बनाई थी, और यदि सरकार ने उस उपयोगी योजना के लिये निंदनीय उदासीनता का भाव न दिखाया होता, तो वह योजना पं० कृष्णकांत मालवीय के रूप में एक भारतीय के मस्तिष्क, साहस और महान् कार्य का उत्कृष्ट उदाहरण होती। हम स्वर्गीय आत्मा की शांति के लिये परमात्मा से प्रार्थना करते और पं०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पद्मकांत मालवीय तथा उनके शोकाकुल परिवार के प्रति संवेदना प्रकट करते हैं।

× × ×

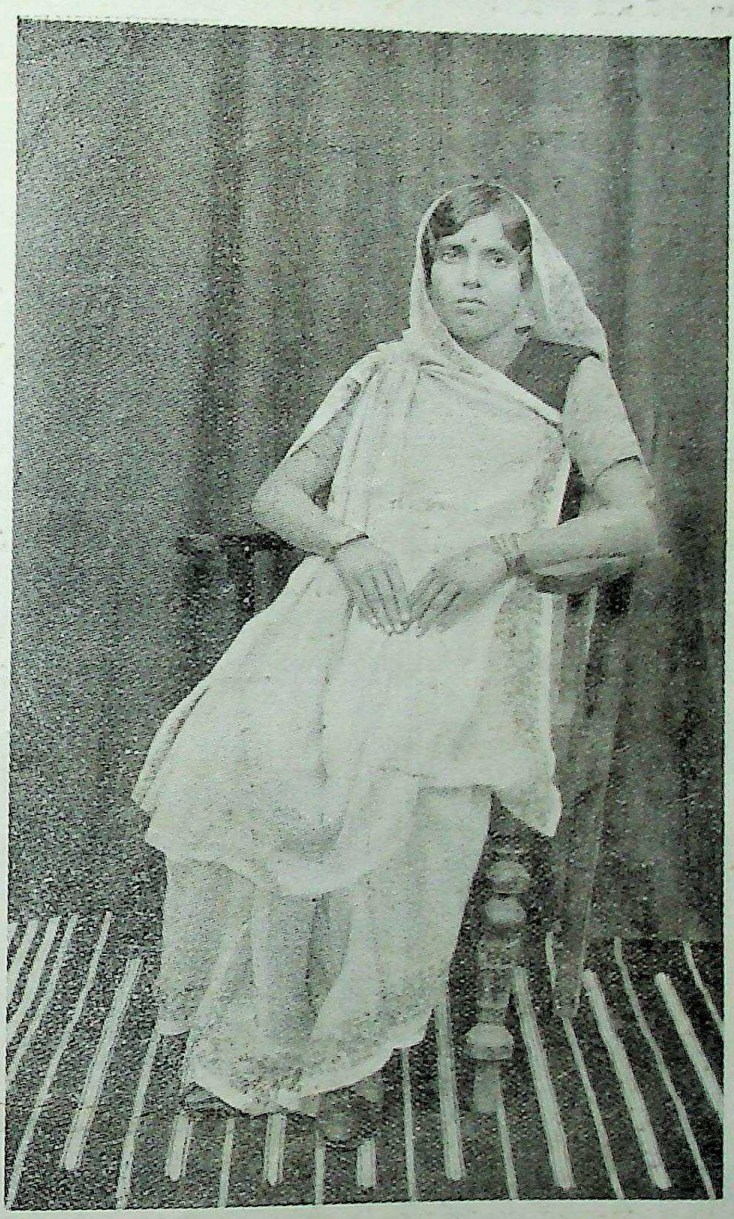

स्वर्गीया श्रीमती बच्चनकुमारी

११. स्वर्गीया श्रीमती बच्चनकुमारी

आप गत १६ नवंबर को संध्या-समय, अपने चार अबोध बच्चों को छोड़कर, स्वर्ग सिधारीं! आपकी अवस्था केवल २८ साल की थी। आप सारन (बिहार)-ज़िले के विलासपुर ग्राम के निवासी बाबू रामावतारप्रसाद की सुपुत्री थीं। आपका आज तक का सारा ख़ानदान हथुआ-राज्य में कार्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करता रहा है। आप हिंदी के प्रसिद्ध, प्रतिष्ठित लेखक प्रोफ़ेसर शिवपूजनसहाय की तीसरी धर्म-पत्नी थीं। सन् १९२७ की २१वीं मई, सोमवार को प्रोफ़ेसर सहायजी के साथ आपका शुभ पाणि-ग्रहण हुआ था। उस समय आपकी उम्र लगभग १७ साल की थी। आप सुसंस्कृत, सर्व-गुण-संपन्न, आदर्श गृहिणी थीं। आपका नाम बच्चन-कुमारी था। शिवपूजनसहायजी पुस्तक-भंडार (लहरियासराय) की नौकरी छोड़कर ठीक १६ नवंबर, १९३९ को राजेंद्र-कॉलेज (छपरा) में दाख़िल हुए थे, और ठीक उसके एक वर्ष बाद, उसी तारीख़ को, श्रीमती सहाय की मृत्यु हुई। आपके निधन से प्रोफ़ेसर सहाय के हृदय पर अत्यंत भीषण आघात हुआ है। पर आख़िर चारा ही क्या है? ईश्वर आपकी आत्मा को शांति तथा शिवपूजनजी को धैर्य दें।

बच्चों को रोज़ाना
हकीम तुलसी प्रसाद अग्रवाल अलीगढ़ की
असली मीठी
बाल जीवन घुट्टी
बनाने से
बच्चे कभी कदापि बीमार नहीं होंगे दांत सुगमता से निकल आवेंगे तथा बच्चों की हर एक बीमारी दूर होकर कमज़ोर बच्चे ताक़तवर बन जावेंगे
सब जगह बिकती है
लेकिन नक़ली शीशियों से बचें
मूल्य शीशी ७. ४ शीशी १) दर्जन २॥)
डा. व्य. अ. सौदागरों को उचित कमीशन
नये सौदागर नमूना मुफ़्त मंगावें।
मुफ़्त १० प्रतिष्ठित लोगों के नाम व पते भेजने पर स्वास्थ्यसाधन पुस्तक मुफ़्त भेजेंगे।
पता. बालजीवन कार्यालय अलीगढ़, यू.पी.

समालोचना
खूब लिखा साहिब, खूब
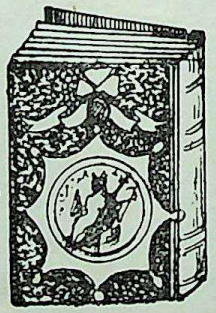
अंग्रेजी लेखकों की इस विषय की सारी पुस्तकों की अपेक्षा 'विवाहित-आनन्द' कई प्रकार से अधिक लाभ-दायक और अधिक मनोरंजक है। विवाहित पुरुषों के पथ-प्रदर्शन के लिए ऐसी पुस्तक की परम आवश्यकता थी।
रायबहादुर.....
लेखक-कविराज हरनामदास बी.ए. लाहौर
सब पुस्तक विक्रेता और रेलवे बुकस्टाल बेचते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऑर्डर दीजिए ! ऑर्डर दीजिए !!

हमारा जनवरी-मास का नया प्रकाशन

निःसहाय हिंदू

लेखक, श्रीयुत राधाकृष्णदास। हिंदू-जाति के विश्व-मान्य सिद्धांतों का सजीव, सारगर्भित चित्रण। संगठन, एकता और बंधुत्व का आदर्श उदाहरण! आपके हृदय की कोमल भावनाओं को छू लेने का प्रयास कितना पवित्र—कितना सफल। एक बार अवश्य पढ़िए। मूल्य ॥), १)

कुबेर

लेखक, देवीप्रसाद धवन 'विकल'। वह धन-राशि में लोटनेवाला, नए युग के पूँजीपतियों का अपवाद-रूप, अभिमानी कुबेर न था। समाज की चोटों से तिलमिलाकर, आत्मविश्वास और लोकोपकार की भावना के सहारे जीनेवाला, औरों के लिये अपने धन को लुटा देनेवाला रंक 'कुबेर' विधाता के विधान से एक दिन सचमुच कुबेर बन गया। मूल्य १), १॥)

अंतःपुर का छिद्र

लेखक, सुप्रसिद्ध नाटककार पं० गोविंदवल्लभ पंत का सबसे नवीन बौद्धकालीन नाटक कौशांबी के राजमहल में होनेवाली प्रणय-लीला, महाराज उदयन की प्रेम-कथा का दुःखद प्रसंग। अधिकार-लिप्सा का रोमांचकारी दृश्य। सारगर्भित कथानक। स्टेज पर खेलने योग्य। मूल्य ।=), ॥=)

बिहारी-सुधा

लेखक, मिश्रबंधु। महाकवि बिहारीलाल के २७० उत्तमोत्तम दोहों का अर्थ-सहित सुंदर संग्रह। घरेलू पुस्तकालयों की शोभा बढ़ाने योग्य अनुपम काव्य-ग्रंथ। मूल्य ।=), ॥)

स्त्री-सौंदर्य और स्वास्थ्य

लेखक, श्रीयुत बुद्धिसागर वर्मा बी० ए०, एल्० टी०। शरीर के अंगों का बनाव-शृंगार, सौंदर्य-रक्षा के नियम, व्यायाम, रोग तथा उनकी सरल चिकित्सा, सौंदर्य बढ़ाने के देशी और विदेशी साधनों की उपयोगिता सरल भाषा में वर्णित है। सचित्र। मूल्य २), २॥)

मनुष्य का विकास

लेखक, श्रीज्योतिलाल भार्गव बी० ए०, एल्-एल्० बी०। धरती पर सबसे पहले जानवर कैसे पैदा हुए? मनुष्य-जाति कैसे प्रकट हुई? क्या आदमी आसमान से बरस पड़े थे या पाताल से निकल पड़े थे? सभी प्रश्नों का विस्तृत और प्रासंगिक उत्तर देनेवाली एकमात्र पुस्तक। मूल्य ।=), ॥=)

भोजन और स्वास्थ्य

लेखक, डॉ० सत्यप्रकाश तथा डॉ० संतप्रसाद टंडन। स्वास्थ्य-वर्द्धक भोजन का चुनाव साधारण जन भी अपनी आय के अनुसार कर सकते हैं। इसके लिये अमीर-ग़रीब का कोई प्रश्न नहीं। मूल्य १), १॥)

मिलने का पता—गंगा-ग्रंथागार, ३६, लाटूश रोड, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Registered No. A—473

हिंदी-अँगरेज़ी-छपाई

रंगीन तिरंगे चित्र

सर्वश्रेष्ठ जिल्द-बँधाई

सोने की छपाई, चिट्ठी के काग़ज़, लिफ़ाफ़े, पोस्टकार्ड,
विज़िटिंग-कार्ड, बिल, मिमो, रसीद-बुक, कैलेंडर,
नोटिस, निमंत्रण-पत्र, अभिनंदन-पत्र, पुस्तक आदि—

सब प्रकार की छपाई का काम

हमारे यहाँ सुंदर और सस्ता

साथ ही

ठीक वक़्त पर किया जाता है।

काम संतोषप्रद होने की गैरंटी

आपको छोटा-मोटा, सुंदर, सस्ता, किसी प्रकार का भी छपाई का कोई काम कराना हो, तो उसे तुरंत हमारे पास भेजिए।

अब इधर-उधर भटकने की ज़रूरत नहीं!

सब प्रकार की छपाई के काम के लिये सुविधा-जनक स्थान

गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस
लखनऊ

गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस, लखनऊ में श्रीदुलारेलाल (सील प्रोप्राइटर) द्वारा मुद्रित और प्रकाशित
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

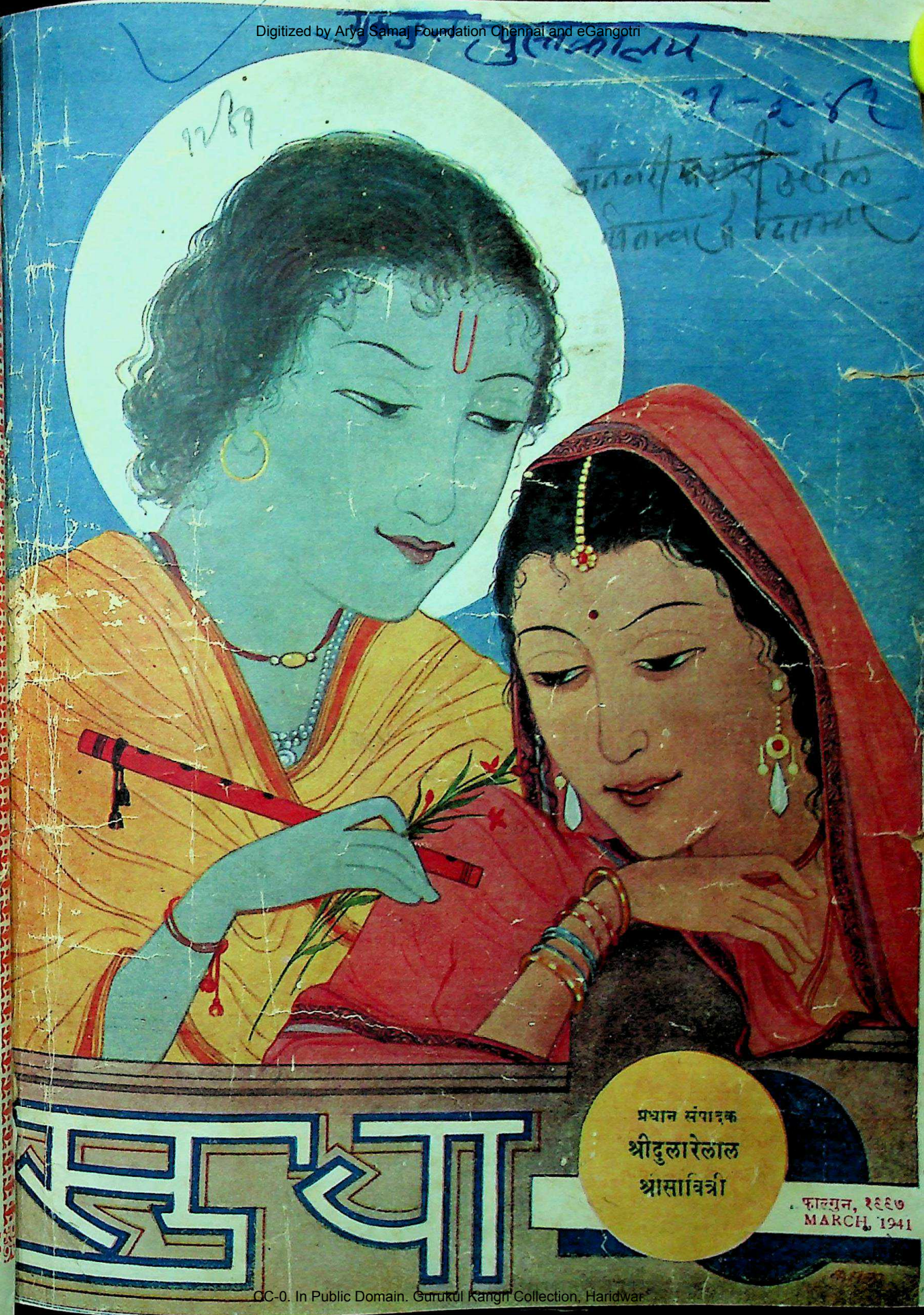

सुधा

प्रधान संपादक
श्रीदुलारेलाल
श्रीसावित्री

फाल्गुन, १९९७
MARCH, 1941

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यू० पी०, सी० पी०, बिहार आदि के शिक्षा-विभागों द्वारा स्वीकृत

बाल-विनोद

[बच्चों के लिये सर्वश्रेष्ठ मासिक पत्र]

का

कोई भी शानदार पिछला विशेषांक

वसंतांक

होलिकांक

बचपन-अंक

नटखट-अंक

जनवरी, १९४१ से ग्राहक बनकर मुफ़्त मँगा लें !

—:o:—

थोड़ी - सी ही प्रतियाँ बची हैं !
देर से ग्राहक बननेवालों को नहीं मिलेंगी !!
आज ही पत्र लिखकर अपनी प्रति रिज़र्व करा लें !!!

१९४० का नया

शानदार सेट

पृष्ठ - संख्या लगभग ४२०
चित्र - संख्या लगभग ३००
केवल ३ सेट बिक सकते हैं।
मूल्य ५)

मैनेजर बाल-विनोद, लखनऊ

या राष्ट्रीय प्रकाशन-मंडल, पटना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'सुधा' के नियम

['सुधा' के २ संस्करण निकलते हैं—(१) राजसंस्करण, (२) साधारण संस्करण]

मूल्य

'सुधा'के राजसंस्करण का डाक-व्यय-सहित वार्षिक मूल्य १२), छ मास का ६) और प्रति संख्या का १) है। साधारण संस्करण का वार्षिक ६), छ मास का ३) और एक प्रति का ॥) है। वी० पी० से मँगाने में ≋) रजिस्ट्री के और देने पड़ेंगे। इसलिये ग्राहकों को मनीऑर्डर से ही चंदा भेज देना चाहिए। भारत के बाहर सर्वत्र वार्षिक मूल्य वही है, जो भारत में। सुधा की यह भी एक विशेषता है—वर्षारंभ श्रावण (अगस्त) से होता है, लेकिन ग्राहक चाहे जिस संख्या से बन सकते हैं।

अप्राप्त संख्या

अगर कोई संख्या किसी ग्राहक के पास न पहुँचे, तो उसी महीने के अंत तक कार्यालय को सूचना मिलनी चाहिए। लेकिन हमें सूचना देने के पहले स्थानीय पोस्ट-ऑफ़िस में उसकी जाँच करके डाकख़ाने का दिया हुआ उत्तर सूचना के साथ आना चाहिए। उन्हें उस संख्या की दूसरी प्रति भेज दी जायगी। लेकिन उक्त तारीख़ के बाद सूचना मिलने से उस पर ध्यान नहीं दिया जायगा, और उस संख्या को ग्राहक १) या ॥) के टिकट भेजने पर ही पा सकेंगे।

पत्र-व्यवहार

उत्तर के लिये जवाबी कार्ड या टिकट आना चाहिए, अन्यथा पत्र का उत्तर विलंब से दिया जाना संभव है। पत्र के साथ ग्राहक-नंबर का भी उल्लेख होना चाहिए। मूल्य या ग्राहक होने की सूचना मैनेजर 'सुधा', नं० ३६, लाटूश रोड, लखनऊ के पते से आनी चाहिए।

पता

ग्राहक होते समय अपना नाम और पता बहुत साफ़ अक्षरों में लिखना चाहिए। दो-एक महीने के लिये पता बदलवाना हो, तो उसका प्रबंध डाक-घर से ही कर लेना ठीक होगा। अधिक दिन के लिये बदलवाना हो, तो संख्या निकलने के १५ दिन पेश्तर उसकी सूचना देनी चाहिए।

लेख आदि

लेख या कविता स्पष्ट अक्षरों में, काग़ज़ की एक ओर, संशोधन के लिये इधर-उधर जगह छोड़कर, लिखी होनी चाहिए। क्रमशः प्रकाशित होने लायक़ बड़े लेख संपूर्ण आने चाहिए। किसी लेख अथवा कविता के प्रकाशित करने या न करने का, उसे घटाने-बढ़ाने का तथा उसे लौटाने या न लौटाने का सारा अधिकार संपादक को है। जो नापसंद लेख संपादक लौटाना मंज़ूर करें, वे टिकट भेजने पर ही वापस किए जा सकते हैं। यदि लेखक लेना स्वीकार करते हैं, तो उपयोगी और उत्तम लेखों पर पुरस्कार भी दिया जाता है। सुधा में प्रकाशित पुरस्कृत लेखों और कविताओं को पुस्तकाकार या किसी संग्रह में निकालने का अधिकार सुधा के अध्यक्ष को रहेगा। अपुरस्कृत रचनाओं पर लेखकों और सुधा-अध्यक्ष, दोनों का अधिकार होगा। सचित्र लेखों के चित्रों का प्रबंध लेखकों को करना चाहिए। चित्र प्राप्त करने के लिये आवश्यक ख़र्च प्रकाशक देंगे।

लेख, कविता, समालोचना के लिये पुस्तकें और बदले के पत्र इस पते से भेजने चाहिए—

श्रीदुलारेलाल
गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय
कवि-कुटीर, लखनऊ

विज्ञापन

किसी महीने में विज्ञापन बंद करना या बदलवाना हो, तो एक महीने पहले सूचना देनी चाहिए।

अश्लील विज्ञापन नहीं छपते। छपाई पेशगी ली जाती है। विज्ञापन की दर नीचे प्रकाशित है—

साधारण १ पृष्ठ या २ कालम की छपाई २५) प्रतिमास
,, ½ ,, या १ ,, ,, ,, १५) ,, ,,
,, ¼ ,, या ½ ,, ,, ,, १०) ,, ,,
,, ⅛ ,, या ¼ ,, ,, ,, ६) ,, ,,

कम-से-कम आधा कालम विज्ञापन छपानेवालों को सुधा मुफ़्त मिलती है। विज्ञापनदाता द्वारा छपे हुए सुधा-साइज़ के ८ पृष्ठ के क्रोड़-पत्र की सिलाई, बटाई के चार्जेज़ ६०), ४ पृष्ठ के ३५) और २ पृष्ठ के २०) लिए जाते हैं।

सुधा में विज्ञापन छपाने से बड़ा लाभ रहता है। कारण, इसका प्रत्येक विज्ञापन लाखों पढ़े-लिखे, धनी-मानी और सभ्य स्त्री-पुरुषों की नज़रों से गुज़र जाता है। हिंदी की सर्वश्रेष्ठ पत्रिका होने के कारण इसका प्रचार उत्तरोत्तर बढ़ रहा है।

कृपया शीघ्र ही अपना विज्ञापन सुधा में छपाकर लाभ उठाइए। कम-से-कम एक बार परीक्षा तो कर लीजिए।

मैनेजर 'सुधा', लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यापार की मंदी होने पर भी

१. ठीक - ठीक लिखे हुए
२. उपयुक्त माध्यम में दिए गए
३. सुंदरता से छपे हुए

विज्ञापन

हमेशा रुपया खींचते हैं

व्यापार की चाभी
विज्ञापन छपाना
: : है : :

सुधा

१. में दक्ष, मनोवैज्ञानिक विज्ञापन-लेखक नियुक्त हैं।
२. विज्ञापन देने के लिये सर्वोत्तम माध्यम है।
३. की टा इ पो ग्रै फ़ी कला-पूर्ण है।

इसीलिये

सुधा में विज्ञापन छपाइए

आपके लाभ की बात

साधारण विज्ञापन की दर सुधा में जितने

प्रतिमास

१ पृष्ठ की छपाई		२५)
½	,, ,, ,,	१५)
¼	,, ,, ,,	१०)
⅛	,, ,, ,,	६)

विज्ञापन छपते हैं, उतने किसी भी हिंदी-पत्रिका में नहीं छपते !

मैनेजर 'सुधा'
[विज्ञापन-विभाग]
नं० ३६, लाटूश रोड, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख-सूची

पृष्ठ

१. बुलाता वल्लभ बाँह पसार (कविता)—[लेखक, श्रीयुत 'वचनेश'जी ... १०१

२. मुझे भूल ही जाओ (कविता)—[लेखक, श्रीयुत चंद्रप्रकाश वर्मा 'चंद्र' बी० ए० (ऑनर्स) १०२

३. दूसरा सत्य (कहानी)—[लेखक, श्रीयुत 'अरुण' बी० ए० ... ... १०३

४. मातृभाषा हिंदी बलि-वेदी पर—[लेखक, श्रीरामदत्त शुक्ल एम्० ए०, एल्-एल्० बी०, ऐडवोकेट ११५

५. हिंदी में प्रमत्त रचना [२]—[लेखक, प्राध्यापक चेतराम शर्मा ११६

६. धार्मिक स्वानुभव (कविता)—[लेखक, राजराजा डॉक्टर श्यामविहारी मिश्र डी० लिट्० तथा रायबहादुर पं० शुकदेवविहारी मिश्र बी० ए० ... १२६

अमृतांजन

सर्वश्रेष्ठ दर्दनाशक भारतीय महौषध। सिर-दर्द, जलन, पीड़ा, फोड़ा, सूजन, कटना, घाव, वात, गठिया, कमर का दर्द, सरदी, खाँसी, कीड़ों का डंक आदि सभी वेदनाओं में 'अमृतांजन' आश्चर्य-जनक फ़ायदा करता है।

अमृतांजन लिमिटेड

बंबई, कलकत्ता, मदरास

पो० बॉक्स नं० ६,८२५

[ई० सन् १९०१ में स्थापित]

च्यवनप्राश-३) सेर अध्यक्ष मथुरा बाबू का मकरध्वज-४) भरी

शक्ति औषधालय-ढाका

आयुर्वेदिक संसार में युगांतर उपस्थित कर दिया है।

कारखाना और हेड ऑफ़िस ढाका, बंगाल। तार का पता 'शक्ति' ढाका।

कलकत्ता हेड ऑफ़िस—५२। १, बीडन स्ट्रीट। चौरंघी

बंगाल से बाहर की शाखाएँ—देहली, कानपुर, इलाहाबाद, पटना, भागलपुर, गया, बनारस, गोरखपुर, बुलानाला, जमशेदपुर, गौहाटी, तिनसुकिया (आसाम), मदरास, कटक, रंगून, वेसिन, मांडले (बरमा), बंबई, लखनऊ ब्रांच—२ श्रीराम रोड, लखनऊ आदि।

ब्रांच भारतवर्ष में सर्वत्र और बरमा में

मृतसंजीवनी सुरा (गवर्नमेंट से लाइसेंससुदा) भारतवर्ष और बरमा में हमारी सभी ब्रांचों में मिलती है।

अध्यक्षगण—श्रीमथुरामोहन, लालमोहन, फणींद्रमोहन मुखोपाध्याय चक्रवर्ती।

प्रोप्राइटर्स —श्रीमथुरामोहन मुखोपाध्याय चक्रवर्ती बी०ए०

हिंदू केमिस्ट और फ़िज़िशियन

पत्र और मनीऑर्डर आदि मथुरा बाबू मैनेजिंग प्रोप्राइटर के नाम भेजिए

आयुर्वेदीय चिकित्सा-प्रणाली-संबलित सूचीपत्र मुफ़्त मिलता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृष्ठ

७. भाई (एकांकी नाटक)—[लेखिका, श्रीमती रत्नकुमारी एम्० ए० ... १३०

८. झूठे विज्ञापन—[लेखक, श्रीयुत पृथ्वीपालसिंह एम्० ए० (अमेरिका), जे० डी० (लंदन), एल्-एल्० बी० (लखनऊ) १३६

९. सीढ़ियाँ (कविता)—[लेखक, श्री-श्रीनिधि द्विवेदी १४०

पृष्ठ

१०. मेरी राजगृह-यात्रा (सचित्र, भ्रमण)—[लेखक, साहित्य-रत्न लक्ष्मीनारायण टंडन 'प्रेमी' एम्० ए० ... ... १४१

११. प्रोफ़ेसर भोलानाथसिंह डी० एस्-सी० (सचित्र, जीवनी)—[लेखक, श्रीचक्रधर 'हंस' नौटियाल एम्० ए०, एल्० टी०... १४७

१२. गद्य-काव्य—[लेखिका, कुमारी विद्या भार्गव १५१

पेशाब के भयंकर दर्दों के लिये

एक नई और आश्चर्यजनक ईजाद ! याने—

सूज़ाक (गनोरिया) की हुक्मी दवा

डॉ० जसानी का

जगत्-विख्यात

'गोनोकिलर'

रजिस्टर्ड

पेशाब और धातु के दर्दों को मार हटाने व निर्मूल करने के लिये गोनोकिलर एक ऐसी ही आश्चर्यजनक दवा है, जिसका इस्तेमाल करने से रोगी को कभी निराश होना ही नहीं पड़ता।

चाहे जैसा पुराना या नया प्रमेह या सूज़ाक, पेशाब में मवाद आना, जलन होना, पेशाब रुक-रुककर या बूँद-बूँद आना, मूत्राशय के अंदर घाव या सूजन का होना, स्वप्न-दोष तथा धातुक्षीणता और औरतों तथा मर्दों की इस क़िस्म की तमाम भयंकर बीमारियों को "गोनोकिलर" जड़ से नष्ट कर देता है।

नक़ली से सावधान !
खरीदने से पहले
दवा का नाम गोनोकिलर
और मुर्ग़ा-छाप सीलबंद
पैकेट देख लीजिए

मूल्य ५० गोलियों की शीशी का ३) रु०, वी० पी० डाक-व्यय आठ आना अलग।

एकमात्र बनानेवाले—डॉ० डी० एन्० जसानी S. L. गिरगाँव, बैक रोड, बंबई नं० ४

लखनऊ-स्टाकिस्ट—किंग मेडिकल हॉल, अमीनाबाद-पार्क

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

	पृष्ठ
१३. श्रीरामजीप्रीत्यर्थं—[लेखक, श्रीयुत गुलाबराय एम्० ए०	१५२
१४. विश्वेश्वर-स्मृति—[लेखक, साहित्याचार्य श्रीपं० विश्वेश्वरनाथ रेउ ...	१५६
१५. अनाहूत (कविता)—[लेखक, श्रीयुत आरसीप्रसादसिंह	१६४
१६. चयन—[लेखकगण, श्रीयुत बुद्धिसागर वर्मा विशारद, बी० ए०, एल्० टी०, श्रीयुत कन्हैयासिंह 'काँधा', साहित्यभूषण शिवदुलारे शर्मा 'शिव' एच्० एम्० बी०, डॉ० जसवंतसिंह एम्० ए०, बी० एस्-सी०, एन्० डी० (लंदन), श्रीयुत सुरेशचंद्र अग्रवाल, श्रीयुत 'मित्तल', श्रीयुत 'चचन', श्रीयुत जगदीशचंद्र सोलंकी 'प्रेमी' और श्रीयुत गंगाप्रसाद 'कौशल'	१६६
१७. परिचय—[लेखक, श्रीयुत चिरंजीलाल 'एकाकी' और साहित्याचार्य श्रीपं० जितेंद्र भारतीय शास्त्री ...	१७६
१८. कुसुम	१८१
१९. धारा (सचित्र, संपादकीय विचार) ...	१८२

हिंदी की सुंदर, सचित्र मासिक पत्रिका

वीणा

संपादक

श्रीकालिकाप्रसाद दीक्षित 'कुसुमाकर'

प्रकाशक

श्रीमध्य-भारत-हिंदी-साहित्य-समिति

डॉक्टर बाबूराम सक्सेना एम्० ए०, डी० लिट्०, प्रधान मंत्री हिंदी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग—'वीणा' हिंदी की उच्च कोटि की पत्रिका है, और मातृभाषा और साहित्य की प्रचुर सेवा कर रही है।

बृहद् विशेषांक

वार्षिक मूल्य ४) **ग्राम-सुधार-अंक** एक प्रति ।=)

नमूने का अंक फ्री नहीं भेजा जाता।

व्यवस्थापक—'वीणा', इंदौर

इनाम १००)

सर्वार्थसिद्ध-यंत्र—जिसे आप चाहते हैं, वह पत्थर-हृदय क्यों न हो, इस यंत्र की अलौकिक शक्ति से आपसे मिलने चली आएगी। इसे धारण करने से व्यापार में लाभ, मुक़द्दमा, कुश्ती, लाटरी में जीत, परीक्षा में सफलता, नवग्रह की शांति, नौकरी की तरक़्क़ी और सौभाग्यवान् होते हैं। मूल्य ताँबा १।), चाँदी २), सोना ५), कोकशास्त्र का मूल्य २।)

पता—सर्वार्थसिद्ध-आश्रम, नं० २२, पो० मिरचाईगंज, पटना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्र-सूची

पृष्ठ

(क) रंगीन

१. बलि-नृत्य—[चित्रकार, श्रीप्रद्योतकुमार सेनापति १०१

(ख) सादे

२. नालंद-विश्वविद्यालय का एक भग्नावशेष १४२

३. नालंद-म्यूज़ियम (देवपालदेव के ताम्र-पट्ट की मुद्रा) १४३

४. नालंद-म्यूज़ियम (महाराज शर्ववर्मा की मिट्टी की मुद्रा) १४३

पृष्ठ

५. बिंबसार-रोड—वैभारगिरि (राजगृह) १४४

६. सतपर्णी-गुफा—वैभारगिरि पर (राजगृह) १४५

७. प्रोफ़ेसर भोलानाथसिंह डी० एस्-सी० १४७

८. श्रीयुत गुलाबराय एम्० ए० ... १५२

९. श्रीयुत आरसीप्रसादसिंह १६४

१०. डॉक्टर जसवंतसिंह एन्० ए०, बी० एस्-सी०, एन्० डी० (लंदन) ... १७०

११. श्रीगुरुगोविंदसिंहजी १७१

१२. श्रीसुभाषचंद्र बोस १८४

श्वेतकुष्ठ की अद्भुत दवा

प्रिय सज्जनो ! औरों की भाँति मैं अधिक प्रशंसा करना नहीं चाहता। यदि इसके ३ दिन के लेप से सफ़ेदी के दाग़ जड़ से आराम न हों, तो मूल्य वापस। जो चाहें ⌐) का टिकट भेजकर शर्त लिखा लें। मूल्य १।); गलित कुष्ठ एक माह में आराम। मूल्य ४)

बवासीर १५ दिन में आराम। मूल्य २)

बाल काला तैल—इस तैल से बाल का पकना रुककर पका बाल जड़ से काला पैदा होता है। यदि स्थायी काला न रहे, तो दूना दाम वापस की शर्त। बाल कम पका हो १।), चौथाई से अधिक ३), कुल पका हो, तो ४।) का तैल मँगा लें।

पता—हितैषी औषधालय, नं० ७७, हब्बीपुर, पो० एकंगरसराय (पटना), इंडिया

४० से ऊपर उम्रवालो ! इसे पढ़ो !!

अब बूढ़ा होने की चिंता छोड़ दो, नई बूटी सेवन करो। यह बुढ़ापे का एक-एक चिह्न दूर कर आपको जवान-सा बना देगी। क़ब्ज़ दूर कर, पेट सुधारकर काम-शक्ति बढ़ा देगी। आँख की रोशनी तेज़कर, बाल का पकना रोककर पका बाल खूँटी से काला पैदा करेगी। झुर्रियाँ नष्ट कर, दाँत को दृढ़ बना अंतिम बुढ़ापे में बहरा न होने देगी। दाम ५)। झूठा होने से १०००) देने की शर्त।

पता—जड़ी-बूटी-दवाख़ाना, पो० बिहार नरसरी (दरभंगा)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिश्रबंधु (रावराजा डॉक्टर श्यामविहारी मिश्र एम्०ए०, डी० लिट्० तथा रायबहादुर पंडित शुकदेवविहारी मिश्र बी०ए०)

की

अमर कृतियाँ अवश्य पढ़िए

(१) हिंदी-साहित्य का इतिहास—पृष्ठ ३७०; मूल्य अजिल्द १॥), सजिल्द २)। इस पुस्तक में न केवल हिंदी-साहित्य का पूर्ण तथा अप-टु-डेट वर्णन है, वरन् भारतीय धार्मिक, सामाजिक तथा राजनीतिक विकास का भी मनोरंजक इतिहास सूक्ष्मरीत्या कथित है। इसमें कई बड़े ही नवीन विचार मुसलमान-पूर्ववाले भारत के संबंध में मिलेंगे। पुस्तक पढ़ने ही योग्य है।

		सजिल्द	अजिल्द	संस्करण
(२) मिश्रबंधु-विनोद—	प्रथम भाग	२॥)	२)	चौथा
इस ग्रंथ के लेखक ज्येष्ठ	द्वितीय भाग	३॥)	३)	तीसरा
बंधु पंडित गणेशविहारीजी मिश्र	तृतीय भाग	२॥)	२)	,,
भी थे। विविध भागों के विविध	चतुर्थ भाग	४॥)	४)	पहला

संस्करण हुए हैं। चौथा भाग सं० १९९१ में ही छपा था।

सब भागों में मिलाकर ४,५०० से अधिक कवियों तथा १२,००० से अधिक ग्रंथों के वर्णन हैं। ग्रंथ आधुनिक तथा नवीन खोजों का भांडार है। किसी भी कवि के विषय में कुछ लिखने के लिये इसकी खोजें आवश्यक होंगी।

(३) हिंदी-नवरत्न (सचित्र)—मूल्य अजिल्द ४॥), सजिल्द ५), ११ चित्र हैं, जिनमें कई रंगीन भी हैं। छठा संस्करण निकल रहा है।

इसमें हिंदी के सर्वोत्कृष्ट दस कवियों के समालोचना-गर्भित पूर्ण विवरण हैं। पृष्ठ-संख्या प्रायः ७५० है। ग्रंथ में पांडित्य का ख़ासा विकास तो है ही, वर्ण्य विषयों से पूर्ण सहृदयता के कारण विवरण भी बड़े ही हृदयहारी और भड़कीले बन पड़े हैं। उदाहरण इस प्रचुरता से प्रस्तुत हैं कि कवियों की रचनाओं के चित्र सामने खड़े हो जाते हैं। ग्रंथ कई विश्वविद्यालयों में एम्० ए० की पाठ्य पुस्तक है, तथा इतर कई परीक्षाओं में भी सत्कारित है। ग्रंथ पढ़ने ही योग्य है।

(४) संक्षिप्त हिंदी-नवरत्न—मूल्य अजिल्द १), सजिल्द १॥); द्वितीय संस्करण। पृष्ठ-संख्या २०० से अधिक। हिंदी-नवरत्न बहुत बड़ा ग्रंथ है। इसीलिये छोटे आकार में उसका स्वाद देने के विचार से यह पुस्तक बनी है।

(५) पद्य-पुष्पांजलि—पृष्ठ-संख्या २४५; सजिल्द २), अजिल्द मूल्य १॥)। इसमें व्रजभाषा तथा खड़ी बोली के अमर पद्यमय साहित्य के मुख्य भाग एकत्र किए गए हैं, जिसमें पाठक थोड़े में कवियों की विस्तृत रचनाओं की बानगी पा सकें। इसे एक प्रकार से 'मिश्रबंधु-सुधा' समझना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(६) पूर्व-भारत नाटक—चतुर्थ संस्करण; मूल्य अजिल्द ॥।=), सजिल्द १।=) । यह एक मौलिक नाटक है, जिसमें महाभारत की कथा का रूप विराट-पर्व-पर्यंत आया है । ग्रंथ पंजाब में कोर्स-बुक भी रह चुका है । बड़ा ही मनोहर नाटक है । इन्हीं का उत्तर-भारत नाटक भी हमारे यहाँ से मिल सकता है ।

(७) शिवाजी नाटक—प्रथम संस्करण ; मूल्य अजिल्द १), सजिल्द १॥) । यह अभी हाल ही में छपा है । इसमें छत्रपति शिवाजी की अलौकिक जीवनी की हृदयग्राही कथा उत्तम प्रकार से कही गई है । ग्रंथ नाटकत्व से कमनीय और कवित्व-शक्ति से सौरभित है, जिसे एक बार उठा लेने से विना अंत-पर्यंत पढ़े चित्त न मानेगा । मिश्रबंधु-कृत 'ईशानवर्मन'-नामक ऐतिहासिक नाटक भी हमारे यहाँ से मिल सकता है ।

(८) जापान का इतिहास—मूल्य अजिल्द ॥।=), सजिल्द १) । यह ग्रंथ बड़ी सहृदयता-पूर्वक जापान का विवरण थोड़े में देता है ।

(९) धर्म-तत्त्व—इसमें १२२ पृष्ठों में हिंदू-धर्म का ऐतिहासिक तथा इतर कथन थोड़े में किया गया है । तीन अध्याय हैं, जिनमें पहले में तो विकास का हृदयग्राही कथन है, दूसरे में हिंदू-धर्म के नवयुगों का और तीसरे में दशोपनिषदों तथा गीता से चुना हुआ मूल और अनुवाद-सहित १२० वाक्यों द्वारा हिंदू-धर्म का शुद्ध रूप दिया हुआ है । ग्रंथ पढ़ने से हिंदू-मत की महत्ता, वास्तविकता और सत्यता पर आँखें खुल जाती हैं । मूल्य ॥)

(१०) देव-सुधा—मूल्य अजिल्द ॥), सजिल्द १) । इसमें प्रसिद्ध महाकवि 'देव' के २७१ उत्तमोत्तम छंद पूर्ण अर्थों के साथ चुने गए हैं । मिश्रबंधु का दावा है कि यह व्रजभाषा का सर्वोत्कृष्ट ग्रंथ है ।

(११) बिहारी-सुधा—मूल्य अजिल्द ॥), सजिल्द १) । इसमें सुकवि बिहारीलाल के २७० उत्तमोत्तम दोहों का संग्रह है, जिसमें अर्थों के साथ मुख्य काव्यांग भी दिखला दिए गए हैं । देव-सुधा और बिहारी-सुधा को मिलाकर पढ़ने से इन दोनो महाकवियों के अपेक्षाकृत साहित्योत्कर्ष पर भी विचार करने का मौक़ा मिलता है । ये दोनो ग्रंथ पढ़ने ही योग्य हैं ।

(१२) कवि-कुल-कंठाभरण—ग्रंथ कनिष्ठ मिश्रबंधु तथा ज्येष्ठ भ्राता पं० गणेशविहारीजी मिश्र के सुपुत्र पं० प्रतापनारायण मिश्र ने मिलकर बनाया है । दूलह-कृत 'कवि-कुल-कंठाभरण' की अनमोल टीका है । इसे पढ़ने से विना गुरु-मुख की सहायता के अलंकार-सा कठिन विषय कोई सुगमता-पूर्वक जान सकता है । मूल्य अजिल्द ॥), सजिल्द १) । ग्रंथ अलंकार कंठस्थ करने के लिये अच्छा समझा जाता है ।

मिश्रबंधुओं की अन्य सब कृतियाँ भी हमसे ही मँगाइए ।

मैनेजर गंगा-ग्रंथागार, ३६, लाटूश रोड, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

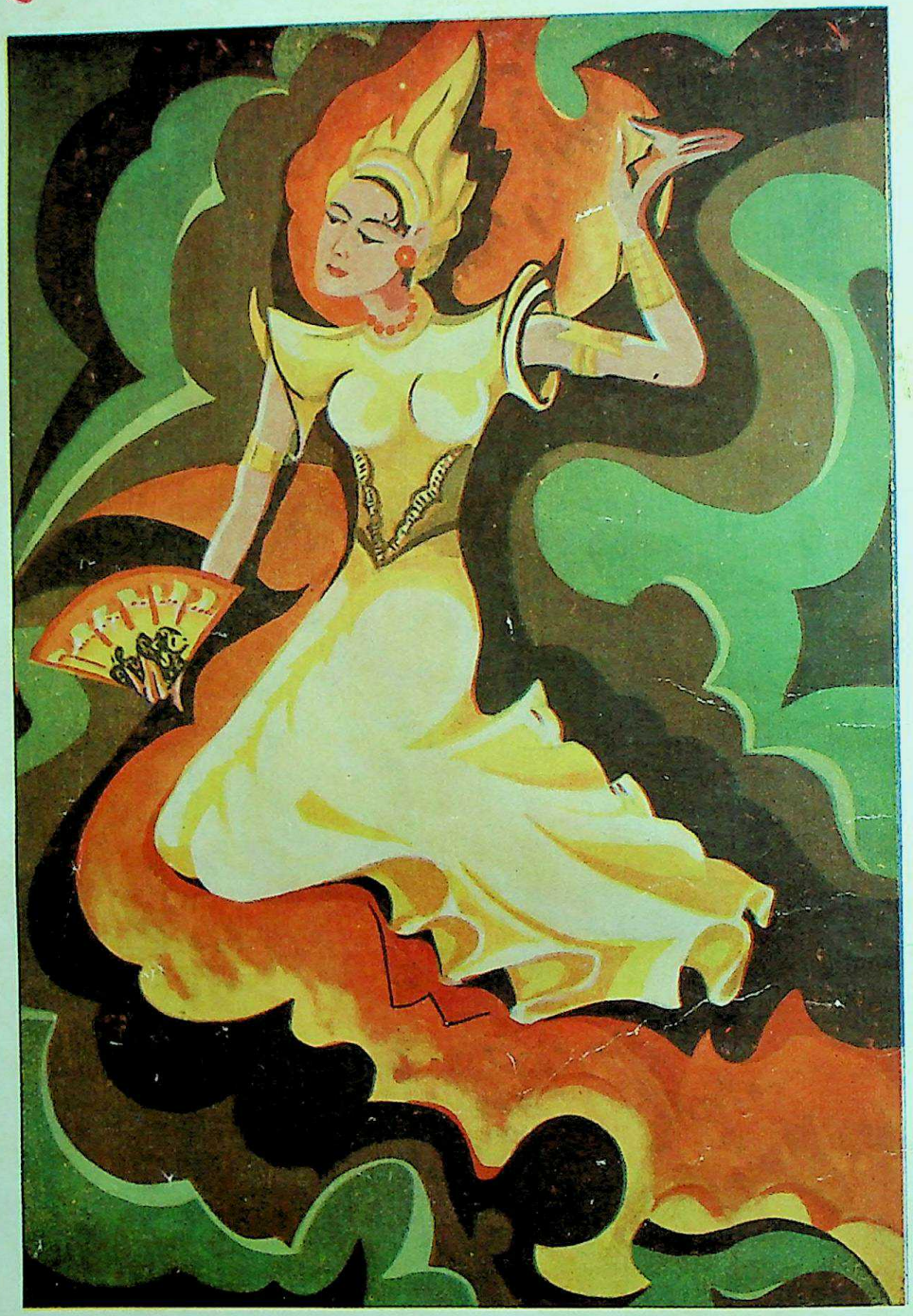

बलि-नृत्य

[चित्रकार—श्रीप्रद्योतकुमार सेनापति]

बलि-बाला के नाच पै अगिन-सिखा बलि जायँ ;
भूत-प्रेत भयभीत ह्वै धूम छिपत टलि जायँ।

गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Approved by the Directors of Public Instruction in U. P., C. P., C. I., Bombay, Bihar, Punjab & Sind.

वार्षिक मूल्य प्रतिसंख्या
राजसंस्करण १२) १)
साधारण संस्करण ६) ॥)
प्रकाशक—
गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस
लखनऊ

वर्ष १४ } फाल्गुन, ३१८ तुलसी-संवत् (१९९७ वि०)— { संख्या २
खंड २ } मार्च, १९४१ { पूर्ण संख्या १७६

बुलाता वल्लभ बाँह पसार

[श्रीयुत 'वचनेश'जी]

बुलाता वल्लभ बाँह पसार।
जाती किधर चली पगली तू, आती किधर पुकार?
रंगमहल के मणि-खंभे क्या गहती बारंबार?
कहाँ बाँह वे प्रेम-मृदुल, यह कहाँ कठिन जड़ भार!
इतना भी न परख पाती, क्या चौंधी चमक निहार?
इससे तो है भला मंद-मति, थिर रह तज व्यापार;
वह 'वचनेश' अशक्त तुझे लख दौड़ करेंगे प्यार।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझे भूल ही जाओ

[श्रीयुत चंद्रप्रकाश वर्मा 'चंद्र' बी० ए० (ऑनर्स)]

मुझे भूल ही जाओ, अब तुम मुझे भूल ही जाओ।

(१)

मेघ-महल में छिपा चंद्र कर हाय ! हृदय की चोरी;
विकल बनी रह गई भूमि पर दर्शन-हेतु चकोरी।
रही आदि से कल - संग सरि कैसी फूली-फूली,
किंतु अंत में समा गई सागर में तट को भूली।
इस प्रवंचना की दुनिया में तुम मत प्यार निभाओ;
मुझे भूल ही जाओ, अब तुम मुझे भूल ही जाओ।

(२)

सत्य-सदृश यह काया मेरी दूर रहेगी तुमसे;
मेरी सुधि-छाया असत्य जो, सत्य लगेगी भ्रम से।
पर कब तक छलना से भोली, मन तुम बहलाओगी;
भेद खुलेगा जब, सच मानो, दुगुना दुख पाओगी।
है संयोग असत्य, विरह है सत्य, उसे अपनाओ।
मुझे भूल ही जाओ, अब तुम मुझे भूल ही जाओ।

(३)

शूल फूल के पास, किंतु इन दोनो में अंतर है;
एक हार बन उर पर खेले, एक बेधता उर है।
प्यार और परिचय, ये दोनो एक नहीं होते हैं;
परिचय में हँसते सदैव हम, प्यार - बीच रोते हैं।
परिचय से संतोष मुझे है, तुम मन को समझाओ।
मुझे भूल ही जाओ, अब तुम मुझे भूल ही जाओ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरा सत्य

[श्रीयुत 'अरुण' बी० ए०]

(१)

नौकर ने आकर कहा—"कोई आपसे मिलने आई हैं।"

"बाहर कमरे में बिठाओ, मैं अभी आई।"

नौकर चला गया।

लेडी-डॉक्टर मिसेज़ शर्मा ने जल्दी-जल्दी कपड़े बदले, आईने के पास जाकर चेहरे पर हल्का-हल्का पाउडर लगाया, ब्रश से बाल ठीक किए, पीछे हटकर एक बार अपना रूप देखने की चेष्टा की, साड़ी का आँचल ठीक किया, और परदा उठाकर बाहर ड्राइंग-रूम में दाख़िल हो गईं।

"नमस्ते।"

मिसेज़ शर्मा ने दोनों हाथ जोड़कर उत्तर दिया—"नमस्ते। तशरीफ़ रखिए।"

उन्होंने देखा—एक अप-टु-डेट युवती, १८-१९ साल से अधिक न होगी, रंग गोरा, चेहरे पर सौंदर्य और इकहरा बदन, हल्के नीले रंग की रेशमी साड़ी पहने, मुस्कराती हुई सामने के सोफ़े पर बैठने लगी।

मिसेज़ शर्मा ने बराबर के सोफ़े पर बैठते हुए कहा—"कहिए, कैसे आना हुआ आपका? जहाँ तक मेरा ख़याल है, आप पहले तो कभी नहीं आईं थीं यहाँ?"

युवती ने अपनी सहज मुस्कराहट स्थिर रखते हुए उत्तर दिया—"जी नहीं, मैं पहली मर्तबा आपके पास आई हूँ।"

मिसेज़ शर्मा ने अपने हाथ पर बँधी हुई रिस्ट-वाच की ओर देखते हुए कहा—"कहिए, मैं आपकी क्या सेवा कर सकती हूँ?"

युवती बोली—"सेवा नहीं, उसे उपकार कहना पड़ेगा श्रीमतीजी! मैं बड़े संकट में पड़कर आपसे सहायता माँगने आई हूँ।"

मिसेज़ शर्मा की दृष्टि चिक से बाहर, बरामदे में खड़ी हुई नई सैलून कॉर पर पड़ी। उन्होंने एक संतोष की साँस ली। रुपए-पैसे की बात न होगी फिर।

युवती ने फिर कहा—"आपकी बड़ी तारीफ़ सुनी है। लखनऊ में आपकी टक्कर की कोई लेडी-डॉक्टर नहीं। मैंने सोचा, आपके पास जाने पर मुझे अवश्य सफलता होगी। मेरा केस·····ऐसा ही·····"

बात काटकर मिसेज़ शर्मा ने पूछा—"आपका शुभ नाम?"

"सरितादेवी। मैं यहाँ के एडवर्ड-कॉलेज में बी० ए० फ़र्स्ट इयर में पढ़ती हूँ। अभी पिछले महीने मैंने नाम लिखाया है।"

"आपका निवास-स्थान?"

"जी, मैं लाहौर की रहनेवाली हूँ।"

"लाहौर?"

"जी हाँ।"

"लाहौर में किस जगह?"

"बीडन रोड पर हमारी कोठी है। मेरे पिता सरदार बहादुर जोगेंद्रसिंह वहीं प्रैक्टिस करते हैं।"

"बीडन रोड पर आपकी कोठी है?"

"जी हाँ—क्यों?"

मिसेज़ शर्मा किसी गहरे सोच में पड़ गईं। अपने प्रश्न का उत्तर उन्होंने सुना या नहीं, नहीं कहा जा सकता। उनके माथे पर शिकन आ गई, मगर तुरंत ही उन्होंने अपने को सँभाल लिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पैर के सैंडल में फँसती हुई अपनी साड़ी को आहिस्ता से छुड़ाते हुए वह बोलीं—"हाँ, तो—मिस सरितादेवी !—मिस ही कहूँ न आपको ? अभी शादी तो न हुई होगी आपकी ? पंजाबी खत्री हैं शायद आप ?"

हँसते हुए युवती ने कहा—"ख़ूब आपने अनुमान लगा लिया, और बिलकुल सही-सही।"

मिसेज़ शर्मा मुस्कराईं।

युवती ने उनकी ओर देखते हुए धीरे से कहा—"आपका अनुभव और अध्ययन भी ज़बरदस्त है मिसेज़ शर्मा !"

"जी हाँ, मेरे पेशे की तासीर ही ऐसी है। अच्छा मिस सरिता, कृपा करके आप जल्द ही अपनी बात ख़त्म करें, क्योंकि नौ बजे मुझे हॉस्पिटल जाना है।"

युवती ने कुछ सँभलते हुए उत्तर दिया—"मैं आपका कुछ ज़्यादा वक्त लेना चाहती हूँ। कोई समय आप निश्चित करें, जब मैं फिर आपकी सेवा में उपस्थित हो सकूँ, मेरी बात जल्दी ख़त्म होने की नहीं मिसेज़ शर्मा !"

"क्यों ? कम-से-कम आपके मुँह से आपकी बीमारी का पूरा हाल ही सुन लेती अभी, डॉक्टरी परीक्षा और मुनासिब तसदीक़ बाद का काम रह जाता।"

वह कुछ व्यग्रता से बोली—"जी नहीं, मुझे कुछ अधिक समय लेना है आपका। आपको जब भी अवकाश हो, मुझे बतलाएँ, मैं आ जाऊँगी।"

मिसेज़ शर्मा ने व्यावसायिक ढंग पर मौन धारण कर लिया। अभ्यस्त डॉक्टरों की युक्तियाँ वह जानती थीं।

थोड़ा ठहरकर मिस सरिता ने कहा—"आपके समय का पूरा-पूरा मूल्य आपको मिलेगा, पैसे की ज़रा भी चिंता न कीजिएगा।"

उसने अपने हाथ का बेग खोलना शुरू किया।

मिसेज़ शर्मा झट से बोल उठीं—"जी नहीं, पैसे की कोई बात नहीं। दिक़्क़त यह है कि मुझे अवकाश बहुत कम मिलता है। सुबह-शाम शहर में दो-चार केस देखने पड़ते हैं। दिन का सारा वक्त हॉस्पिटल में ही लग जाता है। आज तो कहिए, मैं ज़रा देर तक सो गई, इसलिये आपसे भेंट भी हो सकी, वरना अब तक तो मुझे शहर के केसेज़ से ही फ़ुरसत पाना मुश्किल हो जाता है।"

मिसेज़ शर्मा बातें कर रही थीं, मगर उनकी निगाह मिस सरिता के हाथ के पर्स पर थी, जो खुल रहा था।

मिस सरिता ने सौ रुपए का एक नोट मिसेज़ शर्मा के आगे बढ़ाते हुए कहा—"आपकी फ़ीस।"

मिसेज़ शर्मा ने ललचाई हुई आँखों से उस नोट को देखा, और बोलीं—"वाह-वाह ! अभी फ़ीस काहे की मिस सरिता ! आप मुझे शर्मिंदा न करें।"

मिस सरिता ने अपना हाथ हिलाते हुए कहा—"इसमें शर्मिंदा करने की कौन-सी बात है ! आपको फ़ीस लेनी ही होगी इस वक़्त। कम-से-कम मेरी ख़ातिर।"

"मगर मेरे पास नोट के रुपए तो इस समय..."

"..... .....तो रख लीजिए इसे, फिर ले लूँगी रुपए। आप भी कैसी बातें मन में लाती हैं।"

मिसेज़ शर्मा ने नोट ले लिया, और बोलीं—"आपको अगर दिक़्क़त न हो, तो आज शाम का खाना मेरे ही साथ रहा। फिर रात में मेरी आपकी बातें भी ठीक से हो सकेंगी।"

मिस सरिता का चेहरा खिल उठा—"अच्छी बात है। मैं आ जाऊँगी, मुझे कोई दिक़्क़त न होगी। भला कितने बजे ?"

"यही—कोई सात-साढ़े सात तक।"

"मंज़ूर—सहर्ष।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोफ़े से उठते हुए मिसेज़ शर्मा ने कहा—"आप विश्वास रक्खें, जो कुछ मेरे योग्य सेवा होगी, मैं अवश्य कर सकूँगी मिस सरिता! मुझे आज आपसे मिलकर बेहद ख़ुशी हुई।"

मिस सरिता ने उठकर मिसेज़ शर्मा से हाथ मिलाते हुए कहा—"अनेक धन्यवाद मिसेज़ शर्मा! मैं शाम को निश्चित समय पर आ जाऊँगी। अच्छा, नमस्ते।"

"नमस्ते।"

अल्हड़पन से उछलती-कूदती मिस सरिता मोटर पर जा बैठी। ड्राइवर ने मोटर स्टार्ट की, हॉर्न दिया, सड़क पर आकर मोटर सीधी दाहनी तरफ़ चल दी।

मिसेज़ शर्मा ने अंदर कमरे में आकर अपना कैश-बक्स खोला, और नोट रखकर उसका ताला बंद कर दिया। फिर आवाज़ दी—"शिब्बू! ओ शिब्बू!"

"आया सरकार!" आवाज़ आई।

रसोइया नंगे बदन सामने खड़ा था। मिसेज़ शर्मा ने कहा—"आज शाम को एक मेहमान के खाने का इंतज़ाम ठीक रखना—ख़ूब क़ायदे से। दो-चार चीज़ें नई पका लेना, समझा।"

सिर हिलाते हुए शिब्बू बोला—"जी सरकार! क्या बाबूजी आनेवाले हैं?"

किंचित् क्रोध से उसकी ओर देखकर मिसेज़ शर्मा ने कहा—"कोई आए, तुझसे मतलब? जा, भाग यहाँ से।"

शिब्बू अपने ओंठों की मुस्कराहट दबाता हुआ भागा वहाँ से।

मिसेज़ शर्मा खड़े-खड़े थोड़ी देर कुछ सोचती रहीं, फिर पलँग पर जा लेटीं। रेशमी झालरदार पाननुमा तकिया उठाकर सीने पर रख लिया। उनकी उँगलियाँ उसी पर खेलने लगीं। उन्होंने आँखें बंद कर लीं। किसी गहरे सोच की रेखा उनके माथे पर नाचने लगी। चिंता का वह प्रवाह उनके मन को किधर से किधर लिए जा रहा था, कौन जाने।

घड़ी ने टन्-टन् करके नौ बजाए। मिसेज़ शर्मा ने आँखें खोलीं। आँखों पर हाथ फेरकर उठ खड़ी हुईं। हॉस्पिटल जाने का समय हो चुका था।

(२)

उसी रात को—

सड़क पर गश्तवाले सिपाहियों की "जागते रहो।" की आवाज़ें बार-बार गूँज उठती थीं।

आधी रात का वह संकेत सन्नाटे को तोड़ने का प्रयत्न करता था, परंतु उसी में बार-बार खो जाता था।

भीतर के कमरे में—

एक कुरसी पर मिसेज़ शर्मा सिर नीचा किए किसी गंभीर चिंता में निमग्न थीं।

सामने ही दूसरी कुरसी पर बैठी हुई मिस सरिता उनकी ओर देख रही थी। उसकी आँखों में आँसू थे, जो चुपचाप उसके गुलाबी गालों पर ढुलक आए थे।

दोनो मौन—शांत और गंभीर।

कमरे में हरे रंग की धीमी रोशनी बिजली के शेडदार बल्ब से निकलकर मिस सरिता के चेहरे पर पड़ रही थी।

कुछ देर बाद—

मिस सरिता ने भर्राई हुई करुण वाणी में कहा—"अब आपने सब कुछ सुन लिया, जान लिया। मेरी जीवनी के उस पृष्ठ का, जो संसार में किसी के आगे खुल न सकता था, एक-एक अक्षर आपने अपनी सहानुभूति और सहायता के विश्वास पर मेरे मुँह से सुन लिया। भूल इंसान से ही होती है। कौन ग़लती नहीं करता? मैंने भी ग़लती की—आप उसे सुधार सकेंगी?"

मिसेज़ शर्मा ने सिर ऊपर उठाया। मिस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरिता की आँखों से उनकी आँखें जा मिलीं। उन्होंने कहा—"उस ग़लती की ज़िम्मेदारी अकेले आप पर ही नहीं है मिस सरिता! कोई और भी तो अपराधी है, यह आपको स्वीकार करना ही पड़ेगा, और वह अपराधी एक पुरुष है, जिसकी कायरता, स्वार्थपरता और नीचता का घातक परिणाम आपको भोगना पड़ रहा है।"

कुछ घबराकर मिस सरिता ने उत्तर दिया—"आप उन्हें कुछ न कहें, उनके लिये ऐसे शब्दों का प्रयोग न करें। वह जैसे भी हों, मेरे हैं। मेरे प्राण भी चले जायँ, तो भी उनके नाम पर धब्बा लगाना मैं नहीं चाहती। इसीलिये सब कुछ कहने के पहले मैंने आपसे उनका नाम न पूछने की शपथ ले ली थी।"

मिसेज़ शर्मा फिर गंभीर होकर कुछ सोचने लगीं।

मिस सरिता का हृदय धड़क रहा था। टेबिल पर रक्खा हुआ पानी का आधा भरा गिलास उठाकर उसने एक घूँट पानी पिया, फिर उसे यथास्थान रख दिया। वह बोली—"मिसेज़ शर्मा! प्रेम का नाम सब लेते हैं, मगर उसकी सीमा अनुभव करनेवाला ही जानता है। जानना ही नहीं, उसका समझना भी आसान नहीं होता। आप भी स्त्री हैं—आपके भी हृदय है, उस हृदय पर भी किसी-न-किसी का अधिकार है। क्या वह हृदय भी अधिकारी के विरुद्ध आज तक कभी आपसे कुछ कह पाया है? अधिकारी के न्याय-अन्याय, अच्छाई-बुराई, गुण-दोष की विवेचना में—उस विवेचना की कल्पना-मात्र में आपने उसी हृदय का अनायास कंपन अनुभव किया है? एक दर्द, एक न मिटनेवाली टीस, एक तीखा दंशन-सा होने लगता है जब?"

मिस सरिता के प्रश्नों का कोई उत्तर न मिला। मानव-स्वर मानो मौनता में खो-सा गया। दीवार पर लगी हुई क्लॉक कह रही थी—"टिक्-टिक्-टिक्-टिक्।"

उसे संचालित करनेवाला हृदय, उसका पेंडुलम्, धीरे-धीरे अपनी निश्चित गति से हिल रहा था। एक बार उस सन्नाटे को भेदता हुआ शब्द हुआ—"टन्……"

मिसेज़ शर्मा ने घड़ी की ओर देखकर कहा—"ओफ़्! साढ़े बारह बज गए।"

उन्होंने अपनी भुजाएँ समेटकर एक बार अँगड़ाई ली। कुरसी पर कुछ सँभलकर बैठते हुए कहा—"बड़ी रात बीत गई मिस सरिता! आपके होस्टल का फाटक तो बंद हो जाता होगा जल्दी ही?"

मिस सरिता ने अपने हाथ का रूमाल मुँह से लगाते हुए धीमे स्वर में कहा—"जी हाँ, दस बजे के बाद बंद हो जाता है।"

"फिर? आपकी तलाश होगी वहाँ?"

"नहीं। मैं जानती थी, आपके पास काफ़ी वक़्त लगेगा, इसलिये लेडी-सुपरिंटेंडेंट से छुट्टी ले ली थी।"

"रात-भर की?"

"जी हाँ। मैंने कह दिया था कि मेरी एक रिश्तेदार बाहर से आई हुई हैं, उनके यहाँ जाना है।"

"ख़ूब बहाना बताया आपने!"

"फिर आती कैसे?"

"मैंने यों ही कहा मिस सरिता! कोई बात नहीं। आपका ही घर है यह भी। आप यहीं आराम करें। वह दूसरा पलँग बिछा है। हाँ, आपका शोफ़र?"

"उहँ, वह सो रहेगा कॉर में—गरमी के तो दिन हैं।"

"अरे नहीं, उसे शिब्बू के कमरे में सुला दीजिए, काफ़ी जगह है वहाँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या करना है ? सोने दीजिए कॉर में। तीन घंटे तो रात रह गई अब। वह आदी है कॉर में सोने का। बाबूजी के साथ दौरे पर जाता है, तो कॉर में ही सो लेता है। कैंप में, कहता है, उसे नींद ही नहीं आती।"

"अजीब आदमी है।"

"जी हाँ। बाबूजी के पास बचपन से नौकर है, बाबूजी बड़ा एतबार करते हैं उसका। इसी-लिये तो लखनऊ मेरे साथ भेज दिया, नई गाड़ी ले दी, और यहाँ एक मकान लेकर रख दिया, मेरे होस्टल से बिलकुल क़रीब।"

मिसेज़ शर्मा उठ खड़ी हुईं, और बोलीं—"तो आप अब आराम करेंगी न ? मुझे तो बड़ी नींद आ रही है।"

मिस सरिता ने भी खड़े होकर कहा—"ज़रूर आ रही होगी – रात भी तो बहुत बीत गई। लेकिन मेरी बात का उत्तर मुझे नहीं मिला आपसे ?"

मिसेज़ शर्मा ने आगे बढ़कर मिस सरिता की पीठ पर हाथ फेरते हुए कहा—"घबराइए नहीं—धीरज रखिए। आपकी बात का उत्तर देना इतना सरल नहीं, जितना आप समझती हैं।"

"क्यों ? उसमें कठिनाई क्या है ?"

"कठिनाई ? आप मेरी जगह पर होतीं, तो उस कठिनाई का अनुभव कर सकती थीं। मैं आपकी बात पर ग़ौर करती रही, परंतु....."

"परंतु क्या ?"

"अभी तक उस समस्या को सुलझाने का रास्ता मेरी समझ में नहीं आया। मिस सरिता ! आज आप आराम करें, कल मैं आपको अपना निर्णय बता सकूँगी।"

"कल ?"

"हाँ, कल ही—मुझे काफ़ी सोचना पड़ेगा।"

"परंतु कल अवश्य – वचन दीजिए ?"

"उतावलेपन से आप काम न लें मुझसे मिस सरिता !"

"क्षमा कीजिएगा। आप तो मुझे सहायता देने का पहले ही वचन दे चुकी हैं। मैं भूल गई थी।"

मिसेज़ शर्मा पलँग की ओर बढ़ीं। एक कुरसी पर रक्खे हुए कुछ कपड़ों की ओर संकेत करके बोलीं—"आप भी कपड़े बदल लें, और आराम करें।"

"जी हाँ।"

पलँग पर लेटते हुए मिसेज़ शर्मा ने एक रेशमी चादरा खींचकर ओढ़ लिया, और मुँह फेरकर कहा—"आपका जी चाहे, तो लाइट बुझा दीजिएगा।"

"जी हाँ।"

मिस सरिता कपड़े बदलने लगी। लाइट बुझा-कर पलँग पर जा लेटी। लेकिन उसकी आँखों में नींद न थी। परिस्थिति के महासागर में उसके हृदय की नाव आशा और निराशा की चट्टानों से टकरा-टकराकर बार-बार डाँवाँडोल हो उठती थी। वह सोचती थी—कल का दिन। मिसेज़ शर्मा क्या उत्तर देंगी ? 'हाँ' या 'नहीं'। उनकी 'हाँ' पर उसका जीवन था, उनकी 'नहीं' पर उसकी मृत्यु। मृत्यु से उसे डर लगता था। वह जीना चाहती थी, परंतु अपने लिये नहीं, किसी और के लिये।

(३)

मिसेज़ शर्मा शहर के विल्सन मेमोरियल विमेन्स हॉस्पिटल में, इंचार्ज की हैसियत से, उन दिनों काम कर रही थीं।

दोपहर को—

हॉस्पिटल से वापस आने पर नौकर ने पूछा—"खाना लाऊँ ?"

मिसेज़ शर्मा ने कपड़े बदलते हुए कहा—"नहीं, भूख नहीं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नौकर जाने लगा। मिसेज़ शर्मा ने पूछा—"कोई आया था ?"

नौकर ने ठहरकर जवाब दिया—"जी हाँ, कलवाली मेम साहब का मोटर-ड्राइवर आया था अभी। कह गया कि मेम साहब आज २ बजे आएँगी। उन्हें इससे पहले छुट्टी नहीं मिल पाएगी। कहलाया है कि आप उनका इंतज़ार करें।"

नौकर चला गया।

मिसेज़ शर्मा ने अलमारी से एक डॉक्टरी की किताब निकाली, और कुरसी पर बैठकर उसके पन्ने उलटने लगीं।

फिर बीच में से कुछ पढ़ना शुरू किया। पढ़ते-पढ़ते उठीं, और अलमारी से दूसरी दो किताबें निकालीं। उनमें जाने क्या-क्या देखती रहीं। एक काग़ज़ पर पेंसिल से कुछ लिखा। आध घंटे तक व्यस्त रहने के बाद स्नानागार में जाकर हाथ-मुँह धोया, और फिर कमरे में वापस आकर पलँग पर लेट रहीं। थोड़ी देर में नींद ने उनकी आँखों पर अधिकार जमा लिया।

ठीक दो बजे—

मोटर का हॉर्न सुनकर उनकी आँखें खुलीं।

मिस सरिता ने कमरे में प्रवेश किया। उसके हाथ में एक किताब और एक कॉपी थी। शायद कॉलेज से सीधी चली आ रही थी। मिसेज़ शर्मा ने उठते हुए कहा—"आइए। आपका इंतज़ार कर रही थी मैं।"

मिस सरिता ने बैठते हुए उत्तर दिया—"क्षमा कीजिएगा, आपको बेवक़्त जगा दिया सोते से। मगर अपना अधिकार जानकर ही मैंने यह साहस किया। आप मुझ पर इतनी कृपा करती हैं, मानो मेरा-आपका स्नेह बरसों पुराना हो। ऐसा जान पड़ता है, हम लोग चिर-परिचित हैं।"

मिसेज़ शर्मा ने कहा—"छोड़िए इन बातों को। बोलिए, चाय मँगाऊँ ?"

"नहीं, चाय तो मैं पीती नहीं।"

"तो फिर कुछ—ठंडा लेमन, सोडा, शर्बत ?"

"नहीं-नहीं, उसकी ज़रूरत नहीं। अभी-अभी कॉलेज के रेस्टोराँ में लड़कियों के साथ काफ़ी खा-पीकर आई हूँ।"

"फिर आपकी क्या ख़ातिर की जाय ?"

"ख़ातिर की ज़रूरत नहीं। मेरी ख़ातिर सबसे बड़ी यही होगी कि आप मुझ पर कृपा-भाव बनाए रहें, मेरी सहायता करके मुझे नई ज़िंदगी दे सकें। इससे बड़ा उपकार और कोई न होगा मेरा मिसेज़ शर्मा !"

"मैं आपकी व्यग्रता अच्छी तरह समझती हूँ मिस सरिता ! परंतु मैं क्या करूँ ?"

मिस सरिता पर मानो बिजली गिर पड़ी। किसी ने जैसे उसे अचानक स्वर्ग से नरक में ढकेल दिया। घबराहट में पसीने की बड़ी-बड़ी बूँदें उसके माथे पर झलकने लगीं। वह मिसेज़ शर्मा की ओर देखती रह गई। मिसेज़ शर्मा पत्थर की मूर्ति बनी हुई चुपचाप बैठी थीं। थोड़ा ठहरकर मिस सरिता ने कहा—"मिसेज़ शर्मा ! आपने यह उत्तर ख़ूब सोच-विचारकर दिया है ?"

किंचित् मुस्कराकर मिसेज़ शर्मा बोलीं—"हाँ मिस सरिता ! मुझे अफ़सोस है, मैं आपका केस नहीं ले सकती। उसका क़ानूनी पहलू मुझे मजबूर करता है कि मैं साफ़ इनकार कर दूँ। मैं क्या, कोई भी डॉक्टर आपकी सहायता न कर सकेगा।"

मिस सरिता ने एक ठंडी साँस ली। उसके मन में जाने क्या-क्या भाव उठ रहे थे। उसने फिर कहा—"मिसेज़ शर्मा ! जो बात आपने कही, वह मैं पहले से ही जानती थी, लेकिन यह मेरे जीवन का प्रश्न है। मैं आत्महत्या कर लूँ, यह आपको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वीकार होगा ? एक प्राणी के जीवन का मोल क्या आपके पेशे की नज़र में कुछ भी नहीं ?"

मिसेज़ शर्मा ने उत्तर दिया—"आपकी दलील व्यावहारिक जीवन से संबंध नहीं रखती। आप जानती हैं, आपकी सहायता करने का अर्थ है क़ानून की मर्यादा का उल्लंघन, जिसका परिणाम है सज़ा, अपमान और अपनी रोटियों का खो देना। अगर बात खुल गई, तो मैं दुनिया में मुँह दिखाने क़ाबिल न रहूँगी, मेरी ज़िंदगी बरबाद हो जायगी।"

"लेकिन हर चीज़ की क़ीमत हुआ करती है। मैं भी आपकी मिहनत का उचित पुरस्कार दे सकती हूँ। बोलिए—एक हज़ार रुपए आपको स्वीकार हैं ?"

"....."

"दो हज़ार दूँगी।"

"जी नहीं।"

"पाँच हज़ार—केवल आप 'हाँ' कर दें।"

"व्यर्थ आप हठ करती हैं मिस सरिता ! पैसे का प्रश्न ही नहीं।"

"आठ हज़ार रुपए।"

मिसेज़ शर्मा के हाथ की उँगलियों में कंपन शुरू हुआ। आठ हज़ार की रक़म कम नहीं हुआ करती। फिर भी वह मौन रहीं। मिस सरिता उठ खड़ी हुई। उसने कहा—"मिसेज़ शर्मा ! एक बार सोचिए—आठ हज़ार रुपए आपको भेंट करके भी आपका एहसान सदा के लिये मेरे सिर पर रहेगा। आपको मेरी जीवन-रक्षा का पुण्य मिलेगा। मनुष्यता का कर्तव्य सबसे बड़ा माना जाता है। क्या आप मेरे लिये थोड़ा-सा कष्ट नहीं उठा सकतीं ?"

चाँदी का जूता बड़ा प्रभाव रखता है। मिसेज़ शर्मा ने उत्तर दिया—"अच्छी बात है मिस सरिता !"

प्रसन्न होकर मिस सरिता ने कहा—"अनेक धन्यवाद ! कल आपके पास चेक भेज दूँगी, दिन निश्चित कर लीजिए।"

"अगला इतवार ठीक रहेगा। शनिवार की रात को आप यहाँ आ जायँ अकेली ही। मोटर से न आइएगा।"

"बहुत अच्छा। अब आज्ञा है न ?"

"नमस्ते।"

"नमस्ते।"

ख़ुश होती हुई मिस सरिता मोटर में जा बैठी। मोटर चल दी।

मिसेज़ शर्मा ने एक संतोष की साँस ली। सौदा पट गया था—आशा से अधिक पैसा मिलेगा। सुनहले स्वप्नों को सत्य का रूप देने का साधन प्राप्त हो जायगा। फिर कुछ कठिनाई भी पड़े, तो उसकी चिंता नहीं। और क़ानून—क़ानून की नींव तो साक्षी और सूचना पर निर्भर है। इन दोनों के अभाव में कोई ख़तरा ही नहीं। दो साल की प्रैक्टिस में मिसेज़ शर्मा को इन बातों का अनुभव हो गया था। एक-से-एक टेढ़े केस उनके हाथों में पहले भी आ चुके थे, जिनकी सफलता का स्मरण करके उन्हें अपने पर अभिमान होने लगा। उन्होंने कहा—"शिब्बू ! एक कप चाय दे जाना—ज़रा तेज़ हो।"

रसोई-घर से आवाज़ आई—"बहुत अच्छा, अभी लाया।"

मिसेज़ शर्मा ने उठकर ग्रामोफ़ोन में चाभी भरी, और एक रेकार्ड लगा दिया। कमरे में बड़ी सुरीली आवाज़ में इंदुबाला का गाना सुन पड़ा—

"शमा ने बात न पूछी
कभी परवाने की !"

मिसेज़ शर्मा कुरसी पर बैठकर गाना सुनने में लीन हो गईं। शिब्बू चाय रख गया, मगर वह ठंडी हो रही थी।

(४)

आठ हज़ार का चेक कैश होकर मिसेज़ शर्मा के हिसाब में जमा हो चुका था। अब इंतज़ार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था—इतवार का । एक-दो-तीन-चार-पाँच दिन गुज़र गए ।

शनिवार की रात को—

एक गिलास में कोई ओषधि बनाकर मिस सरिता को देते हुए मिसेज़ शर्मा ने कहा—"इसे पी लीजिए ।"

विना कुछ कहे हुए मिस सरिता ने दवा पी ली।

मिसेज़ शर्मा ने कहा—"सवेरे चार बजे मैं ऑपरेशन करूँगी, और आधे घंटे में सब काम हो जायगा । आपको ऑपरेशन से डर तो नहीं लगता ?"

मिस सरिता ने किंचित् मुस्कराकर उत्तर दिया—"बिलकुल नहीं—और लगता भी हो, तो मेरी परिस्थिति ऐसी है, जिसमें उस डर की कोई गुंजायश ही नहीं ।"

"आपने किसी से इस विषय में कुछ कहा तो नहीं ?"

"और तो किसी से नहीं, केवल उनसे—उन्हें मैंने चार रोज़ पहले एक पत्र लिख दिया है। शायद कल वह आते होंगे ।"

"क्यों ? आपको मैंने रोक दिया था, फिर भी आपने ऐसी ग़लती कर डाली ।"

"इसमें हर्ज ही क्या है ? वह सब कुछ जानते हैं ।"

"मगर उनको यहाँ बुलाने की ज़रूरत क्या थी ?"

"माफ़ कीजिएगा मिसेज़ शर्मा ! मैं उन पर विश्वास करती हूँ ।"

"विश्वास और अविश्वास का सवाल ही नहीं ।"

"फिर ? आप क्यों डरती हैं ?"

"डर की भी बात नहीं । मेरी समझ में नहीं आता कि आपने उन्हें बुलवाया क्यों ?"

"बात यह थी मिसेज़ शर्मा ! मैंने सोचा—कहीं ऐसा न हो कि इस ऑपरेशन में ही मेरे जीवन का अंत हो जाय । मरने से पहले कम-से-कम एक बार उन्हें देख ही लूँगी, दो बातें कह लूँगी ।"

"आप भी बड़ी नादान हैं ।"

"मेरी नादानी का कारण प्रेम है मिसेज़ शर्मा ! प्रेम की भूल क्षम्य होती है, सदा क्षम्य होती है। आप नाराज़ न हों ।"

"तो फिर आपके वह आते ही होंगे ?"

"जी हाँ, मेरा पत्र उन्हें कल ही मिल गया होगा । या तो आज रात को ही आ जायँ, या कल सवेरे तक । आएँगे अवश्य ।"

"मगर ऐसी ख़तरे की बात तो न थी ।"

"सचमुच ख़तरा नहीं है ? मैं मरूँगी तो नहीं ?"

"नहीं ।"

"ओह ! अनेक धन्यवाद मिसेज़ शर्मा ! आप सोचती होंगी, मैं मरने से डरती हूँ । सचमुच मैं मरने से डरती हूँ, मैं जीना चाहती हूँ—उनके सुख के लिये जीना चाहती हूँ, अपने लिये नहीं ।"

"और तो किसी से नहीं कहा आपने ?"

"जी नहीं, और किसी से नहीं ।"

"तो मुझे वचन दीजिए कि ज़िंदगी में भूल से भी किसी से इस बात की चर्चा आप न करेंगी, और न मेरा ही तज़किरा किसी से करेंगी ।"

"मैं वचन देती हूँ मिसेज़ शर्मा ! यह रहस्य अब आगे न बढ़ेगा ।"

"हाँ, एक बात और बतलाइए ।"

"पूछिए ।"

"इस लुका-छिपी के प्रेम के बजाय आप अपने उनसे विवाह ही क्यों नहीं कर लेतीं ?"

"यह मेरे बस की बात नहीं ।"

"क्यों ?"

"पिताजी अभी मेरा विवाह करने को सहमत नहीं ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कब तक सहमत होंगे ?"

"मेरे बी० ए० पास कर लेने के बाद मेरा विवाह हो सकेगा।"

"आपको विश्वास है कि आपकी इच्छा से ही विवाह होगा ?"

"क्यों नहीं ? मेरे बाबूजी मुझे बहुत चाहते हैं। मेरी बात वह कभी न टालेंगे।"

"यह तो आपका अनुमान ही है न—आपको आशा ऐसी ही है, लेकिन आशा भी एक भ्रम प्रमाणित हो सकती है।"

"लेकिन मेरी इच्छा का विरोध कोई कर कैसे सकता है ?"

"मा-बाप के अधिकार ही विरोध कर सकते हैं।"

"यह पुरानी बात है। नए ज़माने की रफ़्तार कुछ और ही कहती है।"

"नए ज़माने की रफ़्तार में ही तो आप बह गई हैं।"

"वह तो मेरी ग़लती थी।"

"फिर ? आप आइंदा कोई ग़लती नहीं कर सकेंगी, इसका आपको कैसे विश्वास हो गया ?"

"नहीं, अब ऐसा अवसर न आएगा।"

"मिस सरिता ! आपने दुनिया नहीं देखी अभी। प्रलोभन का जाल एक बार बिछते ही नया शिकार आ फँसता है। पुरुष कहलानेवाली शक्ति की सीमा अपरिमित है, मगर स्त्री—स्त्री का स्थान समाज में नहीं के बराबर है। पुरुष के अपराध का प्रायश्चित्त स्त्री को करना पड़ता है—चाहे उसका तन, मन, जीवन सब कुछ क्यों न नष्ट हो जाय। असमानता का यह शासन आदि काल से चला आता है—ऐसा ही रहेगा। उसमें परिवर्तन की कल्पना करना भूल है। आप अपना ही उदाहरण ले लीजिए।"

मिस सरिता ने किंचित् लजाकर मुँह में रूमाल लगा लिया, और खाँसने लगी। मिसेज़ शर्मा कहती गईं—"यह दूसरी बात है कि प्रेम के आवेश में आप न्याय और अन्याय की विवेचना न करते हुए प्रेमी के अपराध को वरदान के रूप में ग्रहण कर लें। उसके दोष और उसकी भूल पर परदा डालकर अपने स्त्रीत्व की महत्ता में उसे क्षमा कर दें, लेकिन इससे अपराध की गुरुता तो कम नहीं हो जाती ?"

मिस सरिता ने कहा—"मैंने आज तक यह बात सोची ही नहीं—सोचने की ज़रूरत भी नहीं समझती।"

मिसेज़ शर्मा ने एक ठंडी साँस लेकर उत्तर दिया—"ख़ैर, अभी तो सारी ज़िंदगी बाक़ी है आपके लिये—कभी-न-कभी सोचना ही पड़ेगा।"

"आगे क्या होगा, कौन जाने !"

"मिस सरिता ! दुनिया के खेल निराले होते हैं, आप मुझे देखकर क्या समझती हैं ?"

"आप स्वतंत्र हैं—अपने व्यवसाय से अपना पालन-पोषण करती हैं। आपका नाम है, यश है, समाज में आपका स्थान ऊँचा होना चाहिए।"

"यह भी दुनिया की बात कह दी आपने।"

"तो और क्या कहूँ ? अपने विषय में आपने अब तक कुछ बतलाया ही नहीं।"

मिसेज़ शर्मा कुछ उद्विग्न-सी होकर उठीं, और कमरे में टहलने लगीं। उनकी आँखों में एक अद्भुत चमक पैदा हो गई। मिस सरिता ने फिर कहा—"मैंने भी आज तक आपसे कुछ पूछा नहीं—मेरी अपनी ही परिस्थिति ऐसी संकटमय है कि उसके आगे मुझे दूसरा ख़याल आता ही नहीं।"

मिसेज़ शर्मा फिर आकर अपनी कुरसी पर बैठ गईं। कुछ गंभीर होकर उन्होंने कहा—"मिस सरिता ! प्रत्येक नारी का जीवन एक कभी न सुलझनेवाली समस्या है, जिसे वह स्वयं जानती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्त्रीत्व का अर्थ ही है सहनशीलता—असीम यातना, जिसका अंत जीवन के साथ होता है।"

"मुझे आपसे पूर्ण सहानुभूति है मिसेज़ शर्मा!"

"धन्यवाद! ये शब्द भी दूसरों के हैं—हज़ारों बार के सुने हुए।"

"आप सच कहती हैं—इसके सिवा और कोई कह ही क्या सकता है?"

"छोड़िए इन बातों को—इनमें सार नहीं, अर्थ नहीं, प्रयोजन नहीं। अपनी अनुभूति अपने में छिपा रखना ही मनुष्यता है।"

मिसेज़ शर्मा चुप होकर कुछ सोचने लगीं।

मिस सरिता ने मेज़ पर रक्खा हुआ अँगरेज़ी का एक मासिक पत्र उठा लिया, और उसके पन्ने उलटने लगी।

वह रात—

सदा की भाँति अपनी मंज़िल तय कर रही थी। मिसेज़ शर्मा के मनोभाव भी अपने रास्ते पर उलझते-सुलझते चले जा रहे थे। घड़ी भी चल रही थी—"टिक्-टिक्-टिक्-टिक्।"

(५)

पास ही में शहर के वाटर-वर्क्स का भोंपू बज उठा। साढ़े पाँच बज रहा था। मेज़ पर से औज़ारों का ढेर उठाकर बक्स में बंद करते हुए मिसेज़ शर्मा ने आवाज़ दी—"शिब्बू!"

शिब्बू आ खड़ा हुआ।

मिसेज़ शर्मा ने कहा—"पानी लाकर फ़र्श धो डाल अभी—थोड़ी फ़िनाइल मिला लेना—समझा।"

"जी—अभी लीजिए।"

शिब्बू बाल्टी में पानी लाकर फ़र्श धोने लगा।

मिसेज़ शर्मा ने एक हरी-सी शीशी का काग खोलकर ऑपरेशन की मेज़ पर बेहोश पड़ी मिस सरिता की नाक के पास ले जाकर सुँघाया।

दो मिनट बाद—

मिस सरिता को कुछ चेतना आई—हाथ-पैरों में कंपन जान पड़ने लगा। मिस सरिता ने आँखें खोल दीं।

मिसेज़ शर्मा ने उसके माथे पर हाथ फेरते हुए कहा—"सब ठीक है—अभी लेटी रहिए—उठिएगा नहीं।"

मिस सरिता ने कहा—"वह नहीं आए?"

"नहीं, अभी तक तो पता नहीं। आप लेटी रहें, उनके आने पर तुरंत सूचना दूँगी।"

मिसेज़ शर्मा ने एक दवा शीशे के गिलास में ढालकर फिर मिस सरिता को पिला दी। दवा पीकर मिस सरिता ने आँखें बंद कर लीं। मिसेज़ शर्मा ने रहा-सहा सामान, बैंडेज, लिंट, रुई वग़ैरा समेटकर, दूसरे बक्स में रखकर बंद किया। इसके बाद साबुन से हाथ धोकर अपने कमरे में वापस आ गईं।

एक ताँगा दरवाज़े पर आकर रुका। घंटी बजी। किसी ने पुकारा—"शिब्बू! अरे शिब्बू!"

आवाज़ पहचानी हुई थी।

मिसेज़ शर्मा ने जल्दी से दौड़कर द्वार खोला।

प्रोफ़ेसर शर्मा ने कमरे में प्रवेश किया। शिब्बू उनका सामान उतार रहा था। मिसेज़ शर्मा ने पूछा—"वाह! चुपचाप ही आ गए इस बार तो? ख़त भी नहीं लिखा?"

प्रोफ़ेसर शर्मा ने कपड़े उतारते हुए कहा—"हाँ, अचानक ही मुझे आना पड़ा, एक काम से—एक ज़रूरी काम से—सब ख़ैरियत है न?"

मिसेज़ शर्मा सोच रही थीं कि आज इनकी आवाज़ भर्राई-सी क्यों है? यह कुछ घबराए-से जान पड़ते हैं। बात क्या है? उन्होंने धीमे स्वर में उत्तर दिया—"जी हाँ, सब ख़ैरियत है। स्टेशन से सीधे आ रहे हो?"

"हाँ, रात को सवार हुआ था लाहौर-मेल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से—पाँच बजे आ गया लखनऊ। और सुनो—एक बात तो बताओ ?"

मिसेज़ शर्मा चौंक पड़ीं—क्या पूछेंगे। अपने को बहुत सँभालकर बोलीं—"क्या ?"

"कोई ऑपरेशन का केस किया है तुमने आज ? या करना है तुम्हें ?"

मिसेज़ शर्मा के पैरों के नीचे से ज़मीन खिसक गई। इन्हें कैसे मालूम ?

वह बोलीं—"जी हाँ, एक केस था—प्राइवेट।"

प्रोफ़ेसर शर्मा अपने सिर के बालों पर ब्रश फेरते हुए बोले—"हाँ-हाँ प्राइवेट। कहाँ है मरीज़—अंदर ?"

"जी हाँ, अभी ऑपरेशन-रूम में ही है।"

मिसेज़ शर्मा का हृदय धड़क रहा था।

प्रोफ़ेसर शर्मा लपकते हुए ऑपरेशन-रूम की तरफ़ बढ़े।

मिसेज़ शर्मा का सिर चक्कर खा रहा था। वह भी पति के पीछे-पीछे चलीं, मगर अपने कमरे के दरवाज़े से आगे न जा सकीं। किवाड़ पकड़कर जहाँ-की-तहाँ खड़ी रह गईं।

बराबर के ऑपरेशन-रूम में—

प्रोफ़ेसर शर्मा की आवाज़ सुन पड़ी—"सरिता !"

"ओह ! आ गए तुम ?"

"हाँ, मैं आ गया। कैसा जी है तुम्हारा ?"

"अच्छा है सुधींद्र ! मैं बिलकुल अच्छी हूँ—बेचारी मिसेज़ शर्मा ने मेरे लिये बड़ी तकलीफ़ उठाई।"

"अच्छे डॉक्टर का यही फ़र्ज़ है।"

मिसेज़ शर्मा ने सुना—अच्छे डॉक्टर का यही फ़र्ज़ है ? मगर नारी का फ़र्ज़—विवाहिता पत्नी का फ़र्ज़ ? प्रोफ़ेसर शर्मा शायद नहीं जानते—एक पति का फ़र्ज़ ? वह एक प्रेमी का फ़र्ज़ अदा कर रहे थे। प्रोफ़ेसर शर्मा बोल रहे थे—"ईश्वर को अनेक धन्यवाद ! तुम्हारी नई ज़िंदगी हुई सरिता !"

"क्यों नहीं सुधींद्र ! तुम्हारी याद ने ही—तुम्हारे स्नेह ने ही मुझे जीने को मजबूर कर दिया।"

मिसेज़ शर्मा ने सोचा—जीने की मजबूरी कैसी भयानक। कैसी तीखी होती है।

थोड़ी देर तक ऑपरेशन-रूम में सन्नाटा रहा। फिर प्रोफ़ेसर शर्मा कह रहे थे—"अच्छा, तुम अभी कमज़ोर हो, उठना मत, आराम करो।"

उनके पैर के जूतों की आवाज़ सुनकर मिसेज़ शर्मा किवाड़े के पास से हटकर कमरे में आईं, और पलँग पर धम से गिर पड़ीं। उनकी आँखों के आगे अँधेरा छा रहा था। उनकी आँखें अपने आप बंद हो गईं।

पाँच मिनट बाद—

पानी के ठंडे छींटे आँखों पर पड़े। मिसेज़ शर्मा की अचेतना दूर हुई। प्रोफ़ेसर शर्मा उनके ऊपर झुके हुए कह रहे थे—"सुना तुमने ?"

मिसेज़ शर्मा ने कहा—"क्या ?"

"तुमने कैसा ऑपरेशन किया है ?"

मिसेज़ शर्मा उठकर बैठ गईं। उनकी आँखों में एक अजीब-सी रोशनी थी। उन्होंने पति की ओर क्रोध से देखते हुए पूछा—"तुम्हारा मतलब ?"

प्रोफ़ेसर शर्मा हँसते हुए बोले—"समझ तो गई होगी—कोई जान गया, तो सज़ा ....."

बात काटकर मिसेज़ शर्मा ने कहा—"वह मेरे मरीज़ का राज़ है, मैं मरते दम तक उसे छिपाऊँगी। मैं किसी बात से नहीं डरती—मुझे चाहे जो कुछ हो, मगर एक भले घर की लड़की की इज़्ज़त का सवाल है।"

प्रोफ़ेसर शर्मा ने पलँग पर बैठकर उनके गले में अपनी बाँह डालकर कहा—"और मेरी इज़्ज़त का सवाल ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हुँ ! तुम्हारी इज़्ज़त ?"

"मेरी इज़्ज़त भी तुम्हें बचाना पड़ेगी—जानती हो, दुनिया के लिये मैं हूँ प्रोफ़ेसर सुधींद्र—अविवाहित—सरिता यही जानती है। मेरा राज़ भी तुम्हें छिपाना पड़ेगा।"

मिसेज़ शर्मा चुप थीं।

प्रोफ़ेसर शर्मा ने कहा—"हाँ कहो, वचन दो मुझे—सरिता से कुछ न कहोगी !"

मिसेज़ शर्मा को कुछ कहने के लिये शब्द ही न मिलते थे। प्रोफ़ेसर शर्मा की आँखों में आँसू आ गए। उन्होंने कहा—"मैंने ग़लती की है—मैं अपराधी हूँ—तुम्हारा अपराधी—मेरी इज़्ज़त अब तुम्हारे हाथ में है। मेरा राज़ न खोलना—"

❀ ❀ ❀

पता नहीं—

मिसेज़ शर्मा उस राज़ को छिपा सकीं या नहीं। हाँ, उनके पेशे की बात क़ायम रही। मरीज़ का राज़ कोई न जान सका। यह तो सत्य है, परंतु—दूसरा सत्य ? वह अनुभव करने की बात थी।

अतृप्ति की उस व्यापक पुकार में मानव ने एक दिन माँगा था !

अमृत

जिसे कलाकार की लेखनी ने अनुभूति का चित्र समझकर अक्षरों में अंकित कर दिया।

विना कुछ सोचे-समझे !
अनधिकार चेष्टा के सहारे !
अनुभूति के संकेत-मात्र पर !
दोनों हाथ पसारकर !
माँगा था

अमृत

वही हिंदी-साहित्य के युग-प्रवर्तक गल्पकार और "सुधा" के सुपरिचित कहानी-लेखक

श्रीयुत 'अरुण' बी० ए० द्वारा प्रणीत गंगा-पुस्तकमाला की नई भेंट

आपके मन की प्यास मिटानेवाला, मधुर, सरस

अमृत

छप रहा है !

इसका एक-एक अक्षर आपके हृदय को छू लेगा।
मानवता के सत्य को कहानियों के रूप में सजीव पाकर आप विस्मित रह जायँगे।

ऑर्डर अभी से बुक कराएँ !

मूल्य लगभग सादी १), सजिल्द १॥)

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लाटूश रोड, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मातृभाषा हिंदी बलि-वेदी पर

[श्रीरामदत्त शुक्ल एम्० ए०, ऐडवोकेट]

इडा सरस्वती मही तिस्रो देवीर्मयो भुवः (ऋग् १ । १३ । ६ ।)

रत से बाहर अनेक सभ्याभिमानी देशों में इस बात की होड़ लगी है कि कितनी शीघ्रता से एक दूसरे को मिटा-कर अपना उल्लू सीधा किया जाय। इस कुत्सित लक्ष्य की पूर्ति करने में जैसे नागनाथ हैं, वैसे ही साँपनाथ प्रतीत होते हैं। भेद केवल अवसर प्राप्त होने अथवा न होने पर निर्भर है, अन्यथा जिघांसावृत्ति की करालता प्रदर्शित करने में कोई किसी से कम नहीं। किंतु वर्तमान भारतवासियों की तो मथुरा तीन लोक से न्यारी ही जान पड़ती है। दुर्भाग्य से भाग्य-विधाताओं ने इस देश में जो शासन-विधान प्रचलित किया है, उसमें प्रत्येक वर्ग अपने-अपने संख्या-बल के अनुरूप महत्त्व एवं प्रभाव रखता है। संख्यावाद का भूत आज हमारे वैयक्तिक तथा समष्टि जीवन के समस्त क्षेत्रों में समान रूप से लागू हो रहा है। इसलिये स्पर्धा-पूर्वक एक समूह, वर्ग, जाति, संप्रदाय और दल शेष समस्त समूहों, वर्गों, जातियों, संप्रदायों और दलों से अपनी संख्या बढ़ाने में उचित अथवा अनुचित, सभी प्रकार से प्रयत्नशील हो रहा है। इस कारण स्वभावतः वृद्धि-क्षय के वैज्ञानिक विधान के अनुसार एक के क्षय से ही दूसरे की वृद्धि संभव होती है, और अब तो भारतीय जीवन का कोई भी ऐसा पार्श्व शेष नहीं रहा, जिसके संबंध में कोई यह कहने का साहस कर सके कि इस जीवन-क्षेत्र में 'जमात की करामात' का सिद्धांत नहीं लगता, अपितु यहाँ तो योग्यता और गुणों की ही प्रतिष्ठा होती है। ऐसी अभूतपूर्व दुरवस्था में न्याय और आर्जव के स्थान पर कूटनीति और कुटिलता को ही सफलता का एकमात्र अचूक मानदंड मान लिया जाता है, और छल-कपट-पटु नरे-नारी प्रदर्शनात्मक, बाह्याडंबर-पूर्ण, विलास-बहुल, प्रपंच-प्रधान जीवन में संघर्ष के साथ आगे बढ़ते हुए कुछ काल के लिये दिखाई पड़ते हैं।

स्पर्धा के साथ चलनेवाली इस होड़ में भारतीय हिंदू-जाति ने चिरकाल से बड़ी ही दीर्घसूत्रता और अमनस्कता से अरुचि प्रदर्शित की है। इसका कटुतम परिणाम यह हुआ कि जहाँ अन्य अल्पसंख्यक वर्गों ने उत्तरोत्तर संख्या-वृद्धि की है, वहाँ हिंदुओं की यथोचित संख्या-वृद्धि में अनेक बाधाएँ आती रही हैं, और जब दूसरे लोगों ने इनको प्रमाद-ग्रस्त देखा, तो धीरे-धीरे इनकी शिथिलता से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूरे तौर पर अनुचित लाभ उठाने का अवसरोचित प्रयत्न किया। उदाहरणार्थ सन् १९१९ के सुधार जब यहाँ लादे गए, तो अन्य अनेक भद्दी बातों के साथ इस देश में संख्या की दृष्टि से सबसे अधिक होते हुए भी नान-मुसलिम के नाम से इनको विधान में स्थान दिया गया, तथापि इन्होंने हाथ बाँधकर इस अत्यंत कलुषित कुचेष्टा का भी कोई मानवोचित निराकरण न करके 'सत्य बचन महराज' कहकर इस अपमानात्मक और अत्यंत निंदास्पद नाम को भी अपने जातीय गौरव को बढ़ानेवाला ही समझकर स्वीकार किया। परंतु इनकी भीरुता-प्रधान सहिष्णुता को स्वहितार्थ परखनेवालों ने अवसर आने पर पुनः इन पर कृपा की, और अब की बार, सन् १९३५ में, इनको नान-मुसलिम से बदलकर जनरल नाम से विधान में अंकित कर दिया। इस नाम-परिवतन को भी इन भोले लोगों ने अपने सौभाग्य का सूचक ही माना, और फिर 'सत्य बचन महराज' कहकर स्वीकार किया। इस भाँति पदे-पदे अपमानित होने पर भी प्रकृतिस्थ एवं निश्चेष्ट रहनेवालों को यदि चतुर लोग लावारिसी लाश समझकर स्वेच्छानुसार उदरसात् करने लगें, तो इसमें आश्चर्य ही क्या हो सकता है।

अब इन दिनों जन-गणना होने जा रही है। इस गणना के संबंध में भी अनेक विचित्र बातें केवल हिंदुओं के ही संबंध में की जा रही हैं। उदाहरणार्थ बंगाल-सरकार ने ऐसा निश्चय किया है कि हिंदुओं की गणना करते हुए उनकी जाति और उपजाति आदि सभी लिखाई जाय, किंतु मुसलमानों के अनेक भेदों को न लिखकर केवल मुसलमान ही अंकित किया जाय। इसका कारण भी यह बतलाया गया है कि हिंदुओं के वंश-परंपरागत अनेक विचित्र गुणों को जानने के लिये ऐसा करना आवश्यक है। किंतु आश्चर्य है, इस वैज्ञानिकता के गज को न-जाने क्यों मुसलमानों के लिये उसी दयालु सरकार ने आवश्यक न समझा। इसका रहस्य साधारण बुद्धि रखनेवाले के लिये भी नितांत स्पष्ट है। इसी प्रकार संयुक्त प्रांत की सरकार ने भी इस जन-गणना-कार्य में एक अभूतपूर्व और अबुद्धिगम्य व्यवस्था की है। जनगणकों को आदेश दिया गया है कि वे भाषा के कोष्ठ में सबके लिये हिंदुस्तानी लिखें, फिर चाहे कोई हिंदी अथवा उर्दू में से किसी भी एक भाषा को लिखाने का ही कितना आग्रह क्यों न करे। भला, इस बुद्धि-शून्य व्यवस्था का क्या महत्त्व है। जब कि आप के प्रांत में हिंदी को मातृभाषा की भाँति व्यवहार में लानेवालों की संख्या करोड़ों है, तो उन सबकी इच्छाओं पर अन्याय-पूर्वक कुठाराघात करके उनके हिंदी लिखाने पर भी यदि जनगणक केवल सरकार को संतुष्ट करने के लिये करोड़ों हिंदी-भाषा-भाषियों के साथ सर्वथा अनुचित और अन्याय-पूर्ण नीति का अवलंबन करने के लिये बाधित किए जा रहे हैं, तो क्या इसका स्पष्ट अर्थ यह नहीं कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जैसे पहले अन्य बातों के साथ हमारा नाम मिटाने का प्रयत्न किया गया, उसी प्रकार अब हम अकारण ही अपनी मातृभाषा से भी असंबद्ध होने के लिये विवश किए जा रहे हैं। इस बात में किसको संदेह हो सकता है कि बादशाह अकबर के दीनइलाही की भाँति हिंदुस्तानी केवल मुट्ठी-भर हरदिल-अज़ीज़ों की उर्वरा बुद्धि की लीला-मात्र है। न इसमें अच्छा साहित्य बन सकता है, और न इस बेढंगी खिचड़ी-भाषा को हमारी अर्थात् प्रांत के करोड़ों निवासियों की माताएँ व्यवहार में ही लाती हैं। इसकी अव्यवहार्यता सिद्ध करके स्वयं हिंदुस्तानी-ऐकेडमी ने ही इसे अर्द्धचंद्र देकर बहिष्कृत कर दिया है। ऐसी अवस्था में समझ में नहीं आता कि प्रांतीय सरकार क्यों इस विषय में स्पष्ट घोषणा नहीं कर देती कि भाषा के कोष्ठ में हिंदी, उर्दू अथवा हिंदुस्तानी में से जिस किसी एक भाषा को कहा जाय, उसी को जनगणक अंकित करे।

हमारा यह आग्रह नहीं कि हिंदुस्तानी अपनी भाषा कोई न लिखावे। हम तो केवल इतना ही अनुरोध करते हैं कि अन्य बातों की भाँति भाषा-संबंधी प्रश्न के उत्तर देने में लिखवाने-वाले को पूर्ण स्वतंत्रता होनी चाहिए, अन्यथा यदि सरकार ने अपने किसी निजी गुप्त, रहस्य-पूर्ण उद्देश्य को पूर्ण करने के लिये अपनी-अपनी भाषा लिखवाने पर भी हठ या दुराग्रह से प्रांत-भर के लोगों की भाषा समान रूप से हिंदुस्तानी लिखा भी दी, तो सर्व-साधारण जनता को भी इस अनुचित और अन्याय-पूर्ण व्यवहार का सहज ही परिचय प्राप्त हो जायगा, और जन-गणना का जो प्रयोजन हो सकता है, उसकी भी सुचारु पूर्ति कदाचित् न हो सकेगी।

एक बात और भी ध्यान देने योग्य यह है कि हिंदी का प्रधान केंद्र संयुक्त प्रांत ही अब तक माना जाता है, और हिंदी-साहित्य के विकास में भी इस प्रांत का ही प्रमुख स्थान रहा है। ऐसी दशा में यदि जनगणना के पश्चात् प्रांतीय सरकार की कृपा से यह सिद्ध भी हो जाय कि अन्य भारतीय प्रांतों में तो हिंदी-भाषा-भाषी मिलते हैं। किंतु संयुक्त प्रांत की भाषा तो अब हिंदुस्तानी हो गई है! तो क्या जो लोग सैकड़ों वर्षों से हिंदी-भाषा, हिंदी-साहित्य और हिंदीपने पर तन, मन और धन न्यौछावर करके भी प्राण-पण से इसकी श्री-वृद्धि करने में अपना गौरव मानते रहे, उनकी चलाई हुई परंपरा को इस प्रकार उच्छिन्न होते देखकर भी आधुनिक हिंदी-हितैषी निश्चेष्ट बैठे-बैठे अपनी मातृभाषा का असामयिक अवसान अपनी ही खुली हुई आँखों से देखते रहेंगे, अथवा अवसरोचित समस्त उचित, किंतु प्रभावोत्पादक आंदोलनों और उपायों से सरकार को विवश कर देंगे कि वह अविलंब इस अन्याय-पूर्ण व्यवस्था को दूर करके जनगणकों को स्पष्ट आदेश दे कि जो व्यक्ति जिस किसी भाषा को अपनी भाषा लिखाए, वह उसी भाषा को तदनुसार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंकित करे। हमें तो इस संबंध में विशेष खेद इसलिये और भी अधिक है कि साहित्य-सम्मेलन और काशी नागरी-प्रचारिणी सभा के जीवित रहते हुए हिंदी की इस प्रकार हत्या होना पितामह भीष्म के सभा में विद्यमान रहते हुए द्रौपदी का दुःशासन के हाथों वस्त्र-हीन किए जाने के समान है, अतः इडा, सरस्वती और भारती, इन तीनो देवियों के सक्रिय उपासक सावधान होकर अपने-अपने कर्तव्य का पालन करें।

सब तरफ़ से इलाज कराकर निराश हुई देवियों

वंध्या व संतान-हीन स्त्रियों को शुभ संदेश !

स्त्रियों के सब तरह के रोगों का

शर्तिया इलाज

औरत का इलाज औरत ही ठीक तरह कर सकती है

क्योंकि

औरत एक औरत को ही अपने गुप्त रोगों का पूरा हाल निःसंकोच बता सकती है।

स्त्रियों के प्रदर-रोग, पानी पड़ना, गर्भाशय के दोष, योनि-रोग, बच्चेदानी की ख़राबी, नसों व नलों की ख़राबी, मासिक धर्म का ठीक न होना, समय पर न होना. चढ़-उतरकर होना, .खून का कम-ज्यादा जाना, मासिक धर्म के समय पीठ (कमर) में ज्यादा दर्द होना वग़ैरा कोई भी गुप्त रोग है, और आप इलाज कराकर निराश हो चुकी हैं, तो एक बार नीचे लिखे पते पर ज़रूर मिलें, या पत्र-व्यवहार करें।

विश्वास रक्खो

यहाँ से तुम्हें निराश न होना पड़ेगा, शर्तिया आराम हो जायगा। आपका पैसा हराम में नहीं जायगा।

एक बार परीक्षा ज़रूर करें।

[सरकार से रजिस्टर्ड]

चपलादेवी वैद्या, चपला-भवन, गली रावलिया, मथुरा (यू० पी०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी में प्रमत्त रचना

[प्राध्यापक चेतराम शर्मा]

(गतांक से आगे)

हमने अध्यापकीय कर्तव्य की प्रेरणा और हिंदी-भाषा-सेवक के नाते 'तक्षशिलाकाव्य,' 'दाहर नाटक', 'विक्रमादित्य', 'अंबा,' 'सगर-विजय,' 'विसर्जन' और (राजा लक्ष्मणसिंह की) 'शकुंतला' का लाहौरी संस्करण आदि परीक्षा-पुस्तकें भली भाँति सतर्क-सावधान होकर पढ़ी-पढ़ाई हैं। कुछ पर लिखा भी है। ('विसर्जन' (पाठ्य या) परीक्षा-पुस्तक नहीं है।) ग्रंथकारों और प्रकाशकों से भी हमें किसी प्रकार का कोई द्वेष नहीं, हम किसी के शत्रु नहीं। हिंदी-हित और हिंदी-पाठकों की सेवा ही हमारा ध्येय है। साहित्य-चर्चा को हम सरस्वती-पूजा समझते हैं, और पूजा-अर्चना किसी विकार-वश होकर नहीं करते। हमें अपनी किसी बात का हठ या दुराग्रह नहीं। यदि कोई निष्पक्ष सज्जन हमारे दिखाए दोषों का युक्ति-प्रमाण-पुरस्सर खंडन कर उक्त पुस्तकों का मंडन करें, तो हम मुक्त कंठ से उनका आभार स्वीकार कर उन्हें हृदय से धन्यवाद देंगे। हमारे मत से उक्त पुस्तकें सर्वथा भ्रष्ट और हानि-कारिणी हैं। उनसे अशुद्ध भाषा और झूठे ज्ञान का प्रचार होता है। उन्हें पढ़ना-पढ़ाना नहीं चाहिए।

हमने ऊपर लिखा है कि प्रसिद्धि को हम सदा योग्यता की यथार्थ कसौटी नहीं समझते। हिंदी में निष्पक्ष, सच्चे-खरे और अभ्यस्त आलोचक बहुत थोड़े हैं। भूखे, लालची और पक्षपात-ग्रस्त आलोचकों की आलोचना तथ्यगामी नहीं हो सकती। ऐसे आलोचक तो अपना संबंध-निर्वाह करते हैं, यथार्थ आलोचना नहीं। उन्हें भाषा-साहित्य-रक्षा की चिंता नहीं, मित्र-त्राण (स्वार्थ-साधन) और मैत्री-रक्षा की चिंता रहती है। पांडित्य, निर्भयता और सत्यवादिता यथार्थ आलोचक के गुण हैं। एक ही पुस्तक को यदि कुछ आलोचक बुरी और कुछ भली कहें, तो किसकी सम्मति पर कैसे विश्वास किया जाय? उल्लिखित कुछ नाटकों की आलोचना 'विशाल भारत' ने १९३८ के जून या जुलाई में की, काशी के बाबू ब्रजरत्नदास महाशय ने सं० १९९५ वि० में प्रकाशित अपने 'हिंदी-नाट्य-साहित्य' के २७०-२७१ पृष्ठ पर की, और इन पंक्तियों के लेखक ने लाहौर के 'आर्य' के वैशाख, १९९६ और १९९७ के अंकों में की। इन तीनों की आलोचना एक-सी मिलती है। अब इन्हीं नाटकों की कुछ संक्षिप्त आलोचना 'हिंदी-साहित्य का इतिहास' (संशोधित और परिवर्धित संस्करण) के ६६९ पृष्ठ पर है। इन्हें 'अच्छे काव्यों' में, 'अच्छी साहित्य-सेवा' में गिना गया है। किसी को 'सुंदर नाटक,' किसी को 'मार्मिक चित्रण'-युक्त, किसी को 'भाव-नाट्य' और किसी को 'उत्तम' नाटक कहा है। इन नाटकों में 'पौराणिक सामग्री का सुंदर उपयोग हुआ' माना गया है। हमारा दृढ़ विश्वास है, उक्त प्रशंसात्मक वचन श्रीपंडित रामचंद्र शुक्ल के नहीं। वह 'हिंदी-साहित्य का इतिहास' के संशोधित संस्करण के मुद्रण-प्रकाशन-समय स्वस्थ नहीं थे। ये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़ाई के वचन किसी छोटे शुक्र के हैं। इन्होंने भी या तो उक्त नाटक ध्यान से नहीं पढ़े, या अपना संबंध निभाया है। उक्त मिथ्याश्लाघी जीवित मक्खी निगलना चाहते हैं। चाहते हैं, तो निगलें, वमन करेंगे। जिन अध्यापकों ने इन्हें तुलनात्मक दृष्टि से पढ़ा-पढ़ाया और अप्रमत्त रहकर आलोचित किया है, उन्हें धोखा नहीं हो सकता। वे सब एकमत होकर इन नाटकों के दोष दिखा चुके हैं। जब तक उन दोषों का निराकरण न हो ले, तब तक उक्त प्रशंसात्मक वचनों का कुछ मूल्य नहीं। बाबू ब्रजरत्नदास ने पते की बातें बतलाई हैं। 'हिंदी-साहित्य का इतिहास' भी मानता है कि बाबू साहब हिंदी के उत्कृष्ट लेखक' हैं। इस दशा में किसकी सम्मति मान्य मानें? हम बाबू ब्रजरत्नदास की सम्मति, युक्ति-युक्त होने से, अधिक सच्ची और प्रामाणिक मानते हैं। उक्त प्रशंसात्मक वचन नाटकों के योग्य नहीं, मिथ्या हैं। उक्त नाटकों के लेखक की अब तक प्रकाशित सभी रचनाएँ कच्ची हैं। 'हाथ-कंगन को आरसी क्या।' इन पुस्तकों में दोषों की अत्युक्ति के लिये तो सामग्री है, गुणों की अत्युक्ति के लिये कदापि नहीं। साहित्यिक आलोचना पक्षपात-रहित और यथार्थ होनी चाहिए, किसी को रिझाने-खिझाने के लिये नहीं। जिस आलोचना से सत्य-रक्षा और तथ्य-निर्णय न हो, वह भी प्रमत्त रचना ही है। 'अंबा'-नाटक भी 'वियोगांत' नहीं। सारा 'अंबा'-नाटक द्विजेंद्रलाल राय महाशय के भीष्म नाटक की, चोर की अयोग्यता-सूचक, चोरी है, कच्ची और भद्दी अनुकृति है। 'अंबा' के इन वाक्यों को देखिए—"गंधर्वों का इतना अपमान कि मनुष्य उनकी समता करे!" "महाराज का चेहरा बकरी के गले में थन की तरह थलथलाने लगा। ओठ पापड़ से होड़ कर रहे थे।" "मनुष्य ने पराक्रम के मैदान में आज्ञा का जाल बिछा रक्खा है।"

अॉक्टोबर, १९४० की सरस्वती के प्रथम पृष्ठ (२८९ पृष्ठ) पर छपी इस प्रमत्त रचना का अर्थ कीजिए, इसमें औचित्य और संबद्धता ढूँढ़िए—

"चिर जलन मेरी कहानी
मैं अतिथि खाली हृदय हूँ
गुरु पराजय की विजय हूँ
जागरण संग्राम मेरा
स्वप्न जीवन की जवानी
चिर जलन मेरी कहानी
तुम्हारा लेकर सहारा
पा सकूँगा यदि किनारा
तो तिमिर सब रवि बनेगा,
मूकस्वर वरदान बानी
दिया सब वह जो लिया था
बिना इच्छा के जिया था
दिव्य आशा के सहारे
प्राण ने पगधूल छानी
चिर जलन मेरी कहानी।"

('सरस्वती' में यह रचना बारह पंक्तियों में छपी है। विराम-चिह्न केवल दो स्थलों पर हैं।) कविवर 'निराला'जी चाहें, तो इस पर भाष्य लिख सकते हैं। यह 'चिर जलन की कहानी' छायावाद और रहस्यवाद दोनों की है नानी। 'साहित्य-संदेश' के अॉक्टोबर-नवंबर, १९४० के उपन्यास-अंक से उद्धृत ये वाक्य कैसे हैं?—"होश संभालते ही मनुष्य के, साहित्य का सबसे प्रिय अंग जो उसे अपनी ओर खींचता है वह उपन्यास है। कविता, नाटक संगीत उसके समझ से बाहर की बातें हैं। उपन्यास चाहें, वह जासूसी हो या रोमंटिक, यथार्थ हो या आदर्शवादी मनुष्य के जीवन के उत्थान-पतन से संबंध रखने के कारण सर्वसाधारण का अपना विषय हो जाता है।" × × ×

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"साहित्य का अंग संसार-भर के साहित्य में बहुत बड़ा है, बहुत विस्तृत।" "प्रेम-पथ की भूमिका प्रेमचंद ने लिखते हुए कहा है"—१२६ पृष्ठ ×××
"रमेश का उस दशा में बार-बार जाना, जब कि दोनों की काफी बदनामी हो रही है, किसी प्रकार भी संभव दिखाई नहीं देता।"—१३० पृष्ठ।
"पात्र मानो जागनूक होते हुए भी विवश अनूप हैं।" गद्य को कवियों की कसौटी कहते हैं ('गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति')। जिस लेखक का गद्य ही इतना असंबद्ध और पोच होगा, जिसे विराम-चिह्न-प्रयोग का भी ज्ञान नहीं, वह कविता और नाटक क्या लिखेगा। हिंदी के कुछ संपादक लेखकों का नाम देखते हैं, काम नहीं। अध्यापक किसी पाठ्य पुस्तक को स्वयं पढ़े बिना पढ़ाने लगे, तो बहुत बुरा नहीं; पर संपादक के लिये स्वयं देखे-पढ़े बिना किसी लेख को प्रकाशित करना बहुत बुरा है।

लाहौर से समय-समय पर बड़ी विचित्र पुस्तकें प्रकाशित होती हैं। इनके लेखक-प्रकाशक साधारण व्यक्ति नहीं, अनेक उपाधि-युक्त अध्यापक-प्राध्यापक हैं। 'प्रभाकर'-परीक्षा की एक विचित्र पुस्तक है 'काव्य-प्रदीप', और दूसरी है 'छंद-रत्नावली'। पहली पुस्तक के प्रणेता श्रीपं० रामबहोरी शुक्ल एम्० ए०, साहित्यरत्न, अध्यापक क्वींस कॉलेज, बनारस हैं, और दूसरी के डी० ए० वी० कॉलेज के प्राध्यापकद्वय पं० राजाराम शास्त्री और पं० रामरूप शास्त्री, बी० ए०, प्रभाकर। ये दोनों पुस्तकें अतिशय दूषित हैं। अब तक दो ही प्रकार के छंद प्रचलित और स्वीकृत थे। इन ग्रंथों ने चार प्रकार के छंद माने हैं। हिंदी-छंदःप्रभाकर, जो सर्वमान्य प्रामाणिक ग्रंथ है, और संस्कृत-वृत्तरत्नाकर, छंदोमंजरी आदि भी दो ही प्रकार के छंद मानते हैं। आर्या और वैतालीय को मात्रा-गणना-प्रधान होने से मात्रा-छंद ही माना है, और कवित्त (घनाक्षरी) आदि मुक्तक छंदों को वर्ण-गणना-प्रधान होने से वर्ण-छंद। स्वर्गीय पंडित नाथूराम 'शंकर' शर्माजी ने अनेक नए छंद बनाए हैं—कलाधरात्मक राजगीत (कलाधर छंद से), भुजंग-प्रयातात्मक मिलिंदशाद (भुजंगप्रयात से), पर 'काव्य-प्रदीप' और 'छंद-रत्नावली'-आविष्कृत 'उभय छंद' और 'मुक्त छंद' का उल्लेख भी उनके 'अनुरागरत्न' में, जिससे 'प्रदीप' और रत्नावली ने 'उभय छंद' और 'मुक्त छंद' के उदाहरण लिए हैं, नहीं है। कविवर 'शंकर' महाराज ने अपने 'अनुरागरत्न' के प्रारंभ (तीसरे पृष्ठ) में मात्रा, वर्ण और मुक्तक का उल्लेख तो किया है, पर उभय और मुक्त छंदों का नहीं। उन्हें अभीष्ट होता, तो वह अपने छंदों को स्वयं ही उभय छंद या मुक्त छंद नाम दे देते। पर वह ऐसा क्यों करते—बड़े लोग शास्त्र-मर्यादा और ज्ञान-विज्ञान-परंपरा का सदा ध्यान-मान रखते हैं। छंद-शास्त्र विज्ञान-विषय है, साहित्य-विषय नहीं। शास्त्र-विज्ञान में साहित्य-ग्रंथों की-सी भावुकता और रागात्मकता नहीं होती, गणितीय सत्य होता है। कविवर 'शंकर' ने मात्रा छंदों में भी वर्ण-संख्या-समता का कठिन नियम अवश्य निभाया, पर उन्हें 'उभय छंद' नहीं, रोला, सरसी आदि मात्रा-छंद ही माना है। 'काव्य-प्रदीप' और 'छंद-रत्नावली', दोनों इस रोला-छंद को ठोक-पीट-कर 'उभय वृत्त' बना बैठे हैं—

"ऊपर को जल सूख-सूखकर उड़ जाता है;
सरदी से सकुचाय, जलद-पदवी पाता है।
पिघलावे रवि-ताप धरातल पै गिरता है;
बार-बार इस भाँति सदा हिरता फिरता है।"

पर 'शंकर' महाराज इसे 'अनुरागरत्न' के ५३वें पृष्ठ पर 'रौला-छंद' लिख गए हैं। वस्तुतः यह रोला-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छंद ही है, और कुछ नहीं। प्रत्येक चरण की मात्रा-वर्ण-संख्या-समता ही वर्ण-छंद के लिये आवश्यक नहीं। वर्ण-सम-छंद के लिये प्रत्येक चरण के वर्णों की लघु-गुरु-क्रम-समता ही अनिवार्य है। इसी समता से वर्ण और मात्राएँ भी समान हो जाती हैं। केवल मात्रा-समता मात्रा-छंद के लिये पर्याप्त नहीं। इसी प्रकार वर्ण-छंद के लिये केवल मात्रा-वर्ण-संख्या-समता अपर्याप्त है। लघु-गुरु-क्रम-समता के विना वर्ण-छंद (सम) नहीं बन सकता। उल्लिखित छंद में चारो चरणों के प्रथमाक्षरों का मात्रा-मान समान नहीं है—प्रथम-चतुर्थ चरण के प्रथमाक्षर ऊ—बा दीर्घ (गुरु) हैं, पर दूसरे-तीसरे के ह्रस्व (लघु)। समस्त छंद में वर्णों के लघु-गुरु-क्रम की व्यापक विषमता है; इसलिये यह वर्ण-छंद नहीं। वर्ण-छंद है, तो उसका नाम बताइए, कौन वर्ण-छंद है? 'उभय छंद' वही होगा, जो दो छंदों की परिभाषा को संतृप्त करेगा। ऊपर उद्धृत छंद ऐसा नहीं कर सकता; क्योंकि दो भिन्न या विरुद्ध तथ्यों की एक ही परिभाषा नहीं हो सकती; इसलिये उक्त छंद किसी विचार से भी 'उभय छंद' नहीं। 'छंद-रत्नावली' का 'हिंसक मद्यप आमिष-भोजी, कपटी वंचक चोर।' भी उभय छंद नहीं, सरसी (मात्रा छंद) है। वस्तुतः उभय छंद होता ही नहीं, हो ही नहीं सकता। होता, तो आर्ष ग्रंथ 'छंदःसूत्र' उसका उल्लेख अवश्य करता। जिस पद्य या छंद में मात्रा-वर्ण-समता हो, वर्णों के लघु-गुरु-क्रम की समता न हो, वह मात्रा-छंद ही है, वर्ण-वृत्त नहीं। मात्रा-समछंदों की अपेक्षा वर्ण-समवृत्तों में अधिक समता होती है। इन्हें गाना और इनका संगीत स्वरांकन करना (मात्रा छंदों से) अधिक सरल और सुविधामय होता है। समता में शक्ति, शंकरता और सुंदरता होती है। इसीलिये कविजन समता चाहते हैं। इन्हीं—शक्ति-शंकरता-सुंदरता—गुणों की रक्षा और प्रदर्शन के लिये कविवर 'शंकर' ने मात्रा-छंदों में भी वर्ण-समता निभाई है। हमारा विश्वास है, सारा 'काव्य-प्रदीप' शुक्लजी की रचना नहीं। यदि यह शुक्लजी की रचना है, तो 'एम्० ए०' और 'साहित्यरत्न' का कुछ भी मान-मूल्य नहीं। खेद है, छात्र-छात्राओं को ऐसे अशुद्ध ग्रंथ पढ़ने ही पड़ते हैं।

'काव्य-प्रदीप' और 'छंद-रत्नावली' ने अपने स्वीकृत लक्षणों और परिभाषाओं का स्वयं खंडन भी कर दिया है। विद्यार्थी खंडन को ठीक समझें या मंडन को? वर्ण-समवृत्त की परिभाषा में दोनो ने वर्ण-गुरु लघु-क्रम-समता की चर्चा की है; पर 'उभय छंद' के आविष्कार ने परिभाषा का खंडन कर दिया। क्योंकि किसी उभय छंद में गुरु-लघु-क्रम-समता नहीं। 'छंद-रत्नावली' के अनेक उदाहरण भी अशुद्ध हैं। जब छंद के लिये वर्ण या मात्राओं की संख्या और गति-यति-नियम आवश्यक और स्वीकृत है, तब इनके विना—इन गुणों से रहित—कोई रचना या वाक्य अथवा वाक्यांश छंद कैसे हो सकता है? जिसे 'प्रदीप' और 'रत्नावली' ने 'मुक्त छंद' माना है, उसमें तो वर्ण-मात्रा और गति-यति का तो क्या, चरण का भी कोई नियम नहीं। फिर उसे छंद क्यों कहें? यदि 'मुक्त छंद' से अभिप्राय 'छंद के बंधन से मुक्त' रचना से है, तो भी उसे 'मुक्त छंद' न कहना चाहिए। गद्य ऐसी ही रचना को कहते हैं। छंदो-बंधन-मुक्त रचना ही तो गद्य है। बहुत ही रसीला गद्य हो, तो गद्यकाव्य और लयमय रचना हो, तो लयमय गद्य कहिए, 'मुक्त छंद' नहीं। किसी भी गद्य के लिये 'छंद' नहीं कह सकते। जिस वाक्य में मात्रा-ताल-काल-मान का कुछ भी नियम नहीं, उसे छंद न कहना चाहिए। अवश्य ही लयमय गद्य छंद के समीप है; क्योंकि उसमें—उसकी पंक्तियों में, चरणों में नहीं—मात्राओं का समानुपात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होता है। उसकी पंक्तियों में ६,६,३,१५,१२,१८ इत्यादि मात्राओं की व्यवस्था होने से तीन के अनुपात का नियम है। उसकी प्रत्येक पंक्ति के मात्रा-सूचक अंक तीन के समापवर्त्य हैं। सच तो यह है कि 'मुक्त छंद' नाम भ्रमात्मक है; क्योंकि 'मुक्त छंद' होता ही नहीं। परीक्षा के लिये नियत पाठ्य पुस्तकों में ऐसी ज्ञान-विज्ञान-विहीन बातें न होनी चाहिए। क्या काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा और (प्रयाग-)हिंदी-साहित्य-सम्मेलन इस मिथ्या ज्ञान-प्रचार का विरोध कर इस अनर्थ से हिंदी की रक्षा करेंगे?

एक अनेक पुस्तकों के लेखक ने स्व० राजा लक्ष्मणसिंह-अनूदित (हिंदी) शकुंतला-नाटक का 'संपादक' के नाम से 'भाष्य' किया है। राजा साहब छंदों के अर्थ भी स्वयं कर चुके थे। उनका अनुवाद (पद्यों के अर्थों-सहित) भिन्न-भिन्न स्थानों से चार-पाँच बार जन्म ले चुका है। अब लाहौर में उसका जन्म हुआ है। 'शकुंतला' का यह लाहौरी जीवन—तन-मन, रंग-रूप—बहुत विचित्र है। यह कालिदास को ईसा की छठी शताब्दि में घसीट लाया है। राजा लक्ष्मणसिंह के 'शकुंतला-नाटक' पर संपादक ने अपनी विचित्र सम्मति दी है—"इस अनुवाद में असली शकुंतला-नाटक का मज़ा तो नहीं, परंतु बहुत रूप है मूल का × × ×" "इनके अनुवाद में मूल के भाव अविकल रूप से आ गए हैं।" "भाषा में उतना ओज नहीं आ सका।" "पद्यों में वह चमक नहीं है।" फिर भी "कवि के भावों को रखने में अनुवादक ने पूर्ण सफलता प्राप्त की है।" सम्मति के इन परस्पर विरोधी वाक्यों पर पाठक स्वयं विचार करें। "कालिदास के समय 'हवाई जहाज़ों' की तो कल्पना भी नहीं थी"—भू० ११ पृष्ठ। मेनका को अनेक बार 'मैनका' ही लिखा है, अनसूया को 'अनुसूया'। 'जो कन्या के विधवा होने में,' कण्व मुनि के उपदेश लक्ष्य कर लिखा है—"ऐसे उपदेश तो आजकल बूढ़ी खुर्राट औरतें भी जाते समय दे जाती हैं।"—२३ पृष्ठ। 'बूढ़ी तपस्विनी'—'Female ascetic'—गौतमी को 'ऋषि-स्त्री' लिखा है। दुर्मिल छंद को मदिरा छंद और 'मृगया' को यहाँ भी मृग माना है। अरगल (अर्गला) का अर्थ (१३४ पृ०) 'जंजीरों', पद्मिनी का अर्थ (१४८ पृष्ठ) 'तपस्विनी' किया है। "सज्जन आदमी मित्रों पर तीर के बाण नहीं छोड़ते",—(१२६ पृष्ठ) "जिसने अभी आधी ही माता का दूध पिया है" ('आधो पीयो मातुथन') कैसे वाक्य हैं। समस्त पुस्तक (आद्योपांत) अनर्थों से दूषित है।

अँगरेज़ी के 'लिटरेचर' का अनुवाद हिंदी में 'साहित्य' किया जाता है। पर यह हमारा दास्य संस्कार और अविवेक है। अँगरेज़ी में 'लिटरेचर' का प्रयोग गणित-विज्ञान-इतिहास-भूगोल-काव्य-नाटक, सबके लिये होता है। क्यों होता है, इसके उत्तर की हमें जिज्ञासा नहीं, जिये हो, ढूँढ़ ले। संस्कृत हिंदी में 'साहित्य' के अतिरिक्त अन्य—वाङ्मय, भारती, सरस्वती आदि—शब्द भी हैं। अँगरेज़ी के 'लिटरेचर' का अर्थ 'वाङ्मय' या 'भारती' ही उचित है, 'साहित्य' नहीं; क्योंकि 'साहित्य' का प्रयोग मधुर, रसमय रचना के लिये ही उपयुक्त है, समस्त वाङ्मय के लिये नहीं। साहित्य में काव्य, नाटक, चंपू, उपन्यास, कहानी, अलंकार, अभिधा, लक्षणा, व्यंजना आदि ही गिने जाते हैं, इतिहास, भूगोल, खगोल, विज्ञान, वैद्यक, ज्योतिष, स्मृति-ग्रंथ (आदि) नहीं। और लोग अपनी भाषा का शब्द-भांडार बढ़ाते हैं, हम घटा रहे हैं। जब विज्ञान और साहित्य में अंतर है ही, तो उस अंतर को ठीक-ठीक व्यक्त करनेवाले सूक्ष्म भाव-बोधक शब्द भी हमारी भाषा में बढ़ने चाहिए। 'वाङ्मय' में जो सर्वव्यापकता है, वह 'साहित्य' में 'लिटरेचर' की दासता से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मान लें ? अँगरेज़ी में 'लिटरेचर' के साथ ही 'लाइट लिटरेचर' भी कुछ समय से दिखाई देता है। हमारे भांडार में युगों से 'वाङ्मय' और 'साहित्य' जीवित चले आए हैं। हम दोनों को जीवित रखकर अपनी भाषा की व्यवच्छेदिका शक्ति—सूक्ष्मांतर-बोधिका—शक्ति की रक्षा और वृद्धि क्यों न करें। 'राजा','महाराज' का अर्थ अब 'किंग्' नहीं रहा, अथवा किंग् का अर्थ 'राजा', 'महाराज' नहीं—

'मर्द वे हैं, जो ज़माने को बदल देते हैं।'

साधना-हीन हो केवल पैसे की प्रेरणा से जो कार्य किया जाता है, उसका परिणाम कभी अच्छा नहीं होता। चोर और लोभी लेखकों की रचनाएँ अच्छी नहीं। उनके मूल में ज्ञान और लोक-कल्याण की प्रेरणा नहीं। हिंदी के अनेक लेखक साधना-हीन, चोर, भूखे और लोभी हैं। उनकी रचनाएँ यही बताती हैं। पुस्तकें अशुद्ध, उन पर की गई टीका-टिप्पणी अशुद्ध, पुस्तकों की कुंजियाँ व्यर्थ, संग्रह-ग्रंथ तक अशुद्ध। संग्रहकर्ता की प्रमत्तता से मूल ग्रंथकार का आशय कुछ-का-कुछ हो गया है। इन प्रमत्त लेखकों में बी० ए०, एम्० ए०, डॉक्टर, न्यायतीर्थ, काव्यतीर्थ, शास्त्री, प्रभाकर और साहित्यरत्न भी हैं। प्रमत्त विचार तो मदिरा से भी अधिक हानिकारक होते हैं।

'गृहस्थ', 'वानप्रस्थ' के अर्थ में 'गृहस्थी', 'वानप्रस्थी' लिखना व्यर्थ, अनावश्यक है, समय, शक्ति और मसि-कागद का दुरुपयोग है। लिखने-पढ़ने, वाक्य-विन्यास और शब्द-चयन में भी मितव्यय और संक्षेप का ध्यान रखना आवश्यक है। 'मकरंद' और 'नवनिधि' नाम की दो संग्रह-पुस्तकें लाहौर से प्रकाशित हुई हैं; दोनों ही प्रभाकर-परीक्षा के लिये नियत हैं; दोनों के विषय और प्रकाशक भी एक हैं; पर दोनों में अशुद्धियाँ अनेक हैं। 'मकरंद' का अर्थ (२०१ पृष्ठ पर) 'पुष्परस' है, और मधु का अर्थ भी (२१६ पृष्ठ पर) 'पुष्परस' ही लिखा है। क्या 'मकरंद' और 'मधु' एक ही वस्तु हैं ? वैद्यक-निघंटु तो दोनों को एक ही वस्तु नहीं मानता। 'कुमुदिनी' का अर्थ (२२३ पृष्ठ) 'कमलिनी' उचित नहीं। यदि इस अर्थ को शुद्ध मान लें, तो 'कुमुदिनी-नायक' और 'कमलिनी-नायक' भी एक ही मानने पड़ेंगे। (क्षुद्र नदी भरि चलि) 'उतराई' का अर्थ 'उबाल आ गया', 'अनैसे' का अर्थ 'टेढ़ी निगाह से', 'काछनी' का 'धोती', 'रोपै' का 'बोता है', 'उशीर' का 'खसखस', 'छैलछबीली' का 'अल्हड़', 'मुकुलित' का 'मुरझाए' किया गया है। 'ख़स' और 'खसखस' को एक ही समझ लिया गया है। 'नवनिधि' में भी अनर्थ भरा पड़ा है—'विसासी' ("तातें बड़ो बधिक विसासी कहियतु है"। "कबहूँ वा विसासी सुजान के आँगन मो अँसुवान को लै बरसौ।") का अर्थ 'विश्वासी' किया है; दुःखदायी, सतानेवाला नहीं किया। (कोक की) कारिका (श्लोकबद्ध या पद्यबद्ध व्याख्या अथवा परिभाषा वा विवरण) का अर्थ 'नटी' (१४३ पृष्ठ), 'सूतक' (अशौच) का 'नवप्रसूता स्त्री', 'चप्परि' (चपरि) का अर्थ (चटपट, झटपट न कर) 'छाते हुए', 'जाँवन' (दही, जमावन) का 'जामुन' (फल), 'चित्रगुप्त' ("गंगा के चरित्र लखि भाष्यौ जमराज यह—ए रे चित्रगुप्त मेरे हुकुम में कान दे।" "जकिसे रहे हैं जम, थकिसे रहे हैं दूत × × × चित्र कोसो लिखो चित्रगुप्त चुपचाप है"—यमराज-लेखक) का अर्थ 'यमराज' ही कर दिया है। एक सज्जन ने दीह का अर्थ (दीर्घ न कर) 'दृष्टि' किया है। जिन सहृदय सज्जनों को अपनी भाषा की ऐसी दुर्दशा पर आँसू बहाने की क्षमता और इच्छा हो, वे लाहौर के 'आर्य' के संवत् १९९६ मार्गशीर्ष से सं० १९९७ श्रावण तक के अंक पढ़ने का कष्ट करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रमत्त रचना का एक उदाहरण 'चिरजलन मेरी कहानी०' ऊपर उद्धृत है। (वरदान बानी के पश्चात् भी चिरजलन० चाहिए था, न-जाने कैसे रह गया।) 'चिरजलन मेरी कहानी' इस गीत का शीर्षक नहीं हो सकता; क्योंकि वह सब पंक्तियों में व्याप्त नहीं। समस्त गीत में, अंत में पूर्ण विराम के अतिरिक्त, नवीं पंक्ति के मध्य में एक लघु विराम (,) और है। सहृदय पाठक, उक्त पंक्तियों में संबद्धता और औचित्य ढूँढ़कर अर्थ कीजिएगा। पत्रिका के संपादकद्वय और उनके 'कवि' को छोड़कर और कौन यह गीत समझने में समर्थ है? रहस्यवाद की आड़ में ऐसी लक्ष्य-विषय-विहीन रचना भाषा का शृंगार नहीं, कलंक है। जिन्हें हमारा कथन चुभता हो, वे उक्त गीत का अर्थ प्रकाशित कर हमारा अज्ञान दूर करने की कृपा करें।

जिन्हें अपनी भाषा का अभिमान है, जो उसके सेवक और पुजारी हैं, जिन्हें भिन्न भाषा-भाषियों और अन्य प्रांतीय साहित्य सेवियों से टक्कर लेनी पड़ती है, उन्हें ऐसी प्रमत्त रचनाओं से अतिशय लज्जित होकर क्षुब्ध होना पड़ता है। यह लेख एक ऐसे ही क्षुब्ध हृदय का उद्गार है। राष्ट्र-भाषा हिंदी के लेखकों को समर्थ और सतर्क होकर लिखना चाहिए। आजकल के अधिकांश लेखों और पुस्तकों से असमर्थता, प्रमाद, अस्वास्थ्य, ईर्ष्या-द्वेष, दासता, दारिद्र्य, आतुरता, अज्ञान, अयोग्यता और अनभ्यस्तता की दुर्गंध आती है। इन्हें दूर कर शुद्ध, समर्थ, सावधान होकर ही सरस्वती, पूजा करनी चाहिए।

बाबू मैथिलीशरण गुप्त महाशय की 'यशोधरा' को एक लाहौरी कुंजीकार ने 'चंपू' लिख मारा है। यह न सोचा कि 'चंपू' में नाटकत्व या अभिनय नहीं होता, दृश्यादि की प्रत्यक्षता नहीं होती। पंजाब के अनेक ऐंग्लो-वैदिक बाबू जन (रोमन-अँगरेज़ी में) संस्कृत-हिंदी-शब्दों को विकृत कर लिखते हैं—'शंकराचार्य' को 'Shankara Charya', आर्य-समाज को 'Arya Smaj' (आर्यस्माज), 'हिमालय' को 'हमाला' ('Hamala'), शूर्पणखा को 'Sarupnakha' (सरुमखा), विचित्र को 'Vachitra' (वचित्र), 'धृतराष्ट्र' को 'Dharitarashtara' ('धरितराष्टर') और कुरुक्षेत्र को 'Kuru Kashetara' (कुरुकशेतर) लिखते हैं। ज्ञात होता है, स्वामी दयानंद के श्राद्ध और उनकी उद्देश्य-पूर्ति के लिये ऐसा लिखना आवश्यक है। "विवेकभ्रष्टानां भवति विनिपातः शतमुखः।" सनातनी लेखक इनसे भी गए-बीते हैं। प्राचीनता के नाम पर बाल-विवाह का तो मंडन करते हैं, पर देवनागरी-लिपि-वर्ण-माला का नहीं। पंजाब में सलीम को Sleem (स्लीम) और हयात को Hyat लिखते हैं। 'ह्यात' का न-जाने क्या अर्थ है। पंजाब के हिंदू कौशल्या, दुर्योधन, द्रौपदी आदि न शुद्ध लिख सकते, न बोल सकते हैं। हम पढ़े-लिखे 'ग्रेजुएटों' की बात कर रहे हैं, साधारण जनों की नहीं। एक प्रोफ़ेसर एम्० ए० ने रावण के पुत्र का नाम 'मेघदूत' (Meghdut) लिखा है। कालिदास के काव्य का नाम 'मेघनाद' (Meghanada) होगा। ऐसे प्रसिद्ध लेखक हैं, जो अपनी रचना का अर्थ स्वयं नहीं कर सकते। यदि कोई उनसे उन्हीं की रचना का अर्थ पूछ बैठे, तो उनकी लाल-लाल आँखें सहे—प्रमत्तता के मद से डरे।

(समाप्त)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धार्मिक स्वानुभव

[रावराजा डॉक्टर श्यामविहारी मिश्र डी० लिट्० तथा रायबहादुर पं० शुकदेवविहारी मिश्र बी० ए०]

बालपने नाम हू देवालय को सुन्यो नहीं, ग्राम में सिवालय अनेक लखि पायों मैं;
आसुतोष, भोलानाथ, सुनिकै तिहारे नाम रावरे चरन माहिं चित्त बिरमायों मैं।
भगति सों मानौ कै बिचार क्लब-जीवन को साँझ को नितै ही तब दरस को आयों मैं;
आपने बनावन की सकति हुती न तब, औरन के छंद तुम्हैं नेम सों सुनायों मैं॥ १॥

भूप इंद्र बिक्रम नरेसजू सिवालय को सैर-हित साँझ को अवस्य नित जाते थे;
सिगरो समाज मनमोहक निहारि हम संभु ढिग जाकर जरूर सुख पाते थे।
एक दिन ही मैं सिवतांडव को कंठ करि स्तोत्र वह नेम-युत तुमको सुनाते थे;
पुन्य पायबे की आस मन मैं रही न दृढ़ तऊ तब चरन पै सीस चलि नाते थे॥ २॥

आतमा मैं रंचहू संदेह प्रथमै न उठो, परमातमा पै कछु धुक-पक बढ़ि गो;
जगदीसबाद जब फ़िलट को बि० ए० मैं पढ़ो, संसौ सहमूल चित चंचल सों कढ़ि गो।
चारौं बेद पढ़े ते न धरम को बोध भयो, दसौ उपनिषद् सों मोद मन मढ़ि गो;
इतिहास-मूलक बिचारि किंतु वेदन को, ताके रचिबे को चारु चोप चित चढ़ि गो॥ ३॥

महाराज बिस्वनाथसिंहजू को मंत्रिपद पाय करिबे को मिली सेवा चिर काल है;
मिलतो तहाँईं रहो बैष्णवन संतन त्यों पंडितन आदि को समूह गुन-आल है।
भारतीय त्यों ही योरोपीय दरसन पर जुरतो समाज गुनिगन को बिसाल है;
ईस अरु आतमा पै तरक उठोई करै, होतो न अधारन पै तिल भरि ख्याल है॥ ४॥

माला दस-बीस नित नेम सों जपोई करैं, पै न पुन्य-फल यामैं रंचक लखात है;
धूम-पान जैसे समौ काटिबे को करैं नर, जाप त्यों हमैं हूँ काल-यापन की बात है।
बिरचि पुरान बहु भाख्यो ब्यास भगवान पुन्य उपकार, पाप अपकार ख्यात है;
उपकार-अपकारवारी बात जाप माहिं बहुत बिचार हू किए न दरसात है॥ ५॥

तौबा पाप-स्वीकृति की बिमल बिदेसी बात भारतीय पापिन को भई भगवान यह;
बेदहू मैं सबितर संग ऐसो भाव रहो पैहो अति स्वल्प, नहिं नेकहू महान यह।
गीता लौं न पन्य गंग-न्हान मैं कछूक लखो, पीछे ते गयो ह्वै खल-मंडली को त्रान यह;
लाखन बिचारे नसे पापिन की दाप सों जे, तिनको अँगूठा दिखरायबे की सान यह॥ ६॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यास बादरायन त्यों संकरहु, रामानुज, तुलसी, कबीर आदि सिच्छक जिते भए;
करिकै बिसाल ख्याल स्वमत पै सबहिन उपदेस एक ईस-मूलक नितै दए।
दैकै एक पाई लाभ लाखन के पायवे की झूठी लालसा को कितु जनता फिरे लए;
धरम-धरम की पुकार बीच नीचन के स्वारथ के साधक हमारे तीर्थ ह्वै गए॥ ७॥

बही-बही फिरै लागी बही चित्रगुपित की, मचै लगो जम के सदन हाहाकार है;
पापन को गंग मैं पछारै लगे खलगन, पापिन की भई अति गरम बजार है।
जगत के काज सब उलटे चलन लागे, पुन्यवान रोए करि-करि डिंड़कार है;
ऐसो मत पर्‌यो है पसंद सब पापिन को, नहीं पुन्यवानन हूँ कियो इनकार है॥ ८॥

जीवन-समुद्र लहरात जग देहनि मैं, एक जीव को पै कहूँ लेस न लखात है;
गरभ के पहिले त्यों मरन पिछारू कैसे रहे, कहाँ जैहैं, नहिं जानिवे की बात है।
पुल पर ठाढ़े तौ अवस्य हैं, पै कैसे आए, कहाँ जैहैं, नहीं कछू चित मैं समात है;
होत परिवरतन रहत सदा हीं, काल अशना को रूप धरि देहन को खात है॥ ९॥

ज्ञान जो बिज्ञान को बिचारौ मन मैं, तौ मौत-उतपतिवारी सबै बातैं हल होती हैं;
देहन के नसे ते नसैं न पंचभूत, एक रूप के नसे ते अन्य हेत बीज बोती हैं।
रूप को बदलिबोई जीवन-मरन जानौ, देहैं एक अणु हू नसे ते नहिं खोती हैं;
खेलो करैं देहैं परिवरतनवारो खेल, आतमा कहाँ सों लै सरीर मैं पिरोती हैं॥१०॥

आतमा जो होती, तौ बड़ोई उपकार होतो, छूटि जातो जीवन-मरनवारो झगड़ा;
ईहा यहि ओर सब प्रानिन की दौरो करै, पै न दृढ़ मूल लै मिटत यह रगड़ा।
आतमा न भए ते अवस्य कृतनास मिलै, अकृताभियागम को परै उठि बगड़ा;
पै यह अलभ्य निधि ताके पास हूबे की न हिम्मति परति बिन लहे तर्क तगड़ा॥११॥

परिमाणु-मूलक लखात है जहान सब, परिमाणुहू को केंद्र सकति को जानियै;
सकति सों इतर कछू न दरसात इत, सिगरो जगत खेल ताही को प्रमानियै।
सकति - समूह सोई राजि जगदीस रह्यो, एतोई अद्वैत मत संकर को मानियै;
थाई जीव गुने ते गिरत सो अमोघ मत, ईस मैं लगति लघुताई दुखदानियै॥१२॥

व्यवहार - मूलक सरूप हैं जगतवारे, रूप मैं दिखात नहीं साँची थिरताई है;
संकरजू व्यवहार जीव मैं लगावत जो, तामैं संक - पूरित तरक दरसाई है।
जीव तौ कबहुँ व्यवहार मैं न आवत है, अनुभव माहिं छटा सकति की छाई है;
छाँड़ि व्यवहार भाव मानौ जो अद्वैत मत, वामैं तौ बिज्ञानवारी छापहू सोहाई है॥१३॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिधि, हरि, हर तीनि भाव-मात्र ईस के हैं, इन्हैं व्यक्ति मानिबो पुरानन की भूल है;
ग्रीक, शक, हूण आदि भूपन के साधिबे मैं भई ही अवस्य राजनीति अनुकूल है।
द्राबिड़ बिचार किंतु भरे ते स्वमत माहिँ आरज-धरम सत्य गयो मिलि धूल है;
पंडे औ' पुरोहित जे पाप-स्वारथन-भरे तिनही की बात करै जनता कबूल है॥१४॥

अनुभव देहन को मिलत सदा ही रहै, देहिन को हाल हमैं पूरो अबिदित है;
मन बुधि, चित, अहँकार को चतुष्ठै जौन देहिन को साखी, सो बतायो गयो नित है।
साखिन को बल किंतु देखि जो सकल परै, सोऊ अंत माहिं देह ही पै परिमित है;
ज्ञान पंच इंद्रिय बताती हमको हैं जौन, ताही के बिचार को प्रसार चढ़ै चित है॥१५॥

"हम हैं" को भाव जो बनोई सब जाम रहै, ताही पै महान जीवबादिन को जोर है;
सुमिरन-मनन के बल जे प्रबल महा, तिनको प्रकास फैलो रहै चहुँ ओर है।
देखिबे औ' जानिबे* को अंतर बिसाल जौन, ताहू मैं लखात बुधि-बल बरजोर है;
चेतना जो महत प्रभाव दरसायो करै, सोऊ जीवबाद को प्रमान घनघोर है॥१६॥

है तौ जीव औसि, पैजू थिर कै अथिर, एक सक्ति कैधौं व्यक्ति, यह मरम ललाम है;
दास-भाव रामानुजवारो ठीक बैठै, कधौं सीमित अद्वैतबाद माँचो गुन-धाम है।
इतै तौ बिचार-बल सारो दरसात पंगु, भाष्यो तुलसीहू ह्याँ तरक को न काम है;
ररंकार मूल केधौं दसरथनंद मानौ, साँचो बिसवास मैं लखात राम-नाम है॥१७॥

स्वारथ के हेत गुरु पाप कबहूँ न कियो, आपने चलत हितै प्रजागन के किए;
स्वामि-लोन-लाज लगि पापन के गोपन की जुगुति मैं धारमिक धुकपुक भो हिए।
प्रीति-भाव छाँड़े बिनु झगड़ेहू करि करि कटु उपदेस लौं नरेस को नितै दिए;
या मैं पायो पाप, कै कमायो है बिसाल पुन्य, तौन परमेसुर पै छोड़ि सुख सों जिए॥१८॥

गरहित बिबिध कुपाप जनताऊ करै, एकन के लूटिबे को दूसरी है ततपर;
देस चिर काल सों बनाए बहु दास गए, देखिए उदाहरन मुसलीनी, हिटलर।
यदि सबही के राजसेवक नरक जैहैं, मचिहै करोरिन को उतै जमघट बर;
उनहीं के साथ जम-जातनाएँ भोगिहैं तौ, न तौ नाक जैहैं बैठि बिसद बिमान पर॥१९॥

सब गुन-हीन, सब करम-बिहीन, पुन्य-पापन सों छीन, रूप-रंग हू सों न्यारो है;
सबसों बिरक्त, सबही सों अनुरक्त, बासनानि को न भक्त, बासनानि को सहारो है।

*Perception and conception.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अक अरु अनँद सों रहत उदास, तऊ सत-चित-आनँद जगत-रखवारो है ;
सबसों पृथक, पुनि सबके समीप, जग-रूप जगदीस एक ईस्वर हमारो है ॥२०॥

इच्छन धरै न, त्यों नवीनता करै न, बदलै न नेकु, तऊ सब जग रचि डारो है ;
नभ-सम व्यापि रह्यो सकल पदारथनि, एक सों तबौ न मिलि औरन बिसारो है।
सबसों मिलोई रहै, ध्यान मैं न आवै तऊ, ऐसो कछू जाल जगमोहक पसारो है ;
सबसों पृथक, पुनि सबके समीप, जग-रूप जगदीस एक ईस्वर हमारो है ॥२१॥

जरा मेरी भी तो सुन लीजिए !

आपकी पुस्तकों की सूची अधूरी न रह जाय !!

एक बात ऐसी है—ध्यान रखिए !!!

बिहारी-सुधा

[लेखक, मिश्रबंधु]

महाकवि बिहारीलाल के २७० सर्वश्रेष्ठ दोहों का अर्थ-सहित सुंदर संग्रह

आपकी घरेलू लाइब्रेरी व पुस्तकालयों की शोभा बढ़ाने-योग्य अनुपम

काव्य-ग्रंथ

सजिल्द ॥।=) सादी ।=)

गंगा-ग्रंथागार, ३६, लाटूश रोड, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाई

(एकांकी नाटक)

[श्रीमती रत्नकुमारी एम्० ए०]

स्थान—कॉलेज के विशाल भवन की एम्० ए०-कक्षा का कमरा

[कमरा ख़ूब बड़ा है। बहुत-सी डेस्कें और कुरसियाँ आगे-पीछे, सीधी लाइनों में, रक्खी हैं। डेस्कों के बिलकुल सामने प्रोफ़ेसर की मेज़ है। मेज़ के दाहनी ओर कुछ डेस्कें लगी हैं, उन पर कक्षा की छात्राएँ बैठती हैं। घंटा शुरू होने में कुछ देर है। कुछ विद्यार्थी आकर बैठे हैं, कुछ आ रहे हैं। ख़ूब शोर मच रहा है। आठ-दस लड़के एक जगह जमा होकर धीरे-धीरे बात कर रहे हैं। सहसा एक विद्यार्थी को प्रवेश करते देखकर वे सब उसकी ओर चलते और चिल्लाते हैं।]

"राजेश, राजेश, इधर आओ, इधर।"

[राजेश उत्तर न देकर अपनी डेस्क पर पहुँच जाता और मुस्किराता हुआ हाथ की कॉपी उस पर पटककर बैठ जाता है, फिर कहता है।]

राजेश—"मुझे वहाँ आने की क्या ग़रज़ पड़ी है। तुम लोग आओ, मैं तो आराम से बैठूँगा।"

मोहन (एक विद्यार्थी)—"हाँ भाई, क्यों न हो। आज तो मिज़ाज ही नहीं मिलेंगे।"

राजेश—"क्यों मिलें?"

भवानी (दूसरा विद्यार्थी)—"अरे, अभी से फूलकर कुप्पा मत बनो। देखो, क्या जवाब मिलता है। कहीं बेभाव की न पड़ जाय।"

राजेश (अकड़कर)—"हुँ, बेभाव की पड़ती होगी तुम्हारे-जैसे निकम्मे लोगों पर। मैं राजेश हूँ राजेश, जिसकी इच्छा पूरी होकर ही रहती है।"

रामेश्वर (तीसरा विद्यार्थी)—"कहते तो ठीक हो, पर अब की बार जोड़ भी टक्कर का है।"

[अन्य सब विद्यार्थी अब तक उत्सुकता से सब सुनते रहते हैं, फिर सब पास सिमट आते और कहते हैं।]

सब—"भाई, मामला क्या है? हम लोगों को भी सुनाओ।"

रामेश्वर—"बड़े मज़े की बात है जी।"

सब—"हमें तो कुछ पता ही नहीं।"

रामेश्वर—"अरे भाई! क्या कहूँ? बड़ी भारी रिस्क ली है इन्होंने।"

एक विद्यार्थी—(रामेश्वर को धक्का देकर) "अरे, तो कुछ कह भी कि पहेली ही बुझाता रहेगा?"

रामेश्वर—"अरे, कहता तो हूँ। राजेश की आदत तो जानते ही हो।"

एक अन्य विद्यार्थी—"कौन-सी आदत?"

रामेश्वर—"अरे! जा, जब यही नहीं जानता, तो पूछने क्या चला है। प्रेम करने की, प्रेम।

सब—"ओ, ठीक-ठीक, जानते हैं। तो क्या हुआ?"

एक विद्यार्थी—"क्या कोई नया मामला चला है?"

रामेश्वर—"हाँ जी, बिलकुल नया।"

पहला विद्यार्थी—"कौन है वह, जिस पर इनकी कृपा-दृष्टि हुई है?"

रामेश्वर—"कुमारी अरुणादेवी।"

सब—"अरुणादेवी?"

[सब आश्चर्य से मुँह बनाकर राजेश की ओर देखते हैं। राजेश ज़रा ऐंठ से मंद-मंद मुस्किराता हुआ सबकी ओर देखता है।]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजेश—"तुम सब तो इस तरह मुँह बना रहे हो, जैसे बिजली टूट पड़ी हो। क्योंजी मोहन, तुम तो पहले से जानते थे?"

मोहन—"जानता तो था कि नया प्रेम आरंभ किया है, पर प्रेमिका का नाम नहीं मालूम था। मैं तो छाया को समझता था।"

एक अन्य विद्यार्थी—"भाई, बिजली टूटने से बढ़कर आश्चर्य की बात है।"

राजेश—"आख़िर क्यों?"

वह विद्यार्थी—"अरुणा-जैसी लड़की को कोई इस दृष्टि से देख सकता है, यह तो मुझे असंभव ही जान पड़ता है। क्यों भाई, तुम लोगों की क्या राय है?"

सब—"हम भी यही सोचते हैं।"

राजेश—"मुझे समझाओ, आख़िर तुम लोगों ने ऐसी राय क्यों क़ायम की है?"

वह विद्यार्थी—"राय क़ायम की है अरुणा को देखकर। उसके मुख पर आंतरिक पवित्रता की जो झलक है, जो स्निग्ध शांति है, वह लोगों को उसकी ओर आँख उठाकर बुरी दृष्टि से देखने ही नहीं देती। उसकी उज्ज्वल दृष्टि में वह चापल्य ही नहीं, जो अन्य लड़कियों में है। मिस सरला, मिस किरण इत्यादि को देखो, कैसी बनी-ठनी रहती हैं। उनके एक-एक हाव-भाव इस बात की चेष्टा में रहते हैं कि हम लोग उनकी ओर मुग्ध होकर देखें, उन्हें कुछ समझें, और उनके रूप इत्यादि की चर्चा करें। परंतु मिस अरुणा ·····ओह! राजेश, तुम क्या करने चले हो?"

राजेश—"अरे बाप रे! तुम तो मिस अरुणा के भक्त बन गए दीखते हो। (ज़ोर से हँसता है।) पर सुनो तो, मैंने कल बड़ा सुंदर प्रेम-पत्र भेजा है, जगत!"

जगत—"सच?"

राजेश—"और क्या झूठ। अरे जगत! तू तो बड़ा साहसी है।"

जगत—"भैया, मैं तो नहीं, तुम्हीं हो।"

राजेश—"क्यों, भला मैं क्यों हूँ?"

जगत—"यह जो बुरा काम आरंभ किया है, उसके करने की हिम्मत तुम्हें ही हुई, मुझे तो हो नहीं सकती थी। और, मुझे ही क्यों, इन सबमें से किसी को भी नहीं हो सकती थी।"

दो-तीन विद्यार्थी—(एक साथ) "बात तो ठीक कहते हो जगत!"

[राजेश झेंप जाता है, पर फिर भी ज़रा अकड़ दिखाने को कहता है।]

राजेश—"तो इसमें बुराई ही कौन-सी हो गई, जो तुम ऐसा कहते हो?"

जगत—"बुराई नहीं, सच कहते हो?"

राजेश—"तुम्हारी बातें तो मेरी समझ से बाहर हैं। इसमें सच-झूठ का क्या सवाल?"

जगत—"इसी पर तुम्हारे कृत्य का भला-बुरा परिणाम निर्भर है।"

राजेश—"वह कैसे?"

जगत—"अगर तुम्हें सच्चे मन से विश्वास है कि इसमें बुराई नहीं, तो तुम्हारा प्रेम पवित्र होगा। ऐसा प्रेम, जो आत्मबलिदान देकर भी प्रिय व्यक्ति की कल्याण-कामना करेगा। परंतु मुझे संदेह है कि तुम्हारा प्रेम पवित्र, निष्काम है। ऐसा होता, तो तुम इस प्रकार ढिंढोरा न पीटते। यह भी वैसी ही बात है, जैसी तुम सर्वदा करते आए हो। मैं इतना विचलित न होता, अगर इस मामले का संबंध अरुणा से न होता।"

राजेश—"तो बाबा, अरुणा पर ही इतनी भक्ति क्यों है? वह तुम्हारी है कौन?"

जगत—"राजेश, तुम प्रेम का स्वाँग भरते-भरते पशु हो गए दीखते हो। अब तक तुमने उन्हीं लड़कियों के हृदयों से खिलवाड़ किया है, जो स्वयं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसे बुरा नहीं समझती थीं। तुम्हारी तरह वे भी समझती रही हैं कि हम खिलवाड़-मात्र कर रही हैं। परंतु अरुणा ऐसी नहीं। वह जिस दृष्टि से हम लोगों की ओर देखती है, उससे बहन का पवित्र स्नेह झरता रहता है। उसकी दृष्टि में, हृदय में वात्सल्य की धारा उमड़ा देने की शक्ति है। मैं नहीं, मैं ही क्यों, ये इतने सब जो खड़े हैं, उसके विषय में कलुषित, वासनामय आकर्षण को स्वप्न में भी मन में स्थान नहीं दे सकते।"

[राजेश सब विद्यार्थियों की ओर देखता है। उनके चेहरे जगत की बातों का समर्थन करते जान पड़ते हैं, परंतु वह इसे स्वीकार करने में अपनी हार समझकर और भी उच्छृंखल हो उठता है। डेस्क पर खड़े होकर ज़रा क्रुद्ध स्वर में कहता है।]

राजेश—"रहने भी दो यह सब स्वाँग। तुम लोगों की वहाँ तक पहुँच भी हो सकती थी? मेरी पहुँच होती देखकर अब यह भगतपने की बातें सूझ रही हैं। यह हिम्मत तो मुझी में है कि जो हाथ भी न रखने दे, उसे झुकाकर ही छोड़ूँ। समझे?"

[किसी के बोलने से पहले ही चपरासी कुछ काग़ज़-पत्र लेकर आता और प्रोफ़ेसर की मेज़ पर रखता है। सब विद्यार्थी अपनी-अपनी जगह बैठ जाते हैं। प्रोफ़ेसर का प्रवेश, उनके पीछे-पीछे चार छात्राएँ भी आकर दाहनी तरफ़वाली डेस्क पर बैठ जाती हैं, पर अरुणा उसमें नहीं। सब लड़के एक दूसरे का मुँह देखकर कानाफूसी करते हैं।]

प्रोफ़ेसर—(रजिस्टर उठाकर) "हाज़िरी बोलो।"

[प्रोफ़ेसर एक-एक नाम पुकारते हैं, हाज़िरी समाप्त हो जाने पर उठ खड़े होते हैं, और "मैं आज क्लास नहीं लूँगा।" कहकर चले जाते हैं। फिर शोर मच जाता है।]

एक विद्यार्थी—"चलो, एक घंटे की छुट्टी मिली।"

दूसरा—"अब क्या किया जाय?"

तीसरा—"घर भी नहीं जा सकते, इसके बाद का घंटा तो अटेंड करना है।"

चौथा—"चलो, लान पर धूप में गप लड़ाएँ।"

सब—"हाँ-हाँ, चलो, चलो।"

[सब लड़के चले जाते हैं। छात्राएँ बैठी रह जाती हैं। थोड़ी देर बाद अरुणा धीरे-धीरे प्रवेश करती है। चौड़े किनारे की सफ़ेद साड़ी पहने है, माथे पर छोटी-सी लाल बिंदी है, पैर में चप्पल और हाथों में दो-दो चूड़ियाँ, चेहरे पर उदासी और नेत्र लाल हैं, जैसे अभी रोकर चुप हुई हो। क्लास में सन्नाटा देखकर कुछ चकित होकर पूछती है।]

अरुणा—"सरला बहन, क्लास नहीं लगेगा क्या?"

सरला—"हाँ, नहीं लगेगा। प्रोफ़ेसर माथुर अटेंडेंस् लेकर चले गए।"

अरुणा—"अच्छा। मुझे देर हो गई।"

[बहुत धीमे स्वर में कहती है, जैसे अपने को ही सुनाना चाहती हो। अन्य लड़कियाँ कुछ कुतूहल और आश्चर्य से उसका उदास चेहरा देखती रहती हैं। अरुणा चुपचाप बैठ जाती और डेस्क पर दोनों कुहनियाँ टिकाकर हाथों में मुँह रख लेती है। सामने स्थिर दृष्टि से देखकर कुछ सोचने लगती है। चारों लड़कियाँ उसकी ओर देख-देखकर कानाफूसी करती हैं।]

किरण—(धीरे से) "इसे आज क्या हो गया है?"

प्रकाश—"न-जाने, इसका ढंग तो मेरी समझ में ही नहीं आता। सागर-सी गहरी, गंभीर न-जाने किस लोक में विचरण करती रहती है।"

सावित्री—"पर आज कोई ख़ास बात हुई है। सेंटीमेंटल तो यह है ही। देखो न, ऐसा जान पड़ता है, अभी रोकर चली आ रही है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरला—"और क्या। किसी ने कुछ कह-भर दिया होगा। आओ, पूछें ज़रा।"

[चारो उठकर अरुणा की डेस्क के पास आती हैं। वह ध्यान-मग्न बैठी रहती है।]

सरला—"अरुणा बहन", (उत्तर न पाकर, उसका कंधा हिलाकर) "अरुणा!"

अरुणा—(चौंककर)"मुझसे कुछ कहती हो?"

सरला—"नहीं, दीवारों से कहती हूँ।"

अरुणा—"माफ़ करना बहन! मैं आज बड़ी अनमनी हो उठी हूँ।"

सरला—"वह तो देख ही रही हूँ। पर ऐसा क्यों हुआ, बताओगी नहीं?"

सावित्री—"हाँ बहन, तुममें आज ऐसा परिवर्तन क्यों है?"

अरुणा—(व्याकुलता से)"सच-सच कहती हो, मुझमें परिवर्तन है? बोलो, बोलो न?"

[सावित्री का हाथ पकड़कर बड़ी करुणा से उसकी ओर देखती है।]

सावित्री—"तुम आज बहुत उदास, खोई-सी दिखाई देती हो।"

अरुणा—"और किसी तरह की तो नहीं दिखाई देती?"

सावित्री—"मैं तुम्हारा मतलब समझी नहीं। और किस तरह की दिखाई दोगी?"

[अरुणा लंबी साँस लेती है, मानो हृदय पर से एक भार उतर गया हो। डेस्क की पीठ से टेक लगाकर बैठते-बैठते कहती है।]

अरुणा—"तुमने मेरी बड़ी भारी चिंता दूर कर दी सावित्री! मैं तो कल से परेशान हो गई हूँ।"

सरला—"तुम भी अजब जीव हो अरुणा! तुम्हें शायद हम लोग कभी न समझ पाएँगी। परिवर्तन अगर हुआ भी, तो इतनी चिंता क्यों करती हो?"

प्रकाश—"अरुणा बहन! तुम्हें क्या चिंता है, हम लोगों को भी तो बताओ।"

अरुणा—"बहन, बहन, बताऊँगी, पर ओफ़्!" (गला रुँध जाता है, और नेत्र भर आते हैं।)

सरला—"यह क्या! रोती क्यों हो? (पीठ पर हाथ फेरते-फेरते) अरुणा, रानी बहन!"

[अरुणा सरला के ऊपर सिर रखकर रोती है। सब लड़कियाँ आश्चर्य-चकित रह जाती हैं। किसी के मुँह से बात नहीं निकलती। सहसा अरुणा सिर उठाती है।]

अरुणा—"नहीं, अब न रोऊँगी। रोना कमज़ोरी है। मुझे दृढ़ होना है।"

किरण—"समझती तो सब कुछ हो, फिर इतनी विचलित क्यों होती हो? कुछ कहो भी तो, हुआ क्या?"

अरुणा—"यह देखो, मेरे पास क्या आया है!"

[राजेश का भेजा पत्र निकालकर सावित्री के हाथ में देती है। बाक़ी तीनो उसके कंधे पर से झुककर पत्र पढ़ती हैं। पढ़ते-पढ़ते उनके मुख प्रफुल्लित होते जाते हैं। पत्र समाप्त होने पर चारो हँसती हैं।]

सरला—"इसीलिये रोती है?"

सावित्री—"तुम भी ख़ूब हो!"

किरण—"कांग्रेचुलेशन्स।"

प्रकाश—"अरे, यह तो हँसने की बात है, न कि रोने की।"

अरुणा—"क्यों, हँसने की बात क्यों है?"

किरण—"अरे भाई, एक तो ऐसा व्यक्ति मिला, जो कहता है—'तुम्हें जीवन-भर अपने स्नेह की छाया से ढाँके रहूँगा। तुम पर प्राण न्योछावर कर दूँगा।' इससे बढ़कर चाहिए क्या?"

अरुणा—"आह, यदि केवल यही होता। स्नेह की छाया में तो भाई भी बहन को सदा ढाँके रहता है। समय पड़ने पर प्राण भी न्योछावर कर देता है। परंतु राजेश की भावना क्या तुम्हें वैसी ही ज्ञात होती है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किरण—"हाँ—नहीं।"

अरुणा—"हिचकिचाओ मत बहन! सत्य तो सत्य है, चाहे कठोर भले ही हो। तुमने तो सारा पत्र पढ़ा है। कहो, उसमें त्यागमय स्नेह की झलक है, अथवा वासना से भरे आकर्षण की?"

किरण—"अगर वासना ही है, तो होने दो। तुम इतनी विचलित क्यों होती हो? ऐसे तो न-जाने कितने पत्र आते रहते हैं। मैं तो पढ़कर हँस लेती हूँ।"

अरुणा—"तुम हँस-भर लेती हो, बस। वे पत्र तुम्हारे अंतस् को छूते नहीं।"

किरण—"अंतस् को छूते होते, तो मैं भी तेरी तरह रोती रहती। सारा समय इसी में बीत जाता।"

अरुणा—"आह किरण! न-जाने तुमसे ऐसा कैसे हो पाता है। मैं तो अगर एक बार और ऐसा हो, तो कदाचित् मर ही जाऊँ।"

सावित्री—"पर क्यों? इसमें ऐसी कौन-सी ख़ास बात है?"

अरुणा—"ख़ास बात है बहन, मैं यह समझती हूँ, अगर कोई मेरी ओर वासना से आकृष्ट होता है, तो वह मेरे ही दोष से!"

सावित्री—(चौंककर) "तुम्हारे दोष से?"

अरुणा—"हाँ, मेरे दोष से। मेरे मुख से, मेरे हाव-भाव से अवश्य कुछ ऐसा लगा होगा, तभी तो राजेश को ऐसा पत्र लिखने की भावना हुई। मैं कितने दिनों से लड़कों के बीच पढ़ती आई हूँ। मैंने सर्वदा उन्हें उसी तरह माना, और देखा, जैसे अपने श्यामू को मानती और देखती आई हूँ। आज से पहले ऐसी घटना कभी नहीं घटी। उन सबने भी मुझे बराबर आदर की दृष्टि से देखा, और पवित्र भावना से माना, इसीलिये मैं तुम लोगों से पूछती थी कि मुझमें कुछ परिवर्तन तो नहीं दिखाई देता।"

सावित्री—"मेरी बड़ी भारी चिंता दूर हो गई। हम लोग तुम्हें देवी-प्रतिमा-सी समझती हैं। तुममें दोष आ गया है, सुनकर मैं तो चौंक पड़ी।"

अरुणा—"यह घटना देखकर अपने में दोष न मानूँ, तो क्या करूँ? आख़िर यह हुआ क्यों? मैंने अपने मन का कोना-कोना छान डाला, पर कोई और भावना ढूँढ़े नहीं मिली।"

सरला—"मिलेगी भी कहाँ से? तुम गंगाजल-सी निर्मल हो बहन! पर तुम्हें भूल न जाना चाहिए कि लोग गंगाजल को भूल से अपवित्र कार्यों में भी लगा देते हैं। वे पवित्रता ग्रहण नहीं कर पाते। इसी प्रकार देवी की प्रतिमा के सम्मुख जहाँ भक्तों के मस्तक आदर से नत हो जाते हैं, वहाँ एकआध मूर्खों के मन में कुभावनाएँ भी उठ खड़ी होती हैं। पर इसमें गंगाजल या देवी का क्या दोष?"

अरुणा—"ठीक कहती हो बहन! मुझे प्रकाश मिल गया, मैं अब तक अँधेरे में भटक रही थी।"

प्रकाश—"अच्छा, तो अब प्रसन्न हो जाओ। यह मुहर्रमी सूरत अच्छी नहीं लगती।"

अरुणा—"प्रसन्न तो हो ही जाऊँगी, पर राजेश का चित्त ठीक कर लूँगी, तब।"

किरण—"अरे बाप रे! राजेश का चित्त ठीक करोगी?"

अरुणा—"और क्या।"

किरण—"बड़ी हिम्मत का काम है। कभी बोली भी हो?"

अरुणा—"बोलने की आवश्यकता ही नहीं थी, तो बोलकर क्या करती? और, हिम्मत का क्या प्रश्न? यदि मुझमें पवित्रता की शक्ति है, तो उसे ठीक करने में ज़रा भी कठिनाई नहीं होगी। उसे ठीक करना ही होगा, नहीं तो कोई मुझे बुरी दृष्टि से देखता है, यह ज्ञान मुझे हमेशा दुःख देता रहेगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[अरुणा के नेत्रों से आँसू टपक पड़ते हैं। उन्हें पोंछते-पोंछते वह शून्य दृष्टि से खुले द्वार की ओर देखती रहती है। बातें करते हुए सब छात्र कमरे में आते हैं। अरुणा की ओर सब कौतूहल से देखते हुए अपने-अपने स्थान पर बैठ जाते हैं। राजेश को देखकर अरुणा कुछ विचलित हो उठती और उसकी हिम्मत छूट-सी जाती है। वह अपने मन से युद्ध-सा करती दिखाई पड़ती है। ज़ोर लगाकर, चित्त शांत करके उठ खड़ी होती है। कमरे में सन्नाटा छा जाता है। वह राजेश के सामने जाकर खड़ी हो जाती है। उसके आँसू फिर निकलने लगते हैं। राजेश इस अचिंत्य घटना से एकदम घबराकर उठ खड़ा होता है।]

अरुणा—(रुद्ध कंठ से) "मुझे आपसे कुछ कहना है।"

राजेश—"कहिए।"

अरुणा—(सीधी खड़ी होकर) "मेरी तरफ़ देखिए ख़ूब अच्छी तरह से, और बताइए, मेरी दृष्टि में, मेरे चेहरे में कोई परिवर्तन हुआ है, जिसके कारण मैं आपको कुछ और दिखाई देने लगी?"

राजेश—"कुछ और क्या? मैं समझा नहीं।"

अरुणा—"मैं···मैं बहन-सी न दिखाई देकर प्रे···प्रेयसी-सी दिखाई देने लगी?"

[एक क्षण को अरुणा के नेत्र झप जाते और ज़बान लड़खड़ा-सी जाती है। राजेश अरुणा की ओर देखता ही रह जाता है। उसे दैवी आभा से दीप्त उसका मुखमंडल पवित्रता की ज्योति छिटकाता-सा दिखाई पड़ता है।]

अरुणा—"आह! चुप क्यों हो गए? मैंने तो आपको कभी अन्य किसी रूप में नहीं देखा। मैं आप सबमें अपने श्यामू का प्रतिबिंब ही देख पाती हूँ, फिर आपके मन में कुछ और विचार क्यों उठ आया? मैं अब तक यही समझती आई हूँ कि मेरी भावनाओं के अनुकूल ही भावनाएँ अन्य व्यक्तियों में मेरे प्रति उठेंगी।" (रुद्ध कंठ से) "आपका पत्र पाकर मैंने यह सोचकर कि अपने किसी हाव-भाव से ही आपको मैं अन्य रूप में दिखाई पड़ी हूँ, कितना मर्मांतक कष्ट पाया है! परंतु बहुत ढूँढ़ने पर भी मैं कुछ पता न लगा पाई। आप बतलाइए, मेरा भ्रम दूर कीजिए।" (रो देती है।)

[राजेश का चेहरा उद्दीप्त हो उठता है। वह दृढ़, किंतु शांत स्वर से कहता है।]

राजेश—"आपका कोई दोष नहीं। आपकी भावनाएँ, चाल-ढाल—सब पवित्र हैं। दोषी मैं हूँ, अपवित्र मैं हूँ, जो मैंने आपको बुरे रूप में देखा।"

अरुणा—"सच,···तो फिर (पत्र आगे करके) इसे ले लीजिए।"

राजेश—(लेकर टुकड़े-टुकड़े करते हुए) "हाँ, इसे ले लूँगा, पर रखने को नहीं, नष्ट करने को। इसी के साथ मैं आज अपनी आत्मा का कलुष भी नष्ट कर दूँगा। तुमने मेरी आँखें खोल दी हैं।"

[अरुणा गीले नेत्रों से एकटक उसकी ओर देखती है। उसका सिर धीरे-धीरे झुकता है। अंत में वह घुटने टेककर बैठ जाती और राजेश के पैरों पर हाथ रखकर कहती है।]

अरुणा—"भैया मेरे!"

[राजेश के नेत्र गीले हो जाते हैं। अरुणा के सिर पर हाथ रखकर कहता है।]

राजेश—"अरुणा, उठ मेरी रानी बहन! बड़े भाई के पैर नहीं छुआ करते।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झूठे विज्ञापन

[श्रीयुत पृथ्वीपालसिंह एम्० ए० (अमेरिका), जे० डी० (लंदन), एल्-एल्० बी० (लखनऊ)]

समाचार-पत्रों का जीवन-मरण विज्ञापनों की संख्या पर निर्भर होता है। समाचार-पत्रों की प्रायः ६० फ़ीसदी आमदनी विज्ञापनों से ही होती है, और दूसरी ओर व्यापारियों और रोज़गारियों के धंधों की सफलता भी विज्ञापनों पर ही अवलंबित है। विज्ञापनों से ही जनता को ज़रूरत की चीज़ों के नामों, पतों और गुणों का परिचय होता है, जनता जानती है कि उसकी रुचि के अनुसार उम्दा चीज़ें कहाँ से और किन दामों में सुलभ हैं। इश्तिहारों से ही जन-साधारण को ज़रूरत की नई चीज़ों की जानकारी प्राप्त होती है, और देश-विदेश के नए आविष्कारों, नए वस्त्राभूषणों, नए खाने-पीने के पदार्थों, नई ओषधियों आदि का ज्ञान होता है। विज्ञापनों द्वारा ही लोगों को नई पुस्तकों, नई जगहों और यात्राओं आदि की सुविधाओं की सूचना मिलती है। सच्चे विज्ञापनों से जितना ही जनता को लाभ है, उतना ही झूठे विज्ञापनों से हानि। झूठे इश्तिहार जनता का रुपया ठगते हैं, उसके चाल-चलन और स्वास्थ्य का नाश करते हैं। सभी सभ्य देशों में क़ानून ऐसे विज्ञापनों से जनता की रक्षा करता है, अख़बार ऐसे विज्ञापन छापने से इनकार कर देते हैं। लेकिन अपने देश में कुछ हवा ही दूसरी है।

आज भारतवर्ष में लगभग ३,००० अख़बार और रिसाले प्रकाशित होते हैं, उनमें से इने-गिनों को छोड़कर प्रायः सभी झूठे, संदेह-जनक, आचार-विचार बिगाड़ने और तंदुरुस्ती तबाह करनेवाले विज्ञापनों को सहज ही में छाप देते हैं। हम उन विज्ञापनों को पुराने और प्रसिद्ध पत्रों में पढ़ते हैं, उनसे प्रभावित हो जाते और आसानी से ठगे जाते हैं। जनता के प्रति अख़बारों का कुछ कर्तव्य है। उनका यह धर्म है कि वे अपने ग्राहकों और पाठकों को इस प्रकार ठगे जाने से बचाएँ। लेकिन कितने अख़बार हैं, जो जनता के हितों का—जनता के फ़ायदे का ख़याल करते हैं? चंद अख़बारों को छोड़कर कोई भी—अँगरेज़ी, हिंदी, उर्दू, बँगला, गुजराती, गुरुमुखी या अन्य किसी भाषा का—पत्र उठाकर देखिए, आपको एक नहीं, अनेक इश्तिहार ऐसे मिलेंगे, जिनमें लुट जाने का ख़तरा साफ़ नज़र आएगा।

बूढ़े से जवान बनाने की दवाएँ, काया-कल्प करने के नुस्ख़े, सफ़ेद बालों को सदा के लिये काला बना देनेवाले रोग़न, शक्ति-वर्धक गोलियाँ, अश्लील चित्रोंवाले कोकशास्त्र, जड़ से हमेशा के लिये बाल उड़ानेवाले साबुन, संसार की समस्त बीमारियों का नाश करनेवाली एकमात्र रामबाण ओषधि, जप और तावीज़ द्वारा नौकरी दिलवाने, मुक़दमा जिताने, गड़े हुए धन का पता बताने, चोरी का माल बरामद कराने, लाटरी जिताने तथा बीमारियों, चिंताओं और अनेक व्याधियों से मुक्त कराने के वादे, क्या कुछ नहीं आपको स्वदेशी पत्रों के विज्ञापनों में मिलता है? एक रुपए में ३६५ चीज़ें—घड़ी, फ़ाउंटेन पेन, क़लम, दावात, काग़ज़, पेंसिल, पिस्तौल, बिजली का लैंप, रूमाल, सुई, डोरा और न-जाने क्या-क्या; दो-तीन रुपए में तीन टाइम-पीस एलार्म की घड़ियाँ—हमेशा एक-सा वक्त देनेवाली—और गारेंटी पाँच साल की; छ रुपए बारह आने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में भयंकर आवाज़ करनेवाला, दस कार्तूसों-वाला 'रिवालवर', साथ में पचास कार्तूस और तीन घड़ियाँ मुफ़्त ; दो रुपए में मनुष्य को बेहोश कर देने और होश में ले आनेवाली दो दवाएँ । यही नहीं, ज्योतिषियों, हाथ देखनेवालों के लंबे-चौड़े वादे भी—८ आने में किन्हीं भी पाँच सवालों का सही जवाब—सिर्फ़ किसी फूल का नाम लिखकर भेज दीजिए, और पाँच रुपए में सारे जीवन का हाल । और, तुर्रा तो यह कि ये ख़ुदा के फ़रिश्ते यक़ीन दिलाने के लिये अपने विज्ञापनों में सर टाम, राजा डिक और नवाब हेरी के प्रशंसा-पत्र भी छाप देते हैं ।

स्कूल के विद्यार्थी, साधारण शिक्षा-प्राप्त स्त्री-पुरुष और ख़ासी संख्या में शिक्षित लोग भी इन झूठे विज्ञापनों के जाल में रोज़ फँसते हैं । लज्जा और संकोच के मारे ठगे जाने पर भी ग़रीब बेचारे चूँ तक नहीं करते । और, यदि कोई इन झूठे विज्ञापनदाताओं के विरुद्ध आवाज़ उठाने की सोचता भी है, वह भी कारण-वश लाचार हो जाता है । झूठे विज्ञापन प्रायः फ़र्ज़ी नामों से प्रकाशित होते हैं । बहुतों में केवल पोस्ट-बॉक्स-नंबर ही रहता है, और जिनमें फ़र्म या कंपनियों के नाम होते हैं, वे फ़र्म या कंपनियाँ रजिस्ट्री-शुदा नहीं होतीं—क़ानून की गिरफ़्त से बचने के लिये । यह पता लगाना कठिन हो जाता है कि जाल-धंधे की पुश्त पर असली व्यक्ति कौन है ? और, यदि कोई अख़बार के संचालक, संपादक अथवा मैनेजर से इस संबंध में शिकायत करे, तो वहाँ से निःसंदेह यही उत्तर मिलता है कि विज्ञापनों के सच्चे या झूठे होने की ज़िम्मेदारी अख़बार के सिर नहीं । ज़िम्मेदारी-शब्द की अच्छी परिभाषा है । पेशेवर ठगों के विज्ञापन छापकर अख़बार पैसे कमाएँ, जनता के ठगे जाने में ठगों की सहायता करें, और फिर भी जनता के हित-रक्षक बने रहने का दम भरते रहें । कैसी विडंबना है ! अख़बार में जो कुछ छपता है, उसकी ज़िम्मेदारी अख़बारों के सिर ही होनी चाहिए । रुपयों का मोह हमारे अख़बारों पर ऐसा ग़ालिब है कि वे अपनी सहज ज़िम्मेदारी को भी स्वीकार करने को तैयार नहीं । देश के धार्मिक, राजनीतिक और सामाजिक, प्रायः सभी अख़बार झूठे विज्ञापन छापकर रुपया कमा रहे हैं । पाप के रुपयों से पलते-पलते उनकी आत्माएँ कुंठित हो गई हैं, उन्होंने महसूस करने की शक्ति भी खो दी है ।

हाँ, कुछ पत्र ऐसे अवश्य हैं, जो विज्ञापन छापते ही नहीं । उन पत्रों की ख्याति है । उन पत्रों के संचालकों और संपादकों का मान है । आज वे पत्र फूल-फल रहे हैं, उनकी ग्राहक-संख्या दिन दूनी, रात चौगुनी बढ़ रही है । जनता को उन पर भरोसा है । जनता उन्हें श्रद्धा और प्रेम से अपना रही है । विज्ञापनों की आमदनी न सही, केवल पुण्य की कमाई से ही वे शक्ति और समृद्धि के आगार बन रहे हैं । ऐसे पत्र उँगलियों पर गिने जा सकते हैं । वे आदर के पात्र हैं । हम नहीं कहते कि वे विज्ञापन छापें ही न । छापें, और ख़ुशी से छापें, लेकिन उचित और अनुचित विज्ञापनों में भेद करें । हमें तो जिहाद करना है केवल झूठे और हानिकारक विज्ञापनों के प्रकाशन के विरुद्ध ।

❀ ❀ ❀

जब मैं छोटा था, स्कूल में पढ़ता था, तब की बात है । मुझे मेरा एक मास्टर रोज़ ठोका करता था । मैं मार खाते-खाते आजिज़ आ गया था । एक दिन मैंने एक हिंदी के अख़बार में एक मंत्र का विज्ञापन पढ़ा । दो रुपए में एक स्वामीजी ऐसा जादू-भरा मंत्र भेजते थे, जिसके जप से मनुष्य किसी को भी वश में कर सकता था । मैंने दो रुपए भेजकर मंत्र मँगवाया, और सोचा,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्यापक को आसानी से वश में कर लूँगा, फिर कभी कुटम्मस न होगी। छोटा-सा मंत्र था। मैंने उस मंत्र के लिये दो रुपए ख़र्च किए थे। आपको मँगाने की आवश्यकता नहीं, मैं मुफ़्त ही में बताए देता हूँ। मंत्र था—

"काली - काली गूजरी लाल बाग़ को जाय ;
सुमिरन जो उसको करे, तो वश में हुइ जाय।"

मैं दर्जे में बैठा था—आँखें बंद किए, और जप कर रहा था वशीकरण-मंत्र का। अध्यापक ने समझा, मैं सो रहा हूँ, बस, बात-की-बात में उसने मुझे धर दबोचा, और इतनी मरम्मत की कि मेरे हाथ-पैर सूज गए। मैं आज तक वह मार और वह मंत्र नहीं भूला। जिन्होंने उस वशीकरण-मंत्र का प्रयोग प्रेम की दुनिया में किया होगा, उनकी कहानियाँ तो सुनने लायक़ होंगी। मैं तो सस्ता छूट गया।

मुझे ज्योतिषियों और हस्त-रेखा देखनेवालों का भी ख़ासा अनुभव है। उनके विज्ञापन भारतवर्ष के बड़े-से-बड़े पत्रों में छपते हैं। दो-एक परिचित सज्जनों के प्रशंसा-पत्र पढ़कर मैं भी उन रमल फेकनेवाले ठगों के चक्कर में आ गया। विश्वास कीजिए, उन्होंने जो कुछ भी भविष्य-वाणी की, १०० फ़ीसदी झूठ निकली। उनके अनुसार मुझे आज सर पृथ्वीपालसिंह—धनकुबेर होना चाहिए था, लेकिन मैं तो आज भी वही केवल श्री-पृथ्वीपालसिंह—पत्रकार हूँ। पत्रकार और विशेषकर इस देश में धनकुबेर होने का स्वप्न देखे!

मेरे एक मित्र ने जड़ से सदा के लिये बाल उड़ा देनेवाली दवा मँगवाई। घनी दाढ़ी थी उनकी—पतावर की तरह घनी। रोज़ एक ब्लेड ख़राब होता था। आजिज़ थे वह अपनी दाढ़ी से। उन्होंने सोचा, दो रुपए में सौदा सस्ता है—सदा के लिये मुई दाढ़ी से नजात मिल जायगी। किया औषधि का प्रयोग उन्होंने। यक़ीन मानिए, उनका सारा चेहरा कोयले की तरह काला हो गया। कई दिन तक चेहरे पर सूजन और सख़्त जलन रही। मुझे वह हाल ही में मिले थे। उनका चेहरा हमेशा के लिये लंगूरी बंदर के चेहरे की तरह स्याह हो गया है, चंद्र-ग्रहण की कालिमा ढाँकने के लिये उन्होंने एक घनी-सी, काली अँधियाली दाढ़ी उगा ली है।

मैं कितनों को ही जानता हूँ, जिन्होंने अख़बारी विज्ञापनों की दवाएँ खाकर अपनी जवानी खो दी, अपनी तंदुरुस्ती तबाह कर दी। कहाँ तक सुनाऊँ बेकसों की कहानियाँ।

सभ्यता के इस युग में भी जाल, फ़रेब और धोखे का बाज़ार गरम है। देश के अख़बारों को अपना उत्तरदायित्व समझना चाहिए। रुपयों का मोह त्यागकर संगठित रूप से एक साथ ही आपत्तिजनक विज्ञापनों का बहिष्कार कर देन चाहिए। और, देश में ऐसे क़ानून बन जाने चाहिए, जो अख़बारों पर पाबंदी लगा दें, और उन्हें झूठे तथा वाहियात विज्ञापन प्रकाशित करने से रोक दें।

अमेरिका में सबसे पहले मिस्टर हेनरी रेमांड, 'न्यूर्क टाइम्स' के संपादक, ने केवल सच्चे और पाक विज्ञापन ही छापने का आंदोलन चलाया था। उन्होंने 'न्यूयार्क टाइम्स' के कालमों से वाहियात इश्तिहारों को हमेशा के लिये निकाल फेका। अमेरिका के अख़बारों ने अपने संघ में निश्चय कर लिया कि जनता के हित-रक्षकों की हैसियत से वे केवल सच्चे विज्ञापन ही प्रकाशित करेंगे। झूठे विज्ञापनों का छपना बंद हो गया। सरकार ने क़ानूनी प्रतिबंध लगा दिए। यदि हमारे देशी अख़बार और हमारे देशवासी देश का भला चाहते हैं, तो उन्हें भी अमेरिका के सुझाए हुए मार्ग पर चलना चाहिए।

मैं तजुर्बे की बात बताता हूँ। दो वर्ष मैंने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योरप, इँगलैंड और अमेरिका में उनके अख़बारों और उनकी पत्रकार-कला का अध्ययन किया। मेरी आँखें खुल गईं। वहाँ के अख़बार कितने उच्च कोटि के, कितने सुंदर, कितने सच्चे और कितने पाक होते हैं। वहाँ के अख़बारों के कार्यालयों में वर्जित विज्ञापनों की एक तालिका रहती है, जिसे 'इन्डेक्स प्रोहीबेटोरम' कहते हैं। उसके अनुसार वे—

१. धोखे के और शकवाले विज्ञापन।

२. विना मूल्य की चीज़ों या ऐसी चीज़ों के विज्ञापन, जिनमें झूठ या अतिशयोक्ति हो।

३. ऐसे इश्तिहार, जो दो-मानी हों या भुलावे में डालनेवाले हों।

४. ऐसे इश्तिहार, जिनमें किसी व्यक्ति या ग़ैर-रोज़गारी पर आक्षेप या अनुचित छींटे हों।

५. ऐसे इश्तिहार, जिनमें असंभव या शर्तिया मुनाफ़े के वादे हों।

६. ऐसे इश्तिहार, जो ठगनेवाली रुपए के लेन-देन की कंपनियों से परिचय करवाते हों।

७. ऐसे इश्तिहार, जो अश्लील, भोंड़े, व्यभिचार-प्रवृत्ति पैदा करनेवाले हों।

८. ऐसे विज्ञापन, जो शादी ठहरवाने या ज्योतिष द्वारा भविष्य बताने से संबंध रखते हों।

९. दवा के ऐसे विज्ञापन, जो तजुर्बे और क़यास से बाहर हों, फोकट में इलाज करने का दावा करते हों।

१०. ऐसी चीज़ों या ओषधियों के विज्ञापन, जो लोगों को उनके प्रयोग का ग़ुलाम बना दें, और स्वास्थ्य के लिये हानिकर हों।

११. और अन्य प्रकार के विज्ञापन, जिनसे जनता को धन की हानि, उसके स्वास्थ्य, चाल-चलन बिगड़ने का ख़तरा या विज्ञापन-व्यवसाय के नाम को कलंक लगने की आशंका हो। कदापि नहीं छापते। यही नहीं, वहाँ के अख़बारों में फ़ोश, अपमान-जनक, भद्दे, उपद्रव या झगड़ा उकसानेवाले, लाटरी आदि के भी विज्ञापन नहीं छपने पाते। सरकार ने इन नियमों पर क़ानून की छाप लगा दी है। अमेरिका के डाक-विभाग के क़ानून के अनुसार इस प्रकार के वर्जित विज्ञापन छापनेवाले पत्रों के विरुद्ध अदालती कार्रवाई की जा सकती है।

काश कि हिंदोस्तान के अख़बार भी अपनी ज़िम्मेदारी—अपना उत्तरदायित्व, आदर्श समझते, और अनुचित विज्ञापन न छापने का बीड़ा उठाते! काश कि जनता को झूठे विज्ञापनों के कठोर जाल में फँसने से बचाने के लिये हमारे देश में भी कुछ क़ानून बन जाते!!

हम सभ्य कहते हैं अपने को, लेकिन वास्तव में कितना पिछड़े हुए हैं हम औरों से। पैसों से प्यार है हमें—अंधकार से मुहब्बत है हमें—और प्रकाश से नफ़रत। आख़िर, यह सब कब तक?*

* लखनऊ-रेडियो-स्टेशन से पठित।—लेखक

छप रही है! हिंदी में नवीन पुस्तक!! छप रही है!!!

सत्ययुग - मीमांसा अर्थात् चेतावनी-रहस्य; इसका मूल्य ।-) रक्खा गया है, किंतु एक मास के भीतर =) के डाक-टिकट भेजनेवालों को इसकी एक प्रति प्रचारार्थ भेजी जायगी। शीघ्रता कीजिए, मौक़ा न चूकिए।

चंद्र-कार्यालय, हालू बाज़ार, भिवानी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सीढ़ियाँ

[श्रीश्रीनिधि द्विवेदी]

बाँधे हुए सकल सहचरियों
को वह एक ध्येय का बंधन;
रहकर मौन किया करती हो
निशि-दिन पद-घातों का चुंबन।

रीझ गया पवमान तुम्हारे
शुचि गुण-गायन गाता फिरता;
धूल-रेत में, जल में, नभ में
नित नव चित्र बनाता फिरता।

लहर-सीढ़ियों पर सागर की
रवि-शशि पद किरणों के धरते;
जगती आलोकित करने को
निशि-दिन चढ़ते और उतरते।

सत-उन्नति में, रज-अवनति में,
तम-प्रपतन में बनी त्रिवेणी;
परंपरा - कर्तव्य जन्म में
तथा मृत्यु में पुण्य-नसेनी।

प्रभु-मंदिर में, राजभवन में
गिरि-शृंगों पर तुम पहुँचातीं;
विहगों की पंक्तियाँ तुम्हारी
उड़ तसवीर बनाती जातीं।

हरे - भरे खेतों में तुम
रंगीन क्यारियाँ बन लहरातीं;
तरु में डाल - पत्र, फूलों में
कल पंखुड़ियाँ हो छवि छातीं।

कल, कुंचित कुंतल-जालों में,
कामिनियों के परिधानों में,
बहुरंगी प्रतिछाया - पथ - सी
आँखों को छवि-सोपानों में

तुम अनेक संख्या स्वरूप में
कार्य-काल में एक दिखातीं;
तुम उन्नति के लिये अनोखा
मंत्र संगठन का सिखलातीं।

सर - सरिताओं के कूलों से
देतीं जीवन जीवन-व्यापी;
तुमको पा कूपों के सम्मुख
उत्कंठित, गर्वित है वापी।

समय सीढ़ियाँ प्रलय कल्प युग
वर्ष मास दिन रात प्रहर क्रम,
माप तौल श्रेणी विराम क्षण
तुमसे संख्याओं का उद्गम।

पथ की सीमाओ! सुविधा हो
दुनिया के यातायातों की;
षड्ऋतुओं की श्री-शोभा हो
सोने के सायं-प्रातों की।

प्रिय गायन स्वर-सोपानों के
आरोहों में, अवरोहों में—
झूम-झूम उठता था त्रिभुवन
मुरली के स्वर-संदोहों में।

सप्तस्वर - स्वरूपिणी, तुमने
जीवन में मधुराई भर दी;
चरण सँभाल चले कवियों की
वाणी में अमराई भर दी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उड़ते सितारे

भारतीय चित्रपट की उज्ज्वल तारिका **विमला कुमारी** कहती हैं—"मैंने चाय को सर्वदा आश्चर्यजनक तरो ताजा करने वाली पाया है।" चित्र-तारिका का जीवन एकाग्रता तथा खिंचाव का जीवन है और स्वभावतः वे सर्वदा चाय का ही भरोसा करती हैं। यह बहुत ही तरो ताजा करने वाला पेय है। यह चित्तको प्रसन्न भी करता है। चाय को अपना पहला प्रियपात्र बनाइये।

सब 'सितारों' की प्रिय-भारतीय चाय

इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित

IK 129 B

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वास्थ्य-वर्द्धक भोजन का चुनाव सरलता से कर लें!

कैसे ?

'भोजन और स्वास्थ्य'

नामक हमारी नई प्रकाशित पुस्तक द्वारा !

"स्वास्थ्य-वर्द्धक भोजन का चुनाव साधारण जन भी, अपनी आय के अनुसार, कर सकते हैं। इसके लिये अमीर-ग़रीब का कोई प्रश्न नहीं।" मूल्य १), सजिल्द १॥)

लेखक—डॉ० सत्यप्रकाश डी० एस्-सी०, एफ़्० आई० ए० एस्०

तथा डॉ० संतप्रसाद टंडन एम्० एस्-सी०, डी० फ़िल्०

गंगा-ग्रंथागार, ३६, लाटूश रोड, लखनऊ

हिंदू-जाति के विश्व-मान्य सिद्धांतों का सजीव, सार-गर्भित चित्रण

संगठन, एकता और बंधुत्व का आदर्श उदाहरण !!

कला, कल्पना, मनोविज्ञान-नीति—

सब बातों का एक ही स्थान पर मिलकर आपके हृदय की कोमल भावनाओं को छू लेने का प्रयास कितना पवित्र—कितना सफल ! एक बार अवश्य पढ़िए—

* निःसहाय हिंदू *

सोचिए तो—आप स्वयं ही कह देंगे—

* यह सुंदर उपन्यास *

आपके मनोनुकूल पाठ्य-सामग्री

का चयन है !

साहित्य के सुपरिचित कलाकार श्रीयुत राधाकृष्णदास

की ओज-भरी लेखनी का अनुपम चमत्कार, जिसका एक-एक शब्द आपके लिये अनमोल प्रमाणित होगा।

संपादक

रा० ब० बाबू श्यामसुंदर दास बी० ए०

'हिंदू' होकर आपने इस पुस्तक को न पढ़ा, तो आपने जाति के प्रति एक अन्याय किया !

अभी-अभी छपकर तैयार है !!

सजिल्द १), सादी ॥)

आज ही अपना ऑर्डर भेजिए।

गंगा-ग्रंथागार, ३६, लाटूश रोड, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या आपने अब तक नहीं देखा ?

हिंदी के सुप्रसिद्ध विद्वान्, नाटककार

श्रीयुत गोविंदवल्लभ पंत

का सबसे नवीन बौद्धकालीन नाटक

अंतःपुर का छिद्र

[इतिहास के पृष्ठों का रोमांचकारी छाया-चित्र]

अभी-अभी प्रकाशित हुआ है।

कौशांबी के राजमहल में होनेवाली प्रणय-लीला, महाराज उदयन की प्रेम-कथा का दुःखद प्रसंग, अधिकार-लिप्सा का रोमांचकारी दृश्य। एक सार-गर्भित कथानक ! भगवान् बुद्ध के समय का इतिहास !!

स्टेज पर भी खेला जा सकता है !!!

गंगा पुस्तकमाला कार्यालय लखनऊ

सजिल्द ॥) सादी ।=)

जरा मेरी भी तो सुन लीजिए !

आपकी पुस्तकों की सूची अधूरी न रह जाय !!

एक बात ऐसी है—ध्यान रखिए !!!

बिहारी-सुधा

[लेखक, 'मिश्रबंधु']

महाकवि बिहारीलाल के २७० सर्वश्रेष्ठ दोहों का अर्थ-सहित सुंदर संग्रह

आपकी घरेलू लाइब्रेरी व पुस्तकालयों की शोभा बढ़ाने-योग्य अनुपम

काव्य-ग्रंथ

सजिल्द ॥) सादी ।=)

गंगा-ग्रंथागार, ३६, लाटूश रोड, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसा दुःखद प्रसंग गृहस्थी में लाने की ज़िम्मेदार पुरुषों पर है !

आपकी गृहणी का स्वास्थ्य क्या आपके ध्यान देने का विषय नहीं ? अस्वस्थ ललनाएँ घर की अशांति और चिंता का कारण बनती हैं ! दांपत्य जीवन की **विषमता** का अपराध किसका है ? पति-पत्नी का मनोमालिन्य तलाक़ झगड़ा विरोध का कारण बनता है !

अब भी सावधान हो जाइए गृहस्थी की रक्षा के लिये !

स्त्री-सौंदर्य और स्वास्थ्य

लेखक, श्रीयुत बुद्धिसागर वर्मा बी० ए०, एल्० टी०

इस बार
बड़े दिन का उपहार !
नए वर्ष की भेंट !!

अपनी ललनाओं के हाथों में शीघ्र-से-शीघ्र पहुँचाने का प्रयत्न अवश्य करें !

अभी-अभी छपकर तैयार हुई है !

प्रत्येक महिला को इसे पढ़ना चाहिए !

शरीर के अंगों का बनाव-शृंगार, सौंदर्य-रक्षा के नियम, व्यायाम, रोग तथा उनकी सरल चिकित्सा, देशी और विदेशी सौंदर्य बढ़ाने के साधनों की उपयोगिता सरल भाषा में वर्णित है !

सचित्र, सुपाठ्य, सुंदर, स्थायी साहित्य !

सजिल्द २॥)] [सादी २)

मिलने का पता—गंगा-ग्रंथागार, ३६, लाटूश रोड, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरी राजगृह-यात्रा

[साहित्य-रत्न श्रीयुत लक्ष्मीनारायण टंडन 'प्रेमी' एम्० ए०]

लखनऊ चारबाग़-स्टेशन से मैं रात के आठ बजे ई० आई० आर० पर सवार हुआ, और प्रातःकाल बख़्तियारपुर पहुँचा। यहाँ गाड़ी बदलनी पड़ती है। बख़्तियारपुर से बिहार-लाइट-रेलवे पर बैठा। राजगृह बिहार-प्रांत में है। गाड़ी मंद गति से चलती रही। यह यात्रा है तो ३३ मील की ही, पर बड़ी सुखदायक है। सड़क और रेल की पटरियाँ पास-ही-पास हैं। सड़क के एक ओर बाज़ार है। आपकी रेल उस बाज़ार से होकर चलती रहती है। दूकानदार अपनी-अपनी दूकानों पर बैठे या सौदा बेचते दिखाई देते हैं—ख़ोंचेवाले और पैदल चलनेवाले आपकी ही या आपकी विरुद्ध दिशा में चलते हुए दिखाई देते हैं। रेल की पटरी के एक ओर तो सड़क और बाज़ार है, और दूसरी ओर मकान। मकानों के छज्जे मानो रेल के डिब्बों को बिलकुल छूने ही वाले हों—रेल की पटरियों के इतने पास मकान बने हैं। छोटे-छोटे बच्चे अपने मकान की दहलीज़ पर बैठे या आस-पास खेलते दिखाई देते हैं। वहाँ के बच्चों के लिये रेल कम भयानक नहीं, क्योंकि मा-बाप की तनिक-सी असावधानी से बच्चे रेल से कुचल सकते हैं। किंतु वहाँ के ऐसे वातावरण में पले बच्चे ख़ुद ही इस ख़तरे को समझने के अभ्यस्त हो गए होंगे। वह स्वयं रेल आने के पहले हट जाते होंगे, या माता-पिता द्वारा हटा दिए जाते होंगे। थोड़ी दूर बढ़ आने पर घनी बस्ती पीछे छुट जाती है, और लंबे-चौड़े तथा दूर तक फैले हुए खेत दृष्टि-गोचर होने लगते हैं। यहाँ धान अधिक बोया जाता है। हर ओर खेत में आपको धान के ऊँचे-ऊँचे पुआल दिखाई देंगे—ऐसा लगता है, जैसे सारनाथ के स्तूप भिन्न-भिन्न स्थानों में स्थापित कर दिए गए हों। इस ओर ताड़ के लंबे-लंबे वृक्ष अधिक हैं। देश हरा-भरा मालूम होता है, वायु शुद्ध और निर्मल।

इसी ओर बिहार-प्रांत का 'बिहार शरीफ़'-नामक एक प्रसिद्ध स्थान है। पहले यहाँ उद्दंडपुरी का महाबिहार था। धीरे-धीरे योग के स्थान पर यहाँ के निवासी भोग में ही फँस गए। बख़्तियार ख़िलजी ने १३वीं शताब्दी में यहाँ आक्रमण करके बहुत अधिक हत्याएँ कीं। मुसलमानी राज्य में भी यह बिहार का एक प्रसिद्ध सूबा रहा है। आईने-अकबरी में इसका वर्णन मिलता है। खुदाई पर उद्दंडपुरी और नालंद में जली या आग से तपी वस्तुएँ निकली हैं। इससे पता चलता है कि यहाँ यवनों ने लूट-मार की, और साथ ही आग भी लगाई होगी। पूर्व समय में प्रायः यही रिवाज था कि एक बिहार के गिर जाने पर बहुधा उसके मलबे पर दूसरा बिहार खड़ा कर देते थे। यह बात भग्नावशेष देखने से मालूम हो जाती है।

इसके बाद नालंद पड़ता है। यह समस्त भारतवर्ष में प्रसिद्ध है। सातवीं शताब्दी के पहले ही से यह विद्या-स्थान तथा पवित्र भूमि होने के कारण भारतवर्ष क्या, पृथ्वी-भर में प्रसिद्ध है। बख़्तियार ख़िलजी के आक्रमण के पश्चात् इसकी महिमा लुप्तप्राय हो गई थी, किंतु इधर लगभग २० वर्ष से पुरातत्त्वान्वेषियों ने खुदाई करके और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भग्नावशेषों को निकाल-निकालकर इसकी प्राचीनता और गरिमा के चिह्न हमारे सामने रख दिए हैं। नालंद के समीप प्रावारिका स्तवन-नामक आम के पेड़ों के बाग़ में गौतम बुद्ध रहा करते थे। यहाँ जैनों के कई तीर्थंकर तथा महावीर स्वामी भी १४ वर्ष रहे हैं। प्रसिद्ध चीनी यात्री हुएनत्सांग ने भी नालंद का वर्णन किया है। इसके बाद ईत्सिंग-नामक चीनी बौद्ध भी यहाँ आया, और उसने भी यहाँ के विषय में लिखा है।

नालंद हिंदुओं का तीर्थ (धर्म-भावना के अनुसार) नहीं है, किंतु पास ही बड़गाँव - नामक एक गाँव में सूर्य-कुंड हिंदुओं का तीर्थ अवश्य है। प्रातः-सायं यहाँ का दृश्य बहुत मनोहर होता है। यहाँ सैकड़ों यात्री स्नानार्थ आते हैं। जैनों और बौद्धों का तो यह तीर्थ ही है। किसी समय नालंद बहुत बड़ा नगर रहा होगा। मंदिर, महल, ऊँचे-ऊँचे चैत्य और उद्यान रहे होंगे। धुरंधर विद्वान् और धनी-मानी यहाँ रहते होंगे, किंतु अब तो केवल एक ग्राम-मात्र है। यहाँ कमल अधिक होता है। प्राचीन समय में यहाँ सुप्रसिद्ध नालंद-विश्वविद्यालय था। अब तो केवल उसके भग्नावशेष ही दिखलाई देते हैं। असंख्य संघाराम, शालागृह (halls), आँगन के चारो ओर बने हुए कमरों में साधुओं, अध्यापकों के वासस्थान, छात्रालय, चैत्य अथवा स्तूप और मंदिर आदि दृष्टिगोचर होते हैं। पूर्ण या खंडित मूर्तियाँ, पाषाणों या ताम्रपत्रों पर लिखे लेख, मिट्टी की मुद्राएँ, मिट्टी अथवा धातु के पात्र और धातु, मिट्टी तथा पत्थर की अन्यान्य वस्तुएँ खुदाई द्वारा प्राप्त हुई हैं।

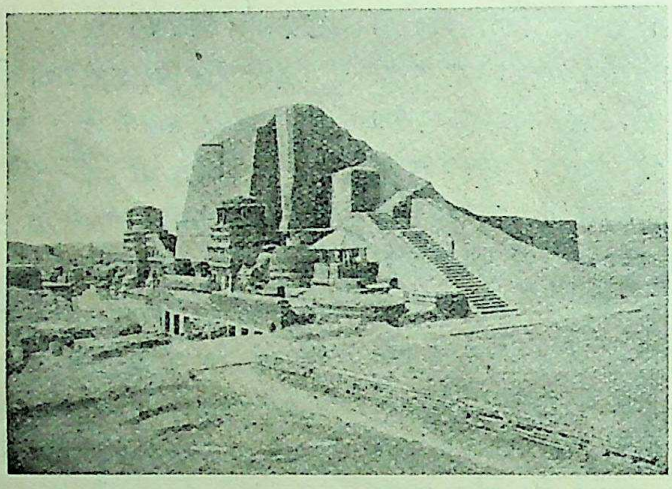

नालंद-विश्वविद्यालय का एक भग्नावशेष

नालंद के बिहार प्रायः एक समान ही बने हैं। तलदर्शन (plan) में वे सभी चौकोर हैं। अंदर खुला हुआ बरामदा है, और चारो ओर कमरे बने हैं। बीच में चौकोर आँगन है, और उसमें कुँआ। कुछ बरामदे तो बिना छत के हैं, और कुछ खंभे-वाले। दीवारें बहुत मोटी हैं। उनमें आले बने हैं। आँगन की ओर ही प्रवेश-द्वार होता है। अब तक आठ - नौ बिहारों का पता चला है।

स्तूप का निर्माण तो स्मारक के रूप में किया जाता है। इनमें बुद्धजी या अन्य बौद्ध महात्माओं की हड्डियाँ, केश आदि दफ़नाए रहते हैं। ये अर्ध-चंद्राकार होते हैं।

जैसा पहले लिखा जा चुका है कि एक बिहार के मलबे पर दूसरा बिहार बनवा लिया जाता है। ऐसा अनुमान किया जाता है कि कम-से-कम ७-८ बिहार एक दूसरे के ऊपर क्रम-पूर्वक बने हैं, किंतु कम - से - कम चार तहों को दिखाया गया है, और उन्हें देखते ही यात्रीगण सुगमता - पूर्वक समझ जायँगे कि पहले की तह (स्तर) और सतह (level) कौन - सी है, और दूसरी कौन।

यहाँ बुद्ध भगवान् के अतिरिक्त तेलिया बाबा, भैरव, ठेलुवा महाराज और बौद्ध देवी मारीची आदि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की मूर्ति[illegible] तथा अन्य [illegible] पर इधर-उधर [illegible]-नामक एक मंदिर भी है।

इन [illegible] से दो मील पर [illegible] सीढ़ियाँ समाप्त [illegible] स्तूप (चैत्य) हैं। इस ओ[illegible] चोटी पर है। [illegible] है। नंबर एक बिहार और ते[illegible] हो गई थी, अत: [illegible] एक-एक विशाल स्तूप है [illegible]र-सा लगता था [illegible]न भिन्न-भिन्न स्तरों (तहों [illegible] के लिये शेर आदि ज[illegible] स्तूप एक ही समय में नहीं [illegible] है। कुछ दूर ऊँ[illegible] में एक स्तूप के मलबे पर [illegible]तर सड़क है—[illegible]ा लगता है।

नालंद[illegible]न न होकर ऊब[illegible] वस्तु, विश्वविद्यालय के भग्नावश[illegible] ऊँचा-नीचा र[illegible] ग्रहालय है, जिसमें पृथ्वी और [illegible]पिया, जो ब[illegible] हुई वस्तुओं का संग्रह है। उस स[illegible]मीनारायणजी [illegible] दाने (जो काले पड़ गए हैं, और [illegible] घर चले [illegible]ले थे), एक अष्टधातु का सिंहासन, [illegible] मस्तानी [illegible]ी और धातु के सिक्के तथा अन्यान्य [illegible] है। स[illegible] निकली हैं, और [illegible] पा[illegible] [illegible]

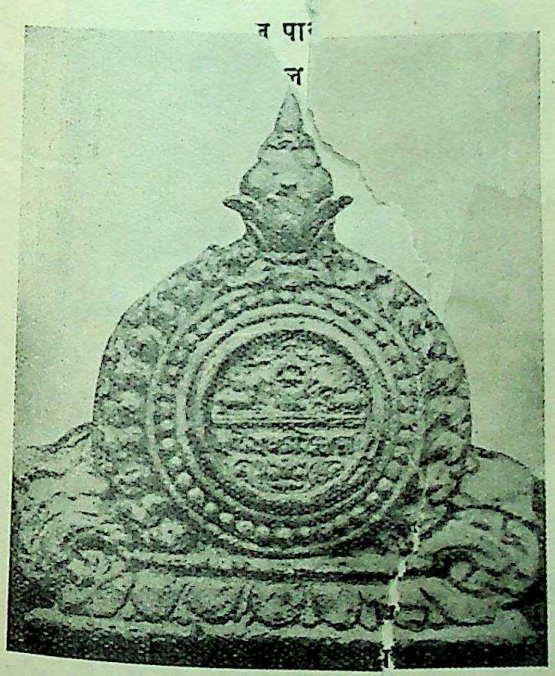

नालंद-म्यूज़ियम

(देवपाल देव के ताम्र-पट्ट क[illegible]

नालंद-म्यूज़ियम

(महाराज शर्ववर्मा की मिट्टी की मुद्रा)

जिनका ऊपर वर्णन हो चुका है, यहाँ जमा की गई हैं।

यह देखकर हम लोग राजगृह चल दिए। वहाँ ५ बजे सायंकाल पहुँचे। गाड़ी यहीं तक आती है, क्योंकि इसके बाद ऊँची-ऊँची पहाड़ियाँ हैं। स्टेशन की स्थिति बड़ी मनोहर है। पास ही एक बौद्धों की धर्मशाला है, जिसमें केवल बौद्ध ही टिक सकते हैं। स्टेशन से थोड़ी दूर पर दो जैन-धर्मशालाएँ हैं, जिनमें प्रत्येक हिंदू को, चाहे वह सनातनधर्मी ही क्यों न हो, ठहरने देते हैं। स्टेशन के पास ही काफ़ी बड़ा बाज़ार है, और आवश्यकता की सभी वस्तुएँ पर्याप्त रूप में और सरलता से मिल सकती हैं। बस्ती भी काफ़ी है।

राजगृह में यों तो ५८ कुंड हैं, पर मुख्य कुंड २२ हैं, जिनमें १७ गरम पानी के और ५ ठंडे पानी के सोते हैं। बदरीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्तरी और यमुनो[illegible] बाद गर्म पानी के सोते देखने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का सौभाग्य मुझे यहीं प्राप्त हुआ। कुछ कुंड गरम जल के हैं, और कुछ ठंडे जल के। सोतों का जल निकलता है, और कुंड पक्के बने हैं, उनमें भरता जाता है। गंगा-यमुना-कुंड और राम-लक्ष्मण-कुंड में तो पास-ही-पास दो पानी की धाराएँ गिरती हैं—एक गरम की और एक ठंडे पानी की। परमात्मा की लीला देखिए—हाथ फैलाइए, एक हाथ में गरम और दूसरे में ठंडा पानी गिर रहा है। इसके अतिरिक्त केदार-कुंड भी है। सप्तकुंड में सात धाराएँ गरम पानी की गिरती और उन सबका पानी एक नीचे बने हुए कुंड में एकत्र होता है, जिसे ब्रह्मकुंड कहते हैं। विपुलाचल या चेतक की जड़ में शृंगीकुंड या मख़दूमकुंड है। ब्रह्मकुंड का पानी बहुत ही गरम है। यहाँ नहाने का बड़ा माहात्म्य है। मैं भी नहाने गया, पर उसमें पैर डालते ही पानी इतना अधिक गरम लगा कि मेरा साहस नहाने का न हुआ, और मेरी धर्म-भावना लुप्त हो गई। हाँ, सप्तकुंडों में से एक गरम धारा के नीचे मैं जी भरकर नहाया। मैं ज्यों ही साबुन लगाने चला, त्यों ही मुझे रोका गया कि यहाँ साबुन लगाना धर्म-विरुद्ध है। ख़ैर, मैं यों ही नहाया। लेकिन उस पानी की यह तासीर है कि मेरे सिर के बालों से स्वतः मैल कटने लगा, और बाल रेशम-जैसे कोमल हो गए। नहाने से सारी थकावट दूर हो जाती, शरीर हल्का पड़ जाता और चित्त प्रसन्न हो जाता है। प्रायः सभी कुंडों का जल लोहे की ख़ोलों (tunnel) द्वारा कुंडों में भरा जाता है, और कुंड कोठरी-नुमा बने होते हैं—पक्के और उनमें सीढ़ियाँ भी होती हैं।

सरस्वती-नदी पर एक पुल है। उसे पार करके, सीढ़ियों पर चढ़कर ऊपर जाना पड़ता है। तब सप्तकुंड और ब्रह्मकुंड है। ऊपर चढ़कर एक और कुंड है। फिर गंगा-यमुना-कुंड पड़ता है। और, यही पक्की सड़क [illegible]

कुंड के पास से [illegible] मुद्राएँ, मिट्टी अथवा धातु [illegible] तक चली जाती है तथा पत्थर की अन्यान्य [illegible] इसी पर्वत पर थोड़ा [illegible] हुई हैं।

बैठक है। कहा जाता [illegible]: एक समान ही बने हैं [illegible] न हो, पर यहाँ अवश्य [illegible] वे सभी चौकोर हैं। अंदर [illegible] वंडीदेवी और मंसादेवी, दोनों [illegible] और चारो ओर कमरे बने गई। चंडीदेवी की इसलिये [illegible] न है, और उसमें कुँआ था, और [illegible] छत के हैं, और कुछ खं [illegible] ोटी हैं। उनमें आले [illegible] प्रवेश-द्वार होता है। [illegible] तक आठ [illegible] बिहारों का [illegible] चला है। [illegible] स्तूप [illegible] निर्मा [illegible] स्मा [illegible]

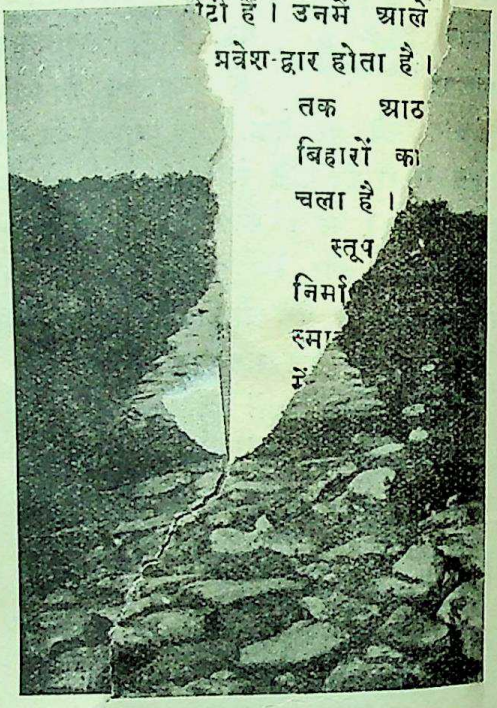

विंबसार-रोड—वैभारगिरि
(राजगृह)

मंसादेवी की इसलिये कि मार्ग इतना ऊबड़-खाबड़ और भयानक था। पहाड़ की चोटी पर ६-७ श्वेतांबर तथा दिगंबर जैनों के मंदिर देखे। सबसे ऊँचे स्थान के पास के मंदिर के निकट प्राचीन समय के खँडहर हैं। खुदाई हुई, उसी में मूर्ति और मंदिर की दीवारें आदि निकलीं। इसके अतिरिक्त [illegible] सिद्धनाथ, महादेवजी (जो बहुत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राचीन हैं) तथा अन्य देवताओं के मंदिर उस पर्वत पर इधर-उधर हैं (सनातनधर्मियों के)। यहाँ से दो मील पर मार्कंडेय-क्षेत्र है, और यहीं पक्की सीढ़ियाँ समाप्त होती हैं। यह क्षेत्र पर्वत की चोटी पर है। सुनसान स्थान है। तनिक रात्रि हो गई थी, अतः बड़ी तेज़ी से उतर रहे थे। डर-सा लगता था। रात्रि को कुंड में पानी पीने के लिये शेर आदि जानवरों के आ जाने का डर भी रहता है। कुछ दूर ऊँचे पर तो पत्थर और गारे की सलोतर सड़क है—पत्थर की सड़क होते हुए भी समान न होकर ऊबड़-खाबड़ है। उसके बाद तो बहुत ऊँचा-नीचा रास्ता है। लौटकर गरम कुंड में पानी पिया, जो बड़ा हाज़िम है। सप्त-कुंड पर श्रीलक्ष्मीनारायणजी का मंदिर है, उसके दर्शन किए, और घर चले आए। रात्रि को यहाँ इतनी ठंडी और मस्तानी हवा चलती है कि चित्त प्रसन्न हो जाता है। सप्तकुंड का पानी ब्रह्मकुंड में और यहाँ का फ़ाज़िल पानी कुंड के बाहर दूसरी ओर एक छेद द्वारा निकाल दिया जाता है, अतः यहाँ लोग साबुन लगाते हैं। पुल के निकट ही एक मसजिद है।

दूसरे दिन प्रातःकाल निकले। पहले एक बर्मा लोगों की धर्मशाला या मंदिर देखा। उसके बाद जापानवालों का मंदिर है, जिसमें केवल उसी देश के यात्री टिक सकते हैं। फिर सरस्वती-नाला पड़ता है, और वैतरणी दूर से दिखाई देती है। अजातशत्रु के लंबे-चौड़े क़िले की चहारदीवारी है, अब खँडहर और भग्नावशेष-मात्र। दीवार में कालीजी की मूर्ति है। क़िले के अंदर महादेवजी का मंदिर देखा।

यहाँ पाँच पहाड़ियाँ हैं, और सब पर जैन-मंदिर हैं। पहले यहाँ बौद्धों का आधिपत्य था, उनके मंदिर थे। उनकी लापरवाही से जैनों ने अपना आधिपत्य जमा लिया, और अब सब मंदिर उनके अधिकार में हैं। पहाड़ियों के नाम ये हैं—(१) वैभारगिरि, (२) विपुलगिरि, विपुलाचल या चेतक (तपोवन), (३) रत्नगिरि या कृषिगिरि, (४ और ५) शैलगिरि और गृद्धकूट। कुछ लोग उदयगिरि और सोनागिरि भी नाम बताते हैं।

वैभारगिरि के दक्षिण में सोनभंडार-नामक प्रसिद्ध गुफा है। यहाँ से ११ मील दूर पावापुर

सतपर्णी-गुफा—वैभारगिरि पर
(राजगृह)

है। यह सिद्ध-क्षेत्र अपने जैन-मंदिरों के लिये प्रसिद्ध है। यह जैनों का तीर्थ है।

यहाँ से ३ मील पर गुणावा-क्षेत्र है। सावन में एक महीने तक यहाँ बड़ा मेला होता है। बहुत-सी दूकानें आती हैं। यहाँ के पंडे अस्थायी और कच्ची दूकानें महीनों पहले से बनवाने लगते हैं। लोगों के ठहरने के लिये भी ऐसी ही कोठरियाँ बनवाते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं। पूजा की छुट्टी में भी यहाँ बड़ी भीड़ होती है। स्वास्थ्य सुधारने के लिये यह बड़ा उत्तम स्थान है। यहाँ की जल-वायु बहुत उत्तम है। गरम पानी के चश्मे होने से रोगियों को भी बड़ी जल्दी आराम होता है। यहीं गृद्धकूट पर गौतम बुद्ध अपने शिष्यों के साथ रहे थे, और उन्हें अपना बहुत समय यहीं व्यतीत करने और अपने शिष्यों को उपदेश देने का अवसर प्राप्त हुआ था। इस स्थान पर मंदिर भी बहुत हैं।

यहाँ से वह स्थान, जहाँ जरासंध और भीमसेन से युद्ध हुआ था, ५ मील है।

यहाँ आने के लिये बख़्तियारपुर-बिहार - लाइट-ट्रेन मिलती है, जो केवल बख़्तियारपुर से राजगृह आती-जाती रहती है, यह मैं पहले ही लिख चुका हूँ। यहाँ की गाड़ी भी एक अजीब चीज़ है। बरसाती नदी की तेज़ लहरों की चपेटों में जैसे नाव डगमग नहीं होती, ऊपर - नीचे होती है, उसी प्रकार यह गाड़ी भी हिल रही थी। ख़ैर, पहाड़ी प्रांत में प्रातःकाल सूर्योदय का आनंद लेते हम लोग राजगृह से चल दिए।

यह यात्रा बहुत सुखकारी हुई। इस यात्रा में एक ऐसी बात हुई, जो बहुत साधारण होते हुए भी दिलचस्प है। विषय के बाहर की बात होते हुए भी उसे लिखने के लिये मुझे क्षमा किया जाय।

नालंद में स्टेशन के निकट ही एक दूकान है—चना, चुड़ुवा, पान, दियासलाई आदि की। मेरे पथ-प्रदर्शक ने मुझसे कहा—"इस तिपाई पर बैठ जाइए।" मेरा बैठना था कि उस दूकान की स्वामिनी एक बुढ़िया ने गालियों की ऐसी झड़ी लगाई, जो मालूम होता था, समाप्त ही न होगी। वह कहती थी—"मेरी दूकान का रास्ता रोक लिया—क्या यह सराय है……" इत्यादि। मुझे एक तरकीब सूझी। मैंने कहा—"माता, ख़फ़ा मत हो। एक आने का सौदा दे दो।" विश्वास कीजिए। इतनी शीघ्रता से वह जलते हुए गरम लोहे से पिघले हुए मोम के समान हो गई। इतनी शीघ्रता से गिरगिट की भाँति उसने रंग बदला कि वह देखने ही वाली चीज़ थी। बोली—"बेटा! तुम लोगों को थोड़े ही कहते हैं—तुम लोग चाहे जहाँ बैठो। हम तो इस आदमी को बक रहे हैं। इसे समझ होनी चाहिए। इसने क्यों बैठाया। तुम लोगों का क्या क़सूर? इसने जहाँ बैठा दिया, वहाँ तुम लोग बैठे। कहाँ तुम लोग बड़े आदमियों के लड़के, कहाँ इस तिपाई पर बैठा दिया। हमारे मेहमान हो। यह कहता, तो टाट बिछा देती……।" मैं मन में बहुत हँसा। मैंने कहा—"लक्ष्मीजी! तुम्हें धन्य है!"

हिंदी-परीक्षाओं की पुस्तकें हमसे मँगाएँ—विशेषकर हिंदी-विशेष-योग्यता तथा हिंदी-साहित्य-सम्मेलन की समस्त परीक्षाओं की। सूचीपत्र मुफ़्त मँगाएँ।

मैनेजर गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रोफ़ेसर भोलानाथसिंह डी० एस्-सी०

[श्रीचक्रधर 'हंस' नौटियाल एम्० ए०, एल्० टी०]

आजकल संसार में विज्ञान का साम्राज्य है। जो देश वैज्ञानिक आविष्कारों में अग्रसर हैं, वे ही वास्तव में उन्नत कहलाते हैं। यह भौतिकवाद (Materialism) का युग है, आत्मवाद शास्त्रों की ही वस्तु गिनी जा रही है, इस पर विश्वास करनेवाले असभ्य, दुर्बल और अवैज्ञानिक समझे जाते हैं। परंतु भौतिकवाद और आत्मवाद को वास्तविकता की कसौटी पर परखने से हम इस परिणाम पर पहुँचते हैं कि मानव का सच्चा हित आत्मवाद ही में है। भौतिकवाद आज संसार को महाप्रलय की ओर घसीट रहा है। आत्मवाद में शांति है, संतोष है, और मोक्ष की भावना है। निःसंदेह भारत को अपनी प्रतिकूल परिस्थितियों पर पश्चात्ताप है। पाश्चात्य देशों को अनुकूल परिस्थितियाँ प्राप्त हैं, उन्हें अपना मानसिक विकास और वैज्ञानिक आविष्कार संसार के सामने रखने का पूर्ण सौभाग्य प्राप्त है, किंतु भारत को—संसार के सर्व-प्रथम गुरु भारत को—ये सब सुविधाएँ प्राप्त नहीं, वह आज स्वयं अपने भाग्य का निर्णायक भी नहीं। इन संकटापन्न परिस्थितियों में भी भारतीय विद्वान् जुगनुओं की भाँति वैज्ञानिक जगत्-आकाश में चमक ही उठे, और इतने चमके, जिनके सामने वैज्ञानिक संसार के सूर्य और चाँद भी निष्प्रभ हो गए। इन्हीं भारतीय वैज्ञानिकों

प्रोफ़ेसर भोलानाथसिंह डी० एस्-सी०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में प्रोफ़ेसर भोलानाथसिंह डी० एस्-सी० भी हैं।

आपका जन्म कपूरथला (पंजाब) में हुआ, किंतु इस रत्न को पं० मदनमोहन मालवीय-सदृश जौहरी कैसे छोड़ सकते थे। प्रो० सिंह अपनी अद्वितीय प्रतिभा और विद्वत्ता के कारण बनारस-हिंदू-युनिवर्सिटी में आकर चमक उठे। प्रो० सिंह को बनारस-हिंदू-युनिवर्सिटी पर गौरव है, और बनारस-हिंदू-युनिवर्सिटी को प्रो० सिंह पर। आपने बनारस-हिंदू-युनिवर्सिटी का नाम संसार के कोने-कोने में उज्ज्वल कर दिया है। संसार के वैज्ञानिक इस युनिवर्सिटी की प्रशंसा किए विना नहीं रह सकते।

प्रोफ़ेसर भोलानाथसिंह बनारस हिंदू युनिवर्सिटी में वनस्पति-जीवन-शास्त्र (Plant Physiology) और कृषि-जीव-विद्या (Agricultural Botany) के आचार्य और कृषि-अनुसंधान-विभाग के संचालक हैं।

आपको ब्राज़ील की 'अकेडेमिया डी साइंसियाज़ ए आर्टेज़ रियो डे जनेरो'-नामक संस्था से 'डिप्लोमा ऑफ़् ऑनर' और 'साइंटिफ़िक मेडल ऑफ़् मेरिट' की उपाधियों द्वारा जो अंतरराष्ट्रीय सम्मान प्राप्त हुआ है, वह भारत के लिये कुछ कम गौरव की बात नहीं। यह विद्वत्परिषद् यह विशेष उपाधि केवल उसी विज्ञान-वेत्ता या कलाकार को प्रदान करती है, जिसने विज्ञान या कला के संबंध में नवीन विचार-प्रणाली दिखाकर मौलिकता में उन्नति की हो। बड़े हर्ष का विषय है कि विज्ञान के क्षेत्र में भारत को यह महत्त्व प्राप्त हुआ।

प्रो० सिंह का जीवन आदर्श है। उन्होंने अपनी योग्यता, अपूर्व उत्साह और स्वविषय की संलग्नता से ही आधुनिक वैज्ञानिक संसार में यह सम्मान प्राप्त किया है।

सन् १९३१ में प्रो० सिंह की सफल प्रेरणा से युनिवर्सिटी के अधिकारियों ने वनस्पति-जीवन-शास्त्र के आधार पर कृषि-अनुसंधान-संस्था स्थापित की, जो कुछ ही समय में आपके अथक प्रयत्न और अद्वितीय संलग्नता से एक सजीव और उन्नत संस्था के रूप में परिणत हो गई। इस संस्था की देशी और विदेशी विज्ञान-वेत्ताओं ने जी भरकर प्रशंसा की है। आपके उद्योग का परिणाम यह हुआ कि सन् १९३७ में 'इंपीरियल काउंसिल ऑफ़् एग्रिकल्चरल रिसर्च' ने आपकी गन्ना और गेहूँ की प्राकृतिक खोज की उन्नति के लिये ६७,९२७ की स्वीकृति दी।

आपने वनस्पति-प्राकृतिक-विद्या, भूमि-विज्ञान, साधारण जीवन-शास्त्र आदि विषयों पर बड़े ही सार-गर्भित और महत्त्व-पूर्ण लेख संसार की सर्वोच्च, प्रसिद्ध मासिक पत्रिकाओं में प्रकाशित कराए, जिनमें से कुछ मासिक पत्रिकाओं के नाम ये हैं—इँगलैंड से प्रकाशित 'दि एनल्स ऑफ़् बॉटनी', 'दि एनल्स ऑफ़् एप्लाइड बाइलॉजी', 'न्यू फ़िटोलॉजिस्ट नेचर', 'जरनल ऑफ़ इकोलॉजी', 'दि बायो-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केमिकल जरनल', 'दि एंपायर जरनल ऑफ़् एक्सपेरिमेंटल एग्रिकल्चर', 'दि एंपायर कॉटन ग्रोइंग रिव्यू', अमेरिका से प्रकाशित 'बोटॉनिकल गज़ट', 'प्लांट - फ़िज़ियालॉजी', 'स्वाइल साइंस अमेरिकन सोसाइटी ऑफ़् एग्रोनामी', 'साइंस', 'फ़िटोपैथोलॉजी', 'जरनल ऑफ़् हेरेडिट', जरमनी से प्रकाशित 'प्रोटोप्लाज्मा', त्रिनिदाद से प्रकाशित 'ट्रॉपिकल एग्रिकल्चर', भारत से प्रकाशित 'प्रोसीडिंग्ज़ ऑफ़् दि इंडियन एकेडेमी ऑफ़् साइंसेज़', 'प्रोसीडिंग्ज़ ऑफ़् दि नेशनल एकेडेमी ऑफ़् साइंसेज़', 'इंडियन ज़रनल ऑफ़् एग्रिकल्चरल साइंस', 'जरनल ऑफ़् दि इंडियन बोटॉनिकल सोसाइटी', 'करेंट साइंस', 'साइंस ऐंड कल्चर ऐंड प्रोसीडिंग्ज़ ऑफ़् दि सोसाइटी ऑफ़् बायलॉजिकल केमिस्ट्स्'।

प्रो० सिंह के लेखों और रचनाओं की समालोचना करते हुए 'नेचर'-नामक प्रसिद्ध पत्रिका ने अपनी संपादकीय टिप्पणी में, 'भारतीय खेती की वनस्पति-जीवन-विद्या'-शीर्षक में, लिखा था—

"कुछ वर्षों से बनारस-हिंदू-युनिवर्सिटी के कर्मचारी, प्रोफ़ेसर बी० एन्० सिंह की प्रधानता में, भारतीय फ़सल के वनस्पति-जीवन-शास्त्र के सविस्तर तुलनात्मक अध्ययन में लगे हुए थे। इस समय इस विषय में अनेक लेख प्रकाशित हो चुके हैं,...और इस महत्त्व-पूर्ण और विशेष रोचक विषय में संदेह नहीं कि पर्याप्त उन्नति हो चुकी है। इस संबंध में जो बहुत ही विस्तार-पूर्ण कार्य समाप्त हुआ है, वह है आलोक - चित्र - संयोग (Photo-synthesis), जो प्रकाश, ताप-क्रम या कार-बनडाइ-ऑक्साइड के योग की विभिन्न अव-स्थाएँ हैं।" आदि।

प्रो० सिंह के प्रकाशित लेखों और रचनाओं की संसार की सुविख्यात मासिक पत्रिकाओं ने—जैसे 'ट्रॉपिकल एग्रिकल्चर', 'साइंस', 'ब्यूरिच्टे यूबेर डाइ गेसाम्टे बायोलॉजी अन्टेलंग'—अपनी संपादकीय टिप्पणियों में काफ़ी प्रशंसा की है। विशेष पैदावार के लिये गेहूँ पर खाद के प्रयोग और गन्ने पर मिश्रित प्रयोगों की सर ई० जे० रसल एफ़्० आर० एस्०, डाइरेक्टर राथम्स्टेड एक्सपेरिमेंट स्टेशन और प्रोफ़ेसर आर० ए० फ़िशर एफ़्० आर० एस्०, इन देश-स्थिति-विद्या के विशेषज्ञों ने प्रो० सिंह और युनिवर्सिटी की जी खोलकर प्रशंसा की है। ये विद्वान् इँगलैंड में स्वयं भी इन्हीं प्रयोगों की सफलता में संलग्न हैं। सूडान-सरकार ने अपने प्लांट-फ़िज़ियालॉजिस्ट डॉक्टर एफ़्० क़ादर को विशेष रूप से प्रो० सिंह की लेबोरेटरी और फ़ॉर्म की कार्य-प्रणाली के अध्ययन के लिये भेजा था। उन्होंने लिखा है—"अंत में मुझे अपनी यात्रा में सचमुच अच्छे फ़िज़ियालॉजिकल कार्य को देखकर अत्यंत हर्ष हुआ।" प्रोफ़ेसर बी० एच्० ब्लैक-मैन एफ़्० आर० एस्० ने जब ब्रिटिश-साइंस-डेलीगेशन के सदस्य के रूप में बनारस-हिंदू-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युनिवर्सिटी का निरीक्षण किया, तो लिखा—"उत्तम सामग्री से संपन्न इस कृषि-अनुसंधान की संस्था को सभी सुविधाएँ प्राप्त हैं। यह संस्था प्रो० सिंह की देख-रेख में कार्य कर रही है। इसे भारत में वही स्थान प्राप्त है, जो ग्रेट ब्रिटेन में प्लांट-फ़िज़ियालॉजिकल-संस्था को मेरे अधीन प्राप्त है।"

'साइंस ऐंड कल्चर' की साइंस-कांग्रेस-सिलवर-जुबिली संस्था में प्रो० सिंह के 'बायालॉजी ऑफ़् लौंगेविटि ऐंड डेथ'-शीर्षक लेख की—जो प्रोफ़ेसर एम्० एन्० साह एफ़्० आर० एस्० द्वारा संपादित होकर सर्व-प्रथम स्थान में प्रकाशित हुआ था—एडिनबरा-युनिवर्सिटी के प्रोफ़ेसर क्रू, डाइरेक्टर ऑफ़् दि इंस्टीट्यूट ऑफ़् एनिमल जेनेटिक्स ने, जो इस विषय के प्रकांड विद्वान् हैं, अत्यंत प्रशंसा की है। जिस समय वह कलकत्ते में, 'इंडियन साइंस कांग्रेस' और 'ब्रिटिश एसोसिएशन फ़ॉर दि एडवांसमेंट ऑफ़् साइंस' की सम्मिलित बैठक में, 'बायलॉजी ऑफ़् डेथ' पर भाषण दे रहे थे, उन्होंने कहा था—"मैंने ऐसे किसी दूसरे जीव-शास्त्रज्ञ (Biologist) को नहीं देखा, जिसका कार्य इस विषय में इतना विस्तार-पूर्ण हो, जितना प्रोफ़ेसर सिंह का, जिनके कार्य और रचनाओं द्वारा इसी विषय में मेरे विचारों में भी बहुत कुछ परिवर्तन हो गया है।"

निम्न-लिखित प्रसिद्ध विद्वानों ने भी प्रो० सिंह के उद्योग और सराहनीय कार्य की विशेष प्रशंसा की है—सर जे० सी० बोस, हिज़ एक्सेलेंसी सर हेरी हेग, यू० पी०-गवर्नर, सर सिवस्वामी आयर, सर एम्० विश्वेश्वरय्य, सर टी० विजयराघवाचार्य, सर ब्राइस बर्ट, सर फ्रैंक ब्वाइस, सर फ्रांसिस यंग हसबैंड, सर रिचर्ड ग्रेगरी, जो 'ब्रिटिश एसोसिएशन फ़ॉर दि एडवांसमेंट ऑफ़् साइंस' के मेंबर हैं। आदि।

डॉक्टर सिंह के नेतृत्व और निरीक्षण में जो व्यावहारिक जीवन में काम आनेवाली विशेष उपयोगी कार्य-पद्धतियाँ आजकल प्रयोग में हैं, उनमें से कुछ इस प्रकार हैं—आलू और फलों पर शीत और गैस के प्रयोग, भारतीय उपज में अनावृष्टि की रोक के लिये फ़िज़ियालॉजिकल आधार, वनस्पतियों की प्रकृति के अध्ययन तथा वनस्पति-विज्ञान द्वारा पौदों की उन्नति, घास-पात की रोक की योजनाएँ, हरी पौद के लिये खाद की समस्याएँ आदि।

भारतीय कृषि की उन्नति भविष्य में किस प्रकार हो सकती है, इस विषय में प्रो० सिंह ने दो लेखों द्वारा अपने विचार प्रकट किए हैं। उनका एक लेख 'भारतीय संघ-शासन में कृषि का पुनर्निर्माण' (Reorganising Agriculture in Federal India)-शीर्षक था, और दूसरा वह था, जो उन्होंने बनारस-हिंदू-युनिवर्सिटी के 'पुराने छात्र-संघ' के अधिवेशन के अवसर पर सभापति के पद से पढ़ा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रो० सिंह ने संसार की वैज्ञानिक दौड़ में भारत का नाम उज्ज्वल कर दिया है। जैसा मैंने अपने इस लेख के प्रारंभ में कहा था, आज से नहीं, हज़ारों वर्ष पूर्व से भारत संसार का गुरु रहा है। यहाँ अनेक विदेशी अध्यात्म, विज्ञान और संस्कृति के अध्ययन के लिये आते रहे। नालंदा और तक्षशिला के विश्वविद्यालय कहानियों के नाम-मात्र नहीं हैं। इसमें संदेह नहीं कि आज भारत अपना पुराना आदर्श भूल गया है। समय की विषम परिस्थितियों के कठिन प्रहार से जर्जरित होकर संसार का सर्व-प्रथम आचार्य भारत आज मुमूर्षु अवस्था में है, विदेशी उन्नत जातियाँ वृद्ध भारत का परिहास कर रही हैं। परंतु प्रो० सिंह ने संसार को दिखा दिया कि भारत में अभी जीवन है, भारतीय संस्कृति अभी सजीव है, और अब फिर वह समय बहुत समीप है, जब विदेशी भारत में शिक्षा-ग्रहण करने आवेंगे, और भारत का नाम फिर संसार के कोने-कोने में गूँज उठेगा।

गद्य-काव्य

[कुमारी विद्या भार्गव]

दुनिया के दोष देखते-देखते मैं अपने दोषों को जैसे भूल गई।

मुझे ज्ञात है, मेरे पास इतना समय नहीं, मेरे निकट देवत्व नहीं, जीवन की मृदुता नहीं, फिर भी मैं रीते पात्र की भाँति अपने छोटेपन को छिपाती रही; किंतु एक पल के लिये मैंने कभी दुनिया के ऐबों को देखना छोड़ अपने दोषों को देखना चाहा है, तो मेरे सत्य! संपूर्ण जीवन मुझे दोषों से भरा जान पड़ता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीरामजीप्रीत्यर्थं

(मेरे जीवन की अव्यवस्था)

[श्रीयुत गुलाबराय एम्० ए०]

विश्व-व्यापकता का यदि कुछ महत्त्व है, तो मूर्ख-संप्रदाय के आगे दुनिया में कोई संप्रदाय नहीं ठहर सकता। संसार में कोई ऐसा व्यक्ति, दल या समुदाय नहीं, जो किसी-न-किसी द्वारा मूर्ख न समझा गया हो। इस पद के लिये न किसी को सलाम झुकाने की आवश्यकता होती है, और न अख़बारों में अपने कारनामों का ढिंढोरा पीटना पड़ता है। इसके लिये चातक-दृष्टि लगाकर ऑनर्स-लिस्ट की भी बाट नहीं जोहना पड़ती। इसके लिये यह कहने की आवश्यकता नहीं कि "गुन ना हिरानो, गुन-गाहक हिरानो है।"

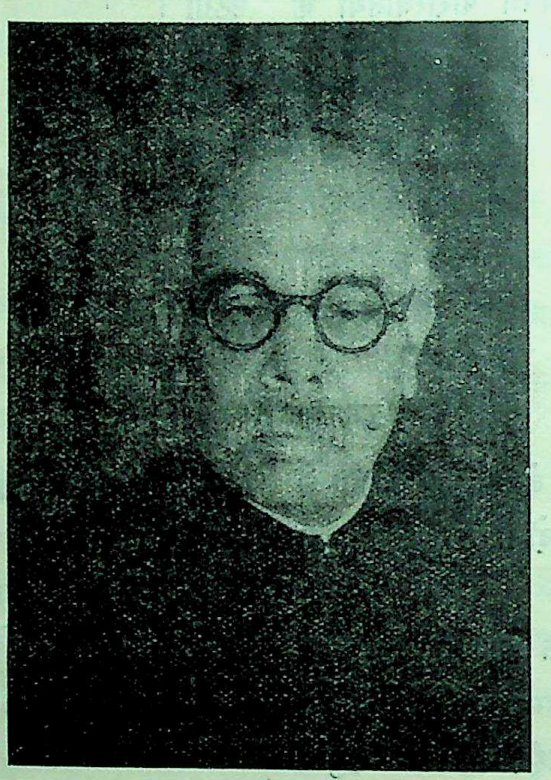

श्रीयुत गुलाबराय एम्० ए०

इस परम पुनीत, आदितम संप्रदाय के काशी और प्रयाग की भाँति शिकारपुर और भौगाँव दो तीर्थ-स्थान हैं। इनमें किसकी प्रधानता है? इस महत्त्व-पूर्ण प्रश्न का निर्णय करने में "कवयोऽप्यत्र मोहिताः" फिर 'अस्मदादिकानां का वार्ता?'

यद्यपि भौगाँव से सर-सरसिज, राका-शशि या वलय और मणि का-सा मेरा कोई सहज संबंध नहीं, तथापि मेरे ब्रह्मा, विष्णु और महेश्वर-स्वरूप परमदैवत गुरुदेव (पंडित गिरिजाशंकर मिश्र), जिनके चरणांबुजों का चंचरीक बनकर मैंने विद्याओं की विद्या देववाणी (संस्कृत) का अध्ययन किया था, इसी पुण्य क्षेत्र के निवासी थे। उन्हीं की कृपा का बल प्राप्त कर मैंने फ़ारसी छोड़कर नाइंथ क्लास में संस्कृत ली थी, और जिस प्रकार नया मुसलमान अल्ला-ही-अल्ला पुकारता है, मैं भी बात-बात में संस्कृत बघारने लग जाता था। यद्यपि मिथ्या पांडित्य-प्रदर्शन की यह आदत अच्छी नहीं, तथापि नीलकंठ भगवान् शंकर के कंठस्थ विष की भाँति मैंने इसे छोड़ा नहीं। "अङ्गीकृतं सुकृतिनः परिपालयन्ति।" खद्दर पर सलमे-सितारे के काम की भाँति समय-कुसमय मैं अपने लेखों में संस्कृत के अवतरणों का पुट देकर एक साथ अपनी विद्या और अविद्या का परिचय दे देता हूँ, क्योंकि उनमें प्रायः ग़लतियाँ रह जाती हैं, और इस प्रकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तम और प्रकाश का संबंध, जिसे वेदांतांबुज-सूर्य श्रीशंकराचार्य ने असंभव माना है*, संभव हो जाता है। यह कुछ विषयांतर-सा हो गया, किंतु इस मूर्खता के लेख में संगति की खोज करना असंगत है, और युक्तिमत्ता की आशा करना मूर्खता ("गरल सराहिय मीचु")। अस्तु। महर्षि देवेंद्रनाथ की जीवनी में मैंने पढ़ा था कि उनकी तारीफ़ में इससे अधिक अच्छी बात क्या हो सकती है कि वह विश्वकवि रवि बाबू के पूज्य पितृदेव हैं। कुछ-कुछ ऐसा ही संबंध भौगाँव का मैनपुरी से है, जहाँ मैंने अपने जीवन की अरुणोदय-सी स्वर्णिम बाल्य-वेला बिताई थी। भौगाँव मैनपुरी के ही ज़िले में है। 'सियाराममय सब जग जानी' वाले विश्व-मैत्री के नाते से कुछ अधिक घनिष्ठतर मेरे एक मित्र, जो एक बड़े मासिक पत्र के संपादक हैं, मुझसे प्रायः यह पूछकर कि मैं मैनपुरी में कितने दिन रहा, अपने हास्य-विनोद-प्रेम का परिचय दे देते हैं। उनका घर भी मैनपुरी-ज़िले में है। उन्हीं के प्रीत्यर्थ मैं यह लेख लिख रहा हूँ।

यद्यपि मैं अपने शिकारपुरी मित्र की प्रतिस्पर्धा नहीं कर सकता, क्योंकि मैं उनके जूते के तस्मे भी खोलने की योग्यता नहीं रखता, तथापि मेरे जीवन में अव्यवस्था, अव्यावहारिकता, अदूरदर्शिता, अज्ञान और भुलक्कड़पन की मात्रा पर्याप्त रही है।

अव्यवस्था ही मेरे जीवन की व्यवस्था है। आदर्शवाद से मैं कोसों दूर रहा हूँ, और मैं समझता हूँ, जीवन में जो कुछ कर सका हूँ, इसी कारण कर सका हूँ। 'अकरणान्मंदकरणं श्रेयः' मेरे जीवन का मूल-मंत्र रहा है। एक आदर्शवादी राज्य में मैंने कुछ दिन काम किया था। मेरे चार्ज में एक स्कूल भी था। उसके छात्रावास के लड़कों के पलंगों की चादरों के संबंध में मैंने रिपोर्ट की। उसी के साथ मेरे आक़ाए-नियामत ने उनकी सारी पोशाक का प्रश्न उठाया। वह स्वदेश-भक्त थे, फिर भी रेंकिन और एस्क्रिथ ऐंड लॉर्ड तक के यहाँ से कोटेशन मँगवाए गए। लाल इमली, धारीवाल और बांबे वुलेन मिल्स और न-जाने कहाँ-कहाँ से नमूनों और टेंडरों का आवाहन हुआ। जूतों की क़ीमतें जानने के लिये आगरे और कानपुर को काग़ज़ के ही घोड़े नहीं, बिजली तक के घोड़े दौड़ाए गए। लड़के भी यह स्वप्न देखने लगे कि हम राजा साहब की सारूप्यता प्राप्त कर लेंगे; सालोक्यता और सामीप्यता तो उन्हें प्राप्त थी ही। लेकिन उनका स्वप्न रात्रि के पूर्वार्ध का स्वप्न निकला (ऐसा विश्वास है कि जो स्वप्न रात्रि के पूर्वार्ध में देखे जाते हैं, वे चरितार्थ नहीं होते)। मेरी स्थिति के सात मास बीत गए, फिर भी बेचारे विद्यार्थियों के पलंगों की चादरें वैसी ही रहीं। उसके छ महीने बाद भी मुझे स्वयं राजा साहब के पत्र से ज्ञात हुआ कि आश्रम के लड़कों के पैरों को तब तक जूते भी नहीं मिले थे। ऐसे आदर्शवाद के मैंने सदा हाथ जोड़े हैं, और उसी के साथ आदर्शवादियों के भी। उस रियासत से मुझे शीघ्र ही पतंग कटानी पड़ी। एक फ़ाइल का स्वयं पता दे देने के कारण मेरा तनज़्ज़ुल हुआ, होम करते हाथ जला। मैंने त्याग-पत्र दिया, उसकी स्वीकृति स्थगित रही। इतने में होली का पर्व आया। देव-मंदिर में होली धूम-धाम से मनाई गई। रंगरेजी और रंगरेली (शाब्दिक अर्थ में) हुई। मंदिर के भीतर-बाहर रंगीन जल का साम्राज्य हो गया। दूसरे रोज़

* युष्मदस्मत्प्रत्ययगोचरयोर्विषयविषयिणोस्तमः प्रकाशवद्विरुद्धस्वभावयोरितरेतरभावानुपपत्तौ सिद्धायां तद्धर्माणामपि सुतरामितरेतरभावानुपपत्तिः।

(शा० भा० भूमिका)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भक्त-रूप से राजा साहब को देव-दर्शनार्थ पधारना था। मंदिर का रंग धुलवाने और जल के सोखने का प्रबंध मेरे ज़िम्मे था। वरुणदेव की मेरे ऊपर बड़ी कृपा है। एक साल मेरे मकान पर आक्रमण किया था, उस साल मेरी रोज़ी पर। मंदिर के भीतर का जल सूख गया था। बाहर एक जगह से वह नितांत निःशेष न हो सका। मैं अगस्त्य मुनि का अवतार न था। निःशेष न होने का कारण यह था कि वहाँ कोई मोरी न थी। राजा साहब के चरणांबुजों को आर्द्र करने के लिये जल पर्याप्त से कुछ कम था, और काशी-विश्वनाथ के मंदिर के रौप्य-राशि-जटित धरातलगत जल के सहस्रांश से शायद कुछ अधिक।

राजा साहब की भक्ति-भावना उनकी प्रबंध-प्रियता पर विजय न पा सकी। तुरंत मेरी और किसी दूसरे क़सूर पर फ़ौज के अफ़सर की मुअत्तली का हुक्म निकल गया। फिर राजा साहब ने बड़ी भक्ति के साथ देव-दर्शन किया। दीनता से दंडवत् हो गए। दूसरे अफ़सर साहब ने क्षमा-याचना कर ली। मैंने राजा साहब को नम्रता-पूर्वक लिख दिया कि मैं आपके कष्ट के लिये दुखी हूँ। क़सूर की हाथ जोड़कर क्षमा माँगता हूँ, सज़ा की नहीं। मेरे इस्तीफ़े की स्वीकृति स्थगित न रक्खी जाय। तुरंत चार्ज दे देने की आज्ञा मिल गई। मुझे मालूम हो गया कि नौकरी का स्थायित्व वहाँ नलिनी-दल-गत जल से भी अतिशय तरल था। मैं वहाँ अधिक ठहरा नहीं, अच्छा ही हुआ। 'बकरे की मा कब तक ख़ैर मनाती!' उन राजा साहब का मैंने नमक-पानी खाया है। उनकी बुराई नहीं करना चाहता था। सच्चे खिलाड़ी की भाँति वह मुझे क्षमा करेंगे। मेरे मित्र मज़कूर ने एक बार किसी से कहा था कि बाबूजी ने अपने सब संस्मरण लिखे, उक्त रियासत से निकाले जाने का नहीं लिखा। उनकी प्रसन्नता के लिये अपनी अव्यावहारिकता के प्रमाण-स्वरूप इसे लिख दिया है।

मैं अपना समय दार्शनिक चिंता में तो नहीं खोता, किंतु दार्शनिकों की-सी अव्यवस्था मेरे जीवन में अवश्य है। इसी कारण कभी-कभी दार्शनिक होने का गौरव प्राप्त कर लेता हूँ। यद्यपि मैं उन दार्शनिकों में तो नहीं हूँ, जो अपना ही नाम भूल जाते हैं, अथवा छड़ी को चारपाई पर सुलाकर आप रात-भर कोने में खड़े रहे, किंतु कमरे की सजावट और वस्तु-विन्यास में कार्लाइल द्वारा वर्णित प्रोफ़ेसर ट्यूफ़ेलसड्रोक से प्रतिस्पर्धा अवश्य कर सकता हूँ। मेरे मित्र मिश्र-बंधुगण पर यदि निर्णय का भार रक्खा जाय, तो वे मुझे दो ही चार नंबर कम देंगे, और किसी आधुनिक प्रगतिशील आलोचक को यह काम सौंपा जाय, तो वह मुझे कम-से-कम ५० नंबर अधिक देगा। वह कहेगा, आप इस युग में रहते हैं, वह प्रोफ़ेसर दो सौ वर्ष पहले रहता था। आपकी जाँच वर्तमान माप-दंड से होगी, इसलिये वह मुझे अव्यवस्था में १०० के स्थान में १५० मार्क देने की कृपा करेगा। रहन-सहन की अव्यवस्था में अगर मैंने किसी से हार मानी है, तो श्री 'निराला'-जी से। हाँ, कार्लाइल का वर्णन देखिए—

"It was a strange apartment; full of books and tattered papers, and miscellaneous shreds of all conceivable substances united in a common element of dust. Books lay on tables and below tables; here fluttered a sheet of manuscript, there a torn handkerchief, or night cap hastily thrown aside; ink bottles alternated with bread crusts, coffee pots, tobacco boxes,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

periodical literature, and Blucher-Boots."

इसका अनुवाद मैं नहीं करना चाहता, किंतु अँगरेज़ी न जाननेवालों के हितार्थ टूटा-फूटा अनुवाद दे रहा हूँ—

वह एक अजीब कमरा था। उसमें बिखरी हुई किताबों और फटे काग़ज़ों तथा कल्पना में आ सकनेवाली प्रायः सभी स्फुट वस्तुओं के टुकड़े धूल के एक ही मूल-तत्त्व से वेष्टित रहते थे। पुस्तकें मेज़ों पर, मेज़ों के नीचे पड़ी रहती थीं। कहीं पुस्तकों की फटी हुई पांडुलिपियाँ फरफ़राती थीं, और कहीं फटा हुआ रूमाल और जल्दी से उतारी हुई नाइटकैप पड़ी रहती थी। स्याही की बोतलें, रोटी के टुकड़े, काफ़ी-पात्र, तंबाकूदान, मासिक पत्र और बूट विकल्प से दर्शक का ध्यान आकर्षित करते थे।"

बाल्यकाल में तो अव्यवस्था क्षम्य ही नहीं होती, वरन् कभी-कभी माता-पिता के आमोद का भी कारण बन जाती है, किंतु कॉलेज-जीवन का विद्यार्थी रहन-सहन के लिये उत्तरदायी समझा जाता है। उस जीवन का भी मैं कोई संतोष-जनक वर्णन नहीं दे सकता। बाल्य-काल की केवल एक घटना स्मरण है। मैं अपनी ननसाल, जलाली ज़िला अलीगढ़, गया हुआ था। मेरी धोती नहीं मिल रही थी। मैं मैनपुरी की बोली में चारो ओर कहता फिरता था—"हमारी धुतिया किएँ गई?" वहाँ के पश्चिमी लोगों ने मेरी अर्धपूर्वी बोली की बड़ी हँसी उड़ाई। उन लोगों ने मेरा नाम पुरबिया रख लिया था। मेरा पैत्रिक घर जलेसर में है। (वहाँ के रहनेवालों का सर जला नहीं होता) वह भी कुछ-कुछ पश्चिमी भाग में है। वहाँ के मेरे एक विनोद-प्रिय चचा साहब ने मेरी बोली सुन-कर कह ही तो डाला—"देशी गधा पूर्बी रहँक।" तब से मैंने मातृभाषा अर्थात् व्रजभाषा का, जो मेरी माता बोलती थीं, अभ्यास किया। वह स्कूल में गँवारू समझी जाती थी। इसलिये खड़ी बोली का अभ्यास किया, जो पैत्रिक बोली थी। भाषा के संबंध में एक बात और याद है कि मेरे किसी गुरुजन ने मुझे 'हम' कहने पर बहुत डाटा था। उन्होंने कहा था, इसमें विनय का अभाव है। वह बात मैंने गाँठ बाँध ली। मैंने तो 'हम' कहना छोड़ दिया है, किंतु एक महाशय, जिन्हें 'हम' के प्रयोग पर मैंने कई बार टोका है, अभी तक उसका मोह नहीं छोड़ सके। शायद वह 'हम'-शब्द में हिंदू और मुसलिम-एकता का प्रतीक देखते हैं ('ह' से हिंदू 'म' से मुसलमान)। ईश्वर उन्हें सद्बुद्धि दे। विषयांतर के लिये पुनः क्षमा-याचना।

वैश्य-बोर्डिंग-हाउस में जब मैं पढ़ता था, तब भी मेरी अव्यवस्था कुछ-कुछ प्रोफ़ेसर ब्यूफ़ेलसड्रोक के आदर्शों से मिलती थी। मुझे एक छोटी-सी कोठरी मिली थी। उसके लिये बड़ी सिफ़ारिश की ज़रूरत पड़ी थी। मेरे पास ट्रंक के स्थान में एक चीड़ का बक्स था। जिस प्रकार बिना मरे स्वर्ग नहीं दिखाई पड़ता, उसी प्रकार उन दिनों बिना प्रयाग गए अच्छा ट्रंक नहीं मिलता था। लोग ज़्यादातर अंडाकार टीन के डब्बों से काम चलाते थे (यह है सन् १९०६ की बात, जब मैं एफ़० ए० के सेकंड इयर में पढ़ता था)। उन दिनों मुझे विज्ञान से कुछ शौक़ हो गया था। मेरी धारणा थी कि पानी के नलों की ऐसी व्यवस्था की जा सकती है कि पानी ऊपर से गिरे और फिर अपने आप ऊपर उठ जाय। इस प्रकार सतत गति (Perpetual Motion), जिसे विज्ञान असंभव मानता है, संभव हो सकती है। यह मेरी मूर्खता ही थी। मैं काच की नलिकाओं से, जिन्हें मैं अपने वैज्ञानिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहपाठियों से माँग लेता था, और जिन्हें मैं दीप-शिखा पर (उस समय कड़ुए तेल के चिराग़ चलन से बाहर नहीं हुए थे। जैसे किसी विरले को भगवद्भक्ति प्राप्त होती है, वैसे किसी भाग्यवान् के पास टेबिल लैंप रहते थे) टेढ़ा कर मन-चाहा आकार दे देता था, प्रयोग किया करता था। मेरे चीड़ के बक्स के एक कक्ष में ऐसी ही धूम्र-कलुषित नलिकाओं की भीड़-सी लगी रहती थी। उसके साथ कुछ गंधक, फिटकरी आदि द्रव्य भी पड़े रहते थे, जिनके आधार पर मैं आविष्कारक बनने का दुःस्वप्न देखा करता था। पीछे से उस बक्स का ढक्कन उससे असहयोग करने लगा था। उस बक्स के अतिरिक्त एक चार पाई थी, जो अदवाइन ढीली रहने के कारण (मैं नौकरों से किसी बात को डाटकर कहना नहीं जानता था) नतोदर (convex) बनी रहती थी, और मैं यह संतोष कर लेता था कि अगर सोते में मेरे ऊपर कोई लाठी चलाएगा, तो मेरे न लगकर पाटियों पर रुक जायगी। कमरे में दरी के फ़र्श के स्थान में खजूर की चटाई थी। उसकी पट्टियाँ जीर्ण होकर कमरे के भिन्न-भिन्न भागों पर, विभाजित कुटुंब के सदस्यों की भाँति, अपना-अपना स्वतंत्र अधिकार स्थापित करना चाहती थीं। मेज़ पर तैलाभिषिक्त ईंट रहती थी, उस पर स्नेहाप्लावित ज्ञान का दीप जलता था, कोर्स की पुस्तकें अलमारी से और विना कोर्स की मेज़ पर से मेरा ध्यान आकर्षित करने के लिये प्रतिस्पर्धा करती रहती थीं। बुकमैन नाम के कबाड़िए से ख़रीदी हुई जीर्ण-शीर्ण, परंतु महत्त्व-पूर्ण कुछ पुस्तकें अलमारी में इस आशा से डटी रहती थीं कि 'कबहुँ तो दीनदयाल के भनक पड़ेगी कान।' यद्यपि ब्रह्मचारियों की-सी, फूस के झाड़-जैसी, घनी चोटी रखनेवाले सिद्धांती महाशय-टाइप के विद्यार्थियों में से न था, जो देश छोड़कर सात समंदर-पार विलायत में वेदों का डंका बजाकर ही दम लेना चाहते थे, तथापि मुझ पर स्वदेशी का काफ़ी प्रभाव था। ख़ुदरंग पट्टू की अचकन पहनता था। उसके तंतुओं के व्यक्त हो जाने को मैं भारत की ग़रीबी का प्रतीक समझता था। यही मेरी हालत थी, पीछे से कुछ सुधार हुआ। चीड़ के बक्स का उत्तराधिकार ट्रंक को मिला। पट्टू के स्थान में मिल का कपड़ा आया, लेकिन फिर भी वही बेढंगी रफ़्तार रही। मेरे कुछ मित्र, जो मुझ पर स्नेह का अधिकार रखते थे, मेरी इस अव्यवस्था से नाराज़ थे। उनमें अलीगढ़ के बाबू जानकीप्रसाद सिंहल तो मुझे हबूड़ा कहकर ही संतोष कर लेते थे, किंतु बाबू जमुनाप्रसादजी ने, जो आजकल मथुरा-म्युनिसिपल-बोर्ड के चेयरमैन हैं, मेरे सुधार का बीड़ा उठाया था। इस संबंध में एक मनोरंजक घटना मुझे स्मरण है। उस समय मैं एम्० ए० में पढ़ता था। प्रोफ़ेसर भी हो गया था। मेरे एक मदरासी दार्शनिक गुरु भाई का (मेरे गुरुदेव प्रोफ़ेसर इरिकड़ू मदरास से ही आए थे), जो एम्० ए० में फ़र्स्ट आए थे, और आई० सी० एस्० के लिये विलायत जाना चाहते थे, पत्र आया कि मैं उत्तर-भारत देखना चाहता हूँ। मैं उनसे आकर दिल्ली में मिलूँ। जमुनाप्रसादजी, कमलाप्रसादजी, किशनलालजी आदि मेरे कई मित्र मेरे साथ गए। जमुनाप्रसादजी बड़े दुःखित थे कि मैं एक ऐसे महान् व्यक्ति से मिलने जा रहा हूँ, जो आई० सी० एस्० के लिये विलायत जानेवाला है, और जो सूट-बूट से अप-टु-डेट सेकिंड क्लास में आता होगा, और मेरे पास लट्ठे का पाजामा, पुराने कोट और बेढंगी टोपी के सिवा और कुछ नहीं। दिल्ली पहुँचकर उन्होंने यथाशक्ति मेरी टीम-टाम की। आग्रह कर नई टोपी ख़रिदवाई, कोट के नीचे एक कॉलर भी लगाया, और पूरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पार्टी के साथ मदरासी मित्र के स्वागत के लिये स्टेशन पहुँचे। उनकी ट्रेन लेट थी, प्रायः एक बजे तक रात प्लेटफ़ार्म की बेंचों और वेटिंग रूम की कोचों पर बिताई। ट्रेन की घंटी होने पर एक बार फिर लोगों ने अपने और मेरे कपड़ों की झाड़-पोंछ की। कुली से पूछा, सेकिंड क्लास कहाँ खड़ा होता है? 'भ्रू पर पानि' हो शबरी की भाँति उसकी प्रतीक्षा की। ट्रेन आई, सेकिंड क्लास वहीं खड़ा हुआ, जहाँ हम खड़े थे। मेरे मित्र डब्बे के द्वार पर ही खड़े थे। उनका मुख और उनके केश कालिमा में कंपिटीशन कर रहे थे। बढ़े हुए बाल ऊपर को ऐसे खड़े थे, मानो उनमें विद्युच्छक्ति का संचार हो गया हो। उनके बाल भालू के-से रुक्ष, स्नेह-शून्य और कंघे से अपरिचित थे। बदन पर एक मैली क़मीज़ थी, जिस पर रेल के कोयले के कणों का गहरा स्तर उनके चेहरे की परछाईं-सा मालूम होता था। उसके ऊपर तह किया हुआ उत्तरीय था। उनके चरण-सरोज उपानह की 'सामा'-विहीन थे, और कुछ-कुछ मलिनता के कारण दीन-से प्रतीत हो रहे थे। उन्हें देखकर जमुनाप्रसादजी की आँतें जल गईं। मेरे मुँह पर प्रसन्नता की रेखा स्पष्ट हो गई। विजय-गर्व से मैं जमुनाप्रसाद की ओर देखने लगा।

छतरपुर में पद के कारण कुछ व्यवस्था सुधरी थी, लेकिन बाहर के कमरे तक ही, पोशाक में अधिक परिवर्तन नहीं हुआ था। भाग्य से मेरे महाराजा पोशाक की ज़्यादा परवा नहीं करते थे, किंतु वह भी कभी-कभी मेरे शिकन पड़े हुए पाजामा का स्लेट पर स्केच बनाकर मेरा मज़ाक़ उड़ा लेते थे। अब अपना घर बन जाने के कारण कुछ व्यवस्था सुधरी है, उसका श्रेय मेरी देवीजी तथा मेरे सुपुत्रों को है। उनकी व्यवस्था में अव्यवस्था उत्पन्न करना मेरा प्रिय व्यसन है। यहाँ भी दो-एक महाशयों ने मेरे सुधार का बीड़ा उठाया है। एक अधिक नफ़ासत-पसंद महोदय मेरी कुरसियों की गद्दियों के सुधार के लिये सत्याग्रह करने लगे। वह गद्दी उठाकर दूसरी गद्दी पर रख देते थे। मैंने एक बार साबुन और तौलिया मँगाकर उनसे हस्त-प्रक्षालन का प्रस्ताव किया। वह समझे, मैं उनके लिये कुछ भोजन मँगा रहा हूँ। मैंने कहा, शायद आपके हाथ गद्दी उठाने से ख़राब हो गए होंगे। वह समझ गए, तब से उन्होंने सत्याग्रह करना छोड़ दिया, और गद्दियों के आवरण भी मैंने बदल दिए। एक दूसरे महाशय मेरे कमरे की तसवीरों से रुष्ट हैं। कहते हैं, इतनी तसवीरें क्यों लगा रक्खी हैं। मैं कहता हूँ, उनका करूँ क्या? बात तो उनकी ठीक है, लेकिन उसे कार्य-रूप में परिणत नहीं कर सका। मुझे फूलों, बग़ीचे और दूध देनेवाले जानवरों का शौक़ है, किंतु वे भी मेरे घर की अव्यवस्था ही बढ़ाते हैं। इस वर्णन में बहुत अत्युक्ति तो नहीं, लेकिन किसी मेहमान को मेरे यहाँ ठहरने में कष्ट न होगा, यद्यपि मैं चाहता यही हूँ कि मेरे मेहमान चिमगादड़ के मेहमान बने रहकर मेरी ही तरह उलटे लटके रहें।

भुलक्कड़ भी मैं औवल दर्जे का हूँ। यद्यपि इतना नहीं कि चश्मा लगाकर चश्मे को ढूँढ़ता फिरूँ, अथवा स्टेशन जाते हुए ऐसा भान होने पर कि घड़ी घर भूल आया हूँ, जेब से घड़ी निकालकर देखूँ कि घर से घड़ी लाने का समय है या नहीं। एक-दो मर्तबा रिटर्न टिकट पूरा-का-पूरा टिकट-कलक्टर को दे बैठा हूँ। एक बार अपनी देवीजी के साथ अलीगढ़ गया। दो टिकट ख़रीदे थे, एक टिकट कहीं गुम हो गया। बड़ी मुश्किल दरपेश हुई। टिकट देवीजी को दे दिया, और असबाब कुली को। गेट पर बड़े अदब के साथ देवीजी से कहा—"टिकट दे दीजिए।" टिकट-कलक्टर महोदय पर यही प्रभाव पड़ा कि मैं उन्हें रिसीव करने आया हूँ। बेचारा कुछ न बोला। उस समय प्रत्युत्पन्न मति से काम चल गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोज़ प्रातःकाल मुझे प्रायः आध घंटा पाठ्य तथा लेखन-सामग्री जुटाने में लग जाता है। दवात-क़लम या काग़ज़ न होने के कारण बहुत-से ब्राह्म मुहूर्त अनुत्पादक रह जाते हैं। मैं उन डॉक्टर महोदय से कुछ अच्छा हूँ, जो घर पर लेखन-सामग्री न होने के कारण एक चेक न भुना सके। फ़ाउंटेन पेन, छड़ी, छाता और टोपी खो जाना तो साधारण बात है, मैं ओवर कोट खो चुका हूँ। यदि नहीं भूला हूँ, तो दो चीज़ें—एक अपने को और दूसरा अपना चश्मा। एक बार सोते से उठने पर एक साथ यह निर्णय नहीं कर सका था कि मैं राजा की मंडी के स्टेशन पर सोया था या वैश्य-बोर्डिंग में। सड़क पर खड़े हुए सड़क के एंजिन के कारण लगी हुई लाल रोशनी ने यह भ्रम उत्पन्न कर दिया था। सुबह अपने भ्रम को अपने एक मित्र से कहा। उन्होंने न-जाने क्या-क्या गढ़ डाला।

मैं स्वयं बेवक़ूफ़ बना हूँ बनाया बहुत कम गया, क्योंकि मुझमें अधिक महत्त्वाकांक्षा नहीं। वे लोग अधिक बेवक़ूफ़ बनते हैं, जिनमें महत्त्वाकांक्षा की मात्रा कुछ अधिक होती है। मुझे बेवक़ूफ़ होने का गर्व तो नहीं है, किंतु उसकी लज्जा भी नहीं है, क्योंकि मैं धूर्त नहीं हूँ। नेव की अपेक्षा फूल होना श्रेयस्कर है।

यद्यपि मैं अर्थ-लाभ के लिये दूसरे को बेवक़ूफ़ बनाना पाप समझता हूँ, तथापि शुद्ध विनोद के लिये किसी को मूर्ख बनाना क्षम्य मानता हूँ। मेरे एक मित्र डाक के बहुत शौक़ीन थे, किंतु डाक उनकी आती बहुत कम थी। डाकिए के दर्शन के लिये वह उत्कंठित रहते थे। एक रोज़ मैंने उनके डेस्क से उनकी सब संगृहीत चिट्ठियाँ निकाल लीं, और उनके बिना जाने लेटर-बॉक्स में डाल दीं। डाकिया उन चिट्ठियों का पुलंदा लेकर उनके पास आया। वह उसे देखकर बड़े प्रसन्न हुए, किंतु जब उन्होंने देखा कि वे बासी चिट्ठियाँ हैं, तो बड़े लज्जित हुए।

एक बार फ़र्स्ट एप्रिल को यह ख़बर उड़ाकर कि मैनपुरी के स्टेशन से डॉक्टर तृषार्तनाथसिंह, जो बड़े लोकप्रिय रह चुके थे, पास हो रहे हैं, लोगों की भीड़ स्टेशन पर इकट्ठी कर दी। कोई गाड़ी लेकर पहुँचे, और कोई ताँगा। दो-एक महाशय तो डॉक्टर साहब के प्रिय भोज्य पदार्थ भी लेकर पहुँचे। मुझे उन पर बड़ी दया आई। फिर मैं अपनी करतूत पर स्वयं ही लज्जित हुआ। एक बार एक घड़ी की दूकान से यह नोटिस निकाल दिया कि पाँच तारीख़ तक घड़ियाँ मुफ़्त मिलेंगी। शर्त जानने के लिये उक्त कंपनी के दफ़्तर ने सबको एक-एक लिफ़ाफ़े में छपा हुआ फूल दे दिया। इस प्रकार मैंने इस विश्वव्यापी संप्रदाय की सदस्यता निभाई।

मुफ्त नामर्दी, मधुमेह, धातु-रोग, स्त्री-रोग, बाँझपन शतिया आराम। प्रशंसा व्यर्थ। एक हफ़्ते की दवा मुफ़्त मँगाकर चमत्कार देखो।
डॉ० बी० बी० शास्त्री, एम्० ए०, ३३, निस्बत-रोड, लाहौर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वेश्वर-स्मृति

[साहित्याचार्य श्रीपं० विश्वेश्वरनाथ रेउ]

(श्रीविश्वेश्वरनाथजी रेउ सुप्रसिद्ध इतिहासकार हैं। उन्होंने वर्तमान समय को देखते हुए एक स्मृति बनाई है, जिसका प्रथम अधिकार सुधा में दिया जाता है। यदि पाठकों ने पसंद किया, तो इसके और अधिकार हम सुधा में प्रकाशित करेंगे।—सुधा-संपादक)

[काश्मीरी पंडित निपुण हुंड-वंश-अवतंस ;
महाराज कृष्ण जु भए विद्या-मानस-हंस।
महाराज-रानी सती भार्या लक्ष्मी - अंश ;
कलावती उनकी सुता ब्याही रेऊ - वंश।
विश्वेश्वर - अर्धांगिनी 'विशनरानि' उपनाम ;
कलावती शुभ नाम की टीका करत ललाम।
भर्ता स्मृति-रचना करी दक्षिण - अंग-विनोद ;
भार्या भाषा रचत यह वाम-अंग-मन-मोद।]

प्रथमोऽधिकारः

संसारकारणीभूतोऽप्यज्ञेयः कोऽपि विश्वराट ;
मायाशक्तिधरो देवो ब्रह्माण्डेऽस्मिन् विराजते॥१॥

संसार का कारण-रूप, लोगों की समझ में न आनेवाला, माया-रूप शक्ति को धारण करनेवाला कोई जगत् का स्वामी इस ब्रह्मांड में विराजमान है।

तस्यैव माययोत्पन्ना सुतप्ता द्रवरूपिणी ;
चक्रवद् बंभ्रमत्येषा भूमिर्भास्करमण्डलात्॥ २॥

उसी (जगत्पति) की माया से यह खूब तपी हुई, तरल अवस्थावाली और चक्के के समान तेज़ी से घूमती हुई पृथ्वी सूर्य-मंडल से उत्पन्न हुई।

तस्या बाह्यस्तरेणाथ काठिन्ये समुपाश्रिते ;
रावणेन यथा सीता रुद्धा शक्तिर्धरा-सजा॥ ३॥

उस (पृथ्वी) की बाहरवाली परत के (ठंडी होकर) कड़ी हो जाने पर उस (पृथ्वी) की भीतरी शक्ति रावण द्वारा पृथ्वी से उत्पन्न हुई सीता के समान रोक ली गई।

रामवद् मोक्तुकामेन प्राकृतेनाथ हेतुना ;
भूमिकम्पमयो बाणो मुक्तः सागरशोषकृत्॥ ४॥

इस पर सीता को क़ैद से छुड़ाने की इच्छावाले राम की तरह प्राकृतिक कारण ने समुद्र को सुखा-देनेवाला भूकंप-रूपी बाण चलाया।

तस्माज्जाते मरौ देशे पुरं योधपुरं शुभम् ;
स्थापितं रावजोधेन राष्ट्रकूटवरेण हि॥ ५॥

उससे उत्पन्न हुए मारवाड़-देश में राठौरों में श्रेष्ठ राव जोधा का बसाया सुंदर जोधपुर नगर है।

उम्मेदसिंहभूपाले तद्वंशाब्जदिवाकरे ;
तत्र शासति धर्मेण सन्तुष्टा मरुवासिनः॥ ६॥

वहाँ उस (जोधा) के वंश-रूपी कमल के लिये सूर्य-रूप उम्मेदसिंह राजा के धर्म-पूर्वक राज्य करने के कारण सब मारवाड़-निवासी संतुष्ट हैं।

विद्वांसस्तत्र वास्तव्या एकदा गोष्ठिकास्थिताः ;
धर्मशास्त्ररहस्यं हि ज्ञातुं कौतुकिनोऽभवन्॥ ७॥

एक दिन सभा में बैठे हुए वहाँ के रहनेवाले पंडित धर्म-शास्त्र का मर्म जानने के लिये उत्कंठित हो उठे।

तत्रैव च समासीनं मामूचुस्ते समन्ततः ;
शारदापीठनाम्ना तु काश्मीरः ख्यातिमागतः॥८॥

वहाँ बैठे हुए मुझसे उन्होंने चारो तरफ़ से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहा कि काश्मीर-देश 'शारदा-पीठ' के नाम से प्रसिद्ध है।

यशस्तत्रत्य विदुषां सौरभं कुङ्कुमस्य च ;
सर्वलोकसुविख्यातं नास्ति तत्र विचारणा ॥ ६ ॥

वहाँ के पंडितों का यश और वहाँ की केशर की सुगंधि सब लोगों में प्रसिद्ध है। इसमें किसी प्रकार के विचार की आवश्यकता नहीं।

तेषां काश्मीरजानां तु भवाञ्जातो यशस्करः ;
श्रीविश्वेश्वरनाथार्य रेउवंशे सुविश्रुते ॥१०॥

हे आर्य विश्वेश्वरनाथ, उन काश्मीरी ब्राह्मणों के प्रसिद्ध रेउ-वंश में आप यशस्वी हुए हैं।

भवताऽनेकशास्त्राणि सम्यगालोचितान्यथ ;
समधीताश्च रचिता इतिहासास्त्वनेकशः ॥११॥

आपने अनेक शास्त्रों की अच्छे तौर से आलोचना की है, और इतिहास के अनेक ग्रंथ पढ़े और लिखे हैं।

भारतस्य तु वर्षस्य पूर्वाऽपरसमुद्रगाः ;
हिमाद्रिसेतुगाश्चैव यात्राः सम्पादिताः पुनः॥१२॥

फिर आपने पूर्वी समुद्र से पश्चिमी समुद्र तक और हिमालय से रामेश्वर तक की भारतवर्ष की यात्रा की है।

श्रीमुकुन्दमुरारीणां भवत्पितृमहात्मनाम् ;
पाण्डित्ययशसा व्याप्तमद्यापि किल भारतम्॥१३॥

आपके पितृवर्य श्रीमुकुंदमुरारिजी की विद्वता के यश से निश्चय ही भारतवर्ष आज भी भरा है।

चाँदरानीति विख्याता भवतो जननी सती ;
धर्मप्राणा सुविदुषी स्त्रीसमाजविभूषणम् ॥१४॥

सती, धर्म में निष्ठावाली, पंडिता और स्त्री-समाज की भूषण आपकी माता चाँदरानीजी भी प्रसिद्ध हैं।

तदेषा प्रार्थनाऽस्माकं व्याख्यातु कृपया भवान् ;
रहस्यं धर्मशास्त्राणां यत्तु कल्याणकृद्भवेत् ॥१५॥

इसलिये हमारी यह प्रार्थना है कि आप कृपा करके धर्मशास्त्रों का रहस्य, जो कल्याणकारी हो, साफ़ तौर पर समझावें।

श्रुत्वा तेषां वचः सम्यग्मयोक्तं श्लक्ष्णया गिरा ;
भवन्तो मरुसंस्थानराजस्थानविभूषणाः ॥१६॥

उन(विद्वानों)के वचन को अच्छी तरह सुनकर मैंने नम्रता से निवेदन किया कि आप लोग मारवाड़ और राजस्थान (राजपूताना) के भूषण हैं।

यत्र वीरा राजपुत्राः क्षत्रव्रतमुपाचरन् ;
तथाप्याज्ञा शिरोधार्या विदुषां संयतात्मनाम्॥१७॥

जिस राजस्थान में वीर राजपूतों ने क्षत्रियोचित (श्रेष्ठ) कार्य किए थे। फिर भी समझ बूझकर आज्ञा देनेवाले विद्वानों की आज्ञा सिर पर धारण करना उचित है।

अतः श्रुतानुभूतानां स्मृत्या सारं निवेदये ;
विश्वेश्वरस्मृतिरियं लोके ख्याता भविष्यति॥१८॥

इसलिये स्मृति के आधार पर सुनी और अनुभूत बातों का सार निवेदन करता हूँ। यह जगत् में विश्वेश्वर-स्मृति के नाम से प्रसिद्ध होगी।

धर्मशास्त्राऽविरुद्धो यो लोके प्रचलितश्च यः ;
कुलाचारानुयातो यः स धर्मोऽत्र मयोच्यते॥१९॥

जो धर्मशास्त्रों के विरुद्ध नहीं, जो लोगों में प्रचलित है, और जो कुल के रिवाज के अनुसार है, वह धर्म मैं यहाँ बतलाता हूँ।

मानवं धर्ममाश्रित्य परिष्कृत्य पुनश्च तम् ;
युगानुरूपो व्याख्यातो नात्र काचिद्विचारणा ॥२०॥

(इस स्मृति में) मनु के कहे धर्म का आधार लेकर और फिर उसका परिष्कार कर युग (समय) के अनुसार उसकी व्याख्या की है। इसमें किसी प्रकार के विचार की आवश्यकता नहीं।

ब्रह्मणस्तु समुत्पन्नं जगदुक्तं पुरातनैः ;
नव्या विद्युत्कणोत्पन्नं मन्यन्ते तदसंशयम् ॥२१॥

पुराने लोगों ने जगत् का ब्रह्म से उत्पन्न होना कहा है। नए लोग उसे निश्चय के साथ विद्युत्कणों (Electron) से उत्पन्न हुआ मानते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सांख्ये पुरुषसान्निध्यात्प्रकृतिः सृष्टिकारणम् ;
तथा धनऋणाणूनां सान्निध्यं नूतने मते ॥ २२ ॥

सांख्य-शास्त्र में पुरुष के सान्निध्य से प्रकृति का सृष्टि का कारण होना माना है, और नवीन मत में धन (Positive) और ऋण (Negative) विद्युत्कणों का पास-पास होना कारण समझा जाता है।

अगोचरं ब्रह्म मतं मुनिभिस्तत्त्वदर्शिभिः ;
वैज्ञानिकैर्मता शक्तिर्मायेति परिगृह्यताम् ॥२३॥

सत्य बात के जाननेवाले मुनियों ने ब्रह्म को समझ से बाहर माना है। वैज्ञानिक (Scientists) जिसे शक्ति (Energy) मानते हैं, उसे माया समझ सकते हैं।

सैव तापे प्रकाशे च चुम्बके विद्युदादिषु ;
भुवि ग्रहेषु सूर्ये च सर्वत्रास्तीति निश्चितम् ॥२४॥

वही शक्ति ताप में, प्रकाश में, चुंबक में, बिजली आदि में, पृथ्वी में और सूर्य में—सब जगह निश्चित रूप से वर्तमान है।

संसारकारणं ब्रह्म माया शक्तिश्च ब्रह्मणः ;
वेदेषु यत्समाख्यातं ग्राह्यमस्यां स्मृतावपि ॥२५॥

वेदों में जो ब्रह्म को संसार का कारण और माया को उस(ब्रह्म)की शक्ति कहा है, वही इस स्मृति में भी लेना चाहिए।

कारणं यद् व्यवस्थाया अस्याः शक्त्या निरन्तरम्;
तदेव ब्रह्म जानीत यदि ग्राह्यमिदं वचः ॥ २६ ॥

यदि आपको यह कथन ठीक प्रतीत हो, तो जो इस शक्ति की व्यवस्था का स्थायी कारण है, उसे ब्रह्म जानो।

ध्रियते येन लोकोऽयमिति धर्मः स कीर्तितः ;
असौ सनातनो धर्मः श्रेयो मूलमपि ह्ययम् ॥२७॥

जो संसार की स्थिति को ठीक रखता है, उसे धर्म कहते हैं। यही सनातन धर्म है, और यही निश्चय-पूर्वक कल्याण का मूल है।

युगानुसारं व्याख्यातः स्मृतिकारैः पुरातनैः ;
बहुधा युगधर्मः स विज्ञेय इति मे मतम् ॥२८॥

पुराने स्मृति लिखनेवालों ने उस(धर्म)की अनेक तरह से व्याख्या की है। उसे युग-धर्म ही मानना चाहिए, ऐसा मेरा विचार है।

संघर्षेण समाजानामव्यवस्था यदा भवेत् ;
तदा भूतं परीक्ष्याथ वर्तमानोपयोगिनीम् ॥२९॥
भविष्ये सुखदां चैव व्याख्यां धर्मस्य कारयेत् ;
पण्डितैःसैव लोकेऽस्मिन् युगधर्मतया मता॥३०॥
(युग्मम्)

जब अनेक तरह के समाजों की आपस की टक्कर से गड़बड़ पैदा हो जाय, तब भूत काल के कार्यों के परिणामों की परीक्षा कर, वर्तमान काल में सहायता देनेवाली और आगे सुख पहुँचानेवाली धर्म की व्याख्या (टीका) करवावे। विद्वान् लोग उसी व्याख्या को युग-धर्म मानते हैं।

यद्येवं न प्रक्रियेत मूलधर्मोऽपि नश्यति ;
देशकालविरोधेन न धर्मो भुवि वर्धते ॥ ३१ ॥

यदि ऐसा न किया जाय, तो मूल (असली) धर्म भी नष्ट हो जाता है; क्योंकि देश (स्थान) और काल (समय) के विरोध के कारण पृथ्वी पर धर्म वृद्धि नहीं कर सकता।

मनुः पराशराद्याश्च संचिन्त्येति महर्षयः ;
युगधर्मानुरूपां हि व्याख्यां चक्रुः स्मृतिष्विह ॥३२॥

मनु और पराशर आदि महर्षियों ने इसी बात को सोचकर संसार में अपनी-अपनी स्मृतियों में धर्म की समयोपयोगिनी व्याख्या की है।

विंशतिः स्मृतयः प्रोक्ता याज्ञवल्क्येन धीमता ;
अर्वाचीनास्तु बहव ऋषिनाम्ना प्रवर्तिताः॥३३॥

बुद्धिमान् याज्ञवल्क्य ने बीस स्मृतियों का नामोल्लेख किया है। इनमें से बहुत-सी नवीन हैं, और ऋषियों के नाम से प्रचलित की गई हैं।

प्रक्षिप्तान्यथ चान्यासु मतानि विविधानि तु ;
रचनाहेतुरासां च युगधर्मप्रवर्तनम् ॥ ३४ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरी स्मृतियों में भी अनेक प्रकार के मत बाद में मिला दिए गए। इन सब स्मृतियों के बनाने का कारण समयोपयोगी धर्म का प्रचार करना ही है।

प्राच्यपाश्चात्त्यभावानां संघर्षे समुपस्थिते ;
युगानुरूपिणीं व्याख्यां विना धर्मस्तु हीयते॥३५॥

पूर्वी और पश्चिमी विचारों की टक्कर का मौक़ा उपस्थित होने पर समय के अनुसार व्याख्या किए विना धर्म की हानि होती है।

तडिद्वाष्पादियानानां खभूजलविहारिणाम् ;
दूरश्रावणयन्त्राणां दूरदर्शनदायिनाम्॥ ३६॥
आविष्कारेषु संजातेष्वार्यावर्तस्य प्राक्तनी ;
हिमविन्ध्यगता सीमा कथं मान्या भवेद्भुवि॥३७॥
(युग्मम्)

बिजली और भाप आदि से आकाश, पृथ्वी और जल में चलनेवाली सवारियों का और दूर से सुनानेवाले (Radio) और दूर से दिखानेवाले (Tele-vision) यंत्रों का आविष्कार हो जाने पर पृथ्वी पर आर्यावर्त की हिमाचल और विंध्याचल के बीचवाली पुरानी सीमा कैसे मानी जा सकती है।

एवमेवाङ्गमगधकलिङ्गा दक्षिणापथः ;
अशुच्यनार्यवासाश्चेत्येतद्मान्यं कथं भवेत्॥३८॥

इसी प्रकार (इस समय) अंग (भागलपुर और मुंगेर-ज़िले), मगध (दक्षिणी बिहार), कलिंग (समुद्र के पास का महानदी और गोदावरी के बीच का प्रदेश) और सारा दक्षिणी भारत अपवित्र और अनार्य लोगों के रहने का स्थान कैसे माना जा सकेगा।

हिमशैलशुभ्रमुकुटा रुचिरकुमारीप्रदेशशुचिचरणा ;
पूर्वापराब्धिपार्श्वा लङ्कामुकुलेऽस्ति भारतीमाता॥३९॥

हिमालय-रूपी सुंदर मुकुटवाली, सुंदर कुमारी प्रदेश-रूपी पवित्र चरणवाली और पूर्वी तथा पश्चिमी समुद्र-रूपी पार्श्व भागोंवाली भारतमाता लंका-रूपी कमल की कली पर खड़ी है।

देशे देशे प्राकृतानि कृत्रिमाण्यथवा पुनः ;
तीर्थानि विलसन्त्यत्राऽखिलं पूज्यं हि भारतम्॥४०॥

फिर इस भारत-भूमि पर देश-देश में क़ुदरती या बनावटी तीर्थ शोभायमान हैं, इसलिये यह सारा भारतवर्ष ही पूज्य है।

गङ्गादीनि तु तीर्थानि प्राकृतानि विदुर्बुधाः ;
तडागमन्दिरादीनि कृत्रिमाणि तथा पुनः॥४१॥

बुद्धिमान् लोग गंगा आदि तीर्थों को क़ुदरती तीर्थ मानते हैं, और तालाबों तथा मंदिरों आदि को कृत्रिम (मनुष्य-रचित) तीर्थ समझते हैं।

तीर्थयात्रालाभाः

तीर्थयात्राप्रसङ्गेन देशा नानाविधास्तथा ;
मनुष्याश्चापि दृश्यन्ते ज्ञानवृद्धिकरं हि तत्॥४२॥

तीर्थ-यात्रा द्वारा अनेक तरह के देश और मनुष्य देखने में आते हैं। यह बात ज्ञान की वृद्धि करनेवाली है।

समागमश्च साधूनां मनसः शान्तिदो मतः ;
स्वास्थ्यदौ जलवायू च देहारोग्यं प्रयच्छतः॥४३॥

वहाँ होनेवाली सत्पुरुषों की भेंट मन को शांति देनेवाली मानी गई है, और वहाँ के स्वास्थ्यप्रद जल और वायु शरीर को स्वास्थ्य प्रदान करते हैं।

शान्तं पूतं च तत्रत्यं वातावरणमद्भुतम् ;
आध्यात्मिकीमुन्नतिं हि कुरुते तीर्थसेविनः॥४४॥

वहाँ का शांत और पवित्र, अद्भुत वातावरण तीर्थ-सेवन करनेवाले की निश्चय ही आध्यात्मिक उन्नति करता है।

वैज्ञानिकानां सर्गक्रमः

ब्रह्माण्डस्थकटाहस्य व्यासो ज्ञातुं न शक्यते ;
अस्मिन्कणा इवाऽसंख्या राजन्ते सौरमण्डलाः॥४५

इस ब्रह्मांड के बीच के कड़ाह (खोखले भाग) का विस्तार जाना नहीं जा सकता। इसमें असंख्य सौरमंडल छोटे-छोटे कणों की तरह चमकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तदण्डसागरे शेषस्तन्नीहाररूपतः ;
व्याप्याखिलं कुण्डलकैर्विरराज समन्ततः ॥४६॥

उस ब्रह्मांड-रूपी समुद्र में सब तरफ़ उत्तप्त नीहारिका (Nebula) के रूप से कुंडलियों द्वारा तमाम जगत् को व्याप्त कर शेषनाग शोभित था।

सुप्तो नारायणश्चासीत्केन्द्रशक्तिस्वरूपतः ;
प्रलये लीनमभवद्विश्वं तु सचराचरम् ॥ ४७ ॥

और (उस पर) केंद्रीय शक्ति के रूप में नारायण सोए हुए थे। तथा सारा ही स्थावर और जंगम जगत् प्रलय की अवस्था में था।

अथ काले समायाते बहुधा स्यामिति स्मरन् ;
शक्तिरूपस्तु भगवाञ्जजागार स्वयं तदा ॥४८॥

इसके बाद समय आने पर मैं अनेक रूप धारण करूँ (एकोऽहं बहुस्याम्), ऐसा सोचते हुए स्वयं शक्ति-रूप भगवान् जग उठे।

गतिराविर्बभूवाथ नीहारे चक्रवत्तदा ;
तत्त्वानि नवतिर्द्वे च प्रादुर्भूतानि वै ततः ॥४६॥

इस पर उस नीहारिका में चक्र की-सी (घूमने की) गति उत्पन्न हो गई, और (उसके बाद) उससे बानवे (६२) तत्त्व (Elements) उत्पन्न हुए।

विष्णुकर्णमलोद्भूतमधुकैटभयुग्मवत् ;
नष्टं तत्त्वद्वयं तेभ्यो जगत्यां नोपलभ्यते ॥५०॥

(शेषशायी) विष्णु के कानों के मैल से उत्पन्न हुए मधु और कैटभ के जोड़े की तरह उनमें से दो तत्त्व नष्ट हो गए। वे जगत् में नहीं मिलते। (इन अनुपलब्ध तत्त्वों में पहला ८५वाँ हैलोजन (Halogen) और दूसरा ८७वाँ एक क्षारीय धातु (An alkali metal) है।)

नीहारात्सर्वमुत्पन्नं ब्रह्माण्डे सचराचरम् ;
अतो नवति तत्त्वानि कारणानीह तस्य तु ॥५१॥

ब्रह्मांड में स्थित सारे ही स्थावर और जंगम नीहार से ही उत्पन्न हुए हैं। इसलिये संसार में (पूर्वोक्त) नब्बे तत्त्व ही उसके कारण हैं।

पञ्चतत्त्वमयी व्याख्या स्यात्संक्षेपकृता पुरा ;
यतो भूमौ जले वायौ संलीनान्येषु भूरिशः ॥५२॥

प्राचीन काल में पाँच तत्त्वों से सृष्टि के उत्पन्न होने का कथन शायद संक्षेप रूप में किया गया हो ; क्योंकि पृथ्वी, जल और वायु में इनमें के बहुत-से तत्त्व मिले हुए हैं।

(क्रमशः)

अशक्ति का कट्टर दुश्मन

आतंक-निग्रह गोलियाँ

शरीर में खरा जोश पैदा करके कैसा भी अशक्त पुरुष हो, उसे नौजवान बना देती हैं। ३२ गोलियों की डिब्बी की क़ीमत १)

आतंक-निग्रह-औषधालय
जामनगर, काठियावाड़

लखनऊ-एजेंट—मेसर्स इंदरचंद ऐंड कंपनी, चौक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनाहूत

[श्रीयुत आरसीप्रसादसिंह]

(१)

अभी - अभी तो तोड़ रहा था
मैं गुलाब की कलियाँ ;
उलझी पड़तीं घुँघराले
बालों से भ्रमरावलियाँ।
लिपट क्षितिज पर बिदा माँगती
थी संध्या की लाली ;

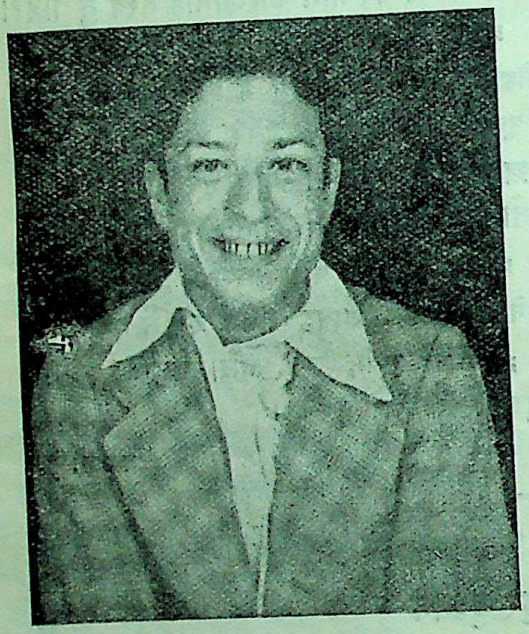

श्रीयुत आरसीप्रसादसिंह

साँसों से समीर की डुलती
तरु की डाली - डाली।
सहसा कैसे नत पलकों पर
छाया एक नशा - सा ;
मैं बन गया पहेली, दुनिया
मेरे लिये तमाशा।

(२)

उस दिन ठीक इसी वेला में
आई थी तू बाले !
मुख पर वासित अंचल से कुछ
अवगुंठन - सा डाले।
मंद - मधुर नूपुर-ध्वनि सुनकर
ज्यों ही ऊपर देखा,
त्यों ही बस, खिंच गई दृगों में
तेरी मृदु छवि - रेखा।
था न आँक भी पाया जब तक
भली भाँति निज मन में;
प्यारी, चौखट पर से ही झट
लौट गई तू क्षण में !

(३)

उस दिन, उसी वक्त से ही आ
चुपके - चुपके रानी,
एक दर्द पैदा कर जाती
तेरी स्मृति दीवानी।
खोकर अपने को पीड़ा में,
दिन को बेकलियों में—
तुझे ढूँढ़ता फिरता हूँ मैं
गलियों में—गलियों में।
खाकर जिसकी चोट किसी ने
माँग न पाया पानी,
शब्दों में बाँधूँ कैसे
उसकी भाषा अरुझानी ?

(४)

तुझे पता क्या ? की तेरे हित
कितनी जप - तप - पूजा ;
झाँक सका मानस - मंदिर में
कोई कभी न दूजा।
आया जान द्वार पर धीरे-
धीरे साँझ सकारे—
कितनी बार किसी अज्ञाता
के मृदु चरण पखारे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किंतु खुलीं जब आँखें, मैंने
उसे नहीं पहचाना!
पाकर भी खो दिया तुझे; जब
कैसा तेरा पाना?

(५)

कौन निगोड़ी आँखों से
उलझे, सुलझे, समझाए?
किन अधरों में अमृत आज, जो
इनकी प्यास बुझाये?
नाच उठूँ जिसकी चितवन पर,
ऐसा कौन सलोना?
मौन, मौन, नीरव है मेरे
उर का कोना - कोना!
आ, इस महफ़िल में भी क्षण-भर
आली, नृत्य किए जा;
हा—हा, मेरे हाथों से भी
तो दो घूँट पिए जा।

(६)

ख़ैर, आज तो खुलवा ही मैं
लूँगा बातें सारी;
अच्छी नहीं चाल यह लगती
तेरी अजब दुधारी।
जला करे, परवाह नहीं, पर
फोड़ूँगा ही छाले;
तू भी क्या समझे कि पड़ी थी
कभी किसी के पाले।
पूछ न मुझसे यों ही इस
आने - जाने के माने;
आना था, बस इसीलिये आ
पहुँचा किसी बहाने।

(७)

मेरी झोली में कुछ तसवीरें
हैं प्रिय, बचपन की;
छाप कहीं पड़ जाय न इन पर
तेरे नटखटपन की।
लिए उन्हें फिरता बेचैनी
में इसलिये छिपाए;—
दूर - दूर ही चलता, तेरी
छाँह न भी छू जाए।
अचल हो गई कंठ - तार पर
तारों की परछाँही;
पड़ी गले में ज्यों ही तेरी
नाहीं की गलबाँही।

(८)

ले आया हूँ रोम-रोम में
जन्म-जन्म की तृष्णा;
जैसे शून्य व्योम में फैली
अंबर - माला कृष्णा।
एक बूँद ही सही, मिटे
चातक की विकल पिपासा;
पूछ न अब तिरछी नज़रों से
कै तोला, कै माशा?
घट भर दे सखि, चला जाय बस
पीकर मस्त अकेला;
गुन गावेगा जीवन-भर तक
तेरा यह अलबेला।

सुधा का प्रचार बढ़ाइए। ग्राहक बनें, और बनाएँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

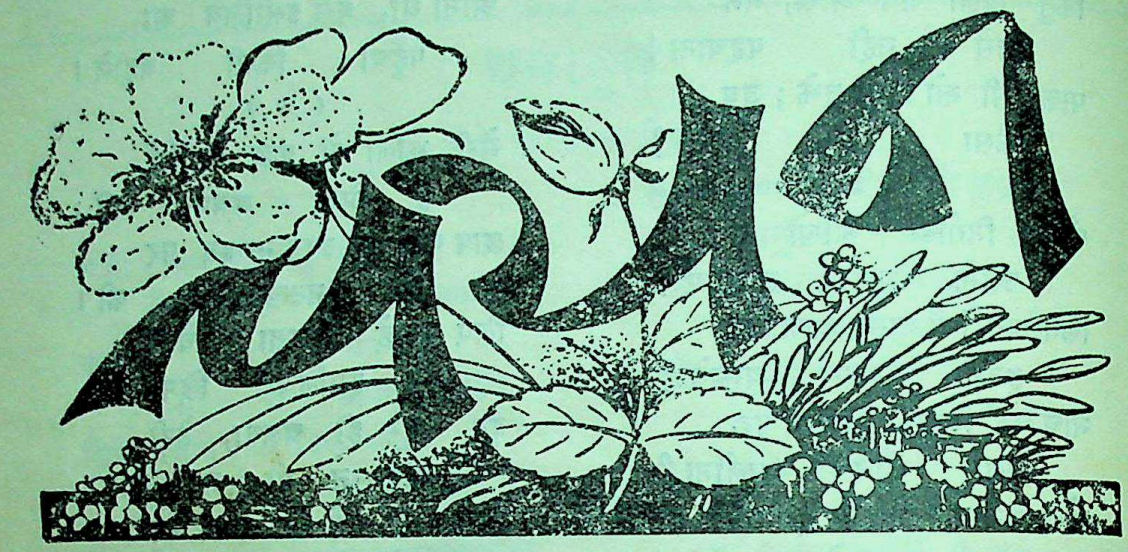

१. ब्रह्मचर्य

यह जीवन एक संग्राम है। इसमें वे ही जन विजयी होते हैं, जो अपने वातावरण को वश में रखकर प्राकृतिक नियमों के अनुसार अपना जीवन व्यतीत करते हैं। मन को वश में करना और इंद्रियों का दमन ब्रह्मचर्य से ही साध्य है। अपने आचार-विचार शुद्ध रखकर जितेंद्रिय होना ही ब्रह्मचर्य है। सुश्रुत का मत है—

पंचविंशे ततो वर्षे पुमान्नारी तु षोडशे;
समत्वागतवीर्यौ तौ जानीयात्कुशलो भिषक्।

अर्थात् स्त्री के अंग १६ वर्ष की अवस्था में संपूर्णता को प्राप्त होते हैं। यही समय विद्याभ्यास का है। अतः १६ वर्ष पर्यंत स्त्री को ब्रह्मचारिणी अवश्य रहना चाहिए *, अन्यथा धातुओं की पुष्टि न होकर निर्बलता आ जाती है, और शरीर रोगों का घर बन जाता है। अथर्व वेद की आज्ञा है—

"ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विन्दते पतिम्।"

अर्थात् कन्या ब्रह्मचर्य पूर्ण करके युवक पति से विवाह करे।

प्राचीन समय के लोग ब्रह्मचर्य की महत्ता से भली भाँति परिचित थे। वे संतान उत्पन्न करने के सिवा केवल इंद्रियों को प्रसन्न करने की इच्छा से सहवास करना बुरा समझते थे। किंतु आजकल के युवक-युवतियों की दशा दूसरी है। वे तो हर समय विषय-वासना के ही ध्यान में लीन रहते हैं। शायद वे नहीं समझते कि इससे क्या-क्या हानियाँ हैं। ब्रह्मचर्य के नियमों का पालन न करने से नाना प्रकार की कुवासनाओं का जन्म होता है, जिनके कारण गृहस्थी का सुख मिट्टी में मिल जाता

---

* श्रीस्वामी दयानंदजी महाराज सत्यार्थप्रकाश के तृतीय समुल्लास में लिखते हैं—"स्त्री १६ वर्ष से लेकर २४ वर्ष तक ब्रह्मचारिणी रह सकती है। इसके आगे स्त्री को ब्रह्मचर्य न रखना चाहिए।" परंतु यह नियम विवाह करनेवाले स्त्री-पुरुषों का है, और जो विवाह करना ही न चाहें, वे मरण-पर्यंत ब्रह्मचारी रह सकते हैं। परंतु यह काम पूर्ण विद्वान्, जितेंद्रिय और निर्दोष योगी स्त्री-पुरुषों का है। काम का वेग रोककर इंद्रियों को अपने वश में रखना साधारण व्यक्तियों के लिये कठिन है।—लेखक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है, और सहस्रों भले घरों की स्त्रियाँ भ्रष्टा और दुराचारिणी हो जाती हैं।

ब्रह्मचर्य-पालन के लिये उचित रहन-सहन बहुत सहायक होता है। स्वच्छ वायु, स्वच्छ जल, हितकर और सात्विक भोजन, हृदय की पवित्रता और पवित्र विचारों की बड़ी आवश्यकता है। आचरण और आरोग्य का गहरा संबंध है। पूर्ण सदाचारी ही पूर्ण आरोग्यता प्राप्त कर सकता है। जिन्होंने थोड़े समय तक भी ब्रह्मचर्य का पालन किया है, उन्हें अपने मन और बढ़े हुए बल का अनुभव हुआ होगा।

सर टॉमस क्राउस्टन का कथन है—

"Nature has so arranged matters that the more constantly control is exercised, the more easy and effective it becomes. It becomes a habit. The less control is exercised, the greater tendency there is for a desire to become a craving of an uncontrollable kind, which is itself of the nature of disease and means death sooner or later."

अर्थात् प्रकृति का कुछ ऐसा नियम है कि इंद्रियों का जितना ही दमन किया जाय, यह कार्य उतना ही सुगम और फलोत्पादक होता जाता है। फिर तो यह स्वभाव ही बन जाता है। इसके प्रतिकूल जितनी ही ढील डाली जाय, उतना ही वासनाएँ निरंकुश होती जाती हैं, और यह स्वयं एक ऐसा रोग हो जाता है, जिसका अंत देर-सबेर मृत्यु में ही होता है।

हमारे शास्त्रकार भी कहते हैं—

न जातु कामः कामानामुपभोगेन शाम्यति ;
हविषा कृष्णवर्त्मेव भूय एवाभिवर्धते।

अर्थात् कामियों की काम-वासना उपभोग करने से शांत नहीं होती, प्रत्युत जिस प्रकार घी पड़ने से आग अधिक प्रज्वलित होती है, उसी प्रकार विषय-भोग से वासना अधिक बढ़ती है।

अस्तु। इस विषय में सबसे उत्तम उपाय आदर्श को सामने रखना है। बच्चों को जब अक्षर लिखना सिखाया जाता है, तो उन्हें अक्षरों का उत्तम-से-उत्तम नमूना दिया जाता है, और वे अपनी शक्ति के अनुसार हूबहू उससे मिलती-जुलती नक़लें उतारते हैं। ठीक इसी प्रकार हमें भी चाहिए कि अखंड ब्रह्मचर्य का नमूना अपने सामने रखकर उसकी नक़ल उतारें, और अभ्यास द्वारा क्रमशः पूर्णता लाभ करें। विवाह भले ही हो जाय, प्राकृतिक नियमानुसार शास्त्रोक्त विधि से संतानोत्पति करते हुए भी स्त्री-पुरुष ब्रह्मचारी रह सकते हैं।

मनुजी इसकी पुष्टि इस प्रकार करते हैं—

ऋतुकालाभिगामी स्यात्स्वदारनिरतस्सदा ;
पर्ववर्जं व्रजेच्चैनां तद्व्रतो रतिकाम्यया।
(मनु० अ० ३। ४५)
निन्द्यास्वष्टासु चान्यासु स्त्रियो रात्रिषु वर्जयन् ;
ब्रह्मचार्य्येव भवति यत्र तत्राश्रमे वसन्।
(मनु० अ० ३। ५०)

अर्थात् जो व्यक्ति अमावास्यादि पर्वों को छोड़कर ऋतुकाल की रात्रियों में (४ रात्रि ऋतु की, ११वीं, १३वीं और दो पर्व की, इन ८ रात्रियों को त्यागकर) प्रसन्नता-पूर्वक संभोग करते हैं, वे किसी भी आश्रम में रहते हुए भी ब्रह्मचारी हैं।

अस्तु। विवाहित स्त्री-पुरुष, भोजन, शुद्ध वायु और जल के नियमों का पालन करके ही ब्रह्मचर्य की रक्षा नहीं कर सकते। उन्हें एक दूसरे के साथ आवश्यकता के बिना एकांत-सेवन भी छोड़ना चाहिए। यदि हो सके, तो रात्रि में सोने का कमरा भी अलग होना चाहिए। दिन में अच्छे-अच्छे पवित्र विचारों अथवा कार्यों में लगे रहना चाहिए। उत्तम पुस्तकें पढ़नी चाहिए, जिसमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुंदर विचारों का विकास हो। आदर्श पुरुषों के जीवन-चरितों का मनन, काम-वासना-जनित दुःखों का निरंतर चिंतन, जब-जब विषय-वासना की उत्तेजना हो, तब शीतल जल से स्नान अथवा अंगों का प्रक्षालन ब्रह्मचर्य पालन करनेवालों के लिये अत्यंत शुभ और लाभदायक है। यह कार्य कठिन अवश्य है, किंतु स्वास्थ्य-लाभ की दृष्टि से कठिनाइयों को जीतना ही पड़ेगा।

महात्मा गांधी कहते हैं—"यह ठीक है कि संतानोत्पत्ति प्राकृतिक घटना है, किंतु जब कि वह निश्चित सीमाओं के भीतर हो। उन सीमाओं का उल्लंघन स्त्री-जाति को ख़तरे में डाल देता, वंश को दुर्बल बनाता, रोगों को उभाड़ता, पाप को प्रोत्साहन देता और संसार को राक्षसी बनाता है।.....विवाह दंपति के हृदयों से गंदगी को शुद्ध करने और उन्हें परमात्मा के निकट पहुँचाने के लिये होता है।"

ब्रह्मचर्य के साधनों का उल्लेख करते हुए महात्मा गांधी ४ बातों पर विशेष ज़ोर देते हैं—

(१) ब्रह्मचर्य का महत्त्व समझना और उसकी आवश्यकता महसूस करना।

(२) इंद्रियों का संयम—ब्रह्मचर्य-पालन करनेवाले को ज़बान पर क़ाबू पाना चाहिए। उसे जीने के लिये खाना चाहिए, मज़े के लिये नहीं। अपवित्र वस्तु और अश्लील दृश्य के सामने उसे आँखें मूँद लेनी चाहिए। उसे गंदी बातें नहीं सुननी चाहिए। तीव्र और उत्तेजक पदार्थ नहीं सूँघने चाहिए। बनावटी सेंटों और एसेंसों की तरंगों से शुद्ध मिट्टी की सुगंध ज़्यादा मीठी होती है। उसे अपने जगने के घंटों में अपने हाथ-पैरों को भले कामों में लगाना चाहिए। समय-समय पर उपवास भी करने चाहिए।

(३) पवित्र साथी, पवित्र मित्र और पवित्र पुस्तकें अपने साथ रखनी चाहिए। इनसे मन की शुद्धता में बड़ी सहायता मिलती है।

(४) प्रार्थना—यह अंतिम साधन किसी से कम नहीं। ब्रह्मचर्य के आकांक्षी को प्रतिदिन शुद्ध हृदय से ईश्वरीय कृपा माँगनी चाहिए। रात को सोते समय जब तक नींद न आए, गायत्री-मंत्र का जप करना चाहिए।

इस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति ब्रह्मचर्य का पालन कर सकता है।

बुद्धिसागर वर्मा
(विशारद, बी० ए०, एल्० टी०)

× ×

२. अनुरोध

राही, एक बार फिर आना।
मेरी जीवन-कुटिया में वह प्रेम-प्रदीप जलाना।
आँखों में नाच रही है
निर्ममतम जग की लीला;
पग-गति-ध्वनि करती जाती
ममता का बंधन ढीला।
इस विरह-साँझ-वेला में कुछ गीत मिलन के गाना।
जग प्रेमी तुम्हें बनाता,
तुम जिससे हिल-मिल जाते;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो दिन में ही देखोगे
टूटे दो दिल के नाते।
तुम भी लो सीख यहाँ से आ-आकर फिर-फिर जाना।

कन्हैयासिंह 'काँधा'

× × ×

३. जीवात्मा

आता है कहाँ से, फिर जाता किस मार्ग से है?
इसका रहस्य कहो, कौन जान पाया है?
किस तत्त्व का है, सार तत्त्व ये महत्त्व-पूर्ण,
किसने है देखा इसे, किसने बनाया है?
कौन वस्तु है ये, किस रंग का है जीव? बोलो,
ध्यान में न आता, किसने यहाँ पठाया है?
डूबता हूँ, तिरता हूँ, पड़ा सोच-सागर में,
किसका प्रभुत्व है ये, किसकी ये माया है?

(साहित्यभूषण) शिवदुलारे शर्मा 'शिव' (एच्० एम्० बी०)

× × ×

४. श्रीगुरु गोविंदसिंहजी महाराज कवि-रूप में*

श्रीगुरु गोविंदसिंहजी सिक्खों के दसवें और अंतिम गुरु हुए हैं। और गुणों की ओर ध्यान न देकर लोग आपको आम तौर पर केवल एक महावीर योद्धा ही मानते हैं। सुधा-पाठकों में बहुत कम लोग ऐसे होंगे, जिन्हें यह पता होगा कि गुरुजी हिंदी के बहुत ऊँचे कवि हो गए हैं। कारण, आपके रचित सब ग्रंथ गुरुमुखी-लिपि में लिखे हैं, यद्यपि उनकी भाषा शुद्ध हिंदी है।

गुरु गोविंदसिंहजी न केवल कवि, प्रत्युत कवि-सम्राट् थे। आपने ऐसा नहीं किया कि कुछ भक्ति-भरे भजन ही बना दिए हों, या कुछ कथानक ही लिखे हों, बल्कि आप हमारे लिये कई महाकाव्य निर्माण करके छोड़ गए हैं। गुरुजी का अगाध कविता-प्रेम इस बात से मालूम होता है कि वह अपने दरबार में ५२ से भी अधिक कवि रखते थे। इन कवियों को लाखों रुपए देकर आपने कई उत्तम ग्रंथ लिखवाए, और अनेक संस्कृत, फ़ारसी, अरबी-ग्रंथों का भाषानुवाद कराया। कवि हंसराम को महाभारत के कर्णपर्व के भाषानुवाद पर ६०,०००) इनाम दिया। कवि सेनापति को चाणक्य-नीति का अनुवाद करने पर एक-एक छंद के बदले पाँच-पाँच अशर्फ़ियाँ इनाम दीं। इन सब कवियों की रचनाओं का संग्रह इतना भारी हो गया था कि इकट्ठा करके तौलने पर कहा जाता है कि छ मन बोझ हुआ था। इन सब कवियों के मंडल में गुरुजी सूर्य के समान भासमान होते थे। जिनके

* लखनऊ-रेडियो-स्टेशन से ४। १। ४१ को पढ़ा गया।—सुधा-संपादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नित्य के सत्संग में इतने कवि हों, उनकी कविता का क्या कहना ?

डॉक्टर जसवंतसिंह एम्० ए०, बी० एस्-सी०, एन्० डी० (लंदन:)

गुरुजी की कविता अनेक रूपधारिणी है। इसे समझने के लिये यह बात सदा ध्यान में रखनी चाहिए कि साधारण कवियों और अपनी सभा के कवियों की तरह वह कोई पेशेवाले कवि नहीं थे। कविता का गुण उनमें जन्म से ही था। यह भी याद रखना चाहिए कि उनमें कविता-शक्ति के साथ युद्ध-शक्ति और धर्म-शक्ति भी थी, अर्थात् कविता की रचना एक वीर-धीर योद्धा की क़लम से हो रही है, तथा गायन एक सिद्ध संत के मुख से। ज़रा देखिए—

अब देहि सिवा बर मोहिं इहै,
सुभ कर्मन तें कबहूँ न टरौं;
न डरौं अरि सों, जब जाइ लरौं,
निहिचै करि आपनी जीत करौं।
अरु सिक्ख हौं आपने ही मन को,
इह लालच हौं गुन तो उचरौं;
जब आव की औधि निदान बनै,
अत ही रन मैं तब जूझि मरौं।

आपकी रचनाओं में वीर-रस की प्रधानता है। ऐसी जोशीली वाणी है कि पढ़ते-पढ़ते जोश आ जाता है, और हाथ तलवार की मूठ पर ही जा टिकता है। यह वाणी मुर्दों में भी रूह फूँकती है। वीर-रस के अलावा दूसरे रसों का आस्वादन भी आपकी वाणी में मिलता है। जब आपका जी रुलाने को हुआ, तब करुण-रस से नेत्र भर ही जाते हैं। जब शांति की ओर झुके, तब श्रोताओं को समाधिस्थ ही कर दिया। जब नीति कही, तब चाणक्य को भी पीछे कर दिखाया। जब रति-भाव का वर्णन किया, तब प्यार की नहरें बहा दीं। जब विरह कहा, तब चीख़ें निकलवा दीं। रूपक आपने अच्छे लिखे हैं। गुरुजी की रचनाएँ उन्हें सैकड़ों नए छंदों का कर्ता साबित करती हैं। आपकी कविता एक कुशल कवि की रचना है। आप लेखनी का वार भी उतनी ही पटुता से करते थे, जितनी पटुता से शस्त्रास्त्र का।

गुरुजी की रचनाओं में ओज, प्रसाद और माधुर्य है। छंदों में रस और अलंकार का अच्छा निर्वाह है। लीजिए, ओज-गुण का आस्वादन कीजिए—

खग - खंड - बिहंडं, खल-दल-खंडं;
अतिरण - मंडं, बरबंडं।
भुजदंड अखंडं, तेज प्रचंडं;
जोति अमंडं, भान - प्रभं।
सुख संताँ करणं, दुरमति - दरणं;
किलबिख - हरणं असि - सरणं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जै-जै जग-कारण, सिस्ट - उबारण ;
मम प्रतिपारण जै तेगं।

अब प्रसाद-गुण भी देखिए—

दीनन को प्रतिपाल करै नित,
संत उबार गनीमन गारै ;

अब माधुर्य-गुण का भी आस्वादन कीजिए—

मीन मुरझाने, कंज - खंजन खिसाने, अलि
फिरत दिवाने बन डोलै जित-तित ही ;
कीर औ' कपोत बिंब कोकिला, कलापी बन
लूटे-फूटे फिरै मन चैन हूँ न कित ही।

श्रीगुरुगोविंदसिंहजी

पच्छि-पसू, नग-नाग, नराधिप,
सरब समै सबको प्रतिपारै।
पोखत है जल में, थल में, पल
में खल के नहिं करम बिचारै ;
दीनदयाल, दयानिधि दोखन
देखत है, पर देत न हारै।

दारिम दरकि गयो पेखि दसनन - पाँति,
रूप ही को कांति जग फैलि रही सित ही ;
ऐसी गुन-सागरि उजागरि सुनागरि है,
लीनो मन मेरो हरि नैन-कोर चित ही।

(डॉ०) जसवंतसिंह
(एम्० ए०, बी० एस्-सी०, एन्० डी० [लंदन])

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५. एक

"अल्लाह रे सन्नाटा आवाज़ नहीं आती।"

कल सायंकाल नदी के तट पर बैठा मैं अभिमानी भास्कर का अंत देख रहा था। दुनिया की निष्ठुरता पर मेरा हृदय रो रहा था। उसी समय इन आँखों के कोने से भी दो बूँद आँसू छलककर उस गोधूलि के समय प्रभाकर की अस्त-व्यस्त किरणों में झल-मला उठे।

इन दो बूँदों में से तो मैं एक बूँद अपने हृदय के अंतस्तल में छिपा रखता हूँ। अब बची एक और, केवल एक। यह एक उस एक के पास भेजता हूँ, संसार में मेरे लिये जो एक है। जो स्वर्ग में एक है, कल एक थी, आज एक है, और कल—ओह! अनंत काल तक एक रहेगी। और, इस एक का उस एक में मिल जाने के बाद, उस अनंत एक की ओर आँखें उठा दो, जिसने इस एक को मुझ एक को दिया, जहाँ से यह एक निकली—और जिसकी एक-एक बूँद में मैं, तुम और वह हैं। आँखें उठाकर उसके प्रकाश का अवलोकन करो, जो सर्वदा उस एक की ओर अपनी प्रकाशमयी, प्रेम-पूर्ण उँगली उठाए हुए भूले-भटकों को एकमात्र सत्य-मार्ग दिखा रहा है। और—

आज—आज, उफ़् नहीं—अब फिर कभी—बिदा—

तुम्हारा ही—
.....एक
सुरेशचंद्र अग्रवाल

× × ×

६. मज़दूरिन

नन्हे बच्चे को गोदी ले वह चली काम पर मज़दूरिन;
बासी रोटी जो बचीं रात, ले बाँध चली वह कंगालिन।
रूखा खाना, दिन-भर तपना, है चैन कहाँ उसको मिलना?
भूखा रहना, सब सह लेना, यह सीख गई सब मज़दूरिन।
बच्चा रोता - चिल्लाता है, पर काम कहाँ उसका रुकता?
वह नहीं जानता, उसकी मा है एक अभागी मज़दूरिन।
'नन्हा बालक'—'उसकी माता', क्या चीख नहीं उठता अंतर?
रोटी के टुकड़ों के ख़ातिर पुचकार नहीं सकती बैरिन!

'मित्तल'

× × ×

७. वायुयान ❀

नभ के विशाल वक्षःस्थल पर अनुरक्त कालिमा हुई भान;
शत - शत कंठों से फूट पड़ा—"है वायुयान, है वायुयान।"
कोई विमुग्ध हो प्रेयसि के अधरामृत का कर रहे पान;
कोई उर-तल में छिपा रहे नन्हे शिशुओं को साभिमान।

❀ 'हवाई हमला'-शीर्षक एक कविता का कुछ अंश।—लेखक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्होंने जिस विज्ञान में दक्षता पाई है, वह योरप की पहुँच से बाहर है।

प्रसंग-वश इसमें योरप के व्यायाम और हठयोग-संबंधी आसनों की भी तुलना आ गई है। योगी-ब्रह्म का कथन है कि योरप के व्यायामों में उछल-कूद और अंगों का संचालन अधिक है, जिससे मांस-पेशियाँ विकसित अवश्य होती हैं, किंतु उनके द्वारा शरीर की शक्ति का अनावश्यक व्यय होता है। यह उछल-कूद ठंडे देशों के लिये आवश्यक भी है। हठयोग के आसनों में प्रत्येक अंग का व्यायाम तो हो ही जाता है, किंतु उसके साथ उनसे संबंध रखनेवाली नाड़ियों और स्नायु-ग्रंथियों की भी पुष्टि होती है। भारतीय आसन अंगों को विशेष अवस्था में स्थित रखने की ओर अधिक ध्यान देते हैं। एक आसन से शांत बैठे रहना भी पूरा व्यायाम है। हठयोग ने शरीर को आराम देने की भी कला बिल्ली आदि जानवरों के निरीक्षण से विकसित कर ली है, और पुस्तक में हठयोग के मूल-सिद्धांतों पर भी प्रकाश पड़ता है, जो बहुत विस्तृत न होते हुए भी परिचय के लिये पर्याप्त है। यह न भूलना चाहिए कि यह पुस्तक अँगरेज़ी-पाठकों के लिये लिखी गई है।

पुस्तक के वर्णन बड़े रोचक हैं, और कहीं-कहीं उनमें मधुर हास्य की एक क्षीण रेखा भी दिखाई पड़ने लग जाती है। यद्यपि यह पुस्तक आध्यात्मिक दृष्टिकोण से लिखी गई है, तथापि इसमें यात्रा-पुस्तकों की-सी रोचकता है। आगरा के दयाल-बाग़ तथा उसके आत्मा-स्वरूप श्रीसाहबजी महाराज के बड़े सुंदर शब्द-चित्र हैं। अनुवाद में मूल का माधुर्य नष्ट नहीं हुआ।

डॉक्टर ब्रंटन ने यद्यपि वैज्ञानिक रुचि का परिचय दिया है, तथापि कहीं-कहीं उन्होंने बहुत-सी बातों को विश्वास पर ही मान लिया है। उनकी कुछ अधिक व्याख्या होती, तो अच्छा होता। जहाँ उनको किसी की सचाई के दो-एक प्रमाण मिल जाते हैं, वहाँ फिर सभी बातें मान्य हो जाती हैं। सच्चा वैज्ञानिक एक-एक बात की जाँच करता है, किंतु अधिक संशयात्मा होने से भी काम नहीं चलता।

पुस्तक संग्रहणीय है, और इसके विषय पर हम लोगों के अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है।

× × ×

राम-वनवास—लेखक एवं प्रकाशक, पंडित श्यामजी शर्मा 'श्याम' काव्यतीर्थ; मूल्य १); पृष्ठ-संख्या ३०३।

रामचरित चिर काल से कवियों के लिये आकर्षण का विषय रहा है। प्रस्तुत पुस्तक में खड़ी बोली के छंदों में राम-वनवास से लगाकर अयोध्या-प्रत्यागमन की कथा दी गई है। कथा का आधार अधिकतर वाल्मीकि-रामायण से लिया गया है। जैसे लक्ष्मण के शक्ति रावण द्वारा ही लगाई जाती है, लेकिन उससे लक्ष्मण केवल तिलमिला जाते हैं। दो-एक जगह कुछ नई उद्भावनाएँ भी हैं। जैसे चौदह वर्ष वनवास का कारण बताया गया है कि उतने दिनों में प्रजा भरत के अनुकूल हो जायगी, और राम राज्य न पा सकेंगे।

कविता में वर्णिक और मात्रिक, दोनो प्रकार के छंदों का प्रयोग हुआ है। पुस्तक में वर्णन अधिक हैं, भावोद्गार कम। खड़ी बोली की कविता में शब्द प्रायः तोड़े नहीं जाते। इसमें कहीं-कहीं शब्द भी तोड़े गए हैं, और कहीं-कहीं व्रजभाषा के शब्दों का प्रयोग हुआ है—जैसे, 'हरखे निरख' का 'निरेख' प्रयोग किया गया है। अँगरेज़ी का भी एकआध शब्द, जैसे 'चैलेंज', आ गया है। पुस्तक पद्य में होते हुए भी उसमें कवित्व की मात्रा पर्याप्त रूप से नहीं आ पाई है, वैसे कहीं-कहीं छींटे अच्छे हैं।

× × ×

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रेमी भक्त उद्धव—लेखक, श्रीशांतनुविहारी द्विवेदी; संपादक, श्रीहनुमानप्रसाद पोद्दार; प्रकाशक, गीता-प्रेस, गोरखपुर; मूल्य ≡)

इस पुस्तक में श्रीमद्भागवत के आधार पर उद्धव-गोपी-प्रसंग दिया गया है। पुस्तक में प्रेम-धर्म की महत्ता दिखाई गई है, और भगवान् कृष्ण को एक साथ ज्ञान-स्वरूप और प्रेम-स्वरूप माना गया है। पुस्तक के अंत में उद्धव को भगवान् श्रीकृष्ण द्वारा दिए हुए उपदेश भी हैं। ये उपदेश केवल प्रेम से ही संबंध नहीं रखते, वरन् इनमें उच्च कोटि का आध्यात्मिक ज्ञान भी भरा है। हम सबको भगवान् का यह उपदेश कि अपनी भलाई अपने आप ही करनी चाहिए, इस युग में भी पूर्णतया लाभदायक—सहायक हो सकता है। पुस्तक में यदि सूरदास और नंददास के कुछ प्रसिद्ध पदों का भी समावेश हो जाता, तो इसकी रोचकता और उपादेयता और भी बढ़ जाती।

× × ×

कमध्वजशतक—रचयित्री, हरहाईनेस राजमाता महारानी श्रीशिवकुमारीदेवी, डी० बी० ई०, महाराष्ट्रवर 'कमध्वज' नरसिंहगढ़-राज्य; मुद्रक, कृ० ब० पावगी, हितचिंतक-प्रेस रामघाट, बनारस।

इस शतक में यद्यपि महारानी साहबा ने अपने पूज्य वंशजों का यशोगान किया है, तथापि वीर-रस की अच्छी छटा दिखाई गई है। इसकी भाषा में राजस्थानी-भाषा का पुट है, और उसके कारण इसमें ओज की मात्रा पर्याप्त है।

इसमें जोधपुर-राज्य के स्वामिभक्त सामंतों की चर्चा है। इसकी भाषा तथा कविता के उदाहरण-स्वरूप तीन दोहे नीचे उद्धृत किए जाते हैं—

सीस गिरे धर धड़ लड़े, सूराँ सिरराँ मोड़;
रण आँगण रा धणि खरा, रणबाँका राठोड़।
इतको सूरज उत उगे, सको न प्रतिज्ञा तोड़;
प्रण राखी, प्राणा तजे, रणबाँका राठोड़।
इण मूछाँ पर ताव, शीश हूमे धर धड़ लड़े;
रण आँगणरा सिंह, थाप खेंचि रिपु पर जड़े।

× × ×

६ अपराधी—लेखक, श्री'बेताब'; प्रकाशक, वेद-भानु माटुंगा, बंबई; मूल्य ।)

'बेताब'जी हिंदी-नाट्य-जगत् में प्रसिद्ध हैं। यह उन्हीं की कृति है। इसमें उस अपराध का उल्लेख किया गया है, जिससे समाज को वास्तविक हानि पहुँची है, किंतु जिसकी ओर समाज अब भी उपेक्षा-दृष्टि से देख रहा है। इस अपराध का मूल-स्वरूप है अनमेल-विवाह, जो स्त्रियों के साथ अत्याचार होता है। एक स्त्री होते हुए दूसरा विवाह कर लेना सबसे बड़ा अपराध है। उस विवाह से संबंध रखनेवाले भी अपराधी हैं।

पुस्तक लिखी तो प्रहसन के रूप में गई है, किंतु इसका विषय काफ़ी गंभीर है। इसमें नाटकीय ढंग भी लिया गया है, और निबंध का भी। इसलिये यह कृति उतनी कला-पूर्ण नहीं हो पाई है, जितनी होनी चाहिए थी। तो भी इसका विषय उपेक्षा-योग्य नहीं।

× × ×

झूठ-सच—लेखक, श्रीसियारामशरण गुप्त; प्रकाशक, साहित्य-सदन, चिरगाँव (झाँसी); मूल्य २); पृष्ठ-संख्या २७५।

लोग सियारामशरणजी को अधिकतर कवि के रूप में जानते हैं, किंतु वह गद्य-लेखन में भी बड़े सिद्धहस्त हैं। उपन्यास-जगत् में उनकी 'नारी' ने काफ़ी ख्याति पाई है। प्रस्तुत पुस्तक उनके स्फुट लेखों का संग्रह है। इनमें कुछ तो संस्मरण-रूप से हैं। यह कहना तो कठिन है कि वे सब कहाँ तक निबंध की कोटि में आते हैं, किंतु उनमें एक विशेष निजीपन है, जिसके द्वारा हमको सियारामशरणजी के व्यक्तित्व की एक अच्छी झाँकी मिलती है। गुप्तजी स्त्रियों के घूँघट पर विचार करते हुए कहते हैं—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कितने कौशल में, कितने आडंबर में, कितनी बनावट में हमने अपने को छिपा रक्खा है, यह हम तक नहीं जानते", किंतु लेखक की आत्मा की झलक शब्दों के घूँघट से मिल ही जाती है। मुंशी अजमेरीजी के निधन पर जो लेख लिखा गया है, वह अधिक भाव-पूर्ण है। बाल्यकाल की स्मृतियों के भी बड़े सुंदर और सजीव चित्र हैं। इस संग्रह में बहुत-से लेख—जैसे 'मनुष्य की आयु दो सौ वर्ष', 'घूँघट में', 'वर की बात', 'छत पर'—किसी साधारण घटना को लेकर प्रारंभ हुए हैं, और उन पर बड़ी दार्शनिक गंभीरता से विचार होने लगता है। कहीं-कहीं बड़े सुंदर सूक्ति-स्वरूप वाक्य भी आ जाते हैं, "चढ़ने का आनंद उतर सकने में है।" वास्तव में लोग चढ़कर स्वयं उतरना नहीं जानते। जो ऊँचे चढ़कर नीचे उतर सकते हैं, वे ही महान् हैं।

इन निबंधों में कहीं-कहीं बड़ी मौलिक और नई धारणाएँ हैं। साधारण लोग जहाँ 'नीरसतरुरिह विलसति पुरतः' में कवित्व देखकर उसकी वाह-वाह करते हैं, वहाँ गुप्तजी 'शुष्को वृक्षस्तिष्ठत्यग्रे' की कर्ण-कटु भाषा को विषय के अनुकूल बतलाकर उसमें श्रेष्ठता के दर्शन करते हैं।

'घोड़ाशाही'-शीर्षक लेख में हमको सियाराम-शरणजी के राजनीतिक विचारों की क्षीण झलक मिलती है। उनकी शांत प्रकृति में कैसी विद्रोह की ज्वाला धधक रही है। गुप्तजी आशु-कविता के पक्ष में नहीं हैं। वह कहते हैं, यदि अपनी रचना को चिरस्थायी बनाना है, तो उसके लिये पर्याप्त समय ख़र्च करो। जो चीज़ जल्द उत्पन्न होती है, जल्द ही मिट जाती है।

चिरंजीलाल 'एकाकी'

× × ×

पालि-महाव्याकरण—लेखक, भिक्षु जगदीश काश्यप; प्रकाशक, बोधि-महासभा, सारनाथ, बनारस; पृष्ठ-संख्या ५७३; मूल्य ५), बड़ा आकार; छपाई और काग़ज़ साफ़, मनोहर जिल्द-सहित।

प्रत्येक भाषा का जीवन उस भाषा का व्याकरण है। व्याकरण के बिना भाषा-सौष्ठव का आना असंभव है। व्याकरण से भाषा में सौंदर्य आ जाता है, और भाषा की जटिल समस्याएँ नियमों के ज्ञान से शीघ्र ही हल हो जाती हैं। 'पालि-महाव्याकरण' पालि-भाषा के अध्ययन करनेवाले छात्रों के लिये परम हितकारी है। इस पुस्तक में सूत्र सरल भाषा में समझाए गए हैं। सूत्रों की तरह पाद-टिप्पणियाँ भी दी गई हैं, जिससे अच्छी तरह अध्ययनकर्ताओं का लाभ हो। प्रत्येक पाठ के अंत में अभ्यास भी दे दिया गया है। इसमें मोग्गलान व्याकरण का सार है, यही पालि का मूल है। जिस भाँति संस्कृत का पाणिनि-व्याकरण महत्त्व रखता है, उसी भाँति यह भी महत्त्व की चीज़ है। पालि-व्याकरण का अध्ययन करनेवालों (पाठकों) के लिये यह परम आवश्यक वस्तु है। यह सरलता-पूर्वक हिंदी में समझाया गया है। इस पर हिंदी-टीका भी है। लेखक ने इसे बनाकर पालि-भाषा का अत्यंत उपकार किया है। पुस्तक ग्राह्य तथा पढ़ने योग्य है।

× × ×

अभिनव-मेघ (कालिदास-कृत मेघदूत का छंदोबद्ध अनुवाद)—लेखक तथा प्रकाशक का नाम और मूल्य लिखा नहीं; पृष्ठ-संख्या ४८।

प्रस्तुत पुस्तक में कुबेर के शाप से निर्वासित यक्ष चित्रकूट पर भेजा गया है। वहाँ आषाढ़ के प्रथम दिन मेघ के दर्शन होने से उसे अपनी प्रेयसी की याद हो आती है, जिससे वह बहुत व्याकुल हो जाता है। जब मनुष्य काम के वश होता है, तो उसे जड़-चेतन का भी ध्यान नहीं रहता। यक्ष भी विह्वल होकर निर्जीव (धुएँ, प्रकाश, पानी,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वायु के बने) मेघ को दूत-रूप में अपनी विरह-विधुरा पत्नी के पास भेजता है। हाथों में फूल लेकर, उसकी पूजा कर क्रम - पूर्वक मेघ से अलकापुरी तक जाने के मार्ग का वर्णन और फिर के अपने उद्गारों को कहता हुआ उन्हें अपनी पत्नी तक पहुँचाने की प्रार्थना करता है । वह कैसी होगी, किस भाँति तुम उसे पहचानोगे, कहाँ हमारा घर है, तथा क्या कहोगे, इन सब बातों को यक्ष ने उसे समझाया।

यह पुस्तक दो भागों में विभक्त है—पूर्व मेघ (पूर्व भाग) और उत्तर-मेघ (उत्तर भाग)। मेघ को जब यक्ष मार्ग बता रहा है, उस समय का वर्णन अच्छी रीति से किया गया है—"बादल ! तुम जाओ, तुम्हें रास्ता बतानेवाले बलाका-पंक्ती आकाश में मिलेंगे, क्योंकि वर्षा-ऋतु में बलाका बहुत होते हैं। फिर तुम नर्मदा - नदी के किनारे जाकर पानी पीना। वहाँ नाना भाँति के पुष्प खिले होंगे। फिर विविध उद्यानों की शोभा से युक्त, बड़े - बड़े महलों से भूषित दशार्ण - देश (वर्तमान भेलसा, ग्वालियर) में पहुँचना। वहाँ की भुवन-विख्यात राजधानी विदिशा में जाना। यद्यपि तुम्हारा मार्ग टेढ़ा है, पर फिर भी उज्जयिनी न छोड़ना। वहाँ की नारियों से अदृश्य होकर न जाना। उत्तर की ओर बढ़कर, देवगिरि होते हुए चर्मण्वति को पार कर, कुरुक्षेत्र (कनखल) होकर हिमालय (अलकापुरी) पहुँच जाना। वहाँ कुबेर की बाईं ओर अति शोभा-शाली मेरा घर है। जहाँ विरहिणी उत्सुकता से दरवाज़े पर खड़ी होगी।"

उक्त कथन में वस्तु-वर्णन मनोहरता से किया गया है। कवि ने जो भावनाएँ उद्भूत की हैं, वे कला की दृष्टि से महत्त्व-पूर्ण हैं। एक-एक वस्तु का वर्णन सांगोपांग किया गया है। वर्णन-शैली और शब्दों की अभिव्यंजना अपने ही ढंग की है। पूर्व-मेघ में प्रायः अर्थांतरन्यास अलंकार की अधिकता है। मध्य-भारत से कैलास तक का मार्ग-वर्णन इसमें दिखाया गया है। उत्तर-मेघ में अलका-वर्णन और संदेश समझाया गया है। समझाने का ढंग चित्ताकर्षक है, मानो यक्ष प्रत्यक्ष बातें कर रहा हो। अलकापुरी की विचित्रताएँ और वहाँ की सुंदरियों को सर्वदा सब ऋतुओं तथा सौभाग्य की प्राप्ति बताई गई है। मेघ में बिजली चमकने को उसकी आँख का रूपक दिया है। १६ से २१ छंद तक यक्षिणी का वर्णन है। परंतु यक्ष को इतनी उन्मत्तावस्था में प्रतिपादन किया गया है कि वह पूर्ण क्रियाओं का वर्णन न कर संदेश कहने लगता है।

इस पुस्तक का मुख्य उद्देश्य यह है कि जो लोग कालिदास के संस्कृत-मेघदूत को न देख सकें, वे इससे कुछ लाभ उठावें। मानसिक पीड़ा की अनुभूति ही इसका मुख्य विषय है। विरह-व्यथा का जीता-जागता चित्र हृदय में खिंच जाता है। उपमा की व्यापकता भी इसमें पाई जाती है। एक छंद से कुछ मृदुल अनुभूति का रसास्वादन कीजिए। यक्ष मेघ से अपनी भार्या के प्रति कहता है—

करती हो यदि नींद कहीं कुछ उसका मनरंजन,
ठहर प्रहर-भर तो जलधर ! मत कर देना गर्जन।
ऐसा न हो कि सपने में मम कर बाँधे अपने में
हाय बिलग हो जायँ—हमारा छूटे आलिंगन।

मेघ को यक्ष ने हनुमान् की तरह सचमुच दूत-गुणों-युक्त समझा, और सीता-सदृश साध्वी पत्नी के पास भेजा। इसकी भाषा यद्यपि कुछ क्लिष्ट है, पर इतनी नहीं, जिससे भावों की अभिव्यक्ति न हो। पुस्तक पढ़ने योग्य है।

(साहित्याचार्य) जितेंद्र भारतीय (शास्त्री)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बीमा-कंपनी ही क्यों ?

अधिक ब्याज दे सकने का कारण !

बीमा-कंपनी और बैंकों की रुपया देने-लेने की नीति में बड़ा अंतर है। बैंकें अपना रुपया कभी लंबी मियाद के लिये देना पसंद नहीं करतीं, क्योंकि उन्हें कभी रुपए की जरूरत पड़ सकती है। और, इसीलिये वे ज्यादा ब्याज भी पैदा नहीं कर पातीं। इसके विपरीत बीमा-कंपनियाँ सदा यह चाहती हैं कि अगर उनका रुपया सुरक्षित है, तो वह ज्यादा-से-ज्यादा समय के लिये लगा रहे। और, इसीलिये रुपया सुरक्षित रखते हुए भी वे ब्याज अच्छा पैदा कर लेती हैं, और इस दृष्टि से वे बैंकों की अपेक्षा अधिक मजबूत होती हैं। और, इसीलिये वे अपने ग्राहकों के लिये ज्यादा ब्याज पैदा कर सकती हैं।

स्वदेशी बीमा-कंपनी, लिमिटेड

ने सारा खर्च काटकर और जोखिम के लिये रुपया अलग निकालकर भी ६) प्रतिशत से अधिक ब्याज पैदा किया है, और उसी से प्रभावित और उत्साहित होकर स्वदेशी ने अपने यहाँ रुपया जमा करने की नई योजना निकाली है। जिसके अनुसार कोई भी व्यक्ति १००) से लेकर १०,०००) तक कंपनी में डिपॉज़िट के रूप से निम्न ब्याज पर जमा कर सकते हैं—

एक वर्ष की मुद्दत पर	...	...	३) प्रतिशत
दो वर्ष की मुद्दत पर	...	...	३॥) प्रतिशत
तीन वर्ष की मुद्दत पर	...	...	४) प्रतिशत

ब्याज हर छठे महीने मिलता है। विधवाओं, बच्चों और संस्थाओं को यह सूद हर महीने भी मिल सकता है।

सफलता का प्रमाण

रुपया जमा करने की यह योजना जनवरी, १९४० से शुरू हुई है। इस थोड़े-से समय में ही उसमें काफ़ी सफलता मिली है, और अधिकाधिक मिलती जा रही है। प्रमाण लीजिए—

१ जनवरी से ३० जून, १९४० तक	६ मास में जमा हुए	३९,४३४)
१ जुलाई से ३० दिसंबर, १९४० तक	६ मास में जमा हुए	१,००,८४८)
१ जनवरी से ३१ जनवरी, १९४१ तक	१ मास में जमा हुए	२९,९५१)
	कुल १३ मास में जमा हुए	१,७०,२३३)

कंपनी की मज़बूती का बड़ा प्रमाण

उसने अपने बीमेदारों को आजीवन और मियादी बीमे पर १८) तथा १४) रुपया प्रतिवर्ष बोनस दिया है, और हिस्सेदारों को कई वर्ष से ६) प्रतिशत मुनाफ़ा दे रही है।

विशेष ब्यौरा जानने के लिये लिखिए या मिलिए—

श्रीचंद दोनेरिया, मैनेजिंग डायरेक्टर

स्वदेशी बीमा-कंपनी, लि०, स्वदेशी बीमा-नगर, आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हँसिए ! हँसाइए !! मुस्किराइए !!!

हिंदी-साहित्य का एकमात्र हास्य-रस-प्रधान

मासिक पत्र

'नोक-झोंक'

का

विशेषांक आगामी मार्च १९४१

में

बड़ी सज-धज से निकल रहा है। प्रायः १०० पृष्ठ तथा बीसियों चित्रों से सुसज्जित मजेदार विशेषांक का मूल्य केवल ।=) ग्राहक बननेवालों को मुफ्त।

नमूने के लिये ढाई आने का टिकट भेजना जरूरी है। एजेंट तथा विज्ञापनदाता शीघ्रता करें!

मैनेजर 'नोक-झोंक', आगरा

पुस्तकालयों और हिंदी-प्रेमियों को !

शुभ सूचना

❀ सचित्र, साप्ताहिक ❀

लोकमत : लोकमान्य

(नागपुर से प्रति रविवार को प्रकाशित) वार्षिक मूल्य ३॥)

(कलकत्ते से प्रति गुरुवार को प्रकाशित) वार्षिक मूल्य ३॥)

केवल ५) रु० में एक साल तक दिए जायँगे

ये दोनो पत्र साप्ताहिक के रूप में अर्द्ध-साप्ताहिक की भाँति आपका मनोरंजन करेंगे।

—: मनीऑर्डर भेजकर शीघ्र ग्राहक बनें :—

लोकमत-कार्यालय अथवा **लोकमान्य-कार्यालय**

नागपुर सिटी, १६०, हैरिसन रोड, कलकत्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस अमृत-तत्त्व की खोज में निरंतर भटकनेवाला—

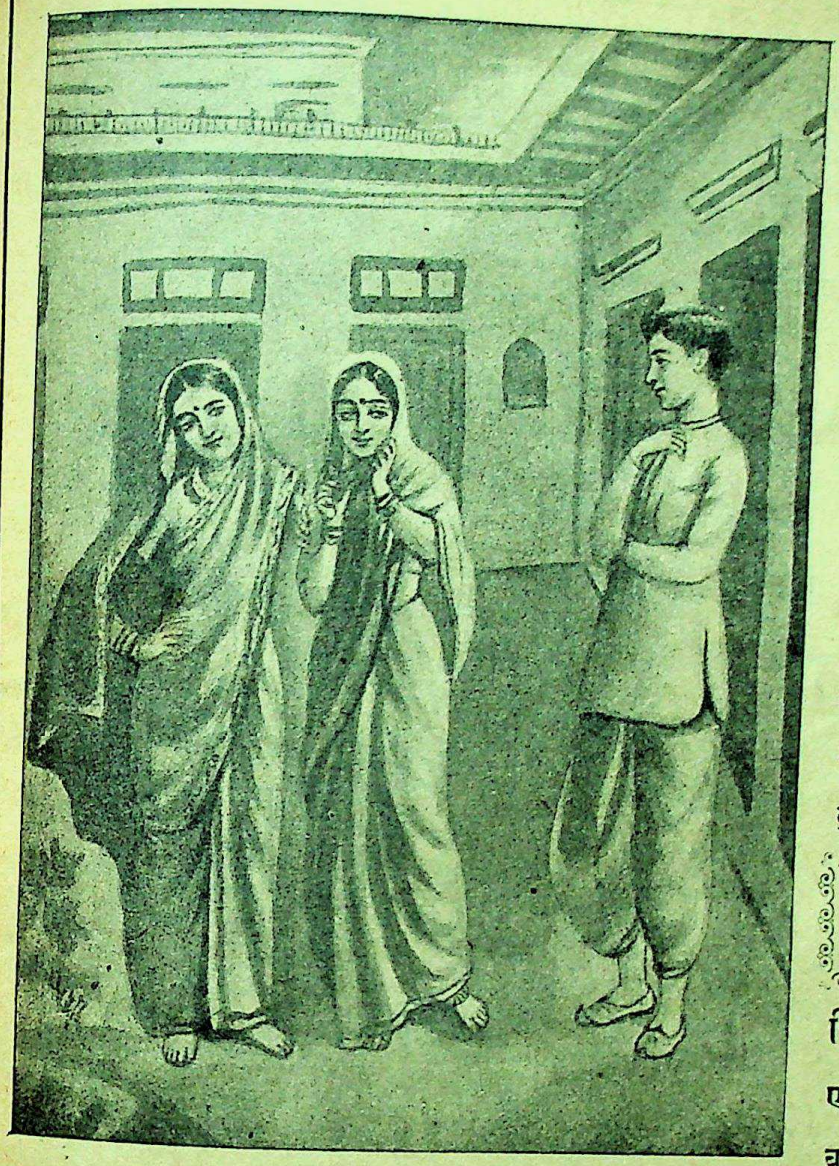

असहाय, अवहेलित,
अविश्वासी—
केवल नाम का

'कुबेर'

धन-राशि में लोटनेवाला, नए युग के पूँजीपतियों का अपवाद - रूप, अभिमानी,

कुबेर न था !

समाज की चोटों से तिल-मिलाकर, आत्मविश्वास और लोकोपकार की भावना के सहारे जीनेवाला, औरों के लिये अपनेपन को लुटा देनेवाला रंक

कुबेर

विधाता के विधान से एक दिन सचमुच 'कुबेर' बन गया ! कैसे ?

एक अबला के अंतःकरण से निकला हुआ आशीर्वाद !
एक नारी के कृतज्ञ हृदय से मिलनेवाला वरदान !!
एक-एक अक्षर में सजीव होकर एक साधारण व्यक्ति को कितना ऊँचा उठा सका—यदि आप जानना चाहते हैं, तो

साम्यवाद,
यथार्थवाद,
जनवाद,
समाजवाद,

एक विवेचनात्मक रूप में आपके सामने आते हैं।

मानवता

का परिचय कौन देता है ?

'कुबेर'

गंगा-पुस्तकमाला की सबसे नई भेंट
कुबेर (उपन्यास) मँगाकर पढ़िए !

मूल्य सादी १।)
सजिल्द १॥।)

लेखक

श्रीयुत देवीप्रसाद धवन 'विकल'
सहायक संपादक 'वर्तमान'

मिलने का पता—
हिंदी-पुस्तकों की सबसे बड़ी दूकान—
गंगा-ग्रंथागार, ३६, लाटूश रोड, लखनऊ

आज ही तुरत मँगाकर पढ़ें !!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'अज्ञान के भूत' से डरकर आप भाग खड़े होते हैं ! क्यों ?

सत्साहित्य का पठन-पाठन आपको मानसिक और आत्मिक बल तथा साहस प्रदान करता है !

आपका सबसे बड़ा अपराध है कि आप अपने को नहीं जानते और न जानने का प्रयत्न ही करने की लालसा है ।

विद्या और ज्ञान

मानव-जीवन के लिये आवश्यक है ! आदि-सृष्टि के क्रमिक विकास का विवेचनात्मक विवरण, मनुष्य का सच्चा इतिहास, संसार के गूढ़तम निर्माण-रहस्य का प्रत्यक्षीकरण

मनुष्य का विकास

जिसमें

हमारी ज़मीन पर सबसे पहले जानवर कैसे पैदा हुए ? मनुष्य-जाति कैसे प्रकट हुई ? क्या आदमी आसमान से बरस पड़े थे ? या पाताल से निकल पड़े थे ? इन सभी प्रश्नों का विस्तृत और प्रासंगिक उत्तर देनेवाली एकमात्र

पुस्तक

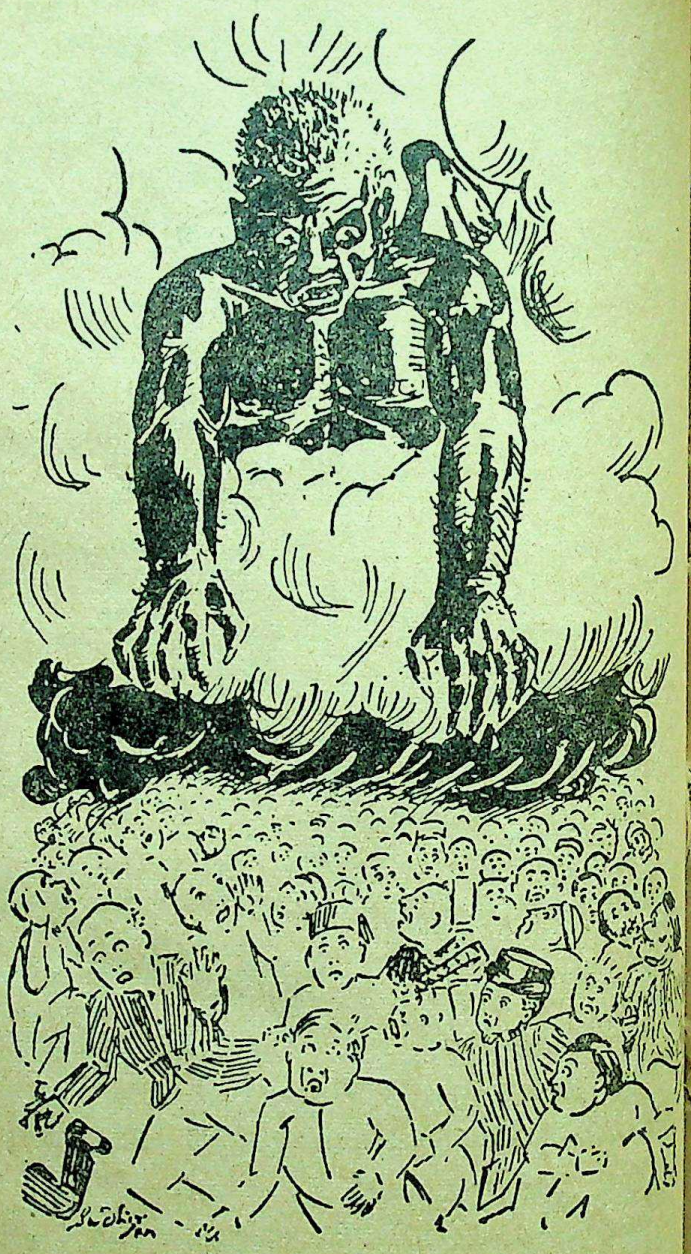

मनुष्य का विकास

{ लेखक, श्रीज्योतिलाल भार्गव बी० ए०, एल्-एल्० बी०, हिंदी-पब्लिसिटी ऑफ़िसर, बिहार-गवर्नमेंट } छपकर तैयार है! मँगाएँ !!

सजिल्द ॥=) सादी ।=)

अपनी संतान को इस ज्ञान से वमुख न रक्खें !!!

आज ही ऑर्डर भेजें

मिलने का पता—

गंगा-ग्रंथागार, ३६, लाटूश रोड, लखनऊ

गंगा पुस्तक माला लखनऊ कार्यालय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस स्तंभ में हम हिंदी-प्रेमियों की जानकारी और सुबीते के लिये प्रतिमास नई-नई पुस्तकों के नाम देते हैं। पिछले महीने में निम्न-लिखित पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं—

(१) 'आत्मसंयम' (शिक्षा)—लेखक, श्रीयुत जगपति चतुर्वेदी ; मूल्य १)

(२) 'गैरीबाल्डी' (जीवनी)—लेखक, उपर्युक्त ; मूल्य ।)

(३) 'सनयात सेन' (जीवनी)—लेखक, उपर्युक्त ; मूल्य ।)

(४) 'कमाल पाशा' (जीवनी)—लेखक, उपर्युक्त ; मूल्य ।)

(५) 'अब्दुलग़फ़्फ़ारख़ाँ' (जीवनी)—लेखक, श्रीव्यथित हृदय ; मूल्य ।)

(६) 'अबुलकलाम आज़ाद' (जीवनी)—लेखक, श्रीजगदीश झा ; मूल्य ।)

(७) 'वीर सावरकर' (जीवनी)—लेखक, श्रीगोविंदराव मराठे ; मूल्य ।)

(८) 'महात्मा ईसा' (जीवनी)—लेखक, श्रीरामनारायण मिश्र ; मूल्य ।)

(९) 'डीवेलरा' (जीवनी)—लेखक, श्रीयुत जगपति चतुर्वेदी ; मूल्य ।)

(१०) 'शनि की दशा' (उपन्यास)—लेखिका, श्रीमती कांचनमालादेवी ; मूल्य १॥)

(११) 'पर्वोत्सव-विवरण' (धार्मिक)—लेखक, श्रीसुदर्शन ; मूल्य ॥=)

(१२) 'सवारियों की कहानियाँ'—लेखक, श्रीव्यथित हृदय ; मूल्य ॥=)

(१३) 'आज की दुनिया' (राजनीतिक)—लेखक, श्रीअमरनाथ विद्यालंकार ; मूल्य २॥)

(१४) 'भारतवर्ष का इतिहास' (इतिहास)—लेखक, श्रीपं० भगवद्दत्त बी० ए० ; मूल्य १)

(१५) 'गप्प-चयनिका' (गल्प)—लेखक, श्रीकैलासनाथ भटनागर ; मूल्य १॥)

(१६) 'काव्य-मंदाकिनी' (काव्य)—लेखक, प्रो० सरनदास 'मनोत' एम्० ए० ; मूल्य २)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१. हिंदी पर प्रहार

हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के सभापति बाबू संपूर्णानंदजी ने पूना-अधिवेशन के अपने भाषण में हिंदी पर चहुँमुखी प्रहार की जो बात कही थी, उसके प्रमाण हमें पद-पद पर मिलते जाते हैं। भारत की जन-गणना के संबंध में हिंदुस्तानी का सिक्का चलाकर सरकार ने हिंदी की जो उपेक्षा की है, उसके लिये हिंदी-भाषा-भाषियों में आंदोलन उठ खड़ा हुआ है। जगह-जगह से इसके प्रमाण मिल रहे हैं कि इस हिंदुस्तानी की आड़ में सरकारी कर्मचारियों का रवैया उर्दू की लोक-प्रियता दिखाना है। सरकार ने भारतीय सिक्कों पर से नागरी-लिपि का पहले से ही बहिष्कार कर रक्खा है। उसकी अदालतों में उर्दू का ही बोलबाला है, आदेश और घोषित नीति यह होते हुए भी कि अदालतों और सरकारी काग़ज़ों में उर्दू और हिंदी, दोनो का ही प्रयोग होना चाहिए, व्यवहार में सर्वत्र उर्दू-लिपि का ही प्रयोग हो रहा है। सरकारी रेडियो हिंदुस्तानी के नाम पर फ़ारसी, अरबी-मिश्रित उर्दू का प्रचार करते हैं। अब सरकार इससे भी आगे बढ़नेवाली है। अब तक तो वह हिंदी-भाषा और नागरी-लिपि की उपेक्षा ही करती रही है, पर अब उसने नागरी-लिपि का अस्तित्व ही ख़त्म करने की सोची है। वह फ़ारसी-लिपि के संबंध में तो कुछ कह सकती ही नहीं, उसका अस्तित्व वह हर जगह स्वीकार करती है, पर नागरी-लिपि की जगह अब रोमन-लिपि का प्रचार बढ़ा रही है। इसका एक ताज़ा सबूत उस विज्ञापन से मिलता है, जो सरकार की तरफ़ से रॉयल इंडियन नेवी के लिये मल्लाहों की आवश्यकता के लिये निकाला गया है। उसमें मल्लाहों की योग्यता के लिये कहा गया है कि वे इतने योग्य हों, जो रोमन-लिपि या उर्दू-लिपि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में लिखी गई हिंदुस्तानी लिख-पढ़ और समझ सकें। यह खुला पक्षपात है; नागरी-लिपि के लिये द्वेष-भाव का द्योतक है। हिंदी-भाषा-भाषी और हिंदी-प्रेमियों की ओर से इसका घोर विरोध होना चाहिए। जो लोग हिंदी-भाषा और नागरी-लिपि के प्रेमी हैं, उन्हें ऐसी प्रत्येक मिसाल पर, हरएक हरकत पर दृष्टिपात करना चाहिए। अभी सर सिकंदर हयातख़ाँ अपने एक वक्तव्य में यह कह चुके हैं कि पंजाब के प्राइमरी एजुकेशन-बिल के संबंध में हिंदी और गुरुमुखी भाषाओं के हिमायतियों की तरफ़ से जो आंदोलन किया जा रहा है, उसे हम सफल न होने देंगे, और पंजाब में उर्दू की जो मान्यता वे स्वीकार कर चुके हैं, उस पर ज़रा भी आँच न आने देंगे। पक्षपात का यह कैसा ज्वलंत उदाहरण है। हम ऐसे व्यक्तियों और सरकार को यह चेतावनी दे देना चाहते हैं कि वे हिंदी के प्रति कितना ही पक्षपात-पूर्ण रवैया अख़्तियार करें, नागरी-लिपि की लोकप्रियता नष्ट करने के लिये कितना ही प्रयत्न करें, पर हिंदी-भाषा और नागरी-लिपि का जो स्थान इस देश के करोड़ों मनुष्यों के हृदयों में जम चुका है, वह मिटाए न मिटेगा। हिंदी-भाषा और नागरी-लिपि अपने गुणों के कारण देश-वासियों की प्यारी वस्तु रहेगी। उसका प्रचार और उत्तरोत्तर बढ़नेवाली लोक-प्रियता नष्ट नहीं की जा सकती। ऐसे वक्त में हिंदी-संस्थाओं और हिंदी-प्रेमियों की ज़िम्मेदारी और कार्य और भी बढ़ जाता है। अब तक उनका काम हिंदी का प्रचार करना और हिंदी-भाषा तथा लिपि को देश-भर में अधिकाधिक व्यापक बनाना ही था, अब यह काम उन्हें विरोध का मुक़ाबिला करते हुए जारी रखना होगा।

× × ×

२. सुभाष बोस कहाँ हैं ?

ये पंक्तियाँ जिस समय लिखी जा रही हैं, उस समय तक देश के महान् नेता, बंगाल की दिव्य आभा, देश-गौरव श्रीयुत सुभाषचंद्र बोस का कोई पता नहीं लगा। इस तरह उनके एकाएक ग़ायब हो जाने से देश में भारी चिंता पैदा हो गई है। कांग्रेस-क्षेत्र में महात्मा गांधी से लेकर सभी कांग्रेस के व्यक्तियों को चिंता और निराशा हो रही है। सरकार भी इसके लिये कम चिंतित नहीं। सुभाष बोस पर भारत-रक्षा-क़ानून के केस चल रहे थे। अदालत ने उनके नाम का वारंट भी निकाल दिया, और उनका कोई पता न चलने पर उनके नाम की जायदाद ज़ब्त कर लेने का भी ऑर्डर सरकार की तरफ़ से हो चुका है। इस विषय में हमें कहना ही क्या है? इस वक्त तो देश की जो चिंता है, वही हमारी चिंता है। सुभाष बोस के विचारों और उनकी कार्य-प्रणाली से मतभेद रखनेवाले भी उनके लिये इतने ही चिंतित और अधीर हैं, जितने उनके निजी व्यक्ति और घर-कुटुंबवाले हो सकते हैं। सुभाष साधारण व्यक्ति न थे। दो बार वह राष्ट्रपति-पद पर आसीन हुए। राष्ट्रपति-पद को उन्होंने अपनी इच्छा से त्याग दिया, और फिर देश-भर में अपने विचारों के अनुसार तूफ़ानी दौरा किया। आप जहाँ गए, वहाँ तूफ़ान-सा खड़ा नज़र आया। यह आपके व्यक्तित्व, त्याग, योग्यता और प्रगतिशील विचारों का परिणाम था। आप सदैव देश की हलचलों से आगे रहे हैं। कांग्रेस के कार्य-क्रम से आपके विचार सदैव आगे बढ़े रहे, और इस बात पर कांग्रेस में आपका व्यक्तित्व निराला रहा। पिछले दिनों से कांग्रेस-कार्य-समिति के साथ आपका गहरा मतभेद पैदा हो गया था, और बहुधा लोग यह महसूस करते हैं कि त्रिपुरी-कांग्रेस पर सुभाष बोस ने जो मत प्रकट किया था, वह सही था। परिस्थितियों को समझ लेने में आपकी क्षमता ने कमाल कर दिखाया, पर कांग्रेस ने आपके दिखाए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मार्ग और कार्य-क्रम को नहीं अपनाया । इस अवस्था में भी आपने कांग्रेस की शान और प्रतिष्ठा के विरुद्ध एक शब्द भी नहीं कहा । आप सदैव कांग्रेस के भक्त और उसका गौरव बढ़ाने में तत्पर रहे । आपका एकाएक ग़ायब हो जाना भी देश में एक अजीब सनसनी और हलचल पैदा करता है । यद्यपि हमें आपकी मनोदशा का ठीक-

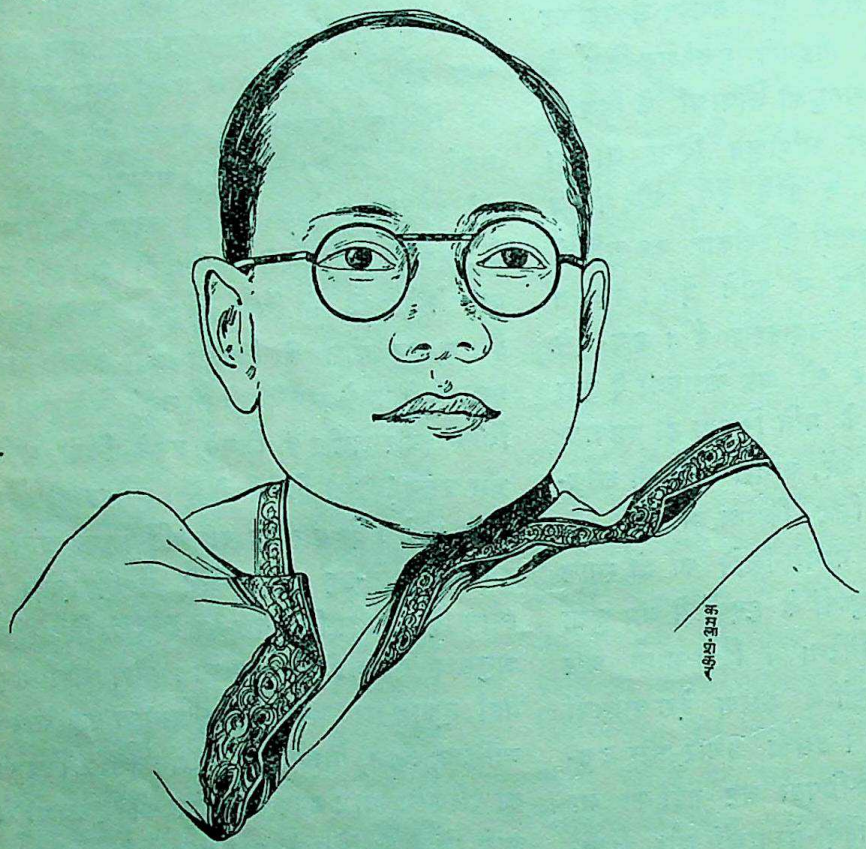

श्रीसुभाषचंद्र बोस

ठीक पता नहीं, इसलिये हम नहीं कह सकते कि आप किस कारण, किस दशा में और किन परिस्थितियों में देश-वासियों की आँखों से ओझल हुए हैं, कितने ख़तरे मोल लिए हैं । आपने यह मार्ग ग्रहण करके भी सरकार, बंगाल और देश के प्रति कितनी बड़ी ज़िम्मेदारी को एकाएक छोड़ा है, इससे भी अधिक अपने प्रियजनों, घर-कुटुंबियों, स्नेह और मोह का परित्याग किया है, और सबसे अधिक उस पचहत्तर वर्ष की बूढ़ी मा का वात्सल्य और ममता, जिस पर आप सब कुछ निछावर कर देते, खोकर अंतर्धान हुए हैं । कितने अंतर्द्वंद्वों के अनंतर मनुष्य—और सुभाष-जैसा मनुष्य—इस पथ को ग्रहण कर सकता है ! हम नहीं कह सकते, इसका कारण क्या है ? आज तो हमारे सामने यही सबसे बड़ा प्रश्न है—सुभाष कहाँ है ? वह कहाँ गया ? उसे क्या हो गया ? वह जहाँ भी हो, स्वस्थ हो । उसकी मनःस्थिति ठीक हो । वह ध्येय का उपासक है । हम फिर उसे इससे बड़े रूप में अपने बीच में देखना चाहते हैं ।

× × ×

३. भारत-रक्षा-क़ानून का प्रयोग

भारत-रक्षा-क़ानून बनाने में सरकार का जो उद्देश्य था, वह अब पूरा हो रहा है । कुछ लोग कांग्रेस को इस बात के लिये दोष देते हैं कि उसने आंदोलन छेड़कर सरकार को इस बड़ी मात्रा में भारत-रक्षा-क़ानून का प्रयोग करने का अवसर दिया, लेकिन उन लोगों को यह भी मालूम है कि कांग्रेस ने जब तक आंदोलन का नाम भी नहीं लिया था, समझौते की बातचीत जारी थी, और गांधीजी आंदोलन शुरू करने की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संभावना भी प्रकट नहीं करते थे, तभी सरकार भारत-रक्षा-क़ानून के अंदर धड़ाधड़ गिरफ़्तारियाँ करा रही थी। इसलिये बखेड़े का सूत्रपात तो ख़ुद सरकार की तरफ़ से हुआ। भारत-रक्षा-क़ानून का निर्माण करना ही ख़तरे की घंटी थी। इसके बाद भी जो कुछ हुआ, उसके लिये हम परिस्थितियों को ही दोषी ठहरावें, तब भी कुछ बातें विचारणीय रह जाती हैं। आजकल देश-भर में भारत-रक्षा-क़ानून भारत की नौकरशाही की रक्षा कर रहा है। उसके प्रयोग का ढंग निराला है। सीमा-प्रांत में सत्याग्रह के नारे लगाना इस क़ानून के अनुसार अब तक अपराध नहीं माना गया है। वहाँ गिरफ़्तारियाँ भी नहीं होतीं। उसी प्रांत के निकटवर्ती पंजाब-प्रांत में सत्याग्रहियों को सज़ा के अतिरिक्त छ हज़ार रुपए तक जुर्माने का दंड दिया जाता है। कलकत्ता-शहर में सत्याग्रह करना जुर्म नहीं, अन्यत्र बंगाल-प्रांत में उसके अनुसार काफ़ी दमन हो सकता है। गुडुर के मजिस्ट्रेट सत्याग्रही नारों को भारत-रक्षा-क़ानून के अंदर अपराध नहीं मानते, पर उनके इलाक़े से बाहर वह अपराध है। सत्याग्रह का नोटिस देना एक तरफ़ जुर्म है, और उसमें साल-डेढ़ साल की जेल और जुर्माने का दंड दिया जाता है, दूसरी तरफ़ उन्हीं नारों का उच्चारण करने पर नाम-मात्र की सज़ा देकर सत्याग्रही छोड़ भी दिया जाता है। एक-से ही अपराध पर कहीं चार-चार साल की और कहीं

लाइमजूस ऐंड ग्लिसरिन

केश-परिचर्या और प्रसाधन के लिये
उपयोगी सुस्निग्ध क्रीम

स्नान के पहले और बाद में रोज़ाना व्यवहार करने से कड़ा-से-कड़ा केश भी मुलायम एवं रुखड़े केश चिकने हो जाते हैं। स्त्री-पुरुष सभी एक समान पसंद करते हैं।

बंगाल-केमिकल ऐंड फ़ार्मास्यूटिकल वर्क्स, लि०
कलकत्ता : : बंबई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो-दो महीने की सज़ा दी जाती है। यह भेद-भाव सरकार के न्याय-विभाग में है। एक जगह पर, एक मजिस्ट्रेट की निगाह में, एक व्यक्ति के संबंध में एक ही बात गुरुतर अपराध मानी जाती है, और उस पर कड़ा दंड दिया जाता है, वही बात भिन्न स्थान, भिन्न मजिस्ट्रेट द्वारा, भिन्न व्यक्ति के संबंध में बड़ा अपराध नहीं मानी जाती, या बिलकुल अपराध की कोटि में शुमार नहीं की जाती। ऐसा क्यों?

एग्ज़ीक्यूटिव-विभाग में भी देखिए—अभियुक्त या बंदियों को जेलों में ए, बी या सी-क्लास में रखना स्थानीय अधिकारियों की अपनी इच्छा का विषय हो गया है। उदाहरण के लिये प्रांतीय व्यवस्थापिका सभाओं के सदस्यों को कहीं ए-क्लास मिलता है, तो कहीं बी और सी-क्लास में भी उन्हें रक्खा गया है। एक व्यक्ति को एक बार सज़ा होने पर ए-श्रेणी में रक्खा जाता है, दूसरी बार बी और सी-श्रेणी में भी। एक व्यक्ति को गिरफ़्तार करके पुलिस का बड़ा अफ़सर उसे अपनी मोटर में बिठाकर ले जाता है, दूसरे ऐसे व्यक्तियों को हथकड़ी पहनाकर, रस्सी में बाँधकर पैदल घसीटा जाता है। जेलों में भी ऐसी अव्यवस्था के उदाहरण हैं। यह बात नहीं कि व्यक्तियों की प्रतिष्ठा, उनकी सामाजिक स्थिति तथा योग्यता का ख़याल करके ऐसा भेद-भाव किया जाता हो, प्रतिष्ठित-से-प्रतिष्ठित व्यक्तियों के साथ भी कहीं-कहीं ओछेपन का व्यवहार किया गया है। इससे यह बात ज़ाहिर होती है कि वर्तमान आंदोलन के संबंध में सरकार सर्वत्र एक-सी नीति, व्यवस्था या आदेशों के अनुसार कार्य नहीं कर रही है। यह सरकार की प्रतिष्ठा के अनुकूल नहीं। जो लोग जेल जाते हैं, उन्हें तो सब तरह के व्यवहार के लिये तैयार रहना चाहिए, पर सरकार को यह चाहिए कि वह सर्वत्र एक-सी नीति से काम

पि० वेंकटाचल पंडित की आयुर्वेदीय लोकामयहर कस्तूर-गोलियाँ

ये गोलियाँ बहुमूल्य पदार्थों से—जैसे सोना, चाँदी, नेपाली कस्तूरी, मूँगा आदि से—बनाई गई हैं। इनको अलग-अलग या २ से ४ तक पान में खाने से हाज़मा बढ़ता है। हर प्रकार का बुख़ार दूर होता है। जल-वायु और भोजन के परिवर्तन का असर बराबर होता है, रक्त साफ़ होता है, तथा उसकी चाल अबाध्य होती है, खाँसी, सरदी, ज़ुकाम, पेट का दर्द, क़ब्ज़ियत, कमर और छाती का दर्द, कमज़ोरी, जूड़ी-बुख़ार और प्लेग को नाश करती हैं। जिस स्थान में छूत की बीमारियाँ फैली हों, वहाँ नित्य पान के साथ ३-४ गोलियाँ दीजिए। बच्चों के रोग में जादू के समान असर दिखाएँगी। दाम ३०० गोलियों की बोतल का ।), डाक-महसूल अलग। ६ बोतलों का १॥)

मिलने का पता—

१२ बोतलों का मूल्य डाक-व्यय-सहित २॥।-)
२५ „ „ „ ५≡)

श्रीसीताराघव वैद्यशाला, मैसूर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ले, जिससे लोगों पर यह प्रभाव पड़े कि सरकार के क़ानून और व्यवस्था का प्रयोग सब जगह, सब व्यक्तियों पर समान रूप में होता है। ब्रिटिश क़ानून का तो यह मुख्य सिद्धांत है।

× × ×

४. क्या कांग्रेस के साथ समझौता होगा ?

देश में कांग्रेस का आंदोलन छिड़े हुए कुछ महीने हो चुके। अब तक हज़ारों व्यक्ति जेल जा चुके हैं, उनसे कहीं अधिक आगे आनेवाले दिनों में और जानेवाले हैं। सवाल पैदा होता है कि इस तरह की स्थिति अपने देश में कब तक रहेगी ? क्या इस असंतोष-पूर्ण, अवांछित स्थिति का शीघ्र ही अंत न होगा ? जिस समय ये पंक्तियाँ लिखी जा रही हैं, उस समय तक वातावरण में कोई परिवर्तन हुआ नज़र नहीं आता। ब्रिटिश अधिकारी और भारत के उनके प्रतिनिधि इस संबंध में उदासीनता का-सा भाव धारण किए हुए हैं। श्रीमान् वाइसराय और भारत-मंत्री मि० एमरी के

STOP

Every sensible man on this planet of ours desires money as necessarily as every plant desires earth, water, air and sunshine for its nourishment. If you want MONEY for your daily necessities or for the filling in of the mental pictures which you have been sketching out in your mind or for materializing the airy castles upon which you have been dwelling in moments of hopeful ecstasy I sincerely advise you to get yourself possessed of my easy, short, practical Special Scientific Instructions on **"How to Invite Money and Become Rich ?"** The Instructions are useful alike to ambitious ladies and gentlemen, rich and poor, employed and unemployed, educated or not, etc., desirous of rolling in riches, hoarding money or gaining livelihood, freedom, and the ability to do great things. The beauty of the unique Method is that it does not require any investment or physical labour at all. It may be mastered on one reading only within five minutes and brought into use immediately. Cheap at any price. Special Fee **Rupees Five**, Foreign (Ten Shillings) only **in advance.** No V. P. P.

Mr. A. S. D., Karachi says:—"I received your very kind letter of the 15th current together with your valuable Instructions.....I have read the beautiful essay with pleasure and profit.....The Course is really short but quite to the point.....I shall put in my request for other courses in the next month." The original may be seen in our office.

विद्या, धन, तन-बल नहीं, कुइ सहाय नहिं होइ ;
वैज्ञानिक विधिमात्र सों धनी बनहु सब कोइ।

Apply mentioning this paper to:—

Dr. G. S. D. SHARMAN, M. A, D. Sc., Ps. D., Ph. D.
Occultist and Specialist in Drugless Healing,
17, Success House, Fatehpur-Sikri, Agra, (India).

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वक्तव्य इस संबंध में हमें उस जगह से आगे नहीं बढ़ाते, जहाँ हम इस वक्त पड़े हैं। तोते के वाक्य की तरह हमारे प्रभुओं ने एक ही बात रट ली है। भारत की वैधानिक स्थिति पर उन्हें कुछ कहने का अवसर मिलता है, तो वे कह देते हैं—"यह काम भारतीयों का ही है। वे आपस में मिलकर एक हो जायँ, कांग्रेस और मुसलिम-लीग के नेता आपस में समझौता कर लें, तो हम उनकी माँग मंज़ूर कर लेंगे।"

इन शब्दों का अर्थ ही यह है कि न कभी ऐसा समझौता होगा, न भारत को स्वाधीनता प्राप्त होगी। आज अँगरेज़ अधिकारियों ने यह भले प्रकार समझ लिया है कि मि० जिन्ना और देश के अन्य प्रगतिशील दलों के बीच में गहरी और चौड़ी खाईं है, इसलिये आजकल उनकी एकता के नारे लगाना ही सबसे अच्छा बहाना है। जब ऐसी स्थिति आ जाय कि भारतीय नेताओं के आपस के मतभेद ख़त्म हो जायँ, तब कोई और बहाना निकल आवेगा। क्या इससे पहले ऐसे मौक़े नहीं आ चुके? मि० जिन्ना और उनकी मुसलिम-लीग का बखेड़ा तो इन चंद दिनों में ही पैदा हुआ है। इससे पहले जिन्ना साहब क्या कहते थे? हिंदुओं और मुसलमानों ने मिलकर अपनी संयुक्त माँगें भी पेश की थीं। नेहरू-रिपोर्ट में और सत्याग्रह-काल में पं० मदनमोहन मालवीय और मरहूम मौ० शौकतअली के प्रयत्न से हिंदू-मुसलमानों के समझौते का, जो सब दरबार के सामने पेश किया गया, क्या हुआ? सरकार ने उस वक्त भी अपनी चालबाज़ी से उन प्रयत्नों पर पानी फेर दिया। देश में कोई स्थायी समझौता उस वक्त तक नहीं हो सकता, जब तक तीसरी बड़ी ताक़त उसमें दख़ल देती रहेगी। और, हमारी सरकार जैसा समझौता चाहती है, वैसा तो कभी हो ही नहीं सकता, और न कहीं अब तक हुआ ही है। अगर भारतीय

मत चूको! ऐसा मौक़ा फिर हाथ आए, और न भी आए।
सारा भारत जानता है कि चिकित्सा-चंद्रोदय के लेखक सत्तर साल के वयोवृद्ध

बाबू हरिदासजी वैद्य

प्रमेह, धातुरोग, शीघ्रपतन, नामर्दी, वात-रोग, बवासीर, आतशक, सूज़ाक आदि कई रोगों में अद्वितीय अनुभवी हैं। कौन जानता है?
अगले शीत-काल में आप ऐसे सत्तर साल के अनुभवी वैद्य से फ़ायदा उठा सकें, या न उठा सकें।

अतः

जल्दी कीजिए। आप बाबूजी को अपने रोग का पूरा हाल लिखिए, साथ ही आठ आने के टिकट फ़ीस के लिये भेजिए। वह आपके रोग का निदान करके आपको लिख देंगे। कानोकान किसी दूसरे को ख़बर न होगी। वह बुड्ढों को नौजवान बनाते हैं, जवानों की तो बात ही क्या? हज़ारों नामर्द पूरे मर्द बना दिए।

हरिदास एंड कंपनी, मथुरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेताओं में आपस में मेल हो जाय, तब भी दो-चार खूसट-सरकार-परस्त और मज़हबी पागल व्यक्तियों के प्रलाप का बहाना करके सरकार ठेंगा दिखा सकती है। इन बातों की हक़ीक़त अब लोग अच्छी तरह जान गए हैं, इसलिये ये बहाने अधिक दिनों तक काम नहीं दे सकते। अब तो सवाल ये हैं, हिंदुओं और मुसलमानों में आपस में समझौता हो या न हो? कांग्रेस और मुसलिम-लीग के नेता आपस में मेल करें, या न करें? हिंदू-महासभा, सिख, ईसाई, पारसी या और लोगों की इसी तरह की सांप्रदायिक या मज़हबी संस्थाएँ आपस में मिलकर किसी एक निर्णय पर पहुँचें या न पहुँचें? सरकार को क्या इस देश की राजनीतिक स्थिति इसी रूप में रखनी है? क्या देश के सात प्रांतों का शासन गवर्नरों की डिक्टेटरशिप द्वारा ही होता रहेगा? क्या देश की बड़ी-बड़ी हस्तियाँ, जिनमें शासन और व्यवस्था की पूर्ण क्षमता है, जिसे सरकार भी मान चुकी है, जेलों में सड़ाई जायँगी? क्या इस आज की अंतरराष्ट्रीय परिस्थिति में भारत की ऐसी स्थिति ब्रिटिश सरकार की शान और इज़्ज़त कम नहीं कर रही है? हम यह मानते हैं, सरकार बड़ी ज़बरदस्त है। हिटलर-जैसे दुश्मन को वह नाच नचा रही है, तब कांग्रेस की अहिंसात्मक, परिमित और विरोधी

भारत-सरकार से रजिस्टर्ड

ताक़त की मशहूर दवा

कैलाश-वीर्य-वज्रचूर्ण

कैसा ही वीर्य पानी के समान क्यों न निकल जाता हो, केवल ७ दिन में १४ ख़ूराक से वीर्य का निकलना, स्वप्नदोष, शीघ्रपतन और नामर्दी को दूर कर मनुष्य को पुरुषार्थी बना देता है। मूल्य २); लाभ न हो, तो दाम वापस।

कैलाश-तिला—यह तिला अपना सानी नहीं रखता। इसके इस्तेमाल से न छाले पड़ते हैं, न कोई तकलीफ़ होती है। इंद्रिय की प्रत्येक कमज़ोरी को दूर करता है। मूल्य २), डाक-व्यय अलग। फ़ायदा न होने पर दाम वापस।

कैलाश-प्रदर-निवारण-चूर्ण

यह दवा स्त्रियों के प्रदर के लिये अचूक है। बदबूदार पानी का निकलना, हथेली की जलन, हाथ-पैरों का ऐंठना, झुनझुनाहट, कमर तथा पिंडली में दर्द, सिर में हमेशा दर्द का रहना, मुँह का सूखना, प्यास का लगना, ये कुल बीमारियाँ इस दवा से शीघ्र ही आराम होती हैं। धब्बा पड़ना, कमर तथा पिंडली के दर्द को केवल तीन ही दिन में आराम करता है, और सात दिन में जड़ से खो देता है। मूल्य एक डिब्बा २); डाक-व्यय पृथक।

पता—कैलाश ऐंड कंपनी, सेंट्रल धर्मशाला, कानपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के दिल को न दुखाकर लड़ी जानेवाली लड़ाई उसका क्या बिगाड़ सकती है ? पर इसके साथ यह भी तय है कि भारत पर इस तरह शासन करने से उसकी शान भी नहीं बढ़ रही है। आज दुनिया-भर में यह ढोल पिट रहा है कि पोलैंड, नार्वे, डेनमार्क आदि को आज़ादी दिलाने के लिये युद्ध में पड़नेवाली ब्रिटिश सरकार, नाज़ीवाद और फ़ैसिस्टवाद के राहु-केतु-कलंक को हटाने का प्रयत्न करनेवाली सरकार भारत में स्थायी शांति स्थापित नहीं कर सकती। वह यहाँ की सबसे बड़ी राजनीतिक जमात के साथ समझौता नहीं कर सकती। इसके लिये अनेक अपवाद और बहाने ढूँढ़ने पड़ते हैं। सत्याग्रह-आंदोलन छिड़े हुए भी महीनों हो चुके। इस बीच में भी सरकार की ओर से स्थिति सुधारने के लिये कोई ठीक क़दम नहीं उठाया गया। मि० जिन्ना आख़िर आदमी ही हैं, जिन्न नहीं। उनके साथी मियाँ फ़ज़लुलहक़ और सर सिकंदर हयातख़ाँ पर मौजूदा स्थिति का काफ़ी प्रभाव है। उन्हें यह मानना पड़ेगा कि कभी असंभव बात संभव नहीं बनाई जा सकती। भारत का बँटवारा कभी नहीं हो सकता। इस प्रलाप को त्यागना पड़ेगा, और भारत की ऐसी आज़ादी, जो हिंदू और मुसलमान, दोनों को स्वीकार हो, जिसमें अँगरेज़ी सरकार से संबंध बनाए रखने और परित्याग करने का अधिकार हो, सभी को स्वीकार करनी होगी। दुनिया का जो चक्र घूम रहा है, उसमें कोई भी देश ग़ुलाम रह सके, यह असंभव है। अबीसीनिया-जैसा देश, जिस पर इटली ने थोड़े दिन पहले ही अपना प्रभुत्व जमाया था, इस समय का लाभ उठाकर पुनः आज़ादी की ओर बढ़ रहा है। भारत में आज़ादी के आंदोलन की जड़ें गहरी जम गई हैं, उसके लिये बड़ी-बड़ी हस्तियाँ अपना जीवन खपा चुकी हैं। भारत आज़ाद हुए बिना नहीं रहेगा। हम चाहते हैं, वह आज़ादी इस तरह मिले, जिसमें दोनों देशों की शोभा हो। ब्रिटिश सरकार से हमारा संबंध बहुत पुराना हो चुका है। सदियों से अँगरेज़ और हम लोग साथ-साथ रहे हैं। यह प्रेम-संबंध हम आगे भी क़ायम रखना चाहते हैं, पर उनके मित्र और बराबर के भाई बनकर, न कि ग़ुलाम रहकर। क्या सरकार इसके लिये प्रयत्नशील होगी ? क्या वह कांग्रेस के साथ समझौता करने का कोई मार्ग ढूँढ़ सकेगी ?

× × ×

ESTABLISHED 1899 TELEPHONES:— 2 & 2 A

BHOLA NATH & CO.

36, Latouche Road

LUCKNOW

MANUFACTURE RUBBER STAMPS, BRASS & METAL BADGES, BRASS SEALS, BRASS & IRON PADLOCKS, THUMB IMPRESSION OUTFITS, MILITARY BADGES, TURBAN MONOGRAMS, FILE LACES, EMBOSSING MACHINES, INKS Etc., Etc.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५. देश की औद्योगिक उन्नति

इन दिनों हमारे देश के उद्योग-व्यवसायों में आशावर्धक प्रगति हो रही है। सरकारी सूचना-विभाग की तरफ़ से जो रिपोर्टें निकलती हैं, उनसे पता चलता है कि हमारा देश औद्योगिक उन्नति के पथ पर बढ़ रहा है। यह और भी ख़ुशी की बात है कि यह औद्योगिक उन्नति एक ही दिशा में नहीं हो रही है, इसे हम चतुर्मुखी औद्योगिक उन्नति कह सकते हैं। यद्यपि कुछ व्यवसाय ऐसे भी हैं, जो इस काल में भी पिछड़े हुए हैं, और उनकी ओर ध्यान देने की बड़ी ज़रूरत है। उदाहरण के लिये काग़ज़ का व्यवसाय। जब से भारत में लड़ाई छिड़ी है, और स्केंडिनेविया पर जर्मनी का प्रभुत्व क़ायम हुआ है, तब से भारत में स्वीडन-नार्वे का काग़ज़ आना बंद हो गया है। भारत में अभी सभी प्रकार का काग़ज़ इस तादाद में नहीं बनता, जो यहाँ की काग़ज़ की माँग पूरी कर सके। ख़ास-कर अख़बारों के लिये सस्ते, रफ़ काग़ज़ की यहाँ

सफल जीवन का महामंत्र

बाँझ स्त्रियाँ

१०० में ९९ स्त्रियाँ 'कनसैप्टो' के सेवन से पुत्र उत्पन्न कर चुकी हैं। सब डॉक्टरों का कहना है कि बाँझपन दूर करने के लिये इससे बढ़कर अन्य कोई औषधि नहीं। केवल १ शीशी सेवन करके ही ख़ाली गोद में पुत्र खिलाएँ। क़ीमत ५), डाक-ख़र्च ॥)

हिस्टीरिया का अचूक इलाज

इसके सेवन से हिस्टीरिया के दौरे, रोगी का उछलना, कूदना, चिल्लाना, रोना, पागलपन, बेहोशी आदि एक सप्ताह में ही दूर हो जाते हैं।

क़ीमत २), डाक-ख़र्च ।।)

विद्युत्-तैल

इसमें बिजली-जैसी ताक़त भरी हुई है। यह तत्कालीन ज़रूरत की चीज़ है। ज़रूरत के ख़ास समय से थोड़ी देर पहले इस्तेमाल करने से अर्थात् एक ही बार सेवन करने से गए-बीते नामर्द की नपुंसकता भी जाती रहती है, और ४ मिनट में ही तरुण युवक के समान मर्द बन जाता है। शिथिल नसों की कमज़ोरी को दूर करके अपना गुण दिखा देना यह इसका तत्कालीन चमत्कार है। वास्तव में वृद्ध पुरुषों का अचूक शस्त्र और नव-विवाहित नामर्दों का आधार है। जीवन का वसंत और प्रकृतिदेवी की अमूल्य भेंट है। क़ीमत २), डाक-ख़र्च ॥)

अमर सुंदरी

रक्त-प्रदर, श्वेत-प्रदर, गर्भाशय की पीड़ा, गर्भ न रहना, गर्भ का गिर जाना, मासिक धर्म का अनियमित होना, दर्द या कष्ट के साथ होना, सिर-दर्द, अशक्ति, हलका ज्वर, जी घबड़ाना, सोम-रोग, रक्त की कमी आदि रोगों के लिये एकमात्र अव्यर्थ महोषधि है। इसके सेवन से शरीर सुंदर, हृष्ट-पुष्ट और फुर्तीला हो जाता है। क़ीमत ॥।=), डाक-ख़र्च ॥)

गर्भ-रोक

निर्धनता व स्त्री की बीमारी के कारण और संतान पैदा न करनी हो, तो इस दवा का सेवन करें। इससे स्त्री के गर्भ नहीं रहता और सांसारिक सुख को बंद करने की ज़रूरत भी नहीं होती। सर्वथा हानि-रहित दवा है। क़ीमत २), डाक-ख़र्च ॥)

ब्रेस्टोन

ज्यों मोर अपने पाँवों को देखकर रो देता है, त्यों स्त्रियाँ भी अपने ढीले, गिरे तथा लटके स्तनों को देखकर निराश हो जाती हैं। यह ४५ वर्ष तक की स्त्रियों के लटके हुए ढीले स्तनों को फिर से षोडशीय नवयुवती के समान सुंदर, कठोर, गोल तथा छोटे बना देता है। क़ीमत केवल २।), डाक-ख़र्च ।।)

पता—रसायन-फ़ार्मेसी,
(सु) संगरिया (बीकानेर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जितनी माँग है, उसके एक अंश की ही पूर्ति भारतीय काग़ज़ से हो सकती है। इस अभाव में यहाँ के अख़बारवालों को अमेरिका का काग़ज़ ख़रीदना पड़ता और उसकी पहले से बहुत अधिक क़ीमत देनी पड़ती है। काग़ज़ की महँगाई का साहित्य के प्रकाशन पर भी असर पड़ता है, और लोगों की बौद्धिक उन्नति में बाधा पड़ती है। भारत में इस वक़्त बड़े पैमाने पर इस व्यवसाय को चलाने की आवश्यकता है। हिमालय की तराई, विंध्याचल और दक्षिण तथा भारत के उत्तर-पूर्व के जंगल भारत में काग़ज़ तैयार करने के लिये यथेष्ट सामान (Raw material) दे सकते हैं।

पिछले महासमर-काल में भी भारत के उद्योग-व्यवसाय की उन्नति हुई थी। महायुद्ध-काल में जिन देशों का लड़ाई से प्रत्यक्ष संबंध नहीं होता, उन्हें अपनी व्यावसायिक उन्नति करने का अच्छा मौक़ा मिलता है। क्योंकि उस वक़्त बड़े-बड़े राष्ट्र लड़ाई में लगे हुए होते हैं, और उनके व्यावसायिक उत्पादन के साथ पिछड़े हुए देशों को बाज़ार की प्रतिद्वंद्विता नहीं करनी पड़ती। गत महासमर-काल में यहाँ के कपड़े का व्यवसाय इसी कारण उन्नति कर गया कि इँगलैंड के युद्ध में फँसे रहने के कारण यहाँ लंकाशायर का कपड़ा यथेष्ट मात्रा में नहीं आ सका। पहली और अब की स्थिति में यह बड़ा भारी फ़र्क़ है कि इस बार सरकार को भारत पर भी किसी बाहरी शक्ति के आक्रमण का ख़तरा है, और उसके प्रतिरोध के लिये वह भारत में भी जंगी तैयारियाँ कर रही है। फलतः युद्ध के सामान तैयार करने में उसे कल-कारख़ानों को लगाना पड़ा है। लड़ाई में सभी सामान की ज़रूरत पड़ती है। भारत सैनिक शक्ति में बहुत ही पिछड़ा देश है। सरकार ने अब इस बात को अच्छी तरह महसूस किया है। इसीलिये वह भारत की सामरिक योग्यता बढ़ाने के लिये विशेष रूप से प्रयत्नशील है। जहाज़रानी, हवाई बेड़ा, स्थल-युद्ध में काम आनेवाले अस्त्र-शस्त्र और दूसरे सामानों के लिये कितने ही प्रकार के कारख़ाने, फ़ैक्टरियाँ, मिलें और औद्योगिक केंद्र स्थापित करने की ज़रूरत होगी, जिसकी शाखाएँ तमाम देश में फैली होंगी। भारत की पूँजी के साथ इस वक़्त सरकार का सहयोग सोने में सुगंध की-सी कहावत है। आवश्यकता से मजबूर होकर या परिस्थिति-वश ही सही, इस बार सरकार भारतीय उद्योग-धंधों को प्रोत्साहन दे रही है। भारत के श्रीमानों को इस अवसर से लाभ उठाना चाहिए।

× × ×

६. गन्ने की खेती पर संकट

पिछले दिनों में हमारे यहाँ गन्ने की खेती में काफ़ी उन्नति हुई। इसका कारण यहाँ के चीनी-

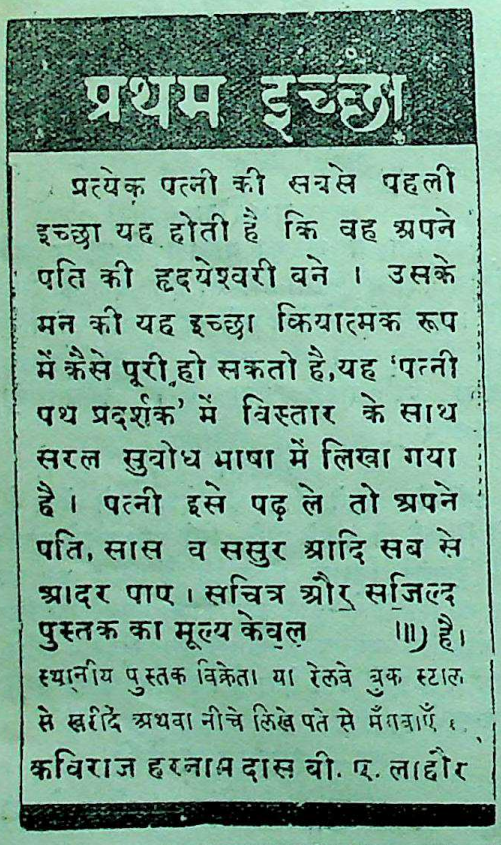

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यवसाय की उन्नति है। ऊख की खेती और चीनी का व्यवसाय, इन दोनों का अन्योन्याश्रय संबंध है। भारत में ऊख की अच्छी पैदावार होती है, तो स्वभावतः यहाँ चीनी का व्यवसाय बढ़ेगा। और, अगर चीनी का व्यवसाय तरक़्क़ी करता है, तो किसानों की हालत सुधरेगी। उनकी पैदावार का अच्छा मूल्य मिलेगा। ऊख की खेती में तरक़्क़ी करने के नए-नए ढंग सोचे जायँगे। अतः जब से यहाँ चीनी की मिलें बनीं, चीनी का व्यवसाय बढ़ा, तब से ऊख की खेती में भी वृद्धि हुई।

यू० पी० और बिहार-प्रांत गन्ने की पैदावार के मुख्य केंद्र हैं। इन्हीं प्रांतों में चीनी की अधिक मिलें हैं। कई वर्षों से यहाँ इतनी चीनी पैदा हो रही है, जो यहाँ के निवासियों की आवश्यकता और माँग से अधिक है। इसका परिणाम यह हुआ कि यहाँ की चीनी का मूल्य गिर गया। बाज़ार में चीनी के दाम गिर जाने से चीनी की पैदावार को धक्का लगा। मिल-मालिकों ने पहले से कम चीनी तैयार करने का निश्चय किया। इससे किसानों को ऊख की पैदावार की जो क़ीमत मिलती थी, उसमें भी कमी हुई। पैदावार पर भी इसका असर पड़ा। उधर व्यापारियों को चीनी के दाम कम मिलने लगे, तो इधर किसानों को गन्ने का मूल्य थोड़ा मिलने लगा। सरकार ने एक अंतरराष्ट्रीय समझौता करके भारत की चीनी को बाहर भेजने से मना कर दिया। इसी कारण यह गड़बड़ी हुई, और किसानों तथा मिल-मालिकों में असंतोष पैदा हुआ। उनमें आपस में भी झगड़े पैदा हो गए। जब यह असंतोष अधिक बढ़ा, तो सरकार को इस समस्या की तरफ़ ध्यान देना अनिवार्य हो गया। यू० पी० और बिहार की सरकार ने व्यवसायी-संघ और किसानों के प्रतिनिधियों से मिलकर इस समस्या को हल करने के उपाय निकाले। इससे कुछ-कुछ मामला सँभला। बाज़ार में चीनी का भाव बढ़ता-घटता रहा। क्योंकि जब तक मूल-रोग दूर न किया जाता, तब तक बाहरी उपचार से विशेष लाभ हो ही नहीं सकता था। बहुत कहने-सुनने के बाद सरकार ने कड़े प्रतिबंधों के साथ भारत की चीनी को बाहर भेजने की बात स्वीकार की। लेकिन वह भी कुछ समय और केवल ब्रिटिश साम्राज्यांतर्गत देशों के लिये ही। पाठक सोच सकते हैं, इससे कितना लाभ हो सकता था।

हुआ भी ऐसा ही। आज फिर यह समस्या यू० पी० और बिहार की सरकारों के सामने उसी रूप में पेश है। किसानों की ऊख की खेती खड़ी है। मिलों में उस सबको खपा देने की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शक्ति नहीं। मिल-मालिक तमाम ऊख ख़रीद तो सकते नहीं, जितनी ख़रीदें, उसके दाम किस तरह तय हों, यह भी समस्या है। फलतः पहले इसी बात पर झगड़ा हुआ। प्रति मन ऊख की दर नियत करने में मिल-मालिक-संघ और किसानों के प्रतिनिधियों की भिन्न-भिन्न राएँ थीं। पर फ़ैसला तो आख़िर सरकार को ही करना था, क्योंकि इस व्यवसाय पर सरकार का पूरा नियंत्रण है। आख़िर यू० पी०-सरकार ने फ़ैसला कर दिया कि अमुक तादाद तक किसानों की ऊख ख़रीदी जा सकेगी, और इससे आगे वे उसके पेरने का इंतज़ाम करें। इसका अर्थ यह हुआ कि यू० पी० में साढ़े छ करोड़ मन ऊख पड़ी रह जायगी, जिसे मिलवाले न ख़रीदेंगे। बिहार में भी यही हाल होने को है। वहाँ भी डेढ़ करोड़ मन ऊख बचती है। यू० पी०-सरकार ने इतनी उदारता प्रकट की है कि वह किसानों को कोल्हू ख़रिदवाने में एक लाख रुपए तक ख़र्च कर देगी। पर क्या इस तरह यह समस्या हल हो जायगी? क्या इस तरह किसानों को उनकी पैदावार के दाम मिल सकेंगे? इन कोल्हुओं से जो गुड़ तैयार होगा, उसकी खपत कहाँ होगी? क्या सरकार ने उसके लिये कोई मंडी तलाश कर रक्खी है? अगर इतनी लागत और शक्ति लगाकर कौड़ियों के भाव गुड़ बेचना पड़ा, तो इससे किसान ऊख को पड़े-पड़े सड़ जाने देना ही पसंद करेंगे। खेद है, पटना में अभी ऊख-चीनी-सम्मेलन ने जो प्रस्ताव पास किए, उनकी ओर सरकार ने ध्यान नहीं दिया। गत वर्ष किसानों को उनकी पैदावार के अच्छे दाम मिल गए थे, इसकी वजह से इस साल गन्ने की अधिक पैदावार की गई। अगर इस वर्ष किसानों पर यह मुसीबत आई, तो आगे के लिये ऊख की पैदावार पर इसका बुरा असर पड़ेगा। इस साल अनावृष्टि के कारण यू० पी० और बिहार के किसान बड़े तंग हैं। ऐसी हालत में उनकी मुसीबतें और भी बढ़ जायँगी। क्या सरकार इस संबंध में कुछ गंभीरता के साथ फिर विचार करने के लिये तैयार होगी?

× × ×

७. शिक्षकों की दशा

हमारे देश में शिक्षकों की हालत पर बहुत कम प्रकाश डाला जाता है। विशेषकर देशी भाषाओं के शिक्षकों की जैसी हालत है, उसकी सभी ओर से उपेक्षा की जाती है। आजकल जैसे और लोगों के संगठन हैं, वैसा अध्यापकवर्ग का कोई दृढ़ संगठन भी नहीं। उच्च शिक्षा के शिक्षकों की बात दूसरी है। उन्हें सरकारी काफ़ी सुविधाएँ प्राप्त हैं। काम का भार भी उन पर विशेष नहीं रहता। ज़िम्मेदारी उनकी थोड़ी ही होती है। पर प्रारंभिक और माध्यमिक शिक्षा के अध्यापकों की वैसी हालत नहीं। जो लोग देहातों और शहरों में छोटी-छोटी उम्र के बालकों को शिक्षा देते हैं, उन्हें अच्छी आर्थिक सुविधाएँ प्राप्त नहीं होतीं, साथ ही उनका कार्य-भार और उत्तरदायित्व भी अधिक होता है। चुंगी और डिस्ट्रिक्ट-बोर्डों के अध्यापक तो दयनीय स्थिति में अपना जीवन बिताते हैं। सबसे अधिक दुःख की बात यह है कि वे राजनीतिक दाँव-पेचों के शिकार बनते हैं, स्थानीय संस्थाओं और बोर्डों में जो दल या व्यक्ति-विशेष अपना सर्वोपरि प्रभाव रखते हैं, वे अध्यापकों को अपने हाथ का खिलौना बनाकर नचाते हैं। इस तरह कभी एक पार्टी के साथ, कभी दूसरी पार्टी के साथ, कभी एक व्यक्ति के और कभी दूसरे व्यक्ति के संकेत और आदेशों पर शिक्षकों की जीविका और कार्य-प्रणाली निर्भर रहती है। अभी अहमदाबाद में, श्रीयुत के० टी० शाह की अध्यक्षता में, एक शिक्षक-सम्मेलन हुआ था। उसमें सभापति-पद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से भाषण देते हुए श्रीयुत शाह ने जो बातें कहीं, उन पर अधिकारिवर्ग को ध्यान देने की ज़रूरत है। शिक्षकों की कठिनाइयों और उनकी माँगों के संबंध में श्रीयुत शाह का कहना है—

(१) शिक्षकों के पास उचित जीवन-निर्वाह का साधन होना चाहिए। जिस रूप में बहुत जगह शिक्षकों को उनके परिश्रम का पारितोषिक दिया जाता है, वह उनकी पारिवारिक आवश्यकताओं को देखते बहुत कम होता है। इसलिये अध्यापकों को या तो जीवन-निर्वाह के लिये अतिरिक्त धंधे ढूँढ़ने पड़ते हैं, या फिर वे यातनाओं के साथ अपना जीवन बिताते हैं। दोनो दशाओं में शिक्षण-कार्य के संबंध में वे अपने कर्तव्य का भली भाँति पालन नहीं कर सकते।

(२) अध्यापकों को अपनी जगह पर स्थायित्व प्राप्त होना चाहिए, जिससे वे अपनी जगह पर जमे रहकर इतमीनान के साथ अपना कार्य-संपादन करते रहें।

(३) दुर्घटना आदि के समय और अवसर के लिये, उन्हें अपने आश्रित व्यक्तियों के निर्वाह की चिंता से मुक्ति देने के लिये उचित सुविधाएँ मिलनी चाहिए। या तो उन्हें इस काल में उनके वेतन का कुछ भाग मिलता रहना चाहिए, या इस तरह का कोई अलग कोष जमा होना चाहिए।

(४) राजनीतिक दलबंदियों से शिक्षकवर्ग को बचाना चाहिए। उनका केवल शिक्षण-कार्य से ही संबंध होना चाहिए।

(५) अपना वैयक्तिक मत और विचार व्यक्त करने की शिक्षकों को स्वतंत्रता होनी चाहिए।

यदि कम-से-कम इतनी सुविधाएँ भी शिक्षक-वर्ग को मिल जायँ, तो निश्चय ही आज से वे कहीं अधिक सुखी और अच्छी हालत में होंगे।

× × ×

८. महिलाएँ विद्रोही बनें

विद्रोह का अर्थ है वर्तमान रूढ़िवादी व्यवस्था को उलट देने का प्रयत्न। व्यवस्था में बहुत-सी बातें आ जाती हैं, जैसे राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक आदि। हमारी सामाजिक व्यवस्था सदियों और युगों की परंपराओं से बनी है। यह परंपरा सरिता के प्रवाह की तरह गतिशील रहती है। जहाँ यह कुंड के जल की तरह एक ही जगह बद्ध हो जाती है, और प्रवाह रुक जाता है, वहाँ उसमें अनेक दोष पैदा हो जाते हैं। हिंदू-सामाजिक व्यवस्था में आज हम उन दोषों को देख रहे हैं। महिलाओं के अधिकारों की चर्चा हम बड़े फ़ख़्र के साथ करते हैं। सभा और प्लेटफ़ार्मों पर इसके ख़ूब गीत गाए जाते हैं, पर व्यावहारिक जीवन में हम उन्हीं रूढ़ियों और भद्दी परंपराओं के क्रीत दास बने रहते हैं। आजकल किसी दशा में तब तक विशेष सुधार या परिवर्तन नहीं हो सकता, जब तक सुधारों और परिवर्तनों का पक्ष लेने के लिये क़ानूनी शस्त्र तैयार नहीं हो जाता। महिलाओं का यह कहना ठीक ही है कि आजकल क़ानून बनाने की जगह पुरुषों से ही भरी हुई है, इसलिये महिलाओं की दशा के संबंध में कोई सुधारात्मक प्रस्ताव या इस विषय की चर्चा का होना पुरुषों की उदार वृत्ति पर ही निर्भर है। इसके लिये पुरुष ज़रूर अपने अधिकारों का ख़याल रक्खेंगे। महिलाओं के संबंध में जो ज्ञान और अनुभव एक महिला को हो सकता है, वह पुरुष को नहीं। अभी भेलसा में महिलाओं का एक सम्मेलन, श्रीमती सी० राधाबाई चिंचनीकर की अध्यक्षता में, हुआ। उसमें उज्जैन की प्रसिद्ध राष्ट्र-सेविका श्रीमती सरस्वतीदेवी ने बड़े ही ओज-पूर्ण शब्दों में महिलाओं के अधिकारों की घोषणा की, और उन्हें प्राप्त करने के लिये महिलाओं को सामाजिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हलचल पैदा करने का आदेश दिया। आपने कहा—"आज की समाज की व्यवस्था में हमें अपने अधिकारों की रक्षा के लिये क़ानून का भी सहारा लेना पड़े, तो कोई आश्चर्य की बात नहीं, लेकिन क़ानून बनानेवाले जब पुरुष-वर्ग के ही लोग हैं, तब हमें कैसे संतोष हो सकता है। ज़रूरत तो यह है कि क़ानून बनाने में हमारा भी हाथ हो। यह तभी हो सकता है, जब हमें अधिकार मिलें, और हम योग्य बनें।" अधिकारों के संबंध में चर्चा करते हुए आपने कहा—"स्त्रियों को कोई अधिकार नहीं। हम इस स्थिति को बरदाश्त नहीं कर सकतीं। यदि स्वार्थी समाज इसे राज़ी-ख़ुशी से मान ले, तो यह उसकी बुद्धिमानी होगी, अन्यथा हमें विद्रोह करके भी इसे मनवाना पड़ेगा।" जाति-पाँति के बखेड़े की चर्चा करते हुए आपने कहा कि समाज के लिये यह एक बड़ी बुराई की जड़ है। आपके ये शब्द महत्त्व-पूर्ण और ध्यान देने योग्य हैं—"जाति-पाँति के बखेड़े से हम बहुत दुखी बन गए हैं। यदि ये बंधन टूट जायँ, तो समाज में आज अंतरजातीय संबंध स्थापित होने लग जायँ। इससे अनमेल और अवांछित शादियाँ न करनी पड़ें। आज तो यह स्थिति है कि जाति-पाँति के बहुत-से भेद होने के कारण योग्य के साथ अयोग्य और अयोग्य के साथ योग्य को बँध जाना पड़ता है। यह अवस्था हमें बदल देनी पड़ेगी, और यह तभी बदली जायगी, जब जाति-पाँति का ढकोसला मिट जायगा।"

दांपत्य सुख की कुंजी !

शीघ्रपतनांतक वटी

स्त्री-पुरुषों में प्रेम न होने का मुख्य कारण 'शीघ्रपतन' है। जब तक नारी को नर से संतोष न होगा, तब तक वह कभी नर को प्यार नहीं कर सकती। वह सदा जली-कटी सुनाती रहेगी, भुन-भुन करती रहेगी। इस दुख के दूर करने के लिये ही—

चिकित्सा-चंद्रोदय के लेखक

हरिदासजी वैद्य ने

सत्तर साल की अवस्था में लासानी, बेजोड़, स्वर्ग-सुख दिखानेवाली

शीघ्रपतनांतक गोलियाँ

ईजाद की हैं। इन्हें नित्य खाकर दूध पीने से बल-वीर्य बढ़ता है। संभोग की इच्छा अत्यंत बलवती होती है। संभोग में रुकावट होती है। नर और नारी, दोनो को संतोष और अकथनीय सुख मिलता है। इन गोलियों के सेवन करनेवाले को संभोग की मनाही नहीं है, हाथ-की-हाथ सुख-स्वर्ग-सुख मिलेगा। सबसे बड़ी बात यह कि बल-वीर्य नहीं घटेगा, बल्कि रोज़ बढ़ेगा। अब तक ऐसी दवा किसी ने नहीं निकाली। आप एक छोटी शीशी मँगाकर ही परीक्षा कीजिए। आधा मूल्य छोटी शीशी का ३) और बड़ी का ६), डाक-ख़र्च ।।) है।

हरिदास ऐंड कंपनी, मथुरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऑर्डर दीजिए ! ऑर्डर दीजिए !!

हमारा जनवरी-मास का नया प्रकाशन

निःसहाय हिंदू

लेखक, श्रीयुत राधाकृष्णदास। हिंदू-जाति के विश्व-मान्य सिद्धांतों का सजीव, सारगर्भित चित्रण। संगठन, एकता और बंधुत्व का आदर्श उदाहरण। आपके हृदय को कोमल भावनाओं को छू लेने का प्रयास कितना पवित्र—कितना सफल। एक बार अवश्य पढ़िए। मूल्य ॥), १)

कुबेर

लेखक, श्रीदेवीप्रसाद धवन 'विकल'। वह धन-राशि में लोटनेवाला, नए युग के पूँजीपतियों का अपवाद-रूप, अभिमानी कुबेर न था। समाज की चोटों से तिलमिलाकर आत्मविश्वास और लोकोपकार की भावना के सहारे जीनेवाला, औरों के लिये अपना धन लुटा देनेवाला रंक 'कुबेर' विधाता के विधान से एक दिन सचमुच कुबेर बन गया। मूल्य १), १॥)

अंतःपुर का छिद्र

सुप्रसिद्ध नाटककार पं० गोविंदवल्लभ पंत का सबसे नवीन बौद्ध कालीन नाटक। कौशांबी के राजमहल में होनेवाली प्रणय-लीला, महाराज उदयन की प्रेम-कथा का दुःखद प्रसंग। अधिकार-लिप्सा का रोमांचकारी दृश्य। सारगर्भित कथानक। स्टेज पर खेलने योग्य। मूल्य ।=), ॥=)

बिहारी-सुधा

लेखक, मिश्रबंधु। महाकवि बिहारीलाल के २७० उत्तमोत्तम दोहों का अर्थ-सहित सुंदर संग्रह। घरेलू पुस्तकालयों की शोभा बढ़ाने योग्य अनुपम काव्य-ग्रंथ। मूल्य ।=), ॥)

स्त्री-सौंदर्य और स्वास्थ्य

लेखक, श्रीयुत बुद्धिसागर वर्मा बी० ए०, एल्० टी०। शरीर के अंगों का बनाव-शृंगार, सौंदर्य-रक्षा के नियम, व्यायाम, रोग तथा उनकी सरल चिकित्सा, सौंदर्य बढ़ाने के देशी और विदेशी साधनों की उपयोगिता सरल भाषा में वर्णित है। सचित्र। मूल्य २), २॥)

मनुष्य का विकास

लेखक, श्रीज्योतिलाल भार्गव बी० ए०, एल्-एल्० बी०। धरती पर सबसे पहले जानवर कैसे पैदा हुए? मनुष्य-जाति कैसे प्रकट हुई? क्या आदमी आसमान से बरस पड़े थे या पाताल से निकल पड़े थे? सभी प्रश्नों का विस्तृत और प्रासंगिक उत्तर देनेवाली एकमात्र पुस्तक। मूल्य ।=), ॥=)

भोजन और स्वास्थ्य

लेखक, डॉ० सत्यप्रकाश तथा डॉ० संतप्रसाद टंडन। स्वास्थ्य-वर्द्धक भोजन का चुनाव साधारण जन भी अपनी आय के अनुसार कर सकते हैं। इसके लिये अमीर-गरीब का कोई प्रश्न नहीं। मूल्य १), १॥)

मिलने का पता—गंगा-ग्रंथागार, ३६, लाटूश रोड, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Registered ... —473

हिंदी-अँगरेज़ी-छपाई

रंगीन तिरंगे चित्र

सर्वश्रेष्ठ जिल्द-बँधाई

सोने की छपाई, चिट्ठी के काग़ज़, लिफ़ाफ़े, पोस्टकार्ड, विज़िटिंग-कार्ड, बिल, मिमो, रसीद-बुक, कैलेंडर, नोटिस, निमंत्रण-पत्र, अभिनंदन-पत्र, पुस्तक आदि—

सब प्रकार की छपाई का काम

हमारे यहाँ सुंदर और सस्ता

साथ ही

ठीक वक़्त पर किया जाता है।

काम संतोषप्रद होने की गैरंटी

आपको छोटा-मोटा, सुंदर, सस्ता, किसी प्रकार का भी छपाई का कोई काम कराना हो, तो उसे तुरंत हमारे पास भेजिए।

अब इधर-उधर भटकने की ज़रूरत नहीं!

सब प्रकार की छपाई के काम के लिये सुविधा-जनक स्थान

गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस
लखनऊ

गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस, लखनऊ में श्रीदुलारेलाल (सोल मोपाइटर) द्वारा मुद्रित और प्रकाशित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुधा

प्रधान संपादक
श्रीदुलारेलाल
श्रीसावित्री

वैशाख, १९९८
MAY, 1941

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यू० पी०, सी० पी०, बिहार, उड़ीसा तथा बीकानेर आदि के शिक्षा-विभागों द्वारा स्वीकृत

बाल-विनोद

[बच्चों के लिये सर्वश्रेष्ठ मासिक पत्र]

का

कोई भी शानदार पिछला विशेषांक

वसंतांक, होलिकांक

बचपन-अंक, नटखट-अंक

जनवरी, १९४१ से ग्राहक बनकर बढ़िया कहानी-अंक मुफ़्त मँगा लें!

—:o:—

थोड़ी - सी ही प्रतियाँ बची हैं!
देर से ग्राहक बननेवालों को नहीं मिलेंगी !!
आज ही पत्र लिखकर अपनी प्रति रिज़र्व करा लें !!!

१९४० का नया

शानदार सेट

पृष्ठ - संख्या लगभग ४२०
चित्र - संख्या लगभग ३००
केवल ३ सेट बिक सकते हैं।

मूल्य ५)

मैनेजर बाल-विनोद, ३६, लाटूश रोड, लखनऊ

हिंदी-साहित्य-सदन
विलेपार्ले, बंबई २४

राष्ट्रीय प्रकाशन-मंडल
मछुआटोली, पटना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नोट कर लीजिए 卐 भूलिएगा नहीं

पृष्ठ-संख्या प्रायः २५० होगी

मूल्य १॥) ग्राहकों का मुफ़्त

सुधा

का

श्रावण-अंक [विशेषांक]

हिंदी के स्थायी साहित्य की बहुमूल्य वस्तु होगी

इस अंक में क्या होगा ?

चित्र
भाव-कला-पूर्ण, मनोहर, तिरंगे

कार्टून
कुरीतियों के द्योतक, हास्योत्पादक, व्यंग्य-पूर्ण

कविता
नई स्फूर्ति और जीवनदायिनी

लेख
धुरंधर विद्वानों के अनुपम और चमत्कृत

आज ही मूल्य भेज ग्राहक बन जाइए

विज्ञापन-दाताओं को चूकना न चाहिए

मैनेजर सुधा गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

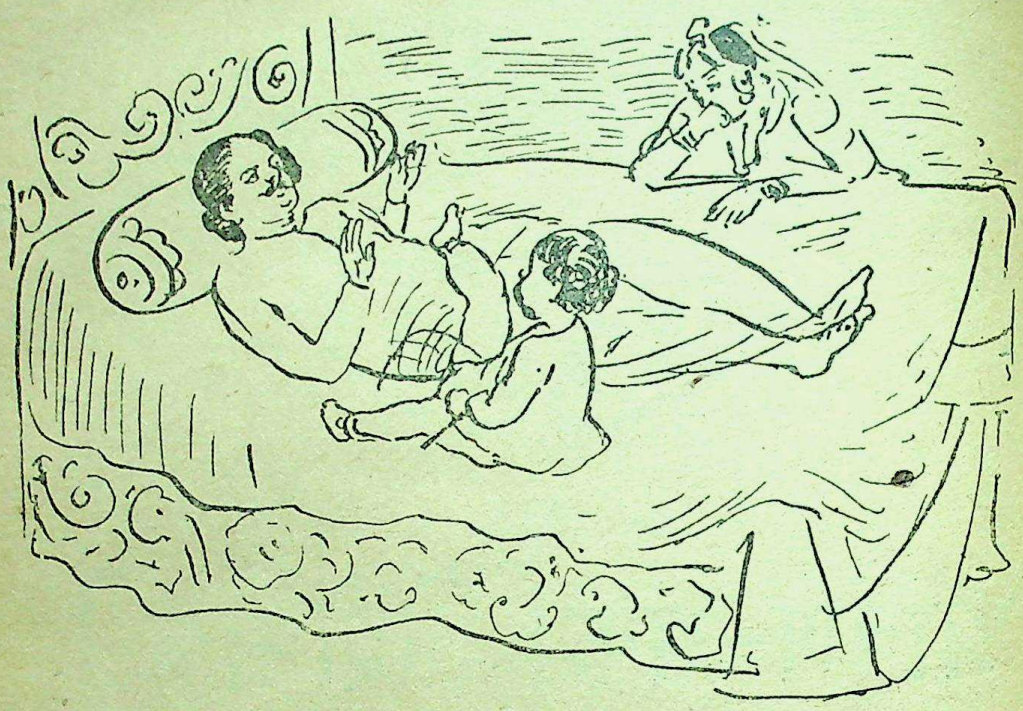

कथा-कहानियाँ

लेखक हैं मदरास-प्रांत के प्रसिद्ध वकील श्रीवि० रामनाथ अय्यर बी० ए०, बी० एल्०। दक्षिण-भारत की भाषाओं का साहित्य संस्कृत-साहित्य के समान ही बालोपयोगी कथा-कहानियों का खज़ाना है। लाखों वर्ष पुरानी द्रविड़-संस्कृति और सभ्यता ने जीवन के अनुभव से जिस सत्य को ढूँढ़ निकाला है, वही सत्य इन कहानियों द्वारा आज़दिन भी महाराष्ट्र, आंध्र, तामिल और कर्नाटक देश में बालकों को हृदयंगम करा दिया जाता है। बालकपन से इस प्रकार सुशिक्षित किए जाने के कारण ही मदरासी युवक जीवन-संग्राम में सभी भारतीय युवकों से अधिक सफल होते हैं। यदि आप भी अपने पुत्र को श्रीनिवास शास्त्री, डॉ० सुब्रह्मण्य अय्यर और सर शंकरन नैयर बनाना चाहते हैं, तो उन्हीं मदरासियों द्वारा लिखी गई इन कहानियों को उन्हें सुनाइए। मूल्य सादी ।), जिल्ददार ॥)

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख-सूची

	पृष्ठ
१. गीत (कविता)—[लेखक, श्रीसुधींद्र एम्० ए०	२१३
२. आदमी (कहानी)—[लेखक, श्रीयुत 'अरुण' बी० ए०	२१४
३. भारतीय लिपियों की एकता एवं उनका एकीकरण—[लेखक, डॉ० दुर्गादत्त गंगाधर ओझा बी० एस्-सी०, एम्० बी०, बी० एस्०	२०६
४. साहित्य और राजनीति का समन्वय (सचित्र, जीवनी)—[लेखक, श्रीयुत देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त'	२१८
५. छवि (कविता)—[लेखक, देव-पुरस्कार-विजेता श्रीश्यामनारायण पांडेय	२२३
६. घरेलू नौकर—[लेखक, दैनिक हिंदी मिलाप-संपादक पं० आत्मस्वरूप शर्मा	२२४

अमृतांजन

सर्वश्रेष्ठ दर्दनाशक भारतीय महौषध। सिर-दर्द, जलन, पीड़ा, फोड़ा, सूजन, कटना, घाव, वात, गठिया, कमर का दर्द, सरदी, खाँसी, कीड़ों का डंक आदि सभी वेदनाओं में 'अमृतांजन' आश्चर्य-जनक फ़ायदा करता है।

अमृतांजन लिमिटेड

बंबई, कलकत्ता, मदरास

पो० बॉक्स नं० ६,८२५

[ई० सन् १९०१ में स्थापित]

च्यवनप्राश-३) सेर **अध्यक्ष मथुरा बाबू का** मकरध्वज-४) भरी

शक्ति औषधालय-ढाका

आयुर्वेदिक संसार में युगांतर उपस्थित कर दिया है।

कारखाना और हेड ऑफ़िस ढाका, बंगाल। तार का पता 'शक्ति' ढाका।

कलकत्ता हेड ऑफ़िस—५२। १, बीडन स्ट्रीट। चौरंघी

बंगाल से बाहर की शाखाएँ—देहली, कानपुर, इलाहाबाद, पटना, भागलपुर, गया, बनारस, गोरखपुर, बुलानाला, जमशेदपुर, गौहाटी, तिनसुकिया (आसाम), मदरास, कटक, रंगून, वेसिन, मांडले (बरमा), बंबई, लखनऊ ब्रांच—२ श्रीराम रोड, लखनऊ आदि।

ब्रांच भारतवर्ष में सर्वत्र और बरमा में

मृतसंजीवनी सुरा (गवर्नमेंट से लाइसेंसशुदा) भारतवर्ष और बरमा में हमारी सभी ब्रांचों में मिलती है।

अध्यक्षगण—श्रीमथुरामोहन, लालमोहन, फणींद्रमोहन मुखोपाध्याय चक्रवर्ती।

प्रोप्राइटर्स—श्रीमथुरामोहन मुखोपाध्याय चक्रवर्ती बी०ए०

हिंदू केमिस्ट और फ़िज़िशियन

पत्र और मनीऑर्डर आदि मथुरा बाबू-मैनेजिंग प्रोप्राइटर के नाम भेजिए।

आयुर्वेदीय चिकित्सा-प्रणाली-संवलित सूचीपत्र मुफ़्त मिलता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृष्ठ

७. शाहज़ादी ज़ेबुन्निसा 'मख़फ़ी' (सचित्र, जीवनी)—[लेखक, श्रीयुत ब्रजरत्नदास बी० ए०, एल्-एल्० बी० ३२८

८. मेरी देहरादून-यात्रा (सचित्र, भ्रमण)—[लेखक, साहित्यरत्न श्रीयुत लक्ष्मीनारायण टंडन 'प्रेमी' एम्० ए० ३३५

पृष्ठ

९. नारी (कविता)—[लेखिका, श्रीमती विद्यावती कोकिल ३४१

१०. 'पल्लविनी' (आलोचना)—[लेखिका, कुमारी विद्या श्रीवास्तव ३४२

११. हाय ! 'हृदय'जी (सचित्र, जीवनी)—[लेखक, श्रीयुत दुर्गाप्रसाद शर्मा बी० ए० ३४६

पेशाब के भयंकर दर्दों के लिये

एक नई और आश्चर्यजनक ईजाद ! याने—

सूज़ाक (गनोरिया) की हुक्मी दवा

डॉ० जसानी का 'गोनोकिलर' रजिस्टर्ड

जगत्-विख्यात

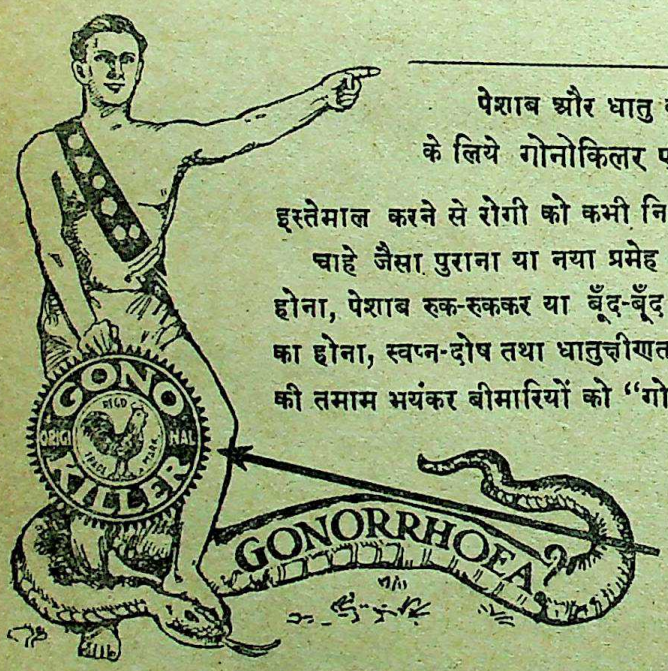

पेशाब और धातु के दर्दों को मार हटाने व निर्मूल करने के लिये गोनोकिलर एक ऐसी ही आश्चर्यजनक दवा है, जिसका इस्तेमाल करने से रोगी को कभी निराश होना ही नहीं पड़ता।

चाहे जैसा पुराना या नया प्रमेह या सूज़ाक, पेशाब में मवाद आना, जलन होना, पेशाब रुक-रुककर या बूँद-बूँद आना, मूत्राशय के अंदर घाव या सूजन का होना, स्वप्न-दोष तथा धातुक्षीणता और औरतों तथा मर्दों की इस क़िस्म की तमाम भयंकर बीमारियों को "गोनोकिलर" जड़ से नष्ट कर देता है।

नक़ली से सावधान !
ख़रीदने से पहले
दवा का नाम गोनोकिलर
और मुर्ग़ा-छाप सीलबंद
पैकेट देख लीजिए

मूल्य २० गोलियों की शीशी का ३) रु०, वी० पी० डाक-व्यय आठ आना अलग।

एकमात्र बनानेवाले—डॉ० डी० एन्० जसानी S. L. गिरगाँव, बैक रोड, बंबई नं० ४

लखनऊ-स्टाकिस्ट—किंग मेडिकल हॉल, अमीनाबाद-पार्क

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

		पृष्ठ
१२.	विश्वेश्वर-स्मृति—[लेखक, साहित्याचार्य श्रीपं० विश्वेश्वरनाथ रेउ ...	३५०
१३.	उस दिन जब मैं रोया, बच्चे हँसने लगे ! (कहानी)—[लेखक, श्रीयुत 'उग्र'	३५७
१४.	कवि-कोकिल (कविता)—[लेखक, श्रीप्रो० श्रीधर पंत एम्० ए० ...	३६३
१५.	छोटा मुँह, बड़ा ग्रास ! (व्यंग्य-चित्र)	३६४
१६.	चयन—[लेखकगण, श्रीयुत शिवकुमार शर्मा, कुमारी शिबोला रानी, श्रीयुत रामकृष्ण पाठक, साहित्याचार्य श्रीपं० विश्वेश्वरनाथ रेउ, श्रीयुत बाबूलाल भार्गव बी० ए०, बी० टी० साहित्यरत्न और श्रीयुत प्रकाश सक्सेना	३६५
१७.	परिचय—[लेखकगण, श्रीयुत 'ग०', श्रीयुत 'अरुण' बी० ए०, श्रीमती सावित्री दुलारेलाल एम्० ए०, श्रीयुत 'च' और श्रीपं० भगवतीप्रसाद वाजपेयी ...	३७५
१८.	कुसुम	३८०
१९.	धारा (सचित्र, संपादकीय विचार) ...	३८१
२०.	सुधा-चित्रावली	३९७

बल व वीर्य बढ़ानेवाली परमपौष्टिक

मदनमंजरी

यह गोलियाँ थकावट, क़ब्ज़ियत, सुस्ती, दिल का धड़कना, स्वप्नदोष, वीर्य-विकार, अशक्ति इत्यादि को नष्ट करके बल व वीर्य बढ़ाती हैं, और दिल व दिमाग़ को ताक़त देकर नया जीवन देती हैं। ४० गोलियों की डिब्बी १) एक रु०

मेहमर्दन चूर्ण

पेशाब में जलन, एक-एककर बूँद-बूँद आना, कड़क, पीप, कपड़े में धब्बे पड़ना वग़ैरा नए या पुराने हर प्रकार के सूज़ाक को नष्ट करके पेशाब साफ़ लाता है, फ़ी डिब्बी १) रु०

वैद्य-विद्या पुस्तक बिलकुल मुफ़्त मँगाइए

मदनमंजरीफ़ार्मेसी, जामनगर, काठियावाड़

कलकत्ता ब्रांच—१७७ हरीसन रोड व ८५ बहुबाज़ार। लखनऊ एजेंट—निगम मेडिकल हॉल अमीनाबाद रोड, लखनऊ—किंग मेडिकल हॉल, अमीनाबाद रोड, लखनऊ—कौशिक आयुर्वेदिक स्टोर, श्रीराम रोड, बनारस—राधेलाल एंड संस चौक।

इनाम १००)

सर्वार्थसिद्ध-यंत्र—जिसे आप चाहते हैं, वह पत्थर-हृदय क्यों न हो, इस यंत्र की अलौकिक शक्ति से आपसे मिलने चली आएगी। इसे धारण करने से व्यापार में लाभ, मुक़द्दमा, कुश्ती, लाटरी में जीत, परीक्षा में सफलता, नवग्रह की शांति, नौकरी की तरक़्क़ी और सौभाग्यवान् होते हैं। मूल्य ताँबा १), चाँदी २), सोना ५), कोकशास्त्र का मूल्य २॥)

पता—सर्वार्थसिद्ध-आश्रम, नं० २२, पो० मिरचाईगंज, पटना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्र-सूची

पृष्ठ

(क) रंगीन

१. मृगनयनी—[स्वर्गीय कविवर बाबू जगन्नाथदास 'रत्नाकर' के संग्रह से ... २९३

(ख) व्यंग्य

२. छोटा मुँह, बड़ा ग्रास !—[चित्रकार, श्रीयुत शिक्षार्थी ३६४

(ग) सादे

३. साहित्य-शास्त्री पं० नर्मदाप्रसादजी मिश्र बी० ए०, एम्० एल्० ए० ... ... ३१८

४. शाहज़ादी ज़ेबुन्निसा ३२८

५. टपकेश्वर महादेव (देहरादून) ... ३३५

६. गुच्छूपानी का बाह्य दृश्य (घाटी से बाहर) ३३६

७. गुच्छूपानी ३३७

८. स्व० श्रीपं० रमाशंकरजी शुक्ल 'हृदय' ३४६

९. स्वर्गीय सेठ श्रीनिवासजी ३८५

पृष्ठ

१०. सी० एफ़्० ऐंड्रयूज़ तथा रानी लक्ष्मीबाई ३९१

११. श्रीसी० एफ़्० ऐंड्रयूज़ ३९२

१२. स्वर्गीया श्रीमती फूलदुलारी और उनके पति श्रीरामकृष्ण त्रिपाठी ३९४

१३. बलि-नृत्य (एक रंग में) ३९५

१४. भारतवर्ष के एकमात्र प्रतिनिधि कवि बाबू मैथिलीशरण गुप्त ३९७

१५. श्रीयुत महेंद्रजी ३९७

१६. स्वर्गीय प्रोफ़ेसर महेशचरण सिनहा ... ३९८

१७. स्वर्गीय श्रीभूमानंदजी ३९८

१८. श्रीजयदयाल विद्यार्थी बी० ए० ... ३९९

१९. कुमारी शांतादेवी ३९९

२०. कन्या-महाविद्यालय, जालंधर का वार्षिकोत्सव ४००

२१. देव-समाज-गर्ल्स-हाईस्कूल, लाहौर का पारितोषिक वितरण ४००

श्वेतकुष्ठ की अद्भुत दवा

प्रिय सज्जनो ! औरों की भाँति मैं अधिक प्रशंसा करना नहीं चाहता। यदि इसके ३ दिन के लेप से सफ़ेदी के दाग़ जड़ से आराम न हों, तो मूल्य वापस। जो चाहें ⌐) का टिकट भेजकर शर्त लिखा लें। मूल्य १।); गलित कुष्ठ एक माह में आराम। मूल्य ४)

बवासीर १५ दिन में आराम। मूल्य २)

बाल काला तैल—इस तैल से बाल का पकना रुककर पका बाल जड़ से काला पैदा होता है। यदि स्थायी काला न रहे, तो दूना दाम वापस की शर्त। बाल कम पका हो १॥), चौथाई से अधिक ३), कुल पका हो, तो ४) का तैल मँगा लें।

पता—हितैषी औषधालय, नं० ७७, हब्बीपुर, पो० एकंगरसराय (पटना), इंडिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यापार की चाभी

विज्ञापन छपाना

: : है : :

आपके लाभ की बात

व्यापार की मंदी होने पर भी

१. ठीक - ठीक लिखे हुए
२. उपयुक्त माध्यम में दिए गए
३. सुंदरता से छपे हुए

विज्ञापन

हमेशा रुपया खींचते हैं

सुधा

१. में दक्ष, मनोवैज्ञानिक विज्ञापन-लेखक नियुक्त हैं।
२. विज्ञापन देने के लिये सर्वोत्तम माध्यम है।
३. की टा इ पो ग्रै फ़ी कला-पूर्ण है।

इसीलिये

सुधा में विज्ञापन छपाइए

* * * *

साधारण विज्ञापन की दर सुधा में जितने

प्रतिमास

१ पृष्ठ की छपाई	२५)	विज्ञापन छपते हैं, उतने
½ " " "	१५)	किसी भी हिंदी-पत्रिका में
¼ " " "	१०)	नहीं छपते !
⅛ " " "	६)	

* * * *

मैनेजर 'सुधा'

[विज्ञापन-विभाग]

नं० ३६, लाटूश रोड, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरस्वती-सिरीज़

विश्व-ज्ञान का भाण्डार आपकी अलमारी में

अबतक प्रकाशित पुस्तकें—

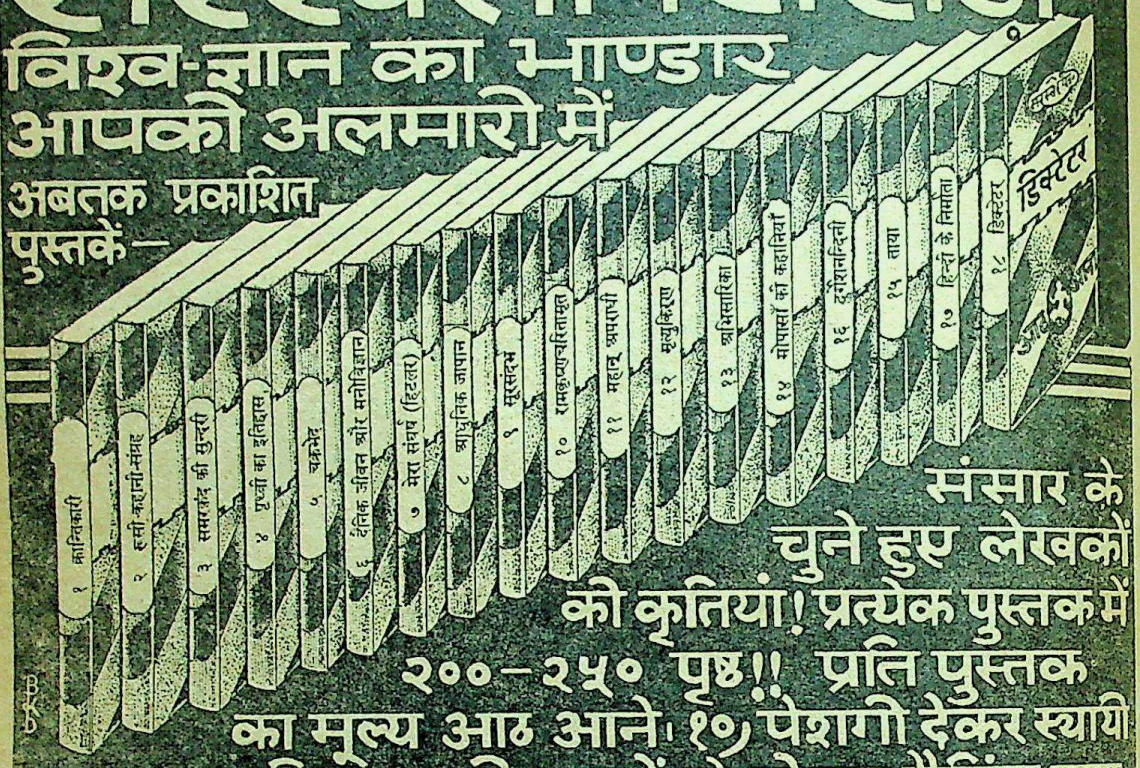

संसार के चुने हुए लेखकों की कृतियां! प्रत्येक पुस्तक में २००–२५० पृष्ठ!! प्रति पुस्तक का मूल्य आठ आने। १) पेशगी देकर स्थायी सदस्य बनिए। स्थायी ग्राहकों से पोस्टज-पैकिंग माफ़

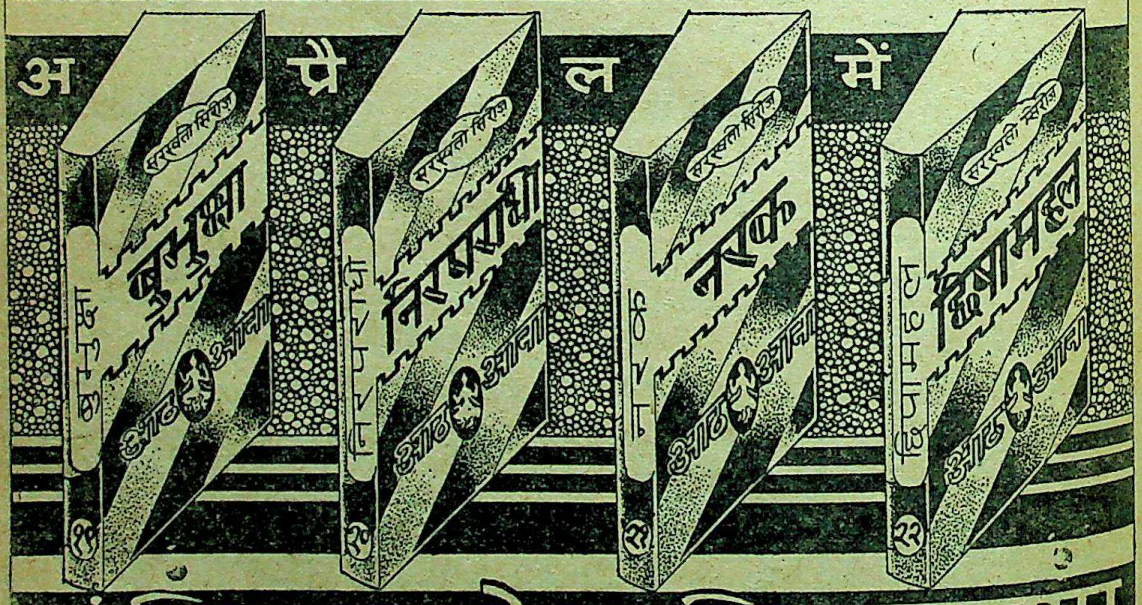

इंडियन प्रेस, लिः प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Approved by the Directors of Public Instruction in U. P., C. P., C. I., Bombay, Bihar, Punjab & Sind.

वार्षिक मूल्य प्रतिसंख्या

राजसंस्करण	१२)	१)
साधारण संस्करण	६)	॥)
सस्ता संस्करण	४॥)	।=)

प्रकाशक—
गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस
लखनऊ

वर्ष १४ खंड २	वैशाख, ३१८ तुलसी-संवत् (१९९८ वि०)— मई, १९४१	संख्या ४ पूर्ण संख्या १७८

गीत

[श्रीसुधींद्र एम्० ए०]

इस दीपक में स्नेह भरो प्रिय !
मंद पड़ी है बाती कब से, आज इसे प्रज्वलित करो प्रिय !
दीप तुम्हारे मंदिर का यह—
बुझा - बुझा क्यों रहता अहरह ?
ज्योति जगा आलोक जगा दो, अग जग का तम-जाल हरो प्रिय !
झंझा में भी होकर चंचल—
लौ न बुझे, जलती हो प्रतिपल।
प्राण ! मृत्तिका के दीपक में आज अमर वर्तिका धरो प्रिय !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदमी

[श्रीयुत 'अरुण' बी० ए०]

(१)

बैरिस्टर साहब ने त्योरी बदलकर उसकी ओर देखा, और बोले—"मुझे अक़्ल सिखाता है बदमाश कहीं का! तेरा लड़का मरे या जहन्नुम में जाय, मैं तुझे एक फूटी कौड़ी भी न दूँगा, नमकहराम, कामचोर!"

भीखू ने गिड़गिड़ाकर कहा—"सरकार!..."

बात काटकर बैरिस्टर साहब बोले—"ख़ामोश। चला जा यहाँ से, वरना अच्छा न होगा।"

भीखू की आँखों से आँसुओं का बाँध टूटकर बह चला। अपनी फटी धोती के छोर से आँखें पोंछते हुए उसने कहा—"मालिक! क़सूर मेरा है ज़रूर, लेकिन भगवान् करे, ऐसी मुसीबत दुश्मन पर भी न आए। मैं कुछ सुख से थोड़े ही घर बैठ गया था। हरिया की ऐसी हालत न होती, तो मुझे घर जाने की दरकार ही क्या थी। आप माई-बाप हैं, मुझे अपनी गऊ जानकर तरस खाइए। आप ही तक मेरी पुकार है मालिक!"

बैरिस्टर साहब का ग़ुस्सा बढ़ता ही जा रहा था, कड़ककर बोले—"यह सब पट्टी किसी दूसरे को पढ़ाना—ताड़ी पीने को पैसे न बचे होंगे, तब मेरे दरवाज़े आया है, सुअर का बच्चा! और, बहानेबाज़ी!"

भीखू की आत्मा कलप उठी। उसने छाती पर हाथ रखकर कहा—"गंगा माई की सौगंद, मेरा बंस नास हो जाय, जो बहानेबाज़ी करूँ सरकार! चलकर आप ही देख लें। मेरा हरिया अब-तब हो रहा है। उसकी हालत बिगड़ रही है मालिक! दया कीजिए।"

भीखू बैरिस्टर साहब के पैरों पर गिरने चला। बैरिस्टर साहब ने जूते की ठोकर से उसका सिर हटाते हुए कहा—"चल हट, तेरी बदमाशी ख़ूब जानता हूँ। घर में भी स्वाँग रचा होगा। मेरी आँखों के सामने से दूर हो जा, वरना ऐसी मरम्मत करूँगा तेरी कि याद करेगा।"

अपने माथे पर हाथ फेरता हुआ भीखू उठ खड़ा हुआ। उसका हृदय रो रहा था। प्रार्थना में कोई परिणाम नहीं, विनय में प्रति फल नहीं, रोने-पीटने में किंचित् प्रभाव नहीं—अपने जीवन की इसी विषमता को सोचकर, वह आत्मा की अंतिम शक्तियों को बटोरकर बोला—"मालिक! मैं भीख नहीं माँगता—अपनी तनख़्वाह के पैसे माँगता हूँ। मुझे आपकी नौकरी नहीं करनी अब, मेरा हिसाब दे दीजिए।"

बैरिस्टर साहब की भौंहें तन गईं—बड़े लोच से वह बोले—"हिसाब?"

भीखू ने ज़ोर से कहा—"हाँ, हिसाब—पैसा, धेला, छदाम, जो कुछ मेरे नसीब का आपके हिसाब से, आपके ईमान से, आपके ऊपर मेरा निकलता हो, इसी दम बेबाक कर दीजिए। मुझे ऐसी नौकरी क़बूल नहीं। बहुत निभाया—बहुत दिन जूता-लात सह लिया—अब मेरा हिसाब कर दीजिए।"

बैरिस्टर साहब उठ खड़े हुए। धीरे-धीरे क़दम उठाते हुए भीखू के क़रीब जा पहुँचे। भीखू ने उनकी ओर देखा। कुछ डरकर वह पीछे हटा। बैरिस्टर साहब ने उसकी गरदन पकड़कर ढकेल दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चबूतरे के नीचे, कंकड़ों के ढेर पर, भीखू जा गिरा। उसके गिरते ही बैरिस्टर साहब ने उसे जूते की ठोकरों से मारते हुए कहा—"यह ले अपना हिसाब! आना-पाई सब चुका देता हूँ हरामख़ोर! बदमाश! कमीना कहीं का! ले, और ले!"

ठौर-कुठौर जाने कितनी ठोकरें और घूँसे भीखू की जीर्ण देह पर बरस गए। एक बार तड़फड़ाकर वह बेहोश हो गया, मगर बैरिस्टर साहब उसे मारते ही रहे, जब तक वह थककर एकदम पसीने से लथपथ न हो गए।

अभागे भीखू पर एक घृणा की दृष्टि डालकर बैरिस्टर साहब घर के भीतर चले गए, और द्वार बंद कर लिया। उस समय भी उनके मुँह से गालियों की बौछार हो रही थी।

लगभग आधा घंटा बीत गया। सुबराती की मा झाड़ू देने आई, तो उसने भीखू को पड़ा देखा। उसने आवाज़ दी—"भीखू! भीखू!"

कोई उत्तर न मिला। बेचारी भंगिन ने पास जाकर देखा—भीखू का चेहरा लोहूलुहान हो रहा था। कंकड़ों पर गिरने से उसे चोट आ गई थी, देह में जगह-जगह खरोंचे और ठोकरों के निशान मौजूद थे। वह डर गई। उसने पीछे हटकर बड़े साहस से एक बार फिर पुकारा—"भीखू!"

फिर भी कोई उत्तर नहीं। घबराकर वह जल्दी से भीखू के घर की ओर चल दी।

नीच और ऊँच का वह अंतर समाज की विषमता का इतिहास लिख रहा था।

(२)

उसी रात को—

अपनी अभागी संतान को सदा के लिये मिट्टी में सुलाकर भीखू और उसकी औरत, दोनो चुपचाप घर लौट आए।

घर में दिया न जला था, क्योंकि उस घर का चिराग़ तो आज सदा के लिये बुझ गया था।

धरती पर बैठते हुए भीखू ने एक ठंडी साँस ली। माथे पर बँधी हुई पट्टी खुलकर गिर पड़ी थी, मगर भीखू को पता तक नहीं।

अपने शरीर की यातना संतान के चिर-बिछोह की यातना में लीन करने के बाद भीखू अब कुछ और ही अनुभव कर रहा था। वह हँस पड़ा।

उसकी घरवाली डर गई। धीरे-धीरे पास आकर बोली—"कैसा जी है?"

भीखू मौन था।

उसने फिर कहा—"लेट रहो। तुम्हारा जी अच्छा नहीं है।"

भीखू फिर हँस पड़ा—रात के सन्नाटे में उसकी हँसी उस छोटे से मिट्टी के घर में गूँज उठी। और, फिर वह बार-बार हँसने लगा।

घरवाली ने हाथों के सहारे उसे उठाकर बिछौने पर लिटा दिया, फिर माथे पर हाथ रखकर देखा। कितना गरम। भीखू को ज्वर चढ़ा था। एक फटी हुई चादर लाकर उसने भीखू के ऊपर डाल दी।

थोड़ा ठहरकर भीखू ने करवट ली, और पुकारा—"सुनती हो?"

आँचल से आँसू पोंछती हुई घरवाली पास जा बैठी। भीखू ने कहा—"हरिया की मा! मैं सोचता हूँ—मैं यह सोचता हूँ—मैं यह....."

भीखू चुप हो गया।

घरवाली ने चौंककर पूछा—"क्या सोचते हो?"

कोई जवाब न मिला। उसने भीखू की सारी देह टटोलकर फिर पूछा—"कहो न? क्या कह रहे थे?"

धीरे से भीखू ने कहा—"कुछ नहीं।"

"कुछ तो? कह डालो—क्या सोचते हो?"

भीखू चुप हो गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रात के सन्नाटे में—

वह अँधेरा घर हरिया की मा को मानो खाने दौड़ रहा था। वह बहुत डरकर भीखू को देखने की चेष्टा करने लगी, लेकिन कुछ न देख सकी। उसने भीखू के माथे पर अपना हाथ रख लिया, साहस और संतोष उसे मिला ही होगा। भीखू ने फिर करवट बदली, और कहा—"पानी।"

घरवाली ने उठकर दिया जलाया, और मिट्टी के घड़े से एक कटोरे में पानी लाकर उसे दिया। पानी पीकर वह कुछ स्वस्थ हुआ, और बोला—"हरिया की मा! अब हम क्या करेंगे?"

घरवाली का हृदय धड़कने लगा। अपने को बहुत सँभालकर उसने उत्तर दिया—"क्यों? 'जाही बिधि राखै राम, ताही बिधि रहिए'—सोचा न करो कुछ, तुम अच्छे रहो, फिर कभी हमारे दिन भी अच्छे हो जायँगे।"

भीखू बोला—"सच कहती हो।"

"हाँ-हाँ, भगवान् का भरोसा है हमें, वही सब की रखवाली करता है।"

"लेकिन उसने—उसने हरिया की रखवाली तो नहीं की। हरिया चला गया हमें छोड़कर—क्या कभी नहीं आएगा वह? बोलो न।"

मा का हृदय एक असीम पीड़ा का अनुभव कर रहा था, लेकिन नारी का कर्तव्य, पत्नी का धर्म, हिंदू-जाति की सांस्कृतिक महत्ता की दुहाई देकर कह उठा—"वह हमारा नहीं था, कोई छलिया था, छलने आया था, फिर चला गया। तुम उसका दुख न करो, तुम्हें मेरी ही सौगंद।"

"अच्छा, एक बात बताओ।"

"पूछो।"

"मुझसे कहती हो, दुख न करो, ऐं? लेकिन तुम ख़ुद रोती हो—बहुत रोती हो—मुझसे छिपाकर तुम रोती हो हरिया की मा! मैं सब जानता हूँ। ऐसा क्यों?"

"....."

"बोलो न?"

"क्या बोलूँ?"

"जवाब दो मेरी बात का।"

"मैं नहीं रोती, तुम्हीं रोते हो।"

"तुम नहीं रोतीं हरिया की मा?"

"उहुँः।"

झूठ बोलती हो, मेरी सौगंद खाकर कहो?"

"जाओ, मुझे तुम्हारी ये ही बातें अच्छी नहीं लगतीं—जी अच्छा नहीं है, यह तो होता नहीं कि लेटे रहो। जाने कैसी-कैसी बातें सोचते हो!"

हरिया की मा उठकर जाने लगी, भीखू ने कहा—"अब नहीं सोचूँगा, तुम बैठ जाओ।"

वह बैठ गई। भीखू बोला—"और पास आकर बैठो, बिछौने पर।"

हरिया की मा खिसककर पास जा बैठी। भीखू ने कहा—"यहीं बैठना, जाना नहीं।"

"न जाऊँगी।"

"मुझे छोड़कर जाओगी तो नहीं?"

"क्यों? तुम्हें हो क्या गया है? मैं तो यहीं बैठी हूँ—तुम्हारे पास।"

"मैंने यों ही कहा, जिसमें—जिसमें तुम चली न जाओ मुझे छोड़कर।"

"तुम्हें छोड़कर?"

"हाँ, मुझे डर लगता है, हरिया तो चला गया, कहीं तुम न चली जाना—वैसे ही, जैसे वह चला गया—मुझे छोड़कर।"

भीखू ने घरवाली का हाथ अपने हाथ में ले लिया। वह रो पड़ी। रोते-रोते, बोली—"तुम दुखी न हो इतने, मैं न जाऊँगी—कभी न जाऊँगी—कभी न जाऊँगी—तुम्हें छोड़कर।"

एक संतोष की साँस लेकर भीखू ने धीरे से कहा—"अच्छा।"

फिर वह चुपचाप सो गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(३)

लेकिन—

उस रात की बात—

हरिया की मां संभवत: बिलकुल भूल ही गई, जब ठीक दो महीने बाद उसने ज्वर के एक अचानक आक्रमण में अपनी आँखें सदा के लिये मूँद लीं। और फिर, अपने वचन का पालन करने में असमर्थ वह बेचारी चली गई। भीखू को छोड़कर चली गई। इच्छा से या अनिच्छा से, कौन जाने। भीखू केवल इतना जान सका कि बेटे के बाद बेटे की मा ने भी उससे अचानक ही नाता तोड़ लिया। उसे केवल इतना याद रहा कि घरवाली ने उससे एक दिन कहा था—"तुम्हें छोड़कर कभी न जाऊँगी।"

और, भीखू उसी विश्वास में भूला रहकर उसे भी एक दिन खो बैठा। जिस दिन वह उसे फूँककर लौटा, उसी दिन उसके मन में यह निश्चय समा गया—दुनिया धोखेबाज़ है, किसी का विश्वास नहीं।

अपनी अनुभूति की यातना को पग-पग पर अपने में भुला देने की चेष्टा करता हुआ भीखू जीवन के एक नए रास्ते पर चल निकला। बेकारी, पैसे की तंगी, मन की पीड़ा, अपना सूनापन, सब उसे परिवर्तन की ओर खींचते गए।

अब भीखू दिन-भर बाज़ार में घूमता दिखाई देता, और रात को ताड़ीख़ाने में। तन पर कपड़ा नहीं, मन में शांति नहीं, पेट में पूरा अन्न नहीं। मानव कहलानेवाला वह प्राणी अब दुनिया की निगाहों में गिरहकट और चोर था, जो दूसरों को लूटकर अपना पेट पालने लगा था।

दिन बीते, महीने बीते, साल बीतने के क़रीब आया। भीखू अपने जीवन के नए प्रवाह में बहता चला जा रहा था। एक दिन, संध्या-समय, हाथ में रेवड़ियों की पुड़िया लिये वह अपने पुराने मालिक बैरिस्टर साहब की कोठी के सामने से चला जा रहा था। किसी ने उसे पुकारा—"भीखू! ओ भीखू!"

भीखू ने घूमकर देखा, बैरिस्टर साहब का अर्दली माधो गाड़ी में छोटे बच्चे को बिठाए हवा खिलाने ले जा रहा था।

भीखू ठहर गया। माधो ने पास आकर पूछा—"अरे, कहाँ रहे इतने रोज़? दिखाई भी नहीं दिए। नौकरी छोड़ दी, तो क्या हम लोगों से मिलना-जुलना भी छोड़ दिया?"

भीखू ने गाड़ी में बैठे हुए बच्चे की ओर देखते हुए कहा—"कुछ नहीं भैया, कौन मुँह लेकर मिला-जुला करूँ। भगवान् ने मुझे कहीं का न रक्खा। लड़का गया, जोरू गई—अब क्या है, माँगता-खाता फिरता हूँ।"

"सुना था मैंने, बड़ा अफ़सोस हुआ। तुम पर तो मुसीबत का पहाड़ ही टूट पड़ा भीखू! मगर करोगे क्या, उसकी मर्ज़ी। धीरज रक्खो। कभी-कभी मिलते रहा करो।"

"मिलूँगा। जा कहाँ रहे थे?"

"कंपनी-बाग़ तक—लालजी को सैर कराने।"

"लालजी तो मुझे पहचानते ही नहीं। क्या जानें। साल-भर के भी नहीं थे, जब मैंने नौकरी छोड़ी थी। अच्छा, चलो फिर। इधर ही मुझे भी जाना है।"

दोनो चल पड़े। रास्ते-भर बातें होती गईं। माधो अपना घर-गिरिस्ती का हाल बता रहा था, और भीखू एक-एक रेवड़ी पुड़िया से निकालकर बच्चे को खिलाता जाता था। आज उस बच्चे ने भीखू को अचानक अपनी ओर खींच लिया था।

कंपनी-बाग़ में पहुँचकर, घास पर बैठकर भीखू ने बच्चे को गोद में ले लिया।

उसे जी भरकर प्यार किया—ख़ूब रेवड़ियाँ खिलाईं। माधो से बातें भी करता जाता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माधो ने कहा—"भीखू भैया ! एकआधी बीड़ी है ? पिलाओ ।"

भीखू बोला—"नहीं भाई ! बीड़ी तो नहीं है । पीनी है, तो ले लो लपककर सड़क पर से ।"

भीखू ने टेंट से एक इकन्नी निकाली, और माधो के हाथ पर रख दी । माधो उठा, और चल दिया । कंपनी-बाग़ के फाटक से बाहर जाने तक भीखू उसे देखता रहा । फिर वह बच्चे से खेलने लगा । बच्चे के हाथ में दो-तीन रेवड़ियाँ देकर भीखू ने मुँह फैलाकर कहा—"आ—आ—आ—मुझे भी दो लल्ला भैया ।"

बच्चे ने सब रेवड़ियाँ अपने मुँह में रखकर सिर हिला दिया—"उहुँः।"

बच्चे ने उसकी ओर से मुँह घुमा लिया । भीखू को कुछ याद आया—बच्चे की एक उहुँः उसे सहन न हो सकी । वह सोचने लगा, आख़िर है बैरिस्टर साहब की संतान । क्यों न स्वार्थी हो । मेरा ही माल खाना और मुझी से उहुँः ? उसकी आँखों के सामने साल-भर पहले की घटना नाच उठी, जब उसने बैरिस्टर साहब से अपनी तनख़्वाह माँगी थी, और लात-घूँसों तथा ठोकरों से उसका सत्कार हुआ था, जब उसका हरिया—उसकी एक-मात्र संतान मृत्यु-शय्या पर पड़ी थी, और दवा-दारू का प्रबंध न होने पर हरिया असमय ही काल के गाल में चला गया ! हरिया की मा भी मर चुकी ।

भीखू के हृदय में एक आग-सी सुलग उठी ।

बैरिस्टर साहब ! और उन्हीं की संतान है यह उसके सामने, जिसे उसने रेवड़ियाँ खिलाईं—प्यार किया ।

भीखू प्रतिहिंसा से पागल हो उठा । प्यार ने घृणा और आकर्षण ने प्रतिघात का रूप ले लिया ।

भीखू ने बच्चे को गोद में उठाया—इधर-उधर देखा, फिर जल्दी से एक ओर भागता हुआ कंपनी-बाग़ के पिछले फाटक से बाहर हो गया । रास्ते पर जाते-जाते वह एक गली में मुड़ गया, फिर गलियों-गलियों तेज़ी से पैर उठाता हुआ जमुना के पुल पर जा पहुँचा । पुल पर सन्नाटा था । भीखू ने बड़ी सतर्कता से अपने चारो ओर देखा, फिर पुल की एक बुर्ज़ी के सहारे नीचे झुका ।

कल-कलनादिनी कालिंदी बड़े वेग से बह रही थी । बच्चे को दोनो हाथों से पकड़कर भीखू ने अपने सिर से ऊँचा किया, और पुल के नीचे लटकाना चाहता था । उसने देखा, बच्चा मुस्कराता हुआ उसकी ओर देख रहा था । उसकी दोनो आँखों में सरलता थी, विश्वास था, और परिचय का भरोसा था । भीखू का हृदय पाप से पीछे हट गया । बच्चे को गोद में लेकर उसने एक बार उसका मुँह चूम लिया । फिर कंधे पर पड़ी हुई चादर से उसे छिपाता हुआ वह पुल के उस पार चला गया । वह विधान उसका न था, किसी और का था । भीखू को उस दिन के बाद किसी ने शहर में न देखा ।

(४)

समय जाते देर नहीं लगती । पूरे अट्ठारह साल बीत गए । आगरे के सदर बाज़ार में एक छोटी-सी गली के मोड़ पर तेल की पूड़ियों-कचौड़ियों की दूकान है, जिसका मालिक है एक बूढ़ा तेली । नाम है मोती । मोती का एक जवान लड़का है, जिसका नाम है भैरों ।

भैरों शरीर से ख़ूब तंदुरुस्त, हट्टा-कट्टा है । कसरत करता है, अखाड़े में लड़ता है, और कभी-कभी दूकान पर भी बैठा करता है । दोनो बाप - बेटे उसी दूकान के भीतर एक कोठरी में रहते हैं । वे सुखी हैं या दुखी, यह कोई नहीं जानता ।

बरसात के दिनों में दूकान पर बैठकर आल्हा गाते भैरों को लोगों ने सुना है, गुड़ियों के त्योहार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर अखाड़े में अच्छी-अच्छी कुश्ती मारते भैरों को लोगों ने देखा है, लड़ाई-झगड़ा होने पर दूकानदारों की मदद करते हुए उसकी लंबी लाठी कभी थकी ही नहीं।

बाज़ार-भर भैरों का दोस्त है। भैरों को सब चाहते हैं, उसका स्वभाव ही ऐसा अच्छा है।

उस रात को—

बूँदा-बाँदी हो चुकी थी। दूकान बढ़ाकर मोती भीतर कोठरी में जा लेटा था। उसे खाँसी आ रही थी ज़ोर की। पीछे के दरवाज़े पर कुछ खटका पाकर मोती ने पूछा—"कौन?"

"मैं हूँ बापू।"

आवाज़ पहचानकर मोती ने उठकर किवाड़ खोल दिए। भैरों भीतर आया, किवाड़ बंद किए, लाठी कोने में खड़ी कर दी, और भीगा कुरता उतारकर निचोड़ने लगा। मोती ने पूछा—"भीग गए क्या?"

भैरों ने कहा—"हाँ, रास्ते में ही पानी पड़ने लगा। भीगता हुआ आया। अभी तो पानी बंद हुआ है।"

भैरों ने कुरता बाँस पर सूखने के लिये डाल दिया।

मोती को फिर खाँसी आई। भैरों बोला—"दवा नहीं खाई जान पड़ता है बापू?"

मोती ने उत्तर दिया—"भैया की बात, बुढ़ापे की बीमारी क्या दवा से अच्छी होती है?"

भैरों ने घूमकर उसकी ओर देखा, फिर चारपाई के पास मोती के सिरहाने आकर बैठते हुए बोला—"बापू! तुम मेरा कहा नहीं मानते, यह आदत तुम्हारी अच्छी नहीं। दवा लाकर मैंने रख दी, सिर्फ़ खाने की तकलीफ़ भी तुम नहीं उठा सकते, क्यों?"

मोती ने खाँसते-खाँसते कहा—"बेटा! मेरी बीमारी का इलाज मौत है, यह दवा खाने और तकलीफ़ उठाने का सवाल नहीं।"

भैरों का हृदय धड़कने लगा। कुछ दुखी होकर बोला—"बापू! कल से तुम्हें भट्टी पर नहीं बैठने दूँगा, दूकान चले या न चले, बला से। तुम्हारी ज़िद अब न चलेगी। पैसे की कोई कमी है तुम्हें? बोलो न? फिर दिन-रात आग के पास बैठे-बैठे अपना ख़ून क्यों सुखाया करते हो?"

भैरों ने सिर नीचा कर लिया। दीवार पर जलती हुई मिट्टी के तेल की कुप्पी का प्रकाश उसकी आँखों पर पड़ा। मोती ने देखा भैरों की आँखों में आँसू। आज पहली बार भैरों की आँखों में आँसू देखकर बूढ़े मोती का रोम-रोम व्याकुल हो उठा। उसने अपना हाथ मोती की पीठ पर रखते हुए कहा—"तुम रोते क्यों हो बेटा?"

भैरों बिछौने पर गिरकर मोती से लिपट गया, और सिसक-सिसककर रोते हुए बोला—"आँख में उँगली चुभोकर पूछते हो, आँसू क्यों आए? बापू! तुम्हारी बातें अब जाने कैसी हो गई हैं, जाने क्या सोचा करते हो? जाने क्या कहा करते हो? ऐसा क्यों है बापू?"

मोती ने एक ठंडी साँस ली। वह कुछ न कह सका। एक बार उसे फिर खाँसी आई। भैरों उसके सीने पर हाथ फेरने लगा।

कुछ देर बाद मोती ने आँखें खोलीं, और कहा—"बेटा भैरों!"

"क्या है बापू?"

भैरों उठकर बैठ गया। मोती बोला—"आज मन चाहता है, तुम्हें एक कहानी सुनाऊँ—सुनोगे?"

भैरों अकचकाकर बूढ़े का मुँह देखने लगा। मोती ने फिर कहा—"हाँ-हाँ, सुनाऊँगा। सुनोगे?"

भैरों बोला—"सुनूँगा, कहो।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अच्छा, अपनी चारपाई इधर खींच लाओ—लेट रहो आराम से, तब सुनाऊँ।"

भैरों उठकर चारपाई नज़दीक ले आया, और उस पर बैठकर बोला—"सुनाओ बापू।"

"उहुँः, लेट जाओ करवट से, तब।" मोती ने कहा।

भैरों लेट गया उसकी ओर करवट से। मोती ने कहानी शुरू की—भैरों सुनने लगा। वह कहानी—मोती तेली के जीर्ण शरीर में छिपी हुई भीखू कहार के जीवन की दुःखांत कहानी थी।

मोती ने अक्षर-अक्षर सुना दी। अपना और भैरों का परिचय ज़रा भी न दिया।

मोती ने कहा—"फिर बैरिस्टर साहब के लड़के को भीखू ने अठारह साल तक पाला-पोसा, बड़ा किया—अपने लड़के की तरह—अपने खोए हुए हरिया की तरह।"

मोती का गला भर आया। आगे वह कुछ न कह सका। उसे फिर खाँसी आई। शांत होने पर भैरों ने पूछा—"बापू! फिर क्या हुआ?"

मोती ने उत्तर दिया—"अब थक गया हूँ, कल बताऊँगा आगे की बात। सो जाओ, रात बहुत हो गई।"

भैरों चुप हो गया। थोड़ा ठहरकर मानो उसे कुछ याद आया। वह बोला—"बापू! बैरिस्टर साहब-जैसे ख़ुदग़र्ज़ और बेरहम आदमी दुनिया में बहुतेरे होंगे? होंगे न?"

मोती बोला—"हाँ बेटा! बड़े आदमियों के हृदय नहीं हुआ करता।"

"और भीखू-जैसे भी?"

"क्यों नहीं, ग़रीब की ज़िंदगी ऐसी ही होती है।"

"भीखू को चाहिए था, बैरिस्टर के लड़के को गला घोटकर मार डालता, या जमुनाजी में फेंक देता। ऐसे बदमाश आदमी से बदला लेने का यही मुनासिब तरीक़ा था। भीखू ने ग़लती की। की न बापू?"

"उहुँः भीखू ने ठीक किया। बाप का बदला बेटे से चुकाना आदमियत नहीं।"

"मगर बैरिस्टर ने भी तो भीखू के लड़के को बिना दवा-दारू के मार डाला, यह आदमियत थी? अगर वह भीखू को उसकी तनख़्वाह दे देता, तो—तो भीखू का लड़का काहे को मरता?"

भैरों की बात सुनकर मोती चौंक पड़ा, उसकी आँखें चमक उठीं। वह बोला—"तुम ठीक कहते हो, भीखू का लड़का मर नहीं सकता था।"

"और, बेटे के रंज में घुल-घुलकर मरनेवाली उसकी मा भी न मरती।"

"हाँ, यह भी ठीक है, मा भी न मरती।"

"अच्छा बापू! आख़िर भीखू ने बैरिस्टर से बदला लिया या नहीं?"

मोती चुप था। उसका गला बजने लगा। वह सो गया था। भैरों ने भी सोने की ठानी।

(५)

उस रोज़—

दोपहर में पेशावरी पठानों का एक गरोह आगरे के बाज़ारों में घूम रहा था, दूकान-दूकान पर जाकर वे लोग सौदा ख़रीद रहे थे। दूकानदारों से असभ्यता का व्यवहार करने से वे नहीं चूकते थे, और इसीलिये कहीं-कहीं गाली-गलौज की नौबत भी आ जाती थी।

मोती की दूकान पर—

चार पठानों का एक दल पहुँचा, और सामने पड़ी बेंच पर बैठकर मोती की ओर देख सब-के-सब आपस में अपनी बोली में कुछ कहने लगे। मोती ने कुछ सतर्क होकर पूछा—"क्या चाहिए?"

पठानों में से एक ने कहा—"खाना चाहिए, और क्या चाहिए।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोती ने पूछा—"चार जगह दूँ ? पूड़ी या कचौड़ी ?"

पठान बोला—"हाँ-हाँ, लाओ, जल्दी माँगता है खाना।"

मोती ने चार दोनों में साग लगाया, और पूड़ियाँ, फिर उनके आगे बेंच पर सब सामान क़ायदे से रख दिया।

पठान खाने बैठ गए। बीच-बीच में ख़स्ता कचौड़ी, सेव, पकौड़ियाँ वग़ैरा और भी जो-जो सामान उन्हें दिखाई दिया, ले-लेकर खाते गए। ख़ूब खाया। मोती ने उठकर मिट्टी के आबख़ोरों में उन्हें पानी भी पिला दिया।

एक पठान ने जेब से चमड़े का बटुआ निकालते हुए कहा—"कितना दाम हुआ ?"

मोती ने हिसाब लगाकर बतलाया—"साढ़े बारह आने।"

"अरे बाबा ! साढ़े बारह आने ? तुम लूटता है हमको—लूटता है।" वह पठान बिगड़ खड़ा हुआ, और अपनी बोली में अपने साथियों से कुछ कहने लगा। सब साथी हँस पड़े, और उन्होंने उत्तर में उसे कुछ समझाया।

पठान ने अपना बटुआ जेब में वापस रखते हुए कहा—"हम चार आना पैसा देगा, ख़ुशी हो तेरा, तो ले, नहीं तो सलाम।"

मोती को क्रोध आ गया। वह बोला—"ख़ूब ! नवाबी है क्या, जो खा-पीकर चले जाओगे विना दाम दिए।"

मोती उठ खड़ा हुआ, और दूकान के पटरे पर आ गया। पठान बोला—"बदमाश ! साला !"

पठान के मुँह से गाली निकलते ही मोती ने कूदकर उसका गला पकड़ा, और ज़ोर से बोला—"ख़ान ! चुपचाप साढ़े बारह आने मेरे हवाले करो, वरना याद रखना, सारी पठानी ख़ाक में मिला दूँगा।"

राह-चलते लोग जमा हो गए, मगर किसी की हिम्मत न थी, जो मोती की ओर से कुछ बोलता। पठानों के भारी डीलडौल और लंबी लाठियाँ देखकर सब ख़ामोश थे।

मोती ने कड़ककर फिर कहा—"मियाँ ! देते हो मेरे दाम या....."

मोती की बात पूरी न हो पाई। उसके साथ के दूसरे पठानों ने लाठियाँ घुमाईं, और एक साथ मोती पर हमला कर दिया। मोती नीचे गिर गया, मगर जिस पठान को उसने पकड़ रक्खा था, वह भी उसके साथ ज़मीन चूमने लगा। लात-घूँसों से मोती ने उसकी ख़ासी मरम्मत कर दी, मगर वह थक गया, ऊपर से लाठियों की मार। तमाशबीन भागने लगे। मोती अकेला पड़ गया।

मौक़ा पाकर ज़मीन पर गिरे हुए पठान ने जेब से एक बड़ी-सी छुरी निकाल कर मोती पर वार किया। मोती किनारे लुढ़कने के प्रयत्न में ठोकर खाकर घूम पड़ा, छुरी उसकी पसलियों में दस्ते तक घुस गई। ख़ून का फ़ौवारा छूट चला। लाठियों की मार से उसकी देह पहले ही लोहूलुहान हो चुकी थी। वह एकदम अचेत होकर पड़ गया।

पठानों ने जब यह हाल देखा, तब भागने लगे। इतने ही में—जाने कहाँ से—सामने से बेतहाशा भागता हुआ भैरों वहाँ आ पहुँचा। बाप की यह हालत देखी, और पठानों को भागता हुआ—वह लाठी उठाकर उसी ओर लपका। सामने की दूकान पर से पानवाले ने कहा—"भैरों भैया ! वही है हरे साफ़ेवाला बदमाश—उसी ने चौधरी को मारा है।"

इशारा काफ़ी था। भैरों हरे साफ़ेवाले पठान के पीछे तेज़ी से दौड़ा। पठानों ने भागते-भागते पीछे घूमकर देखा—एक आदमी—दुश्मन। भैरों तब तक पास पहुँच गया था। उसने आव देखा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न ताव, अपनी लाठी ज़ोर से घुमाकर दोनो हाथों से एक भरपूर वार हरे साफ़ेवाले पठान पर किया।

"या ख़ुदा!" चिल्लाकर वह पठान वहीं गिर पड़ा। दूसरों ने अपनी लाठियाँ उठाईं, और भैरों पर वार किया। पैंतरा बदलकर भैरों वार बचा गया, और दुबारा वह बेतहाशा लाठी घुमाता हुआ उन तीनो पर टूट पड़ा।

दो पठान और ज़मीन चूमने लगे। एक भाग निकला—भैरों उसके पीछे दौड़ा। बाज़ार में भगदड़ मच गई।

इतने में पीछे से आकर तीन-चार अन्य पठानों ने उस पर हमला कर दिया। भैरों घूमकर फिर लड़ने लगा। बाज़ार में आए हुए सारे पठान उसी ओर "मारो-मारो" चिल्लाकर दौड़ पड़े। मौक़ा ठीक न था। भैरों अपने को बचाता हुआ पीछे की ओर भागा।

तब तक हरे साफ़ेवाला पठान होश में आ चुका था। हाथ में छुरी लिए वह उसी ओर देख रहा था। भैरों के पास आते ही उसने उस पर छुरी चलाई। भैरों ने वार बचाकर छुरी छीन ली। पठान उससे लिपट गया। पठानों का दल चिल्लाता हुआ पास आ रहा था। भैरों ने कोई उपाय न देखकर उस हरे साफ़ेवाले पठान के पेट में ज़ोर से छुरी भोंक दी। पठान गिर गया। भैरों अपने को छुड़ाकर फिर भाग निकला।

पठानों का गरोह उसके पीछे दौड़ा, मगर भैरों किधर गया, किसी को पता न चला। तब तक पुलिस भी आ पहुँची। पठान तितर-बितर हो गए।

तहक़ीक़ात होने लगी। हरे साफ़ेवाला पठान मर गया था। पुलिस लाश उठा ले गई। रात होते-होते पुलिस ने भैरों को पकड़कर हवालात में बंद कर दिया।

सारे बाज़ार में हरएक की ज़बान पर भैरों की बहादुरी का ज़िक्र था।

और, मोती बेचारा—उस समय अपने घावों पर पट्टियाँ बँधवा रहा था—पास के एक अस्पताल में। उसकी आँखों में आँसू थे, मन में एक अशांति थी, और चिंता—भैरों के लिये। अपनी तकलीफ़ का उसे ख़याल न था।

(६)

सेशन की अदालत में—

मुक़दमे की पहली पेशी थी। अदालत में तिल धरने को जगह न थी। सारा बाज़ार बंद करके दूकानदार इस मुक़दमे की कारवाई देखने आ पहुँचे थे।

और मोती—वह बेचारा एक डोली पर बैठकर बड़ी कठिनाई से अदालत में आया था।

उसने अपनी सब जमा-पूँजी लगाकर तीन-चार बड़े-बड़े वकीलों को पैरवी के लिये तैनात किया था।

ठीक साढ़े ग्यारह बजे—

जज साहब अदालत में तशरीफ़ लाए, और अपनी कुरसी पर बैठ गए।

मोती ने देखा—उसके मुँह से बरबस निकल गया—"ऐं? बैरिस्टर साहब?" जज साहब के रूप में उसने अपने पुराने मालिक को पहचाना। लोग मोती की ओर देखने लगे। वह चुप हो गया, उसने सिर नीचा कर लिया।

वह सोचने लगा—जब वह भीखू कहार था, और बैरिस्टर साहब की नौकरी करता था, जब उसका एकलौता बेटा हरिया बीमार पड़ा हुआ मौत की घड़ियाँ गिन रहा था, जब उसे बैरिस्टर साहब ने तनख़्वाह माँगने पर मार-पीटकर निकाल दिया था। दवा-दारू का ठीक प्रबंध न होने के कारण—पैसे के अभाव में—उसका प्यारा हरिया तड़फ-तड़फकर मर गया था!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने बेटे की मृत्यु-समय की पीड़ा उसे स्मरण हो आई। उसका पीला, प्राण-हीन चेहरा मोती की आँखों के आगे नाचने लगा। मोती की देह का रोआँ-रोआँ काँप उठा।

कैसे उसने और उसकी घरवाली ने हरिया को श्मशान में गढ़ा खोदकर दफ़नाया था, उस पर मनो मिट्टी डालकर सदा के लिये उससे नाता तोड़ लिया था, और वह पाप किसका था? बैरिस्टर साहब का, जो आज जज की कुरसी पर सामने बैठे थे। और फिर, मोती को याद आया—हरिया की मा भी बेटे के रंज में घुल-घुलकर चल बसी थी मोती को इस दुनिया में अकेला छोड़कर। आज का मोती उस समय भीखू था। और, जब उसने कंपनी-बाग़ में खेलते हुए बैरिस्टर साहब के बेटे को चुराया था, उसे लेकर भागा था, बदला लेने की ग़रज़ से, मगर वह बदला भी तो न ले सका। उस लड़के को अपनी संतान की तरह—अपने हरिया की तरह—पाल-पोसकर उसने बड़ा किया था।

मोती की निगाह भैरों पर पड़ी, जो चार सिपाहियों के घेरे में, कठघरे में, मुलज़िम की हैसियत से, खड़ा था।

मोती सोचने लगा—वह दुश्मन का लड़का है। फिर उसे बचाने के लिये मोती ने अपनी सारी जमा-पूँजी लगाकर, बरसों की संचित कमाई खोकर, वकीलों को क्यों तैनात किया था? दुश्मन का लड़का भी तो दुश्मन ही है?

मोती को पछतावा होने लगा। भैरों को फाँसी की सज़ा मिल जायगी ज़रूर, उसने ख़ून किया है, और ख़ुद भैरों का बाप बिना जाने हुए अपने बेटे को फाँसी की सज़ा देगा। फिर तो बड़ा अच्छा होगा।

बदला—बदला—ख़ून का बदला। हरिया की मौत का बदला—भैरों को फाँसी!

मोती सोचने लगा—पैरवी के लिये लाए हुए वकीलों को मना कर दे कि वे पैरवी न करें। मगर यह कैसे हो सकता है?

अदालत की कारवाई शुरू हो चुकी थी। मोती के कान सुन ही न पाते थे। वह सिर उठाकर कभी भैरों की ओर देखता, और कभी कुरसी पर बैठे हुए जज साहब की ओर। उसके हृदय में मानो कोई पुकार-पुकारकर कह रहा था—बदला! बदला!! यही अवसर है।

मोती के शरीर में छिपी हुई भीखू की आत्मा आज विद्रोह कर रही थी। गवाहों के बयान होने के बाद अदालत उठ गई। अगली पेशी की तारीख़ चार दिन बाद रक्खी गई। बाज़ार के दूकानदार मोती के पास आकर कह रहे थे—"घबराना नहीं, भैरों पर आँच न आएगी। हम सब अपनी जान लड़ा देंगे; जैसे भी होगा, उसे बचाएँगे।"

मोती मानो कुछ सुन ही नहीं रहा था। वह जाने क्या सोचता हुआ घर लौट आया।

(७)

पेशी की अगली तारीख़ आने के पहले ही मोती ने अपने सब वकीलों को मना कर दिया कि कोई अदालत में न जाय। वकीलों के पूछने पर उसने कहा—"मेरे पास और फ़ीस देने का इंतज़ाम नहीं।" वकील घर बैठ रहे। बिना मेहनताना मिले जाता ही कौन, और किसलिये?

और, मोती? वह ख़ुद भी अगली पेशी में अदालत नहीं गया।

भैरों की आँखें उसे खोजती रह गईं—इंतज़ार करते-करते थक गईं, और अंत में उसे निराशा हुई। एक दूकानदार से उसने पूछा—"बापू कहाँ हैं? आए नहीं?"

दूकानदार ने जवाब दिया—"तबियत ठीक नहीं, इसी से नहीं आ सके।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भैरों ने एक ठंडी साँस ली।

तीसरी पेशी एक सप्ताह बाद पड़ी—मोती फिर भी ग़ैरहाज़िर।

मुलज़िम का कोई वकील भी नहीं। पैरवी कौन करे?

भैरों से पूछा गया, वह कुछ न कह सका। मुक़दमा उसके बिलकुल ख़िलाफ़ जा रहा था। ख़ून और दंगा करने का जुर्म उस पर साबित हो गया। फ़ैसला सुनाने की तारीख़ मुक़र्रर हो गई। भैरों की बेचैनी कौन जाने। वह सोच रहा था—बापू क्यों नहीं आए। जेल में वह सारी रात नहीं सोता था। बापू को क्या हुआ, यही सोचा करता था। कोई उसे बतानेवाला न था।

दिन बीतने लगे। जब अगले दिन फ़ैसले की तारीख़ आई, तब उसी रात को बाज़ार के दो-तीन दूकानदार मोती के पास पहुँचे। मोती अपनी दूकान बंद करके कोठरी में चारपाई पर पड़ा करवटें बदल रहा था। दूकानदारों को देखकर वह उठ बैठा, और बोला—"कैसे आना हुआ आप लोगों का?"

पड़ोस की कपड़े की दूकान के मालिक लाला दुनीचंद बोले—"चौधरी! तुम्हें हो क्या गया है? कल फ़ैसला सुनाया जायगा। बेटे की जान पर आ बनी है, और तुम जाते ही नहीं? कोई वकील भी नहीं जाता पैरवी करने? यह बात क्या है?"

मोती ने एक ठंडी साँस लेकर कहा—"लालाजी, राम करे, सो होय। मैं बूढ़ा आदमी क्या करूँ, क्या न करूँ—जो कुछ कमाई थी, एक पेशी में वकीलों को दे चुका, अब मेरे बस की बात नहीं।"

दूसरे दूकानदार लाला घासीराम ने कहा—"फिर भी मोती! तुमने लड़के की ममता त्याग दी है क्या? कम-से-कम अदालत में तो आते। हम लोगों ने तुमसे कहा ही था कि जो कुछ हो सकेगा, मदद करके तुम्हारे मुक़दमे की पैरवी कराएँगे, मगर तुम ख़ुद ही न आए। अब बताओ, हमार क्या दोष?"

तीसरे सेठ घनश्यामदास बोले—"बूढ़े की मति मारी गई है भैया! इसे होश नहीं अभी। जब लड़का फाँसी चढ़ जायगा, तब आँखें खुलेंगी। जवान बेटे की मौत—राम रे राम! यह तो घुल-घुलकर मर जायगा उसके बिना—एक दिन नहीं जी सकता। अभी तो जैसे कान में तेल डाले बैठा है।"

लाला दुनीचंद ने कहा—"भैया चौधरी! क्या सोचा है तुमने? कुछ कहो तो? हमें बताओ, सो करें।"

मोती बोला—"लालाजी! परमात्मा आपको अच्छा रक्खे। मैं क्या बताऊँ, भैरों की जान को कुछ हो गया, तो मैं भी चार दिन का मेहमान हूँ, बस।"

सेठ घनश्यामदास कुछ क्रोध से बोले—"यह सब तो दुनिया जानती है, मगर चलनी में गाय दुहकर करम को दोष क्यों देते हो? अदालत तक जाने में भी तुम्हारे पाँव में मेहँदी लगी थी क्या? हाकिम के आगे कुछ रोते, गिड़गिड़ाते, उसे भी रहम आता, वही कुछ करता तुम्हारे लिये। दया-धर्म सबके मन में होता है, मगर कोई कहनेवाला तो हो।"

लाला घासीराम ने अँगौछे से मुँह पोछते हुए कहा—"भला, देखो तो इनकी अक़्ल को, मुक़दमा हो रहा है, और आप घर में पड़े हैं मुँह छिपाए। सुना जी! तुम्हारा भैरों क्या कहता होगा मन में?"

मोती के हृदय के तारों को छू दिया किसी ने—भैरों क्या कहता होगा मन में? सचमुच वह बेचारा क्या सोचता होगा?

मोती चारपाई पर उठकर बैठ गया। उस पर एक बेचैनी-सी छा गई। वह घबराकर बोला—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"लाला साहब ! यह जो जज साहब हैं, इनका बँगला किस जगह है ?"

लाला घासीराम ने जवाब दिया—"मुझे तो मालूम नहीं, अभी हाल में ही आए हैं। तुम्हें मालूम है लाला दुनीचंद ?"

लाला दुनीचंद बोले—"ठीक नहीं कह सकता, मगर छावनी में कहीं रहते हैं।"

मोती ने याद कर लिया—छावनी में कहीं रहते हैं। फिर उसने पूछा—"फ़ैसले की तारीख़ कल है न ?"

सेठ घनश्यामदास बोले—"हाँ-हाँ, कल है भैया ! जाओ, जज साहब के ही पैरों पड़ो, शायद कुछ हो जाय।"

मोती ने उठकर जल्दी से खूँटी पर टँगा हुआ कुरता पहना, टोपी सिर पर रक्खी, और लाठी उठाकर चलने लगा। सब लोग साथ-साथ बाहर निकले। दूकान में ताला लगाकर मोती उनके साथ बाज़ार में आया। लाला दुनीचंद ने सेठ घनश्यामदास से कहा—"भाई साहब ! आपका ताँगा तो है न ? आप घर पर उतर जायँ रास्ते में। ताँगे पर चौधरी को भेज दें, नहीं तो कहाँ भटकते फिरेंगे यह ?"

सेठ घनश्यामदास ने कहा—"हाँ-हाँ, मैं भेज दूँगा ताँगे पर इन्हें—चलो भाई।"

सेठजी ताँगे पर जा बैठे। आगे की सीट पर मोती बैठ गया। ताँगा चल दिया। बड़ी ठंडी हवा चल रही थी बाहर, मगर मोती के हृदय में एक उष्णता से भरी हुई आँधी उठ रही थी।

(८)

कमरे में लगी हुई दीवार-घड़ी में टन-टन-टन करके ग्यारह बजे।

जज साहब ने आराम-कुरसी से उठते हुए कहा—"भीखू ! मुझे अफ़सोस है मैं इस मामले में कुछ नहीं कर सकता। तुम्हारा लड़का गुनहगार है, उसके ख़िलाफ़ काफ़ी सुबूत गुज़र चुके। उसे मैं बचा नहीं सकता। अब तुम मुझे इतना बतला दो कि मेरे लालजी को तुमने कहाँ रक्खा है ?"

मोती के शरीर में रोनेवाली भीखू की आत्मा लौट आई। वह बोला—"ख़ूब ! जज साहब ! अपनी बात फिर से दुहरा लीजिए—याद रखिएगा, जो कुछ आपने कहा है। मेरे बेटे को आप फाँसी चढ़ाने जा रहे हैं, और आपके बेटे का पता मैं आपको बता दूँ ?"

जज साहब ने मोती की ओर देखा। मोती की आँखों में अदम्य अभिमान था, एक ललकार थी, संघर्ष के लिये आमंत्रण था।

जज साहब बोले—"भीखू ! भावी नहीं टल सकती। मेरी लाचारी पर ग़ौर करो। मुझे बड़ा दुख है कि मैं तुम्हारे भैरों को बचा नहीं सकता, मगर तुम मेरे बच्चे को मुझे वापस दे सकते हो। तुम कह चुके हो, वह ज़िंदा है। मुझ पर दया करो भीखू।"

मोती उठ खड़ा हुआ—सीधा तनकर। उसने एक उपेक्षा की दृष्टि जज साहब पर डालते हुए उत्तर दिया—"जज साहब ! इंसाफ़ की कुरसी पर बैठकर भी आप इंसाफ़ किसे कहते हैं, शायद यह भी नहीं जानते। एक नामुमकिन तजवीज़ मेरे सामने रखते हुए आपको शर्म नहीं आती ? दया की भीख माँगते वक़्त दया दिखाना नहीं आता आपको। आदमियत के यही माने हैं जज साहब ?"

जज साहब की अधिकारी-प्रवृत्तियाँ जाग उठीं। उन्होंने ज़ोर से कहा—"बस, ख़ामोश। नामुमकिन को भी मुमकिन बनाना मेरे हाथ में है, यह शायद तू नहीं जानता। मैं यहाँ का सेशन-जज हूँ, तुझे ज़िंदगी-भर के लिये काल-कोठरी में डलवा सकता हूँ। मेरे बेटे को चुराकर तू मुझ पर रोब जमाने आया है आज ? इतनी हिम्मत तेरी ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखूँ, तू कैसे निकलकर जाता है मेरे बँगले से अब ?"

मेज़ पर रक्खी हुई घंटी बड़े ज़ोर से बज उठी। ऊँघता हुआ चौकीदार भीतर आकर बोला—"हुज़ूर ! क्या हुक्म है ?"

जज साहब ने चौकीदार के हाथ की बंदूक़ की ओर देखा, फिर मोती के चेहरे की ओर। मोती हाथ बाँधे पत्थर की तरह दीवार के सहारे खड़ा था।

जज साहब ने मोती की तरफ़ इशारा करके चौकीदार से कहा—"इस आदमी को बाहर न जाने देना कोठी से, समझा। अगर किसी क़िस्म की बदमाशी करे, या भागे, तो बेशक गोली मार देना। मैं देख लूँगा। जाओ।"

सलाम करके चौकीदार चला गया।

मोती धीरे से बोला—"जज साहब ! मैं अब बूढ़ा हुआ, यों ही मौत का मेहमान बना बैठा हूँ। मुझे आप नाहक़ धमकाते हैं। मैं न जाऊँगा, यहीं बैठा हूँ। कर लीजिए, जो मन में आए। मगर याद रखिए, उधर आपने मेरे भैरों को फाँसी दिलाई, और इधर आपके लालजी का पता ज़िंदगी-भर आपको न लगेगा। मेरा क्या—मुझे तो आप चाहे बोटी-बोटी कटवाकर मरवा डालें। मेरी ज़बान खुलने की नहीं।"

मोती की बात सुनकर जज साहब बड़ी बेचैनी से कमरे में टहलने लगे। उनके माथे पर पसीने की बड़ी-बड़ी बूँदें झलकने लगीं।

भीखू—उनका नौकर भीखू—आज मानो उनका मालिक बन बैठा था। कोई युक्ति उनकी समझ में न आती थी।

आराम-कुरसी पर फिर बैठते हुए वह बोले—"अच्छा, मैं अगर तुम्हारे लड़के भैरों को छोड़ दूँ ?"

मोती ने हँसकर कहा—"इसका पता तो कल अदालत उठने पर लगेगा। अभी कैसे मान लूँ ?"

"मेरे कहने का तुम्हें यक़ीन नहीं ?"

"यह तो मैंने नहीं कहा।"

"मेरी बात का तुम्हें विश्वास नहीं भीखू ?"

"यह कौन कहता है कि आपकी बात का विश्वास नहीं ?"

"फिर, तुम चाहते क्या हो ?"

"जज साहब ! 'अंधा आँखों देखे, तब पतियाय।' आप बड़े आदमी हैं, मैं छोटा हूँ—एकदम अपढ़, जाहिल, गँवार, मगर कुछ-कुछ समझ रखता हूँ। आप जो कुछ सोच रहे हैं, वह नहीं होने पाएगा।"

जज साहब ने झुँझलाकर अपने दोनो हाथ कुरसी पर पटक दिए और बोले—"बदमाश कहीं का !"

मोती हँसकर बोला—"यह तो खुला सौदा है जज साहब ! मैं बदमाश हूँ, लुच्चा हूँ, लफंगा हूँ, मगर आपकी हज़ार मर्तबा ग़रज़ पड़े, तो मेरी शर्त पर सौदा करें। मैं आपको मजबूर तो नहीं करता।"

जज साहब कुरसी से उठे। आलमारी में रक्खी हुई सुराही से गिलास में पानी उँडेला, और पी गए। फिर कमरे में टहलने लगे।

उनके आगे कठिन समस्या थी। वह कुछ सोचने लगे—मोती के सामने एक कुरसी रक्खी थी। उस पर जा बैठे। उन्होंने कहा—"भीखू ! तुम ऐसे तो न थे ? मेरी नौकरी की है तुमने, मेरा नमक खा चुके हो, तुमने मेरे बच्चे को चुराया, भाग गए। आज तुम्हें सामने पाकर भी मैंने कुछ न कहा—मैंने अपने ग़ुस्से को ज़ब्त किया। मेरा व्यवहार देखो, और अपना। क्या तुम्हें यही मुनासिब है ?"

जज साहब की आवाज़ में नरमी आ गई थी।

मोती ने सुना—सब कुछ सुना, मगर हृदय की सभी कोमल भावनाओं पर पत्थर रखकर वह बोला—"हुज़ूर ! आप जैसे पहले मेरे मालिक थे, वैसा ही आज भी आपको मानता हूँ, मगर भीखू अब वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भीखू नहीं रहा। जब वह भीखू था, तब आपने उसे तनख़्वाह के पैसे माँगने पर मारते-मारते अधमरा कर डाला। पैसे की तंगी से भीखू का बड़ा बेटा हरिया बिना दवा-दारू और दूध के तड़फ-तड़फकर मर गया। पैसे की तंगी से भीखू की घरवाली, घुल-घुलकर दो महीने बाद, मर गई। अभागा भीखू दर-दर की ठोकरें खाता फिरा किया, और अठारह साल के बाद—भीखू की बची-बचाई उम्मीद, उसकी एक ही संतान भैरों—उसे भी आप मौत के हवाले कर देने का पक्का इरादा कर चुके हैं। फिर भीखू कैसे भीखू बना रह सकता है। वह तो मोती दूकानदार बनकर आपसे बातें कर रहा है।"

जज साहब चुपचाप सुनते रहे। उनकी ज़बान बंद थी। मोती कहता गया—"और, जज साहब! आपके बेटे लालजी को मैंने पाल-पोसकर बड़ा किया। ख़ुद रूखा-सूखा खाकर उसे दूध-जलेबी खिलाई, अच्छे-से-अच्छा पहनाया। अपने बेटे से बढ़कर उसे माना। वह मुझे ही अपना बाप समझता है। आपको देखकर के भी, आपके हज़ार कहने पर भी वह आपको न पहचानेगा, हरगिज़ न पहचानेगा। जब तक मैं न बतलाऊँ कि आप उसके पिता हैं, आप लालजी का पता पाकर भी उसे अपना नहीं बना सकेंगे। आपसे कोई हमदर्दी उसे न होगी। अपनी समझ और दुनिया की निगाहों में वह मोती दूकानदार का लड़का है।"

मोती ने देखा—जज साहब की आँखों में आँसू आ गए। वह ज़ोर-ज़ोर से कहने लगा—"सोचिए ज़रा—कैसी कठिन बात है, आप अपने बेटे को पाकर भी उसे अपना नहीं बना सकेंगे—बग़ैर मेरी मदद के। बग़ैर भीखू की मदद के। फिर उसी भीखू के साथ आप कैसा अच्छा बर्ताव कर रहे हैं। उसे अपने घर आया हुआ पाकर उस पर चौकीदार बिठा दिया है। कल के दिन उसी भीखू के लड़के को आप फाँसी की सज़ा देने जा रहे हैं। आपके सीने में भी बाप का दिल है? लालजी के लिये जितनी ममता उसमें है, उतनी ही भीखू के दिल में भी उसके भैरों के लिये है। इंसाफ़ से सोचिए जज साहब! भीखू सच कहता है या नहीं?"

मोती चुप हो गया।

जज साहब की सारी देह काँप रही थी। वह अचानक कुर्सी से उठे, और मोती के पैरों पर गिरने चले। मोती ने उन्हें बीच ही में सँभालते हुए कहा—"क्या करते हैं—क्या करते हैं मालिक! अरे नहीं-नहीं!"

जज साहब ने मोती को अपनी छाती से लगा लिया, और बोले—रोते हुए—"भीखू! तुम जीते, मैं हार गया। मेरी इज़्ज़त तुम्हारे हाथ है।"

मोती की आँखों में भी आँसू आ गए। उसने कहा—"ऐसा न कहिए सरकार! मैं ग़ुलाम हूँ आपका—मुझे माफ़ कीजिए।"

(६)

अगले दिन फ़ैसला सुनाया गया—भैरों बेगुनाह है, पठानों के सिवा और कोई गवाह उसके ख़िलाफ़ नहीं। एकतरफ़ा गवाही मानने का क़ानून नहीं, जब तक उसका समर्थन न हो। भैरों छोड़ दिया जाता है। पठानों पर मुक़दमा चलाया जायगा दंगा करने के जुर्म में।

छूटते ही भैरों दौड़कर मोती से लिपट गया।

दोनों के हर्ष की सीमा न थी। बाज़ार के सारे दूकानदार प्रसन्न थे। सब यही कह रहे थे कि मोती ने जज साहब पर जाने कौन-सा जादू कर दिया।

उसी रात को—

मोटर भेजकर जज साहब ने मोती और भैरों को अपने यहाँ बुलवाया। दोनों अपने अच्छे-से-अच्छे कपड़े पहनकर जा पहुँचे।

मोती ने उस दिन भैरों के बाल बनवाए थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक रेशमी कुरता, बारीक धोती, पेटेंट का जूता, रेशमी रूमाल और फ़ेल्ट टोपी उसे ले दी थी। भैरों जब लाठी लेकर चलने लगा, तब मोती ने उसे रोक दिया।

भीतर से आकर जज साहब ने मोती और भैरों को देखा। बोले—"आओ, कमरे में चले आओ। वहाँ क्यों खड़े हो?"

दोनो अंदर चले गए, और फ़र्श पर बैठने लगे। कुरसियों की ओर संकेत करके जज साहब ने कहा—"इधर बैठ जाओ।"

दोनो चुपचाप खड़े रहे। मोती ने भैरों से कहा—"बैठ जाओ, जज साहब कह रहे हैं।"

भैरों डरता-डरता कुरसी की ओर देखने लगा, मगर बैठा नहीं।

जज साहब ने कहा—"भीखू! तुम बैठो न?"

मोती अब तो एकदम भीखू बन गया। बोला—"सरकार! इन्हें बिठाइए। येहो आपके……"

जज साहब की आँखें भैरों की ओर उठ गईं। वह टकटकी लगाए उसे ध्यान से देखते रहे, फिर ज़ोर से बोले—"लालजी! बेटा!"

दौड़कर उन्होंने बेटे को छाती से लगा लिया।

भैरों चकरा गया—मामला क्या है?

मगर जब जज साहब की आँखों के गरम-गरम आँसू उसके कंधे पर गिरे, तब अनायास ही अपनी बाँहें फैलाकर वह उनसे लिपट गया। सत्य प्रकट हो गया था। भीखू पीठ फेरकर खड़ा हुआ सिसक-सिसककर रो रहा था। कुछ देर बाद भैरों ने उधर देखकर कहा—"बापू!"

धोती के छोर से अपनी आँखें पोंछते हुए भीखू ने घूमकर उसकी ओर देखा।

भैरों ने अपनी दृष्टि जज साहब पर डाली, फिर भीखू की ओर देखा। भीखू बोला—"हाँ बेटा! तुम्हारे पिता यही हैं। मैं तो इनका नौकर हूँ। तुम भैरों नहीं, लालजी हो इनके।"

जज साहब ने आगे बढ़कर भीखू के दोनो हाथ अपने हाथों में लेकर कहा—"भीखू!"

भीखू ने उत्तर दिया—"सरकार!"

दोनो इसके आगे कुछ न कह सके।

❀ ❀ ❀

और फिर, उसी रात को—लगभग तीन घंटे बाद—जज साहब के बँगले से निकलकर वह सड़क पर आया। उसने घूमकर एक बार उस बँगले की ओर अपनी आँखें उठाईं, फिर एक ठंडी साँस ली।

मुँह फेरकर चुपचाप सिर नीचा किए हुए रास्ते पर वह चलने लगा। उसकी हालत ऐसी थी, जैसे कोई किसी को बरसों की रक्खी लाखों की धरोहर सौंपकर ख़ाली हाथ वापस लौट रहा हो।

सड़क पर वह अकेला चला जा रहा था।

वह एक आदमी था! हाँ, आदमी!!

भावनाओं के सागर को मथकर उसकी प्रतिभा ने क्या दिया?—मानवता की

अमृत

सजीव, मर्मस्पर्शी, स्पष्ट और सारगर्भित कहानियों का संकलन!
छप रहा है! शीघ्र प्रकाशित होगा!! सजिल्द १॥), सादी १)

ले० 'अरुण' बी० ए०

मैनेजर गंगा-ग्रंथागार, ३६, लाटूश रोड, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामाजिक अवसरों पर

आगतों का स्वागत करने में कुशल, **श्रीमती श्रीवास्तव** का कथन है : "अपने अनुभव से मैं जानती हूँ कि कैसा भी अवसर हो, भारतीय चाय आदर्श पेय है।" चाय की लोकप्रियता का यह कैसा ज्वलन्त उदाहरण है। भारतके सामाजिक जीवन में चाय ने जो खास स्थान ग्रहण कर लिया है, यह उसका भी प्रमाण है। सचमुच, किसी भी विशेष अवसर या त्योहार को सफल बनाने के लिये, चाय पिलाना अत्यन्त आवश्यक है। व्यवहार-कुशल बननेके लिये अपने आगत अभ्यागतों को भारतीय चाय पिलाइये।

सम्भ्रान्त व्यक्ति सर्वदा भारतीय चाय पीते हैं

इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित

IK 128 S

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरानी पुस्तकों के नवीन संस्करण

दुलारे-दोहावली

लेखक, सुधा-संपादक पं० दुलारेलाल भार्गव। ब्रजभाषा-साहित्य की वर्तमान सर्वोत्तम कृति। इसमें पं० लोकनाथ सिलाकारी की विस्तृत भूमिका और दो सौ से ऊपर चुने हुए दोहे हैं। मूल्य १), १॥)

बिहारी-रत्नाकर

[तृतीयावृत्ति]

महाकवि बिहारी की जगत्प्रसिद्ध सतसई पर हिंदी-भाष्य। भाष्यकार स्व० 'रत्नाकर'जी। मूल्य सजिल्द ५)

हृदय की प्यास

[द्वितीयावृत्ति]

आचार्य चतुरसेन की अनुपम कृति। मित्रता के लक्षण, सौंदर्य की विषमता, आधुनिक शिक्षा से उत्पन्न सौंदर्योपासना आदि का जीता-जागता चित्र। ६ रंगीन और सादे चित्रों से सुशोभित उपन्यास। मूल्य २), सजिल्द २॥)

गोरी

[द्वितीयावृत्ति]

इस उपन्यास में श्रीरमाशंकर सकसेना ने विलायत में गए भारतीय विद्यार्थियों के चरित्र-पतन का आँखों-देखा वर्णन किया है। लंदन-रहस्य से भी अधिक मनोरंजक। मूल्य १), सजिल्द १॥)

लिली

[द्वितीयावृत्ति]

'निराला'जी की चमत्कार-पूर्ण, सुंदर, काव्यमय श्रेष्ठ कहानियाँ। मूल्य १), सजिल्द १॥)

अक्षत

[द्वितीयावृत्ति]

आचार्य चतुरसेन शास्त्री की ८ अमर कहानियाँ। मन को उन्मत्त करके मोर की भाँति नचानेवाले भाव-पूर्ण चित्रण। मूल्य १), सजिल्द १॥)

निठल्लू की राम-कहानी

[द्वितीयावृत्ति]

श्रीपरिपूर्णानंदजी की हास्य-रस-पूर्ण लेखनी का चमत्कार। हँसते-हँसते आप लोट-पोट हो जायँगे। मूल्य ॥), सजिल्द १)

सुघड़ चमेली

[पंचमावृत्ति]

स्वर्गीय पं० रामजीदास भार्गव की सुंदर कृति। आप अपनी लड़कियों को इसे अवश्य पढ़ाइए। सचित्र पुस्तक का मूल्य ⁻), सजिल्द =)

खिलवाड़

[चतुर्थावृत्ति]

पं० भूपनारायण दीक्षित की सरल कहानियों और अनूठी कविताओं का संग्रह। बालोपयोगी २८ चित्र। मूल्य =), सजिल्द ।)

कर्मयोग

[द्वितीयावृत्ति]

आत्मविद्या की विशेषज्ञा श्रीमती ओहण्णुहारा की 'Practical Yoga'-नामक पुस्तक का अनुवाद। अनुवादक, श्रीसंतराम बी० ए०। मू० ॥), स० १)

लबड़धोंधों

[तृतीयावृत्ति]

हास्य-रस के अद्वितीय लेखक स्वर्गीय पं० बदरीनाथ भट्ट की अनुपम कृति। न हँसनेवाले को हँसाकर लोटन-कबूतर कर देनेवाली पुस्तक। सचित्र। मूल्य ॥), सजिल्द १)

योग की कुछ विभूतियाँ

[द्वितीयावृत्ति]

योगी रामचारक-लिखित 'Fourteen lessons In Yogi Philosophy and Oriental Occultism' का हिंदी-अनुवाद। अनु०, ठा० प्रसिद्धनारायणसिंह बी० ए०। मूल्य ॥), सजिल्द १)

विश्व-साहित्य

[द्वितीयावृत्ति]

इस पुस्तक में सरस्वती-संपादक श्रीपदुमलाल-पुन्नालाल बख़्शी बी० ए० ने अंताराष्ट्रीय साहित्य के प्रत्येक अंग की सुबोध व्याख्या की है। साहित्य-सम्मेलन की उत्तमा-परीक्षा में पाठ्य-ग्रंथ। मूल्य १॥), सजिल्द २)

हिंदी

[तृतीयावृत्ति]

स्व० पं० बदरीनाथजी भट्ट के विद्वत्ता-पूर्ण निबंधों का संग्रह। शिक्षा-विभागों द्वारा स्वीकृत पाठ्य-पुस्तक। मूल्य ॥), सजिल्द १=)

कृषि-मित्र

[द्वितीयावृत्ति]

कृषि-संबंधी सभी आवश्यक विषय इसमें सरल, सुंदर भाषा में समझाए गए हैं। प्रत्येक किसान को इसे अवश्य देखना चाहिए। लेखक, पं० गंगाप्रसाद पांडेय। मूल्य ।⁻), सजिल्द ।=)

क्यों और कैसे ?

[द्वितीयावृत्ति]

भूकंप क्यों आता है, पेड़ से फल क्यों नीचे गिरता है आदि वैज्ञानिक विषयों का मनोरंजक वर्णन। बच्चे बड़ी सुगमता से समझ लेंगे। लेखक, श्रीनारायणप्रसाद अरोड़ा बी० ए०। मूल्य ।), सजिल्द ।=)

गंगा-ग्रंथागार, ३६, लाटूश रोड, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वर्गीया 'चकोरी'जी की

अमर कृतियाँ

किंजल्क

[द्वितीयावृत्ति]

लेखिका, स्वर्गीया रामेश्वरीदेवी 'चकोरी'। हिंदी-साहित्य में वर्तमान काल में तीन ही सर्वश्रेष्ठ कवयित्रियाँ हैं—श्रीमती महादेवी वर्मा, श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान और 'चकोरी'-जी। 'चकोरी'जी ने अपना एक स्थान बना लिया है। किंजल्क में 'चकोरी'जी की सुंदर कविताओं का संग्रह है। सभी कविताएँ सरल और सरस हैं। काव्य की दृष्टि से पुस्तक सभी भाँति उपयोगी है। छपाई सुंदर। मूल्य ॥), सजिल्द १)

मकरंद

लेखिका, स्वर्गीया श्रीमती रामेश्वरीदेवी 'चकोरी'; संकलनकर्ता, श्रीयुत 'अरुण' बी० ए०। हिंदी-साहित्य में 'चकोरी'जी की रचनाओं को कितना उच्च स्थान मिला, इसे सभी काव्य-प्रेमी जानते हैं। इस प्रतिभाशालिनी कवयित्री की रचनाओं का यह दूसरा संग्रह 'किंजल्क' से भी बढ़कर लोक-प्रिय बनेगा। कविताएँ उपयोगी हैं। छपाई सुंदर। मूल्य सादी ॥=), सजिल्द १=)

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर-वधुओं का पथ-प्रदर्शन करनेवाला अमूल्य साहित्य

१—दांपत्य जीवन

लेखक, श्रीरामनारायण 'यादवेंदु' बी० ए०, एल्-एल्० बी०। यह नवविवाहित दंपतियों को आनंद देनेवाली अद्वितीय पुस्तक है। इस ग्रंथ में विवाह के उपरांत के गहन प्रश्न—आलिंगन, चुंबन तथा सहवास आदि—पर बहुत ही मार्मिक एवं वैज्ञानिक विवेचन किया गया है। वैवाहिक जीवन को संसार में स्वर्ग बनानेवाली यह राष्ट्र-भाषा में केवल एक ही पुस्तक है। मूल्य सादी १), सजिल्द १॥)

२—काम-विज्ञान

रचयिता, उदीयमान लेखक पंडित दीनानाथ व्यास विशारद। इस विषय पर हिंदी-भाषा में इने-गिने ग्रंथ हैं, किंतु उनमें वैवाहिक समस्याओं को समझाने की चेष्टा तक नहीं की गई। वैवाहिक शिक्षण, विषय का नैतिक धरातल, वैषयिक उत्कंठा, दांपतिक साम्य, सच्चा वैवाहिक जीवन आदि इसकी प्रमुख विशेषताएँ हैं। मूल्य सादी १), सजिल्द १॥)

३—फूलों की सेज

लेखक, श्रीविजयबहादुरसिंह बी० ए०। इस अपूर्व पुस्तक में वयस्क युवक-युवतियों एवं नव-विवाहित वर-वधुओं के हित की बातों का बड़ा ही मार्मिक वर्णन हुआ है। इसके मुख्य-मुख्य विषय ये हैं—यौवन, स्त्री-पुरुष के कर्तव्य, स्तन, ऋतु-धर्म, शय्या, समागम, अप्राकृतिक गमन, ऋतु-बाधा, प्रदर, हिस्टीरिया, वीर्य और आर्तव, गर्भाधान, वंध्यात्व, गर्भावस्था-समय, गर्भ रहने के लक्षण, दौर्हृद, गर्भ-स्राव और गर्भ-प्रसव इत्यादि। पुस्तक तरुणियों के लिये जीवन-प्रदीप है। इसमें अश्लीलता, अभद्रता एवं कामासक्तता का लेश-मात्र भी समावेश नहीं। मूल्य सादी २), सजिल्द २॥)

४—आदर्श पत्नी अर्थात् इंदिरा के पत्र

लेखक, श्रीरामनारायण 'यादवेंदु' बी० ए०, एल्-एल्० बी०। इस पुस्तक में नारी-हृदय और पुरुष-हृदय की ऐसी रहस्यमयी बातें बतलाई हैं कि जिनके समझे बिना दांपत्य विवाहित जीवन सुखी नहीं बन सकता। इसमें केवल-मात्र सिद्धांतों (Theories) का विवेचन नहीं है, प्रत्युत क्रियात्मक रूप से प्रत्येक विषय पर प्रकाश डाला गया है। पुस्तक सर्वथा शिष्ट, संयत और सुंदर भाषा में लिखी गई है। मूल्य १), सजिल्द १॥)

५—सुखी जीवन

लेखक, आचार्य श्रीचतुरसेन शास्त्री। प्रस्तुत पुस्तक में आचार्यजी ने अधिकार-पूर्ण सिद्धांतों का प्रतिपादन किया है। स्त्रियों का बचपन, उनका गार्हस्थ्य जीवन, उनकी तंदुरुस्ती आदि विषयों की जानकारी प्राप्त कर लेने पर स्त्रियाँ अपना जीवन निस्संदेह सुख-पूर्वक बिता सकती हैं। मूल्य सादी ॥), सजिल्द १)

मिलने का पता—गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय लिपियों की एकता एवं उनका एकीकरण

[डॉ० दुर्गादत्त गंगाधर ओझा बी० एस्-सी०, एम्० बी०, बी० एस्०]

तिक सृष्टि अत्यंत अस्थिर और परिवर्तनशील है। एक से अनेक की उत्पत्ति और अनेक से एक का निर्माण सृष्टि के प्रधान गुण और प्रतिदिन की घटनाएँ हैं। प्रत्येक धर्म-ग्रंथ में यही कथा है। समस्त वैज्ञानिक प्रयोग-फल इसी सत्य का निर्देश करते हैं। आकाश - मंडल के नक्षत्रगण इसी ज्योति का प्रकाश झलकाते हैं। पृथ्वी पर प्रत्येक दृश्य इसी सार की स्मृति दिलाता है। यही नहीं, बल्कि एकता में शक्ति है, अनेकता में दौर्बल्य ; एकता में समृद्धि है, अनेकता में पतन ; एकता में शांति है, अनेकता में विद्रोह। एक सत्य और आदि ज्योति है। अनेक माया-प्रपंच है, और दूरस्थ, अदृष्ट ज्योति का किरण-गुच्छ-मात्र। प्रत्येक व्यावहारिक अथवा वैज्ञानिक कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिये वास्तविक एक सार तत्त्व समझ लेने की अत्यंत आवश्यकता है। अनेक एक का कृत्रिम विश्लेषित स्वरूप है। एक अनेक की पुनः संयोजित आदि रूप-रेखा है। सृष्टि-रचना के पूर्व केवल-मात्र स्वयंभू एक था ; उस समय उसे जानने के लिये कोई न था। अब भी सृष्टि की अनेकरूपता में अज्ञात - रूपी एक समाया हुआ है। अस्तु।

वर्तमान भारतवर्ष में भी अनेक भाषाएँ एवं लिपियाँ कई शताब्दियों से प्रचलित हैं। भाषा के प्रश्न की पहेली अधिक महत्त्व-पूर्ण एवं प्रधान लक्ष्य होते हुए भी सुलझाने के समय इसका स्थान लिपि के बाद आता है। लिपियों पर विचार करने से पहले भाषा और लिपि के महत्त्व के विषय में जो भ्रम विद्यमान प्रतीत होता है, उसे दूर करना वांछनीय है। भाषा शायद प्राचीन संस्कृति और सभ्यता, धार्मिक और सामाजिक विशेषताओं, वृत्तियों एवं प्रवृत्तियों की परिचायिका एवं जाति का हृदय हो, अथवा जीवन-रूप आत्मा हो, किंतु लिपि का तो आत्मिक एवं मानसिक जगत् के साथ कोई संबंध नहीं, यह तो स्थूल जगत् की वस्तु है। लिपियाँ केवल निर्जीव संकेत-मात्र हैं। इन्हें तो सरल एवं सूक्ष्म होना चाहिए, न कि दीर्घ, विस्तृत, सुसज्जित एवं कठिन, जिन्हें याद करना, पढ़ना-लिखना और छापना एक तप बन जाय। यदि हममें सौंदर्य-प्रेम है—आकर्षक, सजे हुए अक्षर चाहिए, तो हम अपने मनोरंजन के लिये अनगिनत प्रकार की प्राकृतिक अथवा काल्पनिक वस्तुओं के सुंदर चित्र, अपनी रुचि के अनुसार, खींच सकते हैं। अकारण अपनी भावी संतति पर यह व्यर्थ का बोझ लादना कोई गौरवमय पैत्रिक संपत्ति नहीं समझी जा सकती। अध्ययन, लिखित व्यापार, राजकार्य और विचार-विनिमय आदि कठिन कार्यों के साधन सरल और सुलभ बनाने की अत्यंत आवश्यकता है, जिसमें मूल-उद्देश्य की पूर्ति न्यूनतम परिश्रम द्वारा हो सके। जब जीवन-विहीन लिपि जाति के आत्मोद्गारों, मनोभावनाओं, पूर्व-संस्कृति एवं अन्य विशेष प्रवृत्तियों के साथ कोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर-वधुओं का पथ-प्रदर्शन करनेवाला अमूल्य साहित्य

१--दांपत्य जीवन

लेखक, श्रीरामनारायण 'यादवेंदु' बी० ए०, एल्-एल्० बी०। यह नवविवाहित दंपतियों को आनंद देनेवाली अद्वितीय पुस्तक है। इस ग्रंथ में विवाह के उपरांत के गहन प्रश्न—आलिंगन, चुंबन तथा सहवास आदि—पर बहुत ही मार्मिक एवं वैज्ञानिक विवेचन किया गया है। वैवाहिक जीवन को संसार में स्वर्ग बनानेवाली यह राष्ट्र-भाषा में केवल एक ही पुस्तक है। मूल्य सादी १), सजिल्द १॥)

२--काम-विज्ञान

रचयिता, उदीयमान लेखक पंडित दीनानाथ व्यास विशारद। इस विषय पर हिंदी-भाषा में इने-गिने ग्रंथ हैं, किंतु उनमें वैवाहिक समस्याओं को समझाने की चेष्टा तक नहीं की गई। वैवाहिक शिक्षण, विषय का नैतिक धरातल, वैषयिक उत्कंठा, दांपतिक साम्य, सच्चा वैवाहिक जीवन आदि इसकी प्रमुख विशेषताएँ हैं। मूल्य सादी १), सजिल्द १॥)

३—फूलों की सेज

लेखक, श्रीविजयबहादुरसिंह बी० ए०। इस अपूर्व पुस्तक में वयस्क युवक-युवतियों एवं नव-विवाहित वर-वधुओं के हित की बातों का बड़ा ही मार्मिक वर्णन हुआ है। इसके मुख्य-मुख्य विषय ये हैं—यौवन, स्त्री-पुरुष के कर्तव्य, स्तन, ऋतु-धर्म, शय्या, समागम, अप्राकृतिक गमन, ऋतु-बाधा, प्रदर, हिस्टीरिया, वीर्य और आर्तव, गर्भाधान, वंध्यात्व, गर्भावस्था-समय, गर्भ रहने के लक्षण, दौर्हृद, गर्भ-स्राव और गर्भ-प्रसव इत्यादि। पुस्तक तरुणियों के लिये जीवन-प्रदीप है। इसमें अश्लीलता, अभद्रता एवं कामासक्तता का लेश-मात्र भी समावेश नहीं। मूल्य सादी २), सजिल्द २॥)

४—आदर्श पत्नी अर्थात् इंदिरा के पत्र

लेखक, श्रीरामनारायण 'यादवेंदु' बी० ए०, एल्-एल्० बी०। इस पुस्तक में नारी-हृदय और पुरुष-हृदय की ऐसी रहस्यमयी बातें बतलाई हैं कि जिनके समझे बिना दांपत्य विवाहित जीवन सुखी नहीं बन सकता। इसमें केवल-मात्र सिद्धांतों (Theories) का विवेचन नहीं है, प्रत्युत क्रियात्मक रूप से प्रत्येक विषय पर प्रकाश डाला गया है। पुस्तक सर्वथा शिष्ट, संयत और सुंदर भाषा में लिखी गई है। मूल्य १), सजिल्द १॥)

५—सुखी जीवन

लेखक, आचार्य श्रीचतुरसेन शास्त्री। प्रस्तुत पुस्तक में आचार्यजी ने अधिकार-पूर्ण सिद्धांतों का प्रतिपादन किया है। स्त्रियों का बचपन, उनका गार्हस्थ्य जीवन, उनकी तंदुरुस्ती आदि विषयों की जानकारी प्राप्त कर लेने पर स्त्रियाँ अपना जीवन निस्संदेह सुख-पूर्वक बिता सकती हैं। मूल्य सादी ॥), सजिल्द १)

मिलने का पता—गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय लिपियों की एकता एवं उनका एकीकरण

[डॉ० दुर्गादत्त गंगाधर ओझा बी० एस्-सी०, एम्० बी०, बी० एस्०]

तिक सृष्टि अत्यंत अस्थिर और परिवर्तनशील है। एक से अनेक की उत्पत्ति और अनेक से एक का निर्माण सृष्टि के प्रधान गुण और प्रतिदिन की घटनाएँ हैं। प्रत्येक धर्म-ग्रंथ में यही कथा है। समस्त वैज्ञानिक प्रयोग-फल इसी सत्य का निर्देश करते हैं। आकाश-मंडल के नक्षत्रगण इसी ज्योति का प्रकाश झलकाते हैं। पृथ्वी पर प्रत्येक दृश्य इसी सार की स्मृति दिलाता है। यही नहीं, बल्कि एकता में शक्ति है, अनेकता में दौर्बल्य; एकता में समृद्धि है, अनेकता में पतन; एकता में शांति है, अनेकता में विद्रोह। एक सत्य और आदि ज्योति है। अनेक माया-प्रपंच है, और दूरस्थ, अदृष्ट ज्योति का किरण-गुच्छ-मात्र। प्रत्येक व्यावहारिक अथवा वैज्ञानिक कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिये वास्तविक एक सार तत्त्व समझ लेने की अत्यंत आवश्यकता है। अनेक एक का कृत्रिम विश्लेषित स्वरूप है। एक अनेक की पुनः संयोजित आदि रूप-रेखा है। सृष्टि-रचना के पूर्व केवल-मात्र स्वयंभू एक था; उस समय उसे जानने के लिये कोई न था। अब भी सृष्टि की अनेकरूपता में अज्ञात-रूपी एक समाया हुआ है। अस्तु।

वर्तमान भारतवर्ष में भी अनेक भाषाएँ एवं लिपियाँ कई शताब्दियों से प्रचलित हैं। भाषा के प्रश्न की पहेली अधिक महत्त्व-पूर्ण एवं प्रधान लक्ष्य होते हुए भी सुलझाने के समय इसका स्थान लिपि के बाद आता है। लिपियों पर विचार करने से पहले भाषा और लिपि के महत्त्व के विषय में जो भ्रम विद्यमान प्रतीत होता है, उसे दूर करना वांछनीय है। भाषा शायद प्राचीन संस्कृति और सभ्यता, धार्मिक और सामाजिक विशेषताओं, वृत्तियों एवं प्रवृत्तियों की परिचायिका एवं जाति का हृदय हो, अथवा जीवन-रूप आत्मा हो, किंतु लिपि का तो आत्मिक एवं मानसिक जगत् के साथ कोई संबंध नहीं, यह तो स्थूल जगत् की वस्तु है। लिपियाँ केवल निर्जीव संकेत-मात्र हैं। इन्हें तो सरल एवं सूक्ष्म होना चाहिए, न कि दीर्घ, विस्तृत, सुसज्जित एवं कठिन, जिन्हें याद करना, पढ़ना-लिखना और छापना एक तप बन जाय। यदि हममें सौंदर्य-प्रेम है—आकर्षक, सजे हुए अक्षर चाहिए, तो हम अपने मनोरंजन के लिये अनगिनत प्रकार की प्राकृतिक अथवा काल्पनिक वस्तुओं के सुंदर चित्र, अपनी रुचि के अनुसार, खींच सकते हैं। अकारण अपनी भावी संतति पर यह व्यर्थ का बोझ लादना कोई गौरवमय पैत्रिक संपत्ति नहीं समझी जा सकती। अध्ययन, लिखित व्यापार, राजकार्य और विचार-विनिमय आदि कठिन कार्यों के साधन सरल और सुलभ बनाने की अत्यंत आवश्यकता है, जिसमें मूल-उद्देश्य की पूर्ति न्यूनतम परिश्रम द्वारा हो सके। जब जीवन-विहीन लिपि जाति के आत्मोद्गारों, मनोभावनाओं, पूर्व-संस्कृति एवं अन्य विशेष प्रवृत्तियों के साथ कोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संवेदना नहीं रखती, तो इसे खोने से जीवित जगत् को आत्मिक, मानसिक, सांस्कृतिक अथवा धार्मिक क्षति होने की कोई आशंका न होनी चाहिए।

भारतवर्ष की लिपियों की संख्या दर्जनों से लेकर सैकड़ों तक है। अतः यह स्वाभाविक ही है कि इनमें प्रत्येक की अपनी-अपनी विशेषता हो। यह कोई गुण नहीं, बल्कि एकमात्र हानिकारक मूल-विष-तत्त्व है। यदि सभी लिपियों की विशेषता नष्ट कर दी जाय, उन्हें दोष-रहित कर दिया जाय, तो किसी भी एक लिपि को हानि पहुँचेगी, यह कहना उचित न होगा। एकमात्र सर्व-प्रचलित लिपि स्थापित करना, जिसमें अन्य विशेषताएँ भी हों, किसी भी एक लिपि की दृष्टि से अहितकर न होगा। यह तथ्य सर्वमान्य है कि केवल अखिल भारतवर्ष ही नहीं, बल्कि नेपाल, तिब्बत, ब्रह्मा, लंका, मलय-प्रदेश, श्याम, जावा, बोरनियो, सुमात्रा, सेलीबीज और फ़िलीपाइंस में प्रचलित सब देशी (स्थानीय) लिपियों का उद्भव अशोक के समय की प्रचलित ब्राह्मी-लिपि अथवा उसी से प्रादुर्भूत एवं निकट रूप से संबंधित पाली-लिपि से सरल अथवा परोक्ष रूप में हुआ है। यही नहीं, चीन के उत्तर में कोरिया में प्रचलित लिपि प्रारंभिक भारतीय वर्णमाला के सदृश है, और संभवतः प्राचीन पाली अथवा तिब्बती शैली की लिपियों से विकसित हुई है। जापान में भी वर्तमान चीनी ढंग की लिपि का प्रचार होने से पहले कोरिया की लिपि-जैसी वर्णमाला प्रचलित थी। तो फिर इन सब लिपियों में एकता किन-किन बातों में है? निम्न-लिखित प्रधान हैं—

(१) उपर्युक्त सब लिपियों का मूल-उद्भव ब्राह्मी-लिपि-नामक एक ही लिपि से हुआ है। इस ब्राह्मी-लिपि का प्रचार ५०० वर्ष ईस्वी सन् पूर्व से ३५० वर्ष ईस्वी सन् तक रहा। यह लिपि सम्राट् अशोक के राज्य-काल (२६३ ई० स० पू० से २२३ ई० स० पू० तक) की प्रधान लिपि थी। दसवीं शताब्दी (ई० स०) तक भारतवर्ष की सभी वर्तमान प्रधान लिपियों की उत्पत्ति इस लिपि से हो चुकी थी।

इस विस्तृत ब्राह्मी-लिपि-कुटुंब की चार प्रधान शाखाएँ मानी जाती हैं—१. नागरी, २. द्राविड़, ३. पाली और ४. मलय। ये शाखाएँ मानव-परिवार-विज्ञान एवं भाषा-विज्ञान के अनुसार विभाजित प्रधान देश-जाति-भेदों के अनुरूप ही हैं। उदाहरणार्थ—नागरी अर्थात् उत्तरी भारत-शाखा की लिपियों का प्रचार भारतीय आर्यों में, द्राविड़-शाखा की लिपियों का उपयोग दक्षिणी भारत में, पाली-शाखा की लिपियों का प्रयोग बौद्ध-मतावलंबी ब्रह्मा, श्याम, पेगू आदि में और मलय-शाखा की लिपियों का विस्तार मलय-प्रदेश एवं एशिया के दक्षिण-पूर्व के द्वीप-समूहों में है।

अखिल भारतवर्ष की लिपियों का समावेश उपर्युक्त नागरी अर्थात् उत्तरी भारत एवं द्राविड़ अर्थात् दक्षिणी भारत-शाखाओं में हो जाता है। उत्तरी हिंदुस्थान की सभी लिपियों का प्रादुर्भाव ब्राह्मी-लिपि से सीधा हुआ है। इस शाखा की निम्न-लिखित लिपियाँ प्रधान हैं—देवनागरी, शारदा, टाकरी, गुरुमुखी, कैथी, गुजराती, मोड़ी, सिंधी, उड़िया, मैथिली और बँगला। इन लिपियों का ब्राह्मी-लिपि से प्रादुर्भाव होने से पहले तीसरी से दसवीं शताब्दी (ई० स०) तक कुछ मध्य श्रेणी की लिपियों का उत्तरी भारत में प्रचार रहा, जिनमें से गुप्त - लिपि (जिसका प्रचार गुप्त-काल में ई० स० की चौथी और पाँचवीं शताब्दी में रहा) और कुटिल - लिपि (जिसका उद्भव गुप्त-लिपि से हुआ, और जो ई० स० की छठी से नवीं शताब्दी तक प्रचलित रही, तथा जिससे प्राचीन आसाम-लिपि बहुत सादृश्य रखती है) विशेष उल्लेखनीय हैं। कुटिल - लिपि से ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्तमान देवनागरी और शारदा (काश्मीरी)-लिपियों का विकास हुआ। देवनागरी-लिपि का उपयोग दक्षिण-भारत में ई० स० की आठवीं शताब्दी के प्रारंभ से एवं उत्तर-भारत में इससे क़रीब दो शताब्दी बाद से हुआ। कैथी और गुजराती देवनागरी के ही किंचित् परिवर्तित रूप हैं। महाजनी और राजस्थानी की भाँति मोड़ी भी देवनागरी का एक लिखित घसीट रूप है। मोड़ी की शैली गुरुमुखी से मिलती-जुलती है, और गुरुमुखी देवनागरी तथा गुजराती के बीच की श्रेणी की प्रतीत होती है। शारदा का प्रचार काश्मीर और पंजाब के कतिपय भागों में ई० स० की आठवीं शताब्दी से हुआ। वर्तमान काश्मीरी और टाकरी-लिपियाँ इसी के विकसित और किंचित् परिवर्तित रूप हैं। टाकरी वस्तुतः त्वरा-लिखित शारदा ही है, एवं शारदा और गुरुमुखी की पारस्परिक समानता स्पष्ट ही है। सिंधी और मुलतानी इन्हीं तीन लिपियों की श्रेणी में आती हैं। बँगला का प्रादुर्भाव देवनागरी की पूर्वी शाखा से, ई० स० की दसवीं शताब्दी में, हुआ। इसी से नेपाली की उत्पत्ति हुई (ग्यारहवीं शताब्दी के बाद)। वर्तमान बँगला, जो आसाम में भी प्रचलित है, और मैथिल तथा उड़िया-लिपियाँ प्राचीन बँगला के ही विकसित और परिवर्तित रूप हैं। नेपाल में वस्तुतः चार प्रकार की लिपियाँ मिलती हैं, जिनमें से दो—नेवारी तथा बंजिन-मोला—क्रमशः देवनागरी और बँगला-लिपियों के ढंग की हैं, और दूसरी दो मध्य श्रेणी की। मैथिल (मिथिला अर्थात् तिरहुत के ब्राह्मणों के संस्कृत-ग्रंथों की लिपि) बँगला से वही सादृश्य रखती है, जो कैथी (बिहार में कायस्थ-समाज की लिपि, जिसके मिथिला, मागधी और भोजपुरी, तीन देश-भेद हैं) देवनागरी से। उड़िया की विशेषता उसे ताड़-पत्रों पर लोहे की क़लम से लिखने के फल-स्वरूप है। तिब्बत में भी चार लिपियों का प्रचार है, जिनमें से दो प्रधान हैं। तिब्बती अर्थात् उत्सेन अथवा ड्बूजम धार्मिक लिपि है, और उसके अधिकतर अक्षर ब्राह्मी-लिपि से आह्लादजनक साम्य रखते हैं। उमिन और चुगुगी इसी के व्यापारिक विभेद हैं, और क्रमशः अधिक घसीट रूप हैं। पस्सेपा-लिपि, ई० स० १२५३ में, बड़े लामा बश्पा ने तिब्बती से निकाली थी, और वह उसके साथ प्रायः एक रूप है। तात्पर्य यह कि सभी तिब्बत की लिपियाँ ब्राह्मी के सदृश हैं।

द्राविड़-शाखा अर्थात् दक्षिण-भारत की लिपियों में निम्न-लिखित प्रधान हैं—तेलुगु, कन्नड़ी, तामिल, ग्रंथ, तुलु और मलयालम्। ये दक्षिणी लिपियाँ चौथी शताब्दी (ई० स०) के बाद पश्चिमी गुफाओं (नासिक, कार्ली आदि) के शिला-लेखों के अक्षरों से, जो ब्राह्मी के ही परिवर्तित रूप हैं, विकसित हुईं। क्षत्रप और आंध्र-वंशी नरेशों के राज्य-काल के लेख इन्हीं लिपियों के अग्रगामी रूप हैं। प्राचीन मध्य-प्रदेशी लिपि (पाँचवीं से आठवीं शताब्दी ई० स० तक) ताम्र-लिपि होने के कारण चौकोर अक्षरों की बनी है, किंतु यह वस्तुतः है इसी शैली की। प्राचीन 'पश्चिमी' को (पाँचवीं से नवीं शताब्दी ई० स० तक) उत्तरी और दक्षिणी लिपियों के मध्य का स्थान मिल सकता है। वेंगी-वंशी नृपतियों के दान-पत्रों की कलिंग-लिपि का (७वीं से ११वीं शताब्दी ई० स० तक) महत्त्व इस बात में है कि इसके अध्ययन से स्पष्ट प्रकट होता है कि किस प्रकार पहले यह प्राचीन मध्य-प्रदेशी लिपि के सदृश और चौकोर अक्षरों की बनी थी, फिर क्रमशः उन अक्षरों में गोलाई आई, और अंत में उन पर देवनागरी, ग्रंथ और तेलुगु-लिपियों का सम्मिलित प्रभाव पड़ा।

तेलुगु और कन्नड़ी का विकास वेंगी और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चालुक्य-वंश के काल के शिला-लेखों की लिपियों से हुआ (५वीं से १४वीं शताब्दी ई० स० तक)। इसी प्रकार एक ओर महत्त्व-पूर्ण तामिल-लिपि का और दूसरी ओर ग्रंथ, तुलु और मलयालम्-लिपियों का प्रादुर्भाव शिला-लेखों की लिपियों से ही हुआ। तेलुगु और कन्नड़ी स्पष्टतः ताड़-पत्र की लिपियाँ हैं, और इनके अक्षरों की सुंदर, समान, मनोहर गोलाई दर्शनीय और अत्यंत प्रशंसनीय है। इन दोनो लिपियों के अधिकतर अक्षर मिलते हैं। ग्रंथ और तुलु-लिपियाँ क्रमशः तामिल और मलयालम्-भाषा-भाषियों की संस्कृत-साहित्य की लिपियाँ हैं। मलयालम् ग्रंथ-लिपि से ही विकसित हुई, और तुलु मलयालम् का ही रूपांतर है। तामिल-लिपि (७वीं शताब्दी ई० स० के पश्चात्) के भी अधिकतर अक्षर ग्रंथ-लिपि में हैं। यद्यपि तामिल के कुछ अक्षर वट्टेलुत्तु अर्थात् गोल - हस्त - लिपि (७वीं से १०वीं शताब्दी ई० स० तक) से लिए गए हैं। फिर भी इसके अ, क, ट, प, य और र अक्षर ब्राह्मी-लिपि से कितना साम्य रखते हैं, यह अत्यंत मनोरंजक है।

सिंहाली, जिसका व्यवहार लंका के केवल दक्षिणी आधे भाग में होता है—उत्तरी आधे भाग में तामिल-लिपि का प्रचार है, पाली श्रेणी की एक विलग हुई वर्णमाला है, जिसका प्रारंभिक स्वरूप प्राचीन ग्रंथ-लिपि के प्रभाव के कारण बहुत कुछ परिवर्तित हो गया है।

तीसरी शाखा पाली-लिपि की है। पाली-लिपि ब्राह्मी-लिपि का अत्यंत सरल ढंग से विकसित स्वरूप है। कावी-शिला-लेख (६१९ ई० स०) पाली के विकास से संबंध रखता है। संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि ब्राह्मी से भारतवर्ष की लिपियों की एवं पाली से बौद्ध-मतावलंबी देशों की (जापान और चीन को छोड़कर) लिपियों की उत्पत्ति हुई। ब्राह्मी और पाली-लिपियों में कितनी स्वाभाविक समानता है, और इससे भी अधिक प्राचीन पाली और आधुनिक ब्रह्मदेशीय लिपियों में कितनी संतोषप्रद एकरूपता है, यह इन लिपियों के अध्ययन से स्पष्ट प्रकट हो जाता है। ब्रह्म-देश में तीन लिपियाँ मिलती हैं, जो असमान प्रतीत होने पर भी वस्तुतः बिलकुल एक रूप हैं। वे ये हैं—(१) किआौसा (प्रस्तर - लिपि), (२) चौकोर पाली, जिसकी आकृति का प्रादुर्भाव देशी स्याही से ब्रश द्वारा लिखने के फल-स्वरूप हुआ है, और (३) त्सा-लाङ्ग अर्थात् गोल लिपि, जो ताड़-पत्र की लिपि है। इन तीन पाली-लिपियों के आगमन के पूर्व ब्रह्म-देश में एक प्राचीन लिपि प्रचलित थी, जिसका विस्तार बंगाल से आगे पूर्व की ओर संभवतः एशिया के सभी दक्षिण-पूर्वी भागों में था, और जो अहोम से, जिसका प्रयोग अब भी आसाम के कुछ भागों में होता है, बहुत सादृश्य रखती है।

यह कितना सुखमय एवं विस्मय-पूर्ण विषय है कि कठिन जावा-द्वीपीय लिपि का ध्यान-पूर्वक अध्ययन और विश्लेषण करने पर उसके अक्षर सहज ही पाली-श्रेणी की वर्णमाला में स्पष्ट प्रकट हो जाते हैं। वस्तुतः प्राचीन कावी-लिपि, जो आधुनिक जावा-लिपि का आधार है, पाली ही का किंचित् परिवर्तित स्वरूप है। बोरनियो-द्वीप में भी जावा-लिपि का प्रचार है।

थाईदेशीय अर्थात् श्यामी - लिपि भी प्राचीन पाली-लिपि से ही विकसित हुई है, और स्वभावतः उससे बहुत कुछ साम्य भी रखती है। वह श्यामी (थाईदेशीय) लिपि, जो पाली-ग्रंथों के लिखने में प्रयुक्त होती है, उसकी वर्णमाला आधुनिक श्यामी वर्णमाला से कुछ भिन्न है। यद्यपि वर्गों का क्रम भारतीय वर्णमाला के वर्गों के अनुरूप ही है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रत्येक वर्ग की ध्वनियों में भिन्नता है, तथा वर्तमान श्यामी वर्णमाला में कुछ अधिक और विशेष ध्वनियाँ भी हैं। स्वरों का क्रम भारतीय होते हुए भी उनकी संख्या अधिक है।

(२) एक प्रारंभिक ब्राह्मी-लिपि से सब भारतीय लिपियों की उत्पत्ति से भी अधिक महत्त्व-पूर्ण विषय, जिसमें ऊपर गिनाई हुई सब लिपियों में महान् एकता है, और जिसकी ओर प्रायः समुचित ध्यान नहीं दिया जाता, 'वर्णमाला की एकता है। ग्रीक के आल्फा, बीटा, गामा, डेल्टा इत्यादि और रोमन के ए, बी, सी, डी इत्यादि में कितना अंतर है। यही नहीं, जर्मन-वर्णमाला और रोमन-वर्णमाला प्रायः समान होते हुए भी अक्षरों के नामों में भेद अवश्य है, यद्यपि ध्वनियों का क्रम एक ही है। ब्राह्मी-कुटुंब की सब वर्णमालाओं की विभिन्न मूल-ध्वनियों के अक्षर-चिह्नों का क्रम, उनके संकेतों का नाम और उनकी संख्या प्रायः एक ही है। इतनी शताब्दियों तक देश-कालांतर का प्रभाव इन विशेषताओं पर बिलकुल नहीं पड़ सका। इसका कारण स्पष्ट है। संसार की अन्य सभी वर्णमालाओं के अक्षरों के नाम तथा उच्चारण भिन्न हैं, और उनकी ध्वनियों का कोई विशेष वैज्ञानिक क्रम नहीं। इसलिये उन लिपियों में विभिन्न जातियों ने ध्वनियों के क्रम, संकेतों के नाम एवं उच्चारण में धीरे-धीरे मनमाने परिवर्तन कर लिए हैं, चाहे प्रारंभ में उनमें भी बहुत-सी एक हो क्यों न रही हों। ब्राह्मी-कुटुंब की लिपियों में अक्षरों के नाम एवं उच्चारण समान तथा अभिन्न हैं। ध्वनि-संकेतों का क्रम-विशेष वैज्ञानिक आधार पर स्थापित किया हुआ है। अतः जितनी भी जातियाँ इस वर्णमाला से परिचित होने का सौभाग्य प्राप्त कर सकीं, उन सबने इसे तुरंत अपना लिया, और इतनी शताब्दियों तक इसका उपयोग करने पर भी उनमें से किसी को इस वर्णमाला में कोई विशेष उल्लेखनीय कमी अथवा त्रुटि नहीं मिली।

(३) इन लिपियों के सैकड़ों देश-काल-भेदों का होना, जिनका मूल-उद्भव एक है, इनकी एकता के पक्ष का ही समर्थन करता है। क्योंकि देश के प्रत्येक प्रांत अथवा अन्य संबंधित देश पिछले दो सहस्र वर्षों में इतने प्रकार की लिपियों का (अर्थात् एक ही आदि लिपि के विभिन्न भेदों का) क्रमशः उपयोग करते आए हैं कि इनमें से किसी एक अर्थात् वर्तमान लिपि के प्रति ही मोह-प्रदर्शन एवं अन्य अपनी ही प्राचीन लिपियों से संबंध - विच्छेद करना उचित नहीं कहा जा सकता। असंख्य लिपियों का अस्तित्व वस्तुतः किसी भी एक लिपि के महत्त्व को तुच्छ एवं नगण्य बना देता है। यदि यह कहा जाय कि अधिकांश लिखित साहित्य तो वर्तमान इनी-गिनी लिपियों में ही है, तो यह कथन भी वर्तमान लिपियों के महत्त्व के पक्ष में न होगा। कारण, विभिन्न प्राचीन लिपियों का अस्तित्व यह स्पष्ट करता है कि उनमें लिखित साहित्य अल्प अथवा अधिक मात्रा में अवश्य रहा होगा। लिपियों का क्रमिक विकास यह भी स्पष्ट करता है कि विभिन्न प्रांतों अथवा जातियों का साहित्य क्रमशः एक लिपि से दूसरी लिपि में परिवर्तित होता चला आया है। तो फिर वर्तमान मुद्रण-यंत्र एवं टाइप-लेखन-यंत्र के ज़माने में ऐसा परिवर्तन और भी अधिक सुविधा से किया जा सकता है। वर्णमाला की एकता के फल-स्वरूप इन लिपियों में से किसी भी एक को जाननेवाला इस वर्णमाला की किसी भी अन्य अथवा नवीन संस्कृत एवं परिष्कृत लिपि को सहज ही सीख सकता है। कारण, वह ध्वनियों एवं उनके क्रम से तो परिचित होता ही है, केवल नवीन परिचित-से, मिलते-जुलते संकेतों को जानना पड़ता है। यह कार्य और भी सुगम हो जाय, यदि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवीन लिपि के निर्माण का आधार वैज्ञानिक हो #।

(४) मुद्रण की दृष्टि से इनमें से किसी भी एक लिपि का सरल और वैज्ञानिक आधार पर रचित न होना—यद्यपि सबकी वर्णमाला एक और पूर्ण एवं आदर्श रूप से वैज्ञानिक है—इन सबको एक ही श्रेणी में एकत्र करने के पक्ष में ही है, क्योंकि सब लिपियों में सुधार करना अनिवार्य है, और जो-जो सुधार करने हैं, वे सब एक ही प्रकार के हैं।

(५) मुद्रण-यंत्र का उल्लेख हमें इस कटु सत्य की स्मृति दिलाता है कि सभी लिपियाँ मुद्रण एवं टाइप-लेखन की दृष्टि से अत्यंत दोष-पूर्ण और आदर्श से बहुत दूर हैं। ५० संकेत छापने के लिये ५०० टाइपों की आवश्यकता होना शिक्षा-प्रचार के कार्य में कितना बाधक होता होगा। आदर्श लिपि में जितने मौलिक संकेत हों, उतने ही अथवा उनसे भी कम टाइपों की आवश्यकता पड़नी चाहिए। सभी लिपियों में इस दोष का कारण एक ही है। वह है स्वरों को मात्राओं के रूप में विभिन्न व्यंजनों के साथ मिलाकर लिखना, और दो या अधिक व्यंजनों को परस्पर मिलाना, एवं उन संयुक्ताक्षरों को भी अन्य व्यंजनों की भाँति मात्राओं के साथ मिलाकर लिखना। यह कितना हास्यास्पद है कि कुल मानव-जन-संख्या का एक चतुर्थांश इतने कष्टदायक दोष को मूक एवं जड़ बनकर निबाहे चला जा रहा है, जब कि अत्यंत तुच्छ और साधारण परिवर्तनों द्वारा यह सबसे बड़ा दोष सब लिपियों में से एक साथ सहज ही दूर किया जा सकता है, और जिस सुधार के बाद इनमें से कोई भी एक लिपि संसार की वर्तमान किसी भी लिपि से, छापने की दृष्टि से, अधिक सुगम हो सकती है। सभी लिपियों की वर्णमाला के अक्षरों की रचना जटिल, अवैज्ञानिक एवं असंबद्ध होने के कारण उन्हें सीखना और लिखना भी आसान नहीं।

(६) भारतवर्ष के बाहर जहाँ-जहाँ 'भारतीय' वर्णमाला प्रचलित है, वे देश हमारे देश के पड़ोसी एवं मित्र राज्य हैं, उनके साथ हमारा अतीत में सांस्कृतिक, राजनीतिक, धार्मिक और व्यापारिक घनिष्ठ संबंध रहा है, अब भी है, और भविष्य में और भी अधिक निकट संबंध स्थापित होने की संभावना है। यद्यपि हमारी दृष्टि उनकी ओर हिटलर की-सी नहीं, उनके साथ संघ-राज्य स्थापित करना अवांछनीय न होगा।

इन सब लिपियों में इतनी एकता होते हुए भी इनके अक्षर-चिह्नों में एक ही लिपि से विकसित और परिवर्तित होते-होते इतनी भिन्नता कैसे आई, यह जानना मनोरंजक होगा। प्रधान कारण ये हैं—

(१) देश-कालांतर का प्रभाव—देश इतना विस्तृत कि पृथ्वी की चौथाई आबादी का समावेश है, और काल इतना दीर्घ कि दो सहस्र से भी अधिक वर्ष बीत गए। यह कारण प्रधान है।

(२) विभिन्न प्रकार की लेखन-सामग्री का व्यवहार—इसमें पत्र, क़लम और स्याही, तीनों शामिल हैं। पत्र-सामग्री में प्रस्तर, धातु, मिट्टी, छाल, मोम, ताड़-पत्र, चर्म, पैपीरस (मिस्र-देश के एक वृक्ष से बनाया हुआ निम्न श्रेणी का काग़ज़) और काग़ज़ गिनाए जा सकते हैं। इन पदार्थों के मूल्य एवं इनकी कठोरता अथवा कोमलता के अनुसार लेखन-शैली में काफ़ी अंतर पड़ जाता है। क़लम के साधन छेनी, लोहे की क़लम, डोके (बाँस) की तिरछी कटी हुई देशी क़लम, पंख, ब्रश और निब हैं। स्याही में गोंद की मात्रा और गाढ़ेपन में अंतर हो सकता है।

देखिए लेखक का निबंध 'भारतीय लिपि', हिंदुस्तानी, जनवरी, १९३८ का अंक।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उदाहरणार्थ—ब्रह्म-देश की तीन लिपियाँ तीन प्रकार की लेखन-सामग्री के उपयोग के फल-स्वरूप हैं। उड़िया और सिंहाली - अक्षरों में एक विचित्र पारस्परिक साम्य है, जिसका कारण ताड़-पत्र पर लोहे की नोकदार क़लम द्वारा लिखना है। इन लिपियों में गोलाकार चक्रों एवं सीधी-खड़ी लकीरों का प्रयोग ख़ूब किया जाता है, किंतु एक भी सीधी-आड़ी लकीर नहीं खींची जाती, क्योंकि इससे पत्र के चिर जाने की आशंका रहती है, इसलिये आड़ी लकीरों के बदले जटिल, मोड़दार, टेढ़ी-मेढ़ी लकीरों को अपना लिया गया है। जापानी, चीनी, श्यामी और चौकोर पाली-लिपियों में मोटे धब्बे और सीधी लकीरें ही मिलती हैं। कारण, ये ब्रश द्वारा गाढ़ी, चिपचिपी स्याही से लिखी जाती थीं। देवनागरी-लिपि को तिरछी कटी हुई डोके की क़लम से लिखने के कारण उसके अक्षरों में गोलाई और खड़ी तथा आड़ी-सीधी लकीरों के काट में जो विशेषता आ गई है, उससे सब भली भाँति परिचित हैं। यह तो सभी का प्रतिदिन का अनुभव है कि अच्छे, चिकने, क़ीमती काग़ज़ पर किसी महत्त्व-पूर्ण विषय को नवीन, बारीक निब द्वारा उत्तम स्याही से जिस सावधानी से सुंदर, मोड़दार अक्षरों में जमाकर लिखा जाता है, उसकी तुलना में रद्दी, खुरदरे, सड़े हुए काग़ज़ पर साधारण कार्य के लिये घिसी हुई, टूटी क़लम द्वारा फैलनेवाली स्याही से जल्दी में खींची हुई घसीट में कितना अंतर पड़ जाता है।

तेलुगु और कन्नड़ी-लिपियों की गोलाई का कारण ताड़-पत्र है। ताम्र-लिपियों की विशेषता चौकोर अक्षर हैं, जिनमें सीधी लकीरें प्रायः एक दूसरे को काटती हैं, तथा कोण बराबर मिलाए नहीं जाते, और चक्रों की गोलाई अंडाकार बन जाती है। इसके विपरीत मिट्टी के बरतनों पर कटती हुई लकीरें नहीं खींची जातीं, और सीधी लकीरों को अधिक अंतर पर खींचा जाता है, तथा गोलाई मोटी ली जाती है।

(३) व्यक्तिगत विशेषता—प्राचीन काल में पुस्तक-लेखकों की संख्या उँगलियों पर गिनी जा सकती थी, और वे लोग इतने दूर-दूर रहते थे कि एक की वर्ण-लेखन-शैली का दूसरे पर समुचित प्रभाव पड़ने की संभावना बहुत कम रहती थी। कोई छपा हुआ आदर्श तो उनके समक्ष रहता नहीं था कि वे उसका अनुकरण करने का प्रयत्न कर सकते। अब भी एक ही गुरु द्वारा एक ही पाठशाला में एक ही कक्षा में एक ही छपी हुई पुस्तक से एक साथ पढ़ाए हुए विद्यार्थियों के हस्ताक्षरों में धीरे-धीरे, किंतु प्रारंभ से ही कितना अंतर पड़ता जाता है, यद्यपि लिपि-पुस्तकों पर अभ्यास करवाकर उन सबमें एकरूपता लाने का विशेष प्रयत्न भी किया जाता है। फिर उन दिनों में तो वर्ण-लेखन-शैली में व्यक्तिगत विशेषता लाना विशेष गौरव का विषय समझा जाता होगा। अक्षरों को आकर्षक और सुंदर मोड़दार बनाने का प्रयत्न भी इसी में शामिल किया जा सकता है। विपरीत अथवा विशेष ढंग से अक्षर लिखने से भी उसकी आकृति में कुछ अंतर अवश्य पड़ जाता है—जैसे अक्षर को दाहने के बदले बाएँ बाज़ू से और ऊपर के बदले नीचे की ओर से शुरू करना और जटिल अक्षर के विभिन्न अंशों को अथवा संयुक्ताक्षर के विभिन्न अंगों को विभिन्न ढंग से जोड़ना। शिरोरेखा का नागरी-लिपि में आगमन खड़ी लकीरों के ऊपर के अंत को मोड़ देने से हुआ। गुजराती-अक्षरों में मोड़ खड़ी लकीर के नीचे के छोर (सिरे) पर दी जाती है, अतः उस लिपि में शिरोरेखा विद्यमान नहीं।

(४) अधिकाधिक शीघ्रता से लिखने का प्रयत्न करना—अब भी डाक का समय हो जाने पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवश्यक पत्र अथवा अपने किसी प्रिय जन को बहुत लंबा पत्र लिखते समय हम प्रायः शिरोरेखा लगाना छोड़ देते हैं, और यथा संभव क़लम को काग़ज़ पर से उठने नहीं देते, क्योंकि ऐसा करने से कुछ समय बचाया जा सकता है। परीक्षा में जब समय पूरा होने लगता है, और बहुत कुछ लिखना बाक़ी रहता है, तब भी ऐसा ही किया जाता है। पाई-पाई का हिसाब लिखनेवाले व्यापारी भी ऐसा ही करते हैं। महाजनी और मोड़ी-लिपियों में इसी प्रकार देवनागरी से विभेद हुआ। टाकरी शारदा का और वट्टेलुत्तु तामिल का घसीट रूप ही है। मोड़ी-लिपि को ध्यान से देखने पर प्रतीत होगा कि प्रायः प्रत्येक अक्षर का प्रारंभ और अंत पहले ही से खींची हुई लंबी आड़ी सीधी लकीर पर करने का प्रयत्न किया जाता है। अब भी इस विशेष ढंग से देवनागरी-अक्षरों को लिखने पर मोड़ी-लिपि सहज ही बन जाती है। कठिन और जटिल अक्षर के बदले नवीन, सरल और छोटे आकार का अक्षर ढूँढ़ निकालना भी त्वरा का ही फल है। मौलिक ग्रंथ लिखने में धीरे-धीरे बहनेवाली विचार-धारा को आराम से सजाए हुए अक्षरों का स्वरूप देना भार-रूप नहीं अनुभव होता, किंतु जब एक ही पुस्तक की सैकड़ों हस्त-लिखित प्रतिलिपियाँ बनानी पड़ती हैं, तो हाथ का धीमे चलना असह्य हो उठता है।

(५) अक्षर को बिलकुल अथवा अंशतः भूल जाना और उसके बदले अपने नए आविष्कृत अक्षर का प्रयोग करना—जिस ज़माने में लिपियों में अधिकतर परिवर्तन हुए हैं, ऐसा होना बहुत संभव था, और बहुत-से अक्षर, जिनकी उत्पत्ति अब भी सरलता से समझी नहीं जा सकती, इसी प्रकार उत्पन्न हुए होंगे। ऐसे एक नवीन सरल अक्षर के चल पड़ने पर उसके आगे-पीछे के अक्षरों में भी वैसा ही परिवर्तन धीरे-धीरे आ जाना स्वाभाविक ही है।

(६) प्राचीन लिपि को अपनानेवाली नवीन जाति की भाषा की ध्वनियों की संख्या, विशेषता और उनके नवीन अथवा विचित्र भेदों का प्रभाव तथा नवीन भाषा में मौलिक अथवा संयुक्त अक्षरों के प्रयोग में आपेक्षिक पुनरावृत्ति का फल—वर्तमान श्यामी लिपि भारतीय वर्णमाला से विकसित होने पर भी मौलिक ध्वनियों की विशेषता, विचित्रता और अधिकता के कारण स्वतंत्र, नवीन-सी प्रतीत होती है। दक्षिणी-लिपियों में र और ल के, तथा तामिल में ण का भी, ध्वनि-भेद प्रचलित हैं। देवनागरी में क, ख, ग, ज, ड, ढ और फ वर्णों के नीचे नुक़्ता लगाया जाता है, जिससे वे अरबी, फ़ारसी आदि भाषाओं के ध्वनि-भेदों को प्रकट कर सकें। बँगला में ड, ढ और य के नीचे यह चिह्न लगाया जाता है।

(७) एकीकरण की स्वाभाविक प्रवृत्ति—अर्थात् किसी भी प्रकार से अपनाए हुए नवीन अक्षर अथवा अक्षरों को प्रचलित वर्णमाला के अन्य वर्णों के सदृश बनाने का प्रयत्न करना और यथा-संभव निकटवर्ती वर्णों में परस्पर समरूपता लाने का प्रयास करना और इस प्रकार सब वर्णों की शैली में साम्य लाना। देवनागरी की वर्णमाला का वर्णों के साम्य की दृष्टि से विश्लेषण नीचे दिया जाता है—

निकटवर्ती वर्ण—ट, ठ, ड और ढ; प और फ; भ और म।

अन्य वर्ण—घ और ध; थ और य; प और ष; ब और व; ड, ड़ और ङ।

अंशतः साम्य—व, क और ख; र, ख और स; ग और म तथा न और म; क और फ; द और ह; ज और ञ; भ और झ; इ और झ; ए और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ण ; त्र और क्ष ; अ, उ और ओ ; व और च ; प और अ, प और ण ; इत्यादि। ह्रस्व और दीर्घ स्वरों की समरूपता स्पष्ट ही है।

इसी प्रकार अन्य सभी लिपियों के वर्णों का भी तुलनात्मक समीकरण किया जा सकता है। इन सब लिपियों के ऐसे विश्लेषण की परस्पर तथा मूल-लिपि ब्राह्मी से पारस्परिक तुलना करने पर लिपि-विज्ञान के कुछ मनोरंजक प्रश्न उपस्थित किए जा सकते हैं, पर ऐसा करना यहाँ अभीष्ट नहीं। वर्णों का यह पारस्परिक सादृश्य सभी लिपियों में विद्यमान है, चाहे वे सरल हों अथवा जटिल, और संभवतः अधिक जटिल लिपियों में यह समरूपता और भी अधिक स्पष्ट प्रतीत होती है।

जब हम यह विचार करते हैं कि लिपियों का विकास कितना क्रमिक, धीमा, किंतु निरंतर प्रगतिशील है, और किस प्रकार पारस्परिक परिवर्तनकारक प्रभाव, न्यूनतम प्रयास और साथ ही अधिकतम उपयोगिता के सिद्धांत विभिन्न बहुरूप प्रभाव डालते हैं, तो इन बहुसंख्यक लिपियों के अस्तित्व का कारण समझ लेना कठिन नहीं रह जाता।

(आगामी संख्या में समाप्य)

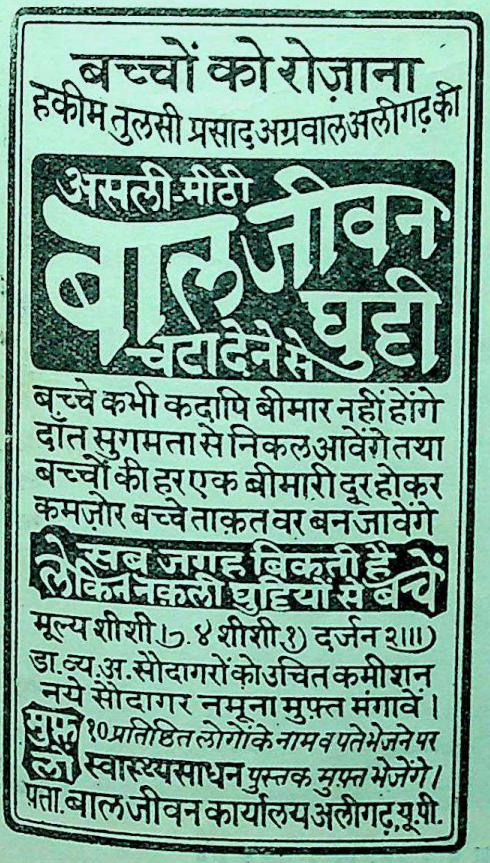

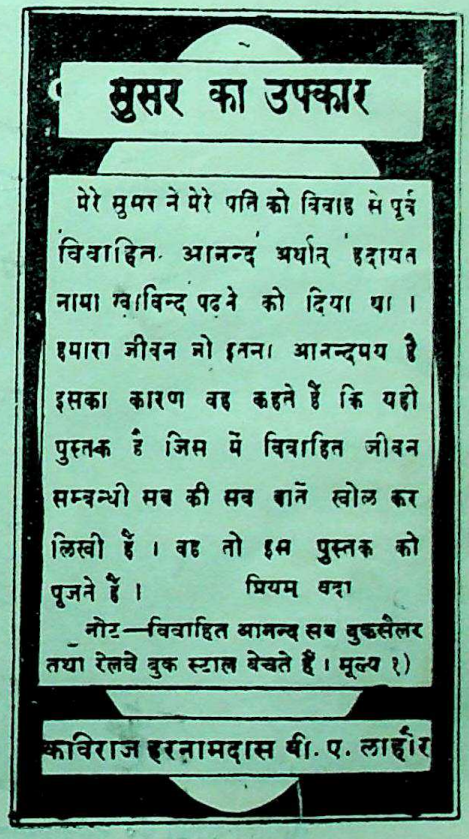

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य और राजनीति का समन्वय

(साहित्य-शास्त्री पं० नर्मदाप्रसादजी मिश्र बी० ए०, एम्० एल्० ए० की एक जीवन-झाँकी)

[श्रीयुत देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त']

पचास वर्ष की उतरती हुई अवस्था। ठिंगना, किंतु गठा हुआ, गौर शरीर और उन्नत ललाट के नीचे दमकती हुई आँखों पर चढ़ा हुआ चश्मा। सिर पर खादी की एक साधारण-सी टोपी और बंदकालर खादी का एक कोट तथा पैरों में चमकते हुए पंपशू।

दशहरे का जबलपुरव्यापी क्षुब्ध वातावरण। शहर के कोलाहल-पूर्ण प्रत्येक पथ पर जब जनता-जनार्दन की आँखें जैसे किसी आगत आशंका को मूर्त होते देखने के लिये उत्सुक

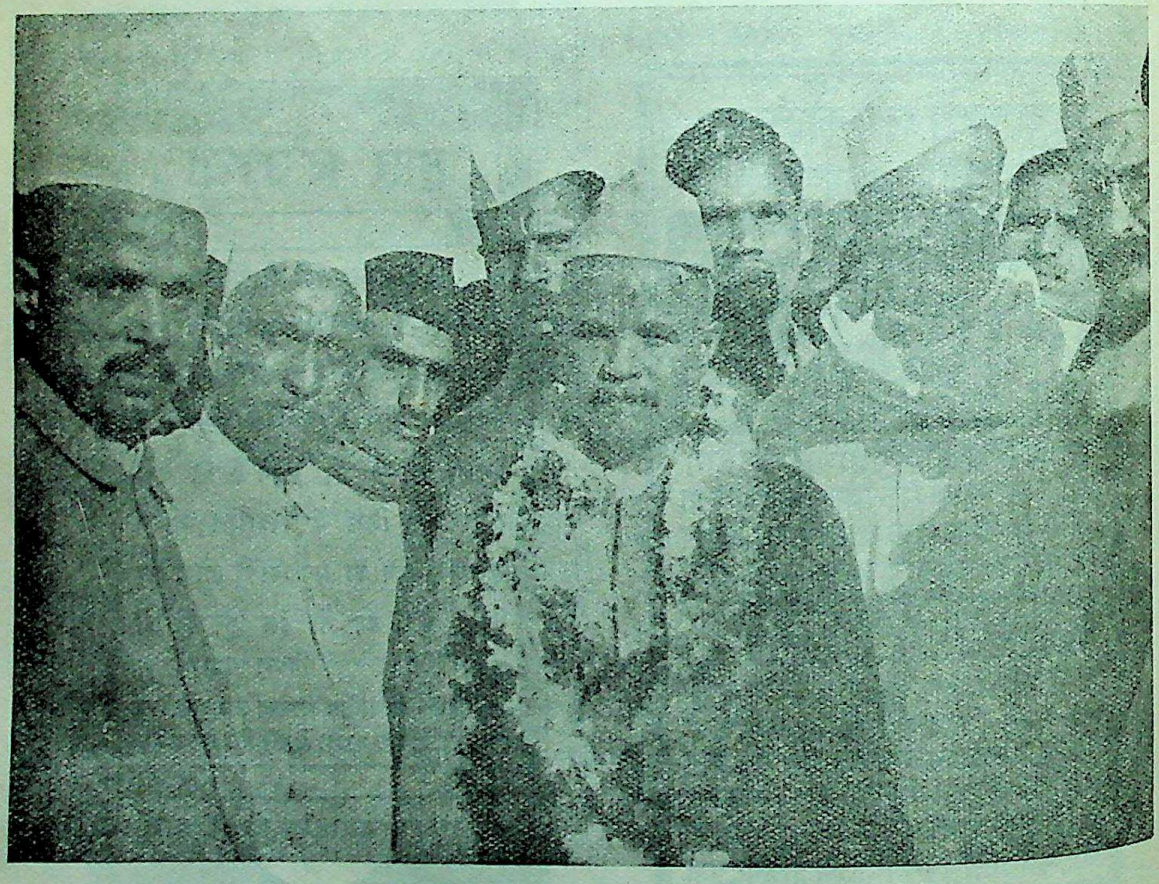

साहित्य-शास्त्री पं० नर्मदाप्रसादजी मिश्र बी० ए०, एम्० एल्० ए०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और शायद चिंतित-सी दिखाई पड़तीं, तब एक छोटी-सी, किंतु चमचमाती हुई मोटर में जो इधर-से-उधर और उधर-से-इधर घूमता हुआ अत्यंत व्यस्त नज़र आता, कभी पुलिस-अफ़सरों से कुछ विचार-विमर्ष करता और कभी जनता की भीड़ में नागरिकों से जी खोल-कर संभाषण करता नज़र आता।

जो उसे पहचानते हैं, उनकी बात मैं नहीं करता; लेकिन जो उसे जानते-पहचानते नहीं, वे आपस में कानाफूसी करते, कहते—कौन है?

और, जब उन्हें ज्ञात होता कि शांति-स्थापन के लिये जी-तोड़ परिश्रम करनेवाला यह पचास-वर्षीय जन-सेवक जनता का ही एक प्रतिनिधि—जबलपुर-शहर से कांग्रेस की ओर से मध्य-प्रांत और बरार की एसेंबली में भारी बहुमत से भेजा गया एक सम्मान्य एम्० एल्० ए० है, तब जैसे लोगों को आश्चर्य होता, और वे कह पड़ते, नाम तो इनका हम जानते हैं। यही तो हैं साहित्य-शास्त्री पं० नर्मदाप्रसादजी मिश्र बी० ए०, एम्० एल्०ए०।

मिश्रजी के नाम से परिचित होते हुए भी अनेक व्यक्ति जो उन्हें पहचान नहीं पाते, उनकी वेष-भूषा से उन्हें जान नहीं पाते, उसका एक कारण है, और वह यही कि अन्य राजनीतिज्ञों की तरह मिश्रजी आम तौर पर किसी मंच पर जनता के सामने बार-बार नहीं आते। यह बात नहीं कि वह भाषण देने से घबराते हैं—नहीं, मिश्रजी जब भाषण देते हैं, तब आपका भाषण अत्यंत समाँ बाँधनेवाला और पुर-जोश हुआ करता है—ऐसा, जिसमें साहित्यिक सौंदर्य भी सन्निहित रहता है। लेकिन प्रधानतः आपका मंच दूसरा ही है—राजनीति से शायद आजकल की परिभाषा के अनुसार कुछ पृथक् समझा जानेवाला साहित्यिक मंच। यद्यपि साहित्य से राजनीति अलग नहीं की जा सकती; बल्कि दोनो में एक ऐसा समन्वय है, जिसका पृथक्करण नहीं किया जा सकता। हाँ, इतना ज़रूर है कि साहित्य को राजनीति का अस्त्र बना देने की जो लोग कल्पना करते हैं, स्वप्न देखते हैं, उन्हें यह समझ लेना चाहिए कि साहित्य के कर्तव्य राजनीति से कहीं अधिक महान् हैं। रूस का एतद्विषयक उदाहरण हमारे सामने है, जो पहले यह विश्वास करने लगा था कि साहित्य राजनीति का एक अस्त्र होना चाहिए, लेकिन अब वह अपनी इस धारणा को बदलता नज़र आ रहा है। और, कला का जहाँ तक संबंध है, आज सभी यह स्वीकार करने लगे हैं कि वह राजनीति से ऊँची चाहे न भी हो, लेकिन निश्चय ही राजनीति से अपना भिन्न अस्तित्व रखती है। राजनीति को पल्लवित-पुष्पित होने के लिये साहित्य का धरातल आवश्यक होता है। और, इसी साहित्यिक धरातल पर पं० नर्मदाप्रसादजी मिश्र की सेवाएँ कम-से-कम महाकोशल में अपना एक विशिष्ट स्थान रखती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सफल पत्रकार

पं० नर्मदाप्रसादजी मिश्र जहाँ कुशल कवि और प्रतिभाशाली लेखक हैं, वहाँ सफल पत्रकार भी। खड़ी बोली का जब समुचित विकास भी न हो पाया था, और मध्य-प्रांत में दस-पाँच इने-गिने हिंदी-लेखकों के अतिरिक्त अच्छे लेखकों का क़रीब-क़रीब अभाव-सा ही था, तब आपने हिंदी की तीन-तीन प्रमुख मासिक पत्रिकाओं—'हितकारिणी', 'शारदा - विनोद' और 'श्रीशारदा'—का वर्षों तक संपादन किया। इन पत्रों की तत्कालीन फ़ाइलें आपकी संपादन-कुशलता और सामग्री-चयन की अब भी साक्षी दे रही हैं। मध्य-प्रांत की फूली-फली और परिष्कृत साहित्यिक लतिका के विभिन्न सुरभित पुष्पों की आधुनिक गौरव-गरिमा का बहुत कुछ श्रेय आप ही को दिया जा सकता है। आपकी तत्कालीन साहित्यिक सेवाओं और आज की साहित्यिक जागृति में एक ऐसा तारतम्य है, जिसे अलग नहीं किया जा सकता। आपकी मनोहारिणी और परिमार्जित कविताओं का संकलन 'कविता-कुसुम-माला'-नामक कविता-संग्रह में किया जा चुका है।

साहित्य के इस मेधावी निर्माता की सेवाएँ पत्रकार एवं कवि के दायरे तक ही सीमित नहीं; प्रत्युत आपने दर्जनों ऐसी शालोपयोगी पुस्तकों का भी निर्माण किया है, जो मध्य-प्रांत और बरार के शिक्षा-विभाग द्वारा स्वीकृत पाठ्य पुस्तकों के रूप में प्रांत के अगणित भावी स्तंभों का यथार्थ पथ-प्रदर्शन कर रही हैं। बाल-साहित्य के निर्माण में भी मिश्रजी का अथक प्रयत्न अपना सानी नहीं रखता। दर्जनों बालोपयोगी पुस्तकें आपने लिखी हैं, जिनमें बालमनो-विज्ञान का पूरा-पूरा ध्यान रखते हुए बालकों के ज्ञान-वर्द्धन और उनके बुद्धि-विकास की प्रचुर सामग्री संकलित की गई है।

राष्ट्रीय हिंदी-मंदिर, जबलपुर की साहित्यिक गति-विधि से जो परिचित हैं, वे भली भाँति जानते हैं कि इस संस्था के आप वर्षों मंत्री रह चुके हैं। इस प्रकार प्रांत के साहित्यिक इतिहास में, अपनी चिर-स्मरणीय साहित्यिक सेवाओं से, अपना एक अनन्यतम स्थान बना चुके हैं।

अध्यवसायी

मध्य-प्रांत की प्रमुख प्रकाशन-संस्था मिश्र-बंधु-कार्यालय (जबलपुर) का यह अध्यक्ष, जिसके जीवन में आज सुखों का सागर लह-राता, ऐश्वर्य का मलय-पवन जिसे निरंतर थपथपाता और जीवन का ऐहिक सुख जिसका चिर-संगी नज़र आता है, अपने जीवन का एक बहुत बड़ा भाग सांसारिक जीवन की विष-मताओं, ग़रीबी की विभीषिकाओं और दुनिया की प्रवंचनाओं में व्यतीत कर चुका है। किसी तरह प्रारंभ में मैट्रिक पास कर, १२ वर्षों तक अध्यापक रहकर आप इन विषमताओं का सामना करते रहे, और अवकाश के समय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपना अध्ययन निरंतर जारी रखते हुए क्रमशः एफ़्० ए० और बी० ए० की परीक्षाओं में श्रेष्ठता (Distinction) के साथ उत्तीर्ण हुए। हिंदी-साहित्य के प्रति आपका अनुराग पहले से ही था, अतः कालांतर में आप 'विशारद' एवं 'साहित्य-शास्त्री' भी हो गए।

अपने अथक परिश्रम और अध्यवसाय से अपने भाग्य का स्वयं निर्माण करने-वालों में मिश्रजी का उदाहरण अनुकरणीय है। सन् १६१२ में आपने अत्यंत सीमित रूप में और छोटे-से स्केल पर, अपने सुख-स्वप्नों को साकार-स्वरूप में निर्मित करने के उद्देश्य से, जिस मिश्रबंधु - कार्यालय की स्थापना की थी, वह आज जो मध्य-प्रांत और बरार का प्रमुख प्रकाशन-गृह बन सका है, उसके लिये आपकी लगन और कार्य-कुशलता की जितनी प्रशंसा की जाय, थोड़ी होगी। दुनिया में सभी अपने सुख-स्वप्नों को साकार देखने के अभिलाषी होते हैं, लेकिन मार्ग की विषमताओं का सामना करते-करते वे हताश हो जाते, और सफलता का वरण कर नहीं पाते, लेकिन मिश्रजी अपने प्रयत्नों में सफल हुए। आज इसी मिश्रबंधु-कार्यालय द्वारा न केवल शालोपयोगी, अपितु अनेक साहित्यिक प्रकाशन भी किए जा रहे हैं। मिश्रबंधु-कार्यालय की इस चरम सफलता के लिये जहाँ श्रीमिश्रजी की लगन और सेवाएँ स्तुत्य हैं, वहाँ हम आपके अनन्य सहायक और अनुज पं० जगदीशप्रसादजी मिश्र की सेवाओं को भी विस्मृत नहीं कर सकते, जो अपने अग्रज के संकेतों पर मिश्रबंधु-कार्यालय की सफलताओं के लिये रात को रात और दिन को दिन न समझते हुए सदा प्रयत्नशील नज़र आते हैं।

राजनीतिज्ञ

साहित्य का यह स्रष्टा अपनी साहित्यिक अनुभूतियों की अभिव्यंजनाओं के साथ जब देश की ग़ुलामी के बंधनों को तोड़ फेकने के लिये देश का प्रतिनिधित्व करने-वाली महत्तम संस्था—कांग्रेस—की गति-विधि भली भाँति हृदयंगम कर चुका, तब गत १५ वर्षों से निरंतर कांग्रेस को अपना सहयोग एवं सेवाएँ देकर अपने कर्तव्य का पूरा-पूरा पालन करता रहा। गत झंडा-सत्या-ग्रह के समय मिश्रजी नगर-कांग्रेस-कमेटी के अध्यक्ष भी रह चुके हैं।

यद्यपि मिश्रजी आजकल स्वयं मधुमेह के रोगी हैं, आपकी धर्मपत्नी भी अस्वस्थ हैं, और अन्य अनेक पारिवारिक उलझनें भी आपके सामने थीं, लेकिन विश्व-वंद्य महात्मा गांधी का संकेत पाकर—कांग्रेस का आदेश पाकर आप हँसते-हँसते गत ता० १५ दिसंबर, सन् १६४० ई० को गढ़ा में सत्याग्रह कर छ महीने के लिये नागपुर-जेल में, 'ए' क्लास में, सीखचों के अंदर, बंद हो चुके हैं।

इस प्रकार पं० नर्मदाप्रसादजी मिश्र के जीवन में हम साहित्य और राजनीति का सुंदर समन्वय देखते हैं। यथार्थ में राजनीति का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पौदा साहित्यिक धरातल पर भी पल्लवित-पुष्पित होता हुआ देखा जाता है। पं० जवाहरलाल नेहरू और मौलाना अबुल कलाम आज़ाद आदि के कितने ही उदाहरण हमारे सामने हैं, जो स्पष्टतः यह प्रदर्शित करते हैं कि आज जो साहित्यिक है, वह कल राजनीतिज्ञ—सफल राजनीतिज्ञ होता और देश के सेवा-पथ पर अग्रसर होकर अपने कर्तव्य का पालन करता है।

स्वभाव

इतने बड़े मिश्रबंधु - कार्यालय का यह धनिक अधिपति, कांग्रेस का एक नम्र सेवक और एम्० एल्० ए०, सदा सुखों और ऐश्वर्यों की गोद में झूलनेवाला, साहित्य का यह मेधावी निर्माता स्वभाव का इतना सरल और हृदय का इतना उदार है कि अभिमान तो उससे कोसों दूर भागता है। पं० नर्मदा-प्रसादजी मिश्र से आप चाहे जब बेखटके मिल सकते हैं। आपके मुख पर सदा रहनेवाली मंद मुस्कान पहली ही दृष्टि में आपको एक अद्भुत संतोष प्रदान कर देगी, और शायद यह भी प्रकट कर देगी कि साहित्य का यह पुजारी जहाँ अत्यंत मिष्टभाषी है, वहाँ कितने ही संकटापन्न परिवारों एवं साहित्यिकों का सहायक भी। आप आत्मविज्ञापन से भी कोसों दूर भागते हैं।

पि० वेंकटाचल पंडित की आयुर्वेदीय लोकामयहर कस्तूर-गोलियाँ

ये गोलियाँ बहुमूल्य पदार्थों से—जैसे सोना, चाँदी, नेपाली कस्तूरी, मूँगा आदि से—बनाई गई हैं। इनको अलग-अलग या २ से ४ तक पान में खाने से हाज़मा बढ़ता है। हर प्रकार का बुख़ार दूर होता है। जल-वायु और भोजन के परिवर्तन का असर बराबर होता है, रक्त साफ़ होता है, तथा उसकी चाल अबाध्य होती है, खाँसी, सरदी, ज़ुकाम, पेट का दर्द, क़ब्ज़ियत कमर और छाती का दर्द, कमज़ोरी, जूड़ी-बुख़ार और प्लेग को नाश करती हैं। जिस स्थान में छूत की बीमारियाँ फैली हों, वहाँ नित्य पान के साथ ३-४ गोलियाँ दीजिए। बच्चों के रोग में जादू के समान असर दिखाएँगी। दाम ३०० गोलियों की बोतल का ।), डाक-महसूल अलग। ६ बोतलों का १॥)

मिलने का पता—

१२ बोतलों का मूल्य डाक-व्यय-सहित २॥।-)
२५ „ „ „ ५=) } श्रीसीताराघव वैद्यशाला, मैसूर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छवि

[देव-पुरस्कार-विजेता श्रीश्यामनारायण पांडेय]

बनती है मुसुकान तुम्हारी
शीतल शशि की लेखा;
मेरे उर में खिंच जाती है
मधुर हास की रेखा।
किस शैशव की भोर-सुप्ति हो,
यौवन की मदिरा हो;
निबल जरा की मदमाती स्मृति,
किसकी मौन गिरा हो?
मानव-मन की माला हो, किस
मायावी की माया;
विधि ने भावी-सी तुमको क्या
कवि के लिये बनाया?
किस नंदन के मलयानिल की
ललित, मनोहर काया;
किस रसाल की लोन लता हो,
किस शिरीष की छाया?
घनीभूत तुम करुण कल्पना
किसकी हो सुकुमारी;
विधि-हरि-हर-शृंगार - सृजित
तुम किसकी कोमल नारी?
किस वसंत के उपवन की तुम
मधु रस की सरिता हो;
किस एकांत वियोगी कवि की
भाव - भरी कविता हो?
किस अनंत की नीरव भाषा,
माया की माया हो;
मधुर रागिनी की स्वर-लहरी,
छाया की छाया हो?
देवी दुर्गा, श्री की श्री,
तुम आदि शक्ति हो रानी;
तुमसे ही नवजीवन पाती
शैशव - जरा - जवानी।
नवप्रभात की स्वर्णिम किरणें,
सलज उषा की लाली—
अपने सोने के घट में क्या
तुमने देवि! चुरा ली?
नहा लवण - रतनाकर में क्या
डूबीं मधु - सागर में;
भर दोगी मुसुकान-किरण क्या
मेरी लघु गागर में?
किस मोहन की लय-मुरली हो,
कितनी छिपी परी हो;
कहो, कहाँ से जाल बिछाने
हरी - भरी उतरी हो?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घरेलू नौकर

[दैनिक हिंदी मिलाप-संपादक पं० आत्मस्वरूप शर्मा]

यह शिकायत प्रायः सुनने में आती है कि घरेलू नौकर टिकते नहीं, और यदि टिकते हैं, तो ईमानदार नहीं होते। शिकायत सच्ची है, और इसके उदाहरण हम प्रतिदिन देखते हैं। अपने कितने ही मित्रों और मुलाक़ातियों के यहाँ तो हम नित्य नया नौकर पाते हैं। बड़े-बड़े घरानों में यही अवस्था है। कहीं-कहीं तो स्मरण करने का उद्योग करने पर भी गणना नहीं हो सकती कि अमुक गृह में कितने सेवक आ-जा चुके।

आश्चर्य की एक बात और देखिए। घरेलू नौकरों के जितने बखेड़े भारतीय घरों में सुनने और देखने में आते हैं, उतने अँगरेज़ी घरों में नहीं। इसका एक कारण शायद यह भी है कि भारतीयों में घर के काम-काज में सहायता देने के लिये नौकर रखने की प्रथा तुलना में नवीन है, और इसका प्रारंभ कहलानेवाली नई सभ्यता के युग से ही हुआ है, जब लोगों के काम-काज और धंधे बहुत बढ़ गए हैं। पिछले ज़माने के लोग प्रत्येक प्रकार अपने पैरों पर खड़े होने के आकांक्षी थे। वे सब काम स्वयं करने में आनंद का अनुभव करते थे, और नौकर-चाकर रखना केवल धनवानों की ही शान थी। बीते समय में लोगों के पास नक़दी का अभाव था, इसलिये वे नौकर रखते भी, तो कहाँ से? जिन दिनों पाँच रुपए मासिक वेतन पानेवाला व्यक्ति सांसारिक दृष्टि से सफल माना जाता था, उन दिनों नौकर रखना भला कैसे संभव था? प्राचीन काल में लोग केवल रोटी-कपड़े पर ही नौकर रखते थे। आज जीवन की आवश्यकताएँ केवल रोटी और कपड़े तक ही सीमित नहीं। प्रत्येक मनुष्य को नक़दी की भी आवश्यकता है, और यह आवश्यकता इस युग में शायद रोटी और कपड़े से भी अधिक है। यह समय का प्रभाव है। अँगरेज़ी शासन में पैसा प्रधान है, और सब वस्तुओं ने बदल-बदलाकर रुपए का ही रूप धारण कर लिया है। आज नक़दी लभ्य है, इसलिये अपने सुख और सुविधा के लिये प्रत्येक समर्थ व्यक्ति एक आध नौकर रखना चाहता है। कहने का अभिप्राय यह कि मध्यम श्रेणी के लोगों में नौकर-चाकर रखने का रिवाज अधिकतर अँगरेज़ी शासन में आरंभ हुआ, और वह भी शायद अँगरेज़ों की ही देखा-देखी।

यह नई प्रथा है, इसलिये भारतीय घराने अभी इसे पूर्ण रूप से अपना नहीं पाए। यही कारण है, न साधारण भारतीय घरानों को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नौकर रखने आते हैं, और न शायद नौकरों को रहना ही आता है। हमारे घरों में स्त्रियाँ तो विशेष रूप से नौकरों से काम लेना नहीं जानतीं, और बड़ी-बूढ़ियों की हालत यह है कि वे नौकर की गृह में उपस्थिति पर दाँत पीसा करती हैं। हमारे घरों में नौकर-चाकर यदि टिकने नहीं पाते, तो यह एक सीमा तक हमारी स्त्रियों की ही कृपा है। वे उनके साथ भद्दा और सहानुभूति-शून्य व्यवहार करती हैं। घरेलू नौकरों को हम लोगों के घरों में मनुष्य समझा ही नहीं जाता, और न उनके साथ मनुष्यों-जैसा व्यवहार किया जाता है। यदि हम यह सोचना सीख जायँ कि हमारी सेवा करनेवाले ये लोग, जिनमें कई अल्पायु बच्चे होते हैं, आख़िर माजाए हैं, और इन्हें समय की कठिनाइयों ने हमारा गुलाम बना रक्खा है, तो घरेलू नौकरों के संबंध में हमारा दृष्टिकोण एक सीमा तक बदल सकता है। कितने लोग हैं, जो अपने नौकरों को घरों के भीतर रहने के लिये कोई उचित स्थान या सोने के लिये अच्छी चारपाई देते हैं? साधारण घरों में जो कुछ देखने में आ रहा है, वह तो यही है कि ये लोग घर के किसी गंदे कोने में टाट या किसी टूटी हुई खटिया पर रात्रि व्यतीत करते हैं। इन लोगों के पास न तो अपने कपड़े-लत्ते रखने के लिये कोई स्थान होता है, और न दिन के समय घड़ी-दो घड़ी सुस्ताने की जगह। बहुत-से लोग, जो अपने घरों में नौकर-चाकर रखते हैं, यह स्वीकार करने को तैयार न होंगे कि वे अपने नौकरों को घटिया प्रकार का और घर के लोगों के खाने से बिलकुल भिन्न खाना देते हैं। यह बात खुले तौर पर मान ली जाय, तो हेठी हो जाने का भय है, और इस प्रकार अपने संकुचित-हृदय होने को स्वीकार करने के लिये भला कौन तैयार हो सकता है? पर सचाई यही है कि घरेलू नौकरों को जो खाना मिलता है, वह पृथक् प्रकार का होता है। इस प्रकार का व्यवहार नौकरों के मन को तुच्छता के ख़याल से उभरने नहीं देता, और न उन्हें यह विचार धारण करने देता है कि वे अपने आपको घर का एक अंग समझें। नौकरों में खाने-पीने की चीज़ों की चोरी की बुरी आदत की जड़ भी इसी प्रकार के व्यवहार में मिलती है। मालिक परीक्षा कर देख सकते हैं। यदि वे अपने नौकरों को बराबर का खाना दें, अर्थात् वही भोजन दें, जो रसोई में पकता है, और उनके खाने-पीने का ख़याल रक्खें, और केवल इतना ही नहीं, घर में बाल-बच्चों के लिये जो मिठाई और फल आदि आते हैं, उनमें भी नौकरों का हिस्सा स्वीकार करें, तो घरेलू नौकरों के मन भरे रहेंगे, और वे स्वामियों के साथ एक स्वाभाविक संबंध अनुभव करेंगे। स्वामी के नौकर से केवल इतना पूछ लेने से कि तुमने खाना खाया है या नहीं, नौकर का हृदय बल्लियों ऊँचा हो जाता है, और उसकी आत्मा आशीष देने लगती है। यह कितना सस्ता और सरल नुसख़ा है नौकरों को अपना बनाने का, पर कोई इसका प्रयोग करे तो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैंने जो बातें कही हैं, वे केवल काल्पनिक नहीं। मैंने अपने गृह में इन पर अमल किया है। मेरे पिताजी के घर में एक नौकर २४ वर्ष रहा, और मेरे अपने घर में आठ-नौ वर्षों से एक ही नौकर चला आ रहा है। धनवानों के यहाँ, पुराने नौकर होते हैं, पर साधारण घरों में आठ-दस वर्ष काटनेवाला नौकर और उसे इतना समय काटने देनेवाला मालिक निश्चय विशेष माने जाने योग्य हैं। नौकर रखने का मेरा अनुभूत प्रयोग तो यही है कि उचित कृपा और दया से उसे इतना बिगाड़ दिया जाय कि वह किसी अन्य स्थान जाने के पूर्णतया अयोग्य हो जाय। दयालुता की कतरनी से नौकर के पंख एक बार काट दिए जायँ, तो फिर वह कभी उड़ नहीं सकता। नौकरों के साधारण आराम और सुविधा का ख़याल रखने से ही वे मालिक के हो रहते हैं।

मैं इस बात का घोर विरोधी हूँ कि घरेलू नौकरों को बाज़ारों में घूमने-फिरने, दूकानों पर बैठने और अपने-जैसे नौकरों से मिलने-जुलने का अवसर दिया जाय। मेरा बस चले, तो मैं ऐसा अवकाश वर्ष में एक बार भी देना पसंद न करूँ। हाँ, नौकरों के लिये घरों के भीतर ऐसी व्यवस्था रहनी चाहिए कि वे अपने आपको भिचा अनुभव न करें। घर के बच्चों में इनके मनबहलाव का प्रबंध बराबर रहे। घर के लोग किसी विशेष स्थान की सैर के लिये जायँ, तो नौकरों को भी साथ ले जायँ। आज के मनोविज्ञानवेत्ताओं का बच्चों के लिये जो परामर्श है, वही मैं नौकरों को भी देना चाहूँगा, अर्थात् उनके लिये गृह ही को सब प्रकार के मनोरंजन और विश्राम का केंद्र बनाया जाय, जिससे वे उकताने न पाएँ।

नौकरों का उचित समय तो काम-काज में व्यतीत होगा ही, शेष समय में उन्हें अच्छे तथा स्वास्थ्यकर धंधों में लगे रहने की ऐसी स्वतंत्रता होनी चाहिए कि वे स्वामी की उपस्थिति में भी उस स्वतंत्रता का आनंद ले सकें, उदाहरण-रूप वे पढ़ें-लिखें, नहाएँ-धोएँ, और अपने कपड़े साफ़ करें। हम लोग अपने नौकरों को प्रायः अपने सामने आराम करते देखना पसंद नहीं करते, और हमें ऐसे दृश्य से प्रसन्नता के स्थान में कई अवस्थाओं में दुःख हुआ करता है। हमारी यह संकीर्णता शायद पीढ़ियों से चली आ रही है। नौकर के लिये काम के घंटे नियत करना हम अपना अपमान समझते हैं। घर की शान इसी में ख़याल की जाती है कि नौकर हमारी सेवा के लिये हर समय हाथ बाँधे हाज़िर रहे। कहने का अर्थ यह कि हम चाहते हैं, आठ-दस रुपए मासिक पानेवाले इस ग़रीब का अपना कोई जीवन न हो, और न इसे कभी उचित विश्राम का अवसर मिले। कौन नहीं जानता कि नौकर लोग भारतीय की नौकरी से अँगरेज़ की नौकरी को विशेषता देते हैं। यह इसी कारण कि अँगरेज़ का जीवन नियमित है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और वह आराम और काम, दोनो को अपने समय में बराबर स्थान देता है। अँगरेज़ का नौकर जानता है कि साहब को उसकी किन समयों पर आवश्यकता होगी। इसलिये वह उस समय इधर-उधर नहीं टलता। उसके कान साहब की पहली ही आवाज़ दबोचने के लिये बराबर खड़े रहते हैं। भारतीय घरानों में 'हर समय ही चाय का समय है' की कहावत के अनुसार घरेलू नौकर के लिये हर समय ही काम का समय है। घरवालों का खाने का कोई एक समय नहीं होता। बाबू-जी अब खाते हैं, तो बच्चे ज़रा ठहरकर, और बीबीजी तो सबको खिलाकर खाती हैं। फिर, घर में किसी भी समय अतिथि आ सकता है। इस प्रकार बेचारे नौकर को लगातार कई घंटे आग के सामने तपस्या करनी पड़ती है। पर इस ग़रीब का कष्ट अनुभव करे भी कौन? सब अपने-अपने आराम में पड़े हैं। हमारे देश में आठ-दस रुपए में मनुष्य को मानो मोल ही ले लिया जाता है। फिर, घरेलू नौकरों की जो क़ीमत प्रायः नियत हो चुकी है, उसमें गत १५ या २० वर्षों में कोई वृद्धि नहीं हुई। घरेलू नौकरों की श्रेणी की ओर से बोलनेवाला कोई प्रतिनिधि नहीं। समय की आवश्यकताओं के अनुसार सब श्रेणियाँ अपनी क़ीमतें बढ़ा रही हैं, पर घरेलू नौकर वहीं-का-वहीं है, और उस पर कड़ाई भी है सबसे अधिक। यदि नौकर रखनेवाला अपनी क़ीमत उन्नतिशील मानता है, तो क्या कारण है कि एक घरेलू नौकर की आरंभ और अंत की क़ीमत एक मानी जाती है। घरेलू नौकरों से हम जितना काम लेते और उन्हें इसके बदले में जो कुछ देते हैं, इसकी तुलना कर यदि हम अपने मन से यह प्रश्न करें कि क्या एक मनुष्य के बच्चे की सेवाओं की हमें इतनी ही क़ीमत देनी चाहिए, तो हमारा मन आप-से-आप घरेलू नौकरों की तुच्छ अवस्था का अनुभव कर उनके साथ सहानुभूति रखने के लिये उमड़ आएगा। नौकर को समय पर वेतन दिया जाय, उसे वर्ष में अधिक नहीं, तो १५ दिन की छुट्टी वेतन-सहित दी जाय, ताकि वह अपने ग्राम जाकर अपने घरवालों से मिल सके। उसे प्रतिवर्ष कुछ-न-कुछ तरक़्क़ी दी जाय, चाहे वह कुछ आनों ही के रूप में क्यों न हो। ऐसे उपायों से घरेलू नौकरों के नौकरी में न टिकने की शिकायतें दूर होने की संभावना हो सकती है। इस दरिद्र देश में नौकरों का अभाव तो कभी होगा नहीं। हाँ, नौकरों से संतोष-जनक सेवा प्राप्त करने के लिये मालिकों को अपने आपको बदलना होगा। नौकर और मालिक, दोनो कर्तव्यपरायणता से काम लें, तो इनके पारस्परिक संबंध आप-से-आप सुहावने हो जायँगे, इसमें संदेह नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शाहज़ादी ज़ेबुन्निसा 'मख़्फ़ी'

[श्रीयुत व्रजरत्नदास बी० ए०, एल्-एल्० बी०]

मुग़ल-सम्राट् औरंगज़ेब की पुत्री ज़ेबुन्निसा (स्त्रियों की शोभा) बेगम का जन्म हुए इसी वर्ष पूरे तीन सौ वर्ष हो गए। यह संसार के सुप्रसिद्धतम राजघराने की पुत्री होते हुए भी विदुषी तथा प्रतिभाशालिनी कवयित्री थी। इसकी कविता करुण-रस से ओत-प्रोत है। इसकी माता दिलरसबानू बेगम का सं० १६६४ में (२३ जीहिज्जा सन् १०४६ हि०) औरंगज़ेब से निकाह पढ़ाया गया था। यह ईरान के सफ़वी राजवंश के मिर्ज़ा रुस्तम क़ंधारी के पुत्र मिर्ज़ा बदीउज़्ज़माँ शाहनवाज़ख़ाँ* की पुत्री थी। मिर्ज़ा रुस्तम स्वयं सुकवि थे। इन्होंने 'फ़िदाई'-उपनाम से ग़ज़ल तथा हज़ल (भड़ौआ), दोनो कहे हैं। औरंगज़ेब के इस बेगम से प्रथम संतान यही ज़ेबुन्निसा हुई, जिसका जन्म चैत्र-शुक्ल १२ सं० १६६७ को हुआ था। औरंगज़ेब की यह द्वितीय संतान थी, और मुहम्मद सुलतान प्रथम था, जो दूसरी बेगम से हुआ था। इसके जन्म पर औरंगज़ेब इतना प्रसन्न हुआ कि अपने नाम के अर्द्धांश 'ज़ेब' को लेकर इसका नामकरण किया। ज़ेबुन्निसा का सहोदर भाई मुहम्मद आज़म इससे पंद्रह वर्ष छोटा था, जिसका जन्म सं० १७१० (१०६३ हि०) में हुआ था। मआसिरुल्उमरा के लेखक शाहनवाज़ख़ाँ अब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने ऐसा ही लिखा है*। मआसिरे-आलमगीरी में लिखा† है कि औरंगज़ेब के 'बेगम' से ज़ेबुन्निसा, ज़ीनतुन्निसा, ज़ुब्दतुन्निसा और मुहम्मद अकबर चार संतानें थीं, और मुहम्मद आज़म दिलरसबानू बेगम का पुत्र था। इस ग्रंथ में बेगम से इसी दिलरसबानू से तात्पर्य है। ज़ेबुन्निसा का मुहम्मद अकबर पर अत्यंत स्नेह था, और पिता के विरुद्ध उसके विद्रोह करने पर इसने उसका पक्ष लिया था, जिससे इसे ग्वालियर-दुर्ग में क़ैद होना पड़ा था।

शाहज़ादी ज़ेबुन्निसा

ज़ेबुन्निसा की अवस्था जिस समय छ वर्ष की हुई, वह मरियम हाफ़िज़ा को सौंपी गई, जो शुक्रुल्ला नैशापुरी की स्त्री थी। इसने शाहज़ादी को क़ुरान तथा राजमर्यादा के नियम सिखलाए। आठ वर्ष की अवस्था में इसने समग्र क़ुरान कंठाग्र कर लिया, और जब अपने पिता को मीठे स्वर में सब सुना दिया, तब वह इतना प्रसन्न हुआ कि इसे

* मआसिरुल्उमरा फ़ारसी, भाग २, पृष्ठ ६७०-७६ पर इसकी जीवनी दी गई है।

* मआसिरुल्उमरा, भाग २, पृष्ठ ४४५, हिंदी-संस्करण।

† मआसिरे-आलमगीरी, इलिअट डाउसन, भाग ७, पृष्ठ १६६।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीस सहस्र अशर्फ़ियाँ पुरस्कार में दीं, तथा कई दिन जलसे आदि किए। पुत्री की मेधा-शक्ति देखकर औरंगज़ेब ने उसे उच्च शिक्षा देने का निश्चय किया, और मुल्ला अशरफ़ को, जो माजिंदरान का एक विद्वान् सैयद था, फ़ारसी तथा अरबी पढ़ाने के लिये नियत किया। इसने फ़ारसी तथा अरबी-भाषाओं को बड़े मनन-पूर्वक पढ़ना आरंभ कर दिया, और शीघ्र ही इन दोनो में काफ़ी योग्यता प्राप्त कर ली। इन दोनो के साहित्यों की, गद्य तथा पद्य की, यह अच्छी मर्मज्ञा हो गई। इसने फ़ारसी-लिपि-कला में भी दक्षता प्राप्त की, और कई प्रकार के ख़त (लिपि) बहुत सुंदर लिख लेती थी। अवस्था बढ़ने पर इसने कविता करना आरंभ किया, पर अपने धर्मांध पिता के कारण, जो काव्य-कला तथा गान-विद्या का परम शत्रु था, यह अपनी रचना किसी को दिखलाने का साहस न करती थी। दैवयोग से एक दिन इसके गुरु ने इसकी रचनाएँ देख लीं, और विचारों की मौलिकता देखकर वह इतना आश्चर्य-चकित हुआ कि इससे पूछ बैठा कि ये रचनाएँ किसकी हैं? निरुपाय होकर इसे कहना पड़ा कि ये मेरी रचनाएँ हैं। तब उसके गुरु ने उसे प्रोत्साहित करते हुए कहा—"तुम अपनी रचनाएँ मुझे दिखलाकर संशोधन करा लिया करो।"

यह अपने कट्टर पिता का स्वभाव अच्छे प्रकार जानती थी, और स्वयं कितनी बुद्धिमती थी, तथा इसकी कल्पना-शक्ति और आशु काव्य-कला कितनी बढ़ी-चढ़ी थी, यह निम्न-लिखित घटना से स्पष्ट हो जाता है। एक दिन यमुनाजी के तटस्थ बाग़ में शाहज़ादी टहल रही थी, और उस पर बाग़ के मनोहर दृश्य तथा नदी के कल-कल शब्द का प्रभाव पड़ रहा था। वह निम्न-लिखित स्वरचित शेर पढ़ती हुई टहलने लगी—

चहार चीज़ जे दिल ग़म बुरद, कुदाम चहार?
शराब, सब्ज़ः ओ आबे-रवाँ, बरूए-निगार।

अर्थ—

चार वस्तु हैं कौन, हृदय से करें दूर दुख?
हरियाली, सलिलप्रवाह, मदिरा, सुंदर मुख।

एकाएक घूमते हुए सम्राट् औरंगज़ेब भी उसी बाग़ में आ गए, और प्रिय पुत्री ज़ेबुन्निसा को वहाँ टहलते पाकर उसी के पास पहुँचे। अचानक पिता पर उसकी दृष्टि पड़ी, तो वह त्रस्त हो उठी। उसने समझ लिया कि मेरी गुनगुनाहट पिता ने अवश्य सुन ली है। ऐसी अवस्था में एकाएक चुप हो जाना बड़ी मूर्खता होगी, और उसी शेर को ऐसे पिता के सामने दुहराना अपने सिर पर उसके भयंकर क्रोध को आमंत्रित करना है। चतुर ज़ेबुन्निसा ने तुरंत दूसरी पंक्ति बदलकर पढ़ना आरंभ किया, और औरंगज़ेब के सस्नेह पूछने पर उसने उक्त शेर इस प्रकार पढ़ दिया—

चहार चीज़ जे दिल ग़म बुरद, कुदाम चहार?
नमाज़ो रोज़ः ओ तस्बीहो तौबः इस्तग़फ़ार।

अर्थ—

चार वस्तु हैं कौन, हृदय से करें दूर दुख?
व्रत, माला, प्रार्थना, विरति, ये सब देवें सुख।

इसके पिता महोदय इस पर इतने प्रसन्न हुए कि इसे प्रेमालिंगन देते हुए कविता करने की आज्ञा दे दी। साथ ही उसे कवियों का सत्कार करने का भी आदेश मिल गया। नीरस हृदय ने समझा होगा कि इसकी कविता उसी प्रकार विरक्ति की माला फेरती रहेगी। शाहज़ादी के कवि-दरबार में नासिरअली सरहिंदी, मिर्ज़ा मुहम्मदअली 'सायब', मुल्ला ताहिर 'ग़नी', नेअमतख़ाँ 'आली' बहरोज़ आदि प्रमुख शायर थे। अनेक संग्रह-ग्रंथ तथा मौलिक रचनाएँ, जो कई विषयों पर लिखी गई थीं, इसे समर्पित की गईं। इनमें से एक ज़ेबुत्तफ़ासीर है, जो तफ़सीरे-कबीर का अनुवाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। इसे मुल्ला सफ़ीउद्दीन अर्दबेली ने लिखा था, जो शाहज़ादी की सेवा में नियत था। इसके सिवा ख़वाफ़ के निवासी आक़िलख़ाँ मीर अस्करी ने, जो मंसबदार तथा औरंगज़ेब का कृपा-पात्र था, 'राज़ी'-उपनाम से एक दीवान तथा मसनवी लिखा।

शाहज़ादी ज़ेबुन्निसा* को मुग़ल-राजमहल के भीतर तो पूर्ण स्वतंत्रता थी ही, पर कभी-कभी वह दरबार में भी जालीदार पर्दे की ओट में उपस्थित रहती थी, और मुख पर नक़ाब पड़ा रहता था। इसी कारण इसने 'मख़फ़ी'-उपनाम रक्खा था, ऐसा कहा जाता है। मुग़ल-राजवंश की अन्य दो महिलाओं अर्थात् नूरजहाँ बेगम तथा सलीमा सुलतान बेगम ने भी इसी उपनाम से कविता की है। ज़ेबुन्निसा अपने बड़े पितृव्य दाराशिकोह से बहुत प्रेम रखती थी, और अपनी आरंभिक रचनाएँ इसने उन्हीं को समर्पित की थीं। शाहजहाँ ने ज़ेबुन्निसा का निकाह दारा के पुत्र सुलेमान-शिकोह से निश्चित किया था, पर धूर्त-शिरोमणि औरंगज़ेब ने इस संबंध को कभी स्वीकार नहीं किया, क्योंकि अपने भाई तथा उसके बड़े पुत्र के प्रति उसके विचार ही कुछ और थे। मआसिरे-आलमगीरी में लिखा है—ज़ेबुन्निसा की छोटी बहन ज़ुब्दतुन्निसा का दाराशिकोह के छोटे पुत्र सिपहरशिकोह से निकाह हुआ था। जो कुछ हो, इस शाहज़ादी से सुलेमान-शिकोह का निकाह न पढ़ाया जा सका। अवश्य ही इसकी मँगनी हो चुकी थी, और अपने पिता ही द्वारा उसके मारे जाने का समाचार सुनकर यह दुखी हुई होगी। ऐसा भी कहा जाता है कि मिर्ज़ा फ़ारूक़ तथा ईरान के शाही वंश के एक युवक ने भी इससे निकाह करने का प्रयास किया, पर इसने स्वीकार नहीं किया। इस पर मिर्ज़ा फ़ारूक़ ने एक शेर लिखकर भेजा—

मुक़र्रर कर्दः अम दर दिल
अर्ज़ीं दरगाह् न ख्वाहम रफ़्त;
सर ईंजा, सिज्दः ईंजा,
बंदगी ईंजा, क़रार ईंजा।

अर्थ—मैंने निश्चय कर लिया है कि इस दरगाह (प्रेम-मंदिर) से कहीं न जाऊँगा, क्योंकि यही सिर, दंडवत्, प्रणाम तथा आराम का स्थान है।

इसके उत्तर में शाहज़ादी ने लिख भेजा—

चे आसाँ दीदई आशिक़!
तरीक़: इश्क़बाज़ी रा;
तप ईंजा, आतिश ईंजा,
अख़गर ईंजा और शरर ईंजा।

अर्थ—ऐ प्रेमी, प्रेम करने का ढंग तुमने आसान समझ लिया है। यहाँ ज्वर, अग्नि, चिनगारी तथा लपट, सभी है।

पूर्वोक्त आक़िलख़ाँ ज़ेबुन्निसा के प्रेमियों में से था, और यह भी उस पर विशेष कृपा रखती थी। यह ख़वाफ़ का निवासी सुंदर युवक तथा सुकवि था। यह औरंगज़ेब की शाहज़ादगी के समय से ही उसका इतना विश्वासपात्र सेवक था कि महाबतख़ाँ मुहम्मदइब्राहीम की इसने उपेक्षा कर दी, और बादशाही आज्ञा होते हुए भी इसने उसे शाही इमारतें दिखलाना अस्वीकार कर दिया। बादशाह ने इसकी इस उपेक्षा, हठ तथा आज्ञा के उल्लंघन पर इसकी सेवा तथा विश्वास के कारण ध्यान नहीं दिया। यह इतिहास-प्रसिद्ध है कि ज़ैनाबादी महल की मृत्यु पर औरंगज़ेब किस प्रकार संसार से विरक्त हो बैठा था। वह मृत्यु के दिन

---

* प्रायः भूल से लोग ज़ेबुन्निसाँ लिखते हैं, पर यह अशुद्ध है। निसा का अर्थ स्त्री है। इसी प्रकार लोगों ने भ्रम-वश जहाँआरा को जहाँनारा कर डाला है। जहाँ का अर्थ संसार और आरा का अर्थ शोभित करनेवाली है। नारा का क्या अर्थ लगा लिया है, यह नहीं कहा जा सकता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घोड़े पर सवार होकर जा रहा था, उस समय आक़िलख़ाँ ने स्वरचित यह शेर पढ़ा—

इश्क़ चे आसाँ नमूद, आह चे दुश्वार बूद ;
हिज्र कि दुश्वार बूद, यार चे आसाँ गिरफ़्त ।

अर्थ—

इश्क़ था आसान कितना ? आह ! अब दुश्वार है;
हिज्र था दुश्वार, आसाँ यार ने समझा उसे ।

शाहज़ादा औरंगज़ेब ने इस शेर को कई बार पढ़वाकर सुना, और याद किया । आक़िलख़ाँ सन् १६६१ ई० में अपने पद से हटा दिया गया, और दो वर्ष एकांत-वास करने पर इसे पुनः वह पद मिला । इसके बाद, सन् १६६६ ई० में, यह फिर हटाया गया, और आठ-दस वर्ष तक एकांत में रहता रहा । इसकी मृत्यु सं० १७५२ में हुई थी । प्रथम एकांत-वास के समय यह बीमारी के कारण लाहौर में ही रहता था, और जब काश्मीर से लौटते समय बादशाह औरंगज़ेब भी वहीं आकर ठहरा, तब ज़ेबुन्निसा भी साथ थी । एक दिन आक़िलख़ाँ बाग़ में टहल रहा था कि दैवयोग से ज़ेबुन्निसा सायंकालीन सहस्ररश्मि की शोभा देखने को छत पर निकल आई, जिसे देखकर आक़िलख़ाँ ने एकाएक यह मिसरा पढ़ा—

सुर्ख़ पोशे बलबे बाम नज़र मी आयद ;

अर्थ—लाल वस्त्र धारण कर छत के किनारे दिखलाई दी ।

शाहज़ादी दूसरा मिसरा पूरा कर कहती हुई हट गई—

न ब्ज़ारी, न बज़ोरो, न बज़र मी आयद ।

अर्थ—न रोने से, न बल से और न धन से दिखलाई देती है ।

परंतु आकर्षण दोनों ओर से था, इसलिये दूसरे दिन मज़दूरे की सूरत में आक़िलख़ाँ बाग़ में पहुँचा, जिसमें कुछ इमारत बन रही थी । शाहज़ादी बारहदरी में चौसर खेल रही थी, और आक़िलख़ाँ ने उसे देखकर यह मिसरा पढ़ा—

मन दर तलबत गिर्दे जहाँ मीगर्दम ;

अर्थ—मैं तुम्हारी खोज में संसार में चारो ओर घूम रहा हूँ ।

शाहज़ादी ने उसे तत्काल पहचान लिया, और शेर पूरा करते हुए उत्तर दिया—

गर बाद शवी बर सरे ज़ुल्फ़म् न रसी ।

अर्थ—यदि हवा बनेगा, तब भी मेरे केश तक न पहुँचेगा ।

कहा जाता है, यह परिचय बढ़ते हुए प्रेम में परिणत हो गया, और दोनों में बराबर प्रेम-पत्रों का आना-जाना जारी हो गया । जब ये दोनों दिल्ली आए, तब यहाँ एकांत में एक दूसरे से मिलने भी लगे । आक़िलख़ाँ उस समय ग़ुसल-ख़ाने का दारोग़ा था, इसलिये वह दिल्ली-दुर्ग में ही रहता था, जिससे मिलने में सुविधा भी थी । जब इसकी कुछ सूचना औरंगज़ेब को मिली, तब उसने आक़िलख़ाँ को दिल्ली से हटा दिया, और अपनी प्रिय पुत्री को तुरंत शादी करने के लिये आज्ञा दी । पर ज़ेबुन्निसा ने प्रस्ताव किया, पहले योग्य पात्रों के चित्र मँगवाए जायँ, तब मैं उनमें से किसी को चुन लूँगी । बादशाह स्वयं इसे इसकी स्वतंत्रता दे चुके थे, इसलिये बहुत-से चित्र मँगवाए गए, और इसने आक़िलख़ाँ को ही चुना । उसे सूचना दी गई, और निकाह के लिये दिल्ली बुलाया गया । वह अत्यंत प्रसन्न हुआ, और जाने की तैयारी करने लगा, पर किसी निराश प्रेमी ने उसे सुझाया कि तू यह क्या मूर्खता करता है ? यह तेरे विनाश का फंदा है, और तेरे पहले के दोष तथा कृतघ्नता का दंड देने का षड्यंत्र । आक़िलख़ाँ इस फेर में आ गया, और उसने यह सम्मान केवल अस्वीकृत ही न किया, वरन् अपने पद से त्याग-पत्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी दे दिया । शाहज़ादी ने यह सुनकर एक मिसरा एक पुर्ज़े पर लिखकर उसके पास भेज दिया—

शुनीदम तर्क ख़िदमत कर्द
आक़िलख़ाँ बनादानी ;

अर्थ—सुनती हूँ, मूर्खता से आक़िल (बुद्धिमान्)ख़ाँ ने सेवा त्याग दी ।

आक़िलख़ाँ ने उसी पुर्ज़े पर शेर पूरा कर उत्तर दिया—

चेरा कारे कुनद आक़िल
कि बाज़ आयद पशेमानी ।

अर्थ—बुद्धिमान् ऐसा काम क्यों करे कि बाद को पछताना पड़े ।

ऐसा होते हुए भी दोनो का एकांत-मिलन जारी रहा, और इस बार जब औरंगज़ेब को इसकी सूचना मिली, तब वह अत्यंत क्रुद्ध हुआ । एक दिन सुबह जब उसे पता लगा कि वह ज़ेबुन्निसा के कमरे में है, तब वह तुरंत वहाँ गया । शाहज़ादी यह सुनते ही घबरा गई । पर अंत में उसने आक़िलख़ाँ को एक बड़ी देग में छिपा दिया, जिसमें गरम करने के लिये आधा पानी भरा था । औरंगज़ेब जब भीतर पहुँचा, और बहुत खोजने पर भी कहीं पता न लगा, तब शाहज़ादी की दासियों को कड़ी धमकी दी । पर किसी ने बतलाने का साहस नहीं किया । वे शाहज़ादी से अत्यंत प्रेम रखती थीं । परंतु एक डरपोक दासी भय से देग की ओर संकेत-मात्र करके चुप हो रही । धूर्त-शिरोमणि तथा कठोर-हृदय औरंगज़ेब ने संकेत का अर्थ समझ लिया, और ज़ेबुन्निसा से पूछा—"इस देग में क्या है ?" उसने उत्तर दिया—"गरम करने के लिये पानी भरा है ।" इस पर बादशाह ने दासियों को आज्ञा दी—"फ़ौरन् पानी गरम करो ।" आग लगा दी गई, और कुछ ही देर में पानी उबलने लगा । शाहज़ादी भय के कारण कुछ भी न बोल सकी, और औरंगज़ेब तब तक वहाँ डटा रहा, जब तक उसे निश्चय न हो गया कि उसके भीतर का पुरुष उबलकर मर गया होगा । इसके बाद वह वहाँ से तशरीफ़ ले गया ।

परंतु उक्त मृत्यु की घटना ठीक नहीं, क्योंकि मआसिरुल्उमरा-नामक प्रामाणिक ग्रंथ में, जिसे लिखे गए दो शताब्दि से अधिक समय बीत गया, आक़िलख़ाँ की संक्षिप्त जीवनी दी गई है । उसमें लिखा है, इसकी मृत्यु सन् ११०७ हि० (सन् १६९६ ई०) में हुई थी । उस समय ज़ेबुन्निसा बावन वर्ष की वयस्का तथा आक़िलख़ाँ और भी वृद्ध रहा होगा । ऐसी अवस्थाओं में वैसा प्रेम नहीं हो सकता था । औरंगज़ेब उस समय अस्सी वर्ष का मरणप्राय वृद्ध था, दक्षिण में मुग़ल-साम्राज्य की क़ब्र खोद रहा था । यही हो सकता है, यदि उक्त घटना में कुछ सत्यता है, तो यही कि बारहवें वर्ष यह इस दोष के कारण पद तथा मंसब से च्युत किया जाकर लाहौर में एकांत-वास करने को भेज दिया गया हो, और प्राण-दंड के बदले निर्वासन द्वारा दंडित हुआ हो ।

ऐसा भी कहा गया है कि जब शिवाजी राजा जयसिंह के वचन देने पर दरबार में आए, तब तक इनके साहसिक कार्यों की प्रसिद्धि दिल्ली तथा आगरे में काफ़ी हो चुकी थी । दरबार में उपस्थित होने पर जब उनके साथ योग्य व्यवहार नहीं हुआ, और अदम्य निर्भीकता तथा क्षोभ से उन्होंने खुले दरबार में इसके लिये औरंगज़ेब का तिरस्कार किया, तब शाहज़ादी ज़ेबुन्निसा ने भी इन्हें देखा, और इनकी ओर वह आकर्षित भी हुई, परंतु इस आकर्षण का कोई फल नहीं निकला ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह इतिहास से स्पष्ट है, अतः इस कहानी में कोई सार नहीं ज्ञात होता।

मारवाड़-नरेश महाराज यशवंतसिंह की सन् १६७८ ई० में मृत्यु हो जाने पर औरंगज़ेब ने उस राज्य को ज़ब्त कर लेने का बहुत प्रयास किया। पर वहाँ के सरदारों तथा सेना ने, वीर दुर्गादास की अध्यक्षता में, वह स्वतंत्रता-युद्ध आरंभ किया, जिसमें तीस वर्ष तक मुग़ल-शक्ति मारवाड़ के पहाड़ों से सिर टकराकर अंत में असफल हो गई। इसी युद्ध में, सन् १६८१ में, औरंगज़ेब का पुत्र मुहम्मद अकबर राजपूतों से जा मिला। पर अपने धूर्तराज पिता की कपट-भरी चाल से वह एकदम असफल होकर दक्षिण होता फ़ारस भाग गया, जहाँ उसकी, सन् १७०४ ई० में, मृत्यु हो गई। ज़ेबुन्निसा ने अपने प्रिय छोटे भाई को सांत्वना का पत्र लिखा, तथा उससे बराबर गुप्त पत्र-व्यवहार रखती थी। दैव-योग से औरंगज़ेब को माघ सुदी ११, सं० १७३८ को इसका पता लग गया, तथा चिट्ठियाँ भी पकड़ी गईं, जिससे वह अत्यंत क्रुद्ध हो उठा, और भ्रातृस्नेह तथा वात्सल्य-प्रेम से हीन उस निठुर पिता ने पुत्री की सब संपत्ति छीन ली, और उसे सलीमगढ़ के दुर्ग में क़ैद कर दिया *। कारागार में इसने बहुत-सी कविता लिखी, जिनमें कारुण्य तथा हृदय-वेधी व्यथा छलक रही है—

दर्दा कि ज़े क़ैदे-सितम आज़ाद न गश्तम्;
यक लहजः ज़े ग़महाय जहाँ शाद न गश्तम्।

अर्थ—

अफ़सोस! न आज़ाद हुई क़ैदे-सितम से;
यक लहजः रही शाद न संसार के ग़म से।

तामरा ज़ंजीर दर पाए-दिले दीवानः शुद;
दोस्त शुद दुश्मन मरा हर आशना बेगानः शुद।

अर्थ—

पैर में ज़ंजीर पड़ते ही हुआ दीवानः दिल;
दोस्त दुशमन, आशना हरएक बेगानः हुआ।

ज़ेबुन्निसा जन्म-भर अविवाहित ही रही, और ऐसा ज्ञात होता है कि इसके भयानक पिता के कारण किसी भी प्रेमी का इससे विवाह करने का साहस न हुआ। दाराशिकोह के पुत्रों की हालत ही उनकी प्रेमानल को ठंडा कर देने के लिये बहुत थी। यह कहना कि शाहज़ादी स्वयं प्रेम से दूर थी, या उसके हृदय में प्रेम को स्थान न था, अशुद्ध है, क्योंकि उसकी कविता के प्रत्येक अक्षर में प्रेम, नैराश्य-पूर्ण प्रेम, भरा है, जिससे स्पष्ट ज्ञात होता है कि उसके हृदय में प्रेम की दावानल जल रही थी, जो कभी शांत न हो पाई। देखिए—

फ़र्ज़ कर्दम कि बयादे तू दिलम ख़ुसंद अस्त,
लेकिन ईं दीदए दीदार तलब रा चे इलाज?
मतवाँ इश्क़ निहाँ दाश्त ज़े मर्दुम, लेकिन
ज़र्दिए-रंगे रुखो ख़ुश्किए-लब रा चे इलाज?

अर्थ—मान लें कि तेरे स्मरण-मात्र से मेरा हृदय प्रसन्न रहे, पर दर्शन-लोलुप इन नेत्रों का क्या उपाय हो? लोगों से इस प्रेम को छिपा रख सकें, पर मुख के पीले रंग तथा अधरों की शुष्कता का क्या उपाय किया जाय?

मारा चु मोम बगुदाख़्त ईं आतिशे-मुहब्बत;
ता चंद बाशदत दिल दर सीनः संग खारा।

अर्थ—

हमें पिघला दिया है मोम-सा आतिशे-मुहब्बत ने;
है ठहरा दिल तुम्हारा सीनए-संगीन में कैसे?

किश्तीए-उम्र बशिकस्त दर बहे-नाउमीदी;
मुश्किल कि बाज़ बीनद आँ यारे आशना रा।

अर्थ—

समुद्रे-नाउमीदी में यह टूटी उम्र की किश्ती;
है मुश्किल देखना अब आशिक़े दिलदार को अपने।

* मआसिरे-आलमगीरी, हिंदी-अनुवाद। भाग २, पृष्ठ १०५।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हर रोज़ क़यामत गुज़रद बर दिले 'मख़फ़ी'❀ ;
ता चंद शवद वादः बफ़र्दाए - क़यामत ।

अर्थ—

हर रोज़ गुज़रता है दिले-मख़फ़ी पॅ क़यामत ;
होता है जो वादः बफ़र्दाए - क़यामत ।

ऐसा कहा जाता है कि इसकी छोटी बहन ज़ुब्दतुन्निसा† के, जो दाराशिकोह के छोटे पुत्र सिपहरशिकोह को ब्याही थी, जब प्रसव हुआ, तब उसका कष्ट देखकर ज़ेबुन्निसा पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि उसने विवाह न करना ही निश्चय किया। उसका एक शेर है, जिससे इसकी पुष्टि होती है—

ऐ सदफ़, तिश्नः बमरौ सूए नैसाँ मुनगिर ;
बराय क़तरए आबे जिगरत बशिगाफ़ंद ।

अर्थ—

ऐ सदफ़, प्यासा तू मर, पर सूए नैसाँ देख मत ;
फाड़ देंगे जिगर तेरा एक मोती के लिये ।

जो कुछ भी हो, वह अविवाहित रह गई, यह निश्चित है, और सन् १७०१ में इसकी मृत्यु हो गई। यह लाहौर के पास नवकोट के एक बाग़ में स्थित मक़बरे में गाड़ी गई, जो इस समय खँडहर-सा हो रहा है। यह अवस्था उस शेर के अनुसार ही है, जो उसकी क़ब्र पर खुदा है—

बर मज़ारे मा ग़रीबाँ नै चिराग़े, नै गुले,
नै परे पर्वानः सोजद, नै सदाए-बुलबुले ।

अर्थ—

हम ग़रीबों के मज़ारों पर न है दीपक, न गुल ;
नहिं जले पर्वानः का पर, है न बुलबुल की सदा ❀।

❀ अकबर की बेगम सलीमा सुलतान और नूरजहाँ बेगम, दोनो ने अपना उपनाम 'मख़फ़ी' रक्खा था ।

† मआसिरे - आलमगीरी में लिखा है—फागुन बदी ८, सन् १७२६ को यह विवाह हुआ था, और चार लाख दान-मेह था। इस निकाह का प्रबंध गौहरआरा तथा हमीदाबानू बेगमों ने किया था ।

❀ कहा जाता है, 'नैनविलास'-नामक काव्य इसी ज़ेबुन्निसा की रचना है, जिसका अंतिम दोहा इस प्रकार है—

ज़ेबुन्निसा जहान में दुख़्तर आलमगीर ;
नैनविलास विलास में ख़ास करी तहरीर ।

यह इसी कवयित्री की रचना हो सकती है, और यह भी हो सकता है कि किसी हिंदी-कवि ने इसके नाम पर यह रचना बनाई हो ।

छप रही है ! हिंदी में नवीन पुस्तक !! छप रही है !!!

सत्ययुग - मीमांसा अर्थात् चेतावनी-रहस्य ; इसका मूल्य ।=) रक्खा गया है, किंतु एक मास के भीतर =) के डाक-टिकट भेजनेवालों को इसकी एक प्रति प्रचारार्थ भेजी जायगी। शीघ्रता कीजिए, मौक़ा न चूकिए ।

चंद्र-कार्यालय, हालू बाज़ार, भिवानी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरी देहरादून-यात्रा

[साहित्यरत्न श्रीयुत लक्ष्मीनारायण टंडन 'प्रेमी' एम्० ए०]

पाँच-छ दिन हरद्वार में रहने के पश्चात् मैं ९ बजे सुबह की गाड़ी से देहरादून चल दिया, और लगभग १½ घंटे में वहाँ पहुँच गया। एक धर्मशाला में सामान रक्खा, और चाचा पंजाबी (इसी नाम से वह प्रसिद्ध है) के यहाँ भोजन किया। ताँगा किया, और १२-१५ पर घूमने चल दिया। पहले टपकेश्वर महादेव गया। यह बड़ा ही रमणीक स्थान है। ताँगा थोड़ी दूर पर ठहर जाता है। लगभग २-२½ फ़र्लांग पैदल चलकर एक पहाड़ी पर आया। एक छोटी पहाड़ी काटकर उसमें मंदिर बनाया गया है। शिवजी की मूर्ति बड़ी विशाल है। कई एक प्राकृतिक खोहें हैं, कई एक सिर पर लटकती हुई लंबी-चौड़ी चट्टानें हैं, जो छत का काम देती हैं। ऐसे सुरक्षित स्थानों में साधु निवास करते हैं। मंदिर के नीचे ही एक झरना बह रहा है। उस दृश्य का वर्णन कठिन है। मैंने उस पार जाकर एक फ़ोटो ली (पानी घुटने-घुटने तक भी नहीं, पर बहाव बहुत तेज़ था)। बहुत-से लोग उसमें नहा रहे थे। प्राकृतिक सीढ़ियाँ-सी वहाँ बनी हैं। उसे देखने के पश्चात् हम गुच्छू पानी (Robert's cave) गए। इस स्थान के चारो ओर पहाड़ियाँ हैं, और बीच में बहुत विस्तृत और खुला हुआ स्थान। वहाँ से झरना निकलते और बहते देखा। यह बहुत ही रमणीक स्थान है। यहाँ की पृथ्वी को ज़रा-सा छड़ी से खोदिए, पानी निकल आवेगा। यह झरना पहाड़ी के ऊपर से कलकल करता असंख्य छोटी-छोटी धाराओं में नीचे बहता है। चारो ओर घने वृक्षों से आच्छादित यह स्थान बड़ा शांति-प्रद और सुषमा एवं सौंदर्य का घर-सा है। पहाड़ी पर छोटे-छोटे एक-दो मंदिर भी दिखाई दिए।

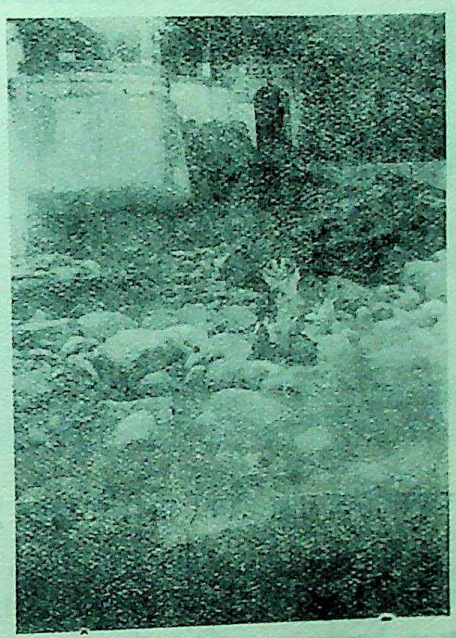

टपकेश्वर महादेव (देहरादून)

वहाँ से हम लोग न्यूफ़ॉरेस्ट की ओर चले। देहरादून बहुत ही स्वच्छ नगर है। काली-काली, सीधी और लंबी-चौड़ी सड़कें नगर के हर ओर दृष्टिगोचर होती हैं। यहाँ बड़े सुंदर-सुंदर पार्क तथा विस्तृत मैदान हैं। जिस ओर मिलिटरी-कॉलेज है, उस ओर जाने पर आपको अँगरेज़ी बाज़ार (हज़रतगंज की भाँति) मिलेगा, और इसी के आस-पास सुंदर-सुंदर बँगले और कोठियाँ बनी हैं।

सब देखते-दाखते 'कोलहागढ़-बिल्डिंग' पहुँचे। लाखों रुपए की इमारत है—बहुत सुंदर और दर्शनीय। इसके आस-पास की भूमि एक समतल मैदान है, और दूर पर पर्वत-श्रेणियों के दर्शन होते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं। 'अजायब-घर' में संसार-भर में जितने प्रकार की लकड़ियाँ होती हैं, जो-जो उनसे काम लिया जाता है, जो-जो रोग पेड़ों को हो सकते हैं, जो दवाइयाँ उनके बचाने और उन्हें ठीक रखने के लिये आवश्यक हैं, आदि-आदि सभी बातें हम वहाँ देख और जान सकते हैं। वहाँ की चीज़ें देखने और समझने के लिये जब सप्ताहों की आवश्यकता है, तो निश्चय है कि इस छोटे लेख में उनका वर्णन असंभव है। इस विषय में तो एक विस्तृत पुस्तक लिखी जा सकती है।

इस प्रांत का अस्तित्व प्राचीनता से संबंध रखता है।

किंतु देहरादून बहुत समय तक (महाभारत और रामायण-काल से प्रश्चात्) अज्ञात प्रांत-सा रहा। धार्मिक कथाओं का धर्म की दृष्टि से चाहे कितना ही अधिक महत्त्व क्यों न हो, किंतु इतिहास उन्हें अक्षरशः सत्य मानने के लिये प्रस्तुत नहीं। कुछ भी हो, उन धार्मिक कथाओं के धुँधले प्रांत ने नवीन और पूर्ण प्रकाश १७वीं शताब्दी में पाया। १७वीं शताब्दी में इसने

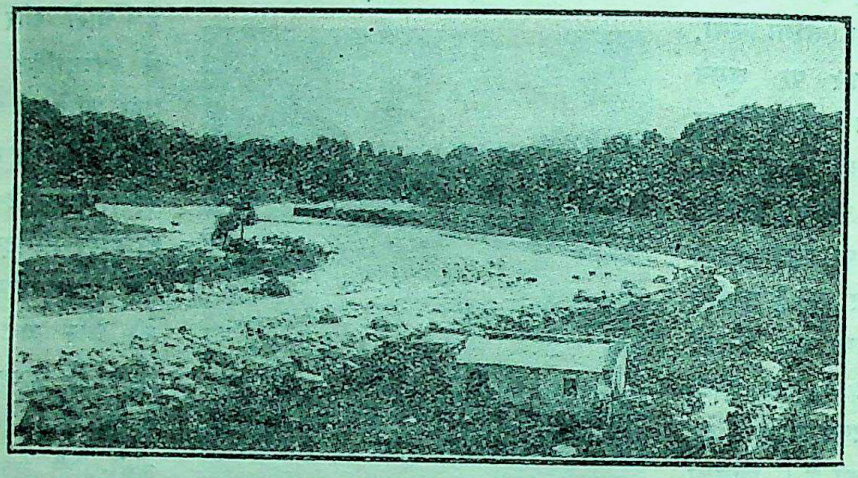

गुच्छूपानी का बाह्य दृश्य (घाटी से बाहर)

अब मैं देहरादून के प्राचीन इतिहास पर कुछ प्रकाश डालने का प्रयत्न करूँगा। हिंदुओं की धार्मिक अंतःकथाओं के अनुसार देहरादून का आविर्भाव उसी भूमि-क्षेत्र पर हुआ, जिसे केदार-कुंड कहते हैं, और जो शिवजी का निवास-स्थान रहा है। उनके नाम पर ही शिवालिक पर्वत-श्रेणी का नामकरण हुआ है। भारतवर्ष के दो महाकाव्यों (रामायण और महाभारत) की कथाओं में भी इस पवित्र प्रांत का नाम बार-बार आता है। संक्षेप में कहना यह है कि देहरादून अपना धार्मिक और ऐतिहासिक महत्त्व रखता है।

नवीन जन्म लिया, या कहिए, इसका पुनरुद्धार हुआ। भारतवासियों को तभी से इस प्रांत के विषय में ज्ञान हुआ, जब से यह गढ़वाल-प्रांत का उक्त सदी में एक भाग हुआ। सन् १६६६ में सिक्खों के गुरु रामरायजी यहाँ पंजाब से पधारे। उस समय फ़तेहशाह ही गढ़वाल के राजा थे। गुरुजी औरंगज़ेब से एक पत्र फ़तेहशाह के नाम लाए। आज्ञा मिलने पर उन्होंने एक मंदिर का शिलान्यास किया, और मंदिर बन जाने पर मंदिर के ख़र्च और गुज़ारे के लिये बहुत-से गाँव मंदिर के नाम लिख दिए गए। राजा फ़तेह-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शाह इस कार्य के लिये सिक्खों की प्रशंसा के पात्र हैं। मंदिर बहुत ही सुंदर, अपूर्व एवं दर्शनीय है, जो देहरादून के प्रायः बीचोबीच में स्थित है। इसकी आश्चर्य-जनक, अभूतपूर्व और रहस्योन्मुखी वास्तुकला के लिये प्रत्येक नवीन यात्री को इसके दर्शन अवश्य करने चाहिए।

अशोक महान् ने बहुत-सी शिलाओं में बौद्ध-धर्म के मत और सिद्धांत खुदवाए, जिसमें वे उपदेश और शिक्षा पाकर लोग अपने को सुधार सकें। उन्होंने स्तंभ भी बनवाए। शिला-लेखों में बौद्ध-धर्म की मुख्य शिक्षा, जीवन में शुभ आचरण के नियम और सिद्धांत आदि ही उनके विषय हैं। ये शिला-लेख आदि प्रायः उन स्थानों पर हैं, जहाँ व्यापारी-मार्ग था (उनके समय में)। एक ऐसा शिला-लेख 'कालसी' में है, जो देहरादून से ७ मील दूर, चकरौता रोड पर, यमुना-तट पर, स्थित है।

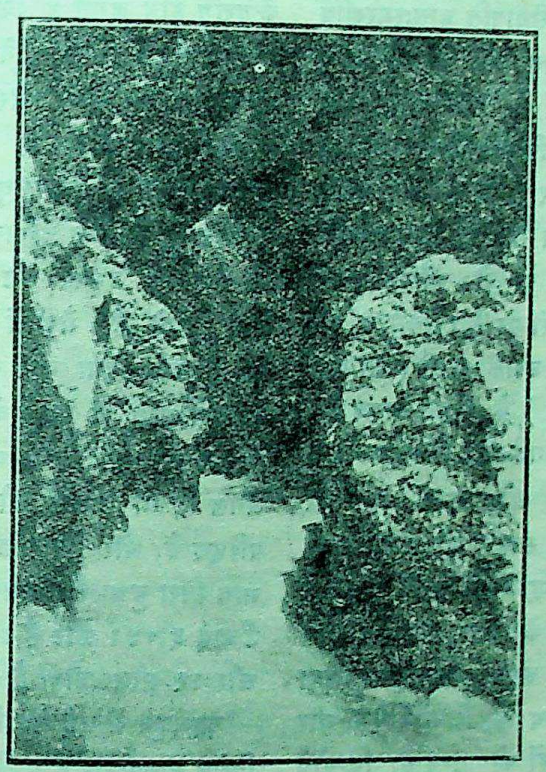

गुच्छूपानी

तैमूर लंग दिल्ली को विध्वंस और लूट-मार कर चुकने के पश्चात् लौटते समय इसी देहरादून की उपत्यका से होकर गुज़रा, और नाहन के राजा से उसका कालसी-स्थान पर भयानक युद्ध हुआ। जिस समय भारतवर्ष में मुग़लों का राज्य था, उस समय भी सेना-नायक ख़लीलुल्लाख़ाँ ने इस प्रदेश पर, सन् १६२४ में, आक्रमण किया, और गढ़वाल के राजा को हराया, और सज़ा दी, और इस स्थान के राज्य को एक चतुर्भुज नामी मनुष्य को दे दिया। १७२७ ई० में इस पर नजीबख़ाँ ने आक्रमण किया। सन् १८०० में मराठों ने आक्रमण किया, और फिर गोरखों ने, श्रीअमरसिंह थापा के सेनापतित्व में, आक्रमण किया। उन्होंने गढ़वाल के राजा प्रद्युम्नशाह को खुरबुरा के युद्ध में मार डाला। इसी समय से गोरखों के राज्य का यहाँ बीजारोपण हुआ। १७६५ में गोरखों की, पृथ्वीनारायण की अधीनता में, बड़ी सुंदर, विस्तृत, सुव्यवस्थित और नियंत्रित सेना हो गई। उन लोगों ने सन् १७९० ई० में अलमोड़ा जीत लिया, और अंत में, १८०३ में, गढ़वाल भी जीत लिया।

गोरखों का राज्य-शासन बड़ा ही कठोर था, लेकिन उन्होंने उस समय के महंत को परेशान नहीं किया, जो उस समय के भयंकर आक्रमणकारियों पर परोक्ष रूप से अपना प्रभाव डाल रहे थे। महंतों का प्रभाव जिस स्थान में उनका निवास होता है, उसके आस-पास के लोगों पर पड़ता ही है। इस समय के महंत भी बहुत सुयोग्य, सच्चरित्र, विद्वान् और अपूर्व भक्त हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वहाँ के महंतों का प्रभाव सदा से ही वहाँ के निवासियों पर पड़ता रहा है, और उससे उनका लाभ भी होता रहा है।

सन् १८१४ में नैपाल-युद्ध प्रारंभ हुआ। गोरखे यद्यपि संख्या में बहुत कम थे, तो भी उन्होंने शीघ्रता-पूर्वक नलापानी (यह स्थान भी दर्शनीय है)-पहाड़ी पर एक दुर्ग स्थापित किया, जो कालिंगगढ़ के नाम से अधिक प्रसिद्ध है, और अपने योग्य, अलौकिक वीर और अद्वितीय साहसी सेनापति प्रातःस्मरणीय बलभद्रसिंह थापा की अधीनता और सेनापतित्व में यहीं से दृढ़ता-पूर्वक शत्रुओं की गति रोकने और उनसे मोर्चा लेने के लिये निश्चय किया। रिसपन की बाईं तरफ़ (किनारे पर), कालिंग की दूसरी तरफ़ (उसकी विरुद्ध दिशा में) दो छोटे, चौकोने मीनार-से हैं। वर्तमान डी० ए० वी० कॉलेज से यह स्थान आधे मील की दूरी पर है। इनमें से एक जेनरल गिलिस्पाई और उसके साथी (जो वहाँ उसके साथ युद्ध में मरे थे) के स्मृति-स्वरूप है। दूसरे मीनार पर हमारे गर्व और भारत माता के सपूत बलभद्रसिंह थापा और उनके ७० वीर योद्धाओं के गुणों, वीरता, साहस और देश-प्रेम की गाथाएँ लिखी हैं। इन योद्धाओं ने अपने अभूतपूर्व और अलौकिक वीर-कार्यों के द्वारा सदा के लिये भारतवासियों के हृदय को अपना स्थान बना लिया है। उन माताओं को धन्य है, जिन्होंने ऐसे वीर पुत्र उत्पन्न किए; ऐसे वीरों को धन्य है, जिन्होंने अपनी माताओं का दूध लजाया नहीं। भारतवर्ष या अन्य किसी भी देश के इतिहास में ऐसे वीरता-पूर्ण कार्य-कलापों की तुलना और समता नहीं मिलेगी। सिरमौर-प्रदेश-अंतर्गत जैतक-स्थान की रक्षा बलभद्रसिंह थापा उस समय तक करते रहे, जब तक अँगरेज़ों का युद्ध और उनके आक्रमण पूर्ण रूप से समाप्त नहीं हो गए, और जब तक सन् १८१६ में सिगौली की संधि नहीं हो गई।

प्रस्तुत देहरादून-नगर का जन्म तो अभी थोड़े ही वर्षों पूर्व हुआ है। यह समुद्र-तल से २,२२३ फ़ीट ऊँचा है। पहलेपहल हरद्वार तक ही रेल थी। सन् १९०० में हरद्वार से देहरादून तक गई। इस समय भी देहरादून के आगे रेल नहीं जाती। मसूरी जाने के लिये देहरादून ही अंतिम रेलवे-स्टेशन है, इसके बाद लारी और मोटरें जाती हैं। यों तो लालकुआँ स्थान ही से पर्वत-श्रेणी के दर्शन होने लगते हैं, किंतु देहरादून तक पर्वत-श्रेणियाँ बहुत ऊँची होने लगती हैं, और रेल की पटरियों के लिये चौरस और उपयुक्त स्थान मिलना सरल नहीं रह जाता। हम हरद्वार के कुछ पहले ही से जल-वायु में भी परिवर्तन अनुभव करने लगते हैं, किंतु देहरादून आकर तो हम वायु की नमी और उसकी ठंड का पूर्ण रूप से अनुभव करने लगते हैं। मैदानों से आनेवालों के लिये यह परिवर्तन छिपा नहीं रह सकता। इस प्रदेश के बहुत-से भाग में चाय के बाग़ हैं। दून-उपत्यका का क्षेत्रफल प्रायः ६७३ वर्गमील है। यहाँ घने-घने जंगल हैं, जो चश्मों और छोटी-छोटी नदियों से परिपूर्ण हैं, और शिवालिक पर्वत-श्रेणियों से यह भाग घिरा हुआ है, जिसकी सबसे ऊँची चोटी की उँचाई ३,०४१ फ़ीट है। यह घाटी ४५ मील लंबी और १५ मील चौड़ी है।

देहरादून में कई वैज्ञानिक और सैनिक संस्थाएँ विशेष महत्त्व-पूर्ण हैं। 'The Great Trigonometrical Survey of India Department Office' की नींव सन् १८३० में डाली गई थी, और इस संस्था का संबंध कालोनल एवरेस्ट के नाम से भी है (यह वही महाशय हैं, जिनके नाम पर ही हिमालय की सर्वोच्च पर्वत-श्रेणी 'एवरेस्ट' का नामकरण हुआ है)। अब तो इस दफ़्तर का क्षेत्र और कार्य-क्रम बहुत अधिक विस्तृत हो गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ट्रिगनोमेट्रिकल के विभाग के अतिरिक्त यहाँ अन्य विभाग भी हैं। सारे ब्रिटिश-साम्राज्य में केवल तीन ही observatories हैं (ग्रीनविच, मारिशस और देहरादून में), जहाँ सूर्य की फ़ोटो ली जाती हैं। इसके अतिरिक्त यहाँ Imperial Forest Research Institute है, जो अपनी भाँति की संसार में केवल दूसरी ही है। यहाँ फ़ॉरेस्ट-कॉलेज है, मिलिटरी एकेडमी है, जिसे इंडियन सैंडहर्स्ट भी कहते हैं, और प्रिंस ऑफ़ वेल्स मिलिटरी कॉलेज है। Viceroy's Body Guard और गवर्नमेंट सरकिट हाउस भी यहाँ है, जहाँ वाइसराय और गवर्नर ठहरते हैं।

यह प्रांत चाय के व्यापार के लिये सदा से ही प्रसिद्ध रहा है। पहला चाय का बाग़ कोल्हागढ़ में, लॉर्ड विलियम बेंटिंग के समय में, लगाया गया, जिसे सिरमौर के महाराजा ने तीन लाख रुपए में ख़रीद लिया, और वह बाग़ इस समय तक बहुत अच्छी दशा में है।

हम लोग न्यूफ़ॉरेस्ट (कोल्हागढ़-बिल्डिंग) देखने जा रहे थे। हम लोगों का ताँगा इनके बाग़ों से होकर गुज़रा। चाय के खेत मीलों तक फैले हुए हैं। हम लोग यहाँ उतर पड़े, और ख़ूब खेतों के चारो ओर घूमे। चाय की हरी-हरी पत्तियाँ थीं, जो कुछ लंबी कही जा सकती हैं, और उन पर एक विशेष प्रकार की हरी-हरी छोटी-छोटी घुंडियाँ होती हैं। हम लोगों ने थोड़ी-सी पत्तियाँ और घुंडियाँ लखनऊ लाने के लिये तोड़कर अपनी-अपनी जेबों में रख लीं। मार्ग में एक बड़ी लंबी नहर पड़ी। कदाचित् इससे नहाने-धोने के अतिरिक्त इन खेतों की सिंचाई भी होती है। नहर पक्की है। बीच-बीच में, थोड़ी-थोड़ी दूर पर, आर-पार जाने के लिये छोटे-छोटे पुल-से हैं। नहर की चौड़ाई २-३ गज़ चौड़ी होगी। ऊँची-नीची भूमि होने के कारण थोड़ी-थोड़ी दूरी के बाद छोटे-छोटे फ़ाल-से हैं—अर्थात् फ़ीट-डेढ़ फ़ीट की ऊँची सतह से नीचे पानी गिरता है। इस नहर द्वारा नगर के उस भाग की प्राकृतिक शोभा बढ़ गई है, यद्यपि उस स्थान में नगर की चहल-पहल हमें नहीं मिलती। जन-रव से १½-२ मील दूर यह स्थान है। उस ओर आबादी है, पर कम। एक ओर तो किसान और मामूली लोग ही रहते हैं, और कुछ दूर हट-कर बड़े-बड़े आदमियों की कोठियाँ भी हैं। ख़ैर।

व्यापार की दृष्टि से यहाँ की मुख्य वस्तुएँ चाय और लकड़ी हैं। लकड़ी की कारीगरी का काम भी यहाँ होता है।

आखेट की दृष्टि से देहरादून बहुत उत्तम स्थान है। नगर से दूर घने जंगलों में शिकार भी मिल सकते हैं।

शिक्षा की दृष्टि से भी देहरादून महत्त्व-पूर्ण स्थान है। यहाँ की प्रसिद्ध शिक्षा-संबंधी संस्थाएँ ये हैं—

(१) दि दून स्कूल—इसमें स्कूली शिक्षा के अतिरिक्त चित्रकला, वास्तुकला, मूर्तिकला, बरतन बनाना, पत्थर में खुदाई का काम, बढ़ईगीरी, धातु का काम और संगीत आदि भी सिखाया जाता है।

(२) डी० ए० वी० इंटरमीजिएट कॉलेज—यहाँ का यह सबसे मुख्य कॉलेज है। आर्ट और साइंस के सभी विषयों में यहाँ शिक्षा दी जाती है।

(३) महादेवी-कन्या-पाठशाला इंटरमीजिएट कॉलेज—लड़कियों का प्रमुख और बहुत प्रसिद्ध कॉलेज है।

(४) दि ए० पी० मिशन-हाईस्कूल—यह पलटन-बाज़ार में स्थित है।

(५) दि ए० पी० मिशन-गर्ल्स हाईस्कूल—यह राजपुर-रोड के निकट स्थित है।

(६) साधूराम-हाईस्कूल (ओरियंटल ऐंग्लो-वर्नाक्यूलर हाईस्कूल)—यहाँ कुछ दस्तकारी की भी शिक्षा दी जाती है।

(७) इसलामिया स्कूल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(८) गोरखा-मिलिटरी-स्कूल

(९) नारी-शिल्प-मंदिर (कन्याओं के लिये)

(१०) गवर्नमेंट गर्ल्स-मिडिल स्कूल (कन्याओं के लिये)

(११) एक और गवर्नमेंट गर्ल्स मिडिल-स्कूल (कन्याओं के लिये)

(१२) गवर्नमेंट-कारपेंटरी स्कूल

(१३) कालोनल ब्राउन कैंब्रिज स्कूल

(१४) सेंट जोसेफ़ एकेडेमी इत्यादि ।

देहरादून के आस-पास बहुत-से दर्शनीय स्थान हैं । एक तो राजपुर से ३-४ मील दूर पर सहस्त्र-धारा और दूसरे मसूरी, जो यहाँ से प्रायः २२ मील है, और मसूरी से केमरी-फ़ाल और जमुना-ब्रिज आदि थोड़ी-थोड़ी दूरी पर हैं । मैं 'मेरी मसूरी-यात्रा' में राजपुर, सहस्त्रधारा, जमुना-ब्रिज आदि का वर्णन पूर्ण रूप से कर चुका हूँ, अतः उसे इस लेख में दोहराना नहीं चाहता ।

यहाँ से हृषीकेश, लक्ष्मण-झूला और स्वर्गाश्रम आदि भी जाया जा सकता है, किंतु चूँकि इन सबका उल्लेख हरिद्वार के संबंध में हो चुका है, अतः इनके विषय में यहाँ कुछ लिखना अनावश्यक है ।

देहरादून को अपने आकर्षणों के कारण जो स्थान प्राप्त है, वह उपयुक्त ही जान पड़ता है ।

देहरादून से ५८ मील दूरी पर 'चकरता' है । यह मिलिटरी स्टेशन है । यहाँ होटल और 'बोर्डिंग-हाउस' नहीं मिलेंगे । हाँ, एक काफ़ी बड़ा बाज़ार अवश्य है, जिसमें आवश्यकता की सभी वस्तुएँ सरलता-पूर्वक मिल सकती हैं । किंतु यहाँ से ८ मील की दूरी पर और उँचाई पर 'देव-वन'-नामक बड़ा सुंदर स्थान है । यह मसूरी-शिमला-रोड पर है, और यहाँ से हिमालय की हिमाच्छादित पर्वत-श्रेणियाँ एक दृष्टि में पूर्ण रूप से दिखलाई देती हैं । प्रकृति की इस सुषमा और मनोहरता का वर्णन करने के लिये शब्दों से काम नहीं निकल सकता । वह अत्यंत चित्ताकर्षक है, और मनुष्य के हृदय को सात्त्विक और स्वर्गीय भावों से भर देता है । इस स्थान पर बसों और मोटरों द्वारा पहुँचा जा सकता है । वे साहसपुर होती हुई कालसी तक और वहाँ से इस पहाड़ी के ऊपर टेढ़े-मेढ़े घुमाव-दार रास्तों से होकर जाती हैं ।

केवल एक बात का वर्णन करके मैं लेख समाप्त करता हूँ । स्टेशन से २-३ फ़र्लांग की दूरी पर एक कोई वैश्य सज्जन की धर्मशाला है । हम लोग उसी में टिके । धर्मशाला में मंदिर भी है । वहाँ का मैनेजर बड़ा ही टर्रा था । ख़ैर, हम लोगों पर तो उसकी कृपा ही रही, किंतु वहाँ रहना सुरक्षित नहीं । दूसरे, वहाँ बड़ी गंदगी है, विशेषकर पाख़ाने में । गरमियों के दिनों में वहाँ टिकना तो और भी कष्टदायक है । तो भी मैनेजर ने हम लोगों को वहाँ विशेष सुविधाएँ प्रदान कीं ।

देहरादून की मधुर स्मृति हम लोगों के हृदय से कभी दूर नहीं हो सकती ।

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, कवि-कुटीर, लखनऊ में आपको सब जगह की हिंदी-पुस्तकें मिलेंगी । सब सूचीपत्र मँगा लीजिए । स्थायी ग्राहक बन जाइए ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'अज्ञान के भूत' से डरकर आप भाग खड़े होते हैं ! क्यों ?

सत्साहित्य का पठन-पाठन

आपको मानसिक और आत्मिक बल तथा साहस प्रदान करता है !

आपका सबसे बड़ा अपराध है कि आप अपने को नहीं जानते, और न जानने का प्रयत्न ही करने की लालसा है ।

विद्या और ज्ञान

मानव-जीवन के लिये आवश्यक है ! आदि-सृष्टि के क्रमिक विकास का विवेचनात्मक विवरण, मनुष्य का सच्चा इतिहास, संसार के गूढ़तम निर्माण-रहस्य का प्रत्यक्षीकरण ।

मनुष्य का विकास

जिसमें

हमारी ज़मीन पर सबसे पहले जानवर कैसे पैदा हुए ? मनुष्य-जाति कैसे प्रकट हुई ? क्या आदमी आसमान से बरस पड़े थे ? या पाताल से निकल पड़े थे ? इन सभी प्रश्नों का विस्तृत और प्रासंगिक उत्तर देनेवाली एकमात्र

पुस्तक

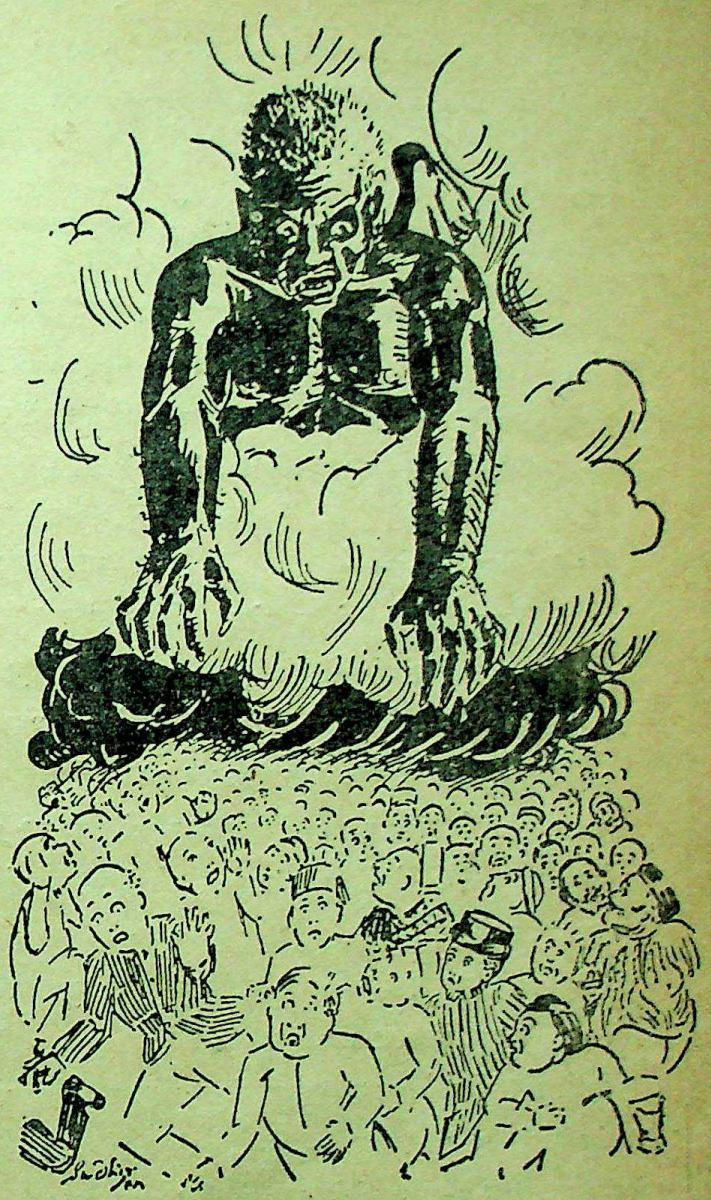

मनुष्य का विकास

{ लेखक, श्रीज्योतिलाल भार्गव बी० ए०, एल्-एल्० बी०, हिंदी-पब्लिसिटी ऑफ़िसर, बिहार-गवर्नमेंट }

छपकर तैयार है ! मँगाए !!

सजिल्द ॥=)

सादी ।=)

गंगा पुस्तक माला लखनऊ कार्यालय

अपनी संतान को इस ज्ञान से विमुख न रक्खें !!!

आज ही ऑर्डर भेजें

मिलने का पता—

गंगा-ग्रंथागार, ३६, लाटूश रोड, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिश्रबंधु (रावराजा डॉक्टर श्यामविहारी मिश्र एम्०ए०, डी० लिट्० तथा रायबहादुर पंडित शुकदेवविहारी मिश्र बी०ए०)

की

अमर कृतियाँ अवश्य पढ़िए

(१) हिंदी-साहित्य का इतिहास—पृष्ठ ३७०; मूल्य अजिल्द १॥), सजिल्द २)। इस पुस्तक में न केवल हिंदी-साहित्य का पूर्ण तथा अप-टु-डेट वर्णन है, वरन् भारतीय धार्मिक, सामाजिक तथा राजनीतिक विकास का भी मनोरंजक इतिहास सूक्ष्मरीत्या कथित है। इसमें कई बड़े ही नवीन विचार मुसलमान-पूर्ववाले भारत के संबंध में मिलेंगे। पुस्तक पढ़ने ही योग्य है।

		सजिल्द	अजिल्द	संस्करण
(२) मिश्रबंधु-विनोद—	प्रथम भाग	२॥)	२)	चौथा
इस ग्रंथ के लेखक ज्येष्ठ	द्वितीय भाग	३॥)	३)	तीसरा
बंधु पंडित गणेशविहारीजी मिश्र	तृतीय भाग	२॥)	२)	,,
भी थे। विविध भागों के विविध	चतुर्थ भाग	४॥)	४)	पहला

संस्करण हुए हैं। चौथा भाग सं० १९९१ में ही छपा था।

सब भागों में मिलाकर ४,५०० से अधिक कवियों तथा १२,००० से अधिक ग्रंथों के वर्णन हैं। ग्रंथ आधुनिक तथा नवीन खोजों का भांडार है। किसी भी कवि के विषय में कुछ लिखने के लिये इसकी खोजें आवश्यक होंगी।

(३) हिंदी-नवरत्न (सचित्र)—मूल्य अजिल्द ४॥), सजिल्द ५), ११ चित्र हैं, जिनमें कई रंगीन भी हैं। छठा संस्करण निकल गया है।

इसमें हिंदी के सर्वोत्कृष्ट दस कवियों के समालोचना-गर्भित पूर्ण विवरण हैं। पृष्ठ-संख्या प्रायः ७५० है। ग्रंथ में पांडित्य का ख़ासा विकास तो है ही, वर्ण्य विषयों से पूर्ण सहृदयता के कारण विवरण भी बड़े ही हृदयहारी और भड़कीले बन पड़े हैं। उदाहरण इस प्रचुरता से प्रस्तुत हैं कि कवियों की रचनाओं के चित्र सामने खड़े हो जाते हैं। ग्रंथ कई विश्वविद्यालयों में एम्० ए० की पाठ्य पुस्तक है, तथा इतर कई परीक्षाओं में भी सत्कारित है। ग्रंथ पढ़ने ही योग्य है।

(४) संक्षिप्त हिंदी-नवरत्न—मूल्य अजिल्द १), सजिल्द १॥); द्वितीय संस्करण। पृष्ठ-संख्या २०० से अधिक। हिंदी-नवरत्न बहुत बड़ा ग्रंथ है। इसीलिये छोटे आकार में उसका स्वाद देने के विचार से यह पुस्तक बनी है।

(५) पद्य-पुष्पांजलि—पृष्ठ-संख्या २४५; सजिल्द २), अजिल्द १॥)। इसमें व्रजभाषा तथा खड़ी बोली के अमर पद्यमय साहित्य के मुख्य भाग एकत्र किए गए हैं, जिसमें पाठक थोड़े में कवियों की विस्तृत रचनाओं की बानगी पा सकें। इसे एक प्रकार से 'मिश्रबंधु-सुधा' समझना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(६) पूर्व-भारत नाटक—चतुर्थ संस्करण; मूल्य अजिल्द ॥=), सजिल्द १।=) । यह एक मौलिक नाटक है, जिसमें महाभारत की कथा का रूप विराट-पर्व-पर्यंत आया है। ग्रंथ पंजाब में कोर्स-बुक भी रह चुका है। बड़ा ही मनोहर नाटक है। इन्हीं का उत्तर-भारत नाटक भी हमारे यहाँ से मिल सकता है।

(७) शिवाजी नाटक—प्रथम संस्करण ; मूल्य अजिल्द १), सजिल्द १॥) । यह अभी हाल ही में छपा है। इसमें छत्रपति शिवाजी की अलौकिक जीवनी की हृदयग्राही कथा उत्तम प्रकार से कही गई है। ग्रंथ नाटकत्व से कमनीय और कवित्व-शक्ति से सौरभित है, जिसे एक बार उठा लेने से विना अंत-पर्यंत पढ़े चित्त न मानेगा। मिश्रबंधु-कृत 'ईशानवर्मन'-नामक ऐतिहासिक नाटक भी हमारे यहाँ से मिल सकता है।

(८) जापान का इतिहास—मूल्य अजिल्द ॥=), सजिल्द १) । यह ग्रंथ बड़ी सहृदयता-पूर्वक जापान का विवरण थोड़े में देता है।

(९) धर्म-तत्त्व—इसमें १२२ पृष्ठों में हिंदू-धर्म का ऐतिहासिक तथा इतर कथन थोड़े में किया गया है। तीन अध्याय हैं, जिनमें पहले में तो विकास का हृदयग्राही कथन है, दूसरे में हिंदू-धर्म के नवयुगों का और तीसरे में दशोपनिषदों तथा गीता से चुना हुआ मूल और अनुवाद-सहित १२० वाक्यों द्वारा हिंदू-धर्म का शुद्ध रूप दिया हुआ है। ग्रंथ पढ़ने से हिंदू-मत की महत्ता, वास्तविकता और सत्यता पर आँखें खुल जाती हैं। मूल्य ॥)

(१०) देव-सुधा—मूल्य अजिल्द ॥), सजिल्द १) । इसमें प्रसिद्ध महाकवि 'देव' के २७१ उत्तमोत्तम छंद पूर्ण अर्थों के साथ चुने गए हैं। मि श्रबंधु का दावा है कि यह व्रजभाषा का सर्वोत्कृष्ट ग्रंथ है।

(११) बिहारी-सुधा—मूल्य अजिल्द ॥), सजिल्द १) । इसमें सुकवि बिहारीलाल के २७० उत्तमोत्तम दोहों का संग्रह है, जिसमें अर्थों के साथ मुख्य काव्यांग भी दिखला दिए गए हैं। देव-सुधा और बिहारी-सुधा को मिलाकर पढ़ने से इन दोनो महाकवियों के अपेक्षाकृत साहित्योत्कर्ष पर भी विचार करने का मौक़ा मिलता है। ये दोनो ग्रंथ पढ़ने ही योग्य हैं।

(१२) कवि-कुल-कंठाभरण—ग्रंथ कनिष्ठ मिश्रबंधु तथा ज्येष्ठ भ्राता पं० गणेशविहारीजी मिश्र के सुपुत्र पं० प्रतापनारायण मिश्र ने मिलकर बनाया है। दूलह-कृत 'कवि-कुल-कंठाभरण' की अनमोल टीका है। इसे पढ़ने से विना गुरु-मुख की सहायता के अलंकार-सा कठिन विषय कोई सुगमता-पूर्वक जान सकता है। मूल्य अजिल्द ॥), सजिल्द १) । ग्रंथ अलंकार कंठस्थ करने के लिये अच्छा समझा जाता है।

मिश्रबंधुओं की अन्य सब कृतियाँ भी हमसे ही मँगाइए।

मैनेजर गंगा-ग्रंथागार, ३६, लाटूश रोड, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस अमृत-तत्त्व की खोज में निरंतर भटकनेवाला—

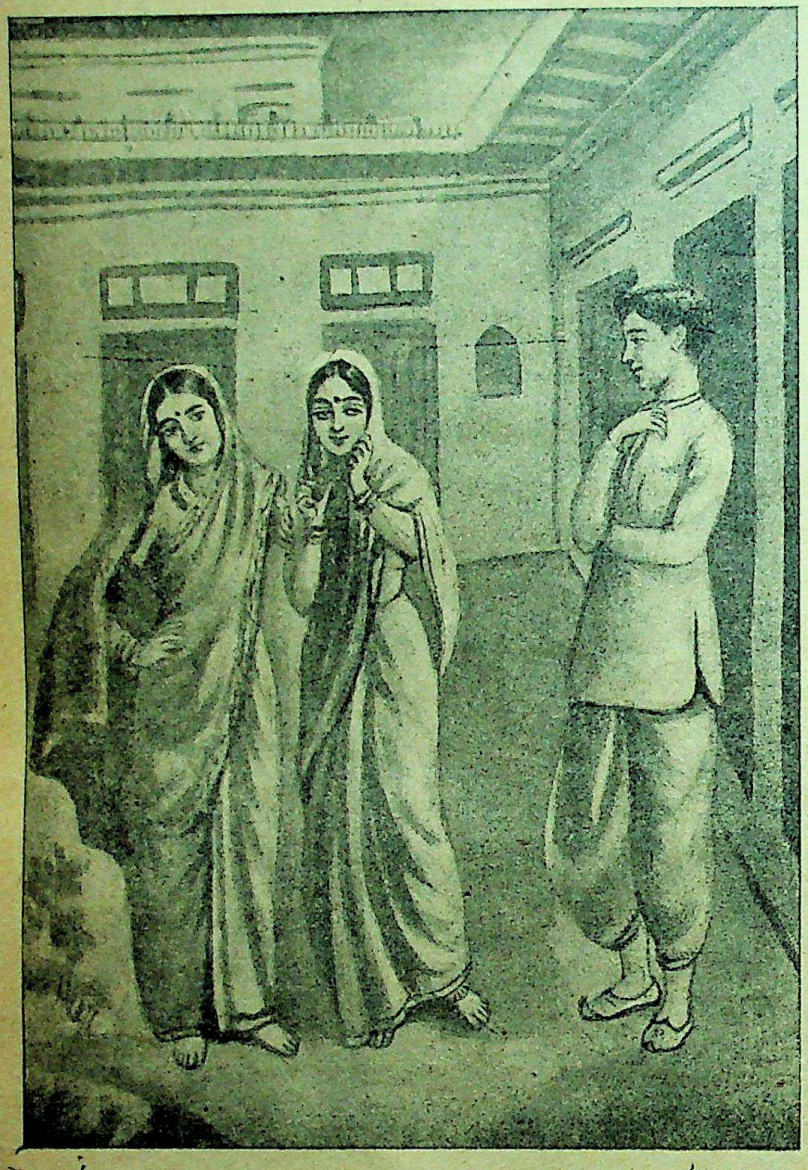

असहाय, अवहेलित,
अविश्वासी—
केवल नाम का

'कुबेर'

धन-राशि में लोटनेवाला, नए युग के पूँजीपतियों का अपवाद - रूप, अभिमानी,

कुबेर न था !

समाज की चोटों से तिल-मिलाकर, आत्मविश्वास और लोकोपकार की भावना के सहारे जीनेवाला, औरों के लिये अपनेपन को लुटा देनेवाला रंक

कुबेर

विधाता के विधान से एक दिन सचमुच 'कुबेर' बन गया ! कैसे ?

एक अबला के अंतःकरण से निकला हुआ आशीर्वाद !
एक नारी के कृतज्ञ-हृदय से मिलनेवाला वरदान !!
एक-एक अक्षर में सजीव होकर एक साधारण व्यक्ति को कितना ऊँचा उठा सका—यदि आप जानना चाहते हैं, तो

साम्यवाद,
यथार्थवाद,
जनवाद,
समाजवाद,

एक विवेचनात्मक रूप में आपके सामने आते हैं।

मानवता

का परिचय कौन देता है ?

'कुबेर'

गंगा-पुस्तकमाला की सबसे नई भेंट
कुबेर (उपन्यास) मँगाकर पढ़िए !

मूल्य सादी १)
सजिल्द १।।)

लेखक

श्रीयुत देवीप्रसाद धवन 'विकल'
सहायक संपादक 'वर्तमान'

मिलने का पता—
हिंदी-पुस्तकों की सबसे बड़ी दूकान—
गंगा-ग्रंथागार, ३६, लाटूश रोड, लखनऊ

आज ही तुरत मँगाकर पढ़ें !!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नारी

[श्रीमती विद्यावती कोकिल]

फूल की मधुवास-सी हो।
कौन जाने तुम किधर से आ रही हो ?
कौन जाने तुम किधर को जा रही हो ?
बिरानी-सी दूर रहकर भी हमारे पास-सी हो।
हम बढ़े तो बहुत, किंतु सँभल न पाए ;
तारकों से बुने तम में फड़फड़ाए ।
भोर देखा क्षितिज—अधरों बीच ममता हास-सी हो।
साँझ को फिर फले-फूले अलसपन से
मौन कलरव हो गया तब विजन वन से।
पवन जिसको ले चला, उस सो रहे उल्लास-सी हो।
रह गया अब दूर बहु परिवार जिसका—
दो परों पर सिमटकर अधिकार जिसका
छली तम में उस खगी के एक विफल प्रयास-सी हो।
डगमगाओ नहीं, अपनी सुधि सँभालो ;
सरल यह नारीत्व उसके हित बचा लो।
त्रसित मानव के लिये तुम मूर्तिमान सुपास-सी हो।
दूर से उस दूरतर को साथ लेकर,
सूक्ष्म से भी सूक्ष्मतर को रूप देकर,
जगत की चुपचाप प्रतिभा के अनंत विकास-सी हो।
अधरची-सी कौन स्वर्णिम सृष्टि बिगड़ी ;
सुधारा फिर-फिर जिसे तुमने, न सुधरी।
किसे असमय जन्म देकर आज खिन्न, हताश-सी हो।
दिवस-भर थक पीत पड़ती जा रही हो ;
रात जगकर कौन सगुन मना रही हो ?
कोख में किसको लिए अब सोच-मग्न उदास-सी हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'पल्लविनी'

(आलोचना)

[कुमारी विद्या श्रीवास्तव]

सुमित्रानंदन पंत की 'पल्लविनी' नवीनतम रचना है, जिसमें उनकी प्रकाशित पुस्तकों—'वीणा', 'उच्छ्वास', 'ग्रंथि', 'पल्लव', 'गुंजन' तथा 'युगांत'—की उत्तमोत्तम कविताएँ संगृहीत हैं। पंतजी का निवास-स्थान, अलमोड़े-ज़िले का कौशानी-ग्राम, पर्वतीय प्रदेश है, जिसका आपकी रचनाओं पर सुंदर प्रभाव पड़ा है। आपने इंटरमीजिएट उत्तीर्ण करने के पश्चात् कॉलेज छोड़कर प्रकृति-सुंदरी की स्नेहमय, स्वतंत्र गोद को ही अपना शिक्षालय बनाया। आपकी रचनाएँ नवीन ढंग की हैं, उनकी अपनी अलग शैली है, काव्य में स्वाभाविक रुचि है, तथा हिंदी-काव्य-जगत् में अत्यंत महत्त्व-पूर्ण स्थान है। पंतजी की गणना नवयुग - प्रवर्तकों में की जाती है। आपके ग्रंथों की भाषा, खड़ी बोली होने पर भी, संस्कृत-मिश्रित, माधुर्य एवं लालित्य से परिपूर्ण है।

'पल्लविनी' में संकलित रचनाएँ कवि के काव्य-जीवन का विकसित इतिहास जानने में सहायता देती हैं।

आरंभिक अवस्था में कवि-हृदय जिज्ञासा एवं उत्सुकता से पूर्ण है, जीवन में सुनहले स्वप्नों की छाया है। संयम, ज्ञान तथा प्रौढ़ता का उतना आधिक्य नहीं, जितना पिछली रचनाओं में मिलता है। ये कविताएँ गीतांजलि से प्रभावित होने के कारण प्रार्थना-परक-सी हैं। 'वीणा' प्रथम पुस्तक है, जिसकी रचनाएँ इसमें सम्मिलित हैं।

तत्पश्चात् 'ग्रंथि' तथा 'उच्छ्वास', ये दोनो पुस्तकें करुणा से ओत-प्रोत हैं, वेदना कूट-कूटकर भरी है। केवल वेदना ही नहीं, उस वेदना में एक मधुर कसक है, आवेग निकलता है, तथा करुण-रस की धारा बहने लगती है। 'पल्लव' की रचना के समय कवि की प्रतिभा अत्यंत विकसित रूप में दृष्टिगत होती है। कवि एक कुशल कलाकार के समान चिंतन एवं मनन के सहित हमारे सम्मुख आता है। उसमें हृदय-पक्ष का प्राधान्य है। अत्यधिक संयम नहीं हो सका, पर भावुकता में एक दार्शनिक प्रवाह-सा बहता है, जो आत्मविस्मृति का परिचायक है। 'मौन नियंत्रण', 'अनंग', 'बालापन', 'छाया' आदि उत्कृष्टता के प्रमाण हैं, जिनमें अपनी अनुभूतिमयी कल्पना के सहारे कवि बड़े ही विशद चित्रों की योजना करने में सफल हुआ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। 'छाया' आदि में कविता में प्राण-प्रतिष्ठा-सी हो गई है।

'गुंजन' की प्रथम कविता 'गुंजन' में ही आत्मा को गुंजारित करनेवाली प्रौढ़ भावुकता है, जो इस पुस्तक ('पल्लविनी') में है। यहाँ तक आकर कवि के जीवन में एक नूतन हर्ष-मिश्रित दृष्टिकोण को ढूँढ़ने की अभिलाषा जागरित हो जाती है। कवि जीवन की ज्वाला में जलकर, विश्व-प्राप्त वेदना में तपकर परमोज्ज्वल, पवित्र बन जाना चाहता है, पूर्ण शांत एवं निर्विकार।

'युगांत' में कवि प्राकृतिक क्षेत्र से हटकर मानवता के अत्यंत निकट पहुँच जाता है, तथा विश्व-व्यथित मानव की अपूर्णता को पूर्ण कर अखंड एवं मधुर व्यापकता पुनः संसार में देखने को आकुल है।

'छाया', 'बापू के प्रति' आदि उत्कृष्ट रचनाएँ इसमें संगृहीत हैं। इनमें कवि की आध्यात्मिकता तथा दार्शनिकता में भी पूर्ण परिवर्तन हो गया है। वह आध्यात्मिक क्षेत्र में अत्यधिक संयम तथा मनन करके पूर्ण रूप में दिखाई पड़ता है। यह है उनके काव्य-जीवन का इतिहास, जो इस 'पल्लविनी' में हमें मिलता है।

बालिका के रूप में मुग्ध कवि प्रकृति की मनोहरता देखकर प्रसन्न होता है, अपने को उत्सर्ग करने की कामना करता है—

तुहिन-बिंदु बनकर सुंदर,
कुमुद किरण से सहज उतर
मा! तेरे प्रिय पद-पद्मों में
अर्पण जीवन को कर दूँ।

बाल्य-काल की सुस्मृति में व्याकुल कवि-हृदय उसे पुनः पाने को कैसा उत्सुक हो रहा है—

मेरा छीना बालापन फिर
करुण! लगा दो मेरे अंक।

कवि की अंतर्दृष्टि बाह्य तत्त्वों को भेदकर अंतस्तम प्रदेश में प्रविष्ट होती है, वह उसके सौंदर्य पर मुग्ध होता है, किंतु साथ ही उसके वास्तविक कारण का भी अन्वेषण करना चाहता है—

कहो, कौन हो दमयंती-सी
तुम द्रुम के नीचे सोई?
हाय! तुम्हें भी त्याग गया क्या
अलि! नल-सा निष्ठुर कोई?

कारण जानकर उस पर दयार्द्र हो उठता है—

अहा! अभागिन हो तुम मुझ-सी
सजनि! ध्यान में अब आया;
तुम इस तरुवर की छाया हो,
मैं उनके पद की छाया।

कवि प्रकृति की मूर्ति अंकित करना चाहता है, पर साथ ही उसकी अपूर्णता को अपनी भाव-माला में गूँथकर पूर्णता भी प्रदान करता है। यथातथ्य कैसा कुशल चित्रण है—

खोलो, मुख से घूँघट खोलो;
हे चिर-अवगुंठनमयि, बोलो।
तुम कुहुकिनि, जग की मोह-निशा;
मैं रहूँ सत्य, तुम रहो मृषा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रभात की प्रथम रश्मि आने पर विहंगिनि मानो गीत गाने लगती है। कवि आश्चर्य-चकित होकर पूछ उठता है—

प्रथम रश्मि का आना रंगिणि !
तूने कैसे पहचाना ?

कवि की प्रतिभा में उत्पादन-शक्ति एवं अभिरुचि का समन्वय रहता है। उसके मुख्य तत्त्व कल्पना, अनुभूति, विश्लेषणात्मकता आदि हैं। जब उसकी अनुभूति कुछ गहरी होने लगती है, तो कवि कहता है—

श्री-सुख-सौरभ का नभ-चारिणि !
गूँथ दिया ताना - बाना ;
निराकार तम मानो सहसा
ज्योति - पुंज में हो साकार—
बदल गया द्रुत जगत - जाल में
धरकर नाम - रूप नाना।

यह संसार दुःख-सुखमय है—

जग पीड़ित है अति दुख से ;
जग पीड़ित रे ! अति सुख से।

सांसारिक वैभव पाकर मनुष्य चार दिन आनंद उठाता है, क्रम से सभी सुखी होते हैं, किंतु वह लौकिक आनंद स्थिर रहनेवाला नहीं। चार दिन बाद फिर वही हाहाकार रह जाता है—

गूँजते हैं सबके दिन चार ,
सभी फिर हाहाकार !

कवि-हृदय में अपार वेदना है, विवशता तथा आवेग है—

पाणि ! कोमल पाणि ! निज बंधूक की
मृदु हथेली में सरल मेरा हृदय
भूल से यदि ले लिया था, तो मुझे
क्यों न वह लौटा दिया तुमने पुनः ?

और भी, वेदना से व्याकुल हृदय चीत्कार कर उठता है—

हाय ! किसके उर में
उतारूँ अपने उर का भार !

शैवलिनी सिंधु से मिलने जा रही है, अनिल गगन से मिलने जा रहा है, पर कवि क्या करे ? उसके पास कुछ नहीं, उसका हृदय सब प्रकार से कंगाल है, उसे तो किसी निर्जन कानन में बैठकर अश्रु-धारा बहाना ही शेष रहा है। इन पंक्तियों में कितनी सुंदर भाव-व्यंजना है—

शैवलिनि ! जाओ, मिलो तुम सिंधु से,
अनिल ! आलिंगन करो तुम गगन को,
❀ ❀ ❀
पर हृदय ! सब भाँति तू कंगाल है,
उठ, किसी निर्जन विपिन में बैठकर—
अश्रुओं की बाढ़ में अपनी बिकी
भग्न भावी को डुबा दे आँख-सी !

यहाँ मानव-जीवन की ईर्ष्यामय प्रकृति का सजीव चित्रण है, हृदयस्पर्शी उद्गार तथा अंतस् में प्रवेश करनेवाली एक मधुर कसक है—

करुण है हाय ! प्रणय,
नहीं दुरता है जहाँ दुराव;
करुणतर है वह भय,
चाहता है जो सदा बचाव।
करुणतम भग्न हृदय,
नहीं भरता है जिसका घाव।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवि का जीवन ही काव्यमय है, काव्य में ही उसके प्राण हैं। वह अपने को, संसार को, सबको भूल गया है। दार्शनिक प्रवाह बहता जाता है—

मैं भूल गया अस्तित्व - ज्ञान,
जीवन का यह शाश्वत प्रमाण।
.....
मुझे न अपना ध्यान,
कभी रे! रहा न जग का ज्ञान!
.....
गान ही में रे! मेरे प्राण,
अखिल प्राणों में मेरे गान।

मानवता की दीन-हीन दशा देखकर कवि का कल्याणमय हृदय कहता है—

जो एक असीम अखंड मधुर व्यापकता
खो गई तुम्हारी वह जीवन-सार्थकता!

'बापू के प्रति' कविता में आध्यात्मिकता एवं दार्शनिकता की अत्यधिकता है। बापू मानवता को निर्बंध करने के लिये पृथ्वी पर अवतीर्ण हुए हैं, अतः उनमें कवि को पूर्ण मनुष्यत्व का विकास मिल जाता है। वह अपनी अनुभूति-मयी कल्पना एवं चिंतन से एक दिव्य मूर्ति की प्राण-प्रतिष्ठा करता है—

तुम शुद्ध-बुद्ध आत्मा केवल;
हे चिर - पुराण! हे चिर-नवीन!

उनके सिद्धांतों का सुंदर चित्रण—

उर के चरखे में कात सूक्ष्म
युग-युग का विषय-जनित विषाद,
गुंजित कर दिया गगन जग का
भर तुमने आत्मा का निनाद।

पंतजी की शैली पर बँगला एवं पाश्चात्त्य साहित्य के अध्ययन के कारण उनका प्रभाव पड़ा है, अतः उसके फल-स्वरूप संयोग से, प्राचीन रूढ़ियों से आक्रांत भाषा को आपने नवीनता प्रदान कर आधुनिकता की सृष्टि की है। आपकी छंद-योजना विशद है, कहीं-कहीं इँगलिश के ode, lyric का आधार है, पर अधिकतर स्वतंत्र मुक्त छंदों का ही प्रयोग किया है। आपकी कविता में शृंगार तथा करुण-रस का प्राधान्य है। केवल 'परिवर्तन' कविता में वीर आदि कई रसों का सम्मिश्रण हो गया है। 'पल्लविनी' में उनकी सभी पुस्तकों के पढ़ने का-सा आनंद आ जाता है। केवल 'ग्राम्या' की कोई कविता न होने से कुछ अभाव-सा लगता है। क्योंकि कवि जिस मानवता के निकट आकर अंत में पहुँचता है, उसका स्फुरण 'ग्राम्या' में पूर्णरूपेण हो जाता है।

'पल्लविनी' की सभी रचनाएँ अत्यंत उत्कृष्ट तथा सुंदरतम हैं। पंतजी के सदृश विचार-वान्, शांत, संयत कवि दूसरा नहीं। उनमें सूक्ष्म निरीक्षणता, विचार-व्यापकता, अनुभूति, गांभीर्य, अंतःप्रवेशिनी चैतन्यता एवं दार्शनिकता का अद्भुत सामंजस्य है। 'पल्लविनी' सभी दृष्टिकोणों से अति सुंदर है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाय ! 'हृदय'जी

[श्रीयुत दुर्गाप्रसाद शर्मा बी० ए०]

हिंदी-साहित्याकाश से अगणित जाज्वल्यमान नक्षत्रों को अस्त होते देखकर किस भावुक का हृदय विदीर्ण न हो जाता होगा। अभी आचार्य शुक्लजी की मृत्यु का शब्द कानों में गूँज ही रहा था कि पं० रमाशंकर शुक्ल 'हृदय' एम्० ए० भी चल बसे ! ग्वालियर के साहित्यिक इतिहास में २४ मार्च, १९४१ का दिन भयंकर दुर्दिन माना जायगा। उस काल-रात्रि को ग्वालियर के गौरव, मालवा के हृदय, माधव-कॉलेज के हिंदी-प्रोफ़ेसर एक लंबी बीमारी के पश्चात् इस शुष्क संसार से प्रस्थान कर गए !

स्व० श्रीपं० रमाशंकरजी शुक्ल 'हृदय'
(कुरसी पर बैठे हुए)

आपका जन्म सन् १९०२ में, उज्जैन में, हुआ था। राजकीय विक्टोरिया-कॉलेज से बी० ए० की परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् आप राज्य की ओर से, ५०) मासिक वृत्ति देकर, अर्थशास्त्र में एम्० ए० करने प्रयाग-विश्वविद्यालय भेजे गए थे, क्योंकि उस वर्ष आप समस्त विद्यार्थियों में उक्त विषय में सर्वप्रथम आए थे। परंतु एक मास भी न होने पाया था कि मि० एच्० एम्० बुल ने, जो उस समय विक्टोरिया-कॉलेज के अध्यक्ष थे, उन्हें तार द्वारा हिंदी का अध्ययन करने की सूचना दी। हिंदी-भाषा से स्वर्गीय शुक्लजी को बचपन से ही प्रेम था। आप ११ वर्ष की अवस्था से ही कविता लिखा करते थे। आपने द्वितीय श्रेणी में एम्० ए० की परीक्षा उत्तीर्ण की। ग्वालियर आने पर आपके योग्य कोई रिक्त स्थान उस समय न था, अतः आप कॉलेज में जाकर केवल पुस्तकें पढ़ा करते थे। कुछ दिनों पश्चात् अधिकारियों ने एक ७५) मासिक का स्थान देने को कहा, परंतु शुक्लजी ने आत्मसम्मान-पूर्वक यह कहकर कि आपको ७५) मासिक पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्य एम्० ए० मिल सकते हैं, रमाशंकर नहीं, उसे अस्वीकार किया। एक मास के भीतर ही आपने जबलपुर से निकलनेवाले सेठ गोविंददासजी के प्रसिद्ध पत्र 'लोकमत' का संपादन, १५०) मासिक वेतन पर, प्रारंभ किया। थोड़े ही काल में आपकी विद्वत्ता की धाक जम गई, और आप मध्य-प्रांत में एक सुयोग्य संपादक के रूप में विख्यात हो गए। भूतपूर्व प्रधान मंत्री श्रीरविशंकर शुक्ल एवं श्रीद्वारकाप्रसाद मिश्र आपके विश्वासपात्र मित्रों में से थे। सेठ गोविंददासजी तो आपके सौजन्य, सारल्य एवं कार्य-प्रणाली पर इतने मुग्ध हो गए कि उन्होंने पंडितजी को अपनी विशाल संपत्ति के ट्रस्ट का प्रधान (चेयरमैन) बनाने का आग्रह किया, पर शुक्लजी ने इस आर्थिक उत्तरदायित्व को अस्वीकृत किया। इसी समय ग्वालियर के शिक्षा-सचिव श्रीमुले साहब ने आपको फिर आग्रह-पूर्वक ग्वालियर बुलाया, और माधव-कॉलेज, उज्जैन में हिंदी-प्रोफ़ेसर के स्थान पर, सन् १९३० में, नियुक्त किया। विक्रमादित्य के विशाल साम्राज्य की राजधानी एवं अपनी जन्म-भूमि में आकर हिंदी-साहित्य की सेवा करना उन्होंने प्रारंभ किया। उस दिन से आप उज्जैन में ही निवास करते थे।

आप छात्र-प्रिय और सफल अध्यापक थे। आपके शिष्य आपके व्यक्तित्व एवं विद्वत्ता पर अत्यंत मुग्ध रहते थे। यही कारण है, हम उन्हें विस्मृत नहीं कर सकते। आप सदा हँसमुख रहा करते थे। आपके कथनानुसार "चेहरे को मलीन बनाए रखना महा पाप है। ऐसा करने से समाज का अहित होता है।" मैंने शुक्लजी को घोर आपत्ति-काल में भी चिंताकुल नहीं देखा। घोर पीड़ा के क्षणों में आप अवश्य गंभीर हो जाया करते थे, और तब अपना कमरा बंद कर, आँखें मीचकर चुपचाप पड़े रहना पसंद करते थे। एक रात आपका ताप-मान १०५ डिग्री हो गया था। मुझे चिंतातुर देखकर कहने लगे—"शर्मा, तुम पड़ोस में रहते हो, तुम्हें घबराना नहीं चाहिए। यह ज्वर मुझ पर अधिकार नहीं जमा सकता। तुम बिजली बुझा दो, और कमरा बंद कर दो, देखो, ज्वर अभी कम हुआ जाता है।" वास्तव में एक घंटे में ही ताप-मान केवल १०० डिग्री रह गया। इस प्रकार की आत्म-विश्वास-सूचक कितनी ही आश्चर्य-जनक घटनाएँ मुझे याद हैं।

पूज्य शुक्लजी को जीवन के प्रारंभ से ही कितनी ही मानसिक पीड़ाएँ पीड़ित किया करती थीं। व्यक्तिगत अभावों से उत्पन्न न होकर वे संसार की आधि-व्याधियों से प्रसूत होती थीं। जब आप किसी दुर्घटना के विषय में सुनते थे, तो भोजन आदि परित्याग कर, चुपचाप कमरे में चिंतित होकर बैठ जाया करते थे। मुझे स्मरण है, स्वर्गीया कमला राजा के निधन का शोक-समाचार सुनकर उन्होंने सात दिन तक एक समय भोजन किया, घर से बाहर नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निकले, और जब उस करुण स्मृति को अक्षय्य स्वरूप देनेवाले 'करुणाकण' की समाप्ति हो गई, तब श्रीसूर्यनारायणजी व्यास से बोले—"आज यह 'हृदय' कुछ हलका हुआ है।" कहने की आवश्यकता नहीं कि 'करुणाकण' हिंदी के इने-गिने करुण-काव्यों में अपना प्रमुख स्थान रखता है।

शुक्लजी बड़े गंभीर व्यक्ति थे। न तो साधारण घटनाओं से सहज ही क्षुब्ध होनेवाले और न नगण्य, अनुकूल घटनाओं पर हर्ष-विह्वल होकर एकदम उछलनेवाले। अपनी बीमारी का समय एक वीर सत्याग्रही के समान बड़े साहस, धैर्य एवं शांति के साथ व्यतीत किया। मृत्यु के केवल आध घंटे पूर्व उन्होंने कुछ दूध तथा फलों का रस लिया, और बोले—"This night is very critical for me ; if I pass this night, I will surely recover." पर दैव-दुर्विपाक से वह उस काल-रात्रि को व्यतीत न कर सके, और साहित्यिकों, मित्रों, संबंधियों एवं परिजनों को शोक-सागर में निमग्न कर चले गए!

आप प्रारंभ से ही बड़े अध्ययनशील थे। संसार की वासनाओं से उन्हें अरुचि थी, और सादगी तथा उच्च जीवन से प्रेम। मुझे मालूम है, आपने, सन् १९३२ में, अपने पिताजी की मृत्यु पर शुद्ध खादी के कफ़न का प्रयोग किया था। और, स्वयं एक रियासत के कॉलेज में प्रोफ़ेसर होते हुए भी खादी का कुरता और टोपी पहनते थे। फ़ैशन से आप कोसों दूर थे। उन्हें वस्त्रों से कुछ स्वाभाविक ही अरुचि थी। आपने कॉलेज से फ़ैशन का पाठ नहीं पढ़ा, वरन् वह अमूल्य पाठ पढ़ा, जिससे आधुनिक कॉलेज के विद्यार्थी प्रायः वंचित ही रह जाते ह। आपने लिखा है—

छोटों से सीखा था हमने प्यार, बड़ों से मान;
पहली बार यहीं गाया था विश्व-विमोहन गान।
भेद-भाव, वैषम्य कहाँ था? कहाँ स्वार्थ-अभिमान?
हमें न छू पाए थे दुनिया के थोथे अरमान।
सोने का संसार बना था, हम सब थे भोले-भाले;
स्वर्ग यही था हमें, यहीं थे अमृत के प्याले ढाले।
(हमारा विद्यालय)

यह कविता कदाचित् आपने विक्टोरिया-कॉलेज, ग्वालियर के प्रति लिखी थी। इसी संबंध में आप आगे लिखते हैं—

व्यथित हृदय का यही रहा है आश्रय और विराम;
इन दीवारों पर अंकित है अब भी अपना नाम।
इस उपवन में कठिन निराशाओं के झोंकें झेले;
कितनी बार कुसुम-कलियों से यहाँ हँसे, बोले, खेले।

स्पष्ट है कि आपके लिये आपका कॉलेज ईंट और चूने से बनी हुई निर्जीव इमारत-मात्र न था, प्रत्युत वह स्थान था, जहाँ सजीव शक्तियों के द्वारा जीवन-निर्माण होता है, जहाँ राष्ट्र-हृदय की आशाएँ पनपती हैं, जहाँ सुमन-लताओं-सी जीवन-अभिलाषाएँ बढ़ती दिखाई देती हैं। पंडितजी ने कॉलेज से उपर्युक्त सभी शक्तियाँ प्राप्त की थीं। आज आप-जैसे विद्यार्थी से गौरवान्वित होनेवाला विक्टोरिया-कॉलेज आठ-आठ आँसू बहा रहा है!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुक्लजी की सबसे बड़ी विशेषता—जो आधुनिक काल में सबसे बड़ा अवगुण माना जाता है—अविज्ञापन-प्रियता थी। यों तो आज भी आप हिंदी-संसार से अपरिचित नहीं, पर यदि उक्त दोष या गुण आपमें न होता, तो हिंदी-साहित्य के सर्वश्रेष्ठ कवियों में उन्हें एक गौरव-पूर्ण स्थान अवश्य मिला होता। पर विज्ञापन के संसार में पीछे रहनेवाले शुक्लजी प्रसिद्धि के संसार में यथावश्यक आगे नहीं बढ़ सके। आप 'चल-चल रे नौजवान !' कहकर भी स्वयं पीछे रह जाया करते थे। परंतु ऐसे सिद्ध कलाकार कभी छिप नहीं सकते। आपको जाननेवाले यद्यपि थोड़े हैं, पर जो हैं, वे श्रेष्ठ साहित्यकार हैं। और, सच तो यह है कि साधारण पाठक के मानसिक धरातल से ऊँचे रहने के कारण वह उन्हें समझ भी नहीं सकता।

साहित्य-चर्चा आपका प्रिय विषय था। घोर पीड़ा-काल में भी 'उग्र'जी को पाकर वह अपनी बीमारी भूल गए। डॉक्टरों के मना करने पर भी घंटों साहित्य-संलाप किया करते थे। 'उग्र'जी सरल भाव से कहते—"आपको किस डॉक्टर ने बीमार कह दिया है ?" 'उग्र'जी ने अपनी पैनी दृष्टि से शुक्लजी की प्रतिभा को पहचाना, और सराहा। दो-तीन मास पूर्व ही उन्होंने 'सुधा' में 'हृदय की बात' छेड़ी थी।

हिंदी-संसार को यह जानकर हर्ष होगा कि उसके दुर्भाग्य से यद्यपि शुक्लजी चले गए हैं, पर वह अपार, प्रौढ़ एवं अमूल्य कृतियाँ छोड़ गए हैं। जैसा हम कह चुके हैं, वह विज्ञापन से कोसों दूर रहते थे, इसीलिये यथाशक्य उन्होंने अपनी रचनाएँ प्रकाशित न होने दीं। उनकी इच्छा के सर्वथा प्रतिकूल श्रीसूर्यनारायणजी व्यास-जैसे साहित्यिक मित्रों के प्रयत्न से 'विजय-वैजयंती', 'करुणा-कण' पुस्तकाकार एवं अन्य मुक्तक रचनाएँ कुछ पत्रों में प्रकाशित हो सकी हैं।

आप स्वयं को 'मस्ताना योगी' कहा करते थे। आप लिखते हैं—

मत बोलो हमसे यार कोई, हम जोगी प्रेम के माते हैं;
नित नयन-पंथ में चलते हैं, हर दिल में धुनी रमाते हैं।

उन्हें इस असार संसार से तनिक भी मोह न था। वह कहते हैं—

हम पागल हैं, हमको छोड़ो, देखो, न घृणासे मुख मोड़ो;
हमसे न नेह-नाता जोड़ो, ये बंधन हमें न भाते हैं।

सांसारिक प्रलोभन आपको किंचित् भी प्रभावित न कर पाए थे। वह यही कहते रहे—

ये राज-पाट, धन-धाम सभी, सुख-वैभव, ये अरमान सभी
झूठे हैं जग के काम सभी, खुद भूले, हमें भुलाते हैं।

वह अपने आचरण तथा शिक्षण से लोगों को यही बताते थे—

साईं के दरबार चलो, अब छोड़ सभी घर-बार चलो,
मस्ती का ले संसार चलो, अलमस्त 'हृदय' भी जाते हैं।

कौन जानता था, वह अलमस्त 'हृदय' असमय में ही सहसा अपने परिवार को अनाश्रित एवं साहित्य-जगत् को शून्य कर प्रसादजी के साथ उस सीमा पर पहुँच जायगा, "जिसके आगे राह नहीं है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वेश्वर-स्मृति

[साहित्याचार्य श्रीपं० विश्वेश्वरनाथ रेउ]

(गतांक से आगे)

द्वितीयोऽधिकारः

धर्मपरिभाषा

कामक्रोधभयद्वेषस्वार्थमुक्तैस्तु पण्डितैः ;
निर्णीतः स्वात्मनःशान्तिकारणं धर्म उच्यते ॥१॥

काम, क्रोध, भय, द्वेष और स्वार्थ से रहित पंडितों द्वारा निश्चय किया हुआ और अपनी आत्मा की शांति का कारण धर्म कहा जाता है।

धर्म आत्मोन्नतिकरः देशकालानुमोदितः ;
सुशिष्टशासकादेशाऽविरुद्धः शास्त्रसम्मतः ॥२॥

आत्मा की उन्नति करनेवाला, देश और काल के अनुकूल, योग्य और अनुभवी हाकिम (या राजा) की आज्ञा का विरोध न करनेवाला धर्म होता है।

पितॄणां च कुलाचारः समाजहितसाधकः ;
धर्मतां याति कालेन न धर्मो दैवनिर्मितः ॥३॥

अपने समाज के लिये लाभदायक पूर्वजों का कुलाचार (ख़ानदानी रिवाज) ही समय आने पर धर्म मान लिया जाता है। धर्म किसी देवता का बनाया नहीं।

शिष्टैराप्तैश्च यत्प्रोक्तं देशकालोचितं पुनः ;
धर्मत्वं प्राप्य तत्सूते संप्रदायान् पृथक् पृथक् ॥४॥

फिर पूजनीय और माननीय पुरुषों द्वारा देश और काल के उपयुक्त जो कहा गया है, वही धर्म बनकर भिन्न-भिन्न संप्रदाय उत्पन्न करता है।

अतएव हि धर्माणामनेकत्वं प्रदृश्यते ;
कुलाचारप्रसङ्गाच्च तेषां संख्याऽभिवर्धते ॥५॥

इसी से धर्मों की अनेकता देखी जाती है, और भिन्न-भिन्न कुलों के रिवाज के द्वारा उनकी संख्या और भी बढ़ जाती है।

समाजहितसंरक्षा मनःशान्तिश्च सात्त्विकी ;
मूलं यद्यपि सर्वत्र मूढैस्तदपि युध्यते ॥६॥

यद्यपि समाज के हित की पूरे तौर से रक्षा और मन की सात्त्विक (असली) शांति, यही सब धर्मों का मूल है, तथापि मूर्ख आपस में लड़ते हैं।

नियमा ईश्वरीयास्तु दुर्ज्ञेयाः प्राकृतैर्जनैः ;
अतः शान्तमना भूत्वा सद्धर्मानुरतो भवेत् ॥७॥

ईश्वर के नियम साधारण पुरुषों की समझ में आना कठिन है, इसलिये शांत-चित्त होकर श्रेष्ठ धर्म का पालन करे।

देशकालादिभिर्धर्मे स्वभावाज्जायतेऽन्तरम् ;
सूतेऽनवस्थां तच्चेन्नो तत्तदर्थं कलिं त्यजेत् ॥८॥

स्थान और समय के अनुसार धर्म में स्वभाव से ही भिन्नता आ जाती है। यदि वह (भिन्नता) अधिक उलट-फेर करनेवाली न हो, तो उसके लिये झगड़ा न करे।

सर्वथा त्यक्तकामस्याऽसम्भवा जगति स्थितिः ;
कामयेत सुकर्माणि नेतराणि कदापि तत् ॥९॥

पूरे तौर से कामनाओं (इच्छाओं) को छोड़कर जगत् में रहना कठिन है, इसलिये (मनुष्य) अच्छे कामों की इच्छा करे, बुरे कामों की कभी न करे।

वासनानां विनाशो हि परमार्थो मतो बुधैः ;
आसिद्धेरर्थकामौ तु सेव्यौ धर्मपरिष्कृतौ ॥१०॥

बुद्धिमानों ने सांसारिक इच्छाओं का नाश होना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही सबसे बड़ा ध्येय माना है। परंतु उसकी सिद्धि होने तक धर्म से अनुमोदित धन और सांसारिक कामनाओं का सेवन करते रहना उचित है।

अहिंसा सत्यवचनं शौचमात्मविनिग्रहः ;
क्षमार्जवं दयाऽनिन्दास्वेष्टदेवात्मचिन्तनम्॥११॥
गुरुशास्त्रादरः कामादिकषड्वर्गवर्जनम् ;
असहायस्य साहाय्यं दानं विद्योन्नतिस्तथा॥१२॥
आत्मस्वजनमित्राणां देशस्य च हिते रतिः ;
मूलमेतद्धि धर्माणां देशकालाऽविरोधतः ॥१३॥
(तिलकम्)

हिंसा का त्याग, सत्य बोलना, पवित्रता, अपने आप पर क़ाबू रखना, क्षमा, सरलता, दया, बुराई से परहेज़, अपने इष्ट देवता का स्मरण और आत्मा के विषय में विचार, गुरुओं (माता, पिता, गुरु आदि) और शास्त्रों में श्रद्धा, षड्वर्ग (काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह और मात्सर्य) का त्याग, असहाय की सहायता करना, दान देना, विद्या की उन्नति करना, अपनी आत्मा, अपने कुटुंबी, अपने मित्र और अपने देश के कल्याण में लगे रहना, ये ही सब देश और काल के उपयुक्त होने से धर्म के मूल हैं।

संस्कारप्रकरणम्

यथा भित्तौ न चित्रादि विना संस्कारमुत्तमम् ;
तथात्मनि न चारित्रंतस्मात्संस्कारमाचरेत् ॥१४॥

जिस प्रकार दीवार पर बग़ैर पलस्तर आदि के चित्र आदि उत्तम नहीं बनते, उसी प्रकार शास्त्रोक्त संस्कारों के विना आत्मा में चरित्र-बल उत्पन्न नहीं होता, इसलिये संस्कार करने चाहिए।

द्विजानां वैदिकैर्मन्त्रैर्गर्भाधानादिकं मतम् ;
गर्भाधानं पुंसवनं कुलरीत्या समाचरेत् ॥ १५ ॥

ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्यों के गर्भाधान आदि संस्कार वेद के मंत्रों से करना माना है। (फिर भी इस समय) गर्भाधान और पुंसवन-संस्कार अपने कुल की रीति के अनुसार करे।

नालच्छेदनतः पूर्वं जातकर्म प्रकीर्तितम् ;
प्राशनं तु सुवर्णेन तत्रोक्तं मधुसर्पिषोः ॥१६॥

नाल काटने के पहले जातकर्म-संस्कार कहा है। उसमें बालक को सुवर्ण से शहद और घी चटाना चाहिए।

एकादशे द्वादशे हि मुहूर्ते तु शुभेऽथवा ;
कार्यं हि नामकरणं नाम्नो विधिरथोच्यते ॥१७॥

ग्यारहवें या बारहवें दिन अथवा शुभ मुहूर्त में नामकरण-संस्कार करना चाहिए। नाम रखने की विधि आगे कही जाती है।

शर्मवाचि तु विप्राणां क्षत्राणां शौर्यवाचकम् ;
वैभवख्यापि वैश्यानां शूद्रस्याधीन्यसूचकम्॥१८॥

ब्राह्मण का नाम कल्याण प्रकट करनेवाला, क्षत्रिय का वीरता जतानेवाला, वैश्य का ऐश्वर्य बतलानेवाला और शूद्र का अधीनता-सूचक होना चाहिए।

योषितां दीर्घवर्णान्तं प्रियं च सुमनोहरम् ;
स्पष्टार्थं मङ्गलकरं नाम सौभाग्यसूचकम् ॥१९॥

स्त्रियों का अंत में दीर्घ वर्णवाला, प्यारा, मनोहर, स्पष्ट अर्थवाला, मांगलिक और सौभाग्य-सूचक नाम रखना चाहिए।

मासे चतुर्थे संप्राप्ते गृहान्निष्क्रमणं शिशोः ;
कुलरीत्याथ षष्ठे वा मासेऽन्नप्राशनं मतम् ॥२०॥

चौथा महीना आने पर बालक को घर से बाहर लाने का संस्कार करना चाहिए। अपने कुल की रीति के अनुसार या छठे महीने अन्नप्राशन-संस्कार माना है।

प्रथमेऽथ तृतीये वा शिखार्थं बालकस्य तु ;
चूडाकर्म प्रकुर्वीत कुलोक्तविधिना ततः ॥२१॥

इसके बाद पहले या तीसरे वर्ष बालक की शिखा के लिये अपने कुल की रीति के अनुसार चूड़ाकर्म (मुंडन)-संस्कार करे।

अष्टमेऽब्दे ब्राह्मणस्योपवीतविधिरुच्यते ;
राज्ञ एकादशे चाथ वैश्यस्य द्वादशे पुनः ॥२२॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आठवें वर्ष ब्राह्मण का, ग्यारहवें वर्ष क्षत्रिय का और बारहवें वर्ष वैश्य का यज्ञोपवीत-संस्कार करना कहा जाता है।

पञ्चमाच्छोडशान्तं हि द्वाविंशान्तं च षष्ठतः;
अष्टमादाचतुर्विंशं ज्ञेयः कालोऽथवा क्रमात्॥२३।

अथवा पाँचवें से सोलहवें वर्ष तक ब्राह्मण के, छठे से बाईसवें वर्ष तक क्षत्रिय के और आठवें से चौबीसवें वर्ष तक वैश्य के यज्ञोपवीत का समय समझना चाहिए।

कार्पासं ब्राह्मणस्योक्तं क्षत्रस्य शणसूत्रजम्;
ऊर्णामयं च वैश्यस्योपवीतं कथितं बुधैः॥ २४॥

विद्वानों ने ब्राह्मण के लिये सूत का, क्षत्रिय के लिये सन के तारों का और वैश्य के लिये ऊन का यज्ञोपवीत कहा है।

मौञ्जीदण्डाजिनधराः पुरा तु ब्रह्मचारिणः;
भैक्षवृत्तिं चरन्तो हि विद्याध्ययनमाचरन्॥२५॥

पहले समय में मेखला, दंड और मृगचर्म धारण करनेवाले ब्रह्मचारी भिक्षा से निर्वाह करते हुए ही विद्या पढ़ते थे।

कालावस्थाविपर्यासादसम्भवमभूद्धि तत्;
अतः समाप्यते भिक्षा संस्काराहे गृहे हि सा॥२६॥

समय और दशा बदल जाने से भिक्षा-वृत्ति से निर्वाह कर विद्या पढ़ना असंभव हो गया है, इसलिये भिक्षाचरण का कार्य संस्कार के दिन घर में ही पूरा कर लिया जाता है।

मुञ्जमेखलया युक्तोऽजिनदण्डधरो व्रती;
गृह एव चरेद्भिक्षां गुरवे च समर्पयेत्॥ २७॥

मूँज की मेखला तथा मृगचर्म और दंड धारण करनेवाला ब्रह्मचारी घर में ही भिक्षा माँगे, और उसे गुरु को समर्पण कर दे।

ब्रह्मक्षत्रविशां जन्म मातुस्तु प्रथमं मतम्;
मौञ्जीबन्धनसंस्कारादद्वितीयात्कथिता द्विजाः॥२८॥

ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्यों का पहला जन्म मा के गर्भ से माना है। मौंजीबंधन-संस्कार से (इनका) दूसरा जन्म माने जाने के कारण ये द्विज कहाते हैं।

भोजनविधिः

जलेनाचमनं प्रोक्तमाद्यन्ते भोजनस्य यत्;
निगारनलिकाशोधि मुखशुद्धिकरं च तत्॥२९॥

भोजन के पहले और पीछे जल से जो आचमन करना कहा है, वह भोजन-वाहिनी नलिका और मुख की शुद्धि करनेवाला है।

प्रसन्नमनसा नित्यं दन्तैः संचव्य यत्नतः;
यथाऽवकाशं तु शनैः शनैर्भोजनमाचरेत्॥ ३०॥

नित्य ही प्रसन्न-चित्त होकर और दाँतों से यत्न-पूर्वक खूब चबाकर, अवकाश के अनुसार धीरे-धीरे भोजन करे।

सात्त्विकं भोजनं कुर्याद्विद्यार्थी शांतचेतसा;
नोच्छिष्टं भोजयेदन्यं न गृह्णीयात्स्वयं च तत्॥३१॥

विद्यार्थी शांत चित्त से सात्त्विक (हलका और कम मिरच-मसालेवाला) भोजन करे। जूठा भोजन न तो दूसरे को खिलावे, न स्वयं ग्रहण करे।

भोजनं जीवनार्थेऽत्र भोजनार्थे न जीवनम्;
मिताहारी भवेत्तस्मादधिकाल्पं परित्यजेत्॥३२॥

संसार में जीवन के लिये भोजन है, भोजन के लिये जीवन नहीं। इसलिये मनुष्य मिताहारी (वास्तविक भूख के अनुसार खानेवाला) बने, अधिक और थोड़े भोजन का त्याग करे (अर्थात् न अधिक ही खाय, न कम ही)।

भोजनं स्वास्थ्यकृत्पाणिपादक्षालनपूर्वकम्;
गण्डूषैर्भोजनांशं च क्षालयेन्मुखदन्तगम्॥३३॥

हाथ-पैर धोकर भोजन करना स्वास्थ्य (तंदुरुस्ती) देनेवाला होता है। और (भोजन के बाद) कुल्ले करके मुख और दाँतों में लगे भोजन के भाग को धो डाले।

ओष्ठौ प्रमृज्य सुतरां क्षालयेद्वदनं ततः;
अन्ते ज्ञानेन्द्रियाणां च जलस्पर्शोऽपि लाभदः॥३४॥

उसके बाद होठों को अच्छी तरह धोकर मुँह धो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डाले। बाद में आँख, नाक, कान आदि ज्ञानेंद्रियों में जल लगाना भी लाभदायक है।

यज्ञोपवीतपरिधाननियमाः

वामस्कन्धादक्षिणेन सव्यं यज्ञोपवीतकम्;
विपरीतं चापसव्यं निवीतं कंठगामि यत् ॥३५॥

बाएँ कंधे से दाहनी तरफ़ लटकनेवाला यज्ञोपवीत सव्य, इससे उलटा अपसव्य और गले में लटकनेवाला निवीत कहाता है।

कन्यानां संस्काराः स्त्रीकर्तव्यसारश्च

कन्यानां ये तु संस्कारा अमन्त्रास्ते प्रकीर्तिताः;
यथाकालं प्रकर्तव्यो विवाहस्तु समन्त्रकः ॥३६॥

कन्याओं के जो संस्कार हैं, वे विना वैदिक मंत्रों के कहे हैं। विवाह तो यथासमय वैदिक मंत्रों से ही करना चाहिए।

श्रद्धा गुरुषु शुश्रूषा पत्युर्बालाभिरक्षणम्;
गृहकार्येषु दाक्षिण्यं स्त्रीणां धर्मस्तु शाश्वतः ॥३७॥

सास-ससुर आदि गुरुजनों में श्रद्धा, पति की सेवा, बालकों का भरण-पोषण और घर के कामों में चतुरता, यह स्त्रियों का नित्य का धर्म है।

ब्रह्मचारिद्विजधर्माः

पूर्वं गुरुकुलान्यासन् यत्र विद्यार्थिनोऽवसन्;
विद्यालयाश्छात्रवासाः स्थानं तेषां त्वगृह्णत ॥३८॥

पहले (भारत में) गुरुकुल थे, जहाँ विद्यार्थी रहते थे। (परतु अब) विद्यालयों (स्कूलों-कॉलेजों) और छात्रालयों (बोर्डिंगों) ने उनका स्थान ले लिया है।

वेदशास्त्रपुराणानां स्थाने विद्या तु लौकिकी;
जीविकार्थं प्रचलिता कालो हि दुरतिक्रमः ॥३९॥

(आजकल) वेदों, शास्त्रों और पुराणों के स्थान में जीवन-निर्वाह के लिये लौकिकी (दुनिया में काम आनेवाली) विद्या का प्रचार हो गया है। काल की उपेक्षा (परवा न) करना कठिन होता है।

तथापि गुरुभक्त्यैवाऽधीयानो लौकिकीमपि;
धर्मस्य संस्कृतेर्ज्ञानाल्लोकद्वयसुखं भजेत् ॥४०॥

तो भी गुरुओं में श्रद्धा रखकर लौकिकी (दुनियवी) विद्या पढ़ता हुआ (विद्यार्थी) भी (अपने) धर्म और सभ्यता के ज्ञान से इस लोक और परलोक, दोनों में सुख प्राप्त करता है।

अनध्यायस्य दिवसाः प्राक्तनैर्ये प्रकीर्तिताः;
कालेन ते कवलिता नूतनाश्च प्रकल्पिताः ॥४१॥

पुराने लोगों ने विद्यार्थियों की छुट्टी के जो दिन कहे थे, वे समय ने निगल लिए, और (उनके स्थान पर) दूसरे बना दिए।

ब्राह्मे मुहूर्ते चोत्थाय ब्रह्मचर्यहिते रतः;
अतन्द्रितः शुचिर्भूत्वा विद्याभ्यासं समाचरेत् ४२

ब्रह्मचर्य-व्रत के पालन में लगा विद्यार्थी बहुत सबेरे उठ, आलस्य छोड़ और शौच-स्नानादि से निवृत्त हो विद्याध्ययन करे।

स्नानशुद्धशरीरस्तु धौतिशुद्धाम्बरः पुनः;
विश्वम्भरं स्मरेन्नित्यं प्रातः सायं समाहितः ॥४३॥

फिर स्नान कर लेने से शुद्ध शरीरवाला और धो लेने से शुद्ध वस्त्रोंवाला विद्यार्थी सुबह और शाम जगत् का भरण-पोषण करनेवाले प्रभु का एकाग्र चित्त से ध्यान करे।

चार्चिक्यं मदिरामांसे अन्यान्युत्तेजकान्यपि;
वस्तूनि प्राणिहिंसा च वर्ज्यानि ब्रह्मचारिणः ४४

ब्रह्मचारी के लिये सुंदरता के निमित्त मुख आदि पर लगाई जानेवाली वस्तुएँ, शराब, मांस तथा अन्य भी उत्तेजन करनेवाली चीज़ें और शिकार वर्जित हैं।

जपः प्रणवगायत्र्योः सन्ध्योपासनपूर्वकम्;
य उक्तः शास्त्रविद्भिस्तं द्विजः कुर्याद्यथाविधि ४५

शास्त्रवेत्ताओं ने जो संध्योपासन के साथ-साथ प्रणव (ओंकार) और गायत्री का जप कहा है, ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य उसे विधि-पूर्वक करे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अक्षमश्चेत्तथा कर्त्तु स्मरेद्विश्वम्भरं द्विजः ;
दिवा रात्रौ यथाकालं शुचिः संकल्पवर्जितः ॥४६॥

(परंतु किसी कारण से) यदि द्विज (ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य) इस प्रकार करने में असमर्थ हो, तो दिन में, रात में अथवा जैसा मौक़ा हो, पवित्र और स्थिर-चित्त होकर संसार के पालन करनेवाले परमात्मा का स्मरण करे।

आत्मनश्चापराधानां क्षमां याचेत देवताम् ;
आवृत्तिं तु त्यजेत्तेषां द्विजोऽन्यो वापि कश्चन ४७

और, चाहे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य हो, या कोई अन्य ही हो, परमेश्वर से अपने अपराधों की क्षमा माँगे, और उन अपराधों की पुनरावृत्ति छोड़ दे (अर्थात् फिर वैसा अपराध न करे)।

सम्यग् ध्यानं हि सन्ध्याया व्युत्पत्तिश्च प्रयोजनम्;
त्रिकालं वा यथाकालं तत्तां कुर्यादतन्द्रितः ४८

अच्छी तरह परमेश्वर का ध्यान करना ही संध्या-शब्द का शब्दार्थ और प्रयोजन है। इसलिये आलस्य छोड़कर सुबह, दोपहर और शाम को, अथवा जैसा मौक़ा हो, उसे करता रहे।

विश्वम्भरानुरक्ता ये धर्ममार्गरतास्तथा ;
स तान् बिभर्ति विश्वात्मा सर्वानेवात्मजानिव४९

जो जगत् की पालना करनेवाले परमात्मा के भक्त हैं, और धर्म के मार्ग में अनुरक्त हैं, उन सबका वह जगदात्मा परमेश्वर अपनी संतान की तरह पोषण करता है।

प्रबलानीन्द्रियाण्याहुर्मनस्तेषां प्रवर्तकम् ;
त्वक्श्रोत्रनासिका जिह्वानेत्रे ज्ञानेन्द्रियाण्यथ ५०

इंद्रियाँ बहुत बलवान् कही गई हैं। मन उन्हें विषयों में लगाता है। त्वचा, कान, नाक, जीभ और आँखें, ये (पाँच) ज्ञानेंद्रियाँ हैं।

पाणिपादमुपस्थो वाक् पायुः कर्मेन्द्रियाणि तु ;
मनोनुन्नानि कर्षन्ति जनं विषयसागरम् ॥५१॥

हाथ, पैर, लिंग, वाणी और गुदा, ये (पाँच) कर्मेंद्रियाँ हैं। ये (दसों इंद्रियाँ) मन द्वारा प्रेरित होकर मनुष्य को विषय-रूपी समुद्र की तरफ़ खींचती हैं।

नित्यं विषयभोगेनेन्द्रियलिप्सा विवर्धते ;
मनोनिग्रह एवास्ति तेषां शान्तेस्तु कारणम् ॥५२॥

विषयों के सेवन से इंद्रियों की इच्छाएँ सदा बढ़ती रहती हैं। उनकी शांति का कारण तो केवल मन का रोकना ही है।

विद्याऽध्ययनपर्यन्तं ब्रह्मचारिव्रते स्थितः ;
तृष्णामूलं त्यजेद्भोगं विद्यार्थी स्वेष्टसिद्धये ५३

विद्या पढ़ने की इच्छावाला ब्रह्मचारी ब्रह्मचर्य-व्रत पालन करता हुआ अपनी चाही हुई विद्या की सिद्धि के लिये पढ़ाई समाप्त होने तक भोग की इच्छा उत्पन्न करनेवाले विषय-भोग का त्याग कर दे।

ब्रूयाच्चेत्सत्यमेवेह नो ब्रूयादप्रयोजनम् ;
अधर्मेणच्छलेनाथ पृष्टो मौनं समाचरेत् ॥५४॥

यदि बोले, तो सत्य ही बोले। बेमतलब (फ़ज़ूल) की बात न करे। अधर्म से या छल से पूछे जाने पर मौन धारण कर ले।

दुष्टात्मनो जनस्यात्र यज्ञपाठजपादिकम् ;
भस्मन्येव हुतं यद्वत्तद्वद्भवति निष्फलम् ॥५५॥

संसार में दुष्ट आत्मावाले मनुष्य के यज्ञ, पाठ, जप आदि भस्म (राख) में होमे हुए के समान निष्फल होते हैं।

इन्द्रियाणि मनश्चापि संयम्याऽशातयंस्तनुम् ;
साधयेत्सर्वकर्माणि पुरुषार्थैः सदोचितैः ॥५६॥

इंद्रियों और मन को अच्छी तरह वश करके और शरीर को दुर्बल न करता हुआ सदैव उचित प्रयत्नों द्वारा सब काम सिद्ध करे।

सूर्योपस्थानतो नूनं जायते नीरुजं वपुः ;
शास्त्रविज्ञानसिद्धं तत्प्रातः सायं समाचरेत् ॥५७॥

सूर्य के सामने खड़े रहने से निश्चय ही शरीर स्वस्थ होता है। इसलिये शास्त्रों और विज्ञान से सिद्ध यह (उपस्थान) सुबह और शाम करे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शास्त्रपाठादि चेत्कुर्यात्कुर्यादर्थमनुस्मरन् ;
विशेषफलदं तादृग् शुकपाठस्तथाऽपरम् ॥५८॥

यदि शास्त्रों का पाठ आदि करे, तो उसके अर्थ का ध्यान रखकर ही करे। वैसा पाठ विशेष फल देनेवाला है। बिना मतलब समझे पाठ करना तोते के पढ़ने के समान है।

शुश्रूषया गुरोर्विद्या धनदानेन वा पुनः ;
विद्याविनिमयेनाथ विद्याप्राप्तिर्मता पुरा ॥५९॥

पहले समय में गुरु की सेवा से, अथवा फिर धन देने से, या विद्या के बदले विद्या देने से विद्या की प्राप्ति मानी गई थी।

कालेऽस्मिन्धनमेवैकं मुख्यं विद्याप्तिकारणम् ;
यत्र तत्र प्रभावोऽपि मित्रभावस्तथा क्वचित्॥६०॥

इस समय केवल धन ही विद्या प्राप्त करने का मुख्य कारण (ज़रिया) है। कहीं-कहीं प्रभाव और कहीं मित्रता भी (काम देती) है।

विद्याज्ञानवयोवृद्धा गुरवो दानिनस्तथा ;
ज्येष्ठाः स्त्रियश्चाभिवाद्या देशकालानुसारतः ॥६१॥

विद्या में, ज्ञान में और अवस्था में बड़ों को, माता-पिता और गुरु को, दानी पुरुषों को और अपने से बड़ी अवस्थावाली स्त्रियों को देश और काल के अनुसार नमस्कार करना चाहिए।

पूज्यापूज्यविवेचनम्

उपनीय तु यो धर्ममध्यापयति बालकम् ;
आचार्यः स तु विज्ञेयः कर्मकाण्डोपयुग् गुरुः॥६२॥

जो बालक का यज्ञोपवीत-संस्कार कर उसे धर्मशास्त्र पढ़ाता है, उसे आचार्य जानना चाहिए। कर्मकांड करानेवाला गुरु होता है।

वृत्त्यर्थं यस्तु कुरुतेऽध्यापनं नियतस्त्वथ ;
लौकिकीनां हि विद्यानामुपाध्यायः स उच्यते॥६३॥

जो जीविका के लिये नियमित रूप से सांसारिक विद्याओं को पढ़ाता है, वह उपाध्याय कहलाता है।

विद्यावृद्धास्तु विप्रेषु क्षत्रियेषु बलाधिकाः ;
वैश्येषु धनसम्पन्ना वृद्धाः शूद्रेषु पूजिताः ॥६४॥

ब्राह्मणों में अधिक विद्वान्, क्षत्रियों में अधिक बलवान्, वैश्यों में धनी और शूद्रों में वृद्ध पूजित हैं।

यथा डित्थो डवित्थश्च निष्फलौ भवतस्तथा ;
विद्याऽऽचारादिभिर्हीनो नाम्नैव ब्राह्मणो मतः॥६५॥

जिस प्रकार लकड़ी का हाथी और हिरन किसी काम के नहीं होते, उसी प्रकार विद्या और आचार से हीन ब्राह्मण भी केवल नाम का ही (ब्राह्मण) माना जाता है।

शौर्यहीनश्च राजन्यो धनरिक्तोऽथ वैश्यकः ;
सेवाभावं त्यजञ्शूद्रो ज्ञेया एतेऽपि डित्थवत्॥६६॥

बल से हीन क्षत्रिय, धन से हीन वैश्य और सेवा की भावना को छोड़नेवाला शूद्र, इन्हें भी लकड़ी के हाथी के समान ही जानना चाहिए।

सदाचाराः

यदात्मनो न रुचितं तत्परेभ्योऽपि वर्जयेत् ;
एष एव सदाचारः सर्वधर्मानुमोदितः ॥ ६७ ॥

जो (बात) अपने को पसंद न हो, वह दूसरों के लिये भी त्याग दे। यही सब धर्मों में माना हुआ सदाचार (श्रेष्ठ आचरण) है।

पितुः सेवापरो नित्यं मातुश्चापि विशेषतः ;
धारयंश्च गुरौ श्रद्धां नरः कल्याणमश्नुते ॥ ६८ ॥

सदा पिता की सेवा में लगा हुआ और उससे भी अधिक माता की सेवा करनेवाला तथा गुरु में श्रद्धा रखता हुआ मनुष्य कल्याण को भोगता है।

स्वैरालापो विहरणं रहः सम्भाषणादि च ;
भगिनीभिरपि संत्याज्यं किमुतापरया स्त्रिया॥६९॥

यथेच्छ बात-चीत करना, साथ घूमना और अकेले में सलाह करना, ये अपनी बहनों के साथ भी वर्जित है, तो फिर दूसरी स्त्री के साथ वर्जित क्यों न हो।

अप्रमत्तेन तद्ध्यान्यं नरेणात्र सुखार्थिना ;
आहारे व्यवहारे चाध्ययने सेवनेऽपि च ॥ ७० ॥

इसलिये सुख चाहनेवाले मनुष्य को खान-पान,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बर्ताव, पढ़ने और नौकरी में होशियार रहना चाहिए।

स्थानं कालो ह्यवस्था च शौचाचाराश्च वा पुनः ;
वर्णाश्चापि न बाधन्ते ध्याने विश्वम्भरस्य तु॥७१॥

जगह, समय, हालत, पवित्रता के तरीक़े और वर्ण जगदाधार ईश्वर के स्मरण में बाधक नहीं होते।

यो नन्दनोऽजनि मुकुन्दमुरारिसूरे-
र्विश्वेश्वरः किल सतीमणिचाँदरान्याम् ;
आब्रह्मचर्यावधि तेन समापितेयं
विश्वेश्वरस्मृतिगताऽधिकृतिर्द्वितीया॥ ७२॥

पंडित मुकुंदमुरारिजी द्वारा सती-श्रेष्ठा चाँदरानीजी के गर्भ से जो विश्वेश्वर-नामक पुत्र उत्पन्न हुआ, उसने विश्वेश्वर-स्मृति में ब्रह्मचर्य-समाप्ति तक के आचार-विचारों को बतलानेवाला यह दूसरा अधिकार समाप्त किया।

(क्रमशः)

सनसनीखेज़ पुस्तकें पढ़िए !

क्रांतिकारी लेखक पं० गुलाबरत्न वाजपेयी 'गुलाब' की अद्भुत पुस्तकें, जो उपार्जनशील व्यक्तियों के लिये अत्यंत उपयोगी हैं। यदि आप सुखी, उन्नत और सफल व्यक्ति बनकर जीवन-संग्राम में विजय चाहते हैं, तो 'आकर्षण-शक्ति', 'नई रोशनी' और 'स्त्री-पुरुष' फ़ौरन् पढ़िए। आपकी आमदनी बढ़ेगी, दिमाग़ तेजस्वी होगा, और गृहस्थ-जीवन आनंदों से भर उठेगा—

आकर्षण-शक्ति	२)	नई रोशनी	१॥)
स्त्री-पुरुष	२)	पपीहा	२)
काँटा	१॥)	तारामंडल	१॥)
दिल की प्यास	१)	मृत्युंजय	१)

लतिका १)

जनता और पत्र-पत्रिकाओं द्वारा प्रशंसित ! हज़ारों की तादाद में बिक रही हैं !! कोई दो पुस्तकें मँगाने से डाक-ख़र्च माफ़।

गंगा-ग्रंथागार
३६, लाटूश रोड, लखनऊ

विज्ञान-मंदिर
६ (सी) ब्राह्मणपाड़ा लेन, कलकत्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोस्वामी तुलसीदास की धर्मपत्नी

रत्नावली

जीवनी और रचना

(सचित्र)

संपादक और टीकाकार

रामदत्त भारद्वाज

संशोधक

कविकुमार पंडित भद्रदत्त शर्मा

एवं

पंडित कृष्णदत्त भारद्वाज

(एम्० ए०, आचार्य, शास्त्री, साहित्यरत्न)

——:०:——

यह पुस्तक हिंदी-संसार में नई गवेषणा का फल है, और गोस्वामी तुलसीदास के आद्य जीवन एवं उनकी साध्वी धर्मपत्नी पर प्रचुर प्रकाश डालकर अनेक प्रचलित भ्रमों को दूर करती है। इसमें अन्य अनेक हस्त-लिखित ग्रंथों के आधार पर रत्नावली का विशद जीवन-चरित है, उसके २०१ दोहे तथा संपादक द्वारा उनकी सरल टीका भी विद्यमान है। अब तक उक्त चरित और दोहों की जो अनेक हस्त-लिखित प्रतियाँ उपलब्ध हुई हैं, उन सबकी तथा अन्य हस्त-लिखित पुस्तकों के कतिपय पृष्ठों के चित्र भी मनोविनोदार्थ यथास्थान दे दिए गए हैं।

यद्यपि गत दो-तीन वर्षों में इस विषय की चर्चा उक्त संपादक और टीकाकार द्वारा अनेक पत्र-पत्रिकाओं में समय-समय पर हुई है, तथापि यह पुस्तक हिंदी के स्थायी-साहित्य में सर्वथा नई और अत्यंत महत्त्व-पूर्ण वस्तु है।

रत्नावली की रचना बालक-बालिकाओं एवं नर-नारिओं के बड़े काम की है, और इतिहास, साहित्य तथा भाषा के मर्मज्ञों के लिये भी भव्य विचारों की सामग्री उपस्थित करती है।

गोस्वामी तुलसीदास-कृत रामायण का जो हिंदू-गृह में गौरवान्वित स्थान है, वैसा ही उनकी विदुषी पत्नी के दोहों का भी है। मूल्य लगभग ॥), सजिल्द १)

प्रकाशक—

गंगा-पुस्तकमाला, लखनऊ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने प्यारे बच्चों को साहसी और वीर बनाने के लिये

'साहसी बालक' अवश्य पढ़ाएँ।

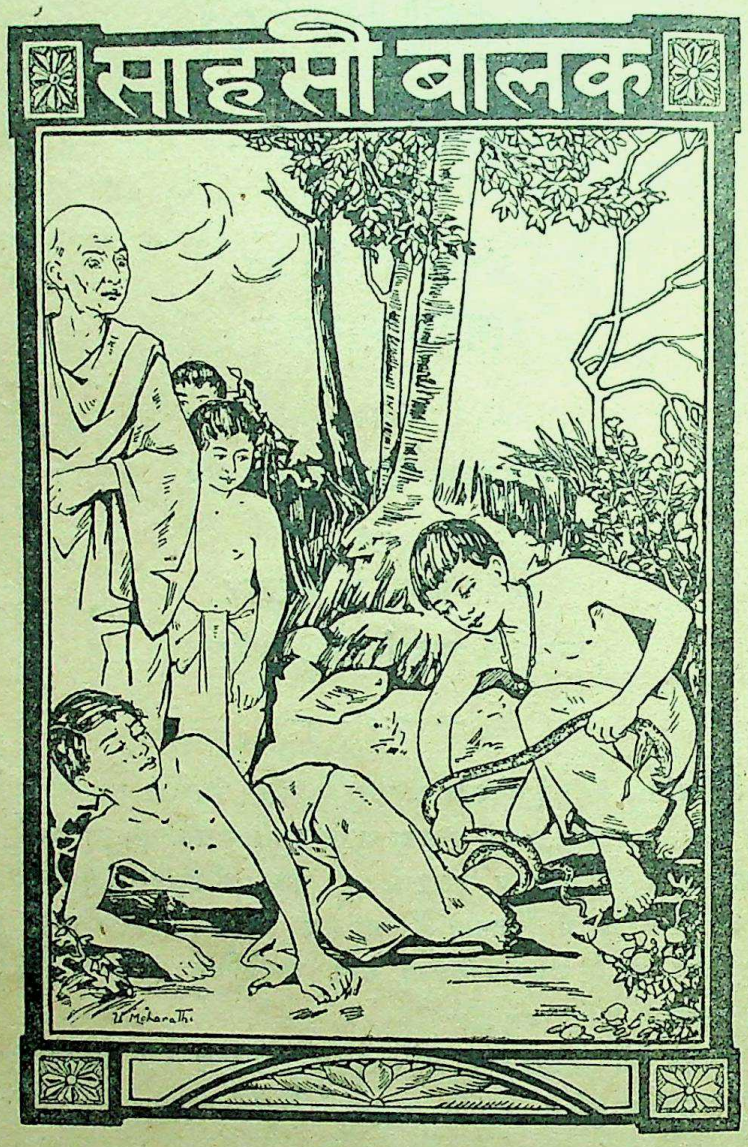

साहसी बालक (द्वितीयावृत्ति)

यह कहानी लिखकर लेखक ने बाल-साहित्य के एक मुख्य अंग की पूर्ति की है। बालक ही आगे चलकर मनुष्य और देश के कर्णधार होते हैं, इसलिये अपने बालकों को साहसी बनाइए। साहस के बल पर ही कल्याण हो सकता है। अपने बच्चों को मनोरंजन देने के साथ ही साहसी बनाइए, जिसमें वे जीवन की कठिनाइयों का सामना करने के लिये तैयार रहें। मूल्य ।), जिल्ददार ।=)

मिलने का पता—मैनेजर बाल-विनोद-वाटिका, ३६, लाटूश रोड, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी-संसार की एक अलौकिक भेंट

क्या आप

भा र त का प्राचीन इतिहास	भा र त का प्राचीन विज्ञान
भा र त की प्राचीन सभ्यता	भा र त की प्राचीन पवित्रता
भा र त का प्राचीन भ्रातृप्रेम	भारत की ललनाओं का अपूर्व त्याग
भारत-सपूतों का पितृआज्ञा-पालन	प्राचीन भारत का स्वामी-सेवक-भाव

और

तो हमारी २० खंडो में प्रकाशित होनेवाली तुलसी-कृत रा मा य ण सटीक और सचित्र पढ़िए ?

पाप पर पुण्य की विजय, असत्य पर सत्य की विजय, पापी के सर्वनाश की कथा नहीं जानना चाहते ? **क्यों नहीं ?**

* बीस खंडों में *

यह रामायण २० खंडों में प्रकाशित होगी। प्रत्येक खंड में ८० पृष्ठ, १५-२० सादे और ६-७ रंगीन चित्र। साइज़ सुधा का-सा भव्य। मूल्य प्रतिखंड १॥)

ग्राहकों को विशेष सुविधा

अभी से सब खंडों के लिये ग्राहक बननेवालों से १) लिया जायगा, और ५) अभी भेजकर प्रथम चार खंड के लिये स्थायी ग्राहक बननेवालों से केवल ५) अर्थात् १।) प्रतिखंड लिया जायगा। प्रत्येक खंड का अलग-अलग मूल्य १॥) है।

दो खंड प्रकाशित हो गए ! तीसरा प्रेस में है !!

कृपा कर ग्राहक बनें, और अपने इष्ट-मित्रों से भी अनुरोध करें। इस सहायता से हमारी एक योजना पूर्ण हो जायगी, और आपके हाथों में एक अनुपम ग्रंथ-रत्न आ जायगा।

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदेश-पत्र

संचालक गंगा-ग्रंथागार

(रामायण-विभाग)

३६, लाटूश रोड, लखनऊ

ग्राहक-नं०..... ता०.....

प्रिय महाशय,

मैं आपकी त्रैमासिक रूप से, २० खंडों में, प्रकाशित होनेवाली सचित्र रामायण का, जिसका मूल्य ३०) होगा, स्थायी ग्राहक होना चाहता हूँ। कृपया मेरा नाम ग्राहकों में लिख लीजिएगा।

(१) रियायती मूल्य २०) मनीऑर्डर से भेजता हूँ / प्रथम अंक वी० पी० भेजकर ले लें।

(२) प्रथम ४ अंक के ५) मनीऑर्डर से भेजता हूँ / पहला अंक वी० पी० भेजकर ले लें। और आगे के अंक बुक-पोस्ट से, निकलते ही, भेजते रहें।

(३) १।) का प्रत्येक अंक निकलते ही डाक-व्यय-सहित वी० पी० द्वारा भेज दें *।

भवदीय—

[हस्ताक्षर]

नाम और पता—

* इन तीनो शर्तों में जो मंजूर हो, उसे ही रखिए, शेष काट दें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस दिन जब मैं रोया, बच्चे हँसने लगे !

[श्रीयुत 'उग्र']

न्मदाता (पिता) का दिया नाम 'रामचरन', अन्नदाता (सरकार) का दिया 'नं० १५', मगर जबलपुर की जनता का दिया मेरा नाम 'भगतजी' है। मैं जबलपुर के एक सब-पोस्टऑफ़िस का बावनसाला पोस्टमैन हूँ। इसी साल मुझे नौकरी से पेंशन मिलनेवाली है, और लाख शुक्रिया है उस परमात्मा का, जिसकी कृपा से अब मैं सारी ज़िंदगी की दौड़-धूप का फल (आराम) पाने का मुस्तहक़ हो गया हूँ। नहीं तो.....

नहीं तो, इस देश की पोस्टमैनी की नौकरी ऐसी आसान नहीं, जिसे हरएक निभा ले जाय। बेदाग़ पेंशन पा जाना सबकी क़िस्मत की बात नहीं। बिना शिकायत गुज़रे ऐसा साल भी सबकी क़िस्मत में नहीं। मगर सबकी क़िस्मत से मैं अपनी को बेहतर मानता हूँ, जो तीस बरस की कड़ी नौकरी में एक बार भी बद न बनी; नहीं तो, यह कहने का मुँह मेरा भी आज न रह जाता कि मैं चंद महीनों में पेंशनयाफ़्ता होनेवाला हूँ। मेरे ही साथ गंगादीन भी नौकर हुआ था, मगर पाँच बरस पहले ही वह पेंशन पाने से फ़ुरसत पा गया; क्योंकि एक साहब की चिट्ठी पहुँचाने में उसने बदक़िस्मती से दो बार देर की थी। देर होने का सबब भी एक बार ज़ोरों का अंधड़ था, और दूसरी बार झरझर बरसात। अक्सर परमात्मा की भूलों की सज़ा भी हम ग़रीबों के ही माथे पर पड़ती है। अच्छनख़ाँ भी अब तक पेंशन पाने का हक़दार हो जाता, मगर परसाल ही तो भूल या उजलत में उसने अहमद की एक रजिस्ट्री उसके भाई मुहम्मद को दे दी। रजिस्ट्री गुमी नहीं, हाँ, अहमद को दो दिन बाद मिली, क्योंकि उसका भाई दो दिन तक ख़ास काम से बाहर था। मगर अच्छनख़ाँ ख़ासे बुरे बन गए।

ऐसी हालतों में इस नौकरी में पेंशन पाना कोई खेलवाड़ थोड़े ही है। फिर भी मैं चंद ही महीनों के अंदर उसे पाऊँगा, इसमें कोई शक अब मुझे नज़र नहीं आ रहा। इसकी वजह यह कि मैंने पिछले तीस साल बड़ी ही सावधानी से इस नौकरी में निकाले, न तो शिकायत का कोई काम किया, और न किसी तरह की शिकायत का मौक़ा ही आने दिया। छोटे-बड़े, सभी से मेल-मुहब्बत रखता रहा; अगर किसी ने कभी कुछ कह भी दिया होगा, तो उसे इस कान से सुनकर उससे मैंने उड़ा दिया होगा। ऊपर के अफ़सरों ने अगर कभी अपने घर का काम भी करने को कहा होगा, तो मैंने 'ना' न किया होगा। क्यों? इसीलिये कि बुढ़ौती में कोई बखेड़ा या तकलीफ़ न हो; सारी ज़िंदगी की मेहनत किसी मामूली ग़लती से मिट्टी में न मिल जाय।

फिर भी आसानी से इस राह को मैंने निपटाया हो, सो बात नहीं। जबलपुर में काम करनेवाले अधिकतर पोस्टमैन भाई मुझसे जला करते थे, क्योंकि उनकी समझ से शहर में मेरी इज़्ज़त फ़िज़ूल अधिक थी। लोगों का 'भगतजी' कहकर मुझे पुकारना मेरे साथियों को बिलकुल भला नहीं लगता था। यद्यपि मैं किसी से 'भगतजी' कहने के लिये कहता नहीं था, फिर भी मेरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साथियों का अनुमान था कि धोकेबाज़ी से लोगों पर कोई मंत्र चलाकर मैं उनसे 'भगतजी' कहलवा लेता हूँ। लोगों के जलने का एक सबब और भी था। वह यह कि इतने दिनों की नौकरी में कोई चार-पाँच सौ की रक़म मैंने अपनी स्त्री को बनवा दी है—हर तरह की कंजूसी करके। साथी समझते, दिखावे या शोभा के लिये मैंने यह सब किया है, और ताने देते कि "हमें तो अपनी तनख़्वाह से दोनो वक्त का खाना भी पूरा नहीं पड़ता, फिर भाई कलियुगी भगत-जी, तुम बीवी को गहने कैसे बनवा पाते हो?" 'मैं पूरा खाना नहीं खाता, बच्चों को भी नहीं खाने देता, तब वह काम कर पाता हूँ, जिस पर तुम्हें ताज्जुब है। फिर ये गहने औरत को चमकाने के लिये भी नहीं हैं; बाप-दादों का हमारा मकान अरसे से महाजन के यहाँ भोगबंधक है। उसे छुड़ाने के लिये छ सौ रुपयों की ज़रूरत है। जितने रुपए हर महीने मैं बचा पाता हूँ, उनसे पेंशन पाने के बाद ही अपना मकान छुड़ा सकूँगा, और जब तक घर नहीं छूटता—इस तरकीब से, तब तक बीवी का गहनों का शौक़ भी पूरा हो जायगा।" मैं लोगों को बतलाता, मगर वे मेरी बातें—अपनी आँखों से—सही न मानते, और ऐसा कुछ भाव बनाते, गोया मैं "डूबकर मछली निगलने-वाला भगत" हूँ। कठोर मेहनत, कम भोजन, दाँत निकालकर दिन निकालने पर भी ये ताने—मित्रों का यह अविश्वास पेंशन मिलने तक ये सभी चीज़ें अनायास ही मुझे मिल गईं।

❀ ❀ ❀

"छुट्टी तो आज मैंने ले ली है—मुन्नू के जन्म-दिन के नाम पर, मगर बिना काम बैठने में भी मेरा कभी नहीं लगता—"अब बोलो, क्या करूँ?" मैंने मुन्नू की मा से पूछा।

"जाकर मेरी बहन को बुला लाओ···।"

"हाँ, मेरी मौसी को बुला लाओ बाबूजी!" मुन्नू ने भी मधुर आग्रह किया।

"और मेरे लिये तिनकिनारी सारी—मुन्नू के सातवें जन्म-दिन पर लानेवाले थे न? भूल गए!" स्त्री ने सप्रेम पूछा।

"भूला नहीं।" मैंने जवाब दिया—"मगर ज़्यादा ख़र्च करने से अपना घर जल्द हम न छुड़ा सकेंगे? भाड़े के मकान में आख़िर कब तक गुज़र होगा?"

"बाबूजी!" मुन्नू ने गले में हाथ डालकर मोहमय आग्रह किया—"मेरे लिये भी एक फ़ुटबाल ले आना—अम्मा के लिये सारी, मेरे लिये फ़ुटबाल।"

"रामचरन भाई! ओ भगतजी!" इसी वक्त बाहर से किसी ने पुकारा, और दूसरे क्षण मेरा एक पुराना साथी मोतीलाल अंदर दाख़िल हुआ—"भाई! रात को मेरी दादी का वैकुंठवास हो गया, अभी मुझे श्मशान जाना है। आज मेरे एवज़ में तुम ड्यूटी दे दो—ऐसा पोस्टमास्टर साहब ने कह-लाया है। बस, पेटी लगाकर चले ही जाओ डाक-ख़ाने। मनीऑर्डर, रजिस्ट्री, वी० पि० याँ सभी तैयार मिलेंगी। एक दिन की तकलीफ़ है भगतजी, मुझ पर बुरा मौक़ा है, सँभाल दो भैया!"

"ज़रूर-ज़रूर।" मैंने कहा—"इसमें आरज़ू मिन्नत की कोई ज़रूरत नहीं···।"

"काम करने के लिये तो यह उधार खाए बैठे रहते हैं—कोई हो, किसी का हो।" बीवी ने मित्र के मुँह पर पति को ढीठ ताना दिया।

"अच्छा-अच्छा, मेरे कपड़े लाओ।" मैंने कहा—"अब ड्यूटी से लौटने पर तुम्हारी सारी और मुन्नू का फ़ुटबाल ला दूँगा। जल्द—साढ़े बारही बजे तक—मैं आ जाऊँगा। हाँ, मुन्नू की मौसी को किसी और से बुलवा लो।"

❀ ❀ ❀

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पोस्टऑफ़िस आने पर छोटे पोस्टमास्टर साहब ने कहा—"देखिए न भगतजी, आज जब आपने एक अरसे बाद एक दिन की छुट्टी भी ली, तो आज ही उसकी दादी को मरना था।"

"कोई हर्ज नहीं हुज़ूर ! मुझसे भी बैठा नहीं जाता। तीस साल से एक ही शहर में रगड़ते-रगड़ते यहाँ की हरएक गली के एक-एक पत्थर से मैं वाक़िफ़ हो गया हूँ। रोज़ ही सबसे भेंट होती है। एक दिन भी न मिलने से जी कचोटता है न।"

"लेकिन आज तुम्हारे मुन्नू का जन्म-दिन है न?" पोस्टमास्टर साहब निहायत नेक आदमी—"आज तो तुम्हें ज़रूर फ़ुरसत चाहिए थी। ख़ैर, परमात्मा की इच्छा।"

"१५ नंबर !" किसी पोस्टमैन ने पुकारा—"१३ नंबर की डाक ले जाओ।"

"मैंने देखा है।" पोस्टमास्टर साहब ने कहा—"कोई ज़्यादा सामान नहीं। चाहोगे, तो दो-ढाई घंटे में फ़ुरसत पा जाओगे। एक इन्श्योर्ड रजिस्ट्री का पैकेट है, उसे ज़रा सावधानी से ले जाना—साढ़े पाँच सौ का है।"

मैंने देखा, नंबर १३ की डाक कोई ज़्यादा न थी, सात-आठ बैरंग चिट्ठियाँ, तीन-चार वी० पि०याँ, पाँच मनीऑर्डर और एक वह रजिस्टर्ड पैकेट। "इतना काम तो मैं चुटकियों में निबटा सकता हूँ, और बहुत जल्द सारी और फ़ुटबाल लेकर घर पहुँच सकता हूँ।" सोच बड़े जोश से मैं 'बीट' पर निकला। धड़ाधड़ पहले बैरंग चिट्ठियाँ बाँट दीं, फिर वी० पि०याँ; इसके बाद मनी-ऑर्डर देने मैं जबलपुर के प्रसिद्ध अख़बार 'यश' के दफ़्तर में गया, जो एक बँगले में है। उस बँगले में जितने बच्चे रहते हैं, सभी मुझे बहुत प्यारे हैं। मेरी आहट पाते ही वे लपककर मुझे घेर लेते हैं—"चिट्ठी ! मेरी चिट्ठी भगतजी !" और, चिट्ठी की जगह रद्दी काग़ज़, पुराने टिकट या टिकटों के हाशिए मैं उन्हें देता हूँ। बिना दिए काम ही नहीं चलता। वे मानते ही नहीं। अख़बारवालों के बच्चे बचपन से ही चिट्ठियों के प्रेमी !

उस दिन भी उन्होंने आ घेरा। और, उस दिन उन्हें देखकर मुझे अपने मुन्नू की मधुर याद आई, और उसके जन्म-दिवस की भी। मनीऑर्डर ऑफ़िस-मैनेजर को एक हाथ से देता दूसरे हाथ से मैं उन बच्चों को 'चिट्ठियाँ' भी देता जा रहा था। कई मिनट तक बच्चे उस दिन मुझसे सप्रेम उलझते रहे। रद्दियों की मेरी डाक से वे प्रसन्न हुए या नहीं, कह नहीं सकता; मगर अपनी स्वर्गीय किलकारी से उन्होंने मेरे दिल को बाग़-बाग़ कर दिया। बाक़ी काम उन बच्चों की याद में कब ख़त्म हो गया, कुछ पता भी न चला। बारह बजे ही सारा काम समाप्त कर मैं 'सब-पोस्टऑफ़िस' लौट आया। और, अब जब सब रसीद-काग़ज़ों का चॉर्ज देने लगा, तो उस साढ़े पाँच सौवाली रजिस्ट्री की रसीद बिना दस्तख़ती नज़र आई। एं—मैं चमका ! इस पर दस्तख़त क्यों नहीं? ओ ! मैं भूल गया इस रजिस्ट्री को देना। मगर हज़ार तलाश करने पर भी मेरे बस्ते में उसका पता नहीं चला। पहले तो उस भूल पर मुझे विश्वास ही नहीं हुआ। ऐसी ग़लती कभी हुई ही नहीं थी मुझसे। मैं बार-बार बस्ते को—हाथ के काग़ज़ों और जेबों तक को तलाशता रहा, मगर अंत में बे-बादल के उस वज्रपात का पूरा विश्वास मुझे हो गया। हज़ार माथा मारने पर भी—पैकेट कहाँ गुम गया—पता न चला। देखते-ही-देखते सारे ऑफ़िस में बात फैल गई। फिर तो पोस्टमास्टर साहब ने भी कई सवाल मुझसे किए; मगर पैकेट कहाँ गुमा, मैं कुछ भी जवाब न दे सका।

"भगतजी ! मुझे अफ़सोस है।" अंत में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्होंने कहा—"चंद ही महीनों में आपकी पेंशन होनेवाली है। यह काम सही नहीं हुआ।"

"ईश्वर जानता है हुज़ूर !" स्याहमुँह मैंने कहा—"इसमें बदनीयत मेरी ज़रा भी नहीं। बदक़िस्मती ही सारी मानिए। हे भगवान्! अब क्या होगा?"

"सर्वनाश, भगतजी!" पोस्टमास्टर ने कहा—"तुम पर विश्वास रखते हुए भी, साढ़े पाँच सौ के पैकेट के बारे में मैं कुछ नहीं कर सकता। हद-से-हद शाम तक वक़्त दे सकता हूँ; देना तो एक सेकेंड भी न चाहिए। जहाँ से भी हो, उस पैकेट को खोज लाओ, नहीं तो.....ईश्वर ही जानता है, कैसी पेंशन के हक़दार तुम रह जाओगे।"

❀ ❀ ❀

"य, हैं भगतजी!" ऑफ़िस से चोरों की तरह बाहर निकलते हुए मैंने साथियों को अपने बारे में जो बातें करते सुना—"सत्तर दिन क्यों डूबकर निगलता है, इकहत्तरवें दिन ज़रूर उसके भी गले में कोई-न-कोई अटक रहती है।"

"बिना ऐसी भगतई के भला कोई पेंशन का हक़दार हो सकता है? या बीवी को हज़ारों के ज़ेवर बनवा सकता है?"

"अच्छाजी! मारा है भगत ने गहरे पर हाथ। साढ़े पाँच सौ की रजिस्ट्री रोज़-रोज़ थोड़े ही आती है।"

"मगर चूक गए बेटा इस बार। अब बिना बड़े घर की सैर के बचते नहीं।"

"बहुत दिन भगतई कर चुके।"

"ऐसे भगत का सत्यानास।"

याने जो लोग अब तक कोई ग़लती न पाने के कारण मौन रहा करते थे, जलने पर भी, वे आज मौक़ा पा गए। मुझे नीच और बेईमान मानने का। मुझे भी आज उन्हें जवाब देते न बना, बल्कि आनेवाली विपत्ति के अंदेशे ने साथियों की बातों पर ध्यान तक न जाने दिया।

इसके बाद जहाँ-जहाँ मैं सवेरे डाक लेकर गया था, वहाँ-वहाँ भागता और उस पैकेट के बारे में पूछता फिरा, मगर कहीं भी कोई सुराग़ न लगा। यहाँ तक कि जिस मुहल्ले और जिन घरों में मैं नहीं भी गया था, वहाँ भी जाँच की। पोस्टमैनी के मेरे लंबे जीवन में ऐसा कभी नहीं हुआ था, इसी-लिये—अक्सर—ताज्जुब में आकर लोग मेरे पैकेट गुमने की बात सुनते थे। और, यों ही शाम होने को आई, भागते-दौड़ते मेरे पाँव चूर-चूर हो गए, लेकिन उस रजिस्टर्ड पैकेट का पता न चला। अब मेरा दिल अंदर-ही-अंदर बैठने लगा। अब जेल की चहारदीवारी दिनदहाड़े चारो ओर मुझे नज़र आने लगी। अकेला होने पर भी—मारे भय के—मैंने अपने को पुलिस से घिरा और हथकड़ी-बेड़ी से जकड़ा समझा। मेरा माथा चक्कर खाने लगा। उचित-अनुचित सोचने-समझने की ताक़त मेरी जाती रही। आख़िरकार हारकर एक पुराने वट के पेड़ के नीचे मैं बैठ गया। घड़ियाल ने उसी वक़्त टन्-टन् करके ५ बजाए। बस, अब आध घंटे का वक़्त और था। तब तक अगर कुछ न हो सका, तो पेंशन तो डूबेगी ही, साथ ही ख़ानदान की इज़्ज़त भी चली जायगी। सारी भगतई 'बदमाशी' में शुमार कर ली जायगी, और मुन्नू! हाय रे! आज उसका जन्म-दिन—फ़ुटबाल उसने माँगा था। अब जब वह सुनेगा कि उसका बाप चोरी में क़ैद कर लिया गया, तो उस सुकुमार बच्चे के मन पर—उफ़्! मैं उसे छोड़कर जेल जा ही कैसे सकता हूँ? मुन्नू की मा के लिये यही तिनकिनारी आज मैं ले जा सकूँगा—हथकड़ी, जेल और लांछन! हे भगवान्! किस पाप का यह दंड है? अपनी जान में ऐसा भारी अपराध तो मैंने कोई भी नहीं किया, जिसके दंड में मेरा सर्वस्व चौपट कर दिया जाय। प्रभो!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पैकेट मिलने की उम्मीद तो ज़रा भी न रही, और जेल जाने का मौक़ा ख़ासा नज़र आने लगा। मैंने सोचा, अगर बीवी के सारे गहने लेकर भी किसी तरह पोस्टमास्टर साहब मुझे संकट से बचा दें, तो जान बचे। उन्हें देकर किसी तरह रजिस्ट्री-वाले को वह राज़ी कर लें। बस, मैं भागा-भागा घर आया।

"बाबा ! फ़ुटबाल ?" मुन्नू ने लपककर पूछा।

"और मेरी सारी...तिनकिनारी ?" उसकी मा ने भी मुस्कराकर सवाल किया—"कहाँ तो जल्द आनेवाले थे, और कहाँ सूरज भी डूब गया। मुँह तुम्हारा सूखा क्यों है ?"

"कुछ नहीं।" मैंने कहा—"तुम अपने सारे गहने ले आओ।"

"गहने ? मकानवाले ?"

"हाँ, मकान फिर छूटेगा, या नहीं भी छूटे, तो क्या—इस वक़्त आन और जान पर आन बनी है।"

"है क्या ? सुनूँ भी।"

"वक़्त नहीं है। देर करोगी, तो मैं गिरफ़्तार कर लिया जाऊँगा—गहने फ़ौरन् लाओ।"

मुन्नू की मा ने आज्ञा का पालन प्रसन्नता से किया, मगर मेरी घबराहट देख मुन्नू रोने लगा।

दूसरा वक़्त होता, तो मैं उसे शांत पहले करता, मगर अभी वक़्त था कहाँ ? तुरंत ही भागता हुआ मैं पोस्टऑफ़िस में आया। पोस्टमास्टर साहब मेरे ही इंतज़ार में बैठे थे—"क्या हुआ भगत ?" ज़रा रूखा सवाल उन्होंने किया—"सवा पाँच बज गए—लगा पता ?"

"नहीं ग़रीबपरवर !" मैं गिड़गिड़ाने लगा—"अब मेरी इज़्ज़त आप ही के हाथ है।"

"मेरे नहीं, रामचरन ! बात सरकार के हाथ में चली जायगी। साढ़े पाँच सौ की बात है।"

"अगर साढ़े पाँच सौ देने ही से मेरी इज़्ज़त बच सके," मैंने अर्ज़ की—"तो लीजिए, ये कोई छ सौ के गहने हैं। इन्हें मैंने अपना मकान छुड़ाने के इरादे से बनवाया था ; लेकिन जब काया-घर ही फँसने पर हो, तो माया-घर की क्या ज़रूरत ?"

"पागलों की बातें !" पोस्टमास्टर अब कठोर पड़े—"इतने पुराने नौकर होने पर भी तुम नहीं समझते कि लाख रुपए देने पर भी अब बच नहीं सकते। केवल यश ही जायगा, सो बात नहीं; सज़ा भी काटनी पड़ेगी।"

"यश ?" यश का नाम न-जाने क्यों—सुनते ही—मेरी नसों में क्षण-भर के लिये बिजली-सा चमक गया। 'यश'-ऑफ़िस में मैंने उस पैकेट को नहीं ढूँढ़ा। न-जाने क्यों घबराहट में उस बँगले को भूल ही गया। वहाँ बच्चों को रद्दी काग़ज़ देने के लिये मैंने अपने काग़ज़ों को बिखेरा भी था। हो न हो, मेरा यश वहीं सुरक्षित हो ! "हुज़ूर !" मैंने पोस्टमास्टर से कहा—"इन गहनों पर नज़र रखिए, 'यश'-ऑफ़िस में ढूँढ़ना मैं भूल गया था—अभी आता हूँ।" और, मैं भागा, मगर पोस्टमास्टर साहब अब संदेह में पड़ गए। उन्होंने सोचा, कहीं मैं भाग तो न जाऊँगा। ख़ैर, मैं भागा-भागा—बेतहाशा भागता 'यश' के बँगले में दाख़िल हुआ। बच्चे, कई, अब भी इधर-उधर खेल रहे थे। देखते ही दौड़कर उन्होंने मुझे घेर लिया—"भगतजी ! चिट्ठी मेरी ! मेरी !!" मगर आज मेरा माथा ठिकाने नहीं था। बदमाश बच्चों को नहीं, 'यश' के मैनेजर को मैं ढूँढ़ता था। फिर भी पाजी बीच में कहाँ से आ फटे। ये हमेशा मुझे सताते हैं। एक बार ठोंक दूँ, तो ठिकाने आ जायँगे। आख़िर ये बदमाश मेरे पीछे पड़ते क्यों हैं ?

लपककर एक सुकुमार बच्चे के गाल पर गहरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाँटा मैंने जड़ दिया—"ले चिट्ठी ! उल्लू के पट्ठे !" आज यह रूप मेरा देखते ही बच्चे पत्ते तोड़ भाग खड़े हुए। जिसे मैंने मारा था, वह तो चीत्कार कर रो भी पड़ा। हो-हल्ला सुन मैनेजर ख़ुद अपने क्वार्टर के बाहर आए। "आप हैं भगतजी ! आइए ! आज आपका जोखिम मैंने कब से सँभालकर रक्खा है !....."

"है !" मेरी आँखों में बिजली कौंध गई—'मैं लुट गया ! मर गया ग़रीबपरवर !"

"घबराने की कोई ज़रूरत नहीं भगतजी ! बच्चों को रद्दी देने में आप उस पैकेट को मेरी मेज़ पर ही भूल गए। आपका तो मुँह सूख रहा है ! ढूँढ़ने में बहुत हैरानी हुई क्या ? सीधे यहीं क्यों नहीं आ गए ?"

दराज़ से निकालकर उन्होंने वह पैकेट मुझे दिया। मैंने मज़े में देख लिया कि वह पैकेट 'वही था, जिसके न होने से मैं जो कुछ हूँ, वह हरगिज़ फिर न रह सकता। मुझे विश्वास हो गया कि प्रभु ने मेरी लाज रख ली; दयामयने मेरे बच्चे के जन्म-दिन को अँधेरा न होने दिया—"आह ! दयामय ! दीनबंधु ! तुम्हारी जय हो !" भावों की अधिकता से उछल-उछलकर मेरा कलेजा मुँह को आने लगा।

"भगतजी ! भगतजी !" बच्चों ने पुनः घेर लिया मुझे—"चिट्ठी दो ! चिट्ठी दो !"

उन्हीं में वह सुकुमार भी था, जिसे थोड़ी देर पहले मैंने दुःखावेश में कठोर चाँटा जड़ दिया था। वह भी तोतली भाषा में—मार भूलकर—"टिट्ठी दो ! टिट्ठी दो !" कर रहा था। लपककर मैंने उसे गोद में उठा लिया—"मुझे माफ़ करो बेटा !" उसके नरम चरण चूमकर मैंने प्रार्थना की—"मैंने तुम्हें आवेश में मार दिया था !" और, फिर मुझे अपने मुन्नू की याद आ गई। याद आ गई यह बात कि अगर आज पैकेट न मिल जाता, तो मेरे बच्चे की कैसी दुर्गति होती ! फिर तो बाँध टूट गया—दुख का नहीं, सुखों का। मारे ख़ुशी के मैं हो-होकर रोने लगा—उस बच्चे को छाती से चिपकाकर ! मैं ऐसे रोने लगा, जैसे कुत्ता रोए। और, मैं सुख से रो रहा था।

"भगतजी ! भगतजी ! हा-हा-हा-हा ! यह क्या करते हैं तमाशा आप ? हा-हा-हा-हा !" बच्चों ने समझा, उन्हें ख़ुश करने के लिये मैं नक़ल कर रहा था !

ख़िज़ाब छोड़ो !

इस परीक्षित तथा सत्य-प्रमाणित तेल ने हज़ारों का बाल काला किया, आपका भी अवश्य काला करेगा। इससे बाल का पकना रुककर, यदि पका बाल खूँटी से स्थायी काला पैदा नहीं होगा, तो दूना दाम वापस की शर्त। अधिक उम्र ५) रु०, ४० से ऊपर ७) रु० का तेल मँगावें।

पता—बाल काला स्टोर्स, पो० कंसी सिमरी (दरभंगा)

शीघ्रपतन—नमर्दी

धातु का गिरना रोक, पतला धातु को गाढ़ा बना, बेहद स्तंभन पैदा करेगी, काम-शक्ति इतनी अधिक बढ़ जायगी कि आप उसे क़ाबू में नहीं रख सकेंगे। शक्ति कभी कम न होगी, और जवानी की-सी उमंग बराबर बनी रहेगी। दोनो का १०) रु०, एक का ६) रु०

पता—रिसर्च केमिकल वर्क्स, पो० बिहार नरसरी (दरभंगा)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवि-कोकिल

[श्रीप्रो० श्रीधर पंत एम्० ए०]

कोकिल कूजत राग अमंद ।
निसि-बासर मुख ते तुव निसरत भाँति अनेकन छंद ;
सरसुति को निस्पंद बहत जनु, करत गान स्वच्छंद ॥ कोकिल० ॥
मधुर रसाल साल - मँजरी कर कवलन इक तुव धंद ;
बानी की मधुरी ते लज्जित माखिक, दाख, मरंद ॥ कोकिल० ॥
ललित, मनोहर धुनि तुव सुनिकै परत मती पर फंद ;
हृत्तंत्री बाजत है बरबस, छाइ रह्यौ आनंद ॥ कोकिल० ॥
सुधा-स्पंद वा अमृत-कंद है, कस समुझै मतिमंद ;
'श्रीधर' नहिं करि सकत प्रसंसा, जिह्वा होत जु बंद ॥ कोकिल० ॥

दांपत्य-सुख की कुंजी !

शीघ्रपतनांतक वटी

स्त्री-पुरुषों में प्रेम न होने का मुख्य कारण 'शीघ्रपतन' है । जब तक नारी को नर से संतोष न होगा, तब तक वह कभी नर को प्यार नहीं कर सकती । वह सदा जली-कटी सुनाती रहेगी, भुन-भुन करती रहेगी । इस दुःख के दूर करने के लिये ही —

चिकित्सा-चंद्रोदय के लेखक

हरिदासजी वैद्य ने

सत्तर साल की अवस्था में लासानी, बेजोड़, स्वर्ग-सुख दिखानेवाली

शीघ्रपतनांतक गोलियाँ

ईजाद की हैं । इन्हें नित्य खाकर दूध पीने से बल-वीर्य बढ़ता है, संभोग की इच्छा अत्यंत बलवती होती है । संभोग में रुकावट होती है । नर और नारी दोनो को संतोष और अकथनीय सुख मिलता है । इन गोलियों के सेवन करनेवाले को संभोग की मनाही नहीं है, हाथ-की-हाथ सुख-स्वर्ग-सुख मिलेगा । सबसे बड़ी बात यह कि बल-वीर्य नहीं घटेगा, बल्कि रोज़ बढ़ेगा । अब तक ऐसी दवा किसी ने नहीं निकाली । आप एक छोटी शीशी मँगाकर ही परीक्षा कीजिए । आधा मूल्य छोटी शीशी का ३) और बड़ी का ६), डाक-ख़र्च ॥) है ।

हरिदास ऐंड कंपनी, मथुरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छोटा मुँह, बड़ा ग्रास !

[चित्रकार—श्रीयुत शिक्षार्थी]

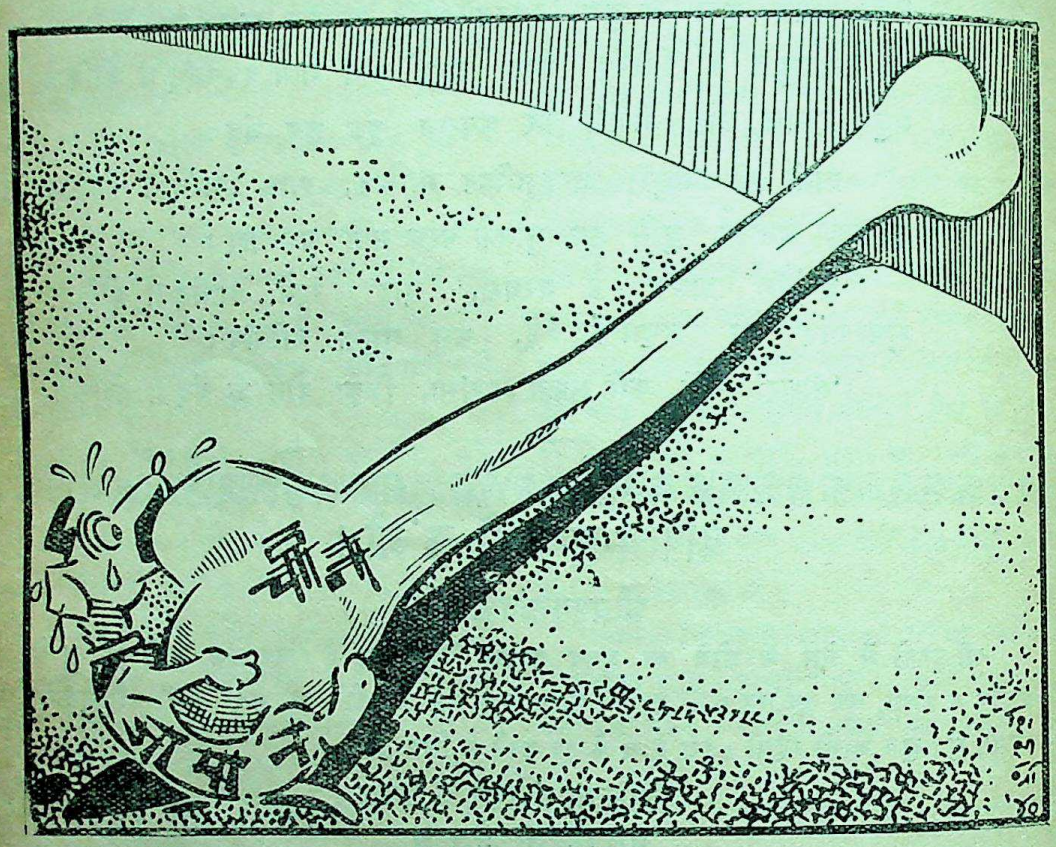

आज बृहत चीनहिं चहत हड़पन लघु जापान ;
बड़ो ग्रास छोटे मुखनि ज्यों बालक नादान ।
(दुलारे-दोहावली)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'सुधा' के नियम

['सुधा' के २ संस्करण निकलते हैं—(१) राजसंस्करण, (२) साधारण संस्करण]

मूल्य

'सुधा' के राजसंस्करण का डाक-व्यय-सहित वार्षिक मूल्य १२), छ मास का ६) और प्रति संख्या का १) है। साधारण संस्करण का वार्षिक ६), छ मास का ३) और एक प्रति का ॥) है। वी० पी० से मँगाने में ≡) रजिस्ट्री के और देने पड़ेंगे। इसलिये ग्राहकों को मनीऑर्डर से ही चंदा भेज देना चाहिए। भारत के बाहर सर्वत्र वार्षिक मूल्य वही है, जो भारत में। सुधा की यह भी एक विशेषता है—वर्षारंभ श्रावण (अगस्त) से होता है, लेकिन ग्राहक चाहे जिस संख्या से बन सकते हैं।

अप्राप्त संख्या

अगर कोई संख्या किसी ग्राहक के पास न पहुँचे, तो उसी महीने के अंत तक कार्यालय को सूचना मिलनी चाहिए। लेकिन हमें सूचना देने के पहले स्थानीय पोस्ट-ऑफ़िस में उसकी जाँच करके डाकख़ाने का दिया हुआ उत्तर सूचना के साथ आना चाहिए। उन्हें उस संख्या की दूसरी प्रति भेज दी जायगी। लेकिन उक्त तारीख़ के बाद सूचना मिलने से उस पर ध्यान नहीं दिया जायगा, और उस संख्या को ग्राहक १) या ॥) के टिकट भेजने पर ही पा सकेंगे।

पत्र-व्यवहार

उत्तर के लिये जवाबी कार्ड या टिकट आना चाहिए, अन्यथा पत्र का उत्तर विलंब से दिया जाना संभव है। पत्र के साथ ग्राहक-नंबर का भी उल्लेख होना चाहिए। मूल्य या ग्राहक होने की सूचना मैनेजर 'सुधा', नं० ३६, लाटूश रोड, लखनऊ के पते से आनी चाहिए।

पता

ग्राहक होते समय अपना नाम और पता बहुत साफ़ अक्षरों में लिखना चाहिए। दो-एक महीने के लिये पता बदलवाना हो, तो उसका प्रबंध डाक-घर से ही कर लेना ठीक होगा। अधिक दिन के लिये बदलवाना हो, तो संख्या निकलने के १५ दिन पेश्तर उसकी सूचना देनी चाहिए।

लेख आदि

लेख या कविता स्पष्ट अक्षरों में, काग़ज़ की एक ओर, संशोधन के लिये इधर-उधर जगह छोड़कर, लिखी होनी चाहिए। क्रमशः प्रकाशित होने लायक़ बड़े लेख संपूर्ण आने चाहिए। किसी लेख अथवा कविता के प्रकाशित करने या न करने का, उसे घटाने-बढ़ाने तथा लौटाने या न लौटाने का सारा अधिकार संपादक को है। जो नापसंद लेख संपादक लौटाना मंज़ूर करें, वे टिकट भेजने पर ही वापस किए जा सकते हैं। यदि लेखक लेना स्वीकार करते हैं, तो उपयोगी और उत्तम लेखों पर पुरस्कार भी दिया जाता है। सुधा में प्रकाशित पुरस्कृत लेखों और कविताओं को पुस्तकाकार या किसी संग्रह में निकालने का अधिकार सुधा के अध्यक्ष को रहेगा। अपुरस्कृत रचनाओं पर लेखकों और सुधा-अध्यक्ष, दोनों का अधिकार होगा। सचित्र लेखों के चित्रों का प्रबंध लेखकों को करना चाहिए। चित्र प्राप्त करने के लिये आवश्यक ख़र्च प्रकाशक देंगे।

लेख, कविता, समालोचना के लिये पुस्तकें और बदले के पत्र इस पते से भेजने चाहिए—

श्रीदुलारेलाल
गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय
कवि-कुटीर, लखनऊ

विज्ञापन

किसी महीने में विज्ञापन बंद करना या बदलवाना हो, तो एक महीने पहले सूचना देनी चाहिए।

अश्लील विज्ञापन नहीं छपते। छपाई पेशगी ली जाती है। विज्ञापन की दर नीचे प्रकाशित है—

साधारण १ पृष्ठ या २ कालम की छपाई २५) प्रतिमास
,, ½ ,, या १ ,, ,, ,, १५) ,, ,,
,, ¼ ,, या ½ ,, ,, ,, १०) ,, ,,
,, ⅛ ,, या ¼ ,, ,, ,, ६) ,, ,,

कम-से-कम आधा कालम विज्ञापन छपानेवालों को सुधा मुफ़्त मिलती है। विज्ञापनदाता द्वारा छपे हुए सुधा-साइज़ के ८ पृष्ठ के क्रोड़-पत्र की सिलाई, बटाई के चार्जेज़ ६०), ४ पृष्ठ के ३५) और २ पृष्ठ के २०) लिए जाते हैं।

सुधा में विज्ञापन छपाने से बड़ा लाभ रहता है। कारण, इसका प्रत्येक विज्ञापन लाखों पढ़े-लिखे, धनी-मानी और सभ्य स्त्री-पुरुषों की नज़रों से गुज़र जाता है। हिंदी की सर्वश्रेष्ठ पत्रिका होने के कारण इसका प्रचार उत्तरोत्तर बढ़ रहा है।

कृपया शीघ्र ही अपना विज्ञापन सुधा में छपाकर लाभ उठाइए। कम-से-कम एक बार परीक्षा तो कर लीजिए।

मैनेजर 'सुधा', लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संसार-रहस्य

अथवा

अधःपतन

लेखक

ठाकुर प्रसिद्धनारायणसिंह बी० ए०।

यह उपन्यास हिंदी में एक नए ही ढंग का है। इसमें भौतिक और आध्यात्मिक जगत् का चित्र खींचा गया है। इस उपन्यास में लेखक ने संसार के द्वंद्व—पुण्य-पाप, उचित-अनुचित, यह-वह, मैं भला और तू बुरा और मैं बुद्धिमान् और तू मूर्ख—आदि ऐसे ही प्रश्नों को सुलझाकर यथातथ्य प्रकाश डाला है। छपाई-सफ़ाई सुंदर। मूल्य १॥), सजिल्द २)

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वीर-ज्योति

वीर-रस-प्रधान नाटक

राजभक्ति तथा देश-भक्ति

का

जीता-जागता चित्र

ले०, पं० लोकनाथजी द्विवेदी 'सिलाकारी'

इसमें

महेबा (बुंदेलखंड) के राजा वीर-शिरोमणि महाराज चंपतराय और उनकी वीरात्मा रानी सारंधा का चरित्र चित्रण किया गया है। कथा-प्रसंग से इसमें अन्य बुंदेला-सामंतों तथा अनेक मुग़ल-सरदारों के भी चरित्र चित्रित किए गए हैं। कई एक बुंदेला स्त्रियों ने भी इस नाटक में भाग लिया है। मुग़लों की ओर से केवल जहानारा (शाहजहाँ की लड़की) रंगमंच पर आती है। इस नाटक में इतिहास की बहुत कुछ रक्षा की गई है, और कल्पना से केवल आवश्यक काम लिया गया है। पुस्तक की रचना सामयिक है, क्योंकि आजकल हिंदू अपने प्राचीन गौरवों और पूर्वजों की सुकृतियों से प्रभावित हो रहे हैं। बुंदेलखंड-वासियों के लिये तो यह नाटक एक प्रकार का पुराण है। मूल्य सादी १।), सजिल्द १॥।)

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी के सर वाल्टर-स्कॉट बाबू वृंदावनलालजी वर्मा

की

सुंदर रचनाएँ

(१) गढ़-कुंडार

यह हर्षवर्धन की मृत्यु के बाद भारत के इतिहास के निर्माता चंदेलों, पँवारों, परिहारों और खंगारों के पारस्परिक संघर्ष से ओत-प्रोत, मध्यकालीन भारत की राजनीतिक चालों से भरा हुआ बुंदेलखंड का एक ऐतिहासिक उपन्यास है। मूल्य २॥), सजिल्द ३)

(२) बिराटा की पद्मिनी

इस मर्म स्पर्शी घटनाओं से पूर्ण ऐतिहासिक उपन्यास में बिराटा की 'पद्मिनी'-नामक वीर कन्या का वीरता-पूर्ण चरित्र-चित्रण है। मूल्य २॥), सजिल्द ३)

(३) लगन

विवाह में ठहराव की कुप्रथा, समधियों का झगड़ा, पति-पत्नी का अविरल प्रेम, पर-स्त्रियों पर नैन-सैन चलानेवाले गुंडों की दुर्गति और अंत में सच्चे प्रेम की विजय देखने के लिये इस उपन्यास को अवश्य पढ़ें। मूल्य ॥), सजिल्द १)

(४) संगम

गंगा, यमुना और सरस्वती के संगम से भी अधिक उपादेय और महत्त्व-पूर्ण यह जाति-गंगा का संगम है। इस उपन्यास में आपको अंतर-जातीय संबंध का अच्छा दिग्दर्शन होगा। मूल्य २), सजिल्द २॥)

(५) प्रत्यागत

मा का जितना सुंदर, सजीव, ज्वलंत, उज्ज्वल एवं स्वाभाविक चरित्र-चित्रण इस उपन्यास में वर्माजी ने किया है, अन्यत्र दुर्लभ है। इस उपन्यास की 'मा' संसार के सर्वश्रेष्ठ उपन्यासकारों द्वारा निर्णीत 'मा' से टक्कर ले सकती है। भारतीय साहित्य को छोड़िए, पश्चमीय साहित्य के ज्वलंत औपन्यासिक भी एक बार इस 'मा' के लिये नवेंगे, तरसेंगे। मूल्य सादी १), सजिल्द १॥)

(६) कुंडली-चक्र

वर्माजी की लेखनी का चमत्कार यदि देखना हो, तो इसे अवश्य पढ़ें। यह काशी-विश्वविद्यालय में बी० ए० में कोर्स है। मूल्य १), सजिल्द १॥)

(७) प्रेम की भेंट

प्रेम के दीवाने एक युवक और एक सुंदर लड़की का सच्चा क़िस्सा पढ़कर आप चकित हो जायँगे। मूल्य १), सजिल्द १॥)

(८) कोतवाल की करामात

वर्माजी पर हिंदी-संसार को गर्व है। इस छोटे-से सामाजिक उपन्यास को रोचक बनाने में वर्माजी ने कुछ उठा नहीं रक्खा। वर्णित घटना बिलकुल सच्ची है। मूल्य १), सजिल्द १॥)

(९) धीरे-धीरे

इस पुस्तक में लेखक ने वर्तमान राजनीतिक हलचल का आश्चर्य-जनक चित्र खींचा है। मूल्य ॥), सजिल्द १)

मिलने का पता—गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

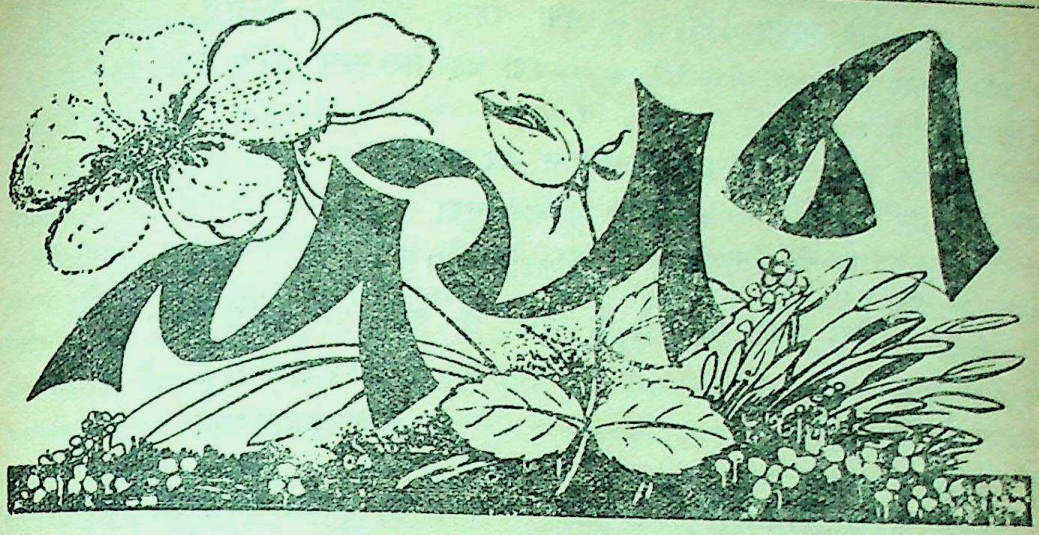

१. क्या वह मेरा प्यार करेंगे ?

क्या वह मेरा प्यार करेंगे ?
अपने उर का हार करेंगे ?

(१)

हृदय सुमन-सम फूल रहा है,
प्रणय-हिंडोले झूल रहा है,
अपनेपन में भूल रहा है,
पलकें बिछी हुई हैं मग में, क्या वह आँखें चार करेंगे ?
क्या वह मेरा प्यार करेंगे ?

(२)

वह चंद्रानन दरसा करके,
प्रेम-सुधा-रस बरसा करके,
मेरा हृत्तल सरसा करके,
मधुमय सुस्मिति से क्या मेरे मन पर वह अधिकार करेंगे ?
क्या वह मेरा प्यार करेंगे ?

(३)

माखन-सा निज ही-तल करके,
सौरभमय जगतीतल करके,
मेरे उर को शीतल करके,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरे मानस - मंदिर में क्या रहना अंगीकार करेंगे ?
क्या वह मेरा प्यार करेंगे ?

(४)

उन पर जीवन वार चुका हूँ,
कर में दे पतवार चुका हूँ,
हाँ, मैं हो बलिहार चुका हूँ,
मेरी नैया धारा में है, धारा से क्या पार करेंगे ?
क्या वह मेरा प्यार करेंगे ?

शिवकुमार शर्मा

× × ×

२. "तू...ही...मैं !"

ऋतु आई !
वर्षा हुई !!
पर निर्मम स्वाति एक भी जल-कण लेकर बाहर नहीं निकली।
वर्ष बीत गया।
आकाश की ओर टकटकी लगाए बैठा बेचारा चातक अब क्या करता ?
केवल एक साँस थी।
वह भी छोड़ चला—"तू...ही ..मैं !"

❀ ❀ ❀

प्रदीप की लौ ज्योतिर्मय हो रही थी।
प्रेमांध पतिंग ज्योति की आशा से उसे आलिंगन करने चला।
पर क्यों ?
..... !
पागल उसकी ओर बढ़ता ही गया।
न माना !
लौ से लग ही तो गया !!
क्या था, जीवन की श्वाँसें चीत्कार कर उठीं—
"तू.. ही...मैं !"

❀ ❀ ❀

भ्रमर कब से भ्रमित था।
आखिर पहुँच ही तो गया कमल के पास, और लगा प्यार करने।
पर अभी अघाया भी न था कि सूर्य अस्ताचल को चल पड़े।
कमल ने हृदय-द्वार बंद कर लिया, और उसमें से भ्रमर का एक क्षीण स्वर सुनाई पड़ा—
"तू...ही.. मैं !"
बेचारे प्रेमी !
पर दुनियावाले हँसकर बोल उठे—
"पागल थे, जो मर मिटे❀।"

(कुमारी) शिबोला रानी

× × ×

❀ लेखिका की अप्रकाशित पुस्तक 'प्रथम प्रहर' से।--सुधा-संपादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३. बच्चों के अधिकार-पालकों का कर्तव्य

हज़ारों वर्ष पहले की कहानी है, जो आज भी कानों में गूँज रही है। आज उसे ऐतिहासिक रूप देकर हम लोग कुछ लाभ उठाने की आशा रखते हैं।

कहानी का जन्मदाता यहूदी क़ौम का सुप्रसिद्ध नरेश सुलैमान है, जिसकी विद्वत्ता जगत्प्रसिद्ध है। उसकी उक्तियाँ आज भी उदाहरण-स्वरूप प्रचलित हैं, किंतु इन उक्तियों के आधार पर आचरण करनेवाले कितने हैं? थोड़ी मात्रा में। ख़ुद सुलेमान का भी यही हाल था। जब वह अपने बच्चों से लैंगिक सदाचार (Sexual morality) के बारे में चर्चा करता है, तब ऐसा जान पड़ता है, मानो बूढ़ा सुलेमान निरर्थक बातें कर रहा हो। इसकी बहुत-सी बातें उसी प्रकार की हैं, जिस प्रकार की अरेबियन नाईट्स या क़िस्सा-गुलबकावली में अक्सर पढ़ने को मिलती हैं। आज हम उसकी एक प्रचलित उक्ति पर विचार करें, तो मालूम होगा कि हम कितना अनर्थ कर रहे हैं! वह उक्ति है—"Spare the rod and spoil the child."—"बेंत लगे ज़ोर से, तो विद्या पढ़े ग़ौर से।" या बच्चों को दंड न देना उन्हें बिगाड़ना है। यही इन सबका सारांश है। आज इस कहावत के अनुसार करोड़ों मासूम बच्चे व्यर्थ कष्ट उठा रहे हैं। सुलेमान की इस ऊटपटाँग कहावत पर पुश्त-दर-पुश्त चलने का हम पालकों ने मानो अपना जन्म-सिद्ध अधिकार समझ लिया है।

तब प्रश्न यह उठता है कि सुलेमान-जैसे विद्वान् द्वारा ऐसी कहावत लिखे जाने का कारण क्या था? बात दरअसल यह थी कि उसके हरम में क़रीब सात सौ रानियाँ और नौ सौ रखेलियाँ रहती थीं। हर स्त्री से एक पुत्र और एक पुत्री की उत्पत्ति हो, तो १६ सौ बालकों और उतनी ही बालिकाओं की संख्या हुई। बच्चों की इतनी बड़ी फ़ौज पर सुलेमान के लिये नियंत्रण रखना आसान काम नहीं था। लगभग ४० बच्चों के क्लास पर एक ट्रेंड अध्यापक भी नियंत्रण रखने में अपने आपको असमर्थ पाता है, और बच्चे शोर-गुल किए बिना रहते नहीं। फिर सुलेमान की क्या ताक़त थी कि वह इतने बच्चों पर सुगमता-पूर्वक अधिकार रखता। इसीलिये सुलेमान को उन्हें डराने-धमकाने के लिये डंडा उठाने की ज़रूरत पड़ी। अपने इस प्रयोग पर ही आप "Spare the rod and spoil the child." लिख गए। बच्चों पर इस प्रकार नियंत्रण रखने से ही उनमें से एक भी ऐसा न निकला, जिसका आज इतिहास में नाम हो।

दुनिया में बच्चों से बढ़कर प्रिय वस्तु और कौन-सी है? और बच्चे? बच्चे तो अपने माता-पिता के अलावा किसी को क्या समझ सकते हैं। उन नन्हे-नन्हे बालकों को तो सब जग अपने पालकों में ही दिखलाई देता है। माता-पिता भी उन्हें अपना 'आशा-दीप' समझते हैं। यह सब कुछ होते हुए भी आज हममें बहुत थोड़े ऐसे हैं, जो बच्चों के जन्म-सिद्ध अधिकारों का ख़याल रखकर उनके साथ उचित व्यवहार करते हों। "उन्हें पैदा करने के ज़िम्मेवार तो माता-पिता ही हैं। बच्चों के जन्मदाता 'हम'—हम उन्हें खिलाते-पिलाते, पढ़ाते हैं। बस, इसी आधार पर ये बच्चे हम जो कुछ कहें, उसी को क्यों न मानें?" आदि बातें हम लोगों में अधिक पाई जाती हैं। वास्तव में आप जन्मदाता हैं। परंतु आपने तो अपने स्वार्थ के लिये—आनंद के लिये—जो कुछ किया, उसके फल-स्वरूप वे जन्मे हैं। तब फिर आप उन बच्चों का लालन-पालन कर उन पर कोई उपकार करते हैं, यह कैसे? यह तो आपका फ़र्ज़ हुआ कि उन्हें अच्छी तरह पालें-पोसें, पढ़ा-लिखाकर होनहार नागरिक बनाएँ। अगर सचमुच, जन्म देने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहले, माता-पिता भविष्य में होनेवाले बच्चों की आत्माओं से सलाह ले लेते, तो शायद आज संतति-निग्रह करने की नौबत ही न आती ! फिर आज जितने बच्चे दिखाई देते हैं, उनमें से आधे से अधिक समानाधिकार न देनेवाले पालकों के यहाँ जन्म लेने से ज़रूर इनकार कर देते। शेष आधे इस दुनिया की भूलभुलैया में आने का साहस ही न करते।

आजकल तो शादी होते ही काम-लिप्सा और संतान का भूत सवार हो जाता है। अक्सर आमदनी कम और ख़र्च अधिक करनेवाले परिवारों को इससे बहुत कष्ट उठाने पड़ते हैं। बच्चों की उत्पत्ति पर उनके पालन-पोषण की चिंता उन्हें हर समय सताया करती है। पैसे और अपने ही शुद्धाचरण के अभाव में वे बच्चे होनहार कैसे हो सकते हैं ? इधर माता-पिता इसी धुन में लगे रहते हैं कि ये बच्चे होनहार बनें, साथ ही हम जो कुछ उलटा-सीधा, झूठ-सच कहें, उसे मानें। भला, यह कैसे हो सकता है ? बच्चों की तो यह आदत ही होती है कि जिस बात को अच्छी तरह न समझ लें, ऊट-पटाँग किए जायँगे। आपकी आज्ञा का पालन तब तक कैसे करें, जब तक उसका असली कारण न समझ लें। आख़िरकार मनुष्यत्व को लेकर ही तो वे जन्मे हैं। किसी बच्चे को डराकर अपनी आज्ञा का पालन कराना सहज है, किंतु उसी बच्चे को अच्छे-बुरे का बख़ूबी ज्ञान कराने के लिये माता-पिता और पालकों को ठंडे मिज़ाज का, सहनशील और चतुर होना अत्यंत कठिन। जब आप बच्चों को किसी बात का भले-बुरे का ज्ञान करा देंगे, तो वे उसे सोच-समझकर करेंगे। इतने पर भी बच्चे अपनी मनमानी करते हैं, तो फिर माता-पिता और पालकों के दंड से भी बढ़कर कष्ट उन्हें भुगतना पड़ता है। बच्चों की गति-विधि पर हर समय ध्यान देनेवाले विद्वानों का भी यही मत पाया जाता है, और हम लोग भी हर रोज़ यही देखते हैं।

बच्चों पर उचित नियंत्रण रखने के लिये तो स्वयं पालकों या गुरुजनों को नियम और संयम से रहकर प्रथम अपने पर ही नियंत्रण रखने की ज़रूरत है। पर वास्तव में नियंत्रण रखना हम नहीं जानते। उसकी शिक्षा हमने पाई ही नहीं। हम तो अपने आप मियाँ मिट्ठू बनकर बच्चों पर रोब जमाना जानते हैं। फ़ौजी जेनरल को सिपाहियों पर नियंत्रण रखने का ज्ञान कराया जाता है, इसीलिये आप देखते हैं कि सिपाही उसकी आज्ञा का उल्लंघन करने का साहस ही नहीं करते, बल्कि उसके इशारे-मात्र पर अपने आपको मौत के मुँह में झोंक देते हैं ? फिर क्या कारण है, बच्चों के स्वार्थ-रहित मस्तिष्क पर नियंत्रण रखने में हम अपने को असमर्थ पाते हैं ? आजकल की दूषित शिक्षा-प्रणाली का यह परिणाम है। विवाह के योग्य होने के पहले या बाद में संतान का लालन - पालन करने का ज्ञान हमें कराया ही नहीं जाता ! और हम आँख मूँदकर, वैवाहिक बंधन में फँसकर कष्ट उठाते हैं। परिणाम भयंकर निकलना ही चाहिए। अनभिज्ञ जो हुए।

बच्चों में स्वाभिमान की मात्रा हमसे ज़्यादा रहती है। अगर उसे कोई माता-पिता, पालक या शिक्षक ठेस पहुँचाता है, तो वह कभी नहीं भूलते। कोई-कोई मा-बाप अपने बच्चों की छोटी-सी त्रुटि पर क्रोध के आवेश में आकर अत्यधिक दंड दे बैठते हैं। कभी-कभी इसका परिणाम बड़ा भयंकर होता है। बच्चों के बदन से पिटने के निशान जन्म-भर नहीं मिटते। कभी-कभी अंग-भंग हो जाता है—दाँत टूटना आदि। इस निष्ठुरता का परिणाम स्वयं पालकों को भी आगे जाकर भुगतना पड़ता है। ऐसे बच्चे बड़े और स्वतंत्र होने पर माता - पिता का कम ध्यान रखते हैं। मा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाप को वृद्धावस्था में किसी तरह का सुख नहीं मिलता। उस समय भी वे मा-बाप अपनी संतान को ही दोषी समझते हैं, मन-ही-मन उन्हें बुरा-भला कहते हैं। किंतु उस अवस्था में जवान लड़के-लड़की पर हाथ उठाने का साहस ही नहीं रहता। साहस हो कैसे? उन बच्चों में होशियार होने पर प्रतिकार करने की भावना जागरित हो जाती है, और पालकों को डर रहता है कि कहीं ये नौजवान लड़के-लड़की हमारी बात न बिगाड़ दें। ऐसी हालत में छोटे-छोटे, भोलेभाले, मासूम बच्चों को मारने-पीटने या डराने-धमकाने में कोई बुद्धिमानी नहीं। आजकल तो पशुओं को भी समाज ने बड़ी-बड़ी सुविधाएँ दे रक्खी हैं। घायल, रोगी, कमज़ोर तथा कम आयुवाले या वृद्ध पशु से काम लेनेवाले को दंड दिया जाता है, तब क्यों न हम सब मिलकर—अपनी भावी आशा बच्चों के जन्म-सिद्ध अधिकारों का ख़याल रखकर—उन्हें योग्य देशवासी बनाएँ?

स्मरण रहे, आज की शिक्षा-प्रणाली पूर्ण भारतीय नहीं। इस शिक्षा को हम ऐंग्लो-इंडियन शिक्षा-प्रणाली कहें, तो अनुचित न होगा। स्कूल में दी जानेवाली शिक्षा से बढ़कर घर का शिक्षण होना चाहिए। जब घर में, अपने परिवार में राग-द्वेष, झूठ बोलना आदि बातें बच्चे देखते हैं, तो वे अछूते कैसे रह सकते हैं? इसलिये घर का वातावरण जितना शुद्ध रक्खा जायगा, बच्चे उतने ही होनहार होंगे। उन्हें देश-सेवा के साथ-साथ ग्राम्य जीवन की जानकारी कराना परमावश्यक है। इसके लिये विना किसी भेद-भाव के हर जाति के बच्चे सामूहिक शिक्षा प्राप्त करें, तो और भी अच्छा। इससे जन्म-भूमि-प्रेम की भावना जागरित होगी। बालक-बालिकाओं को साथ-साथ पढ़ाने में कोई हानि नहीं। उन्हें अलग-अलग रखने से तो बड़े भयंकर परिणाम निकलते हैं। उन सबको लैंगिक स्वास्थ्य अथवा सदाचार का शिक्षण देना नितांत आवश्यक है, साथ ही संयम का पाठ पढ़ाना भी बहुत ज़रूरी है। इसके लिये माता-पिता, पालक और शिक्षकों को स्वयं संयमी होना चाहिए। बालयकाल में 'संयम' की शिक्षा देने से वे बच्चे बड़े होने पर मान या पैसा, शक्ति या अधिकार का कभी दुरुपयोग न करेंगे।

बच्चों के स्वास्थ्य का ख़याल रखना उनकी उम्र बढ़ाना है। दीर्घायु होने के लिये स्वास्थ्य ठीक होना चाहिए। उनका आहार सात्त्विक हो। तात्पर्य, हमारे बच्चे भविष्य में अपना जीवन उज्ज्वल बनाकर शक्तिशाली बनें, इसी में हम सबका—देश का उद्धार है।

रामकृष्ण पाठक

× × ×

४. श्रीजयचंद्रजी और राजा भोज

बनारस से प्रकाशित होनेवाले दैनिक 'आज' के २२ मार्च, १९४१ के अंक में 'हिंदी का इतिहास-साहित्य'-नाम से श्रीजयचंद्रजी विद्यालंकार का एक लेख छपा है।

यह लेख सम्मेलन-पत्रिका के नए अंक से उद्धृत किया गया है। उक्त लेख में हमारे 'राजा भोज' के विषय में लिखा है—

"राजा भोज में धार के प्रसिद्ध राजा भोज और उसके वंश के संबंध में सब तरह की बातें हैं, लेकिन सब एक दूसरे से असंबद्ध, विना किसी क्रम और तरतीब के। भोज के समय की भारत की दशा का वर्णन पहले आ गया है, तो भोज के समय का निर्धारण पीछे हुआ है।"

इस विषय में क्या हम विद्यालंकारजी से पूछ सकते हैं कि 'सब एक दूसरे से असंबद्ध', इस वाक्य से आपका क्या तात्पर्य है? क्या इसमें एक स्थान पर राजा भोज का एक शताब्दी में होना और दूसरे पर दूसरी शताब्दी में होना लिख दिया गया है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

या ऐसी ही कोई अन्य बात आ गई है ? यदि ऐसा हो, तो कृपया सूचित करने का कष्ट करें। परंतु यदि आपका तात्पर्य भिन्न-भिन्न लेखकों के विरोधी विवरणों से, जो इसमें उद्धृत किए गए हैं, हो, तो अपने शब्दों पर फिर से विचार करने की कृपा करें। रही भिन्न-भिन्न प्रकरणों के आगे-पीछे छपने की बात, हम इसे सहर्ष स्वीकार करते हैं। परंतु खेद है, आपकी 'भारतीय इतिहास की रूप-रेखा' में भी यही त्रुटि इधर-उधर दृष्टिगोचर हो जाती है। उदाहरणार्थ उसके द्वितीय खंड में पहले मानव और ऐल-वंश से लेकर महाभारत-संग्राम तक का हाल लिखकर बाद में समाज की बुनियादों की स्थापना का हाल दिया गया है।

आगे आपने लिखा है—"प्राचीन भारत में कुछ प्रजातंत्र भी थे, यह कहने की रेऊजी की हिम्मत नहीं होती। इससे वे कहते हैं—'कुछ पर जातियाँ ही अपना अधिकार जमाए थीं'।"

इसके समाधान के लिये यहाँ आप ही की 'भारतीय इतिहास की रूप-रेखा' से अवतरण दिया जाता है—

"समूचे वृजि-संघ की राजधानी भी वेसाली (वैशाली) ही थी।.....लिच्छिवियों के ७,७०७ राजा थे .....। ये सब राजा अपने गाँव में शायद स्वतंत्र शासक थे; किंतु राज्य के सामूहिक कार्य का विचार एक परिषद् में होता था, जिसके वे सब सदस्य होते थे। इसी राज्य-परिषद् के हाथ में लिच्छवि-राष्ट्र की मुख्य शासन-शक्ति थी।'

(पृष्ठ ३१३)

अब पाठक स्वयं विचार करें कि ऐसे राज्यों को जाति-राज्य कहना ठीक है या प्रजातंत्र। अंतिम आक्षेप आपका इस प्रकार है—

"सोलह महाजनपदों के युग में तो क्या, उसके आठ सौ बरस बाद तक भी अवंति-प्रदेश मालवा न कहलाता था। मालव-जाति महाजनपद-युग में पंजाब में मुलतान के उत्तर-पूरब रहती थी। अवंति-प्रदेश पर तब राजा चंडप्रद्योत का राज्य था।"

उत्तर में निवेदन है, 'राजा भोज'-नामक पुस्तक का हमारा लेख इस प्रकार है—

"प्राचीन साहित्य से ज्ञात होता है कि आज से पच्चीस सौ वर्ष पूर्व गांधार (कंधार) से लेकर मालवे तक का भारतीय भूभाग सोलह राज्यों में बँटा हुआ था। इनमें से कुछ का प्रबंध राजसत्ता के अधीन था, और कुछ पर जातियाँ ही अधिकार जमाए हुए थीं। ऐसी ही एक जाति का राज्य अवंति-प्रदेश पर था, जो मालव-जाति के नाम से प्रसिद्ध थी।"

इस अवतरण की भाषा भ्रामक मानी जा सकती है। परंतु उक्त अवतरण में केवल उन जातियों में से ही मालव-नामक एक जाति का राज्य मालवे पर भी रहना बतलाया गया है। संभव है, प्रारंभ में इस घटना का उल्लेख मालवा के नामकरण के लिये ही किया गया हो, और 'इसी से इसका नाम मालवा पड़ा', यह वाक्य हमारे या लेखक के दोष से छूट गया हो। इस कथन की पुष्टि ३५वें पृष्ठ के इस अवतरण से भी होती है—

"वि० सं० ३८७ (ई० स० ३३०) के क़रीब गुप्त-वंश का प्रतापी नरेश समुद्रगुप्त राज्य पर बैठा। उस समय मालवे पर मालव-जाति का प्रजा-सत्तात्मक या जाति-सत्तात्मक राज्य था। परंतु उसके पुत्र चंद्रगुप्त द्वितीय ने वि० सं० ४५२ (ई० स० ३९५) के क़रीब मालव-जाति को हराकर वहाँ पर अपना अधिकार कर लिया।"

इससे स्पष्ट प्रकट होता है कि मालवे पर मालव-जाति के राज्य का वास्तविक उल्लेख इन पंक्तियों में ही अभीष्ट था।

अस्तु। लेख के समाप्त करने के पूर्व यह नम्र निवेदन कर देना भी अनुचित न होगा कि एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो जाति के पीछे प्रदेश का नाम बदलना कोई आवश्यक बात नहीं, और बदलता भी है, तो दीर्घ काल के विशेष संपर्क के बाद ही। दूसरे, ईसवी सन् से १५० वर्ष पूर्व के लगभग के मालव-गण के सिक्कों का जयपुर-राज्य के दक्षिणी भाग से मिलना भी उन लोगों का उस समय के आस-पास ही अवंति - प्रदेश तक पहुँच जाना सूचित करता है। तीसरे, आप स्वयं 'भारतीय इतिहास की रूप-रेखा' में अवंति को भी १६ महाजनपदों में गिनते हैं, और उस समय को महाजनपद-युगक कहते हैं (पृष्ठ ३१२)। ऐसी हालत में उक्त युग के सामने चंडप्रद्योत के व्यक्तित्व का अस्तित्व ही कितना दीर्घकालीन हो सकता है!

अस्तु। ऊपर जो कुछ लिखा गया है, वह विद्यालंकारजी के लेख का भाव देखकर ही लिखा गया है, अन्यथा हरएक व्यक्ति को अपना मत प्रकट करने का अधिकार है, इस विषय में कोई किसी को रोक नहीं सकता।

विश्वेश्वरनाथ रेउ

× × ×

५. हम दोनो भाई-भाई हैं।

है नादानों का यह विचार—
"हम हिंदू हैं, वे मुसलमान";
हैं एक नाव पर हम बैठे,
है एक हमारा आसमान।
एक-सी बदरियाँ छाई हैं;
हम दोनो भाई - भाई हैं।

हो एक देश में हम पैदा
हैं एक जगह हम सदा रहे;
हैं साथ सदा ही खेले हम,
हैं सुख-दुख संग सदैव सहे,
या जो विपदाएँ आई हैं;
हम दोनो भाई - भाई हैं।

दोनो के हित नभ में उगकर
है एक सूर्य देता प्रकाश;
है हम दोनो के लिये एक
शशि करता किरणों का विलास।
वे ही गिरि, वे ही खाई हैं;
हम दोनो भाई - भाई हैं।

वे जिसको कहते हैं रहीम,
वह ही तो राम हमारा है;
है दोनो पर प्रभुता उसकी,
वह सारे जग से न्यारा है।
छवि-किरणें कण-कण छाई हैं;
हम दोनो भाई - भाई हैं।

संगम में श्रीगंगा - यमुना
हिल-मिलकर बहती हैं जैसी,
दोनो ही मिलकर साथ चलें,
उर धरें भावना हम वैसी।
मा एक मिली मनभाई हैं;
हम दोनो भाई - भाई हैं।

बाबूलाल भार्गव

× × ×

६. विस्सी

(१)

"वह देख, खुंडी गोबर कर रही है। वह मेरी है।" एक हाथ से संकेत करते तथा दूसरे से गोबर समेटते हुए पुनिया ने ज़ोर से कहा।

"यह तो ख़ूब रही। खुंडी पर क्या तेरा नाम लिखा है?" कहकर विस्सी ने उसी ओर पैर बढ़ाए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अरे, कल ही तो सब भैंसें बाँटी हैं। फिर रोमंटी क्यों करते हो ? तुम अपनी का लो, और मैं अपनी का लूँ।" कहते हुए पुनिया ने एक हाथ से पल्ला सँभालते हुए दूसरे से विस्सी का हाथ पकड़ लिया।

"ऐसे क्या रोज़-रोज़ का गंडा है ? कल की कल हो गई, आज की आज।" विस्सी ने अपना हाथ छुड़ाते हुए उत्तर दिया।

"अच्छा, और जो मैंने पहले देखा, और कहा, सो ?" पुनिया ने न्याय के लिये इच्छुक दृष्टि से विस्सी को देखा।

"सो, देखने से क्या होता है ? तेरी आँखें चलती ही बहुत हैं। ऐसे तो शाम तक दो छोत भी हाथ न पड़ें।" विस्सी ने तनिक मुस्कराते हुए कहा।

"न मिले, तो अच्छा है। अपने दीदा क्यों नहीं फोड़ लेते ?" पुनिया के मुख पर अप्रसन्नता की झलक स्पष्ट दिखाई दे रही थी।

"फोड़ें तो तब, जब गोबर न मिले। अभी जाकर समेटता हूँ।"

"अच्छा, तो देखें, कौन समेटता है ?"

इतना कहकर, दोनो दौड़कर गोबर के पास जा पहुँचे, और अपने-अपने हाथों में जितना गोबर उठ सकता था, उठा लिया। पहले तो गालियों की बौछार हुई, और फिर गोबर की। गोबर का एक लोंदा पुनिया के बाएँ कपोल पर पड़ा, जिससे बायाँ कपोल तो मलिन, परंतु दूसरा क्रोध से लाल हो गया। वह खीझकर, अपना गाल रगड़ती हुई बोली—"चल, निगोड़े ! आज से मेरी-तेरी खुट्टी।"

"बस, इतने ही में रो दीं।" कहकर हँसता हुआ विस्सी दूसरी ओर चला गया। गरम दूध और गरम करने से उबल पड़ता है।

जड़ तो चुके, परंतु पश्चात्ताप दोनो के हृदयों में था। विस्सी सोचता था—नाहक़ ही खुट्टी की। एक छोत से हो ही क्या जाता ? अब वह बात भी नहीं करेगी। बातें तो बड़े मज़े की करती है। ख़ैर, देखा जायगा। उधर पुनिया सोचती थी—आज न-जाने किस मनहूस का मुँह सवेरे-सवेरे देखा कि लड़ाई हो गई.....।

❀ ❀ ❀

"अरे, निकल निगोड़ी....." चिल्लाती हुई हाथ में एक हरी संठी लिए पुनिया तलैया के चारो ओर चक्कर लगा रही थी। तलैया में घुसने का साहस नहीं होता था। वर्षा के कारण तलैया ने भी अपना विस्तार बढ़ा लिया था। पुनिया बहुतेरी चिल्लाती, ढेले फेंकती, परंतु भैंस तलैया छोड़ने का नाम न लेती, मानो वह भी यह जानती थी कि यह तलैया में नहीं घुस सकती। कुछ दूर पर जामुन से लदे वृक्ष पर बैठा हुआ विस्सी काली-काली जामुनें खा रहा था। कभी-कभी अपनी बाँसुरी से वह एक छोटी-सी तान छेड़ देता—ठीक वैसे ही, जैसे बच्चे कुहुकती हुई कोकिल को खिझाने के हेतु 'कुहू ! कुहू !!' कह देते हैं। विस्सी के इस विनोद से पुनिया और भी चिढ़ जाती थी।

"ले, पहले तू मर ले, फिर मुझे भी बुला लीजो।" कहती हुई पुनिया तलैया के किनारे कोमल, हरी-हरी घास पर पड़ रही, और शीघ्र ही शीतल पवन ने उसके नेत्रों को बरजोरी मूँद दिया।

विस्सी जामुन खाना छोड़कर तलैया में कूद पड़ा, और उसने भैंस की पीठ पर सवार होकर उसे पानी के बाहर निकाला। भैंस की पूँछ निचोड़कर चुल्लू-भर पानी पुनिया के मुख पर छिड़क दिया। पुनिया चौंककर उठ बैठी, और सरोष दृष्टि से विस्सी के स्मित मुख की ओर देखा। परंतु रोष का पारा स्मिति के शीतल जल के सम्मुख अधिक न चढ़ सका। पुनिया ने कृत्रिम रोष से कहा—"तुमने मेरी भैंस क्यों निकाली ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्योंकि तुम्हारे लिये वह मर चुकी थी, इसलिये।" विस्सी ने उसी प्रकार हँसते हुए उत्तर दिया। वह बाह्य आवरण, जिसके भीतर पुनिया का वास्तविक हृदय आच्छादित था, हास्य के झकोरों ने दूर जा फेंका, और वह पुनः एक चंचल बालिका के रूप में दिखाई पड़ी। दोनों गाँव की ओर चलने लगे। पुनिया के घर के निकट पहुँचकर विस्सी ने उससे पूछा—"अब तो खुट्टी नहीं?" पुनिया ने केवल नकार-सूचक सिर हिला दिया, और विस्सी ने कूदकर अपने घर की राह ली। पुनिया कुछ देर उसी ओर देखती रही।

(२)

गरमी के दिनों में गाँव की नहर पर तीर्थस्थान-जैसी भीड़ होती है। संध्या-समय तो सड़क की पुलिया के निकट का जल छोटे-छोटे बालकों की चुहल और कुदाई के कारण अत्यधिक गंदा हो जाता है। खेतों से लौटते हुए कृषक नहर में स्नान करने के उपरांत ही अपने घर की राह लेते हैं। गाँव के रसिक युवक, जो शहर से लौटते समय एक पैसे का साबुन लेते आते हैं, अपने-अपने सलूके इसी पुलिया पर बैठकर धोते हैं।

विस्सी भी जब स्नान करके नहर के बाहर निकला, सूर्यास्त होने में अधिक देर न थी। विस्सी एक मलार गाता हुआ नहर के किनारे ही कुछ दूर पर पड़े एक पत्थर पर बैठ गया—शायद कोई नई मलार रचने की चिंता में। उसे नहर की लघु एवं रंजित लहरियाँ बड़ी भली प्रतीत हो रही थीं। वह एकटक उनकी ओर देख रहा था कि पुनिया ने आकर उसका ध्यान भंग कर दिया। वह उसका हाथ झकझोरते हुए बोली—"विस्सी, आज तुम इधर क्यों चले आए? देखो, मैं तुम्हें कब से ढूँढ़ रही हूँ। आज मैं तुम्हें बड़ी अच्छी बात सुनाऊँगी.....।"

"बस, यही बात तो तेरी मुझे ख़राब लगती है कि एक मुँह में पचास बात कहती चली जाती है।" विस्सी ने उसे बीच ही में टोक दिया।

पुनिया हँसती हुई अपना घाँघरा समेटकर उसी पत्थर के दूसरे कोने पर बैठ गई।

"अच्छा, अब अपनी अच्छी बात सुना।"

"सुनाऊँ?" पुनिया ने सिर झुकाकर उसकी तरफ़ ताकते हुए कहा।

"पूछती क्या है? सुना तो।"

"देख, आज अम्मा चौधराइन से कह रही थीं कि मेरी सगाई नौबरी में हो गई है। उसके यहाँ सात भैंसें हैं। द्वार पर चौपाल है। एक नौहरा है....." पुनिया वायु-वेग से कहती गई।

विस्सी मौन रहा। उसने और बातें सुनी ही नहीं। उसके मुख पर विषाद की एक हल्की रेखा दौड़ गई, परंतु संध्या के बढ़ते हुए अंधकार में उसे न देख सकी।

कुछ समय तक दोनों चुप बैठे रहे। अंत में विस्सी उठ खड़ा हुआ, और बोला—"पुनिया, घर नहीं चलेगी क्या?" और वे दोनों अंधकार से वेष्टित गाँव की ओर चलने लगे।

(३)

नियत समय पर पुनिया की बरात आई, और ठीक सायत से विवाह भी हो गया। दूल्हा भी देखने में अच्छा, हँसमुख और स्वस्थ निकला। इस विवाह में विस्सी ने बड़ी दौड़-धूप की। शीघ्र ही उसकी दूल्हा से गहरी छनने लगी। आख़िर तीसरे दिन बरात बिदा हुई। रोती हुई पुनिया को लेकर बहली * आगे-आगे चलने लगी। कुछ दूर तक गाँव के लोग बरात पहुँचाकर लौटने लगे, और बराती बहलियों तथा घोड़ों पर चढ़ने लगे। परंतु विस्सी दूल्हा से बातें करता हुआ आगे ही चलता गया, यहाँ तक कि दूसरे गाँव की सीमा आ गई।

* बैलगाड़ी की तरह का एक वाहन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अब मुझे लौटना चाहिए।" विस्सी बोला।

"हाँ, बातों-ही-बातों में बहुत दूर निकल आए," दूल्हाजी ने अनुमोदन करते हुए कहा—"लेकिन देखो, कभी नौबरी आना। इसी छठ को वहाँ दंगल होगा। ज़रूर आना।"

"मौक़ा लगा, तो ज़रूर आऊँगा। अच्छा, जैरामजी की।" कहकर विस्सी लौट पड़ा। दूल्हाजी भी उत्तर में 'जैरामजी' कहकर एक बहली पर चढ़ गए।

विस्सी ने कुछ दूर निकल आने पर पीछे की ओर मुँह फेरा, तो देखा, दूल्हाजी अब भी उसकी ओर देख रहे थे।

एक बार फिर जैरामजियों का आदान-प्रदान हुआ। विस्सी के नेत्रों में आँसू छलछला आए।

(४)

थोड़ा-सा कमा लाना और फिर चैन की काटना ही विस्सी के जीवन का एकमात्र उद्देश्य रह गया था। विवाह उसने नहीं किया। लोग हठ पकड़ते, तो हँसकर कह देता—"क्या दुनिया में सब ब्याह करने को ही पैदा होते हैं?" बस। गवैया तो वह आरंभ ही से था, अब और भी अधिक उन्नति कर ली। आस-पास के गाँवों में उसकी अच्छी धाक है। बड़ा ही सहृदय व्यक्ति है। दूसरों का हाथ बँटाने को सदैव तत्पर रहता है।

एक दिन कार्य-वश वह नौबरी गया, और पुनिया के घर भी पहुँचा। दूल्हाजी जी खोलकर उससे मिले, और पुनिया के पास भी ले गए। बातें करते-करते पुनिया पूछ बैठी—"विस्सी, तलैयावाली बातें क्या तुम्हें याद हैं?"

विस्सी की मुद्रा गंभीर हो गई। वह बोला—"पुनिया, वे बातें भी क्या भूल जाने की हैं?" विस्सी का मुख गंभीर होता देख पुनिया आगे कुछ न कह सकी।

प्रकाश सक्सेना

अशक्ति का कट्टर दुश्मन

आतंकनिग्रह गोलियाँ

शरीर में खरा जोश पैदा करके कैसा भी अशक्त पुरुष हो, उसे नौजवान बना देती हैं। ३२ गोलियों की डिब्बी की क़ीमत १)

आतंक-निग्रह-औषधालय
जामनगर, काठियावाड़

लखनऊ-एजेंट—मेसर्स इंदरचंद ऐंड कंपनी, चौक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

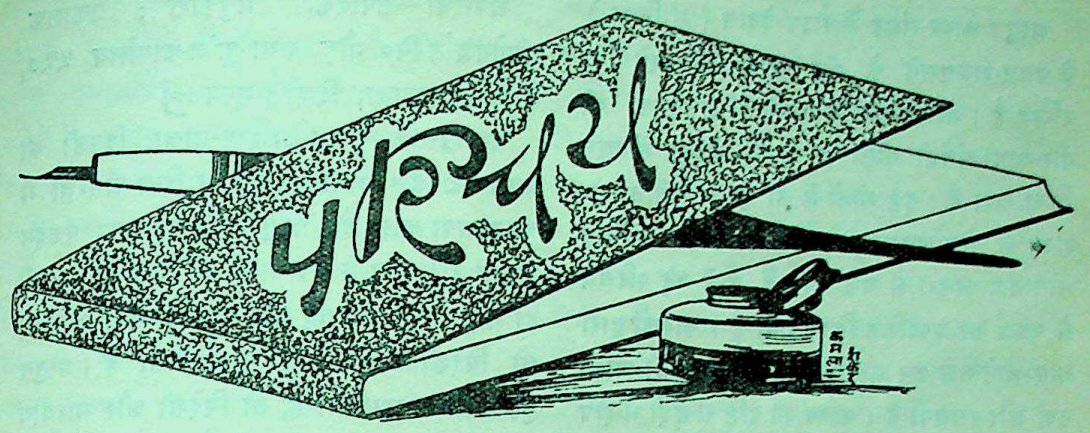

गुलदस्तए-नग़मात (पहला गुलदस्ता)—लेखक और प्रकाशक, प्रोफ़ेसर बड़े आग़ा साहब, भातखंडे-युनिवर्सिटी ऑफ़ इंडियन म्यूज़िक, लखनऊ ; पृष्ठ-संख्या २६२ ; मूल्य २)

प्रस्तुत पुस्तक में ५७ गीत स्वरलिपि-सहित दिए गए हैं। दादरे, ठुमरी और ग़ज़लों का आधिक्य है। प्रत्येक गीत के साथ पाँच-पाँच तानें भी दी गई हैं। पुस्तक के अंत में कुछ आलाप भी हैं। स्वरलिपि की शैली सरल है। गीतों के बोल कहीं-कहीं विकृत हैं।

× × ×

युद्ध और शांति—लेखक, संसार-प्रसिद्ध विचारक और सुधारक काउंट लियो टॉल्सटॉय ; अनुवादक, श्रीरुद्रनारायण अग्रवाल ; प्रकाशक, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग ; पृष्ठ-संख्या ६७२ ; मूल्य ४)

'युद्ध और शांति' टॉल्सटॉय की अमर रचना 'वार ऐंड पीस' का अनुवाद है। कथा ऐतिहासिक है। मूल-पुस्तक लगभग दो हज़ार पृष्ठ की होगी। अनुवादक ने उसे संक्षिप्त रूप देने में सावधानी की है। कथानक की शृंखला नहीं टूटने दी, और न कहीं लेखक के भावों में ही विकृति आने दी। श्रीप्रेमचंदजी तथा श्रीगणेशशंकरजी विद्यार्थी ने अनुवाद की मुक्त कंठ से प्रशंसा की है। निःसंदेह अनुवादक हिंदी-पाठकों को जगत् की एक प्रसिद्ध रचना पढ़ने को देने के लिये बधाई के पात्र हैं!

× × ×

देवी चौधरानी, कृष्णकांत का बिल और रजनी—मूल-लेखक, श्रीबंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय ; अनुवादक, श्रीसूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' ; प्रकाशक, इंडियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग ; पृष्ठ-संख्या क्रमशः २४१, १५४ और १०७ ; मूल्य पहली में छपा नहीं, दूसरी का ।।), तीसरी का ।)

बंकिम बाबू के उपर्युक्त तीनो उपन्यासों के लिये किसी प्रकार के परिचय की आवश्यकता नहीं। आपके उपन्यास अनेक प्रकाशकों ने प्रकाशित किए हैं। 'निराला'जी हिंदी और बँगला, दोनो भाषाओं के विद्वान् हैं। आपके द्वारा किए गए ये अनुवाद लेखक के अर्थ तक पहुँचाने के लिये सब प्रकार से सक्षम हुए हैं। भाषा प्रवाह-युक्त, सुंदर और स्पष्ट है।

'ग०'

× × ×

पवार-विजय—संपादक और प्रकाशक, श्रीयुत कृष्णाजी गंगाधर कवयाले, देवास सीनियर ; मूल्य ।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रस्तुत काव्य-संग्रह में राज्य देवास (सीनियर) के पवार-राजघराने के वीर पुरुषों की यशोगाथा वर्णित है। मालव-प्रांत में प्रचलित राजपुरुषों की वीर-गाथा-संबंधी गीतों का इसमें अच्छा संकलन किया गया है। इन गीतों में जो देवास (सीनियर)-राज्य के सेनासप्तसहस्री पवार-घराने से संबंधित गीत वंश-परंपरा से चले आते हैं, उन्हें बड़े परिश्रम से एकत्र कर प्रकाशित किया गया है। चारणों द्वारा गाए जानेवाले इन गीतों की भाषा बड़ी ही ओज-पूर्ण और रसमयी है। काव्य की दृष्टि से छंदों में दोष बहुत-से हैं, परंतु उनका तात्पर्य और उद्देश्य अच्छा है। आशा है, प्राचीन वीर-गाथाओं के समर्थक पाठकगण इस पुस्तक का अच्छा आदर करेंगे।

× × ×

मराठी-हिंदी-अनुवाद-शिक्षिका (भाग १-२)—लेखक, श्रीयुत वा० रा० सामंत और श्रीयुत त्र्यं० पु० थोरात ; प्रकाशक, ग्रंथ-भंडार लेडी हार्डिंज रोड, माटुंगा, बंबई १९ ; मूल्य क्रमशः ≡) और ।=)

लेखकों के कथनानुसार उपर्युक्त पुस्तकें मराठी-भाषा-भाषियों को अपनी राष्ट्र-भाषा हिंदी सीखने के लिये अत्यंत उपयोगी हैं। हिंदी सीखने की सरलतम पद्धति इनमें दी हुई है, और हिंदी-व्याकरण के प्रारंभिक सिद्धांत बड़ी ख़ूबी से समझाए गए हैं। पुस्तकों के अंत में मराठी-शब्दों के हिंदी-अर्थ और हिंदी-शब्दों के मराठी-अर्थ भी दिए हुए हैं। हिंदी-भाषा-भाषी भी इन पुस्तकों से मराठी सीखने में अच्छी सहायता पा सकते हैं। पुस्तकें उपयोगी हैं, इसमें संदेह नहीं। लेखकों ने थोड़े में बहुत कुछ समझाने का प्रयत्न किया है, और वे अपने प्रयत्न में पर्याप्त सफल हुए हैं। इस सीरीज़ में, आशा है, वे अधिक-से-अधिक पुस्तकें लिखकर प्रकाशित कराएँगे, जिनसे राष्ट्र-भाषा-प्रचार में सहायता मिल सके।

× × ×

अपराधी—संपादक, 'मधुकोश' ; प्रकाशक, श्रीगोवर्द्धन वि० गौड़, कथा कुंज-कार्यालय, ५५७, काश्मीरी दरवाज़ा, दिल्ली ; मूल्य ।=)

यह पुस्तक सुलभ-साहित्य-माला, दिल्ली की प्रथम भेंट है। अपराध-संबंधी साहित्य अँगरेज़ी में बहुत पाया जाता है, परंतु हिंदी में उसका एकदम अभाव है। जासूसी उपन्यासों की रुचि भी पुरानी हो गई, और उनमें वह मूल-तत्त्व भी नहीं मिलता, जो विदेशी कहानियों में पाया जाता है। प्रस्तुत पुस्तक में ५ कहानियाँ हैं, जो विदेशी और भारतीय भाषाओं से अनूदित की गई हैं। अनुवाद साधारणतया अच्छा है, परंतु पर्याप्त रोचक नहीं। संपादक का प्रथम प्रयास होने के कारण इसकी त्रुटियाँ क्षम्य हैं। पुस्तक में साधारण मनोरंजन की सामग्री है।

× × ×

ऑपरेशन—लेखक, श्रीरामकृष्णदेव गर्ग; प्रकाशक ; श्रीगोवर्द्धन वि० गौड़, कथा-कुंज-कार्यालय, काश्मीरी दरवाज़ा, दिल्ली ; मूल्य ।=)

श्रीयुत रामकृष्णदेव गर्ग की ५ कहानियों का संग्रह कथा-कुंज-कार्यालय, दिल्ली की सुलभ-साहित्य-माला के दूसरे पुष्प के रूप में प्रकाशित हुआ है। कहानियाँ सरस और भाव पूर्ण हैं। दो-तीन कहानियाँ अच्छी हैं, और उनमें लेखक की प्रतिभा पूर्ण रूप से विकसित होती दिखाई देती है। भाषा अच्छी है, और कल्पना की गति पर नियंत्रण रखकर लेखक-ने जन-रुचि का ध्यान भी रक्खा है। हमारी समझ में इस पुस्तक को पाठक पसंद करेंगे।

× × ×

देवता—लेखक, श्रीयुत राधाकृष्णप्रसाद ; प्रकाशक, पुस्तक-भंडार, लहेरिया सराय ; मूल्य ॥=)

बिहार-प्रांत के कहानी-लेखक श्रीयुत राधाकृष्णप्रसाद की १५ छोटी-छोटी आख्यायि-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काओं का यह संग्रह अभी थोड़े दिन हुए प्रकाशित हुआ है। कहानियों की शैली अच्छी है, और भाषा पर्याप्त परिमार्जित। भावना-प्रधान कहानियाँ लिखने में लेखक ने ऐतिहासिक आधार ग्रहण किया है, किंतु घटनाओं के निर्वाह में शीघ्रता कर देने से कहानियों का मूल-तत्त्व नष्ट हो गया है। पात्रों के चरित्र-चित्रण को पर्याप्त विकास नहीं मिल पाता। लेखक की कृति में यह एक बड़ा अभाव है, फिर भी संग्रह अच्छा बन पड़ा है। कहानी-कला के प्रेमी इसे अवश्य पढ़कर देखें।

× × ×

कानन—लेखक, श्रीजानकीवल्लभ शास्त्री; प्रकाशक, पुस्तक-भंडार, लहेरिया सराय; मूल्य १॥)

प्रस्तुत पुस्तक लेखक की ११ कहानियों का संग्रह है। साहित्य-जगत् में प्रायः लेखक की कृतियाँ पहले भी देखने में आ चुकी हैं। इस संग्रह में उनका सुंदर चयन प्रस्तुत किया गया है। पुस्तक में दो या तीन कहानियाँ ही ऐसी हैं, जिनमें लेखक की प्रतिभा और कला का परिचय मिलता है। शेष कहानियाँ एक उलझे हुए रूप में प्लाट के परिचय को स्पष्ट करने का प्रयत्न करती हैं, परंतु उनमें लेखक को सफलता नहीं मिली। यथार्थवाद के कुछ उदाहरण लेखक ने अच्छे दिए हैं, परंतु कहानी के विषय-निर्वाह में उसकी लेखनी उसकी भावनाओं का साथ नहीं दिया है। भाषा की अशुद्धियाँ भी बहुत खटकती हैं। काल्पनिक चित्रण में सजीवता लाने का प्रयत्न करता हुआ लेखक विषय-निर्वाह-कर्तव्य को सर्वथा भूल गया है। पुस्तक कहानी-प्रेमियों का अच्छा मनो रंजन कर सकती है। मूल्य कुछ अधिक ज्ञात होता है।

× × ×

पचास कहानियाँ—लेखक, श्रीयुत विनोदशंकर व्यास; प्रकाशक तथा विक्रेता' भारती-भंडार, लीडर प्रेस, प्रयाग; मूल्य २)

हिंदी के सुपरिचित कहानी-लेखक श्रीयुत विनोदशंकर व्यास की लिखी ५० कहानियों का यह संग्रह अभी हाल में प्रकाशित हुआ है। पुस्तक की अधिकांश कहानियाँ हिंदी की मासिक पत्रिकाओं में छप चुकी हैं। श्रीयुत व्यास की लेखन-शैली और कथानक-निर्माण-कला से प्रायः हिंदी के सभी पाठक परिचित होंगे। इस संग्रह में सभी के मनोरंजन की पर्याप्त सामग्री मिलेगी।

अरुण (बी० ए०)

× × ×

दी स्टुडेंट (मासिक पत्र—फ़रवरी-अंक)—संपादक, श्रीललितशंकरजी; प्रकाशक और मुद्रक, श्रीललितशंकरजी द्वारा भारत-प्रेस; २२४ अंधरदेव, जबलपुर; वार्षिक मूल्य २)

यह पत्र आल इंडिया स्टुडेंट्स फ़ेडरेशन की ओर से प्रकाशित हुआ है। इसकी छपाई-सफ़ाई अच्छी है। विद्यार्थियों के विचार-विनिमय के लिये इसमें उपयोगी लेख और स्तंभ हैं। पर एक बात की ओर, जो हमें खटकती है, हम प्रकाशक, संपादक आदि का ध्यान आकर्षित करते हैं। वह यह कि आल इंडिया स्टुडेंट्स फ़ेडरेशन भारतीय संस्था है, अतः उसका पत्र भी भारतीय भाषा हिंदी में निकलना चाहिए।

× × ×

भाभी के पत्र—लेखक, श्रीयुत 'व्यथित हृदय'; प्रकाशक, भार्गव-पुस्तकालय गायघाट, बनारस; मूल्य १)

प्रस्तुत पुस्तक प्रत्येक भारतीय स्त्री के लिये परमोपयोगी है। इसमें 'विवाह नारी के लिये क्यों आवश्यक है?', 'दांपत्य जीवन का आधार प्रेम और विश्वास', 'दांपत्य जीवन कैसे सफल हो सकता है?', 'वैवाहिक जीवन में कलह', 'पति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के प्रेम को प्राप्त करने की कला', 'पत्नी और पति के कुटुंबी', 'नारी-जीवन में सौंदर्य' इत्यादि नारी-जीवन के मुख्य-मुख्य पहलुओं की बड़ी मनोवैज्ञानिक व्याख्या की गई है। पुस्तक की शैली भी बड़ी आकर्षक है। भावों के साथ-साथ भाषा में उतार-चढ़ाव, गति तथा प्रवाह है। भावनाओं का विस्तार इतना व्यापक है कि पुस्तक पढ़ते समय यह नहीं पता चलता कि कोई भाभी-विशेष किसी ननँद को पत्र लिख रही है। ऐसा ज्ञात होता है, मानो भारतवर्ष की समस्त भाभियों के प्रतीक-स्वरूप हमारी ही भाभी हमें सस्नेह जीवन-यात्रा सफल बनाने का रास्ता दिखा रही है। पुस्तक के लेखक बधाई के पात्र हैं! प्रत्येक स्त्री को यह पुस्तक एक बार अवश्य पढ़ना चाहिए। नारी की मनोवैज्ञानिक समीक्षा समझने के लिये पुरुषों को भी इस पुस्तक के पारायण से वंचित न होना चाहिए।

सावित्री दुलारेलाल (एम्० ए०)

× × ×

तीन रत्न—लेखक, महात्मा गांधी; प्रकाशक, मैनेजर ग्रंथ-भंडार लेडी हार्डिंज रोड, माटुंगा, बंबई; पृष्ठ-संख्या ८७; मूल्य ॥=)

गुजराती में लिखी गई महात्माजी की निम्न-लिखित तीन कथाओं का इस पुस्तक में अनुवाद है—(१) मूर्खराज और उसके दो भाई, (२) मनुष्य कितनी ज़मीन का मालिक हो सकता है और (३) जीवन-डोरी। मूल-गुजराती में टॉल्सटॉय की कथाओं से अनुवाद किया गया है। कथाएँ शिक्षा-प्रद और सरस हैं। विदेशी नाम भारतीयों को उतने रुचिकर न होने से उनके स्थान पर हिंदुस्थानी नाम दिए गए हैं। पुस्तक पढ़ने योग्य है। मूल्य अधिक जान पड़ता है।

× × ×

प्रेम और जीवन—लेखक, श्रीदेवकीनंदन बंसल; प्रकाशक, मधुर-मंदिर, हाथरस (यू० पी०); पृष्ठ-संख्या २०४; मूल्य १।)

प्रस्तुत पुस्तक में प्रेम के भिन्न-भिन्न स्वरूपों का विवेचन किया गया है। अनेक देशी और विदेशी विद्वानों के गद्य और पद्य से स्थान-स्थान पर पुस्तक की शोभा बढ़ाई गई है। पहले प्यार से लेकर ईश्वर-प्रेम तक लेखक ने अपने विचार प्रकट किए हैं, जो स्पष्ट और मार्जित भाषा में हैं।

'च'

× × ×

बिहाग (कविता संग्रह)—लेखिका, श्रीमती सुमित्राकुमारी सिनहा; प्रकाशक, युग-मंदिर उन्नाव। छपाई-सफ़ाई अच्छी। मूल्य १।)

श्रीमती सुमित्राकुमारी सिनहा का शुभागमन हिंदी-काव्य-क्षेत्र में यद्यपि अभी कुछ ही वर्ष पूर्व हुआ है, तथापि अपनी भावमयी, मनोहर कविताओं द्वारा उन्होंने हिंदी-कविता-कानन में अपने लिये एक विशेष स्थान बना लिया है। गीति-काव्य में अभिनव भाव-धाराओं की सृष्टि करनेवाली श्रीमती महादेवी वर्मा के बाद जिन कवयित्रियों ने अपनी प्रखर प्रतिभा का आलोक हिंदी-काव्य को दिया है, निर्विवाद रूप से उनमें एक सुमित्राजी भी हैं।

इस समय उन्हीं सुमित्राजी की एक नवीन रचना मेरे सामने है। नाम है उसका 'बिहाग'। और, बिहाग एक राग-विशेष है, जो रात्रि के उत्तरार्द्ध में गाया जाता है। इसकी विशेषता है करुणरस का उद्रेक।

किंतु इस राग की वेदना निवृत्ति-मूलक न होकर प्रवृत्ति-मूलक होती है। जीवन के लिये आशा और उत्साह उससे फूटता है। तो कविता अगर बिहागमयी हो, तो समझना चाहिए, जीवन में वह गति का संदेश लेकर आई है। और, इसकी कविताएँ पढ़कर मुझे सहर्ष यह स्वीकार करना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पड़ता है कि सुमित्राजी अपने उद्देश्य में सफल हुई हैं। वेदना की पृष्ठ-भूमि लेकर इस उर्वर प्रतिभा ने देश-काल के अनुरूप अभिनव पदक्षेप किया है। इसकी पहली कविता है—'मिल गए तुम आज पथ पर।' यह आशा का गायन है। कल की कविता में मिलन दुष्कर था। आहें भरते ही जीवन बीतता था। किंतु यह पीयूष-वर्षिणी कवयित्री तो जीवन में उत्साह की दीप्ति लेकर आती है। यथा—

बहुत दिन पर आज पाया,
यह मिलन-क्षण क्या न लाया?
आज इस वेला बटोही
नयन को यों आर्द्र मत कर।

यह अश्रु-मोचन यहाँ हमें कितना आनंद-प्लावित कर देता है। तदनंतर—

करुण-स्मृतियाँ दूर जाओ,
रुदन का मत गीत गाओ।
ओ बटोही, आज आओ,
खुल मिलें हम-तुम हृदय-भर।

यह मिलन ही तो हम चाहते हैं। प्रियतम से मिलना ही तो वास्तव में अपने ध्येय को प्राप्त करना है। वह मिल गया, तो सफलता प्राप्त होने की आशा निश्चित हो जाती है। यद्यपि—

दूर मंज़िल, तिमिरमय मग,
भग्न उर है, पैर डगमग।

स्थिति स्पष्ट है। कल की कविता में इस स्थिति के प्रति आशा और गति का संदेश हमें कम मिलता था, किंतु सुमित्राजी कहती हैं—

प्यार का उन्माद पा कट जायगी यह राह सत्वर।
मिल गए तुम आज पथ पर।

इसी प्रकार 'शेष रहा अब क्या करने को', 'चाह सदा पागल क्यों होती', 'तुम्हें खोजती हूँ कण-कण में', 'इस सूनी कुटिया में आओ', 'मेरे प्यार, तनिक तो बोलो' आदि अतीव सुंदर कविताएँ इस संकलन में हैं। वेदना-विगलित स्थिति की कठोर अनुभूतियों को लेकर एक आत्मचिंतन भी है। यथा—

खेल ज्वाला से किया है।
इस अँधेरे देश में पल, पागलों के वेश में चल,
शून्य के ही साथ मैंने वेदना-विनिमय किया है।

मनोविश्लेषण, शब्द-योजना, गीत की स्वाभाविकता, अतीत की भाव-धाराओं को छूती स्पर्श-हीन दिशाओं तथा कथन की सजीवता की दृष्टि से देखें, तो सुमित्राजी हिंदी-कविता के लिये एक आशा हैं। उनकी दृष्टि जीवन के सुधार की ओर उतनी नहीं, जितनी उसके पुनर्निर्माण की ओर है। और, इस दृष्टि से श्रीसुभद्राकुमारी चौहान के बाद समग्र आनेवाली कवयित्रियों में सुमित्राजी अग्रणी हैं। विकास उनकी गति में है, सजीवता उनकी वाणी में। तारल्य उनकी भावना में है, और ज्वाला उनके विद्रोह में। मेरी धारणा है, वह दिन दूर नहीं, जब सुमित्राजी की वाणी हिंदी-कविता के पथ-निर्देश में अपना एकांत महत्त्व स्थापित करने में पूर्ण समर्थ होगी।

भगवतीप्रसाद वाजपेयी

मुफ़्त!

बड़े-बड़े डॉक्टरों से सम्मानित, बड़े-बड़े रईसों से प्रमाणित चिकित्सक से नामर्दी, प्रमेह, मधुमेह, शीघ्रपतन, धातु-रोग, गुप्त रोग, बाँझपन, प्रदर, ऋतुदोष, गर्भाशय-दोष, सभी रोग आदि का शर्तिया इलाज करावें। चाहें, तो १ हफ़्ता मुफ़्त इलाज कराकर चमत्कार देखें।

'कुशल-भवन', निस्बत रोड, लाहौर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस स्तंभ में हम हिंदी-प्रेमियों की जानकारी और सुबीते के लिये प्रतिमास नई-नई पुस्तकों के नाम देते हैं। पिछले महीने में निम्न-लिखित पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं—

(१) 'आत्मसंयम' (शिक्षा)—लेखक, श्रीजगपति चतुर्वेदी ; मूल्य १)

(२) 'गेरीबाल्डी' (जीवनी)—लेखक, उपर्युक्त ; मूल्य ।)

(३) 'सन्याट सेन' (,,)—लेखक, उपर्युक्त ; मूल्य ।)

(४) 'कमाल पादशाह' (,,)—लेखक, उपर्युक्त ; मूल्य ।)

(५) 'अब्दुलग़फ़्फ़ारख़ाँ' (,,)—लेखक, श्रीव्यथित हृदय ; मूल्य ।)

(६) 'सावरकर' (,,)—लेखक, श्रीगोविंदराव मराठे ; मूल्य ।)

(७) 'महात्मा ईसा' (,,)—लेखक, श्रीरामनारायण मिश्र ; मूल्य ।)

(८) 'डिवेलरा' (,,)—लेखक, श्रीजगपति चतुर्वेदी ; मूल्य ।)

(९) 'शनि की दशा' (उपन्यास)—लेखिका, श्रीकांचनमालादेवी ; मूल्य १॥)

(१०) 'पर्वोत्सव - विवरण' (धार्मिक)—लेखक, श्रीसुदर्शन ; मूल्य ॥=)

(११) 'सवारियों की कहानियाँ' (बाल-साहित्य)—लेखक, श्रीव्यथित हृदय ; मूल्य ॥=)

(१२) 'आज की दुनिया' (राजनीतिक)—लेखक, श्रीअमरनाथ विद्यालंकार ; मूल्य २॥)

(१३) 'भारतवर्ष का इतिहास' (इतिहास)—लेखक, श्रीभगवद्दत्त वाजपेयी बी० ए० ; मूल्य १५)

(१४) 'गद्य-चयनिका' (गल्प)—लेखक, श्रीकैलासनाथ भटनागर ; मूल्य १॥)

(१५) 'काव्य-मंदाकिनी' (साहित्य)—लेखक, श्रीसारथनाथजी ; मूल्य २)

(१६) 'दातुले की धार' (काव्य)—लेखक, श्रीश्यामाचरणजी पंत; मूल्य =)

(१७) 'जानते हो' (इतिहास)—लेखक, श्रीजगन्नाथप्रसाद मिश्र ; मूल्य ॥)

(१८) 'हिंदी-भाषा का विकास' (इतिहास)—लेखक, श्रीअयोध्यासिंह उपाध्याय ; मूल्य ५)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वास्थ्य-वर्द्धक भोजन का चुनाव सरलता से कर लें !

कैसे ?

'भोजन और स्वास्थ्य'

नामक हमारी नई प्रकाशित पुस्तक द्वारा !

"स्वास्थ्य-वर्द्धक भोजन का चुनाव साधारण जन भी, अपनी आय के अनुसार, कर सकते हैं। इसके लिये अमीर-ग़रीब का कोई प्रश्न नहीं।" मूल्य १), सजिल्द १॥)

लेखक—डॉ० सत्यप्रकाश डी० एस्-सी०, एफ़्० आई० ए० एस्०

तथा डॉ० संतप्रसाद टंडन एम्० एस्-सी०, डी० फ़िल्०

गंगा-ग्रंथागार, ३६, लाटूश रोड, लखनऊ

हिंदू-जाति के विश्व-मान्य सिद्धांतों का सजीव, सार-गर्भित चित्रण

संगठन, एकता और बंधुत्व का आदर्श उदाहरण !!

कला, कल्पना, मनोविज्ञान-नीति—

सब बातों का एक ही स्थान पर मिलकर आपके हृदय की कोमल भावनाओं को छू लेने का प्रयास कितना पवित्र—कितना सफल ! एक बार अवश्य पढ़िए—

* निःसहाय हिंदू *

सोचिए तो—आप स्वयं ही कह देंगे—

* यह सुंदर उपन्यास *

आपके मनोनुकूल पाठ्य सामग्री

का चयन है !

साहित्य के सुपरिचित कलाकार श्रीयुत राधाकृष्णदास

की ओज-भरी लेखनी का अनुपम चमत्कार, जिसका एक-एक शब्द आपके लिये अनमोल प्रमाणित होगा।

संपादक

रा० ब० बाबू श्यामसुंदर दास बी० ए०

'हिंदू' होकर आपने इस पुस्तक को न पढ़ा, तो आपने जाति के प्रति एक अन्याय किया !

अभी-अभी छपकर तैयार है !!

सजिल्द १), सादी ॥)

आज ही अपना ऑर्डर भेजिए।

गंगा-ग्रंथागार, ३६, लाटूश रोड, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या आपने अब तक नहीं देखा ?

हिंदी के सुप्रसिद्ध विद्वान्, नाटककार

श्रीयुत गोविंदवल्लभ पंत

का सबसे नवीन बौद्धकालीन नाटक

अंतःपुर का छिद्र

[इतिहास के पृष्ठों का रोमांचकारी छाया-चित्र]

अभी-अभी प्रकाशित हुआ है।

कौशांबी के राजमहल में होनेवाली प्रणय-लीला, महाराज उदयन की प्रेम-कथा का दुःखद प्रसंग, अधिकार-लिप्सा का रोमांचकारी दृश्य। एक सार-गर्भित कथानक ! भगवान् बुद्ध के समय का इतिहास !!

स्टेज पर भी खेला जा सकता है !!!

गंगा पुस्तकमाला कार्यालय लखनऊ

सजिल्द ॥) सादी ।=)

जरा मेरी भी तो सुन लीजिए !

आपकी पुस्तकों की सूची अधूरी न रह जाय !!

एक बात ऐसी है—ध्यान रखिए !!!

बिहारी-सुधा

[लेखक, 'मिश्रबंधु']

महाकवि बिहारीलाल के २७० सर्वश्रेष्ठ दोहों का अर्थ-सहित सुंदर संग्रह

आपकी घरेलू लाइब्रेरी व पुस्तकालयों की शोभा बढ़ाने-योग्य अनुपम

काव्य-ग्रंथ

सजिल्द ॥) सादी ।=)

गंगा-ग्रंथागार, ३६, लाटूश रोड, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसा दुःखद प्रसंग गृहस्थी में लाने की ज़िम्मेदारी पुरुषों पर है !

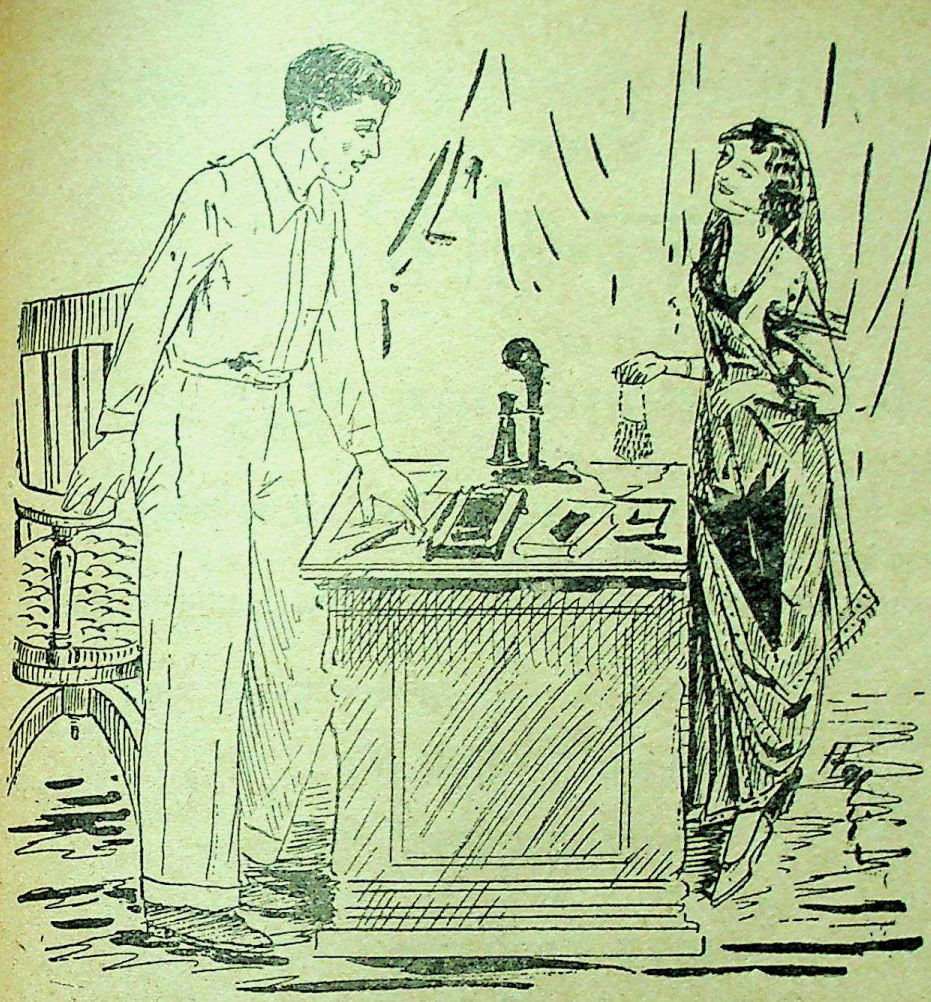

आपकी गृहणी का स्वास्थ्य क्या आपके ध्यान देने का विषय नहीं ? अस्वस्थ ललनाएँ घर की अशांति और चिंता का कारण बनती हैं ! दांपत्य जीवन की **विषमता** का अपराध किसका है ? पति-पत्नी का मनोमालिन्य तलाक़ झगड़ा विरोध का कारण बनता है !

अब भी सावधान हो जाइए गृहस्थी की रक्षा के लिये !

स्त्री-सौंदर्य और स्वास्थ्य

लेखक, श्रीयुत बुद्धिसागर वर्मा बी० ए०, एल्० टी०

इस बार बड़े दिन का उपहार ! नए वर्ष की भेंट !!

अपनी ललनाओं के हाथों में शीघ्र-से-शीघ्र पहुँचाने का प्रयत्न अवश्य करें !

अभी-अभी छपकर तैयार हुई है !

प्रत्येक महिला को इसे पढ़ना चाहिए !

शरीर के अंगों का बनाव-शृंगार, सौंदर्य-रक्षा के नियम, व्यायाम, रोग तथा उनकी सरल चिकित्सा, देशी और विदेशी सौंदर्य बढ़ाने के साधनों की उपयोगिता सरल भाषा में वर्णित है !

सचित्र, सुपाठ्य, सुंदर, स्थायी साहित्य !

सजिल्द २॥)] [सादी २)

मिलने का पता—गंगा-ग्रंथागार, ३६, लाटूश रोड, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हँसिए ! हँसाइए !! मुस्किराइए !!!

हिंदी-साहित्य का एकमात्र हास्य-रस-प्रधान

मासिक पत्र

'नोक-झोंक'

का

विशेषांक आगामी मार्च १९४१

में

बड़ी सज-धज से निकल रहा है। प्रायः १०० पृष्ठ तथा बीसियों चित्रों से सुसज्जित, मजेदार विशेषांक का मूल्य केवल ।=) ; ग्राहक बननेवालों को मुफ्त।

नमूने के लिये ढाई आने का टिकट भेजना जरूरी है। एजेंट तथा विज्ञापनदाता शीघ्रता करें!

मैनेजर 'नोक-झोंक', आगरा

पुस्तकालयों और हिंदी-प्रेमियों को !

शुभ सूचना

❀ सचित्र, साप्ताहिक ❀

लोकमत 卐 लोकमान्य

(नागपुर से प्रति रविवार को प्रकाशित) वार्षिक मूल्य ३॥)

(कलकत्ते से प्रति गुरुवार को प्रकाशित) वार्षिक मूल्य ३॥)

केवल ५) रु० में एक साल तक दिए जायँगे

ये दोनो पत्र साप्ताहिक के रूप में अर्द्ध-साप्ताहिक की भाँति आपका मनोरंजन करेंगे।

—: मनीऑर्डर भेजकर शीघ्र ग्राहक बनें :—

लोकमत-कार्यालय अथवा **लोकमान्य-कार्यालय**

नागपुर सिटी, १६०, हैरिसन रोड, कलकत्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

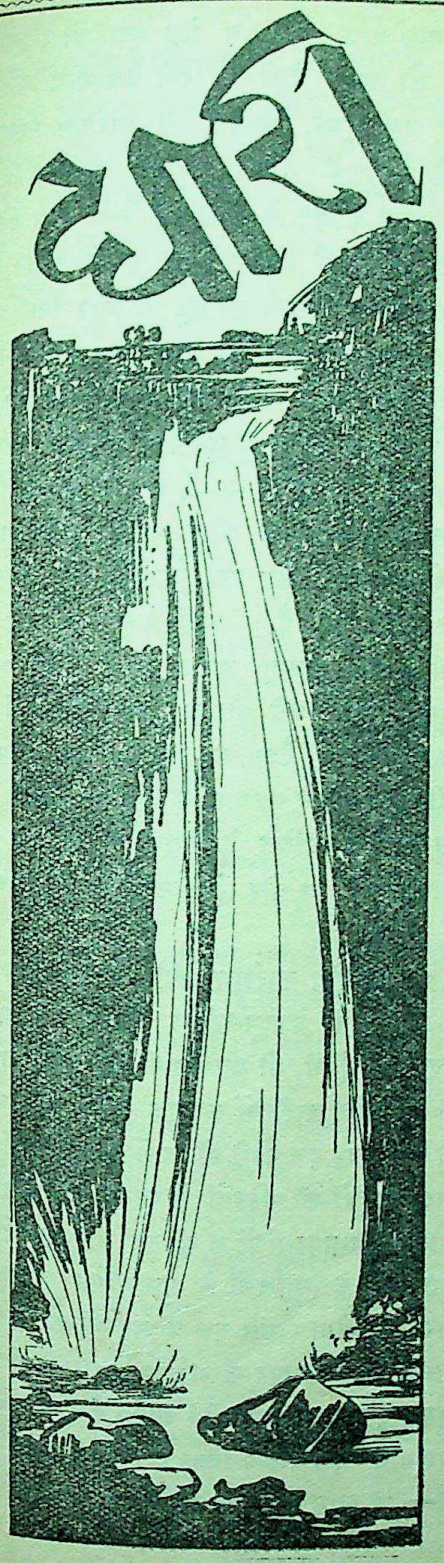

१. किसान-संकट

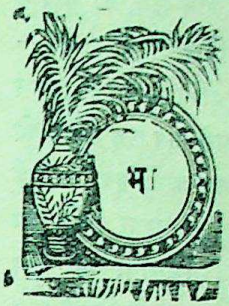

भारत-सरकार के वाणिज्य-सदस्य सर रमास्वामी मुदालियर ने केंद्रीय एसेंबली में भाषण देते हुए कहा—"कृषि तथा उद्योग-धंधों की उन्नति में उचित सामंजस्य करने की आवश्यकता है।" इस मत से हम बिलकुल सहमत हैं; बल्कि वाणिज्य-सदस्य के इन समयोपयोगी, महत्त्व-पूर्ण विचारों के लिये उनकी सराहना करते हैं। पर सवाल यह है कि यह सामंजस्य किस तरह पैदा हो? आजकल उद्योग-धंधों की उन्नति हो रही है, इससे इनकार नहीं किया जा सकता। भले ही सरकार मजबूर होकर या युद्ध-संबंधी सामान की आवश्यकता आ जाने से भारत के उद्योगीकरण की ओर झुकी हो, पर जैसी प्रगति इस दिशा में आजकल हो रही है, उससे भारत अगली दशाब्दी में बहुत आगे बढ़ जायगा। अब तक तो ऐसा होता रहा कि अन्य उद्योग-प्रधान देशों के लिये भारत कच्चे माल का क्षेत्र रहा, साथ ही वह बाहर के तैयार किए हुए माल की खपत का मुख्य बाज़ार बना रहा। जब से यहाँ विदेशी पूँजी का आयात बढ़ा, तब से उद्योग-धंधों की उन्नति होते हुए भी उसका लाभ विदेशी पूँजीपति ही उठाते रहे। यहाँ कच्चे माल की जितनी पैदावार है, उसका एक अंश यहाँ के कारख़ानों में खप सकता है। शेष के लिये अन्य देशों के उद्योग-केंद्रों की आवश्यकता होती है। विदेशी पूँजी ने यहाँ केवल यहाँ के कच्चे माल से ही काम नहीं लिया, बल्कि और देशों का माल ख़रीदकर यहाँ का माल सस्ता कर दिया। भारत की रुई की जगह अमेरिका की रुई का भी यहाँ कपड़ा तैयार होता है। जब भारत में यहाँ के कच्चे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माल की खपत होने में कठिनाइयाँ हैं, तब विदेशों में यहाँ का कच्चा माल कम जाने लगे, तो यहाँ के लोगों की दशा—विशेष कर किसानों की हालत—और भी ख़राब हो जायगी। दुर्भाग्य से भारत-सरकार की कर-नीति भी ऐसी है, जिससे अब तक भारत को हानि ही उठानी पड़ती है। जब आस्ट्रेलिया का गेहूँ भारत में आकर यहाँ के गेहूँ से सस्ता बिके, तब यहाँ के गेहूँ पैदा करनेवाले किसानों की क्या हालत होगी? उन्हें अपनी पैदावार के कितने दाम मिलेंगे? इस तरह के संकट का सामना यहाँ के किसानों को बार-बार करना पड़ता है। आजकल यह अवस्था और भी दुःखदायी हो गई है, इसमें संदेह नहीं। उद्योग-धंधों की उन्नति से अब भारतीय कच्चे माल की पहले से अधिक खपत होने लगी है। फिर भी यहाँ का व्यवसाय अभी इतना उन्नत तो हुआ नहीं कि यहाँ के कुल और सभी तरह के कच्चे माल का उद्योगीकरण कर सके। ऐसा संभव भी नहीं। कृषि-जन्य पदार्थों में हम चीनी की अवस्था को ही लेते हैं। इस व्यवसाय की भारत में ख़ूब उन्नति हुई। फिर भी यू० पी० और बिहार के ईख पैदा करनेवाले किसानों की इन दिनों की दुर्दशा का ठिकाना नहीं! उन्हें पैदावार के दाम नहीं मिल रहे हैं। ऐसी हालत आजकल प्रायः सभी कृषि-जन्य पदार्थों की है। बाज़ार की और चीज़ों के भाव जहाँ आजकल बढ़ रहे हैं, वहाँ खेती की पैदावार के दाम और घट रहे हैं। किसान जब बाज़ार में चीज़ें ख़रीदने जाता है, तो उनकी क़ीमत पहले से अधिक चुकानी पड़ती है, पर जब अपना पैदा किया हुआ अन्न मंडी में बेचने पहुँचता है, तो वहाँ उसे अपनी पैदावार के दाम और भी कम मिलते हैं।

ऐसा क्यों हो रहा है? पिछली लड़ाई के वक़्त बात इसके सर्वथा विपरीत थी। तब और चीज़ों के साथ नाज का भाव तेज़ हुआ था। इस बार एक तो दूसरे देशों के लिये जल-मार्ग निरापद् नहीं रहा, दूसरे, सरकार ने भारतीय माल का दूसरे देशों में भेजना बंद कर दिया। भले ही यह भारत के हित के नाम पर किया गया हो, पर भारत के देहाती उत्पादकों को इससे अपार हानि उठानी पड़ी। बंगाल की जूट का बड़ा निर्यात रुक गया, जिसका नतीजा यह हुआ कि अब अमेरिका आदि देश अपने यहाँ जूट पैदा करने लगे हैं। इसका असर बंगाल के जूट पैदा करनेवाले किसानों पर पड़ेगा। उनकी पैदावार के दाम घट गए हैं। यही हाल अन्य खेतों की चीज़ों का है। नाज का भाव दिनोंदिन सस्ता हो रहा है। किसानों पर मुसीबत आई हुई है। उन्हें बाहर का जो कुछ देना है, वह बदस्तूर क़ायम रहेगा। फिर भारत-सरकार उद्योग-धंधे और कृषि की पैदावार में किस प्रकार सामंजस्य पैदा कर रही है, यह समझ में नहीं आता। यदि सरकार ने निकट भविष्य में ही इस दिशा में उचित कार्यवाही न की, तो भारत के किसानों पर घोर संकट उपस्थित हो जायगा।

× × ×

२. भारतीय कारीगर और बेविन-योजना

इँगलैंड के मज़दूर-सचिव श्रीबेविन ने, नवंबर, सन् १९४० ई०में, जो घोषणा की थी, उसके अनुसार ५० भारतीय कारीगरों का एक दल इँगलैंड रवाना हो गया। यह दल पहले होटल में ठहरेगा, और उसके बाद मज़दूरों की बस्तियों में रहना आरंभ करेगा। साथ ही मज़दूर-संघों के संगठन और मज़दूरों तथा कारख़ानों के मालिकों के पारस्परिक व्यवहार का अध्ययन करेगा। उस दल के सदस्यों को बिदा देते समय भारत-सरकार के मज़दूर-विभाग के मंत्री श्री-एम्० एस्० ए० हैदरी सी० आई० ई०, आई० सी० एस्० ने एक वक्तव्य दिया है। उसमें उन्होंने कहा है—"ये लोग भारतीय औद्योगिक मज़दूरों के प्रति-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निधि हैं, और मुझे विश्वास है, इँगलैंड में रहकर वे भारतीय मज़दूर-वर्ग का यश बढ़ाएँगे...यह घटना न केवल इँगलैंड जानेवाले भारतीय कारीगरों के लिये ही तात्कालिक महत्त्व रखती है, बल्कि शांति स्थापन के बाद भारतीय उद्योग-धंधों के लिये भी इसका बड़ा महत्त्व है।"

सरकार और उसके हितैषी भारतीय, दोनो को युद्ध के कारण वे काम करने पड़ रहे हैं, जिन्हें करने के लिये वे कभी तैयार न होते थे। जिस भावना से यह दल इँगलैंड गया है, वह क्या इस युद्ध के समय फलित हो सकती है? हमें पता है, मि० विल्मी जब अमेरिका से राजनीतिक स्थिति का अध्ययन करने इँगलैंड गए थे, तब शरण-स्थलों में मानवता की दुर्दशा देखकर उनकी आँखों से आँसुओं की धारा बह निकली थी, और वह क्या भावना लेकर लौटे थे, यह पाठक जानते होंगे। युद्ध-कालीन संकट के दिनों में अध्ययन की बात करना हमारी समझ में भूल है। यदि यह सच भी हो, तो क्या अब भारतीय इस क़ाबिल हैं कि वे ब्रिटिश औद्योगिक समस्याओं का अध्ययन कर सकें? जो कुछ भी हो, हमारी राय में यह दल केवल युद्ध-कालीन संकट में अपनी सहायता के लिये ही सरकार को भेजना पड़ा है। बिदाई के समय के मीठे शब्दों को कोई भी उस रूप में नहीं ग्रहण कर सकता।

× × ×

३. ढाका का हिंदू-मुसलिम-दंगा

होली के दिनों में देश में कई जगह सांप्रदायिक दंगे हो गए। इन दंगों में ढाका का दंगा भयंकर रूप धारण कर गया। दर्जनों आदमियों की मौतें हुईं, और सैकड़ों घायल हुए। भारत में, ख़ासकर इस बीसवीं सदी के गत वर्षों में, जैसी हालत रही है, उसमें इस प्रकार के सांप्रदायिक झगड़े हो जाना हमारे लिये न विशेष कौतूहल ही प्रकट करते हैं, न उनसे हमें कुछ आश्चर्य और विशेष चिंता ही होती है। यों कहना चाहिए कि आजकल के भारतीय वातावरण में हम इस तरह के झगड़ों के लिये आदी हो गए हैं। फिर भी इन बातों से सांप्रदायिक झगड़ों का असर तो कम नहीं होता। यह ख़ून-फ़साद की बीमारी बुरी है, जो राष्ट्र-शरीर में कहीं भी, कभी फूट निकलती है। इसका इलाज करना ही होगा। रोग भयंकर होते हुए भी असाध्य नहीं, ऐसा हम मानते हैं। हमारा विश्वास है, जिन कारणों से यह रोग बढ़ता है, उन्हें नष्ट किए बिना इसकी चिकित्सा करने से लाभ न होगा। जब तक सांप्रदायिक नेताओं के दूषित वातावरण में जनता को साँस लेने का अवसर मिलता रहेगा, तब तक रोग घटने के बजाय और बढ़ेगा। पर यह सांप्रदायिक नेतृत्व किस प्रकार ख़त्म हो? इसे प्रोत्साहन मिलता है एक तीसरी शक्ति से, जिसका स्वार्थ इस बात से सिद्ध होता है कि भारत में सांप्रदायिक तनातनी बनी रहे, और हम इस देश के साधनों से आर्थिक लाभ उठाते रहें। मुसलिम-लीग-जैसी कट्टर संप्रदायवादी संस्था को कांग्रेस के मुक़ाबिले में खड़ा कर देना, और कांग्रेस की माँग इसलिये मंज़ूर न करना कि मुसलिम-लीग उससे नाराज़ होगी, क्या अर्थ रखता है? क्या सरकार देश में एक ग़ैर-सांप्रदायिक राष्ट्रीय संस्था की आवश्यकता महसूस नहीं करती? जब सरकार की ओर से यह घोषणा की जाती है कि वह भारत की सभी जातियों के हित सुरक्षित रखना चाहती है, और सभी संप्रदायों के मेल से भारत को नया शासन-विधान देने के लिये तैयार है, तब क्या इसका अर्थ यह नहीं कि ऐसा समझौता राष्ट्रीय आधार पर ही हो सकता है, और ऐसी संस्था देश में कोई है, तो कांग्रेस ही है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम यह समझते थे कि मौलाना फ़ज़लुलहक़ की बहकी हुई और बेहूदा बातें एक दिन रंग लाएँगी, और ढाका में उसका पहला दृश्य दिखाई दे गया। क्या मियाँ हक़ इस घटना से कुछ सबक़ हासिल करेंगे ? उनसे यह उम्मीद की जा सकती है, पर आजकल वह जिस गुरू के चेले हैं, वह कुछ करने दे, तब न ? जब तक मौलाना हक़ मि० जिन्ना का पल्ला थामे हैं, तब तक वह इस योग्य नहीं कि एक प्रांत के शासक रह सकें। बंगाल के हिंदू पहले ही अपना यह मत प्रकट कर चुके हैं।

× × ×

४. स्वर्गीय सेठ श्रीनिवासजी

सेठ श्रीनिवासजी श्रीवेंकटेश्वर-प्रेस, बंबई के मालिक सेठ रंगनाथजी के कनिष्ठ सहोदर थे। आप अपने भाई के साथ खेमराज श्रीकृष्णदास-नामक प्रसिद्ध फ़र्म के स्वत्वाधिकारी थे। आपके पिता श्रीखेमराज बंबई के प्रसिद्ध व्यक्तियों में थे, जिन्होंने अपने अध्यवसाय और अटूट परिश्रम से अच्छी धन-राशि और ख्याति प्राप्त की थी। स्वर्गीय सेठ श्रीनिवासजी ने अपने पिता के समान ही धनोपार्जन के साथ-साथ धर्म-सेवा, लोक-सेवा, जाति-सेवा एवं विद्या-प्रचार में पूरी निष्ठा के साथ तन-मन-धन से सहयोग देकर देश में बड़ा नाम पैदा किया।

स्वर्गीय सेठ श्रीनिवासजी का जन्म संवत् १९४० वि० पौष-मास की कृष्णपक्षीया द्वितीया को हुआ था। आपका लालन-पालन बड़े लाड़-प्यार से हुआ, और आरंभ से ही आपके पिता श्रीखेमराज ने आपको धार्मिक शिक्षा प्रदान की। आपके संस्कार वैष्णव-विधि के अनुसार ही हुए, और यही कारण था कि वर्तमान सामाजिक और धार्मिक परिस्थिति में भी आपके विचार प्राचीन सांस्कृतिक मर्यादा के अनुकूल ही रहे। अपने पिताजी के साथ आपने बड़े-बड़े तीर्थों की यात्रा की, तथा दान-धर्म के कार्यों में उनका हाथ बटाया। व्यक्तिगत रूप से धर्म-कर्म करने के अतिरिक्त स्वर्गीय सेठजी ने सार्वजनिक धार्मिक कार्यों में भी, सन् १९१९ से, अपना सहयोग दिया। वैष्णव-सम्मेलन आपके प्रबंध में पूर्ण रूप से सफल हुआ। बंबई के फनसवाड़ी-मुहल्ले में श्रीवेंकटेश-मंदिर की स्थापना भी आप ही के प्रयत्न से हुई थी। भारत के प्रायः सभी बड़े-बड़े सनातनधर्मी विद्वानों से आपका अच्छा परिचय था, और आप उनसे अपना संबंध अटूट रूप से बनाए रखते थे। गत २० वर्षों में अनेक सामाजिक और राजनीतिक आंदोलन हुए, और अनेकों अवसर उपस्थित हुए, जब सेठ श्री-निवासजी बड़ी सरलता से आगे बढ़कर, उनका नेतृत्व ग्रहण करके सारे भारत में नाम पैदा कर सकते थे। परंतु आपका सबसे बड़ा गुण यह था कि सबसे पहले आप उन आंदोलनों के मूल-तत्त्व को धार्मिक कसौटी पर परख लिया करते थे, और जो खरा उतरता, उसी में अपना सहयोग दिया करते तथा अनुपयुक्त मामलों में कोई दिलचस्पी न लेते।

स्वर्गीय सेठजी की सामाजिक सेवाएँ भी विभिन्न रूप में जनता के सामने आईं। आप प्राचीन प्रणाली को सुसंस्कृत रूप में व्यवहार में आते देखना चाहते थे। समाज के पुराने रूप में जो दोष आ गए थे, उनका सुधार होना ही आप सच्चा सुधार मानते थे, परंतु प्राचीन, परंपरागत मर्यादा नष्ट करके उसके स्थान पर अन्य मर्यादा की प्रतिष्ठा एवं प्रचलन आपको मान्य न था। आप अपनी जाति के लोगों के प्रति बड़ी उदारता और स्नेह का भाव रखते थे। आपके वैभव-काल में कोई भी अग्रवाल व्यक्ति आपके पास आकर निराश न जाता था। जहाँ तक आपसे बनता, उसकी सहायता अवश्य करते। सन् १९१९ में सेठ जमनालाल बज़ाज़ तथा अन्य लोगों के प्रयत्न से वर्धा में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अखिल भारतीय मारवाड़ी-अग्रवाल-महासभा का अधिवेशन हुआ, जिसके सभापति आप ही बनाए गए थे। समाज और जाति-सेवा के लिये आपने हज़ारों रुपए दान दिए। वृद्ध-विवाह, अनमेल-विवाह आदि कुरीतियाँ रोकने के लिये आपको कई बार मुक़दमा भी लड़ना पड़ा, परंतु आप सदैव इन सामाजिक व्याधियों के विरुद्ध अपनी आवाज़ उठाते रहे।

स्वर्गीय सेठ श्रीनिवासजी

शास्त्र और प्राचीन धर्म की मर्यादा का पूरा ध्यान रखकर ही स्वर्गीय सेठजी सुधार-कार्यों में अपना सहयोग प्रदान किया करते थे, किंतु उग्र विचारवाले व्यक्तियों की प्रगति आपको पसंद न थी। आधुनिकता और नवीनता की उच्छृंखल धारा में बहना आपके सिद्धांतों के अनुकूल न था। सनातन-धर्मावलंबी समाज में आपने बड़ा ऊँचा स्थान प्राप्त किया। अपने स्वर्गीय पिताजी के प्रयत्न से संस्थापित मारवाड़ी-विद्यालय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को आपने जीवन-पर्यंत सहायता दी, तथा उसका प्रबंध एवं निरीक्षण सुचारु रूप से करते रहे। आपके उद्योग से विद्यालय ने बड़ी उन्नति की, और वह शिक्षा की एक आदर्श संस्था कहलाने योग्य बन गया।

स्वर्गीय सेठजी स्वजाति-हितैषी, विद्या-प्रेमी, उदार, परमधार्मिक, ईश्वर-निष्ठा से भरपूर, साधु-स्वभाव व्यक्ति थे। घोर संकट-काल में आप अपने इष्टदेव भगवान् श्रीवेंकटेश्वर पर अनंत विश्वास रखते थे। गो-ब्राह्मणों का आपने सदैव आदर किया। आपका विश्वास था, ब्राह्मणों के आशीर्वाद से ही आपका अभ्युदय होगा, और इसी भाव को आपने अंत समय तक मन में स्थिर रक्खा।

स्वर्गीय सेठजी के गत वर्ष अकाल निधन से हिंदू-जाति और धर्म की बहुत बड़ी हानि हुई। देश में जो कीर्ति और यश उन्होंने प्राप्त किया, वह प्रत्येक के लिये संभव नहीं। उनकी सेवाएँ चिरस्मरणीय हैं। आपके असंख्य मित्रों और परिचित व्यक्तियों ने भारतवर्ष के कोने-कोने से आपकी मृत्यु पर शोक प्रकट किया। ईश्वर उनके पुत्र को चिरायु करें।

× × ×

५. भारत का जन-संहार

'जन-संहार'-शब्द से लोग चौंक पड़ते हैं। आजकल युद्ध की ही सर्वत्र चर्चा है, इसलिये जन-संहार का अर्थ भी लोग युद्ध में होनेवाला जन-संहार समझते हैं। भारत के जन-संहार की चर्चा लोगों को आश्चर्य में डाल सकती है, क्योंकि यहाँ युद्ध तो हो नहीं रहा है। लेकिन हमारा मतलब युद्ध के जन-संहार से नहीं। युद्ध में जन-शक्ति का जितना नाश होता है, उससे अधिक हमारे देश में प्रतिवर्ष रोगों के कारण होता है। भारत के हेल्थ-कमिश्नर की नई रिपोर्ट में बतलाया गया है कि ब्रिटिश इंडिया की २९ करोड़ की आबादी में से ६५ लाख आदमी प्रतिवर्ष मर जाते हैं। इतना जन-संहार किस लड़ाई में हुआ है? लड़ाइयाँ हमेशा नहीं होतीं। कभी-कभी लोगों को नर-संहार का दृश्य देखना पड़ता है। पर भारत का यह नर-संहार मुद्दत से जारी है। आजकल सरकार शत्रु के आक्रमण से लोगों की रक्षा करने के लिये विशेष चिंतित है। इसके लिये काफ़ी रुपया ख़र्च किया जा रहा है। पर अब तक रोग-शत्रु की रक्षा के लिये उसने क्या किया?

इस देश में तीस लाख आदमी हर साल मलेरिया के शिकार हो जाते हैं। कुल आबादी के तिहाई लोग इस रोग से पीड़ित रहते हैं। इनके बचाव का सरकार की ओर से क्या प्रबंध किया गया है। केवल कुनेन का हिसाब लगाया जाय, तो भारत को साल-भर के लिये बारह लाख से अधिक पौंड कुनेन चाहिए, लेकिन वह भी केवल दो लाख पौंड प्राप्त होती है। एक पौंड कुनेन तैयार करने में सरकार का छ रुपया ख़र्च पड़ता है। इस तरह मलेरिया से रक्षा के लिये सरकार कुल बारह लाख रुपए साल-भर में ख़र्च करती है। और, आजकल युद्ध में सरकार का पंद्रह करोड़ रुपए प्रतिदिन का ख़र्च है।

हैज़ा, प्लेग और चेचक अन्य भयंकर बीमारियाँ हैं। इनमें से प्रत्येक की भेंट पाँच हज़ार से तीन लाख तक आदमी प्रतिवर्ष होते हैं। एक करोड़ यहाँ अंधों की तादाद है। देश में जितने भी सरकारी औषधालय या चिकित्सालय हैं, उनका औसत साठ हज़ार आदमियों पीछे एक औषधालय का पड़ता है। यह है यहाँ की चिकित्सा की दशा। १९३७ में ब्रिटेन ने अपने यहाँ आरोग्य और स्वास्थ्य पर २८ करोड़ ६५ लाख रुपया ख़र्च किया, भारत में कुल साढ़े पाँच करोड़ रुपया इस संबंध में ख़र्च हुआ। एक अँगरेज़ और एक भारतीय के जीवन में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरकार की दृष्टि में यह फ़र्क़ है कि इँगलैंड के एक अँगरेज़ के स्वास्थ्य पर सरकार का व्यय जहाँ छ रुपए है, वहाँ एक भारतीय के स्वास्थ्य पर होने-वाला व्यय केवल तीन आने है। अर्थात् एक भारतीय के मुक़ाबिले में एक अँगरेज़ के जीवन का मूल्य बत्तीसगुना समझा जाता है। इसका नतीजा यह है कि एक अँगरेज़ की औसत आयु जहाँ ५५-५६ वर्ष है, वहाँ एक भारतीय की आयु का औसत (सन् १९११ में) केवल २३ वर्ष है। भारत में प्रतिवर्ष एक साल की अवस्था के एक हज़ार शिशुओं में से १६४ शिशु मर जाते हैं, जब कि इँगलैंड में प्रति हज़ार साठ शिशु मरने का औसत है।

भारत के इस भयंकर संहार की सबसे बड़ी ज़िम्मेदारी सरकार पर है। भारतीय आय का पचास प्रतिशत सरकार सेना पर ख़र्च कर देती है। उस

सफल जीवन का महामंत्र

बाँझ स्त्रियाँ

१०० में ९९ स्त्रियाँ 'कनसैप्टो' के सेवन से पुत्र उत्पन्न कर चुकी हैं। सब डॉक्टरों का कहना है कि बाँझपन दूर करने के लिये इससे बढ़कर अन्य कोई ओषधि नहीं। केवल १ शीशी सेवन करके ही ख़ाली गोद में पुत्र खिलाएँ। क़ीमत ५), डाक-ख़र्च ॥)

हिस्टीरिया का अचूक इलाज

इसके सेवन से हिस्टीरिया के दौरे, रोगी का उछलना, कूदना, चिल्लाना, रोना, पागलपन, बेहोशी आदि एक सप्ताह में ही दूर हो जाते हैं। क़ीमत २), डाक-ख़र्च ।।)

विद्युत्-तैल

इसमें बिजली-जैसी ताक़त भरी हुई है। यह तत्कालीन ज़रूरत की चीज़ है। ज़रूरत के ख़ास समय से थोड़ी देर पहले इस्तेमाल करने से अर्थात् एक ही बार सेवन करने से गए-बीते नामर्द की नपुंसकता भी जाती रहती है, और ४ मिनट में ही तरुण युवक के समान मर्द बन जाता है। शिथिल नसों की कमज़ोरी को दूर करके अपना गुण दिखा देना यह इसका तत्कालीन चमत्कार है। वास्तव में वृद्ध पुरुषों का अचूक शस्त्र और नव-विवाहित नामर्दों का आधार है। जीवन का वसंत और प्रकृतिदेवी की अमूल्य भेंट है। क़ीमत २), डाक-ख़र्च ॥)

अमर सुंदरी

रक्त-प्रदर, श्वेत-प्रदर, गर्भाशय की पीड़ा, गर्भ न रहना, गर्भ का गिर जाना, मासिक धर्म का अनियमित होना, दर्द या कष्ट के साथ होना, सिर-दर्द, अशक्ति, हल्का ज्वर, जी घबड़ाना, सोम-रोग, रक्त की कमी आदि रोगों के लिये एकमात्र अव्यर्थ महौषधि है। इसके सेवन से शरीर सुंदर, हृष्ट-पुष्ट और फुर्तीला हो जाता है। क़ीमत ॥।=), डाक-ख़र्च ॥)

गर्भ-रोक

निर्धनता व स्त्री की बीमारी के कारण और संतान पैदा न करनी हो, तो इस दवा का सेवन करें। इससे स्त्री के गर्भ नहीं रहता, और सांसारिक सुख को बंद करने की ज़रूरत भी नहीं होती। सर्वथा हानि-रहित दवा है। क़ीमत २), डाक-ख़र्च ॥)

ब्रेस्टोन

ज्यों मोर अपने पाँवों को देखकर रो देता है, त्यों स्त्रियाँ भी अपने ढीले, गिरे तथा लटके स्तनों को देखकर निराश हो जाती हैं। यह ४५ वर्ष तक की स्त्रियों के लटके हुए ढीले स्तनों को फिर से षोडशीय नवयुवती के समान सुंदर, कठोर, गोल तथा छोटे बना देता है। क़ीमत केवल २।), डाक-ख़र्च ।।)

पता—रसायन-फ़ार्मेसी,
(सु) संगरिया (बीकानेर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेना को भारत की रक्षा के लिये लड़ने का कब मौक़ा आया ? इसके मुक़ाबिले रोगों से रक्षा करने के लिये सरकार भारतीय आय का केवल ढाई प्रतिशत व्यय करती है। यह कैसी विडंबना है !

× × ×

६. बहु-विवाह का विरोध

क़ानून की दृष्टि में पुरुष के एक से अधिक विवाह हो सकते हैं, पर स्त्री एक पति के होते दूसरा विवाह नहीं कर सकती। जिन जातियों में तलाक़ की प्रथा है, उनमें तलाक़ मंज़ूर होने पर स्त्री दूसरे आदमी का पाणि-ग्रहण कर सकती है। कुछ विशेष जातियों में रीतियाँ हैं। यद्यपि क़ानून ही काफ़ी भेद-भाव-पूर्ण है, उसमें पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों को बहुत कम सुविधाएँ दी गई हैं, पर क़ानून से बाहर—नाजायज़ ढंग पर—भी स्त्रियों के साथ कई तरह के अत्याचार होते हैं। इन अत्याचारों के विरुद्ध आवाज़ उठाना महिला-सम्मेलनों का काम है। दिल्ली में भारतीय महिलाओं की राष्ट्रीय समिति का अधिवेशन, त्रावनकोर की महारानी सेतु पार्वतीदेवी की अध्यक्षता में, हुआ। उसमें कई महत्त्व-पूर्ण निर्णय हुए। एक प्रस्ताव में बहु-विवाह का विरोध किया गया, दूसरे में यह कहा गया कि अगर पुरुष अपना दूसरा विवाह कर ले, तो स्त्री को ऐसे पति को तलाक़ देने का अधिकार होना चाहिए। इस प्रकार यह प्रस्ताव पहले प्रस्ताव का पूरक है। इन अधिकारों के लिये स्त्रियों ने पुरुषवर्ग के साथ कितनी ही लड़ाइयाँ लड़ी हैं, और उन लड़ाइयों के बल पर ही कई देशों की महिलाओं को वे क़ानूनी सुविधाएँ मिल चुकी हैं, जिनके लिये हमारे देश के महिला-सम्मेलन अब तक प्रस्ताव ही पास कर रहे हैं। विवाहों की रजिस्ट्री होना भी आजकल उतना ही आवश्यक हो गया है। इससे अदालतों में आए-दिन पुरुष और स्त्री के पारस्परिक संबंधों के जितने झगड़े चलते रहते हैं, वे दूर हो जायँगे। अब तक विवाह का सुबूत पंडित और नाई तथा संबंधियों की गवाहियों से दिया जाता है। विवाह की क़ानूनी ढंग पर रजिस्ट्री हो जाने पर पुरुष और स्त्री को स्वतंत्रता होगी कि जब उनमें से कोई निश्चित नियमों के विपरीत आचरण करे, तो क़ानूनी ढंग पर उसके प्रतिकार की व्यवस्था की जा सके। इस दृष्टि से इस सम्मेलन के प्रत्येक प्रस्ताव का हम समर्थन करते हैं। साथ ही हमारी यह राय है कि इस तरह के प्रस्ताव और निश्चयों को कार्य-रूप में परिणत कराने के लिये महिलाओं में ख़ूब आंदोलन किया जाय। जब तक काफ़ी आंदोलन न होगा, और हर ओर से एक ही तरह की आवाज़ न आवेगी, तब तक ये प्रस्ताव काग़ज़ पर ही लिखे रह जायँगे। सम्मेलन और समाचार-पत्र, दोनो साधनों से इस संबंध में आंदोलन किया जाना चाहिए।

× × ×

७. शहरों में घी-दूध की समस्या

शहर में शुद्ध घी-दूध का मिलना मुश्किल हो गया है। घी की तेज़ी के कारण आजकल शहरों में सर्वत्र वनस्पति-घी का प्रयोग हो रहा है। यहाँ तक भी ग़नीमत है। जब सरकार की तरफ़ से यह कह दिया गया है कि वनस्पति-घी स्वास्थ्य के लिये हानिकारक नहीं, तब जो लोग व्यापार के लिये वनस्पति-घी का क्रय-विक्रय करते हैं, या उसे अपने उपयोग में लाते हैं, उनके लिये कोई क़ानूनी या नैतिक बंदिश नहीं, पर दिक़्क़त तब आकर पड़ती है, जब लोग ग़ैर-क़ानूनी और अनैतिक ढंग से शुद्ध घी के साथ वनस्पति या कोकोजम मिलाकर बेचते हैं। यह मिलावट शहरों में ही नहीं, गाँवों में भी होती है, और गाँवों से जो घी 'गाय का शुद्ध घी' के नाम से आता है, उसमें घासलेट-घी का काफ़ी अंश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होता है। बल्कि चालाक लोग तो यहाँ तक करते हैं कि दूध के साथ सस्ता वासलेट-घी मिलाकर जमा देते हैं, और उस दूध से घी निकालकर बेचते हैं। इससे आसानी से लोग असली और मिलावटी घी की जाँच नहीं कर सकते। इस कार्यवाही का प्रतिकार तब तक नहीं हो सकता, जब तक वैज्ञानिक यंत्रों द्वारा शहरों में बिकनेवाले घी की परीक्षा न कर ली जाय। म्युनिसिपल बोर्डों को इस कार्य के लिये एक पृथक् विभाग खोलना चाहिए। शहर में घी-दूध बेचनेवालों को लाइसेंस दिए जायँ, या म्युनिसिपल कमेटियाँ अपनी ओर से शुद्ध घी-दूध बेचने का प्रबंध करें। अगर हर-एक मुहल्ले में एक-एक, दो-दो दूकानें भी इस तरह की खोल दी जायँ, तो उनसे भी काफ़ी लाभ होगा। इन दूकानों पर बिक्री भी काफ़ी होगी, और यह कार्य घाटे का भी न होगा। सरकार की तरफ़ से यह प्रबंध किया जाय, तो इसमें लाभ की ही गुंजाइश है। वैसे दूकानदारों के साइनबोर्डों पर अब लोगों का विश्वास नहीं रहा। इसके लिये जब तक कोई क़ानूनी रास्ता नहीं निकाला जायगा, तब तक लोग असली की जगह नक़ली का बेचना-ख़रीदना जारी रक्खेंगे।

माताओ और भावी माताओ !!

सामयिक चिकित्सा कराने में मत झिझकिए और न चिरकालीन वेदनाएँ सहन कीजिए। यह मत भूलिए कि आपके बच्चों—आपके देश की भावी आशाओं—का स्वास्थ्य आपके गर्भाशय-संबंधी स्वास्थ्य को पूर्ण रूप से सुरक्षित रखने पर ही अवलंबित है।

सुप्रसिद्ध गर्भाशय-संबंधी बल-वर्द्धक और अचूक टॉनिक

यूटेरोन

(बी० सी० पी० डब्ल्यू० मार्का विद्रो-अशोक)

आपके सब कष्टों और दुर्बलताओं को दूर करेगा। यह मासिक धर्म के कष्टों और व्यतिक्रमों, रक्त के पुराने जमाव, आमाशय व गर्भाशय में सूजन व जलन तथा स्त्रियों के अन्य सब विशेष रोगों के लिये अत्यंत लाभदायक है।

अनुभवी और योग्य डॉक्टरों ने इसको प्रयोग करने की सलाह दी है।

बेंगल केमिकल ऐंड फ़र्मास्युटिकल वर्क्स लिमिटेड

कलकत्ता :: बंबई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिये शहरों के म्युनिसिपल बोर्डों तथा सरकार को इस ओर ध्यान देना चाहिए।

× × ×

८. स्वामी कृष्णानंदजी (शेरवाला)

बंबई-प्रांत के अंतर्गत योगेश्वरी-नामक प्राकृतिक स्थान में स्वामी कृष्णानंदजी (शेरवाले बाबाजी)

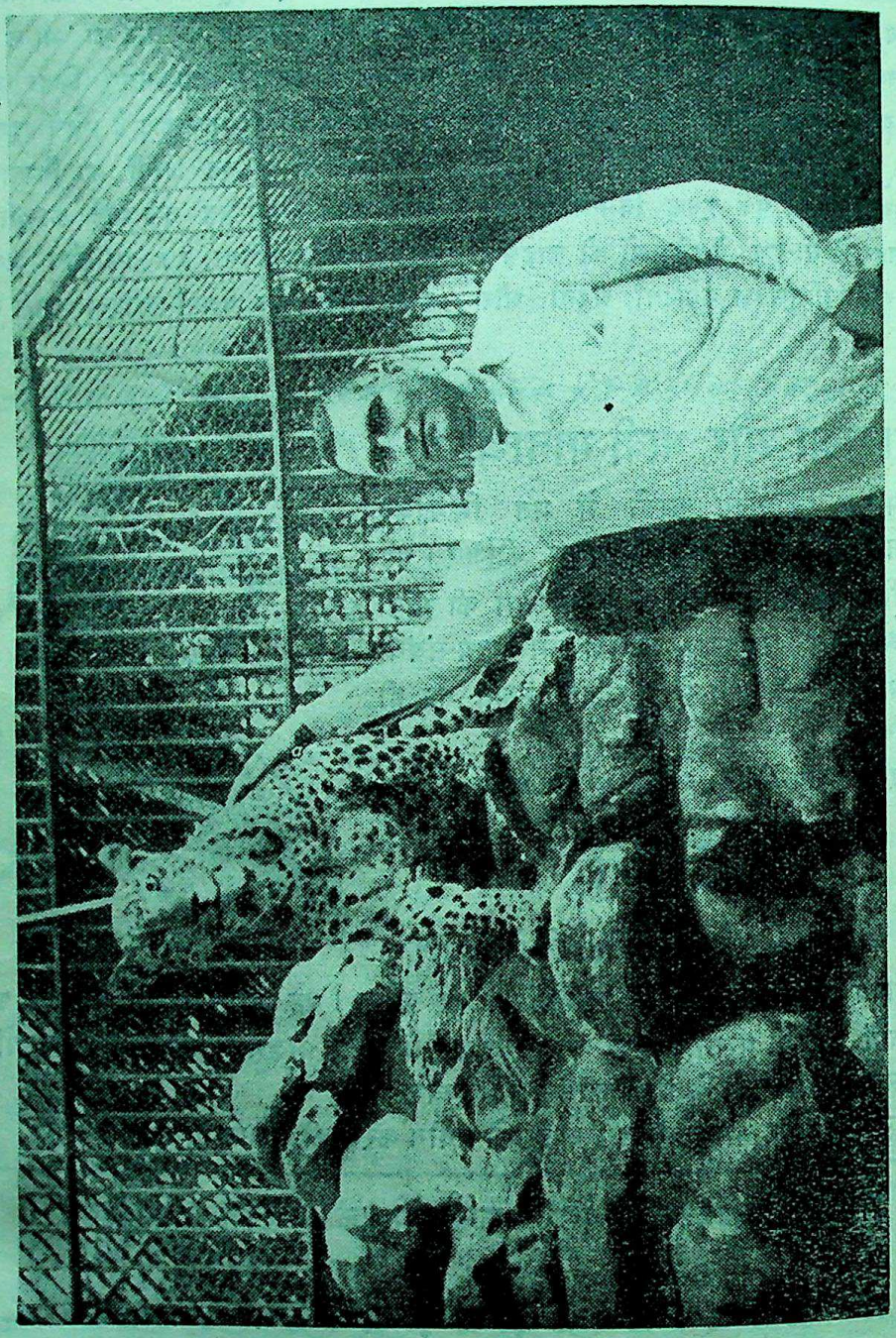

स्वामी कृष्णानंदजी (शेरवाला)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निवास करते हैं। अपनी यौगिक शक्ति द्वारा इन्होंने शेर, गाय और कुत्ते को एक साथ पाला है। तीनो पशु साथ-साथ सोते, जागते एवं आहार करते हैं। अपनी सात्विक वृत्तियों का प्रभाव मनुष्य दूसरे पर किस प्रकार डाल सकता है, यह बात स्वामीजी ने प्रत्यक्ष प्रमाणित की है। स्वामीजी की अहिंसात्मक शक्ति के वशीभूत होकर सिंह-ऐसे हिंसक जीव ने भी हिंसा त्याग दी है। इस चित्र में स्वामीजी शेर के साथ निर्भय खड़े हैं। यह शेर पालतू भी नहीं, बंबई के चिड़िया-घर का है। स्वामीजी की जीवनी और उनकी यौगिक शक्ति के चमत्कारों पर आगे किसी अंक में हम प्रकाश डालेंगे।

× × ×

६. दीनबंधु-स्मारक

स्वर्गीय दीनबंधु ऐंड्रयूज़ उन अँगरेज़ों में थे, जिन्हें जातीय संकीर्णताएँ और धार्मिक पक्षपात छू तक नहीं गया था। उनका जीवन मानव-मात्र की सेवा-भावना के दर्पण के समान है, जिसमें हम एक सच्चे सेवक का स्वरूप देख सकते हैं। उनकी मृत्यु हुए एक वर्ष हो गया, और ५ एप्रिल को उनकी प्रथम वर्षी मनाई गई। महात्माजी ने उनके स्मारक के लिये ५ लाख रुपए की अपील निकाली है। इस अपील द्वारा एकत्र कोष शांति-निकेतन को दे दिया जायगा,

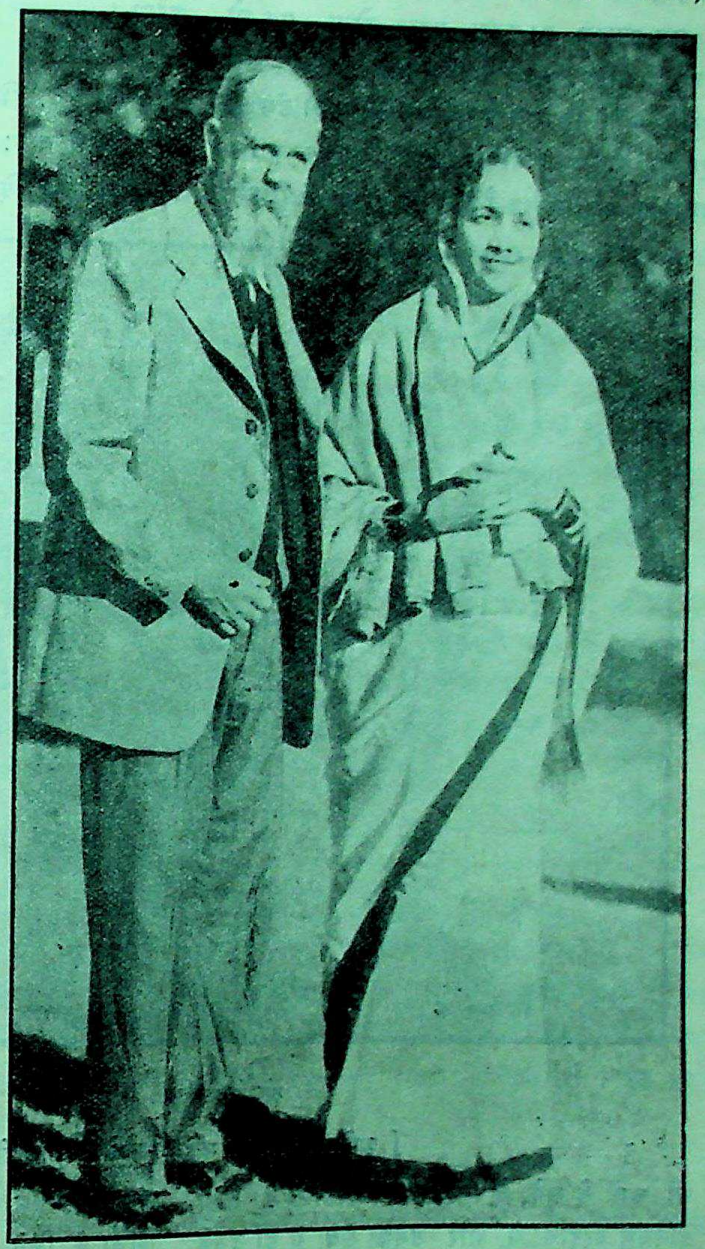

सी० एफ़० ऐंड्रयूज़ तथा रानी लक्ष्मीबाई

[दिल्ली के अखिल भारतीय महिला-सम्मेलन के अवसर पर लिया गया चित्र। प्रतिच्छविकार—श्रीललितगोपाल]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जहाँ कोई एक नवीन योजना इस रक़म से चलाई जायगी।

इस स्मारक का दुहरा महत्त्व होगा—एक तो ऐंड्रयूज़ साहब की स्मृति चिरस्थायिनी रहेगी, और दूसरे, शांति-निकेतन-जैसी, विश्व में अपने ढंग की एक ही, संस्था को भी लाभ होगा। प्रत्येक भारत-वासी का यह कर्तव्य है कि इस कोष में जितना धन देना दीनबंधु की आत्मा को शांति पहुँचाएगा, और उनकी सेवाओं को स्मारक के रूप में अमर करेगा।

× × ×

१०. भिखारियों की समस्या

भारत के प्रायः सभी नगरों में आपको भिखारियों के समूह घूमते दिखाई देंगे। भीख माँगनेवालों के

श्रीसी० एफ़० ऐंड्यूज़

[अखिल भारतीय महिला-सम्मेलन, दिल्ली में]

भी धन दे सके, दे। प्रवासी भारतीयों के लिये दीनबंधु वरदान थे, और उनकी सेवा में ही उनके जीवन का यह महत्त्व-पूर्ण भाग बीता है, अतएव हम प्रवासी भाइयों से भी प्रार्थना करते हैं कि वे भी इस ओर ध्यान दें, क्योंकि उनके लिये इसमें

संघ भी क़ायम बताए जाते हैं, और इस कला की शिक्षा के लिये भी प्रबंध बताते हैं। मिनरवा का एक खेल 'जेलर' हमने देखा है। उसमें भिखारियों के संघ का एक सुंदर चित्र चित्रित किया गया है।

वास्तव में भिखारियों की समस्या भी एक प्रधान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समस्या है। भिक्षा-दान का इतिहास क्या है, इसे यहाँ दुहराने की आवश्यकता नहीं। आज तो इस ग़ुलाम देश में इस प्रथा का नाश करने की आवश्यकता है। लेकिन शक्ति के बल पर इसे नाश नहीं किया जा सकता, क्योंकि जो चीज़ शक्ति के प्रयोग से नष्ट की जाती है, वह नष्ट नहीं होती, वरन् कुछ क्षणों के लिये दब जाती और समय पाकर फिर उठ आती है। कहीं-कहीं शक्ति का उपयोग ऐसे कार्यों में सफल भी हुआ है, पर भारत की दशा बिलकुल दूसरी है। यहाँ की धार्मिक प्रजा और पुण्य करनेवाले प्राणी इस प्रकार की व्यवस्था पसंद नहीं करेंगे। ऐसी स्थिति में कोई ऐसी नीति काम में लानी चाहिए, जो अहिंसक हो, और जिसमें जनता का हाथ हो, लोग जिसमें ख़ुद-बख़ुद योग दें।

इसके लिये हम आसानी से प्रयत्न कर सकते हैं। त्रावनकोर के कोट्टायम-नगर में वहाँ की म्युनिसिपैलिटी ने इस प्रकार की योजना बनाई है, जिसके द्वारा वहाँ आज एक भी भिखारी नज़र नहीं आता, और नगर के रहनेवाले भिखारियों से परेशान नहीं। इस योजना को कार्य-रूप में परिणत करने में उन्हें बड़ी मुसीबतें उठानी पड़ी हैं। १५ वर्ष से निरंतर इस योजना पर ग़ौर हो रहा था, परंतु काम करनेवालों की कमी न थी, इसीलिये यह महत्त्व-पूर्ण समस्या सुलझ गई है, और एक आदर्श रख दिया गया है। भिखारियों की गणना लूले, लँगड़े, कोढ़ी, अपाहिज आदि की श्रेणियाँ बनाकर वास्तविक कारणों की जाँच करने में कोट्टायम-म्युनिसिपैलिटी के प्रत्येक सदस्य ने बड़ा परिश्रम किया, और अपीलों द्वारा जनता को भी साथ लिया। भिखारियों के लिये दोनो वक्त भोजन का प्रबंध किया गया। उनके बच्चों की शिक्षा का प्रबंध भी है, और साथ ही उन्हें गृह-उद्योग की शिक्षा भी दी जाती है। यह आश्चर्य-जनक योजना कार्य-रूप में लाई जा रही है।

भारत के प्रत्येक नगर की म्युनिसिपैलिटी को उसका अनुकरण करना चाहिए। इससे देश की बड़ी भारी कमी दूर हो जायगी, और हमारी राय में तो सरकार को भी इस ओर ध्यान देकर इस कार्य में सतर्कता से योग देना चाहिए।

× × ×

४० से ऊपर उम्रवालो ! चिंता छोड़ो !!

बुढ़ापे के आगमन से दुखी हो, तो नई बूटी सेवन करो। बुढ़ापे का एक-एक चिह्न दूर कर यह आपको जवान बना देगी, और जवानी की उमंग फिर से उभर आएगी। धातु की कमज़ोरी को दूर कर यह काम-शक्ति को बढ़ा देगी। आँख की रोशनी तेज़ कर चश्मा फोड़ देगी, बाल का पकना रोककर पका बाल खूँटी से काला पैदा करेगी। झुर्रियाँ नष्ट कर दाँतों को दृढ़ बना काया को पलट देगी। झूठा होने से हज़ार रुपया देने की शर्त। दाम ५) रु०

लाइलाज रोग का शर्तिया इलाज

कुष्ठ, श्वेतकुष्ठ, सूज़ाक, बवासीर, सुनबहरी, गर्मी, मृगी, उन्माद, छाजन (खड़ी) यदि जड़ से नाश करना चाहते हो, तो हज़ारों बार की परीक्षित सिद्ध फ़क़ीरी दवा मँगाकर सेवन करो। रोग जड़ से नहीं जायगा, तो दाम वापस मिलेगा। फ़ी दवा ४॥) रु०

पता—फ़क़ीरी कुटिया, पो० बिहार नरसरी (दरभंगा)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

११. 'निराला'जी की पुत्र-वधू का निधन !

बंबई और सी० पी०-प्रांत के लंबे प्रवास से लौटने पर हमें यह जानकर अत्यंत दुःख हुआ कि 'निराला'जी ने बड़े स्नेह के साथ उनका विवाह अपने सुपुत्र पं० रामकृष्णजी के साथ किया था। पर होनहार प्रबल है। परमात्मा से प्रार्थना है,

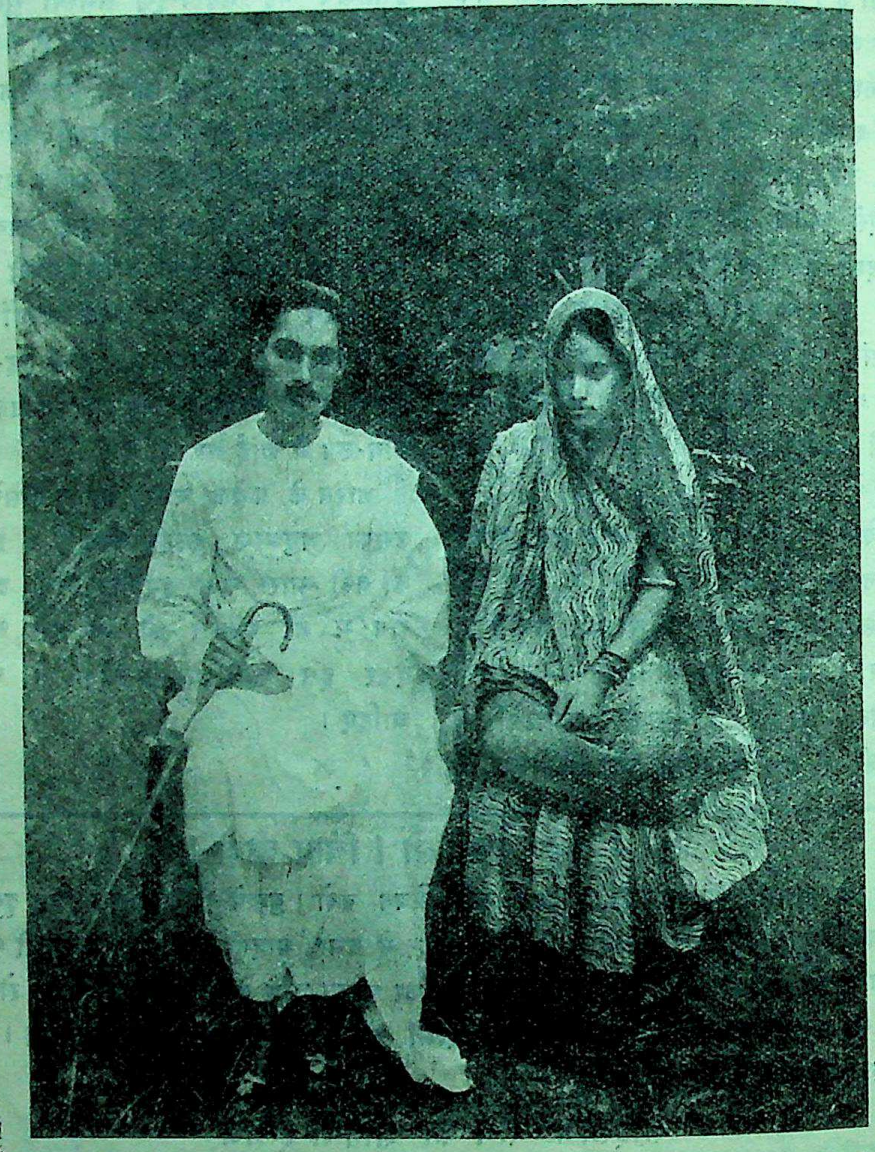

स्वर्गीया श्रीमती फूलदुलारी और उनके पति श्रीरामकृष्ण त्रिपाठी

महाकवि श्री'निराला'जी की पुत्र-वधू श्रीफूलदुलारी इस संसार में नहीं रहीं। मालूम हुआ, इधर कई मास से क्षय-रोग से पीड़ित थीं। अभी २-३ वर्ष हुए दिवंगत आत्मा को सद्गति दें, और 'निराला'जी और रामकृष्णजी को धैर्य।

× × ×

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१२. बलि-नृत्य

मार्च की 'सुधा' में एक रंगीन, भाव-पूर्ण 'बलि-नृत्य' चित्र छपा है। उसके चित्रकार श्रीप्रद्योत-कुमार सेनापति हैं। आप दून-स्कूल, देहरादून के

बलि-नृत्य (एक रंग में)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतिभाशाली छात्र हैं। उक्त स्कूल से आपको अपनी चित्रकला पर कई पुरस्कार मिल चुके हैं। आपकी अवस्था अभी लगभग १७ वर्ष की होगी, और इसी साल आपने सीनियर कैंब्रिज की परीक्षा दी है। आप बिहार-गवर्नमेंट के ज्वाइंट सेक्रेटरी (पोलिटिकल ऐंड एप्वाइंटमेंट डिपार्टमेंट) श्रीएन्० सेनापति आई० सी० एस्० के सुयोग्य पुत्र हैं, और प्रारंभ से ही सजीव तथा कुशल चित्रकला में संलग्न हैं। पिछले वर्ष दून-स्कूल में आपकी चित्र-प्रदर्शनी की देहरादून के प्रतिष्ठित सज्जनों ने अति प्रशंसा की थी। आशा है, आप अपनी यह प्रवृत्ति निरंतर स्थिर रक्खेंगे, और अपनी ईश्वर-प्रदत्त प्रतिभा को और विकसित करेंगे।

× × ×

१३. स्वर्गीय 'हृदय'जी !

श्रीयुत पं० रमाशंकरजी शुक्ल 'हृदय' के निधन-समाचार से किस साहित्यिक को दुःख न हुआ होगा ! इधर वह बहुत दिनों से क्षय-रोग से पीड़ित थे। इनके संबंध में हमने नवंबर की सुधा में हिंदी के प्रतिष्ठित और प्रसिद्ध गद्य-लेखक श्रीयुत 'उग्र'जी का लिखा एक लेख छापा था। इस संख्या में उनकी जीवनी भी उनके एक शिष्य की लिखी अन्यत्र प्रकाशित है। श्रीयुत जी० एस्० पथिक का आज ही एक पत्र मिला, जिससे मालूम हुआ कि स्व० 'हृदय'जी उनके अनुज थे। श्रीपथिकजी हमारे पुराने लेखक हैं।

'हृदय'जी के शरीरांत से हिंदी-संसार की भारी क्षति हुई है। करुण-रस के वह अच्छे कवि थे। हमारी ईश्वर से प्रार्थना है कि वह उनकी आत्मा को शांति दें, और पथिकजी के दुखी परिवार को धीरज बँधावें।

ESTABLISHED 1899 TELEPHONES:— 2 & 2 A

BHOLA NATH & CO.

36, Latouche Road

LUCKNOW

MANUFACTURE RUBBER STAMPS, BRASS & METAL BADGES, BRASS SEALS, BRASS & IRON PADLOCKS, THUMB IMPRESSION OUTFITS, MILITARY BADGES, TURBAN MONOGRAMS, FILE LACES, EMBOSSING MACHINES, INKS Etc., Etc.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुधा-चित्रावली

भारतवर्ष के एकमात्र प्रतिनिधि कवि

बाबू मैथिलीशरण गुप्त

[आप अभी हाल ही में अपने ज्येष्ठ भ्राता बाबू रामकिशोरजी गुप्त के साथ भारत-रक्षा-क़ानून के अनुसार नज़रबंद कर लिए गए हैं। दोनो भाई बहुत ही साधु-स्वभाव, सज्जन नागरिक हैं। आपको भी सरकार ने ख़तरनाक समझा, यह आश्चर्य की बात है!]

श्रीयुत महेंद्रजी

[[आप आगरा के सुप्रसिद्ध कार्यकर्ता, साहित्यरत्न-भंडार, साहित्य-प्रेस, स्वदेशी एडवरटाइज़िंग एजेंसी के संचालक एवं 'साहित्य-संदेश' और 'आगरा-पंच' के संपादक हैं। आप अभी, दफ़ा १२६ में, नज़रबंद कर लिए गए। आप आगरा-नागरी-प्रचारिणी सभा के प्राण हैं, और १७ वर्ष तक उसके मंत्री रह चुके हैं।

आप भरतपुर से एक साहित्यिक सभा में सभापति का आसन ग्रहण कर लौटे थे। आते ही पुलिस ने गिरफ़्तारी का वारंट दिखाया। प्रेस और भंडार की तलाशी में पुलिस को कोई आपत्तिजनक चीज़ नहीं मिली। गिरफ़्तारी की ख़बर बहुत शीघ्र ही शहर-भर में फैल गई, और सैकड़ों की तादाद में इष्ट-मित्रों और जनता ने आपको शानदार विदाई दी।]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

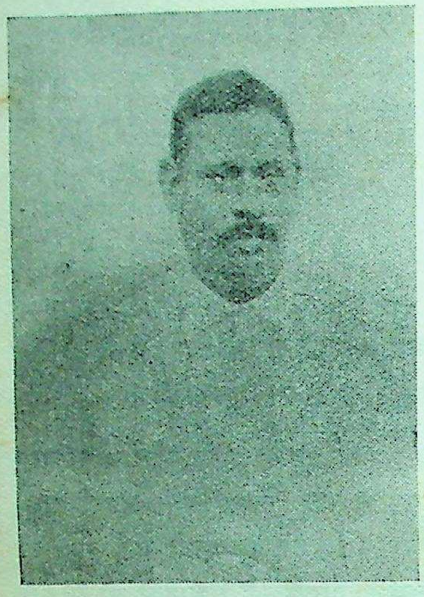

स्वर्गीय प्रोफ़ेसर महेशचरण सिनहा

[आप सरल, उदार, सहृदय और धैर्यवान् व्यक्ति थे। आपने हिंदी-कैमिस्ट्री (रसायन-शास्त्र), हिंदी-इलेक्ट्रिसिटी (विद्युत्-शास्त्र), हिंदी-बॉटनी (वनस्पति-शास्त्र) आदि वैज्ञानिक तथा अन्य विषयों पर पुस्तकें लिखी हैं। आपने कई पत्रों का संपादन भी किया था। आप हिंदी की सुकवयित्री श्रीमती सुमित्राकुमारी सिंह के पिता थे।]

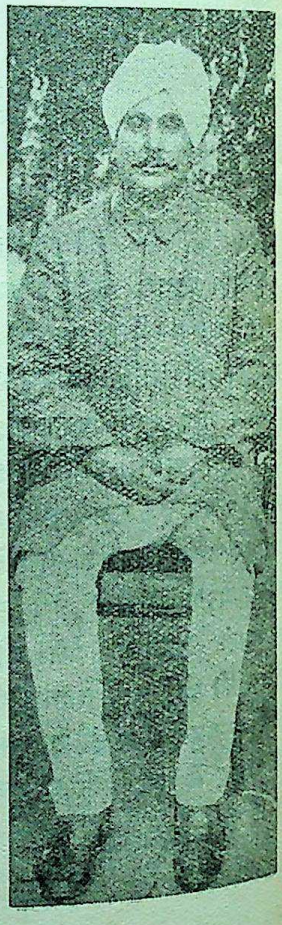

स्वर्गीय श्रीभूमानंदजी

[आप जाति-पाँति-तोड़क आंदोलन के अप्रतिम प्रचारक तथा संचालक थे। आपके संबंध में एक नोट 'सुधा' की जनवरी, ४१ की संख्या में छपा है।]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीजयदयाल विद्यार्थी बी० ए०

[आप आर्य-समाज, धर्मकोट कँधावा, ज़िला गुरु-दासपुर के प्रधान श्रीअनंतराम के पुत्र हैं।]

जाति-पाँति-तोड़क दंपति

कुमारी शांतादेवी

[आप करनाल-आर्य-समाज के प्रधान श्रीयुत सिंहराम की पुत्री हैं।]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

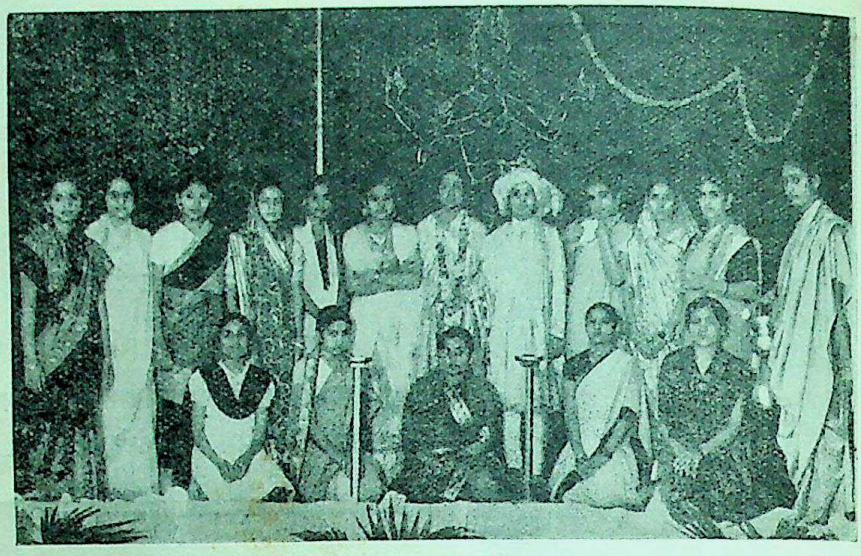

कन्या-महाविद्यालय, जालंधर का वार्षिकोत्सव

[वार्षिकोत्सव पर विद्यालय की छात्राओं ने 'अशोककुमार'-नामक एकांकी नाटक खेला था। नाटक की अभिनेत्रियाँ चित्र में हैं। प्रतिच्छविकार—श्रीराजगोपाल]

देव-समाज-गर्ल्स-हाईस्कूल, लाहौर का पारितोषिक वितरण

[पारितोषिक वितरण के समय छात्राओं ने नाच का प्रदर्शन किया था। प्रतिच्छविकार—श्रीराजगोपाल]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

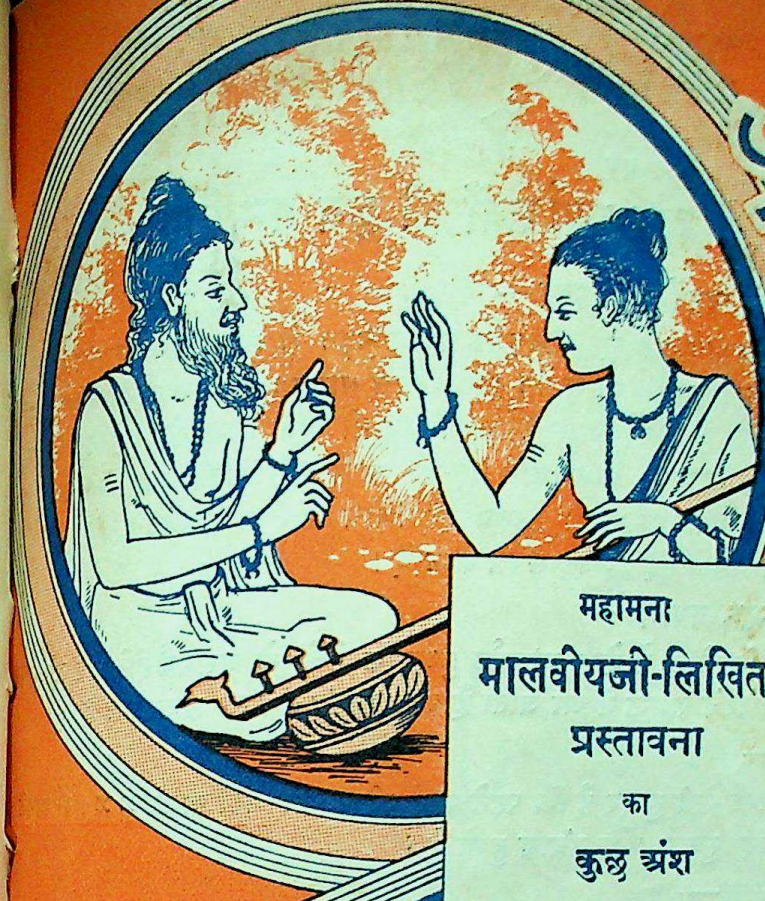

श्रीमद् भागवत

हिन्दी में मूल भागवत का
अक्षरशः प्रामाणिक अनुवाद

महामना
मालवीयजी-लिखित
प्रस्तावना
का
कुछ अंश

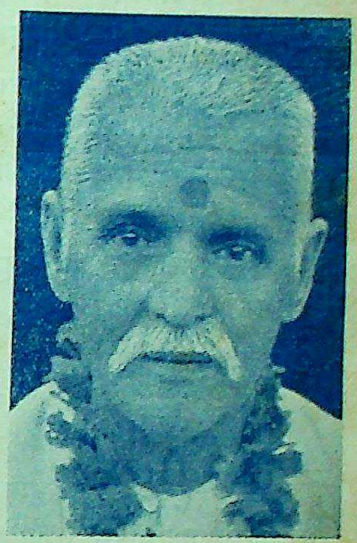

मुझे भागवत से प्रेम है। मेरा विश्वास और अनुभव है कि इसके पढ़ने और सुनने से मनुष्य को ईश्वर का सच्चा ज्ञान प्राप्त होता है और उनके चरण-कमल में अचल भक्ति होती है ××× श्रीमद्भागवत का यह हिन्दी अनुवाद नया है और अधिक सरल और रोचक है। पं० रूपनारायण पाण्डेय ने इस अनुवाद को प्रकाशित कराकर सर्व साधारण की प्रशंसनीय सेवा की है। मैं आशा करता हूँ कि इस पुस्तक के द्वारा सर्व साधारण में श्रीमद्भागवत के ज्ञान का अच्छा प्रचार होगा।

हिन्दू-विश्व-विद्यालय
काशी
श्रावण कृष्ण ६,
१९९७ वि०

मदन मोहन मालवीय

हिन्दुस्तानी बुकडिपो, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी श्रीमद्भागवत

पर

भारत के धुरंधर विद्वानों और धर्माचार्यों की कुछ सम्मतियाँ

महामहोपाध्याय पं० गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी, जयपुर—

हिन्दुस्तानी बुकडिपो, लखनऊ द्वारा प्रकाशित हिन्दी श्रीमद्भागवत के बहुत से स्थल मैंने अवधान से मूल संस्कृत के साथ मिलाकर पढ़े। मुझे इस अनुवाद से बहुत संतोष हुआ। जिस भागवत के सम्बन्ध में 'विद्यावतां भागवते परीक्षा,' विद्वानों की परीक्षा भागवत में ही हो सकती है, यह किंवदन्ती लोकप्रसिद्ध है, बड़े-बड़े विद्वान् जिसके एक-एक श्लोक में चक्कर खा जाते हैं, व्याख्या लिखनेवाले बड़े-बड़े आचार्य जिसकी थाह न पा सके, उस भागवत का पूर्ण आशय इस अनुवाद में आ गया × × ×। इतना निःसंकोच कहा जा सकता है कि हिन्दी में जितने अनुवाद और टीकाएँ आज तक प्रकाशित हुई हैं, यह सबसे श्रेष्ठ है।

महामहोपाध्याय डा० गंगानाथ झा, प्रयाग—

कृपया भेजा हुआ भागवत मिला। देखने ही से ऐसा आकर्षक हुआ कि नेत्रों से असमर्थ होते हुए भी कुछ अंश पढ़ ही गया। अनुवाद अच्छा है—स्वतंत्र समझ में आ जाता है और स्वतंत्र ग्रंथ सा ज्ञात होता है।

गोस्वामी लक्ष्मणाचार्य, मथुरा—

सचित्र हिन्दी श्रीमद्भागवत की रचना ऐसी सुन्दर है कि पढ़ते-पढ़ते जी उचाट नहीं खाता × ×। मैं अपने अनुभव से निवेदन करूँगा कि यह अनुवाद सुन्दर और संग्राह्य हुआ है।

देवर्षि रमानाथ, श्रीनाथद्वार, मेवाड़—

हिन्दुस्तानी बुकडिपो द्वारा प्रकाशित श्रीमद्भागवत का अनुवाद मिला। प्रथम तो श्रीमद्भागवत ही दिव्य सुधा है, फिर पं० रूपनारायणजी का अनुवाद सुवर्ण में सुगन्ध हुआ है। संस्करण की छपाई-सफ़ाई सुन्दर है। मैं मानता हूँ कि इस संस्करण से सभी को श्रीकृष्णचरित्र की सुधा पान करने को मिलेगी।

हिन्दी-साहित्य के धुरंधर विद्वान् राय साहब बाबू श्यामसुन्दरदास बी० ए०, काशी—

हिन्दुस्तानी बुकडिपो, लखनऊ से प्रकाशित सचित्र हिन्दी श्रीमद्भागवत को मैंने देखा। उसके लेखक पं० रूपनारायण पाण्डेय को मैं अच्छी तरह जानता हूँ। वह संस्कृत के अच्छे विद्वान् और हिन्दी के सुलेखक हैं। इसीसे इस पुस्तक की भाषा सरल, सुबोध और शैली रोचक बन पड़ी है। इस अनुवाद की दूसरी विशेषता यह है कि मूल भागवत का अक्षरशः प्रामाणिक अनुवाद किया गया है। श्रीमद्भागवत हिन्दुओं का आदरणीय धर्म-ग्रंथ है। उसका ऐसा सुन्दर, स्पष्ट और यथार्थ अनुवाद प्रकाशित करके इसके प्रकाशकों ने धार्मिक, जिज्ञासु सनातनी हिन्दुओं का बड़ा उपकार किया है। सुप्रसिद्ध चित्रकारों के कलापूर्ण तिरंगे और सादे चित्रों की अधिकता से पुस्तक और भी नयनाभिराम हो गई है। मुझे आशा है, इस हिन्दी भागवत का धार्मिक जनता में यथेष्ट आदर और प्रचार होगा।

सचित्र हिन्दी श्रीमद्भागवत में अनेक सादे और बहुरंगे चित्र दिए गए हैं, जिनको भारत के प्रख्यात कलाकारों ने बनाया है। पुस्तक के साधारण और विशेष दो संस्करण हैं, जिनका मूल्य क्रमशः १२।) और १६) है।

और भी अनेक धर्माचार्यों और धुरंधर विद्वानों की प्रशंसापूर्ण सम्मतियाँ तथा पुस्तक की भाषा, चित्र और लेटअप का नमूना देखने के लिए हमारा बुकलेट मुफ़्त मँगाइए।

प्रकाशक

हिन्दुस्तानी बुकडिपो, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप अपनी मातृभाषा और राष्ट्र-भाषा को क्यों ऊँचा मानते हैं ?

इस प्रश्न का उत्तर देने के लिये पढ़िए

हिंदी-साहित्य

का

इतिहास

[लेखक—'मिश्रबंधु']

आपकी कमनीय कृति 'मिश्रबंधु-विनोद' में भी यद्यपि हिंदी-साहित्य का इतिहास और कवि-कीर्तन है, फिर भी उसमें कवि-वर्णन बहुत अधिकता से है। और, सिर्फ़ साहित्यिक इतिहास जानने के लिये इतने बृहद् ग्रंथ का पढ़ना सबके लिये संभव नहीं। इसलिये ऐसे संक्षिप्त ग्रंथ की बहुत आवश्यकता थी। इन्हीं बातों पर विचार करके माननीय मिश्रबंधुओं ने इस अनुपम ग्रंथ की रचना की है। यह ग्रंथ बड़ी खोज, अध्ययन, परिश्रम और अनुभव से लिखा गया है। साहित्य के भांडार में अब तक ऐसा महत्त्व-पूर्ण ग्रंथ आपने न देखा होगा। मिश्रबंधु ही सबसे प्रथम इस प्रयास में आगे बढ़े हैं।

मूल्य सजिल्द २), सादी १॥) ; पृष्ठ-संख्या ३७०

गंगा-ग्रंथागार, ३६, लाटूश रोड, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी के दो पठनीय गद्य-काव्य

१. शारदीया

लेखिका, कुमारी दिनेशनंदिनी चोरड्या। हिंदी में गद्य-गीतों की जो शैली चली है, वह नई होते हुए भी भाव मय है। कुमारीजी गद्य गीतों के लिखने में हिंदी-संसार में काफ़ी प्रतिष्ठा पा चुकी हैं। आपके गद्य-गीत बहुत ही सुंदर' सरल और सरस होते हैं। मूल्य सादी ॥), सजिल्द १)

२. एक दिन

लेखक, बाबू भगवतीचरण वर्मा। आप हिंदी के प्रसिद्ध और प्रतिभावान कवि हैं। आपकी उत्कृष्ट रचनाओं से हिंदी-प्रेमी भली भाँति परिचित हैं। 'एक दिन' भी आपके ही गद्य-पद्यमय काव्य का संग्रह है। इसमें जीवन के सच्चे और गहनतम विचार सरल, सुबोध और सरस ढंग से वर्णन किए गए हैं। पुस्तक सांस्कृतिक शिक्षाओं से ओत-प्रोत है। मूल्य सादी ॥), सजिल्द १)

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाइब्रेरी-संस्थापक स्थायी ग्राहकों के लिये नियम

(१) लाइब्रेरी-संस्थापक स्थायी ग्राहक बनने की प्रवेश-फ़ीस सिर्फ़ १) है।

(२) पुस्तकें प्रकाशित होते ही—१५ दिन पहले मूल्य आदि का 'सूचना-पत्र'* भेज देने के बाद—वी० पी० द्वारा भेज दी जाती हैं। ६) रुपए की ४-५ पुस्तकों का सेट एक साथ भेजा जाता है, जिसमें डाक-ख़र्च में बचत रहे।

(३) जो पुस्तकें हमारी प्रकाशित होती हैं, उन पर आपको २५) सैकड़ा तथा बाहर की—हिंदुस्थान-भर की—पुस्तकों पर -) रुपया कमीशन दिया जाता है।

(४) लाइब्रेरी-संस्थापक स्थायी ग्राहक जिस पुस्तक को चाहें, लें, जिस पुस्तक को न चाहें, न लें; यह उनकी इच्छा पर निर्भर है। पर साल-भर में कम-से-कम ६) की पुस्तकें लेकर हिंदी-साहित्य-प्रचार में हमारी सहायता करनी पड़ेगी।

(५) कम-से-कम ६) की पुस्तकें एक साथ लेने पर डाक-ख़र्च हमारे ज़िम्मे रहेगा, यानी माल हम पहुँचता हुआ देंगे, अतएव ६) की पुस्तकें एक साथ मँगाइए।

(६) स्थायी ग्राहकों की भूल से वी० पी० लौट आने पर डाक-ख़र्च उन्हें ही देना पड़ता है, और दो बार वी०पी० लौट आने पर लाइब्रेरी-संस्थापक स्थायी ग्राहकों की सूची से उनका नाम काट दिया जाता है।

---

* नई पुस्तकों में से यदि कोई या सब न लेनी हों, अथवा और कोई पुस्तक मँगानी हो, तो 'सूचना-पत्र' मिलते ही हमें पत्र लिखना चाहिए, जिसमें इच्छानुसार कारवाई कर दी जा सके। १५ दिन के अंदर कोई सूचना न मिलने पर, आपकी स्वीकृति समझकर, सब नई पुस्तकें वी० पी० द्वारा भेज दी जाती हैं। ६) की पुस्तकें होने के कारण डाक-ख़र्च ख़ुद हम देते हैं।

लाइब्रेरी-संस्थापक का आदेश-पत्र

प्रिय महाशय,

मैंने गंगा-पुस्तकमाला के नियम पढ़ लिए हैं। कृपया मेरा नाम उसके लाइब्रेरी संस्थापद स्थायी ग्राहकों में लिख लीजिए, और नीचे लिखी पुस्तकें वी० पी० द्वारा भेजकर अनुगृहीत कीजिए। प्रवेश-फ़ीस का १) भी उसी में वसूल कर लीजिएगा। मैं अपने इष्ट-मित्रों को भी माला का ग्राहक बनाऊँगा।

भवदीय—

[हस्ताक्षर कीजिए]

मेरा पता .....

.....

पुस्तकों के नाम .....

.....

.....

.....

.....

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक प्रकाशित हो चुका है : [परीक्षांक]
और अब दूसरा छप रहा है : [शुक्ल-अंक]

दो और भी छपने बाक़ी हैं

साहित्य-संदेश का साहस

छ महीने में चार विशेषांक

शुक्ल-अंक १ मई को प्रकाशित हो रहा है !

शुक्ल-अंक की रूप-रेखा

यह लगभग १२५ पृष्ठ का होगा, और नए इलाहाबादी टाइप में सचित्र छपेगा। यह अंक तीन खंडों में विभाजित है। प्रथम खंड में शुक्लजी का जीवन, जीवन के विभिन्न क्षेत्रों का विवेचन, उत्तम संस्मरण और लब्धप्रतिष्ठित साहित्यिकों के इन्टरव्यू होंगे। इस अंक के लेखकों में सर्वश्रेष्ठ श्रीश्यामसुंदरदास, श्रीअयोध्यासिंहजी उपाध्याय, श्रीसूर्यकांत 'निराला', श्रीनलिनीमोहन सान्याल, श्रीसोहनलाल द्विवेदी, श्रीशिवमंगलसिंह 'सुमन', और आचार्य के ज्येष्ठ पुत्र श्रीकेशवचंद्र शुक्ल पी० सी० एस्० हैं, दूसरे खंड में आचार्य के साहित्यिक कार्य की विभिन्न दिशाओं और उसके द्वारा पड़े हुए हिंदी पर प्रभाव की विस्तृत आलोचना रहेगी। इस प्रकार के लगभग २० लेख हैं, जो हिंदी के सर्वश्रेष्ठ समालोचकों द्वारा अधिकार-पूर्वक लिखाए गए हैं। कुछ नाम इस प्रकार हैं—

श्रीहजारीप्रसादजी द्विवेदी, श्रीशांतिप्रिय द्विवेदी, श्रीनंददुलारे वाजपेयी, श्रीजैनेंद्र, श्रीशिवपूजनसहायजी, श्रीवासुदेवशरण अग्रवाल एम्० ए०, श्रीसत्येंद्रजी, प्रो० नगेंद्रजी, प्रो० रामविलास शर्मा, बाबू गुलाबराय एम्० ए०, कन्हैयालाल सहल एम्० ए०, श्रीप्रभाकर मांचवे एम्० ए०, श्रीललिताप्रसाद शुक्ल एम्० ए० आदि।

तीसरा खंड व्यक्तिगत है। इसमें हिंदी-साहित्य को जो शुक्लजी की विस्तृत देन है, और जिन लेखकों पर शुक्लजी का व्यक्तिगत आभार है, उसे पत्रों और लेखों के रूप में दिया जा रहा है।

इन सभी अंकों के दाम लागत के अनुसार फुटकर लेनेवालों को अधिक देने पड़ेंगे। इससे अच्छा यह है कि स्थायी ग्राहक बना जाय, और ३) पेशगी भेज दिए जायँ। विद्यार्थी-समाज तो २) में ही वर्ष-भर ग्राहक रह सकता है।

साधारण अंक का नमूना मुफ़्त मँगाकर देख लीजिए।

पत्र-व्यवहार का पता

साहित्य-संदेश-कार्यालय, आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी-अँगरेज़ी-छपाई

रंगीन तिरंगे चित्र

सर्वश्रेष्ठ जिल्द-बँधाई

सोने की छपाई, चिट्ठी के काग़ज़, लिफ़ाफ़े, पोस्टकार्ड,
विज़िटिंग-कार्ड, बिल, मिमो, रसीद-बुक, कैलेंडर,
नोटिस, निमंत्रण-पत्र, अभिनंदन-पत्र, पुस्तक आदि—

सब प्रकार की छपाई का काम

हमारे यहाँ सुंदर और सस्ता

साथ ही

ठीक वक़्त पर किया जाता है।

काम संतोषप्रद होने की गैरंटी

आपको छोटा-मोटा, सुंदर, सस्ता, किसी प्रकार का भी छपाई का कोई काम कराना हो, तो उसे तुरंत हमारे पास भेजिए।

अब इधर-उधर भटकने की ज़रूरत नहीं!

सब प्रकार की छपाई के काम के लिये सुविधा-जनक स्थान

गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस
लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Registered No. A—47

वैज्ञानिक कुंडली बनवाइए

आपके भविष्य के गर्भ के भीतर क्या छिपा है ?

इसे आपकी कुंडली ही बतलाएगी

इसलिये

प्रसिद्ध ज्योतिर्विद्

श्रीगिरिजादत्त शुक्ल 'गिरीश' बी० ए०

से

वैज्ञानिक कुंडलियाँ बनवाइए

प्रति कुंडली का पारिश्रमिक ५)

नोट— जन्म का (१) संवत् , (२) मास , (३) दिन और (४) ठीक समय लिख-कर आठ आने के टिकट के साथ भेजिए। कुंडली शेष शुल्क की वी० पी० द्वारा आपके पास पहुँच जायगी।

पता— श्रीगिरिजादत्त शुक्ल 'गिरीश' बी० ए०

ऐस्ट्रोलॉजिकल इंस्टीट्यूट, दारागंज, प्रयाग

गंगा-फ्राइनआर्टप्रेस, लूकरगंज में श्रीदुलारेलाल (सोल प्रोप्राइटर) द्वारा मुद्रित और प्रकाशित
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय
23-2-58
4-6-41

मित्र बादस

चीफ़ एजेंट्स यू० पी०, लखनऊ

प्रधान संपादक
श्रीदुलारेलाल
श्रीसावित्री

ज्येष्ठ, १९९८
JUNE, 1941

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिटलर का भयंकर अस्त्र !
नाज़ियों की प्रबल शक्ति !!
अत्याचार की नवीन कला !!!
संसार - विजय का शैतानी रास्ता !!!!

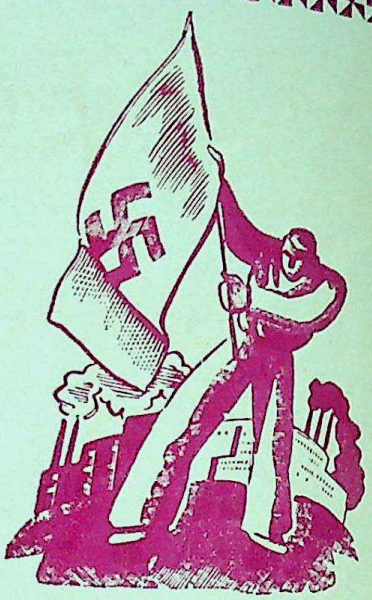

यदि

आप जानना चाहते हैं,

तो

गे स्टा पो पढ़िए

लेखक

श्रीज्योतिलाल भार्गव बी० ए०, एल्-एल्० बी०

(हिंदी-पब्लिसिटी-ऑफ़िसर, बिहार-गवर्नमेंट)

पाँचवीं श्रेणी क्या बला है ?
नाज़ी संसार के शत्रु क्यों हैं ?
योरप पर ख़ूनी पंजा कैसा जमा ?
तानाशाहों की ख़ूनी पिपासा कहाँ ?

सब आपको एक ही पुस्तक में पढ़ने को मिलेगा। पुस्तक दुष्प्राप्य समाचारों और दुर्लभ पुस्तकों के आधार पर लिखी गई है। यदि आप नाज़ियों की अभूतपूर्व विजय की तरकीब जानना चाहते हैं, तो इस पुस्तक को आदि से अंत तक पढ़ जाइए। १६ चित्रों से सुसज्जित लगभग १०० पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य ॥) ; टिकट भे

शुक्ल 'गिरीश' बी० ए०
ऐस्ट्रोलॉजिकल इंस्टीट्यूट, दारागंज, प्रयाग

गंगा-पुस्तकमाला-कार्या

में श्रीदुलारेलाल (सोल प्रोप्राइटर) द्वारा मुद्रित और प्रकाशित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशाल पूँजी-सहित और सुरक्षित

राष्ट्रीय बीमा कंपनी

स्थापित सन् १८७१ ई०

बॉम्बे म्युचुअल

गत हिसाब से वार्षिक मुनाफों की दर—

२३) रु० आजीवन और १८) रु० मियादी

प्रति १०००) रु० के बीमों पर

मित्र ब्रादर्स

चीफ़ एजेंट्स यू० पी०, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख-सूची

	पृष्ठ
१. दो कुसुम (कविता)—[लेखक, श्री-दुलारेलाल	४०१
२. मन का दास (कविता)—[लेखक, श्रीपं० अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'	४०२
३. वैदिक रहस्य-विज्ञान का एक दृष्टि-कोण (सचित्र)—[लेखक, ज्योतिषा-चार्य श्रीयुत सूर्यनारायण व्यास ...	४०३
४. कालसी में अशोक-आश्रम की प्रस्ता-वित योजना—[लेखक, श्रीयुत प्रो० धर्मदेव शास्त्री	४१३
५. साथी (कहानी)—[लेखक, श्रीयुत कालीचरण चटर्जी एम्० ए० ...	४१८
६. आर्य-समाज—[लेखक, मंगलाप्रसाद-पारितोषिक-विजेता श्रीयुत गंगाप्रसाद उपाध्याय एम्० ए०	४२१

अमृतांजन

सर्वश्रेष्ठ दर्दनाशक भारतीय महौषध। सिर-दर्द, जलन, पीड़ा, फोड़ा, सूजन, कटना, घाव, वात, गठिया, कमर का दर्द, सरदी, खाँसी, कीड़ों का डंक आदि सभी वेदनाओं में 'अमृतांजन' आश्चर्य-जनक फ़ायदा करता है।

अमृतांजन लिमिटेड

बंबई, कलकत्ता, मदरास

पो० बॉक्स नं० ६,८२५

[ई० सन् १९०१ में स्थापित]

च्यवनप्राश-३) सेर अध्यक्ष मथुरा बाबू का मकरध्वज-४) भरी

शक्ति औषधालय-ढाका

आयुर्वेदिक संसार में युगांतर उपस्थित कर दिया है।

कारख़ाना और हेड ऑफ़िस ढाका, बंगाल। तार का पता 'शक्ति' ढाका।

कलकत्ता हेड ऑफ़िस—५२। १, बीडन स्ट्रीट। चौरंघी

बंगाल से बाहर की शाखाएँ—देहली, कानपुर, इलाहाबाद, पटना, भागलपुर, गया, बनारस, गोरखपुर, बुलानाला, जमशेदपुर, गौहाटी, तिनसुकिया (आसाम), मदरास, कटक, रंगून, वेसिन, मांडले (बरमा), बंबई, लखनऊ ब्रांच—२ श्रीराम रोड, लखनऊ आदि।

ब्रांच भारतवर्ष में सर्वत्र और बरमा में

मृतसंजीवनी सुरा (गवर्नमेंट से लाइसेंसशुदा) भारतवर्ष और बरमा में हमारी सभी ब्रांचों में मिलती है।

प्रोप्रायटर्स—श्रीमथुरामोहन, स्व० लालमोहन, फणींद्रमोहन मुखोपाध्याय चक्रवर्ती।

मैनेजिंग प्रोप्रायटर—श्रीमथुरामोहन मुखोपाध्याय चक्रवर्ती बी० ए०

हिंदू केमिस्ट और फ़िज़िशियन

पत्र और मनीऑर्डर आदि मथुरा बाबू मैनेजिंग प्रोप्राइटर के नाम भेजिए।

आयुर्वेदीय चिकित्सा-प्रणाली-संबलित सूचीपत्र मुफ़्त मिलता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृष्ठ

७. चल रे ! हव्य माँगता गांधी ! (कविता)—[लेखक, श्रीसोहनलाल द्विवेदी एम्० ए०, एल्-एल्० बी० ... ४२६

८. मेरी हरद्वार-यात्रा (सचित्र, भ्रमण)—[लेखक, साहित्य-रत्न श्रीयुत लक्ष्मीनारायण टंडन 'प्रेमी' एम्० ए० ... ... ४२७

९. खून की खाद (कहानी)—[लेखक, श्रीयुत तेजनारायण काक एम्० ए० ... ४३७

१०. भारतीय लिपियों की एकता एवं उनका एकीकरण (सचित्र) [२]—[लेखक, डॉ० दुर्गादत्त गंगाधर ओझा बी० एस्-सी०, एम्० बी०, बी० एस्० ... ४४२

११. छवि का जाल (कविता)—[लेखक, श्रीयुत गोपालसिंह नेपाली ४५०

पेशाब के भयंकर दर्दों के लिये

एक नई और आश्चर्यजनक ईजाद ! याने—

सूज़ाक (गनोरिया) की हुक्मी दवा

डॉ० जसानी का

जगत्-विख्यात 'गोनोकिलर' रजिस्टर्ड

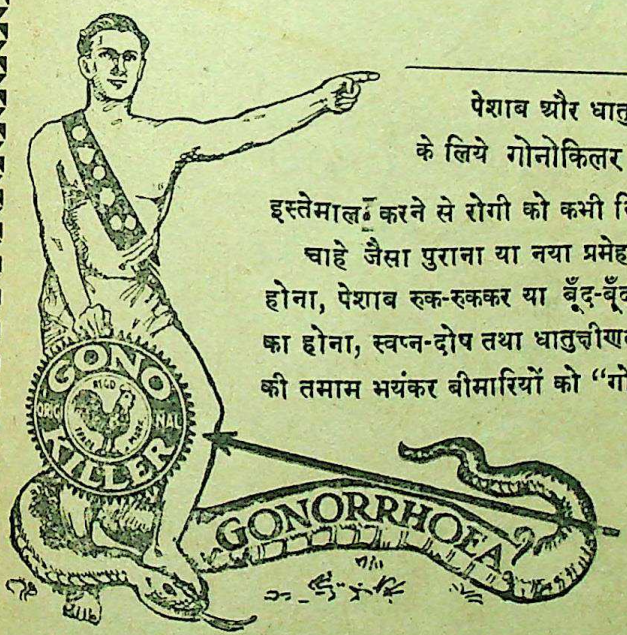

पेशाब और धातु के दर्दों को मार हटाने व निर्मूल करने के लिये गोनोकिलर एक ऐसी ही आश्चर्यजनक दवा है, जिसका इस्तेमाल करने से रोगी को कभी निराश होना ही नहीं पड़ता।

चाहे जैसा पुराना या नया प्रमेह या सूज़ाक, पेशाब में मवाद आना, जलन होना, पेशाब रुक-रुककर या बूँद-बूँद आना, मूत्राशय के अंदर घाव या सूजन का होना, स्वप्न-दोष तथा धातुक्षीणता और औरतों तथा मर्दों की इस क़िस्म की तमाम भयंकर बीमारियों को "गोनोकिलर" जड़ से नष्ट कर देता है।

नक़ली से सावधान !
खरीदने से पहले
दवा का नाम गोनोकिलर
और मुर्ग़ा-छाप सीलबंद
पैकेट देख लीजिए

मूल्य ५० गोलियों की शीशी का ३) रु०, वी० पी० डाक-व्यय आठ आना अलग।

एकमात्र बनानेवाले—डॉ० डी० एन्० जसानी S. L. गिरगाँव, बैक रोड, बंबई नं० ४

लखनऊ-स्टाकिस्ट—किंग मेडिकल हॉल, अमीनाबाद-पार्क

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१२. माधुर्यमय भगवद्भक्ति—[लेखक, प्रो० धर्मेंद्र एम्० ए० (त्रितय) ४५१

१३. विश्वेश्वर-स्मृति—[लेखक, साहित्याचार्य श्रीपं० विश्वेश्वरनाथ रेउ ... ४५५

१४. बदला (कविता)—[लेखक, श्रीयुत 'बचनेश'जी ४५६

१५. गीत (कविता)—[लेखक, श्रीयुत सोहनलाल द्विवेदी एम्० ए०, एल्-एल्० बी० ... ... ४५६

१६. राष्ट्रीयता का रोड़ा—संप्रदायवाद—[लेखिका, श्रीमती हीरादेवी चतुर्वेदी ... ४६०

१७. स्वर्गीय आचार्य पं० रामचंद्र शुक्ल (जीवनी)—[लेखक, श्रीयुत हरिश्चंद्र अग्रवाल एम्० ए० ... ... ४६४

१८. पुराने और नए विचार (कहानी)—[लेखक, श्रीयुत आत्माराम देवकर ... ४६६

१९. सुधा-चित्रावली ४७३

२०. चयन—[लेखकगण, श्रीयुत करुणकुमार, श्रीयुत लोचनप्रसाद पांडेय, कुमारी लीला ऐरी वैद्या, हिंदी-प्रभाकर, कुमारी उर्मिला श्रीवास्तव, श्रीक़ाज़ी अशरफ़ महमूद और श्रीमती शांति दुबे ... ४७७

२१. परिचय—[लेखकगण, श्रीयुत कालीचरण चटर्जी एम्० ए०, साहित्य-रत्न जितेंद्र भारतीय शास्त्री और श्रीसावित्री दुलारेलाल एम्० ए० ... ... ४८५

२२. कुसुम ४६१

२३. धारा (सचित्र, संपादकीय विचार) ... ४६२

वीर-ज्योति

वीर-रस-प्रधान नाटक

राजभक्ति तथा देश-भक्ति

का

जीता-जागता चित्र

ले०, पं० लोकनाथजी द्विवेदी 'सिलाकारी'

इसमें

महेबा (बुंदेलखंड) के राजा वीर-शिरोमणि महराज चंपतराय और उनकी वीरात्मा रानी सारंधा का चरित्र किया गया है। कथा-प्रसंग से इसमें अन्य बुंदेला-सामंतों तथा अनेक मुग़ल-सरदारों के भी चरित चित्रित किए गए हैं। कई एक बुंदेला स्त्रियों ने भी इस नाटक में भाग लिया है। मुग़लों की ओर से केवल जहानारा (शाहजहाँ की लड़की) रंगमंच पर आती है। इस नाटक में इतिहास की बहुत रक्षा की गई है, और कल्पना से केवल आवश्यक काम लिया है। पुस्तक की रचना सामयिक है, क्योंकि आजकल हिंदू अपने प्राचीन गौरवों और पूर्वजों की सुकृतियों से प्रभावित हो रहे हैं। बुंदेलखंड-वासियों के लिये तो यह नाटक एक प्रकार का पुराण है। मूल्य सादी १।), सजिल्द १।॥)

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्र-सूची

पृष्ठ

(क) तिरंगा

१. उषा-स्वप्न—[चित्रकार, श्रीयुत काशिनाथ गणेश खातू... ... ... ४०१

(ख) दुरंगा

२. देश के प्राण महात्मा गांधी ... ४००

(ग) सादे

३. षट्चक्र-मूर्त्ति (सिद्धासन) ... ४०४

४-७. मेरी हरद्वार - यात्रा-संबंधी ४ चित्र ४२७, ४३० और ४३१

८-१२. भारतीय लिपियों की एकता एवं उनका एकीकरण-संबंधी ५ चित्र ४४३ और ४४६

पृष्ठ

१३. दिल्ली में अखिल भारतीय हिंदी-समाचार-पत्र-संपादकों का सम्मेलन ... ४७३

१४. अखिल भारतवर्षीय महिला डॉक्टरनियों का सम्मेलन ४७४

१५. श्रीयुत व्रजमोहनजी और कुमारी ऊषा ४७५

१६. इंद्रप्रस्थ-गर्ल्स-कॉलेज, दिल्ली का वार्षिक व्यायामोत्सव ४७६

१७. श्रीरवींद्रनाथ ठाकुर ५०४

१८. महात्माजी को नारियल-प्रदान ... ५०५

१९. कमला नेहरू-अस्पताल का उद्घाटन ... ५०६

२०. कमला नेहरू-अस्पताल का भव्य भवन ... ५०६

२१. स्वर्गीया श्रीमती कमला नेहरू ... ५०७

हिंदू-जाति के विश्व-मान्य सिद्धांतों का सजीव, सार-गर्भित चित्रण

संगठन, एकता और बंधुत्व का आदर्श उदाहरण !!

कला, कल्पना, मनोविज्ञान-नीति—

सब बातों का एक ही स्थान पर मिलकर आपके हृदय की कोमल भावनाओं को छू लेने का प्रयास कितना पवित्र—कितना सफल ! एक बार अवश्य पढ़िए—

* निःसहाय हिंदू *

सोचिए तो—आप स्वयं ही कह देंगे—

* यह सुंदर उपन्यास *

आपके मनोनुकूल पाठ्य सामग्री

का चयन है !

साहित्य के सुपरिचित कलाकार श्रीयुत राधाकृष्णदास

की ओज-भरी लेखनी का अनुपम चमत्कार, जिसका एक-एक शब्द आपके लिये अनमोल प्रमाणित होगा।

संपादक

रा० ब० बाबू श्यामसुंदर दास बी० ए०

'हिंदू' होकर आपने इस पुस्तक को न पढ़ा, तो आपने जाति के प्रति एक अन्याय किया !

अभी-अभी छपकर तैयार है !!

सजिल्द १), सादी ।।)

आज ही अपना ऑर्डर भेजिए।

गंगा-ग्रंथागार, ३६, लाटूश रोड, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यापार की मंदी होने पर भी

१. ठीक - ठीक लिखे हुए
२. उपयुक्त माध्यम में दिए गए
३. सुंदरता से छपे हुए

विज्ञापन

हमेशा रुपया खींचते हैं

व्यापार की चाभी
विज्ञापन छपाना
: : है : :

सुधा

१. में दक्ष, मनोवैज्ञानिक विज्ञापन-लेखक नियुक्त हैं।
२. विज्ञापन देने के लिये सर्वोत्तम माध्यम है।
३. की टा इ पो ग्रै फ़ी कला-पूर्ण है।

इसीलिये

सुधा में विज्ञापन छपाइए

आपके लाभ की बात

साधारण विज्ञापन की दर सुधा में जितने

प्रतिमास

१ पृष्ठ की छपाई	२५)
½ " " "	१५)
¼ " " "	१०)
⅛ " " "	६)

विज्ञापन छपते हैं, उतने किसी भी हिंदी-पत्रिका में नहीं छपते !

मैनेजर 'सुधा'
[विज्ञापन-विभाग]
नं० ३६, लाटूश रोड, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नोट कर लीजिए

卐

भूलिएगा नहीं

पृष्ठ-संख्या प्रायः २५० होगी

मूल्य १॥) ग्राहकों को मुफ़्त

सुधा

का

श्रावण-अंक [विशेषांक]

हिंदी के स्थायी साहित्य की बहुमूल्य वस्तु होगी

इस अंक में क्या होगा ?

चित्र
भाव-कला-पूर्ण, मनोहर, तिरंगे

कार्टून
कुरीतियों के द्योतक, हास्योत्पादक, व्यंग्य-पूर्ण

कविता
नई स्फूर्ति और जीवनदायिनी

लेख
धुरंधर विद्वानों के अनुपम और चमत्कृत

आज ही मूल्य भेज ग्राहक बन जाइए

विज्ञापन-दाताओं को चूकना न चाहिए

मैनेजर सुधा गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैद्यों को अपने रोगियों पर लाभ उठाने का मौक़ा

संग्रहणी रिपु

शर्त बांधकर, बाज़ी लगाकर, पुरानी-से-पुरानी असाध्य संग्रहणी को दूर करने में भगवती का वरदान है, यह कभी फैल होनेवाली दवा नहीं, सभी प्रकार के स्वाभाववालों के लिये हितकर है, छोटे-से-बड़े, सभी खा सकते हैं। किसी भी पथ्य और अनुपान की इसमें विशेष ज़रूरत नहीं। सिर्फ़ प्रातः-सायं आध सेर धारोष्ण दुग्ध से, जिसमें मिश्री मिली हो, ले लें बाद को भूख लगने पर यथा रुचि भोजन करें। सिर्फ़ सात दिन में ही संग्रहणी का नामोनिशान मिटा देती है। यह पेट को साफ़ करके उसके विषैले माद्दे को निकालकर दस्त बंद करती है, और इसमें स्तंभक गुण न होकर सारक गुण होने से रोगी को कोई हानि नहीं होती। विना किसी बिचार के दी जा सकती है। कोई नशा भी इसमें नहीं, सिर्फ़ वानस्पतिक प्रयोग है। वैद्यों को बहुत लाभ पहुँचानेवाली है। वह शर्त लगाकर रोग भगाने में प्रसिद्ध हो सकते हैं। सात दिन की दवा का दाम २) है।

मँगाने का पता—

श्रीहरिहर-औषधालय

बरालोकपुर, इटावा (यू० पी०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

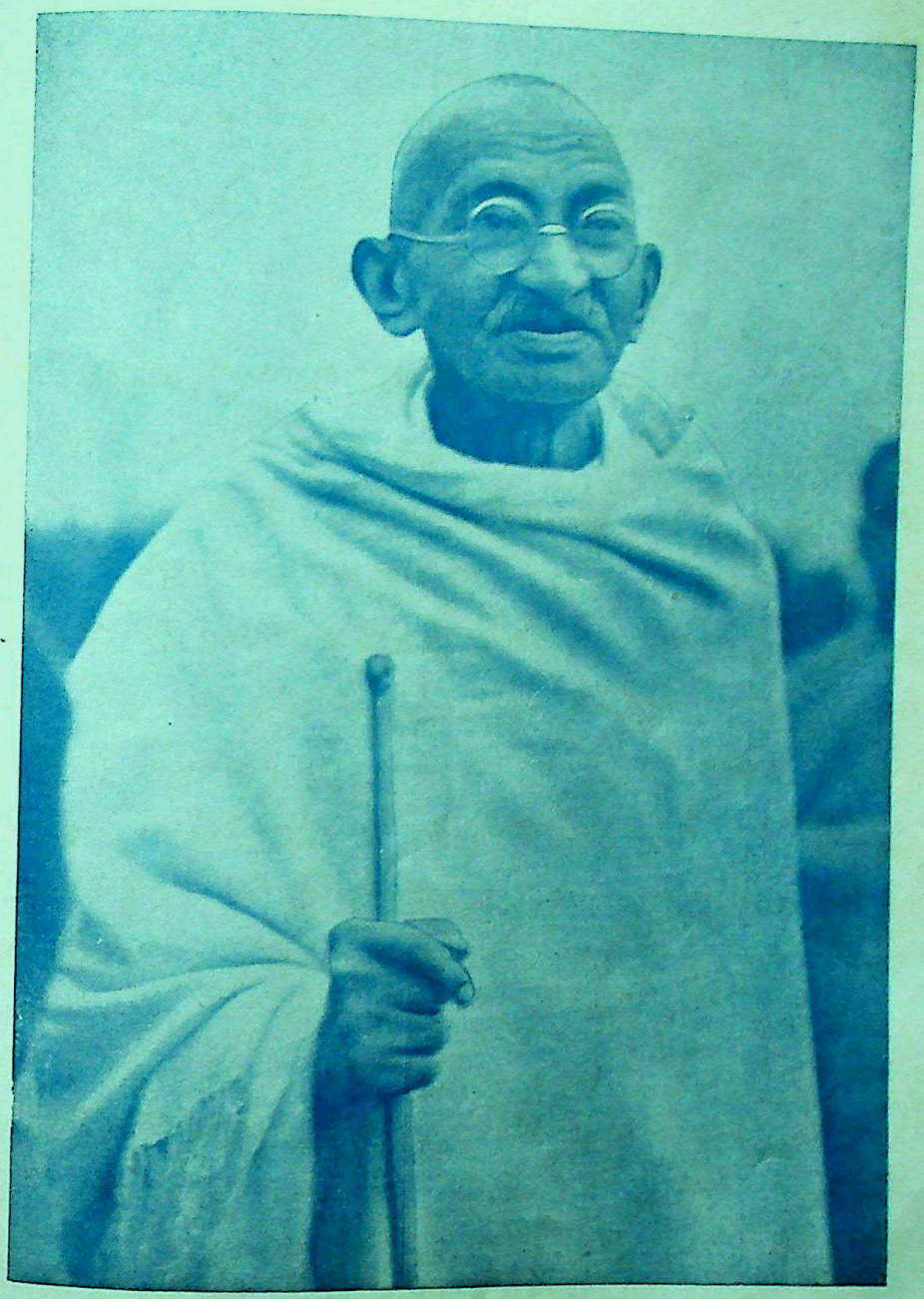

देश के प्राण महात्मा गांधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

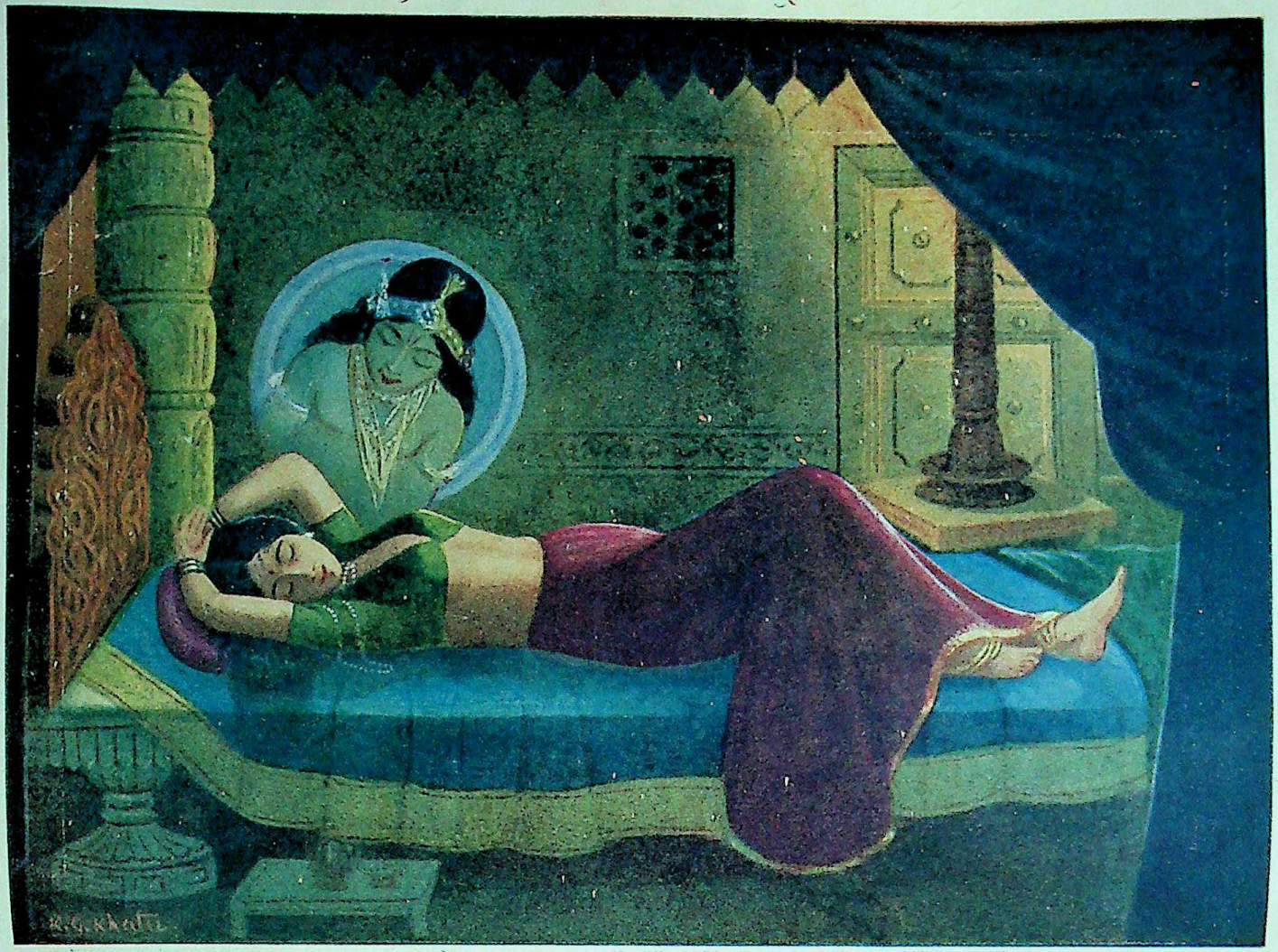

उषा-स्वप्न

[चित्रकार—श्रीयुत काशिनाथ-गणेश खातू]

बिरह-बिजोगिनि कौ करत सपन सजन-संजोग ;
सखि, समाधि हू सों सरस नींद, न नींदन-जोग ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Approved by the Directors of Public Instruction in U. P., C. P., C. I., Bombay, Bihar, Punjab & Sind.

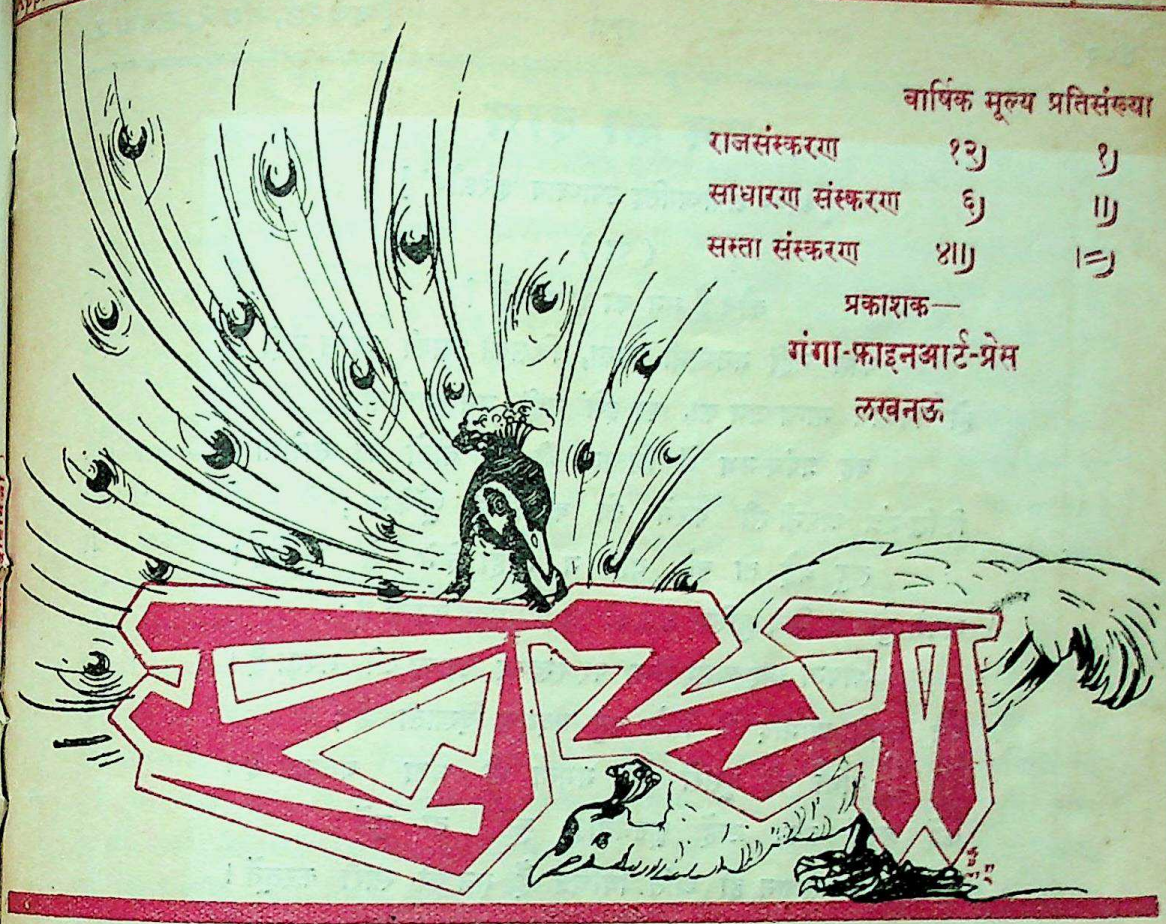

वार्षिक मूल्य प्रतिसंख्या

राजसंस्करण	१२)	१)
साधारण संस्करण	६)	॥)
सस्ता संस्करण	४॥)	।=)

प्रकाशक—
गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस
लखनऊ

वर्ष १४ खंड २ } ज्येष्ठ, ३१८ तुलसी-संवत् (१९९८ वि०)— जून, १९४१ { संख्या ५ पूर्ण संख्या १७९

दो कुसुम

[श्रीदुलारेलाल]

(१)

ब्रह्म बीज, तरु मनुजता,
राष्ट्र डाल, जन पात ;
रक्त-पात तउ होत क्यौं,
यह अचरज की बात !

(२)

भारत - भूमि अधीर
परी फूट-गढ़ में फँसी !
तोड़ि जाति - प्राचीर
लीजै ताहि छुड़ाइ दुक ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मन का दास

[श्रीपं० अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध']

(पद)

कौन है मन का दास नहीं ?

कौन नहीं मनमानी करता, किसको उसकी प्यास नहीं ?
हो अपमान मान्य जन का, पर इसे नहीं मन मानेगा ;
वह प्रपंच-नभ में वितान जी की बातों का तानेगा।
सिद्धि-मंत्र अपनी-सी करने को कानों में फूँकेगा ;
लहू बहे तो बहे, वह न लोहा लेने से चूकेगा।
अपने सुख के लिये सुखित जन को वह असुखित करता है ;
अपना भार अमर सिर पर रखकर उसका जी भरता है।
वह अपने आमोद के लिये बहु मदमत्त दिखाता है ;
बाधा पड़े दूसरों की ममता को धता बताता है।
कहें कहाँ तक, उन्हें कूतनेवाले कूतें, तो कूतें ;
मन-समान ही अति विचित्र हैं मन की सारी करतूतें।

स्वास्थ्यवर्द्धक भोजन का चुनाव सरलता से कर लें !
कैसे ?
'भोजन और स्वास्थ्य'
नामक हमारी नई प्रकाशित पुस्तक द्वारा !
"स्वास्थ्य-वर्द्धक भोजन का चुनाव साधारण जन भी, अपनी आय के अनुसार, कर सकते हैं। इसके लिये अमीर-ग़रीब का कोई प्रश्न नहीं।" मूल्य १), सजिल्द १॥)
लेखक—डॉ० सत्यप्रकाश डी० एस्-सी०, एफ़्० आई० ए० एस्०
तथा डॉ० संतप्रसाद टंडन एम्० एस्-सी०, डी० फ़िल्०
गंगा-ग्रंथागार, ३६, लाटूश रोड, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैदिक रहस्य-विज्ञान का एक दृष्टिकोण

[ज्योतिषाचार्य श्रीयुत सूर्यनारायण व्यास]

वेद हमारा सबसे प्राचीनतम साहित्य है, यह बात आज सर्वसम्मत है। वेद के पश्चात् ब्राह्मण-ग्रंथों का स्थान है। ब्राह्मण-ग्रंथ जानने के वे ही अधिकारी हैं, जिन्होंने यज्ञादि विधानों से संहिता द्वारा परिचय प्राप्त किया हो। ब्राह्मणों में वैदिक साहित्य को शृंखला-बद्ध कर वैधानिक कृत्यों पर विवेचना की गई है। ब्राह्मण-आरण्यक ग्रंथों के बाद क्रमशः उपनिषदों का स्थान है, और फिर सूत्र-ग्रंथों का। यह बतलाया जा चुका है कि ब्राह्मणों में उन विधियों का विवरण है, जिनमें यज्ञ के नियमों का उल्लेख है। इसी प्रकार सूत्र-ग्रंथों में प्रयोगों की पद्धति है, और कर्मों का स्पष्टीकरण एवं आशयाभिप्राय का विशदीकरण। और, जिनमें धार्मिक, आध्यात्मिक एवं दार्शनिक विचारों का समावेश है, वे उपनिषद् हैं।

आरंभिक काल में बहुत समय तक हममें याज्ञिक कर्म-प्रवृत्ति रही, और उसके बाद ब्रह्म-विषयक विवेचन आरंभ हुआ। इस विवेचन के ग्रंथ का नाम आरण्यक है। अरण्य में अध्ययन के कारण इसका नाम आरण्यक पड़ा *। संहिताओं की भिन्न-भिन्न शाखाओं के भिन्न-भिन्न ब्राह्मण भी हैं। वैदिक मंत्रों और योग-विधियों का पारस्परिक संबंध है। एक दूसरे को समझने के लिये इनके समवेत-ज्ञान की परमावश्यकता रहती है। और, बिना ब्राह्मण-ग्रंथों के जाने यह शक्य नहीं। प्रसंग-वश, आवश्यकता-वश अथवा उदाहरणार्थ इनमें कुछ कथाओं का भी समावेश हुआ है, तथापि साहित्यिक दृष्टि से भी ये ग्रंथ अत्यंत महत्त्व के हैं। धर्म-विधान से संबंधित किसी भी भाषा के साहित्य की अपेक्षा ये ग्रंथ पुरातन हैं, और रचना-सौष्ठव की दृष्टि से अत्यंत श्रेष्ठ, अतएव विभिन्न धर्मों के ऐतिहासिक अध्ययन के लिये ये बड़े महत्त्व के एवं परमानंदप्रद हैं। भारतीय संस्कृति की महत्ता के जिज्ञासुओं के लिये तो इनका परिशीलन परमावश्यक है। किंतु वेद-विज्ञान तभी यथावत् हो सकता है, जब उसके अंगभूत ग्रंथों—ब्राह्मण, आरण्यक, सूत्रोपनिषद्—का क्रमबद्ध अध्ययन किया जाय। इन ब्राह्मणादि ग्रंथों में संहिता के प्रत्येक विषय का, अपने-अपने दृष्टिकोण से, शृंखला-बद्ध विवेचन है। उसके जाने बिना उस विषय का मर्म-ज्ञान संभव नहीं। और, ब्राह्मण, आरण्यक, सूत्र, उपनिषद् को जितना देखा जाय, उतना ही उस-उस विषय पर प्रकाश पड़ता जाता है—विषय की महत्ता और अंतरंग विदित होता है। आगे चलकर पुराणों में इन्हीं विषयों का रूप-कालंकार-युक्त वर्णन हो गया है, परंतु उसका मूल शृंखला-बद्धरूपेण वैदिक प्राप्त होता है।

वेदों के पश्चात् ब्राह्मण-ग्रंथों में अधिकतर पुरातन ब्राह्मण-ग्रंथ तैत्तिरीय माना जाता है। यह कृष्ण यजुर्वेदीय तैत्तिरीय-शाखा का गद्य-विभाग है। इसकी रचना बड़ी आज-पूर्ण एवं सुंदर है। तैत्तिरीय ब्राह्मण तीन विभागों में विस्तृत, स्वतंत्र ग्रंथ है। इसी का परिशिष्ट भाग तैत्तिरीय आरण्यक है। इसी ब्राह्मण के ७ से ९ तक के प्रकरण को तैत्तिरीय उपनिषद् कहा जाता है। ब्राह्मण-साहित्य से हमारी सामाजिक, सांस्कृतिक,

* अरण्याध्ययनादेतदारण्यकमुदीर्यते—सायणः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्यिक एवं भौगोलिक अवस्था का बहुत कुछ ज्ञान प्राप्त हो जाता है।

उदाहरणार्थ—ऐतरेय ब्राह्मण में कुरु और पांचाल, अयोध्या, विदेह तथा अवंती का भी नाम आया है। यह हम पहले बतला चुके हैं कि ब्राह्मण-ग्रंथ याज्ञिक विधान के पुनीत रहस्य का ज्ञान

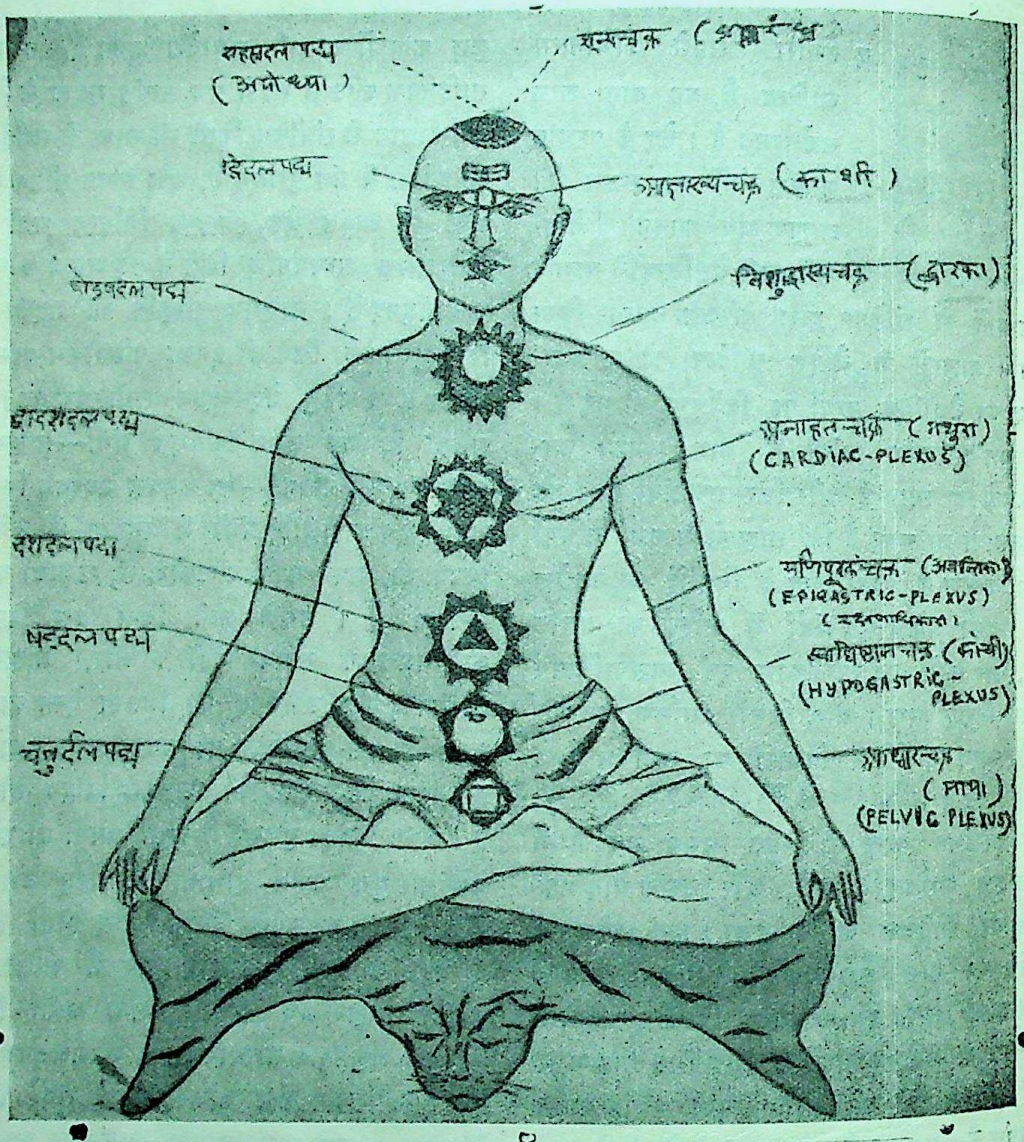

षट्चक्रमूर्ति (सिद्धासन)

पांचाल-देश का नाम आया है, तांड्य-ब्राह्मण में सरस्वती और दृषद्वती के मध्यवर्ती स्थानों का उल्लेख हुआ है, वैसे ही यजुर्वेद के ब्राह्मणों में कुरु, देनेवाले हैं, अतएव उनका आध्यात्मिक होना ज़रूरी है। उनमें आया हुआ वर्णन आध्यात्मिकता से रिक्त नहीं हो सकता। देश, नदी, स्थान,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी भी विषय का वर्णन हो, उसमें आध्यात्मिक पुट ज़रूर रहेगा। इन ग्रंथों में साहित्यिक, सामाजिक, भौगोलिक वर्णन आया है, किंतु वह भी आध्यात्मिक वाद के अंतर्गत ही हुआ है। ब्राह्मणों में जगत् की संपूर्ण वस्तुओं का अथवा दूसरे शब्दों में समष्टि का व्यष्टि में पूर्णतया समन्वय करके दिखलाया गया है। संसार की कोई वस्तु नहीं, जो व्यष्टि में घटित न हो सके। उदाहरणार्थ अग्नि, वायु, सूर्य आदि के प्रमाण उपस्थित किए गए हैं, और बतलाया गया है कि हममें और बाह्य जगत्-व्याप्त वस्तुओं में भेद नहीं ❀। ऐसे ही साहित्यिक और भौगोलिक वर्णनों में अध्यात्म का पुट लगा हुआ है। उदाहरणार्थ यहाँ तैत्तिरीय ब्राह्मण का एक मंत्र उद्धृत करते हैं—

वागक्षरं प्रथमजा ऋतस्य
वेदानां माताऽमृतस्य नाभिः,
सा नो जुषाणोपयज्ञमागात्
अवन्तीदेवी सुहवा मे अस्तु।
(तैत्ति० ब्रा० २ का०, प्रपा० ८, अ० ८)

वस्तुतः इस ब्राह्मण-मंत्र का अर्थ वाणी की स्तुति के रूप में है। किसी देश-विशेष के वर्णन के लिये वेद में स्थान भी क्यों हो। किंतु जहाँ अवंतीदेवी के रूप में वाणी का बोध होता है, वहाँ 'अवंती'-नगरी का भी सहज परिचय मिल जाता है। परंतु इसके लिये हमें, जैसा ऊपर बतला चुके हैं, ब्राह्मण, आरण्यक, सूत्र, उपनिषद् और पुराण का शृंखला-बद्ध परिचय आवश्यक है। अकेले मंत्र से या 'नाम-साम्य' से निर्णय पर पहुँचना उचित न होगा, मंत्र में अवंती-शब्द से वाणी की स्तुति है। इसी प्रकार—

अष्टचक्रा नवद्वारा देवानां पूरयोध्या, तस्या ४९
हिरण्मयः कोषः स्वर्गो लोको ज्योतिषावृतः।
(कृ० यजु० तैत्ति० आरण्यक प्रपा० १,
अनु० २७)

इस मंत्र में अयोध्या-शब्द आया है। इसका अर्थ करते हुए भाष्यकार ने—'अयोध्या'—'कर्मगतिमन्तरेण केनापि प्रहर्तुमशक्या' कहा है। दोनों में नगर-नाम स्पष्ट होते हुए भी उनका प्रतिपादन आध्यात्मिक है। एक प्रकार से यह आध्यात्मिक भूगोल है। परंतु इसके समझने के लिये ज़रा और अंतस् में प्रवेश करने की आवश्यकता है। हम ऊपर कह आए हैं कि समष्टि की वस्तुजात का व्यष्टि में समावेश किया गया है, तदनुसार पुराणों में भी तीर्थों का शरीर ही में अभिनिवेश सूचित किया गया है, और वे आध्यात्मिक तीर्थ-वर्णन के नाम से कहे जाते हैं। समस्त तीर्थों का शरीर के विभिन्न अंगों में अधिष्ठान माना गया है। स्वयं भगवान् श्रीकृष्ण ने गीता में कहा है—

"इदं शरीरं कौन्तेय! क्षेत्रमित्यभिधीयते।"

उपर्युक्त मंत्र को ही लीजिए। इसमें अवंती-वाणी की स्तुति करते हुए बतलाया गया है—

'वेदानां माता' और 'अमृतस्य नाभिः।'

अर्थात् अमृत की नाभि है, अर्थात् वाणी-स्थान शरीर में नाभि-प्रदेश है। वाणी चार प्रकार की है। जिसका नाम 'परा' वाणी है, वह मोक्षमार्गानुगामियों की साधना का मूल है। उस वाणी

❀ 'अग्निर्यथैको भुवनं प्रविष्टो'
'वायुर्यथैको भुवनं प्रविष्टो'
'सूर्यो यथा सर्वलोकस्य चक्षुः' इत्यादि।
(क) जाया भूमिः पतिर्द्यौर्मे मिथुनं ता अनुर्यभुः पुत्रो बृहस्पती रुद्रः सरमा इति—प्रपा० १, अनु०, १०, मं० २।
(ख)—प्रपा० ३, अनु० ६, मं० १
(ग) प्रपा० ३, अनु० ४, मं० १
(घ) द्वितीयकांडे प्रपा० ६, अनु० ५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वारा साधना सुलभ होती है, और इस वाणी का उत्पत्ति-स्थान नाभि-देश है।

तैत्तिरीयारण्यक के निम्नोल्लिखित मंत्र पर विचार करने से हमारा आशय अधिक स्पष्ट हो सकेगा—

"चत्वारि वाक्परिमितानि पदानि,
तानि विदुर्ब्राह्मणा मे मनीषिणः ;
गुहा त्रीणि निहिता नेंगयन्ति,
तुरीयं वाचो मनुष्या वदन्ति।"

इसकी टीका करते हुए भाष्यकार लिखते हैं—

"येयं वाक्सा परिमितेयत्तया परिच्छिन्नानि चत्वारि पदानि, चतुरोऽवयवान्प्राप्य वर्तते, परा पश्यन्ती मध्यमा वैखरीत्येते चत्वारः पादाः। तानि चत्वार्यपि पदानि मे ब्राह्मणा मनीषिणः शास्त्रज्ञास्ते विदुर्नेतरे मूढाः, तत्र हेतुरुच्यते, त्रीणि परा पश्यन्ती मध्यमे त्वेतानि पदानि गुहायां शरीरमध्ये निहितानि स्थापितानि वर्तन्ते नेङ्गयन्ति न तु बहिः प्रसरन्ति वाचस्तुरीयं वैखरीयाख्यं पदं मनुष्याः सर्वे वदन्ति—उच्चारयन्ति।"

अर्थात् परा, पश्यंती, मध्यमा और वैखरी, ये वाणी के चार भेद हैं। उनमें से जो ब्रह्म-वेत्ता मनीषी लोग हैं, वे चारो ही को जानते हैं, और लोग इन सभी को नहीं जानते। तीन प्रथम भेद का स्थान 'गूढ़' है। शरीर में उन तीनो का स्थान 'गुह्य' है। इनका प्रसार बाहर नहीं होता। चतुर्थ वाणी, जिसका नाम 'वैखरी' है, उसका सर्व-साधारण उपयोग करते ही हैं*।

* विस्तार-सहित—वाणी की चार वृत्तियों का रूप इस प्रकार है—

(१) वैखरी—यह 'श्रोत्र से ग्रहण हो' इस अर्थ का वाचक स्थूल शब्द है। कंठादि स्थानों से आघात होने पर वायु 'वर्ण' का आकार ग्रहण कर लेता है, अर्थात् साधारणतः यह शब्द प्राण की वृत्ति को आश्रय कर प्रयुक्त होता है, इसलिये इसका उद्भव आकाश तथा वायु, दोनो से माना जाता है। यह भी 'परा' वाणी से ही उत्पन्न होती है। स्पष्ट शब्दोच्चार का नाम 'वैखरी' है।

(२) मध्यमा—यह प्राणवृत्ति के अतीत श्रोत्र का अविषय तथा अंतः संकल्प-रूप अर्थात् चिंतन के रूप में भीतर-ही-भीतर चलनेवाला है। परामर्श ज्ञान इसी का दूसरा नाम है। यह शुद्ध बुद्धि-परिणाम है, और क्रम-विशिष्ट है, तथा स्थूल शब्द का कारण भी है।

(३) पश्यंती—इसका नामांतर अक्षर-बिंदु है। यह स्वयंप्रकाश वर्णों के अविभाग के कारण क्रम-हीन है।

(४) परा (अथवा सूक्ष्मा)—इसे कहीं-कहीं 'नाद' भी कहा गया है। यह अभिधेय बुद्धि का बीज है। इसका स्वरूप ज्योतिर्मय है, और हर पुरुष में भिन्न-भिन्न प्रकार का है। सुषुप्ति में भी इसकी निवृत्ति नहीं होती। परावाक् के स्वरूप से पुरुष के रूप का पृथक् साक्षात्कार करने पर ही पुरुष का भोगाधिकार निवृत्त होता है, और यही प्रमुख विवेक-ज्ञान है।

जब तक इसका उदय नहीं होता, तब तक शब्दानुबिद्ध ज्ञान से अतीत विशुद्ध निर्विकल्पक ज्ञान प्राप्त करने का कोई उपाय नहीं होता।

द्वैत मत में परावाक् का अतिक्रम करने पर मोक्ष प्राप्त होती है, और अद्वैत मत में परावाक् परमेश्वर की स्वतंत्र शक्ति का ही नामांतर है, और वह चिद्रूपा है, पूर्णावस्था प्राप्त होने पर यह आत्मा अथवा परमेश्वर में अभिन्न रूप से रहती है।

परावाक् पश्यंती आदि क्रम से उत्तरोत्तर भिन्न-भिन्न भूमियों को प्रकाश प्रदान करती है। वर्णों से

इस संबंध में शिक्षाकार भी कहते हैं—

आत्मा बुध्या समेत्यार्थान्मनो युंक्ते विवक्षया ;
मनः कायाग्निमाहन्ति सा प्रेरयति मारुतम्।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मारुतस्तूरसि चरन्मन्द्रं जनयति स्वरं ;
प्रातः सवनयोगं तं छन्दो गायत्रमाश्रितम् ।
कण्ठे माध्यन्दिनयुगं मध्यमे भैष्टुभानुगम् ;
तारं तार्तीय सवनं शीर्षण्यं जगतानुगम् ।
सोदीर्णो मूर्ध्निभिहतो वक्त्रमापद्य मारुतः ;
वर्णाञ्जनयते तेषां विभागः पंचधा स्मृतः ।
स्वरतः कालतः स्थानात्प्रयत्नानुप्रदानतः ;
इति वर्णविदः प्राहुर्निपुणं तं निबोधत ।

जिस समय बोलने की इच्छा होती है, तब एक कालावच्छिन्न ही आत्मा-बुद्धि का सहयोग हो जाता है, और मन उसमें योग देता है, फिर मन 'कामाग्नि' को धक्का देता है, और उस आघात से वायु को प्रेरणा होने लगती है। वायु हृदय में संचार कर शनैः-शनैः मंद स्वर की सृष्टि करता है। इस प्रकार स्वर-संधान होता है। इतना कार्य तुरंत होकर 'वाणी'-प्रादुर्भाव होता है। उसके भी पाँच प्रकार हैं। इन विभेदों को—'गूढ़-पाद-त्रयों' को—मनीषी लोग ही जानते हैं, 'नाभि'-स्थान की रचना मणियों की तरह तंतु-निर्मित है*, और वहाँ वायु का आवास है, जो शरीर को वायु-पूरित करता है। अतएव इस चक्र द्वारा जिस वायु की प्रेरणा से वाणी का जन्म होता है, वह परासंज्ञक वाणी होती है। इसीलिये प्रथम सूचित मंत्र में वाणी को 'अमृतस्य नाभिः' की उपमा दी गई है।

पूर्वोक्त मंत्र * की व्याख्या करते हुए सायण भाष्य-कर्ता का कथन है—

"येयं वाक् सैवाक्षरमविनश्वरं परमात्मस्वरूपं तत उत्पन्नत्वात् । सा चतस्य यज्ञस्य प्रथमजा प्रथममुत्पादयित्री, मंत्रैर्हि कर्माण्युत्पद्यन्ते, अतएवाऽऽथर्वणिका आमनन्ति—'तदेतत्सत्यं मंत्रेषु कर्माणि कवयो यान्यपश्यन्' इति, अमृतस्य नाभिरमृतत्वं हि देवत्वं, वाचि नह्यते—बध्यते, मंत्रपूर्वकानुष्ठानेन तत्प्राप्तिः, सा वाग्देवी, जुषाणा—प्रीतियुक्ता—सती, नोऽस्मदीयं यज्ञमुपागात्प्राप्नोतु, सा च देव्यवन्त्यस्मान् रक्षन्ती मे—मम सुहवा सुखेनाऽऽह्वातुं शक्याऽस्तु ।"

अर्थात् वह वाणी, जो अविनश्वर परमात्म-स्वरूप है, यज्ञ की प्रथमोत्पादयित्री है, क्योंकि मंत्रों द्वारा ही कर्म की उत्पत्ति होती है, ऐसा आथर्वणों का मत है। वह 'अमृतनाभि' यानी अमृतत्व (अर्थात् देवत्व) जिस वाणी से संबद्ध हो जाता है, मंत्र-पूर्वक अनुष्ठान से ही देवत्व की प्राप्ति होती है, उस वाणी को यज्ञ-कर्म में सुख-पूर्वक आमंत्रित करने की सामर्थ्य प्राप्त हो, यह प्रार्थना की है। अर्थात् आध्यात्मिक कर्म में जिस 'परा' वाणी की इस मंत्र में प्रार्थना है, वही 'नाभि-स्थान' से उत्पन्न होती है।

ही समस्त विश्व की उत्पत्ति होती है, इसलिये तांत्रिकों ने इसे विश्वजननी मातृका-नाम से सूचित किया है।

और भी—

"आत्मनः स्फुरणं पश्येद्यदा सा परमा कला ;
अम्बिकारूपमापन्ना परावाक् समुदीरिता ।"

इस परावाक् का अधिष्ठान 'मणिपूर-चक्र' अर्थात् 'नाभि-देश' है।

—(गो० कविराज)

* नाभि-स्थान का नाम 'षट्चक्र' में 'मणिपूर' (Solar-Plex) है। वाराह-पुराण में—'मणिपूर' स्थान में अवंतिका का अधिष्ठान माना गया है। 'मणिपूरमवंतिका'। और, इसका नाम मणिपूर क्यों है, इस पर 'ध्यान-बिंदूपनिषद्' में लिखा है—

मणिवत्तन्तुना यत्र वायुना पूरितं वपुः ;
तन्नाभिमण्डलं चक्रं प्रोच्यते मणिपूरकम् ॥ ४८ ॥

* "वागक्षरं प्रथमजा ऋतस्य
वेदानां माताऽमृतस्य नाभिः ;
सा नो जुषाणोपयज्ञमागात्
अवन्तीदेवी सुहवा मे अस्तु ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'पूरिति शरीरमुच्यते' इस तैत्तिरीय की सूचना से शरीर को ही (भगवत्कथनानुसार—'शरीरं कौन्तेय क्षेत्रमित्यभिधीयते') तीर्थों के रूप में विभाजित कर उसके विभिन्न अंगों में उन-उन स्थानों की सयुक्तिक योजना की है। 'अवंती'-शब्द 'नाभि-देश' में निहित है, शरीर का भी मध्य भाग नाभि-देश है, इसलिये भारतीय भौगोलिक दृष्टि से भी वह 'मध्य' में आता है, अतएव यह मान लेने में कोई आपत्ति नहीं दिखाई देती कि यह नाभि-देश 'अवंती' वर्तमान 'अवंतिका' ही है।

अब हम ज़रा इस योजना को क्रमबद्ध रूप में उपनिषद् के विशदीकरण से मिलान कर देखें कि कहाँ तक ठीक है। याज्ञवल्क्य से महर्षि अत्रि ने प्रश्न किया कि यह जो अनंत, अव्यक्त, परिपूर्णानंद, चिदात्मा है, उसे कैसे जाना जाय? याज्ञवल्क्य ने बतलाया, इसके जानने के लिये 'अविमुक्त' की उपासना की जानी चाहिए। फिर प्रश्न किया कि यह अविमुक्त कहाँ, किस जगह प्रतिष्ठित है? तब याज्ञवल्क्य बहुत रहस्य-पूर्ण उत्तर देते हैं—'वरणायां नास्यां च प्रतिष्ठितः' अर्थात् 'वरणा' और 'नासा' के बीच में प्रतिष्ठित है। दूसरे शब्दों में यह स्पष्ट ही 'वाराणसी' (काशी) का उल्लेख है। इस पर फिर प्रश्न होता है कि यह 'वरणा' और 'नासि' कौन है? तब उक्त ऋषि व्याख्या करते हैं—'जन्मांतर-कृत समस्त दोषों का नाश करे, (वारयति इति 'वरणा') वह वरणा, और समस्त इंद्रिय-जनित पापों का नाश करे, वह 'नासि'।' अब शरीर में इसका स्थान बतलाते हुए एक प्रश्न के उत्तर में याज्ञवल्क्य ने कहा है कि भौंहें और घ्राण की जो संधि है, वह इसका स्थान है। इस संधि-संध्या की उपासना ब्रह्मवेत्ता-गण करते हैं। यही 'अविमुक्त' की उपासना है, और यही 'अविमुक्त'-ज्ञान है। इसी उपनिषद् के वर्णन के अंत में स्पष्ट शब्दों में ही कह दिया है—"श्रीरामस्य मनुः काश्यां जजाप वृषभध्वजः।" अतएव जिस 'वरणा' और 'नासि' की व्याख्या की थी, वह 'काशी' नगरी ही थी।

यह पूरा वर्णन मूल-रामोत्तर-तापिन्युपनिषद् (२८) के अनुसार इस प्रकार है—

"य एवं वेद स मुक्तो भवति इति याज्ञवल्क्यः अथ हैनमत्रिः पप्रच्छ याज्ञवल्क्यं य एषोऽनन्तोऽव्यक्तपरिपूर्णानंदैकचिदात्मा तं कथमहं विजानीयामिति स होवाच याज्ञवल्क्यः। सोऽविमुक्त उपास्योऽयम्। एषोऽनन्तोऽव्यक्त आत्मा सोऽविमुक्ते प्रतिष्ठित इति। सोऽविमुक्तः कस्मिन्प्रतिष्ठित इति, वरणायां नास्यां च प्रतिष्ठित इति। का वै वरणा, का च नासीति। जन्मान्तरकृतान्सर्वान्दोषान्वारयतीति तेन वरणा भवतीति, सर्वानिन्द्रियकृतान्पापान्नाशयतीति तेन 'नासी' भवतीति, कतमच्चास्य स्थानं भवतीति, भ्रुवोर्घ्राणस्य यः संधिः स एष द्यौर्लोकस्य परस्य च सन्धिर्भवति। एतद्वै सन्धिसन्ध्यं ब्रह्मविद् उपासदिति। सोऽविमुक्त उपास्य इति, सोऽविमुक्तं ज्ञानमाचष्टे, यो वा एतदेवं वेद अथ तं प्रत्युवाच—श्रीरामस्य मनुः काश्यां जजाप वृषभध्वजः।"

'अवंती' की तरह ही 'वाराणसी' का भी यह वर्णन आध्यात्मिक रूप से उपनिषद् में आया है। इसी प्रकार आत्मतीर्थ का आध्यात्मिक वर्णन करते हुए जाबालि-उपनिषद् का उद्धरण भी बहुत महत्त्व-पूर्ण है। इसमें अनेक तीर्थों का स्पष्ट शरीर पर अभिनिवेश है—

श्रीपर्वतं शिरः स्थाने केदारं तु ललाटके;
वाराणसी महाप्राज्ञ भ्रुवोर्घ्राणस्य मध्यमे ॥४८॥
कुरुक्षेत्रं कुचस्थाने प्रयागं हृत्सरोरुहे;
आत्मतीर्थं समुत्सृज्य बहिस्तीर्थानि यो व्रजेत्;
करस्थं स महारत्नं त्यक्त्वा काचं विमार्गते ॥५०॥
...आत्मतीर्थं महातीर्थमन्यत्तीर्थं निरर्थकम्;

सिर पर श्रीपर्वत, ललाट पर केदार, भौंहें, नासा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के मध्य पर काशी, स्तनस्थान पर कुरुक्षेत्र और हृदय पर प्रयाग, इस प्रकार शरीर पर ही तीर्थों की स्थापना कर इसे आत्मतीर्थ कहा है। इस प्रकार शरीर पर ही तीर्थों का अधिष्ठान करनेवाली कल्पना का पौराणिक वर्णन उद्धृत करते हैं, जो तैत्तिरीयारण्यक उपनिषद् के आधार पर ही निर्मित है, और उसका उल्लेख भी इस पौराणिक वर्णन में है, इससे यह बहुत स्पष्ट हो जाता है कि किस प्रकार एक दूसरे का सामंजस्य ही किसी वेदगत विषय के पूर्ण ज्ञान के लिये परमावश्यक है। मंत्रों में जो बात सूत्र-रूप में प्रतिपादित है, उसकी व्याख्याएँ ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषदादि ग्रंथों में यथास्थान हुई हैं। पर वे व्याख्याएँ याज्ञिक विधान के रूप में आध्यात्मिक आवरण में ही आई हैं, क्योंकि यही उनका वर्णनीय दृष्टिकोण है। रूपकालंकार-रूप में उन-उन तथ्यों का ज़रूर ग्रहण हुआ, जिनका उन रहस्यों में से निकाल लेना विस्तृत अध्ययन तथा सूक्ष्मावलोकन पर ही निर्भर है। वाराह-पुराण का नवम अध्याय अध्यात्म का समन्वयसूचक है। उसमें 'अध्यात्मतीर्थ-वर्णनाध्याय' शरीर पर ही तीर्थ-स्थान का कल्पक है। देखिए—

यानि तीर्थानि वाराहो जगाद धरणीं प्रति ;
तानि तीर्थानि देवर्षे तिष्ठन्ति नरविग्रहे ॥६॥
स्नानकाले सदा विद्वान् तानि तीर्थानि संस्मरेत् ;
ब्रह्मरन्ध्रादधोऽयोध्या सहस्रार तु तद्विदुः ॥१०॥
अष्टचक्रा नवद्वारा देवानां पूरयोध्यया ;
तस्यां हिरण्मयः कोष इत्येषा तैत्तिरी श्रुतिः*॥११

उक्त श्लोक में वराह ने जिन तीर्थों का पृथ्वी पर वर्णन किया है, वे सभी मानव-शरीर में ही रहते हैं, यह बतलाया है। ब्रह्मरंध्र के नीचे, जिसे 'सहस्रार' भी कहते हैं, 'अयोध्या' का स्थान है, यह अष्टचक्र और नवद्वारवाली देवताओं की नगरी अयोध्या है। इस श्लोक में स्पष्ट रूप से "इत्येषा तैत्तिरी श्रुतिः" की सूचना से श्रुति के तथोक्त मंत्र की स्मृति दिलाई गई है। आगे चलकर और तीर्थों का भी वर्णन इसी प्रकार है।

'मथुरा' को 'अनाहत-चक्र' कहा है, जो योगियों का हृदय-स्थान है, और 'माया'-पुरी को मूलाधार-स्थित बतलाया है‡। 'काशी' को 'आज्ञा-चक्र'

* इस ग्यारहवें श्लोक में स्पष्ट ही 'तैत्तिरी-श्रुति' का उल्लेख किया गया है। यह वर्णन उसी श्रुति का रूपांतर-मात्र है। केवल पौराणिक व्याख्या से उसका विस्तार अवश्य किया गया है। वह श्रुति यह है—

अष्टचक्रा नवद्वारा देवानां पूरयोध्या ; तस्या श्वं हिरण्मयः कोषः स्वर्गो लोको ज्योतिषावृतः ॥ ५ ॥
(कृ० यजु०, तैत्तिरीयारण्यक—प्रपा० १, अनु० २७)

इसका मतलब यह है कि 'पू' यह शरीर का नाम है। देव—इंद्रादि का शरीर 'अष्टचक्रा' है, अर्थात् चक्र की तरह—जिनमें चर्म, स्नायु, मेद, अस्थि, मज्जा, शुक्र, ओजादि के रूप में धातुएँ आवृत हैं, वह अष्टचक्रा, शिरोवर्ती ७ द्वारों से तथा अधोवर्ती दो द्वारों से युक्त ऐसी नवद्वारा—अयोध्या' अर्थात् कर्म-गति आदि किसी प्रकार भी अप्रहार्य। उस पुरी में हिरण्मय का कोष यानी सुवर्ण-निर्मित पदार्थ-सदृश अवकाश-रूप स्वर्ग-सुखमय लोक स्थान-विशेष है। इस व्याख्या में—'तस्यां पुरी'... और "स्वर्गसुखमयो लोकः स्थानविशेषः ज्योतिषा—जीवचैतन्याऽऽवृतः", ये शब्द ध्यान देने योग्य हैं। स्पष्ट 'अयोध्या' को 'पुरी', 'स्थानविशेष' और 'जीवचैतन्यावृत' बतलाते हैं। पुराण का उपर्युक्त श्लोक तो इस 'श्रुति' का स्वल्पतम परिवर्तित रूप है। यह प्रकट है कि वैदिक श्रुति की नगर-सूचना की इस पुराण-श्लोक में ज़रा स्पष्ट व्याख्या ही है।

‡ मथुराऽनाहत चक्रं हृदयं योगिनां विदुः ;
मूलाधारं भवेन्माया सर्वाधारमयी यतः ॥ १२ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर अधिष्ठित माना है। और, 'स्वाधिष्ठान'-चक्र पर 'कांची' तथा 'मणिपूर-चक्र' पर 'अवंतिका' का अधिष्ठान है*। यह मणिपूर-चक्र नाभिस्थान में है †। यह कितना सुसंगत एवं शृंखला-बद्ध वर्णन है। जो बात मंत्र द्वारा सूत्र-रूप में सूचित थी, वह आरण्यक-व्याख्या में थोड़ी अधिक स्पष्ट हुई, और उपनिषद् में ज़रा और अधिक हुई, और पुराण में तो उसकी शृंखला जोड़ते हुए इतनी अधिक स्पष्टता हो गई कि संदेह का अवसर नहीं रहता। वाराह-पुराण के इस (नवम) अध्याय के अंत में इतना ज़्यादा स्पष्टीकरण हो गया है कि आध्यात्मिकता का परदा भी इतना झीना हो गया है कि सारा भेद ही चित्र की तरह असली स्वरूप में सामने आ जाता है—

भ्रुवोर्मध्ये स्थिता काशी तदेवानंदकाननम् ;
भ्रुवोर्व्राणस्वयं संधिरित्येषा तैत्तिरी श्रुतिः ॥२२॥

तथा—

कालंजरो ललाटे स्यात्साक्षात्शंभोर्निवेशनम् ;
नाभिदेशे महाकालस्तन्नाम्ना तत्र वै हरः ॥ २४ ॥

नाभिदेशे तथा विद्वान् चिंत्यते मोक्षकांक्षिभिः २५

उक्त दो श्लोकों में श्रुति के मंत्र का अनुवाद ही हो गया है, और मोक्ष-चिंतकों के 'नाभि'-देश में 'महाकाल' का अधिष्ठान है, यह तो बिलकुल ही स्पष्ट हो गया। अब देखिए, मूल-मंत्र में 'अवंती-' शब्द वाणी के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। वह 'वाणी' 'नाभि' से उत्पन्न होती है, क्योंकि उसे 'अमृतस्य नाभिः' कहा है। वहाँ से उस वाणी द्वारा 'मोक्षा-कांक्षीगण' चिंतन करते हैं। वह षट्चक्र में 'मणि-पूर' है, यह उपनिषद् ने स्पष्ट किया। यह 'मणिपूर'—नाभि-देश शरीर-मध्य में 'तीर्थ' के रूप में स्थापित है, यह संगति क्रम-विकास के अनुसार ज्ञात होती है। इस संगति के अनंतर यह स्पष्ट हो जाता है कि 'अवंती' का उल्लेख उस मंत्र में देश-विशेष, स्थान-विशेष को लक्ष्य करके ही हुआ है। इसी प्रकार (प्रपा० १, अनुवाक २७) द्वितीय मंत्र में जहाँ—"देवानां पूरयोध्या" कहकर अयोध्या-तीर्थ का अर्थांतर में प्रयोग किया गया है, उसकी व्याख्या में तो स्पष्ट ही 'तस्यां पुरीं' और 'सुख-मयो लोकः—स्थानविशेषः' बतलाकर आशय सर्वथा असली रूप में वर्णित कर दिया गया है। वैदिक यज्ञों का रूप भी कुछ इसी प्रकार का है। वह 'हवन-कर्म' के रूप में भी वर्णित है। पर 'ज्ञान-यज्ञ' के रूप में तो उसी प्रकार वर्णित है, जैसे अवंती और अयोध्यादि स्थानों के नाम। प्रपाठक ५, आ० १, विभाग १ में ऐसी ही एक श्रुति आई है—

"देवा वै सत्रमासत, ऋद्धिं परिमितं यशस्कामाः। तेऽब्रुवार, यज्ञः प्रथमं यश ऋच्छात् सर्वेषां नस्तत्सहादिति, तेषां कुरुक्षेत्रं वेदिरासित्, तस्मै खाण्डवो दक्षिणार्धं, आसीत्। तूघ्नमुत्तरार्धः। परिणज्जघनार्धः। मख उत्करः। तेषां मखं वैष्णवं यश आर्च्छत्।"

पहले एक समय देवों ने यश की कामना से समस्त ऋद्धि-साधन-समृद्धि-समन्वित, प्रौढ़ सत्र (यज्ञ) का अनुष्ठान करने का विचार किया, तब समय—काल के अनुरूप यह निश्चय किया कि यह यश व्यक्ति-विशेष को प्राप्त न हो, बल्कि सर्व-साधारण को इसका लाभ होना चाहिए। इस पर परस्पर चर्चा करने के अनंतर कर्म-प्रवृत्ति के समय जो 'वेदी' (यज्ञ-वेदी) निश्चित हुई, वह 'कुरु-क्षेत्र' ही 'वेदि' स्थान बना। इसके व्याख्याकार सायण ने कहा है—"यत्कुरुक्षेत्रं पुराणप्रसिद्धं सैव

* आज्ञाचक्रं स्मृता काशी याबालाश्रुतिमूर्धनि ;
स्वाधिष्ठानं स्मृता कांची मणिपूरमवन्तिका ॥१३॥
(वाराह-पुराण ६ अ०)

† मणिवत्तन्तुना यत्र वायुना पूरितं वपुः ;
तन्नाभिमण्डलं चक्रं प्रोच्यते मणिपूरकम् ।
(योग-कुंडलिनी-उपनिषद्)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'वेदि'रासीत्।" अर्थात् समग्र 'कुरुक्षेत्र' वेदी माना गया। इसी प्रकार वेदी के अनंतर अन्य स्थानों में यज्ञ-विशिष्ट भागों की स्थापना कल्पित हुई। इस तरह यज्ञ-विधान भी देश-स्थानों पर प्रस्थापित किया गया था। शरीर और स्थानों (तीर्थों) में जिस प्रकार याज्ञिक विधानों का अधिष्ठान माना गया, उसका वास्तविक रूप ज़रा आध्यात्मिक भावना के परदे को ऊपर उठाकर देखा जाय, तो मौलिक रूप में प्राप्त हो जाता है। आगे चलकर 'शिक्षा' आदि ग्रंथों में 'वेद-पुरुष' का जब वर्णन किया गया है, तो वहाँ भी वेद के अंतर्गत विषयों का—अंगों का उक्त प्रकार से ही हुआ है।

जैसे 'शब्द-शास्त्र' (व्याकरण), यह वेद-पुरुष का 'मुख' है। ज्योतिषशास्त्र वेद-पुरुष के नेत्र हैं। निरुक्त को वेद के 'कान' कहा है। कल्प हस्त है, और शिक्षा वेद की नासिका है। दोनो चरण 'छंद' हैं *। इस तरह समग्र वेदांत ही वेद-पुरुष के शरीर में भिन्न-भिन्न अंगों के ही स्थान पर है। ऐसे अनेक देशों, नगरों, नदियों, स्थानों के वर्णन रूपांतर, अर्थांतर के रहस्यमय स्वरूप में आध्यात्मिक भावना से आवृत वेदादि-साहित्य में यत्र-तत्र विस्तृत हैं, यदि हम एक-एक मंत्र-श्रुति का यथाक्रम सभी दृष्टिकोणों से, सूत्र-बद्ध और क्रम-बद्ध तथा ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद्, पुराणादि शृंखला-क्रम के अनुसार अनुसंधान, विचार करें। सूक्ष्म निरीक्षण करें, तो अवश्य अनेक गूढ़तम रहस्यों का, जो अब भी अज्ञात हैं, परिचय प्राप्त कर सकेंगे। अभी तक हमारे पुरातत्त्वज्ञों का—संशोधकों का यह मत है कि वेदों में उन्हीं स्थानों—जलाशयों आदि का वर्णन है, जिन्हें प्रथमतः आर्यों ने जाना है। भारत के विभिन्न स्थानों का उस समय तक उन्हें पूरा परिचय नहीं था। वे यदि इस प्रकार प्रत्येक मंत्रों का अंतर्गत रहस्य अवलोकन करें, तो 'अवंती', 'अयोध्या' की तरह अनेक स्थानों का, अनेक विषयों का वैदिक साहित्य में व्यापक वर्णन प्राप्त हो सकेगा। और, यह भी विदित होता है कि वैदिक काल में अवंती आदि देशों का आर्यों को पूर्ण परिचय भी था।

ऊपर जिस 'षट्चक्र' का हमने उल्लेख किया है, वह योग-साधकों का जाना हुआ विषय है। 'षट्चक्र' की शरीर में कैसी स्थिति है, क्या रूप है, और कैसी उनकी आकृति—वर्ण आदि है, यह साथ के चित्र से स्पष्ट हो सकेगा। इस चित्र में मानव-शरीर में जिन तीर्थों की आध्यात्मिक-रूपेण 'षट् चक्रों' की यौगिक परिभाषा के शब्दों में (अभिनिवेश) प्रतिष्ठा हुई है, वे कौन-से स्थान हैं, यह भी स्पष्ट हो सकेगा। वे 'षट्चक्र' ये हैं *—

१ मूलाधार, २ स्वाधिष्ठान, ३ मणिपूर, ४ अनाहत, ५ विशुद्ध ६ और आज्ञाचक्र †।

इनका शरीर में इस प्रकार विभाजन हुआ है—

---

* शब्दशास्त्रं मुखं ज्योतिषं चक्षुषी,
श्रोत्रमुक्तं निरुक्तं तु कल्पः करौ;
या तु शिक्षास्य वेदस्य सा नासिका
पादपद्मद्वयं छन्द आद्यैर्बुधैः।—शिक्षा

* षट्चक्राणि परिज्ञात्वा प्रविशेत्सुखमंडलम्;
मूलाधारं स्वाधिष्ठानं मणिपूरं तृतीयकम् ॥ ९ ॥
अनाहतं विशुद्धं च आज्ञाचक्रं च षष्ठकम्;
आधारं गुदमित्याहुः स्वाधिष्ठानं तु लिङ्गकम् ॥१०॥
मणिपूरं नाभिदेशं हृदयस्थमनाहतम्;
विशुद्धिः कंठमूले च आज्ञाचक्रं तु मस्तकम् ॥११॥
(योग-कुंडलिनी-उपनिषद्)

† "इडापिंगलयोर्मध्ये सुषुम्णा या भवेत्खलु;
षट् स्थानेषु च षट् शक्तिष ् पद्मं योगिनो विदुः।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१	२	३	४
मूलाधार	स्वाधिष्ठान	मणिपूर	अनाहत
गुदा	लिंग	नाभि	हृदय
५	६		
विशुद्ध	आज्ञा		
कंठ	मस्तक ।		

इन नामों का शरीर के उस-उस विभाग में जो स्थान माना है, उनकी आंतरिक रचना सर्वथा वैज्ञानिक एवं शरीर-रचना भूगोल से सुसंगत है। यह विषय स्वतंत्र है, यहाँ स्थान और अवसर नहीं कि उस पर प्रकाश डाला जा सके।

अब इन 'षट्चक्र' में जिन-जिन तीर्थों का प्रतिष्ठान श्रुति, उपनिषद् तथा पुराण-सूचित है, वह इस प्रकार है—'सहस्रार' पर अयोध्या, जो ब्रह्मरंध्र के नीचे है, और अष्टचक्रा-नवद्वारा है, तथा हिरण्मय कोपस्थ है। यह स्थान मस्तक पर है (सहस्रदल पद्म)

१	२	३	४
मथुरा	मायापुरी	काशी	कांची
अनाहत-चक्र पर है	मूलाधार	आज्ञा	स्वाधिष्ठान
५	६		
अवंतिका	द्वारका		
मणिपूर	विशुद्ध		

इन स्थानों को षट्चक्रों से योजित कर भारत के मानचित्र में (वैदिककालीन) अवलोकन किया जाय, तो शरीर का भौगोलिक स्वरूप भी सुसंगत हो जाता है, और आध्यात्मिक आवरण में जो भौगोलिक रहस्य विदित है, वह भी स्पष्ट हो जाता है। यह जानकर अधिक विस्मय होता है कि यह योजना कितनी वैज्ञानिक और गूढ़ अर्थ-पूर्ण है।

MAGIC WAND

Are you interested in your own good ? Do you want to Please and Influence others– your equals, inferiors and superiors– readily ? Do you want to Escape the Influence of your own friends and foes ? Do you want all round Success and Happiness in Life ? If so, become possesed of the following easy, short, practical special occult scientific Instructions on (1) "How to Win Peoples' Favour & Confidence Quickly ?" (2) "How to Shake Hands and Influence People at a Glance ?" and (3) "Unique Scientific Methods of Influencing People for Success and Happiness in Life."

Rare occult scientific methods and unique practical knocks; no tedious reading; statement of naked truths without draperies (including mention of certain nerves, muscles etc., by gently touching which according to directions you may Influence or cause others– ladies and gentlemen– to respect, love, like, please or obey you. This piece of knowledge alone is worth thousands of Guineas). Several methods of Pleasing and Influencing others without shaking the hand– from a distance- by conversation, gaze, thought, letter, Handkerchief, Sweets, fruits, flowers, etc., will also be found.

The Instructions are useful alike to ambitious ladies and gentlemen, high and low, rich and poor, employed and unemployed, etc., desirous of staying in power rising in the world, making business and financial success, and fame, gaining livelihood (employment, promotion, practice, etc.) and freedom, and in short meeting with Success and Happiness in Life, everywhere generally. The same may be mastered on one reading only within half an hour and brought into use IMMEDIATELY. They surely serve for a Magic Wand in one's possession if prudently employed. Cheap at any price. Special Price Today Rs. 10/8/– (Foreign One Guinea) each. But if you apply mentioning this paper, you may have the three together now for Rupees 21/– (Foreign Two Guineas) only in advance. No V. P. P. The Manager, Success House, Fatehpur Sikri, (Agra.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उड़ते सितारे

भारतीय चित्रपट की उज्ज्वल तारिका **विमला कुमारी** कहती हैं—"मैंने चाय को सर्वदा आश्चर्यजनक तरो ताजा करने वाली पाया है।" चित्र-तारिका का जीवन एकाग्रता तथा खिंचाव का जीवन है और स्वभावतः वे सर्वदा चाय का ही भरोसा करती हैं। यह बहुत ही तरो ताजा करने वाला पेय है। यह चित्तको प्रसन्न भी करता है। चाय को अपना पहला प्रियपात्र बना इये।

सब 'सितारों' की प्रिय-भारतीय चाय

इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित

IK 129 B

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी के दो पठनीय गद्य-काव्य

१. शारदीया

लेखिका, कुमारी दिनेशनंदिनी चोरड्या। हिंदी में गद्य-गीतों की जो शैली चली है, वह नई होते हुए भी भावमय है। कुमारीजी गद्य-गीतों के लिखने में हिंदी-संसार में काफ़ी प्रतिष्ठा पा चुकी हैं। आपके गद्य-गीत बहुत ही सुंदर, सरल और सरस होते हैं। मूल्य सादी ॥), सजिल्द १)

२. एक दिन

लेखक, बाबू भगवतीचरण वर्मा। आप हिंदी के प्रसिद्ध और प्रतिभावान् कवि हैं। आपकी उत्कृष्ट रचनाओं से हिंदी-प्रेमी भली भाँति परिचित हैं। 'एक दिन' भी आपके ही गद्य-पद्यमय काव्य का संग्रह है। इसमें जीवन के सच्चे और गहनतम विचार सरल, सुबोध और सरस ढंग से वर्णन किए गए हैं। पुस्तक सांस्कृतिक शिक्षाओं से ओत-प्रोत है। मूल्य सादी ॥), सजिल्द १)

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर-वधुओं का पथ-प्रदर्शन करनेवाला अमूल्य साहित्य

१--दांपत्य जीवन

लेखक, श्रीरामनारायण 'यादवेंदु' बी० ए०, एल्-एल्० बी०। यह नवविवाहित दंपतियों को आनंद देनेवाली अद्वितीय पुस्तक है। इस ग्रंथ में विवाह के उपरांत के गहन प्रश्न—आलिंगन, चुंबन तथा सहवास आदि—पर बहुत ही मार्मिक एवं वैज्ञानिक विवेचन किया गया है। वैवाहिक जीवन को संसार में स्वर्ग बनानेवाली यह राष्ट्र-भाषा में केवल एक ही पुस्तक है। मूल्य सादी १), सजिल्द १॥)

२--काम-विज्ञान

रचयिता, उदीयमान लेखक पंडित दीनानाथ व्यास विशारद। इस विषय पर हिंदी-भाषा में इने-गिने ग्रंथ हैं, किंतु उनमें वैवाहिक समस्याओं को समझाने की चेष्टा तक नहीं की गई। वैवाहिक शिक्षण, विषय का नैतिक धरातल, वैषयिक उत्कंठा, दांपतिक साम्य, सच्चा वैवाहिक जीवन आदि इसकी प्रमुख विशेषताएँ हैं। मूल्य सादी १), सजिल्द १॥)

३—फूलों की सेज

लेखक, श्रीविजयबहादुरसिंह बी० ए०। इस अपूर्व पुस्तक में वयस्क युवक-युवतियों एवं नव-विवाहित वर-वधुओं के हित की बातों का बड़ा ही मार्मिक वर्णन हुआ है। इसके मुख्य-मुख्य विषय ये हैं—यौवन, स्त्री-पुरुष के कर्तव्य, स्तन, ऋतु-धर्म, शय्या, समागम, अप्राकृतिक गमन, ऋतु-बाधा, प्रदर, हिस्टीरिया, वीर्य और आर्तव, गर्भाधान, वंध्यात्व, गर्भावस्था-समय, गर्भ रहने के लक्षण, दौर्हृद, गर्भ-स्राव और गर्भ-प्रसव इत्यादि। पुस्तक तरुणियों के लिये जीवन-प्रदीप है। इसमें अश्लीलता, अभद्रता एवं कामासक्तता का लेश-मात्र भी समावेश नहीं। मूल्य सादी २), सजिल्द २॥)

४—आदर्श पत्नी अर्थात् इंदिरा के पत्र

लेखक, श्रीरामनारायण 'यादवेंदु' बी० ए०, एल्-एल्० बी०। इस पुस्तक में नारी-हृदय और पुरुष-हृदय की ऐसी रहस्यमयी बातें बतलाई हैं कि जिनके समझे बिना दांपत्य विवाहित जीवन सुखी नहीं बन सकता। इसमें केवल-मात्र सिद्धांतों (Theories) का विवेचन नहीं है, प्रत्युत क्रियात्मक रूप से प्रत्येक विषय पर प्रकाश डाला गया है। पुस्तक सर्वथा शिष्ट, संयत और सुंदर भाषा में लिखी गई है। मूल्य १), सजिल्द १॥)

५—सुखी जीवन

लेखक, आचार्य श्रीचतुरसेन शास्त्री। प्रस्तुत पुस्तक में आचार्यजी ने अधिकार-पूर्ण सिद्धांतों का प्रतिपादन किया है। स्त्रियों का बचपन, उनका गार्हस्थ्य जीवन, उनकी तंदुरुस्ती आदि विषयों की जानकारी प्राप्तकर लेने पर स्त्रियाँ अपना जीवन निस्संदेह सुख-पूर्वक बिता सकती हैं। मूल्य सादी ॥), सजिल्द १)

मिलने का पता—गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी के सर वाल्टर-स्कॉट बाबू वृंदावनलालजी वर्मा

की

सुंदर रचनाएँ

(१) गढ़-कुंडार

यह हर्षवर्धन की मृत्यु के बाद भारत के इतिहास के निर्माता चंदेलों, पँवारों, परिहारों और खंगारों के पारस्परिक संघर्ष से ओत-प्रोत, मध्यकालीन भारत की राजनीतिक चालों से भरा हुआ बुंदेलखंड का एक ऐतिहासिक उपन्यास है। मूल्य २॥), सजिल्द ३)

(२) बिराटा की पद्मिनी

इस मर्म स्पर्शी घटनाओं से पूर्ण ऐतिहासिक उपन्यास में बिराटा की 'पद्मिनी'-नामक वीर कन्या का वीरता-पूर्ण चरित्र-चित्रण है। मूल्य २॥), सजिल्द ३)

(३) लगन

विवाह में ठहराव की कुप्रथा, समधियों का झगड़ा, पति-पत्नी का अविरल प्रेम, पर-स्त्रियों पर नैन-सैन चलानेवाले गुंडों की दुर्गति और अंत में सच्चे प्रेम की विजय देखने के लिये इस उपन्यास को अवश्य पढ़ें। मूल्य ॥), सजिल्द १)

(४) संगम

गंगा, यमुना और सरस्वती के संगम से भी अधिक उपादेय और महत्त्व-पूर्ण यह जाति-गंगा का संगम है। इस उपन्यास में आपको अंतर-जातीय संबंध का अच्छा दिग्दर्शन होगा। मूल्य २), सजिल्द २॥)

(५) प्रत्यागत

मां का जितना सुंदर, सजीव, ज्वलंत, उज्ज्वल एवं स्वाभाविक चरित्र-चित्रण इस उपन्यास में वर्माजी ने किया है, अन्यत्र दुर्लभ है। इस उपन्यास की 'मा' संसार के सर्वश्रेष्ठ उपन्यासकारों द्वारा निर्णीत 'मा' से टक्कर ले सकती है। भारतीय साहित्य को छोड़िए, पश्चिमीय साहित्य के ज्वलंत औपन्यासिक भी एक बार इस 'मा' के लिये नवेंगे, तरसेंगे। मूल्य सादी १), सजिल्द १॥)

(६) कुंडली-चक्र

वर्माजी की लेखनी का चमत्कार यदि देखना हो, तो इसे अवश्य पढ़ें। यह काशी-विश्वविद्यालय में बी० ए० में कोर्स है। मूल्य १), सजिल्द १॥)

(७) प्रेम की भेंट

प्रेम के दीवाने एक युवक और एक सुंदर लड़की का सच्चा क़िस्सा पढ़कर आप चकित हो जायँगे। मूल्य १), सजिल्द १॥)

(८) कोतवाल की करामात

वर्माजी पर हिंदी-संसार को गर्व है। इस छोटे-से सामाजिक उपन्यास को रोचक बनाने में वर्माजी ने कुछ उठा नहीं रक्खा। वर्णित घटना बिलकुल सच्ची है। मूल्य १), सजिल्द १॥)

(९) धीरे-धीरे

इस पुस्तक में लेखक ने वर्तमान राजनीतिक हलचल का आश्चर्य-जनक चित्र खींचा है। मूल्य ॥), सजिल्द १)

मिलने का पता—गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कालसी में अशोक-आश्रम की प्रस्तावित योजना

[श्रीयुत प्रो० धर्मदेव शास्त्री]

प्राक्कथन

छ साल पहले जब मैं देहरादून आया था, तब समझता था, देहरादून एक सभ्यतम प्रदेश है। भौगोलिक दृष्टि से ही नहीं, सभ्यता की दृष्टि से भी मैं देहरादून को ऊँचा समझता था। वस्तुतः देहरादून का अतीत है भी बहुत भव्य। आचार्य द्रोण के ही नाम से इस ज़िले का और मसूरी की ऊँची पर्वत-श्रेणी—द्रोणाचल—का नामकरण हुआ है। देहरादून के एक ओर गंगा और दूसरी ओर यमुना बहती हैं, जिनसे इस प्रदेश की पावनता प्रकट होती है। प्राकृतिक झरनों, दृश्यों और सुंदर छोटी-छोटी वनस्थलियों से यह प्रदेश स्वर्ग-सम प्रतीत होता है। देहरादून-ज़िले के साथ राम, लक्ष्मण और भरत के पावन चरित्र का संबंध है। हृषीकेश में भरत-मंदिर और लक्ष्मण-झूला-जैसे पुरातन स्मारक इसके प्रमाण हैं। पांडवों ने इसी प्रदेश में ऐहलौकिक लीला समाप्त की। जौनसार बावर में पांडवों के अनेक स्मारक मिलते हैं। मध्य-युग के सम्राट् अशोक ने कालसी-नामक स्थान पर शिला-लेख खुदवाकर देहरादून की ऐतिहासिक महत्ता और सांस्कृतिक विशेषता स्थिर रक्खी।

आज जब विश्व-वंद्य, युग-पुरुष महात्मा गांधी संसार को वर्तमान संक्राति-काल में, मानवता के इतिहास में, बलवान् की अहिंसा के उच्चतम आदर्श की देन दे रहे हैं, तब सम्राट् अशोक का कालसीवाला शिला-लेख महत्त्व-पूर्ण हो जाता है। संसार के इतिहास में शायद अशोक ही ऐसा उदाहरण है, जिसने बलवान् की अहिंसा उपस्थित की है। विजयी सम्राट् होकर भी हिंसा द्वारा प्राप्त विजय को पराजय कहकर स्वयं शस्त्र-त्याग का जो आदर्श सम्राट् अशोक ने कलिंग-विजय के बाद रक्खा, वह संसार के इतिहास में अभूतपूर्व घटना है। ये भाव अशोक ने कालसी के त्रयोदश शिला-लेख में व्यक्त किए हैं। इस शिला-लेख में अहिंसा और नैतिकता के आधार पर अफ़ग़ानिस्तान तक की विजय का वर्णन है। वास्तव में भारतवर्ष की सीमा अफ़ग़ानिस्तान तक ही है। ख़ैर।

परंतु बहुत कम व्यक्ति यह जानते होंगे कि कालसी जौनसार बावर का ही एक हिस्सा है, और जौनसार बावर असभ्य तथा बहिष्कृत प्रदेश है।

१९३५ के गवर्नमेंट ऑफ़ इंडिया-ऐक्ट में भारत के जो प्रदेश शासन-सुधार से वंचित रक्खे गए, उनमें यह प्रदेश भी है।

यमुना के तट पर स्थित अशोक का शिला-लेख देखकर मुझे आज से छ वर्ष पूर्व—जब मैं सर्वप्रथम कालसी देखने गया था—यह ध्यान हुआ कि यहाँ बौद्ध और आर्य-संस्कृतियों का संगम बन सकता है। इसके बाद कालसी का शिला-लेख देखने का कई बार अवसर मिला। प्रतिबार आत्मा पर इसे सांस्कृतिक क्षेत्र बनाने के संबंध में अदृश्य संस्कार पड़ते रहे हैं—यह इसलिये भी कि हमारे देश में सांस्कृतिक स्थान हैं भी बहुत कम।

पिछले दिनों जब एक कार्य-वश पूज्य बापूजी के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पास जाने का अवसर हुआ, तब तो यह भाव स्पष्ट हो गया कि मुझे सब कुछ छोड़कर, कालसी में एक आश्रम बनाकर पिछड़े हुए ८० हज़ार नर-नारायण की सेवा को ही जीवन की एकमात्र साधना बनाना चाहिए। महात्माजी ने जब मुझसे पूछा—"तुम क्या करते हो ?", तब आत्मा को बहुत कष्ट हुआ कि सचमुच मैंने कोई स्थायी कार्य नहीं किया। मुझे ऐसा लगा कि पूज्य बापूजी मुझे यह प्रेरणा कर रहे हैं कि मैं देहरादून-शहर छोड़ दूँ, और कालसी में एक आश्रम बनाकर जा बैठूँ, और वहाँ सेवा करते-करते जीवन खपा दूँ। पूज्य महात्माजी के प्रश्न का उत्तर मैंने यह दिया—"मेरी इच्छा यह होती है कि मैं कालसी में एक आश्रम बनाकर बैठ जाऊँ।" मेरा उत्तर सुनकर जब गांधीजी ने ये शब्द कहे—"हाँ, मेरी इच्छा भी कालसी का शिला-लेख देखने की है।" तब मुझे ऐसा लगा कि अब तो विश्व के महान् पुरुष का यही आदेश है कि मैं कालसी में जाकर बैठूँ।

मैं देखता हूँ, मैं एक साधारण-सा व्यक्ति हूँ। यह कार्य महान् है, और पवित्र भी। आजकल सार्वजनिक जागृति के साथ ही अनेक संस्थाएँ बन जाने से जनता पर बोझ भी बहुत बढ़ गया है। परंतु यह भी ठीक है कि पिछड़ी हुई जातियों में सेवा की दृष्टि से जो कुछ कार्य हो रहा है, वह नगण्य है। जौनसार बावर में तो कुछ भी कार्य नहीं हुआ।

मेरा विश्वास है, देश में आज ऐसे व्यक्ति अनेक हैं, जो कार्य के औचित्य पर विचार करके दान करते हैं। मेरा विचार जगह-जगह घूमने का नहीं। मैं यहाँ जौनसार बावर का संक्षिप्त परिचय लिख रहा हूँ। मैं पाठकों के उत्तर की प्रतीक्षा करूँगा। आशा है, पाठक इस योजना पर विचार करके निम्न-लिखित पते पर मुझे लिखेंगे—

भारती-मंदिर
६०, राजपुर रोड, देहरादून

जौनसार बावर

सन् १९३५ के गवर्नमेंट ऑफ़् इंडिया-ऐक्ट में भारत के जिन प्रदेशों को शासन-सुधार से वंचित रक्खा गया, जहाँ आज भी एसेंबली के क़ानून लागू नहीं होते, बल्कि जो सीधे गवर्नर के शासन में हैं, उनमें जौनसार बावर का इलाक़ा भी मुख्य है। जौनसार बावर छोटा-सा प्रदेश या क़स्बा नहीं। इसका क्षेत्रफल २५,११४ वर्गमील है, और जन-संख्या ८०,००० से अधिक। देहरादून का आधा ज़िला इस प्रदेश के अंतर्गत है। देहरादून की दो तहसीलों में एक तहसील चकरौता है, जो जौनसार बावर का केंद्र-स्थान है। सारी तहसील का ही नाम जौनसार बावर है।

कालसी से यह प्रदेश आरंभ होता है, जहाँ अशोक का शिला-लेख यमुना के किनारे स्थित है। कालसी प्राकृतिक दृष्टि से बहुत ही सुंदर और स्वास्थ्यप्रद स्थान है। यहाँ यमुना-नदी में ऊपर अमला और नीचे टोंस, ये दो नदियाँ मिलती हैं। चकरौता के उच्चतम शिखर के ठीक नीचे बसा होने से यह प्रदेश पांडवों के हिम-पात का द्वार प्रतीत होता है। यहाँ बौद्ध और आर्य-संस्कृतियों का सांस्कृतिक संगम बन सकता है, और दोनो संस्कृतियों के उच्चतम आदर्श—शूरवीरों की अहिंसा का प्रयोगात्मक केंद्र बनाया जा सकता है।

जौनसार बावर में तो जो कुछ भी कार्य हुआ, और हो रहा है, वह ईसाई-मिशनरियों द्वारा ही हुआ है। इसलिये वह एक विस्तृत सेवा का क्षेत्र है। यहाँ शिक्षा-संबंधी सामाजिक, सांस्कृतिक, सभी दृष्टियों से कार्य किया जा सकता है।

संक्षिप्त परिचय

जौनसार बावर के उत्तर-पूर्व में यमुना के संगम तक टोंस-नदी का धूमिल प्रवाह है। ठीक उत्तर में टिहरी-राज्य और पूर्व में जुब्बल और सिरमौर (नाहन स्टेट) है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राकृतिक विशेषता

कालसी के पास हरिपुर से एक पर्वत-माला प्रारंभ होती है, जो पश्चिम की ओर चकरौता और देववन होती हुई करंब के शिखरों तक जाती है। बैरात में इस पर्वत-माला की सबसे ऊँची चोटी है, जिसकी उँचाई समुद्र की सतह से ७,३९९ फ़ीट है। क्यावा के पास एक दूसरा शिखर है, जिसकी उँचाई ६,५५८ फ़ीट है। इसके बाद देववन है, जो ९,३३१ फ़ीट ऊँचा है। देववन की पर्वत-माला में नौ हज़ार और दस हज़ार फ़ीट ऊँचे अनेक शिखर हैं। यह जंगली स्थान अधिक पथरीला है। खेती के योग्य समतल भूमि भी बहुत कम है। प्रायः समस्त चट्टानें चूने के पत्थर की हैं।

खनिज पदार्थ

मेजर जनरल वेवेसफोर्ड लावेल्ट को कालसी तथा जलौटा-पुल के बीच में यमुना के दोनों ओर खनिज पदार्थों के अनुसंधान के लिये सरकार की ओर से अधिकार-पत्र मिला। बुसट में कच्चा लोहा मिला, जिसके कुछ नमूने इँगलैंड भेजे गए, और वे उपयोगी सिद्ध हुए। इसी तरह जौनसार बावर के अन्य स्थानों में लोहा, पाषाण, ताँबा आदि धातुओं का भी कुछ पता चला है।

जन-संख्या और धर्म

सन् १८८७ में २३,२२८, सन् १९०१ में ९१,१०१ और सन् १९३१ में ८०,००० जन-संख्या में हिंदुओं का प्राधान्य है। यहाँ मुसलमान बहुत कम हैं। हिंदुओं में भी हरिजन कहलानेवाली जातियों की अत्यधिक संख्या है। हिंदुओं की मुख्य जातियाँ चौहान, तोमर, नेगी, विष्ट, रावत-ब्राह्मण आदि हैं।

यहाँ अधिकतर लोग महासू या परशुराम के पुजारी हैं। लख-मंडल में परशुराम का एक प्रसिद्ध मंदिर भी है। पूर्वीय भाग में सूर्य की पूजा करनेवाले भी कुछ पाए जाते हैं। जौनसार बावर में चार देवताओं की पूजा होती है, जिन्हें महासू के नाम से पुकारा जाता है। बासक, पिबसक, बुधिया या बैथ और चालटा या चालडा, ये इनके वैयक्तिक नाम हैं। ये सब देवता ५०० वर्ष पूर्व काश्मीर से आए बताए जाते हैं। इनके संबंध की अनेक दंत-कथाएँ यहाँ प्रचलित हैं।

व्यवसाय

जौनसार बावर के लोगों का मुख्य व्यवसाय खेती है। बड़ी मुश्किल से छोटे-छोटे टुकड़ों में लोग खेती करते हैं, जिन्हें बरसात के बाद फिर ठीक करना पड़ता है। यहाँ का प्रधान अनाज मडुआ, गेहूँ और चावल है। अदरक, हल्दी और आलू की भी खेती होती है। सहायक उद्योग के रूप में ऊनवाले पशुओं का पालन भी होता है, परंतु इसका कोई संगठित व्यावसायिक केंद्र नहीं। घरों में पुराने ढंग से मधुमक्खी के छत्ते भी पाए जाते हैं। इस दिशा में भी वैज्ञानिक दृष्टि से कोई कार्य नहीं हुआ।

सामाजिक दशा

यहाँ की सामाजिक दशा बहुत बुरी है। यहाँ के लोग अपने आपको पांडवों का अनुयायी कहते हैं, इसलिये यहाँ बहुपति-प्रथा प्रचलित है। घर में सब भाइयों की एक ही पत्नी होती है। शायद इसका कारण यह भी हो कि यहाँ स्त्रियों की संख्या अपेक्षाकृत कम है। सन् १९०० में बच्चों की जन-संख्या-संबंधी रिपोर्ट से ज्ञात होता है कि एक हज़ार लड़कों के मुक़ाबिले में केवल ७६२ लड़कियों का जन्म हुआ। जो कुछ भी हो, यह निर्विवाद है कि बहुपति-प्रथा इस प्रदेश के जंगलीपन का ही नतीजा है। यहाँ शराब बनाने पर कोई रुकावट नहीं। घर-घर में शराब बनती है। शराब के मटके-के-मटके घरों में भरे रहते हैं। यहाँ छोटी जातियों के साथ—विशेषतः हरिजनों के साथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पशुओं का-सा व्यवहार होता है। हरिजन अथवा छोटी जाति के लोग ज़मीन नहीं ख़रीद सकते। ब्राह्मण और राजपूत ही ज़मीन ख़रीद और बेच सकते हैं।

शिक्षा

शिक्षा और संस्कृति की दृष्टि से यह प्रदेश बहुत ही पिछड़ा है। दो-चार इने-गिने स्थानों पर डिस्ट्रिक्ट-बोर्ड की तरफ़ से प्राइमरी स्कूल चलते हैं, जिनमें छोटी कहलानेवाली जातियों के लड़के नहीं पढ़ सकते। यहाँ की भाषा जौनसारी है, पर हिंदी प्रायः सभी समझ लेते हैं।

राजनीतिक स्थिति

जौनसार बावर में वे सब क़ानून लागू नहीं होते, जो ब्रिटिश भारत में लागू होते हैं। वहाँ आज भी पुराने ज़माने का दक़ियानूसी शासन चलता है। हरएक गाँव में समुदाय खेट कहलाता है। खेट का सरकारी मुखिया 'सदर सयाना' होता है। 'सयाना' छोटी जाति का कोई व्यक्ति नहीं हो सकता। जौनसार बावर में वस्तुतः सयानों का ही शासन है।

आश्रम की आवश्यकता

इस प्रकार देखने से प्रतीत होगा कि इस प्रदेश में एक बहुत बड़ा सेवा-क्षेत्र बन सकता है। हमें पूरा विश्वास है, यदि कालसी में एक केंद्रीय आश्रम चलाया जाय, और उसकी शाखाएँ जौनसार बावर के छोटे-छोटे ग्राम-केंद्रों में स्थापित हों, तो इस प्रदेश को शीघ्र ही कुछ वर्षों में असभ्यता के पाश से मुक्त करके सुसंस्कृत बनाया जा सकता है। फ़िलहाल कालसी में एक केंद्रीय आश्रम स्थापित करना चाहिए। कालसी में इसलिये कि यहाँ अशोक का ऐतिहासिक शिला-लेख है, यमुना का किनारा है, और पास ही चूहड़पुर-नामक एक बहुत बड़ी मंडी भी है। यहाँ से जौनसार बावर और नाहन-स्टेट का व्यापारिक आयात-निर्यात होता है। सहारनपुर से चकरौता तक जानेवाली पक्की सड़क पर कालसी स्थित है। कालसी में पोस्टऑफ़िस और कचहरी भी है। स्वास्थ्य की दृष्टि से कालसी में सारा वर्ष रहा जा सकता है। सबसे बढ़कर कालसी सांस्कृतिक दृष्टि से एक ऐतिहासिक स्थान है।

आश्रम की नीति

आश्रम का उद्देश्य सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से जौनसार बावर को सभ्य बनाकर राजनीतिक दृष्टि से भारत के अन्य प्रदेशों के समकक्ष बनाना होगा। आश्रम का कार्य-क्षेत्र शुद्ध सामाजिक और आर्थिक होना चाहिए। चलती हुई राजनीति से आश्रम के कार्यकर्ता अपने आपको पृथक् रक्खें। समाज-सुधार के कार्यों में आश्रम की नीति हरिजन-सेवक-संघ और आर्य-समाज की नीति का अनुसरण करे। आश्रम के प्रयोगात्मक केंद्रों में अधिक-से-अधिक साक्षर बालक और बालिकाएँ हों। अधिक-से-अधिक बालक और बालिकाओं के संस्कार हों। प्रत्येक घर पीछे कम-से-कम एक चर्ख़ा चले। वस्त्र की दृष्टि से गाँव अथवा ग्राम-केंद्र स्वावलंबी हों। आश्रम के अधीन ऊन का एक व्यावसायिक क्रेंद्र चलाया जाय। यहाँ जौनसार बावर के लोग ऊन या ऊन के वस्त्र 'चर्ख़ा-संघ' की मज़दूरी पर बेच और ख़रीद सकें। ऊन और सूत कातने और बुनने के लिये एक शिक्षण-केंद्र खोला जाय। हमारा विश्वास है, कि यदि ऊन का व्यवसाय व्यवस्थित ढंग से चलाया जाय, तो जौनसार बावर के इलाक़े की आय बहुत बढ़ सकती है। जौनसार बावर में वैज्ञानिक ढंग से मधु-मक्खी पालने के व्यवसाय के संबंध में प्रोत्साहन और शिक्षा देने से भी आर्थिक दशा बहुत कुछ सुधर सकती है। इसके लिये कालसी-आश्रम में मधु-मक्खी-पालन के शिक्षण का भी एक विभाग हो। जौनसार बावर के पर्वतों में जड़ी-बूटियाँ और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वनस्पतियाँ बहुतायत से पाई जाती हैं। आश्रम में इस प्रकार का भी एक विभाग खोला जाय, जो जौनसार बावर के लोगों को उपयोगी जड़ी-बूटियों का ज्ञान प्राप्त कराए। साथ ही वहाँ के लोगों से अच्छी जड़ी-बूटियाँ और वनस्पतियाँ ख़रीदकर जनता तक पहुँचाई जा सकें।

आनुमानिक बजट

आरंभ में आश्रम के लिये ज़मीन ख़रीदने और सिर छिपाने के लिये एक साधारण-सा मकान बनाने में जो व्यय होगा, उसके अतिरिक्त हम अपनी शक्ति-भर कम-से-कम ख़र्च में कार्य चलाने का इरादा रखते हैं। सभी विभागों के लिये हमें पाँच वर्ष तक ३,०००) प्रतिवर्ष चाहिए। आरंभ में ८,५००) की और ज़रूरत होगी—५,०००) केंद्रीय आश्रम की १०० बीघा ज़मीन ख़रीदने के लिये, ३,०००) आश्रम की इमारत के लिये और ५००) गोशाला बनाने और पशु ख़रीदने के लिये। प्रतिवर्ष आश्रम का कुछ बजट मोटे तौर पर इस प्रकार होगा—१,८००) १५) मासिक के हिसाब से १० कार्यकर्ताओं के निर्वाहार्थ। ६००) केंद्रीयाश्रम के व्यवस्थापक के निर्वाहार्थ। ३००) धर्मार्थ औषधालय के लिये। ३००) फुटकर ख़र्च। इस प्रकार कुल जोड़ ३,०००) होगा।

इसकी पूर्ति कैसे हो ?

यदि पाँच वर्ष तक १५) वार्षिक देनेवाले सौ व्यक्ति हों, तो १५००) वार्षिक होते हैं। यदि २५) वार्षिक देनेवाले पचीस व्यक्ति भी हों, तो ६२५) प्रतिवर्ष होते हैं। यदि दस व्यक्ति ऐसे हों, जो पाँच वर्ष तक १००) वार्षिक दें, तो १,०००) होते हैं। इस प्रकार आश्रम की वार्षिक आय का योग ३,१२५) हो जाता है।

प्रारंभिक ८,५००) के व्यय की पूर्ति कुछ ऐसे विशिष्ट व्यक्ति कर सकते हैं, जो अपने या अपने इष्ट-संबंधियों के नाम से आश्रम के लिये ५००) या १,०००) की रक़म दें, और उनके नाम का पत्थर आश्रम में लगवा दिया जाय। हमें विश्वास है, देश के धनी-मानी और विवेकशील व्यक्ति जौनसार बावर के पिछड़े हुए अस्सी हज़ार हमवतनों की भलाई के लिये इस योजना का स्वागत करेंगे।

ख़िज़ाब छोड़ो !

इस परीक्षित तथा सत्य-प्रमाणित तेल ने हज़ारों का बाल काला किया, आपका भी अवश्य काला करेगा। इससे बाल का पकना रुककर, यदि पका बाल खूँटी से स्थायी काला पैदा नहीं होगा, तो दूना दाम वापस की शर्त। अधिक उम्र ५) रु०, ४० से ऊपर ७) रु० का तेल मँगावें।

पता—बाल काला स्टोर्स, पो० कंसी सिमरी (दरभंगा)

शीघ्रपतन—नामर्दी

धातु का गिरना रोक, पतला धातु को गाढ़ा बना, बेहद स्तंभन पैदा करेगी, काम-शक्ति इतनी अधिक बढ़ जायगी कि आप उसे क़ाबू में नहीं रख सकेंगे। शक्ति कभी कम न होगी, और जवानी की-सी उमंग बराबर बनी रहेगी। दोनो का १०) रु०, एक का ६) रु०

पता—रिसर्च केमिकल वर्क्स, पो० बिहार नरसरी (दरभंगा)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साथी

[श्रीयुत कालीचरण चटर्जी एम्० ए०]

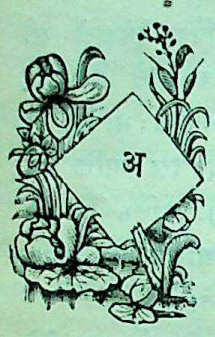

मीनाबाद-पार्क में, घंटाघर के ज़ीने पर, अपने आने-वाले दिनों की चिंता में मग्न अकेला बैठा था। नज़दीक ही से आवाज़ आई—"नमस्कार।"

आँखें उठाते ही मैं एकदम ठिठक गया; क्योंकि मैंने सपने में भी कभी न सोचा था कि मेरे कॉलेज के साथी गोपीनाथ से ऐसे बेवक्त, भेंट होगी। ख़ैर, आसानी से ही मेरे हाथ उठ गए, और 'नमस्कार' अपने आप मुँह से निकल गया।

क़रीब पाँच साल से गोपीनाथ से मुलाक़ात नहीं हुई। वही कॉलेज-जीवन की सरहद पर पहुँचकर उससे बिछुड़ना पड़ा था; उसके बाद, पाँच साल के लंबे समय के बाद, नवाबों की राजधानी के बीच में आज एकाएक मुलाक़ात!

कुछ देर तक घर-गिरिस्ती की बातों के बाद जिस सवाल को मैं टालना चाहता था, वही वह पूछ बैठा—"क्या करते हो आजकल?" घंटाघर की घड़ी में बारह बज रहे थे; उस वक्त तक अन्न का एक दाना भी पेट में नहीं गया था।

चेहरे पर बड़े आदमियों की तरह, जहाँ तक हो सका, गंभीरता का परदा खींचकर मैंने कहा—"एक कंपनी की मैनेजरी।"

"सच? बहुत अच्छी नौकरी हाथ आई है तुम्हारे। वाह भइ, वाह!" ख़ुश होकर वह बोला, मानो मुझे नौकरी मिलने से उसकी ख़ुशी मुझसे ज्यादा थी। लेकिन उसके सूखे और निराशा-भरे चेहरे की ओर ग़ौर से देखने पर मालूम हुआ कि मुझे नौकरी मिलने की ख़बर से वह बाहर जितना प्रसन्न मालूम होता था, अंदर उससे कहीं अधिक दुखी था, शायद अपनी बदनसीबी के कारण।

मैंने उदासी दिखाते हुए कहा—"अच्छा क्या, बहुत ही मेहनत है; दस बजे से पाँच बजे तक ड्यूटी अंजाम देते-देते मैं हैरान हो गया।"

अमीनाबाद-पार्क में चलते-चलते गोपीनाथ से बातचीत हो रही थी।

"मेहनत? उसमें क्या है? ऐसा वक्त आया है गिरजा कि हमारे-जैसे लोगों को नौकरी मिलना तो पानीपत की लड़ाई जीतना है। देखो न, मैं पाँच साल से भटक रहा हूँ। जिस दफ़्तर में गया, वहीं 'no vacancy' का पचड़ लगा-कर नाउम्मेदी का कोरा परचा मेरे हाथों में थमा दिया गया। इधर इतने दिन में घर की जायदाद घुन की तरह चाट गया हूँ। अगर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिखलाया जा सकता, तो मैं तुम्हें दिखलाता अपना हृदय चीरकर, उसमें कैसी आग जल रही है। सचमुच अब तो मेरा मन बैठा जा रहा है।"

गोपीनाथ दर्द-भरी आँखों से कहता गया। सचमुच उसका इस समय का अजब हाव-भाव देखकर कष्ट होता है।

चुपचाप उसकी बातें सुनकर उसे उत्साह देते हुए मैं बोला—"नाउम्मेद न हो भइ, ज़िंदगी एक लड़ाई है।"

वह जोश में आकर कहने लगा—"क्या कहा, नाउम्मेद न होऊँ? आज तुम्हें एक सहारा मिल गया है न, इसीलिये तुम ऐसा कह रहे हो; होती मेरी-सी हालत तुम्हारी, तो तुम्हारी समझ में आती यह बात!" गोपीनाथ का दुखी चेहरा तमतमा उठा, और वह मुँह बिचकाकर कहता गया—"ज़िंदगी का बढ़िया हिस्सा अगर लड़ाई करके गँवाया, तो विजय का फल कब भोगूँ? वाह री लड़ाई!" दुख की एक झलक उसके मुरझाए मुँह पर कौंध गई।

मन-ही-मन मैं खूब हँस लिया उसकी बातों पर। बेकार तसल्ली देने के लिये कपट-गंभीरता की मुद्रा में मैं फिर बोला—"अधीर न होना भइ, इनसान को मजबूर होकर ही वक़्त का साथ देना पड़ता है। ज़िंदगी में कामयाबी क्या इतनी आसानी से हासिल होती है?"

"ठीक है; लेकिन दुख और नाउम्मेदी की भी कोई हद होती है। खैर, और एक साल मैं कोशिश कर देखूँगा, नौकरी मिली तो मिली, नहीं तो कम्यूनिस्ट बन जाऊँगा—परमेश्वर की क़सम खाकर तुमसे कहता हूँ।" उसने अख़ीरी बात बहुत मज़बूती से कही।

टहलते-टहलते हम क़ैसरबाग़-चौराहे के फ़ौवारे के पास आ पहुँचे। उस समय मोती-जैसी पानी की बूँदें छिटक-छिटककर गिर रही थीं। गोपीनाथ ने कहा—"चलो, ताँगे से तुम्हारे मेस में चला जाय; बहुत दिनों से ताँगे पर चढ़ने का मौक़ा नहीं मिला। पैदल चलते-चलते पैर दुख गए हैं। लेकिन किराया तुम्हीं को देना पड़ेगा।"

रुपए-पैसे के बारे में वह हमेशा निष्कपट रहा; लेकिन मेरे पॉकेट में भी तो सन्नाटा राज्य कर रहा है, ठीक उसी का-सा। इसलिये बोला—"ताँगे की क्या ज़रूरत? गप-शप करते-करते चलना कैसा अच्छा मालूम हो रहा है।"

जेब से एक बीड़ी निकालकर उसे देते हुए मैंने कहा—"यह लो, थकावट-रफ़ा स्वदेशी सिगरेट।"

उसे जलाकर मुँह में लगाते हुए उसने कहा—"अपने दफ़्तर में ज़रा कोशिश कर देखो न, शायद कोई जगह हो जाय।" उसके ये शब्द एक हल्की मुस्कराहट में ग़ायब हो गए।

साफ़ दिल से एक कश लेकर मुँह से बीड़ी हटाते हुए मैंने जवाब दिया—"मेरे दफ़्तर में? कहा तो, कड़ी मेहनत है। तुमसे होगी भी?"

बीड़ी का गुल हटाते हुए जोश के साथ वह बोला—"ख़ूब होगी। वैसे तो अकारथ मेहनत की हद ही नहीं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हमारे दफ़्तर में नौकरी ज़रूर आसानी से मिल सकती है, लेकिन—"

मेरी बग़ैर ख़त्म हुई बात को उसी ने यों ख़त्म किया—"ज़बर्दस्त सिफ़ारिश की ज़रूरत है। यह क्या मैं नहीं जानता ? इतने दिन के तजुरबे से यह बात ख़ूब समझ में आई है। पर अपने दफ़्तर का नाम और पता तो बताओ; मैं स्वयं ही—" उसकी आँखों में आशा का प्रकाश फैलने लगा था।

यह सवाल पहले पूछने से शायद इतनी बात तथा इस नाटक की रचना न करनी पड़ती। ख़ैर।

बीड़ी से कसकर एक कश लेकर धुआँ मुँह से निकालते हुए मैंने कहा—"हमारे दफ़्तर का नाम ? अरे, उसे अभी तक बतलाया ही नहीं ! उसका नाम है 'भारतीय ख़ानाबदोश-कंपनी' और उसका पता है अमीनाबाद-क़ैसरबाग़ रोड का फ़ुटपाथ !"

पि० वेंकटाचल पंडित की आयुर्वेदीय लोकामयहर कस्तूर-गोलियाँ

ये गोलियाँ बहुमूल्य पदार्थों से—जैसे सोना, चाँदी, नेपाली कस्तूरी, मूँगा आदि से—बनाई गई हैं। इनको अलग-अलग या २ से ४ तक पान में खाने से हाज़मा बढ़ता है। हर प्रकार का बुख़ार दूर होता है। जल-वायु और भोजन के परिवर्तन का असर बराबर होता है, रक्त साफ़ होता है, तथा उसकी चाल अबाध्य होती है, खाँसी, सरदी, ज़ुकाम, पेट का दर्द, क़ब्ज़ियत कमर और छाती का दर्द, कमज़ोरी, जूड़ी-बुख़ार और प्लेग को नाश करती हैं। जिस स्थान में छूत की बीमारियाँ फैली हों, वहाँ नित्य पान के साथ ३-४ गोलियाँ दीजिए। बच्चों के रोग में जादू के समान असर दिखाएँगी। दाम ३०० गोलियों की बोतल का ।), डाक-महसूल अलग। ६ बोतलों का १॥)

मिलने का पता—

१२ बोतलों का मूल्य डाक-व्यय-सहित २॥।-)
२५ " " " ५≡)

श्रीसीताराघव वैद्यशाला, मैसूर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पतिपत्नी धर्म शिक्षक

विवाहित जीवन

विषय—वनस्पतियों में आनंदमय विवाह, प्राणिवर्ग में कामवासना, मानव-जननेंद्रिय-रचना सचित्र, एक बहुमूल्य रहस्य, वीर्य, मासिक धर्म, प्राणियों में गर्भाधान-विधि, कामवासना क्या है, विवाह प्रणाली, अनमेल-विवाह, गृहस्थ-धर्म, कन्या और जामाता के प्रति माता-पिता का उपदेश, वर के प्रति माता-पिता का उपदेश, नव-दंपति-रहस्य, सोहागरात, शयन-गृह तथा गर्भाधान-काल, अप्राकृतिक मैथुन, पर-स्त्री-गमन, मानसिक मैथुन, ब्रह्मचर्य, दिनचर्या, आदि विविध विषयों से विभूषित सचित्र व सजिल्द 'विवाहित जीवन' मूल्य १) ; पृष्ठ-संख्या २५०।

आर्य-समाज के धार्मिक नेता महात्मा हंसराज और श्रीनारायण स्वामी, शारदा ऐक्ट के निर्माता श्रीदीवान हरविलास शारदा तथा रायबहादुर मास्टर आत्मारामजी अमृतसर आदि महानुभावों से प्रशंसित तथा प्रमाणित पुस्तक है।

'विवाहित जीवन' पर कुछ सम्मतियाँ

रायबहादुर लाला जसवंत रायसाहब एम्० ए० डिस्ट्रिक्ट-सेशन जज बहादुर गुजराँवाला—विवाहित-जीवन का पवित्र लेख वास्तव में आदरणीय है।

लाला साईंदास साहब एम्० ए० प्रिंसिपल डी० ए० वी० कॉलेज, लाहौर—आपका 'विवाहित जीवन' लिखने का उद्देश्य प्रशंसनीय है।

लेखक—

मेहता सीताराम दत्त, कविराज

अनारकली, लाहौर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

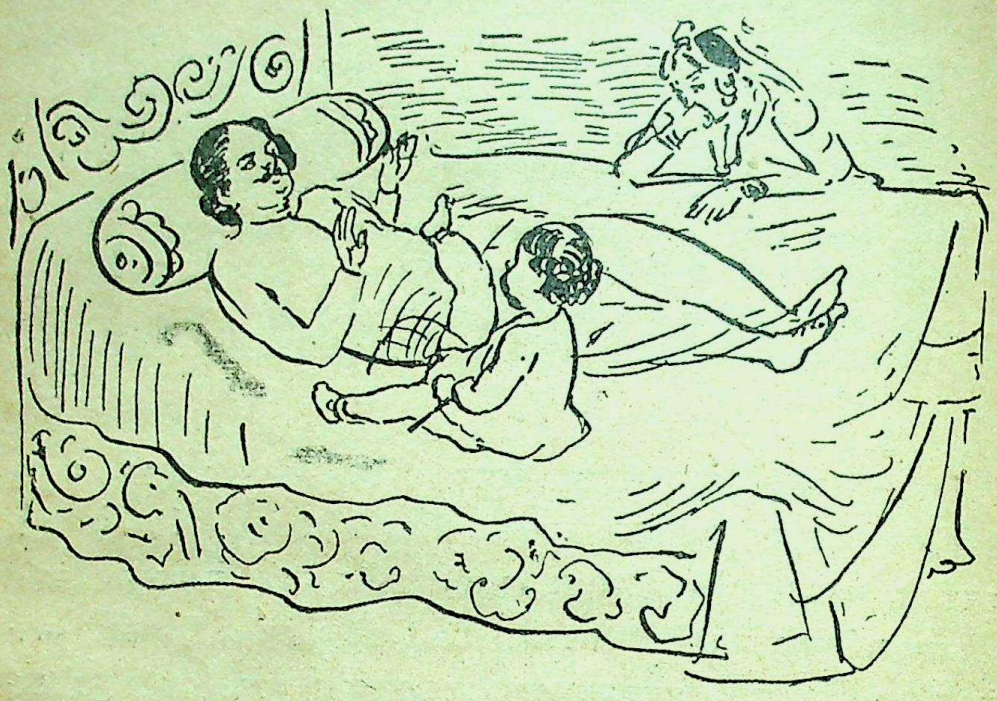

कथा-कहानियाँ

लेखक हैं मदरास-प्रांत के प्रसिद्ध वकील श्रीवि० रामनाथ अय्यर बी० ए०, बी० एल्०। दक्षिण-भारत की भाषाओं का साहित्य संस्कृत-साहित्य के समान ही बालोपयोगी कथा-कहानियों का ख़ज़ाना है। लाखों वर्ष पुरानी द्रविड़-संस्कृति और सभ्यता ने जीवन के अनुभव से जिस सत्य को ढूँढ़ निकाला है, वही सत्य इन कहानियों द्वारा आजदिन भी महाराष्ट्र, आंध्र, तामिल और कर्नाटक-देश में बालकों को हृदयंगम करा दिया जाता है। बालकपन से इस प्रकार सुशिक्षित किए जाने के कारण ही मदरासी युवक जीवन-संग्राम में सभी भारतीय युवकों से अधिक सफल होते हैं। यदि आप भी अपने पुत्र को श्रीनिवास शास्त्री, डॉ० सुब्रह्मण्य अय्यर और सर शंकरन नैयर बनाना चाहते हैं, तो उन्हीं मदरासियों द्वारा लिखी गई इन कहानियों को उन्हें सुनाइए। मूल्य सादी ।), जिल्ददार ।।)

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाइब्रेरी-संस्थापक स्थायी ग्राहकों के लिये नियम

(१) लाइब्रेरी-संस्थापक स्थायी ग्राहक बनने की प्रवेश-फ़ीस सिर्फ़ १) है।

(२) पुस्तकें प्रकाशित होते ही—१५ दिन पहले मूल्य आदि का 'सूचना-पत्र'* भेज देने के बाद—वी० पी० द्वारा भेज दी जाती हैं। ६) रुपए की ४-५ पुस्तकों का सेट एक साथ भेजा जाता है, जिसमें डाक-ख़र्च में बचत रहे।

(३) जो पुस्तकें हमारी प्रकाशित होती हैं, उन पर आपको २५) सैकड़ा तथा बाहर की—हिंदुस्थान-भर की—पुस्तकों पर —) रुपया कमीशन दिया जाता है।

(४) लाइब्रेरी-संस्थापक स्थायी ग्राहक जिस पुस्तक को चाहें, लें, जिस पुस्तक को न चाहें, न लें; यह उनकी इच्छा पर निर्भर है। पर साल-भर में कम-से-कम ६) की पुस्तकें लेकर हिंदी-साहित्य-प्रचार में हमारी सहायता करनी पड़ेगी।

(५) कम-से-कम ६) की पुस्तकें एक साथ लेने पर डाक-ख़र्च हमारे ज़िम्मे रहेगा, यानी माल हम पहुँचता हुआ देंगे, अतएव ६) की पुस्तकें एक साथ मँगाइए।

(६) स्थायी ग्राहकों की भूल से वी० पी० लौट आने पर डाक-ख़र्च उन्हें ही देना पड़ता है, और दो बार वी०पी० लौट आने पर लाइब्रेरी-संस्थापक स्थायी ग्राहकों की सूची से उनका नाम काट दिया जाता है।

---

* नई पुस्तकों में से यदि कोई या सब न लेनी हों, अथवा और कोई पुस्तक मँगानी हो, तो 'सूचना-पत्र' मिलते ही हमें पत्र लिखना चाहिए, जिसमें इच्छानुसार कारवाई कर दी जा सके। १५ दिन के अंदर कोई सूचना न मिलने पर, आपकी स्वीकृति समझकर, सब नई पुस्तकें वी० पी० द्वारा भेज दी जाती हैं। ६) की पुस्तकें होने के कारण डाक-ख़र्च ख़ुद हम देते हैं।

लाइब्रेरी-संस्थापक का आदेश-पत्र

प्रिय महाशय,

मैंने गंगा-पुस्तकमाला के नियम पढ़ लिए हैं। कृपया मेरा नाम उसके लाइब्रेरी संस्थापक स्थायी ग्राहकों में लिख लीजिए, और नीचे लिखी पुस्तकें वी० पी० द्वारा भेजकर अनुगृहीत कीजिए। प्रवेश-फ़ीस का १) भी उसी में वसूल कर लीजिएगा। मैं अपने इष्ट-मित्रों को भी माला का ग्राहक बनाऊँगा।

भवदीय—

[हस्ताक्षर कीजिए]

मेरा पता .....

.....

पुस्तकों के नाम .....

.....

.....

.....

.....

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी-
स मा लो च ना
के
अग्रदूत
— मासिक —
सा हि त्य-सं दे श
का ——— ही
यह
साहस
है

* शुक्ल-अंक का परिचय *

प्रस्तुत अंक तीन खंडों में है, और सचित्र छपा है।

परिचय—

१—परिचय	स्वर्गीय श्रीरामचंद्र शुक्ल
२—पंडित रामचंद्र शुक्ल जीवन-परिचय	बाबू श्यामसुंदरदास
३—आचार्य पं० रामचंद्र शुक्ल एक झाँकी	श्रीकेशवचंद्र शुक्ल
४—स्वर्गीय आचार्य का अंतिम दर्शन	श्रीशिवमंगलसिंह 'सुमन'
५—उन चार वर्षों की याद में	श्रीउदय एम्० ए०

समीक्षा—

६—शुक्लजी की मानसिक भूमिका	श्रीजैनेंद्र
७—शुक्लजी और हिंदी की परंपरा	श्रीरामविलास शर्मा
८—आचार्य शुक्ल और श्रीआई० ए० रिचर्ड्स एक अध्ययन	श्रीनगेंद्र एम्० ए०
९—हिंदी-आलोचना और आचार्य शुक्ल	श्रीनंददुलारे वाजपेयी
१०—आलोचक पं० रामचंद्र शुक्ल	श्रीरामस्वरूप शर्मा
११—आचार्य शुक्लजी और काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा	श्रीरामबहोरी शुक्ल
१२—शुक्लजी का आलोचकों में स्थान	श्रीशांतिप्रिय द्विवेदी
१३—रामचंद्र शुक्ल समालोचक और निबंधकार	श्रीनलिन विलोचन शर्मा एम्० ए०
१४—प्रबंधकार शुक्लजी	श्रीसद्गुरुशरण अवस्थी
१५—शुक्लजी के मनोवैज्ञानिक निबंध	श्रीगुलाबराय एम्० ए०
१६—हिंदी-साहित्य का इतिहास	श्रीविश्वभरदयाल 'मानव' एम्० ए०
१७—आचार्य शुक्लजी की सर्वप्रथम मौलिक रचना	श्रीशिवपूजन सहाय
१८—शुक्लजी के इंदौरवाले भाषण की कुछ विशेषताएँ	श्रीप्रभाकर माचवे
१९—शुक्लजी के काव्य में रहस्यवाद की झलक	श्रीगुलाबराय एम्० ए०
२०—अनूदित बुद्ध-चरित	श्रीगोपाल व्यास एम्० ए०
२१—शुक्लजी के अनुवाद	श्रीकृष्णदेवप्रसाद गौड़
२२—शुक्लजी की तीन भूमिकाएँ—जायसी, तुलसी, सूर	श्रीकन्हैयालाल सहल एम्० श्रीसत्येंद्र एम्० ए०, श्रीगुलाबराय
२३—शुक्लजी की हिंदी-साहित्य को देन	श्रीअयोध्यासिंह उपाध्याय, श्रीनलिनीमोहन सान्याल, श्रीवासुदेवशरण अग्रवाल, श्रीउदयनारायण तिवारी और श्रीप्रभाकर माचवे

आभार—इसमें अनेकों लेखकों के व्यक्तिगत पत्र संकलित हैं, संपादकीय।

६ म ही नों में चा र वि शे षां क
दो छप गए—दो और भी छपेंगे।
❀ नमूना मुफ्त मँगाइए ❀
मूल्य ३) वार्षिक, विद्यार्थियों के लिये २) पता—साहित्य-संदेश कार्यालय, आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्य-समाज

[मंगलाप्रसाद-पारितोषिक-विजेता श्रीयुत गंगाप्रसाद उपाध्याय एम्० ए०]

८ मार्च, १९४१ ई० को आर्य-समाज की ६६वीं वर्ष-गाँठ थी। आर्य-समाज की स्थापना ७ एप्रिल, १८७५ ई० अर्थात् चैत्र सुदी प्रतिपदा, संवत् १९३२ वि० को, बंबई में, हुई थी। उस दिन आर्य-समाज के कितने सदस्य थे, और कितने अन्य उसके साथ सहानुभूति रखते थे, यह ज्ञात नहीं। परंतु यदि सरकारी जन-गणना पर विश्वास किया जाय, तो आर्य-सामाजिकों की संख्या केवल भारतवर्ष में इस प्रकार है—

सन्	पुरुष	स्त्रियाँ	योग
१८९१	२२,६२४	१७,३२८	३९,९५२
१९०१	५२,०३१	४०,३८८	९२,४१९
१९११	१,३७,५८०	१,०५,८६५	२,४३,४४५
१९२१	२,५९,८८५	२,०७,६९३	४,६७,५७८
१९३१	५,४७,९६४	४,४२,२६९	९ ९०,२३३

१९३१ की जन-गणना के संबंध में कम विश्वास होता है। इसके दो कारण हैं—प्रथम तो १९३१ में कांग्रेस की ओर से जन-गणना का बॉयकाट किया गया था, और बहुत-से आर्य कांग्रेस में सम्मिलित होने के कारण जन-गणना के समय ठीक-ठीक अंक लिखाने से उदासीन हो गए थे। दूसरे, आर्य-सामाजिकों में संगठित रूप से यह उत्कंठा उत्पन्न नहीं हुई थी कि जन-गणना में अपने को आर्य लिखाने के महत्त्व पर विचार करें। पिछली जन-गणनाओं के विषय में अधिक जानकारी नहीं, परंतु १९३१ की जन-गणना तो अभी हाल की बात है। जब मैं इसके प्रांतीय अंकों पर विचार करता हूँ, तो अवश्य प्रतीत होता है कि अंक इतने कम नहीं होने चाहिए। जैसे बंगाल-भर में केवल २०१ लिखे गए। केवल कलकत्ते में १९३१ से बहुत पहले इससे कई गुने होने चाहिए। मध्य-प्रांत में केवल १,८३६ हैं। यह अंक भी बहुत संदेहात्मक है, क्योंकि मुझे अच्छे प्रकार स्मरण है कि उस प्रांत में १९२२ और २३ में भी कई समाज बहुत उन्नतिशील थे। मदरास-प्रांत तो केवल १२२ ही देता है। राजपूताना-एजेंसी में ११,४७१ ही हैं, और हैदराबाद में केवल ३,७०० जिन लोगों का इन प्रांतों से संपर्क रहा है, वे स्वयं इन आँकड़ों को आशंका की दृष्टि से देखते हैं। परंतु यदि संदेह करने के लिये पुष्कल प्रमाण न हों, तो भी १९३१ में भारतवर्षीय आर्य-सामाजिकों की संख्या दस लाख पहुँचती है, और १९४१ ई० में तो पचास लाख से कम की आशा नहीं की जा सकती। विदेशों में आर्य-समाज का प्रचार कम है, परंतु ऑफ्रिका, फिजी, टिनीडाड, दक्षिण-अमेरिका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और विशेषकर डच ग्याना में समाजों की कुछ-न-कुछ संख्या पाई ही जाती है।

आर्य-समाज की यह तीव्र गति देखने से विदित होता है कि आर्य-समाज की शिक्षा की आवश्यकता चारो ओर पाई जाती है। मुझे अपने मदरास-प्रांत के भ्रमण से पता लगा है कि लोग आर्य-समाज की ओर विशेष रुचि रखते हैं। वंगवासियों से बातचीत करने से भी ज्ञात होता है कि वे आर्य-समाज के विषय में अधिक ज्ञान प्राप्त करने के लिये उत्सुक हैं। महाराष्ट्र में आर्य-समाज के अनुकूल एक नई परिस्थिति उत्पन्न हो गई है। इन सब बातों से आर्य-समाज के भविष्य के विषय में बहुत कुछ अनुमान लगाया जा सकता है।

आर्य-समाज कोई राजनीतिक संस्था नहीं, जिसमें किसी आधुनिक उद्देश को दृष्टि में रखकर विशेष बात के लिये लाखों की संख्या में लोग सम्मिलित हो जायँ, और थोड़े दिनों पश्चात् उससे हट जायँ। आर्य-समाज कोई व्यापारिक समिति भी नहीं, जिसमें आर्थिक लाभ हो। आर्य-समाज ने एक धार्मिक चर्च का रूप ले लिया है, और ऐसी संभावना है कि आर्य-समाज का यह स्थायी रूप रहेगा।

धार्मिक चर्च की विशेषता यह है कि धर्म जीवन के सभी अंगों पर विचार करता है, किसी को छोड़ता नहीं। राजनीतिक संस्था जीवन के प्रत्येक अंग को राजनीतिक दृष्टि से देखती है। उसके पास और कोई दृष्टि है ही नहीं। यही हाल व्यापार का है। परंतु धार्मिक संस्था किसी अंग का विस्मरण नहीं करती। जिस प्रकार शरीर का छोटे-से-छोटा अंग भी शरीर में एक महत्त्व की वस्तु है, इसी प्रकार धर्म भी है। उसके अंतर्गत राजनीति, व्यापार, अर्थ-शास्त्र, कला-कौशल, गृहस्थी, वैयक्तिक जीवन, सार्वजनिक जीवन, मनुष्य-प्रेम, प्राणि-प्रेम, विश्व-प्रेम तथा भगवत्प्रेम, सभी आ जाते हैं। आर्य-समाज भी इन्हीं सबसे संबंध रखता है। यदि यह राजनीतिक संस्था नहीं, तो विशेष अर्थ में, क्योंकि राजनीतिक संस्था की एक विशेष परिभाषा है, जो राजनीतिक संस्थाओं को अन्य संस्थाओं से अलग करती है। यही हाल अन्य प्रकार की संस्थाओं का है। प्रायः लोग चिढ़ाया करते हैं कि आर्य-समाज राजनीति से क्यों अलग है। और, इस उपालंभ से कभी-कभी आर्य-सामाजिक लोग भी भयभीत हो जाते हैं। परंतु इसका कारण यह है कि उन्हें राजनीतिक पारिभाषिक सीमाओं का ज्ञान नहीं, और न धार्मिक संस्थाओं के वास्तविक विस्तार का पता है। मनुष्य बहुधा चमकीले प्रलोभनों में फँसकर उद्देश्य छोड़ देता है। चमक कई प्रकार की होती है।

अब तक आर्य-समाज ने केवल हिंदू-समाज में ही सम्मान प्राप्त किया है, और यह नित्य-प्रति बढ़ता जा रहा है। हिंदू-समाज के बाहर तो आर्य-समाज को गौरव की दृष्टि से देखा नहीं जाता। परंतु इसके कारण हैं—प्रथम तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदू-समाज आर्य-समाज का घर है। यदि घर में सम्मान होगा, तो बाहर भी होगा। हिंदुओं के बड़े-बड़े नेता आर्य-समाज को सम्मान की दृष्टि से देखते हैं, क्योंकि आर्य-समाज ने एक कमी पूरी की है।

हिंदुओं में तीन दल हैं। पहला है परिवर्तन-विरोधी (No-Changers), इन्हें बाज़ारू भाषा में सनातनी कहा जाता है, और ये लोग इस नाम को प्रिय भी समझते हैं। परिवर्तन-भीति (Change-phobia) इनका विशेष गुण है। ये धार्मिक, सामाजिक अथवा किसी क्षेत्र में कोई परिवर्तन नहीं चाहते। पूजा-पाठ, संस्कार, रीति-रिवाज, किसी में छोटी-सी तबदीली भी इन्हें खटकती है, और ये 'धर्म गया', 'धर्म गया' चिल्लाने लगते हैं। परंतु परिवर्तनशील संसार में परिवर्तन-विरोधियों की गुज़र कठिनता से होती है। यही कारण है कि न मानते हुए भी 'सनातनियों' के विचारों में बहुत परिवर्तन आ गया है। स्वामी दयानंद के समय का सनातनी आज का सनातनी नहीं। इतना ही नहीं, जब महात्मा गांधी ने बीस वर्ष पूर्व काम आरंभ किया था, उस समय से अब तक 'सनातनियों' में कितना भारी परिवर्तन हो रहा है। और तो और, यह कहना असत्य न होगा कि अब तो महामना, पूज्य मालवीयजी भी वह नहीं रहे, जो इस शताब्दी के आरंभ में थे। रहते भी कैसे? इसलिये परिवर्तन-विरोधियों के लिये आजकल भारतवर्ष में या बाहर कोई स्थान है ही नहीं। यह और बात है कि हम नाम के लिये वही बने रहें।

दूसरे दल को भूकंपी दल (Over-haulers) कह सकते हैं। यह चाहता है, पहला कुछ भी न रहे। सबको मिटाकर नई सृष्टि बना दो। यों तो पृथ्वी प्रतिक्षण बदलती रहती है, परंतु भूकंप में सर्वथा उलट-पुलट हो जाती है। यही हाल भूकंपी दल का है। हिंदू-समाज में जितने भूकंपी हैं, उतने शायद अन्य समाजों में न होंगे। बहुत-से तो हिंदू-समाज के नाम से घृणा करते हैं, और इस घटना को बाह्य प्रगतियों से दृढ़ता मिलती है। उदाहरण के लिये ईसाई और मुसलमानों का लाभ इसी में है कि हिंदू पुरुष और हिंदू स्त्रियाँ हिंदू-धर्म, हिंदू-समाज तथा हिंदू-संस्कृति से इतने असंतुष्ट हो जायँ कि वे बाहर निकल खड़े हों। फिर हम देखेंगे कि उन्हें कहाँ स्थान दिया जाय। साम, दाम, दंड, भेद में अंतिम और उपादेयतम विधान है भेद, इसी को तो आजकल की परिभाषा में पाँचवाँ खंभा (Fifth Column) कहते हैं।

परंतु याद रखना चाहिए, भूकंप संसार में बहुत कम आते हैं, और जब आते हैं, हाहाकार मचाकर जाते हैं। हिंदू-समाज पर भूकंपियों के कई बार घोर आक्रमण हुए, परंतु उनकी विजय कभी स्थायी सिद्ध नहीं हुई।

तीसरा दल मध्यवर्ती है। आर्य-समाज इस दल का एक गौरवशाली अंग है। आर्य-समाज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिवर्तन तो चाहता है, परंतु उतना ही, जितना समाज-स्वास्थ्य के लिये लाभकारी हो। वह अभिवृद्धि चाहता है, मृत्यु नहीं। वह शरीर के रोग की चिकित्सा चाहता है, रोगी को नष्ट करना नहीं चाहता। उसे रोग से घृणा है, रोगी से नहीं। अतः आर्य-समाज का निरंतर यह प्रयत्न रहा है कि प्राचीन वैदिक संस्कृति की उच्चतम विशेषताओं को तद्वत् रखते हुए उन्नति की जाय। इसीलिये आर्य-समाज भारतवर्ष के प्राचीनत्व को बड़ी श्रद्धा की दृष्टि से देखता और प्राचीन वैदिक ग्रंथों के अनुशीलन में यथाशक्ति और यथायोग्यता प्रयत्नशील है। इस संबंध में उसकी दृष्टि पुरातत्त्व-विभाग की-सी नहीं। पुरातत्त्व-विभाग का दृष्टिकोण केवल ऐतिहासिक है। वह पुरानी हड्डियों का एक अजायबघर (Museum) बनाना चाहता है, प्राचीनता को फिर लाना नहीं चाहता। आर्य-समाज की दृष्टि इससे सर्वथा विरुद्ध है। वह यह नहीं कहता कि प्राचीन वैदिक ग्रंथों को केवल ऐतिहासिक मूल्य दिया जाय। वह उन्हें इस युग में भी व्यवहार्य बनाना चाहता है। इसलिये जहाँ उसकी कुछ-कुछ बातें पहले दलवालों को पसंद हैं, वहाँ दूसरा दल भी किसी-किसी बात में उससे सहानुभूति रखता है। आर्य-समाज का मार्ग मध्यवर्ती है। यह उदार है, परंतु मर्यादा लिये हुए। संकुचित है, परंतु उदारता लिए हुए।

अभी हिंदू-समाज के बाहर आर्य-समाज सर्वप्रिय नहीं हुआ। इसका एक कारण है। आर्य-समाज के प्रारंभिक जीवन में उसकी बात सुनने के लिये मुसलमान और ईसाई भी उत्सुक रहते थे। अब लोग उसे आशंका की दृष्टि से देखते हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि आर्य-समाज ने उन शक्तियों का घोर विरोध किया, जो हिंदू-संस्कृति के लिये घातक हैं, और जिनका मुख्य प्रयोजन केवल इतना ही है कि हिंदू-संस्कृति का नाश किया जाय। इस वैनाशिक प्रवृत्ति के विरोध ने आर्य-समाज को हिंदुओं में प्रिय और इतर लोगों में अप्रिय बना दिया। परंतु आर्य-समाज का यह रूप क्षणिक है। आर्य-समाज ईसाई-मुसलमानों का वास्तविक शत्रु नहीं। समय आएगा, जब ये लोग भी वास्तविकता समझ सकेंगे। इसलाम-ईसाई-धर्मों के वैनाशिक रूप के अतिरिक्त इनका एक और रूप भी है। जो साधारण जनता से तिरोभूत है। हिंदू-समाज की संकुचितता को आर्य-समाज ने बहुत कुछ दूर कर दिया है। दूसरों की संकुचितता तक अभी इसका हाथ नहीं पहुँच सका। परंतु इसमें निराशा के लिये कोई स्थान नहीं। किसी संस्था के लिये ६६ वर्ष होते ही कितने हैं।

आर्य-समाज बहुत शक्तिशाली संस्था है, इसे बहुत कम लोग अनुभव करते हैं। जो लोग नित्यप्रति इसके संपर्क में रहते हैं, उन्हें भी इसकी बीज-शक्ति का परिज्ञान नहीं। परंतु वास्तविक बात तो यह है कि अपने जन्म के आरंभ से ही भारतवर्ष के प्रत्येक जीवन-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विभाग को यह अनुप्राणित करता रहा है। भारतवर्ष की नैतिक, सामाजिक, धार्मिक कोई भी संस्था ऐसी न होगी, जिसने आर्य-समाज से प्रोत्साहन न लिया हो, यद्यपि वे इस बात को स्वीकार करने के लिये तैयार नहीं। आर्य-समाज पृथ्वी की उस आकर्षण-शक्ति के तुल्य है, जो दिखाई नहीं पड़ती, परंतु जिसका प्रभाव समस्त भौगोलिक गतियों पर पड़ता है।

सफल जीवन का महामंत्र

बाँझ स्त्रियाँ

१०० में ९९ स्त्रियाँ 'कनसैप्टो' के सेवन से पुत्र उत्पन्न कर चुकी हैं। सब डॉक्टरों का कहना है कि बाँझपन दूर करने के लिये इससे बढ़कर अन्य कोई ओषधि नहीं। केवल १ शीशी सेवन करके ही ख़ाली गोद में पुत्र खेलाएँ। क़ीमत ५), डाक-ख़र्च ॥)

हिस्टीरिया का अचूक इलाज

इसके सेवन से हिस्टीरिया के दौरे, रोगी का उछलना, कूदना, चिल्लाना, रोना, पागलपन, बेहोशी आदि एक सप्ताह में ही दूर हो जाते हैं। क़ीमत २), डाक-ख़र्च ।।)

विद्युत्-तैल

इसमें बिजली-जैसी ताक़त भरी हुई है। यह तत्कालीन ज़रूरत की चीज़ है। ज़रूरत के ख़ास समय से थोड़ी देर पहले इस्तेमाल करने से अर्थात् एक ही बार सेवन करने से गए-बीते नामर्द की नपुंसकता भी जाती रहती है, और ४ मिनट में ही तरुण युवक के समान मर्द बन जाता है। शिथिल नसों की कमज़ोरी को दूर करके अपना गुण दिखा देना यह इसका तत्कालीन चमत्कार है। वास्तव में वृद्ध पुरुषों का अचूक शस्त्र और नव-विवाहित नामर्दों का आधार है। जीवन का वसंत और प्रकृतिदेवी की अमूल्य भेंट है। क़ीमत २), डाक-ख़र्च ॥)

अमर सुंदरी

रक्त-प्रदर, श्वेत-प्रदर, गर्भाशय की पीड़ा, गर्भ न रहना, गर्भ का गिर जाना, मासिक धर्म का अनियमित होना, दर्द या कष्ट के साथ होना, सिर-दर्द, अशक्ति, हल्का ज्वर, जी घबड़ाना, सोम-रोग, रक्त की कमी आदि रोगों के लिये एकमात्र अव्यर्थ महौषधि है। इसके सेवन से शरीर सुंदर, हृष्ट-पुष्ट और फुर्तीला हो जाता है। क़ीमत ॥।=), डाक-ख़र्च ॥)

गर्भ-रोक

निर्धनता व स्त्री की बीमारी के कारण और संतान पैदा न करनी हो, तो इस दवा का सेवन करें। इससे स्त्री के गर्भ नहीं रहता, और सांसारिक सुख को बंद करने की ज़रूरत भी नहीं होती। सर्वथा हानि-रहित दवा है। क़ीमत २), डाक-ख़र्च ॥)

ब्रेस्टोन

ज्यों मोर अपने पाँवों को देखकर रो देता है, त्यों स्त्रियाँ भी अपने ढीले, गिरे तथा लटके स्तनों को देखकर निराश हो जाती हैं। यह ४५ वर्ष तक की स्त्रियों के लटके हुए ढीले स्तनों को फिर से षोडशीय नवयुवती के समान सुंदर, कठोर, गोल तथा छोटे बना देता है। क़ीमत केवल २।), डाक-ख़र्च ।।)

पता—रसायन-फ़ार्मेसी,
(सु) संगरिया (बीकानेर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चल रे ! हव्य माँगता गांधी !

[श्रीसोहनलाल द्विवेदी एम्० ए०, एल्-एल बी०]

धधक रही है अग्नि-कुंड में
पूर्णाहुति की भीषण ज्वाला ;
होता ! मंद न पड़े हुताशन,
नव-नव अभिनव आहुतियाँ ला ।
होम-होम तन-मन-धन-जीवन,
कोटि-कोटि मनुजों की माला ;
उठें लपट, झुलसे गगनांगन,
फटे वज्रयुग का अँधियाला ।
वर की वेला चली आ रही,
आज हो रही कैसी देरी ?
देख, आज बजती वर्धा में
बापू की मादक रणभेरी ।

चल, यौवन का दान लिए चल,
जीवन का वरदान लिए चल ;
अधरों पर मुसकान लिए चल,
प्राणों का बलिदान लिए चल ।
रण - चंडी के गान लिए चल,
भू - कंपी प्रस्थान लिए चल ;
भारत का अभिमान लिए चल,
जननी के अरमान लिए चल ।
युग - युग की ज्वाला हो उर में,
युग - युग की श्वासों में आँधी ;
युग - युग का घृत हो प्राणों में,
चल रे ! हव्य माँगता गाँधी !

४० से ऊपर उम्रवालो ! चिंता छोड़ो !!

बुढ़ापे के आगमन से दुखी हो, तो नई बूटी सेवन करो। बुढ़ापे का एक-एक चिह्न दूर कर यह आपको जवान बना देगी, और जवानी की उमंग फिर से उभर आएगी। धातु की कमज़ोरी को दूर कर यह काम-शक्ति को बढ़ा देगी। आँख की रोशनी तेज़ कर चश्मा फोड़ देगी, बाल का पकना रोककर पका बाल खूँटी से काला पैदा करेगी। झुर्रियाँ नष्ट कर दाँतों को दृढ़ बना काया को पलट देगी। झूठा होने से हज़ार रुपया देने की शर्त। दाम ५) रु०

लाइलाज रोग का शर्तिया इलाज

कुष्ठ, श्वेतकुष्ठ, सूज़ाक, बवासीर, सुनबहरी, गर्मी, मृगी, उन्माद, छाजन (खड़ी) यदि जड़ से नाश करना चाहते हो, तो हज़ारों बार की परीक्षित सिद्ध फ़क़ीरी दवा मँगाकर सेवन करो। रोग जड़ से नहीं जायगा, तो दाम वापस मिलेगा। फ़ी दवा ४॥) रु०

पता—फ़क़ीरी कुटिया, पो० बिहार नरसरी (दरभंगा)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरी हरद्वार-यात्रा

[साहित्य-रत्न श्रीयुत लक्ष्मीनारायण टंडन 'प्रेमी' एम्० ए०]

मैं १४ जून को हरद्वार पहुँचा। स्टेशन पर उतरकर सीधे मैं अपने मित्रों-सहित मुसद्दीलाल भीखामल, लखनऊवाले की धर्मशाला में गया। सामान रखकर हम लोग गंगा-स्नान को चल दिए। गंगाजी जाते समय बाएँ हाथ की ओर आपको ऊँची-ऊँची पहाड़ियाँ दिखाई देंगी, जो निकट ही हैं, और दाहने हाथ की ओर समतल भूमि पर मकानों की पंक्तियाँ। गंगाजी प्रायः १½ मील की दूरी पर होंगी। सड़क सीधी और पक्की एलफ़ास्ट की बनी है, अतः गंगाजी पहुँचने में कोई कठिनता न पड़ी। वहाँ केवल यही मुख्य सड़क है, जो एक ओर तो कनखल, ज्वालापुर, गुरुकुल काँगड़ी आदि को गई है, और दूसरी ओर हृषीकेश, लक्ष्मण-झूले आदि को। प्रायः आध घंटे बाद हरि की पैड़ी पहुँचे। इसे प्लेटफ़ार्म भी कहते हैं। इसके नामकरण का कारण यह है कि यहाँ के मुख्य घाट पर, उत्तर की ओर, हरि (विष्णु)जी का चरण-चिह्न बना है। इस घाट से एक पक्के, विस्तृत और अत्यंत सुंदर बने प्लेटफ़ार्म पर जाने के लिये एक छोटा-सा पुल सरकार ने बनवा दिया है। प्लेटफ़ार्म और घाट के बीच में 'ब्रह्म-कुंड' है, जिसमें पानी कम गहरा है। लोहे की ज़ंजीरें भी, पकड़कर नहाने के लिये, लगी हैं। यहाँ मछलियाँ बहुत हैं, जिन्हें धर्मात्मा यात्री खीलें,

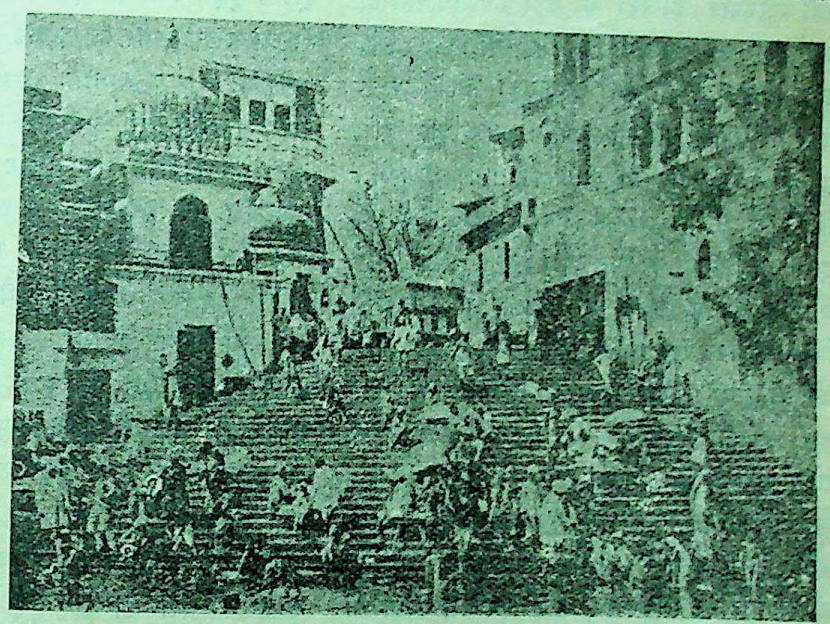

हरि की पैड़ी—हरद्वार

लैया, आटे की गोली आदि खिलाया करते हैं। घाट के चारो ओर ऊँचे-ऊँचे, पक्के भवन तथा देव-मंदिर हैं। इस कुंड के बीच में ही मनसादेवी का मंदिर है, जिसकी नहाते समय परिक्रमा की जाती है।

मैंने भी कपड़े उतारे, नहाया। पानी बदन को काटे देता था—पानी क्या था, पिघली बर्फ़ थी। दो-तीन ग़ोते लगाने के बाद ही मेरी श्रद्धा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने जवाब दे दिया, और मैं बाहर निकल आया। कहते हैं, ब्रह्माजी ने यहीं यज्ञ किया था, और इसी से यह स्थान अति पवित्र है। स्नान करने के पश्चात् घाट पर ही स्थित श्रीगंगाजी के मंदिर में दर्शन किए। घाट पर कई छोटे-छोटे मंदिर हैं, जिनमें गंगाजी, गंगेश्वर शिव, शकेश्वर शिव, गायत्री, बदरीनाथ, लक्ष्मीनारायण, शिव, राम, लक्ष्मण, जानकी और हनुमान् आदि की मूर्तियाँ हैं। इन्हें देखकर दूर तक फैले हुए लंबे-चौड़े घाट पर घूमते रहे। वहाँ की चहल-पहल देखकर अमीनाबाद के बाज़ार की सुध आ जाती है। कहीं व्याख्यान हो रहा है, कहीं कथा हो रही है, कहीं घंटा बज रहा है, कहीं आरती हो रही है, कहीं साधु-महात्मा तथा भक्तजनों की भीड़ है, कहीं सांसारिक स्त्री-पुरुषों की। अनेक दूकानदार, खोंचेवाले, फूलवाले आदि आपको घूमते मिलेंगे। भिखमंगों की भी यहाँ कमी नहीं। इस स्थान पर इतनी आत्मिक प्रसन्नता तथा शांति और संतोष प्राप्त होता है कि मनुष्य कल्पना के संसार में विचरण करने लगता है। अस्तु। यहाँ घूम-घामकर प्लेटफ़ार्म गए। अपूर्व दृश्य है—हज़ारों नर-नारी स्नान कर रहे हैं, हज़ारों गंगाजी की शोभा देख रहे हैं, हज़ारों पूजा-पाठ कर रहे हैं। हिंदू-धर्म मानो प्रत्यक्ष रूप धारण कर यहाँ विराजमान हो। इसे भी देखकर हम लोग धर्मशाले लौटे। घाट के निकट ही, कुछ दूर पर, यहाँ का मुख्य बाज़ार है, जो काफ़ी लंबा-चौड़ा है, और जिसमें प्रायः सभी वस्तुएँ मिल जाती हैं। हाँ, यहाँ की भोजन की दूकानें गंदी अवश्य हैं। यहाँ पंजाबियों का बाहुल्य है, और प्रायः उनमें गंदगी रहती है। यहाँ लस्सी का प्रचार बहुत है। बाज़ार घूमे। एक दूकान पक्के भोजन की अवश्य है, जहाँ बहुत उम्दा और साफ़ मीठा-नमकीन, दूध-दही, पूड़ी-तरकारी, सभी चीज़ें मिल जाती हैं। यह मथुरा के किसी पंडे की है। उस दूकान को पाकर बड़ी प्रसन्नता हुई। भोजन किया, और फिर धर्मशाले आए।

सायंकाल को फिर घूमने गए। हरि की पैड़ी से कुछ ही दूर पर 'कुशावर्त'-नामक घाट है। यह भी सुंदर बना है, और यहाँ विशेषकर पिंड-दान के लिये लोग आते हैं। इसके नामकरण की कथा भी बड़ी विचित्र है। कहते हैं, दत्तात्रेयजी जब तपस्या कर रहे थे, उस समय उनकी कुशा आदि पूजा की सामग्री गंगाजी के आवर्त (भँवर) में उस समय तक घूमती रही, जब तक उनकी पूजा पूरी न हुई। इसी से इसका यह नाम पड़ा। पास ही श्रवण-घाट और विष्णु-घाट आदि हैं। कुशावर्त के निकट ही श्रवणनाथ महादेव का मंदिर है। इससे थोड़ी दूर पर श्रीगंगाजी का मंदिर है।

सायंकाल और रात्रि के समय प्लेटफ़ार्म, संपूर्ण घाट और हरि की पैड़ी का दृश्य देखने ही वाला होता है। हज़ारों की संख्या में लोग आते और अपनी-अपनी चटाइयाँ और दरियाँ बिछाकर प्लेटफ़ार्म पर बैठ जाते हैं। उस समय गंगाजी की शोभा अपूर्व होती है। फूलों के दोनों में आरती रखकर या फुलझड़ियाँ लगाकर सहस्रों की संख्या में लोग गंगाजी में प्रवाहित करते हैं, वे बहते हुए अद्भुत सौंदर्य का सृजन करते हैं। कल-कलनादिनी भागीरथी अपने वक्षःस्थल पर श्रद्धालु भक्तों की भेंटों को लिए हुए आनंद-पूर्वक बहती रहती हैं। वहाँ बैठकर उठने को जी नहीं चाहता। उस अलौकिक दृश्य को लोग नौ-दस बजे रात्रि तक देखा करते हैं। वहीं लोग भोजन करते हैं। गंगाजी के किनारे भोजन करने और गंगाजी की लोल लहरें देखने में जो आनंद प्राप्त होता है, उसे केवल हृदय ही अनुभव कर सकता है। हम लोग इस घाट पर बैठे थे, और उस पार शेर दहाड़ रहा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरे दिन बिल्वकेश्वर महादेव के दर्शन करने गए। यहाँ बेल के पेड़ों की अधिकता थी। इस स्थान का भी धार्मिक महत्त्व अधिक है। बिल्वकेश्वर-पर्वत के पीछे गौरी-कुंड है। निकट ही महर्षि ऋचीक का आश्रम और एक गुफा में दुर्गादेवी की मूर्ति है।

सायंकाल रेल की पटरी पार कर एक ऊँची पहाड़ी पर स्थित मंसादेवी के मंदिर गए। बड़ी विकट चढ़ाई है। देवीजी के मंदिर से गंगाजी और नगर का दृश्य बहुत सुंदर दिखलाई देता है। यहाँ से गंगा और बाँध का दृश्य दिखलाई देता है। गंगाजी यहाँ कई धाराओं में बँट गई हैं। यहाँ से उस पार कजली-वन भी दिखाई देता है, जो शेर, हाथी आदि की खान है। वहाँ के पुजारी ने कहा—"हम लोग रात्रि को यहाँ नहीं रहते—शेर-चीते के आने का भय रहता है।" यहाँ दर्शन करके पर्वत की उपत्यका में बहुत नीचे पर एक मंदिर बना है, और सूरज-कुंड है। बड़ा भयानक मार्ग है। दूर पर दो-एक खोहें हैं, जिन्हें देखकर डर लगता है। एक बहुत छोटा पानी का झरना भी बह रहा था। मैंने मंसादेवी के मंदिर से कुछ दूर पर एक छप्पर और वहाँ से नीचे खड्ड में एक घोड़ी को चरते देखा, और उसी की सहायता से सूरज-कुंड का रास्ता समझ लिया। एक मारवाड़ी सज्जन भी मंसादेवी से साथ हो लिए थे। वह बहुत डरते रहे। कहते थे—"यदि मुझे पता होता, इतना चलना होगा, इतना बीहड़ रास्ता होगा, तो कभी न आता। धीरे-धीरे चलो।" हम लोग रास्ते-भर सेठजी से हँसते रहे कि "अब की आइएगा, तो अपना जान बीमा करवा लीजिएगा।"

तीसरे दिन हम लोग ताँगे से कनखल गए। यहाँ इक्के हैं ही नहीं, केवल ताँगे हैं, और बड़े सस्ते। यह गंगाजी के दक्षिणी किनारे पर बसा है, और हरद्वार से तीन मील है। पहले मायापुर की गंगाजी की नहर का पुल पार किया। मायापुर किसी समय वैभव-पूर्ण नगर था। किंतु अब तो भग्नावशेष ही उसकी प्राचीनता और महत्त्व की साक्षी देते हैं। गंगा की नहर भी इंजीनियरिंग का एक सुंदर उदाहरण है। यहाँ भी घनी और काफ़ी बड़ी बस्ती है। विशाल भवन और मंदिर हैं। बड़ा बाज़ार है। यहाँ अनेक मठधारियों के मठ और अखाड़े हैं। मार्ग में गच का मंदिर, व्यास मंदिर और हरियाला-मंदिर ताँगे से उतरकर देखा। सब मंदिर बहुत सुंदर हैं, और नए ही बने मालूम पड़ते हैं। विशेषकर हरियाला-मंदिर बहुत सुंदर है। यहाँ भी बहुत-से पक्के घाट हैं, किंतु उनमें वह चहल-पहल और रौनक़ कहाँ, जो हरद्वार में है। राजघाट यहाँ का प्रसिद्ध घाट है। यहाँ की दर्शनीय वस्तुओं में लंढौरवाली रानी की छतरी और घाट भी है। राजघाट के निकट ही दक्षप्रजापति का मंदिर, नीलकेश्वर महादेव, सती कुंड, हनुमानजी की मूर्ति आदि है। सुंदर और पक्के चबूतरे पर सती-कुंड है। यहाँ से लगभग एक फ़र्लांग की दूरी पर एक और मंदिर और बाग़ है। कनखल में गंगा और नीलधारा का संगम है। यहाँ बड़ा तीव्र बहाव है। लहरें एक दूसरे से टकराती, होड़ करती और नाद करती बहती हैं। यहाँ गंगाजी का दृश्य इतना सुखद होता है कि उठने की इच्छा ही नहीं होती। कनखल पवित्र भूमि है। सनत्कुमार ने यहीं तप किया था। दक्षप्रजापति ने यहीं यज्ञ किया था। सती ने यहीं अपना शरीर भस्म किया था।

यहाँ से हम लोग गुरुकुल-काँगड़ी गए। पहले ऑफ़िस गए, और वहाँ के अध्यक्ष से आश्रम देखने की इच्छा प्रकट की। वह सौजन्य के अवतार थे। बड़े प्रेम और आदर से बैठाया, और वहीं के एक ब्रह्मचारी (विद्यार्थी) को साथ कर दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वहाँ के विद्यार्थियों के मुख पर तेज और भोलापन होता है। उनकी पोशाक है एक क़मीज़ और हाफ़ पैंट। उनकी वेश-भूषा और भोजन आदि में बहुत सादगी होती है। काँगड़ी में पढ़ने के कमरे और छात्रालय देखा। एक बड़े कमरे में बहुत छोटे-छोटे लड़के एक साथ पढ़ाए जा रहे थे। वहाँ के पढ़ाने का ढंग बड़ा चित्ताकर्षक और आदर्श है। फिर छात्रों के खेल के मैदान, वाटर-वर्क्स, हवन-

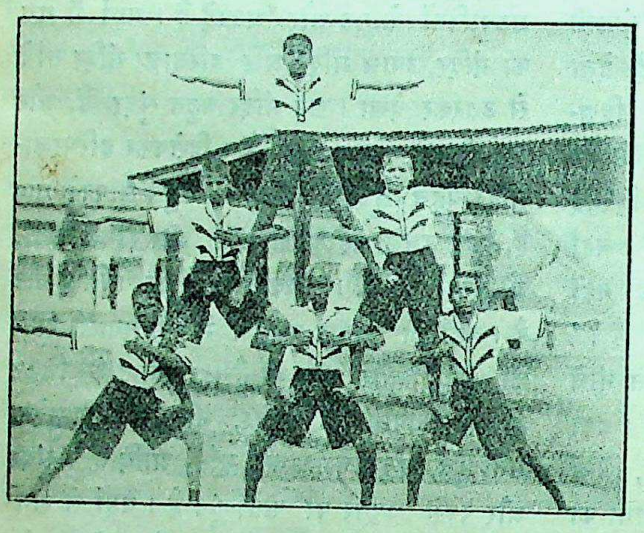

गुरुकुल के छात्र व्यायाम कर रहे हैं।

स्थान और रसोई-घर आदि देखकर वहाँ से चल दिए। उस सात्त्विक स्थान का प्रभाव मनुष्य की अंतरात्मा पर चिरस्थायी पड़ता है।

मार्ग में ऋषिकुल-काँगड़ी पड़ता है। वह भी दर्शनीय स्थान है। उसे देखकर हम लोग धर्मशाला लौटे।

सायंकाल पंजाबी क्षेत्र गए। यहाँ पंजाबियों की बस्ती अधिक है। पंजाबी स्त्रियाँ बहुत सुंदर और स्वस्थ होती हैं, और उनका पहनावा उन्हें और भी चुस्त बनाता है। किंतु एक बात कुछ खटकनेवाली है। यहाँ कुछ स्त्रियाँ निधड़क नंगी नहाती हैं। अब तो यह रिवाज बहुत कम हो गया है, और परमात्मा ने चाहा, तो यह कुप्रथा बहुत शीघ्र दूर हो जायगी।

चौथे दिन प्रातःकाल हम लोग चंडीदेवी (नील-पर्वत) चल दिए। हमारे कुछ साथी तो जाने को तैयार ही न थे। एक सज्जन के कहने पर कि वहाँ गंगा के बढ़ने से मार्ग भयानक हो गया है, और जानवर (शेर) का भी डर है, ये लोग भड़क गए थे। बड़ी कठिनता से मैं उन्हें राज़ी कर

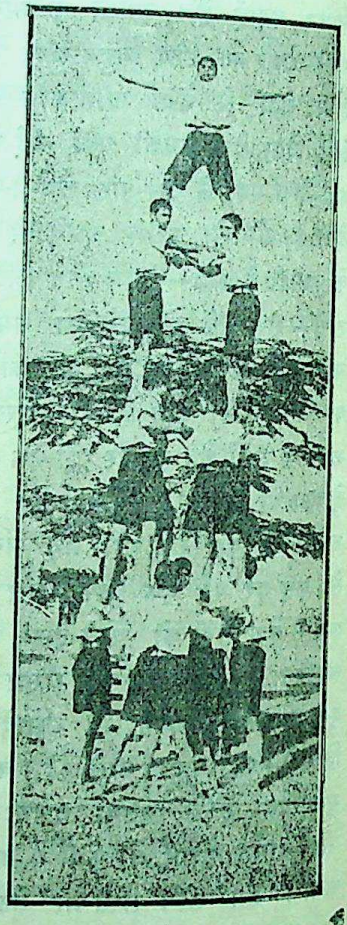

छात्रों का व्यायाम-प्रदर्शन

सका। पहले तो ताँगा करके मायापुर की गंगा की नहर का पुल पार किया। वहाँ उतरकर एक लकड़ी का बना छोटा पुल पार करना पड़ा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पानी पुल के ऊपर से होकर बह रहा था। पानी कठिनता से एक या दो इंच ही ऊँचा पुल पर होगा, किंतु उसमें इतना बहाव था कि पैर नहीं टिकते थे। हम लोग एक क़दम जब ख़ूब जमा लेते थे, तब दूसरा धीरे से उठाकर रखते थे। यदि ज़रा भी पैर फिसल जाय, तो आदमी की हड्डी-पसली का पता न चले, क्योंकि पुल के नीचे अगाध जल था, और नदी के बीच-बीच में छिपी या प्रकट चट्टानें। अस्तु। राम-राम करके उसे पार किया, तो एक मील बालू पर चलना पड़ा, तब कहीं नाव पर पहुँचे। नाव छूटने ही वाली थी, पर हम लोगों को दूर से देख-कर मल्लाह रुके रहे। कहीं गंगा का पानी और कहीं सूखी बालू पार करके नाव तक पहुँचे। नाव बहुत आगे बढ़ाकर छोड़ते हैं, तब कहीं वह बहकर अपने गंतव्य स्थान पर (उस पार) लगता है। बीच में बहुत ही तीव्र धारा है। वहाँ एक बड़ी मज़ेदार बात देखी। वहाँ के निवासी पीपों को एक साथ बाँधकर बेड़ा बना लेते हैं, या सूखी लौकी आदि की सहायता से गंगाजी पार कर लेते हैं।

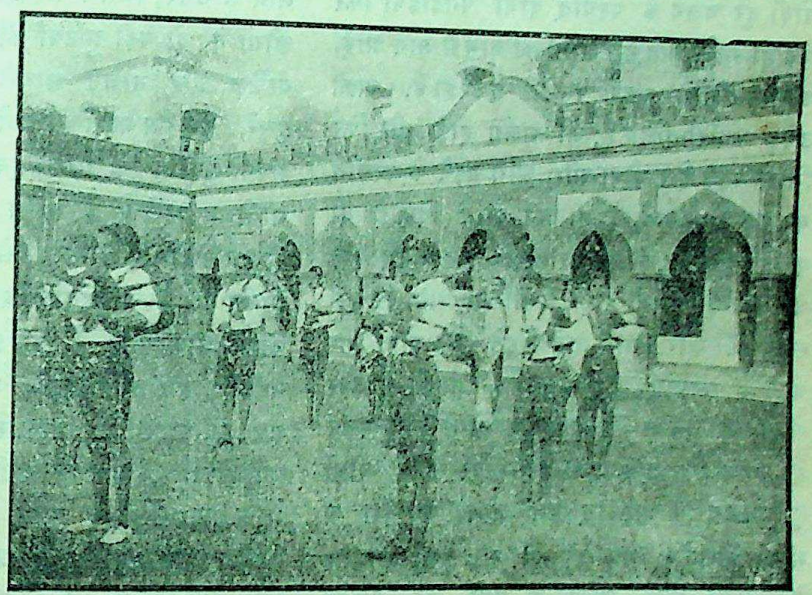

गुरुकुल के विद्यार्थी बैंड बजा रहे हैं।

नाव से उतरकर, घुटने-घुटने पानी मँझाकर हम लोगों को बालू और पथरीली पृथ्वी पार करने में पंद्रह मिनट लगे, तब नील-पर्वत के ठीक नीचे हम लोग पहुँच गए। कामराज की काली-देवी के दर्शन करके चढ़ाई शुरू की गई। इतनी खड़ी चढ़ाई है कि लोगों का कहना है कि यदि चंडीदेवी कोई हो आवे, तो समझ ले कि वह बदरिकाश्रम जा सकता है। रास्ते में कोई झरना न था—प्यास लग रही थी, पर करते क्या। चलते चले जाइए, चढ़ाई का अंत ही नहीं होता। चारो ओर आकाश-छूती, घनी वृक्षावली थी, और उस नैसर्गिक भूमि के सन्नाटे और निस्तब्धता में पक्षियों का मधुर कलरव कानों में अमृत डाल रहा था। न आदमी न आदमज़ाद उस मार्ग में, जिससे मार्ग पूछा जाता। थोड़ी दूर चलने के पश्चात् हमारी पगडंडी दो भागों में विभाजित हो गई। अब प्रश्न यह उठा कि कौन-सी पगडंडी ग्रहण की जाय। भगवान् का नाम लेकर एक पगडंडी पर चले। थोड़ी दूर के बाद फिर पगडंडी दो भागों में विभाजित हो गई। हम लोग बहुत डर रहे थे कि यदि मार्ग भूल गए, तो जीवन की ख़ैर नहीं। हम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोग केवल चार आदमी थे, जिनमें एक १४ वर्ष का लड़का भी था। नाव के अन्य मुसाफ़िरों को हम लोगों ने इसलिये छोड़ दिया कि उनके साथ चिल्ल-पों में देर भी लगती, और स्वतंत्रता भी न रहती। अस्तु। हम लोगों ने यह निश्चय किया कि कुछ एक पगडंडी से चलें, और कुछ दूसरी से, देखें, भाग्य कहाँ ले जाता है। यदि आध घंटा चलने के पश्चात् भी चंडीदेवी की कोई टोह न लगी, तो दोनो पार्टियाँ इसी स्थान पर वापस आ जायँगी। थोड़ी दूर चलने के पश्चात् दोनो पगडंडियाँ फिर एक हो गईं। अब हम लोगों की जान में जान आई, और समझे कि मुख्य पगडंडी एक ही है, बाक़ी उनके offshoots हैं, जो अलग होते और फिर मिलते रहते हैं। थोड़ा और आगे बढ़ने के पश्चात् एक स्थान पर महादेवजी की मूर्ति दिखाई दी एक चबूतरे पर, जिस पर ताज़े फूल आदि चढ़े थे। अब हम लोगों के जी में जी आ गया कि इस स्थान में लोग आते-जाते रहते हैं। थोड़ा और बढ़ने के पश्चात् कुछ मनुष्यों की बोली-सी ऊपर से सुनाई देने लगी। अब हम लोगों को निश्चय हो गया कि ऊपर देवी का मंदिर है। थोड़ी दूर चलने के पश्चात् हम लोग चंडीदेवी के मंदिर में पहुँच गए। वहाँ भी फूल-बताशा बेचनेवालों और मंदिर के पंडों को देखकर आश्चर्य-मिश्रित प्रसन्नता हुई। लोग इतनी दूर से केवल पेट के लिये ही आते हैं। और वह भी कितनी क्षीण आशा की रज्जु में बँधकर! जब मेला आदि होता है, तब तो यात्रियों का आना-जाना लगा ही रहता होगा, किंतु अन्य दिनों में कहीं दो-चार यात्री दिन-भर में आ जाते होंगे। अस्तु। हाथ-मुँह धोया, सुस्ताए और मंदिर में गए, जो काफ़ी ऊँचे चबूतरे पर काफ़ी सिड़ियाँ चढ़ने के बाद मिलता है। दर्शन किए, और परिक्रमा की। वहाँ से हरद्वार आदि का दृश्य इतना अधिक मनोहर दिखाई देता है कि मार्ग का सारा कष्ट और थकावट लुप्त हो जाती है, और हृदय ब्रह्मानंद का अनुभव करता है। इतनी ठंडी और सुंदर हवा चलती है कि तबियत मस्त हो जाती है। वहाँ से थोड़ी दूर अंजनीदेवी हैं, उनके दर्शन किए। वहाँ से एक पगडंडी कदली-वन को जाती थी, उसे देखा।

चंडीदेवी तक पहुँचने के दो मार्ग हैं। हम लोग एक मार्ग से आए, और सोचा, अब दूसरे मार्ग से उतरें, जिसमें परिक्रमा पूरी हो जाय। हम लोगों ने दो बड़ी त्रुटियाँ की थीं—एक तो थर्मस बाटिल और भोजन साथ नहीं लाए थे, और दूसरे, एक पथ-प्रदर्शक। प्रत्येक नवीन यात्री को अपनी सुविधा के लिये इन दोनो वस्तुओं का आयोजन पहले से ही करना चाहिए।

हम लोग दूसरे मार्ग से उतरने लगे। बहुत दूर पर एक झरना बहता दिखलाई दिया। इस ओर चट्टानें खुली हुई हैं, वृक्ष इतने घने इस ओर नहीं हैं। हम लोग जल्दी पहुँचने के फेर में और इस पूर्व-धारणा के अनुसार कि अंत में तो सब पगडंडियाँ एक हो ही जाती हैं, मुख्य मार्ग से भटक गए। फल यह हुआ कि एक ऐसे स्थान पर पहुँचे, जहाँ से पाँच-छ फ़ीट की निचाई पर भूमि थी, और वह भी बिलकुल समकोण बनाती हुई। अब नीचे कैसे पहुँचा जाय। पगडंडी लगभग ३ फ़ीट चौड़ी होगी, और एक ओर हज़ारों फ़ीट नीचे गड्ढे। मैंने सोचा, यदि दीवार से चिपककर मैं नीचे खिसकूँ (Slip करूँ), तो पहुँच सकता हूँ। भाग्य-वश हवा का झोंका नहीं चल रहा था। मैंने आँखें बंद कीं, और धड़कते हुए हृदय से भगवान् का स्मरण करता हुआ नीचे खिसका, और सही-सलामत भूमि पर खड़ा हो गया। मेरी प्रसन्नता का अंत नहीं था, किंतु मेरे साथियों का विचित्र हाल था। मेरा उदाहरण ग्रहण करने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और दोहराने का साहस उनमें न था। ख़ैर, किसी प्रकार राम-राम करके हमारे एक-एक साथी नीचे आए, वह भी उस समय, जब लड़का पहले नीचे उतर आया। मेरी विचित्र दशा थी—मैं सोच रहा था, यदि ये लोग नीचे न उतर सके, तो मेरे लिये ऊपर चढ़ना तो असंभव ही होगा। ऐसी जानलेवा मुसीबत तो जीवन में कभी नहीं पड़ी थी। इसके पश्चात् मुख्य पगडंडी मिल गई, और हम लोग पहाड़ी के नीचे उतर आए। नीचे एक मंदिर और आश्रम था। एक कलकल करता हुआ झरना (जो हम लोगों ने ऊपर से देखा था) महादेवजी की मूर्ति के निकट से होकर बह रहा था। गौरीशंकरजी के दर्शन करके हम लोग गंगाजी की ओर चले। गंगाजी तक पहुँचने के पूर्व जितना कष्ट हम लोगों को हुआ, उतना जीवन में कभी नहीं हुआ। यों तो मुझे प्रकृति के बीच में घूमने का शौक़ है ही, और इसी कारण मुझे अनेक ख़तरे और मुसीबतें उठाने का अवसर भी मिल चुका है, किंतु इस बार तो हम लोग अपने जीवन से निराश ही हो चुके थे। पहले तो कुछ पानी मँझाया, फिर एक दलदल पार करना पड़ा। हम लोगों के पैर दलदल में घुसे जाते थे। बड़े कष्ट से उसे पार किया। फिर एक सघन जंगल पार करना पड़ा, जो इतना बड़ा और घना था कि एक पूरी सेना छिप जाय, और पता न चले। हम लोग डर रहे थे कि कहीं कोई जानवर न आ जाय, या कहीं मार्ग न भूल जायँ। वहाँ सूर्य की धूप तक नहीं आती—जी घबराने लगा। उसके पश्चात् मैदान आया, जहाँ बालू-ही-बालू दिखाई दी। उसके पश्चात् फिर पेड़ मिले, जो कम ऊँचे और घने थे, और वहाँ झाड़ियाँ भी थीं। कुछ दूर बाद पगडंडी दो ओर बँट गई थी। हम लोग दाहनी ओर चले। लगभग आध मील चलने के पश्चात् एक ऐसे स्थान पर पहुँचे, जहाँ एक बड़ा लंबा-चौड़ा कुंड था। उसकी थाह लेने के लिये दो लंबी-लंबी वृक्ष की शाखाएँ बाँधकर पानी में डालीं, पर गहराई का पता न चला, अतः केवल तैरकर पार करना ही संभव था। पर मेरे साथी तैरना जानते न थे, और मैं जानता भी था, तो भी मेरा साहस उस कुंड को पार करने का न होता था। कुंड से बिलकुल समकोण बनाते हुए पहाड़ खड़े थे, अतः थल के मार्ग से उस पार पहुँचना भी असंभव था। लाचार होकर फिर उस स्थान को वापस गए, जहाँ से दो ओर मार्ग गए थे। अब बाएँ हाथवाली पगडंडी पकड़ी। थोड़ी दूर चलने के पश्चात् देखा कि बीच में पानी की धारा बह रही है—पचीस-तीस फ़ीट चौड़ी। अब क्या किया जाय? यदि यह भी गहरी हुई, तो? प्रथम तो यह सोचना कि लौटकर फिर गौरीशंकरजी पहुँचें, और पहाड़ चढ़कर चंडीदेवी चढ़ें, और फिर जिस ओर से आए थे, उस ओर से लौट जायँ, ठीक नहीं था; क्योंकि ऐसा करने में कम-से-कम चार-पाँच घंटे लगते, और इस समय १½, २ बजा था। रात्रि को पहाड़ पर चढ़ना ख़तरे से पूर्ण ही नहीं, वरन् ठीक नहीं भी है। मैदान तो है नहीं कि सपाट सड़क है, लोगों से पूछते-पूछते पहुँच जायँगे। फिर गौरीशंकर तक ही पहुँचना नामुमकिन था, क्योंकि मार्ग का पता न था। दूसरी बात यह हो सकती थी कि भूखे-प्यासे, खुले मैदान में, बिना ओढ़ने-बिछाने के, जानवरों से पूर्ण इस स्थान पर, पेड़ पर रात बिताई जाती, और प्रातःकाल जैसा होता, देखा जाता। हम लोग निराश हो चुके थे। एकआध तो रुआसे भी हो गए थे। पाठकगण सरलता-पूर्वक हम लोगों के उस समय की हृदय की अवस्था का अनुमान कर सकते हैं। "मरता क्या न करता।" मैंने अपने साथियों से कहा—"भाई! तुम लोग तो बैठो, मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखता हूँ कि पार जा सकता हूँ या नहीं।" एक लंबी-मोटी पेड़ की डाल ली। पानी में उतरा। पानी बरफ़ से अधिक ठंडा था, और पहाड़ी झरनों और नदियों का प्रवाह कितना अधिक होता है, यह पाठकगण भली भाँति जानते हैं। आगे डंडे को रखकर पानी की थाह लेता। डंडा जमा देने के पश्चात् क़दम उठाता। कमर तक पानी आ चुका था। पैर उठे जाते थे। डर लगता था कि यदि बहे, तो सीधे गंगाजी में पहुँच जायँगे, और फिर यमलोक। ऐसा लगता, मानो पानी में कोई छिपा है, और पैर घसीटने ही वाला है। मैंने निश्चय कर लिया था कि यदि तनिक भी और अधिक गहराई हुई, तो वापस लौट जाऊँगा। आधी दूर पहुँचा, फिर आगे बढ़ा। कहीं कमर तक पानी, कहीं और नीचा, कहीं ऊँचा। ख़ैर, किसी प्रकार उस पार पहुँचा। भगवान् का जिस सच्चे हृदय से उस दिन स्मरण किया, मुझे विश्वास है, इसके पूर्व वैसा कभी नहीं किया। अब फिर प्रश्न हुआ अपने साथियों को पार लाने का। मेरा मन फिर उस पार जाने को न होता था, पर करता क्या। फिर मौत का सामना किया। मैंने अपने साथियों से कह दिया—"प्रत्येक मनुष्य तीन टाँगों की सहायता से बढ़े (दो प्राकृतिक, एक डंडा)। यदि एक भी बहा, तो सब मरेंगे।" लड़का बीच में किया गया। परमात्मा ने सहायता की—उस पार आए। थोड़ी देर सब बेदम होकर लेटे रहे। फिर भगवान् को हृदय से धन्यवाद दिया, और चंडादेवी से प्रार्थना की—"महारानी, बुलाना तो बार-बार, पर ऐसी कठिन परीक्षा न लेना। हम लोग फ़ेल हो जायँगे।" बालू का मैदान पार कर नाव के पास पहुँचे। मल्लाह से जब मैंने पूरा क़िस्सा सुनाया, तो उसने कहा—"बाबू! आप रास्ता भूल गए थे, नहीं तो इतना बीहड़ रास्ता है नहीं। आप लोग भी तो बिना पंडों के अकेले ही चल दिए!"

उस दिन मुझे समझ पड़ा कि पंडे लाख भूखे गिद्ध की तरह यात्रियों को नोच-खसोट लेते हों, किंतु हमारे पूर्वजों ने इन्हें दान-पुण्य देना इसलिये निश्चित कर दिया था कि ये नवीन नगर या गाँव में guide का काम भली भाँति करके यात्रियों को सुविधा और सुख पहुँचा सकते हैं। किंतु अब तो सब अपना-अपना ध्येय भूल बैठे हैं, बेचारे पंडों को ही दोष क्यों दिया जाय। अस्तु। गंगा पार की, और धर्मशाला आए। ऐसी घटना-पूर्ण चंडीदेवी की यात्रा रही, जिसे कभी भूलना मेरे लिये असंभव है। महादेवजी के नील-नामक एक गण के यहाँ तपस्या करने के कारण इसका नाम नील-पर्वत पड़ा। नीलधारा भी उसी के नाम पर है।

अब हरद्वार के अन्य मुख्य-मुख्य दर्शनीय स्थानों का संक्षेप में वर्णन करके मैं लेख समाप्त करता हूँ—

(१) आसादेवी—रेलवे-लाइन के दूसरी ओर एक पहाड़ी पर स्थित हैं।

(२) मायादेवी—यह मंदिर गंगा के निकट है।

(३) भैरवजी का मंदिर—मायादेवी के निकट है।

(४) अष्टभुजी शिव का मंदिर—मायादेवी के निकट है।

(५) ज्वालापुर—हरद्वार से चार-पाँच मील दूर है। यहाँ पंडों की बस्ती अधिक है। यहाँ से दो-तीन मील पर रानीपुर का पुल भी दर्शनीय है।

भीमगोड़ा—छठे दिन हम लोग ताँगे से लक्ष्मण-झूला चले। ताँगे से जाने से कई सुविधाएँ रहती हैं, जो रेल द्वारा प्राप्त नहीं हो सकतीं। सर्वप्रथम तो मार्ग की शोभा आप भली भाँति अवलोकन कर सकते हैं। दूसरे, मार्ग में जितने भी पवित्र स्थान पड़ते हैं, आप उनका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दर्शन कर सकते हैं। अस्तु। पहले तो चौबीस अवतार का मंदिर पड़ता है। इससे आगे बढ़ने पर भीमगोड़ा (हरद्वार से प्रायः ३ मील)। पहाड़ी के नीचे एक मंदिर है। आगे एक चबूतरा है, और एक पक्का कुंड। कहते हैं, भीम के पैर रखने से इस स्थान में कुंड हो गया।

सत्यनारायण—यहाँ से चलकर सत्यनारायण के मंदिर पर रुके। बड़े ज़ोर का पानी बरसा। मंदिर एक कुंड के बीच में बना है, अतः मंदिर तक पहुँचने के लिये एक पुल-सा है। मंदिर छोटा है। मंदिर से थोड़ी दूर पर एक झरना है।

हृषीकेश—यहाँ से बढ़े, तो हृषीकेश होते हुए पहले लक्ष्मण-झूले पहुँचे। टेढ़े-मेढ़े, ऊँचे-नीचे, कँकरोले-पथरीले रास्ते, एक ओर ऊँचे-ऊँचे पहाड़, एक ओर गहरे गड्ढे, हर ओर लहलहाते हुए जंगल, दूर पर नीचे 'घवव' करती हुई गंगा आदि का दृश्य, हरी-हरी घास, चारो ओर फैली हुई हरियाली। दूर से नरेंद्रनगर देखा। इच्छा देखने की थी, पर कुछ कारण-वश न जा सके। लक्ष्मण-झूला देखा। अब तो लोहे के रस्सों का बना है, परंतु चलने पर अब भी हिलता है! किंतु जब मैं अपने पिताजी के साथ बदरीनारायण, केदारनाथ, गंगोत्तरी और यमुनोत्तरी गया था, तब पुल ऐसा न था। मुनि की रेती देखी, कंडी-झरपान देखे, ठहरने की चट्टियाँ देखीं, बदरिकाश्रम जाते हुए पथिक देखे। लक्ष्मण-झूले पर एक देहाती पुरुष और स्त्री चदरे का एक-एक छोर पकड़े चले जा रहे थे। चदरे के अंदर बच्चा था। वे बदरिकाश्रम जा रहे थे।

उस पार गंगा-तट पर ही एक मंदिर है, वहाँ दर्शन किए। निकट ही एक बड़े बंद कमरे में एक बड़े तेजस्वी और स्वस्थ महात्मा बैठे थे, उनके दर्शन किए। फिर स्वर्गाश्रम घूमे। इसका जैसा नाम है, वैसे ही यह है भी। यहाँ के मुख्य-मुख्य स्थान देखे। यहाँ लोग अपने नाम से रुपया देकर आम के पेड़ लगवा जाते हैं। श्रद्धालु भक्त काली कमलीवाले बाबा को, जो हो सकता है, भेंट चढ़ाते हैं। कमलीवाले बाबा का ज़िक्र फिर कभी करेंगे। एक ऋषि को देखा, जो सदा खड़े ही रहकर तपस्या करते हैं। वैसे ही सोते और वैसे ही सब काम करते हैं। उनका पैर फूल आया था। सीता-कुंड और गरुड़-कुंड देखा। उसके पश्चात् बालू पार करके गंगा-तट पर आए। उस पार जाने को नाव मिलती है, जो कमलीवाले बाबा की ओर से है। उतराई नहीं देना पड़ती। यहाँ गंगाजी कम चौड़ी हैं, पर बहुत गहरी हैं। जल मटीला और बड़ा बहाव है। नाव छूटने ही वाली थी, अतः बालू पर तेज़ दौड़कर नाव पकड़ी, और पार आए। लक्ष्मण-झूले में लक्ष्मणजी का मंदिर बहुत ऊँचे पर, बहुत-सी सीढ़ियाँ चढ़ने पर, पड़ता है। ध्रुव-कुंड और चंद्रशेखर महादेव आदि भी दर्शनीय हैं। यहाँ पक्के घाट नहीं हैं। यहाँ से ताँगे पर बैठकर हृषीकेश पहुँचे। यहाँ भरतजी का मंदिर मुख्य है। वराह भगवान्, गंगा-घाट पर राम-जानकी का मंदिर, कुब्जाम्रक-कुंड, जिसमें एक झरना भी है। कैलास-आश्रम, शंकराचार्य की गद्दी आदि मुख्य हैं। ध्रुव-घाट भी यहाँ बड़ा सुंदर है। यहाँ भी प्रातः-सायं गंगा-तट का दृश्य बड़ा सुंदर होता है। असंख्य मछलियाँ यहाँ हैं, और उन्हें लोग आटे की गोलियाँ खिलाते रहते हैं।

गरुड़-चट्टी—लक्ष्मण-झूले से प्रायः तीन मील पर गरुड़-चट्टी है। मार्ग गंगा के किनारे होकर है, जो बहुत आकर्षक और आह्लादकारी है। यह स्थान अत्यंत सुंदर है। यहाँ गरुड़जी का मंदिर है। निकट ही एक 'गरुड़-कुंड'-नामक कुंड है। यहाँ बाग़ बहुत-से हैं। यहाँ का अपूर्व प्राकृतिक दृश्य देखकर प्रायः लोग हरद्वार वापस चले जाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरद्वार में पचासों धर्मशालाएँ हैं। यात्री भी तो यहाँ सदा बने ही रहते हैं। भारत की सप्त-पुरियों में एक यह भी है। इसे गंगा-द्वार भी कहते हैं। यह भारत का अति प्राचीन धार्मिक नगर है। यहाँ गंगा का माहात्म्य अत्यधिक है। यह हरि (विष्णु) द्वार भी कहलाता है। यहाँ मच्छड़ बहुत हैं। सबसे विशेष बात यहाँ की यह है कि यहाँ के कुओं का पानी ऐसा मीठा होता है, जैसे मिसरी और ऐसा ठंडा होता है, जैसे गली बर्फ़। हरद्वार में मेले बहुत होते हैं। हर अमावस्या और पूर्णिमा को यहाँ स्नान का माहात्म्य है। मेष की संक्रांति, गंगा-दशहरा और सोमवती अमावस्या को विशेष रूप में मेला लगता है। प्रत्येक छ वर्ष के पश्चात् अर्धकुंभ और बारह वर्ष के पश्चात् कुंभ का मेला पड़ता है, जिसमें कई लाख मनुष्य आते हैं। हरद्वार केवल धर्म ही नहीं, शिक्षा का भी केंद्र है—ऋषिकुल ब्रह्मचर्याश्रम तथा गुरुकुल-विश्वविद्यालय का तो वर्णन हो ही चुका है, ज्वालापुर-महाविद्यालय भी यहाँ की एक प्रसिद्ध शिक्षा-संबंधी संस्था है। हरद्वार ज़िला सहारनपुर के अंतर्गत है।

अस्तु। दो दिन के पश्चात् हम लोग हरद्वार लौट आए। दोपहर के समय वहाँ के एरोडोम गए, और हवाई जहाज़ पर उड़े। हवाई जहाज़ से हरद्वार का पूर्ण दृश्य दिखाई देता है। गंगाजी नहीं, मालूम होता है, नाली बह रही है। आदमी कठिनता से एक सेंटीमीटर के दिखाई देते हैं। हवाई जहाज़ पर बैठने पर डर उसी समय लगता है, जब वह नीचे आने लगता है, अन्यथा लगता है, जैसे मोटर पर बैठे हों। हवा का झोंका इतना तेज़ होता है कि यदि खिड़की के बाहर हाथ निकल जाय, तो हाथ की हड्डी टूट जाय। अस्तु। हरद्वार का दृश्य हवा से भी देखकर रात्रि को हरि की पैड़ी पर फिर आनंद लिया, और दूसरे दिन प्रातःकाल के समय मसूरी-देहरादून चल दिए, जिनका वर्णन सुधा के पिछले अंकों में हो चुका है।

अशक्ति का कट्टर दुश्मन

आतंकनिग्रह गोलियाँ

शरीर में खरा जोश पैदा करके कैसा भी अशक्त पुरुष हो, उसे नौजवान बना देती हैं। ३२ गोलियों की डिब्बी की क़ीमत १)

आतंक-निग्रह-औषधालय
जामनगर, काठियावाड़

लखनऊ-एजेंट—मेसर्स इंदरचंद ऐंड कंपनी, चौक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोस्वामी तुलसीदास की धर्मपत्नी

रत्नावली

जीवनी और रचना

(सचित्र)

संपादक और टीकाकार

रामदत्त भारद्वाज

संशोधक

कविकुमार पंडित भद्रदत्त शर्मा

एवं

पंडित कृष्णदत्त भारद्वाज

(एम्० ए०, आचार्य, शास्त्री, साहित्यरत्न)

——:०:——

यह पुस्तक हिंदी-संसार में नई गवेषणा का फल है, और गोस्वामी तुलसीदास के आद्य जीवन एवं उनकी साध्वी धर्मपत्नी पर प्रचुर प्रकाश डालकर अनेक प्रचलित भ्रमों को दूर करती है। इसमें अन्य अनेक हस्त-लिखित ग्रंथों के आधार पर रत्नावली का विशद जीवन-चरित है, उसके २०१ दोहे तथा संपादक द्वारा उनकी सरल टीका भी विद्यमान है। अब तक उक्त चरित और दोहों की जो अनेक हस्त-लिखित प्रतियाँ उपलब्ध हुई हैं, उन सबकी तथा अन्य हस्त-लिखित पुस्तकों के कतिपय पृष्ठों के चित्र भी मनोविनोदार्थ यथास्थान दे दिए गए हैं।

यद्यपि गत दो-तीन वर्षों में इस विषय की चर्चा उक्त संपादक और टीकाकार द्वारा अनेक पत्र-पत्रिकाओं में समय-समय पर हुई है, तथापि यह पुस्तक हिंदी के स्थायी-साहित्य में सर्वथा नई और अत्यंत महत्त्व-पूर्ण वस्तु है।

रत्नावली की रचना बालक-बालिकाओं एवं नर-नारियों के बड़े काम की है, और इतिहास, साहित्य तथा भाषा के मर्मज्ञों के लिये भी भव्य विचारों की सामग्री उपस्थित करती है।

गोस्वामी तुलसीदास-कृत रामायण का जो हिंदू-गृह में गौरवान्वित स्थान है, वैसा ही उनकी विदुषी पत्नी के दोहों का भी है। मूल्य लगभग १), सजिल्द १॥)

मिलने का पता—

गंगा-पुस्तकमाला, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने प्यारे बच्चों को साहसी और वीर बनाने के लिये
'साहसी बालक' अवश्य पढ़ाएँ।

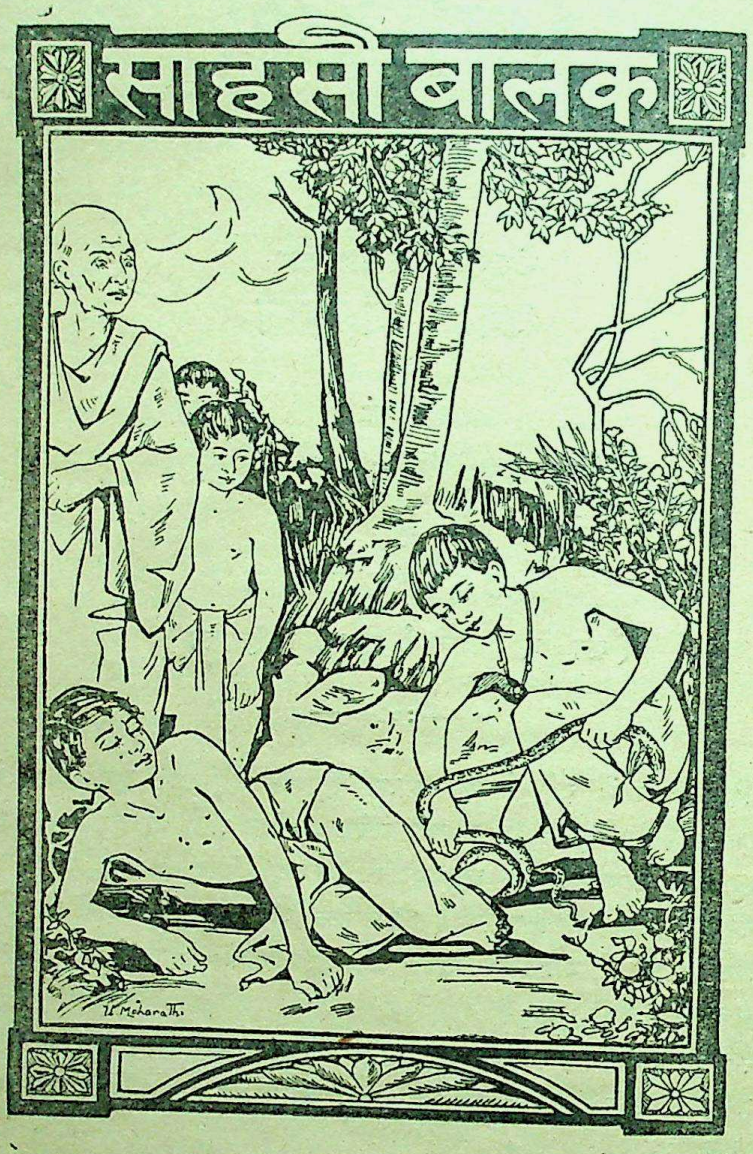

साहसी बालक (द्वितीयावृत्ति)

यह कहानी लिखकर लेखक ने बाल-साहित्य के एक मुख्य अंग की पूर्ति की है। बालक ही आगे चलकर मनुष्य और देश के कर्णधार होते हैं, इसलिये अपने बालको को साहसी बनाइए। साहस के बल पर ही कल्याण हो सकता है। अपने बच्चों को मनोरंजन देने के साथ ही साहसी बनाइए, जिसमें वे जीवन की कठिनाइयों का सामना करने के लिये तैयार रहें। मूल्य ।), जिल्ददार ।=)

मिलने का पता—मैनेजर बाल-विनोद-वाटिका, ३६, लाटूश रोड, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी-संसार की एक अलौकिक भेंट

क्या आप

भा र त का प्राचीन इतिहास	भा र त का प्राचीन विज्ञान
भा र त की प्राचीन सभ्यता	भा र त की प्राचीन पवित्रता
भा र का प्राचीन भ्रातृप्रेम	भारत की ललनाओं का अपूर्व त्याग
भारत-सपूतों का पितृआज्ञा-पालन	प्राचीन भारत का स्वामी-सेवक-भाव

और

तो हमारी २० खंडों में प्रकाशित होनेवाली तुलसी-कृत रा मा य ण सटीक और सचित्र पढ़िए ?

पाप पर पुण्य की विजय, असत्य पर सत्य की विजय, पापी के सर्वनाश की कथा नहीं जानना चाहते ? **क्यों नहीं ?**

* बीस खंडों में *

यह रामायण २० खंडों में प्रकाशित होगी। प्रत्येक खंड में ८० पृष्ठ, १५-२० सादे और ६-७ रंगीन चित्र। साइज़ सुधा का-सा भव्य। मूल्य प्रतिखंड १॥)

ग्राहकों को विशेष सुविधा

अभी से सब खंडों के लिये ग्राहक बननेवालों से १) लिया जायगा, और ५) अभी भेजकर प्रथम चार खंड के लिये स्थायी ग्राहक बननेवालों से केवल ५) अर्थात् १।) प्रतिखंड लिया जायगा। प्रत्येक खंड का अलग-अलग मूल्य १॥) है।

दो खंड

प्रकाशित हो गए !
तीसरा प्रेस में है !!

कृपा कर ग्राहक बनें, और अपने इष्ट-मित्रों से भी अनुरोध करें। इस सहायता से हमारी एक योजना पूर्ण हो जायगी, और आपके हाथों में एक अनुपम ग्रंथ-रत्न आ जायगा।

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदेश-पत्र

संचालक गंगा-ग्रंथागार

(रामायण-विभाग)

३६, लाटूश रोड, लखनऊ

ग्राहक-नं०..... ता०.....

प्रिय महाशय,

मैं आपकी २० खंडों में प्रकाशित होनेवाली सचित्र रामायण का, जिसका मूल्य ३०) होगा, स्थायी ग्राहक होना चाहता हूँ। कृपया मेरा नाम ग्राहकों में लिख लीजिएगा।

(१) रियायती मूल्य २०) मनीऑर्डर से भेजता हूँ / प्रथम अंक वी० पी० भेजकर ले लें।

(२) प्रथम ४ अंक के ५) मनीऑर्डर से भेजता हूँ / पहला अंक वी० पी० भेजकर ले लें। और आगे के अंक बुक-पोस्ट से, निकलते ही, भेजते रहें।

(३) १।) का प्रत्येक अंक निकलते ही डाक-व्यय-सहित वी० पी० द्वारा भेज दें *।

भवदीय—

[हस्ताक्षर]

नाम और पता—

_____

_____

_____

* इन तीनो शर्तों में जो मंजूर हो, उसे ही रखिए, शेष काट दें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खून की खाद

[श्रीयुत तेजनारायण काक एम्० ए०]

(१)

"अरी ओ मुनुआ की मा ! सुनती है, ज़रा इधर तो आ।"

"क्या है ? जब देखो, तब मग़ज़ चाटा करते हो; कुछ काम भी है, या लगे पुकारने।"

"अरी, सुन तो। महाजन अभी तक़ाज़ा करके गया है। तीन महीने का हिसाब माँगता है।"

"तक़ाज़ा करके गया है, तो मैं क्या करूँ ? गहने तो तुमने सब एक-एक करके बेच दिए। अब क्या चमड़ी छीलकर दे दूँ ?"

"अरी भलीमानस, तू तो ज़रा-सी बात पर ही बिगड़ने लगती है। मैंने तो सीधी-सी बात कही थी कि तू एकदम खौखिया उठी। मैं तुझे ब्याहकर लाया हूँ, तो तेरी चमड़ी थोड़े ही छिलवाऊँगा।"

"तो तुम्हीं बताओ, मैं क्या करूँ ? जब से इस घर में आई हूँ, तब से आराम मिलना तो दूर रहा, दोनो वक़्त पेट-भर रोटी भी न खा सकी। सारे दिन काम करते-करते हड्डियाँ टूट जाती हैं, तब कहीं शाम को घर में चूल्हा जलता है।"

"परमात्मा का शाप है, मुनुआ की मा ! पिछले साल वर्षा भी नहीं हुई, वरना सबका हिसाब पाई-पाई चुका देता। क्या करें, हमारे कर्म ही ऐसे हैं।"

"रधिया की बेटी भी अपना हिसाब माँग रही थी। कहती थी, बैलों के चारे के तीन रुपए होते हैं। जल्दी से हिसाब चुकता कर दो। मैं भी ग़रीब आदमी हूँ। घर में सत्तर काम रहते हैं। रोज़-रोज़ हिसाब माँगने नहीं आ सकती।"

"मुनुआ कल मज़ूरी के आठ आने जो लाया था, कोठे के सामनेवाले ताक़ में धरे हैं। रधिया की बेटी कल आए, तो उसे दे देना। कह देना, इन दिनों हाथ बड़ा तंग है। धीरे-धीरे तेरा सब हिसाब चुका देंगे।"

"आठ आने तो वह हरगिज़ न लेगी। पंद्रह दिन से बराबर आ रही है। कहती थी, कल पूरा-पूरा हिसाब लेकर जाऊँगी। बेटा रोज़ कमाकर लाता है, फिर भी गाँठ से पैसा नहीं निकलता। अगर बैल रखने की बिसात नहीं, तो उन्हें बेच क्यों नहीं डालते ? मुझे भी तो आख़िर घर का खर्च चलाने को पैसे चाहिए। घर में कोई मुहरों की हँडिया थोड़े ही गड़ी है।"

"बैल बेच देंगे, तो फिर खायँगे क्या ? क्या इस साल भी वर्षा न होगी ?"

"तो फिर किसी से उधार क्यों नहीं ले लेते ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"उधार भी अब कौन देने लगा ? पूरे साठ रुपए तो चौधरी के देने हैं। उनका सूद भी चढ़ता जाता है। किसी दूसरे से क़र्ज़ लूँ भी, तो किस बूते पर ?"

"अरे सुक्खू, भीतर है क्या ?" बाहर से किसी ने पुकारा।

'कौन है ? चौधरीजी ! आओ भाई, आओ। मुनुआ की मा, ज़रा चिलम तो भर ला। चौधरीजी के लिये खाट बिछा दे।"

"अजी, खाट-वाट रहने दो।" चौधरी रामभरोसे ने झोपड़े में प्रवेश करते हुए कहा—"मैं अपने रुपए लेने आया हूँ। बैलों की एक नई जोड़ी ख़रीदी है। बैलवाला दाम लेने घर पर खड़ा है। आज मेरा क़र्ज़ अदा कर दो। सूद मिलाकर कुल पचासी रुपए होते हैं।"

"बैठिए तो सही, चौधरीजी ! इस घर की हालत तो आपसे छिपी नहीं। मेरे बुढ़ापे के मारे अब हाथ-पैर चलते नहीं। मुनुआ जो दो पैसे मजूरी के लाता है, उसी से हम तीनो प्राणी एक वक़्त रूखा-सूखा खाकर पेट पालते हैं।"

"मैं कुछ नहीं जानता। तुम्हें इसी तरह बहाना बनाते-बनाते आज सात महीने हो गए। मैं कब तक संतोष करूँ ? जैसे भी हो, आज शाम तक रुपया मिल जाना चाहिए, वरना अदालत से डिगरी तो मिल ही चुकी है। यह खेत और झुपड़िया क़ुर्क़ करवाने की देर है।"

"हम बरबाद हो जायँगे, चौधरीजी ! खेत ही पर आशा लगाए बैठे हैं। इस बार तो ईश्वर की दया से वर्षा होने के आसार भी दिखाई देते हैं। आप खेत ही छीन लेंगे, तो हम खायँगे क्या ? आपको बैलों की ज़रूरत हो, तो मेरे बैल ले जाइए। काम निकल जाने पर लौटा दीजिएगा। आप ही की दया से तो अब तक हम ग़रीबों का निर्वाह होता आया है।"

"मैं अब तुम्हारे फुसलाने में नहीं आ सकता, सुक्खू ! तुम बहुत दिनों से इसी तरह टालते आ रहे हो। मैं क्या पागल हूँ, जो दो-चार दिन के लिये तुम्हारे मरे हुए बैलों को ले जाकर चारे का ख़र्च बढ़ाऊँ ? मैं कुछ नहीं जानता। जैसे भी हो, आज शाम तक मेरा रुपया अदा हो जाना चाहिए, नहीं तो कल ही सरकारी आदमी यहाँ पहुँच जायँगे, और तुम्हारे खेत पर बोली लगनी शुरू हो जायगी।"

"हम मर जायँगे, चौधरीजी ! मुनुआ गली-गली भीख माँगता फिरेगा। उसी के लिये कलेजा जलता है, वरना मैं और उसकी मा तो चिता पर पाँव धरे बैठे हैं। आपके भी बाल-बच्चे हैं। ईश्वर के लिये दो-तीन महीने और ठहर जाइए, आपका सब रुपया चुकता कर दूँगा।"

"मैं तुम्हारी बातों में नहीं आ सकता। आज शाम को रुपया मेरे घर पहुँच जाना चाहिए, समझे।" यह कहकर चौधरी बूढ़े सुक्खू को धमकाता हुआ वहाँ से उठकर चला गया।

बहुत दूर तक तो सुक्खू चुपचाप बैठा हुआ अपने भीतर की आग जसे अंदर-ही-अंदर पीता रहा। जब रहा न गया, तब धीरे से बोला—"मुनुआ की मा !"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ।"

"चौधरी कहता है, रुपया दे दो, वरना खेत क़ुर्क़ करवा लूँगा। जैसे खेत उसके बाप का है।" इतना कहते-कहते सुक्खू की गड्ढों में धँसी हुई आँखें अंगारों की तरह लाल हो उठीं, और उसके सूखे हुए कमज़ोर ओंठ क्रोध के मारे फड़क उठे।

"ज़रा पानी पी लो। इतना ग़ुस्सा करने से क्या फ़ायदा? क्यों जी ख़राब करते हो?"

"आजकल भलाई का तो ज़माना ही नहीं। इसके बाप की मैंने ऐसी ख़िदमत की थी कि वह ज़िंदा होता, तो आज अपने को बेचकर भी मेरे काम आता। और, यह उसी का सपूत है। चार पैसे कमाकर चौधरी बन बैठा, तो यह हालत! इस कल के छोकरे की आज कितनी ख़ुशामद की, रोया, गिड़गिड़ाया, मगर टस से मस न हुआ।.....मैं भी देखूँगा।.....मेरे खेत में पाँव तो धर ले।"

उस दिन शाम को सुक्खू ने अन्न का एक दाना तक मुँह में न डाला। खाट पर पड़ा-पड़ा न-जाने क्या-क्या बड़बड़ाता रहा।

आधी रात बीत जाने पर सुक्खू ने पुकारा—"मुनुआ!"

"हूँ।"

"इधर तो आ। मेरी खाट उठाकर खेत में रख दे। गरमी के मारे पसीना आ रहा है।"

"मेरे तो सरदी से हाथ-पाँव ऐंठे जा रहे हैं, और तुम्हें गरमी लग रही है। बाहर बड़ा सख़्त जाड़ा पड़ रहा है, दादा।"

"मैं कहता हूँ, मैं खेत में सोऊँगा। तुझे सरदी लगती है, तो यहीं पड़ा रह। चल, उठा खाट।"

मुनुआ जब तक उठे-उठे, बूढ़ा स्वयं अपनी खाट पर से उठ खड़ा हुआ। एक हाथ में लाठी उठाई, और दूसरे हाथ से खाट उठाकर अपनी पीठ पर धर ली, और लड़खड़ाता हुआ दरवाज़े के बाहर निकल गया।

मुनुआ और मुनुआ की मा भी चुपचाप उसके पीछे-पीछे चल पड़े।

(२)

बाहर बड़ी सख़्त सरदी थी। ठंडी हवा सन्-सन् करके चल रही थी। एक सूखे हुए वृक्ष के पास बूढ़ा सुक्खू अपनी खाट पर पड़ा हुआ धीरे-धीरे बड़बड़ा रहा था। उसके पास ही उसकी स्त्री और लड़का ज़मीन पर सिकुड़े हुए पड़े थे। सुक्खू का प्यारा कुत्ता झबरा उसकी खाट के नीचे अपने पैरों में मुँह डालकर कूँ-कूँ कर रहा था।

सुक्खू की स्त्री उठी, और अपना फटा हुआ कंबल बूढ़े को उढ़ा दिया।

"कौन है? मुनुआ की मा है क्या? मुझे गरमी लग रही है, कंबल उतार ले।"

बुढ़िया ने अपने पति के माथे पर हाथ रक्खा। उसके सिर से जैसे आग निकल रही थी। बड़ा तेज़ बुख़ार चढ़ा था।

"अरे, तुम्हें तो बुख़ार चढ़ा है, और इस झक्कड़ में छाती खोलकर सो रहे हो।"

"मैं अभी मरता थोड़े ही हूँ। इस चौधरी का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिर खोलकर ही प्राण दूँगा। बूढ़े की हड्डियों में अभी तक काफ़ी बल है। मेरे बाप-दादों का खेत छीनने चला है। मैं भी देखूँगा ..... मेरे जीते-जी वह खेत में पाँव तो धर ले।"

ज्यों-ज्यों रात बीतती गई, त्यों-त्यों बूढ़े सुक्खू का ज्वर बढ़ता गया। सारी रात उसने एक मिनट के लिये भी आँखें बंद नहीं कीं। खाट पर पड़ा ज्वर के प्रकोप में न-जाने क्या-क्या बकता रहा।

धीरे-धीरे पौ फटने लगी। सुक्खू ने कमज़ोर आवाज़ में कहा—"मुनुआ, ज़रा करवट तो बदलवा दे। सारी देह अकड़ गई है। दर्द के मारे हिला भी नहीं जाता।"

मुनुआ ने उठकर बूढ़े को करवट बदलवा दी।

"और देख तो..... मेरी लाठी यहाँ खाट के पास लाकर रख दे। ..... हाँ, ज़रा और पास।"

बूढ़े की लाल-लाल आँखें सामने के मार्ग पर गड़ी हुई थीं। उसकी भयानक मुद्रा देखकर मुनुआ और उसकी मा का हृदय काँप उठा।

काफ़ी दिन चढ़ आया। अपनी स्त्री और पुत्र के बहुत समझाने-बुझाने पर भी बूढ़ा वहाँ से हिला नहीं।

चौधरी रामभरोसे भी अपनी बात के पक्के निकले। शाम होते-होते सरकारी अमले के साथ सुक्खू के खेत पर आ धमके। तमाशा देखने के लिये उनका छोटा लड़का भी उनके साथ था।

"आ गए चौधरी, बड़ी देर से तुम्हारे इंतज़ार में था।" बूढ़े ने भर्राई हुई आवाज़ में कहा—"खेत लोगे न? लो, लो खेत।" उसने खाट के सहारे पड़ी लाठी उठाई, और उछलकर खड़ा हो गया। उसके फड़कते हुए नथुने और गड्ढों से बाहर निकलती हुई लाल-लाल आँखें देखकर सब-के-सब थोड़ी देर के लिये घबरा-से गए।

किंतु खड़े होते ही बूढ़े की आँखों के आगे अँधेरा छा गया। उसके कमज़ोर पैर लड़खड़ाए और वह चक्कर खाकर भूमि पर गिर पड़ा। खाट की पाटी उसके कपोल में लगी। ख़ून की धारा-सी बहने लगी। मुँह से रक्त की दो-तीन बूँदें निकलकर उसके सूखे हुए गालों पर ढुलक आईं। सबके देखते-ही-देखते उसने एक हिचकी ली, और आँखें उलट दीं।

(३)

सुक्खू को मरे आज सत्ताईसवाँ दिन था। चौधरी का छोटा लड़का आज इक्कीस दिन से बुख़ार में पड़ा था। दिन-ब-दिन हालत बिगड़ती ही जाती थी। संध्या के समय जब ज्वर का प्रकोप अधिक होता, तो वह पागलों की तरह बड़बड़ाने लगता—"वह देखो, वह! अंगारों की तरह दहकती हुई लाल-लाल आँखें!..... ख़ून बरस रहा है, ख़ून!..... खेत लेगा?..... ले...ले...ख़ून!...ख़ून!!"

चौधरी ने अपने पुत्र की दवा-दारू करने में कोई क़सर न रक्खी। वैद्यों और डॉक्टरों का इलाज करवाया, झाड़-फूँक करवाई, ब्रह्मभोज करवाया, भगवान् शिव की पूजा बिठाई; किंतु किसी से कुछ भी फ़ायदा न हुआ। लड़के की हालत बजाय सुधरने के बिगड़ती ही गई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज रोज़ की अपेक्षा चौधरी के लड़के की हालत अधिक ख़राब थी। ज्वर बहुत तेज़ था। लड़का रह-रहकर चीख़ उठता था। चौधरी और चौधराइन आँखों में आँसू भरे उसकी चारपाई के पास बैठे थे।

"सुक्खू का खेत उसके बेटे को वापस दे क्यों नहीं देते? जब से खेत लिया है, तब से लड़का बीमार पड़ा है।" चौधराइन ने आँसू पोंछते हुए कहा।

"अब खेत लौटा दूँगा, तो गाँववाले क्या समझेंगे?"

"वे चाहे जो समझें। हमें यह खेत अब नहीं रखना है। लड़के की हालत नहीं देखते? उसे अभी लौटा दीजिए।"

"अब खेत लौटा दूँगा, तो लोग कहेंगे कि बेटे पर आफ़त आई, तो धर्मात्मा बनने चला है।"

"कहें, तो कहने दो। हमारी बला से। मैंने तो तुम्हें पहले ही मना किया था कि यह काम अच्छा नहीं, पर तुमने न माना। तुम तो पैसे के पीछे पागल हो रहे थे। अब देखा अपनी करनी का फल। पूरे इक्कीस दिन से लड़के की कैसी हालत हो रही है।"

सहसा लड़के ने एक ज़ोर की चीख़ मारी—"अरे, छोड़! छोड़!.....मेरा कुरता छोड़!... अपना खेत ले-ले!.....ले-ले...खून!..... गर्म-गर्म खून!"

चौधराइन की आँखों से आँसुओं की धारा बह चली। उसने अपने लड़के के सिर पर हाथ फेरते हुए पूछा—"बिसनू! क्यों बेटे? कैसी तबियत है?"

"मा!.....अरे, रे!.....वह देख! खून में रँगी हुई आँखें!.....मैं.....मैं नहीं चलूँगा।...मा! देख! देख! खून में भीगा हुआ हड्डियों का ढाँचा.....!"

"खड़े क्या हो? जाओ, मुनुआ का खेत लौटा दो। जाओ, अभी जाओ देखते नहीं, लड़के ने आँखें फेर दी हैं, बदन ठंडा पड़ रहा है।"

❀ ❀ ❀

मुनुआ का खेत उसे वापस मिल गया। इस साल .खूब वर्षा हुई। सुक्खू के 'खून की खाद' पाकर मुनुआ का खेत लहलहा उठा ❀।

❀ लेखक की प्रारंभिक कहानियों में से एक।

मुफ़्त!

बड़े-बड़े डॉक्टरों से सम्मानित, बड़े-बड़े रईसों से प्रमाणित चिकित्सक से नामर्दी, प्रमेह, मधुमेह, शीघ्रपतन, धातु-रोग, गुप्त रोग, बाँझपन, प्रदर, ऋतुदोष, गर्भाशय-दोष, आदि सभी रोगों का शर्तिया इलाज करावें। चाहें, तो १ हफ़्ता मुफ़्त इलाज कराकर चमत्कार देखें।

'कुशल-भवन', निस्बत रोड, लाहौर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय लिपियों की एकता एवं उनका एकीकरण

[डॉ० दुर्गादत्त गंगाधर ओझा बी० एस्-सी०, एम्० बी०, बी० एस्०]

(गतांक से आगे)

क्या ये कारण अब भी विद्यमान हैं ?

यात्रा और डाक की विभिन्न सुविधाओं, समाचार-पत्र, रेडियो तथा प्राचीन मुद्रित साहित्य के बाहुल्य के कारण देश-कालगत अंतर जाते रहे।

(२) मुद्रण तथा टाइप-लेखन-यंत्र और मसि-वाहक क़लम के आगमन के पश्चात् विभिन्न विचित्र लेखन-सामग्रियाँ विलीन हो गईं।

(३) व्यापार, राजकार्य, ग्रंथ-लेखन, पत्र-व्यवहार आदि साधारण दैनिक फुटकर शीघ्रता के कार्यों के लिये टाइप-लेखन-यंत्र के अधिकाधिक प्रयोग के फल-स्वरूप व्यक्तिगत विशेषता का प्रभाव लिपि पर पड़ने नहीं पाता।

(४) हस्त-लेखन की अपेक्षा टाइप-लेखन अधिक त्वरामय है, और संभवतः आगामी पचास वर्षों में हस्त-लेखन एक विस्मय की वस्तु बन जाय। विशिष्ट संचेय-लिपि का प्रयोग साधारण लिपि को त्वरित-लेखन के विरूपात्मक प्रभाव से पूर्णतः बचाता है।

(५) आधुनिक अनिवार्य शिक्षण-काल में अपरिमित मुद्रित साहित्य के सार्वभौमिक अस्तित्व के कारण लिपि के किसी अक्षर को भूल जाना असंभव है।

(६) किसी जाति द्वारा नवीन लिपि का अपनाया जाना अब भी संभव है, जैसे तुर्किस्तान में रोमन-लिपि का प्रयोग। भारतीय भाषा-भाषी भी यदि रोमन-लिपि को अपनाएँ, तो उसमें कुछ परिवर्तन और परिवर्द्धन करने पड़ेंगे। किंतु इनके फल-स्वरूप अन्य क्रमिक विकासमय परिवर्तन आगे नहीं होने पाएँगे, क्योंकि पहले पाँच कारण इसके साथ विद्यमान नहीं।

(७) सर्वमान्य वैज्ञानिक आकस्मिक एकीकरण अब भी संभव है, लेकिन क्रमिक विकासमय एकीकरण संभव नहीं।

इन अनेक लिपियों की पुनः संयोजित आदि-रूप-रेखा के एकत्व को कैसे प्राप्त किया जा सकता है ? अर्थात् अब उलटे चलकर मूल-उद्गम तक वापस कैसे पहुँच सकते हैं ? कुछ मार्ग ये हैं, जिनकी कठिनाई उनकी श्रेष्ठता के साथ बढ़ती जाती है—

(१) सभी लिपियों में कुछ सुधारात्मक परिवर्तनों का आयोजन करना अनिवार्य है, यदि उनका भविष्य में सुदीर्घ काल तक अस्तित्व रखना वांछनीय है। ये सब परिवर्तन इन सब लिपियों में एक-से ही हों। ये अनिवार्य आवश्यक परिवर्तन निम्न-लिखित हैं—

(क) 'अ' के सिवा अन्य सब स्वरों के चिह्नों का त्याग और उनके बदले में मात्राओं के सरल चिह्नों का प्रयोग, जो सब 'अ' तथा व्यंजनों के केवल बाद में स्वतंत्र रूप में लिखे जायँ। सरल मात्रा-चिह्नों का उदाहरण नीचे दिया जाता है—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

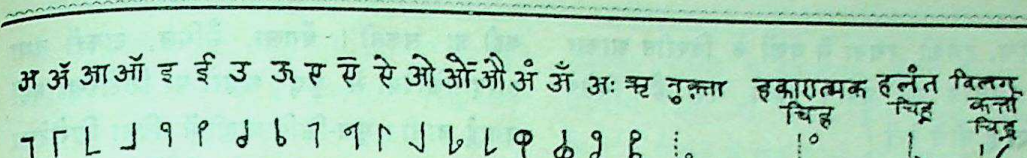

प्रत्येक भाषा में मात्राओं के प्रयोग की इतनी अधिक पुनरावृत्ति होती है कि इनके सरल आकार के बदले में जटिल स्वर-चिह्नों के प्रयोग से कितनी परेशानी होती होगी, यह स्पष्ट ही है। व्यंजनों की भाँति 'अ' की बारहखड़ी का प्रयोग काफ़ी सरल उपाय है। यदि प्रचलित लिपियों के 'अ' का जटिल स्वरूप भी असह्य हो, और प्रत्येक स्वतंत्र स्वर उच्चारण को प्रकट करने के लिये मात्राओं के पहले बार-बार 'अ' स्वर-चिह्न का प्रयोग करना अभीष्ट न हो, तो ऊपर दिए हुए 'अ' मात्रा-चिह्न का उपयोग किया जा सकता है। सभी भारतीय लिपियों में यह विशेषता है कि उनके प्रत्येक व्यंजन-संकेत में 'अ' की मात्रा स्वभावतः संयोजित मानी जाती है, जब तक कि उसके साथ हलंत का चिह्न नहीं लगाया जाता, और जब अन्य किसी स्वर की मात्रा किसी व्यंजन के साथ लगाई जाती है, तो वह स्वाभाविक 'अ' मात्रा, जिसके लिये कोई विशेष चिह्न प्रयुक्त नहीं होता है, स्वयं विलीन हुई मान ली जाती है। भविष्य में भी इसी रीति का व्यवहार किया जा सकता है। जब किसी स्वर-चिह्न का अकारात्मक व्यंजन से विलग एवं स्वतंत्र उच्चारण अभीष्ट हो, तो व्यंजन और स्वर-मात्रा-चिह्न के बीच में 'विलगकर्ता' चिह्न का प्रयोग किया जा सकता है, अथवा मात्रा-चिह्न को व्यंजन से साधारण से अधिक दूरी पर लिखा जा सकता है। केवलमात्र 'अ' मात्रा-चिह्न के व्यवहार के लिये ऐसा करने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी, क्योंकि इसका व्यंजन-संयोजनीय चिह्न प्रत्येक व्यंजन में स्वभावतः विद्यमान रहता है (वैज्ञानिक दृष्टि से खड़ी लकीर 'पाई' के रूप में)। यदि किसी शब्द का पहला अक्षर कोई भी स्वतंत्र स्वर हो, तब भी विलगकर्ता चिह्न की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। यदि व्यंजन अकारात्मक न होकर कोई अन्य स्वरखाला हो—अर्थात् व्यंजन के साधारण चिह्न के बाद एक स्वर-चिह्न आ चुका हो, तो उसके बाद यदि कोई दूसरा स्वर-चिह्न और आवे, तो विलगकर्ता-चिह्न की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। उदाहरणार्थ 'ईख' अथवा 'राइस' लिखने में विलगकर्ता चिह्न का उपयोग नहीं करना पड़ेगा; लेकिन रईस लिखने में 'र' और 'ई' के बीच में विलगकर्ता चिह्न लगाना पड़ेगा, अथवा दोनों के बीच में साधारण से अधिक स्थान छोड़कर लिखना या छापना पड़ेगा, नहीं तो 'रीस' पढ़ लिया जायगा। इस प्रकार विलगकर्ता चिह्न अथवा विशेष अंतर के प्रयोग का क्षेत्र बहुत कुछ परिमित हो जायगा; अतः 'अ' स्वर-चिह्न एवं 'अ' की बारहखड़ी का त्याग एवं बदले में सब स्वरों के मात्रा-चिह्नों का प्रयोग भी वांछनीय प्रतीत होता है। विलगकर्ता चिह्न के बदले में 'डैश' के साधारण चिह्न का प्रयोग भी किया जा सकता है।

यह दुहराने की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए कि मात्राओं को ऐसा सरल एवं वर्ण अथवा व्यंजन-अनुगामी स्वरूप देने का प्रधान अभिप्राय उनके टाइपों को व्यंजनों के टाइपों से विलग और स्वतंत्र बनाना है, और साथ ही मात्रा और स्वर-चिह्नों को अभिन्न एवं एक रूप करना। अंतिम उद्देश्य मुद्रण-कार्य की सुगमता है। ऊपर दिए हुए मात्रा-चिह्नों की एक और भी विशेषता है। वह यह कि इन इक्कीस चिह्नों को छापने के लिये केवल ग्यारह टाइपों की आवश्यकता पड़ेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारण, इनकी रचना में वर्णों के विपरीत आकार के सिद्धांत का प्रयोग किया गया है। विशेष विवरण नीचे देखें।

(ख) दूसरा परिवर्तन, जिसके द्वारा मुद्रण-कार्य में आश्चर्य-जनक सुगमता लाई जा सकती है, हलंत-चिह्न का प्रयोग है। श्यामी-लिपि में पाली-ग्रंथों को लिखने में संयुक्ताक्षरों को अकार-विहीन व्यंजन के नीचे बिंदु लगाकर प्रकट किया जाता है। किंतु इससे मुद्रण की कठिनाई हल नहीं होती, क्योंकि बिंदु और व्यंजन-चिह्न एक ही टाइप में होते हैं; अतः मुद्रण-यंत्र के टाइपों की संख्या में ३२ टाइपों की अकारण वृद्धि हो जाती है। यदि यही बिंदु अथवा ऊपर दिए हुए मात्रा-चिह्नों के साथ दिया हुआ हलंत-चिह्न (निम्न-अर्द्धभाग में खींची हुई दाहनी ओर ढलती हुई टेढ़ी-सीधी रेखा, जिसका अभिप्राय पूर्वगामी व्यंजन की अकारात्मक खड़ी-सीधी रेखा को काटने का प्रयत्न है) व्यंजन के बाद में स्वतंत्र टाइप द्वारा मुद्रित किया जाय, तो यह समस्या हल हो जायगी। कुछ उदाहरण नीचे दिए जाते हैं—

कृष्ण=क् ऋ ष् ण, ब्राह्मी=ब् रा ह् मी

क्रम=क् र म, कर्म=क र् म, क्रिया=क् रि या

तस्मिं=त स् मिं, क्रान्ति=क् रा न् ति, ज्ञ=ज् ञ, क्ष=क् ष

स्वप्न=स् व प् न, मत्स्य=म त् स् य, श्लाघ्य=श् ला घ् य

श्री=श् री, क्त=क् त इत्यादि।

(ग) शिरोरेखा का त्याग वांछनीय होगा। दक्षिण-भारत तथा भारत से बाहर प्रचलित 'भारतीय' वर्णमालाओं में शिरोरेखा का प्रयोग नहीं किया जाता। उत्तर-भारत में भी गुजराती, उड़िया, कैथी तथा सिंधी-लिपियों में शिरोरेखा प्रयुक्त नहीं होती। हस्त-लिखित मोड़ी की पूर्व-खचित लंबी-सीधी लकीरें वास्तविक शिरोरेखा नहीं कही जा सकतीं। बँगला, मैथिल, टाकरी तथा शारदा-लिपियों में कुछ अक्षरों पर शिरोरेखा नहीं लगाई जाती। मूल-लिपि ब्राह्मी में बिना शिरोरेखा के ही काम चल जाता था। बाक़ी केवल देवनागरी और गुरुमुखी रह जाती हैं। शिरोरेखा के त्याग से ये लिपियाँ एक दूसरी के अधिक नज़दीक आ जायँगी—ऐसी संभावना है। उदाहरणार्थ देव-नागरी-वर्णमाला से शिरोरेखा हटाने पर उसके और गुजराती के वर्णों में केवल आठ-नौ वर्णों का साधारण भेद रह जाता है। इसके अतिरिक्त शिरो-रेखा एक ही वर्णमाला के विभिन्न वर्णों के पारस्परिक भेद में विशेषता लाने में किसी प्रकार सहायक नहीं होती, इसलिये इसे खींचने का श्रम और समय व्यर्थ जाता है।

(घ) कुछ वर्णों के विपरीत आकार को उतने ही अन्य वर्णों के संकेत के रूप में व्यवहार में लाने के सिद्धांत का उपयोग करना। इस सिद्धांत की सहायता से छापने के टाइपों की संख्या ठीक आधी की जा सकती है। इस सिद्धांत का प्रयोग सरल आकार के वर्णों में ही सुविधा के साथ किया जा सकता है। विपरीत आकार से तात्पर्य वर्ण के उस उलटे स्वरूप से है, जो उसके टाइप को सही स्थिति से १८०° द्वारा घुमा देने पर उपस्थित हो जाता है। दर्पण-चित्र दूसरी वस्तु है। उदाहरणार्थ ऊपर दी हुई सरल मात्राओं में अ, ॲ, इ, ई, ए, ए̄, ऐ, अं, नुक़्ता तथा हलंत-चिह्न के विपरीत आकार क्रमशः आ, ऑ, ऊ, उ, औ, ओ, ओ̄, अः, हकारात्मक चिह्न तथा विलगकर्ता चिह्न हैं। अ, आ, इ, उ, ए तथा ओ के दर्पण-चित्र ॲ, ऑ, ई, ऊ, ऐ तथा औ हैं।

नोट—ए̄ तथा ओ̄ ध्वनियों का प्रयोग दक्षिण-भारत की वर्णमालाओं में होता है, तथा ये क्रमशः ए तथा ओ, स्वरों के प्लुत (ए३ तथा ओ३)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहे जा सकते हैं। ॲ तथा ऑ ध्वनियों के लिये सिंहाली में अ तथा आ के रूपांतरित चिह्न विद्यमान हैं, तथा हिंदी में भी अँगरेज़ी-भाषा के उच्चारणों को प्रकट करने के लिये इनका प्रयोग होने लगा है।

(ङ) वर्गों के प्रथम (अल्पप्राण) और द्वितीय (महाप्राण) वर्णों में तथा इसी प्रकार तृतीय (अल्पप्राण) और चतुर्थ (महाप्राण) वर्णों में परस्पर बहुत कम भेद होना चाहिए। उदाहरणार्थ प्रत्येक अल्पप्राण वर्ण-चिह्न के अंत में एक बिंदु जोड़कर उसी का महाप्राण वर्ण-चिह्न बनाया जा सकता है, अर्थात् क से ख, ग से घ, च से छ इत्यादि। रोमन-लिपि में भारतीय वर्णमाला के वर्गों (क,-च,-ट,-त तथा प-वर्ग) के द्वितीय और चतुर्थ वर्णों के लिये प्रायः स्वतंत्र चिह्न विद्यमान नहीं हैं, और इनका काम प्रथम तथा तृतीय वर्णों के चिह्नों के आगे हकार (एच्) का चिह्न लगाने से भली भाँति चल जाता है। यदि भारतीय वर्णमाला में भी एक सरल हकारात्मक चिह्न (देखिए ऊपर दी हुई सरल मात्राओं की तालिका) रख लिया जाय, तो सब भारतीय लिपियों में से निम्न-लिखित वर्ण हटाए जा सकते हैं—ख, घ, छ, झ, ठ, ढ, थ, ध, फ, भ, ल (=ल्+ह) तथा श (=स्+ह)। भारतीय भाषाओं में इन महाप्राणों का प्रयोग प्रायः उतना ही अधिक होता है, जितना अल्पप्राणों का, इसलिये प्रत्येक बार एक चिह्न के बदले दो चिह्नों का प्रयोग करना संभवतः युक्ति-संगत प्रतीत न हो। अतः यदि यह हकारात्मक चिह्न एक ही रीति से प्रत्येक अल्पप्राण वर्ण के चिह्न के अंत में (नासिका तथा अंतस्थ वर्णों को छोड़कर) उसी के अंश-रूप में लगा दिया जाय, और इस प्रकार विभिन्न उपर्युक्त महाप्राण वर्णों के स्वतंत्र चिह्न बना लिए जायँ, तो सब लिपियों में बहुत कुछ सरलता आ जायगी। अथवा सुविधानुसार दोनों विधियों का उपयोग किया जा सकता है। देखिए 'संयुक्त-लिपि' (निबंध के अंत में दी हुई तालिका)।

(च) वर्णों के ध्वनि-भेदों को प्रकट करने के लिये नुक़्ते के चिह्न का प्रयोग करना। यह चिह्न (देखिए ऊपर दी हुई मात्राओं की तालिका) भी वर्ण के बाद में नीचे की ओर स्वतंत्र बिंदु के रूप में लगना चाहिए। किंतु यदि किसी भाषा में किसी एक ध्वनि-भेद का प्रयोग वर्ण की साधारण ध्वनि के समान ही अथवा उससे भी अधिक बार-बार होता हो, तो इस बिंदु-चिह्न को भी वर्ण का ही अंश-रूप बनाना पड़ेगा। टाइप-लेखन-यंत्र की सुविधा की दृष्टि से इस प्रकार वर्णों की संख्या बढ़ाना वांछनीय नहीं। विभिन्न लिपियों में निम्न-लिखित वर्णों के बाद नुक़्ता लगाने की आवश्यकता पड़ेगी—क, ख, ग, ज, ड, ढ, फ, य, र, ल तथा ण। 'स' के बाद नुक़्ता लगाकर 'ष' बनाया जा सकता है।

(२) लिपि-तालिका में दी हुई सभी लिपियाँ महत्त्व-पूर्ण नहीं हैं। उत्तरी हिंदुस्थान में देवनागरी तथा बँगला और दक्षिण में तेलुगु तथा 'तामिल-मलयालम्' प्रधान हैं। उत्तर-भारत की लिपियों में अन्य उल्लेखनीय लिपियाँ गुजराती, गुरुमुखी तथा उड़िया हैं। इनमें से पहली दो देवनागरी से इतना सादृश्य रखती हैं कि इनमें उपर्युक्त आवश्यक सुधार करने पर परस्पर भेद रख सकना कठिन हो जायगा। उड़िया और बँगला के बीच में समझौता होना कठिन नहीं। दक्षिण में तेलुगु तथा कन्नड़ इतनी एक रूप हैं कि यह कहा जा सकता है कि एक ही लिपि के दो नाम हैं। तामिल और मलयालम् लिपियों में संधि होना बहुत आसान है। कारण, तामिल-लिपि पूर्ण नहीं (अन्य भाषाओं की दृष्टि से)। यदि सरल मात्राओं के व्यवहार के साथ-साथ मलयालम् में तामिल के ञ, क, ङ, च, ञ, ट,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ण, त, न, प, म, य, र, ल अपना लिए जायँ, तो सारा प्रश्न हल हो जाता है। इनमें से भी इन दोनो लिपियों के क, ञ, ण, त, न, प, म, य, र तथा ल में परस्पर विशेष भेद नहीं। इस नवीन संयुक्त लिपि को 'तामिलयालम्' कहा जा सकता है। सिंहाली के अक्षर मलयालम् अथवा 'तामिलयालम्' से अधिक जटिल एवं अलंकृत हैं, बहुत कुछ इसी प्रकार, जैसे बँगला और देवनागरी में परस्पर भेद है। मलयालम् के वर्णों की सादगी और सरलता की तुलना ब्रह्मदेशी से की जा सकती है। व्यंजन स्वरों की अपेक्षा अधिक सरल हैं। सिंहाली के इ, ई, क, ख, ग, च, छ, झ, ड, ढ, ण, त, थ, ध, प, फ, ब, य, र, ल, व, श तथा ह वर्णों की मलयालम् के वर्णों से तुलना करने पर इन दोनो लिपियों के एक हो सकने की आशा कुछ अधिक दृढ़ बन जाती है। श्यामी से अभी हमें कोई विशेष संबंध नहीं। ब्रह्मदेशी को भी अपना अलग स्थान दिया जा सकता है।

इस प्रकार परिष्कृत एवं किंचित् परिवर्तित देवनागरी, बँगला, तेलुगु और तामिलयालम् लिपियाँ हिंदुस्थान की चार प्रधान लिपियाँ बनाई जा सकती हैं। इसका तात्पर्य यह नहीं कि इससे आगे बढ़ सकना असंभव है। बँगला-लिपि के अ, आ, इ, उ, ऊ, ओ, औ, अं, अः, क, ग, घ, ङ, ज, ट, ठ, ड, ङ, ण, थ, द, ध, न, प, फ, ब, म, य, र, ल, व, श, ष, स और ह की देवनागरी के इन्हीं वर्णों से तुलना करने पर यह विश्वास हो जाता है कि इन दो लिपियों में भी वस्तुतः केवल शैली का अंतर है, न कि आकार अथवा अन्य प्रकार का। यह अंतर सिंहाली तथा मलयालम् के बीच के अंतर की अपेक्षा बहुत कम है। यदि बाक़ी वर्णों के लिये कोई मध्यवर्ती आकार स्थापित कर लिया जाय, अथवा गुजराती, गुरुमुखी, उड़िया तथा शारदा-लिपियों में से प्रत्येक से कुछ एक वर्ण शामिल कर लिए जायँ, तो बँगला तथा देवनागरी दो लिपियाँ न रहकर दो शैली की एक ही लिपि बन जायँगी, और इन दोनो के बीच का अंतर रोमन-लिपि के चार भेदों (मुद्रण और हस्त-लिपि—दोनो के दीर्घ और ह्रस्व भेद) के पारस्परिक अंतर की अपेक्षा कितना ही कम होगा। यदि भारतीय भाषाओं में भी दीर्घ और ह्रस्व लिपि-भेदों का प्रचार करना वांछनीय हो, तो दोनो शैली की लिपियों का एक ही साथ व्यवहार किया जा सकता है। किंतु इस प्रकार की रीति में कोई विशेष उपयोगिता प्रतीत नहीं होती, अतः इस प्रश्न को व्यक्तिगत पसंद पर छोड़ा जा सकता है। बँगला का पद्य में अथवा 'इटेलिक्स' के स्थान में प्रयोग तथा देवनागरी का साधारण गद्य में प्रयोग विचारणीय विषय है (दोनो लिपियों में अनिवार्य सुधार करने के बाद)।

उत्तर-भारत की सब लिपियों में एकत्व की संभावना पर विचार कर लेने के बाद अब उत्तर और दक्षिण की लिपियों की तुलना का प्रयत्न करना उपयुक्त होगा। तामिल के अ, क, ट, प, य और र वर्णों का ब्राह्मी के इन्हीं वर्णों से निकट सादृश्य रखने का निबंध के पूर्व भाग में उल्लेख किया जा चुका है। अब इन वर्णों की देवनागरी तथा बँगला आदि लिपियों के वर्णों से तुलना की जायगी। तामिल का 'अ' तथा बँगला का 'अ' परस्पर इतने मिलते-जुलते हैं कि कई बार बंगाली लेखक अनजाने जल्दी में तामिल का 'अ' ही लिखते होंगे। यही बात दोनो के 'क' के विषय में भी सत्य है। देवनागरी का 'क' भी इनके समरूप है। यदि तामिल के 'अ' में से खड़ी रेखा हटा दी जाय, तो वह तेलुगु के 'अ' से अधिक भिन्न नहीं रह जाता। तेलुगु के 'क'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के शीर्ष पर लगाए हुए 'टिक'-जैसे चिह्न को वहाँ से नीचे की ओर सरकाकर यदि उस वर्ण को बीच में से टेढ़ा काटता हुआ रक्खा जाय, तो गुजराती का 'क' आसानी से बन जाता है। तामिल, तेलुगु, बँगला तथा देवनागरी की 'इ' में परस्पर कितनी आंतरिक समानता है। किंतु प्रस्तावित सरल मात्राओं-जैसे उपाय को यदि व्यवहार में लाया जाय, तो 'अ' के अतिरिक्त अन्य स्वरों का प्रश्न ही नहीं उठता। सभी भारतीय लिपियों में 'ग' वर्ण को देख जाने पर उसका स्वरूप कितना स्थिर है, यह स्पष्ट हो जाता है। यही बात 'प' के विषय में भी सत्य है। 'ठ' का स्वरूप भी 'ग' और 'प' की भाँति सरल होने के कारण सभी लिपियों में प्रायः अपरिवर्तित रह सका है। सिंहाली का 'ट' अन्य लिपियों के 'ठ' के समान है। सिंहाली तथा देवनागरी के 'द' बिलकुल एक-से हैं। दक्षिणी लिपियों के य, र, ल, व प्रायः समान हैं। यही नहीं, तामिल के य और ल ब्रह्मदेशी के इन वर्णों से मिलते हैं। दक्षिणी लिपियों के ख, ड, ढ, फ, म तथा ध भी बहुत सदृश हैं। इसी प्रकार कुछ अन्य उदाहरण भी दिए जा सकते हैं। सारांश यह कि कुल भारतीय लिपियों के स्थान में न केवल तीन प्रधान लिपियाँ ((१) तेलुगु तथा संयुक्त लिपियाँ, (२) बँगला-नागरी और (३) 'तामिलयालम्') ही सुगमता से स्थापित की जा सकती हैं, बल्कि थोड़े अधिक साहस और त्याग द्वारा दोनो दक्षिणी लिपियों को एक बनाया जा सकता है, तथा कुछ और आगे बढ़ने पर उत्तरी और दक्षिणी लिपियों का संयोग आसानी से किया जा सकता है, तथा ब्रह्म देशी एवं श्यामी-लिपियों को भी इस एकीकरण के प्रयत्न में शामिल किया जा सकता है। इस विषय में यह निर्देश करना आवश्यक प्रतीत होता है कि ऐसा संयोग तैयार करने में निम्न-लिखित बातों का विशेष ध्यान रक्खा जाय—

(क) प्रत्येक प्रधान लिपि में से कोई-न-कोई अक्षर अवश्य चुना जाय।

(ख) जो संकेत अधिकतर अन्य महत्त्व-पूर्ण लिपियों के उसी वर्ण के संकेत से निकटतम सादृश्य रक्खे, उसी को चुना जाय।

(ग) ऐसा संकेत स्वभावतः सरल होना चाहिए।

(घ) अन्यान्य लिपियों में से चुने जाने पर भी विभिन्न संकेतों में परस्पर मौलिक समरूपता अवश्य हो, अर्थात् सब अक्षर-चिह्न एक ही शैली के हों।

(ङ) अनिवार्य सुधारात्मक प्रस्तावों का ध्यान रक्खा जाय, अर्थात् स्वरों में केवल 'अ' चुनने की आवश्यकता है, यद्यपि इसके बिना भी केवल सरल मात्रा-चिह्नों से काम चल सकता है। संयुक्ताक्षर न चुने जायँ, शिरोरेखा न रक्खी जाय, एक ही वर्ण के साधारण ध्वनि-भेदों के लिये अलग चिह्न न चुने जायँ, बल्कि नुक़्ते का प्रयोग किया जाय, और यथासंभव वर्गों के प्रथम और द्वितीय तथा एवमेव तृतीय और चतुर्थ वर्णों के बीच में बहुत कम और एक ही सा भेद रक्खा जाय, अथवा महाप्राण वर्णों के लिये कोई अलग चिह्न न रखकर केवल हकारात्मक चिह्न का प्रयोग किया जाय, तथा हो सके, तो विपरीत आकार के प्रयोग के सिद्धांत का उपयोग किया जाय। देखिए निबंध के अंत में दी हुई 'संयुक्त' एवं 'नवीन' लिपियाँ।

इन्हीं आधारों पर सब लिपियों में से निम्न-लिखित वर्ण-चयन किया गया है, जो मनोरंजक सिद्ध होगा—अ—तामिल; क—तामिल (शिरोरेखा को त्यागकर किंचित् परिवर्तन के साथ); ग—तुलु इत्यादि; ङ—ब्रह्मदेशी, इस चिह्न की अनुस्वार के चिह्न गोल बिंदु से तुलना कीजिए; च—देवनागरी (शिरोरेखा-रहित); ज—गुजराती;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ञ—ब्रह्मदेशी का पिछला आधा भाग अथवा देवनागरी का प्रारंभिक भाग अर्थात् ब्रह्मदेशी के 'ङ' का विपरीत आकार ; ट—गुजराती इत्यादि ; ड—बँगला ; ण—ब्रह्मदेशी का आधा भाग अर्थात् ब्रह्मदेशी के 'ग'-जैसा ; त—देवनागरी (शिरोरेखा-विहीन) ; द—उड़िया (नीचे की छोटी रेखा को निकालकर ; न—'ण' का विपरीत आकार अर्थात् सिंधी से सादृश्य रखता हुआ ; प—शारदा, गुरुमुखी, कैथी, गुजराती, सिंधी इत्यादि ; ब—तेलुगु और श्यामी ; म—श्यामी (प्रारंभिक बिंदु को छोड़कर) ; य—बँगला, र—देवनागरी (विना शिरोरेखा के) ; ल—टाकरी ; व—देवनागरी ; स—तेलुगु ('टिक'-चिह्न को छोड़कर) ; ष—तेलुगु ('स' की भाँति); ह—बँगला ।

इन सब चिह्नों की पूरी वर्णमाला लिपि-तालिका में संयुक्त-लिपि के नाम से दी गई है । इस लिपि की आदि लिपि ब्राह्मी से तुलना कीजिए ।

(३) तीसरा मार्ग हिंदुस्तानी के जनवरी ३८ के अंक में प्रकाशित 'भारतीय लिपि' निबंध में प्रस्तावित लिपि के समान किसी लिपि को स्वीकृत करना है ।

(४) चतुर्थ और अंतिम उपाय एक पूर्णतः वैज्ञानिक, मूलतः एक रूप एवं यथासंभव निष्पक्ष लिपि को स्थापित करना है, जिससे सारा राष्ट्र भविष्य में अनंत काल तक अपरिमित लाभ उठा सके, और जो विश्व-लिपि बनने की आकांक्षा कर सके । ऐसी एक लिपि का उदाहरण 'निबंध' के अंत में तालिका में 'नवीन' लिपि के नाम से दिया गया है । इस लिपि को एकबारगी देख जाने पर निम्न-लिखित तीन विशेषताएँ स्वयं स्पष्ट प्रकट हो जाती हैं—

(१) लिपि को छापने के लिये केवल क़रीब आधी संख्या के टाइपों की आवश्यकता पड़ेगी, अर्थात् ५० चिह्नों को छापने के लिये केवल २६ प्रकार के टाइपों से काम चल जायगा । यदि हकारात्मक चिह्न का प्रयोग किया जाय, तो केवल २१ टाइपों की आवश्यकता होगी । रोमन-लिपि में २६×२=५२ टाइपों की आवश्यकता पड़ती है, फिर भी विभिन्न मूल-ध्वनियों के उच्चारण की दृष्टि से वह कितनी दोष-पूर्ण एवं अधूरी है । यह देखते हुए भारतीय भाषाओं के 'रोमनाइज़ेशन' के बदले अँगरेज़ी के 'नागरीकरण' की चर्चा की जाय, तो अधिक उपयुक्त होगा ।

(२) लिपि-निर्माण का विशिष्ट वैज्ञानिक सरल आधार ।

(३) दक्षिणी, ब्रह्मदेशी, श्यामी तथा उत्तर भारतीय, चारो शैली के वर्णों का अलग-अलग वर्गों में समावेश ।

नवीन लिपि के स्थापन के विरुद्ध एक प्रश्न बहुधा खड़ा किया जाता है—तो फिर वर्तमान प्रकाशित अपरिमित विभिन्न भाषाओं के साहित्य का क्या होगा ? इससे राष्ट्र को आर्थिक क्षति कितनी होगी ? किंतु ऐसी आशंका प्रकट करने के लिये कोई वास्तविक आधार विद्यमान नहीं । नवीन लिपि का उद्देश्य भविष्य के दिन-प्रतिदिन के चलते, जीवित और आवश्यक साहित्य के लिये है । पुराना ग्रंथ-साहित्य सड़-गल जाने अथवा बिक जाने पर उसे पुनः प्रकाशित करते समय नवीन लिपि का प्रयोग किया जा सकता है । टाइपों का प्रश्न अत्यंत साधारण एवं अकिंचन है । कारण, कुछ वर्षों के बाद पुराने टाइप घिस जाने पर नवीन ख़रीदने ही पड़ते हैं ।

संक्षेप-लिपि की समस्या कम महत्त्व-पूर्ण नहीं । इसे हल करने का एक उपाय यह है—प्रस्तावित 'नवीन' लिपि के क,-च,-ट तथा त-वर्ग के वर्णों की सीधी-खड़ी रेखा (पाई) पूर्णतः अथवा अंशतः हटाई जा सकती है, ताकि ये चिह्न अत्यंत सरल एवं सूक्ष्म बन जायँ । बाक़ी के व्यंजनों के सरल संकेतों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को सहज ही सूक्ष्म बनाया जा सकता है। स्वर-चिह्न सूक्ष्म एवं सरल हैं ही। इस प्रकार संक्षेप लिपि साधारण-मुद्रण एवं लेखन-लिपि ही के आधार पर एवं उसके सदृश बनी हुई होने के कारण और भी अधिक सरल बन जायगी, एवं साथ ही दोनों का महत्त्व भी परस्पर बढ़ जायगा।

लिपियों की एकता के साथ अंकों की एकता का होना भी अत्यंत आवश्यक है। प्रायः सभी वर्तमान लिपियों में अपने-अपने भिन्न अंक प्रचलित हैं। विभिन्न दृष्टिकोणों से विचार करने के बाद इन अंकों को अपनाना अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगा—

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०

१ २ 3 ४ ५ ६ ६ ६ ९ १०

इन अंकों की विशेषताएँ ये हैं—

(१) अंक-चिह्न अत्यंत सरल हैं।

(२) ये अंक-चिह्न वर्तमान देवनागरी के सभी अंक-चिह्नों ही से नहीं, बल्कि गुरुमुखी, काश्मीरी, कैथी, बँगला, मैथिल, उड़िया, तेलुगु, कन्नड़ी आदि भारतीय लिपियों के अधिकतर अंकों से अत्यंत निकट सादृश्य रखते हैं।

(३) इन्हें छापने के लिये केवल ६ टाइपों की आवश्यकता पड़ेगी। कारण, १ का ७, २ का ८, ३ का ६ तथा ४ का ९ क्रमशः विपरीत आकार है। बिंदु का चिह्न तो सभी लिपियों में होता ही है, अतः वास्तविक टाइप-संज्ञा केवल ५ ही है।

अब केवल एक अंतिम प्रश्न बाक़ी रह जाता है। वह है उर्दू एवं नागरी-लिपियों की पारस्परिक प्रतियोगिता, जो कलह का रूप धारण कर रही है। अखिल भारतवर्षीय लिपियों में इतने विशाल एवं विस्तृत परिवर्तन करने पर इस्लाम-जगत् भी अपनी हृदय-विशालता का परिचय दे, यह आशा की जा सकती है। फिर भी यदि उन्हें दूध को दही के रूप में पीना अभीष्ट हो, तो यह ख़मीर प्रस्तुत है—

अर्थात् नवीन निर्धारित भारतीय वर्णमाला के संकेतों को उर्दू-वर्णमाला के नामकरण एवं क्रमानुसार सीखा जाय। भारतीय वर्णमाला में उर्दू के कुछ वर्णों के चिह्न शामिल कर लिए जायँ। यह कठिन नहीं।

लिपियों की एकता स्थापित करना भाषाओं की एकता प्राप्त करने के लिये पहला क़दम रखना है, यह दुहराना आवश्यक प्रतीत होता है। यदि यह पहला क़दम नहीं उठाया, तो लक्ष्य की ओर आगे बढ़ना संभव नहीं। यथेष्ट उत्साह, निर्मोह एवं त्याग पाकर भाषाओं की एकता का प्रश्न भी लिपियों के प्रश्न की भाँति सरल बन जायगा।

निबंध में प्रस्तावित दो लिपियाँ

देवनागरी अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ ओ औ अं अँ अः च

संयुक्त ⁊ ∟ ٦ ſ ɗ ь ٦ ſ ل ٦ ь ь ь

नवीन ⌐ ¬ ⌐ ⌐ ⌐ ⌐ ⌐ ⌐ ⌐ ⌐ ⌐ ⌐

देवनागरी क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ ण त थ

संयुक्त ক ক ড ড ৩ চ ছ জ ঝ ঞ ২ ৪ ৬ ৬ ৩ ৩ ৫ ৫

नवीन ٦ ٦ ٦ ٦ ٦ ٦ ٦ ٦ ٦ ٦ ٦ ٦ ٦ ٦

देवनागरी द ध न प फ ब भ म य र ल ळ व श ष स ह

संयुक्त ६ ६ ৬ ५ ५ ৬ ৬ ५ ५ ৫ ৩ ৩ ৩ ৩ ৩

नवीन ل ل ل ل ل ل ل ل ل ل ل ل ل ل

पाठकों से अनुरोध किया जाता है कि इस निबंध में वर्णित सब भारतीय लिपियों की तालिका ऊपर दी हुई तालिका के अनुरूप बनाकर उन सब लिपियों का एक साथ अध्ययन करें, एवं स्वयं अपने स्वतंत्र निर्णय पर पहुँचें। ऐसा निर्णय संभवतः ऊपर दी हुई संयुक्त लिपि से अधिक भिन्न नहीं होगा, ऐसी लेखक की धारणा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छवि का जाल

[श्रीयुत गोपालसिंह नेपाली]

पड़ा है छवि का ऐसा जाल,
उलझ रह गया नयन का मीन।

(१)

उषा ने मला अबीर-गुलाल,
कमल का गाल लाल कर दिया;
उड़ाया संध्या ने सिंदूर,
विहग का घर-आँगन भर दिया।
प्यास से अकुलाई दोपहर,
बनाया प्यासा जग का हिया;
सँजोए घन-आँचल से दीप
खड़ी है पथ पर रजनी प्रिया!
गगन है नील सरोवर बना,
बना है चाँद गगन का मीन।

(२)

कली ने मुख का घूँघट खोल
चमन में उजियाला कर दिया;
पात ने बढ़कर छाकर सरल
मुकुल पर अंतराल धर दिया।
दिया निर्झर ने खग को गान,
पवन ने मधु-पंचम-स्वर दिया;
विहग ने छेड़ी ऐसी तान,
तान से कुंज-कुंज भर दिया।
उड़ी है मलयानिल की लहर,
उड़ा है विहग पवन का मीन।

(३)

कहीं सागर में उठती ज्वार
कि डूबे तीर कि डूबे कूल;
कहीं शिखरों पर उठता मेघ
कि बरसे बूँद कि बरसे फूल।
कभी नभ पर खिल जाता चाँद
कि तरसे नयन कि तरसे हिया;
कभी वन-वन फूलता वसंत
कि सरसे हिया कि सरसे जिया।
चली जग में जीवन की धार,
चला धारों पर मन का मीन।

पड़ा है छवि का ऐसा जाल,
उलझ रह गया नयन का मीन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माधुर्यमय भगवद्भक्ति

[प्रो० धर्मेंद्र एम्० ए० (त्रितय)]

धुर्य-भाव-भरित भगवद्भक्ति की परंपरा हिंदी-साहित्य में शताब्दियों से चली आ रही है—अपभ्रंश-युग से ही। विश्लेषण की दृष्टि से माधुर्यमय रहस्यवाद के दो विभाग हो सकते हैं—१. दार्शनिक, २. काव्यगत। दार्शनिक रहस्यवाद का आधार है औपनिषदिक सर्वात्मवाद अथवा ब्रह्मवाद, जिसमें ब्रह्मानंदास्वादन-सुख को सहवास-सुख से सौगुना कहा गया है। सांख्य-योग-दर्शन ने भी जो आत्मा को पुरुष और प्रकृति को स्त्री का रूपक दिया है, उसमें माधुर्य-भाव विद्यमान है। बौद्ध-धर्म जब अवनति की ओर ढल रहा था, तो उसने क्रमशः तांत्रिक रूप धारण किया, और 'वज्रयान' के नाम से प्रकट हुआ। इस 'यान' के अनुयायी सिद्धों ने 'महासुखवाद' के सिद्धांत का प्रचार किया, जिसके अनुसार सहवास-सुख और महानिर्वाण-सुख को समकक्ष माना गया। देवी-देवताओं के 'युगनद्ध' स्वरूप की कल्पना करनेवाले संतों ने डोमिन, धोबिन आदि के साथ सैर-विहार को अपनी साधना का प्रमुख अंग मान लिया, और हठयोग आदि की बातों का रहस्यमय सम्मिश्रण करके 'संध्या-भाषा' में अपने इस सहवास-सुख को भगवत्-प्राप्ति-जन्य आनंद का प्रतीक मानकर उस विषय के दोहे लिखे, और अपने वीभत्स व्यापार को आध्यात्मिकता का मिथ्यावरण दिया।

वज्रयानों का 'महासुखवाद' जब नाथ-पंथ से चलकर कबीर तक पहुँचा, तो इसका रूप श्लील और परिष्कृत हो गया। इसके अतिरिक्त माधुर्य का काव्यगत रूप भी निखर आया। हमने ऊपर कहा है, सांख्य द्वारा आत्मा को पुरुष का और प्रकृति को स्त्री का रूपक देना दार्शनिक रहस्यवाद की कोटि में शुमार किया जायगा। किंतु यही रूपक जब तर्क और चिंतना का क्षेत्र छोड़कर कल्पना के पंखों के सहारे भावुकता के गगन में पहुँच जाता है, तो काव्यगत रहस्यवाद को जन्म देता है, क्योंकि 'माधुर्य-भाव' इसी का भावुक रूप है, जिसमें परमात्मा की प्रियतम के रूप में भावना की जाती है, और जगत् के नाना रूप स्त्री-रूप में देखे जाते हैं *।"

माधुर्य-भाव की वह धारा, जो वज्रयानियों से आई थी, कबीर में शुद्ध काव्यगत रूप में दिखाई पड़ी। इसी रूप पर सूफियों के प्रेम-मार्ग तथा वैष्णवों के मधुर भक्ति, मार्ग की भी छाप पड़ी थी। कबीर कभी तो अपने आराध्य देव

* श्यामसुंदरदास—कबीर-ग्रंथावली, पृष्ठ ५७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'राम' को अपना 'बालम' मानकर उनके विरह में तड़फने लगता था, और कभी उनसे मिलकर अपने 'सोहाग' की प्रशंसा करता था, तथा कभी मिलन की घड़ियाँ कैसे कटेंगी, इसी शंका में बेचैन हो जाता था ❀।

जायसी ने भी भगवान् की प्रेमपरक भक्ति का मार्ग दिखाया, किंतु कबीर और जायसी की प्रेम-पद्धतियों में कुछ ध्यान देने योग्य अंतर थे। प्रथम तो यह कि हिंदू-मुसलमानों के प्रेम का भाजन होते हुए भी कबीर का राम निर्गुण है, परोक्ष है; किंतु जायसी ने लौकिक कथानकों का प्रेममय चित्रण करके हिंदू-मुसलमानों के प्रत्यक्ष जीवन की रागात्मक एकता प्रतिध्वनित की, और प्रत्यक्ष जीवन में ही भगवान् को प्रत्यक्ष करने की राह बताई। दूसरी बात यह कि जायसी की दृष्टि में 'प्रेम की पीर' की जितनी महत्ता है, उतनी कबीर की दृष्टि में नहीं। कबीर में संभोग-पक्ष भी उतना ही प्रबल है, जितना वियोग-पक्ष, संभवतः अधिक; किंतु जायसी में वियोग-पक्ष की ही प्रधानता है—ईश्वर का विरह ही सूफ़ी-साधक की सच्ची संपत्ति है ❀।

तृतीय अंतर यह है कि कबीर का माधुर्य-भाव सूफ़ी-मत से प्रभावित होते हुए भी सर्वतोभावेन भारतीय ही रहा, किंतु जायसी का माधुर्य सूफ़ी-भावना से पृथक् नहीं रह सका। कबीर के लिये फिर भी उसका आधार उसका प्रणयी है, और वह है अपने आराध्य की प्रणयिनी 'बहुरिया' किंतु पद्मावत तथा अन्य प्रेम-गाथाओं के अध्ययन से यह भान होता है कि जायसी ने जीवात्मा को 'जोगी' अथवा साधक पुरुष के रूप में कल्पित किया है,

---

❀ देखिए कबीर की निम्न-लिखित पंक्तियाँ —

(१) तड़फै बिनु बालम मोर जिया।
दिन नहिं चैन, रात नहिं निंदिया,
तड़फ-तड़फ के भोर किया।
तन-मन मोर रहट, अस डोलै,
सूनि सेज पर जनम छिया।
नैन थकित भए, पंथ न सूझै,
सैयाँ बेदरदी सुध न लिया।

(२) दुलहिन, गावहु मंगलचार;
हमरे घर आए राजा राम भरतार।

(३) बहुत दिनन की जोवती, बाट तुम्हारी राम,
जिव तरसै तुम मिलन को, मन नाहीं बिसराम।

(४) सखी, सोहाग राम मोहिं दीन्हा।

(५) मन प्रतीत ना प्रेम-रस, ना इस तन में ढंग;
क्या जाणौं उस पीव सूँ कैसी रहसी संग।
इत्यादि।

'दादू' ने स्पष्टतर शब्दों में घोषित किया है—

हम सब नारी एक भरतार;
सब कोई तन करै सिंगार।

❀ यह बात सभी प्रेमाख्यानक कवियों में लागू है। तुलना कीजिए 'मधुमालती' में—

बिरह-अवधि अवगाह अपारा।
.....
बिरह की जगत अँबिरथा जाही;
बिरह-रूप यह सृष्टि सबाही।

विरह को चराचर जगत् के रूप में देखा है इन कवियों ने—

बिरह के आगि सूर जरि काँपा;
रातिउ दिबस जरै ओहि तापा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और परमात्मा को उसकी प्रणयिनी के रूप में; क्योंकि हम जानते हैं, सूफ़ियों के 'मजनूँ' को अल्लाह भी 'लैला नज़र आता था।'

उधर शुद्ध वैष्णव-परंपरा के प्रथम विकास के लिये हमें दाक्षिणात्य निंबार्क (१२वीं शताब्दी) और विष्णु स्वामी (१३वीं शताब्दी) के क्रमशः द्वैताद्वैत और शुद्धाद्वैत के सिद्धांतों पर दृष्टिपात करना होगा। निंबार्क ने राधा और कृष्ण के मधुर युगल को तथा विष्णु स्वामी ने रुक्मिणीवल्लभ विष्णु को ही अद्वैत ब्रह्म का व्यावहारिक तथा भक्ति-सुलभ रूप माना है। वल्लभाचार्य (१६वीं शताब्दी) ने माधुर्य-प्रधान वैष्णव भक्ति-पद्धति की लहर दक्षिण ही नहीं, उत्तरी भारत में भी एक सिरे से दूसरे सिरे तक फैलाई। वल्लभ के पुत्र विट्ठल और उनकी प्रसिद्ध 'अष्टछाप' ने यह लहर हिंदी के अंचल तक पहुँचाई, और सूरदास तथा नंददास की मधुर पदावलियों से हिंदी का काव्य-कलेवर तंत्रिल हो उठा। भारत के उत्तर-पौरस्थ प्रदेशों में माधुर्य-भाव की काकली कूजित करनेवालों में मैथिल-कोकिल विद्यापति, चंडीदास, चैतन्य के नाम उल्लेखनीय हैं। वैष्णव-परंपरा के इस माधुर्य-भाव में रहस्य-मयता का अंश कम है, किंतु शून्य नहीं, क्योंकि राधाकृष्ण के स्पष्ट, तथा कहीं-कहीं उद्दाम, शृंगारिक वर्णनों में भी - खासकर सगुणवादी संतों के वर्णनों में—अध्यात्म प्रेम की अंतर्धारा अवश्य प्रवाहित होती है, और इसी अंतर्धारा के आधार पर हम उनमें रहस्यमयता का समावेश कर सकते हैं।

जब मीरा ने अपनी वीणा उठाई, और उसके तारों को छेड़ा, तो उनसे निकलकर गूँजती हुई संगीत की लहरियाँ इंद्र-धनुष बनकर निर्गुण और सगुण, दोनो दिग्विभागों में छा गईं। उसकी नारी-सुलभ भावुकता ने जहाँ भी माधुर्य का स्रोत देखा, वहीं डुबकियाँ लगाईं। अतः कभी तो हम उसे 'मेरे तो गिरिधर-गोपाल दूसरो न कोई।' गाते हुए रास रचाते देखते हैं, तो कभी 'निर्गुन सेज' बिछाकर अपने प्रियतम का आवाहन करते पाते हैं *। रहस्यमयता की दृष्टि से मीरा का स्थान सामान्य वैष्णव संतों से कहीं ऊँचा है, और उसकी पदावली कहीं अधिक चुभीली एवं कसकीली †।

---

* देखिए—

ऊँची अटरिया, लाल किंवरिया, निर्गुन सेज बिछी।
पँचरंगी झालर सुभ सोहै, फूलन फूल कली।
बाजूबंद कड़ूला सोहै, सेंदुर माँग भरी।
सुमिरन-थाल हाथ में लीन्हा, सोभा अधिक भली।
सेज सुखमता मीत सोवै, सुभ है आज घरी।
तुम जावो राणा घर अपणे, मेरी-तोरी नाहिं सरी।

† तुलना कीजिए, 'यामा' की भूमिका, पृष्ठ ४—

"प्राचीन हिंदी-साहित्य का भी अधिकांश गेय है। तुलसी का इष्ट के प्रति विनीत आत्मनिवेदन गेय है। कबीर का बुद्धिगम्य तत्त्व-निवेदन संगीत की मधुरता में बसा हुआ है। सूर के कृष्ण-जीवन का बिखरा इतिहास भी गीतमय है, और मीरा की व्यथा-सिक्त पदावली तो सारे जगत् की सम्राज्ञी ही कही जाने योग्य है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवयुग-काव्य के माधुर्य-मधुप ने उपरि-कथित साहित्य के सभी सुमनों से मधुकरियाँ माँगकर उनके सौरभ से अपने सदन को सुवासित किया। "आज गीत में हम जिसे रहस्यवाद के रूप में ग्रहण कर रहे हैं, वह इन सबकी विशेषताओं से युक्त होने पर भी उन सबसे भिन्न है। उसने परा विद्या की अपार्थिवता ली, वेदांत के अद्वैत की छाया-मात्र ग्रहण की। लौकिक प्रेम की तीव्रता उधार ली, और इन सबको कबीर के सांकेतिक दांपत्य भाव-सूत्र में बाँधकर एक निराले स्नेह-संबंध की सृष्टि कर डाली, जो मनुष्य के हृदय को अवलंब दे सका, उसे पार्थिव प्रेम के ऊपर उठा सका, तथा मस्तिष्क को हृदयमय और हृदय को मस्तिष्कमय बना सका ❀।"

"प्रिय चिरंतन हैं सजनि,
क्षण-क्षण नवीन सुहागिनी मैं।"

जैसी पंक्तियाँ इसी 'निराले स्नेह-संबंध' की द्योतिका हैं।

❀ महादेवी वर्मा—'यामा' की भूमिका, पृष्ठ ६।

हिंदी के प्रसिद्ध कवि और आलोचक
श्रीलोचनप्रसादजी पांडेय

एप्रिल की सुधा के संबंध में लिखते हैं—"सुधा की सुरसता तथा मधुरिमा अवश्य ही हम लोगों के लिये अतीव आह्लादकर है। संपादिकाजी-लिखित अभ्यर्थना चतुर्दशपदी सुंदर हुई है। इस अंक के अन्यान्य लेख और कविताएँ भी पठनीय तथा सामयिक हैं। राजगृह की यात्रा, विश्वेश्वर-स्मृति, नवशक्ति आदि मैंने बड़े प्रेम से पढ़कर प्रसन्नता प्राप्त की।"

ESTABLISHED 1899 TELEPHONES:— 2 & 2 A

BHOLA NATH & CO.

36, Latouche Road

LUCKNOW

MANUFACTURE RUBBER STAMPS, BRASS & METAL BADGES, BRASS SEALS, BRASS & IRON PADLOCKS, THUMB IMPRESSION OUTFITS, MILITARY BADGES, TURBAN MONOGRAMS, FILE LACES, EMBOSSING MACHINES, INKS Etc., Etc.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वेश्वर-स्मृति

[साहित्याचार्य श्रीपं० विश्वेश्वरनाथ रेउ]

(गतांक से आगे)

तृतीयोऽधिकारः

विवाहप्रकरणम्

पञ्चविंशतिवर्षाणि वर्षाण्यष्टादशापि वा ;
अधीयीत ब्रह्मचर्यं विद्यां सर्वार्थसिद्धिदाम् ॥ १ ॥

पच्चीस वर्ष या अट्ठारह वर्ष तक ब्रह्मचर्य रहकर सब कामनाओं को सिद्ध करनेवाली विद्या पढ़े।

ततः कुलीनामन्यङ्गां सुशीलां शुभदर्शनाम् ;
साक्षरामुद्वहेत्कन्यां स्वस्थां दक्षां च कर्मसु ॥ २ ॥

उसके बाद अच्छे कुल में उत्पन्न हुई, संपूर्ण अंगोंवाली, अच्छे शील(चाल-चलन)वाली, सुंदर, पढ़ना-लिखना जाननेवाली, तंदुरुस्त और घर के कामों में चतुर कन्या के साथ विवाह करे।

मातुश्चाप्यसपिण्डा या पितुश्चाप्यसगोत्रजा ;
सा प्रशस्ता विवाहेषु कुलाचारमताऽथवा ॥ ३ ॥

जो कन्या माता की सपिंडा (पीढ़ी में निकट) न हो, और पिता के गोत्र की न हो, वह विवाह के लिये श्रेष्ठ है ; अथवा जो अपने कुल की रीति के अनुसार हो, वह श्रेष्ठ है।

रोगैः संक्रामकैर्दुष्टा हीनवीर्या गतत्रपाः ;
वंशास्त्याज्या विवाहेषु कन्याप्रसविनश्च ये ॥४॥

(कुष्ठ, क्षय आदि) संक्रामक रोगों से दूषित, निर्बल, निर्लज्ज और केवल कन्याएँ उत्पन्न करनेवाले वंश विवाह के लिये त्याज्य हैं।

कन्यामुपयमेतात्र जातिज्ञात्यनुमोदिताम् ;
ब्राह्मेणैव विवाहेन कुलमर्यादया नरः ॥ ५ ॥

पुरुष जाति और बंधुओं द्वारा विवाह के योग्य मानी हुई कन्या के साथ, अपने वंश की मर्यादा के अनुसार, ब्राह्म विवाह की रीति से ही विवाह करे।

आर्षासुरौ विवाहौ च क्वचिन्मान्यौ हि भारते ;
लब्धपाश्चात्त्यदीक्षैस्तु गान्धर्वोऽपि प्रशस्यते ॥६॥

भारत में कहीं-कहीं आर्ष और आसुर विवाह भी मान्य हैं। पाश्चात्त्य सभ्यता को अपनाए हुए लोग गांधर्व विवाह की भी प्रशंसा करते हैं।

वस्त्रालंकारसंयुक्ता धर्मशास्त्रानुसारतः ;
दीयते यत्र कन्या स विवाहो ब्राह्मसंज्ञकः ॥ ७ ॥

जिस विवाह में धर्मशास्त्र के अनुसार कपड़ों और गहनों-सहित कन्या दी जाती है, वह ब्राह्म विवाह कहलाता है।

गोयुगं गोचतुष्कं वा वरादादाय दीयते ;
कन्याऽऽर्षः, आसुरस्तु स्याद्विवाहोऽतिधनग्रहात् ८

वर से एक या दो जोड़ी बैल (या गाएँ) लेकर कन्या दी जाती है, उसे आर्ष (विवाह) और वर से बहुत-सा धन लेकर कन्या ब्याही जाती है, उसे आसुर विवाह कहते हैं।

मिथो जातप्रणययोर्यूनोर्यस्तु यदृच्छया ;
विवाहः कामसंजातो गान्धवः स निगद्यते ॥९॥

आपस में एक दूसरे के साथ अपनी मरज़ी से प्रेम करनेवाले युवक और युवती का कामेच्छा से हुआ विवाह गांधर्व विवाह कहलाता है।

मातापित्रोश्चानुमतः संयोगो वरकन्ययोः ;
प्राजापत्यस्तु स प्रोक्तो हठाद्यूनस्तु राक्षसः ॥१०॥

वर और कन्या का आपस का संयोग (गंधर्व विवाह) माता और पिता को भी पसंद हो, तो उसे प्राजापत्य विवाह कहते हैं। युवक की ज़बर-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दस्ती से विवाह हो, तो वह राक्षस विवाह कहलाता है।

बलात्कारेण पैशाचो विवाहेष्वधमाधमः ;
ऋत्विजे कन्यकादानं दैवो ज्ञेयः पुरातनः॥ ११॥

बलात्कार (कन्या के कौमार्य को बल-पूर्वक नष्ट करने) से पैशाच विवाह होता है, जो विवाहों में सबसे अधम (ख़राब) है। यज्ञ करवानेवाले ब्राह्मण को कन्या देना पुराने समय का दैव विवाह है।

ब्राह्मं विवाहमुत्सृज्य सर्वेऽन्येऽस्थायिनो मताः ;
अस्थायित्वं विवाहेषु सुखसम्पत्तिनाशनम् ॥१२॥

ब्राह्म विवाह को छोड़कर अन्य सब विवाह अस्थायी (भंग) होनेवाले हैं। विवाहों में अस्थायीपन का होना सुख और संपत्ति का नाशक होता है।

अत एवाऽऽसुरे चार्षे धनं दत्त्वापि निश्चितम् ;
ब्राह्मस्यैव विवाहस्य विधिः सम्पाद्यतेऽधुना॥१३॥

इसीलिये आजकल आसुर और आर्ष विवाहों में निश्चित धन (रुपया या गोधन) देकर भी ब्राह्म विवाह की विधि पूरी की जाती है।

स्थायित्वं सर्वथा श्रेष्ठं विवाहानां मतं बुधैः ;
वरवध्वोस्तु योगोऽयं तदर्थं धार्मिकः कृतः ॥ १४॥

पंडितों ने विवाहों की स्थिरता को सब तरह से श्रेष्ठ माना है। इसीलिये वर और वधू का यह संयोग धार्मिक (धर्म से संबद्ध) कर दिया है।

कामजे सहजश्छेदश्चाञ्चल्येन तु चेतसः ;
पाश्चात्त्यैरपि धीमद्भिर्हानिरस्यानुभूयते ॥ १५॥

चित्त की चंचलता के कारण वासनाओं के आधार पर किए जानेवाले (गांधर्व आदि) विवाहों में विच्छेद (तलाक़) आसानी से हो जाना संभव है। योरप के विद्वान् भी इसके हानि-कारक परिणाम का अनुभव करते हैं।

गार्हस्थ्यचर्या

यदुक्तमृतुगामित्वं शास्त्रे तत्तु प्रजेच्छया ;
भारते त्वधुना नेष्टं प्रजाधिक्यं विचक्षणैः ॥१६॥

शास्त्रों में जो ऋतु-काल में (मासिक धर्म की चार रात्रियों को छोड़कर अगली ग्यारह रात्रियों तक) स्त्री-सहवास लिखा है, वह संतानोत्पत्ति की इच्छा से ही लिखा है। (परंतु) बुद्धिमान् लोग अब इस समय भारत में अधिक संतानोत्पत्ति को लाभदायक नहीं समझते।

पालने शिक्षणे कष्टं कष्टं वृत्त्यर्जनेऽपि च ;
अतोऽल्पैव जनिः श्रेष्ठा परिवृत्ते युगेऽधुना ॥१७॥

आजकल के बदले हुए समय में (संतान के) पालन और शिक्षित करने में कठिनता पड़ती है, और गुज़ारे के प्रबंध में भी कठिनता पड़ती है, इसलिये (इस समय) थोड़ी संतान उत्पन्न करना ही अच्छा है।

लब्धाभीप्सितसन्तानस्ततः परिहरन्नृतून् ;
भार्याऽऽत्मतुष्ट्यै विहरेद्वीर्यरक्षाहिते रतः ॥ १८॥

इसलिये इच्छानुसार संतान प्राप्त हो जाने पर वीर्य-रक्षा का पूरा विचार रखते हुए, ऋतु-कालों को छोड़कर, पत्नी की और अपनी इच्छा की पूर्ति के लिये, स्त्री के साथ विहार करे।

वंशे पितुस्तथा भर्तुः सम्मान्याः सर्वथा स्त्रियः ;
आदृतास्ताः प्रयच्छन्ति सुखं शान्तिं च शाश्वतीम्॥१९

पिता के और पति के कुल में स्त्रियों का सब तरह से सम्मान करना चाहिए। आदर की हुई वे हमेशा के लिये सुख और शांति प्रदान करती हैं।

परस्परं हि सन्तुष्टौ दम्पती सुखमाप्नुतः ;
तत्त्यजेतामसन्तोषं निश्शेषक्लेशकारणम् ॥२०॥

आपस में एक दूसरे से संतुष्ट रहनेवाले पति-पत्नी सुख पाते हैं। इसलिये वे दोनो सब दुःखों के कारण रूप असंतोष को छोड़ दें।

यथाविभवमात्मानमलङ्कृत्य परस्परम् ;
प्रीणीयातां नित्यमतोऽप्रमत्तौ गार्ह्यकर्मणि ॥२१॥

पति-पत्नी अपनी हैसियत के अनुसार साफ़-सुथरे वस्त्रादिक पहनकर और घर-गृहस्थी के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कामों में ग़फ़लत छोड़कर सदा ही आपस में एक दूसरे को प्रसन्न रक्खें ।

स्त्रीधनं यत्नतो रक्ष्यं पत्या पुत्रैश्च बान्धवैः ;
नोपभोगः प्रशस्तोऽस्य यथासाध्यमतस्त्यजेत् ॥२२॥

पति, पुत्र और बंधुओं को यत्न-पूर्वक स्त्री के धन की रक्षा करनी चाहिए । उनके द्वारा स्त्री-धन का उपभोग किया जाना अच्छा नहीं । इसलिये जहाँ तक हो, इसका उपभोग न करे ।

स्थितिरन्याश्रमाणां तु गार्हस्थ्याश्रमतो मता ;
अतः श्रेष्ठः स विज्ञेयो धर्मकामार्थदस्तथा ॥२३॥

दूसरे (ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ और संन्यास) आश्रमों की स्थिति गृहस्थाश्रम से ही है । इसलिये वही श्रेष्ठ समझे जाने लायक़ है, और धर्म, अर्थ और काम का देनेवाला भी है ।

सत्पात्रे सादरं दद्यादन्नं वस्त्रं जलादिकम् ;
भोजयेदतिथींश्चापि यथाशक्यं गृही सदा ॥२४॥

गृहस्थ नित्य ही अपनी सामर्थ्य के अनुसार योग्य व्यक्तियों (सच्ची ज़रूरतवालों) को आदर के साथ अन्न, वस्त्र और जल आदि दे, और घर पर आए अतिथियों को भोजन करावे ।

गोश्वादिपशुकाकादिपक्षिभ्यश्चापि नित्यशः ;
पिपीलिकादिकीटेभ्यो बलिं चापि समाहरेत् ॥२५॥

गाय, कुत्ते आदि पशुओं को, कौवे आदि पक्षियों को और चींटी आदि कीड़ों को भी सदा बलि (भोजन) पहुँचावे ।

फलच्छायापुष्पवतो वृक्षान्सन्तर्पयेज्जलैः ;
देवर्षिपितृतृप्त्यर्थं मनसा ध्यानमाचरन् ॥ २६ ॥

देवता, ऋषि और पितरों की तृप्ति के लिये मन से उनका स्मरण करता हुआ फल, छाया और पुष्पवाले वृक्षों में पानी दे ।

(ऐसा करने से 'एक पंथ दो काज' अथवा 'आम्राश्च सिक्ताः पितरश्च तृप्ताः ; एक क्रिया द्वयर्थकरी प्रसिद्धा'वाली कहावत सिद्ध होती है ।)

पञ्चयज्ञास्तु ये प्रोक्ता वैश्वदेवादयः पुरा ;
तेषामेतेषु विज्ञेयः समावेशो युगेऽधुना ॥ २७ ॥

पहले जो वैश्वदेव आदि पाँच यज्ञ कहे, हैं, उनका समावेश इस युग में इन (उपर्युक्त बातों) में ही हो जाता है ।

विद्यार्थिरोगिबालांश्च गर्भिणीश्च स्नुषा अपि ;
भोजयेत्समये नित्यं विलम्बो हानिकारकः ॥२८॥

विद्यार्थियों, रोगियों, बालकों, गर्भवती स्त्रियों और पुत्र-वधुओं को सदा समय पर भोजन दे । इसमें देर करना हानिकारक है ।

दैवपित्र्यादिकार्येषु सदाचाराश्च साक्षराः ;
भोज्या जना न मूर्खास्तु न च दुष्टाः कदाचन ॥२९॥

देव और पितरों आदि के काम में अच्छे आचरण-वाले और पढ़े-लिखे पुरुषों को भोजन करावे, मूर्खों और दुष्टों को कभी नहीं ।

नैव भोज्यास्तु सुहृदो ज्ञातयो वाऽथकर्मणि ;
श्राद्धे धर्मकृते वाऽपि भोज्याश्चेत्ते पृथक्तया ॥३०॥

श्राद्ध के और धर्मार्थ किए काम में मित्रों और रिश्तेदारों को न खिलावे । यदि खिलाना हो, तो अलग से खिलावे (क्योंकि उनका खिलाना धर्म-कार्य नहीं माना जा सकता) ।

ऋत्विजं याजकं बन्धुं स्वस्रीयं भगिनीपतिम् ;
जामातरं च दौहित्रं गुरुं श्राद्धेषु भोजयेत् ॥३१॥
अभावे सद्द्विजातीनां मनोराज्ञामनुस्मरन् ;
नाङ्गहीनं न रुग्णं नो हीनाचारं च भोजयेत् ॥३२॥
(युग्मम्)

सदाचारवाले ब्राह्मण के न मिलने पर, (महर्षि) मनु की आज्ञा का स्मरण करता हुआ, श्राद्धों में पुरोहित, यज्ञ करानेवाले, बंधु (मौसेरे और फुफेरे भाई), भानजे, बहनोई, दामाद, नवासे या गुरु को भोजन करावे । (परंतु) अंग-हीन, रोगी और आचार-भ्रष्ट को न खिलावे ।

श्राद्धे निमन्त्रितो विप्रो मैथुनादीनि वर्जयेत् ;
श्राद्धाहोरात्रपर्यन्तं संयतात्माप्यथो भवेत् ॥३३॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्राद्ध में बुलाया हुआ ब्राह्मण श्राद्धवाले दिन और रात्रि के समाप्त होने तक स्त्री-संगम आदि न करे, और आत्मसंयमी भी रहे।

कुलोक्तरीत्या भक्त्या च श्राद्धकर्म समाचरेत् ;
भोजयेत्सुप्रसन्नान् हि विप्रान् योग्यतमाञ्च्छुचिः॥४

मनुष्य पवित्र होकर अपने कुल की रीति और भक्ति से श्राद्ध-कर्म करे, और प्रसन्न-चित्त और श्रेष्ठ ब्राह्मणों को भोजन करावे।

शिष्टाख्यानानि च पठेच्छृणुयाद्वा समाहितः ;
पितॄणां श्रेष्ठकर्माणि श्रावयेत्पुत्रपौत्रकान् ॥३५॥

(श्राद्ध में श्राद्धोपयोगी) उत्तम कथाओं को ध्यान से पढ़े या सुने, और अपने पितरों के अच्छे कामों को पुत्र और पौत्रों को सुनावे।

येनानुकुर्युः सिद्ध्यर्थं जगत्यां तेऽपि पूर्वजान् ;
पितॄणां स्मृतिरक्षैव श्रद्धया श्राद्धमुच्यते ॥३६॥

जिससे वे लोग भी संसार में सफलता के लिये अपने पूर्वजों का अनुकरण करें। श्रद्धा के साथ पितरों की स्मृति की रक्षा करना ही श्राद्ध कहाता है।

यो नन्दनोऽजनि मुकुन्दमुरारिसूरे-
र्विश्वेश्वरः किल सतीमणिचाँदरान्याम् ;
गार्ह्यप्रवेशसरणीह समापि तेन
विश्वेश्वरस्मृतिगताऽधिकृतिस्तृतीया ॥३७॥

पंडित मुकुंदमुरारिजी द्वारा सती-श्रेष्ठा चाँदरानीजी के गर्भ से जो विश्वेश्वर-नामक पुत्र उत्पन्न हुआ, उसने विश्वेश्वर-स्मृति में गृहस्थ-धर्म की प्रारंभिक बातों का वर्णन करनेवाला तीसरा अधिकार यहाँ पर समाप्त किया।

सनसनीख़ेज़ पुस्तकें पढ़िए !

क्रांतिकारी लेखक पं० गुलाबरत्न वाजपेयी 'गुलाब' की अद्भुत पुस्तकें, जो उपार्जनशील व्यक्तियों के लिये अत्यंत उपयोगी हैं। यदि आप सुखी, उन्नत और सफल व्यक्ति बनकर जीवन-संग्राम में विजय चाहते हैं, तो 'आकर्षण-शक्ति', 'नई रोशनी' और 'स्त्री-पुरुष' फ़ौरन् पढ़िए। आपकी आमदनी बढ़ेगी, दिमाग़ तेजस्वी होगा, और गृहस्थ-जीवन आनंदों से भर उठेगा—

आकर्षण-शक्ति	२)	नई रोशनी	१॥)
स्त्री-पुरुष	२)	पपीहा	२)
काँटा	१॥)	तारामंडल	१॥)
दिल की प्यास	१)	मृत्युंजय	१)

लतिका १)

जनता और पत्र-पत्रिकाओं द्वारा प्रशंसित ! हज़ारों की तादाद में बिक रही हैं !! कोई दो पुस्तकें मँगाने से डाक-ख़र्च माफ़।

गंगा-ग्रंथागार, ३६, लाटूश रोड, लखनऊ
विज्ञान-मंदिर, ६ (सी) ब्रह्मणपाड़ा-लेन, कलकत्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बदला

[श्रीयुत 'बचनेश'जी]

दाँव दिए बिन जान न पैहौ।
किितउ करौ अचकरी सखा ! तुम
फेंट छुराय न पैहौ।

अब लौं छिपे रहे प्रिय, मोकहँ
चोर बनाय खिजायो;
खोजत रह्यो इतै-उत तोकौं
पकरि मरू के पायो।

कर झटकत, मटकत कह मोसों,
छल-बल चलै न अधुना;
नहिं श्रीदाम गेंद - लोभी जेहिं
तजि धसि जैहौ जमुना।

गोरस - चोर, चोर चीरन के,
चोर बनत कस लाजौ;
जु पै थकित 'बचनेस' जात कहँ
गोरस लेव, बिराजौ।

गीत

[श्रीयुत सोहनलाल द्विवेदी एम्० ए०, एल्-एल्० बी०]

छेड़ो वीणा के मत तार।
आज यह करुणा तुम्हारी बन चली है भार।

दिया मैंने दान दो पग,
लिया तुमने नाप सब मग,
पलक से अलकें समेटो,
ज़रा मेरी ओर देखो,
प्रेम के वामन ! तुम्हारा छल-भरा व्यापार ! वीणा रख पद-पद्म में मैं चल पड़ा उस पार।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रीयता का रोड़ा—संप्रदायवाद

[श्रीमती हीरादेवी चतुर्वेदी]

विगत तिरपन वर्षों का इतिहास इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि कांग्रेस ने भारत की दीनता का बोझल अभिशाप कम करने और आज़ादी हासिल करने का कँटीला मार्ग तय करने के लिये कोई भी उचित प्रयत्न करने में कुछ उठा नहीं रक्खा, और इसके फल-स्वरूप उसे बहुत कुछ सफलता भी प्राप्त होती जा रही है। यद्यपि यह सफलता अभी आंशिक ही कही जा सकती है, किंतु इस कमी के लिये कांग्रेस को उतना दोषी नहीं कहा जा सकता, जितना कांग्रेस की प्रत्येक क्रियाशीलता में संप्रदायवाद की बू सूँघनेवालों के असहयोग को।

यद्यपि दुनिया के किसी भी देश का इतिहास देखने पर हमें यह ज्ञात होता है कि जब-जब और जहाँ-जहाँ किसी प्रगतिशील संस्था का जन्म हुआ, तब-तब उसका मार्ग सर्वत्र काँटों से भरा हुआ ही रहा, और लक्ष्य-प्राप्ति सदा आसान नहीं, अपितु महान् टेढ़ी खीर सिद्ध होती आई; किंतु बारीकी से विचार करने पर हम कह सकते हैं कि भारत में संप्रदायवाद की ज़हरीली गैसों ने हमारी प्रगतिशील कांग्रेस का कँटीला पथ अधिकाधिक त्रासदायक और अंधकार-पूर्ण कर डाला है।

सांप्रदायिकता की बू देखनेवाले शायद यह विचार करने की तकलीफ़ ही गवारा नहीं करते कि आधुनिक युग का कोई भी भारतीय, चाहे वह हिंदू हो या मुसलमान, ईसाई हो या पारसी, दुनिया के किसी भी देश में क्यों न चला जाय, उसकी इज़्ज़त ग़ुलाम से बढ़कर कदापि न की जायगी। फिर हमारा भारत तो ऐसा देश है, जो नब्बे प्रतिशत ग्रामों में बसा हुआ है, और न केवल कृषि-प्रधान, प्रत्युत कृषि-जीवी भी कहा जा सकता है। भारतीय कृषि की दयनीय दशा आज किसी से छिपी नहीं। इन कृषि-जीवियों में क्या हिंदू और क्या मुसलमान, सभी सम्मिलित हैं, और रोटी का प्रश्न भी सभी के सामने सम रूप में बिभीषिका खड़ी किए रहता है। इसी प्रकार अन्य राष्ट्र-निर्माणकारिणी समस्याएँ भी, क्या हिंदू और क्या मुसलमान, दोनों के लिये एक-सी हैं—ऐसी हैं, जिनमें धर्म नाम की कोई चीज़ ही सामने नहीं लाई जानी चाहिए। तब पता नहीं, क्यों ये कुछ मुसलमान, जो मुसलिम लीग की दुहाई देते और सदा कांग्रेस के विपरीत चलने का बीड़ा उठाते हैं, कांग्रेस की प्रगतिशीलता में अपना कल्याण नहीं समझते?

कांग्रेस का जब जन्म ही हुआ था, तब तत्कालीन शासक-वर्ग की मनोदशा पर कांग्रेस के जन्मदाताओं में अपना अनन्यतम स्थान रखनेवाले सिविलियन अँगरेज़ मि० ऐलेन् ओक्टेवियस ह्यूम ने ता० ३० एप्रिल, सन् १८८२ ई० को प्रयाग में दिए गए अपने एक भाषण में कहा था—"हमारे पैरों-तले प्रत्येक स्थान पर खुली हुई बारूद पड़ी है, जिसमें कहीं पर भी एक ही चिनगारी पड़ जाने से समस्त देश, समस्त राज नष्ट-भ्रष्ट हो सकता है। यह हमीं हैं, जो बड़ी सावधानी और बड़े पहरे-चौकी के साथ इस बारूद को पीपों में भरकर उस बड़े भारी भय को मिटाने का प्रयत्न और प्रतीक्षा कर रहे हैं कि दस वर्ष व्यतीत होने के पहले ही हम सब अपनी जन्मभूमि की भाँति ही सुरक्षित हो जायँगे। × × × हम ऐसा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यंत्र तैयार कर रहे हैं, जो उपद्रवी लोगों को सदर देश व्यवस्था के विरुद्ध कार्य करने से रोकेगा।"

भाषण के इसी सिलसिले में मि० ह्यूम की ये पंक्तियाँ भी विचारणीय हैं—"क्या आप यह नहीं समझते कि 'अनुत्तरदायी उपद्रवियों' के उत्पन्न होने से पूर्व, जो अवश्य ही आगामी पच्चीस वर्षों के भीतर उत्पन्न हो जायँगे, हम मध्यम श्रेणी के नागरिकों को अपनी ओर आकर्षित कर लेंगे, और इस प्रकार उनके टीका लगाकर एक भीषण रोग (चेचक) से उन्हें बचा लेंगे।"

और आज, हम देखते हैं, मि० ह्यूम ने चाहे जिसे भी 'अनुत्तरदायी उपद्रवी' कहा हो, किंतु उनकी आशंका आज अक्षरशः सत्य उतर रही है, और राष्ट्रीय गति-विधि का वर्तमान चक्र चालित होने में जो रोड़े सामने आ रहे हैं, वे यह कहने पर मजबूर करते हैं कि संप्रदायवाद का पल्ला पकड़कर चलनेवाले लोग—चाहे वे मुसलिम-लीगवादी हों या हिंदू-सभावादी—वास्तव में अनुत्तरदायी उपद्रवी बनकर, कांग्रेस की राष्ट्रीयता में रोड़े अटकाकर देश के लिये घातक सिद्ध हो रहे हैं। यों हिंदू-महासभावादियों को हम उतना दोष नहीं दे सकते, जितना मुसलिम-लीग का अंधानुकरण करनेवालों को। कारण, हिंदू-महासभावादी अपनी इनी-गिनी दो-चार बातों को ही लेकर कांग्रेस से अपना मतभेद प्रकट करते हैं; किंतु संप्रदायवाद का हलाहल लेकर ये लीगवादी तो सदा कांग्रेस के विपरीत चलकर ही अपनी ढाई चावल की खिचड़ी अलग पकाया करते हैं। और, यह रोग इतना बढ़ चुका है कि कांग्रेस के कितने ही सम्मान्य नेताओं और देश के कर्णधारों के अथक प्रयत्न करने पर भी हिंदू-मुसलिम-भेद की गहरी खाई आज तक भरी नहीं जा सकी।

पं० जवाहरलाल नेहरू की प्रेरणा से मुसलिम जन-संपर्क-समिति की स्थापन की गई। मुसलमानों के सच्चे पथ-प्रदर्शक ख़ान अब्दुलग़फ़्फ़ार-ख़ाँ और ४३वीं राष्ट्रीय महासभा (कांग्रेस) का काँटों का ताज पहननेवाले, ईमानदार देश-सेवक मौलाना अबुलकलाम आज़ाद आदि के बार-बार समझाने और वक्तव्य प्रकाशित करने पर भी यह पहेली ज्यों-की-त्यों बनी हुई है, और संदेह ही है कि कभी यह समस्या हल हो सकेगी।

लीगवादियों को इस बात का पता होना चाहिए कि मुस्लिम-जन-संपर्क-आंदोलन अथवा हिंदू-मुसलिम-एकता पर ज़ोर देने में कांग्रेस का दृष्टिकोण पूर्णतया राष्ट्रीय ही है। कांग्रेस किसी भी जाति या संप्रदाय-विशेष की संस्था नहीं है, बल्कि देश के उन दीवानों का एक समूह है, जो राष्ट्र की आज़ादी के लिये सिर पर कफ़नी बाँधकर जंग के मैदान में आ डटे हैं, जो ग़ुलामी की पीड़ा से निरंतर छटपटाते रहते हैं, जो अपने देश-वासियों को दुनिया के अन्य उन्नत मस्तक, स्वतंत्र देशों के स्वतंत्र नागरिकों की श्रेणी में बैठा देखना चाहते हैं, और आज़ादी हासिल करने की अपनी तमन्ना पूरी करने को 'दिन-रैन बेचैन' दिखाई देते हैं। कांग्रेस की नज़रों में किसी भी धर्म या संप्रदाय के व्यक्ति समान हैं, और इसी-लिये कांग्रेस उस राष्ट्र की एकमात्र प्रतिनिधि संस्था है, जिसमें भारत-भूमि पर पलने और रहनेवाले, भारत को अपनी जन्म-भूमि और क्रीड़ा-भूमि समझनेवाले एवं इसके गौरव तथा विकास की शाश्वत आकांक्षा रखनेवाले व्यक्ति बिना किसी भेद-भाव के एक लक्ष्य-प्राप्ति का बाना लेकर सम्मिलित होते हैं। प्रत्येक व्यक्ति अपने त्याग और तपस्या से कांग्रेस का अभिन्न अंग हो सकता है।

कांग्रेस के सतत प्रयत्नों से भारतीय जनता में विलक्षण जागृति हुई, और जनता ने अपने अधिकारों को कांग्रेस के संदेश पाकर ही भली भाँति समझ सकने का सौभाग्य प्राप्त किया। देश की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज़ादी हासिल करने के लिये कांग्रेस के ही स्तुत्य और अभूतपूर्व नेतृत्व में सहस्रों हिंदू-मुसलिम नर-नारियों ने अपने प्राणों की बलि दी। यही क्यों, आज भी कांग्रेस के संकेत पर देश के लिये लाखों नर-नारी अपना प्राण तक विसर्जन करने को तत्पर हैं। और, ऐसे त्याग की आकांक्षा रखनेवालों अथवा मर मिटने के लिये उतावले रहनेवालों में हिंदू-मुसलमान, पारसी, सिख आदि सभी संप्रदायवाले सम्मिलित हैं। यों मुसलिम जनता ने भारत की आज़ादी की लड़ाई में उतना त्याग नहीं किया, जितना उससे अपेक्षित था। किंतु इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि अनेक मुसलिम सज्जनों ने कांग्रेस और देश-सेवा पर अपना सर्वस्व होम कर राष्ट्र के प्रति पूर्ण रूप से अपना कर्तव्य पालन किया, और अपने अन्य मुसलमान भाइयों का पथ-प्रदर्शन कर उन्हें गुमराह होने से बचाने का सराहनीय प्रयत्न किया। परंतु दुर्भाग्य से मुसलिम जनता के कुछ धार्मिक और राजनीतिक (?) ठेकेदार ऐसे भी हैं, जो सदा से अपने सजातीयों को गुमराह करते रहने और हिंदू-मुसलिम-वैषम्य को संप्रदायवाद के विष से बुझे हुए तीरों से अधिकाधिक विच्छिन्न करने में ही अपनी ठेकेदारी का फ़र्ज़ अदा करते आए हैं।

ग़ुलामी और आर्थिक दुरवस्था की जो बिभीषिका अन्य सर्व-सामान्य जनता के सामने मुँह बाए खड़ी है, वही मुसलिम जनता के सामने भी है, और इसे दूर करने के लिये ही जब कांग्रेस बिना किसी भेद-भाव के जी-जान से कोशिश कर रही है, तब इसमें सम्मिलित न होकर, पता नहीं क्यों, मि० जिन्ना मुसलिम-लीग की स्थापना कर इसे कांग्रेस-जैसी ही शक्तिशाली संस्था बनाने के लिये रात-दिन आकाश-पाताल के क़ुलाबे एक किया करते हैं, और जब देखो, तब लीग के अध्यक्ष-पद से जी भरकर कांग्रेस को कोसा करते हैं।

और, मि० जिन्ना के अन्य दुष्ट अनुयायी तो अपने गुरु से भी बढ़-चढ़कर संप्रदायवाद का विष उगला करते हैं। कुछ ही महीने पूर्व की बात है। बंगाल में, मि० हक़ के मंत्रिमंडल की छत्रच्छाया में, ऐसी ही दूषित मनोवृत्ति के एक मुसलमान एम्० एल्० ए० ने हिंदू-नारियों के विषय में अपने कुत्सित विचार प्रकट करते हुए कहा था—"पहले ज़माने में इस प्रांत (बंगाल) के शासक मुसलमान थे, और तब हमें संतोष देने और हमारी कृपा प्राप्त करने के लिये वे (हिंदू) अपनी माताओं और बहनों को सिंगारते और दरबारों में भेंट करते थे।"

इन कुत्सित उद्गारों में मुझे तो संप्रदायवाद के ज़हरीले छींटों और अदूरदर्शिता के अतिरिक्त अन्य कोई नाम नज़र नहीं आती। लेकिन इसी एक बात को लेकर कितने ही पत्रों, व्यक्तियों और विशेषतः महिलाओं के कलेजे हिल गए। और, ऐसा होना स्वाभाविक ही है। इस आक्षेप का मुँहतोड़ उत्तर देने की भी कोशिश की गई। एक हिंदू महिला ने इसका जो मुँहतोड़ उत्तर पत्रों में प्रकाशित कराया है, वह हिंदू नारी की मर्म-व्यथा प्रकट करने के लिये पर्याप्त और उल्लेखनीय भी है—"भारतीय अथवा भारत के बाहर विदेशों में रहनेवाली हिंदू नारी बंगाल में होनेवाले इस प्रचार को नहीं समझ सकती। भारतीय महिला बेटी है, बहू है, और है माता। इन तीनों ही स्वरूपों में वह ऐसे युग में जीवित रहना सौभाग्य को धोकर फेंकना समझती है, जहाँ हिंदू-देवी-देवता वेश्या बताए जायँ, और हिंदू माताओं और बहनों को सिंगारकर मुसलमानी दरबारों में पेश करने की चीज़ समझा जाय। × × × भारतीय हिंदू-नारी की यह इच्छा नहीं कि मुसलमान, ईसाई या किसी भी जाति की बहन का भारतीय तरुण अपमान करे; किंतु भारतीय हिंदू नारी वेश्या तो नहीं है, जो बंगाल की इस गुंडई को बर्दाश्त करती चली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाय। वह अपने बेटों से, भाइयों से और पिता से कहना चाहेगी कि अपमान की इस महँगी क़ीमत पर वह न तो अपनी कोख को कोख कहना चाहेगी, न अपने सुहाग को सुहाग। × × क्या मुसलमान सज्जन पसंद करेंगे कि हिंदू-बहुमतवाले प्रांतों में लोग उनके लिये, उनके पीर-पैग़ंबरों के लिये और उनकी बहू-बेटियों के लिये ऐसे ही शब्दों का प्रयोग करें ?"

एक हिंदू-नारी की भारतीय तरुणाई और राष्ट्र, दोनो के ही लिये यह चुनौती देने की समस्या उत्पन्न होने के मूल में संप्रदायवाद की कुत्सित मनोवृत्ति ही कही जा सकती है। उक्त चुनौती में उन्मत्त रहनेवाले और देश की आज़ादी की मंज़िल तक पहुँचने के पथ में विकट रोड़े अटकानेवाले कुछ मुसलमान भाइयों का स्पष्ट चित्र देखा जा सकता है। यद्यपि 'शठे शाठ्यं' की नीति अपनाकर नीच की नीचता का नीचता-पूर्ण उत्तर देना कदापि ठीक नहीं कहा जा सकता; किंतु इससे इतना तो स्पष्ट है कि आज़ादी की मंज़िल पर बढ़ते हुए क़ाफ़िले को पथ-भ्रष्ट करने अथवा दो क़दम पीछे बरबस देखने के लिये उसे मजबूर करने के ये तरीक़े हैं, जिन्हें संप्रदायवादी जान-बूझकर किए जाते और अपनी अदूरदर्शिता साबित करते रहते हैं।

समस्त प्रतिक्रियात्मक शक्तियों को एकत्र कर मि० जिन्ना मुसलिम जनता को राष्ट्रीयता और आत्म-कल्याण के मार्ग पर जाने नहीं देना चाहते, तभी तो उन्हें और उनकी मुसलिम-लीग को अपने सह-धर्मियों की यथार्थ और विकट समस्याओं का कोई ख़याल नहीं। मुसलिम जनता के ध्येय और संस्कृति के संरक्षण का जहाँ तक संबंध है, कांग्रेस एक बार नहीं, अनेक बार एतद्विषयक आश्वासन दे चुकी है; लेकिन मि० जिन्ना इन प्रधान समस्याओं को जाने क्यों बालाए-ताक़ रखकर कौंसिल की सीटें प्राप्त करने, पृथक् चुनाव करने, नौकरियों का प्रतिशत निर्धारित करने आदि गौण बातों में ही स्वयं उलझे हुए हैं, और मुसलिम जनता को भी उलझाए हुए हैं। पाकिस्तान-योजना भी इन्हीं संकुचित दृष्टिकोणवालों के दिमाग़ की उपज कही जा सकती है।

दूरदर्शिता से विचार करनेवाला कोई भी समझदार व्यक्ति यह कह सकता है कि जब तक हिंदू और मुसलमान, दोनो में समरसता नहीं आ जाती, संप्रदायवाद की दूषित मनोवृत्ति हट नहीं जाती, और दोनो क़ौमें मिलकर एक नहीं हो जातीं, तब तक दोनो का ही कल्याण नहीं, और आज़ादी का मार्ग प्रशस्त और सरल नहीं।

संप्रदायवाद के ये विकट रोड़े यदि कांग्रेस के मार्ग में न अटकाए जाते, तो, मैं कह सकती हूँ, आज़ादी के जंग में हमें अब तक बहुत कुछ कामयाबी हासिल हो चुकी होती, और सभी संप्रदायवाले चैन की वंशी बजाने लगते। अब भी कुछ नहीं बिगड़ा है। दिन-भर का पथ-भ्रांत पथिक यदि संध्या-समय अपनी मंज़िल पार कर ले, तो वह पथ-भ्रांत नहीं कहा जाता। फिर मि० जिन्ना अथवा अन्य संप्रदायवादी भले ही अपनी स्वार्थांधता का मोह न हटा सकें, किंतु नवीन पीढ़ी के बुद्धिमान् व्यक्ति, प्रतिक्रिया के मार्ग पर ले जानेवालों का यथार्थ स्वरूप समझकर उनका आम बॉयकाट करने को समुत्सुक दिखलाई देते हैं, जो राष्ट्रीयता के विकास के लिये निश्चय ही एक शुभ चिह्न समझा जा सकता है। संप्रदायवाद के खोखले अभिप्राय को लेकर चलनेवालों का ज़माना अब लद चुका, और आम तौर पर सभी भारतीय यह महसूस करने लगे हैं कि भारत-भूमि में रहनेवाले किसी भी संप्रदाय का सच्चा हित केवल कांग्रेस का साथ देने पर ही संभव हो सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वर्गीय आचार्य पं० रामचंद्र शुक्ल

[श्रीयुत हरिश्चंद्र अग्रवाल एम्० ए०]

आचार्य शुक्लजी का जन्म आश्विन की पूर्णिमा सं० १९४१ (सन् १८८४ ई०) को, ज़िला बस्ती के आगोना-गाँव में, सरयूपारीण ब्राह्मण-कुल में, हुआ था। आपका विद्यारंभ-संस्कार सं० १९४७ में हुआ था। शुक्लजी बाल्य-काल से ही तीव्र-बुद्धि थे, इसलिये आपको पढ़ते कुछ देर न लगी। सन् १९०१ में आप मिर्ज़ापुर-हाईस्कूल से इंट्रेंस की परीक्षा में उत्तीर्ण हुए, और तत्पश्चात्, समय की लहर के अनुसार, क़ानून-सागर का अवगाहन करने का विचार किया, लेकिन गृहस्थी में कुछ ऐसे झगड़े और पचड़े आ पड़े कि उनकी यह इच्छा पूरी न हो सकी। मनुष्य के सम्मुख उदर-पोषण की समस्या भार-स्वरूप होकर आ खड़ी होती है। यह बड़ी जटिल है। यह अच्छा ही हुआ, क्योंकि हिंदी-साहित्य-क्षेत्र में पदार्पण करके जो अमर स्थान आपको मिला, और अपनी भाषा की जो उन्नति आपने की, वह अन्य किसी पद पर होने से कभी नहीं हो सकती थी। आप प्रारंभ से ही प्रकृति-प्रेमी थे। इसके अतिरिक्त विंध्याचल के समीप रहने के कारण स्वभावतया प्रकृति के प्रति आपमें अधिक आकर्षण उत्पन्न हुआ कहा जाता है। आपके निवास-स्थान के पास ही पं० विंध्येश्वरीप्रसाद नाम के एक पंडित रहा करते थे, जो इन्हें तथा अन्य बालकों को संस्कृत-ग्रंथों से सुंदर-सुंदर श्लोक अर्थ-सहित सुनाया करते थे, जिससे इनमें काव्य-भावना और कवित्व-शक्ति का प्रादुर्भाव हुआ। सौभाग्य-वश शुक्लजी को मिर्ज़ापुर के मिशन-हाईस्कूल में नौकरी मिल गई। उस समय आपके हृदय-क्षेत्र में हिंदी के प्रति अनुराग के बीज का प्ररोहण होने लगा था। इतना ही नहीं, लोगों की ज़बान पर आपका नाम भी आने लगा था, और इसीलिये थोड़ी-बहुत ख्याति भी मिल गई थी।

"होनहार बिरवान के होत चीकने पात।"

कुछ समय पूर्व रायबहादुर बाबू श्यामसुंदर-दासजी द्वारा काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा की स्थापना हो चुकी थी, और उन्होंने हिंदी-शब्द-सागर के संपादन का जटिल काम उठा लिया था। यह काम सभी नहीं कर सकते थे, इसलिये चुने-चुने व्यक्ति बुलाए गए। दासजी की दृष्टि शुक्लजी पर पड़ी, और उस काम को पूरा करने के लिये वह काशी बुलाए गए।

काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा का काम करते हुए आप नागरी-प्रचारिणी पत्रिका का संपादन भी करते थे। अब तो शुक्लजी के सामने एक नया कार्य-क्षेत्र उपस्थित हो गया। उनकी प्रतिभा भी अप्रतिहत रूप से काशी के पंडितों के मध्य विकसित होने लगी। कालांतर में जब काशी-विश्वविद्यालय में हिंदी को ऐच्छिक रूप में अन्य विषयों के साथ स्थान मिला, तो आपने, सन् १९२९ में, आचार्य-पद को विभूषित किया। सन् १९३७ में रायबहादुर बाबू श्यामसुंदरदासजी के रिटायर्ड होने के बाद से आप हिंदी-विभाग के प्रधानाध्यक्ष रहे। इस समय आप काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा के सभापति भी थे। २ फ़रवरी, १९४१ की रात को एकाएक दिल की धड़कन बंद हो जाने की वजह से आपका देहावसान हो गया। इस समय आपके तीन पुत्र हैं, जिनमें से पं० केशवचंद्रजी डिप्टी-कलेक्टर हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आचार्य शुक्लजी बड़े ही सरल, स्वच्छ-बुद्धि और सादगी तथा निष्कपटता की मूर्ति थे। गंभीर और चिंतनशील होते हुए भी व्यक्तिगत संपर्क में आने पर बड़े सहृदय सिद्ध होते थे। आपमें गर्व और यश की लालसा बिलकुल न थी। कितनी ही बार हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के सभापति-पद के लिये प्रस्ताव रक्खे गए, लेकिन इन्होंने हमेशा कुछ-न-कुछ बहाना बनाकर टाल दिया। श्रद्धेय टंडनजी को इसका कई बार का तजुरबा है। इसी में महत्ता है। इस प्रकार आपने उच्च चरित्र के आदर्श स्थापित किए।

पूर्व-कथनानुसार शुक्लजी को कविता से अधिक प्रेम था। कविता ही उन्हें हिंदी-साहित्य-क्षेत्र की ओर खींच लाई थी। यद्यपि काव्य-क्षेत्र में उन्होंने अन्य वर्तमान कवियों के समान अधिक कार्य नहीं किया, लेकिन वह भी अछूता नहीं छोड़ा। जल-स्रोत की मधुर कलकल ध्वनि के समान उनके हृदय से भी प्रतिध्वनि होती थी। अन्य नदियों के जल की तरह उनके भाव भी काव्य-रूप होकर साहित्य-समुद्र में आकर मिल गए हैं। सबसे पहली कविता 'मनोहर छटा' है, जो 'सरस्वती' में छपी थी। कविता के बारे में उनका मत था—"वह मनन की वस्तु है। उसका ध्येय यह नहीं कि वह मनुष्य का चित्त विचलित एवं चलायमान कर दे। उसके पढ़ने से मन और हृदय को एक प्रकार का अवर्णनीय आनंद प्राप्त होना चाहिए। भावों के माया-जाल में अधिक न फँसकर उनके तात्त्विक सिद्धांतों को समझना चाहिए।" आपके इन्हीं विचारों की पुष्टि आपकी रचनाओं में मिलती है। यही कारण है, सुंदर भाव अभिव्यक्त करने में आपको अपूर्व सफलता प्राप्त हुई। 'बुद्ध-चरित्र' इन सब बातों का उदाहरण है।

कविता-संसर्ग से मनुष्य का प्रकृति से स्वयं संबंध स्थापित हो जाता है। वह प्रकृति से द्रवित हुए बिना नहीं रह सकता। किन्हीं-किन्हीं महानुभावों के जीवन-वृत्तांत का अध्ययन करने से यह ज्ञात होता है कि उन्हें प्रकृति ही कविता की ओर घसीट ले गई। यही बात आचार्य शुक्ल के जीवन में भी पाई जाती है। आप प्रकृति के पुजारी थे। आपने अपने भाव मनुष्य-निर्मित वाटिकाओं से न प्राप्त कर प्राकृतिक वन-खंडों आदि से पाए थे। यह कहना अत्युक्ति न होगी कि हिंदी-क्षेत्र में आप पहले ही व्यक्ति थे, जिसने प्रकृति के बाह्य रूप पर मोहित न होकर अंतरात्मा में प्रवेश और अपने लिये एक मूक-संदेश का अनुभव किया था। 'आमंत्रण' में ये ही बातें पाई जाती हैं। 'हृदय का मधुर भाव', 'वसंत - पथिक', 'शिशिर-पथिक' और 'बुद्ध-चरित्र' का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि आचार्य शुक्ल हृदय के सूक्ष्म-से-सूक्ष्म भाव सफलता-पूर्वक व्यक्त करने में सिद्धहस्त थे। इस बात का भी आपने प्रयत्न किया है कि जिस रूप में वह स्वयं अनुभव कर रहे हैं, उसी में उनके पाठक भी अनुभव करें। कवि की महत्ता और उसका अधिकार इसी एक गुण से प्रकट होता है। आपका प्रकृति-निरीक्षण इतना बढ़ा-चढ़ा था कि अध्ययन करते समय उसकी एक सजीव मूर्ति सम्मुख खड़ी हो जाती है। अवसर के अनुसार आप प्रकृति को अपने साथ कर लेते थे। करुण-रस की अभिव्यक्ति में आप सिद्धहस्त थे। उदाहरण-स्वरूप हम 'बुद्ध-चरित्र' का समस्त कथानक ले सकते हैं। केवल एक ही दो स्थानों पर नहीं, कितने ही स्थानों पर मनुष्य और प्रकृति का एकाकी संबंध स्थापित कराया गया है। कुछ लोगों का कवित्व-प्रेम केवल बाह्य होता है, अर्थात् बिना उसके अवयवों का ज्ञान प्राप्त किए ही कार्य-क्षेत्र में पदार्पण कर बैठते हैं, जैसा आजकल के कवियों में बहुधा पाया जाता है। यद्यपि आचार्य शुक्ल बी० ए० या एम्० ए० पास न थे, तथापि स्वयं निर्मित होने के कारण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य के अंग-प्रत्यंग के विद्वान् थे। इस बात का स्पष्टीकरण केवल उनकी आलोचनाओं में ही नहीं, बल्कि काव्यों में भी है। इनका उन पर आधिपत्य-सा था। आधिपत्य होने पर भी रीति-काल के कवियों के अनुसार आचार्य शुक्ल ने रस, अलंकार इत्यादि के साथ खेल नहीं खेला, बल्कि उचित संबंध स्थापित किया है।

जैसा पहले कहा जा चुका है, आचार्य शुक्ल केवल कवि ही न थे, बल्कि एक ज़बर्दस्त गद्य-लेखक थे। आपके निबंध कहीं अधिक सुंदर होते थे, और हैं। उनमें इतनी गंभीरता है कि सामान्य छात्र तो उनसे अधिक लाभ नहीं उठा सकते, परंतु विद्वानों के लिये वे अमूल्य हैं। इस समय 'विचार-वीथी' तथा 'चिंतामणि'-नामक दो निबंध-संग्रह उपलब्ध हैं, जिनसे इनके गंभीर पांडित्य का पता चलता है। उनमें शुक्लजी के मौलिक विचार तथा विशद विवेचन देखने को मिलते हैं। आचार्यजी को हिंदी का बेकन या अरस्तू कहा जाय, तो बहुत ही उपयुक्त हो। उनके लेखों में मनन-शीलता रहती है। स्पष्ट व्यक्त होता है कि उन्होंने जीवन को बहुत कठिन तथा गंभीर समझा था। 'क्रोध', 'घृणा', 'श्रद्धा', 'कविता क्या है' आदि विकारों और जटिल विषयों पर मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करना सरल कार्य नहीं। आचार्य का गद्य दार्शनिक या अन्य किसी प्रकार के गहन भाव व्यक्त करने के लिये उपयोगी सिद्ध हो सकता है। विषयों के अनुसार उनकी भाषा भी बदली है। उन्होंने गागर में सागर भरने का प्रयत्न किया है। जितनी ही अधिक बार वह पढ़ा जायगा, उतना ही उसका अर्थ स्पष्ट होता जायगा। यही कारण है कि उनकी भाषा ऐसे निबंधों में अधिक गंभीर और दुरूह सिद्ध हुई है। अन्य शब्दों में यह कहा जा सकता है कि आचार्य शुक्ल ने अपने भावों एवं विचारों को कम-से-कम शब्दों द्वारा व्यक्त करने का प्रयत्न किया है। इसी-लिये उनके लेखों में संस्कृत-शब्दावली अधिक पाई जाती है। इसका कारण लेखक की गंभीरता और मननशीलता है। आचार्य शुक्लजी के इस गुण की तुलना अँगरेज़ी के प्रसिद्ध निबंधकार एवं लेखक रॉबर्ट लुई स्टीवेन्सन की शैली से की जा सकती है। लेकिन आचार्य शुक्ल में पांडित्य की अधिकता थी, और स्टीवेन्सन 'Style is the man', इस मत को सर्वप्रथम स्थान दिए हुए था। ये सारी बातें शुक्लजी के एकांत-वास के कारण थीं। उनकी शैली से यह प्रत्यक्ष है कि किसी समस्या पर सोचने में वह पूर्ण दक्ष थे। यही गुण बहुत कुछ अंशों में द्विवेदीजी में पाया जाता था। शुक्लजी के प्रादुर्भाव से द्विवेदी-युग को पूर्ण प्रतिष्ठा मिली। इस प्रकार अंत में यही निष्कर्ष निकलता है कि शुक्लजी साधुवाद के लिये लालायित न थे। उद्देश्य-रहित होकर साहित्यसेवा में रत रहते थे। इसी से उनके गद्य में विषय को प्रधान तथा भाषा को गौण स्थान दिया गया है। कोरे शब्द ही काम में नहीं लाए गए हैं। किसी विद्वान् ने ठीक कहा है—"लिखने के पूर्व लेखक को आत्म-निरीक्षण कर लेना चाहिए, और अपने विचारों का मूल्य आँक लेना आवश्यक है। जब अधिक भावावेश हो, तभी लिखना सार्थक होता है।" उन्होंने जो कुछ लिखा, अपने हृदय की आंतरिक प्रेरणा के कारण ही।

अब हमें उन्हें अनुवादक के रूप में भी देख लेना चाहिए। आचार्य शुक्लजी अनुवादक भी अच्छे थे। लेखक के लिये मौलिक रचना करनी कहीं सरल है। मौलिक रचना में लेखक स्वतंत्रता-पूर्वक अपने विचार अपने अनुरूप लिखता चला जाता है, लेकिन अनुवाद करते समय यह ध्यान रखना पड़ता है कि मूल लेखक की विचार-श्रेणी भी न टूटने पावे, तथा यत्र-तत्र अपने ध्येय का भी निर्वाह हो जाय। बिना किसी ख़ास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिवर्तन के, जो असह्य न सिद्ध हो, अनुवाद कर देना सफल अनुवादक का चिह्न है। भावाभिव्यक्ति सुंदर ढंग से की जाय, परंतु वे सब मौलिकता की परिधि में सीमित हों। मौलिक लेखक नदी में तैरनेवाले के समान है, जो जिस तरफ़ चाहे, चला जा सकता है, लेकिन अनुवादक की स्थिति कुएँ में तैरनेवाले के समान है, जिसे सफलता-पूर्वक हाथ मारते हुए कुएँ की परिधि के अंदर, जल पर, ही रहना है। शुक्लजी ने 'कल्पना का आनंद', 'मैगस्थनीज़ का भारत-भ्रमण' और 'राजप्रबंध-शिक्षा' का अनुवाद किया है। इसके अतिरिक्त बँगला से 'शशांक' का अनुवाद भी किया है। आचार्य शुक्ल को इस ओर कहाँ तक सफलता मिली, पाठकवृंद स्वयं अध्ययन कर इस बात का पता लगा लें। एक प्रकार से आचार्य शुक्ल ने चौमुखी गंगा बहाई है।

समालोचना-क्षेत्र में आचार्य शुक्ल का अपना एक स्थान है। यद्यपि वह हमारे सामने सफल कवि, निबंधकार और अनुवादक के रूप में अवश्य आए हैं, लेकिन समालोचक के रूप में उनकी कोई स्पर्धा नहीं कर सकता। उनकी अपनी स्वयं एक कसौटी थी, जिस पर वह ग्रंथ और ग्रंथकार को कसा करते थे। वह साहित्य-क्षेत्र में पक्ष-रहित थे। स्पष्टवक्ता के समान अपने विचारों को सर्व-समक्ष रखने में कभी लज्जित नहीं होते थे। यह लिखा जा चुका है कि वह लोभ-रहित थे। उनका अपना एक उद्देश्य था, और उसी की पूर्ति में वह तन-मन-धन से सदा लगे रहते थे। द्विवेदीजी ने जो समालोचना-आंदोलन अपने संपादकत्व में प्रारंभ किया था, आचार्य शुक्ल ने उसे ही आगे बढ़ाया। उस समय तक, अर्थात् आधुनिक काल के प्रारंभ तक, आलोचन की कोई एक साहित्यिक कसौटी न थी। कभी-कभी लोग किसी ग्रंथ की टीका करते समय ही कुछ इधर-उधर की लिख मारते थे, और वही उनके लिये आलोचना हो जाया करती थी। इसका प्रारंभ एक प्रकार से पं० बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' के समय से, उन्हीं के द्वारा, होता है। काव्यालोचन अधिकतर बाह्य रूप ही का होता था। काव्य की अंतरात्मा तक पहुँचना बड़ा कठिन था। काव्य की कसौटी किसी ने ध्वनि को, किसी ने अलंकार को और किसी ने 'भिन्नरुचिर्हि लोकः' के अनुसार, रस, वक्रोक्ति इत्यादि को मान लिया था, लेकिन सत्यता में अब यह बात नहीं रह गई। इन गुणों को अब गौण रूप दे दिया गया, और ऐसा होना भी चाहिए। मेरी समझ में असली समालोचना तो काव्य-विषय तथा उसमें प्रतिपादित भाव, विचार और कल्पना की है, जिनके संयोग से काव्य की सृष्टि एवं रचना होती है। आचार्य शुक्ल ने इन्हीं सारी बातों पर मनन करके जिन ग्रंथों की समालोचना की, वे अपने रूप में पूर्ण हैं, और इस प्रकार उनका मूल्य स्वयं पाठकों के सामने आ जाता है। पुस्तकों के महत्त्व को व्यापक रूप देने में आचार्य शुक्ल ने कुछ उठा नहीं रक्खा। पूर्ण रूप से मीमांसा करना शुक्लजी का कार्य था।

विचार-परिवर्तन के साथ युग-परिवर्तन हुआ, और इसी के साथ मनुष्य के उद्देश्यों में भी परिवर्तन हुआ। जब सबमें परिवर्तन हुआ, तो उसका प्रभाव साहित्य पर भी पड़ा, और भिन्न-भिन्न रूपों और शैलियों में लोगों ने लिखना प्रारंभ किया। इन सारी बातों को देखकर ही आचार्य शुक्ल ने प्रौढ़ता-गुण पर विचार किया, और फल-स्वरूप विभिन्न शैलियों को जन्म दिया। लेकिन आपकी गंभीर और मननशील शैली प्रमुख है। आपकी गंभीर समालोचना के कारण उसके अनुरूप ही आपकी शैली तथा शब्दावली भी हो गई है, जिसके लिये हिंदी-पाठकगण उन्हें कभी-कभी 'कठिन साहित्य-प्रेत' की उपाधि देते हुए पाए जाते हैं। हिंदी-साहित्य-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेवियों में कठिन-से-कठिन विषयों के अध्ययन की रुचि आपने ही उत्पन्न की। अपनी समालोचनाओं द्वारा आपने यह सिद्ध किया है कि मनुष्य को किसी साधारण और कठिन वस्तु का किस प्रकार मनन-पूर्वक अध्ययन कर उसके गूढ़तम रहस्यों का पता लगाना चाहिए। जैसे-जैसे वह धैर्य-शील एवं विचारवान् बनेगा, वैसे-ही-वैसे उसके मस्तिष्क का विकास होता चला जायगा। तुलसी, सूर, जायसी आदि की समालोचनाएँ इन सारी बातों की उदाहरण हैं। इसके अतिरिक्त 'काव्य में रहस्यवाद'-नामक पुस्तक की रचना कर आपने यह भी प्रकट कर दिया कि मनुष्य को अपने विचार वहीं तक दौड़ाने चाहिए, जहाँ तक कोई वस्तु बोधगम्य सिद्ध होती हो। मनुष्य को दृश्य जगत् पर तो विचार करना ही चाहिए, लेकिन कुछ अंशों में अदृश्य जगत् पर भी सोच सकता है, किंतु अधिक नहीं। आचार्य शुक्ल के अनुसार सच्ची समालोचना वही है, जिसमें समालोचक कवि-हृदय तक पहुँच जाय, और उसकी आत्मा को सर्व-समक्ष रखने में सफल हो।

आचार्य शुक्ल की समालोचना-शैली अद्भुत है। यदि कोई यह इच्छा करे कि वह उन्हीं की तरह ग्रंथों की आलोचना कर ले, कठिन है। जब तक समालोचक उन्हीं की तरह पूर्ण अवगाहन न करे, तब तक यह संभव नहीं। भूत-वर्तमान का सतर्क अध्ययन करके उन्होंने समालोचना-क्षेत्र में पदार्पण किया था। समालोचना के समय वह सदा भविष्य का ख़याल रखते थे। शुक्लजी किसी वस्तु को केवल एक कोने से न देखकर चारो कोनों से देखते थे, जिससे फिर कोई उनकी ओर उँगली न उठा सके। किसी की कृति का ठीक-ठीक मूल्य आँकना आचार्य शुक्ल का ही काम था। यदि कोई उन्हीं के नियमों एवं समालोचना-मार्ग में अग्रसर हो, तो यह असंभव नहीं कि वह भी आचार्य शुक्ल का कुछ दिनों में उत्तराधिकारी बन सकेगा। यदि कोई सूर, तुलसी और जायसी के ग्रंथों का मूल्य जानना चाहता है, तो उसके लिये यह आवश्यक है कि वह आचार्य शुक्ल द्वारा लिखित उनकी समालोचनाओं को अवश्य पढ़े।

आचार्य शुक्ल की समालोचनाओं की समालोचना करते समय यह अवश्य कहना पड़ेगा कि उन्होंने भारतीय और पश्चिमीय पद्धति का सामंजस्य अवश्य किया है, लेकिन उसमें से भारतीयता का लोप नहीं होने पाया।

स्वर्गीय आचार्य पं० रामचंद्रजी शुक्ल पर अधिक न लिखकर केवल इतना ही लिखना आवश्यक जान पड़ता है कि उनके स्थान की पूर्ति अभी इस समय होना संभव नहीं। उनके निधन से हिंदी-साहित्य को जो धक्का लगा, वह असहनीय है। आशा है, अन्य महानुभाव भी आचार्य शुक्ल की जीवन-घटनाओं एवं अन्य विशेषताओं पर अवश्य दृष्टि डालेंगे।

भावनाओं के सागर को मथकर उसकी प्रतिभा ने क्या दिया ?—मानवता की सजीव, मर्मस्पर्शी, स्पष्ट और सारगर्भित कहानियों का संकलन ! छप रहा है ! शीघ्र प्रकाशित होगा !! सजिल्द १॥), सादी १)

अमृत

ले० 'अरुण' बी० ए०

मैनेजर गंगा-ग्रंथागार, ३६, लाटूस रोड लखनऊ,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'सुधा' के नियम

['सुधा' के २ संस्करण निकलते हैं—(१) राजसंस्करण, (२) साधारण संस्करण]

मूल्य

'सुधा' के राजसंस्करण का डाक-व्यय-सहित वार्षिक मूल्य १२), छ मास का ६) और प्रति संख्या का १) है। साधारण संस्करण का वार्षिक ६), छ मास का ३) और एक प्रति का ॥) है। वी० पी० से मँगाने में ≡) रजिस्ट्री के और देने पड़ेंगे। इसलिये ग्राहकों को मनीऑर्डर से ही चंदा भेज देना चाहिए। भारत के बाहर सर्वत्र वार्षिक मूल्य वही है, जो भारत में। सुधा की यह भी एक विशेषता है—वर्षारंभ श्रावण (अगस्त) से होता है, लेकिन ग्राहक चाहे जिस संख्या से बन सकते हैं।

अप्राप्त संख्या

अगर कोई संख्या किसी ग्राहक के पास न पहुँचे, तो उसी महीने के अंत तक कार्यालय को सूचना मिलनी चाहिए। लेकिन हमें सूचना देने के पहले स्थानीय पोस्ट-ऑफ़िस में उसकी जाँच करके डाकख़ाने का दिया हुआ उत्तर सूचना के साथ आना चाहिए। उन्हें उस संख्या की दूसरी प्रति भेज दी जायगी। लेकिन उक्त तारीख़ के बाद सूचना मिलने से उस पर ध्यान नहीं दिया जायगा, और उस संख्या को ग्राहक १) या ॥) के टिकट भेजने पर ही पा सकेंगे।

पत्र-व्यवहार

उत्तर के लिये जवाबी कार्ड या टिकट आना चाहिए, अन्यथा पत्र का उत्तर विलंब से दिया जाना संभव है। पत्र के साथ ग्राहक-नंबर का भी उल्लेख होना चाहिए। मूल्य या ग्राहक होने की सूचना मैनेजर 'सुधा', नं० ३६, लाटूश रोड, लखनऊ के पते से आनी चाहिए।

पता

ग्राहक होते समय अपना नाम और पता बहुत साफ़ अक्षरों में लिखना चाहिए। दो-एक महीने के लिये पता बदलवाना हो, तो उसका प्रबंध डाक-घर से ही कर लेना ठीक होगा। अधिक दिन के लिये बदलवाना हो, तो संख्या निकलने के १५ दिन पेश्तर उसकी सूचना देनी चाहिए।

लेख आदि

लेख या कविता स्पष्ट अक्षरों में, काग़ज़ की एक ओर, संशोधन के लिये इधर-उधर जगह छोड़कर, लिखी होनी चाहिए। क्रमशः प्रकाशित होने लायक़ बड़े लेख संपूर्ण आने चाहिए। किसी लेख अथवा कविता के प्रकाशित करने या न करने का, उसे घटाने-बढ़ाने तथा लौटाने या न लौटाने का सारा अधिकार संपादक को है। जो नापसंद लेख संपादक लौटाना मंज़ूर करें, वे टिकट भेजने पर ही वापस किए जा सकते हैं। यदि लेखक लेना स्वीकार करते हैं, तो उपयोगी और उत्तम लेखों पर पुरस्कार भी दिया जाता है। सुधा में प्रकाशित पुरस्कृत लेखों और कविताओं को पुस्तकाकार या किसी संग्रह में निकालने का अधिकार सुधा के अध्यक्ष को रहेगा। अपुरस्कृत रचनाओं पर लेखकों और सुधा-अध्यक्ष, दोनों का अधिकार होगा। सचित्र लेखों के चित्रों का प्रबंध लेखकों को करना चाहिए। चित्र प्राप्त करने के लिये आवश्यक ख़र्च प्रकाशक देंगे।

लेख, कविता, समालोचना के लिये पुस्तकें और बदले के पत्र इस पते से भेजने चाहिए—

श्रीदुलारेलाल
गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय
कवि-कुटीर, लखनऊ

विज्ञापन

किसी महीने में विज्ञापन बंद करना या बदलवाना हो, तो एक महीने पहले सूचना देनी चाहिए।

अश्लील विज्ञापन नहीं छपते। छपाई पेशगी ली जाती है। विज्ञापन की दर नीचे प्रकाशित है—

साधारण १ पृष्ठ	या	२ कालम की छपाई	२५)	प्रतिमास
,, ½ ,,	या	१ ,, ,, ,,	१५)	,, ,,
,, ¼ ,,	या	½ ,, ,, ,,	१०)	,, ,,
,, ⅛ ,,	या	¼ ,, ,, ,,	६)	,, ,,

कम-से-कम आधा कालम विज्ञापन छपानेवालों को सुधा मुफ़्त मिलती है। विज्ञापनदाता द्वारा छपे हुए सुधा-साइज़ के ८ पृष्ठ के क्रोड़-पत्र की सिलाई, बटाई के चार्जेज़ ६०), ४ पृष्ठ के ३५) और २ पृष्ठ के २०) लिए जाते हैं।

सुधा में विज्ञापन छपाने से बड़ा लाभ रहता है। कारण, इसका प्रत्येक विज्ञापन लाखों पढ़े-लिखे, धनी-मानी और सभ्य स्त्री-पुरुषों की नज़रों से गुज़र जाता है। हिंदी की सर्वश्रेष्ठ पत्रिका होने के कारण इसका प्रचार उत्तरोत्तर बढ़ रहा है।

कृपया शीघ्र ही अपना विज्ञापन सुधा में छपाकर लाभ उठाइए। कम-से-कम एक बार परीक्षा तो कर लीजिए।

मैनेजर 'सुधा', लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी-पुस्तकों के प्रसिद्ध प्रकाशक

लहरी-बुकडिपो

बनारस सिटी

द्वारा प्रकाशित कुछ पुस्तकें

उपन्यास		उपन्यास	
चंद्रकांता २८ भाग	६)	भूतनाथ २१ भाग	१०॥)
चोर	१॥।)	रोहतास-मठ २ भाग	१॥)
मीठी भूल	१।)	ख़ूनी कौन ?	२)
मदरेसिया	२)	सुफ़ेद शैतान ४ भाग	६)
माया	१।)	मृत्यु-किरण	६॥)
लाल पंजा	२)	विधि-विधान	२)
भूतों का डेरा	॥)	प्रवीण पथिक	१॥)
भयानक भ्रमण	२।)	पुलिस-वृतांतमाला	॥)
संसार-चक्र	॥=)	काजर की कोठरी	॥)
कलंक-कालिमा	१)	बलिदान	॥)
ढाई लाख की चोरी	॥)	नेकलेस	॥)
प्रतिशोध	॥)	देवताओं की सभा	॥)
वैज्ञानिक चोर	॥)	फंदे में	॥)
आनंद-महल	॥)	बाँसुरी	॥)
कुसुमलता	१॥)	नरेंद्र मोहनी	१॥)
किसान की बेटी	१)	महात्मा	१)
सुवर्ण-रेखा	२)	स्वर्गपुरी	१॥)
अकबर	॥)	नर-पिशाच ४ भाग	३॥)
टॉर्जन २ भाग	३)	मौत का फंदा	३)

सब तरह की हिंदी-पुस्तकें इस पते से मँगावें—

लहरी-बुकडिपो, बनारस सिटी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वर्गीया 'चकोरी'जी की

अमर कृतियाँ

किंजल्क

[द्वितीयावृत्ति]

लेखिका, स्वर्गीया रामेश्वरीदेवी 'चकोरी'। हिंदी-साहित्य में वर्तमान काल में तीन ही सर्वश्रेष्ठ कवयित्रियाँ हैं—श्रीमती महादेवी वर्मा, श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान और 'चकोरी'-जी। 'चकोरी'जी ने अपना एक स्थान बना लिया है। किंजल्क में 'चकोरी'जी की सुंदर कविताओं का संग्रह है। सभी कविताएँ सरल और सरस हैं। काव्य की दृष्टि से पुस्तक सभी भाँति उपयोगी है। छपाई सुंदर। मूल्य ॥), सजिल्द १)

मकरंद

लेखिका, स्वर्गीया श्रीमती रामेश्वरीदेवी 'चकोरी'; संकलनकर्ता, श्रीयुत 'अरुण' बी० ए०। हिंदी-साहित्य में 'चकोरी'जी की रचनाओं को कितना उच्च स्थान मिला, इसे सभी काव्य-प्रेमी जानते हैं। इस प्रतिभाशालिनी कवयित्री की रचनाओं का यह दूसरा संग्रह 'किंजल्क' से भी बढ़कर लोक-प्रिय बनेगा। कविताएँ उपयोगी हैं। छपाई सुंदर। मूल्य सादी ॥=), सजिल्द १=)

संचालक गंगा-पुस्तकमालाकार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संसार-रहस्य

अथवा

अधःपतन

लेखक

ठाकुर प्रसिद्धनारायणसिंह बी० ए०

यह उपन्यास हिंदी में एक नए ही ढंग का है। इसमें भौतिक और आध्यात्मिक जगत् का चित्र खींचा गया है। इस उपन्यास में लेखक ने संसार के द्वंद्व—पुण्य-पाप, उचित-अनुचित, यह-वह, मैं भला और तू बुरा और मैं बुद्धिमान् और तू मूर्ख···आदि ऐसे ही प्रश्नों को सुलझाकर यथातथ्य प्रकाश डाला है। छपाई-सफ़ाई सुंदर। मूल्य १॥), सजिल्द २)

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुराने और नए विचार

[श्रीयुत आत्माराम देवकर]

(१)

दीवानजी परमधार्मिक, ईश्वर-परायण एवं सच्चरित्र व्यक्ति थे, पर बड़े ही झक्की । सड़ी-सी बात पर चिढ़कर आग-बबूला हो जाते थे । तिल का ताड़ बन जाता था । इसी दुर्गुण के कारण लोग आपसे अप्रसन्न रहते, और चिढ़ाने का मौक़ा ढूँढ़ते रहते । स्वभाव भी बड़ा रूखा था । हँसी-दिल्लगी से आपको आंतरिक घृणा थी । विनोद को आप व्यंग्य समझते थे । यों तो आप बड़े ही मितभाषी थे, पर चिढ़ जाने पर ज्वाला-मुखी की तरह अग्नि की वर्षा कर देते थे । अपराध की मात्रा से दंड की मात्रा बहुत बढ़ जाती थी । क्रोध सत्य का घात कर बैठता था । इसी से अधिकांश मनुष्य आपको विवेक-शून्य समझते थे । मैं भी इसे अमान्य नहीं समझता । कारण, क्रोध में मनुष्य को हिताहित का ज्ञान नहीं रहता, अतः वह पाप का मूल ही है ।

(२)

दीवानजी का पुत्र अमरनाथ वकालत पास हो गया, यह समाचार पाकर नगर के कई प्रतिष्ठित व्यक्ति बधाई देने आए । दीवानजी ने पान-इलायची देकर सबका सत्कार किया । सेठ गोवर्धनलालजी बोले—"अमर बड़ा ही कुशाग्र-बुद्धि है । बीस ही वर्ष की उम्र में वकालत पास हो गया । आप-जैसे धार्मिक पुरुषों को ईश्वर इसी तरह मानता है । मेरी हार्दिक इच्छा है, अमर यशस्वी होकर अपना नाम सार्थक करे ।"

मास्टर गिरीशचंद्र मस्तक हिलाकर बोले—"उसे कई बार डबल प्रोमोशन मिला है । वह अवश्य अच्छा वकील होगा ।"

पंडित उमादत्त कहने लगे—"यह कर्कस्थ गुरु का फल है । नवम भाव में पड़ा है । मैंने पहले ही कह दिया था, अमर बड़ा भाग्यशाली होगा ।"

दीवानजी के निकट के संबंधी प्रफुल्लचंद्र बड़े उत्साह से बोले—"मैं तो आज नाच कराऊँगा । दीवानजी को इस अवसर पर मेरा यह प्रस्ताव मानना ही पड़ेगा ।"

सुनकर दीवानजी सन्न हो गए । क्रोध बड़े ज़ोर से भभका, परंतु नेत्रों तक आकर शांत हो गया । संकोच ने मुँह बंद कर दिया । वह उपस्थित सज्जनों को सधन्यवाद बिदा करके अंदर चले गए । प्रफुल्लचंद्रजी बाहर आकर ख़ूब हँसे ।

(३)

दीवानजी को व्यग्र देखकर स्त्री ने कारण पूछा । दीवानजी ने गरजकर कहा—"आज प्रफुल्ल ने भरी सभा में मेरा अपमान किया है । वह मूर्ख मुझे भ्रष्ट और पतित समझता है । उसे इस धृष्टता का मज़ा चखाऊँगा ।"

स्त्री ने आतुरता से कहा—"तो कहने से ही पाप लग गया ?"

दीवानजी गंभीर स्वर से बोले—"बराबर लग गया । उसे इसका प्रायश्चित्त करना पड़ेगा ।"

स्त्री ने परिहास के रूप में कहा—"तब मैं भी प्रफुल्लचंद्र के प्रस्ताव से सहमत हूँ । नाच हो जाने पर दोनो गंगा-स्नान कर लेंगे ।"

दीवानजी के नेत्रों से आग बरसने लगी । कंपित स्वर से बोले—"तब तू भी पाप-भागिनी हुई । जा, प्रायश्चित्त कर ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्त्री मुँह छिपाकर बोली--"तुम्हारे पुत्र ने भी तो रंडी का नाच देखा होगा। उससे भी प्रायश्चित्त कराओ।"

दीवानजी बहुत चिढ़ गए। वह स्त्री पर कटूक्तियों की वर्षा करते हुए अमरनाथ के कमरे में पहुँचे।

(४)

पिता का लाल मुख-मंडल देखकर अमर की अंतरात्मा काँप उठी। उसने दौड़कर उनके चरण पकड़ लिए। दीवानजी आशीर्वाद देकर बोले—"अमर, तुम सच कहोगे?"

अमर ने श्रद्धा-पूर्ण स्वर से कहा—"जो पिता से झूठ बोलता है, उसे नरक में भी स्थान नहीं मिलता।"

दीवानजी ने आश्वस्त होकर कहा—"तुमने कभी वेश्या का नाच देखा है?"

अमर ने सोचकर उत्तर दिया—"एक बार देखा है।"

दीवानजी ने डपटकर कहा—"कब?"

अमर ने लड़खड़ाती हुई जिह्वा से उत्तर दिया—"लॉ के पहले वर्ष में।"

दीवानजी ठंडी साँस लेकर बोले—"तब तू महापापिष्ठ है।"

अमर ने हाथ जोड़कर कहा—"पिताजी, मित्रों और सहपाठियों के आग्रह से जाना पड़ा था। क्षमा चाहता हूँ।"

दीवानजी ने उत्तेजित स्वर से कहा—"नहीं, कभी नहीं। तुम्हें प्रायश्चित्त करना पड़ेगा। तुम अपनी मा के साथ गंगा-स्नान कर आओ।"

अमर ने कहा—"पिताजी, मैं तो प्रयागराज में कई बार गंगा-स्नान कर चुका हूँ।"

दीवानजी ने भर्त्सना-पूर्ण स्वर से कहा—"तू महाउद्दंड और प्रवंचक है। जान पड़ता है, तूने बहुत पाप किए हैं।"

अमर ने उत्तर दिया—"पिताजी, गंगा-स्नान तो सभी करते हैं। मैं भी मैया को पवित्र और पाप-नाशिनी समझता हूँ।"

दीवानजी बोले—"तभी तो मैं कहता हूँ, तूने कई बार वेश्या का नृत्य देखा है।"

अमर ने खीझकर कहा—"गंगा-स्नान को आप वेश्या-नृत्य का प्रायश्चित्त समझते हैं?"

दीवानजी का पारा एकदम चढ़ गया! कहने लगे—"तू महाधूर्त और पाखंडी है। जब तक गंगा-स्नान न करेगा, तब तक मैं तेरा मुँह न देखूँगा।"

(५)

अमरनाथ प्रफुल्लचंद्र को अपने बड़े भाई के समान मानते थे। उन्होंने उनके घर जाकर सारा हाल सुनाया। प्रफुल्लचंद्रजी देर तक हँसते रहे, फिर कुछ सोचकर बोले—"तुम चलो, मैं थोड़ी देर में आकर दीवानजी से मिलूँगा।"

दीवानजी संध्या करके बैठे ही थे कि इतने में प्रफुल्लचंद्रजी आ पहुँचे। दीवानजी ने रूखे स्वर से कहा—"क्या कोई दूसरा नया प्रस्ताव तैयार हो गया?"

प्रफुल्लचंद्र ने उत्तर दिया—"नहीं तो, यों ही चला आया। मैंने सुना है, आप वेश्या-नृत्य से बहुत चिढ़े हुए हैं। ऐसा जानता, तो कभी चर्चा न करता। जो हुआ, सो हुआ। अब कहिए, क्या आज्ञा है?"

दीवानजी ने कहा—"मैं इस तरह नहीं मानूँगा। तुमने और मेरी स्त्री ने वेश्या-नृत्य का नाम लिया है, और अमर ने उसे देखा है। इससे तुम तीनों को गंगा-स्नान करना पड़ेगा।"

प्रफुल्लचंद्र हँसी रोककर बोले—"अच्छा, मुझे सौ रुपए दीजिए। मैं दोनों को स्नान कराए लाता हूँ।"

दीवानजी बात काटकर बोले—"नहीं-नहीं, तुम्हें सबसे पहले स्नान करना पड़ेगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रफुल्लचंद्र ने मुँह टेढ़ा करके कहा—"बहुत अच्छा, मैं ही सबसे पहले स्नान कर लूँगा।"

दीवानजी ने उन्हें रुपए देकर कहा—"देखो, प्रफुल्ल, यह हँसी की बात नहीं। शास्त्र का पवित्र विधान है।"

प्रफुल्लचंद्र ने नम्र स्वर से कहा—"आपका अभिप्राय मैं समझ गया। आप मेरे पूज्य हैं। आपका आदेश अवश्य शिरोधार्य करूँगा। गंगाजी से लौटकर आपके मुख से शास्त्र सुनूँगा।"

दीवानजी बड़े प्रसन्न हुए। उन्होंने आशीर्वाद देकर प्रफुल्लचंद्र को विदा किया।

(६)

अमरनाथ और उनकी मा को लेकर प्रफुल्लचंद्र गंगा-स्नान करने गए, और दूसरे ही दिन लौट आए। दीवानजी को बड़ा आश्चर्य हुआ। वह बड़े तपाक से प्रफुल्लचंद्र के मुँह की ओर देखने लगे। प्रफुल्लचंद्र ने बड़े ही सरल भाव से कहा—"आपके पुण्य-प्रताप से गंगा मैया बीच ही में मिल गईं।"

दीवानजी त्योरी बदलकर बोले—"फिर वही मसख़री!"

प्रफुल्लचंद्र ने उत्तर दिया—"सुनिए। नमनपुर-स्टेशन पर हम लोगों को एक साधु मिल गए। उन्होंने सारा हाल सुनकर कहा—'वेश्या-नृत्य को तो शास्त्रों ने भी हेय बतलाया है, पर नर्तकी के नृत्य में कोई दोष नहीं। यहाँ एक नर्तकी आई है, आप लोग उसका नृत्य देख लीजिए, गंगा-स्नान के बराबर फल मिल जायगा।' श्रीरामचंद्रजी के तिलकोत्सव के समय भी देवलोकीय नर्तकियों (अप्सराओं) ने आकाश में स्थित होकर नृत्य किया था। तीर्थ पर जाकर कुछ दान-पुण्य करना चाहिए, ऐसा विचारकर हम लोग नर्तकीजी को एक-एक मुट्ठी रुपए देकर चले आए।"

इतना सुनते ही मानो अग्नि में आहुति पड़ गई। दीवानजी परशुराम की तरह उछलकर खड़े हो गए, और ललकारकर बोले—"जिस नराधम, नर-पिशाच ने तुम्हें ऐसा उपदेश दिया है, उसने गोवात के बराबर पाप किया है। तुम सब लोगों को भी उसका भागी बनना पड़ेगा।"

प्रफुल्लचंद्र मुँह बनाकर बोले—"और हमारे साथ आपको भी उस पाप का भागी बनना पड़ा, क्योंकि वह पाप आपके रुपयों से हुआ है। अब आपकी आज्ञा हो, तो हम चारों मिलकर गंगा-स्नान कर आवें?"

दीवानजी ओंठ काटकर बोले—"यह सब तुम्हारी शैतानी है। 'आपु गए अरु घालहिं आनहि' की तरह तुमने मुझे भी घसीट लिया। अब मैं तुम्हारी बात न मानूँगा।"

प्रफुल्लचंद्र ने कहा—"बात न मानिए, पर प्रायश्चित्त तो करना ही पड़ेगा।"

दीवानजी थोड़ी देर चुप बैठे रहे, फिर बोले—"तुम तीनों गंगाजली लेकर प्रतिज्ञा करो कि आज से कभी वेश्या-नृत्य या नर्तकी-नृत्य न देखेंगे, न उसका नाम लेंगे।"

प्रफुल्लचंद्र आदि ने वैसा ही किया, और दीवानजी को लेकर स्नान करने चले।

(७)

स्नान-दानादि कार्यों से निवृत्त होकर सब लोग पंडाजी के पास पहुँचे। दीवानजी ने चिल्लाकर कहा—"महाराज, इस(प्रफुल्लचंद्र)से यह शपथ करा लीजिए कि आज से कभी वेश्या-नृत्य या नर्तकी-नृत्य न देखेंगे न उसका नाम लेंगे। तब सुफल बोलिए, नहीं तो यह धूर्त पीछे बदल जायगा। इसने मुझे बहुत तंग किया है।"

पंडाजी ने वैसा ही किया। दीवानजी फिर चिल्ला उठे—"नहीं-नहीं, इसका मुँह उत्तर की ओर कराइए, तब शपथ विश्वास-योग्य समझी जायगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंडाजी ने वैसा ही किया। दीवानजी बहुत प्रसन्न हुए। प्रफुल्लचंद्र ने कहा—"दीवानजी, आपकी कृपा से हम लोगों का पाप कट गया। अब आज्ञा हो, तो भगवान् भोलानाथ के दर्शन भी करते चलें। वह बड़े ही आशुतोष हैं। उनकी कृपा से हम लोगों को कहीं मुक्ति मिल गई, तो सारा झगड़ा एकदम मिट जायगा। एक ही खेवे में सब पार हो जायँगे।"

सुनकर पंडाजी को हँसी आ गई। दीवानजी मेघ की तरह गरजकर बोले—"देखो प्रफुल्ल, तुम बहुत लड़कपन करते हो। शास्त्र में लिखा है, तीर्थ के पाप का कोई प्रायश्चित्त नहीं। वह कट ही नहीं सकता।"

प्रफुल्लचंद्र उद्विग्नता का भाव दिखलाकर बोले—"तब बेचारे विश्वनाथजी ही क्या करेंगे? जिसका अपराध अक्षम्य है, उस पर कोई काहे को दया करेगा? क्या किया जाय, नरक तक का रास्ता दिखाई नहीं देता।"

पंडाजी हँसी के मारे लोट-पोट हो गए। अमरनाथ भी हँसने लगे। दीवानजी ओंठ काटकर बोले—"तुम दोनो महापापिष्ठ हो। तुमने तीर्थ पर आकर घोर दुष्कर्म किया है।"

स्त्री नम्र स्वर से बोली—"प्रभो, इन लोगों को पाप का फल भोगने दीजिए, आप मेरे साथ घर चलिए।"

दीवानजी कहने लगे—"यह भी पाप है, असीम स्वार्थ-परता है।"

स्त्री ने अनन्योपाय होकर कहा—"तब पुण्य कहीं भी नहीं, सब पाप-ही-पाप है।"

सुनकर सब यात्री हँसने लगे। पंडाजी हँसी रोककर बोले—"दीवान साहब, आप सतजुगी मनुष्य हैं, तभी तो इस घोर कलिकाल में आपको चारो ओर पाप-ही-पाप दिखाई दे रहा है।"

दीवानजी संतुष्ट हो गए। पंडाजी ने आशीर्वाद देकर उन्हें विदा किया।

घर-बैठे शिमला, मसूरी और नैनीताल का आनंद!

आनंद-वर्द्धक चूर्ण!!

अगर आप इस जलते-बलते मौसम में शिमला और दार्जिलिंग नहीं जा सकते, तो मन में दुःखित न हों। हमारा आनंद-वर्द्धक चूर्ण रोज़ घोट-छानकर पीवें। इसके पीने से आँखों का जलना, पेशाब पीला और गरम होना, हाथ-पैरों के तलवे जलना, चक्कर और घुमरी आना, दिल धड़कना, गरमी से जी घबराना, मासिक धर्म न होना वग़ैरा शिकायतें आराम होकर मनुष्य का हृदय-कमल खिल जाता है। मूल्य ।।।) डिब्बी। महसूल ।)

नोट—अगर वीर्य पर गरमी हो, स्वप्नदोष होते हों, शीघ्रपतन होता हो, तो आप हमारा 'नवधातु-रोगांतक चूर्ण' खाकर ऊपर से इस अमृत को पीवें, और देखें कि कितना बल बढ़ता है, वीर्य शुद्ध और गाढ़ा होता है मनमानी रुकावट होती है। बलवान् और सुंदर पुत्र पैदा होता है। मूल्य ४० दिन की दवा का ६) ; डाक-खर्च ।।) इसके साथ आनंद-वर्धक आधा सेर ३) का मँगावें।

पता—हरिदास ऐंड कंपनी, मथुरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुधा-चित्रावली

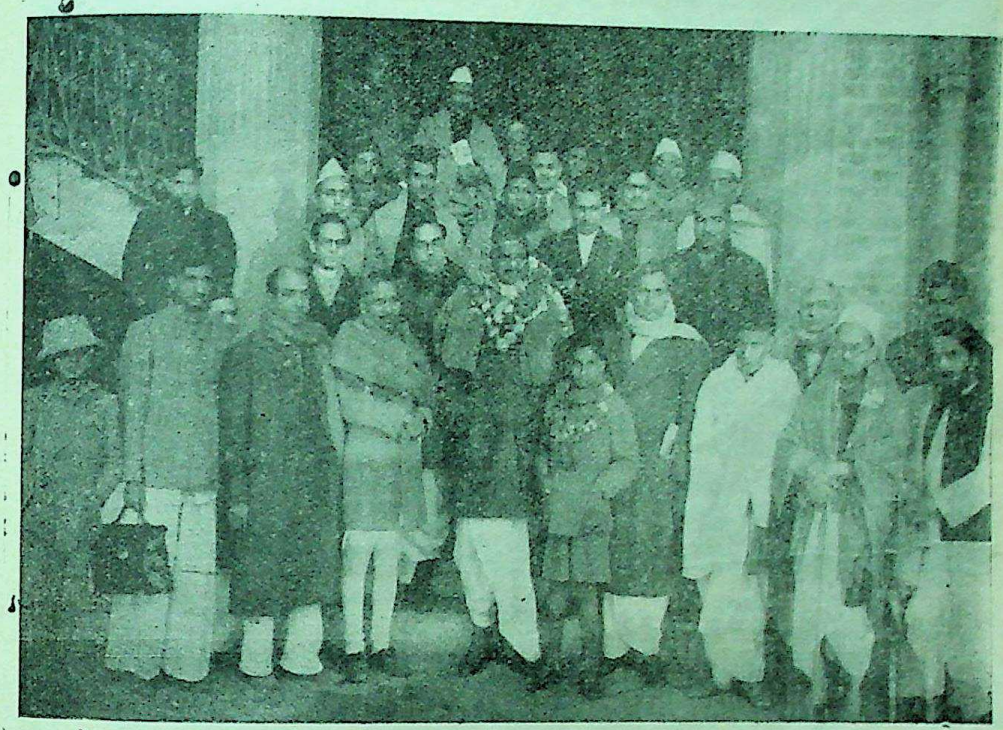

दिल्ली में अखिल भारतीय हिंदी-समाचार-पत्र-संपादकों का सम्मेलन

[विश्वमित्र-संपादक श्रीयुत बाबू मूलचंदजी अग्रवाल (पुष्प-माला धारण किए हुए) सम्मेलन के सभापति चुने गए थे। आपका दिल्ली-स्टेशन पर जब स्वागत हो रहा था, तब यह चित्र लिया गया था। प्रतिच्छ-विकार—श्रीललितगोपाल]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

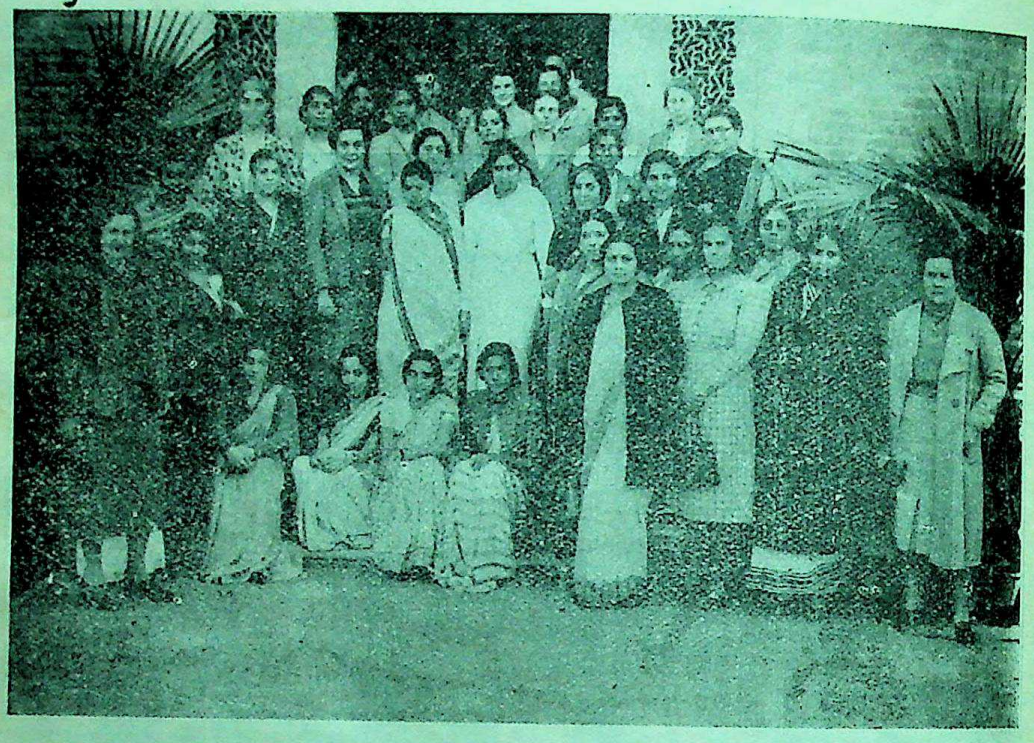

अखिल भारतवर्षीय महिला डॉक्टरनियों का सम्मेलन

[उक्त सम्मेलन के सब प्रतिनिधि और सदस्य। यह सम्मेलन डॉक्टर मिसेज़ स्टेपलटन की अध्यक्षता में, लेडी हार्डिंज मेडिकल कॉलेज, नई दिल्ली में, हुआ। अध्यक्षा महोदया आगे की पंक्ति में, बाईं ओर से दाहनी तरफ़, सबके बाद में, खड़ी हैं। प्रतिच्छविकार—श्रीललितगोपाल]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

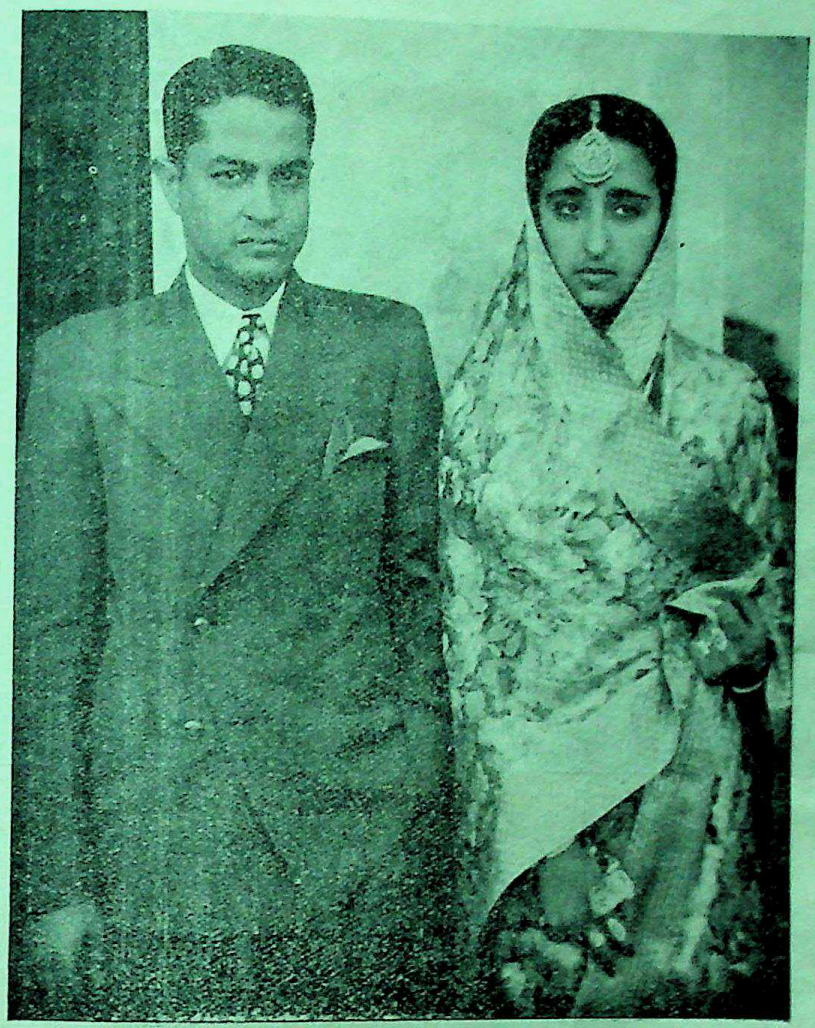

श्रीयुत व्रजमोहनजी और कुमारी ऊषा

[आप रायबहादुर श्रीमुल्कराजजी जेनरल मैनेजर दिल्ली सेंट्रल इलेक्ट्रिक कंपनी पावर अथारिटी लि०, दिल्ली के सुपुत्र हैं। आपका शुभ विवाह डॉ० कुलभूषणजी (काश्मीर मेडिकल सर्विस से संबंधित) की सुपुत्री कुमारी ऊषा के साथ, लाहौर में, हुआ। बधाई ! आप इलेक्ट्रिक सप्लाई कंपनी, पीलीभीत के मैनेजिंग प्रोप्राइटर हैं। प्रतिच्छविकार—श्रीलक्षितगोपाल]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इंद्रप्रस्थ-गर्ल्स-कॉलेज, दिल्ली का वार्षिक व्यायामोत्सव

[इंद्रप्रस्थ-गर्ल्स-कॉलेज, दिल्ली में पहली बार व्यायाम और खेल का प्रदर्शन हुआ। शिक्षिकाएँ और छात्राएँ रस्सा खींच रही हैं। इसमें छात्राएँ जीत गईं। प्रतिच्छविकार— श्रीललितगोपाल]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'अज्ञान के भूत' से डरकर आप भाग खड़े होते हैं ! क्यों ?

सत्साहित्य का पठन-पाठन आपको मानसिक और आत्मिक बल तथा साहस प्रदान करता है ! आपका सबसे बड़ा अपराध है कि आप अपने को नहीं जानते, और न जानने का प्रयत्न ही करने की लालसा है ।

विद्या और ज्ञान

मानव-जीवन के लिये आवश्यक है ! आदि-सृष्टि के क्रमिक विकास का विवेचनात्मक विवरण, मनुष्य का सच्चा इतिहास, संसार के गूढ़तम निर्माण-रहस्य का प्रत्यक्षीकरण ।

मनुष्य का विकास

जिसमें

हमारी ज़मीन पर सबसे पहले जानवर कैसे पैदा हुए ? मनुष्य-जाति कैसे प्रकट हुई ? क्या आदमी आसमान से बरस पड़े थे ? या पाताल से निकल पड़े थे ? इन सभी प्रश्नों का विस्तृत और प्रासंगिक उत्तर देनेवाली एकमात्र

पुस्तक

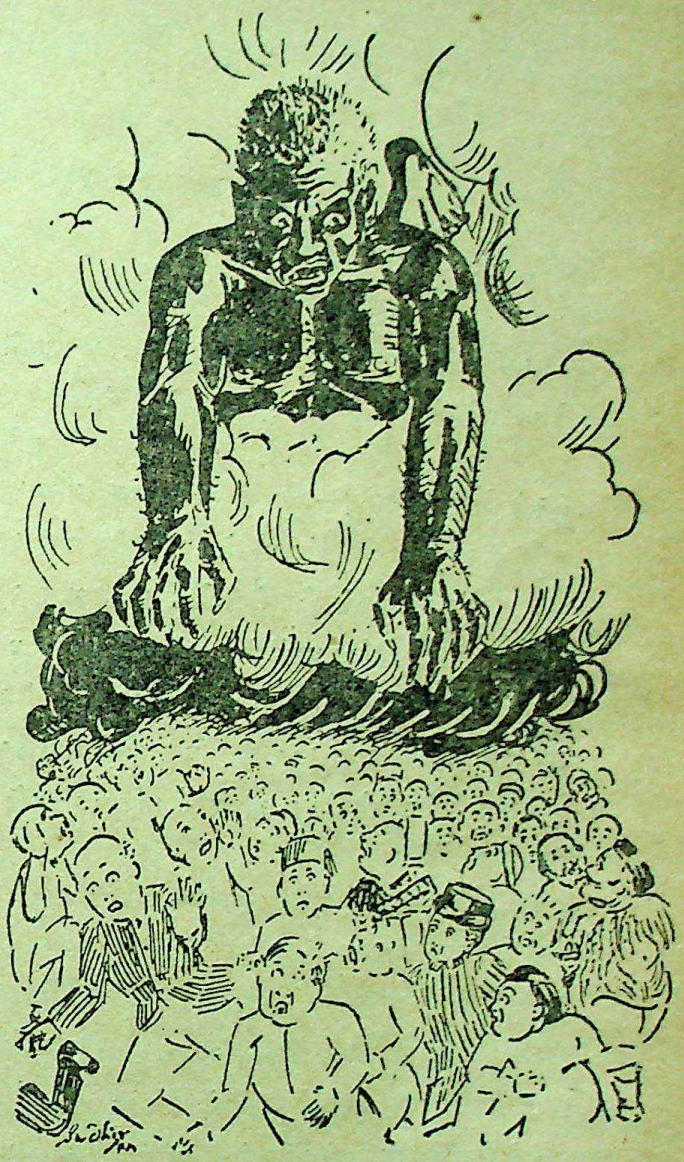

मनुष्य का विकास

{ लेखक, श्रीज्योतिलाल भार्गव बी० ए०, एल्-एल्० बी०, हिंदी-पब्लिसिटी ऑफ़िसर, बिहार-गवर्नमेंट } छपकर तैयार है ! मँगाए !!

सजिल्द ॥=) सादी ।=)

अपनी संतान को इस ज्ञान से विमुख न रक्खें !!!

आज ही ऑर्डर भेजें

मिलने का पता—

गंगा-ग्रंथागार, ३६, लाटूश रोड, लखनऊ

गंगा पुस्तक माला लखनऊ कार्यालय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिश्रबंधु (रावराजा डॉक्टर श्यामविहारी मिश्र एम्० ए०, डी०लिट्०
तथा राय बहादुर पंडित शुकदेवविहारी मिश्र बी० ए०)
की
अमर कृतियाँ अवश्य पढ़िए

(१) हिंदी-साहित्य का इतिहास—पृष्ठ ३७०; मूल्य अजिल्द १॥), सजिल्द २)। इस पुस्तक में न केवल हिंदी-साहित्य का पूर्ण तथा अप-टु-डेट वर्णन है, वरन् भारतीय धार्मिक, सामाजिक तथा राजनीतिक विकास का भी मनोरंजक इतिहास सूक्ष्मरीत्या कथित है। इसमें कई बड़े ही नवीन विचार मुसलमान-पूर्ववाले भारत के संबंध में मिलेंगे। पुस्तक पढ़ने ही योग्य है।

		सजिल्द	अजिल्द	संस्करण
(२) मिश्रबंधु-विनोद—	प्रथम भाग	२॥)	२)	चौथा
इस ग्रंथ के लेखक ज्येष्ठ	द्वितीय भाग	३॥)	३)	तीसरा
बंधु पंडित गणेशविहारीजी मिश्र	तृतीय भाग	२॥)	२)	,,
भी थे। विविध भागों के विविध	चतुर्थ भाग	४॥)	४)	पहला

संस्करण हुए हैं। चौथा भाग सं० १९९१ में ही छपा था।

सब भागों में मिलाकर ४,५०० से अधिक कवियों तथा १२,००० से अधिक ग्रंथों के वर्णन हैं। ग्रंथ आधुनिक तथा नवीन खोजों का भांडार है। किसी भी कवि के विषय में कुछ लिखने के लिये इसकी खोजें आवश्यक होंगी।

(३) हिंदी-नवरत्न (सचित्र)—मूल्य अजिल्द ४॥), सजिल्द ५), ११ चित्र हैं, जिनमें कई रंगीन भी हैं। छठा संस्करण निकल गया है।

इसमें हिंदी के सर्वोत्कृष्ट दस कवियों के समालोचना-गर्भित पूर्ण विवरण हैं। पृष्ठ-संख्या प्रायः ७५० है। ग्रंथ में पांडित्य का ख़ासा विकास तो है ही, वर्ण्य विषयों से पूर्ण सहृदयता के कारण विवरण भी बड़े ही हृदयहारी और भड़कीले बन पड़े हैं। उदाहरण इस प्रचुरता से प्रस्तुत हैं कि कवियों की रचनाओं के चित्र सामने खड़े हो जाते हैं। ग्रंथ कई विश्वविद्यालयों में एम्० ए० की पाठ्य पुस्तक है, तथा इतर कई परीक्षाओं में भी सत्कारित है। ग्रंथ पढ़ने ही योग्य है।

(४) संक्षिप्त हिंदी-नवरत्न—मूल्य अजिल्द १), सजिल्द १॥); द्वितीय संस्करण। पृष्ठ-संख्या २०० से अधिक। हिंदी-नवरत्न बहुत बड़ा ग्रंथ है। इसीलिये छोटे आकार में उसका स्वाद देने के विचार से यह पुस्तक बनी है।

(५) पद्य-पुष्पांजलि—पृष्ठ-संख्या २४५; सजिल्द २), अजिल्द १॥)। इसमें व्रजभाषा तथा खड़ी बोली के अमर पद्यमय साहित्य के मुख्य भाग एकत्र किए गए हैं, जिसमें पाठक थोड़े में कवियों की विस्तृत रचनाओं की बानगी पा सकें। इसे एक प्रकार से 'मिश्रबंधु-सुधा' समझना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(६) पूर्व-भारत नाटक—चतुर्थ संस्करण; मूल्य अजिल्द ॥=), सजिल्द १।=) । यह एक मौलिक नाटक है, जिसमें महाभारत की कथा का रूप विराट-पर्व-पर्यंत आया है । ग्रंथ पंजाब में कोर्स-बुक भी रह चुका है । बड़ा ही मनोहर नाटक है । इन्हीं का उत्तर-भारत नाटक भी हमारे यहाँ से मिल सकता है ।

(७) शिवाजी नाटक—प्रथम संस्करण ; मूल्य अजिल्द १), सजिल्द १॥) । यह अभी हाल ही में छपा है । इसमें छत्रपति शिवाजी की अलौकिक जीवनी की हृदयग्राही कथा उत्तम प्रकार से कही गई है । ग्रंथ नाटकत्व से कमनीय और कवित्व-शक्ति से सौरभित है, जिसे एक बार उठा लेने से विना अंत-पर्यंत पढ़े चित्त न मानेगा । मिश्रबंधु-कृत 'ईशानवर्मन'-नामक ऐतिहासिक नाटक भी हमारे यहाँ से मिल सकता है ।

(८) जापान का इतिहास—मूल्य अजिल्द ॥=), सजिल्द १) । यह ग्रंथ बड़ी सहृदयता-पूर्वक जापान का विवरण थोड़े में देता है ।

(९) धर्म-तत्त्व—इसमें १२२ पृष्ठों में हिंदू-धर्म का ऐतिहासिक तथा इतर कथन थोड़े में किया गया है । तीन अध्याय हैं, जिनमें पहले में तो विकास का हृदयग्राही कथन है, दूसरे में हिंदू-धर्म के नवयुगों का और तीसरे में दशोपनिषदों तथा गीता से चुना हुआ मूल और अनुवाद-सहित १२० वाक्यों द्वारा हिंदू-धर्म का शुद्ध रूप दिया हुआ है । ग्रंथ पढ़ने से हिंदू-मत की महत्ता, वास्तविकता और सत्यता पर आँखें खुल जाती हैं । मूल्य ॥)

(१०) देव-सुधा—मूल्य अजिल्द ॥), सजिल्द १) । इसमें प्रसिद्ध महाकवि 'देव' के २७१ उत्तमोत्तम छंद पूर्ण अर्थों के साथ चुने गए हैं । मिश्रबंधु का दावा है कि यह ब्रजभाषा का सर्वोत्कृष्ट ग्रंथ है ।

(११) बिहारी-सुधा—मूल्य अजिल्द ॥), सजिल्द १) । इसमें सुकवि बिहारीलाल के २७० उत्तमोत्तम दोहों का संग्रह है, जिसमें अर्थों के साथ मुख्य काव्यांग भी दिखला दिए गए हैं । देव-सुधा और बिहारी-सुधा को मिलाकर पढ़ने से इन दोनो महाकवियों के अपेक्षाकृत साहित्योत्कर्ष पर भी विचार करने का मौक़ा मिलता है । ये दोनो ग्रंथ पढ़ने ही योग्य हैं ।

(१२) कवि-कुल-कंठाभरण—ग्रंथ कनिष्ठ मिश्रबंधु तथा ज्येष्ठ भ्राता पं० गणेशविहारीजी मिश्र के सुपुत्र पं० प्रतापनारायण मिश्र ने मिलकर बनाया है । दूलह-कृत 'कवि-कुल-कंठाभरण' की अनमोल टीका है । इसे पढ़ने से विना गुरु-मुख की सहायता के अलंकार-सा कठिन विषय कोई सुगमता-पूर्वक जान सकता है । मूल्य अजिल्द ॥), सजिल्द १) । ग्रंथ अलंकार कंठस्थ करने के लिये अच्छा समझा जाता है ।

मिश्रबंधुओं की अन्य सब कृतियाँ भी हमसे ही मँगाइए ।

मैनेजर गंगा-ग्रंथागार, ३६, लाटूश रोड, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसा दुःखद प्रसंग गृहस्थी में लाने की ज़िम्मेदारी पुरुषों पर है !

आपकी गृहणी का स्वास्थ्य क्या आपके ध्यान देने का विषय नहीं ? अस्वस्थ ललनाएँ घर की अशांति और चिंता का कारण बनती हैं ! दांपत्य जीवन की **विषमता** का अपराध किसका है ? पति-पत्नी का मनोमालिन्य तलाक़ झगड़ा विरोध का कारण बनता है !

अब भी सावधान हो जाइए गृहस्थी की रक्षा के लिये !

स्त्री-सौंदर्य और स्वास्थ्य

लेखक, श्रीयुत बुद्धिसागर वर्मा बी० ए०, एल्० टी०

इस बार
बड़े दिन का उपहार !
नए वर्ष की भेंट !!

अपनी ललनाओं के हाथों में शीघ्र-से-शीघ्र पहुँचाने का प्रयत्न अवश्य करें !

अभी-अभी छपकर तैयार हुई है !

प्रत्येक महिला को इसे पढ़ना चाहिए !

शरीर के अंगों का बनाव-शृंगार, सौंदर्य-रक्षा के नियम, व्यायाम, रोग तथा उनकी सरल चिकित्सा, देशी और विदेशी सौंदर्य बढ़ाने के साधनों की उपयोगिता सरल भाषा में वर्णित है !

सचित्र, सुपाठ्य, सुंदर, स्थायी साहित्य !

सजिल्द २॥)] [सादी २)

मिलने का पता—गंगा-ग्रंथागार, ३६, लाटूश रोड, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

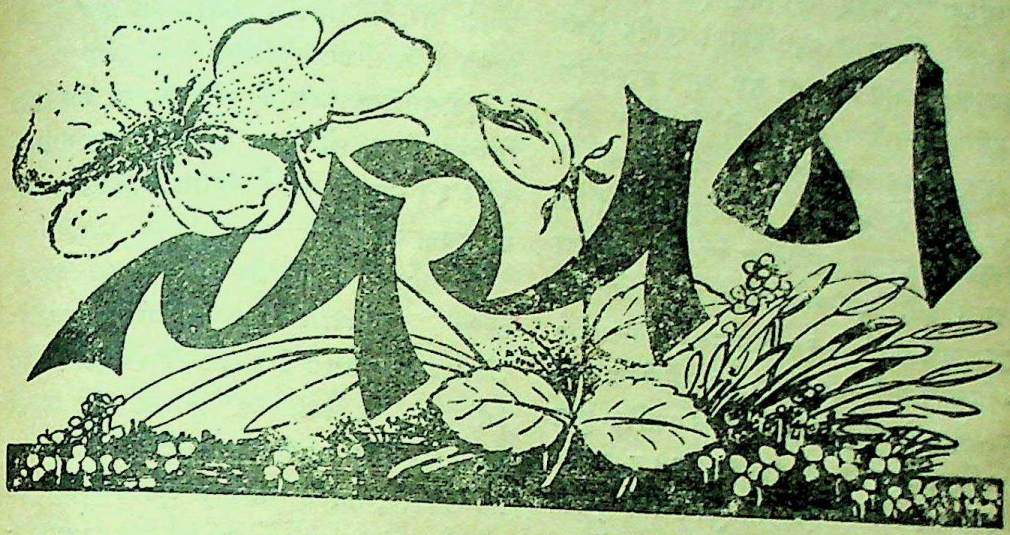

१. गीत

अब क्षमा का दान दो सखि !

(१)

देवि, लख गुरुता तुम्हारी
बन गया है कवि भिखारी;
आज तो इस चिर-तिरस्कृत
को तनिक सम्मान दो सखि !

(२)

सजनि, मेरा सरल शिशु-मन
कर उठा है करुण क्रंदन;
सांत्वना देकर उसे अपनी
मधुर मुसकान दो सखि !

(३)

सुमुखि, मैं हूँ चिर-प्रवासी,
चिर - प्रवासी, दूर वासी;
कुछ क्षणों के ही लिये अपनी
कुटी में स्थान दो सखि !

अब क्षमा का दान दो सखि !

करुणकुमार

× × ×

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२. सहृदय-शिरोमणि, महाविद्वान् सर ग्रियर्सन

धमतरी, ज़िला रायपुर-निवासी स्वर्गीय मुंशी हीरालाल काव्योपाध्याय का शुभ नाम मध्य-प्रदेश के वर्तमान साहित्य-सेवियों को विदित न हो, पर इन प्रतिभावान् लेखक ने सन् १८७६ से सन् १८८४ के मध्य में, 'छत्तीसगढ़ी-बोली का व्याकरण' लिखकर छत्तीसगढ़ का बड़ा उपकार किया। इसी 'छत्तीसगढ़ी-व्याकरण' के अँगरेज़ी-अनुवादक के रूप में, सन् १८८८-८९ में, मिस्टर जी० ए० ग्रियर्सन आई० सी० एस्० का साहित्यिक संबंध मध्य-प्रदेश के छत्तीसगढ़-विभाग से स्थापित हुआ था। ग्रियर्सन साहब का वह अनुवाद सन् १८९० में एशियाटिक सोसाइटी ऑफ़् बंगाल के मुखपत्र में प्रकाशित हुआ था, तथा दो भागों में वह अँगरेज़ी-अनुवाद पुस्तकाकार में भी निकाला गया था—प्रथम भाग व्याकरण, द्वितीय भाग गद्य-पद्य-संग्रह।

अपने ता० ७।२।१८८७ के पत्र में सुप्रसिद्ध वैयाकरण डॉक्टर A. F. R. Hoernle साहब ने कलकत्ते से लिखा था—

Mr. Hiralal's Chhattisgarhi Grammar—

It is a very welcome compilation. It gives just the kind of information, the Linguistic Survey proposed by Mr. Grierson and myself is designed to collect all over North India. Mr. Hiralal's Grammar deserves publication. The journal of the Asiatic Society of Bengal would be the best to publish it and if Mr. Hiralal will send it to me, as Philological Secretary of the Society I will arrange for a suitable publication, with all honours due to him as author and compiler.

छत्तीसगढ़ी-व्याकरण के संपादन का भार जब ग्रियर्सन साहब को सौंपा गया, तब उन्होंने ता० २८।३।८८ को काव्योपाध्याय श्रीहीरालालजी को सूचना दी थी—

Doctor Hoernle sent me your *very excellent Chhattisgarhi Grammar* and I have promised to edit it. I take a great deal of interest in such matters. I shall, no doubt, have many questions to ask you in the course of my translation. You will, of course, receive the usual author's copies of the book from the Bengal Asiatic Society.

व्याकरण के अनुवाद की भूमिका में एशियाटिक सोसाइटी की ओर से ग्रियर्सन साहब ने जिन उच्च, प्रशंसा-पूर्ण शब्दों में काव्योपाध्यायजी का स्वागत किया था, वह उनकी सहृदयता और गुणग्राहकता का परिचायक है। उन्होंने लिखा था—

We (the members of Asiatic Society of Bengal) are all indebted to Mr. Hiralal Kavyopadhyaya for his very careful and interesting work (the Chhattisgarhi Grammar) and gladly welcome him as an accession to the small band of those who are attempting to throw light on the dark bye-ways of Indian Vernaculars. It is only by enlisting the assistance of gentle-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

men like him, who take an intelligent interest in the subject and who are willing and able to put in writing that knowledge of facts which can only be attained by Local experience, that we may hope to be able to finally map out the true relationship between various languages of India.

उन दिनों ग्रियर्सन साहब गया (बिहार) में मैजिस्ट्रेट थे। श्रीहीरालालजी के निकट वह व्याकरण के अनुवाद का प्रूफ़ बराबर भेजा करते थे। २७।२।९० के पत्र में उन्होंने लिखा था—

All corrections and useful insertions made by you in the proof-sheets of your Grammar will be attended to, provided they reach me before I leave India. Please, therefore, see to this soon.

इसके पूर्व ता० २३।२।९० के पत्र में लिखित है—

Your Chhattisgarhi Grammar as it stands is quite good enough and it is a large book. It was accepted by the Bengal Asiatic Society as it originally stood.

जिस वर्ष व्याकरण का अनुवाद प्रकाशित हुआ, ठीक उसी वर्ष अर्थात् १८९० के ऑक्टोबर-महीने में दुर्भाग्य से हीरालालजी का, केवल ३४ वर्ष की आयु में, धमतरी में, देहांत हो गया। भगवान् को धन्यवाद है कि डॉक्टर ग्रियर्सन, डॉक्टर हार्नली तथा बंगाल-एशियाटिक सोसाइटी की कृपा और प्रयत्न से व्याकरण के मूल-लेखक को उसके अँगरेज़ी-अनुवाद को पुस्तकाकार में छपा देखने का सुअवसर प्राप्त हो सका।

धीरे-धीरे पचीस छब्बीस वर्ष बीत गए। इस बीच में ग्रियर्सन साहब सन् १९०३ में पेंशन लेकर अपने घर विलायत लौट गए। तब तक आजन्म वाणी-आराधना के बल पर वह विश्व-विख्यात हो चुके थे, पर पूर्वीय हिंदी की तृतीय शाखा (अवधी प्रथम, बघेली द्वितीय) छत्तीसगढ़ी-बोली को वह भूले नहीं थे।

जबलपुर की मासिक पत्रिका 'हितकारिणी' में काव्योपाध्याय मुंशी हीरालालजी की जीवनी मई, सन् १९१७ में निकली थी। मित्रवर पं० नर्मदाप्रसाद मिश्र बी० ए०, विशारद ने उस जीवनी को पुस्तकाकार में अलग छपवा देने की दया दिखलाई थी। सन् १९१७ में जब इस जीवनी की प्रति डॉक्टर सर ग्रियर्सन साहब को विलायत में मिली, तब उन्होंने काव्योपाध्यायजी की इस अक्षर-संबंधी कीर्ति के रक्षार्थ मध्य-प्रदेश की सरकार से अनुरोध करना अपना कर्तव्य समझा। तब तक छत्तीसगढ़ी - व्याकरण के अँगरेज़ी - अनुवाद की प्रतियाँ दुर्लभ हो चुकी थीं। मूल-व्याकरण का तो कुछ पता ही नहीं लग सका कि हीरालालजी की मृत्यु के पश्चात् वह किसके हाथ में पड़ गया, और उसका क्या हुआ?

धन्य ग्रियर्सन साहब की सहृदयता कि उन्होंने व्याकरण के अनुवाद के नूतन और परिवर्द्धित संस्करण के प्रकाशन के लिये मध्यप्रांतीय सरकार का ध्यान आकर्षित करने का श्रम स्वीकार किया। फलतः छत्तीसगढ़ी-व्याकरण का अँगरेज़ी-अनुवाद

'A Grammar of the
Chhattisgarhi Dialect of Hindi,
By Hiralal Karyopadhaya'

के शीर्षक से, सन् १९२१ में, प्रकाशित हुआ। इस संस्करण का मूल्य २) प्रति है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

C. P. Secretariat, Nagpur C. P. के पते पर पुस्तक मिल सकती है।

१९१७ से डॉ० ग्रियर्सन से मेरा पत्र-व्यवहार रहा है। पत्र पाते ही उत्तर देना उनका नियम था। वह बड़ी सहृदयता के साथ पत्रों के उत्तर दिया करते थे।

डॉक्टर सर ग्रियर्सन का भाषा-विश्लेषण-संबंधी प्रसिद्ध ग्रंथ Linguistic Survey of India बड़े-बड़े ग्यारह भागों में निकला है, जिसके निर्माण में २५ वर्ष का समय उन्हें लगाना पड़ा था। उनके अन्य ग्रंथ—

(1) Seven Grammars of the dialects and sub-dialects of the Behari Language.
(2) Behar Peasant Life.
(3) Papers on Tulasi Das, the Poet-reformer and Vidyapati Thakur.
(4) Modern Vernacular Literature of Hindustan.
(5) Padmavat of Jayasi.
(6) A Grammar and a Dictionary of the *Tirhuti* dialect.
(7) Gramophone Records.
(8) Notes on the District of Gaya.

(९) प्रियदर्शी अशोक के शिला-लेख।

साहित्य-वाचस्पति, महाकवि पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय, विद्यामहोदधि स्वर्गीय डॉक्टर काशीप्रसाद जायसवाल, खड्ग-विलास-प्रेस के मालिक बाबू रामदीनसिंह तथा स्वर्गीय डॉक्टर हीरालाल बी० ए०, डी० लिट्० से ग्रियर्सन साहब का बड़ा प्रेम एवं बंधुभाव था। दो सौ भाषा तथा बोलियों के ज्ञाता ग्रियर्सन साहब गोसाईंजी-कृत 'विनय-पत्रिका' तथा 'रामचरित-मानस' के अनन्य प्रेमी एवं पूर्ण प्रशंसक रहे हैं। 'रामचरित-मानस' को वह 'नव कोटि जनों का एक ग्रंथ' (A Book of 90 millions of people) कहा करते थे। वह व्रजभाषा में कविता—रचना के पक्षपाती थे। सन् १९०५ की सरस्वती (प्रयाग) में आपका सचित्र जीवन-चरित पहली बार प्रकाशित हुआ था। उस जीवन-चरित के लेखक श्रीमान् काशीप्रसाद जायसवाल ने ग्रियर्सन साहब की प्रशंसा में ये पंक्तियाँ लिखी थीं—

श्रीतुलसी के काव्य प्रेम सों बाँचनवारे,
सूर, बिहारी, लाल, जायसी माननहारे;
विद्या-कीरति - धाम बड़े ये भाषा - पंडित,
जि०ए० ग्रियर्सन नाम, गुणाकर, ऋजुता-मंडित।

अभी १९४१ में, ९० वर्ष की पूर्ण आयु भोगकर, आप स्वर्ग सिधारे। धन्य आपकी प्रतिभा तथा विद्या-व्यासंग!

लोचनप्रसाद पांडेय

× × ×

३. गद्य-काव्य

देव! चित्त की सचेतन चुटकी! तुम क्या चले गए—सचमुच चले गए? और मैं—मैं यहाँ—इस नीरव, दुःखद, संतापमय जीवन की दीर्घ घड़ियों को काटने के लिये……। ओह! मैं किस आसरे से, किस निगोड़ी आशा से और किस उमंग से इस नीरस जीवन-भार प्राणों को रक्खूँ? मैं यहाँ—और तुम? तुम उस पवित्र नंदन-कानन के निकुंज में? नाथ! हाय, क्या कहूँ। देखो तो—सामने की हरी-हरी दूब क्या ही सुषमामयी है। यह सुधा-सरोवर—सुधाकर क्या ही खिलखिलाकर हँस रहा है। रजनी क्या ही आनंद-मग्न हो रही है। और, तुम न-जाने कहाँ—किस ओट में हो?

नाथ! कुछ पूछूँ? उत्तर दोगे?—लो, पूछती हूँ—कहो, क्या तुम इस प्राणी के बिना वहाँ—हाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वहाँ—कैसे सुखी हो ? प्रभो, यहाँ तो दिल में कसक उथल-पुथल मचा रही है, मन की हूक ग़ज़ब कर रही है। हृदय-तंत्री का तार-तार बेसुरा हो रहा है। प्राण दुःखी हैं—व्याकुल हैं—व्यथित हैं। अनंत की यवनिका से कोई कह रही है—"रोते-रोते उनकी बड़ी-बड़ी आँखों के आँसू सूख गए हैं—नहीं-नहीं, रेगिस्तान में 'बूँद' की तरह लुप्त हो गए हैं—शरीर काँटा हो गया है।"

ओह ! वेदना, तू मिटाकर भी क्यों न मिटी ? चल, सखि ! चल, मुझे उनके चरणों में ले चल। चल, शायद वह अवश्य याद करते होंगे। पर नहीं, वह तो चले गए हाँ, चले गए। हाँ, सचमुच चले गए। कहाँ ? स्वप्न के देश में, निराशा के राज्य में !

(कुमारी) लीला ऐरी (वैद्या, हिंदीप्रभाकर)

× × ×

४. माली से

माली ! तुमने उस अधखिले पुष्प को क्यों तोड़ लिया ? अभी तो वह पूर्ण रूप से खिल भी न पाया था, देख भी न पाया था कि संसार क्या है। हाय ! अभी तो वह देवता के योग्य भी न था, फिर उसे तुमने क्यों नष्ट कर दिया ?

निष्ठुर ! उस समय वह अपने साथियों के बीच हँस रहा था। ऊषादेवी फूलों पर गुलाबी रंग फेर रही थीं। सुगंधित मलयानिल बह रही थी। पक्षीगण कलरव कर रहे थे।

उस सुहावने समय में उसे अपने साथियों से अलग कर देने का साहस तुमको कैसे हुआ ?

माली ! देखो, अब फिर किसी पुष्प को इस तरह नष्ट न करना।

(कुमारी) उर्मिला श्रीवास्तव

× × ×

५. गीतार्पण

पुण्य प्रेम की प्रखर ज्वाल में
होकर निर्मल, परम पुनीत—
शीले ! तुमको आज सुनाने
आया हूँ मैं अपने गीत।
इन गीतों में न तो भाव है,
और न है अति भव्य विचार,
इसीलिये तो रुक जाता हूँ
गाने से मैं बारंबार।
इन छंदों में न तो चंद्रिका,
और न इनमें सूर्य-विकाश ;
काव्य-गगन में करते हैं ये
खद्योतों-सा क्षीण प्रकाश।
इनमें हैं बहु शब्द निरर्थक,
और छंद के शत-शत दोष;
गुण-विहीन इन गीतों से फिर
क्योंकर होगा तुमको तोष ?
पर इनमें ही तो है शीले !
मेरे जीवन का सब सार ;
इनको कहीं न ठुकरा दो तुम,
मुझको तो है यही विचार।
इनमें ही तो छिपी हुई है
मेरे प्राणों की चिर-साध;
इनमें ही तो संचित है सब
मेरे उर का हर्ष-विषाद।
यदि इनको ही अब तुम शीले !
कर लोगी सहर्ष स्वीकार,
तो इस क्षण ही इन प्राणों का
मिट जावेगा सारा भार।
और, अंत में फिर जिस दिन मैं
चल दूँगा जग के उस पार,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो इनको ही देख वहाँ से
हर्षित हूँगा नित्य अपार ।
इसीलिये तो शीले ! तुमको
आज सुनाने अपने गान—
आया हूँ मैं द्वार तुम्हारे
तजकर सारा मनोभिमान !

(क़ाज़ी) अशरफ महमूद

× × ×

६. "यदा यदा हि धर्मस्य ....."

भगवान् श्रीकृष्ण ने गीता में कहा है—"यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ! अभ्युत्थान-मधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ।" यदि इस बात को ध्यान में रखकर इतिहास के—भारतवर्ष के इतिहास के—पृष्ठ उलटे जायँ, तो यह बात अक्षरशः सत्य निकलेगी ।

बहुत पहले से ही देखिए । चारो तरफ़ शांति, सुख एवं ऐश्वर्य का अटल साम्राज्य छाया हुआ था । कोई हलचल नहीं थी । लेकिन शक्तिशाली होते ही लंका के राजा रावण ने अत्याचार एवं पापाचार करना शुरू कर दिया । उसने अपने अत्याचारों और उपद्रवों से धार्मिक मनुष्यों एवं तपस्वी लोगों को कँपा दिया, और वे लोग अपनी तपस्या अथवा किसी प्रकार का धार्मिक कार्य पूरा नहीं कर सकते थे । एक समय ऐसा भी आया, जब मालूम हुआ कि पुण्य का अंत हो जायगा, और पाप का अटल साम्राज्य क़ायम हो जायगा । लेकिन ऐसा होना असंभव था, क्योंकि धर्म की ग्लानि होने पर भगवान् मनुष्य के रूप में पैदा होते ही हैं । श्रीरामचंद्रजी उत्पन्न हुए, और उन्होंने रावण तथा उसके अनुयायियों का नाश करके सारी बुराइयों का सत्यानास कर दिया ।

इस घटना के शताब्दियों बाद मथुरा के राजा कंस ने भी रावण ही-जैसा पापाचार और अत्याचार करना आरंभ किया । ऐसी परिस्थिति में भगवान् श्रीकृष्ण पैदा हुए, और जो बुराइयाँ समाज और धर्म में आ गई थीं, उनका जड़ से नाश कर दिया ।

अब हम लोग ईसा से छ सौ वर्ष पूर्व की दशा पर विचार करें । समाज तथा धर्म में कई बुराइयाँ आ गई थीं । ब्राह्मणों का ज़ोर था, और ख़ासकर वे शूद्रों को घृणा की दृष्टि से देखते थे । धार्मिक पवित्रता भी अवनति पर ही थी । इसमें कोई जीवन अथवा जागृति नज़र नहीं आती थी । जनता को एक ऐसे अगुआ की आवश्यकता थी, जो शांति एवं समृद्धि का सत्पथ-प्रदर्शक हो सके । भाग्य-वश उसी समय गौतम बुद्ध पैदा हुए, जिन्होंने सत्य एवं अहिंसा की शिक्षा दी, और बताया कि सारी मनुष्य-जाति एक समान है । जाति-पाँति का कोई भेद-भाव नहीं रखना चाहिए । इस प्रकार बुद्धदेव तथा इनके अनुयायियों ने समाज के दुर्गुणों को दूर करके जनता को एकता के सूत्र में बाँध दिया ।

कुछ दिनों तक देश की दशा अच्छी रही । लेकिन कुछ समय बीत जाने पर बौद्धों में विलासिता आने लगी । मठों का उन लोगों ने दुरुपयोग करना शुरू किया, और भगवान् बुद्ध के उपदेशों को भूल-से गए । धर्म की भारी ग्लानि हुई । सारी जनता उन्हें घृणा की दृष्टि से देखने लगी । धर्म के उद्धार के लिये महापुरुष के जन्म लेने का अवसर आ पहुँचा । इस बीच में ब्राह्मणों ने पूरी उन्नति कर ली । उन लोगों ने अपना धार्मिक सुधार किया, तथा अपने को परिवर्तित संसार के अनुसार बनाया । भाग्य-वश उन्हें योग्य पथ-प्रदर्शक पुरुष भी मिल गया । स्वामी शंकराचार्य ने अपना सारा जीवन हिंदू-धर्म की सेवा और सुधार में लगा दिया ।

अब हम लोग मुग़ल-काल की धर्म-ग्लानियों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और उनके उद्धारक महापुरुषों पर विचार करें। महान् अकबर ने सारे राजपूतों को बड़े-बड़े ओहदे, जागीर और रुपए-पैसे देकर अपने पक्ष में कर लिया। वे अपनी देश-भक्ति तथा शान-शौकत भूल गए। आत्माभिमानी एवं स्वतंत्र राजपूत अब ख़ुशामद-पसंद तथा ग़ुलाम हो गए, और वे लोग अकबर की छत्रच्छाया में रहना सौभाग्य की बात समझने लगे। वे अपना कर्तव्य और धर्म भूल-से गए। ऐसे समय में एक दृढ़, निर्भीक एवं धैर्यवान् व्यक्ति की आवश्यकता हुई। भगवान् के रूप में चित्तौड़ के राजा राणा प्रताप राजनीतिक क्षेत्र में कूद पड़े। उन्होंने अकबर का विरोध किया। राजपूतों की शान राणा का जीवन दुःखमय ही रहा। लेकिन यह सब होते हुए भी उन्होंने राजपूतों का सिर ऊँचा उठाया। इस देश-भक्त राजपूत का नाम राजस्थान ही क्या, भारतवर्ष के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा गया है, और राजपूत ही क्या, दुनिया की सारी आत्माभिमानी एवं आत्मगौरवशील जातियाँ उन्हें आदर की दृष्टि से देखती हैं।

क़रीब-क़रीब सौ वर्षों बाद सारा दृश्य बदल गया। औरंगज़ेब की नीति अकबर के विरुद्ध थी। वह भारतवर्ष को सुन्नी मुसलमानों का ही देश बनाना चाहता था। हिंदू तथा अन्य धर्मवालों को उनकी पवित्र, प्यारी जन्मभूमि से बाहर निकाल देना चाहता था। सभी विधर्मियों, ख़ासकर हिंदुओं पर बड़े अत्याचार हो रहे थे। उनकी अवनति भी निश्चित ही थी; क्योंकि उनमें संगठन नहीं था। फूट का बीज अंकुरित हो चुका था। पाप का घड़ा लबालब भर गया था। इतना भर गया था कि उसका फूटना अनिवार्य हो गया। ऐसी परिस्थिति में फिर किसी महापुरुष की आवश्यकता आ पड़ी। बस, महाराष्ट्र-कुल-भूषण महाराज शिवाजी आगे बढ़े। उन्होंने देश की सुषुप्त जनता को गहरी नींद से उठाया, तथा उसे संगठित किया। उसमें साहस, राष्ट्रीयता, जातीयता एवं धार्मिकता के भाव भरे। उसमें एक अजीब जान फूँक दी। विशेषकर मराठों में जागृति पैदा हो गई। उन्होंने अपना आतंक दिल्ली-राज्य पर भी जमा दिया, और अपनी नींव मज़बूत कर ली। जो धार्मिक अत्याचार होते थे, वे बहुत कम हो गए। हिंदू-धर्म भारी संकट से बच गया। भूषण कवि ने कहा है—"शिवाजी न होते, तो सुनति होती सबकी।" इस प्रकार शिवाजी ने हिंदू तथा उनके धर्म की बड़े गाढ़े समय में रक्षा की। इसीलिये वह इतिहास में धर्म-रक्षक और राष्ट्र-निर्माता के नाम से विख्यात हैं।

जिस समय हिंदू वेद आदि को धीरे-धीरे भूल रहे थे, और उनका धर्म अवनति की दशा में था, उस समय स्वामी दयानंद सरस्वती ने आकर देश में एक जागृति पैदा कर दी। इन्हीं स्वामीजी की एक संतान 'आर्य-समाज' आज भी जीवित है, जिसने हिंदू-धर्म की बड़ी सेवा की है।

अब आधुनिक समय की दुर्दशा पर विचार करें। आज हम लोगों की दशा दयनीय हो रही है। हम लोग इतने धन-हीन एवं परतंत्र हो गए हैं कि अब स्वप्न में भी यह सोचने का अवसर नहीं मिलता कि हम लोग एक समय धनवान्, सभ्य एवं स्वतंत्र थे। यह ठीक भी है। यदि कोई जाति शुरू में नेता हो, और बीच में आकर विदेशी आक्रमणों से दबा दी गई हो, तो उसे अपनी स्वतंत्रता एवं स्वर्णयुग का ख़याल मुश्किल से रह सकता है। जिस राजनीतिक, सामाजिक तथा धार्मिक वातावरण में हम लोग पले हैं, उसने हम लोगों को अपाहिज एवं निर्बल बना दिया है। आधुनिक सभ्यता एवं आविष्कारों के बाह्य प्रदर्शन से आँखें चकाचौंध हो गई हैं। जो हम लोग एक समय में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' समझते थे, आज अपने ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाइयों को छूने-मात्र में भी घृणा करते हैं। हम लोगों के हृदय में यह झूठा भ्रम समा गया है कि हम लोगों के मंदिर हमारे ही बंधुओं के प्रवेश से भ्रष्ट हो जायँगे। इस तरह की बुराइयाँ हम लोगों में भरी हुई हैं। इन सारी बुराइयों को दूर करने के लिये एक योग्य नेता की आवश्यकता होने पर मोहनदास-करमचंदजी गांधी ने उस स्थान की पूर्ति की। इन हमारे पूज्य एवं आदरणीय महापुरुष का जन्म २ ऑक्टोबर, सन् १८६९ ई० में हुआ। उस समय यह कोई नहीं अनुमान करता था कि यह बनिए का लड़का एक दिन महात्मा गांधी के नाम से ख्याति पा जायगा, और अपने कार्यों से सारे संसार को चकित कर देगा। लेकिन अब तो हम लोग इनकी सारी कृतियों को आँखों से देखते ही हैं। इनके कार्यों और विचारों से आज मानव-इतिहास में कई आश्चर्य-जनक परिवर्तन हो गए हैं। अपनी मानसिक शक्ति द्वारा ही महात्माजी आज चालीस करोड़ गूँगी जनता का नेतृत्व कर रहे हैं। इनके अहिंसावाद और सत्यवादी होने के उपदेश के प्रति संसार के प्रायः सभी राष्ट्रों की सहानुभूति है। अहिंसात्मक असहयोग-आंदोलन के जन्मदाता यही हैं। इनकी कोशिशों से हम लोगों का सामाजिक, राजनीतिक एवं धार्मिक वातावरण पहले से कुछ शुद्ध हो गया है। जीवन-भर के इनके त्याग तथा सेवा का ख़याल करके हम लोगों के हृदय में एक प्रकार की ज्योति और जागृति पैदा होती है। यह हम लोगों के लिये हर बात में एक जीते-जागते उदाहरण हैं। कुछ अंशों में कहा जा सकता है कि जो कार्य कावूर, गैरीबाल्डी और मेज़िनी ने अपने राष्ट्र इटली के लिये किया, वही गांधीजी ने हमारे भारत के लिये किया। और, इसमें कोई संदेह नहीं कि यह हम लोगों को विजय की ओर अग्रसर करते जायँगे।

संसार के अन्य देशों के इतिहास में भी इस तरह के उदाहरण मिलेंगे। जेसस क्राइस्ट, मुहम्मद, पीथागोरस, लूथर, सेंट फ्रांसिस, सुक़रात, एब्राहिम लिंकन आदि नेताओं ने उस समय संसार-क्षेत्र में प्रवेश किया, जिस समय उनके राष्ट्र तथा देश विपत्ति में पड़े हुए थे—उनकी परिस्थिति शोचनीय हो रही थी।

प्रत्येक दशा में फल यही हुआ कि सभी महापुरुषों एवं नेताओं ने सामाजिक, धार्मिक एवं राजनीतिक दुर्व्यवस्थाएँ मिटाकर अपनी जाति, देश और दुनिया को उन्नतावस्था में पहुँचाया।

(श्रीमती) शांति दुबे

दुलारे-दोहावली पर नई सम्मति

श्रीयुत जगन्नाथप्रसाद विशारद, एम्-ए०, एल-एल्० बी० लिखते हैं—

धन्य दुलारे - दोहरे, उयौ अपूरब चंद ;
हरो भयो सूखो हियो, उमगायो आनंद ॥ १ ॥
'दोहावलि' अलि-अवलि ह्वै गुंजति सुमधुर तान ;
कविवर - भाव - पराग पै सदा होति बलिदान ॥ २ ॥
कृस्न दुलारे, बाँसुरी 'दोहावली' प्रमान ;
भाषा - ब्रज में सुनि परयौ, रास रास को तान ॥ ३ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छप गया ! छप गया !! प्रकाशित हो गया !!!

साधना

मासिक पत्रिका

का

परिचयांक

इसमें हिंदी-साहित्य के ५० प्रमुख-प्रमुख विद्वानों का पूर्ण परिचय तथा हिंदी-साहित्य के धुरंधर विद्वानों द्वारा लिखे गए लेख हैं। इनमें छायावाद की प्रतिक्रिया, आज का उपन्यास, तथा हिंदी के वयोवृद्ध साहित्य-सेवियों की देन आदि लेख तो बहुत ही महत्त्व-पूर्ण हैं। प्रस्तुत अंक साहित्य के एक बड़े प्रभाव की पूर्ति करता है। मौलिकता, उपयोगिता और हिंदी की ठोस सेवा के दृष्टिकोण से यह निश्चित रूप सर्वोत्तम रहा है। अभी तक ऐसा कोई साधन नहीं था, जिसके द्वारा हम अपने साहित्यिकों के विशेष परिचय प्राप्त कर सकें। हिंदी-साहित्य के विद्वानों और पत्र-पत्रिकाओं ने इसकी मुक्तकंठ से प्रशंसा की है। पृष्ठ-संख्या लगभग २५०।

परिचयांक में पढ़िए

पं० रामनरेश त्रिपाठी, महाकवि हरिऔध, बाबू श्यामसुंदरदासजी, कविवर मैथिलीशरणजी, श्रीमंपूर्णानंदजी, श्रीमती महादेवी वर्मा, बाबू गुलाबरायजी, श्रीहरिभाऊ उपाध्याय, श्रीमती उषादेवी मित्रा, श्रीकृष्णलाल सरसौदे 'हंस', श्रीपरिपूर्णानंद वर्मा, श्रीमती होमवती, पुरोहित प्रतापनारायणजी, श्रीअन्नपूर्णानंदजी, श्रीभगवतीचरण वर्मा, श्रीभदंत आनंद कौशल्यायन, श्रीविश्वेश्वरनाथ रेउ साहित्याचार्य, मिश्रबंधुगण, कौशिकजी, शांतिप्रिय द्विवेदी, श्रीसुधींद्र एम्० ए०, श्रीयज्ञेयजी, श्रीअंचल, श्रीचातकजी, श्रीदिनकर आदि कितने ही साहित्यिकों के परिचय पढ़िए।

साधना का वार्षिक मूल्य २)] [केवल परिचयांक का १)

नोट—विशेषांक की बहुत कम प्रतियाँ शेष रह गई हैं। अभी ग्राहक बननेवालों को विशेषांक मुफ़्त दिया जायगा। शीघ्रता करें।

व्यवस्थापक साधना-कार्यालय, बाँके-विलास, आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विज्ञापनदाताओं के लिये

अपूर्व सुअवसर

हमारे विशेषांक में विज्ञापन देकर दूना लाभ उठाइए !

लोकमान्य (कलकत्ता)

लोकमत (नागपुर)

—का—

《सम्मिलित विशेषांक》

'आधुनिक राजस्थान'

जून के अंतिम सप्ताह में कलकत्ता और नागपुर में
एक ही साथ प्रकाशित होगा

आपका विज्ञापन न केवल लोकमान्य के बहुसंख्यक पाठक पढ़ेंगे, किंतु उसका प्रचार 'लोकमत' द्वारा मध्य-प्रांत (सी० पी०), बरार, हैदराबाद और बंबई-प्रांत के सभी प्रमुख क्षेत्रों में हो जायगा।

आज ही पूछताछ करें—

व्यवस्थापक—लोकमान्य

१६०, हरीसन रोड
कलकत्ता

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिलकुल नया प्रकाशन

संसार के सर्वोत्कृष्ट उपन्यासों की श्रेणी में
निःसंकोच रक्खा जानेवाला

हिंदी का महान् गौरव

दो भाग में

'विकास'

मूल्य प्रत्येक भाग २), २॥)

[सामाजिक उपन्यास]

लेखक

हिंदी के युगांतरकारी उपन्यासकार

श्रीप्रतापनारायण श्रीवास्तव बी० ए०, एल्-एल्० बी०

('बिदा' और 'विजय' के यशस्वी रचयिता)

'विकास' की विशेषताएँ—

(१) साम्य तथा समाजवाद का स्पष्टीकरण।
(२) हिंदू-समाज के गूढ़ रहस्यों का उद्घाटन।
(३) कुली-प्रथा की आह और कराह।
(४) पूर्वजन्म के प्रेम की पीड़ा।
(५) चारु चरित्रों का विचित्र विश्लेषण। इत्यादि-इत्यादि।

उच्च कोटि के चरित्र-चित्रण, भाव-व्यंजना और घटना-वैचित्र्य के लिये लेखक का नाम ही पर्याप्त है।

यह अप-टु-डेट उपन्यास आपको सामाजिक और राजनीतिक गुत्थियाँ सुलझाने में सहायता तथा सहयोग प्रदान करेगा।

श्रीवास्तवजी के समस्त उपन्यासों के

मिलने का एकमात्र पता—

गंगा-ग्रंथागार, ३६, लाटूश रोड, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप अपनी मातृभाषा और राष्ट्र-भाषा को क्यों ऊँचा मानते हैं ?

इस प्रश्न का उत्तर देने के लिये पढ़िए

हिंदी-साहित्य

का

इतिहास

[लेखक—'मिश्रबंधु']

आपकी कमनीय कृति 'मिश्रबंधु-विनोद' में भी यद्यपि हिंदी-साहित्य का इतिहास और कवि-कीर्तन है, फिर भी उसमें कवि-वर्णन बहुत अधिकता से है। और, सिर्फ़ साहित्यिक इतिहास जानने के लिये इतने बृहद् ग्रंथ का पढ़ना सबके लिये संभव नहीं। इसलिये ऐसे संक्षिप्त ग्रंथ की बहुत आवश्यकता थी। इन्हीं बातों पर विचार करके माननीय मिश्रबंधुओं ने इस अनुपम ग्रंथ की रचना की है। यह ग्रंथ बड़ी खोज, अध्ययन, परिश्रम और अनुभव से लिखा गया है। साहित्य के भांडार में अब तक ऐसा महत्त्व-पूर्ण ग्रंथ आपने न देखा होगा। मिश्रबंधु ही सबसे प्रथम इस प्रयास में आगे बढ़े हैं।

मूल्य सजिल्द २), सादो १॥) ; पृष्ठ-संख्या ३७०

गंगा-ग्रंथागार, ३६, लाटूश रोड, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

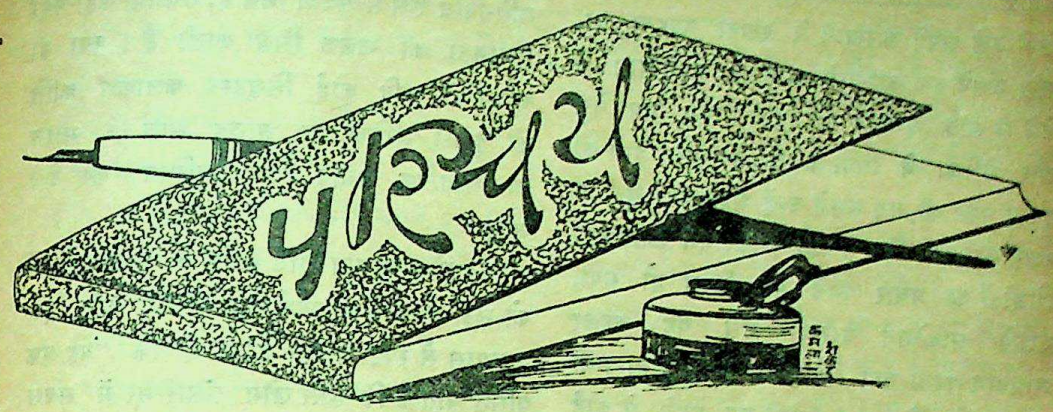

क्रांतिकारी—अनुवादक, श्रीपं० देवीदत्त शुक्ल; प्रकाशक, इंडियन-प्रेस लिमिटेड, प्रयाग; मूल्य ॥)

अमर, मौलिक ग्रंथ लिखना बहुत कठिन है; परंतु अनुवाद से किसी भाषा का साहित्य-भांडार ग्रंथ-रत्नों से भरना एक मुख्य उपाय है। इसलिये अनुवादकर्ता साहित्य-सेवियों में एक विशेष स्थान रखता है। मैक्समूलर आदि पाश्चात्य महापंडितों ने अपने अनुवाद-कार्य से ही अँगरेज़ी-संसार में काफ़ी प्रसिद्धि प्राप्त की।

समालोच्य उपन्यास इंडियन-प्रेस, इलाहाबाद की प्रशंसनीय सरस्वती-सिरीज़ की प्रथम पुस्तक है। रूसी-भाषा के सर्वश्रेष्ठ गद्य-शैलीकार एवं प्रतिभाशाली कथाकार इवान सर्जेईविच तुर्गनेव की अमर रचना 'वर्जिन स्वायल' का यह यत्र-तत्र उर्दू और अँगरेज़ी-शब्द-गर्भित सरल हिंदी-भाषा में अनुवाद है। अनुवादकर्ता हैं सरस्वती के विद्वान् तथा अभिज्ञ संपादक पं० देवीदत्त शुक्ल।

भूमिका में मूल-उपन्यासकार के बारे में यथेष्ट जानकारी कराई गई है। विचित्र रूसी नाम उच्चारण करना कष्टसाध्य है, अतः अनुवादकर्ता ने शुरू में पात्रों के नामों का संक्षेप रूप देकर बड़ा उपकार किया है। थोड़े में इस उपन्यास का कथानक यह है—

"नेजडानोव एक धनवान् और प्रतिष्ठित सज्जन का लड़का था। उसने अच्छी शिक्षा पाई थी। किंतु उसके विचार बहुत उग्र थे, और वह बहुत शीघ्र प्रजातंत्रवादी हो गया। इस कारण उसके कुटुंबी उससे किसी तरह का संबंध नहीं रखते थे। सेंटपीटर्सबर्ग (आधुनिक रूसी राजधानी लेनिनग्राड) में वह स्वतंत्र रहता था। अपने प्रिंस भाइयों से एक अच्छी रक़म जीवन-निर्वाह के लिये उसे मिलती थी। एक दिन एक थिएटर में सिपी-नामक एक रईस राजनीतिज्ञ से उसकी भेंट हुई, जिसे उसकी उस रात को खेले गए नाटक के सिवा अन्य विषयों पर आलोचना बहुत रुचिकर प्रतीत हुई, और उसने अपने लड़के के लिये उसे शिक्षक नियुक्त किया। सिपी की कोठी में मेरिआ नाम्नी एक युवती रहती थी, जो मातृपक्ष से सिपी की भतीजी थी। नेज तथा मेरिआ एक ही रंग में रँगे हुए थे। गृहस्वामिनी का भाई मार्के मेरिआ से विवाह करना चाहता था, परंतु वह राज़ी नहीं हुई। बाद में नेज को मालूम हुआ कि मार्के भी क्रांतिकारियों में से एक विशिष्ट व्यक्ति है। एक बार मार्के ने नेज को अपने यहाँ निमंत्रण दिया। वहाँ उसका परिचय सालोमन से हुआ, जो एक रईस के कारख़ाने में इंजीनियर था। सालोमन भी सेंटपीटर्सबर्ग के क्रांतिकारियों के विचारों से किसी हद तक सहमत था। परंतु वह बड़ा सावधान था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिपी उसे अपने कारख़ाने में रखना चाहता था, परंतु उसने इस कारख़ाने का प्रबंध अपने हाथ में लेने से साफ़ इनकार कर दिया। किंतु जब नेज और मेरिआ ने सिपी के घर से भाग जाने की इच्छा प्रकट की, तब उसने उन्हें अपने यहाँ सुरक्षित रखने का वचन दिया। वहाँ जाकर नेज क्रांतिकारी सिद्धांतों का प्रचार करने में कटिबद्ध हो गया, यद्यपि सालोमन बार-बार उसे यह कहकर सावधान करता गया कि क्रांति शुरू होना अभी दूर की बात है, इतनी जल्दी कूद पड़ने से कोई लाभ नहीं; परंतु नेज ने नहीं माना। इतने में यह ख़बर आई कि 'मार्के को उन किसानों ने पकड़ लिया है, जिन्हें उसने विद्रोह करने के लिये भड़काया था, और वह गवर्नर के घर में क़ैद है।' नेज और मेरिआ के सालोमन के कारख़ाने में ठहरने का भेद भी खुल गया। पुलिस आने से पहले नेज और मेरिआ का विवाह हो जाना निश्चय हुआ। किंतु नेज ने आत्महत्या कर ली, और अंत में उसके अंतिम इच्छानुसार सालोमन की शादी मेरिआ से हो गई।"

इसी कथा-वस्तु को घात-प्रतिघातों के साथ आदि से अंत तक चित्ताकर्षक बनाकर यह उपन्यास लिखा गया है। इसमें उन्नीसवीं शताब्दी के रूस के सामाजिक और राजनीतिक वातावरण का हृदयग्राही रूप मिलने से पढ़ने में मन लगता है। जहाँ एक ओर शराब-सिगरेट और कोर्टशिपवाली दिवालिया पाश्चात्य सभ्यता का अंकन है, वहाँ दूसरी ओर अनभ्यस्त, उतावले, राजनीति-क्षेत्र में उतरनेवाले नवयुवकों का भी दर्शन है। कच्चे और पक्के, केवल बात बनानेवाले और चुपचाप काम करनेवाले सभी प्रकार के देश-भक्तों की चर्चा है। देश-निवासियों की सभी श्रेणियों का कुछ-न-कुछ आभास प्राप्त होता है। यद्यपि भारतीय सामाजिक और राजनीतिक गुत्थियाँ और उनके सुलझाने के प्रकार तथा गति-विधि रूस से सर्वथा भिन्न है, तथापि कहीं-कहीं समानता की झलक मिल जाती है। क्या ही अच्छा हो, यदि कोई सिद्धहस्त कलाकार क्रांति की दूसरी मंज़िल पर आरूढ़ आज के भारत का वास्तविक सजीव चित्र उपस्थित कर दे। अस्तु।

भूतपूर्व वाइसराय लॉर्ड कर्जन ने भारतवासियों को झूठा बतलाने की व्यर्थ चेष्टा की थी; परंतु इस उपन्यास से स्पष्ट मालूम होता है कि "यह एक प्रसिद्ध बात है कि रूसी लोग संसार-भर में सबसे अधिक झूठे हैं!" इस उपन्यास का निम्नांकित अमूल्य वचन सबके हृदय-पट पर स्वर्णाक्षरों में लिखा जाना चाहिए—"हमें संकट का सामना डटकर करना चाहिए।"

अब कुछ त्रुटियाँ दिखलाकर हम इस आलोचना का उपसंहार करेंगे। आशा है, अगले संस्करण में त्रुटियाँ न रहेंगी।

भाषा शुद्ध हिंदी होना सर्वथा वांछनीय है। खेद है, प्रस्तुत पुस्तक में इस ओर कुछ कम ध्यान दिया गया है! सरस्वती के सुयोग्य संपादक महानुभाव से और अधिक निखरी भाषा की आशा की जाती है। 'चहलक़दमी', 'ख़ूँख़ार', 'क़ायदे-क़रीने' आदि के स्थान पर सरल तथा शुद्ध हिंदी-शब्दों का प्रयोग होना ही युक्ति-युक्त है। और, 'निहिलिस्ट', 'पैमफ़लेट', 'स्पील हेगेन' आदि अँगरेज़ी-शब्द भी साधारण पाठकों के लिये, शुक्लजी की भाषा में, 'ग्रीक' हैं; ऐसे शब्दों की अर्थ-सूची होने से इस पुस्तक की रोचकता और उपयोगिता बढ़ जाती। भाषा भी यत्र-तत्र कुछ क्लिष्ट है, जिससे भावों की अभिव्यक्ति ठीक न हो सकी। कुछ उदाहरण दिए जाते हैं—

(१) कोलिया के संरक्षक संत का दिन था। (पृष्ठ ४१)

(२) मुझे धन्यवाद है। (पृष्ठ ४४)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(३) मैं उसकी आँखों में 'काली भेड़' जँचती हूँ। (पृष्ठ १३८)

(४) किसी ने उससे कह दिया। (पृष्ठ १५६, क्या कह दिया है ?)

(५) "मैं, याद नहीं कि मैंने अपने एक दूसरे मित्र सिपी के एक संबंधी के संबंध में तुमको कभी लिखा है।" (पृष्ठ २०२)

(६) क्या हाकिम ? (पृष्ठ १४१)

(७) जाने दो टैक्सों को ! जाने दो ज़मींदारों को ! (पृष्ठ २-३)

मूल-उपन्यास के ये निरे अक्षरशः अनुवाद हैं ; ऐसे अनुवाद में मूल का माधुर्य नष्ट होना संभव है।

कहीं-कहीं प्रूफ़ की भूलें भी रह गई हैं। ऐसी भूलों की इंडियन-प्रेस-जैसी संस्था से आशा नहीं की जा सकती है। उदाहरणार्थ कुछ शब्द दिए जाते हैं—

दोनो और नौकर-नौकरानियाँ (पृष्ठ ३२), यू स्वामी (पृष्ठ १४०), तुब (पृष्ठ १६६), पुश्नच (पृष्ठ २५८)

अंत में और एक मार्के की त्रुटि का उल्लेख करना अप्रासंगिक न होगा। अँगरेज़ी-भाषा का You-शब्द 'आप' और 'तुम', दोनो के लिये प्रयुक्त होता है, इसलिये उसकी क्रियाएँ आदर और साधारण परिचय, इन दोनो की प्रसंगानुसार अभिव्यक्त की जाती हैं। किंतु हिंदी में दोनो शब्दों के लिये अलग-अलग क्रियाएँ रखनी पड़ती हैं। इसके विपरीत करने से व्याकरण का नियम भंग होता है, जिसे साधारणतः पुरुष भेद-प्रयुक्त क्रिया-दोष कहते हैं। इस पुस्तक में 'आप' और 'तुम' में अनुवादकर्ता ने कोई भेद नहीं रक्खा, जो बहुत खटकता है। जैसे—

"तुम मेरे स्वभाव की बातें कैसे जानते हो ? (आप) ज़रा बताइए तो।" (पृष्ठ १११)

"परिचित न होते हुए भी जो यह पत्र लिखा है, उसके लिये (आप) क्षमा कीजिएगा।.....मैंने लोगों से तुम्हारी बड़ी प्रशंसा सुनी है।" (पृष्ठ १४०)

इन त्रुटियों के रहने पर भी अनुवादक का परिश्रम सराहनीय है। उपन्यास-प्रेमियों के लिये यह कृति सचमुच मनोरंजन की वस्तु है। हम ऐसे अच्छे उपन्यास का अनुवाद करने के लिये शुक्लजी को और निकालने के लिये इंडियन-प्रेस को हार्दिक बधाई देते और आशा करते हैं कि प्रत्येक हिंदी-भाषा-भाषी इस उपन्यास का अवश्य सादर स्वागत करेगा।

कालीचरण चटर्जी (एम्० ए०)

× × ×

हिंदू - मुसलिम - मेल—लेखक, सत्य-समाज-संस्थापक स्वामी सत्यभक्तजी ; प्रकाशक, सत्याश्रम, वर्धा (सी० पी०); मूल्य -)॥; पृष्ठ-संख्या २६।

जातीयता मनुष्य का जीवन है। मनुष्य-समाज में एकता के समावेश की कुंजी जातीयता है। जातीयता से समूह-अर्थ समझना प्रकरण के बाहर नहीं। कोई भी जाति या समाज तब तक उन्नतिशील नहीं हो सकता, जब तक उसने एकता का पाठ न पढ़ा हो। सत्त्व, रज और तम, तीन गुणों की समता से प्रकृति बनती है। "सत्त्वरजतमसां साम्यावस्था प्रकृतिः", किंतु इनमें से अगर एक ही वस्तु रहे, अथवा दो भी रहें, तो कुछ नहीं बन सकता। बाँस का डंडा, तुंबी और तार, जब तीनो का एकीकरण होता है, तो उससे एक मधुर ध्वनि निकलने लगती है। और, वह इतनी श्रुतिमधुर होती है कि कठोर-से-कठोर हृदयवाला पुरुष भी उसे सुनने के लिये लालायित हो जाता है। बड़े-बड़े मदोन्मत्त हाथियों को तिनकों से बना रस्सा बाँध लेता है, एवं सामूहिक शक्ति किसी बड़ी-से-बड़ी शक्ति के साथ टक्कर ले सकती है। दुर्भाग्य-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वश भारत में परस्पर दो ऐसी शक्तियाँ हैं, जिनका संघर्ष बाँसों की तरह स्वयं आग उत्पन्न कर अपने को नष्ट कर रहा है। हिंदू और मुसलमान एक दूसरे को घृणा की दृष्टि से देखते और अपने-अपने अधिकारों के लिये व्यर्थ ही मर मिटने को तैयार हैं। यदि इन लोगों में मेल हो जाय, तो आज ही सब स्वतंत्र हो जायँ। इस छोटी-सी पुस्तक में स्वामी सत्यभक्तजी ने इस बात पर बहुत प्रकाश डाला है कि हिंदू और मुसलमान मिलकर कैसे रह सकते हैं। उनका जो परस्पर विरोध है, वह भ्रमात्मक है।

अगर हिंदुओं को मूर्ति-पूजक कहा जाता है, तो मुसलमान भी मूर्ति-पूजक हैं, क्योंकि वे भी ताज़िया और क़ब्र पूजते हैं, काबे का पत्थर चूमते हैं, इत्यादि। यह भी कोई भेद नहीं। अहिंसा को दोनो ही मानते हैं। यदि निष्पक्ष दृष्टि से विचार किया जाय, तो बहुत कम भेद प्रतीत होता है, जो न होने के सदृश है। इस पुस्तक में बताया गया है कि बहुदेववाद, पुनर्जन्म, बाजा बजाना, दाढ़ी - चोटी, देश-भेद, लिपि-भेद, भाषा-भेद, धार्मिक उदारता इत्यादि का जो भेद बताया जाता है, वह सब नक़ली है। एक बार इस पुस्तक को पढ़ने से विदित हो जायगा कि वे एक दूसरे से किस भाँति मिलकर रह सकते हैं। यह पुस्तक जन-साधारण के लिये उपयोगी है। शांति स्थापित करने के इच्छुकों को इसका आदर करना चाहिए।

× × ×

बाल-भारती—लेखक, श्रीनथसिंहजी; प्रकाशक, हिंदी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग; मूल्य ।=)।; पृष्ठ-संख्या ८०; छपाई साफ़।

श्रीनाथसिंहजी ने इस छोटी-सी पुस्तक में अपनी कई वर्षों की कविताओं से चुनकर कविताएँ रक्खी हैं। कविता ऐसी वस्तु है, जो जन-साधारण का हृदय खींच लेती है। किसी वस्तु को छंदोबद्ध करने का प्रयोजन यही होता है कि उसमें शब्द थोड़े और भाव अधिक आ जाते हैं। मनुष्य संगीत-प्रिय है, संगीत से उसे रुचि रहती है, इसीलिये जिस बात को हम सीधे-सादे ढंग से कह सकते हैं, उसी को हृदयंगम कराने के लिये छंदों में बाँध देते हैं।। ऐसा करने से उसमें उपयोगिता आ जाती है, और वह उपयोगिता गद्य की अपेक्षा चित्त को अधिक खींच लेती है।

इस पुस्तक का उद्देश्य बालक-बालिकाओं में राष्ट्रीयता, धार्मिकता, वीरता, दया एवं परोपकार का संचार करा देना है। भाषा सरल है। इसमें समयानुकूल, याद रखने योग्य बहुत अच्छी-अच्छी कविताएँ हैं। कविताएँ छोटी और उपदेश-पूर्ण हैं। इनमें प्रभावोत्पादक शक्ति उचित मात्रा में है। बालकों की प्रवृत्ति का बहुत ध्यान रक्खा गया है। जैसे—

अच्छे कपड़े काम न देंगे,
अच्छे जो न विचार हुए;
क़लई चढ़ जाने से सोना
कब चाँदी के तार हुए?
लहरों को लख भगनेवाले
कब सागर से पार हुए?
अगर हुए, तो साहस-श्रम से
जग के सब व्यापार हुए।

❀ ❀ ❀

मैं हूँ उस भारत की बेटी,
जिसमें थी जन्मी सीता;
मैं हूँ उस भारत की बेटी,
जिसमें रची गई गीता।
कहो न मुझसे, बैठूँ घर में,
होगी यह तो नादानी;
क्यों न जान दे दूँ स्वदेश-हित
बनकर झाँसी की रानी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस प्रकार अच्छी-से-अच्छी और भाव-भरी कविताएँ बच्चों के हृदय पर अवश्य प्रभाव डाल सकती हैं। लेखक महोदय हिंदी-जगत् के प्रसिद्ध लेखकों में से हैं। आपका यह प्रयास सराहनीय है। यह पुस्तक यदि पाठ्यक्रम में रख दी जाय, तो अधिक लाभ हो। आशा है, हिंदी-भाषा की उन्नति के इच्छुक इसे अपनाकर अपने बालक-बालिकाओं की मानसिक और आत्मिक शक्ति का विकास करेंगे।

× × ×

वीर शतमन्यु—लेखक, श्रीसमामोहन अवधिया विशारद 'स्वर्ण-सहोदर'; प्रकाशक, हिंदी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग; पृष्ठ-संख्या ५२; मूल्य ।); छोटा आकार तथा काग़ज़ मोटा और चिकना।

कार्य मनुष्य का शरीर है, और विचार आत्मा। मनुष्य-जीवन में सजीवता लाने के लिये उत्साह की परमावश्यकता है। उत्साह-रहित मनुष्य जीवन-संग्राम में कभी सफलता नहीं प्राप्त कर सकता। उत्साही मनुष्य को हम वीर कहते हैं। छोटे बच्चों में बाल्य-काल से ही उत्साह पाया जाता है। उस उत्साह की पूर्ति करना प्रत्येक माता-पिता का कर्तव्य है। नए बरतन में जिस भाँति का चिह्न अंकित किया जाता है, वह वैसा ही बना रहता है। इसे संस्कार कहते हैं। बालकों की उत्साह-शक्ति का विकास करने के लिये हमें साहसी बातों एवं वीरों के चरित्रों को बच्चों के सामने उपस्थित करना पड़ता है। आज वह भयंकर समय है, जब चारो ओर तूफ़ान आया हुआ है। कोई भी साहस नहीं कर सकता कि इस प्रज्वलित अग्नि में कूद पड़े। ऐसे समय में वीर, देश-भक्त बालकों की आवश्यकता होती है। वीर बनाने के लिये उन्हें वीर-रसपूर्ण मनोहर कहानियाँ सुना-सुनाकर उनके अंदर ओज का संचार करना चाहिए। इसके लिये भारत के भावी कर्णधारों को जिस वस्तु की आवश्यकता थी, उसकी पूर्ति करने में यह वीर शतमन्यु-नामक पुस्तक अधिकांश में सफल रही। इस पुस्तक में पुराणों से उद्धृत एक कहानी पद्य-रूप में लिखी गई है।

अकाल का समय था। सारा देश दाने-दाने के लिये तरस रहा था। सभा की गई। एक ऋषि ने बताया, नर-मेध यज्ञ किया जाय, तो पुनः सुकाल हो सकता है। इस समस्या को सुनकर सभी लोग अवाक् हो गए। बड़े-बड़े साहस करनेवालों के मुखों पर भी उदासी छा गई। कौन मरने को उद्यत हो। किंतु एक द्वादशवर्षीय किशोर उन्हें निराश जानकर आगे बढ़ता और कहता है—

निज दुखी देश के हित मैं
तत्पर हूँ बलि होने को;
तन-मन-धन-जन, सब कुछ ही
ख़ुश होकर हूँ खाने को।

❀ ❀ ❀

मेरी लालसा यही है,
मैं काम देश के आऊँ;
हँसते - हँसते बलि होकर
दुखियों को सुख पहुँचाऊँ।

वीर बालक की इस बात को सुनकर सभी उसकी प्रशंसा करने लगे। उसकी बात को कोई भी न टाल सका। सभा समाप्त होने पर बालक घर गया, माता-पिता को यह समाचार सुनाया, और विनय की कि वे प्रसन्न चित्त से उसे इस कार्य में भाग लेने की अनुमति दे दें। माता-पिता के बुढ़ापे का एकमात्र सहारा बालक, उसे वे मरने की आज्ञा कैसे दे देते। पर बहुत हठ करने पर उन्हें भी आज्ञा देनी पड़ी। जिनका ऐसा वीर बेटा है, वह क्यों न अपने को धन्य समझते। बालक वेदिका पर आया, और बलि होने के लिये उसने सिर झुकाया। उसका साहस देख स्वयं इंद्र आए, और उसे उठाकर कहा—"तू धन्य है, तेरा देश धन्य है, जहाँ तुझ-जैसे वीर बालक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं !" फिर इंद्र ने उसे अपने हाथ से पुष्प-माला पहनाई, और ख़ूब वर्षा की, जिससे सर्वत्र आनंद-ही-आनंद दिखाई देने लगा, और सुकाल हो गया।

लेखक ने इस पुस्तक को लिखकर वीर बालक-बालिकाओं का अत्यधिक उपकार किया है। इस सुखांत कहानी को बड़ी ही सरल भाषा में पाठकों के सामने रखने में लेखक सफल-प्रयत्न रहा। इस पुस्तक का एक-एक पद बड़े महत्त्व का है। अगर ऐसी ही कहानियों को नए साँचे में ढालकर उपस्थित किया जाय, तो एक बार फिर शिवाजी और राणा प्रताप-जैसे वीर बालक बन सकते हैं।

हम आशा करते हैं, ऐसी वीर-रस-सुधा-वर्षिणी पुस्तक को प्रत्येक माता-पिता अपना धर्म समझकर, अपनी संतति के हाथों में देकर उनका भविष्य उज्ज्वल बनाएँगे।

(साहित्य-रत्न) जितेंद्र भारतीय (शास्त्री)

× × ×

हिंदी-काव्य की कलामयी तारिकाएँ—लेखक, श्रीव्यथित हृदय; प्रकाशक, प्रमोद-पुस्तकमाला, कटरा, प्रयाग; मूल्य २॥)

प्रस्तुत पुस्तक को आदि से अंत तक दो बार मनन करने के पश्चात् यह जानकर दुःख हुआ कि पुस्तक के लेखक और प्रकाशक ने काव्योन्नति की ओर ध्यान न देकर केवल व्यावसायिक दृष्टि से ही पुस्तक का निर्माण किया है। पुस्तक का शीर्षक-मात्र ही हिंदी की कवयित्रियों के लिये अपमान-जनक है। राजरानी मीरा, सहजोबाई, दयाबाई, श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान, श्रीमती महादेवी वर्मा आदि कवयित्रियों में से एक भी लेखक की दृष्टि में चंद्र या सूर्य नहीं। सबकी गणना तारिकाओं में करके लेखक महोदय ने स्त्री-कवयित्रियों के साथ अन्याय किया है।

पुस्तक की छपाई-सफ़ाई भी अच्छी नहीं। कुछ कवयित्रियों का परिचय प्रामाणिक नहीं। इसी ढंग की, परंतु इससे अच्छी पुस्तक स्त्री-कवि-कौमुदी है, जिसमें चुनी हुई लगभग बयासी कवयित्रियों की सरस रचनाएँ, सार-गर्भित भूमिका के साथ, दी हुई हैं। 'हिंदी-काव्य की कलामयी तारिकाएँ' के लेखक निष्पक्ष होकर, शांत चित्त से यदि विचार करें, तो पुस्तक की त्रुटियाँ उन्हें स्वयं दृष्टिगोचर हो जायँगी। हमारा कर्तव्य तो संकेत-मात्र कर देना है, जिससे काव्योन्नति में बाधा न पहुँचे।

सावित्री दुलारेलाल

सुधा के संबंध में श्रीयुत शिवपूजनसहायजी लिखते हैं—'सुधा' के सभी अंक बड़े शानदार होते हैं। संपादन-शैली अत्यंत परिष्कृत है। विशेषांक और परिशिष्टांक अतीव आकर्षक रहे। प्रत्येक अंक नेत्ररंजक एवं चित्तप्रसादक होता है। साहित्य के इतिहास में उसकी सेवाएँ चिरस्मरणीय रहेंगी। आपकी विदुषी देवीजी का सहयोग सोने में सुगंध है।

सुधा का प्रचार बढ़ाइए। ग्राहक बनें, और बनाएँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस स्तंभ में हम हिंदी-प्रेमियों की जानकारी और सुबीते के लिये प्रतिमास नई-नई पुस्तकों के नाम देते हैं। पिछले महीने में निम्न-लिखित पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं—

(१) 'साहित्य-लहरी' (काव्य)—लेखक, श्रीमहादेवप्रसादजी ; मूल्य १॥)

(२) 'रसवंती' (काव्य)—लेखक, श्रीयुत दिनकर ; मूल्य ।॥)

(३) 'हिंदी की प्राचीन और नवीन काव्य-धारा' (साहित्य)—लेखक, श्रीयुत सूर्यबलीसिंह एम्० ए० ; मूल्य १।)

(४) 'देवता' (कहानियाँ)—लेखक, श्री-कृष्णप्रसाद ; मूल्य ॥=)

(५) 'अपराधी' (उपन्यास)—लेखक, श्री-रामकृष्णदेव गर्ग ; मूल्य ।=)

(६) 'ऑपरेशन' (उपन्यास)—लेखक, श्रीयुत हीरालाल डॉक्टर ; मूल्य ।=)

(७) 'विश्वदर्शन' (दर्शन)—लेखक, श्री-व्रजनंदनसहाय ; मूल्य १)

(८) 'भारतीय दर्शन-परिचय' (दर्शन)—लेखक, प्रोफ़ेसर हरिमोहन झा ; मूल्य ५)

(९) 'अमर वाणी' (उपदेश)—लेखक, श्रीयुत आनंदीप्रसाद मिश्र ; मूल्य ॥।=)

(१०) 'दीर्घायु और दीर्घजीवियों के अनुभव' (स्वास्थ्य)—लेखक, श्रीयुत विनयमोहन शर्मा ; मूल्य ।॥)

(११) 'आरती' (काव्य)—लेखक, श्री-दुर्गाप्रसाद झुनझुनवाला ; मूल्य १॥)

(१२) 'विसर्जन' (उपन्यास)—लेखक, श्रीयुत त्रिवेणीप्रसाद ; मूल्य १॥)

(१३) 'नीलदेवी' (नाटक)—लेखक, प्रो० ललिताप्रसाद शुक्ल एम्० ए० ; मूल्य १)

(१४) 'जिज्ञासा' (निबंध)—लेखक, प्रो० व्रजभूषणलाल शर्मा ; मूल्य ॥)

(१५) 'आत्मपरिणय' (कहानी)—लेखक, प्रो० वीरेंद्रकुमारजी ; मूल्य २)

(१६) 'विश्व की महिलाएँ' (जीवनी)—लेखक, प्रो० राजेंद्रसिंह गौड़ एम्० ए० ; मूल्य १)

(१७) 'अरमानों की चिता' (काव्य)—लेखक, प्रो० दीनानाथजी व्यास विशारद; मूल्य ॥=)

(१८) 'चरित्र-निर्माण की कहानियाँ' (कहानियाँ)—लेखक, प्रो० व्यथित हृदय ; मूल्य ॥)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१. ब्रिटेन के युद्ध के उद्देश्य

ब्रिटेन के भूतपूर्व वैदेशिक सचिव, हाल में अमेरिका के ब्रिटिश राजदूत लॉर्ड हेलीफ़ॉक्स ने एक भोज के अवसर पर व्याख्यान देते हुए ब्रिटेन के युद्ध तथा शांति-उद्देश्यों की व्याख्या की। इस काल में भले ही उन शब्दों का हमारे लिये कोई बड़ा मूल्य न हो, लेकिन हैं ये शब्द महत्त्व-पूर्ण। आपके भाषण का वह अंश हम यहाँ उद्धृत करते हैं—

लॉर्ड हेलीफ़ॉक्स ने कहा—"ब्रिटेन का उद्देश्य युद्ध के बाद एक ऐसी व्यवस्था करना है, जिसमें फिर कभी ऐसी महान् दुर्घटना दुहराई न जा सके, और भारी समृद्धि के कार्य किए जा सकें।"

इस युद्ध को आप दो विचार-धाराओं का युद्ध कहते हैं। आपका कहना है—"यह युद्ध दो विचार-धाराओं के बीच जीवन-मरण का युद्ध है, और आपको यह भ्रम न होना चाहिए कि नाज़ियों की विजय के बाद भी वह सभ्यता जीवित रह सकती है, जो हमें और आपको समान रूप से प्रिय है। हमारे सामने सैनिक आक्रमण की ही समस्या नहीं, वरन् हमें आत्मिक आक्रमण का भी भय है, जिसका परिणाम कहीं अधिक गहरा और शस्त्रास्त्रों के प्रभाव से कहीं अधिक भयावना है।"

शांति के उद्देश्यों की व्याख्या करते हुए आप कहते हैं—"हमारी विजय व्यर्थ हो जायगी, यदि हम युद्ध के बाद उस कार्य में सफल न हो सके, जिसके द्वारा मानवीय स्वतंत्रता स्थायी रूप से स्थापित हो सकती है। युद्ध के बाद विजयी राष्ट्रों के सामने यह प्रमाणित करने का अवसर आएगा कि आज़ादी के क्या अर्थ हैं, और वह मानवीय हित के लिये क्या कर सकती है। इस समय भावी व्यवस्था की रूप-रेखा के बारे में विस्तृत रूप से व्याख्या कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकना असंभव है, परंतु उसकी कुछ-कुछ झलक हमें दिखाई दे रही है । राष्ट्रों की स्वतंत्रता और रक्षा पारस्परिक सहयोग पर ही निर्भर है। उसका आधार पारस्परिक रक्षा भी हो सकता है । आर्थिक क्षेत्र में तो प्रत्येक वस्तु इसी सहयोग पर निर्भर है, परंतु किसी भी राष्ट्र को दूसरे पर प्रभुत्व स्थापित करने का अधिकार नहीं । प्रत्येक राष्ट्र को, चाहे वह छोटा हो या बड़ा, समान अवसर और सुविधाएँ प्राप्त होंगी । अंतरराष्ट्रीय शांति राष्ट्रों के संबंधों में एक व्यवस्था-पूर्ण परिवर्तन से ही संभव है । जिस प्रकार व्यक्ति की स्वतंत्रता देश के अन्य व्यक्तियों की स्वतंत्रता को ध्यान में रखते हुए ही प्राप्त हो सकती है, उसी प्रकार भविष्य में प्रत्येक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र की राजनीतिक और आर्थिक आज़ादी का वैसे ही ध्यान रक्खेगा, जैसे, वह स्वयं चाहता है ।"

आगे आप कहते हैं—"ब्रिटेन किसी भी ऐसे राष्ट्र से सहयोग करने को उत्सुक है, जो ऐसी व्यवस्था-स्थापना के लिये उत्सुक हो । राष्ट्रों को उनकी इच्छा के विरुद्ध किसी संगठन में शामिल करना व्यर्थ है । हमें ऐसी राजनीतिक और आर्थिक व्यवस्था स्थापित करने की ज़रूरत है, जिसमें प्रत्येक राष्ट्र यह समझे कि उसका हित पारस्परिक सहयोग में ही है। ब्रिटिश कॉमनवेल्थ ने हमें यह विश्वास दिला दिया है कि विभिन्न जाति, रंग और रूप के राष्ट्र भी आज़ादी से एक दूसरे के साथ शामिल हो सकते हैं । अनेक दृष्टियों से भावी संसार को एक संपूर्ण भू-खंड के रूप में समझा जाना अनिवार्य हो जायगा । हमारा उद्देश्य समृद्धि का समानता के साथ उपयोग करना होगा ।"

वर्तमान युद्ध आरंभ होने और ब्रिटेन के युद्ध में सम्मिलित होने के साथ ही सब ओर से और ख़ासकर भारत की ओर से यह माँग पेश की गई थी कि ब्रिटेन अपने युद्ध के उद्देश्यों की घोषणा करे । इतने दिनों बाद लॉर्ड हेलीफ़ॉक्स ने जो यह व्याख्यान दिया है, उससे इस माँग की पूर्ति नहीं होती । गत महासमर के समय में भी ब्रिटेन की तरफ़ से बार-बार यही कहा जाता था कि वह निर्बल राष्ट्रों की रक्षा और शांति के उद्देश्यों के लिये लड़ाई में शामिल हुआ है, लेकिन युद्ध के बाद जो कुछ हुआ, वह युद्धकालीन घोषणाओं के विपरीत आचरण था । उससे साम्राज्यवाद का ज़ोर और बढ़ा । उपनिवेशों की जनता का और अधिक शोषण हुआ, शांति के बजाय संसार में आर्थिक संकटों के बवंडर और राष्ट्रों में परस्पर द्वेष-भावना व्याप्त हुई, और इस सबका नतीजा हुआ यह दूसरा महायुद्ध । आजकल वही पुराना नारा फिर दुहराया जा रहा है, और वह प्रजातंत्रवाद की रक्षा के किंचित् हेर-फेर के साथ—"युद्ध के बाद ऐसी व्यवस्था स्थापित हो, जिसमें कभी ऐसी महान् दुर्घटना दुहराई न जा सके ।" लॉर्ड हेलीफ़ॉक्स के इन शब्दों का अर्थ क्या हो सकता है, यह क्या पिछले तजुर्बे से हम समझ नहीं सकते ? दो विचार-धाराओं के युद्ध की बात भी बड़ी महत्त्व-पूर्ण है, पर वे दो कौन-सी विचार-धाराएँ हैं ? ब्रिटेन नाज़ी-विचार-धारा का कब से विरोधी हुआ ? क्या लॉर्ड हेलीफ़ॉक्स यह नहीं जानते कि नाज़ीवाद और साम्राज्यवाद में वही संबंध है, जो गाय और बछिया में होता है । नाज़ीवाद तो साम्राज्यवाद के पेट से ही निकला है, इसलिये चोर को मारने के साथ ही चोर की मा को मारना भी उतना ही ज़रूरी है । आप जर्मनी के नाज़ीवाद को ख़त्म करना चाहते हैं, तो अपने साम्राज्यवाद को भी ख़त्म कीजिए । और, उसका सबूत मिलेगा तब, जब भारत की स्वतंत्र सत्ता को आप और आपकी सरकार स्वीकार कर लेगी । उसी दशा में तो आपके भाषण के अंतिम अंश की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्ति हो सकती है, अन्यथा यह भी एक प्रलाप-मात्र ही समझा जायगा।

× × ×

२. राष्ट्र-भाषा का निर्माण

हमारे देश का यह दुर्भाग्य है कि जो भी आंदोलन देश की भलाई और उसकी उन्नति को दृष्टि में रखकर चलाया जाता है, उसी में देश के रहनेवालों की ओर से—उनकी ओर से, जिनकी भलाई के लिये वह है—रोड़े अटकाए जाते हैं। राष्ट्र-भाषा के प्रचार और प्रसार में भी यही बात दृष्टिगोचर होती है। हम निरंतर देखते चले आ रहे हैं कि सभाओं में, पत्रों में, वार्तालाप में यह वस्तु चर्चा का विषय बन गई है। इससे एक बात तो साफ़ हो जाती है। वह यह कि लोग उसकी महत्ता स्वीकार करते हैं, वे समझते हैं, यह प्रश्न भी हमारे अन्य प्रश्नों की भाँति महत्त्व का है। परंतु सवाल यह है कि जहाँ राष्ट्र-भाषा की चर्चा होती है, वहीं हम आत्मा को भुलाकर शरीर की चर्चा करने लगते हैं, गूदे को छोड़कर छाल पर लड़ने लगते हैं, भीतर की ओर न देखकर बाहर की अस्थायी दशा को अपने विवाद का विषय बना लेते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि जहाँ हमें इससे लाभ होना चाहिए, वहाँ नुक़सान होता है। हमारी धारणाएँ विपरीत दिशाओं की ओर बढ़ने लगती हैं, और मतभेदों की खाई चौड़ी होती जाती है। केवल शब्दों को लेकर झगड़ने, उसके वाक्यों की बनावट पर नाक-भौं सिकोड़ने के मानी यह हैं कि हम असलियत से दूर जा रहे हैं।

हमारा यह दृढ़ विश्वास है कि भाषा का निर्माण समय किया करता है। यदि कोई चाहे कि हम पत्रों में वर्णसंकरी भाषा लिखकर या केवल शब्दों का अनुपात ध्यान में रखकर राष्ट्र-भाषा का निर्माण कर लें, तो यह बात बिलकुल व्यर्थ होगी। इस प्रकार के कृत्यों द्वारा राष्ट्र-भाषा का निर्माण तो होगा नहीं, हाँ, चीनी औरतों की तरह उसकी प्रगति अवश्य रुक जायगी। हम जानते हैं, स्वाभाविक विकास में ही प्रकृतिगत नियमों का पालन हो रहा है। यदि हम किसी की प्रकृति के विरुद्ध चलेंगे, तो परिणाम उल्टा होगा। अतएव राष्ट्र-भाषा का जब प्रश्न उठता है, तब हम क्यों न उसे स्वभावतः बढ़ने दें। हिंदी-उर्दू का झगड़ा केवल हिंदी-उर्दू के लिये नहीं, बल्कि सांप्रदायिक मनोवृत्ति उभाड़ने का एक प्रमुख साधन बना लिया गया है, यह हम अच्छी तरह जानते हैं। संस्कृति, सभ्यता, धर्म आदि का कोरा नाम लेकर उनका संरक्षण नहीं किया जा सकता। भाषा के लिये यह आवश्यक है कि वह स्वभावतः फले-फूले, उसकी शाखाओं में काट-छाँट भी ज़रूरी है, पर इतनी नहीं कि वह बिलकुल ठूँठ रह जाय।

राष्ट्र-भाषा का निर्माण करनेवालों को यह समझने का कष्ट करना चाहिए कि राष्ट्र-भाषा का निर्माण जन-साधारण की सुख - दुख की बोली के सहारे बिना न होगा। बृहत्तर भारत की चालीस करोड़ जनता की आकांक्षाएँ, आशाएँ और हर्ष-शोक की भावनाएँ उस राष्ट्र-भाषा के निर्माण में पूरा योग दे सकेंगी। हिंदीवालों को भी दुराग्रह से बचना चाहिए, और व्यर्थ के विवाद में न पड़कर साहित्य के विकास की ओर अग्रसर होना चाहिए। अव्यवस्थित चित्त से उन्हें किसी प्रकार अपना अपनत्व नहीं खोना चाहिए। उन्हें यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि हिंदी उनकी भाषा है, वही राष्ट्र-भाषा होगी। यह वर्तमान संघर्ष समाप्त होगा ही, और उन्हें अपनी भावनाओं के अनुकूल ही राष्ट्र-भाषा का स्वरूप मिलेगा। आवश्यकता इस बात की है लगातार अब साहित्य के रिक्त अंगों की पूर्ति की जाय, विभिन्न विषयों पर सर्व-सुलभ ग्रंथ लिखे जायँ, नवीन योजनाओं द्वारा प्राचीन साहित्य राष्ट्र-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाषा हिंदी में प्रकाशित किया जाय, और अन्य प्रांतीय भाषाओं की प्रगति से और भी अधिक परिचित रहा जाय। यदि ऐसा हुआ, तो राष्ट्र-भाषा का निर्माण वैसा ही हो सकेगा, जैसा हम चाहते हैं। और फिर, विशाल साहित्य से पूर्ण हिंदी को राष्ट्र-भाषा-पद पर साधिकार शोभित होते देख हमें भी आनंद होगा।

× × ×

३. सर जॉर्ज ग्रियर्सन

यह जानकर सबको बड़ा दुःख हुआ होगा कि ९० वर्ष की उम्र में सर जॉर्ज ग्रियर्सन का स्वर्गवास हो गया! ग्रियर्सन साहब लगभग २०० भाषाओं के पंडित थे, और भारतीय भाषाओं के विषय में उनका अध्ययन गंभीर, विचार प्रौढ़ और सम्मतियाँ पथ-प्रदर्शक हैं। उनका जन्म सन् १८५१ में हुआ था, और शिक्षा डबलिन-कॉलेज में हुई थी। सन् १८७३ में आपने भारतीय सिविल सर्विस में प्रवेश किया, और १८९८ से १९०२ तक भारतीय भाषाओं की खोज का काम किया। आप काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा और वंगीय साहित्य-परिषद् के सदस्य थे। आपने यों तो कितनी ही पुस्तकें लिखी हैं, परंतु 'मार्डन वर्नाक्यूलर लिटरेचर ऑफ़ हिंदुस्तान', 'दि सतसई ऑफ़ बिहारी', 'लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ़ इंडिया', 'हैंडबुक ऑफ़ केथी करेक्टर', 'मेनुअल ऑफ़ काश्मीरी लैंग्वेज', 'डिक्शनरी ऑफ़ काश्मीरी लैंग्वेज' अधिक प्रसिद्ध हैं।

ग्रियर्सन साहब की कीर्ति के लिये उनका यह ठोस कार्य ही काफ़ी है, फिर भी भारत में उनका स्मारक बनना नितांत आवश्यक है। काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा को इस ओर सबसे पहले क़दम उठाना चाहिए।

अन्यत्र, चयन में, हम आपके विषय में एक लेख प्रकाशित कर रहे हैं। वह हिंदी के प्रसिद्ध कवि, लेखक और पुरातत्त्व-वेत्ता पांडेय लोचनप्रसादजी का लिखा हुआ है। उससे पाठकों को ज्ञात होगा कि स्वर्गीय ग्रियर्सन साहब कितने सहृदय थे। उनकी सहृदयता का अनुभव हमें भी एक बार हुआ था, जब 'बिहारी-रत्नाकर' को प्राप्त करके उन्होंने हमारे संपादन-कार्य की प्रशंसा की थी।

× × ×

४. युद्ध की प्रगति

विश्वव्यापी भीषण युद्ध की प्रगति की आलोचना करते हुए हमारा ध्यान सर्वप्रथम इस समय की कार्य करती शक्तियों की ओर जाता है। हर हिटलर की कूटनीति और दृढ़ता, दोनों ने मिलकर मित्र राष्ट्रों की शक्तियों का मुक़ाबिला किया है, लेकिन बेनगाजी के पतन के बाद बलकान राष्ट्रों और यूगोस्लेविया के आत्मसमर्पणों की कहानी बड़ी दुःख-जनक और करुणोत्पादिका है। ब्रिटिश शक्ति अजेय है, और उसकी तैयारी भी कम नहीं, यह हम सदैव से जानते हैं, परंतु जर्मनी की युद्ध-चातुरी से शक्ति का निष्फल हो जाना कम शोक की बात नहीं। जिब्राल्टर पर, कुछ दिन हुए, हमलों की बात सुनी थी, और स्पेन तथा जर्मनी के संबंधों की भी चर्चा चली थी, उधर ब्रिटेन ने भी स्पेन को आर्थिक सहायता दे दी है। स्पेन के सर्वेसर्वा जनरल फ्रैंको ने इस संबंध का कुछ निर्णयात्मक वक्तव्य नहीं दिया, और न अपना भावी विचार ही प्रकट किया, लेकिन उसके मौन को देखकर यह अनुमान लगाना मुश्किल नहीं कि वह ऐसी स्थिति में है कि कुछ कह नहीं सकता। परंतु यह बात भुलाने की नहीं कि स्पेन को शत्रु राष्ट्रों ने ही फ्रैंको के अधिनायकत्व में समर्पित किया, और गृह-युद्ध की सफलता उन्हीं की सहायता का फल है। इसलिये स्पेन न कहे, तब भी यह बात स्पष्ट है कि शत्रु राष्ट्र उसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहे जैसे नचा सकते हैं, और वह उनके कहने से सब कुछ कर सकता है।

युद्ध का रुख़ अधिकतर अब पूर्व की ओर हो रहा है, पर इसका आशय यह नहीं कि पश्चिम का ख़तरा कम हो गया है। मिस्र की सीमा तोड़कर जर्मनी की सेनाएँ भीतर प्रवेश कर चुकी हैं, और वहाँ निरंतर संघर्ष हो रहा है। फ्रांस के मार्शल पेताँ की सरकार ने जर्मनी के इशारे पर सीरिया से मार्ग देना निश्चय कर लिया है, और निकट के क्षेत्रों के समाचारों से यह बात साफ़ होती जा रही है कि इराक़ पर तेल की वजह से जर्मनी क़ब्ज़ा करना चाहता है। रशीदअली की सरकार का विद्रोह ब्रिटिश फ़ौजों ने दबा दिया था, पर उसका असर अधिक पड़ा नहीं जान पड़ता। तभी तो हवाई जहाज़ों के दस्ते-पर-दस्ते और टैंक तथा फ़ौजों से भरी रेलें इराक़ पहुँच रही हैं। मार्शल पेताँ की निंदा और फ्रांस की गद्दारी की व्याख्या अमेरिका के जल-सेनाध्यक्ष कर्नल नोक्स ने जिस प्रकार की है, उसे देखते हुए बुद्धिमान् व्यक्ति समझ सकता है कि फ्रांस का सीरिया से जर्मनी को मार्ग देना ब्रिटेन के लिये इस युद्ध में बड़े खेद की बात है। टर्की में जर्मनी के राजदूत हर बान पेपन ने दिन में दो-दो बार मंत्रणाएँ कीं, और वहाँ से लौट-लौटकर तीन-तीन हफ़्ते जर्मनी में टर्की की स्थिति पर बातें कीं। यह सब जर्मनी की कूटनीतिक चालों का प्रमाण है। इधर जापान सुदूर पूर्व की ओर अपनी लोलुप दृष्टि लगाए बैठा है, और अपने स्वार्थों के लिये धुरी राष्ट्रों की प्रत्येक बात मानने को तैयार है। उसकी चीन पर लगातार विजय और पूर्व की ओर प्रगति भी आशंका पैदा करनेवाली है। रूस के सर्वेसर्वा स्टेलिन ने ऐसे समय वैधानिक रूप से मोलोटोव की जगह प्रधान मंत्रित्व का पद स्वीकार किया, और अब नियमित ढंग से वहाँ का 'मालिक बन गया है। यह क्यों हुआ, यह तो भविष्य निश्चिय करेगा, पर इतना ज़रूर है कि अब वह निर्भीकता से रूस को चाहे जिधर ले जा सकता है।

इस समय की अंतरराष्ट्रीय स्थिति और जर्मनी की पूर्व की ओर बढ़ती हुई हरकतें देखकर भारत की स्थिति भी ख़तरे से ख़ाली नहीं। इराक़ की स्थिति क्या होगी, यह तो अभी पता नहीं, पर ब्रिटेन की अपेक्षा जर्मनी भारी पड़ रहा है, यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है। ईश्वर न करे, यदि कहीं जर्मनी ने इराक़ ले लिया, तो इसका अर्थ होगा कि भारत-सरकार को बड़ी कठिनाई होगी। इराक़ वह स्थान है, जहाँ युद्ध की सबसे अधिक काम में आनेवाली सामग्री तेल निकलता है। ईरान और इराक़ की सीमा पर तेल के कुओं पर क़ब्ज़ा करके जर्मनी भारत में क्या नहीं कर सकता? भारत में इस समय यद्यपि तैयारी ज़ोरों से हो रही है, परंतु जर्मनी के दैत्य की तरह बढ़ते टैंकों को आसानी से रोकने का प्रबंध क्या हो सकेगा, यह हमारी समझ में नहीं आता। इतनी दूर से ब्रिटेन शत्रु की भयंकर फ़ौजों का मुक़ाबिला कर सकेगा, यह असंभव नहीं, तो कठिन तो है ही। हम जानते हैं, हमसे भी अधिक भारत-सरकार को हमारी चिंता है, और वह तैयारी में कमी न रक्खेगी, पर भारतीयों को आंतरिक सहानुभूति और स्थानीय युद्ध की तैयारियों का मौक़ा दिए बिना भारत-सरकार को कुछ लाभ न होगा। कांग्रेस की वैधानिक माँगें स्वीकार करके अब भी सरकार को ख़तरे से अपनी और अपने हितैषियों की रक्षा करनी चाहिए।

× × ×

५. वैधानिक गति-अवरोध

भारत-मंत्री मि० अमेरी ने अपनी भारत-संबंधिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीति को स्पष्ट करते हुए हाउस ऑफ़् कामंस में जो भाषण दिया है, उसमें अगस्त की बातें दुहराने के अतिरिक्त और कोई नई बात नहीं, जिसके लिये उस भाषण का महत्त्व निर्धारित किया जाय। यही कारण है, जहाँ देश-भर में उस भाषण की निंदा की दृष्टि से देखा गया, वहाँ अँगरेज़ों ने भी उसकी निस्सारता की कम निंदा नहीं की, और वहाँ के पत्रों ने तो स्पष्टतया यह कह दिया कि भारत को इस प्रकार अधिक दिन तक भुलावे में रखनेवाली बातों से संतोष देना कठिन तो है ही, साथ ही असंभव भी। सर जॉर्ज शुस्टर सरीखे भारत की स्थिति का अधिकृत ज्ञान रखनेवाले अँगरेज़ ने भी खुले शब्दों में मि० अमेरी के भाषण को अप्रासंगिक बतलाया।

हमारी समझ में कांग्रेस ही भारत का प्रतिनिधित्व करनेवाली एकमात्र राष्ट्रीय संस्था है, और उसी के सुझावों और समर्थनों का सम्मान सरकार को लाभप्रद हो सकता है। हिंदू-महासभा या लीग का नाम लेकर और सांप्रदायिकता की खाई का सहारा लेकर कांग्रेस को ठुकराना और उसकी बात भारत के एक दल की बात कह देना कहाँ तक ठीक है, यह हमारी समझ में नहीं आता। ब्रिटेन आज जिस संघर्ष की परिस्थिति में है, उसमें उसे अपने उद्धार के लिये भारत की सहायता अपेक्षित है, इससे असहमति प्रकट नहीं की जा सकती, और हम समझते हैं, इससे असहमति प्रकट करने का दावा भी व्यर्थ है। भारत को ब्रिटेन के प्रति सहानुभूति उसके दुश्मनों से अधिक है, और वह चाहता है कि युद्ध में सरकार की विजय हो। पर इस शुभ कामना और आकांक्षा के साथ भारत की आत्मा की ध्वनि नहीं है, क्योंकि भारतीय जनता के दृष्टिकोण का, कांग्रेस की न्यायोचित माँगों का गवर्नमेंट कोई संतोष-जनक उत्तर नहीं देती, प्रत्युत उन्हीं पुरानी बातों को दुहराते हुए कांग्रेस पर लांछन लगाकर देश के गौण प्रश्नों को महत्त्व देने में अपना समय ख़र्च करती है। जब महात्माजी इस बात से सहमत हैं कि तुम स्वराज्य दे दो, मैं अपना घर सँभाल लूँगा, तब सरकार इस बात की चिंता क्यों करती है कि वह इसलिये स्वराज्य की घोषणा नहीं करती कि हमारे देश में अल्पसंख्यकों का प्रश्न है या हिंदू-मुसलिम-एकता की समस्या है। यह तो हमारी अपनी घरेलू बातें हैं, और हम समझते हैं, ख़राब बेटे भी बाप के बाद अपनी ज़िम्मेदारी सँभाल लेते हैं। कांग्रेस को स्वराज्य मिलने पर यह संकट न रहेगा, यह ध्रुव सत्य है।

आज भारत अपनी पूरी ताक़त से ब्रिटेन को मदद देने के लिये तैयार है, पर अवसर देने में ही देर हो रही है। सरकार को अपनी यह नीति बदलकर कांग्रेस को संतोष देना होगा, और निकट भविष्य में पूर्व की ओर जो युद्धाग्नि प्रज्वलित हो सकती है, उससे अपने तथा भारत को ख़तरे से बचाने के लिये शीघ्र ही देश में तैयारी करनी होगी, और तब भारत की सहायता से ब्रिटेन का अजेय साम्राज्य दृढ़ बना रह सकेगा। इस वैधानिक गति-अवरोध को दूर करने में भारत-सरकार को स्वयं क़दम उठाना चाहिए, और भारत तथा ब्रिटेन के संबंधों में एक स्वतंत्र राष्ट्रों-जैसी नीति का प्रचलन शीघ्र होना चाहिए। इसी में ब्रिटेन का कल्याण है, और इसी से वह अपनी सत्ता स्थिर रखने में समर्थ हो सकता है।

× × ×

६. सामयिक समस्या

दुर्भाग्य-वश भारतवर्ष की स्वतंत्रता अपनी ही गृह-कलह से दूर होती जा रही है। भारतीय राष्ट्र की एकीकरण-संबंधी योजना और तदनुसार हिंदू-मुसलिम-सम्मिलित प्रयत्न द्वारा ब्रिटिश सरकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को स्वराज्य या उत्तरदायित्व-पूर्ण शासन देने के लिये बाध्य करने में इस अभागे राष्ट्र के बेटे मिल नहीं पाते। मुसलिम-लीग और उसके एक-मात्र कर्णधार मि० जिन्ना इसके सबसे बड़े विरोधी हैं। वह यह प्रयत्न करते रहे हैं कि हिंदू-मुसलिम-एकता न होने पावे, और ये दोनो आपस में एक दूसरे को घृणा की दृष्टि से देखते रहें। और, यही कारण है कि उनकी १४ शर्तों से युक्त समझौते का मशविदा लीग के ध्येय-पूर्ण स्वतंत्रता के मार्ग से होता हुआ मदरास में पाकिस्तान-योजना के अंतिम लक्ष्य पर केंद्रित होकर रह गया। यही क्यों, लीग का ध्येय तो गिरगिट की तरह रंग बदलता रहा है, इसलिये अभी क्या-क्या न होगा, यह कोई नहीं कह सकता।

ब्रिटिश सरकार की नीति सदा से यह रही है कि वह इस प्रकार के वैमनस्य को प्रोत्साहन देकर अपना उल्लू सीधा करती रहे। यही कारण है, मि० अमेरी के वक्तव्य में वे ही पुरानी बातें दुहराई गई हैं, और स्वराज्य-घोषणा के स्वप्न देखना भी व्यर्थ सिद्ध कर दिया गया है। हम जानते हैं, सरकार, चाहे वह किसी प्रकार की हो, अपने स्वार्थों को नहीं छोड़ सकती, और जब तक वह शोषण कर सकती है, अपनी सत्ता नहीं हटा सकती। और, हमें इस सत्य से इनकार नहीं करना चाहिए कि सरकार का यह रवैया तब तक नहीं बदल सकता, जब तक हम स्वयं इस बात का परिचय न दें कि हम एक हैं, हमारा धर्म एक है, और हमारी समस्याएँ एक हैं।

लेकिन हम यह प्रमाणित करने में अब तक असमर्थ ही रहे हैं, और उस समय तक रहेंगे, जब तक मि० जिन्ना-जैसे स्वतंत्रता-विरोधी व्यक्ति इस देश में मौजूद रहेंगे। मदरास-अधिवेशन में कांग्रेस को गाली देना तो पूर्व-परिचित बात थी, इसके अतिरिक्त हिंदू-महासभा और उसके कार्यकर्ताओं को घमंडी कहकर उनसे बात करने तक की आवश्यकता व्यर्थ समझी गई। वीर सावरकर ने उस बात का जवाब देते हुए उनके पाकिस्तान-संबंधी विचारों की घोर निंदा की, और कहा कि हिंदुस्थान में पाकिस्तान-जैसे सैकड़ों राष्ट्र विगत शताब्दियों से स्थापित होते रहे, लेकिन भारत की अखंड राष्ट्रीयता नष्ट करने में किसी को सफलता नहीं मिली। साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि यदि मि० जिन्ना 'इस्लाम-राष्ट्र-संघ' का स्वप्न देखते हैं, तो हिंदू भी 'हिंदू-राष्ट्र-संघ' का स्वप्न देखते हैं, और यदि वह टर्की तक एक होना चाहते हैं, तो हिंदू भी चीन तक बौद्धों से मिलना जानते हैं। कुछ भी हो, मि० जिन्ना की यह कूटनीति राष्ट्रीय प्रगति की बाधिका है। उदार-दल के नेताओं की जो कॉन्फ्रेंस बंबई में हुई थी, उसके स्तंभ सर तेजबहादुर सप्रू, महात्मा गांधी तथा जिन्ना के बीच पत्र-व्यवहार में भी हम यह देखते हैं कि निर्दली नेता भी समस्या के हल के लिये महात्माजी की बात मानने को तैयार हैं, और हिंदू-मुसलिम-एकता के हामी हैं, पर मि० जिन्ना इस बात को टालना चाहते हैं, और एक बिजकनेवाले चतुष्पाद की भाँति अपनी पीठ पर हाथ भी नहीं रखने देते। इसका पता उनके महात्माजी के और सर सप्रू के पत्र-व्यवहार से चलता है, वह सप्रू को तो लिखते हैं कि मैं हिंदू-संप्रदाय के नेता की दृष्टि से महात्मा गांधी और किसी भी हिंदू-नेता से मिलने और हिंदू-मुसलिम-समस्याओं के हल खोजने के लिये तैयार हूँ, और प्रेस को वक्तव्य देते हुए सर सप्रू पर अशिष्टता के आरोप के साथ कहते हैं कि मैंने यही बात कही थी कि किसी भी हिंदू-नेता से मिलने को तैयार हूँ, और यह प्रतिक्रिया हुई महात्मा गांधी के हिंदू-संप्रदाय का प्रतिनिधि होने से इनकार करने के कारण। जो कुछ हो, मि० जिन्ना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की यह हठधर्मी ही इस समस्या को हल नहीं होने देती, बावजूद इसके कि सभी कांग्रेसी मुसलमान उनकी इस योजना के ख़िलाफ़ हैं, और जी-जान से इस विरोध को मिटाने का प्रयत्न करते हुए मुसलिम-जनता को समझा रहे हैं।

मुसलिम-लीग की यह नीति और कर्णधारों की ऐसी धाँधली-पूर्ण, बेसिर-पैर की बातें देखकर स्वभावतः एक प्रश्न उठता है कि आख़िर यह सब क्यों है? महात्माजी अरसे से मि० जिन्ना की ये चालें देखते हुए भी उनसे मिलते और कोशिश करते आ रहे हैं कि यह सांप्रदायिक समस्या हल हो, पर वह हल होने की अपेक्षा और उलझती जा रही है, उसकी पेचीदगी बढ़ती जा रही है, और हम नहीं समझते कि निकट भविष्य में कहाँ तक यह सुलझाई जा सकती है। महात्मा गांधी निराश नहीं, वह अपनी आशा से ही सब प्रकार के कार्य करने की हिम्मत रखते हैं, पर सर्व-साधारण को स्थिति-गांभीर्य देखकर संतोष नहीं होता। हमें भी यह देखना है कि आख़िर इसका हल क्या हो सकता है। सम्मिलित बटवारे या अन्य सुविधाओं की बात अब दूर की चीज़ हो गई है, और उसका ज़िक्र तक लाना मुसलिम-लीग का रवैया देखते हुए हमारी समझ में कोई बुद्धिमानी की बात न होगी। देश को हिंदू और मुसलिम राष्ट्र में विभाजन करना ही जब लीग का ध्येय है, तब उसकी तह में कुछ और ही चीज़ काम कर रही है। अभी बंबई के गुजराती राष्ट्रीय दैनिक 'जन्मभूमि' में सिंध के प्रसिद्ध साम्यवादी ओवेदुल्ला सिंधी के हस्ताक्षरों से एक उर्दू-पत्र की नक़ल, गुजराती अनुवाद और ब्लॉक के साथ, छपी है। इस पत्र द्वारा लीग की मनोवृत्ति पर काफ़ी प्रकाश पड़ता है। उसमें स्पष्ट रूप से पाकिस्तान की भीषण योजना के परिणाम-स्वरूप भारत को विदेशी राष्ट्रों को समर्पित करने तथा टर्की तक मुसलिम-राष्ट्र बनाने का विचार है। वह पत्र किसे लिखा गया, यह तो नहीं मालूम, लेकिन उसके संबोधनों, वाक्यों और शब्दों की ध्वनि से मालूम होता है कि वह मि० जिन्ना से घनिष्ट और असाधारण संबंध रखता है। अंतरराष्ट्रीय परिस्थिति का सिंहावलोकन करते हुए उसमें सरकार की डावाँडोल परिस्थिति तथा रूस, जापान, इटली और जर्मनी की साम्राज्यवादी मनोवृत्ति की ओर संकेत करते हुए कहा गया है कि बर्मा, बंगाल, बिहार जापान को तथा बंबई और मदरास इटली को दे दिए जायँगे। यू० पी० के पश्चिमी हिस्से—रुहेलखंड-मेरठ-सहित—तथा पंजाब, सरहद और सिंध को रूसी हथिया लेंगे, और भीतरी हिस्सा कुछ भारतीय राजे ले लेंगे, इस तरह टर्की तक एक मुसलिम राष्ट्र हो जायगा। उसमें अँगरेज़ों की आपत्तिकालीन परिस्थिति का वर्णन करते हुए लीग की पाकिस्तानवाली योजना की ओर इंगित किया गया और कहा गया है कि किसी प्रकार भी अब पाकिस्तान की योजना से कम की बात पर समझौता न होना चाहिए। इस पत्र को पढ़कर कई प्रकार के अनुमान लगाए जा सकते हैं, और वे अनुचित भी नहीं। मि० जिन्ना का व्यक्तित्व और भी कई जिन्नों द्वारा पोषित है, और शत्रु का भी उसमें हाथ है, ये दो बातें तो स्पष्ट ही हैं, साथ ही तीसरी बात यह भी है कि लीग जो अपना ध्येय बदलती जाती है, उसका कारण मामूली नहीं, बल्कि बहुत गहरा है, और निस्संदेह उसकी जड़ में कोई भारी षड्यंत्र काम कर रहा है, जिसके बल पर मि० जिन्ना अँगूठा दिखाने का साहस कर सकते हैं।

यह परिस्थिति है हमारी इस सांप्रदायिक समस्या की। अब प्रश्न है कि इसका हल क्या हो? हमारी समझ में तो यही बात आती है कि मि०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिन्ना को पूरी मुसलिम-जनता का प्रतिनिधि न होते हुए भी जो महत्त्व मिला है, वह काफ़ी है। अब उनसे इस मामले में अधिक आशा करना भूल होगी। कांग्रेस को अपना आंदोलन अधिक-से-अधिक सर्व-साधारण तक पहुँचाना चाहिए, ग्रामीण जनता तक उसके आंदोलन की गहरी छाया पहुँचनी चाहिए, और रचनात्मक कार्य-क्रम द्वारा किसान, मज़दूर तथा दलितवर्ग की एकता को शीघ्रता-पूर्वक देश की आशा के साथ जोड़ देना चाहिए। कांग्रेस सबकी संस्था है, वह भारत का प्रतिनिधित्व करती है, और चालीस करोड़ की आवाज़ उसमें बोलती है। उसके कार्य में शक्ति होगी, तो जिन्ना-जैसे व्यक्ति सदा के लिये चुप हो जायँगे। हमारा विश्वास है, भारत के सभी दल इस बात का प्रयत्न करेंगे कि वे हिंदू-मुसलिम-हितों की एकता पर ज़ोर दें, और इस प्रकार समझौते के लिये अपनी कार्य-शक्ति का अपव्यय न करें।

× × ×

७. सम्मेलन पर रोक

जिस दिन हमने यह सुना कि निज़ाम की स्वेच्छाचारी और निरंकुश सरकार ने आगामी हिंदी-साहित्य-सम्मेलन की ज़ोरदार तैयारियाँ रोकते हुए अपना यह फ़रमान निकाल दिया कि हैदराबाद में सम्मेलन नहीं हो सकेगा, उस दिन हमें दुःख हुआ, वेदना हुई, लेकिन आश्चर्य नहीं हुआ। क्योंकि हम यह बात भले प्रकार जानते हैं कि निज़ाम-सरकार सदैव से यह प्रयत्न करती रही है कि अपने यहाँ हिंदू-हितों का गला घोटती रहे, हिंदुओं को अधिकारों से वंचित रखने में अपनी शक्ति का अपव्यय करती रहे, और कोई भी हिंदू-संस्कृति-संबंधी आंदोलन दबाने में उचित और अनुचित उपाय काम में लाती रहे। यह बात किसी से छिपी नहीं कि निज़ाम की सरकार के शासन में रहनेवाली जनता का ८५ प्रतिशत भाग हिंदू है, और १५ प्रतिशत भाग मुसलमान, फिर भी वहाँ हिंदुओं पर जिस प्रकार की कठोरता बरती जाती है, जिस प्रकार उनके धार्मिक और साहित्यिक अधिकार कुचले जाते हैं, उसे सुनकर दाँतों-तले उँगली दबानी पड़ती है! जिस निज़ाम के राज्य में १५ प्रतिशत मुसलमानों की संस्कृति के रक्षण में लाखों रुपया ख़र्च किया जाता हो, मस्जिदों और जातीय त्योहारों के लिये स्वयं सरकार की ओर से प्रबंध किया जाता हो, उर्दू के लिये रात-दिन ज़बरदस्ती प्रचार किया जाता हो, उसी राज्य में ८५ प्रतिशत हिंदुओं को पूजा करने के लिये मंदिरों के अभाव में गोदावरी के किनारे जाना पड़ता हो, अपने पर्व मनाने के लिये घरों के कोनों में बैठकर आँसू बहाने पड़ते हों, अपनी मातृभाषा हिंदी के स्थान में अनिवार्यतः उर्दू की शिक्षा ग्रहण करनी पड़ती हो, ये दो विरोधी बातें देखकर किसी भी भारतीय एकता-प्रेमी को पीड़ा हुए बिना न रहेगी। हम यह बात अभी नहीं भूले कि किस प्रकार आर्य-समाज का आंदोलन दबाने में निज़ाम-सरकार ने प्रयत्न किया, और किस प्रकार सत्याग्रह करने पर दमन में भी कमी नहीं रक्खी।

हैदराबाद की रियासत मुसलमानों की सबसे बड़ी सहायक रियासत है। वहाँ की उस्मानिया-युनिवर्सिटी ने उर्दू-साहित्य और भाषा को समृद्ध करने में वह काम किया है, जो हिंदीवालों की आँखें खोलनेवाला है। राष्ट्र-भाषा हिंदी का आंदोलन बढ़ते और नागरी-लिपि की राष्ट्र-लिपि-संबंधी कठिनाइयाँ देखकर वहाँ उर्दू की बेसिक लिपि भी निकाल ली गई है, जिससे उर्दू की लिपि-संबंधी बहुत-सी कठिनाइयाँ दूर हो जाती हैं। इस प्रकार निरंतर वहाँ यह प्रयत्न हो रहा है कि हिंदी की प्रगति रोकी जाय, उसका अध्ययन-अध्यापन और आंदोलन आगे न बढ़ने दिया जाय, और अपनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रेष्ठता दिखाने के लिये उर्दू को शीघ्रातिशीघ्र आधुनिक वैज्ञानिक संसार के अनुकूल बना लिया जाय।

पूना-सम्मेलन में यह निश्चय हुआ था कि साहित्य-सम्मेलन का अगला अधिवेशन हैदराबाद में हो, और यह निश्चय यही समझकर किया गया था कि हैदराबाद की हिंदू जनता यह समझ जाय कि हमारे साहित्य का स्वरूप क्या है, और उसकी गति किस ओर है। हमें याद है कि हैदराबाद से आए हुए प्रतिनिधियों ने बड़े गर्व का अनुभव किया था, जब उनका निमंत्रण पूने में स्वीकार किया गया था, और उन्होंने लौटते ही एक समिति का निर्माण भी काम चलाने के लिये कर लिया था। उन्हें पूर्ण आशा भी थी कि वे सम्मेलन को सफल बना ले जाते, पर हिंदीवालों का और साथ ही हैदराबाद की जनता का भी यह दुर्भाग्य है कि उनकी आशा पूरी नहीं हुई।

हम निज़ाम-सरकार की सेवा में यह निवेदन करना चाहते हैं कि भारतवर्ष अखंड और अविभाज्य है, और हिंदू-मुसलमान उस भारतीय राष्ट्र की दो संतानें हैं, जिन्हें उसी से जीवन की आवश्यक सामग्रियाँ मिलती हैं। यदि एक खेत में दो जाति के पौदे हों, वे एक ही प्रकार की खाद, ज़मीन, जल और वायु की आवश्यकता अनुभव करते हों, और माली एक जाति के पौदों के लिये अनावश्यक जीवन-सामग्री एकत्र कर दे, तथा दूसरी जातिवालों को अपनी कृपा-दृष्टि से भी वंचित कर दे, और फिर यह आशा करे कि उसकी फ़सल निरंतर बढ़ती जाय, यह भयंकर भूल है। निज़ाम-सरकार को यह बात समझ लेनी चाहिए कि वह जब तक आंतरिक वैमनस्य नहीं मिटा देती, तब तक उसके राज्य में शासन की एकता की जो शाब्दिक घोषणाएँ की जाती हैं, उनका मूल्य कुछ भी नहीं। साहित्य किसी एक व्यक्ति की संपत्ति नहीं, वह हिंदू और मुसलमान के भेदों को गौण स्थान देते हुए राष्ट्रीय प्रगति को बल देनेवाला एक संबल है। हम साहित्य को सांप्रदायिकता के रंग में रँगकर अपने को तो पाप का भागी बनाते ही हैं, साथ ही साहित्य को भी उसके आसन से नीचे गिराते हैं। हम आशा करते हैं, निज़ाम-सरकार अपनी साहित्य-सम्मेलन-संबंधी निषेध-आज्ञा पर पुनः विचार करेगी, और ऐसा निर्णय देगी, जिससे उसकी लोकप्रियता को जीवन मिले, और जनता की भयभीत आँखें हर्ष और अभय की ज्योति से प्रकाशित हो उठें।

× × ×

८. हिंदू-मुसलिम-दंगे

पिछले दो महीनों से विभिन्न स्थानों में लगातार जो सांप्रदायिक दंगे होते रहे हैं, उनके विवरण समाचार-पत्रों में पढ़कर रोमांच हुए बिना नहीं रहता। सक्खर में जिस नृशंसता का परिचय दिया गया था, उसकी पुनरावृत्ति अब की बार ढाके से आरंभ हुई, और फिर तो अहमदाबाद, बंबई, कानपुर, बिहार-शरीफ़, पटना आदि स्थानों में निरंतर दंगों की ज्वालाएँ विषमयी नागिनों-सी फुंकारती हुई फैल गईं। सैकड़ों व्यक्ति मृत्यु की गोद में सो गए, हज़ारों बेघर-बार हो गए, लाखों की संख्या में स्त्री और बच्चे शहर छोड़कर जिधर उन्हें रास्ता मिला, भाग निकले, न उन्हें घर की सुध रही, न अपने माल-असबाब की। वे तो केवल जीवन बचाने की चिंता में स्टेशनों की ओर दौड़े। यह स्थिति अभी पूर्ण-रूपेण शांत नहीं हुई, परंतु फिर भी उन स्थानों के दंगे रोकने के प्रयत्न कुछ भी नहीं किए गए। ढाके का सांप्रदायिक दंगा तो हक़-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंत्रिमंडल के लिये एक ऐसा धब्बा है, जो संभवतः लाख प्रयत्न करने पर भी नहीं छूट सकता।

इन दंगों का उत्तरदायित्व किस पर है? कौन इस निष्ठुरता का परिचय देता है, और किसमें इस प्रकार के धार्मिक उन्माद की तरंग उठती है? ये कुछ प्रश्न हैं, जिन पर हिंदू-मुसलिम-दंगों की नींव स्थिर है। स्पष्ट है, दंगे करानेवाले कुछ ऐसी प्रवृत्ति के लोग हैं, जिन्हें ग़रीबों और निम्न वर्ग के जीवन की गति-विधि से, उनके दुःख-सुख से कोई सहानुभूति नहीं, और जो कुछ गुंडों को उत्तेजना देकर अपनी धूर्तता का परिचय देते हैं। वे अपने को बड़ा धार्मिक भले ही समझते हों, लेकिन दंगों में हताहत और मृत व्यक्तियों के परिवारों की आहें उन्हें नरक की ज्वाला में जलाने को काफ़ी हैं।

महात्मा गांधी ने दो वक्तव्य निकालकर दंगों की समस्या पर प्रकाश डालते हुए कांग्रेस के प्रभाव की हीनता और कांग्रेसियों की कायरता को इसका ज़िम्मेदार ठहराया है। वह कहते हैं, कांग्रेस दंगे नहीं रोक सकती, ऐसी परिस्थिति पर क़ाबू नहीं रख सकती, तो वह कुछ नहीं कर सकती, और ऐसी परिस्थिति में यदि ब्रिटिश गवर्नमेंट यहाँ से चली जाती है, तो कांग्रेस शासन-सूत्र भी नहीं सँभाल सकती। साथ ही उन्होंने सच्ची अहिंसा का यह बल बतलाया कि उसके द्वारा हिंसा ठहर नहीं सकती, और सच्चा कांग्रेसी दंगाइयों में जाकर अहिंसक रूप में एकता के लिये प्राण होम देना उपयुक्त समझेगा, और अपने बलिदान से एक जीवित प्रमाण इस बात का रख जायगा कि अहिंसा में कितनी शक्ति होती है। महात्माजी यह भी कहते हैं कि नागरिकों की कायरता से गुंडे फ़ायदा उठा लेते हैं। महात्माजी से हम इस बात से तो पूर्ण रूप से सहमत हैं कि नागरिक गुंडों का मुक़ाबिला करें, और कायरता का परिचय न दें, पर अहिंसक रूप से किस प्रकार पीछे से छुरा भोंककर हत्या करनेवाले बदमाशों को रोका जा सकता है, यह हमारी समझ में नहीं आता। जिस अहिंसा का हल महात्माजी दंगों की शांति के लिये देते हैं, वह अहिंसा शायद भारत में कुछ ही व्यक्ति पालन कर सकते हैं। रही शासन की बात, सो उसके लिये दंड की आवश्यकता होगी ही, और बिना उसके अहिंसक सरकार इस आज की दुनिया में साँस भी नहीं ले सकती, उसका चलना और जीवित रहना तो दूर की बात है।

फिर भी दंगों को सदा के लिये रोकने के लिये महात्माजी की एक बात बड़ी लाभप्रद है, और वह है नागरिकों का संगठन। यदि प्रत्येक शहर के नागरिक दंगाइयों को दंगा करने का मौक़ा ही न दें, तो सांप्रदायिक दंगे सदा को शांत हो सकते हैं, और फिर किसी भी गुंडे को, चाहे वह हिंदू हो या मुसलमान, दंगा करने की हिम्मत न होगी। ऐसी स्थिति में यदि नागरिक अपनी रक्षा का भार स्वयं उठाएँ, और कायरता का परिचय न दें, तो प्रांतीय सरकारों और सांप्रदायिक मनोवृत्ति-वाले कुछ धार्मिक ढोंगियों की धाँधली और चालबाज़ी भी कुछ काम न कर सकेगी, तथा यह हिंदू-मुसलिम-दंगों की समस्या भी बहुत कुछ हल हो जायगी।

पर प्रश्न यह है कि यह स्नेह-संगठन हो कैसे? सैकड़ों वर्ष की ग़ुलामी के कारण हिंदुओं में कायरता ने मानो घर कर लिया है। इस असंगठन के मूल में है छुआछूत—जाति-पाँति, जिसने हमें हज़ारों टुकड़ों में बाँट दिया है। जब तक हिंदू-मात्र एक नहीं हो सकते, तब तक हिंदू-मुसलिम-मेल भी दूर की चीज़ है। मुसलमानों में रोटी-बेटी-व्यवहार का तादृश निषेध नहीं। इसीलिये उनमें संगठन होने में देर नहीं लगती। अगर हिंदू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वराज्य चाहते हैं, तो उन्हें जाति-पाँति के जाल को दूर करके एक हो जाना पड़ेगा, और तब जो हिंदू-मुसलिम-मेल होगा, उसके लिये स्वराज्य-प्राप्ति एक आसान चीज़ हो जायगी। देखें, ईश्वर हिंदुओं को कब सुबुद्धि देता है।

× × ×

९. साहित्यिक और सरकार

आज देश में चारो ओर सेवाग्राम के संत के संकेत पर सत्याग्रहियों के दल जेलों में भरे जा रहे हैं। इस आंदोलन में लोगों की आत्मा एक अभूतपूर्व उत्साह से देश-भक्ति की मदिरा पीने को मचल पड़ी है, और हम देख रहे हैं, निरंतर लोग चले जा रहे हैं। राजनीतिक जागृति का इससे बढ़कर प्रमाण क्या हो सकता है? भारत-सरकार इस आंदोलन से प्रभावित है, इसमें संदेह हमें उस समय बिलकुल नहीं रहा, जब हमने समाचार-पत्रों में हिंदी के राष्ट्रीय कवि बाबू मैथिलीशरण गुप्त के, भारत-रक्षा-क़ानून के मातहत, अपने बड़े भाई के साथ गिरफ़्तार होने का समाचार पढ़ा। वैसे तो कुछ दिन पहले हिंदी के प्रसिद्ध कवि श्रीनरेंद्र शर्मा को भी क़ानून की बेड़ियों में जकड़ा जा चुका था, पर गुप्तजी-जैसे सरल, सौम्य और संस्कृति-प्रेमी तथा अपनी निजी पीड़ा से अभिभूत व्यक्ति की गिरफ़्तारी पर आश्चर्य अवश्य हुआ। वह तो विशुद्ध साहित्य-सेवी थे, और उनका, हमारी समझ में, सक्रिय राजनीति से कोई संबंध न था। इसी प्रकार आगरे के प्रसिद्ध साहित्यिक और एकमात्र आलोचना-प्रधान मासिक 'साहित्य-संदेश' के संपादक श्रीमहेंद्रजी को भी, कांग्रेस से दूर रहने पर भी, गिरफ़्तार कर लिया गया। सरकार की दृष्टि की आलोचना करना हमारा कार्य नहीं, परंतु साहित्यिकों से यह बात हमें ज़रूर कहनी है कि अब केवल पुस्तकों की ज़ब्ती से सरकार संतुष्ट नहीं हो सकती, या यों कहें किस मय साहित्यिकों का भी बलिदान चाहता है। हम तो इसका स्वागत करते हैं, और अपने कारागार-प्रवासी साहित्यिक बंधुओं को साधुवाद देते हैं कि उन्होंने अपने इस आदर्श द्वारा भी देश के जीवन को राष्ट्रीयता से भरा। ये परीक्षाएँ साहित्यिकों को एक नया प्रमाण-पत्र देंगी, और उन प्रमाण-पत्रों के बाद वे हमारे राष्ट्र का कल्याण करने में और अधिक समर्थ हो सकेंगे। गुप्तजी-जैसे वयोवृद्ध और सांस्कृतिक जीवन बितानेवाले साहित्यिक संतों के जेल जाने पर अब हमारा जगत् साहित्यिकों को कोरा काग़ज़ काला करनेवाला कहने का साहस न करेगा, यह साहित्यिकों के लिये गौरव की बात है।

× × ×

१०. भारत में युद्ध-सामग्री का निर्माण

जैसे-जैसे युद्ध की प्रगति तीव्रतर होती जा रही है, वैसे-ही-वैसे भारत-सरकार इस बात का प्रयत्न कर रही है कि युद्ध में काम आनेवाली वस्तुएँ भारत में ही तैयार की जायँ। और, इस कार्य के लिये बड़े वेग से कार्य आरंभ हो गया है। अभी रसद-विभाग में उपयोगी वस्तुओं के बीस हज़ार नमूने पेश करके, जो भारत में ही बनी थीं, इस बात को पूर्णरूपेण प्रमाणित कर दिया गया है कि भारत में सब प्रकार की वस्तुएँ बन सकती हैं। खाना खाने के चीनी के बर्तनों, रबर की डाटों, सेफ़्टी पिनों से लेकर खाद्य पदार्थों में सभी प्रकार की चाज़ों के नमूने तैयार किए गए हैं, और वैज्ञानिक कार्य के लिये वस्तुएँ तैयार की जा रही हैं। ऐसी स्थिति में भारत में इन चीज़ों का बनना भी शुभ-सूचक है।

युद्ध-सामग्री के अतिरिक्त भारत में अन्य प्रयोग भी हो रहे हैं। भारतीय मसालों से विभिन्न प्रकार के रंग, वारनिशें और तेल बनाने के लिये प्रयोग हो रहे हैं, और वे चीज़ें टिकाऊ तथा विदेश में बनी वस्तुओं से सुंदरता में बढ़ी मालूम पड़ती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धनवाद का जो माइनिंग स्कूल खुला है, उसमें से इस वर्ष २१ विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करके निकले हैं, और एक विशेषज्ञ होने के लिये इँगलैंड गया है। साम्राज्य के पूर्वी देशों की रसद-कौंसिल में भी, जिसका प्रधान कार्यालय भौगोलिक सुविधाओं की दृष्टि से भारत में ही रक्खा गया है, भारत की स्थिति को सम्मान-पूर्वक स्वीकार किया गया है। इसमें भारत की ओर से कौंसिल के सदस्य श्रीयुत एम्० एस्० ए० हैदरी को नियुक्त किया गया है। इस रसद-कौंसिल में चालीस-पचास हज़ार रसद-संबंधी वस्तुओं की योजना कार्यान्वित होगी। १६ देशों के प्रतिनिधियों से युक्त इस रसद-कौंसिल के निर्णय बड़े महत्त्व-पूर्ण हैं।

श्रीरवींद्रनाथ ठाकुर

भारतवर्ष में जिस प्रकार की औद्योगिक उन्नति की चेष्टा आज लड़ाई के ज़माने में की जा रही है, उस प्रकार की यदि आरंभ से की जाती, और भारत की महत्ता समझी जाती, तो भारत-सरकार को आज रसद-सामग्री के लिये दूसरों का मुँह ताकने की आवश्यकता न पड़ती। सुबह का भूला शाम को घर आता है, तो लोग उसे भूला नहीं कहते, पर जो उस वक्त घर आवे, जब दुनिया उसे सहायता न दे, तब उसे क्या कहा जाय, यह हमारी समझ में नहीं आता।

× × ×

११. कवींद्र रवींद्र की ८०वीं वर्ष-गाँठ

विदेशों में भारतवर्ष का नाम ऊँचा करनेवाले, सरस्वती के कृपा-पात्र और साधना-लीन यती श्री र वीं द्र ना थ टैगोर ८० वर्ष के होकर ८१वीं में प्रवेश कर रहे हैं, इसके लिये हम परमात्मा से उनके चिरजीवी होने की प्रार्थना कर रहे हैं। कवींद्र रवींद्र का जीवन त्याग और तपस्या का जीवन रहा है। लेखनी के बल पर सारे भारत में ही नहीं, अपितु विश्व-भर में उन्होंने अपनी प्रतिभा के पुष्पों के पराग की अजस्र वर्षा की है। १९१३ में आपको स्वीडिश एकेडेमी का नोबुल-प्राइज़ मिला था। तब से आप बराबर संसार की प्रत्येक युनिवर्सिटी और गवर्नमेंट द्वारा सम्मानित होते रहे हैं। भारत-सरकार ने भी आपको सर की उपाधि दी थी, जिसे आपने अस्वीकार कर दिया। वास्तव में कवींद्र-जैसे अतिमानव को लौकिक उपाधियाँ शोभा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं देतीं, वरन् उपाधियाँ ही उनके स्पर्श से गौरव पाती हैं। आपकी 'विश्व-भारती' और अनंत साहित्य-सेवा ही आपके अमरत्व के लिये बस है। हम आपके दीर्घ जीवन की कामना करते हुए आपको बधाई देते हैं!

× × ×

१२. ग्वालियर की 'मजलिसे-आम'

ग्वालियर-राज्य देशी राज्यों में बहुत उन्नत है, और प्रत्येक जाति के साहित्य, भाषा तथा संस्कृति के सम्मान का पक्षपाती है। इस राज्य में मुसलमानों की संस्था 'मजलिसे-आम' बड़ा काम कर रही है। उसने अपने गत अधिवेशन में दो महत्त्व-पूर्ण प्रस्ताव पास किए—(१) राज्य की भाषा उर्दू न रखकर सर्व-साधारण की बोल-चाल की भाषा हो। (२) सरकारी नौकरियों का बटवारा सांप्रदायिक ढंग पर न हो। ये प्रस्ताव प्रत्येक भारतीय मुसलमान और हिंदू तथा सांप्रदायिक लोगों की आँखें खोल देते हैं। काश्मीर के उन भाइयों को, जो नागरी-लिपि के प्रश्न पर एसेंबली से उठ गए थे, इससे शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए। हम 'मजलिसे-आम' के इन प्रस्तावों की प्रशंसा करते हुए उसके कार्यकर्ताओं को बधाई देते हैं कि उन्होंने राष्ट्रीयता के दृष्टिकोण को अपनी संस्था में स्थान दिया है!

× × ×

१३. कमला नेहरू-स्मारक

महात्मा गांधी ने, प्रयाग में, कमला नेहरू-अस्पताल का जो उद्घाटन अभी हाल में किया, उसमें बीस हज़ार नर-नारियों ने महात्मा गांधी के साथ स्व० कमलाजी के लिये अपनी श्रद्धांजलि अर्पण की थी। नेहरू-परिवार में जवाहरलालजी की छोटी बहन श्रीमती कृष्णा हाथीसिंह और श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित की पुत्रियाँ उपस्थित थीं। शेष परिवार उस समय सीखचों के अंदर बंद था। श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित, श्रीआर० एस्० पंडित और पं० जवाहरलाल नेहरू ने जेल

महात्माजी को नारियल-प्रदान

[एक पारसी महिला ने महात्माजी को कमला नेहरू-अस्पताल के उद्घाटनोत्सव पर नारियल भेंट किया।]

के अंदर से ही अपनी शुभ कामनाएँ प्रकट कीं। नेहरू-परिवार के त्याग और बलिदान के इतिहास में यह भी एक निराला अध्याय है। स्व० कमलाजी का जैसा जीवन था, उनकी जैसी अभिलाषा थी, उसी के अनुरूप उनका स्मारक बनाया गया। जीवित कमलाजी देश की करोड़ों जनता की सेवा करती थीं, आज उनकी स्मृति में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

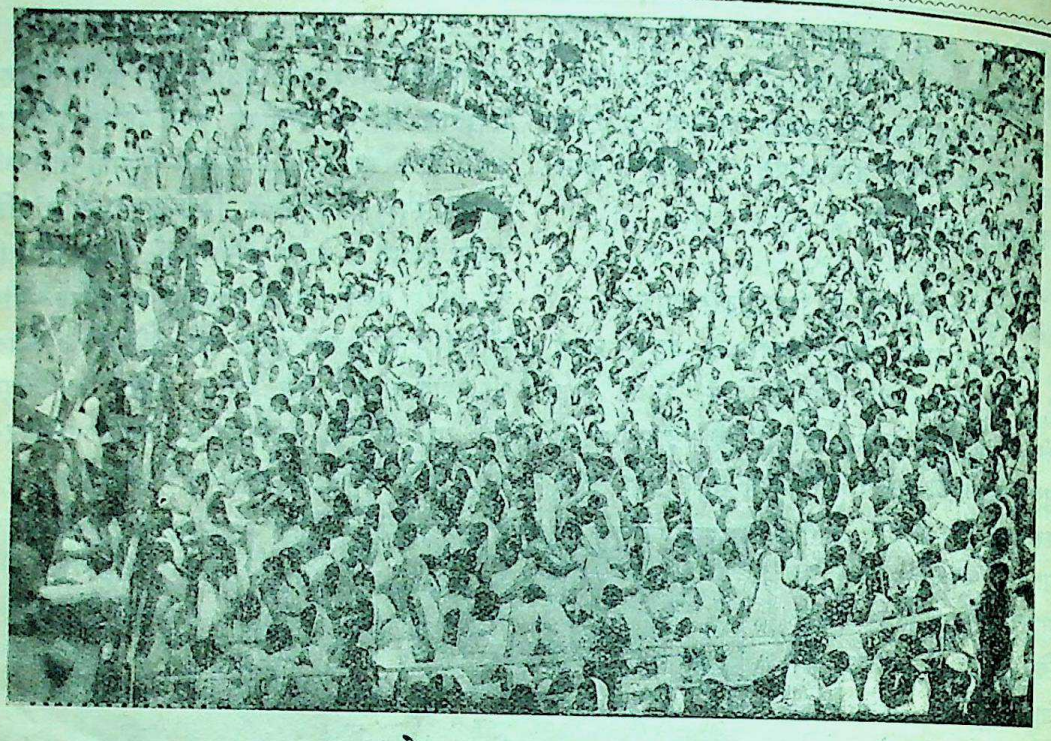

कमला नेहरू-अस्पताल का उद्घाटन

[इलाहाबाद में कमला नेहरू-अस्पताल के उद्घाटनोत्सव के अवसर पर दर्शकों की अपार भीड़ ।]

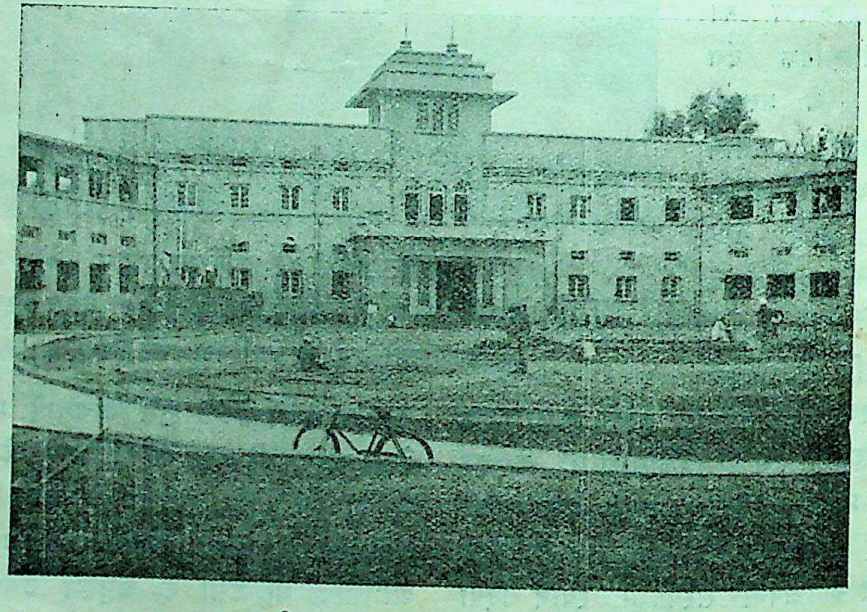

कमला नेहरू-अस्पताल का भव्य भवन

[इसका उद्घाटन-समारोह विगत २८ फ़रवरी को महात्मा गांधीजी ने इलाहाबाद में किया ।]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बनाया गया अस्पताल हज़ारों बहनों की सेवा करेगा—उन्हें रोग से मुक्ति दिला देगा। महात्मा गांधी ने अस्पताल का कार्य-संचालन करने के लिये पाँच लाख रुपए की अपील की थी।

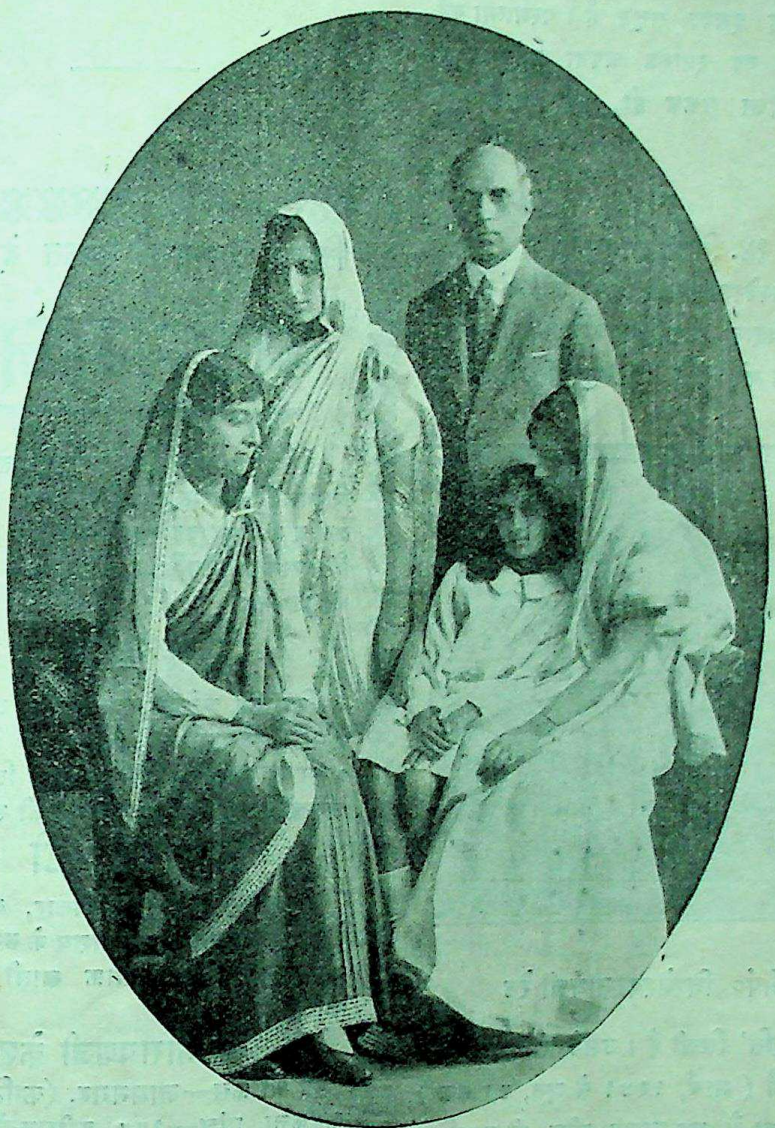

स्वर्गीया श्रीमती कमला नेहरू

(परिवार-सहित)

[खड़े—श्रीमती कृष्णा (छोटी नंद) और पं० जवाहरलाल नेहरू (पति)
बैठी—श्रीमती कमला नेहरू, इंदिरा (पुत्री) और श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित (बड़ी नंद)]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश ने बड़ी तत्परता से इस रक़म की पूर्ति कर दी। कमलाजी के व्यक्तित्व का लोगों के दिलों पर कितना असर है, यह इसका सबूत है। परमात्मा करे, कमलाजी का यह स्मारक अपना उद्देश्य पूरा करने में उत्तरोत्तर सफल हो, यही हमारी शुभ कामना है।

× × ×

१४. विश्वेश्वर-स्मृति

श्रीपं० विश्वेश्वरनाथजी रेउ हिंदी-संसार के माने हुए विद्वान् और पुरातत्त्ववेत्ता हैं। उन्होंने वर्तमान समय को देखते हुए मनुस्मृति के ढंग पर

श्रीपं० विश्वेश्वरनाथजी रेउ

'विश्वेश्वर-स्मृति' लिखी है। उसके तीन अधिकार हमने सुधा में (मार्च, १९४१ से जून, ४१ तक) छापे हैं। आशा है, यह पुस्तक शीघ्र ही प्रकाशित होगी। तभी इसका महत्त्व भी प्रकट होगा। समय के अनुसार प्रत्येक देश की व्यवस्था बदलती है, और बदलनी भी चाहिए। इसलिये हमें भी अपनी पुरानी रूढ़ियाँ छोड़कर नवयुग के अनुसार अपनी सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक व्यवस्था कर लेनी चाहिए। इसी में कल्याण है।

दिल व दिमाग़ को ताक़त देनेवाली

मदनमंजरी

क़ब्ज़ियत, स्वप्नदोष, धातुक्षीणता, सुस्ती, शिथिलता व कमज़ोरी इत्यादि को नष्ट करके बल व वीर्य को बढ़ाकर नया जीवन देनेवाली विश्वसनीय ओषधि। क़ीमत ४० गोलियों की डि० १)

पागल वटी

चित्तभ्रम, अनिद्रा, विचारवायु, ब्लेडप्रेशर, उन्माद, दिमाग़ की अस्थिरता और हर प्रकार के पागलपन को दूर करके दिमाग़ को असली हालत में लाती है। फ्री डी० ३)

वंगामृत वटी

प्रेमह, मधुमेह, धातु-विकार, बहुमूत्रता, पेशाब की जलन और मूत्राशय के तमाम रोगों को दूर करके पेशाब साफ़ लाती है। फ्री शीशी ३)

राजवैद्य नारायणजी केशवजी

हेड ऑफ़िस—जामनगर, (काठियावाड़)

कलकत्ता ब्रांच—१७७ हरीसन-रोड व ८५ बहूबाज़ार

लखनऊ के एजेंट } निगम मेडिकल हॉल अमीनाबाद-रोड, फ़तेगंज, कौशिक आयुर्वेदिक स्टोर श्रीराम-रोड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी-अँगरेज़ी-छपाई

रंगीन तिरंगे चित्र

सर्वश्रेष्ठ जिल्द-बँधाई

सोने की छपाई, चिट्ठी के काग़ज़, लिफ़ाफ़े, पोस्टकार्ड,
विज़िटिंग-कार्ड, बिल, मिमो, रसीद-बुक, कैलेंडर,
नोटिस, निमंत्रण-पत्र, अभिनंदन-पत्र, पुस्तक आदि—

सब प्रकार की छपाई का काम

हमारे यहाँ सुंदर और सस्ता

साथ ही

ठीक वक़्त पर किया जाता है।

काम संतोषप्रद होने की गैरंटी

आपको छोटा-मोटा, सुंदर, सस्ता, किसी प्रकार का भी छपाई का
कोई काम कराना हो, तो उसे तुरंत हमारे पास भेजिए।

अब इधर-उधर भटकने की ज़रूरत नहीं!

सब प्रकार की छपाई के
काम के लिये सुविधा-
जनक स्थान

गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस
लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Registered No. A—473

वैज्ञानिक कुंडली बनवाइए

आपके भविष्य के गर्भ के भीतर क्या छिपा है ?

इसे आपकी कुंडली ही बतलाएगी

इसलिये

प्रसिद्ध ज्योतिर्विद्

श्रीगिरिजादत्त शुक्ल 'गिरीश' बी० ए०

से

वैज्ञानिक कुंडलियाँ बनवाइए

प्रति कुंडली का पारिश्रमिक ५)

नोट— जन्म का (१) संवत् , (२) मास , (३) दिन और (४) ठीक समय लिखकर आठ आने के टिकट के साथ भेजिए। कुंडली शेष शुल्क की वी० पी० द्वारा आपके पास पहुँच जायगी।

पता— श्रीगिरिजादत्त शुक्ल 'गिरीश' बी० ए०

ऐस्ट्रोलॉजिकल इंस्टीट्यूट, दारागंज, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

गंगा-फ्राइनआर्ट-प्रेस, लखनऊ में श्रीदुलारेलाल (सोल प्रोप्राइटर) द्वारा मुद्रित और प्रकाशित

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृष्ठ-संख्या लगभग २००

नोट कर लीजिए
भूलिएगा नहीं

ग्राहकों को मुफ़्त

सुधा

श्रावण-संख्या [विशेषांक १९४१]

हिंदी के स्थायी साहित्य की बहुमूल्य वस्तु होगी !

इस अंक में क्या होगा ?

चित्र
भाव तथा कला-पूर्ण, मनोहर, तिरंगे
कार्टून
कुरीतियों के द्योतक, हास्योत्पादक, व्यंग्य-पूर्ण
कविता
नई स्फूर्ति जीवनदायिनी
कहानी और लेख
धुरंधर विद्वानों के, अनुपम और उपयोगी

आज ही मूल्य भेजकर ग्राहक बन जाइए

मैनेजर 'सुधा'

विज्ञापन-दाताओं को चूकना न चाहिए

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यापार की चाभी

विज्ञापन छपाना

: : है : :

आपके लाभ की बात

व्यापार की मंदी होने पर भी

१. ठीक - ठीक लिखे हुए
२. उपयुक्त माध्यम में दिए गए
३. सुंदरता से छपे हुए

विज्ञापन

हमेशा रुपया खींचते हैं

सुधा

१. में दक्ष, मनोवैज्ञानिक विज्ञापन-लेखक नियुक्त हैं।
२. विज्ञापन देने के लिये सर्वोत्तम माध्यम है।
३. की टा इ पो ग्रे फ़ी कला-पूर्ण है।

इसीलिये

सुधा में विज्ञापन छपाइए

* * * *

साधारण विज्ञापन की दर **सुधा** में जितने

प्रतिमास

१ पृष्ठ की छपाई	२५)
½ ,, ,, ,,	१५)
¼ ,, ,, ,,	१०)
⅛ ,, ,, ,,	६)

विज्ञापन छपते हैं, उतने किसी भी हिंदी-पत्रिका में नहीं छपते !

* * * *

मैनेजर 'सुधा'

[विज्ञापन-विभाग]

नं० ३६, लाटूश रोड, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Digitized by eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख-सूची

पृष्ठ

१. विजय-पथ (कविता)—[लेखक, द्वितीय देव-पुरस्कार-विजेता डॉ० रामकुमार वर्मा एम्० ए०, पी-एच्० डी० ... ५०६

२. यह क्या था ? (कहानी)—[लेखक, श्रीपं० उमाशंकर वाजपेयी 'उमेश' एम्० ए० (ऑनर्स) ५११

३. स्वस्थ रहने के १० नियम—[लेखक, श्रीयुत प्रिंसिपल केदारनाथ गुप्त एम्० ए० ... ... ५१६

४. मेरी विंध्याचल और टाँडा-फ़ाल की यात्रा (सचित्र, भ्रमण)—[लेखक, साहित्य-रत्न श्रीयुत लक्ष्मीनारायण टंडन 'प्रेमी' एम्० ए० ... ... ५२०

५. रसवंती (आलोचना)—[लेखक, श्रीयुत गोपाल व्यास एम्० ए०, साहित्य-रत्न ५२६

अमृतांजन

सर्वश्रेष्ठ दर्दनाशक भारतीय महौषध। सिर-दर्द, जलन, पीड़ा, फोड़ा, सूजन, कटना, घाव, बात, गठिया, कमर का दर्द, सरदी, खाँसी, कीड़ों का डंक आदि सभी वेदनाओं में 'अमृतांजन' आश्चर्य-जनक फ़ायदा करता है।

अमृतांजन लिमिटेड

बंबई, कलकत्ता, मदरास

पो० बॉक्स नं० ६,८२५

[ई० सन् १९०१ में स्थापित]

च्यवनप्राश-३) सेर अध्यक्ष मथुरा बाबू का मकरध्वज-४) भरी

शक्ति औषधालय-ढाका

आयुर्वेदिक संसार में युगांतर उपस्थित कर दिया है।

कारख़ाना और हेड ऑफ़िस ढाका, बंगाल। तार का पता 'शक्ति' ढाका।

कलकत्ता हेड ऑफ़िस—५२। १, बीडन स्ट्रीट। चौरंघी

बंगाल से बाहर की शाखाएँ—दिल्ली, कानपुर, इलाहाबाद, पटना, भागलपुर, गया, बनारस, गोरखपुर, बुलानाला, जमशेदपुर, गौहाटी, तिनसुकिया (आसाम), मदरास, कटक, रंगून, वेसिन, मांडले (बरमा), बंबई, लखनऊ ब्रांच—२ श्रीराम रोड, लखनऊ आदि।

ब्रांच भारतवर्ष में सर्वत्र और बरमा में

मृतसंजीवनी सुरा (गवर्नमेंट से लाइसेंससुदा) भारतवर्ष और बरमा में हमारी सभी ब्रांचों में मिलती है।

प्रोप्राइटर्स—श्रीमथुरामोहन, स्व० लालमोहन, फणींद्रमोहन मुखोपाध्याय चक्रवर्ती।

मैनेजिंग प्रोप्राइटर—श्रीमथुरामोहन मुखोपाध्याय चक्रवर्ती बा० ए०

हिंदू केमिस्ट और फ़िज़िशियन

पत्र और मनीऑर्डर आदि मथुरा बाबू मैनेजिंग प्रोप्राइटर के नाम भेजिए।

आयुर्वेदीय चिकित्सा-प्रणाली-संबंधित सूचीपत्र मुफ़्त मिलता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृष्ठ

६. तरुणी (कविता)—[लेखक, श्री-आरसीप्रसादसिंह ५३०
७. उपहार (कहानी)—[लेखक, श्रीयुत आनंदलाल साह 'गंगोला' ५३४
८. आदि-निवासी कौन और क्यों ?—[लेखक, एक दलित आत्मा ... ५४४
९. जवाहर (सचित्र)—[लेखक, आचार्य श्रीचतुरसेन शास्त्री वैद्य ५४९
१०. राजा राममोहन राय के विदेश के पत्र—[लेखक, श्रीप्रो० प्रभाकर माचवे एम्० ए०, साहित्यरत्न ५५०
११. शिव-समाधि (कविता)—[लेखक, देव-पुरस्कार-विजेता श्रीश्यामनारायण पांडेय ५५४
१२. आधुनिक युद्ध का भयंकर अस्त्र—वैदेशि राजदूत (सचित्र)—[लेखक, श्रीज्योतिलाल भार्गव बी० ए०, एल्-एल्० बी० ... ... ५५५
१३. चिंतामणि (कहानी)—[लेखक, श्रीयुत गँवार एम्० ए०, डी० लिट्० ... ५६२
१४. पंजाब में स्त्री-शिक्षा—कुछ विशेष बातें—[लेखक, दैनिक हिंदी-मिलाप-संपादक पं० आत्मस्वरूप शर्मा ... ५६७
१५. खंजन खिलारी ये (कविता)—[लेखक, डॉक्टर रामशंकर शुक्ल 'रसाल' एम्० ए०, डी० लिट्० ... ५७५
१६. चयन—[लेखकगण, प्रोफ़ेसर राम-नारायण मिश्र एम्० एस्-सी०, श्रीयुत गोपालदास मुंजाल, श्रीपं० विश्वेश्वरनाथ

हिंदी-संसार में नई चीज़ !

नादिरा

लेखक, श्रीगिरिजादत्त शुक्ल 'गिरीश' बी० ए०। नादिरा एक नवाब की लड़की है। उसके पिता ने उसकी शादी इकरामहुसैन-नामक व्यक्ति से करना निश्चय किया था, लेकिन नादिरा का प्रेम प्रेमकुमार-नामक एक अध्यापक से हो गया था। इसी आधार पर सामाजिक कुरीतियों का दिग्दर्शन कराते और हिंदू-मुसलिम एकता पर ज़ोर देते हुए इस पुस्तक की रचना की गई है। भाषा सरल, सरस और मुहाविरेदार है। पढ़कर तबियत फड़क उठती है। एक बार हाथ में लेने पर विना समाप्त किए जी न मानेगा।

यदि आप भारतीय समाज के भावी विकास-पथ को समझने के लिये प्रकाश चाहते हैं, तो फ़खरुल्ला, नादिरा, नवाब महबूब और नसीरअहमद आदि चरित्र-नायकों के रूप में भारतीय राष्ट्रीयता की शक्ति और दुर्बलता का सजीव चित्र उपस्थित करनेवाले इस सामाजिक उपन्यास को अवश्य पढ़िए। मूल्य सादी १॥), सजिल्द २)

मिलने का पता—गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, ३६, लाटूश रोड, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

		पृष्ठ
रेउ, श्रीयुत राजेश्वरप्रसाद वर्मा 'चक्र', श्रीयुत भानुकुमार जैन और श्रीयुत सुबोध अदावाल	... ...	२७६
१७. परिचय—[लेखकगण, श्रीयुत कालीचरण चटर्जी एम्० ए०, श्रीमती रत्नकुमारी एम्० ए० और श्रीयुत सुधींद्र वर्मा एम्० ए०, एल्-एल्० बी०	... ...	२८४
१८. कुसुम	... ...	२९०
१९. धारा (सचित्र, संपादकीय विचार)	...	२९१
२०. सुधा-चित्रावली	... ...	६०९

पेशाब के भयंकर दर्दों के लिये

एक नई और आश्चर्यजनक ईजाद ! याने—

सूज़ाक (गनोरिया) की हुक्मी दवा

डॉ० जसानी का

जगत्-विख्यात

'गोनोकिलर' रजिस्टर्ड

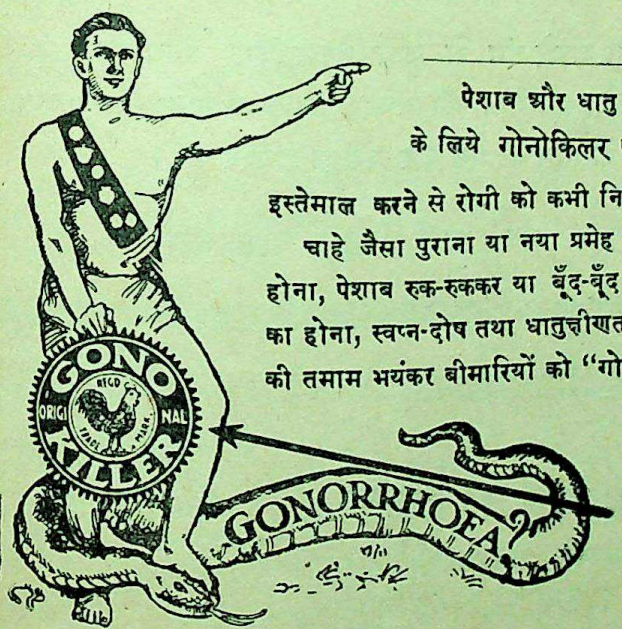

पेशाब और धातु के दर्दों को मार हटाने व निर्मूल करने के लिये गोनोकिलर एक ऐसी ही आश्चर्यजनक दवा है, जिसका इस्तेमाल करने से रोगी को कभी निराश होना ही नहीं पड़ता।

चाहे जैसा पुराना या नया प्रमेह या सूज़ाक, पेशाब में मवाद आना, जलन होना, पेशाब रुक-रुककर या बूँद-बूँद आना, मूत्राशय के अंदर घाव या सूजन का होना, स्वप्न-दोष तथा धातुक्षीणता और औरतों तथा मर्दों की इस क़िस्म की तमाम भयंकर बीमारियों को "गोनोकिलर" जड़ से नष्ट कर देता है।

नक़ली से सावधान !
खरीदने से पहले
दवा का नाम गोनोकिलर
और मुर्ग़ी-छाप सीलबंद
पैकेट देख लीजिए

मूल्य ५० गोलियों की शीशी का ३) रु०, वी० पी० डाक-व्यय आठ आना अलग।

एकमात्र बनानेवाले—डॉ० डी० एन्० जसानी S. L. गिरगाँव, बैक रोड, बंबई नं० ४

लखनऊ-स्टाकिस्ट—किंग मेडिकल हॉल, अमीनाबाद-पार्क

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्र-सूची

पृष्ठ

(क) तिरंगा

१. शेषशायी —[स्वर्गीय मियाँ वसंतसिंह के संग्रह से ५०६

(ख) सादे

२. मिर्ज़ापुर से गंगा-नदी का एक दृश्य ... ५२१
३. विंध्यवासिनीदेवी का मंदिर ... ५२३
४. श्रीआरसीप्रसादसिंह ५३०
५. पं० जवाहरलाल नेहरू ५४६
६-१०. आधुनिक युद्ध का भयंकर अस्त्र—वैदेशिक राजदूत-संबंधी ५ चित्र ५५५ और ५५७-५६०
११. पं० आत्मस्वरूप शर्मा ५६७
१२. महाकवि रवींद्रनाथ ठाकुर ५७७
१३. श्रीयुत रामनारायण मिश्र एम्० एस्-सी० ५७८
१४. पं० ठाकुरदत्त शर्मा ५९२
१५. श्रीमती पुखराजबाई जैन ६०६
१६. दिल्ली में इंटर-युनिवर्सिटी-डिबेट में महिला-पुरस्कार पानेवाली छात्राएँ ... ६१०
१७. स्वर्गीय सर जॉर्ज ग्रियर्सन ६११
१८. श्रीयुत असितकुमार हालदार ... ६१२

बढ़िया ज़र्दा

हमारे कारख़ाने में बहुत ही अच्छे ढंग से ज़र्दा तैयार किया जाता है। खाने में ख़ुशज़ायक़ा तथा सुगंधित होता है। हम माल की अच्छाई तथा सस्तेपन का हर समय ध्यान रखते हैं। हमारे कारख़ाने के माल की एक बार परीक्षा अवश्य करें।

अंबरी ज़र्दा फ़ैक्टरी, चौक, लखनऊ

ESTABLISHED 1899 TELEPHONES:— 2 & 2 A

BHOLA NATH & CO.

36, Latouche Road

LUCKNOW

MANUFACTURE RUBBER STAMPS, BRASS & METAL BADGES, BRASS SEALS, BRASS & IRON PADLOCKS, THUMB IMPRESSION OUTFITS, MILITARY BADGES, TURBAN MONOGRAMS, FILE LACES, EMBOSSING MACHINES, INKS Etc., Etc.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'सुधा' के नियम

['सुधा' के २ संस्करण निकलते हैं—(१) राजसंस्करण, (२) साधारण संस्करण]

मूल्य

'सुधा' के राजसंस्करण का डाक-व्यय-सहित वार्षिक मूल्य १२), छ मास का ६) और प्रति संख्या का १) है। साधारण संस्करण का वार्षिक ६), छ मास का ३) और एक प्रति का ॥) है। वी० पी० से मँगाने में ≡) रजिस्ट्री के और देने पड़ेंगे। इसलिये ग्राहकों को मनीऑर्डर से ही चंदा भेज देना चाहिए। भारत के बाहर सर्वत्र वार्षिक मूल्य वही है, जो भारत में। सुधा की यह भी एक विशेषता है। वर्षारंभ श्रावण (अगस्त) से होता है, लेकिन ग्राहक चाहे जिस संख्या से बन सकते हैं।

अप्राप्त संख्या

अगर कोई संख्या किसी ग्राहक के पास न पहुँचे, तो उसी महीने के अंत तक कार्यालय को सूचना मिलनी चाहिए। लेकिन हमें सूचना देने के पहले स्थानीय पोस्ट-ऑफ़िस में उसकी जाँच करके डाकख़ाने का दिया हुआ उत्तर सूचना के साथ आना चाहिए। उन्हें उस संख्या की दूसरी प्रति भेज दी जायगी। लेकिन उक्त तारीख़ के बाद सूचना मिलने से उस पर ध्यान नहीं दिया जायगा, और उस संख्या को ग्राहक १) या ॥) के टिकट भेजने पर ही पा सकेंगे।

पत्र-व्यवहार

उत्तर के लिये जवाबी कार्ड या टिकट आना चाहिए, अन्यथा पत्र का उत्तर विलंब से दिया जाना संभव है। पत्र के साथ ग्राहक-नंबर का भी उल्लेख होना चाहिए। मूल्य या ग्राहक होने की सूचना मैनेजर 'सुधा', नं० ३६, लाटूश रोड, लखनऊ के पते से आनी चाहिए।

पता

ग्राहक होते समय अपना नाम और पता बहुत साफ़ अक्षरों में लिखना चाहिए। दो-एक महीने के लिये पता बदलवाना हो, तो उसका प्रबंध डाक-घर से ही कर लेना ठीक होगा। अधिक दिन के लिये बदलवाना हो, तो संख्या निकलने के १५ दिन पेश्तर उसकी सूचना देनी चाहिए।

लेख आदि

लेख या कविता स्पष्ट अक्षरों में, काग़ज़ की एक ओर, संशोधन के लिये इधर-उधर जगह छोड़कर, लिखी होनी चाहिए। क्रमशः प्रकाशित होने लायक़ बड़े लेख संपूर्ण आने चाहिए। किसी लेख अथवा कविता के प्रकाशित करने या न करने का, उसे घटाने-बढ़ाने तथा लौटाने या न लौटाने का सारा अधिकार संपादक को है। जो नापसंद लेख संपादक लौटाना मंज़ूर करें, वे टिकट भेजने पर ही वापस किए जा सकते हैं। यदि लेखक लेना स्वीकार करते हैं, तो उपयोगी और उत्तम लेखों पर पुरस्कार भी दिया जाता है। सुधा में प्रकाशित पुरस्कृत लेखों और कविताओं को पुस्तकाकार या किसी संग्रह में निकालने का अधिकार सुधा के अध्यक्ष को रहेगा। अपुरस्कृत रचनाओं पर लेखकों और सुधा-अध्यक्ष, दोनों का अधिकार होगा। सचित्र लेखों के चित्रों का प्रबंध लेखकों को करना चाहिए। चित्र प्राप्त करने के लिये आवश्यक ख़र्च प्रकाशक देंगे।

लेख, कविता, समालोचना के लिये पुस्तकें और बदले के पत्र इस पते से भेजने चाहिए—

श्रीदुलारेलाल
गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय
कवि-कुटीर, लखनऊ

विज्ञापन

किसी महीने में विज्ञापन बंद करना या बदलवाना हो, तो एक महीने पहले सूचना देनी चाहिए।

अश्लील विज्ञापन नहीं छपते। छपाई पेशगी ली जाती है। विज्ञापन की दर नीचे प्रकाशित है—

साधारण १ पृष्ठ या २ कालम की छपाई २५) प्रतिमास
,, ½ ,, या १ ,, ,, ,, १५) ,, ,,
,, ¼ ,, या ½ ,, ,, ,, १०) ,, ,,
,, ⅛ ,, या ¼ ,, ,, ,, ६) ,, ,,

कम-से-कम आधा कालम विज्ञापन छपानेवालों को सुधा मुफ़्त मिलती है। विज्ञापनदाता द्वारा छपे हुए सुधा-साइज़ के ८ पृष्ठ के क्रोड़-पत्र की सिलाई, बटाई के चार्जेज़ ६०), ४ पृष्ठ के ३५) और २ पृष्ठ के २०) लिए जाते हैं।

सुधा में विज्ञापन छपाने से बड़ा लाभ रहता है। कारण, इसका प्रत्येक विज्ञापन लाखों पढ़े-लिखे, धनी-मानी और सभ्य स्त्री-पुरुषों की नज़रों से गुज़र जाता है। हिंदी की सर्वश्रेष्ठ पत्रिका होने के कारण इसका प्रचार उत्तरोत्तर बढ़ रहा है।

कृपया शीघ्र ही अपना विज्ञापन सुधा में छपाकर लाभ उठाइए। कम-से-कम एक बार परीक्षा तो कर लीजिए।

मैनेजर 'सुधा', लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाल-विनोद

का

'युद्ध-अंक'

शीघ्र निकलेगा !

आज की भयानक लड़ाई, लड़ाई का इतिहास, लड़ाई के ढंग, लड़ाई के हथियार, लड़नेवाले देश, लड़ाकू सिपाही, क़ैदी आदि सब बातें हमें जाननी चाहिए। नहीं तो हम कुएँ के मेढक बनकर रह जायँगे।

बाल-विनोद के इस 'युद्ध-अंक' में ऊपर लिखी सब सामग्री पाठकों को एक साथ मिलेगी।

अभी से ग्राहक बनकर अपनी कॉपी रिज़र्व करावें।

वार्षिक मूल्य २॥)

मैनेजर 'बाल-विनोद', ३६, लाटूश रोड, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसा दुःखद प्रसंग गृहस्थी में लाने की ज़िम्मेदारी पुरुषों पर है !

आपकी गृहणी का स्वास्थ्य क्या आपके ध्यान देने का विषय नहीं ? अस्वस्थ ललनाएँ घर की अशांति और चिंता का कारण बनती हैं ! दांपत्य जीवन की **विषमता** का अपराध किसका है ? पति-पत्नी का मनोमालिन्य तलाक झगड़ा विरोध का कारण बनता है !

अब भी सावधान हो जाइए गृहस्थी की रक्षा के लिये !

स्त्री-सौंदर्य और स्वास्थ्य

लेखक, श्रीयुत बुद्धिसागर वर्मा बी० ए०, एल्० टी०

इस बार
बड़े दिन का उपहार !
नए वर्ष की भेंट !!

अपनी ललनाओं के हाथों में शीघ्र-से-शीघ्र पहुँचाने का प्रयत्न अवश्य करें !

अभी-अभी छपकर तैयार हुई है !

प्रत्येक महिला को इसे पढ़ना चाहिए !

शरीर के अंगों का बनाव-शृंगार, सौंदर्य-रक्षा के नियम, व्यायाम, रोग तथा उनकी सरल चिकित्सा, देशी और विदेशी सौंदर्य बढ़ाने के साधनों की उपयोगिता सरल भाषा में वर्णित है !

सचित्र, सुपाठ्य, सुंदर, स्थायी साहित्य !

सजिल्द २॥)] [सादी २)

मिलने का पता—गंगा-ग्रंथागार, ३६, लाटूश रोड, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप अपनी मातृभाषा और राष्ट्र-भाषा को क्यों ऊँचा मानते हैं ?

इस प्रश्न का उत्तर देने के लिये पढ़िए

हिंदी-साहित्य

का

इतिहास

[लेखक—'मिश्रबंधु']

आपकी कमनीय कृति 'मिश्रबंधु-विनोद' में भी यद्यपि हिंदी-साहित्य का इतिहास और कवि-कीर्तन है, फिर भी उसमें कवि-वर्णन बहुत अधिकता से है। और, सिर्फ़ साहित्यिक इतिहास जानने के लिये इतने बृहद् ग्रंथ का पढ़ना सबके लिये संभव नहीं। इसलिये ऐसे संक्षिप्त ग्रंथ की बहुत आवश्यकता थी। इन्हीं बातों पर विचार करके माननीय मिश्रबंधुओं ने इस अनुपम ग्रंथ की रचना की है। यह ग्रंथ बड़ी खोज, अध्ययन, परिश्रम और अनुभव से लिखा गया है। साहित्य के भांडार में अब तक ऐसा महत्त्व-पूर्ण ग्रंथ आपने न देखा होगा। मिश्रबंधु ही सबसे प्रथम इस प्रयास में आगे बढ़े हैं।

मूल्य सजिल्द ३), सादो १॥) ; पृष्ठ-संख्या ३७०

गंगा-ग्रंथागार, ३६, लाटूश रोड, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छप गया ! छप गया !! प्रकाशित हो गया !!!

साधना

मासिक पत्रिका

का

परिचयांक

इसमें हिंदी-साहित्य के ५० प्रमुख-प्रमुख विद्वानों का पूर्ण परिचय तथा हिंदी-साहित्य के धुरंधर विद्वानों द्वारा लिखे गए लेख हैं। इनमें छायावाद की प्रतिक्रिया, आज का उपन्यास, तथा हिंदी के वयोवृद्ध साहित्य-सेवियों की देन आदि लेख तो बहुत ही महत्त्व-पूर्ण हैं। प्रस्तुत अंक साहित्य के एक बड़े प्रभाव की पूर्ति करता है। मौलिकता, उपयोगिता और हिंदी की ठोस सेवा के दृष्टिकोण से यह निश्चित रूप सर्वोत्तम रहा है। अभी तक ऐसा कोई साधन नहीं था, जिसके द्वारा हम अपने साहित्यिकों के विशेष परिचय प्राप्त कर सकें। हिंदी-साहित्य के विद्वानों और पत्र-पत्रिकाओं ने इसकी मुक्तकंठ से प्रशंसा की है। पृष्ठ-संख्या लगभग २५०।

परिचयांक में पढ़िए

पं० रामनरेश त्रिपाठी, महाकवि 'हरिऔध' बाबू श्यामसुंदरदासजी, कविवर मैथिलीशरणजी, श्रीसंपूर्णानंदजी, श्रीमती महादेवी वर्मा, बाबू गुलाबरायजी, श्रीहरिभाऊ उपाध्याय, श्रीमती उषादेवी मित्रा, श्रीकृष्णलाल सरसौदे 'हंस', श्रीपरिपूर्णानंद वर्मा, श्रीमती होमवती, पुरोहित प्रतापनारायणजी, श्रीअन्नपूर्णानंदजी, श्रीभगवतीचरण वर्मा, श्रीभदंत आनंद कौशल्यायन, श्रीविश्वेश्वरनाथ रेउ साहित्याचार्य, मिश्रबंधुगण, कौशिकजी, शांतिप्रिय द्विवेदी, श्रीसुधींद्र एम्० ए०, श्रीयज्ञेयजी, श्रीअंचल, श्रीचातकजी, श्रीदिनकर आदि कितने ही साहित्यिकों के परिचय पढ़िए।

साधना का वार्षिक मूल्य २)] [केवल परिचयांक का १)

नोट—विशेषांक की बहुत कम प्रतियाँ शेष रह गई हैं। अभी ग्राहक बननेवालों को विशेषांक मुफ़्त दिया जायगा। शीघ्रता करें।

व्यवस्थापक साधना-कार्यालय, बाँके-विलास, आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिलकुल नया प्रकाशन

संसार के सर्वोत्कृष्ट उपन्यासों की श्रेणी में
निःसंकोच रक्खा जानेवाला

हिंदी का महान् गौरव

दो भाग में

'विकास'

मूल्य प्रत्येक भाग २), २॥)

[सामाजिक उपन्यास]

लेखक

हिंदी के युगांतरकारी उपन्यासकार

श्रीप्रतापनारायण श्रीवास्तव बी० ए०, एल्-एल्० बी०

('बिदा' और 'विजय' के यशस्वी रचयिता)

'विकास' की विशेषताएँ—

(१) साम्य तथा समाजवाद का स्पष्टीकरण।
(२) हिंदू-समाज के गूढ़ रहस्यों का उद्घाटन।
(३) कुली-प्रथा की आह और कराह।
(४) पूर्वजन्म के प्रेम की पीड़ा।
(५) चारु चरित्रों का विचित्र विश्लेषण। इत्यादि-इत्यादि।

उच्च कोटि के चरित्र-चित्रण, भाव-व्यंजना और घटना-वैचित्र्य के लिये लेखक का नाम ही पर्याप्त है।

यह अप-टु-डेट उपन्यास आपको सामाजिक और राजनीतिक गुत्थियाँ सुलझाने में सहायता तथा सहयोग प्रदान करेगा।

श्रीवास्तवजी के समस्त उपन्यासों के

मिलने का एकमात्र पता—

गंगा-ग्रंथागार, ३६, लाटूश रोड, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

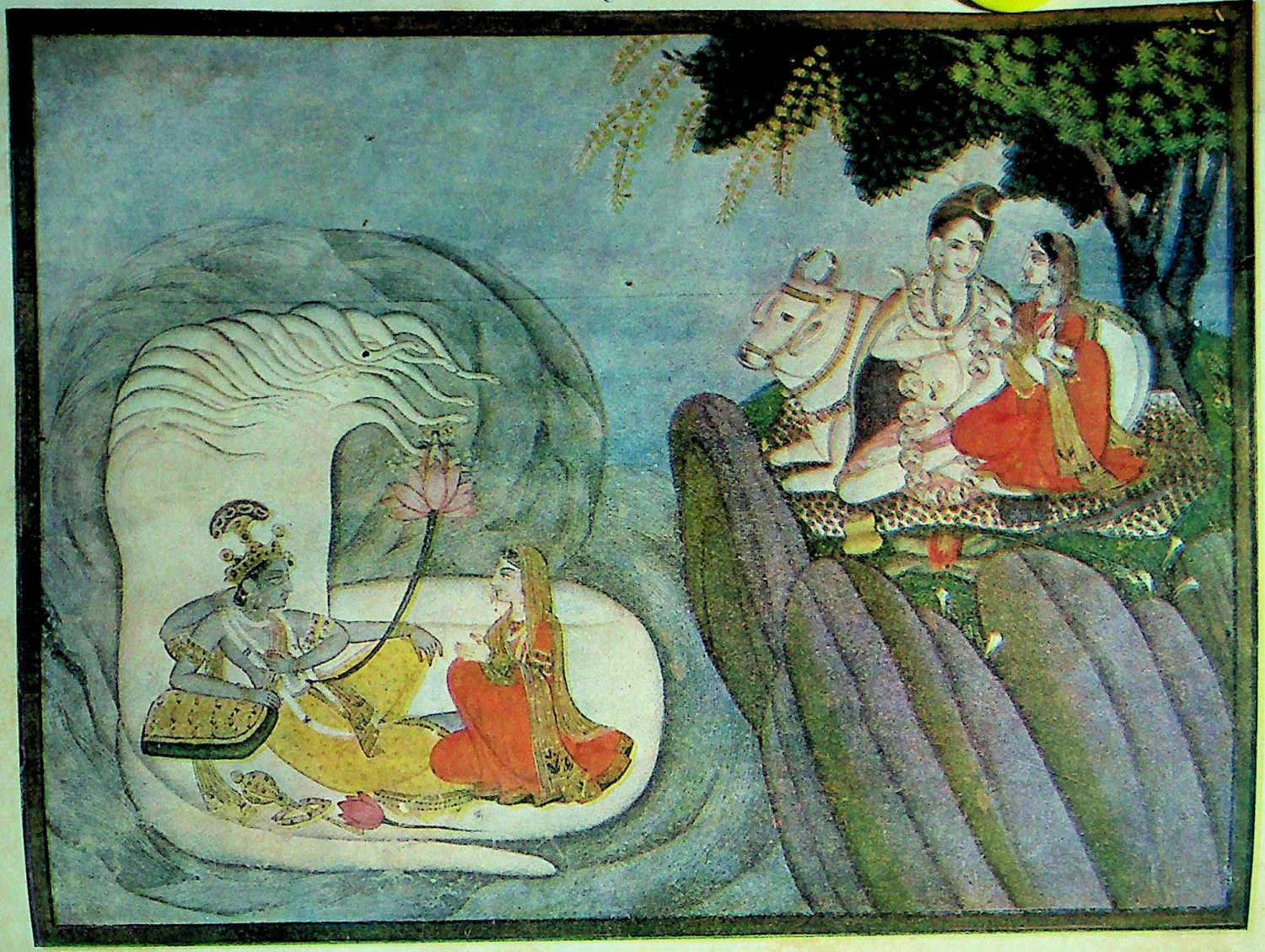

शेषशायी

[स्वर्गीय मियाँ वसंतसिंह के संग्रह से]

छीर - सिंधु प्रभु, नैन, पुतरि सेस-सैया सुघर,
करौ इतै ही सैन, नेह - ललाई मैं घिरे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Approved by the Directors of Public Instruction in U. P., C. P., C. I., Bombay, Bihar, Punjab & Sind.

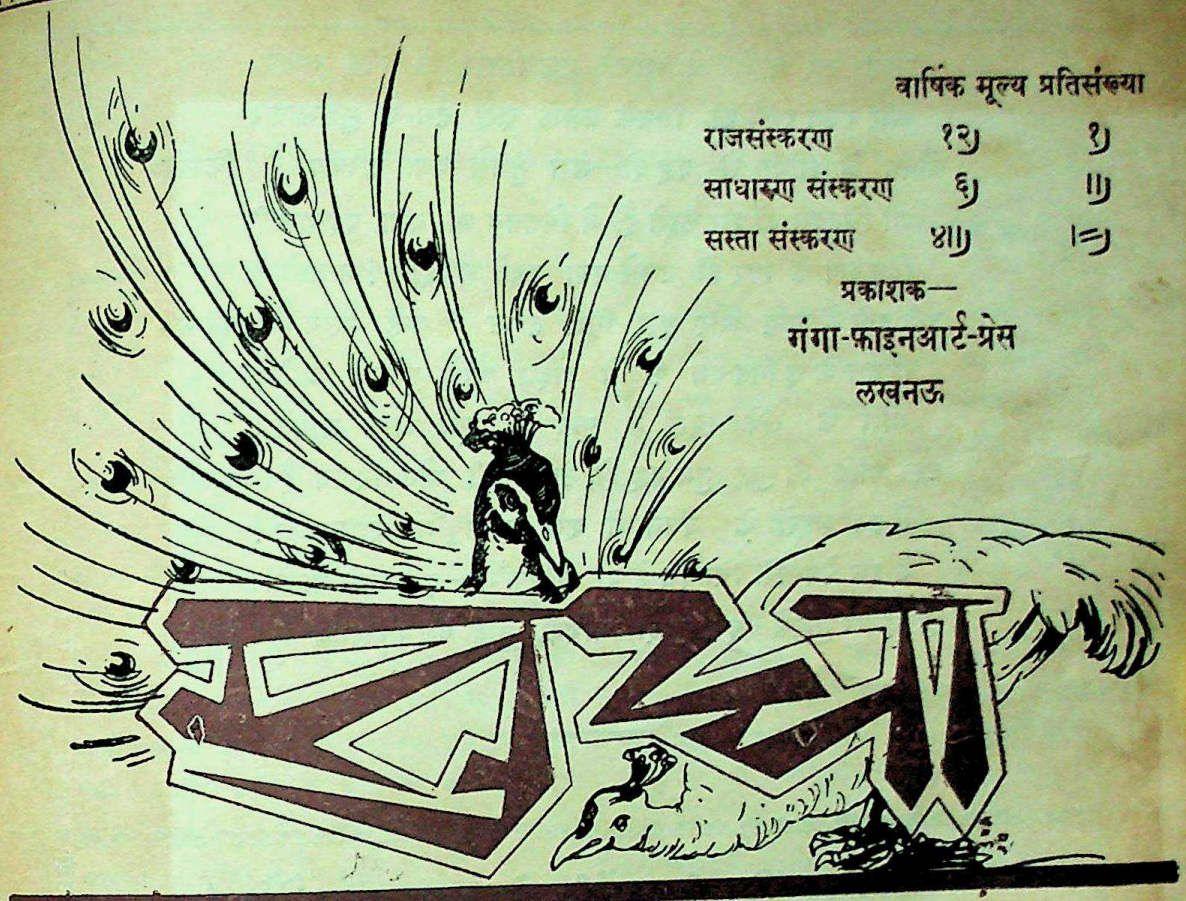

वार्षिक मूल्य प्रतिसंख्या

राजसंस्करण	१२)	१)
साधारण संस्करण	६)	॥)
सस्ता संस्करण	४॥)	।=)

प्रकाशक—
गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस
लखनऊ

वर्ष १४ खंड २ | आषाढ़, ३१८ तुलसी-संवत् (१९९८ वि०)— जुलाई, १९४१ | संख्या ६ पूर्ण संख्या १८०

विजय-पथ

[द्वितीय देव-पुरस्कार-विजेता डॉक्टर रामकुमार वर्मा एम्० ए०, पी० एच्० डी०]

किसने यह कह दिया कि जीवन आज और कल का संचय है ?
अरे, तुम्हारी आँखों में जीवन है, बल है, किसका भय है ?
करुणा के वे गीत छोड़ दो, निर्झर की पतली धारों को,
दुख के चित्र अतीत छोड़ दो, प्रातः के बुझते तारों को।
आकांक्षा की भाँति, ज्ञान की भाँति, तुम्हारा हुआ उदय है। किसने०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूलो उन बातों को, जिनमें एक सिसक से गीत बनाए,
और रजत रातों को, जिनके उलझे क्षण दृग से सुलझाए।
यौवन के साथी से कह दो—मेरा तुमसे क्या परिचय है ? किसने०

जो चितवन को शर कहते हैं, वे चितवन को क्या पहचानें ?
विह्वलता के स्वर ही उनसे क्या कहते हैं हाय ! न-जाने ?
उठी दृष्टि में सृष्टि और कुछ गिरी दृष्टि में उन्हें प्रलय है। किसने०

विद्युत के इंगित-पथ पर ये बादल आज घुमड़ते आते ;
भौंरों के संकेत-स्वरों में फूल न फूले आज समाते।
उसी भाँति जो कुछ तुम कह दो, उसमें मेरी मौन विजय है। किसने०

मैं इन लहरों के बंधन में कस न सकूँगा बंधनवालो !
मैं इस प्रेम-भरी चितवन में बस न सकूँगा—कुछ कर डालो।
हाँ, केवल मुझसे यह कह दो, पथिक, तुम्हें पथ मंगलमय है। किसने०

पि० वेंकटाचल पंडित की आयुर्वेदीय लोकामयहर कस्तूर-गोलियाँ

ये गोलियाँ बहुमूल्य पदार्थों से—जैसे सोना, चाँदी, नेपाली कस्तूरी, मूँगा आदि से—बनाई गई हैं। इनको अलग-अलग या २ से ४ तक पान में खाने से हाज़मा बढ़ता है। हर प्रकार का बुख़ार दूर होता है। जल-वायु और भोजन के परिवर्तन का असर बराबर होता है, रक्त साफ़ होता है, तथा उसकी चाल अबाध्य होती है, खाँसी, सरदी, ज़ुकाम, पेट का दर्द, क़ब्ज़ियत कमर और छाती का दर्द, कमज़ोरी, जूड़ी-बुख़ार और प्लेग को नाश करती हैं। जिस स्थान में छूत की बीमारियाँ फैली हों, वहाँ नित्य पान के साथ ३-४ गोलियाँ दीजिए। बच्चों के रोग में जादू के समान असर दिखाएँगी। दाम ३०० गोलियों की बोतल का ।), डाक-महसूल अलग। ६ बोतलों का १॥)

मिलने का पता—

१ बोतलों का मूल्य डाक-व्यय-सहित २॥।—)
२ „ „ „ ५=) } श्रीसीतराघव वैद्यशाला, मैसूर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह क्या था ?

[श्रीपं० उमाशंकर वाजपेयी 'उमेश' एम्० ए० (ऑनर्स)]

(१)

रेकॉर्ड की तरह ग्रामोफ़ोन से निकलती हुई स्वर-लहरी में उदय का मन हिलोरें ले रहा था। वातावरण गूँज रहा था—"सखी री, मैं तो साँवर के रँग राती।" की मधुर झंकार से। वह दूसरा गीत बजाने को ही था कि उसे सुनाई दिया—दूर से 'साँवर के रँग राती'—हूबहू वही आवाज़—ग़ज़ब रे! यह आख़िर है कौन? वह उठकर देखना ही चाहता था कि गाना बंद हो गया। वह रुका—फिर से सुनने के लिये, पर नहीं मिले हवा में उड़ते हुए वे मीठे स्वर। उसने दूसरा रेकर्ड चढ़ाया। पड़ोस के बच्चे भी जमा हो गए। साँवली लड़की रेनू ने कहा, बढ़कर—"वह गाना बजाइए—'साँवर के रँग राती।'"

उदय अधीत था। लोगों में उसका मान था, पर वह बच्चों में हो जाता था—उन्हीं-सा। उसने कहा—"हटाओ, 'साँवर-वाँवर' कुछ नहीं होगा। एक बार बज तो चुका।"

"यह गाना स्नेहप्रभा बहुत अच्छा गाती है।" ज़िद से उदय के हाथ का रेकर्ड रोक रेनू बोली—"नहीं-नहीं, बजाइए, मैं भी सीखूँगी।"

न जानते हुए भी जानता-सा उदय एकाएक पूछ उठा—"कौन स्नेहप्रभा?"

"अरे! आप कैसे हैं, जो अभी तक स्नेहप्रभा को नहीं देखा?"

सब हँसने लगे कि पड़ोस में रहते हुए भी अभी तक उदय स्नेह को नहीं जानता। स्नेहप्रभा की सखी होने का गर्व रेनू के चेहरे पर चमक उठा, और उसने कहा—"अच्छा, मैं उसे लाती हूँ बुलाकर।"

वह चल दी। ग्रामोफ़ोन पहले ही-सा बजता रहा। थोड़ी देर बाद रेनू स्नेहप्रभा को लेकर आ गई। कुछ झिझकी, झेंपी और डरी-सी स्नेहप्रभा आकर एक किनारे बैठी। उदय रेकर्ड छाँट रहा था बजाने के लिये, एकाएक वह बोल उठा—"हटो, ज़रा दूर-दूर बैठो, रेकर्ड तोड़ डालोगे तुम लोग।"

पर बच्चे उसके स्वभाव से परिचित थे—उसे अपना ही समझते थे। उदय गाने बजाता जा रहा था। स्नेहप्रभा उठकर जाने लगी। रेनू ने रोककर कहा—"कहाँ जाती हो बिना गाना सुनाए?"

"अरे! मैं तो भूल ही गया था।" कहते हुए उदय ने मशीन बंद कर दी, और बोला—"सुनाओ।"

स्नेह का मुख लाल हो उठा। वह साड़ी का छोर उँगली में लपेटने लगी। पर अंत में विवश हो वह गाने के लिये उद्यत हुई ही थी कि श्यामजी आ गए।

एक सादा कुरता और धोती, पैरों में देशी जूते, शांत चेहरे पर दाढ़ी—सब कुछ श्वेत और निर्मल, उनके हृदय-सा ही लगता था। कमरा आलोकित-सा हो उठा। बच्चों ने उन्हें घेर लिया। एक ने कहा स्नेहप्रभा की ओर उँगली उठाकर—"वह गाएगी—अभी।"

स्नेह और भी शर्मा गई।

"गाओ बेटी।" श्यामजी ने सरलता से कहा—अपनी शिशु-सी मुस्कान से। स्नेहप्रभा की हिचक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चली गई, और वह गाने लगी—'साँवर के रँग राती'... ।

× × ×

"कितने दिन रहे आप पहाड़ पर ?" स्नेह-प्रभा ने फ़ोटो देखते-देखते पूछा ।

"क़रीब दो-तीन महीने ।" उदय ने जवाब दिया ।

फिर दोनो तसवीरें देखने लगे ।

"यह है रानी फूलकुमारी की फ़ोटो, जिनके साथ मैं पहाड़ गया था ।" उदय ने स्नेहप्रभा के हाथ में फ़ोटो देते हुए कहा—"कितना अच्छा बैकग्राउंड है इस चित्र का ।"

स्नेह अनिच्छा से फ़ोटो लेकर देखने लगी । उदय ने उत्साहित होकर तसवीरों का दूसरा एलबम निकाल लिया, और कहा—"सुनो स्नेह ! इस एलबम में सुंदर-सुंदर काश्मीर के चित्र हैं ।"

"बस । अभी रहने दीजिए, फिर कभी देखूँगी ।" कहकर उसने चित्र रख दिया ।

उदय ने इधर-उधर पड़े एलबमों और चित्रों से अपना ध्यान हटाते हुए उसकी ओर विस्मय से देखा । उसका प्रसन्न मुख वैसा न था । एक हलकी साँस आई, और वह बैठ गई दीवार के सहारे, कुछ शिथिल-सी । उदय ने व्यग्रता से पूछा—"अरे ! यह क्या हो गया तुमको ?"

"कुछ तो नहीं ।"

उदय उसकी ओर देखता रह गया, और कुछ कहना ही चाहता था कि स्नेहप्रभा ने एकाएक उठते हुए कहा—"अब जाती हूँ, भैया को चाय पिलाने का वक्त हो गया ।"

विनोदी उदय के जीवन में यह पहला अवसर था, जब उसे कुछ उलझन-सी जान पड़ी । उसका स्वभाव से ही हँसमुख चेहरा गंभीर हो उठा ।

× × ×

"डोले हृदय की नैया" रेकर्ड बजकर रुक गया—छोड़कर प्राणों में एक प्रतिध्वनि । पल-भर दोनो चुप रहे देखते हुए—दूर—क्षितिज पर—पृथ्वी और आकाश का मिलन—उस एकाकिनी संध्या में ।

सुई बदलते हुए उदय को सहसा रोककर स्नेह ने पूछा—"हृदय क्या है ?"

उदय ने देखा—साँझ की किरणों में रँगी स्नेह-प्रभा को, और समझ गया सब कुछ । स्नेहप्रभा ने फिर पूछा—"बताइए न ।"

"क्या ?"

"हृदय क्या होता है ?"

"यह मैं नहीं बता..."

"क्यों ?"

"मुझे अधिकार नहीं ।"

"नहीं । अधिकार-वधिकार कुछ नहीं ।" उदय को झकोरते हुए उसने कहा—'बताइए ।"

"बताने से तुम समझ न पाओगी ।"

"बताइए तो सही ।"

"तुम ख़ुद जान जाओगी ।"

"कब ?"

"समय आने पर ।"

सांध्य तारा चमक उठा ।

× × ×

ग्रीष्म की दुपहरी थी । उदय ने खिड़की खोल-कर बाहर देखा । चारो ओर सुनसान था । कड़ी धूप थी । उसने खिड़की बंद कर दी । न-जाने क्यों उसके मन में सूना-सूना-सा प्रतीत हुआ । वह चारपाई पर लेटकर पंखा झलने लगा । धीरे-धीरे उसकी आँखें झप गईं ।

उसने देखा, स्नेहप्रभा और वह कहीं तेज़ी से उड़े चले जा रहे हैं—नदियों, पहाड़ों, जंगलों और समुद्रों को पार करते हुए—न-जाने किस लोक को । उसने सुना—"उठो ।" उसका क्षणिक स्वप्न टूटा । सामने स्नेहप्रभा खड़ी थी । वह अकचका कर उठा अपने स्वप्न को बदलते हुए देख—सत्य में ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसका आज का शृंगार बिलकुल नवीन था। हरी साड़ी में सुनहरा बॉर्डर, सफ़ेद ब्लाउज़ से कसकर पहनी हुई गुलाबी रंग की बॉडी से उसके स्वस्थ यौवन की आभा छनकर बाहर फूटी पड़ रही थी। माथे पर बिंदी की चमक, गालों की लाली से लाल, झूलते हुए एरिंगों की आभा से उसके चेहरे की कांति और भी आकर्षक हो उठी थी। ठीक सामने खड़ी थी वह—आँखों में लिए एक प्यास। उदय उसे देखते ही रह गया। स्नेहप्रभा ने चारपाई पर बैठते हुए कहा—"कैसे बेख़बर सोते हो तुम ? न-मालूम तुम्हें नींद कैसे आ जाती है !"

"और तुम्हें ?"

"मैं तो नहीं सो सकी।"

"क्यों ?"

"छिः !" वह कुछ रोष से बोली—"बड़े ख़राब हो तुम। आज का प्रोग्राम भूल गए क्या ?"

"हुँः !" उदय चारपाई से एकदम उठा, और उसने ड्राअर से सुंदर दो हार निकाले, जिनकी सुगंध से कमरा भर गया। उन्हें स्नेहप्रभा के गले में डालते हुए उसने कहा—"अब कितनी अच्छी लग रही हो तुम !"

"सच ?" उसने कहा, और उठकर आईने के पास खड़ी हो गई। एकाएक उसने अपने गले की मालाएँ निकालकर उदय के गले में पहना दीं, और कहा—"पान खाइएगा ? बड़े यत्न से लगाकर लाई हूँ।"

इसके बाद बेसिर-पैर की बातों का ताँता। उदय ने कहा—"एक गाना सुनाओ।"

"कौन-सा ?"

"वही—'आलो झलमल, पूर्णिमा री ज्योत्स्ना राते..."

अच्छा, जाने दो इसे। 'नाना भाषा नाना परिधान'वाला रिकर्ड बजाता हूँ, और तुम उस पर नाचो।"

"नहीं, यह नहीं। नाचवाला कंसर्ट बजाइए, सर्प-नृत्य करूँगी।"

"यह बार-बार सर्प बनने की भावना तुम्हें क्यों आती है जी ?"

इस पर दोनो खिलखिलाकर हँस पड़े। हँसी का वेग कम होने पर स्नेहप्रभा ने कहा—"सुनो जी। तुम बड़े अविश्वासी होते जा रहे हो ?"

उदय की मुद्रा कुछ गंभीर हो उठी। उसने कहा—"स्नेह ! यह सब कुछ जो इतने दिनों से हो रहा है—क्या है ?"

"कैसा ? क्या है ?" क्षण-भर रुककर स्नेहप्रभा ने पूछा।

"कितनी भोली बनती हो तुम ! सर्प-नृत्य जो तुम्हें आता है न।"

"मैं अब जाती हूँ।" स्नेहप्रभा हड़बड़ाकर बोली—"भैया की चाय का वक्त हो गया है।"

"जाओ।" उदय की मुद्रा और भी गंभीर हो उठी।

"क्या नाराज़ हो गए ?"

"तुम्हें इससे क्या ?"

"अच्छा, नाराज़ हो जाइए; पर एक माला मुझे दे दीजिए। मैं इसे जीवन-भर यत्न से अपने पास रक्खूँगी।"

उदय ने एक माला उसे देते हुए पूछा—"मेरे सवाल का जवाब न दोगी ?"

"तुम्हारे सवाल का जवाब क्या इन मालाओं की सुगंध से, जो इस कमरे में व्याप्त है, नहीं मिल रहा ?" आँखों से कुछ कहते हुए उसने कहा।

"सच ?" उदय ने विह्वल होकर कहा—"सचमुच। क्या तुम मुझे चाहती हो ?"

पास के मकानों के टीन, किवाड़े वग़ैरा खड़-खड़ा उठे। शायद आँधी आने को थी। स्नेहप्रभा अपने ओठों में इतने दिनों के तूफ़ान की क्षणिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शांति छिपाए बाहर के उठते हुए बवंडर की परवा न कर चल दी।

(२)

"अगर छोकरी, यह हरकत आज से कभी देखी, तो तेरे खंड-खंड कर दूँगी। ख़बरदार! जो किसी के यहाँ आज से गई।"

"क्या किया मैंने?" स्नेहप्रभा ने अपनी क्रोधित मा से पूछा।

"किया तूने कुछ नहीं, पर तू अब सयानी हुई। तुझे ज़रा होश में रहना चाहिए।"

स्नेहप्रभा जवान थी, इस कारण उन दिनों उसकी हरएक बात मार्क की जाती थी। यदि घर के लोग वात्सल्य-स्नेह के कारण उसे तरह भी देते, तो बाहरवालों की गृद्ध्र-दृष्टि में वह सदा खटकती। उनके भय से उसकी देख-रेख की मात्रा और भी बढ़ गई थी। उदय से मिलना तो उसके लिये मुश्किल ही था। किसी प्रकार बेचारी लुक-छिपकर दिन में एक-दो बार उस मकान की ओर दृष्टि डाल लेती, जहाँ उसने उठते हुए यौवन के कुछ दिन बिताए थे, और प्रथम प्रेम की किरणों में जगी थी। उस मकान के, उन गलियों के प्रत्येक कण-कण में उसकी मादक स्मृतियों की बिछलन थी। तब उसका जी भर आता था। एक ठंडी साँस निकल आती, और वह विवश हो लेट जाती, फिर किसी प्रकार अपने मन को समझा-बुझाकर उन गीतों को गाती, जो उसने कभी उन सुख के दिनों में गाए थे। आज उसकी मा ने उसका एक-मात्र लुक-छिपकर देखने का साधन भी छीन लिया। अब वह उन खिड़कियों के पास भी खड़ी न हो सकेगी। उसने मा की ओर देखा—अपने भावों को छिपाते हुए। मा बड़बड़ाती जा रही थी। इतने में मोनू एक पत्र लिए हुए आ पहुँचा। वह उसे स्नेहप्रभा के डिब्बे से चुपके निकाल लाया था। स्नेहप्रभा ने झपटकर उसके हाथ से चिट्ठी छीन ली, और मा की आँख बचाकर फाड़ डाली। मा की फटकार से और चिट्ठी के डर से वह घबरा उठी। उसका सिर घूमने लगा, और वह बेहोश होकर गिर पड़ी।

× × ×

जाड़ा शुरू होने जा रहा था। एक दिन एकाएक बग़ल का ख़ाली मकान भर गया। उस ओर से उदय कभी-कभी अपने मित्र के साथ—जब स्नेहप्रभा के मकान के सारे खिड़की और दरवाज़े बंद हो जाते थे—उसकी केवल एक झलक कहीं से पाने की आशा से निकलता था। पर उन किराएदारों की वजह से उसे उस ओर से आने-जाने में संकोच होता था, क्योंकि उसने कई बार उनमें से कुछ लोगों को अपनी गति-विधि पर शंकित दृष्टि डालते हुए देखा था।

चारों ओर से निराश होकर वह पागल-सा अपने कमरे में चक्कर लगाता, और उसी चिर-परिचित खिड़की पर उसकी आँखें ठहर जातीं, जहाँ से स्नेहप्रभा प्रायः नित्य खड़ी होकर उसकी ओर देखा करती, और उँडेल देती अपना सारा स्नेह आँखों-ही-आँखों में। अब वह एक बीती हुई कहानी थी, एक स्वप्न था, और था एक धूमिल आलोक। उसे याद हो आतीं एक-एक करके उन मधुर दिनों की हरएक बातें, और छा जातीं आँखों में कितनी ही सजल स्मृतियाँ, और उसका हृदय ऐंठने-सा लगता अंतर के उस महाशून्य में। फिर उससे उस वातावरण में और न ठहरा जाता। वह चल देता, जिधर उसके पैर उसे ले चलते। इस तरह गलियों, पार्कों और बाग़ों में वह घूमता फिरता अपने टूटे हुए दिल को जोड़ने के लिये। पर उसे कहीं शांति न मिलती, और वह घर लौट आता हारा, थका, परेशान, अपने को डालने के लिये फिर उसी हलचल की दुनिया में। ऐसे ही दिन बीतते जा रहे थे, पर उसकी एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झलक तक न मिलती थी। लेकिन उसे विश्वास था, डाह्स था कि वह कहीं क्यों न हो, उसका प्रेम वैसा ही रहेगा। उसे याद हो आई उसके पत्रों की वे पंक्तियाँ, जिसमें इसी बात को उसने कितनी ही बार दुहराया था।

उस दिन शरत्पूनो की रात थी। उसे स्मरण हो आई उसकी वह बात—'वह कौन दिन होगा, जब इस ज्योत्स्नामयी रात्रि में मैं तुम्हारे साथ हूँगी।' वह नहीं दिखाई पड़ती, इसमें उस बेचारी का क्या दोष ? यदि उसका वश चलता, दिन के पचीस बार आती, और आती ही थी। क्या मेरी तरह उसे कष्ट न होता होगा ? ज़रूर होता होगा। रह जाती होगी मन मसोसकर। न-मालूम कैसे लोग हैं ? मसल डाला छोटा-सा दिल। चारों ओर से जकड़कर उसकी जान निकाल ली। वह अकुला उठा—उसकी बातें जानने के लिये। लेकिन क्या करता ? लाचारी थी। उस पीड़ा से व्यथित हो वह उसके मकान के दो-एक चक्कर लगा अपने कमरे में बैठ गया। उसने सुना—

'गाने के बहाने—ए (टेक)
मैं महुआ के बन में—एँ
तुमको ही पुकारूँ—ऊँ, तुमको ही पुकारूँ—ऊँ

वही आवाज़ थी, लेकिन उसमें आज कुछ दर्द था। कैसे ? किस तरह ? बतलाऊँ मैं उसे अपना हाल ? वह चारपाई पर उठ बैठा। कुछ सोचकर अस्फुट शब्दों में बोल उठा—"ठीक, यही उपाय है।" उसने जल्दी से ग्रामोफ़ोन पर रिकर्ड चढ़ा दिया—'निशि-दिन बरसत नैन हमारे।' गाने का करुण स्वर उस मौन निशा में गूँज उठा, पर वह न जान सका कि उसके दर्द का संदेश उस तक पहुँच भी पाया ?

× × ×

"उदय ! उदय !! उदयजी !!!—कहाँ गुम हो गए हो ? भाई !" किसी ने पुकारकर कहा।

उदय ने एक बार फिर अपनी लिखी हुई कविता पढ़ी, और जेब में रखकर बैठक के कमरे में चल दिया, और किशन से कहा—"क्या चिल्लाते हो तुम ? बड़े मूर्ख हो।"

"तुम ख़ुद मूर्ख हो, जो सारे दिन घर में घुसे बैठे रहते हो। कहो, वह कविता लिख ली रेडियो के लिये ?"

"हाँ, लिख ली, सुनो।"

"मेरे अंध-तिमिर - जीवन की
तू अरुणोदय सविता ;
मेरे प्राणों की तू पावन,
भुवन मोहिनी कविता।
तू मेरे कल्पना - लोक की
अनुपम, अलख सहेली ;
मेरे उलझे जीवन की
तू उलझी हुई पहेली।"...

"भाई ! ख़ूब लिखा तुमने।" किशन बाहर बातें करते हुए चला।

उदय ने कुछ उत्तर न दिया।

"समझ सकेगी वह तुम्हारी इस कविता को ?"

"लिख दिया ऐसे ही ; क्या जानें।" दुखी उदय ने कहा।

"भाई उदय ! मेरी बात तो तुम मानते नहीं।" स्पष्टवादी किशन ने साफ़-साफ़ कहा—"मुझे तो इस छोकरी पर विश्वास नहीं। कभी कुछ, कभी कुछ; कोई बात ही ठीक नहीं इसकी।"

"अरे यार ! बंधन में जो है न, क्या करे ?"

"क्या बंधन में है ? मेरा तो ख़ून खौल जाता है तुम्हारी बातें सुनकर। तुमने तो इसके पीछे अपनी बुद्धि खो दी है। इतने दिनों से तुम इसे एक बार देखने के लिये हैरान हो, क्या वह कहीं से अपनी सूरत भी नहीं दिखा सकती ?"

"अरे भाई....."

"कुछ अरे-वरे नहीं।" झुँझलाकर किशन ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहा—"अभी सुन लो, तुम उसके लिये सब कुछ छोड़े बैठे हो, और वह मस्ती से गाने उड़ा रही है। मुझे अनुभव है, जिसके हृदय में सच्ची कलक होती है, वह कैसे इस तरह ख़ुशी से गाने गा सकेगी!"

उदय कुछ अस्थिर हो उठा, और उसने प्रश्न-भरी आँखों से मित्र की ओर देखा।

"मैं सच कहता हूँ।" किशन ने ज़ोर देकर कहा—"अगर वह सचमुच तुम्हें चाहती होती, तो जनाब! उसे रोकनेवाला कौन था? किसी-न-किसी तरह वह रोज़ तुम्हें दिखाई देती। सच्ची लगन तो है नहीं, तभी तो महीनों ग़ायब हो जाती है, और तुम बे-ख़बर उसके पीछे दीवाने रहते हो। परसों वह पासवाली लड़की चिक से तुम्हारा थिएटर देख रही थी, और हँस रही थी।"

"देखने दो, मैं क्या परवा करता हूँ।" उदय ने लापरवाही से कहा।

"यह तो तब ठीक होता, जब वह इधर-उधर आँख मटकाना छोड़ केवल तुम्हें चाहती। तब तुम्हारी इस लापरवाही के कुछ माने होते।"

"तो मैं क्या करूँ?" दुःख से खीझकर उदय ने अपने भाव दबाकर कहा—"वह जो चाहे, करे। मैं जैसा हूँ, हूँ।"

"तो टकराया करो इस पत्थर से अपना सिर।" क्रोध से किशन चिल्ला उठा—"मुझे तो इसकी सूरत से नफ़रत है, पहले तो इसे मैंने कुछ समझा था, पर अब इसका नाम मेरे सामने मत लिया करो।"

उदय किशन की बातों से चिढ़ता जा रहा था। उसने कहा—"रहने दो अपना लेक्चर।"

"अरे, क्या समझोगे इस छिबलकी की लीला तुम। परदा जो पड़ा है तुम्हारी आँखों पर।"

"मैं समझना भी नहीं चाहता। बहने दो चुपचाप मुझे—जिधर बह रहा हूँ।"

हॉर्न की आवाज़ से सारे मुहल्ले को गुँजाती हुई गर्ल्स स्कूल की गाड़ी एक मकान के पास रुक गई। स्वाभाविक ही दोनो मित्रों का ध्यान उस ओर खिंच गया। एक लड़की कुछ सखियों के साथ नीचे उतरी।

सफ़ेद साड़ी, सफ़ेद ही जालीदार बॉर्डर, बदन से कसकर पहना हुआ ब्लाउज़, चेहरे पर सारे दिन की स्कूल की थकान, गालों पर कुछ बिखरे हुए केश, सुंदर, पतले ओठों की मधुर हँसी में स्वच्छ दाँतों की झलक लिए वह किताबों के भार से कुछ झुकी हुई एक दृष्टि अपने चारों ओर डालकर भीतर चली।

"क्या शान है! एकदम मॉडर्न।" किशन ने कहा।

"कौन है यह? विमल। अच्छी लड़की है।"

"तुम तो ऐसे बोलते हो, जैसे इसे जानते हो।"

"हाँ, जानता हूँ। पहले तो यह मुझसे बातें किया करती थी।"

"पर यार, यह 'विमल' नाम ठीक नहीं जँचा।" अंदर जाती हुई विमल को देखते हुए किशन ने कहा—"इसका नाम तो होना चाहिए कमल।"

"क्यों?"

"देख लो।"

"अच्छा, कमल ही सही, पर तुम कहना क्या चाहते हो भाई!" उदय ने पूछा।

"यह इस योग्य मालूम पड़ती है, जिसे हृदय सौंपा जाय; यह उसकी क़द्र कर सकेगी।"

"सूरत से ही जान लिया क्या?"

"और क्या? 'ख़त का मज़मूँ भाँप लेते हैं लिफ़ाफ़ा देखकर' उसकी मुस्कराती हुई कुछ कहती-सी आँखें..."

हटाओ इन बातों को, मुझे और किसी से क्या मतलब?" उदय ने झुँझलाकर कहा—"अजब बेवक़ूफ़ी की बातें करते हो।"

किशन बनावटी चिढ़ से बोला—"Literary

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

activities (साहित्यिक स्फूर्ति) के लिये एक Right inspirer (उचित उत्तेजक) चाहिए। बिना उसके लिखोगे क्या, ख़ाक। ले लो संसार के बड़े-बड़े लेखकों को, जैसे कालिदास।"

"कालिदास का किसी से प्रेम नहीं था।" बात काटकर उदय ने कहा।

"विद्युत्तमा से नहीं था।"

"वह उसकी पत्नी थी।"

"अरे भाई, ज़रा समझ से काम लो।" किशन ने कहा—"उसको भाग्य से Right inspirer पत्नी के रूप में मिल गया। ऐसे कितने ही औरों को भी मिला। कितने ही बेचारों को इस तरह नहीं मिला—जैसे चंडीदास, विद्यापति, सूरदास, बायरन, कीट्स, हुस्साँ आदि। पर Inspirer की ज़रूरत हमेशा और हर समय रही। यही नहीं, संसार के और पहलुओं में भी Right inspirer के इशारों से बड़े-बड़े साम्राज्य बने, और बिगड़े।"

"इसे कौन नहीं मानता? मुफ़्त में पें-पें किए जा रहे हो।"

"तो छोड़ो अपनी इस कपालकुंडला को, जिसने तुम्हारा दिमाग़ चर लिया है। ऊटपटाँग बातों के सिवा उसे आता क्या है? सामने तुमको ख़ुश रखती है, पीछे तुम्हारे बारे में भी न-जाने क्या-क्या बातें लगाती हो औरों से। यह 'कमल' मालूम होती है Right inspirer."

"तो क्या करें?" उदय कुछ रोष से बोला। "उसे फँसाएँ क्या? मैं तो इसे पाप समझता हूँ।"

"तो जनाब! आप ज़रा अपने पुण्य की परिभाषा भी बताइए।"

"न-मालूम कहाँ से, कब और कैसे एक तूफ़ान, एक बवंडर की तरह दो अपरिचित हृदय हुमड़कर एक दूसरे में समा जाते हैं।" कहते-कहते उदय की आँखों में प्रेम का उन्माद-सा लहरा उठा—"बिना किसी कोशिश के दोनो आत्माएँ एक दूसरे में तद्रूप हो जाती हैं युग-युगांतरों की परिचित-सी। लौकिक परिस्थितियों के अनुकूल न होते हुए भी यह मिलन स्वर्गीय है, और मेरी दृष्टि में यही पुण्य है।"

"हाँ-हाँ, मैं भी तो यही समझता हूँ, पर यार, यह कमल साधारण लड़कियों से कुछ ऊँची-सी प्रतीत होती है।"

"तो हमें क्या भाई?" उदय ने एक साँस ली, और कहा—"हम लोगों की ओर तो उसकी कोई दिलचस्पी है नहीं, और दिलचस्पी पैदा करने के लिये उपाय करना, पीछे-पीछे घूमना लोफ़रों का काम है।"

"तो अपनी ओर दिलचस्पी पैदा करने के लिये···" किशन ज़मीन में लोटने का भाव दिखाते हुए बोला—"जै लाल लँगोटेवाले की, लूँ लोट-पोट?" दोनो मित्र खिलखिलाकर हँस पड़े।

(३)

रोज़ स्नेहप्रभा को उदय की याद आती। रोज़ उसका जी उसे देखने को चाहता, पर घरवालों की नज़र बचाकर उदय को देखने जाना अत्यंत कठिन था। वह नहीं चाहती थी कि घरवाले उसे संदेह की दृष्टि से देखें। इस कारण वह जहाँ तक हो सकता, अपने को उदय से दूर रखती। गाकर, मोनू से झगड़कर, महरा-महरी से गप्पें उड़ाकर अपना समय बिताती। कभी-कभी वह एकांत में बैठकर काढ़ते-काढ़ते सोचती, जो कुछ उसके कच्चे दिमाग़ में आता। उसकी आँखों के आगे उदय आता विह्वल प्रेम में भीगा हुआ, तो उस समय उसका हृदय उद्वेलित हो उठता, और उसकी आँखों के आगे सारी बीती घटनाओं के रंगीन चित्र खिंच जाते। याद आतीं उसे वे ख़ून से लिखी चिट्ठियाँ, जिन्हें उसने फाड़-फाड़कर कभी नालियों में फेंक दिया था, याद आतीं प्रेम-उपहार की चीज़ें, जो उसके पास कहीं गुप्त रक्खी थीं, और उसका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रेम-विह्वल चेहरा उसकी आँखों के सामने झूल जाता, पर वह आज तक उसे कोई भी प्रेम-चिह्न—केवल दो-एक अपने नाम से अंकित रूमालों को छोड़कर—न दे सकी। उसके बाद उसकी आँखों के सामने एक दूसरा चित्र खिंचता। आदमियों की चहल-पहल, शहनाई और नफ़ीरियों की आवाज़, ढोल, नक़्क़ारों और शंख की तुमुल ध्वनि के बीच कोई ले चला उसे दूर—बहुत दूर—सगे-संगियों से छुड़ाकर। फिर उसका एक संसार बनेगा—नया, छोटा-सा—जिसमें वह डूब जायगी। उसका दूल्हा किसी बात में कम न होगा इस उदय से। वह इस कड़े बंधन और इस जेल की बेड़ियों से मुक्त होकर स्वच्छंद विचरेगी, और अर्पित करेगी आज तक का संचित सब कुछ उस अपरिचित के चरणों में। तब—कौन जाने—वह सुख होगा या दुख? वह एक दीर्घ निःश्वास छोड़ती, उन्मन हो, काढ़ने का सामान एक ओर फेंक, थकी-सी लेट जाती।

सूरज डूब चुका था। उस समय की धूमिल आभा खिड़की से उसके उदास मुख पर पड़ रही थी। उसने सुनी उदय की आवाज़—"हम जा रहे हैं कहीं, देर से आएँगे।" तरकारी काटना भूल वह भूली-सी खिड़की की ओर बढ़ी ही थी कि उसे सुनाई दिया—"काट ली तरकारी?" वह लौट पड़ी, तरकारी काटने के लिये नहीं, बल्कि अपने कमरे की दीवारों से अपनी व्यथा सुनाने के लिये।

× × ×

उदय ने निराश होकर दसवीं बार फिर कोशिश की। ठीक उसी वक्त, रोज़ की तरह ज़ोर से पुकारकर नौकर से उसने कहा—"हम जा रहे हैं कहीं, देर से आएँगे।" और उसने उस खिड़की की ओर देखा, पर वह पहले की तरह बंद थी। शायद उसके बोलने में अब वह आकर्षण न रहा कि स्नेहप्रभा को पूर्ववत् खिड़की पर खींच लाए। समय है। उसने अंदर से उठती हुई श्वास को दबाया, और चल पड़ा—रोज़ ही जैसा—उद्देश्य-विहीन।

न-मालूम कब, कितनी देर बाद वह लौटा, उसे पता न था। उसने देखा, माथे के श्रम-बिंदुओं को हटाते हुए दूर—आकाश में। उसे याद हो आईं किसी कवि की करुण पंक्तियाँ—"धुँधली प्राची दिशा से चंद्र एक मृतप्राय, पीली, दुर्बल कामिनी की भाँति निकला। उसका मुख एक झीम अवगुंठन में छिपा हुआ था। वह अपने मस्तिष्क की उन्मत्त, दुर्बल, उच्छृंखल इच्छाओं से प्रभावित हो अपने मंदिर से निकल आया था, और लड़खड़ाता हुआ आगे बढ़ रहा था।"

'चलने के परिश्रम से थककर, बिना खाए-पिए वह चारपाई पर पड़ गया। कपड़े बदलने की भी उसे सुध न थी। नींद तो उसे आती ही न थी, पर रोज़ की-सी नींद उसे आ गई थी।' उसने देखा, उसकी यत्न से खूँटी पर बँधी हुई माला—जिसे देखकर वह जीता था, जिसमें स्नेह के स्नेह की कथा पिरोई हुई थी, और जिसे उसने कितने प्रेम में तन्मय होकर उसके गले में पहनाया था—अपनी मज़बूत गाँठ से खुलकर सामने की खिड़की से मानो किसी माया-बल से उड़ी, और स्नेहप्रभा के हाथ में चली गई—और फिर न-मालूम कहाँ खो गई। एकाएक स्नेहप्रभा का मकान अतिथियों से भर गया, और शहनाई की तीव्र ध्वनि मालकोष के दर्द-भरे स्वरों में कुछ कहने-सी लगी—विवाह मंडप नर-नारियों से खचाखच भरा था। उसने देखा, एक युवक के गले में बहुत-सी मालाओं के बीच वह सूखी माला भी पड़ी थी, जिसमें उसके हृदय का रक्त-पिंड भी गुँथा था, और गुँथा था एक आशाओं से भरा हुआ संसार।

उसकी नींद टूट गई थी। वह पसीने से तर-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बतर था। वह उठा। सामने खूँटी पर वह माला ज्यों-की-त्यों टँगी थी, लेकिन उसके मस्तिष्क पर स्वप्न का प्रभाव वैसा ही था। उसने हवा आने के लिये खिड़की खोली।

सूर्योदय के समय की अरुणिमा चारों ओर छाई थी। वह मुड़ा। एक शीतल झोंके से वह माला हिली। उसकी छाया उसकी ओर बढ़ती-सी दिखाई दी—कमरे के उस धुँधले प्रकाश में।

स्वस्थ रहने के १० नियम

[श्रीयुत प्रिंसिपल केदारनाथ गुप्त एम्० ए०]

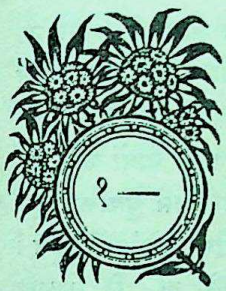

प्रातःकाल ४ बजे उठो, और सबसे पहले शौच जाओ। फिर हाथ-मुँह धोकर थोड़ी देर तक रामायण या अपने धर्म की किसी पुस्तक का पाठ करो।

२—घड़ी देखकर एक घंटे खुली हवा में रोज़ तेज़ी से टहलो।

३—टहलकर वापस आने पर एक पाव गरम पानी में एक ताज़ा नींबू निचोड़कर उसी का जलपान करो।

४—२४ घंटे में दो या तीन बार सुविधा के अनुसार सादा और मेलदार भोजन करो। एक पाव मोटे आटे की रोटी, थोड़ी छिलकेदार दाल, आधी छटाँक मक्खन या बढ़िया घी, आध सेर दूध, एक रकाबी-भर कच्ची तरकारी, थोड़ी-सी सादे ढंग पर बहुत कम मसाले के साथ पकाई हुई तरकारी, एक छटाँक किश्मिश या खजूर, थोड़ा-सा मेवा और थोड़े-से मौसमी फल खाने के लिये बहुत काफ़ी हैं। जिन्हें शारीरिक परिश्रम अधिक करना पड़ता है, उन्हें इस तादाद का सवागुना भोजन काफ़ी होगा।

५—हर रोज़ कपड़े उतारकर थोड़ी देर धूप में बैठो, और ठंडे पानी से स्नान करो।

६—१५ दिन में एक दिन २४ घंटे का उपवास करो। यह प्रकृति का दिया हुआ एक अचूक इलाज है, जो सब बीमारियों को दूर करता है।

७—चाय, चुरुट, शराब, भंग आदि नशे की चीज़ों का व्यवहार न करो।

८—यथाशक्ति ब्रह्मचर्य का पालन करो।

९—सदैव प्रसन्न रहो।

१०—९ बजे सो जाओ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरी विंध्याचल और टाँडा-फ़ॉल की यात्रा

[साहित्य-रत्न श्रीयुत लक्ष्मीनारायण टंडन 'प्रेमी' एम्० ए०]

मैं साहित्य-रत्न की परीक्षा देने प्रयाग गया था। २६ ऑक्टोबर, १६३८ (शनिवार) से ५ नवंबर, १६३८ (रविवार) तक परीक्षा हुई। ५ तारीख़ की रात्रि को मेरे एक मित्र, जहाँ मैं टिका था, आए। मैं तो मिला नहीं, पर वह एक सज्जन से कह गए कि वह सूचित कर दें। प्रातःकाल मैं झूसी जाने की तैयारी में था कि उन्हीं महाशय ने मुझे मेरे मित्र के आने की सूचना दी। जिनके साथ मैं झूसी जानेवाला था, उनसे यह कहकर कि थोड़ी देर में आता हूँ, मैं जैसा था, वैसे ही कपड़े पहने अपने मित्र से मिलने चला गया। बातों-बातों में विंध्याचल चलने का ज़िक्र आया। मेरे मित्र ने कहा—"इस समय ७½ बजे हैं, ८½ के लगभग गाड़ी जाती है। अभी यदि चाहो, तो चल सकते हैं। शाम की गाड़ी से लौट आवेंगे।" उन्हीं के रुपए और कपड़े लेकर हम लोग चल दिए। साथ में एक जयपुर के मित्र भी हो लिए। वह भी परीक्षा देने आए थे। बहुत जल्दी की गई, किंतु स्टेशन पर जब पहुँचे, तब गाड़ी छूट चुकी थी। हम लोग वापस लौटे। पता चला, लॉरी भी जाती है। एक लॉरीवाले से बातचीत हुई। उसने कहा—"हम आपको १२ बजे मिर्ज़ापुर से थोड़ी दूर इधर उतार देंगे।" हम लोगों की समझ में आ गया, और हम ६½ बजे सुबह लॉरी से चल दिए। दूसरे दिन गंगा-स्नान था, अतः काफ़ी धक्कमधक्का था देहातियों का। गाँव के दृश्य देखते हुए हम लोग १२-४१ पर गोपीगंज पहुँचे। रास्ते में पचासों बार लॉरी रुकी होगी—ज़रा किसी ने हाथ दिखाया, और लॉरी रुकी। फिर यात्रियों को भी जहाँ-जहाँ उतरना था, वहाँ-वहाँ रुकी। वहाँ से मिर्ज़ापुर ६-७ मील है। बड़ी कठिनता से एक इक्का तय हुआ, किंतु अन्य इक्केवालों के भड़काने से वह और अधिक दाम माँगने लगा। वहाँ धौंस ने बड़ा काम किया। एक पंडितजी भी अपनी ननिहाल मिर्ज़ापुर जा रहे थे, अतः उनसे हँसते-बोलते गंगाजी के किनारे ३ बजे के लगभग चीलर-गाँव पहुँचे। पंडितजी पहले तो हम लोगों से बहुत रुष्ट हुए, किंतु पीछे उन्हें हम लोगों ने फल आदि खिलाकर प्रसन्न कर लिया। वहाँ इक्के से उतरे—गंगाजी को पार करने के लिये एक नावों का पुल बना था। ⅃॥ प्रति मनुष्य टैक्स चुकाकर हम लोगों ने पुल पार किया, और मिर्ज़ापुर पहुँचे। गंगा पार करते ही एक ऐसे दर्रे से गुज़रना पड़ा, जो काटा जा रहा था। वहाँ पहुँचते ही एक इक्का किया, और टाँडा-फ़ॉल की ओर चले।

मिर्ज़ापुर समुद्र की सतह से २८३ फ़ीट उँचाई पर बसा है। यह अच्छा और बड़ा नगर है। यहाँ कई मिडिल स्कूल, कन्या-पाठशालाएँ, अस्पताल और हाईस्कूल हैं। यहाँ की आबादी अच्छी है। तिरमुहानी, चौक और मुट्ठीगंज आदि यहाँ के बड़े बाज़ार हैं। यहाँ कई बहुत सुंदर भवन और कोठियाँ तथा बड़ी-बड़ी दूकानें हैं।

गंगा के किनारे तो नगर बसा ही है। किनारे बिलकुल सलोतर, सीधे खड़े हैं। कहीं-कहीं २५-३० फ़ीट ऊँचे और बिलकुल सीधे कगारे हैं।

मिर्ज़ापुर से ४-५ मील की दूरी पर विंध्याचल है। यहाँ इक्के-ताँगों से भी विंध्याचल जा सकते हैं। ⌐) या ⌐) सवारी पड़ती है। मार्ग का दृश्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत सुंदर है। मिर्ज़ापुर में कपास और रुई का व्यापार होता है। सूती कपड़ों के अतिरिक्त यहाँ 'लाख' का भी व्यापार बहुत होता है। संयुक्त प्रांत में कपास और लाख के व्यापार का यह सबसे बड़ा केंद्र है। यहाँ की दरियाँ तो संसार-भर में प्रसिद्ध हैं। पीतल तथा अन्य धातु के बर्तन भी प्रसिद्ध हैं। यहाँ लाल पत्थर का भी व्यापार होता है। संक्षेप में यह बहुत कारोबारी नगर है। गंगा के दाहने किनारे पर स्थित है।

अस्तु। हम लोग टाँडा-फ़ॉल चले। मिर्ज़ापुर में एक घंटाघर रास्ते में पड़ा। उस पर बहुत सुंदर पत्थर की नक़्क़ाशी का काम था। जब इक्का स्टेशन पार कर चुका, तभी से सामने पहाड़ी दिखलाई देना शुरू हुई। सड़क के दोनो ओर खुले, चौड़े और विस्तृत हरे-हरे मैदान थे। लगभग ४ मील चलकर हम लोग पहाड़ी के बिलकुल नीचे पहुँचे। वहाँ से दाहनी ओर सड़क पड़ती और चढ़ाई शुरू होती है। मोड़ पर एक साइनबोर्ड पर 'टाँडा' लिखा था। पहाड़ी के ऊपर तक—जहाँ डाकबँगला बना है, वहाँ तक—पक्की सड़क पर इक्के जाते हैं। किंतु जिस स्थान पर एकदम सीधी चढ़ाई है, वहाँ २-२ फ़र्लांग पैदल चलने के लिये इक्के से हम लोगों को उतरना पड़ा। पहाड़ी उजाड़-सी है। चट्टानें, घास और झाड़ियाँ ही चारों ओर हैं। दूर-दूर पर छितरे हुए पेड़ हैं, और वे भी बहुत ऊँचे नहीं। पहाड़ी दृश्य का आनंद लेते, रोमांच और आह्लाद का अनुभव करते हुए २ मील चलकर डाकबँगले के पास हम लोग इक्के से उतरे। तारा के परित्यक्त मिलिटरी स्टेशन पर टाँडा-फ़ॉल है। वहाँ कई अन्य इक्के और मोटरें खड़ी थीं। पूछते-पाछते वहाँ से निकट ही एक घाटी में आए, जो तीन ओर पहाड़ी की ऊँची दीवारों से घिरी थी। पृथ्वी के नीचे से पानी आता है। वहाँ पत्थरों के अंदर से निकलता है। ३-४ स्थानों से पानी आ रहा था। बीच में एक चौड़ी

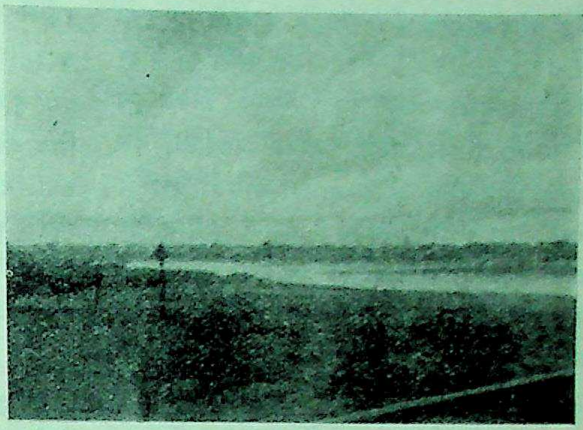

मिर्ज़ापुर से गंगा-नदी का एक दृश्य

और समतल भूमि थी। वहाँ एक गहरा गड्ढा होने के कारण एक सुंदर और अकृत्रिम तालाब-सा बन गया था। बड़ा शांति-प्रद स्थान है वह। मुझे कई स्थान पर मिट्टी के बर्तन और जले हुए चूल्हे दिखाई दिए, इससे मैंने अनुमान किया कि यहाँ लोग पिकनिक के लिये आते होंगे। यह स्थान इस योग्य और बड़ा सुंदर है। हाथ-मुँह धोकर हम लोग स्वस्थ हुए, और बड़ी देर तक तालाब के बहते, निर्मल जल में पैर डाले खिलवाड़ करते रहे। इसके बाद मेरे अन्य साथी तो ऊपर खड़े रहे, और मैं ख़ूब इधर-उधर पानी की धाराओं और काई से भरी चट्टानों पर घूम-घूमकर नीचे तक देखता रहा। फिर कोठी से टाँडा-फॉल का दृश्य देखा। ७०-८० फ़ीट की ऊँचाई से नीचे गिरती हुई तीव्र जल की धारा ऐसी लगती है, जैसे चाँदी की धारा बह रही हो। यह अनुपम दृश्य ज्योत्स्ना में देखने से और भी स्वर्गीय अलौकिकता से परिपूर्ण मालूम पड़ता है।

फिर हम लोग झरने के निकट गए—कोठी से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

½ मील दूर होगा। चट्टानी मैदान बहुत लंबा-चौड़ा है। उस पर भिन्न-भिन्न धाराओं से आकर 'फ़ॉल' बनता है। पानी में असंख्य मछलियाँ हैं। बाईं ओर की एक ऊँची चट्टान से झरने का दृश्य देर तक देखते रहे। पहला झरना पानी की चादर के समान, दूसरा बहुत दूर से गिरता फेनिल दूध के समान, तीसरा सीढ़ी बनाता, टकराता, बल खाता और चौथा और पाँचवाँ मामूली रूप से गिरता था। अस्तु। सघाट, चट्टानी ज़मीन पर बहता हुआ पानी जब ६०-७० फ़ीट की ऊँचाई से एकदम खड़ी चट्टानों से नीचे गिरता है, तो कहीं तो लगता है, सीढ़ी-सी बनी हुई चट्टानों पर सफ़ेद चादर-सी बिछी है, और वह हिल रही है। कहीं चाँदी के पत्र के समान, कहीं दूध के फेने के समान जल-धारा गिरती है। कम-से-कम ५ स्थानों से पानी भारी धारा में गिरता है। उस अवर्णनीय दृश्य को देखकर हम फिर कोठी लौटे। कोठी के लिये इतना सुंदर स्थान चुना गया है कि उस स्थिति के चुनने के लिये इंजीनियर की जितनी तारीफ़ की जाय, कम है।

वहाँ से लौटे, तो इक्केवाले ने कहा—"बाबूजी, बाँध नहीं देखिएगा।" हम लोग उस ओर चल दिए। शाम हो गई थी, हर ओर अँधेरा फैल चुका था, पूर्णमासी का चंद्रमा आकाश में था, आकाश निर्मल था, प्रकृति निस्तब्ध थी। ऐसे सुहावने समय हम लोग 'वाटर रिज़रवायर' पर पहुँचे। बाँध लगभग ३$\frac{3}{4}$ मील चौड़ा और १ मील लंबा होगा। पानी के अंदर एक कोठी-सी बनी थी, और उस तक जाने के लिये एक छोटा-सा पुल। पानी स्थिर और अगाध था— चंद्रमा उसमें झिलमिला रहा था। शांत, सौम्य-मूर्ति और गंभीर प्रकृति के साम्राज्य में एक गाय चर रही थी। हृदय आनंद से उछल रहा था, किंतु थोड़ा बहुत घूमकर ही चल दिए। मन तो होता था, यहीं बैठे रहें। उसे देखने के लिये इंद्र की आँखें और ब्रह्मा के दिन की आवश्यकता है। रात हो जाने से सूनसान जंगल और पहाड़ी पर लुट जाने का भय था, क्योंकि पहाड़ियों पर गुंजान वृक्षों में सैकड़ों आदमी छिप जायँ, तब भी कुछ पता न चले। हम तीनों आदमियों के पास रुपया और माल मिलाकर ४००), ५००) से कम का न होगा। नया स्थान था। अस्तु। हम लोग उसी मार्ग से लौटे। चट्टानें और हरियाली ज्योत्स्ना में स्नान कर रही थी। पूर्ण चंद्र की ज्योति में पहाड़ी कितनी सुंदर लगती है, यह बताने की बात नहीं, वरन् अनुभव द्वारा जानी जा सकती है। डरते और आँखों द्वारा प्रकृति का सौंदर्य पान करते हुए हम लोग ९ बजे रात को मिर्ज़ापुर पहुँचे।

अब हमारे सामने दो विकट प्रश्न उपस्थित हुए—प्रथम तो रात्रि कहाँ व्यतीत की जाय, और दूसरे यह कि इतनी काफ़ी सरदी है, और न बिछाने के लिये एक दरी और न ओढ़ने के लिये एक भी कपड़ा—क्या करेंगे? टाँडा-फ़ॉल देखते समय तो इसका ध्यान भी न आया था, और आया भी था, तो हम लोगों ने कहा होगा—इस समय तो आनंद ले लें, फिर देखा जायगा, ख़ैर। हम लोग स्टेशन गए, और वहाँ के स्टेशन-मास्टर से मिले। वह एक अँगरेज़ सज्जन थे। उनसे पूरा हाल कहा, और कहा कि इंटर क्लास-वेटिंग रूम खुलवा दीजिए। उन्होंने खुलवा दिया। हर ओर के किवाड़ बंद कर लिए। हवा और चोरों से तो यह बचाव किया, बिजली की बत्ती भी जाड़े में गरमी और प्रकाश देती रही। टाँडा-फ़ॉल पर ही हम लोगों को एक सज्जन ने यह सलाह दी थी। उनका शुभनाम बाबू बद्रीनाथजी था। वह वहीं के निवासी थे। रात्रि में भी वह बेचारे हम लोगों की सुध लेने आए। रात्रि-भर हम लोग मज़े में सोए। एक सज्जन मेज़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर सोए, और दो एक तिपाई पर। मच्छड़ काटते रहे, कुछ सरदी भी लगी, पर नहीं के बराबर। यदि वहाँ रात्रि को सोने को न मिलता, तो रात-भर हम लोग जाड़े में ऐंठ जाते, और न-जाने क्या दुर्दशा होती।

प्रातःकाल शौचादि से निवृत्ति पाकर हम लोग स्टेशन से पैंटूनब्रिज तक पैदल आए। स्थान-स्थान पर इक्केवालों से पूछते जाते थे—उन्हें जगाकर, पर इतने सुबह कौन जाता। वहाँ से इक्का किया। वह सर्राटे की हवा चल रही थी कि हम लोग सिकुड़े जा रहे थे, और थर-थर काँप रहे थे। उँगलियाँ नीली पड़ गई थीं, क्योंकि मामूली कपड़े पहने थे। घर से यह सोचकर थोड़े ही चले थे कि रात को रुकना पड़ेगा, नहीं तो हमारे मित्र की माताजी के कहने पर भी हम लोग लोई तक जाने से क्यों इनकार कर देते। वहाँ तो कह आए थे कि ९-१० बजे रात को आ जायँगे। ख़ैर। ६½ बजे प्रातःकाल हम लोग विंध्याचल पहुँचे। उस दिन गंगा-स्नान था, अतः वहाँ बहुत भीड़भाड़ थी। मैंने स्नान करना चाहा, तो मेरे एक साथी, जो ज़रा गंगा-स्नान आदि से भागते हैं, मुझे रोकते रहे कि रात-भर ठंड में मरे हो, और इस समय काँपते हुए यदि नहाओगे, तो निमोनिया हो जायगा। किंतु मेरी इच्छा और हठ ने उनके वाद-विवाद पर विजय पाई। केवल मैंने ही स्नान नहीं किया, मुझे कोसते हुए उन दोनो ने भी स्नान किया।

अब मैं विंध्याचल का वर्णन करता हूँ—प्रयाग से ४६ मील विंध्याचल-स्टेशन है। प्रयाग से काशी जाते समय यह रास्ते में पड़ता है। और, यहाँ से ५-६ मील पर दूसरा स्टेशन मिर्ज़ापुर है, जिसका वर्णन हो चुका है। यह भी गंगा के दाहने किनारे पर स्थित है। यहाँ का बाज़ार छोटा है, किंतु आवश्यकता की सभी वस्तुएँ प्रायः मिल जाती हैं। हाँ, जब यहाँ मेला होता है, तब बाहर के बहुत-से लोग यहाँ दूकानें लाते हैं। पूजा-पाठ और प्रसादी का सामान, जैसे चुड़ुवा, कमलगट्टा आदि, यहाँ बहुत मिलता है। बस्ती बड़ी और अच्छी है, और पंडों के ही मकान अधिक हैं। कई धर्मशालाएँ भी हैं।

यहाँ का महत्त्व और माहात्म्य विंध्यवासिनी-देवी के मंदिर के कारण है। मंदिर बहुत बड़ा

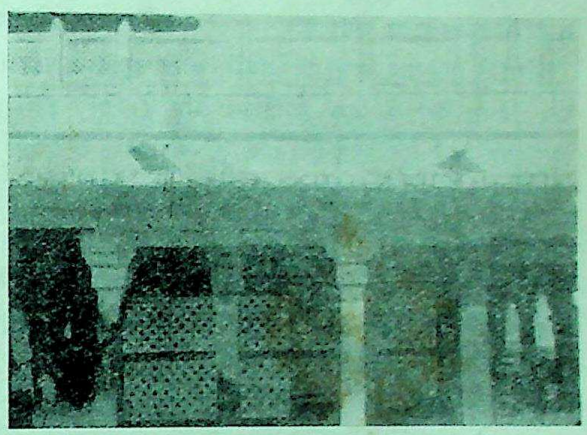

विंध्यवासिनीदेवी का मंदिर

नहीं, किंतु बहुत छोटा भी नहीं। कालीजी की श्याम मूर्ति है—लगभग २½ हाथ ऊँची। वह सिंह पर सवार हैं। यात्रियों को देवीजी के दर्शन नहीं हो सकते। कारण यह कि मंदिर के अंदर फ़ीट-डेढ़ फ़ीट ऊँचा चबूतरा है। उसके चारों ओर काठ का जँगला है। उसी के अंदर देवीजी की मूर्ति है, जो काफ़ी नीचे पर है—अँधेरा भी वहाँ काफ़ी है। मेले में अधिक भीड़ होने के कारण तो दर्शन हो ही नहीं पाते। विंध्याचल की मुख्य देवी कौशिकी और कात्यायनी हैं।

मंदिर के चारों ओर चढ़ने के लिये सीढ़ियाँ बनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुई हैं । सीढ़ियाँ चढ़कर एक चौकोर खंभों का दालान है, और दालान में मंदिर, जिसका वर्णन हो चुका है। मंदिर के पश्चिम में एक आँगन है, जिसमें देवीजी को बकरों की बलि चढ़ाई जाती है। आँगन के एक ओर और एक दालान है। उसमें सात बड़े घंटे लगे हैं। पश्चिम में बारह-भुजी देवी भी निकट ही हैं। पास ही खोपड़ेश्वर महादेव, दक्षिण में महाकाली और उत्तर में धर्मध्वजादेवी आदि के मंदिर हैं। उत्तर में विश्वेश्वर महादेव और हनुमान्‌जी की मूर्ति है। मंदिर में खुला हुआ मंडप है।

गंगा के उस पार, उत्तर में, रेती में, छोटी चट्टान पर, बिना अर्घे के एक शिवलिंग भी है, जो विंध्येश्वर नाम से प्रसिद्ध है। पास ही चट्टान पर एक शिला-लेख भी है, जो काशी-नरेश का बताया जाता है । पास ही दूसरी चट्टान पर घिसा हुआ दूसरा शिला-लेख है।

दर्शन और स्नान के बाद भोजन किया, और फिर त्रिकोण-यात्रा करने की सोची। भगवती, काली और अष्ट-भुजी के दर्शन को ही त्रिकोण-यात्रा कहते हैं। हम लोगों ने इक्का किया। सुंदर पहाड़ी प्रदेश की सड़कों से होता हुआ इक्का आगे बढ़ा। पहाड़ियों की चोटियों पर सुंदर बँगले बने हैं । यहाँ की जल-वायु बहुत सुंदर है, और 'सैनीटोरियम' की दृष्टि से यह दिन-प्रति-दिन अत्यधिक ख्याति पा रही है। यह स्थान सुंदर, रमणीक और तपस्या के योग्य है। यहाँ पवित्रता, शांति और एकांत के दर्शन होते हैं। इसका प्राकृतिक सौंदर्य यों तो सराहनीय है ही—वर्षा-ऋतु में इसके सौंदर्य में बहुत वृद्धि हो जाती है, क्योंकि यहाँ तब बहुत-से झरने आदि बहने लगते हैं। इक्का एक पहाड़ी के बीच में नीचे ही रुक गया। हम लोग पैदल चलकर अष्ट-भुजी देवी के मंदिर में गए। यह काली-खोह से २ मील पर हरे-भरे पहाड़ों पर स्थित है। विंध्याचल में अष्ट-भुजी से थोड़ी दूर रामेश्वर शिव का मंदिर है। वहाँ दर्शन किए। एक सुंदर वन के बीच में यह स्थित है। एक और 'राम गया'-नामक स्थान है, जहाँ पिंडदान होता है । सुंदर, ऊँची-नीची पहाड़ियाँ और पक्की बनी सीढ़ियाँ हम लोगों को मिलीं । रास्ते में भिक्षुवा - खोह मिली। फिर सीता-कुंड पड़ा । यह बड़ा रमणीक स्थान है। यहाँ काले मुँह के बंदर बहुत हैं। इसके बाद एक बहुत लंबा-चौड़ा मैदान मिलता है। फिर मोतियाताल पड़ा, इसके बाद गेरुआ तालाब पड़ा। इसे गिरबहना भी कहते हैं । निकट ही श्रीकृष्णजी का मंदिर है। फिर कालीखोह है। काफ़ी सीढ़ियाँ उतरना पड़ीं शायद १०८। कालीजी का मंदिर निकट ही एक और है—उसमें दर्शन किए। देवी का शरीर छोटा, मुख बड़ा है। निकट ही एक और स्थान पर दर्शन हैं। यह बड़ा ही रमणीक और हृदयहारी, वृक्षों से आच्छादित पहाड़ी स्थान है। दर्शन करके फिर लौटना पड़ा, इक्के के लिये, अष्ट-भुजा होते हुए। इसके निकट भैरोंकुंड है। यह एक सुंदर झरना है, और बड़ा सुंदर स्थान है। इसी का पानी एक तालाब में जमा होता है, जिसे देवी का कुंड कहते हैं। यह कुंड यहाँ से दिखाई देता है, और पास ही है। यहाँ भी पेड़ छितरे-छितरे हैं। ग्रीष्म-ऋतु होने के कारण घास सूखी-सी थी, और झाड़ियाँ छोटी-छोटी।

जब त्रिकोण-यात्रा हो चुकी, तो पता चला कि प्रयाग गाड़ी जाने में अभी काफ़ी देर है। अतः मेरी इच्छा न होते हुए भी मेरे मित्रों के हठ के कारण गंगाजी के पार चील-स्टेशन को रवाना हुए—नाव द्वारा। बड़ी गंगा में नाव में इतनी दूर की यात्रा करना, जब नाव में इतना अधिक बोझ हो, ख़तरे से ख़ाली न था। मैं तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तैरना जानता हूँ। यदि नाव पर कुछ संकट आता, तो संभव था, मैं तैरकर गंगा पार भी कर लेता, पर मेरे दोनो मित्र तैरना न जानते थे। ख़ैर, नाव चली। जब मैंने अपने हठ का कारण उन्हें समझाया, तब तो वे लोग इतना डरे कि रह-रहकर कहते थे—"नाव किनारे लगवा लो।" किंतु मेरे समझाते रहने पर किसी तरह रुके रहे। नाव किनारे लगी। हम लोगों ने ३-४ फ़र्लांग रेती पार की, स्टेशन पर आए। माधोसिंह में गाड़ी बदलना थी। वह अभाग्य-वश ३ घंटे 'लेट' थी। ८½ बजे रात्रि को प्रयाग गाड़ी पहुँची। हमारे मित्र के घर में और जहाँ मैं टिका था, वहाँ बड़ी घबराहट हम लोगों के कारण हुई। कारण यह था कि उस समय हिंदू-मुसलमानों का वैमनस्य चल रहा था—कुछ दिन पहले लड़ाई भी हो चुकी थी। हम लोग स्वयं स्टेशन से चौक तक बहुत डरते-डरते आए। इतनी आनंदप्रद और कष्टप्रद यात्रा के बाद घर पहुँचने पर मीठी झिड़कन और डाँट पड़ी, और उसके लिये हम लोग पहले से ही तैयार होकर गए थे।

दुलारे-दोहावली पर श्रीरामायणशरणजी एम्० ए० की सम्मति—यों तो 'दुलारे-दोहावली' का नाम कई वर्षों से सुन रहा था, और जहाँ-तहाँ इसके दोहों को पढ़ने और उनसे आनंद प्राप्त करने के अवसर भी मिले थे, पर हाल में मुझे इसके पढ़ने और मनन करने की इच्छा हुई। यह पुस्तक कई दृष्टिकोणों से अपने ढंग का एक नया और अनूठा प्रकाशन है। लोगों की धारणा होती जा रही थी कि अब व्रज-भाषा का समय नहीं रहा, और न उसमें अच्छी कविताएँ ही लिखी जा सकती हैं, पर भार्गवजी ने इस धारणा को ग़लत प्रमाणित कर दिया। अभी तक हिंदी-प्रेमियों को यह विश्वास था कि बिहारी-सतसई-जैसे भाव-पूर्ण और 'गागर में सागर' भरनेवाले दोहे अब हिंदी में लिखने की योग्यता, साहस और कवित्व-शक्ति किसी में नहीं है, पर श्रीदुलारेलालजी ने बिहारी के टक्कर में रखनेवाले और मेरी समझ में कहीं-कहीं उनसे बहुत आगे बढ़कर नवीन भाववाले दोहे लिखकर हिंदी-संसार की अपूर्व सेवा की है। शृंगार-रस प्रधान होते हुए भी इनके दोहों में कहीं भी अश्लीलता नहीं आने पाई है। जहाँ-जहाँ उपमाएँ दी गई हैं, उनमें से अधिकांश बिलकुल नवीन और उपयुक्त हैं। भार्गवजी की गणना युग-प्रवर्तक महाकवियों में की जा सकती है। इतने थोड़े समय में इस दोहावली का सातवाँ संस्करण प्रकाशित हुआ है, यही इसकी श्रेष्ठता और नवीनता का यथेष्ट प्रमाण है। सर्व-साधारण की सुविधा तथा पुस्तक के अधिकाधिक प्रचार के लिये प्रकाशक ने इसका मूल्य आठ आने करके अपनी सहृदयता और विद्यानुरागिता का परिचय दिया है।

इस सुंदर 'दोहावली' के प्रकाशन के लिये मैं भार्गवजी की सुरुचि की प्रशंसा किए बिना नहीं रह सकता। सचमुच वह बधाई के पात्र हैं!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'रसवंती' *

(आलोचना)

[श्रीयुत गोपाल व्यास एम्० ए०, साहित्यरत्न]

'रेणुका' और 'हुंकार' के पश्चात् 'रसवंती' कवि श्रीरामधारी-सिंह 'दिनकर' का नवीन कविता-संग्रह है। इसमें छोटी-मोटी २४ कविताएँ संगृहीत हैं। प्रथम कविता 'रसवंती' के कारण पुस्तक का नाम 'रसवंती' रक्खा गया है।

और, वास्तव में वह रसवंती है भी। उसमें 'रेणुका' और 'हुंकार' के विपरीत कोमल भावनाओं की अभिव्यक्ति है। कवि के शब्दों में ही इसमें—

"बँधे सिमट कुछ भाव प्रणय के,
कुछ भय, कुछ विश्वास हृदय के।"

'दिनकर' की गणना नवोत्थित प्रगतिवादियों में होती है। प्रगति-पंथ के पथिक के रूप में उन्होंने भी—

"मालिक जब तेल-फुलेलों पर पानी-सा दूध बहाते हैं,
पापी महलों का अहंकार देता तब मुझको आमंत्रण।"

जैसे गीतों द्वारा शोषकवर्ग के प्रति रोष-हुंकार की थी। पर कदाचित् प्रतिक्रिया का आवेश शांत हो जाने पर वह प्रगतिवाद (अथवा 'हँसिया-हथोड़ावाद') के आलोचक बन गए हैं। 'रसवंती' के प्रारंभ में उन्नीस पृष्ठों की विस्तृत और मनन-पूर्ण भूमिका में उन्होंने तथाकथित प्रगतिवाद की इष्टानिष्टता पर विचार प्रकट किए हैं। उन्हीं के शब्दों में "प्रगति का जो अर्थ मैं समझ सका हूँ, वह साम्यवाद नहीं, बल्कि नवीनता का पर्याय है, और उसके दायरे में उन सभी लेखकों का स्थान है, जो चर्वित-चर्वण, पुरातन-विजृंभण और गतानुगतिकता के ख़िलाफ़ हैं। वे सभी लेखक प्रगतिशील हैं, जो किसी प्रकार भी अनुकरणशील नहीं कहे जा सकते। संघ क़ायम करने अथवा आंदोलन चलाने से साहित्य में प्रगतिशीलता नहीं आती, प्रत्युत यह उसका सनातन गुण है, और इसे छोड़कर वह जी नहीं सकता। सार्थक साहित्य हमेशा प्रगतिकामी हुआ करता है।..... और, केवल भाड़े पर लिखी हुई चीजें, रोटी का राग और साम्यवाद के गीत बिलकुल असत्य हैं, क्योंकि उनमें अनुभूति का दाह नहीं, क्योंकि वे बिलकुल समय की फ़रमाइश पर नाचने को आई हैं।"

'दिनकर'जी के अनुसार शोषक अभिजातीय-वर्ग के प्रति रोष-पूर्ण उक्ति भी साहित्य हो

* लेखक, श्रीरामधारीसिंह 'दिनकर'; प्रकाशक, पुस्तक-भंडार, लहेरियासराय (बिहार); पृष्ठ-संख्या ६१+१६; मूल्य ।।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकती है, पर एकमात्र वही प्रगतिशील नहीं। सामयिक आंदोलन के ताल-स्वर पर नाचनेवाला साहित्य चिरंतन मानव-अनुभूतियों को अभिव्यक्त करनेवाले साहित्य का समकक्ष नहीं हो सकता। आंदोलन आंदोलन ही हैं—क्षणिक और अस्थायी, और मानव-अनुभूतियाँ हैं चिरंतन तथा शाश्वत। वर्ग-युक्त समाज के व्यक्तियों के हृदय भी आशा-निराशा, हर्ष-विमर्श, दांपत्य-वात्सल्य, प्रेम-वैर आदि भावों के क्रीड़ास्थल हैं, और रहेंगे, और वर्ग-हीन समाज भी इनसे मुक्त नहीं हो पाएगा। अतः साहित्य को राजनीति का रण-वाद्य बनाने में सत्साहित्य का अहित ही होगा।

'रसवंती' के लेखक को इस प्रकार प्रगतिवाद की संकीर्ण पगडंडी से खिसककर साहित्य के प्रशस्त राजपथ पर चलते देखकर सांप्रदायिक प्रगतिवादियों को निराशा एवं साहित्य के सच्चे मर्मज्ञों को हर्ष ही होगा।

'दिनकर' के कथनानुसार 'रसवंती' एक तरह से उनका नूतन प्रयोग है, पर इस नूतनता और प्रयोगात्मकता में भी पर्याप्त सुंदरता और सफलता सन्निहित है। उसकी कुछ रचनाएँ तो बड़ी सुंदर बन पड़ी हैं, यथा—नारी, पुरुष-प्रिया, कवि, बालिका से वधू, रास की मुरली, गीत-अगीत इत्यादि।

नारी का आविर्भाव होते ही उसके सौंदर्य से चमत्कृत और विमोहित होकर--

"लगे रचने निज उर को तोड़
तुम्हारी प्रतिमा प्रतिमाकार;
नाचने लगी कला चहुँ ओर
भाँवरी दे-दे विविध प्रकार।"

उसके मादक दृष्टि-विक्षेप के कारण---

"हिंस्र मानव के कर से स्वस्त
शिथिल गिर गए धनुष औ' बाण।"

और—

"विजित हो दृग-मद से सुकुमारि,
झुका पद-तल पर पुरुष अजेय।"

पुनः उसे प्राप्त करने की कर्मियों द्वारा—

"टूटने लगे शंभु के चाप,
वेधने चला लक्ष्य गांडीव।
पुरुष के खिलने लगे प्रताप।"

कवि ने उसे कामिनी के रूप से बढ़कर जननी, भगिनी और पत्नी के रूप में भी देखा है—

"तुम्हारे अधरों का रस प्राण!
वासना-तट पर पिया अधीर;
अरी, ओ मा, हमने है पिया
तुम्हारे स्तन का उज्ज्वल क्षीर।"

'पुरुष-प्रिया'-नामक रचना में भी प्रायः उक्त भावनाओं की ही आवृत्ति हुई है। 'सद्यः-स्नाता, मद-भरित, सिक्त सरसीरुह की अम्लान कली'-सी नारी को देखकर दिग्विदिक् सृष्टि के विजेता बर्बर पुरुष की—

"नस-नस जृंभा संचरित हुई,
संस्रस्त शिथिल उर के बंधन।"

और उसके कोकिल-कंठ से 'प्रियतम' शब्द सुनकर तो—

"गिर गए बाण, गिर गया धनुष,
सिहरा यौवन का रस मेरा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर वासना-विह्वल पुरुष की दृष्टि शारीरिक सौंदर्य को पार कर हृदय-सौंदर्य तक न जा सकी—

"खोजते मोह का उत्स पुरुष ने
सारी आयु वृथा खोई ;
इससे न अधिक कुछ जान सका,
तुम-सा न कहीं सुंदर कोई।"

वासना के बहकाने से पुरुष—

"पा सका न मन का द्वार लुब्ध,
भग चला कुसुम का तन लेकर।"

अविवेकी पुरुष ने प्रिया के अवारित प्रेम-सदन में से—

"वह लिया कि जिसमें तृप्ति नहीं,
पाना था जो, वह पा न सका।"

'बालिका से वधू' तो अत्यंत भावपन्न कविता है, जिसे पढ़कर हृदय रस-सिक्त हो जाता है। कवि ने प्रिय-गृह-गमनोद्यता नवोढ़ा का कैसा सुंदर वर्णन किया है—

"माथे में सेंदुर पर छोटी दो बिंदी चमचम-सी ;
पपनी पर आँसू की बूँदें मोती-सी, शबनम-सी।
पीली चीर कोर में जिसके चकमक गोटा-जाली ;
चली पिया के गाँव उमर के सोलह फूलोंवाली।"

'मा की ढीठ दुलार' और 'पिता की लजवंती भोली', के 'पिया की डोली' में चले जाने पर कवि कहता है—

"मँह-मँह कर मंजरी गले से मिल किसको चूमेगी ?
कौन खेत में खड़ी फ़सल की देवी-सी झूमेगी ?"

अंत में मंगल-कामना करता हुआ कवि आशीर्वाद देता है—

"मंगलमय हो पंथ सुहागिन, यह मेरा वरदान ;
हरसिंगार की टहनी-से फूलें तेरे अरमान।
छाया करती रहे सदा तुझको सुहाग की छाँह ;
सुख-दुख में ग्रीवा के नीचे रहे पिया की बाँह।"

महाकवि कालिदासजी की छाप इस कविता पर स्पष्ट ही है। अन्य संस्कृत, हिंदी एवं अँगरेज़ी के कवियों का प्रभाव भी यत्र-तत्र झलकता है। यथा—

"दृष्टि तुमने फेरी जिस ओर,
गई खिल कमल-पंक्ति अम्लान।"

उपर्युक्त पंक्तियाँ मैथिल-कोकिल विद्यापति की रचना 'जहाँ-जहाँ नयन-विकास, तहिं-तहिं कमल-विकास', अथवा गोस्वामी तुलसीदासजी की अर्धाली—

"जहँ बिलोकि मृग-सावक-नैनी,
जनु तहँ बरसि कमल सित श्रेनी।"

की ओर स्पष्ट ही संकेत कर रही हैं।

'दिनकर'जी ने भूमिका में प्रगतिवाद के साथ ही छायावाद की आलोचना भी की है। पर 'रसवंती' में वह स्वयं छाया की माया से सर्वथा मुक्त नहीं है। 'रोमेंटिक जादूगरनी' के इंद्रजाल में भी वह थोड़ा-बहुत उलझे हुए ही हैं। अनंत और असीम प्रियतम को भेंटने की उत्सुकता वैसी ही बनी हुई है—

"भूमि से आकाश तक जिसका अनंत प्रसार,
बाँध लूँ उसको भुजा में युग्म बाँह पसार।"

उनके गान भी—

"उड़े जा रहे पंख पसारे
गीत व्योम के कूल-किनारे—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस अगीत की ओर, जिसे प्राणों से
कभी लगा न सका मैं।"

हाँ, इन रहस्यात्मक भावनाओं में अस्पष्टता या धुँधलापन अवश्य नहीं है।

कवि में नैराश्य और वेदना का अब भी अस्तित्व बना ही है। उसकी तान अब भी 'दर्द में भीगी हुई-सी' है। 'दिनकरजी' के शब्दों में ही ब्रह्मा ने कवि को—

"सब कुछ देकर भी चिर-नवीन,
चिर-ज्वलित व्यथा का रोग दिया;
फूलों - से रचकर गात भाग्य में
लिख शूलों का भोग दिया।"

वह कवि को सांत्वना के स्थान पर सलाह देते हैं—

"रोओ, रोना वरदान यहाँ
प्राणों का आठो याम हुआ।"

संभव है, भविष्य में कवि की निराशा आशा में परिवर्तित हो जाय—

"खारी लहरों पर स्यात् कहीं
आशा का तिरता कोक मिले।"

राष्ट्रीय भावनाओं की अभिव्यक्ति भी कहीं-कहीं हुई है। यथा—

"सजेगा जिस दिन उत्सव-हेतु
देश - माता का तोरण - द्वार,
करेंगे हम ले मंगल-शंख
उदय का स्वागत मंत्रोच्चार।"

वर्तमान योरपीय युद्ध की बिभीषिकामय वातावरण की ओर भी कवि का ध्यान गया है। सभ्यता का मूलोच्छेदन करनेवाले, मानवता के संहारक वैज्ञानिक आविष्कारों को वह अच्छा नहीं समझता—

"शाप का अधिकारी वह विश्व,
किरीचों का जिसको अभिमान।"

उसके हृदय में सभ्यता के संहार पर क्षोभ एवं दलित राष्ट्रों के प्रति सहानुभूति का स्रोत उमड़ पड़ता है—

"श्रवण कर चल-दल-सा उर फटा
दलित देशों का हाहाकार;
देखकर सिर पर मारा हाथ
सभ्यता का जलता शृंगार।"

कवि की भाषा प्रौढ़, प्रसाद एवं ओज-पूर्ण है। सर्वत्र भावानुगामिनी है। शब्दों द्वारा कहीं-कहीं तो सुंदर चित्र अंकित किए गए हैं—

"दाएँ कर से जल को उछाल
तट पर बैठे क्यों मौन? अरे!
बाएँ कर से मुँह ढाक लिया,
चिंता जागी यह कौन? हरे!"

पर छंद के बंधन के कारण कहीं-कहीं 'पहूँची'-जैसे प्रयोग भी हैं। एकआध स्थल पर छंदों की शिथिलता भी खटकती है।

'रसवंती' वास्तव में 'यथानामा तथा गुणः' है। हम हृदय से उसका अभिनंदन करते हैं। आशा है, श्री'दिनकर'जी मिथ्या एवं संकीर्ण प्रगतिवाद के कारण शुष्क होते हुए साहित्य-क्षेत्र को अधिकाधिक रसमयी रचनाएँ देकर हरा-भरा बनाए रहेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तरुणी

[श्रीआरसीप्रसादसिंह]

हे सुंदर, चिर-सुंदर नारी !
मैंने तुमको प्यार किया है,
और तुम्हारे मुख-मंडल का
लज्जा से शृंगार किया है।
मदिरा और वारि-सा मैंने
पान किया है अधरामृत का ;
फाल्गुन-वन की कुंज-वीथि में
तुमसे निशि-अभिसार किया है।

श्रीआरसीप्रसादसिंह

शिशुओं को भी मैंने देखा,
उनका भी जी बहलाया है ;
उन्हें गोद में लेकर चूमा,
और गीत भी तो गाया है।
चंदा मामा को लाया हूँ
आसमान से भू-मंडल पर ;
मुझको वे लगते हैं वन के
पुष्पों से भी अधिक मनोहर।
फिर भी तुममें ही पाई है
पृथिवी की मोहकता सारी ;
मैं करता हूँ प्रेम तुम्हीं से,
हे सुंदर, चिर-सुंदर नारी !
हे सलज्ज, सुंदर, सुकुमारी,
मुझको मिला तुम्हारा यौवन ;
मधुर लगा है मुझे तुम्हारा
चिर-मदांध, मादक आकर्षण।
वारंवार तुम्हारे सम्मुख
मैं आया चिर-वांछित होकर ;
आ जाते ज्यों नीरज-दल पर
लांछित होकर भी मधुकर-गण।
मैंने वृद्धों को देखा है
श्वेत-केश, उत्साह-रहित-मन ;
अकर्मण्य, दिग्मूढ़ जरा में
नीरस, अलस, प्रशांत, अचेतन।
मैंने उनका अनुभव पाया,
किया ज्ञान का भी संचय है ;
त्याग, योग, संयम है सीखा,
माया का पाया परिचय है।
फिर भी वह उपदेश व्यर्थ-सा,
मैं तुम पर होता बलिहारी ;
मेरे मानस की कल-हंसिनि,
हे सलज्ज, सुंदर, सुकुमारी !
हे युवती, चिर-सुंदर युवती,
तुम मेरे अंतस् की वाणी ;
पुण्य - हृदय - मंदिर में स्थापित
देवी की प्रतिमा कल्याणी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुमने की उद्बुद्ध पिपासा,
और उसे फिर शांत किया है ;
तुम मेरी आत्मा हो, मेरे
निर्जन मनोराज्य की रानी !
युवकों को मैंने देखा है
कारा में आनंद मनाते ;
हँसते जाते बलि के पथ पर,
तोपों के आगे मुसकाते।
मैंने भी जय-घोष किया है,
मतवालों को ललकारा है ;
देश-भक्ति का मैं पागल हूँ,
विद्रोही मुझको प्यारा है।
फिर भी जब सौंदर्य-शिखा तव
मधुर-मधुर जीवन में जगती ;
मैं हो जाता शलभ तुम्हारा,
हे युवती, चिर-सुंदर युवती !
हे सुहासिनी, हे चिर-कामिनि,
मैं निशि-दिन यौवन का कामी ;
रहा सदैव तुम्हारे चरणों
का मैं आजीवन अनुगामी।
भिक्षुक रहा तुम्हारी छवि का,
प्रार्थी मैं तव प्रिय दर्शन का ;
नारि, तुम्हारे रोम-रोम का
प्रेमी मेरा अंतर्यामी।
दीनों को मैंने देखा है,
मैं सुनता हूँ जग का क्रंदन ;
नवयुग को करता आमंत्रित,
करता मैं विप्लव का वंदन।
और, शोषितों का करुणामय
हाहाकार सुना है मैंने ;
चिता बुझाई है निःश्वासों
से, अंगार चुना है मैंने।
फिर भी मैं हूँ विवश तुम्हारे
सम्मुख, हे जीवन की स्वामिनि !

प्रेम चाहता हूँ मैं तुमसे,
हे सुहासिनी, हे चिर-कामिनि ;
देवालय में झुका न जो सिर,
तुम्हें देखकर वह अवनत है ;
जिस भुज-बल से काल काँपता,
वही तुम्हारे पद में रत है।
वज्र-हृदय जो महाप्रलय में
भी न कभी हो सकता कातर,
एक तुम्हारे भृकुटि-लास से
व्याकुल है, वह मर्माहत है।
मेरा गौरव-मुकुट तुम्हारी
शय्या के नीचे लुंठित है ;
धनुष-विशिख निष्फल हैं मेरे,
असि की यह धारा कुंठित है।
मेरी जीवन-मरण तुम्हीं हो,
पथ की एकमात्र तुम संबल ;
स्वर्ग तुम्हीं हो, तुम्हीं मुक्ति भी,
तुमसे ही परिचित मैं केवल।
सखि, खोकर तुमको मैं शव हूँ,
पाकर मैं तुमको हूँ अस्थिर ;
चिर-पवित्र तव चरण-रेणु से,
देवालय में झुका न जो सिर।
हे रमणी, चिर-तरुणी नारी,
मैं अनंत सौंदर्य - पिपासी ;
तुम सुंदर हो, सुंदरतम हो,
मैं आकुल, उद्भ्रांत विलासी।
महावासना की ज्वाला ले
मैं धू-धू करने आया हूँ,
और तुम्हारा रूप अमृत है,
यौवन अमर, प्रणय अविनाशी।
मैं दोषी हूँ, क्योंकि मृगेक्षणि,
मैंने तुमको प्यार किया है ;
मेरा यह अपराध कि तुमको
मैंने अपना हृदय दिया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यही एक दुर्बलता मेरी
है, जो मैं तुम पर मरता हूँ ;
यही एक है पाप, सुहासिनि,
स्वेच्छा से मैं जो करता हूँ।
और नहीं, तो मैं मानव हूँ,
चिर-कृतज्ञ हूँ, चिर-आभारी ;
मेरा प्रेम प्रकट है तुमसे,
हे रमणी, चिर-तरुणी नारी !
हे नारी, चिर-युवती नारी,
केवल तुम्हीं मुझे जानोगी ;
मैं क्या हूँ, वास्तव में इसका
भेद-मर्म भी तुम मानोगी।
यों दुर्बोध, जटिल हूँ अस्थिर,
जग मुझको अज्ञेय समझता ;
किंतु सोचता हूँ मैं, मुझको
भली भाँति तुम पहचानोगी।
भ्रम कर सकता विश्व, प्रिये, तुम
किंतु, न भ्रम में कभी पड़ोगी ;
कर सकता है भूल जगत, तो,
क्या तुम भी संदेह करोगी ?
तुम मुझको पहचान सकोगी,
मेरा यह विश्वास चिरंतन ;
समझ सकोगी तुम जीवन में
मुझको, एक यही आश्वासन।
सदा तुम्हारे मंदिर रूप की
पूजा का मैं हूँ अधिकारी ;
मुझे न भूलो तुम क्षण-भर भी,
हे नारी, चिर-युवती नारी !
जिस दिन मेरे उर-शतदल पर
अपना कोमल चरण-कमल धर
प्रथम बार आईं तुम, प्रेयसि,
मेरे मानस को चंचल कर
थर-थर कर सखि, प्राण-प्राण को,
अंग-अंग को रोमांचित कर,
एक दृष्टि ही मुझे तुम्हारी
सहसा गई अवाक्, निकल कर,
तब से कितनी बार न-जानें,
दक्षिण-पवन यहाँ आया है ;
कूक उठा है कोकिल, ऋतु-पति
ने, सौरभ-मधु बरसाया है।
राका के निशीथ में ज्योत्स्ना,
पल्लव-शय्या पर सोई है ;
प्रेम-सुरा पी मस्त, झूमता
कुंजों से आया कोई है।
मेरा कल्पित स्वर्ग उतरकर,
उस दिन आया इस भूतल पर,
पद-रेखा अंकित की तुमने
जिस दिन मेरे उर-शतदल पर।
क्या होता, यदि आज न होतीं
तुम, पूछो मत प्रश्न अमंगल ;
रवि-शशि के दीपक बुझ जाते,
महा सिंधु हो जाता निर्जल।
खिलते पुष्प न, लता न हिलती,
मलयानिल न डोलता वन में ;
मर जाता संसार अभागा,
मानव का जीवन ही निष्फल।
प्राण निकल जाते वर्षा के,
लपटों में वसंत जल जाता,
और ऊब एकाकी लेता,
आत्मघात कर स्वयं विधाता।
हे भुजंगिनी, प्रेम-फणों से
तुम करती हो जिस क्षण दंशन ;
बन जाता है अमृत गरल भी,
और मरण बन जाता जीवन।
भूमि न होती, व्योम न होता,
आकुल दशो दिशाएँ रोतीं ;
हो जाता संपूर्ण जगत मरु,
नारी, तुम न आज यदि होतीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैद्यों को अपने रोगियों पर लाभ उठाने का मौक़ा

संग्रहणी रिपु

शर्त बाँधकर, बाज़ी लगाकर, पुरानी-से-पुरानी असाध्य संग्रहणी को दूर करने में भगवती का वरदान है, यह कभी फ़ेल होनेवाली दवा नहीं, सभी प्रकार के स्वाभाववालों के लिये हितकर है, छोटे से बड़े, सभी खा सकते हैं। किसी भी पथ्य और अनुपान की इसमें विशेष ज़रूरत नहीं। सिर्फ़ प्रातः-सायं आध सेर धारोष्ण दुग्ध से, जिसमें मिश्री मिली हो, ले लें; बाद को भूख लगने पर यथा-रुचि भोजन करें। सिर्फ़ सात दिन में ही संग्रहणी का नामोनिशान मिटा देती है। यह पेट को साफ़ करके उसके विषैले माद्दे को निकालकर दस्त बंद करती है, और इसमें स्तंभक गुण न होकर सारक गुण होने से रोगी को कोई हानि नहीं होती। विना किसी विचार के दी जा सकती है। कोई नशा भी इसमें नहीं, सिर्फ़ वानस्पतिक प्रयोग है। वैद्यों को बहुत लाभ पहुँचानेवाली है। वह शर्त लगाकर रोग भगाने में प्रसिद्ध हो सकते हैं। सातदिन की दवा का दाम २) है।

मँगाने का पता—

श्रीहरिहर-औषधालय

बरालोकपुर, इटावा (यू० पी०)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोस्वामी तुलसीदास की धर्मपत्नी

रत्नावली

जीवनी और रचना

(सचित्र)

संपादक और टीकाकार

रामदत्त भारद्वाज

संशोधक

कविकुमार पंडित भद्रदत्त शर्मा

एवं

पंडित कृष्णदत्त भारद्वाज

(एम्० ए०, आचार्य, शास्त्री, साहित्यरत्न)

——:०:——

यह पुस्तक हिंदी-संसार में नई गवेषणा का फल है, और गोस्वामी तुलसीदास के आद्य जीवन एवं उनकी साध्वी धर्मपत्नी पर प्रचुर प्रकाश डालकर अनेक प्रचलित भ्रमों को दूर करती है। इसमें अन्य अनेक हस्त-लिखित ग्रंथों के आधार पर रत्नावली का विशद जीवन-चरित है, उसके २०१ दोहे तथा संपादक द्वारा उनकी सरल टीका भी विद्यमान है। अब तक उक्त चरित और दोहों की जो अनेक हस्त-लिखित प्रतियाँ उपलब्ध हुई हैं, उन सबकी तथा अन्य हस्त-लिखित पुस्तकों के कतिपय पृष्ठों के चित्र भी मनोविनोदार्थ यथास्थान दे दिए गए हैं।

यद्यपि गत दो-तीन वर्षों में इस विषय की चर्चा उक्त संपादक और टीकाकार द्वारा अनेक पत्र-पत्रिकाओं में समय-समय पर हुई है, तथापि यह पुस्तक हिंदी के स्थायी-साहित्य में सर्वथा नई और अत्यंत महत्व-पूर्ण वस्तु है।

रत्नावली की रचना बालक-बालिकाओं एवं नर-नारियों के बड़े काम की है, और इतिहास, साहित्य तथा भाषा के मर्मज्ञों के लिये भी भव्य विचारों की सामग्री उपस्थित करती है।

गोस्वामी तुलसीदास-कृत रामायण का जो हिंदू-गृह में गौरवान्वित स्थान है, वैसा ही उनकी विदुषी पत्नी के दोहों का भी है। मूल्य लगभग १), सजिल्द १॥)

मिलने का पता—

गंगा-पुस्तकमाला, लखनऊ

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, Delhi. Digitized by eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'अज्ञान के भूत' से डरकर आप भाग खड़े होते हैं ! क्यों ?

सत्साहित्य का पठन-पाठन

आपको मानसिक और आत्मिक बल तथा साहस प्रदान करता है ! आपका सबसे बड़ा अपराध है कि आप अपने को नहीं जानते, और न जानने का प्रयत्न ही करने की लालसा है ।

विद्या और ज्ञान

मानव-जीवन के लिये आवश्यक है ! आदि-सृष्टि के क्रमिक विकास का विवेचनात्मक विवरण, मनुष्य का सच्चा इतिहास, संसार के गूढ़तम निर्माण-रहस्य का प्रत्यक्षीकरण ।

मनुष्य का विकास

जिसमें

हमारी ज़मीन पर सबसे पहले जानवर कैसे पैदा हुए ? मनुष्य-जाति कैसे प्रकट हुई ? क्या आदमी आसमान से बरस पड़े थे ? या पाताल से निकल पड़े थे ? इन सभी प्रश्नों का विस्तृत और प्रासंगिक उत्तर देनेवाली एकमात्र

पुस्तक

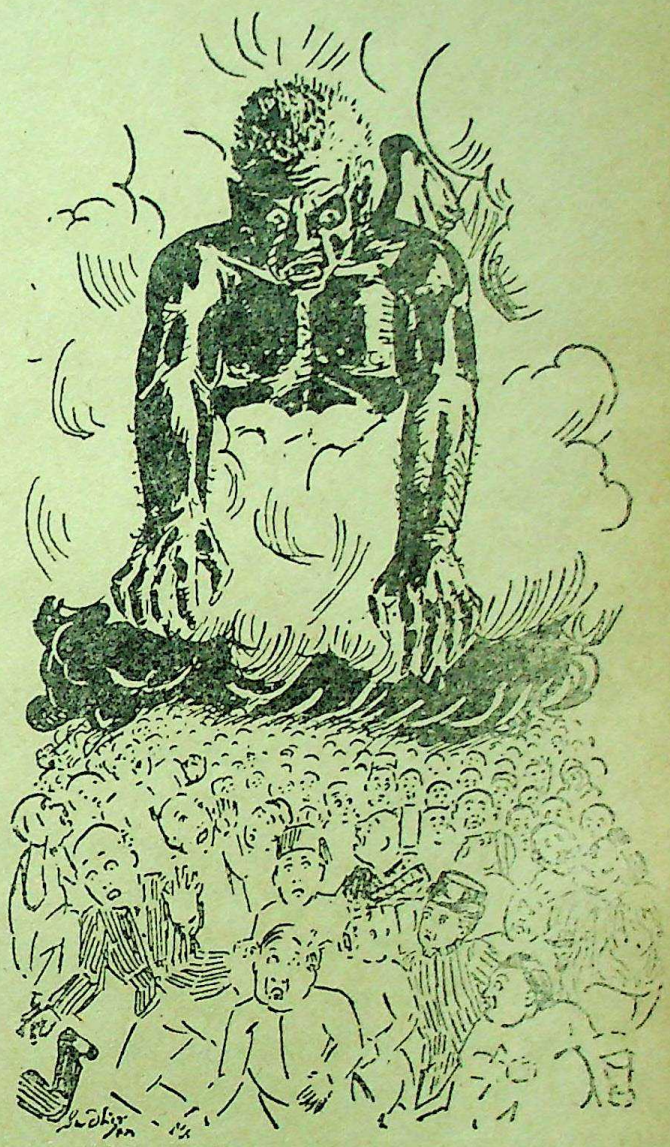

मनुष्य का विकास

{ लेखक, श्रीज्योतिलाल भार्गव बी० ए०, एल्-एल्० बी०, हिंदी-पब्लिसिटी ऑफ़िसर, बिहार-गवर्नमेंट } छपकर तैयार है ! मँगाएँ !!

सजिल्द ॥=) सादी ।=)

अपनी संतान को इस ज्ञान से विमुख न रक्खें !!!

आज ही ऑर्डर भेजें

मिलने का पता—

गंगा-ग्रंथागार, २६, लालूश रोड, लखनऊ

गंगा पुस्तक माला लखनऊ कार्यालय

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

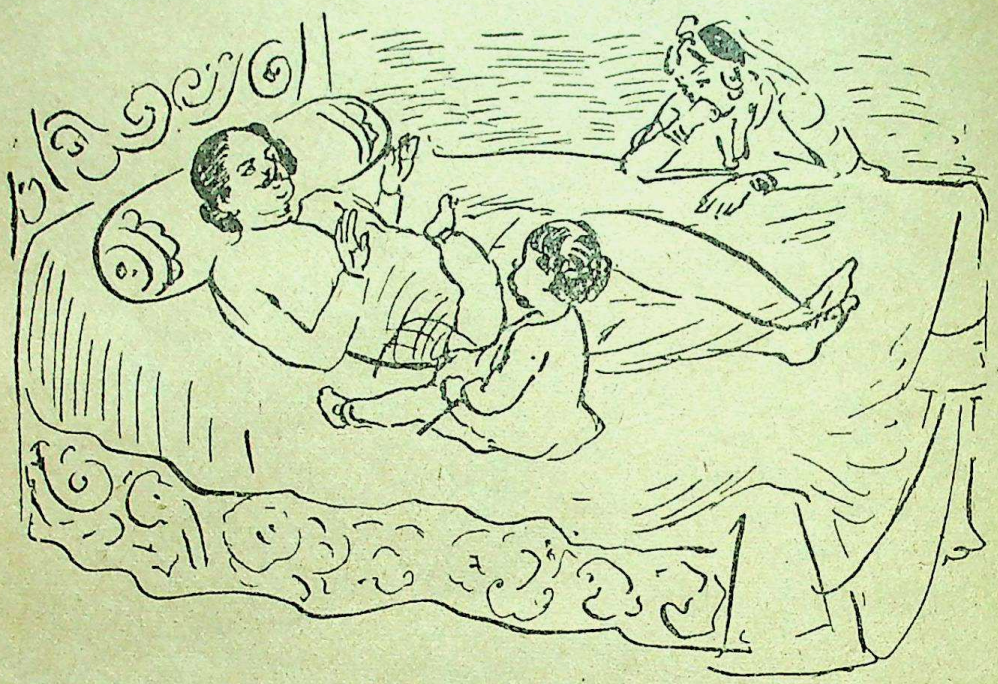

कथा-कहानियाँ

लेखक हैं मदरास-प्रांत के प्रसिद्ध वकील श्रीवि० रामनाथ ऐयर बी० ए०, बी० एल्० दक्षिण-भारत की भाषाओं का साहित्य संस्कृत-साहित्य के समान ही बालोपयोगी कथा-कहानियों का खज़ाना है। लाखों वर्ष पुरानी द्रविड़-संस्कृति और सभ्यता ने जीवन के अनुभव से जिस सत्य को ढूँढ़ निकाला है, वही सत्य इन कहानियों द्वारा आजदिन भी महाराष्ट्र, आंध्र, तामिल और कर्नाटक-देश में बालकों को हृदयंगम करा दिया जाता है। बालकपन से इस प्रकार सुशिक्षित किए जाने के कारण ही मदरासी युवक जीवन-संग्राम में सभी भारतीय युवकों से अधिक सफल होते हैं। यदि आप भी अपने पुत्र को श्रीनिवास शास्त्री, डॉ० सुब्रह्मण्य ऐयर और सर शंकरन नैयर बनाना चाहते हैं, तो उन्हीं मदरासियों द्वारा लिखी गई इन कहानियों को उन्हें सुनाइए। मूल्य सादी ।), जिल्ददार ॥)

संचालक गंगा-पुतकमाला-कार्यालय लखनऊ

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं प्रत्यक्ष मरण अपनाऊँ
पहनाकर तुमको जय-माला ;
धधक उठी मेरे अंतस् में
पुंजीभूत तृषा की ज्वाला ।
और, तुम्हारी कबरी में है
गूँथा मैंने सुमनों का मन ;
हे सौंदर्यवती, यौवनमयि,
देखो यह रज-रज मतवाला ।
मैं हूँ एक विलुब्ध उपासक,
मैं गायक हूँ मुग्ध तुम्हारा ;
तव दृग-शर से विद्ध हरिण-सा
वन-वन में फिरता मैं मारा ।
तुम्हीं मुझे रखती हो जीवित,
उर भावुक है, अधर सरस है ;
तप, साधन, प्रतिमा-आराधन,
तव सेवा में सभी विवश हैं ।
ईश्वर से कर द्रोह जगत में
संभव है, जीवित रह जाऊँ,
किंतु तुम्हारा मोह छोड़कर
मैं प्रत्यक्ष मरण अपनाऊँ ।
मुग्ध शिखी-सा नृत्य किया है
मैंने तव अंगुलि-इंगित पर ;
बजती हैं मेरी इच्छाएँ
तव चरणों में नूपुर बनकर ।
मेरे प्राणों में कस्तूरी
बनकर तुम उद्भूत हुई हो ;
मैं उसकी निर्बंध गंध से
दौड़ रहा हूँ वन में सत्वर ।
मेरे नभ-ललाट पर आईं
राजलक्ष्मि, वन-संध्या-तारा ;
तुम फूलों की हथकड़ियाँ हो,
यह संसार स्वर्ण की कारा ।
किस पाषाण-गुहा में दारुण
निद्रित मैं, प्रपात की धारा ;
एक रश्मि-सी तुम आईं, मैं
तोड़ चला चिर-बंधन हारा ।
अपने केश-पाश से तुमने
सारा जीवन बाँध लिया है ;
सदा तुम्हारे सम्मुख मैंने
मुग्ध शिखी-सा नृत्य किया है ।
यह जीवन युग से प्यासा है,
युग-युग से यह तृषा अमर है ;
नारी के प्रति मोह-भावना,
मेरी यह ममता अक्षर है ।
फैली हैं मेरी युग बाँहें,
निर्निमेष लोचन हैं दोनों ;
वक्षःस्थल पीड़ित मिलने को,
किंतु मूक-सा मेरा स्वर है ।
मेरा यह अभिमान तुम्हारे
चरणों से मर्दित, विदलित है ;
ज्ञान-ध्यान, विज्ञान-तेज, सब
अभिमानिनि, तुमसे विचलित है ।
मेरी शक्ति, महत्ता, प्रभुता,
सब पर है अधिकार तुम्हारा ;
भुवन-विजयिनी, तुममें खोया
साहस मेरा, पौरुष सारा ;
मैं निराश यद्यपि हूँ जग से,
लेकिन कुछ तुमसे आशा है ;
भूखा है युग से यह जीवन,
यह यौवन युग से प्यासा है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपहार

[श्रीयुत आनंदलाल साह 'गंगोला']

(१)

"ठ्वा य ! ठ्वाय !!"

बाहर खड़े हुए अरदली ने शीघ्रता से कमरे में प्रवेश किया।

"फ़ैन खोल दो।" आराम से सोफ़े पर लेटे हुए, मासिक पत्रिका सुधा के पन्ने उलटती हुई कुंतल ने कहा—"लेमोनेड और बरफ़ लाओ।"

"जो हुक्म हुज़ूर।" अदब से अरदली ने कहा, और फ़ैन खोलकर चल दिया। कुंतल बेमन-सी थोड़ी देर सुधा पर आँख गड़ाए रही। एकाएक वह उसे फेंकते हुए अपने आपसे बोल उठी—"नॉनसेंस।" फिर किवाड़े बंद कर उसने एक सिगरेट् सुलगाई, और बड़बड़ा उठी—"नहीं, जैसे भी होगा, मैं इस युवक को समझकर ही दम लूँगी।" वह अशांति से कमरे में चहलक़दमी करने लगी—सिगरेट् के धुएँ में भविष्य के चित्र बनाती हुई। ज़ीने में किसी के जूते की चरमराहट सुन पड़ी। पहचानी-सी वह आवाज़ थी। कमरे की बिजली बुझा, दरवाज़ा खोल, वहीं कुरसी खिसका वह बैठ गई। उसका अनुमान ठीक ही था। रूम नंबर चार का ही तो वह युवक था। अस्त-व्यस्त केश, मुख पर अवस्था के प्रतिकूल गंभीरता, मॉडर्न वेश-भूषा, पर बनावट से रहित, विरक्त-सा, भावनाओं में डूबा हुआ, अलसाई-सी धीमी चाल से, रोज़ कीत रह बग़ल में किताबों और अख़बारों का बंडल दबाए, अपने कमरे के समीप पहुँचा। जेब टटोलने पर शायद उसे ताली न मिली। उसने हाथ का बंडल सामने रख दिया, और एक बार फिर सारी जेबें देख डालीं। इस खोज-बीन में उसके लापरवाही से पहने हुए कपड़े और भी बेतरतीब हो गए, और वह दिखाई देने लगा रशन या फ्रेंच रेवोल्यूशन के एक हीरो की तरह। इसी ओर तो कुंतल का रुझान था। ऐसे ही लोगों का ख़ाका तो उसके मन में छुटपन से खिंचा था। उसकी परेशानी देख कुंतल को हँसी आ गई। पर वह हँसी दबा उस तमाशे को देखती रही कि देखें, अब यह क्या करता है—कैसे कमरा खोलता है। युवक की भौंहें तन गईं, और माथे पर परेशानी की रेखाएँ पड़ गईं। उसने पुकारा—"चंदन ! चंदन !!"

पर जवाब नदारद।

"दौलत ! ओ दौलत !!" जवाब न मिलने पर वह झुँझलाकर बोला—"न-जाने सब-के-सब कहाँ गोल हो गए।"

वह दीवार पर कोहनी के सहारे सामने के बड़े चौराहे पर जाती हुई भीड़-भाड़ देखने लगा। थोड़ी देर यों ही दिल बहलाने के बाद उसने एक सिगरेट् सुलगाई, और विचार की गहन मुद्रा में डूब गया—भूलकर अपने आपको कि वह कहाँ है, और क्या है, जैसा वह कभी-कभी हो जाता था। "विचित्र आदमी है यह।" मन-ही-मन कुंतल ने सोचा। उसे वह ज्यों-ज्यों समझने की कोशिश करती, त्यों-त्यों और भी उलझन में फँसती जाती। युनिवर्सिटी बंद हुए इतने दिन बीत चुके। इस होटल में आई थी वह केवल तीन दिन के लिये। तीन चिट्ठियाँ आ चुकी हैं घर से, पर न-जाने क्यों, यहाँ से जाने को मन ही नहीं होता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहसा युवक के गंभीर मुख पर मुस्किराहट छा गई, और वह सहन में टहलते हुए धीमे स्वर में बोल उठा—"Don't worry, you will get all." एकाएक वह फिर गंभीर हो उठा, और नाक सिकोड़कर बोला—"इतना झूठ ! छिः !" वह कुछ सोचकर परेशान-सा हो उठा, और उसने पुकारा—"चंदन ! चंदन ! ओ दौलत !!"

सामने से ट्रे में लेमोनेड वग़ैरा सजाए, ग्यारह नंबर रूम की ओर जाते हुए, चंदन पर उसकी दृष्टि पड़ी। युवक चंदन की ओर बढ़ता हुआ तनिक रोष से बोला—"क्यों रे ! सुनाई नहीं देता तुम लोगों को ? दो घंटे से चिल्ला रहा हूँ।" फिर उसके हाथ का सामान देख, शांत होकर बोला—"ज़रा जल्दी आना इसे देकर।"

"क्या करें हुज़ूर, यह सामान ग्यारह नंबर कमरे में देना है।"

"चुप रह मूर्ख, अपनी पिन-पिन किए जाता है। मैंने क्या कहा था ?" कहकर युवक ने कुछ जवाब देने की कोशिश करते हुए चंदन से कहा—"जा, जल्दी आ इसे देकर।"

चंदन चल दिया। चंदन को आते देख कुंतल ने बिजली जला दी, और सोफ़े पर बैठ गई। ट्रे मेज़ पर रख चंदन बर्फ़ से भरे गिलास में लेमोनेड की बोतल खोल उँडेलने लगा।

"क्यों रे ! बाबू तेरे ऊपर क्यों बिगड़ उठे ?" कुंतल ने पूछा।

"नहीं साहब, बाबूजी तो ऐसे ही बोलते थे।"

"बड़े बेढब मिज़ाज के हैं तेरे बाबू। मैंने तो समझा था, कहीं तेरी मरम्मत न कर दें।"

"नहीं हुज़ूर, बाबू बड़े अच्छे आदमी हैं।" चंदन ने लेमोनेड की बोतल ख़ाली कर गिलास कुंतल की ओर बढ़ाते हुए कहा—"बड़े दिलदार आदमी हैं। हम लोगों को बहुत चाहते हैं। इनाम देते हैं। थोड़ी देर में ग़ुस्सा हो जाते हैं, और उसी वक़्त फिर ख़ुश हो जाते हैं। जिस किसी को पैसों की ज़रूरत हुई, पहुँचा बाबू के पास। अगर उनके पास पैसे हुए, तो फ़ौरन् दे देंगे। नहीं कहना तो उन्हें आता ही नहीं।"

"तभी तो बेचारे घंटों चिल्लाते रह जाते हैं, पर तुम लोगों के कान में जूँ तक नहीं रेंगती।" लेमोनेड पी गिलास रखते हुए कुंतल ने कहा।

चंदन खिसियाकर चल दिया। सामने उसकी दासी पड़ी ख़र्राटे ले रही थी। बिजली बुझा कुंतल पूर्ववत् दरवाज़े के पास बैठ गई। ट्रे एक ओर रख चंदन सिगरेट् पीते हुए, ध्यान-मग्न युवक के पास जाकर बोला—"क्या हुक्म है सरकार ?"

युवक चौंककर बोला—"हैं ! क्या कहा तुमने ?"

"आपने बुलाया था ?"

"अरे हाँ, कमरा खोलो।"

"ताली दीजिए।"

"खो गई।"

"तब ?"

"तोड़ दो ताला, और उपाय ही क्या है।" सिगरेट् का धुआँ उगलते हुए लापरवाही से युवक ने कहा, और फिर चौराहे की ओर देखने लगा। किसी तरह चंदन ने थोड़ी देर में ताला तोड़ डाला, और कमरा खोलकर बिस्तरा ठीक करने लगा। युवक कमरे में प्रवेश कर चारपाई पर पड़ रहा। हाथ की चादर कुरसी पर रखते हुए चंदन ने कहा—"बिस्तरा तो बिछाने दीजिए।"

"अभी नहीं।" दूसरी ओर करवट लेते हुए युवक ने कहा।

"खाना ?"

"भागो यहाँ से। जब ज़रूरत होगी, मँगवा लूँगा—नहीं-नहीं, मैं नहीं, खाऊँगा। सिर्फ़ एक कप चाय दे जाना।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चंदन चल दिया। युवक थोड़ी देर वैसे ही पड़ा रहा, फिर एक गहरी साँस लेते हुए उठा, और कपड़े उतारते हुए गाने लगा—

ज्ञानी कहते मूर्ख उसे हैं
महामोह - माया व्यापी;
जग कहता निर्लज्ज, नीच वह
अधम, अघी, पागल, पापी।
कहने दो, कहने दो सबको
अपनी - अपनी मनमानी;
उसके उर की, प्रेम-जगत् की
किसने है सीमा जानी?

बागेश्री के मधुर स्वरों में उसकी दर्द-भरी, दबी आवाज़ से कमरा गूँज उठा, और वह दिखाई देने लगा गाने की पूरी तस्वीर-सा। किसी तरह कपड़े उतार, मेज़, कुरसी, ट्रंक, बिस्तरे में उन्हें फेंक उसने एक सिगरेट् सुलगाई, और चारपाई पर लेट गया। इसके बाद फिर वही रोज़ का कार्य-क्रम—काग़ज़-क़लम से माथापच्ची, कभी सोचना, कभी टहलना, उठना, बैठना, हँसना, फिर गंभीर हो जाना। थोड़ी देर तक कुंतल देखती रही। सहसा उसकी दृष्टि युवक के रक्खे हुए किताबों और अख़बारों के बंडल पर पड़ी, जिसे ले जाना भूल गया था। एकाएक उसके मुख पर मुस्किराहट छा गई। वह चुपके से उसे उठा लाई, और कमरा बंद करती हुई बोल उठी—"अब फँसे पूरी तौर से। ख़ूब परेशान होंगे।"

(२)

तीन-चार बार युवक के कमरे के पास जाकर, निराश हो कुंतल लौट आई। कमरे के किवाड़े ऐसे ही बंद थे—बग़ैर ताले के। हवा के एक तेज़ झोंके से किवाड़े खुल गए। कुंतल ने देखा—अख़बार, किताबें, काग़ज़ों के ढेर, शेविंग का सामान, कपड़े, बिस्तरा, सब इधर-उधर बिखरे पड़े थे। कमरे में वह नहीं था, पर उसकी आत्मा वहाँ कुछ करुण कहानी-सी कहती प्रतीत होती थी। जैसे उसे जीवन में जीवन ही नहीं मिला। उसने सोचा—इस युवक का कोई है भी? माँ, बहन, भाभी या कोई और, जिसे इसकी परवा हो, या यह बेचारा यों ही शून्य में बहा जा रहा है। वह बढ़ी—आँखों में करुणा और सहानुभूति लिए, ठीक करने को उसका कमरा क़ायदे से, पर ठिठकी, सोचा, वह उससे अपरिचित है। वह उदास हो लेट गई—उसके आने की राह में अपना मन बिछाए। उसने पलकें उठाईं। देखा, वह आ गया था। वह ख़ुश हुई। उल्लास से उसकी पुतलियाँ चमक उठीं। वह चुपके-चुपके बढ़ी युवक की ओर, और किताबें देते हुए सभ्यता से कहा—"लीजिए, यह आपकी अमानत।"

"ओफ़्! मैं तो बड़ा हैरान था। धन्यवाद!"

वह चुप हो गया। कुंतल क्षण-भर ठहरकर बोली—"अकेले अच्छा नहीं लगता, क्या मुझे कोई किताब दिल बहलाने को देंगे?"

उमेश ने अपनी नई किताब उसे देते हुए कहा—"लीजिए।"

"किसने लिखी है?"

"जिसका इस पर नाम है।"

कुंतल ने पढ़ा, लिखा था 'उमेश'।

"कितना प्यारा नाम है!" कुंतल ने कहा।

"नाम प्यारा होने से क्या। जब उसका कोई हो भी?"

सुनते ही कुंतल सहमी। उसने प्रश्न-भरी आँखों से, जिनका जवाब उसे मिल-सा गया था, उसकी ओर देखा, और सब समझ गई। उसने कहा—"उमेशजी क्या आप ही हैं? मैंने आपकी बहुत-सी रचनाएँ पढ़ी हैं। आपने हृदय पाया है। लेकिन..."

उमेश उसकी ओर मूक नेत्रों से देखता रहा। वह चली गई, पहचान में उसे बाँधकर।

❀ ❀ ❀

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरी बार जब वह किताब वापस करने आई, उसने देखा, उमेश कुछ लिख रहा है। उसने कहा—"कितना सुंदर लिखते हैं आप ! कितने सजीव होते हैं आपके चित्र ! मुझे भी सिखाइए कुछ लिखना।"

"लिखना सीखने से नहीं आता, यह तो प्राणों की चीज़ है। हृदय का रक्त स्वयं स्याही बन जाता है। वाणी उसे बिखेर देती है काग़ज़ पर--अनुभूति के अक्षरों में।"

कुंतल उसका उत्तर सुन उसकी ओर खिंची, और उसके हाथ से क़लम लेते हुए उसने कहा—"बोलिए, मैं लिखूँगी।"

उमेश ने कहा—"अच्छा।"

पर वह न लिखा सका। जब वह कहती—"बोलिए", तब वह "अच्छा" के सिवा कुछ न कह पाता। इसी तरह दस मिनट निकल गए। उमेश कुंतल की ओर देख सोचने लगा ऊर्मि को, जो इसी तरह कभी उसके लिये लिखा करती थी। एकाएक उमेश ने कहा—"अब जाने दो।"

"क्यों ?"

"जी नहीं चाहता।"

"तब क्या चाहता है जी ?"

"कुछ भी नहीं।"

कुंतल अवाक् हो गई।

❀ ❀ ❀

"कहीं जा रहे हैं आप ?"

"हाँ।"

"कहाँ ?"

"यह मैं नहीं जानता।"

कुंतल हँस पड़ी। उसने कहा—"तब आप मेरे साथ चलिए।"

"कहाँ ?"

"जहाँ मैं जा रही हूँ।"

"कहाँ जा रही हैं आप ?"

"सुख की खोज में।"

"किधर ?"

"यह नहीं जानती।"

"तब मैं ज़रूर आपके साथ चलूँगा।"

दोनो ही कार में सवार हो गए। कार शहर की घनी बस्ती को पार कर एक ओर जाने लगी। कुंतल ने कार की रफ़्तार पहले से दूनी कर दी थी। उमेश खिड़की के सहारे हथेली पर ठोढ़ी रख बग़ल से निकलते हुए पेड़-पौधे और मकान देख रहा था। ज्यों-ज्यों मोटर की रफ़्तार तेज़ होती, उसकी आँखें बंद-सी होती जाती थीं। कुंतल उसे छेड़ना नहीं चाहती थी। वह कभी-कभी उस ओर देख लेती, पर कहती कुछ न थी।

छिपते हुए सूर्य की किरणों से प्रकृति रँग गई। बहुत ही सुंदर मालूम पड़ने लगा। कुंतल ने मद-भरी आँखों से उसकी ओर देखा। गंभीर मुख, जिसे ध्यान से देखने पर आभास मिलता था एक दर्द का। कुंतल बेचैन हो उठी—"वह क्या नहीं कर सकती उसे प्रसन्न करने को, पर वह जब उसे समझने का अवसर दे।" वह कुछ करना चाहती थी, पर करे क्या ? उसने मोटर की रफ़्तार और तेज़ कर दी। उमेश आँखें बंद किए उन्मुक्त-सा उस तेज़ बहती हुई हवा को पी-सा रहा था, जैसे आज बहुत दिन बाद कुछ राहत-सी मिल रही हो। पर उसकी मौन मुद्रा से वह हैरान हो उठी। उसने दबी ज़बान से पूछा—"क्या सोच रहे हैं आप ?"

"सोच रहा हूँ, यह कार और भी तेज़ी से मुझे अनंत काल तक उड़ाए लिए चली जाती।"

"कहाँ ?"

"यह नहीं जानता।"

कुछ देर दोनो चुप रहे। सहसा उमेश ने कहा—"कुंतल ! मैं तो इस अँधेरे जीवन से ऊब उठा हूँ। मुझे तो चाहिए इसमें स्फूर्ति का प्रकाश,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिसमें रुधिर का एक-एक कण उद्वेलित हो उठे। काश मैं वहाँ होता, जहाँ वायुयान, टैंक्स और दूसरी मशीनें आग बरसा रही हैं, तूफ़ानी समुंदर में लहरें भी जीवन-संग्राम में उन्मत्त हैं, और जहाँ मृत्यु के ख़तरे में भी जीवन का चुंबन छिपा है, जहाँ पल-पल अनिश्चित होते हुए भी निश्चित हैं, और प्रलय के इस अंधड़ में जहाँ राशि-राशि ज्योतियाँ पूर्ण शक्ति से टकरा रही हैं। क्या उस ज्वलंत धूम में उल्लास नहीं—व्यग्रता के उस तल में मुझे असीम आनंद का स्रोत मिलेगा।"

ऐसा कहकर उसने अपनी कुछ न कहती हुई आँखों से मौन उसकी ओर देखा। कुंतल एक बार ही उसे देख कुछ सहम-सी गई। न जान सकी वह कि वह क्या चाहता है आख़िर, वह और भी सहम उठी, जब वह एकाएक ठहठहाकर हँस पड़ा। ठिठककर उसने पूछा—"क्यों क्या, हुआ ?"

"पूछती थीं न कि मैं क्या सोच रहा हूँ।"

"हाँ, बताइए, तब तो।"

वह फिर मुस्किराया और बोला—"कह तो दिया सब कुछ।"

"हाँ, अब समझी सब कुछ, पागल हो तुम।" नाक सिकोड़कर कुंतल ने कहा।

वह फिर हँसता हुआ बोला—"पागल ही सही। पर आप यह भूली जा रही हैं कि पागल को पहचाननेवाले भी तो पागल ही होते हैं।"

कुंतल को अच्छा न लगा। वह उसके हृदय और मुख, दोनो की विवेचना न कर सकी, पर उसका मन दोनो में अटक-सा रहा। आवेश में वह बोल उठी—"पागल।"

उसकी उँगलियाँ स्टियरिंग से अपरिचित-सी होने लगीं—कुछ सोचते ही कार पेट्रोल ख़त्म हो जाने के कारण रुक गई। कुंतल मीलों चली आई थी। पेट्रोल का अभाव खल गया। इसके साथ कैसे बीतेगा इतना समय। वह झुँझलाकर, छाती पर हाथ बाँध, अनमना-सा मुँह बना, तनकर मोटर में बैठ गई। मुड़कर देखा, तो उमेश पास ही टहल रहा था। चाँदनी में चाँदनी के समान मूक, कुछ सोचता-सा। कहीं से रजनीगंधा की मस्त महँक हवा के साथ हिलोरें लेती हुई आ रही थी। वृक्षों की पत्तियों से छनती हुई चाँदनी ने पृथ्वी पर छाया-चित्र बुन दिए थे। आकर्षक शांति थी। कभी-कभी एक आध पक्षी के पंख की फड़फड़ाहट निस्तब्ध वातावरण को सजग-सा कर देती थी। पवित्र, मधुमय निशा थी।

"सुनो कुंतल !" प्रसन्न हो उमेश एकदम बोल उठा—"सिनेमा-संसार को यहाँ तक पहुँचने में कितना समय लगेगा ?"

चकराकर कुंतल ने कहा—"सपना देख रहे हो क्या ? बाज़ आई तुम्हारी बातों से, कभी कुछ, कभी कुछ, कोई तुक भी हो।"

उमेश ने मोटर के समीप आकर कहा—"तो आप नाराज़ क्यों हैं ? मोटर के न चलने की ख़फ़गी मेरे ऊपर क्यों उतार रही हैं ? मोटर की चाल से मैं समझ गया था कि पेट्रोल नहीं है।" उमेश पास बैठ गया, और उसके खिन्न मुख की ओर देखने लगा। ऐसा लगता था कि मोटर के बिगड़ने से ज़्यादा परेशान हो रही थी वह उसकी उलझन-भरी बातों से। कुछ ठहरकर उमेश ने पूछा—"चुप क्यों हो ?"

"चुप न रहूँ, तो क्या करूँ ?" उदास कुंतल ने कहा—"नहीं बात करूँगी तुमसे, तुम मुझसे भेद रखते हो।" ऐसा कहते ही उसकी आँखें डबडबा आईं।

"भेद ! कैसी नासमझी की बातें करती हो, मेरे पास कोई भेद नहीं।"

"तो तुम इतने खोए-से क्यों रहते हो ? ठीक तरह बात क्यों नहीं करते ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कुंतल, तुममें मैं किसी की प्रतिच्छवि देखता हूँ, जिसके कारण ऐसा हो गया हूँ। और, इसीलिये तो मैं तुमसे दूर रहने की कोशिश करता हूँ, गोकि तुम्हारे साथ मुझे बहुत अच्छा लगता है। 'दूध का जला छाँछ भी फूँक-फूँककर पीता है।'"

"क्यों ?"

"आज का समा कुछ और ही है, और तुम मुझे फिर नए रूप से मदिरा पिलाने का प्रयत्न कर रही हो। नहीं—नहीं—कुंतल, ऐसा न करो। मेरे जीवन के साथ तुम्हें ऐसा खेल खेलकर क्या मिलेगा ? अब मुझमें शक्ति नहीं कि मैं और सह सकूँ। मैं जैसा हूँ, मुझे रहने दो। मेरे जीवन की धूप में अपने छाया-चित्र न जोड़ो। उसे तपने दो अपने उद्दाम ताप से।"

कुंतल और भी विह्वल हो उठी। उसने हठ से उसकी बाहु पर अपना शीश रखकर उसकी ओर देखा। प्रश्न-भरे नयनों ने, उसकी स्नेह-स्निग्ध आकृति ने उस कहानी को कहने के लिये, जिसमें उसकी अतीत स्मृतियाँ पिरोई थीं, उसे विवश किया। उस कहानी को वह विस्मृति के डगर पर सदा के लिये सुला देने का प्रयत्न करता था। पर लाचार अपनी समस्त शक्ति बटोर पहले-पहल कुंतल के सामने कहने को बाध्य हुआ।

चाँदनी में कुंतल के कपोलों पर उत्सुकता से लहराते हुए कुंतल झूल उठे, और उसके लाल अधरों पर नाक की कील की चमक कुछ नई आभा से चमक उठी।

(३)

"……इस तरह ऊर्मि मेरे जीवन में आई। एक अनंत ज्वार लेकर और भीगे ओठों में सूखी चिर-प्यास। और, मैं भी बहता चला गया, लहर-पाशों में बँधकर, भँवर के गर्त में दूर—दूर—किसी शिला-खंड पर। एकांत, नीरव संध्या में वह हमारा मिलन अनंत युगों से जुड़ हुआ-सा प्रतीत होता था। चार आँखों की सीमा में चारो दिशाओं की सीमाएँ टकरा रही थीं। अनुराग की आभा से हमारा संसार अनुरंजित था। अलग होते हुए भी हम दोनो एक दूसरे में समा गए। फिर भी भावी वियोग और एक दूसरे को भूल जाने का भय, रह-रहकर, अविश्वास का दुख देता। तब मैं ऊर्मि से पूछता—'ऊर्मि ! तुम जिस उफान के साथ बही चली आ रही हो, क्या उसका वेग सदा ऐसा ही रहेगा ?'

"'क्यों ?'

"'क्योंकि लहर लेती हुई ऊर्मि का तो यह स्वभाव होता है कि वह आगे बढ़कर फिर पीछे हटती है। और, तुम भी तो नाम से ऊर्मि कहलाती हो।'

"'हाँ, ऊर्मि हूँ।' उसने मुस्किराकर कहा—'मैं पीछे हटती ज़रूर हूँ, पर जिसे चाहती हूँ, उसे ले जाती हूँ खींचकर अपने साथ।'

"'न-जाने क्यों, ऊर्मि ! मुझे तुम पर विश्वास नहीं होता। तुम ज़रूर मुझे छोड़ दोगी, किसी तरुण के गले का हार बन, उपहार में मुझे दे जीवन की समस्त हार।'

"'नहीं—नहीं—' स्नेह से अधीर, आँखों में अनुराग की लालिमा बटोर, ऊर्मि ने कहा—'लौकिक रूप से तुम्हारी ऊर्मि किसी के साथ गुथ सकती है, पर उसका हृदय और उसके यौवन का समस्त उभार, प्रेम और करुणा के साथ, इस जीवन में ही नहीं, अनंत जीवन तक तुम्हारे ही नयनों की प्रशांत छाया के तट पर टकराता रहेगा।'

"स्नेह से आर्द्र उसकी उँगलियों को—जिसमें लाल नग की अँगूठी अपनी चमक से उसकी कोमल हथेलियों की लाली को और भी सुंदर कर रही थी दबाते हुए मैंने प्रेम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में मुग्ध होकर पूछा—'सच ? एक बार अपने गुलाबी ओठों से फिर कहो । आह ! कितनी सुंदर हो तुम । कितनी मिठास है तुम्हारे इन शब्दों में ।'

"उस आनंद की भूमि पर कितनी ही संध्याएँ इस प्रकार लाली बिखेर गईं ।" कहकर उसने लंबी साँस ली । कुंतल चुपचाप उसकी दर्द-भरी कहानी सुन रही थी । उसने भी एक ठंडी साँस ली, और उनींदी आँखों से उसकी ओर देखते हुए सहानुभूति दिखलाती-सी बोली—"उसके बाद ?"

उमेश दिल थामकर बोला—"उस दिन, मधु-वसंत के दिन, ऊर्मि आई । एक नवीन शृंगार करके, बसंती रंग की साड़ी, गुलाब के फूलों से आँगी हुई, श्वेत, स्वच्छ ब्लाउज़ में प्रतिबिंबित उरोजों का उभार लिए, फ्रेंच चित्रकार की मोनालिसा-सी, वसंत की साकार प्रतिमा-सी ।

"सामने टहलते हुए मैंने उसे देखा, और देखता रह गया । वह और नज़दीक आई, और बोली—'कैसे अलीतबक्स हो तुम ? आज वसंत के दिन भी ठीक से कपड़े न पहन, पूरे घोंघा-बसंत बने हुए हो ।'

"पीछे पड़ी वेणी को खेल-ही-खेल में लपेट वह मुझे दोनो हाथों से घसीट अपने रूम में ले गई, और कहा—'तुम ज़रा ठीक से जल्दी कपड़े पहन लो । सामने बाग़ में घूमेंगे, और दृश्यों के फ़ोटो लेंगे । एक तस्वीर तुम्हारी भी खींचूँगी । देखो, देर न करना, मैं आती हूँ कैमरा लेकर ।'

"वह चली गई । मैं भी कपड़े पहनकर तैयार हो गया ।

"कंधे पर कैमरा लटकाए, दौड़कर हाँफती हुई ऊर्मि आ पहुँची, और चलने के लिये उद्यत मेरी ड्रेस पर एक सरसरी नज़र डालती हुई खीझ उठी—'हो न ऊलजलूल पूरे ! कपड़े पहनने की भी तमीज़ नहीं ।' ब्रश उठाकर कपड़ों की गर्द झाड़ते हुए उसने कहा, कनखियों से मेरी ओर देखते हुए—'अब चलो जल्दी ।'

"सोनजुही, माधुरी, मौलसिरी, कुंद, गुलाब, चंपा और नरगिस के फूलों की बहार, पेड़ों की झुरमुट, फ़ौवारे के चारो ओर अँगरेज़ी फूलों की क्यारियाँ, उन पर पड़ती हुई फ़ौवारे की बौछार, दूर तक फैला हुआ हरा लॉन, बीच-बीच में अलसाया-सा मदिर पवन का झोंका, ऊपर स्वच्छ, नीला आकाश, दूर—आकाश में तैरती-सी कपोतों की पंक्तियाँ, सभी कुछ उस दिन एक नए समा में बँधा हुआ-सा प्रतीत होता था ।

"हम दोनो फूलों के साथ खेलते, हँसते सब कुछ भूल फूल ही बन गए थे कि इतने में आनंद में डूबी-सी ऊर्मि दौड़कर सामने की क्यारी में खड़ी हो गई, और फूल चुनते हुए उसने पुकारा—'सुनो, ज़रा इधर आओ ।'

"मैं स्वयं ही उधर जा रहा था । बढ़कर ऊर्मि ने मेरे बटन-होल में एक पीला फूल खोंस दिया । मैं बोला—'सब बिगाड़ दिया तुमने ।'

"'क्यों ?' चकित ऊर्मि ने अपनी बड़ी-बड़ी घुँघराली आँखों से मुझे देखा ।

"'कैसी सुंदर दिखाई देती हो तुम फूलों के साथ, फूलों की रानी-सी ।'

"'छिः !' ऊर्मि ने शरारत-भरी आँखों से कहा—"'सारा माधुर्य नष्ट कर डाला ।'

"'मैंने ?' मैं आश्चर्य से बोला—'कैसे ?'

"'कितने उमंग से आई थी, फूल सजाने तुम्हारे कॉलर में । पर तुम्हें अपने आनंद के आगे किसी की भावनाओं की क्या परवा । स्वार्थी कहीं के ।' कह उसने तिरछी निगाह से मेरी ओर देखा, और मुँह फुला लिया ।

"'अरे—' मैंने उसके कंधे पर हाथ रख हँसते हुए कहा—'सुनो तो ।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"'रहने दो।' कंधे को हटाते हुए ऊर्मि ने कहा—'बड़े भारी प्रगतिशील हो न।'

"'अरे।'

"'बस, सब समझ लिया।' ऊर्मि कुछ कहने को उद्यत मेरी परवा न करते हुए कहती चली गई। 'पर इसमें तुम्हारा क्या दोष? नारी पर नर आदि काल से हावी होता चला आया है। इतनी पुरानी आदत भला वह जल्दी कैसे छोड़ सकता है? अख़बारों के कालमों को वह नारी-उद्धार के लेखों से भले ही रँग दे, पर—'

"'तुम तो झगड़ने पर तुली हो जी।'

"'और तुम?'

"'अच्छा, भाई! अच्छा, तुम जीतीं, हम हारे।' कहते हुए मैंने ऊर्मि के कंधे से कैमरा उतार लिया और कहा—'इस पोज़ में तुम्हारा एक फ़ोटो लेकर उसके नीचे लिखा जायगा—मानिनी।'

'ऊर्मि खिलखिला उठी।

"इसी प्रकार हँसते, खेलते, झगड़ते बड़ी देर में घर पहुँचे। मुझे एक मित्र के यहाँ वसंतोत्सव में जाना था। मैंने साइकिल उठाई ही थी कि सुन पड़ा—'कहाँ जा रहे हो?'

"'दिनेश के यहाँ, वसंतोत्सव के निमंत्रण में।'

"'हटाओ निमंत्रण-विमंत्रण, कहीं न जाओ।'

"'नहीं, जाना ज़रूरी है।'

"'तो जल्द आना।' कुछ सोचती हुई ऊर्मि बोली।

"'अच्छा।'

'"पर दो मिनट रुको।' कह ऊर्मि दौड़कर चल दी। मैं साइकिल लिए आगे बढ़ा ही था कि मेरे सिर पर बसंती रूमाल गिर पड़ा—उसमें से आती हुई 'फूलनाना' की सुगंध ने फेंकनेवाले का नाम बता दिया। मैंने घूमकर देखा, ऊर्मि ऊपर खड़ी एकटक मेरी ओर देख रही थी। मैंने आदर से रूमाल जेब में रखकर कहा—'चलोगी?'

"ऊर्मि का हँसमुख चेहरा गंभीर हो उठा। उसने कहा—'तुम कहीं भी रहो, मैं हर वक़्त तुम्हारे साथ हूँ।'

"उसके मुख से उसकी बातों की सत्यता स्पष्ट थी। इस प्रकार बीता वसंत का वह दिन, जिसे मैं अपने जीवन में कभी नहीं भुला सकूँगा। यौवन की मधुमयी दुनिया का एक वर्ष बीत गया। मैं जिधर आँखें उठाता, सबमें वही दिखाई देती।

❀ ❀ ❀

"उस दिन वह कहीं चली गई थी—दूर, पर उसकी सुनहरे बॉर्डर की नीली धोती टँगी थी। मेरी आँखें वहीं ठहर गईं। ऐसा लगा कि ऊर्मि उसमें स्वयं लहरा रही हो। मैं बढ़ा उसे चूमने। इतने में मेरी दृष्टि पड़ी कोने में पड़े उसके चप्पलों पर। फिर मुड़ा, तो सामने उसकी ड्रेसिंग टेबुल थी। मैं मेज़ का सामान उलटने-पलटने लगा। उसके रूमाल, चोटी, टॉयलेट के सामान, सबसे, यहाँ तक कि उसकी किताबों से एक भीनी-भीनी सुगंध आ रही थी। अनुपस्थिति में भी वह सजीव-सी प्रतीत होती थी। इस विचार की अनुभूति लेकर मैं अपने कमरे में चला गया। कितने क्षण मेरे बीत गए, उसकी मायाविनी कल्पना में। मैं ऊर्मि की भावभंगियों में डूबा-सा न-जाने किधर बहा जा रहा था कि भविष्य एकाएक अट्टहास कर उठा, और मैं चौंक पड़ा।

"इस तरह मैं प्रायः खोया हुआ-सा बैठा रहता। ऊर्मि यद्यपि पहले ही के समान हृदय के समीप थी, पर मेरा मन न-जाने क्यों भागा-भागा फिरता था। मैं सोचता, मेरा क्या अधिकार है कि एक विवाहिता से प्रेम करूँ। कितना बुरा परिणाम होगा इसका। मैं चुप हो जाता। मैं फिर सोचता, दोनो ही तो एक दूसरे के लिये पागल हैं—एक दूसरे को छोड़ना भी तो कठिन है—किसी का क्या दोष? जहाँ तक हृदय का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संबंध है, यह स्नेह ठीक है। पर समाज—समाज को मैं क्या करूँगा ? यह विचार मुझे पागल कर देता। मैं गुम हो जाता, और प्रतीक्षा करती हुई ऊर्मि के पास जाने का मुझे साहस न होता—मेरे मधुर स्वप्नों का ताँता टूट जाता। मैं चल देता आँख बचाकर। इस तरह कितने ही दिन अपना बोझा ढोते चले गए। मेरे हृदय पर स्नेह-भार के साथ ही विचारों का भार भी बोझिल होता चला जाता। मैंने पास ही खड़ी ऊर्मि से कहा—'ऊर्मि ! मैं अब जाता हूँ।'

"'कहाँ ?'

"'वहीं।'

"'क्यों ?'

"'जानती ही हो।'

"ऊर्मि की आँखें भर आईं, और उसके पैर पीछे खिंचते हुए भी आगे बढ़ गए। वह चली गई।

❀ ❀ ❀

"उसे छोड़े हुए एक महीना बीत चुका था। रूम में एक ओर पड़े हुए ट्रंक की ओर मैं नज़र भी न डालता था। क्योंकि उसमें मेरे बीते हुए दिनों की कहानी बंदिनी-सी पड़ी थी, जिसे देखने की मुझमें शक्ति न थी।

"प्रभात की किरणें मुझे उल्लास-भरी प्रतीत हो रही थीं। भैरव के स्वरों से मैंने किरणों को गूँथ-सा दिया, 'जियरा हुलसे—' आह ! गीत में भी उसके कंठ की ध्वनि थी। मैं न गा सका। इतने में मुझे कार के परिचित हॉर्न की आवाज़ सुनाई दी, जिसे सुन मैं एक बार उसे देखने के लिये दौड़ पड़ा। न चाहते हुए भी, मन की मरोड़ से लड़कर, मैं दौड़ा उसका क्षणिक दर्शन पाने के लिये। मोटर निकल गई छोड़कर मेरे हृदय में एक अंतर्ज्वाल। मेरा चित्त शिथिल हो उठा। बँधी हुई नदी बह निकली, इच्छाओं के कगारों को उलटती-पुलटती। मैं वेग से ट्रंक की ओर बढ़ा, देखने के लिये उस कहानी की रानी को, एक बार फ़ोटो के रूप में ही सही। फ़ोटो, जो कभी कितने स्नेह से दी गई थी, और मेरी जीवन-निधि थी। पर मैं काँप उठा, और दिल की धड़कन सो-सी गई, जब अकस्मात् ट्रंक का कोना-कोना छानने पर भी मुझे मेरी प्रिय वस्तु न मिली, मेरी आँखें लाल हो आईं। कपड़ों की एक-एक तह उठा-उठाकर देखी। एक बार ही नहीं, साँस की प्रत्येक गति के साथ न-जाने कितनी बार! मैं हताश हो गया। संसार मेरे सामने सूना था। एक लंबी आह खींच, घुटनों पर सिर रख बैठ गया। वेदना मचल उठी, और अपनी राह ढूँढ़ने लगी। मैंने कुछ सोचा, और अपना चुटीला हृदय लिए दौड़ पड़ा। एक धुन में अपने प्रथम विचार से भी तेज़, ऊर्मि की खोज में। सामने से आते हुए दिनेश ने मेरी विचित्र अवस्था देख मुझे रोकते हुए पूछा—'क्यों जी, कहाँ यह दुलत्ती झाड़ते हुए चले जा रहे हो ?'

"मैं उत्तर दिए बिना आगे बढ़ता गया। फिर कुछ बक उठा—'रुको-रुको। इतना धोका !'

"मेरा मित्र चकराया-सा 'क्या हुआ ? कैसा धोका ? यह आज तुम्हें हो क्या गया है ?' कहता ही रह गया। इतने में मुझे ऊर्मि की कार दिखाई दी। मैं मोटर के समीप पहुँच गया, और बिना सोचे-विचारे ऊर्मि से पूछ बैठा—आवेश और दुःख से, 'किसने निकाली फ़ोटो ?'

"पास ही खड़ा दिनेश भौचक्का-सा मन-ही-मन कुछ समझ-बूझ-सा रहा था कि उसने मुझे फिर बोलते सुना—'बोलतीं क्यों नहीं ?'

"ऊर्मि चुप थी।

"मैंने फिर कहा—'ठीक-ठीक बताओ। अगर तुमने ली है, तो हाँ कह दो।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पर वह फिर भी मौन रही, बिना मेरी ओर देखे।

"दिनेश ऊर्मि की आँखों को पढ़ रहा था। उनमें कुछ चोरी-सी छिपी थी। वह समझा—मुझसे कई बार बातों-ही-बातों में जान चुका था कि मैं किसी से उलझा हूँ। दिनेश ने सोचा, शायद यही 'वह' है। दिनेश को बुरा समझ वह अपना भेद न प्रकट करना चाहती हो। दिनेश वहाँ से हट गया। कई बार पूछने पर भी ऊर्मि ने कोई जवाब न दिया, पर उसकी आकृति से यह स्पष्ट था कि उसी ने मेरी चीज़ें लीं। मोटर चल दी ख़ाक उड़ाती हुई किसी पर, जिसने किसी के लिये अपना ख़ून सुखाया, और जान दी ख़ून का घूँट पी। अर्धमृत-सा मैं अपने कमरे की ओर चला, और पहुँचते-ही-पहुँचते बेहोश हो गिर पड़ा। दिनेश भी मेरी अवस्था से क्षुब्ध-सा वहाँ पहुँचा। उसके स्नेह-मिश्रित उपचार से मुझे फिर चेतना आई। कुछ स्वस्थ होने पर जाते हुए दिनेश को रोक मैंने करुण-स्वर से कहा—"नहीं-नहीं दिनेश! अभी न जाओ। तुम्हारा साथ आज मुझे सब दिन से अच्छा लग रहा है। याद आती है मुझे ऊर्मि की वह बात।'

"'कौन-सी वह बात?' दिनेश ने विस्मय से कहा।

"'यही कि तुम्हारे विषय में उसकी ग़लत धारणा है। पर वह छोकरी क्या समझ सकती है मित्र के हृदय को।'

"'क्या घुट रही है आज? रशा जाने की या उसे यहाँ बुलाने की?' उमरख़ैयाम की एक सुंदर प्रति मेरी ओर बढ़ाते हुए डॉक्टर विमल ने कमरे में प्रवेश कर, हैट को एक ओर फेंकते हुए कहा—'तुम्हारे जन्म-दिवस के उपलक्ष में सब कुछ भुला देनेवाला एक छोटा-सा उपहार।'

"'अरे भाई! यह इनका जन्म-दिवस नहीं, अंत-दिवस है।' दिनेश ने कहा।

"स्वाभाविक हँसी से डॉक्टर विमल ने कहा—'यह तो इसकी पुरानी आदत है। मर-मरकर जीने की।'

"मेरे पीले मुख पर धुँधली-सी प्रसन्नता छा गई। मैंने पूछा—'क्या मेरा जन्म-दिन आज ही है? हो—गा—मेरे जन्म-दिवस तो गुथ गए हैं किसी के दिवस के साथ।'

"'कौन है वह?' विमल ने पूछा।

"'तुम्हीं में से कोई होगा।' मैंने बात टालते हुए कहा, और बाहर की ओर देखने लगा। मध्याह्न का सूर्य तप रहा था। रश्मियाँ न-जाने कितनी वेदनाएँ खींच-खींचकर कमरे की खिड़कियों से सूने कमरे को भर रही थीं। मित्र चल दिए थे। मैं पड़ा था अकेला खाट पर, कमरे के कण-कण को अपने करुण संताप से रुलाता-सा। ऐसे बीता वह जन्म-दिवस—मुझे याद आ गए ऊर्मि के वे उपहार, जो दे गए मुझे जीवन-भर के लिये एक वेदना का असह्य भार, उससे छीनकर।"

ऐसा कहते-कहते उमेश का सिर घूमने लगा, और वह मूर्च्छित हो गया।

उसने आँखें खोलीं। कुंतल की बिखरी हुई केश-राशि ने उसे ढक लिया था। केशों को हटाकर उसने देखा—उसकी आँखों में अपनी आँखों की छाया।

सुधा आपको पसंद हो, तो इसका प्रचार बढ़ाइए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदि-निवासी कौन और क्यों ?

[एक दलित आत्मा]

भारतीय प्रख्यात इतिहासज्ञों तथा पाश्चात्त्य अनुसंधान-कर्ताओं ने यह बात पूर्ण रूप से स्वीकार कर ली है कि आर्य या हिंदू भारत के आदि-निवासी नहीं, बल्कि भारत के आदि-निवासी वे हैं, जो आज अछूत या हरिजन के नाम से पुकारे जा रहे हैं।

इन्हें अछूतपन की उपाधि सौ या हज़ार वर्ष पहले की दी हुई नहीं, बल्कि जिस समय आर्यों ने हिंदुस्थान में पदार्पण किया, तभी इन्हें अछूत या शूद्र कहकर अपना दास बना लिया। तत्कालीन मूल-निवासियों के साथ आर्यों ने जो व्यवहार किया, या जो कुटिल चालें चलीं, उन्हीं का यह नतीजा है कि अछूत आज तक इनकी ग़ुलामी से छुटकारा नहीं पा सके, उन काली करतूतों को नहीं दफ़ना सके।

इस बीसवीं सदी में अछूतों के साथ होनेवाले दुर्व्यवहार देखकर न केवल मुझ-सा दुःखित-हृदय ही चकित है, बल्कि संसार-भर के न्याय-प्रिय जन चकित हो रहे हैं। जो अपने अधीन को स्वतंत्र नहीं कर सकता, वह अपनी स्वतंत्रता की माँग किस प्रकार कर सकता है ?

लेकिन हिंदू-धर्म के ठेकेदारों को इन बातों की परवा कहाँ ? वे तो अब भी, मौक़ा मिलने पर, भोलेभाले अछूतों को धर्म का हौवा दिखाकर, कर्तव्य-परायणता के नाम पर, सदा ग़ुलाम बने रहने के ही मनोहर उपदेश सुनाते हैं। कभी वेद-मंत्रों के हवाले देते हैं, तो कभी मनुस्मृति के कठोर क़ानूनों का भय दिखलाते हैं। अभिप्राय यह कि हर प्रकार से अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिये भरसक प्रयत्न करते रहते हैं।

परंतु जो सचाई थी, वह दुनिया की आँखों के सामने आ चुकी है। अब लोगों की आँखों में धूल झोंककर उसे छिपा नहीं सकते। अछूतों में भी ऐसे व्यक्ति पैदा हो गए हैं, जो अपने अधिकारों को समझते हैं, और उन्हें प्राप्त करने के लिये अपनी सामर्थ्य के अनुसार प्रयत्न कर रहे हैं। उन्हें यह भी भले प्रकार ज्ञात हो गया है कि हमारा प्रिय कौन है, और अप्रिय कौन। अस्तु।

अछूत ही भारत के आदि-निवासी हैं, इस बात को भारतीय इतिहासज्ञों ने किन शब्दों में स्वीकार किया है, यह पाठक निम्न-लिखित तीन उद्धरणों से जान सकते हैं, जिनसे मेरे विचारों का पुष्टीकरण तथा स्पष्टीकरण भी भले प्रकार हो जाता है—

स्व० लाला लाजपतरायजी अपने 'भारत-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष के इतिहास' में लिखते हैं—"मेरी सम्मति में इस बात को ऐतिहासिक रूप से स्वीकार कर लेना चाहिए कि हिंदू (आर्य) भारत के मूल-निवासी नहीं।"

ऋग्वेद के अनुवादक स्व० सर रमेशचंद्रजी 'प्राचीन भारतीय सभ्यता का इतिहास'-नामक पुस्तक में लिखते हैं—"आर्यों ने अपने बाहु-बल से नए अधिकार और नए देश को यहाँ के आदि-निवासियों से छीन लिया, और आदि-निवासी व्यर्थ ही इन अजय विजयी लोगों के विरुद्ध अपना सत्त्व रखने की कोशिशें करते रहे।"

लोक-पूज्य महात्मा गांधी ने एक बार कांग्रेस के सभापति-पद से भाषण देते हुए कहा था—"आर्य-जाति के आक्रमणकारियों ने हिंदुस्थान के मूल-निवासियों से अगर ज्यादा बुरा नहीं, तो कम-से-कम वैसा ही सलूक किया है, जैसा अँगरेज़ आक्रमणकारी आज हमारे साथ कर रहे हैं।"

उपर्युक्त उद्धरणों से यह भली भाँति सिद्ध हो जाता है कि भारत की मूल-निवासिनी वही जाति है, जो आज अछूत कही जा रही है। लोकमान्य तिलक के सिद्धांत के अनुसार आर्यों ने उत्तरीय ध्रुव से आकर यहाँ के मूल-निवासियों के साथ बड़े-बड़े युद्ध किए। ये युद्ध कितने ही वर्षों तक लगातार चलते रहे। आर्य युद्ध-विद्या में निपुण थे, युद्ध-सामग्री से सुसज्जित थे, इसलिये अंततः आदि-निवासी हार जाते थे। इस प्रकार कुछ ही वर्षों में आर्यों ने सारा हिंदुस्थान अपने अधिकार में कर लिया। आर्यों और आदि-निवासियों की ये लड़ाइयाँ आर्यों के प्राचीन ग्रंथों में सुरासुर-संग्राम, आर्य-अनार्य-संग्राम आदि नाम से पाई जाती हैं।

अब प्रश्न यह होता है कि क्या वास्तव में अछूत कहे जानेवाले भाई दस्यु, असुर, दैत्य आदि की संतान हैं ? नहीं, कदापि नहीं। बल्कि ये भी आर्यों की तरह श्रेष्ठ पुरुषों की संतान हैं। इनके पूर्वज भी अपने समय के सभ्य पुरुष थे। उन्हें भी आपकी तरह अपने पूर्वजों पर गर्व होना चाहिए। क्योंकि यदि वास्तविक रूप से उपर्युक्त संज्ञाओं के अंत तक पहुँचा जाय, इनके अंतर्हित मर्मों को जाना जाय, इनकी तह में काम करनेवाली भावनाओं को समझा जाय, तो बड़ा ही रहस्यमय तथा आश्चर्योत्पादक वृत्तांत दिखाई पड़ेगा। अतएव मैं यहाँ संज्ञाओं या इन कुटिल चालों का उद्घाटन कर देना उचित समझता हूँ, ताकि भूले अछूतों को भी मालूम हो जाय कि हम क्या थे, अब क्या हैं, और आगे क्या करना चाहिए।

पाठकवृंद ! जब कोई सबल राष्ट्र अपने से कमज़ोर पर विजय प्राप्त कर लेता है, तो अपनी उस विजय को स्थायी बनाने के लिये, अधिकृत को चिर काल तक अपना गुलाम रखने के लिये जो चालें चला करता है, उनमें एक यह चाल भी होती है कि वह अपने अधिकृत लोगों की संस्कृति नष्ट कर दिया करता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है, उन्हें घृणित-से-घृणित नामों से पुकारा करता है, तथा उनके अंदर से उनके पूर्वजों के गर्व को नष्ट करके उन्हें नपुंसक, कायर बनाने की कोशिश किया करता है। जिसका फल यह होता है कि वह जाति चिर काल के लिये उसकी दास बन जाती है। इन बातों के लिये इतिहास साक्षी है।

जिस प्रकार ईसाई अपने को क्रिश्चियन तथा दूसरों को पेगन कहते हैं। मुसलमान अपने को अच्छा तथा दूसरों को काफ़िर कहते हैं, इसी प्रकार आर्यों ने भी आदि-निवासियों को घृणित-से-घृणित नामों से पुकारना आरंभ किया। और, अपने धर्म-ग्रंथों में यह घोषित कर दिया—आदि-निवासियों को परमात्मा ने हमारी दासता के लिये ही उत्पन्न किया है। उन्हें पढ़ने-पढ़ाने तथा संपत्ति रखने का कोई अधिकार नहीं—स्वतंत्र विचरने का, अच्छे वस्त्र धारण करने, स्वच्छ तथा धातु के बने हुए बर्तनों में भोजन करने का भी कोई हक़ नहीं। वे दास हैं, हम स्वामी हैं, अतः जो कुछ हम कहेंगे, वह इन्हें करना ही होगा। पाठक उपर्युक्त बातों को निम्न-लिखित मंत्र तथा श्लोकों में स्पष्ट देख सकते हैं—

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः ;
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रोऽजायत।

(ऋग्वेद)

अर्थात् परमात्मा के मुख से ब्राह्मण, बाहु से क्षत्रिय और ऊरुसे वैश्य तथा पैरों से शूद्र उत्पन्न हुए।

इस मंत्र में एक वर्ण से दूसरे वर्ण की श्रेष्ठता बतलाई गई है। मनुस्मृति में तो इस प्रकार के कितने ही अमानुषिक विधानों का केवल शूद्रों के लिये आदेश किया गया है, जिनके सुनने-मात्र से ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं। जिन अछूत भाइयों पर निर्दय ब्राह्मणों ने इनका व्यवहार किया होगा, उनकी क्या दशा हुई होगी, यह कल्पनातीत है। यह बात निश्चित है कि मनुस्मृति में जितने भी विधान आदिष्ट हैं, वे उस समय अक्षरशः लागू किए जाते थे। क्योंकि मनुस्मृति तत-कालीन दंड-विधान-पुस्तक (Law Book) थी। जिस प्रकार आज के 'लॉ' (भारतीय) दंडविधान में आया हुआ मनुष्य कभी बिना दंड नहीं छूट सकता, इसी प्रकार उस समय भी था। अगर कुछ रियायत थी, तो केवल ब्राह्मणों के लिये, क्योंकि वे तो तत्कालीन साँड़ समझे जाते थे। मनुस्मृति में लिखा है, अगर ब्राह्मण किसी शूद्र की औरत भगा ले, तो उसे कोई दंड नहीं मिलना चाहिए। इस प्रकार के घृणित विधानों का दिग्दर्शन पाठक निम्न-लिखित श्लोकों में कर सकते हैं—

शूद्रेण कारयेद्दास्यं क्रीतमक्रीतमेव वा ;
दास्यायैव सृष्टोऽसौ ब्राह्मणस्य स्वयंभुवा।

(अ० ८। श्लोक ४१३)

अर्थात् शूद्र से सदा सेवा ही करानी चाहिए। चाहे वह ख़रीदा हुआ हो, या बिना ख़रीदा, क्योंकि परमात्मा ने शूद्र को ब्राह्मण की सेवा के लिये ही उत्पन्न किया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शक्तेनापि हि शूद्रेण न कार्यो धनसंचयः ;
शूद्रो हि धनमासाद्य ब्राह्मणमेव बाधते ।
(१० । १२९)

अर्थात् धन-संचय में समर्थ भी शूद्र धन संचित न करे, क्योंकि यदि शूद्र धन एकत्र करेगा, तो ब्राह्मणों को पीड़ा देगा ।

एक जातिर्द्विजातिस्तु वाचा दारुणया क्षिपन् ;
जिह्वायाः प्राप्नुयाच्छेदं जघन्यो वर्णो हि सः ।

अर्थात् यदि शूद्र किसी द्विजाति को कठोर वचन कहे, तो उसकी जिह्वा काट लेनी चाहिए, क्योंकि वह नीच वर्ण में पैदा हुआ है ।

इस प्रकार के और भी कितने ही ऐसे श्लोक मनुस्मृति तथा अन्य ग्रंथों में विद्यमान हैं, जिन्हें विस्तार-भय से यहाँ नहीं लिख रहा । केवल ब्राह्मणों की स्वेच्छाचारिता के एक-दो नमूने दिखा देना आवश्यक समझता हूँ—

अब्राह्मणः संग्रहणे प्राणान्तं दण्डमर्हति ;
चतुर्णामपि वर्णानां दारा रक्ष्यतमाः सदा ।
(अ० ८ । श्लोक ३५९)

अर्थात् चारों वर्णों की ही स्त्रियों की रक्षा होनी चाहिए । यदि कोई स्त्री ब्राह्मण से इतर किसी पुरुष से सहवास करे, तो उस पुरुष को प्राण-दंड होना चाहिए । अर्थात् ब्राह्मण किसी भी वर्ण की औरत से व्यभिचार करे, उसे दंड नहीं मिल सकता ।

न ब्राह्मणवधादन्यदधर्मो विद्यते भुवि ;
तस्मादस्य वधं राजा मनसापि न चिन्तयेत् ।
(८ । ३८१)

अर्थात् संसार में ब्राह्मण के वध से बढ़कर पाप और कोई नहीं, इसलिये राजा मन से भी ब्राह्मण के वध को न सोचे ।

उपर्युक्त स्वार्थ और छल से ओत-प्रोत विधानों को पढ़कर कोई भी न्याय-प्रिय तथा निष्पक्ष मनुष्य यह नहीं कह सकता कि इस प्रकार के विधान, जो अपने ऊपर तो लागू न हों, सिर्फ़ दूसरों के ही लिये हों, भाई भाई के लिये नहीं बना सकता, शत्रु शत्रु के लिये जरूर बना सकता है ! यदि अछूत आर्यों के ही अंग होते, तो इनके साथ ऐसा अन्याय कभी न किया जाता । शंकराचार्य-जैसे विद्वान कभी कान में शीशा डालने का आदेश न करते । इसलिये इस बात को पूर्ण रूप से स्वीकार किए बिना नहीं रहा जा सकता कि आर्य भारत के मूल-निवासी नहीं, बल्कि बाहर से आकर बसनेवाले हैं । आदि-निवासी अछूत हैं । आर्यों ने इन्हें अछूत बनाया है ।

उसी समय आदि-निवासियों को शताब्दियों के लिये अपनी दासता की बेड़ियों से जकड़ने के लिये सबसे बड़ी जो चाल चली गई थी, वह वर्ण-व्यवस्था थी । इस वर्ण-व्यवस्था ने अछूतों को सदा के लिये पंगु बना दिया । इसके विरुद्ध भी आदि-निवासियों ने आंदोलन किया, परंतु कुछ बस न चला । अंततः इसे विधान का जामा पहनाकर आदि-निवासियों पर लाद दिया गया । वर्ण-व्यवस्था पर प्रो० वेदव्यासजी एम्० ए०, एल्-एल्० बी० ने अपने विचार 'प्राचीन भारत' में इस प्रकार प्रकट किए हैं—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"'वर्ण'-शब्द का अर्थ है रंग। इस शब्द से यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि शुरू-शुरू में विभिन्न जातियों में भेद करने के लिये इस शब्द का प्रयोग जारी हुआ। श्वेत वर्ण के लोग अपने आपको 'आर्य' कहते थे, और वे यहाँ के मूल-निवासियों को दस्यु के नाम से पुकारते थे।"

पाठक स्वयं विचार सकते हैं कि वर्ण-व्यवस्था से और वर्ण-व्यवस्था पर विद्वान् की उपर्युक्त सम्मति से भी यह बिलकुल स्पष्ट हो रहा है कि आर्य भारत के आदि-निवासी नहीं।

अंत में लेख समाप्त करता हुआ धर्म के ठेकेदारों या राम और कृष्ण को मंदिर में क़ैद करनेवालों से यह निवेदन कर देना चाहता हूँ कि अब तुम्हें जागना चाहिए, और झूठी उच्चता छोड़कर अछूतों को गले लगा लेना चाहिए। अब वे दिन गए, जब एक ब्राह्मण के बहकाने पर शंबूक-जैसे ऋषि का गला काट दिया था। अब उचित यही है कि सब भेद-भावों को भूलकर एक हो जाओ, और मिलकर स्वदेश और समाज की उन्नति में लग जाओ।

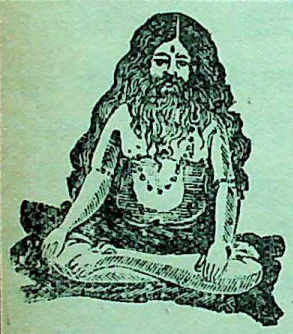

"कई वर्षों से— मैं आपकी जड़ी का व्यवहार करता आ रहा हूँ, इसी के द्वारा अभी हाल ही में मुझे एक मुक़दमे में कामयाबी मिली है।" एक सज्जन २७ अगस्त, १९३४ को बंगलोर से लिखते हैं—

इन्हीं महात्मा लामा योगी से तिब्बत की कंदराओं और हिमालय की गुफाओं में ३७ साल भ्रमण कर यह जड़ी और तांत्रिक कवच मिला है, जिससे नीचे लिखे सब कार्य ज़रूर सिद्ध होंगे, इसमें संदेह नहीं। ज़रूरतवाले मँगावें।

विशुद्ध प्रेम के लिये इससे ज़्यादा आज़माई हुई कोई चीज़ संसार में नहीं। स्त्री-पुरुष, दोनों के लिये मूल्य ३॥); (२) रोग से छुटकारा—पुराना, बुरे-से-बुरा असाध्य कोई भी रोग क्यों न हो, इससे शर्तिया आराम होता है। मूल्य ३॥); (३) मुक़दमा—चाहे जैसा पेचीदा हो, मगर इससे शर्तिया जीत होगी। मूल्य ३॥); (४) रोज़गार में लाभ न होता हो, हमेशा घाटा होता हो, इससे उनका रोज़गार बढ़ेगा और लाभ होगा मूल्य ३॥); (५) नौकरी—जिनकी नौकरी नहीं लगती हो, बेकार बैठे हों, या हैसियत की नौकरी न मिलती हो, ज़रूर होगी, मूल्य ३॥); (६) परीक्षा—प्रमोशन में इससे ज़रूर कामयाबी मिलेगी। विद्यार्थी और नौकर-पेशा ज़रूर आज़माइश करें, मूल्य ३॥); (७) तन्दुरुस्ती के लिये यह अपूर्व है, थोड़े ही समय में स्वास्थ्य पर इसका प्रभाव पड़ता है, मूल्य ३॥); मँगाते वक्त अपना नाम, काम ज़रूर लिखें। १ जड़ी का मूल्य ३॥), ३ जड़ी का ९), डाक-ख़र्च ।=) अलग। एक जड़ी से सिर्फ़ एक ही काम होता है। विदेश के लिये एक जड़ी के लिये ७ शिलिंग और ३ जड़ी के लिये २० शिलिंग पेशगी मनीऑर्डर से भेजना चाहिए, वी० पी० नहीं जाती।

पता—विजय लॉज (502), पो० आ० बड़ा बाजार, कलकत्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक अनिवार्य नित्य-कर्म

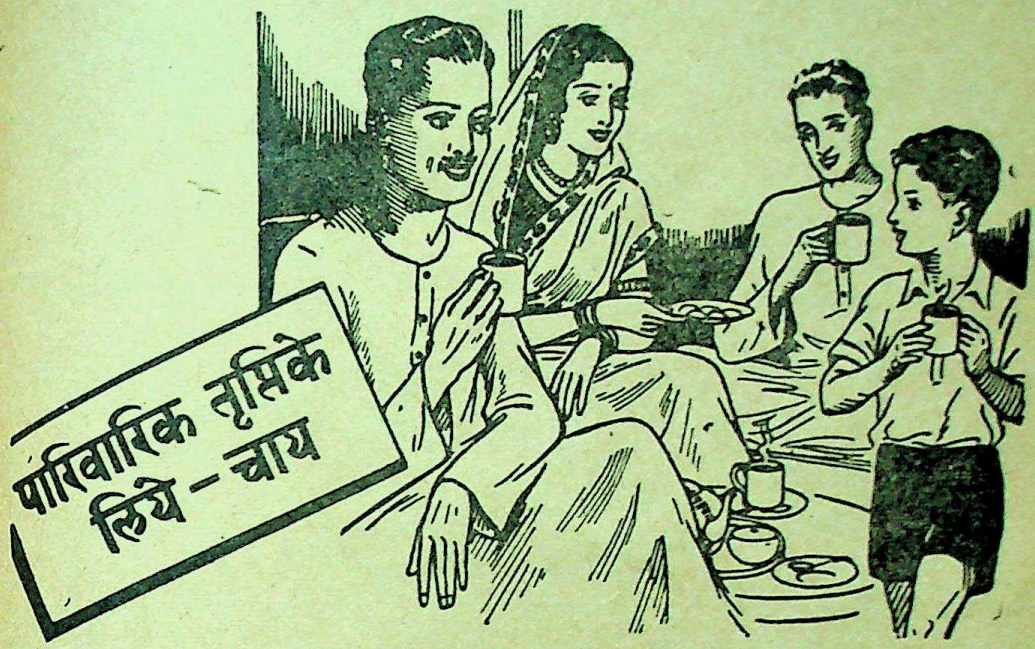

ज्योंही आपके पति कामसे घर वापस आयें तथा आपके बच्चे पाठशालासे लौटें आपको तुरन्त उनकी चाय बनानी चाहिये। और इस प्रकार आप प्रति दिन, अपने घर पर अपनी निजी चाय मंडलीका आयोजन करें, यही गार्हस्थ्य-जीवनके आनन्दकी पराकाष्ठा है। आप ही के घर ऐसी आनन्ददायक मंडली इस समय और भी बहुतसे घरोंमें जुड़ी होगी।

आइये,

हम सब भारतीय चाय पियें

चाय तैयार करनेका तरीका : ताजा पानी खौलाइये। साफ बर्तन जरा गर्म कर लीजिये। उसमें प्रत्येकके लिये एक और एक चम्मच अधिक, बढ़िया भारतीय चाय रखिये। पानी खौल जाते ही चाय पर डाल दीजिये। पांच मिनिटों तक चायको सीझने दीजिये। इसके बाद प्यालोंमें डाल कर दूध और चीनी मिलाइये।

इण्डियन टी मार्केट एक्सपैंशन बोर्ड द्वारा प्रचारित

IK115

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवाहोत्सवों पर उन्हें भेंट दीजिए !!

वर-वधुओं का पथ-प्रदर्शन करनेवाला अमूल्य साहित्य !

१—दांपत्य जीवन

लेखक, श्रीरामनारायण 'यादवेंदु' बी० ए०, एल्-एल्० बी०। यह नवविवाहित दंपतियों को आनंद देनेवाली अद्वितीय पुस्तक है। इस ग्रंथ में विवाह के उपरांत के गहन प्रश्न—आलिंगन, चुंबन तथा सहवास आदि—पर बहुत ही मार्मिक एवं वैज्ञानिक विवेचन किया गया है। वैवाहिक जीवन को संसार में स्वर्ग बनानेवाली यह राष्ट्र-भाषा में केवल एक ही पुस्तक है। मूल्य सादी १), सजिल्द १॥)

२—काम-विज्ञान

रचयिता, उदीयमान लेखक पंडित दीनानाथ व्यास विशारद। इस विषय पर हिंदी-भाषा में इने-गिने ग्रंथ हैं, किंतु उनमें वैवाहिक समस्याओं को समझाने की चेष्टा तक नहीं की गई। वैवाहिक शिक्षण, विषय का नैतिक धरातल, वैषयिक उत्कंठा, दांपतिक साम्य, सच्चा वैवाहिक जीवन आदि इसकी प्रमुख विशेषताएँ हैं। मूल्य सादी १), सजिल्द १॥)

३—फूलों की सेज

लेखक, श्रीविजयबहादुरसिंह बी० ए०। इस अपूर्व पुस्तक में वयस्क युवक-युवतियों एवं नव-विवाहित वर-वधुओं के हित की बातों का बड़ा ही मार्मिक वर्णन हुआ है। इसके मुख्य-मुख्य विषय ये हैं—यौवन, स्त्री-पुरुष के कर्तव्य, स्तन, ऋतु-धर्म, शय्या, समागम, अप्राकृतिक गमन, ऋतु-बाधा, प्रदर, हिस्टीरिया, वीर्य और आर्तव, गर्भाधान, वंध्यात्व, गर्भावस्था-समय, गर्भ रहने के लक्षण, दौर्हृद, गर्भ-स्राव और गर्भ-प्रसव इत्यादि। पुस्तक तरुणियों के लिये जीवन-प्रदीप है। इसमें अश्लीलता, अभद्रता एवं कामासक्तता का लेश-मात्र भी समावेश नहीं। मूल्य सादी २), सजिल्द २॥)

४—आदर्श पत्नी अर्थात् इंदिरा के पत्र

लेखक, श्रीरामनारायण 'यादवेंदु' बी० ए०, एल्-एल्० बी०। इस पुस्तक में नारी-हृदय और पुरुष-हृदय की ऐसी रहस्यमयी बातें बतलाई हैं कि जिनके समझे विना दांपत्य विवाहित जीवन सुखी नहीं बन सकता। इसमें केवल-मात्र सिद्धांतों (Theories) का विवेचन नहीं है, प्रत्युत क्रियात्मक रूप से प्रत्येक विषय पर प्रकाश डाला गया है। पुस्तक सर्वथा शिष्ट, संयत और सुंदर भाषा में लिखी गई है। मूल्य १), सजिल्द १॥)

५—सुखी जीवन

लेखक, आचार्य श्रीचतुरसेन शास्त्री। प्रस्तुत पुस्तक में आचार्यजी ने अधिकार-पूर्ण सिद्धांतों का प्रतिपादन किया है। स्त्रियों का बचपन, उनका गार्हस्थ्य जीवन, उनकी तंदुरुस्ती आदि विषयों की जानकारी प्राप्त कर लेने पर स्त्रियाँ अपना जीवन निस्संदेह सुख-पूर्वक बिता सकती हैं। मूल्य सादी ॥), सजिल्द १)

मिलने का पता—गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वर्गीया 'चकोरी' जी की

अमर कृतियाँ

किंजल्क

[द्वितीयावृत्ति]

लेखिका, स्वर्गीया रामेश्वरीदेवी 'चकोरी'। हिंदी-साहित्य में वर्तमान काल में तीन ही सर्वश्रेष्ठ कवयित्रियाँ हैं—श्रीमती महादेवी वर्मा, श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान और 'चकोरी'-जी। 'चकोरी'जी ने अपना एक स्थान बना लिया है। किंजल्क में 'चकोरी'जी की सुंदर कविताओं का संग्रह है। सभी कविताएँ सरल और सरस हैं। काव्य की दृष्टि से पुस्तक सभी भाँति उपयोगी है। छपाई सुंदर। मूल्य ॥), सजिल्द १)

मकरंद

लेखिका, स्वर्गीया श्रीमती रामेश्वरीदेवी 'चकोरी'; संकलनकर्ता, श्रीयुत 'अरुण' बी० ए०। हिंदी-साहित्य में 'चकोरी'जी की रचनाओं को कितना उच्च स्थान मिला, इसे सभी काव्य-प्रेमी जानते हैं। इस प्रतिभाशालिनी कवयित्री की रचनाओं का यह दूसरा संग्रह 'किंजल्क' से भी बढ़कर लोक-प्रिय बनेगा। कविताएँ उपयोगी हैं। छपाई सुंदर। मूल्य सादी ॥=), सजिल्द १=)

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संसार-रहस्य

अथवा

अधःपतन

लेखक

ठाकुर प्रसिद्धनारायणसिंह बी० ए०

यह उपन्यास हिंदी में एक नए ही ढंग का है। इसमें भौतिक और आध्यात्मिक जगत् का चित्र खींचा गया है। इस उपन्यास में लेखक ने संसार के द्वंद्व—पुण्य-पाप, उचित-अनुचित, यह-वह, मैं भला और तू बुरा और मैं बुद्धिमान् और तू मूर्ख···आदि ऐसे ही प्रश्नों को सुलझाकर यथातथ्य प्रकाश डाला है। छपाई-सफ़ाई सुंदर। मूल्य १॥), सजिल्द २)

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

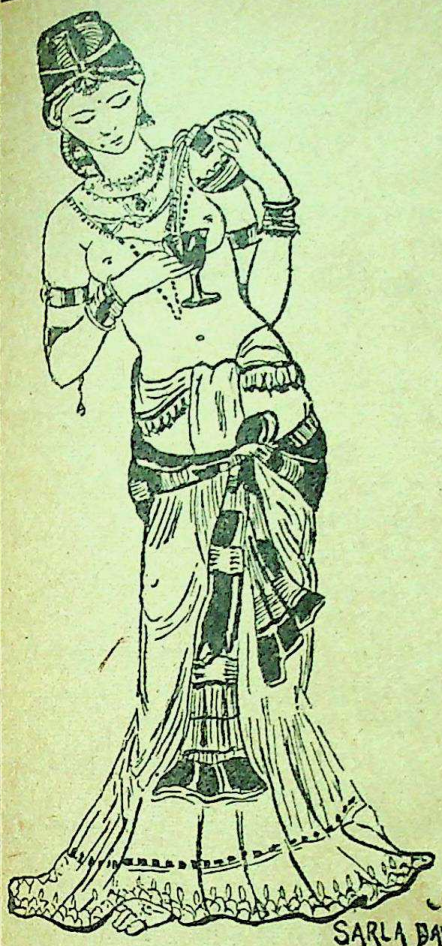

क्या आपने अब तक नहीं देखा ?

हिंदी के सुप्रसिद्ध विद्वान्, नाटककार

श्रीयुत गोविंदवल्लभ पंत

का सबसे नवीन बौद्धकालीन नाटक

अंतःपुर का छिद्र

[इतिहास के पृष्ठों का रोमांचकारी छाया-चित्र]

अभी-अभी प्रकाशित हुआ है।

कौशांबी के राजमहल में होनेवाली प्रणय-लीला, महाराज उदयन की प्रेम-कथा का दुःखद प्रसंग, अधिकार-लिप्सा का रोमांचकारी दृश्य। एक सार-गर्भित कथानक ! भगवान् बुद्ध के समय का इतिहास !!

स्टेज पर भी खेला जा सकता है !!!

गंगा पुस्तकमाला कार्यालय लखनऊ

सजिल्द ॥) सादी ।=)

जरा मेरी भी तो सुन लीजिए !

आपकी पुस्तकों की सूची अधूरी न रह जाय !!

एक बात ऐसी है—ध्यान रखिए !!!

बिहारी-सुधा

[लेखक, 'मिश्रबंधु']

महाकवि बिहारीलाल के २७० सर्वश्रेष्ठ दोहों का अर्थ-सहित सुंदर संग्रह

आपकी घरेलू लाइब्रेरी व पुस्तकालयों की शोभा बढ़ाने-योग्य अनुपम

काव्य-ग्रंथ

सजिल्द ॥) सादी ।=)

गंगा-ग्रंथागार, २८, लाटूश रोड, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरानी पुस्तकों के नए संस्करण

दुलारे-दोहावली

लेखक, सुधा-संपादक पं० दुलारेलाल भार्गव। व्रजभाषा-साहित्य की वर्तमान सर्वोत्तम कृति। इसमें पं० लोकनाथ सिलाकारी की विस्तृत भूमिका और दो सौ से ऊपर चुने हुए दोहे हैं। मूल्य १), १॥)

बिहारी-रत्नाकर

[तृतीयावृत्ति]

महाकवि बिहारी की जगत्प्रसिद्ध सतसई पर हिंदी-भाष्य। भाष्यकार स्व० 'रत्नाकर'जी। मूल्य सजिल्द ४)

हृदय की प्यास

[द्वितीयावृत्ति]

आचार्य चतुरसेन की अनुपम कृति। मित्रता के लक्षण, सौंदर्य की विषमता, आधुनिक शिक्षा से उत्पन्न सौंदर्योपासना आदि का जीता-जागता चित्र। ६ रंगीन और सादे चित्रों से सुशोभित उपन्यास। मूल्य २), सजिल्द २॥)

गोरी

[द्वितीयावृत्ति]

इस उपन्यास में श्रीरमाशंकर सकसेना ने विलायत में गए भारतीय विद्यार्थियों के चरित्र-पतन का आँखों-देखा वर्णन किया है। लंदन-रहस्य से भी अधिक मनोरंजक। मूल्य १), सजिल्द १॥)

लिली

[द्वितीयावृत्ति]

'निराला'जी की चमत्कार-पूर्ण, सुंदर, काव्य-मय श्रेष्ठ कहानियाँ। मूल्य १), सजिल्द १॥)

अक्षत

[द्वितीयावृत्ति]

आचार्य चतुरसेन शास्त्री की ८ अमर कहानियाँ। मन को उन्मत्त करके मोर की भाँति नचानेवाले भाव-पूर्ण चित्रण। मूल्य १), सजिल्द १॥)

निठल्लू की राम-कहानी

[द्वितीयावृत्ति]

श्रीपरिपूर्णानंदजी की हास्य-रस-पूर्ण लेखनी का चमत्कार। हँसते-हँसते आप लोट-पोट हो जायँगे। मूल्य ॥), सजिल्द १)

सुघड़ चमेली

[पंचमावृत्ति]

स्वर्गीय पं० रामजीदास भार्गव की सुंदर कृति। आप अपनी लड़कियों को इसे अवश्य पढ़ाइए। सचित्र पुस्तक का मूल्य ⁻), सजिल्द =)

खिलवाड़

[चतुर्थावृत्ति]

पं० भूपनारायण दीक्षित की सरल कहानियों और अनूठी कविताओं का संग्रह। बालोपयोगी २८ चित्र। मूल्य =), सजिल्द ।)

कर्मयोग

[द्वितीयावृत्ति]

आत्मविद्या की विशेषज्ञा श्रीमती ओहण्णुद्वारा की 'Practical Yoga'-नामक पुस्तक का अनुवाद। अनुवादक, श्रीसंतराम बी० ए०। मू० ॥), स० १)

लबड़धोंधों

[तृतीयावृत्ति]

हास्य-रस के अद्वितीय लेखक स्वर्गीय पं० बदरीनाथ भट्ट की अनुपम कृति। न हँसनेवाले को हँसाकर लोटन-कबूतर कर देनेवाली पुस्तक सचित्र। मूल्य ॥), सजिल्द १)

योग की कुछ विभूतियाँ

[द्वितीयावृत्ति]

योगी रामचारक-लिखित 'Fourteen lessons In Yogi Philosophy and Oriental Occultism' का हिंदी-अनुवाद। अनु०, ठा० प्रसिद्धनारायणसिंह बी० ए०। मूल्य ॥), सजिल्द १)

विश्व-साहित्य

[द्वितीयावृत्ति]

इस पुस्तक में सरस्वती-संपादक श्रीपदुमलाल-पुन्नालाल बख़्शी बी० ए० ने अंतराष्ट्रीय साहित्य के प्रत्येक अंग की सुबोध व्याख्या की है। साहित्य-सम्मेलन की उत्तमा-परीक्षा में पाठ्य-ग्रंथ। मूल्य १॥), सजिल्द २)

हिंदी

[तृतीयावृत्ति]

स्व० पं० बदरीनाथजी भट्ट के विद्वत्ता-पूर्ण निबंधों का संग्रह। शिक्षा-विभागों द्वारा स्वीकृत पाठ्य-पुस्तक। मूल्य ॥), सजिल्द १=)

कृषि-मित्र

[द्वितीयावृत्ति]

कृषि-संबंधी सभी आवश्यक विषय इसमें सरल, सुंदर भाषा में समझाए गए हैं। प्रत्येक किसान को इसे अवश्य देखना चाहिए। लेखक, पं० गंगाप्रसाद पांडेय। मूल्य ।⁻), सजिल्द ।=)

क्यों और कैसे ?

[द्वितीयावृत्ति]

भूकंप क्यों आता है, पेड़ से फल क्यों नीचे गिरता है आदि वैज्ञानिक विषयों का मनोरंजक वर्णन। बच्चे बड़ी सुगमता से समझ लेंगे। लेखक, श्रीनारायणप्रसाद अरोड़ा बी० ए०। मूल्य ।), सजिल्द ।=)

गंगा-ग्रंथागार, ३६, लाटूश रोड, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विज्ञापनदाताओं के लिये

अपूर्व सुअवसर

हमारे विशेषांक में विज्ञापन देकर दूना लाभ उठाइए !

लोकमान्य (कलकत्ता)

लोकमत (नागपुर)

—का—

{ सम्मिलित विशेषांक }

'आधुनिक राजस्थान'

जून के अंतिम सप्ताह में कलकत्ता और नागपुर में
एक ही साथ प्रकाशित होगा

आपका विज्ञापन न केवल लोकमान्य के बहुसंख्यक पाठक पढ़ेंगे, किंतु उसका प्रचार 'लोकमत' द्वारा मध्य-प्रांत (सी० पी०), बरार, हैदराबाद और बंबई-प्रांत के सभी प्रमुख क्षेत्रों में हो जायगा।

आज ही पूछताछ करें—

व्यवस्थापक—लोकमान्य

१६०, हरीसन रोड

कलकत्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदू-जाति के विश्व-मान्य सिद्धांतों का सजीव, सार-गर्भित चित्रण

संगठन, एकता और बंधुत्व का आदर्श उदाहरण !!

कला, कल्पना, मनोविज्ञान-नीति—

सब बातों का एक ही स्थान पर मिलकर आपके हृदय की कोमल भावनाओं को छू लेने का प्रयास कितना पवित्र—कितना सफल ! एक बार अवश्य पढ़िए—

* निःसहाय हिंदू *

सोचिए तो—आप स्वयं ही कह देंगे—

* यह सुंदर उपन्यास *

आपके मनोनुकूल पाठ्य सामग्री

का चयन है !

साहित्य के सुपरिचित कलाकार श्रीयुत राधाकृष्णदास

की ओज-भरी लेखनी का अनुपम चमत्कार, जिसका एक-एक शब्द आपके लिये अनमोल प्रमाणित होगा।

संपादक

रा० ब० बाबू श्यामसुंदर दास बी० ए०

'हिंदू' होकर आपने इस पुस्तक को न पढ़ा, तो आपने जाति के प्रति एक अन्याय किया !

अभी-अभी छपकर तैयार है !!

सजिल्द १), सादी ।।)

आज ही अपना ऑर्डर भेजिए।

गंगा-ग्रंथागार, ३६, लाटूश रोड, लखनऊ

स्वास्थ्यवर्द्धक भोजन का चुनाव सरलता से कर लें !

कैसे ?

'भोजन और स्वास्थ्य'

नामक हमारी नई प्रकाशित पुस्तक द्वारा !

"स्वास्थ्य-वर्द्धक भोजन का चुनाव साधारण जन भी, अपनी आय के अनुसार, कर सकते हैं। इसके लिये अमीर-गरीब का कोई प्रश्न नहीं।" मूल्य १), सजिल्द १।।)

लेखक—डॉ० सत्यप्रकाश डी० एस्-सी०, एफ़्० आई० ए० एस्०

तथा डॉ० संतप्रसाद टंडन एम्० एस्-सी०, डी० फ़िल्०

गंगा-ग्रंथागार, ३६, लाटूश रोड, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जवाहर

[आचार्य श्रीचतुरसेन शास्त्री वैद्य]

प और त्याग के देवता की भाँति तुम स्वाधीन जातियों में हमारी मूक वेदना का संदेश देकर आज फिर वंदी हो ! हम तुम्हारे लिये हर्ष मनाएँ या अपना सिर धुनें ?

जीवन के इस पार का सब कुछ तुम त्याग चुके हो, और उस पार तुम्हारी सहधर्मिणी ने वेदनाएँ बिखेर दी हैं। इस पार से उस पार तक हम केवल तड़प ही देख रहे हैं।

ओ ! भारत के यौवनधन ! ओ ! देश के उद्ग्रीव ब्राह्मण ! आज देश के प्राण सिमटकर तुममें प्रविष्ट हो रहे हैं। तुम्हारी पर-चिंता से विकल, अस्थिर, चल मूर्ति देखकर हमारे हृदय में आशा और उत्साह की लहर पैदा होती है।

तुमने हम सबसे अधिक विश्व-दर्शन किया है, तुमने हम सबसे अधिक आत्मदर्शन किया है, और तुमने ही हम सबसे अधिक भविष्य-दर्शन किया है। अरे ! ओ ! दिव्य-दर्शी ! ठहर, हम जरा तुम्हारे दर्शन कर लें ! उस दर्शन में विश्व-दर्शन, आत्मदर्शन, भविष्य-दर्शन, सब कुछ आ जायगा।

उन्होंने वेदना की कंटकमयी शय्या तुम्हारे

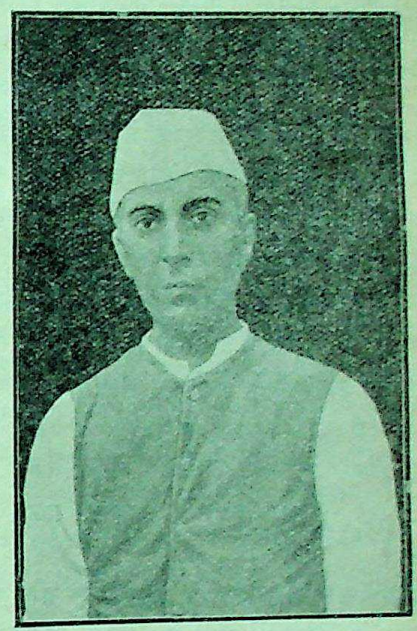

पं० जवाहरलाल नेहरू

लिये लोह-पुष्पों से सजा रक्खी है, और हम सब उसके रखवाले हैं ! तुम सोओ उस पर व्यथित हृदय लेकर, और हम देखें तुम्हें शून्य-हृदय होकर !! ... हाय रे हम!!!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजा राममोहन राय के विदेश के पत्र

[श्री० प्रो० प्रभाकर माचवे एम्० ए०, साहित्य-रत्न]

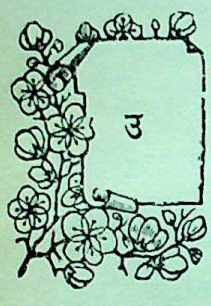

उन्नीसवीं सदी के उन बड़े-बड़े भारतवासियों में, जिन्होंने इस देश की संस्कृति पश्चिम की संस्कृति के साथ जोड़कर देखने की कोशिश की, जिनके दिल और दिमाग़ हर नए विचार के स्वागत के लिये हमेशा खुले थे, और जिन्होंने देश में समाज-सुधार की ऐसी लहर फैला दी, जिसकी यादगार सदा बनी रहेगी, पहला नाम राजा राममोहन राय का लिया जायगा।

उन्नीसवीं सदी ही क्यों, स्वर्गवासी सी० एफ़्० ऐंड्रयूज़ के शब्दों में राममोहन राय का दिमाग़ तो अपने साथियों से कहीं दूर की बात सोचता था। वह एक तरह के मसीहा (Prophet) थे, और इसीलिये उन्हें 'Father of Indian Renaissan' कहना ग़लत न होगा।

राममोहन राय क्या हैसियत से और क्या तबियत से सचमुच राजा थे। उनके बोलने में, लिखने में, यहाँ तक कि ख़तों में भी वही राजापन साफ़ दिखाई देता था। राजापन से मतलब शान-शौकत से नहीं, वरन् एक प्रकार का आत्म-विश्वास, उदारता, आत्मसम्मान और दरिया-दिली से है। मैक्समूलर ने इसी बात को लेकर राममोहन राय के लिये कहा था—जिस तरह जर्मन-भाषा में शाहज़ादे को फ़र्स्ट या पहला कहते हैं, या जिस तरह पुराने rex-शब्द के माने होते थे अगुआ या मुखिया, राजा राममोहन राय भी नाम के अनुसार सच्चे राजा थे। हर बात में वह पहले रहते—उसूलों के लिये लड़नेवालों में पहले, न हटनेवालों में पहले।

राममोहन राय ने वैसे संपूर्ण जीवन में न-जाने कितने पत्र लिखे होंगे, पर यहाँ हमें सिर्फ़ उन पत्रों से मतलब है, जो उन्होंने समुद्र-पार से लिखे थे। इसलिये हमें पहले जान लेना होगा कि समुद्र-पार वह कब गए, क्यों गए, और कैसे गए। राम मोहनराय ने २० अगस्त, सन् १८२८ (६ भाद्रपद, शक १७५०) को ४८ चितपुर रोड, जरासंको में जिस ब्रह्मसमाज की नींव डाली, उसी का ८ जनवरी, १८३० में ट्रस्ट-डीड बना, और २३ जनवरी, १८३० को फिर ज़ोरों से संगठन हुआ। सन् २९ में उन्हें पेरिस की एशियाटिक सोसाइटी की ऑनरेरी मेंबर-शिप मिल ही चुकी थी। सन् १८३० में दिल्ली के उस वक़्त के नाम-मात्र बादशाह ने उन्हें 'राजा' का ख़िताब दिया। यह ख़िताब देकर बहादुरशाह ने राममोहन राय को इँगलैंड इस इरादे से भेजा कि वह पार्लियामेंट में जाकर दिल्ली की बादशाहत के वास्ते दिल्ली के इर्द-गिर्द के कुछ इलाक़े माँगें। यह इरादा पूरा नहीं हो पाया, और राममोहन राय अपनी मातृभूमि को लौट भी नहीं सके। यह कहानी संक्षेप में यों है—

जीवन का एक महत्त्व-पूर्ण कार्य यानी ब्रह्म-समाज की स्थापना कर लेने के बाद राममोहन राय, जो हर वक़्त नए-नए समाज-सुधारों के लिये न सिर्फ़ मन से, वरन् तन, धन से भी तैयार रहते थे, उस वक़्त के कट्टर ब्राह्मणों और बंगालियों के तीव्र विरोध के रहते हुए भी, इँगलैंड जाने को तैयार हो जाते हैं। सब रिश्तेवाले, संगी-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साथी उन्हें कोसते हैं कि कालेपानी-पार मत जाओ, समुद्र-पार जाना शास्त्रों में मना है। फिर भी राममोहन राय रुकते नहीं।

बहरहाल बादशाह का ख़लीता लेकर राजा राममोहन राय १५ नवंबर, १८३० को लिवरपूल जाने के लिये 'एलियन' नामक जहाज़ में सवार होते हैं। राजा राममोहन राय के साथ एक लड़का और दो हिंदुस्थानी नौकर हैं। चाहे उनकी बिरादरीवालों का शाप समझिए, या और कोई वजह, सफ़र उनका शांति से नहीं होता। जहाज़ को इँगलैंड पहुँचने में डेढ़ साल लग जाता है। राह में तूफ़ान ने काफ़ी ज़ोर दिखलाया, फिर भी किसी तरह वह ८ एप्रिल, १८३२ को इँगलैंड के किनारे जा लगते हैं। लिवरपूल उतरते हैं, और एक होटल में ठहरते हैं।

इस दिन से लगाकर २७ सितंबर, सन् १८३३ के दिन के दो बजे तक, जब आपने ब्रिस्टल में अख़ीरी साँस ली, कुलजमा १७ महीने होते हैं, जिनमें से तीन महीने के लिये आप फ्रांस चले गए थे। इँगलैंड में जो आपने १३-१४ महीने बिताए, उसी में जो कुछ भी चिट्ठियाँ लिखी हों। फ़ुरसत उन्हें कम मिलती थी, क्योंकि ज़्यादा समय पार्लियामेंट की सिलेक्ट कमेटी के सामने बयान देने में, सती-प्रथा के विरोध में लिखा-पढ़ी करने में, बड़े-बड़े आदमियों से मिलने-जुलने में बीत जाता था। कभी राजपरिवार में बुलावा है, तो कभी लंदन-ब्रिज का उद्घाटन-समारोह है, अथवा कभी ईस्ट-इंडिया कंपनी के डाइरेक्टरों के यहाँ पार्टी है। इस भगदड़ में जो वक्त मिलता और चिट्ठियाँ लिखते भी, तो अक्सर अख़बारों के नाम हुआ करतीं। हिंदुस्थान में जब वह थे, तभी से अख़बारनवीसी से आपको शौक़ था, और कई समस्याएँ—मसलन् Unitarian Church स्त्रियों के अधिकार, अख़बारों की स्वाधीनता वग़ैरा आपने छेड़ रक्खी थीं। जो ख़त हिंदुस्थान के लिये होते, उनके आने-जाने में भी उस ज़माने के हिसाब से बहुत देर लग जाती। उस वक़्त 'एयर मेल' तो थी नहीं। इस तरह के राममोहन राय के समुद्र-पार के ख़तों में से जो थोड़े-से बाक़ी हैं, उनमें से कुछ मिस कारपेंटर के 'लास्ट डेज़ ऑफ़् राजा राममोहन राय' में और ब्रजेंद्रनाथ बनर्जी के प्रयत्नों से बंगीय साहित्य-परिषद् द्वारा प्रकाशित 'राममोहन राय की ग्रंथावली' में मिलते हैं। डॉक्टर कालीदास नाग 'कलचरल-हेरिटेज ऑफ़् इंडिया' के दूसरे हिस्से में कहते हैं कि यह कहा जाता है कि राममोहन राय के कुछ लेखों वग़ैरा का भाषांतर हिंदी में हुआ था, जो आचार्य क्षितिमोहन सेन-जैसे विद्वानों के मत से अब अनुपलब्ध है।

इन पत्रों में अधिकांश तो पत्रोत्तर-रूप में हैं, यानी तात्त्विक चर्चाओं से भरे हैं। कुछ पत्रों में राममोहन राय के इँगलैंड के जीवन और सामाजिक दशा के निरीक्षण हैं। साथ ही कहीं-कहीं तुलना के लिये तत्कालीन भारतीय, विशेषतः बंगाली समाज-स्थिति का भी चित्र आ जाता है। उन पत्रों में सबसे मज़ेदार एक पत्र है, जो आपने कलकत्ते के मि० गार्डन को भेजा था। और कहते हैं, फ्रांस जाने के कुछ ही अरसे पहले आपने इसे लिखा था। इस ख़त की ख़ूबी यह है कि इसमें राममोहन राय ख़ुद अपनी पूर्व-जीवनी के बारे में एक प्रकार का सिंहावलोकन (Retrospect) कर रहे हैं। इस पत्र को आत्म-कथात्मक रेखा-चित्र (Auto-biographical Sketch) ही कह सकते हैं। मूल-पत्र अँगरेज़ी में है। यहाँ कुछ हिस्से का तर्जुमा दिया जा रहा है—

"अपने पिताजी के इंतक़ाल के बाद तो मैंने और भी ज़ोरों से मूर्ति-पूजा के समर्थकों का विरोध किया। अब छपाई की कल और कला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की सुविधा भी हमारे देश में आ गई थी, उसकी मदद से मैंने कई किताबें और पर्चे छपवाए। सब लेख मूर्ति-पूजकों की ग़लतियों के ख़िलाफ़ थे, और कुछ देशी और कुछ विदेशी ज़बान में थे। इन पत्रकों से मेरे विरोध में ऐसा आंदोलन उठा कि मुझे क़रीब-क़रीब हर किसी ने, रिश्तेदार और दोस्त तक ने, छोड़ दिया। बचे कौन? तो सिर्फ़ दो या तीन स्कॉच मित्रगण, जिनका और जिनके देश स्कॉटलैंड का मैं सदा आभारी रहूँगा।

"इन सब मुबाहिसों में जिस बात को लेकर मैं हमेशा झगड़ता था, वह ब्राह्मण-धर्म का विरोध नहीं, मगर ब्राह्मण-धर्म की विकृति का विरोध होता, और मैंने यह दिखाने की कोशिश की कि ब्राह्मण की मूर्ति-पूजा उसके पुरखाओं से कहीं और क़िस्म की है। और, वह मूर्ति-पूजा जिन शास्त्रों और ग्रंथों के आधारों पर वे मानते हैं, उनके सिद्धांतों से बिलकुल उल्टी है।"

यह उस पत्र का सिर्फ़ एक हिस्सा है, जो काफ़ी बड़ा है।

और पत्रों में कई मज़ेदार सवाल और जवाब हुआ करते। ब्रजेंद्रनाथ बनर्जी ने पत्र-रूप में राममोहन राय का नमक के मुताल्लिक़ एक प्रश्नोत्तर छापा है, जिससे एक बात यह भी ज़ाहिर है कि राममोहन राय की स्मरण-शक्ति कितनी तेज़ थी। १६ मार्च, १८३८ के एक पत्र में इस सवाल के उत्तर में कि बंगाल में नमक का भाव क्या था, वह लिखते हैं—"जब मैंने बंगाल देश छोड़ा, तब की बात याद है। साफ़, शुद्ध नमक तो एक रुपए का पाँच सेर मिलता था, परंतु मिलाया हुआ (adulterated) नमक रुपए का सात से आठ सेर मिल जाता था।"

इन तमाम पत्रों में राममोहन राय का स्पष्ट-भाषी, ऊँचे विचारोंवाला और साफ़, सुलझी शैली में बात कहनेवाला व्यक्तित्व नज़र आता है। इन बातों के सिवा चार और ख़ासियतें भी हैं।

इन पत्रों से यह स्पष्ट पता लगता है कि राममोहन राय स्वाधीनता के अनन्य उपासक थे। स्त्रियों की स्वाधीनता, पत्रों के नियंत्रण-संबंधी स्वाधीनता, धार्मिक स्वाधीनता के बारे में पत्रों में विचार बिखरे हुए हैं।

मि० विलियम ऐडम ने उनके बारे में जो कहा है—"He would be free, or not be at all !..... Love of freedom was perhaps the strongest passion of his soul. Freedom not of action only, but of thought."—वह इन चिट्ठियों पर बिलकुल लागू होता है।

इस स्वाधीनता-प्रेम में से ही विचारों की उदारता इन पत्रों में दिखाई देती है। प्रो० सिल्वन लेवी ने राममोहन राय के सांस्कृतिक एकता (Cultural unity) के काम के बारे में कहा था—"संस्कृत के तो वह विद्वान् थे ही, मगर मानव-समाज एक बड़ा कुटुंब है, और हम सब भाई-भाई हैं, यह सिद्ध करने के लिये वह हिब्रू सीखे, फ़ारसी और अरबी पढ़े। इस्लाम, ईसाइयत और वैदिक हिंदू-धर्म का उनका अध्ययन लाजवाब था।" मेडम ब्लेवट्स्की ने कहा है कि—"भारत की सबसे रोशन और दयालु (Philanthropic) संतानों में से एक राजा राममोहन थे।"

धर्मों के गहरे अध्ययन से राजनीतिक मामलों में भी राममोहन राय का रुख़ धीर-गंभीर होता है। बिलकुल तर्क-संगत और सिद्धांत-पूर्ण। वह राजनीति में भी बढ़-चढ़कर बात करते नज़र नहीं आते। सरोजिनी नायडू ने जो उनके लिये कहा है कि उन्होंने पुराने ज़माने की चुनौती को झेला, वह सच है। एक प्रसिद्ध फ्रांसीसी वैज्ञानिक और पत्रकार विक्टर जैकुमांट ने अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(Voyage daus l' Inde) में जो राममोहन राय के स्वभाव के बारे में लिखा कि अपनी राय ज़ाहिर करते वक्त वह चारों ओर देखकर पूरी सतर्कता और सावधानी से काम लेते थे, यह बात इन पत्रों पर भी घटती है।

राजा राममोहन राय की वृत्ति सर्वदेशीय (universal) थी। इसीलिये समुद्र-पार जाकर भी वह नाख़ुश नहीं हुए, न अपने देश की हालत पर तुलना रूप से बहुत ज़्यादा गुनगुनाए। उनका विचार अच्छाई जहाँ कहीं भी हो, वहीं से सीखने का था। इसी से कलकत्ते में जब आपकी राती मनाई गई, तब उन्होंने अपना एक बार बँगला में रचा हुआ "की स्वदेशे कि विदेशे जथाय तथाय थाकि", यह पद्य गाया था। मिस कोसेट ने उनकी जीवनी में जो एक मार्के की बात कही है, उससे मैं यह भाषण समाप्त करता हूँ—

"Amidst all his wanderings Raja Ram Mohan Ray was saved by his faith."

यानी अपने सब प्रवासों में राजा राममोहन राय आंतरिक श्रद्धा के कारण बच निकले*।

---

* ऑल इंडिया रेडियो, दिल्ली से पठित।—सुधा-संपादक

॥ श्री ॥

मथुरा ता० १।६।१६३३

मैं कुरुक्षेत्र से लौटते हुए श्रीमथुराजी आया, और श्रीमान् पं० क्षेत्रपालजी शर्मा-संचालित सुख-संचारक कंपनी का कारोबार को देखकर नितांत प्रसन्न हुआ। एक वैद्य होने के कारण मैंने आपके आयुर्वेदिक विभाग को चिकित्सक बुद्धि से देखा। इस विभाग का काम नितांत संतोष-जनक है। मकरध्वज, चंद्रोदय, सहस्र पुटी अभ्रक, धातूप धातुभस्म, रसोपरस, आसव, अरिष्ट, गुटी, चूर्ण, अवलेह, घृत, तैलादि सभी शास्त्रीय पद्धति से तैयार कराए जाते हैं। इस विभाग का सारा काम आयुर्वेदाचार्य श्रीमान् पं० विश्वंभरदत्तजी शर्मा की अवधानता में होता है। प्रयोगों की शास्त्रीय विधि में कोई कसर नहीं रक्खी जाती। आशा है, बहुत जल्दी यह विभाग अत्युच्च दर्जे का गिना जायगा। यहाँ की बनी ओषधियों का प्रयोग मेरे कई मित्रों ने अपने रोगियों पर कर देखा, और वे सफलीभूत हुए। इसका कारण इस विभाग की सत्यता ही है। इतिशम्।

श्रीगोवर्धन शर्मा छांगाणी, नागपुर-निवासी

वैद्यभूषण-भिषगाचार्य—प्रधान संपादक, वैद्य-सम्मेलन - पत्रिका, आयुर्वेद-विद्यापीठ-परीक्षक भूतपूर्व अध्यक्ष राजपूताना प्रांतीय वैद्य - सम्मेलन इत्यादि तथा भूतपूर्व अखिल भारतवर्षीय आयुर्वेद महामंडल-सभापति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिव-समाधि

[देव-पुरस्कार-विजेता श्रीश्यामनारायण पांडेय]

हो गए त्रिनेत्र के अचानक नयन बंद,
मंद-मंद तन का प्रकाश बढ़ने लगा;
सीधा मेरु-दंड कमलासन सुदृढ़ बँधा,
प्राण नाड़ियों से उतरने-चढ़ने लगा।
कंप-हीन दीपक-शिखा-सी ज्योति जल उठी,
भभक-भभक ब्रह्म-तेज कढ़ने लगा;
खुल गईं गाँठ सभी, षटचक्र पद्म खुले,
ब्रह्म-ब्रह्म-ब्रह्म रोम-रोम पढ़ने लगा।

जग के विषय जग को दे, नव द्वार रोक
प्राणापान सम किया अलख जगाने को;
मुख ब्रह्मरंध्र का खुला, सुधा ढरक उठी,
कुंडली जगा ली आत्मदीप जल जाने को।
मान-अपमान, शीत-उष्ण का न ज्ञान रहा,
ध्यान रहा ध्येय का न लगन लगाने को;
नयन खुले तो ब्रह्म, बंद भी रहे तो ब्रह्म,
रह गया ब्रह्म-ब्रह्म-ब्रह्म बन जाने को।

दांपत्य-सुख की कुंजी !

शीघ्रपतनांतक वटी

स्त्री-पुरुषों में प्रेम न होने का मुख्य कारण 'श्रीघ्रपतन' है। जब तक नारी को नर से संतोष न होगा, तब तक वह कभी नर को प्यार नहीं कर सकती। वह सदा जली-कटी सुनाती रहेगी, भुन-भुन करती रहेगी। इस दुख के दूर करने के लिये ही—

चिकित्सा-चंद्रोदय के लेखक

हरिदासजी वैद्य ने

सत्तर साल की अवस्था में लासानी, बेजोड़, स्वर्ग-सुख दिखानेवाली

शीघ्रपतनांतक गोलियाँ

ईजाद की हैं। इन्हें नित्य खाकर दूध पीने से बल-वीर्य बढ़ता है, संभोग की इच्छा अत्यंत बलवती होती है। संभोग में रुकावट होती है। नर और नारी दोनो को संतोष और अकथनीय सुख मिलता है। इन गोलियों के सेवन करनेवाले को संभोग की मनाही नहीं है, हाथ-की-हाथ स्वर्ग-सुख मिलेगा। सबसे बड़ी बात यह कि बल-वीर्य नहीं घटेगा, बल्कि रोज़ बढ़ेगा। अब तक ऐसी दवा किसी ने नहीं निकाली। आप एक छोटी शीशी मँगाकर ही परीक्षा कीजिए। आधा मूल्य छोटी शीशी का ३) और बड़ी का ६), डाक-ख़र्च ॥) है।

हरिदास ऐंड कंपनी, मथुरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधुनिक युद्ध का भयंकर अस्त्र—वैदेशिक राजदूत

[श्रीज्योतिलाल भार्गव बी० ए०, एल्-एल्० बी०]

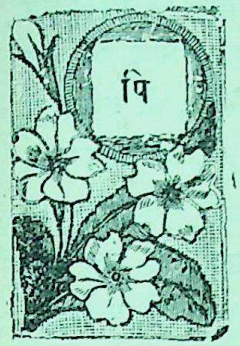

पिछले सभी महायुद्धों की तरह आधुनिक सामूहिक युद्ध में राष्ट्र की चल-अचल, जीवित-मृत, सभी वस्तुएँ उपयोग में आती हैं। कहा जाता है, इस युद्ध में विजय उसी की होगी, जिसके पास शस्त्रास्त्र वैज्ञानिक दृष्टि से आधुनिकतम और अत्यधिक संख्या में होंगे। पर जर्मनों ने ही नहीं, बल्कि संसार के प्रत्येक राष्ट्र ने युद्ध के पहले और युद्ध के समय एक अतीव भीषण अस्त्र का उपयोग किया है, जो कदाचित् अपने प्रभाव में गेस्टापो ❀ से किसी भी प्रकार कम नहीं—योरप में ५० प्रतिशत जर्मन विजयों का श्रेय गेस्टापो को ही है—और यह अस्त्र विदेशों में राजदूत-प्रणाली है।

राजदूत-प्रणाली संसार में अनादि काल से चली आ रही है, और इतिहास में सदैव राजदूत को हर तरह क़ानूनी पंजे से अलग रखकर निर्भय रक्खा गया है। भयंकर-से-भयंकर अपराध होने पर भी—अंतरराष्ट्रीय क़ानून के अनुसार—एक देश दूसरे देश के राजदूत के विरुद्ध स्वयं कोई कार्यवाही न करके केवल उस देश से उसे वापस बुलाने की प्रार्थना करता है, और वह भी विशेष अवसरों पर।

जिस प्रकार जर्मनी ने आधुनिक शस्त्रास्त्रों

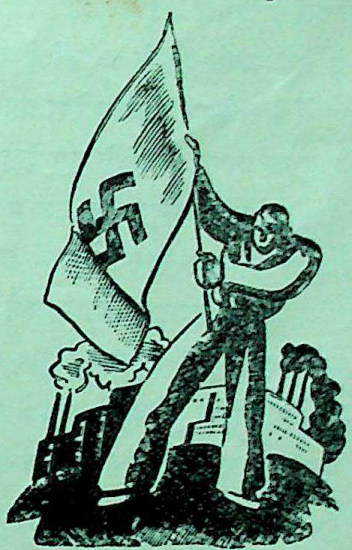

गेस्टापो

को विज्ञान में ढाला है, उसी प्रकार राजदूत-प्रणाली को भी। १९३२ में जब नाज़ी-दल को जर्मनी का शासनाधिकार मिला, तभी से वह संसार-विजय का स्वप्न देखने लगा, और उस समय शस्त्रास्त्रों में कमज़ोर होने के कारण उसने राजनीतिक चढ़ाई कर देशों को अपनी

❀ गेस्टापो क्या बला है, यह जानने के लिये लेखक की अभी-अभी प्रकाशित पुस्तक 'गेस्टापो' देखें। नाज़ी जर्मनी के रक्त-रंजित कारनामों को सामने लानेवाली इस पुस्तक का मूल्य केवल ॥) है। गंगा-पुस्तकमाला, लखनऊ से प्राप्य।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और फोड़ना शुरू किया। अभी तक सभी देशों में राजदूत साधारण, पर कुशल, नौकरी पेशेवाले ही बनाए जाते थे; पर पिछले महा-युद्ध के परिणाम-स्वरूप देश के बड़े-बड़े नेता, जिनका देश में सामाजिक स्थान बहुत उच्च था, दूसरे देशों में राजदूत बनाकर भेजे जाने लगे।

किंतु जर्मनी ने इसके साथ-साथ एक चाल और चली। राजदूत का मुख्य कार्य दूसरे देश के सामने अपने देश की राजनीतिक, आर्थिक और व्यापारिक हितों की रक्षा करना था; पर नाज़ियों ने उसे अपने दल के सिद्धांतों तथा अपने आदर्शों के प्रतिपादन का ज़रिया बनाया, और इस बात का प्रयत्न किया कि उस देश के नवयुवक नाज़ी-संगठन, अनुशासन और महत्ता से चकाचौंध हो नेशनल सोशलिज्म में अंध-विश्वासी बन जायँ। राजदूत का एक कर्म यह भी हो गया कि दूसरे देश में जाकर वह उस देश के ऐसे नेताओं को फोड़कर अपनी ओर करे, जो देश की राजनीति में विशेष स्थान तो रखते हैं, परंतु सर्वोच्च सीढ़ी पर पहुँचने की जिनकी लालसा फलीभूत होना असंभव-सा मालूम होता है। अतएव नाज़ीदूत ने उन्हें धन और बल से सहायता पहुँचाकर, नाज़ी-पाँचवीं श्रेणी का मुखिया और उस देश का सर्वेसर्वा बनाने का वचन देकर अपनी ओर मिलाना शुरू किया।

कई वर्षों तक जर्मनी के राजदूत छिपे-छिपे, संसार के प्रत्येक देश में, यह कार्य करते रहे। वहाँ उन्होंने अपने कार्य के साथ-साथ गुप्त-चर का काम भी किया। १९१७ में जब पिछले महायुद्ध में अमेरिका ने पदार्पण किया, तो अमेरिका-स्थित जर्मन राजदूतावास के जर्मनी उठ जाते समय कुछ काग़ज़ वहीं छूट गए। उस समय वहाँ वॉन पेपेन, जो जर्मनी में हिटलर के पहले चांसलर थे, और देश में जिनका प्रेसिडेंट हिंडेनबर्ग के बाद ही स्थान था, राजदूत थे। उक्त काग़ज़ों से पता चला कि पेपेन महाशय अमेरिका-भर में फैले हुए गुप्तचरों के भी नेता थे, और वही उनका संचालन करते थे। अमेरिका में जर्मन जन-संख्या १० प्रतिशत के लगभग है, और जर्मन प्रवासी अथवा उच्चवंशज जर्मन देश के बड़े-बड़े नेताओं में हैं। अतः अमेरिका जर्मनों के लिये पिछले और इस महायुद्ध में भी महत्त्व-पूर्ण कार्य-क्षेत्र रहा है।

संसार में अपने देश के सर्वोत्कृष्ट नेता को दूसरे देश में राजदूत बनाने का महत्त्व सबसे पहले नाज़ियों ने ही समझा। इसी से आज हर वॉन पेपेन एशिया और योरप के महत्त्व-पूर्ण द्वार टर्की में राजदूत हैं, और बाल्कन की राजनीति में शत-प्रतिशत उन्हीं का हाथ रहा है। बाल्कन में उन्हें जो सफलता मिली, वह अभूतपूर्व है, और आज उन्हीं की कूट-चालों की कृपा से आधे बाल्कन देश बिना लड़े-भिड़े ही जर्मनी के अंग हो रहे हैं।

नाज़ी-सिद्धांत के रूसी साम्यवाद के एकदम विरुद्ध होते हुए भी जर्मनी के वैदेशिक मंत्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वॉन रिबेनट्राप ने अगस्त, १९३९ में रूस-जर्मन-अनाक्रमण-संधि करके संसार को स्तंभित कर दिया था, और उसी के फल-स्वरूप जर्मनी लंबे युद्ध के लिये तैयार हो गया है, एवं सारे योरप पर अधिकार जमाए बैठा है। यही वॉन रिबेनट्राप ज़रा-से भी राजनीतिक पचड़े को सुलझाने के लिये प्रत्येक देश में जाने को तैयार रहते हैं—इसमें अपनी मान-हानि नहीं समझते।

पर नाज़ी-राजदूत-प्रणाली में कदाचित् सबसे अधिक सफलता हर ऑट्टो अबेज़ की कूट-चालों को मिली है। यह १९३४ से,

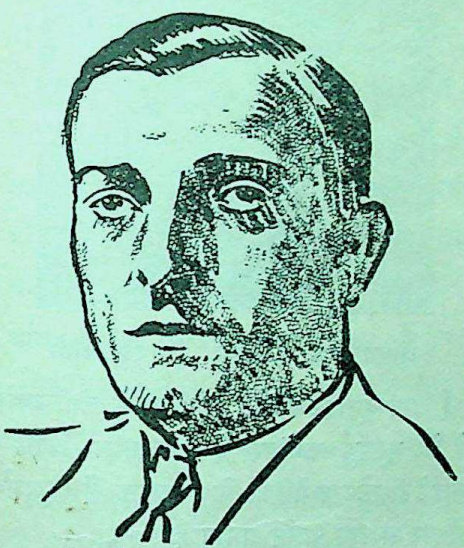

हर ऑट्टो अबेज़

जर्मनी की ओर से, फ्रांस में काम कर रहा है, और फ्रेंच इतनी धारा-प्रवाह बोलता है, जितनी कोई भी विद्वान् फ्रांसीसी। छ वर्ष से यह फ्रांस को नाज़ी बनाने के फेर में रहा है, और कहा जाता है, इसने हिटलर को विश्वास दिलाया था कि फ्रांस पर आक्रमण होने की दशा में फ्रांसीसी मुक़ाबला करने के बजाय उसका स्वागत करेंगे। कुछ हद तक यह सत्य भी घटित हुआ। अबेज़ ने प्रसिद्ध फ्रेंच विद्वान् जोसेफ़ लुकेयर के पुत्र की सेक्रेटरी एक सुंदर युवती से शादी की, और दोनो ने मिलकर फ्रांस के उच्च-से-उच्च समाज में प्रवेश किया। इस स्त्री ने अपनी सुंदरता से कई फ्रांसीसी नेताओं को वश में किया। गत वर्ष जून में जब फ्रांस का पतन हुआ, तब से अबेज़ इस प्रयत्न में है कि फ्रांस पूर्णरूपेण नाज़ी-सिद्धांतों में रँग जाय, और प्रजातंत्र-सिद्धांतों को त्यागकर नेशनल सोशलिज्म का अनुयायी हो जाय। ऐडमिरल डारलाँ, जो इस समय मार्शल पेताँ के बाद दूसरा स्थान रखते और मनोनीत अधिकारी हैं, अबेज़ का साथ दे रहे हैं, और फ्रांस-जर्मनी में हुई हाल की संधि से स्पष्ट मालूम पड़ता है कि कुछ ही काल पश्चात् मार्शल पेताँ को हटाकर ऐडमिरल डारलाँ फ्रांस के फ़्यूरॉर (सर्वेसर्वा) बनने की चेष्टा करेंगे।

एक बात बड़े मार्के की है। जून, १९४० से आज तक फ्रांस राजदूतों के हाथ की कठपुतली रहा है। जर्मनी की ओर से अबेज़ और अमेरिका की ओर से ऐडमिरल विलियम डैनियल लीही घोर प्रयत्न कर रहे हैं कि फ्रांस क्रमशः जर्मनी अथवा इँगलैंड का साथ दे। ऐडमिरल लीही इस समय फ्रांस की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशी-सरकार में अमेरिकन राजदूत हैं, और कहा जाता है, उनका प्रभाव मार्शल पेताँ पर अत्यधिक है। इसमें संदेह नहीं कि इन्होंने अब तक मार्शल पेताँ को जर्मनी की माँगों के विरुद्ध दृढ़ रक्खा है। पर इधर इँगलैंड की कुछ ग़लतियों से, जिसमें फ्रेंच नौसेना के विरुद्ध उसकी कार्यवाही मुख्य है, डारलाँ ने पेताँ पर विजय पाई, ऐसा मालूम होता है। और, यहीं पर अबेज़ की जीत है। यद्यपि पूरी फ्रेंच प्रजा और संसार-भर के फ्रांसीसी जर्मनों के कट्टर शत्रु हैं, और नाज़ियों से घृणा करते हैं, पर इस एक ही राजदूत अबेज़ की चालों और ऐडमिरल डारलाँ के व्यक्तिगत प्रभाव से वे लाचार हैं।

अमेरिका और इँगलैंड ने इस समस्या को युद्ध के पहले समझा ही नहीं। इँगलैंड हमेशा की तरह रूस में अपने वैदेशिक कार्यालय के स्थायी कर्मचारी राजदूतावास में भेजता रहा। अमेरिका के राजदूतों ने अधिकतर व्यापार की ओर ध्यान दिया, और यह कार्य उन्होंने बड़ी सफलता के साथ किया, यहाँ तक कि ब्रिटिश व्यापारियों ने अपने प्रतिनिधियों से जाँच-पड़ताल न करके अक्सर अमेरिकनों से व्यापारिक विवरण पूछे हैं।

रूस में इँगलैंड की कूटनीति की असफलता और जर्मनी के वॉन रिबेनट्राप की अपूर्व सफलता ने अमेरिका और ब्रिटेन, दोनो को परिस्थिति का परिचय कराया। उन्हें ज्ञात हुआ, साधारण राजदूतों से अब काम नहीं चलने का। संसार की परिस्थिति देखते हुए उन्होंने भी अपनी नीति बदली। ब्रिटेन ने तत्काल ही अपने श्रेष्ठ, प्रतिष्ठित लॉर्ड लोथियन को राजदूत बनाकर अमेरिका भेजा। कहा जाता है, युद्ध के शुरू में अमेरिका का रुख़ युद्ध से तटस्थ रहने का था, पर अकेले लॉर्ड लोथियन के प्रभाव,

श्रीएडमिरल विलियम डैनियल लीही

[आप यूनाइटेड स्टेट अमेरिका के जंगी जहाज़ी बेड़े के भूतपूर्व कमांडर हैं। आजकल विशी में यूनाइटेड स्टेट अमेरिका के राजदूत हैं। मार्शल पेताँ पर आपका पर्याप्त प्रभाव है।]

उनके भाषणों और उनकी सामाजिक स्थिति ने अब उसे डावाँडोल कर दिया है, और आज इस बात की पूर्ण संभावना है कि वह युद्ध में कूद पड़े। लॉर्ड लोथियन के इस महत्त्वपूर्ण कार्य को पूरा करने के लिये (क्योंकि लॉर्ड लोथियन की अमेरिका में अचानक मृत्यु हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गई) लॉर्ड हैलिफ़ेक्स गए हुए हैं। लॉर्ड हैलिफ़ेक्स पहले लॉर्ड इरविन के नाम से हिंदुस्थान के सफल वाइसराय रह चुके हैं, और अपनी नियुक्ति के समय इँगलैंड के वैदेशिक मंत्री। अगर वह लॉर्ड न होते, तो कदाचित् स्वर्गीय श्रीचेंबरलैन के पश्चात् प्रधान मंत्री होते। इनकी प्रतिष्ठा असीम है, और ब्रिटेन के प्रधान मंत्री के बाद ही इनका स्थान होने के कारण प्रेसिडेंट रूज़वेल्ट ने इनके अमेरिका-आगमन के समय सब बंधनों को तोड़ स्वयं इनका स्वागत किया था।

अमेरिका ने भी अपने राजदूतों का चुनाव प्रतिष्ठित अमेरिकन नागरिकों में से किया है। लंदन में अमेरिका के राजदूत मिस्टर जॉन जी० वाइनांट हैं, जो अमेरिका की राजनीति में उच्च स्थान रखते हैं। इनकी पत्नी अत्यंत धनी हैं, और आप स्वयं प्रेसिडेंट रूज़वेल्ट की प्रार्थना पर अपनी सर्व उच्चाभिलाषाओं का यज्ञ करके अंतरराष्ट्रीय मज़दूर-कार्यालय, जेनेवा के असिस्टेंट डाइरेक्टर बनकर चले गए थे। वहाँ आपने संसार-भर के मज़दूर-नेताओं और राजनीतिज्ञों पर अपना प्रभाव डाला। इँगलैंड में आपकी नियुक्ति उचित ही है।

गत वर्ष, नवंबर में, अमेरिका के प्रेसिडेंट के चुनाव में वर्तमान प्रेसिडेंट रूज़वेल्ट के मुक़ाबले में श्रीवेंडेल डब्ल्यू० विल्की खड़े हुए थे। धुरी-शक्तियों ने इनके चुनाव में करोड़ों रुपया ख़र्च किया—इस आशा पर कि वह अमेरिका को ब्रिटेन के विरुद्ध खड़ा कर देंगे। इन्हें चुनाव में भारी सफलता हुई। आज तक कोई भी चुनाव में खड़ा होनेवाला व्यक्ति इतने

श्रीजॉन जी० वाइनांट

[आप यूनाइटेड स्टेट ऑफ़ अमेरिका से लंदन के लिये नए राजदूत होकर गए हैं। आपकी आयु ५१ वर्ष की है। आप न्यू इँगलैंड स्टेट ऑफ़ न्यूहैंपशायर के भूतपूर्व गवर्नर हैं। प्रेज़ीडेंट के निजी आमंत्रण से, सन् १९३५ में, आप इंटरनेशनल लेबर-ऑफ़िस के असिस्टेंट डाइरेक्टर होने के लिये जेनेवा गए, और १९३८ में उस ऑफ़िस के डाइरेक्टर नियुक्त हुए। पिछले युद्ध में आप वायुयान-चालक थे। आपकी स्त्री बहुत धनी हैं।]

कम वोटों से नहीं हारा था। इन्हीं विल्की महोदय को इँगलैंड लाया गया। वहाँ के राजनीतिज्ञों से मिलकर, इँगलैंड की दशा देखकर आपका दिल हिल गया, तथा क्रूर नाज़ियों की अंधाधुंध बम-वर्षा देखकर आपका चित्त विचलित हो गया। आज जर्मन वंश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के होते हुए भी आप इँगलैंड को सब प्रकार से सहायता देने के लिये प्रेसिडेंट रूज़वेल्ट

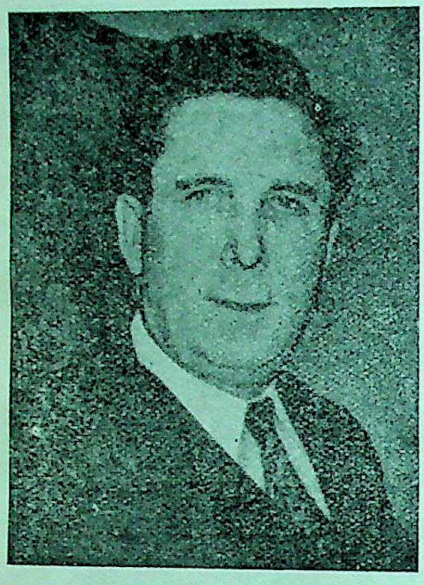

श्रीवेंडेल डब्ल्यू विल्की

[प्रेसीडेंट के चुनाव में आप वर्तमान प्रेसीडेंट रूज़वेल्ट के विपक्ष में खड़े हुए थे। आप ब्रिटेन-यात्रा के उपरांत न्यूयार्क वापस आ गए हैं।]

से अधिक तत्पर हैं। निस्संदेह यह चमत्कार श्रीचर्चिल और अन्य अँगरेज़ राजनीतिज्ञों के प्रभाव से हुआ है।

इस समय संसार-भर में हरएक राष्ट्र ने यह समझ लिया है कि देशों को अपनी ओर फोड़ना साधारण कोटि के राजनीतिज्ञों का कार्य नहीं। इसी को देखते हुए जापान के वैदेशिक मंत्री एमत्सुओका योरप गए, और साथ में एक रूस-जापान-अनाक्रमण-संधि, जिसे संसार असंभाव्य समझता था, जेब में धरकर लाए। इँगलैंड के वैदेशिक मंत्री श्रीईडन और प्रधान स्टाफ़-पति सर जॉन डिल स्वयं टर्की, यूनान और युगोस्लाविया गए, जिसके परिणाम-स्वरूप सब तरह दबते हुए भी टर्की मित्र-राष्ट्रों के साथ है। हिटलर स्वयं मारा-मारा फिर रहा है। मुसोलिनी भी खुद राजनीतिज्ञों से मिलता है। गत मास की हिटलर-डारलाँ-मुलाक़ात का फल जर्मन-फ्रांस-सहयोग है।

इस समय लॉर्ड हैलिफ़ेक्स की सफलता पर युद्ध का भाग्य निर्भर है। यदि वह सफल होते हैं—और इसमें अब संदेह का कोई कारण नहीं—तो अमेरिका अपने विशाल दल-बल तथा सामग्री के साथ युद्ध में अवश्य सम्मिलित होगा, और कदाचित् यही तानाशाहों की योजनाओं को नष्ट करके युद्ध का निबटारा करेगा।

शीघ्र ही रहस्यमय रूसी तानाशाह स्टालिन और दंभी हिटलर में, कालेसागर के छोर पर, मुलाक़ात होनेवाली है। इन दोनो अवसरवादी डाकुओं की बातचीत और चालबाज़ियों से की हुई गुप्त संधि के परिणाम का संसार बड़ी उत्सुकता से इंतज़ार कर रहा है *। स्वयं प्रेसिडेंट रूज़वेल्ट सचेष्ट हैं, और प्रजातंत्रों को सब प्रकार से सहायता देने के लिये उन्होंने स्वयं अपने पुत्र को चीन और योरप भेजा है। प्रजातंत्र देशों का गुट्ट बनाकर इँगलैंड और

* इस लेख के लिखे जाने के बाद सूचना मिली है कि रूस और जर्मनी में युद्ध शुरू हो गया है। हमारा उस संबंध में वक्तव्य 'धारा' में पढ़िए।—सुधा-संपादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमेरिका तानाशाहों से कहीं अधिक बलशाली हो जाते हैं, और इसी से योरपीय युद्ध की सफलता-पूर्वक समाप्ति होगी। श्रीचर्चिल का कथन है—"ईश्वर की चक्की बहुत धीरे चलती है, पर जब वह चलती है, तो पापी को बहुत महीन पीसती है।"

साथ ही युद्ध-समाप्ति पर एक बात और होती है—राजदूत-प्रणाली का वैज्ञानिक विकास उसी प्रकार है, जिस प्रकार युद्ध के अस्त्र-शस्त्रों का। यदि यह प्रणाली स्वार्थ के लिये होगी, तो संसार का भविष्य अंधकारमय है, और यदि परमार्थ के लिये, तो अतीव उज्ज्वल।

सफल जीवन का महामंत्र

बाँझ स्त्रियाँ

१०० में ९९ स्त्रियाँ 'कनसैप्टो' के सेवन से पुत्र उत्पन्न कर चुकी हैं। सब डॉक्टरों का कहना है कि बाँझपन दूर करने के लिये इससे बढ़कर अन्य कोई ओषधि नहीं। केवल १ शीशी सेवन करके ही ख़ाली गोद में पुत्र खेलाएँ। क़ीमत ५), डाक-ख़र्च ॥)

हिस्टीरिया का अचूक इलाज

इसके सेवन से हिस्टीरिया के दौरे, रोगी का उछलना, कूदना, चिल्लाना, रोना, पागलपन, बेहोशी आदि एक सप्ताह में ही दूर हो जाते हैं। क़ीमत २), डाक-ख़र्च ॥)

विद्युत्-तैल

इसमें बिजली-जैसी ताक़त भरी हुई है। यह तत्कालीन ज़रूरत की चीज़ है। ज़रूरत के ख़ास समय से थोड़ी देर पहले इस्तेमाल करने से अर्थात् एक ही बार सेवन करने से गए-बीते नामर्द की नपुंसकता भी जाती रहती है, और ४ मिनट में ही तरुण युवक के समान मर्द बन जाता है। शिथिल नसों की कमज़ोरी को दूर करके अपना गुण दिखा देना यह इसका तत्कालीन चमत्कार है। वास्तव में वृद्ध पुरुषों का अचूक शस्त्र और नव-विवाहित नामर्दों का आधार है। जीवन का वसंत और प्रकृतिदेवी की अमूल्य भेंट है। क़ीमत २), डाक-ख़र्च ॥)

अमर सुंदरी

रक्त-प्रदर, श्वेत-प्रदर, गर्भाशय की पीड़ा, गर्भ न रहना, गर्भ का गिर जाना, मासिक धर्म का अनियमित होना, दर्द या कष्ट के साथ होना, सिर-दर्द, अशक्ति, हल्का ज्वर, जी घबड़ाना, सोम-रोग, रक्त की कमी आदि रोगों के लिये एकमात्र अव्यर्थ महौषधि है। इसके सेवन से शरीर सुंदर, हृष्ट-पुष्ट और फुर्तीला हो जाता है। क़ीमत ॥=), डाक-ख़र्च ॥)

गर्भ-रोक

निर्धनता व स्त्री की बीमारी के कारण और संतान पैदा न करनी हो, तो इस दवा का सेवन करें। इससे स्त्री के गर्भ नहीं रहता, और सांसारिक सुख को बंद करने की ज़रूरत भी नहीं होती। सर्वथा हानि-रहित दवा है। क़ीमत २), डाक-ख़र्च ॥)

ब्रेस्टोन

ज्यों मोर अपने पाँवों को देखकर रो देता है, त्यों स्त्रियाँ भी अपने ढीले, गिरे तथा लटके स्तनों को देखकर निराश हो जाती हैं। यह ४५ वर्ष तक की स्त्रियों के लटके हुए ढीले स्तनों को फिर से षोडशीय नवयुवती के समान सुंदर, कठोर, गोल तथा छोटे बना देता है। क़ीमत केवल २॥), डाक-ख़र्च ॥)

पता—रसायन-फ़ार्मेसी,
(सु) संगरिया (बीकानेर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिंतामणि

[श्रीगँवार एम्० ए०, डी० लिट्०]

(१)

पंडित रमाकांत खाना खाने के लिये पैर धो ही रहे थे कि बाहर से माली चिल्ला उठा—"साँप-साँप।" रामजतन कहार लोटा जहाँ-का-तहाँ रखकर और तुरंत लाठी उठाकर बाहर भागा। पंडितजी भी बाहर आ गए। देखा, एक चार फ़ीट लंबे, डेढ़ इंच मोटे, काले साँप को माली और रामजतन, दोनो घेरे खड़े हैं, और नाग देवता फन की फुफकार से उन्हें डराए हुए हैं। रामजतन की लाठी उन देवता को चकनाचूर कर देने के लिये उठी ही थी कि पंडितजी ने उसे मना कर दिया, और कहा—"दोनो आदमी चले आओ, देवता को चले जाने दो।"

साँप ने रास्ता साफ़ पाया, तो भागकर खेत में ग़ायब हो गया। पंडितजी लौटे, तो उनके चेहरे पर गर्व और संतोष की छाप पंडितानीजी भी भाँप गईं। पूछा—"क्या था?"

पंडितजी बोले—"था क्या? एक नागदेवता आ गए थे। तुम्हारे नौकर उनके प्राण ही लिए डालते थे। अरे, ये जंगल के जीव किसी का क्या बिगाड़ते हैं? मनुष्य ने स्वयं अपने कुकृत्यों से इन्हें अपना वैरी बना रक्खा है। मा कहती थीं, नानाजी को एक बार नागदेवता ने स्वप्न दिया—'बेटा, मेरे गले में एक काँटा अटक गया है, बड़ा कष्ट है; उसे निकाल दो। बड़ा गुन मानूँगा।' नाना ने दूसरे ही दिन प्रातःकाल देखा, एक साँप मुँह बाए ओसारे में बैठा है। चिमटी लेकर गए, और काँटा निकाल दिया। रात को फिर सर्पदेवता ने स्वप्न दिया—'बेटा, मैं तुम्हें वरदान देता हूँ, मेरा कोई वंशज तुम्हारे वंशज को कभी न काटेगा।' तभी तो मा किसी साँप को मारने नहीं देती थीं। फिर विज्ञान भी तो यही बतलाता है कि सभी साँप ज़हरी नहीं होते, फिर क्यों बेचारे निरपराध मारे जायँ।"

पंडितानीजी अपने पतिदेव की विद्वत्ता और धर्म-भीरुता का लोहा मानती थीं। बोलीं—"ठीक कहते हो। नौकरों को डाँट क्यों नहीं देते कि अपने कंपाउंड में किसी जीव की हत्या न किया करें।" यह कहकर वह खाना परोसकर ले आईं।

(२)

पं० रमाकांतजी प्रयाग-क्रिश्चियन-कॉलेज में प्रोफ़ेसर थे। दो सौ के क़रीब वेतन मिलता था। बाई के बाग़ में एक छोटा-सा मकान बना लिया था—साथ में बाग़-बग़ीचे के लिये भी थोड़ी जगह थी। उसी में दस-पाँच

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमरूद, आम आदि के पेड़ लगा रक्खे थे। छोटी-मोटी तरकारी भी बो लेते थे। एक गाय भी पाल रक्खी थी। इसी सबके लिये माली रख छोड़ा था। पर बाग़ के फल-फूलों और साल में चार महीने दूध देनेवाली गाय के दूध से माली की भी तनख़्वाह नहीं निकल पाती थी, इसी से पंडितानीजी इस आडंबर से चिढ़ती थीं। दूसरे, पंडितजी के गाँव में बहुत-से दरिद्र कुटुंबी थे, उनमें से दो-चार भतीजे-भांजे सदैव प्रयाग में विद्या-लाभ के लिये बने रहते थे, और इन सबके भरण-पोषण का भार पंडितजी पर ही था। पंडितजी को संतान की कमी न थी, दो लड़कियाँ और पाँच पुत्र थे, और अभी इस ओर ईश्वर की कृपा का स्रोत सूखा न था। पंडितानीजी शिक्षिता थीं, उन्हें अपनी संतान के प्रति ज़िम्मेदारी का अनुभव प्रतिपल हुआ करता था। बच्चों को ख़ूब पढ़ा-लिखा देना चाहिए, लड़कियों की अच्छे, संपन्न घरों में, सुयोग्य वरों से, शादी कर देनी चाहिए। पर यह सब होगा कैसे—तनख़्वाह तो मुश्किल से महीने का पार लगा पाती है, इस कारण पंडितानीजी के मन में एक उलझन ही बनी रहती। यद्यपि वह अपना मनस्ताप पतिदेव पर प्रकट न करतीं, तथापि पंडितजी को यह मनोव्यथा झलक ही जाती। उधर बच्चे भी असंतुष्ट रहते। प्रयाग में खेल-तमाशों की कमी नहीं, बच्चों का स्वाभाविक ही मन होता कि आज अमुक फ़िल्म देखने चलें, कल अमुक। कभी पिकनिक करने चलें, तो कभी गंगा-स्नान। पंडितजी कहते, सब लोग चल सकें, तो चलें; और उनके 'सब लोग' में शामिल थे उनके भाई, भतीजे, भाँजे और राम। जतन कहार भी। एक बार के मनोविनोद में आठ-दस रुपए बिलट जाते। इसलिये कहाँ संभव था कि साल में दो-चार बार से अधिक इस प्रकार का मनोविनोद किया जा सकता। लड़कियों की इच्छा होती कि हमें बढ़िया-बढ़िया किनारों की साड़ियाँ पहनने को मिलें, एकआध ज़ंजीर और दो-दो चूड़ियाँ सोने की अंग पर हों। प्रयाग में फ़ैशन का स्टैंडर्ड ठहरा ऊँचा। अपने दर्जे की अन्य लड़कियों की तुलना में पंडितजी की लड़कियाँ अपनी ही निगाह में हेठी उतरतीं। लड़कियों की इस ग्लानि को देखकर पंडितानीजी स्वयं बहुत साधारण कपड़े पहनतीं, और ज़ेवर, गहने एक भी शरीर पर न रखतीं।

पंडितजी अभी उस स्टेज से ऊपर न उठे थे, जहाँ से संसार का सारा आकर्षण स्त्री में ही केंद्रित दिखलाई देता है, और दूसरे, पत्नी का यह शृंगार-विहीन रूप उन्हें अशुभ भी दिखलाई पड़ता। गृह-लक्ष्मी से कुछ कह तो सकते नहीं, मन-ही-मन कुढ़ते रहते। इस प्रकार उनके घर के सारे वातावरण में उन्हें असंतोष और नीरसता की स्पष्ट छाप दृष्टिगोचर होती। पर करते क्या? कभी विचार-मग्न होते, तो कभी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खीझते । पत्नी भी अच्छी थी, बच्चे भी सुशील और सदाचारी और स्वयं भी कर्तव्य-निष्ठ और आस्तिक । फिर क्यों असंतोष और ग्लानि उन्हें घेरे रहती थी ?

(३)

आज साँप की जान बचाने से उन्हें संतोष था । खाना खाकर जब थोड़ा आराम करने के लिये बिस्तर पर लेटे, तो अपना गृह-चरित फिर उनके मन-पटल पर खिंच गया । खेद ने उनकी विचार-धारा को आच्छादित कर दिया । ज़रा ऊँघे ही थे कि उन्होंने अचरज की बात देखी ।

वही नागदेवता, जिनकी उन्होंने आज जान बचाई थी, उनकी ओर बढ़े चले आ रहे थे । दूर से ही बोले—"बेटा, डरना मत । मैं तुम्हारे उपकार का बदला देने आया हूँ । बोलो, क्या चाहते हो ? मैं तुम्हें सुखी कर सकता हूँ ।"

पंडितजी को सांत्वना मिली । कहने लगे—"देव ! आपसे क्या घर की हालत छिपी है ? धनाभाव के कारण कुटुंब का प्राणी-प्राणी असंतुष्ट है, यदि आप पर्याप्त धन देकर मेरी यह चिंता मेट सकें, तो बड़ा उपकार करें ।"

सर्पदेवता ने एक सेकंड सोचा, फिर कहा—"अच्छी बात है । मैं तुम्हारे पास अपनी यह मणि छोड़े जाता हूँ । जब तक यह तुम्हारे पास रहेगी, तब तक तुम्हें धन की कमी का अनुभव न होगा । पर एक शर्त है, जब तुम्हारा धन-बाहुल्य से जी ऊबे, तब यह मुझे ही वापस करना । जानते हो, यह मुझे जान से भी प्यारी है । तुम्हारी इच्छा होने पर मैं स्वयं आकर इसे ले जाऊँगा । पर बेटा, खेद है, तुमने बहुत तुच्छ चीज़ माँगी ।" इतना कहकर नागदेवता वहीं अंतर्धान हो गए ।

अब पंडितानी के शरीर पर बढ़िया-से-बढ़िया रेशमी साड़ियाँ और क़ीमती-से-क़ीमती जड़ाऊ गहने दिखलाई देने लगे । शीला और नीला ने अपने फ़ैशन से ऋास्थवेट की अमीर-से-अमीर लड़की को मात कर दिया । लड़के आएदिन सिनेमा-थिएटर देखने लगे । कुटुंबियों के सारे बच्चे प्रयाग में आकर पढ़ने लगे, यहाँ तक कि पंडितजी को अलग ही मकान बनवाकर उन्हें रख देना पड़ा । पंडितजी की श्रीमतीजी रोज़ क्लब जाने लगीं । एक मोटर उनके लिये अलग नियत हो गई । उनके ओंठों और नखों पर चित्ताकर्षक राग भी दिखलाई देने लगा । गरमियों की छुट्टी कभी काश्मीर, कभी मसूरी, कभी दार्जिलिंग और कभी नैनीताल में बीतती । दुर्गा-पूजा और बड़े दिन का अवकाश रिश्तेदारों के यहाँ आमोद-प्रमोद में । पहले पंडितजी सेवा-समिति आदि सार्वजनिक कामों में यथेष्ट भाग लेते थे, इस ओर अच्छी ख्याति प्राप्त की थी, पर अब उन्हें इस सबका अवकाश नहीं था । पंडितानीजी भी कान्यकुब्ज-महिला-मंडल के मंत्राणी-पद से त्याग-पत्र दे चुकी थीं, और उनका भी सारा समय कभी इस सखी के यहाँ, कभी उस सखी के यहाँ आने-जाने में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बीतता था। जहाँ पंडितजी की मित्र-मंडली के रोज़ डिनर, पिकनिक, टी आदि विनोद होते, वहाँ पंडितानीजी भी अपनी सखियों को पार्टियाँ देने में पीछे नहीं रहतीं।

इस चहल-पहल में साल पर साल बीतते गए। लड़कियाँ पढ़कर एम्० ए० हो गईं। उन्हें सुयोग्य वर मिलने कठिन हो गए। लड़के कोई उदयशंकर के आर्टसेंटर में जाने को उत्सुक हुए, तो कोई बंबई-टॉकीज़ में अपनी क़िस्मत आज़माने की ज़िद करने लगे। पंडितजी को चिंता ने आ घेरा। उनका सार्वजनिक जीवन तो नष्ट हो ही चुका था, पर आस्तिक बुद्धि और कुल-मर्यादा की निष्ठा अक्षुण्ण बनी थी। अपनी चिंता बहुत दिनों मन ही में रक्खी, सोचा, भोली-भाली प्रेयसी को क्यों फिर असंतोष में घसीटा जाय। और, उनकी श्रीमती को अब फ़ुरसत ही कहाँ थी। पहले नाश्ता, खाना आदि पंडितजी के लिये वह स्वयं उपस्थित करती थीं, पर अब प्रायः नाश्ता देता था रामजतन और खाना खिलाता था रसोइया महराज।

पंडितजी अपनी चिंताओं से झुँझला गए थे। विषाद से परितप्त कमरे में बैठे थे कि बड़ा लड़का जितेंद्र आ धमका, और बोला—"बाबू, मुझे बीस रुपए तुरंत चाहिए। रीजेंट में बड़ी अच्छी फ़िल्म आई है, मैं अपने मित्रों के साथ जा रहा हूँ। गाड़ी में वे लोग इंतज़ार कर रहे हैं।"

पंडितजी ने कहा—"जा, मा से ले ले।"

जितेंद्र ने कहा—"मा घर में नहीं, इसी से तो आपके पास आया हूँ। लाइए, जल्दी कीजिए। आप जानते नहीं, मेरी कितनी भद होगी।"

पंडितजी ने कहा—"अच्छा, चल। मैं अभी लिए आता हूँ।"

लड़का दौड़कर मोटर में जा बैठा। पंडितजी ने सेफ़ खोलकर दो दस-दस के नोट निकाले, और धीरे-धीरे मोटर की ओर चले। वहाँ जो देखा, तो अवाक् रह गए। जितेंद्र ड्राइवर की सीट पर था, और उसकी बग़ल में एक रँगी-चुनी ऐंग्लो-इंडियन लड़की, और पीछे था शहर का प्रख्यात बदमाश लड़का बनर्जी और एक ख्यातनामा सुलोचना! पंडितजी बिना रुपए दिए उलटे पैर लौट आए। जितेंद्र ज़ोर-ज़ोर से बड़बड़ाता हुआ कमरे में आकर बोला—"बाबू, सीधे रुपए देते हो या नहीं?"

पंडित रमाकांत बोले—"नहीं दूँगा, कभी नहीं दूँगा। मेरे रुपए बदमाशी के लिये नहीं हैं।"

जितेंद्र ग़ुस्से में आकर अनाप-शनाप बकने लगा। उसकी निगाह खुले सेफ़ पर गई। दौड़कर जितने रुपए हाथ लगे, लेकर चलता बना। पंडितजी चिल्लाते ही रह गए—"अरे बदमाश, ठहर। ठहर। नहीं दूँगा। कभी नहीं दूँगा।"

(४)

पंडितजी की आँख खुल गई। देखा,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामने पंडितानीजी पान की तश्तरी और पीने का पानी लिए खड़ी थीं। बोलीं---"क्या बक रहे थे ? क्या नहीं दोगे ? किसे नहीं दोगे ? क्या आज कॉलेज नहीं जाना है ?"

पंडितजी हड़बड़ाकर उठ बैठे। मुँह धोकर पान खाया, और पत्नी को अपनी ओर खींचकर बोले—"देवि ! तुम इसी सादे वेष में ही निरुपम हो।" रामजतन ने बाहर साइकिल ठीक कर रक्खी थी, चढ़कर कॉलेज चल दिए। पंडितानीजी अनभिज्ञ की तरह निहारती रह गईं।

उस दिन पंडितजी एसेंबली-हॉल में जब प्रार्थना हो रही थी, तब और भी अकड़कर खड़े रहे। आँखों से एक असामान्य ज्योति निकल रही थी, और चेहरे पर भी एक अभूतपूर्व संतोष की आभा। तब से पंडितजी को किसी ने खिन्न नहीं देखा। घर में जब कभी रुपए की तंगी की बात चलती, तब क़हक़हा मारकर कहते—"ग़रीबी में ही सब सुख हैं। नहीं चाहिए हमको धन और वैभव।" पत्नी को जब विमनस्क देखते, तो बच्चों के सामने भी उसके गाल पर प्यार की एक हल्की-सी चपत मारकर कहते—"अरे, पागल हुई है, ग़रीबी में जो सुख है, वह अन्यत्र कहीं नहीं।" धीरे-धीरे उन्होंने अपने इस निश्छल प्रलाप से अपने परिवार को संतुष्ट कर लिया। उस घर में संतोष की रेखा देखकर सुख दौड़ा चला आया।

पंडितजी बाहरवालों को भी ग़रीबी का पाठ पढ़ाते, पर क्या वह उन्हें समझा सके ? पंडितजी के सामने तो वे हाँ में हाँ मिला देते, पर पीठ-पीछे आपस में कहते—"देखा ! कैसा ढोंगी है, ख़ुद दो सौ रुपए महीना ख़र्च करता है, और हम चालीस-चालीस, पचास-पचास रुपयों से गृहस्थी चलानेवालों को ग़रीबी का सुख सिखाता है।"

पर मित्रो ! क्या आप भी समझते हैं कि पंडितजी ढोंगी हैं ?

विवाहित जीवन

वनस्पतियों में आनंदमय विवाह, प्राणिवर्ग में कामवासना, मानव-जननेंद्रिय-रचना सचित्र, कामवासना, विवाह-प्रणाली, नवदंपति-रहस्य, सुहागरात, शयन-गृह, परस्त्री-गमन, ब्रह्मचर्य, दिनचर्या आदि विविध विषय-विभूषित सचित्र व सजिल्द पुस्तक। मूल्य १) पृष्ठ-संख्या २५०।

महात्मा हंसराज, श्रीनारायण स्वामी, श्रीदीवान हरविलास शारदा तथा रायबहादुर मास्टर आत्मारामजी अमृतसरी आदि महानुभावों से प्रशंसित तथा प्रमाणित पुस्तक।

लेखक—मेहता सीतारामदत्त कविराज
अनारकली, लाहौर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंजाब में स्त्री-शिक्षा—कुछ विशेष बातें

[दैनिक हिंदी-मिलाप-संपादक पं० आत्मस्वरूप शर्मा]

पंजाब में शिक्षा की प्रगति की ओर दृष्टि ले जाता हूँ, तो मुझे कुछ ऐसा आभास होता है कि एक बड़ी अग्नि शांत करने के लिये सब लोग भागे आ रहे हैं, और अग्नि शांत भी हो रही है। पर जिस प्रकार भौतिक अग्नियों की शांति के बाद अव्यवस्था-सी दिखलाई देने लगती है, उसी प्रकार दशा यहाँ भी है। अग्नि बुझाने-वालों की चिंता केवल इतनी ही है कि अग्नि बुझ जानी चाहिए—मकान गिरते हों, तो भले ही गिर जायँ, निवासी मलबे-तले दबते हों, तो भले ही दब जायँ, और भीतरी सामान टूटता-फूटता और बिखरता हो, तो भले ही टूट-फूट और बिखर जाय। इसमें संदेह नहीं कि पंजाब ने शिक्षा, विशेषतः स्त्री-शिक्षा के क्षेत्र में, गत बीस वर्षों के भीतर, आश्चर्य-जनक कार्य किया है, पर पूर्ण शुभ परिणामों के साथ नहीं। जहाँ एक ओर कुछ बना है, वहाँ दूसरी ओर बिगड़ा भी है। जहाँ एक दिशा में कल्याण हुआ है, वहाँ दूसरी दिशा में अकल्याण की कुछ-न-कुछ अवस्था भी अवश्य उत्पन्न हुई है।

पं० आत्मस्वरूप शर्मा

पंजाब में इन्हीं वर्षों में बेकारी ने भयंकर रूप धारण किया है, और यह केवल पुरुषों तक ही सीमित न रहकर स्त्रियों में भी फैल चली है। इसी प्रकार ब्याह-शादियों के संबंध में कई ऐसी समस्याएँ उपस्थित हो गई हैं, जिनके सुलझने की कोई प्रत्यक्ष आशा दिखाई नहीं देती, और मैं यह भी समझता हूँ कि ये समस्याएँ शिक्षा के प्रसार के साथ दिन-प्रति-दिन जटिल ही होती जायँगी, सुगम नहीं। शिक्षा को शिक्षा के रूप में ही देखें, तो पंजाब ने युनिवर्सिटी और सरकारी ढंग की शिक्षा के लिये अधिक अनुराग प्रदर्शित किया है। सारे प्रांत में एक भी ऐसी संस्था दिखाई नहीं देती, जहाँ शुद्ध राष्ट्रीय तर्ज़ की शिक्षा दी जाती हो। पंजाब की दृष्टि व्यापारिक अधिक है, और यह दृष्टि शिक्षा-क्षेत्र में भी बराबर देखने में आती है। शिक्षा यहाँ धनोपार्जन का साधन बना ली गई है, और हज़ारों पुरुष और स्त्रियाँ इसी के सिर पर पल रही हैं। पंजाब में हिंदी-अनुराग और हिंदी-प्रचार की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो डींग हाँकी जाती है, उसकी तह में भी व्यापारिक मनोवृत्ति कार्य करती है। यह लेख इन दिशाओं में दृष्टि ले जाने के लिये नहीं, पर मेरा यह दृढ़ मत है कि पंजाब के लोग व्यापारिक लाभ मुख्य रक्खे विना प्रभु का नाम भी मुख पर लाना नहीं चाहते।

पंजाब में गत दस वर्षों के भीतर असरकारी शिक्षा-संस्थाओं की संख्या ख़ूब बढ़ी है। प्रत्येक संप्रदाय अपनी शिक्षा का प्रबंध स्वयं करना अपनी शान समझता है। फलतः सरकार का शिक्षा का भार प्रायः लोगों ने ही ले लिया है। मैं इसे बत्ती को दोनो सिरों से जलाना कहा करता हूँ। एक ओर तो लोग सरकार को कर देते हैं कि उससे उन्हें कई प्रकार के लाभ हों, और दूसरी ओर जातियों का करोड़ों रुपया शिक्षा-संस्थाओं की स्थापना के रूप में लगाया जा रहा है। मैं पूरे दायित्व के साथ इसे धन का नाश कहता हूँ। सिवा उन थोड़ी-सी संस्थाओं के, जो अपना मार्ग-व्यय देने में शक्त हैं, अन्य संस्थाएँ केवल इसीलिये घसीटी जा रही हैं कि उन्हें घसीटे विना नाक नहीं रहती, या यों कहिए कि सांप्रदायिक व्यापार नहीं चलता। यह भी क्या दशा है कि इन संस्थाओं में अध्यापकों अथवा अध्यापिकाओं को तीन-तीन और चार-चार मास तक वेतन नहीं मिलता, और बाज़ार के बिल तक चुकाए नहीं जाते। जिन शिक्षा-संस्थाओं की ऐसी दशा हो, और पंजाब में ऐसी संस्थाओं की संख्या दुर्भाग्य से बहुत अधिक है, उन्हें जारी रखने में क्या वीरता है, यह मैं आज तक समझ नहीं सका। पंजाब में मुसलिम समझदार हैं। वे अपनी संस्थाएँ बहुत कम खोलते हैं। उनका तरीक़ा यह है कि वे सरकार से पूरा लाभ उठाते हैं। प्रांत में बहु-संख्यक होने पर भी उन्हें अपनी शिक्षा के लिये चिंतित होने की आवश्यकता नहीं। वे जानते हैं कि सरकारी धन और सरकारी सुविधाएँ उन्हीं के लिये हैं, और उन्हें उनसे पूर्णतया लाभ उठाने का अधिकार है। पंजाब के हिंदुओं और सिखों ने भी इस बात को समझ लिया होता, तो आज उनके कितने ही भार गवर्नमेंट ने सँभाल लिए होते, और प्रायः एक जाति ही सरकारी धन से लाभ उठानेवाली न होती। पंजाब-शिक्षा-विभाग की सन् १९३९-४० ई० की रिपोर्ट पढ़ने से पता लगता है कि पंजाब में ४,३२८ लड़कों के और ३,१३७ लड़कियों के स्कूल ऐसे हैं, जो सरकार द्वारा स्वीकृत नहीं। इनमें से कुछ स्कूल तो जान-बूझकर अस्वीकृत रहना चाहते हैं, पर अधिक संख्या ऐसे स्कूलों की है, जिन्हें शिक्षा-विभाग स्वीकार नहीं कर रहा है—इनकी स्वीकृति के मार्ग में कई प्रकार की अड़चनें उपस्थित की जा रही हैं। पंजाब-शिक्षा-विभाग का असरकारी एवं सांप्रदायिक शिक्षा-संस्थाओं के साथ व्यवहार अच्छा नहीं। इस पर भी ये संख्या में बढ़ती ही जा रही हैं। यह जहाँ अचंभे की बात है, वहाँ इससे यह भी पता लगता है कि शिक्षा में सांप्रदायिक एवं व्यापारिक भाव वृद्धि पर है। ऐसी संस्थाएँ कुछ अवस्थाओं में निजी लाभ का कारण भी बन रही हैं। लाहौर में गवर्नमेंट-ट्रेनिंग-कॉलेज से रिटायर हुए अध्यापक रायबहादुर सोहनलाल ने एक बड़ा विशाल कॉलेज खोल दिया है, जो तीन वर्ष की अल्प आयु में बीस वर्ष के पुराने स्कूलों और कॉलेजों को मात करता है, और उसमें पढ़नेवाली कन्याओं की संख्या सैकड़ों है। इस कॉलेज से आर्थिक लाभ भी निश्चय होगा, क्योंकि रायबहादुर बड़े सर्वप्रिय तथा अनुभवी अध्यापक हैं। वास्तव में यह संस्था उन्होंने सरकारी नौकरी से छुट्टी पाने के बाद अपने लिये एक धंधा निकालने के लिये ही जारी की है। रायबहादुर ने अपनी कमाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का एक बड़ा भाग इस कॉलेज में लगाया है, और इसमें संदेह नहीं कि वह लाखों रुपए लगा उससे लाखों की ही उत्पत्ति करेंगे। रायबहादुर के दृष्टांत से कुछ अन्य लोगों ने भी अपने लिये इसी प्रकार की संस्थाओं की व्यवस्था करने का यत्न किया है। कम या अधिक मात्रा में सभी इन उद्योगों में सफल हो रहे हैं। मेरा अभिप्राय इन उदाहरणों से यह बताने का है कि कुछ सरकारी असहानुभूति के कारण और कुछ निजी लाभ उठाने की इच्छा से पंजाब में शिक्षा बराबर असरकारी और सांप्रदायिक हाथों में जा रही है।

एक श्रेणी ऐसी संस्थाओं की भी है, जो अपना निजी कोष इतना दृढ़ रखती हैं कि उसे सरकार की अधिक परवा नहीं। लाहौर में सर गंगाराम-हाईस्कूल और ट्रेनिंग कॉलेज इसी श्रेणी की संस्था है। इसी प्रकार फ़तेहचंद-कॉलेज 'फ़ार विमेन' है, जिसकी संपत्ति ७-८ लाख रुपए की है। अभी हाल में इस संस्था के ट्रस्टियों ने लाहौर हाईकोर्ट के पूर्व चीफ़ जज सर शादी-लाल का विशाल भवन पौने दो लाख रुपए में ख़रीदा है। आर्यसमाज-कॉलेज-विभाग के अधीन महात्मा हंसराज-महिला-विद्यालय का कोष भी ख़ूब मज़बूत है। उसमें हज़ारों कन्याएँ शिक्षा प्राप्त कर रही हैं। पर अधिकारियों ने कभी उसे शिक्षा-विभाग से स्वीकृत कराने का प्रयत्न नहीं किया। वहाँ की पढ़ाई भी सरकारी ढंग की है, और कन्याएँ युनिवर्सिटी आदि की परीक्षाओं में बराबर बैठती हैं। पर यह संस्था है अपने पैरों पर खड़ी।

पंजाब की यूनियनिस्ट सरकार की नीति यह है कि लड़कों की शिक्षा कुछ रोककर भी कन्याओं की शिक्षा की ओर अधिक ध्यान दिया जाय, और इसी पर अधिक व्यय भी हो। फल-स्वरूप इन थोड़े-से वर्षों में कन्याओं के लिये खोली गई अनगिनत सरकारी और असरकारी शिक्षा-संस्थाएँ ठसाठस भर गई हैं। मुसलिम कन्याएँ, जो अभी १५ वर्ष पूर्व शिक्षा का नाम भी कठिनाई से जानती थीं, अब अन्य जातियों की कन्याओं को शिक्षा में पीछे छोड़ रही हैं। यूनियनिस्ट सरकार ने मुसलिमों की शिक्षा को प्रोत्साहन देने में कोई कसर नहीं छोड़ी। लाहौर में लड़कों के लिये एक बढ़िया ट्रेनिंग कॉलेज होते हुए भी कन्याओं के लिये एक पृथक् ट्रेनिंग कॉलेज बहुत भारी ख़र्च पर खोल दिया गया है। इसी प्रकार लाहौर में एक प्रथम श्रेणी का मेडिकल कॉलेज होते हुए भी अमृतसर के मेडिकल स्कूल को केवल कन्याओं के लिये मेडिकल स्कूल के रूप में परिवर्तन करने की योजना तैयार की गई है, और यह केवल इसीलिये कि परदेवाली मुसलिम-कन्याओं को असुविधा न हो। लाहौर में सरकारी सहायता से एक मुसलिम-कॉलेज खोला गया है, हालाँकि उसी की बग़ल में एक गवर्नमेंट कॉलेज केवल कन्याओं के लिये मौजूद है, और वहाँ परदे का पूरा प्रबंध है। मुसलिम-कन्याओं को विशेष सुविधाएँ देने का फल यह है कि मुसलिम-कन्याएँ धड़ाधड़ उच्च शिक्षा प्राप्त कर रही हैं।

पंजाब-सरकार का मुसलिमों की शिक्षा की ओर विशेष ध्यान इसी बात से प्रकट होता है कि पंजाब में शिक्षा-उन्नति की सन् १८३९-४० की रिपोर्ट में एक पृथक् परिच्छेद में, जो 'विशेष श्रेणियों की शिक्षा' पर है, बहुसंख्यक मुसलिमों की गणना भी एक 'विशेष' श्रेणी के रूप में की गई है। हमें बतलाया गया है कि रिपोर्ट के वर्ष में स्वीकृत संस्थाओं में १४,५३९ मुसलिम - लड़कों की वृद्धि हुई, और अब इनकी कुल संख्या ५,४९,८७३ है। मुसलिम-कन्याओं की संख्या में ७,७८७ की वृद्धि है, अर्थात् स्वीकृत संस्थाओं में उनकी कुल संख्या १,२४,५३० से बढ़कर १,३२,११७ हो गई है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुसलिमों में शिक्षा-प्रसार का प्रत्यक्ष फल यह है कि अब सरकारी नौकरियों में मुसलिमों की संख्या बड़ी तेज़ी से बढ़ रही है। सरकारी स्कूलों में हेडमास्टरों के पद पर प्रायः मुसलिम ही दिखाई देते हैं। स्त्री-विभाग की ओर भी अध्यापिकाओं, हेडमिस्ट्रेसों, इंस्पेक्ट्रेसों आदि में मुसलिमों की संख्या वृद्धि पर है। पंजाब की चार सरकिल इंस्पेक्ट्रेसों में दो मुसलिम हैं, एक हिंदू और एक ईसाई।

स्त्रियों में उच्च शिक्षा बढ़ तो रही है, पर अभी से उसके दुष्परिणाम भी देखने में आने लगे हैं। ग्रेजुएट लड़कियों की संख्या काफ़ी अधिक हो गई है, और अब उनके लिये बराबर के शिक्षित वर मिलने में कठिनाई है। एक कोस भी न चले होंगे कि प्यासे हो गए। पिछले दिनों कुछ विवाह हुए हैं, जिनमें कन्याएँ तो ग्रेजुएट थीं, पर युवक नहीं थे, यह केवल श्रीगणेश है। अभी युवकों को आशा है कि शिक्षित कन्याओं से विवाह करने पर कमाने-खाने का कुछ-न-कुछ आसरा हो जायगा। यह आशा छिन गई, तो शिक्षित कन्याओं की क़ीमत विवाह के बाज़ार में बेहद गिर जाने का भय है। सरकारी रिपोर्ट के अध्ययन से ज्ञात होता है कि गत चार-पाँच वर्षों में बी० टी० कन्याओं की संख्या इतनी बढ़ी है कि सरकार अभी से कानों पर हाथ धरने लगी है। रिपोर्ट में लिखा है—"हम इस बात को कुछ व्याकुलता से पढ़ते हैं कि बी० टी० कन्याओं का सप्लाई माँग से कहीं अधिक है। इस वर्ष लगभग १४० कन्याएँ बी० टी०-परीक्षा में बैठीं। अधिक सरकारी मिडिल स्कूल खुलने तथा लोकल बाडी और एडिड स्कूलों की वृद्धि के साथ-साथ प्रकट में बी० टी० कन्याओं से भी अधिक जे० ए० वी० कन्याओं की आवश्यकता है।" यह दशा तब है, जब ग्रेजुएट कन्याओं के लिये कुछ ट्रेनिंग कॉलेज खुल चुके, और कुछ अभी खुलने की तैयारी में हैं। बी० टी० कन्याओं की संख्या में असाधारण वृद्धि के कारण अब इनके वेतन भी कम हो गए हैं। तीन वर्ष पूर्व इन्हें सरकारी नौकरी में ११० रुपए का आरंभ मिलता था। अब यही आरंभ घटाकर ८० रुपए कर दिया गया है। अवस्था ऐसी ही रही, तो दो-तीन वर्षों तक बी० ए०, बी० टी० कन्याएँ ५० रुपए मासिक पर मिलने लगेंगी। और, मुझे बतलाया गया है कि कुछ असरकारी स्कूलों में तो इन्हें आज भी इतने ही रुपए मिल रहे हैं। कन्याओं के लिये ट्रेनिंग स्कूलों और कॉलेजों की संख्या पंजाब में बराबर बढ़ रही है। एक गुड़गावाँ को छोड़ प्रत्येक ज़िले में कन्याओं के लिये गवर्नमेंट-हाईस्कूल हैं। सांप्रदायिक संस्थाओं के कन्या-हाईस्कूल इनके अतिरिक्त हैं, और इनकी संख्या गवर्नमेंट-हाईस्कूलों से दुगुनी अवश्य है।

पंजाब की शिक्षा-रिपोर्ट में विवाहित अध्यापिकाओं के बाधा सिद्ध होने के विषय में भी कुछ दिलचस्प आलोचना की गई है। रिपोर्ट में लिखा है—"पिछली कुछ रिपोर्टों में बताया गया है कि विवाहित अध्यापिकाओं की समस्या अधिक गंभीर रूप धारण करती जा रही है। उकताने का ख़तरा उठाते हुए भी यह बात पुनः बयान की जानी चाहिए। हाल में न केवल अध्यापिकाएँ ही (विवाह कराने में) शामिल हैं, प्रत्युत इंसपेक्ट्रेसें (निरीक्षिकाएँ) भी। लड़कियों के लिये खोले गए गवर्नमेंट-स्कूलों के पहले दिनों में कार्य परिमाण (स्टैंडर्ड) से घटिया इसलिये होता था कि कई ऐंग्लो-वर्नाक्यूलर अध्यापिकाएँ अनट्रेंड थीं। माँग की पूर्ति सीमित होने के कारण अध्यापिकाओं को अक्सर ऐसे विषय पढ़ाने पड़ते थे, जिन्हें पढ़ाने की वे योग्यता नहीं रखती थीं। उदाहरण-स्वरूप यह कोई असाधारण बात न थी कि जिस अध्यापिका ने गणित स्वयं मैट्रिक्युलेशन तक पढ़ा है, वह उच्च श्रेणियों के गणित के लिये उत्तरदायी होती थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ ग्रेजुएटों को छोड़, जिन्हें बी० टी० करने से पूर्व दो वर्ष से अधिक रक्खा नहीं जायगा, विभाग में अब कोई अनट्रेंड अध्यापिकाएँ नहीं हैं।..... विभाग अब यह उचित रूप से आशा रख सकता था कि लड़कियों के स्कूलों में कार्य का स्टैंडर्ड संतोष-जनक हो जायगा। पर प्रतीत होता है कि यह स्टैंडर्ड अब इस बात के कारण अनिवार्य रूप से गिर जायगा कि प्रत्येक स्कूल में वे ही अध्यापिकाएँ, जिन्हें बेहतर योग्यता और अधिक लाभों के कारण पूँजी सिद्ध होना चाहिए, रुकावट सिद्ध हो रही हैं। कारण यह कि ज्यों ही उन्हें कुछ अनुभव होता है, और वे कुछ दायित्व लेने के योग्य होती हैं, वे विवाह करा लेती हैं, और छोटे बच्चों के परिवार की चिंताओं के कारण उनके हाज़िर रहने पर भी विभाग को उनकी केवल बँटी हुई शक्ति और दिलचस्पी ही प्राप्त होती है। विवाहित जीवन के पहले कुछ वर्षों में वे काफ़ी समय तक ग़ैरहाज़िर रहती हैं, और स्कूलों को स्थानापन्न अध्यापिकाओं के हाथों हानि उठानी पड़ती है। निरीक्षक स्टाफ़ विवाह के अनंतर प्रायः कहता है कि उन्हें पढ़ाने के कार्य के लिये वापस भेज दिया जाय। कारण, ये दौरे से बचना चाहती हैं। इनके वेतन के ग्रेड ऐसे होते हैं कि उनमें उन्हें केवल निरीक्षिकाओं के रूप में ही नियुक्त किया जा सकता है। इसी मामले का एक और पहलू, जो गंभीर है, यद्यपि वह विभाग से संबंध नहीं रखता, यह है कि बँटी हुई दिलचस्पी और बँटी हुई वफ़ादारी के कारण विवाहिता अध्यापिकाओं के बच्चे वह रक्षा और ध्यान प्राप्त नहीं करते, जिन्हें प्राप्त करने की आशा रखना उनका अधिकार है। अधिकांश अवस्थाओं में यह प्रकट ही है कि ये बच्चे उतनी रखवाली और शिक्षा भी प्राप्त नहीं कर सकते, जो कई बच्चों को साधारण बूझ रखनेवाली माताओं से मिल जाती है, हालाँकि इनकी शिक्षा अधिक नहीं होती।"

रिपोर्ट से यह कुछ लंबा उद्धरण देने के लिये हम क्षमा चाहते हैं। पंजाब के शिक्षा-अधिकारियों का उपर्युक्त मत पढ़ने से पता चलेगा कि उनके हृदय में स्त्रियों के अध्यापक-जीवन में विवाहित होने के संबंध में एक प्रकार की घृणा-सी है, और यह घृणा साधारण नहीं, प्रत्युत असाधारण है। ऊपर यह बात भी ख़ूब मज़े की कही गई है कि विवाह कराने के रोग में पहले तो केवल अध्यापिकाएँ ही ग्रस्त थीं, अब निरीक्षिकाएँ भी हो गईं। हमें पंजाब के शिक्षा-विभाग के अधिकारियों से सहानुभूति है कि उन्हें ऐसे 'भयंकर रोग' के विस्तार के कारण कष्ट हो रहा है। पर हम पूछना चाहते हैं कि आख़िर वे चाहते क्या हैं। क्या उनकी धारणा यह है कि कोई अध्यापिका विवाह कराए ही नहीं—या यह कि विवाह कराने पर भी वह संतान-निरोध के संपूर्ण साधनों का आश्रय ले, जीवन-पर्यंत संतान के बिना रहे? ऐसी धारणा और ऐसी इच्छा केवल अस्वाभाविक ही नहीं, कुछ अवस्थाओं में अन्य प्रकार के भयंकर परिणाम उत्पन्न करनेवाली भी हो सकती है। किसी युवती अथवा युवक का विवाह कराना उसका स्वाभाविक एवं जन्मसिद्ध अधिकार है। इसलिये यह आशा रखना तो वैसे ही अविवेकता की बात है कि अध्यापिकाएँ केवल इसलिये विवाह न कराएँ कि वे अध्यापिकाएँ बन चुकी हैं। हाँ, यह आशा की जा सकती है कि चूँकि शिक्षा-विभाग के अधिकारियों को अध्यापिकाओं का विवाहित जीवन पसंद नहीं, इसलिये या तो वे विवाह कराएँ ही नहीं, या यदि कराएँ, तो विवाह कराते ही शिक्षा-विभाग की नौकरी छोड़ दें, और यदि उन्हें नौकरी रखनी ही हो, तो वे संतान उत्पन्न न करें। यह एक मनोरंजक समस्या है, जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंजाब की शिक्षित युवतियों के सम्मुख पंजाब के शिक्षा-विभाग के अधिकारियों की ओर से प्रस्तुत कर दी गई है।

विवाहित अध्यापिकाओं के विषय में जो भय विभाग के अधिकारियों की ओर से प्रकट किए गए हैं, उनमें अधिकतर अतिशयोक्ति ही से काम लिया गया है। कुछ इनी-गिनी विवाहित अध्यापिकाओं की ओर से विभाग को कष्ट पहुँचता हो, तो मैं कह नहीं सकता। मेरा अनुभव तो यह है कि विवाहित अध्यापिकाएँ अविवाहित युवतियों की अपेक्षा कहीं अच्छा काम करती हैं, और स्वयं माताएँ होने के कारण उनका बच्चों और छात्राओं के साथ अत्यंत कोमल एवं वांछनीय व्यवहार होता है। अविवाहित अध्यापिकाएँ, जिनमें फ़ैशनेबल युवतियों की संख्या अब दिन-प्रति-दिन बढ़ रही है, अधिक लगाव से काम नहीं करतीं। चाहे कुछ हो, उनका अंतिम ध्येय विवाहित जीवन में बँधना ही है। इसलिये वे प्रायः अस्थिर चित्त से काम करती हैं। उन पर कोई भार नहीं होता, इसलिये वे अपने दायित्व को बहुत हल्के प्रकार से लेती हैं। एक विवाहित अध्यापिका जानती है कि उस पर परिवार का भार है, और किसी-किसी अवस्था में उसे निखट्टू पति का पोषण भी करना है, इसलिये वह न केवल अपने दायित्व को पूर्ण रूप से समझती है, प्रत्युत उसका यत्न यही रहता है कि वह अपने कार्य से अपने अफ़सरों को संतुष्ट एवं प्रसन्न रक्खे। पंजाब के शिक्षा-विभाग के अधिकारियों ने यह जानने का कभी उद्योग किया प्रतीत नहीं होता कि दोनो श्रेणियों की अध्यापिकाओं में से छुट्टियाँ अधिक कौन लेती हैं—विवाहित या अविवाहित। मेरे देखने में तो यही आया है कि अविवाहित युवतियों की अपेक्षा विवाहित अध्यापिकाओं का कार्य तथा परिश्रम अधिक सराहनीय है। हाँ, यह अवश्य है कि आए बरस की बच्चा-जनाई और बच्चों की अत्यधिक संख्या एक अध्यापिका ही क्या, इस ज़माने में प्रत्येक व्यक्ति के लिये कष्ट और चिंता का कारण होती है। पर यह कहना कि वैवाहिक जीवन एक अध्यापिका के कार्य में बाधक है, कोई ऐसा सत्य नहीं, जिसे झट से स्वीकार कर लिया जाय।

विवाहित जीवन पर इतनी कठोर दृष्टि तथा इतनी तीव्र आलोचना का एक मनोवैज्ञानिक कारण यह भी है कि पंजाब के शिक्षा-विभाग में स्त्री-शाखा की मुख्य अध्यक्षाएँ स्वयं मिसें (अविवाहित) हैं। उनके लिये वैवाहिक जीवन को नापसंद करना कोई बड़ी बात नहीं। इसी शिक्षा-विभाग में कुछ वर्ष पूर्व ऐसे अधिकारी भी थे, जो विवाहित अध्यापिकाओं को अविवाहित से विशेषतः देते थे, और जिनका मत था कि विवाहित अध्यापिकाएँ अधिक परिश्रमी और विश्वसनीय चरित्र की होती हैं। इसी मत के अनुसार विवाहित स्त्रियों को अध्यापिकाएँ बनने की विशेष प्रेरणा की जाती थी, और उन्हें सब प्रकार से उत्साह में रख विशेष सुविधाएँ भी दी जाती थीं। एक समय ऐसा भी था, जब अध्यापिकाओं के शिशुओं के लिये स्कूलों की ड्योढ़ियों में पालने लटके रहते थे, और जिस समय माताएँ स्कूलों में काम करती थीं, सरकारी नौकरानियाँ बाहर इन बच्चों की देख-रेख किया करती थीं। यह समय का ही प्रभाव है कि वैवाहिक जीवन तथा संतान रखने के प्रति आज इस प्रकार खुल्लमखुल्ला घृणा का प्रकाश शिक्षा-विभाग की रिपोर्ट ही में किया जा रहा है।

अब आगे चलिए। पंजाब में प्राइवेट शिक्षा-संस्थाओं का हाल अच्छा नहीं। ये संस्थाएँ प्रायः अपनी अध्यापिकाओं को अच्छा वेतन नहीं देतीं, समय पर नहीं देतीं, और अधिक की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रसीद लेकर कम देती हैं। जो संस्थाएँ अपना मार्ग-व्यय दे नहीं सकतीं, और जिनके पास कोई कोष भी नहीं, पता नहीं, वे जीवित क्यों हैं, और उन्हें किस हकीम ने जीवित रहने को कहा है। पंजाब में शिक्षा-संबंधी उन्नति की रिपोर्ट में हम पढ़ते हैं कि ५६५ ऐंग्लो-वर्नाक्यूलर स्कूलों में से ३२० प्राइवेट प्रबंध में हैं, और इनके मुख्य दोष हैं कम वेतन, नौकरी से निकाले जाने का धधका, वेतनों की अनियमित अदायगी और प्रबंधक कमेटी का स्कूलों के भीतरी प्रबंध में अनुचित हस्तक्षेप। ये दोष आंशिक रूप में स्कूलों के कोष की निर्धनता के कारण पाए जाते हैं, और आंशिक रूप में स्कूलों के प्रबंधकर्ताओं में धड़ेबंदी के कारण। रावलपिंडी डिवीज़न के इंस्पेक्टर लिखते हैं—"चूँकि अब चंदे प्राप्त करने में कठिनाई होती है, इसलिये प्राइवेट स्कूलों में कई प्रकार की आपत्ति-जनक बातें होने लगी हैं।"

यह बात उल्लेखनीय है कि केवल प्राइवेट स्कूलों में ही नहीं, प्रत्युत कई ज़िला-बोर्ड और म्युनिसिपल स्कूलों में भी अध्यापकों और अध्यापिकाओं को कई-कई मास तक वेतन नहीं मिलता। शिक्षा-उन्नति की रिपोर्ट में स्कूलों में काम करनेवाले अध्यापकों की जो दशा वर्णित है, वह काफ़ी करुणा-जनक है। वहाँ बताया गया है कि इनके वेतन बहुत कम हैं। कई ज़िलों में उनके वेतनों में, कई वर्ष हुए, जो काट की गई थी, वह आज तक बहाल नहीं की गई। प्रायः सब स्थानीय संस्थाओं ने अपने अध्यापकों को वार्षिक तरक्कियाँ देना बंद कर दिया है। फल यह है कि परिश्रमी और सच्चे दिल से काम करनेवाले अध्यापकों में भी कोई उत्साह नहीं रहा। प्राइवेट प्रबंध के अधीन स्कूलों में अध्यापकों की अवस्था में कोई विशेष उन्नति नहीं हुई, हालाँकि शिक्षा-विभाग ने स्कूल स्वीकार करने तथा नौकरी के नियम बहुत कठोर कर दिए हैं। रिपोर्ट में हम पढ़ते हैं कि व्यापक बेकारी और आर्थिक मंदी के कारण नए अध्यापकों को हास्य-जनक रूप से कम वेतन दिया जाता है, और इनमें से बहुत-से स्कूलों में वार्षिक वेतन-वृद्धि एवं ग्रेड-संबंधी तरक्कियाँ तो प्रायः अज्ञात ही हैं। इन स्कूलों में वेतन समय पर नहीं दिया जाता और बहुत पुराने अध्यापकों को भी साधारण बहानों से निकाल दिया जाता है। अध्यापकों को बहुत कम वेतन देने का रोग तो यहाँ तक बढ़ चला है कि पिछले दिनों कॉलेजों में ६० या ७० रुपए मासिक पर प्रोफ़ेसरों की नियुक्त होने लगी थी। इस शोचनीय दशा एवं निरादर को देखकर अब युनिवर्सिटी ने अपने ग्रेजुएटों का अपमान अपना अपमान माना तथा निश्चय किया है कि किसी स्वीकृत कॉलेज में एक सौ रुपए से कम पर कोई अध्यापक न रक्खा जाय।

पंजाब में सह-शिक्षा का पग यथेष्ट उन्नति की ओर है। अब लड़कों के कई कॉलेजों में लड़कियाँ बहुत भारी संख्या में भरती हो पढ़ने लगी हैं। लड़कों की स्वीकृत संस्थाओं में लड़कियों की संख्या में सन् १९३९-४० में १,८०४ की वृद्धि हुई है, अर्थात् अब उनकी कुल संख्या २२,८११ है। लड़कियों की संस्थाओं में केवल ३३२ नए लड़कों ने प्रवेश किया, और ऐसे लड़कों की कुल संख्या अब १२,७८४ है। मुलतान और रावलपिंडी-मंडलों में सह-शिक्षा सर्वप्रिय नहीं हुई। इसका मुख्य कारण यही है कि मुसलमान सह-शिक्षा के विरोधी हैं, और उक्त दोनो इलाक़ों में उन्हीं की आबादी अधिक है। पंजाब-एसेंबली में समय-समय पर मुसलिमों की ओर से सह-शिक्षा की योजनाओं का हमेशा तीव्र विरोध होता रहता है। सह-शिक्षा को सफल बनाने में सबसे बड़ा भाग ज़िला अमृतसर का है। वहाँ ज़िला-बोर्ड के ग्यारह स्कूल ऐसे हैं, जिनमें सह-शिक्षा का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रबंध है। इनके अतिरिक्त सरकार से सहायता प्राप्त करनेवाला एक और स्कूल है, जिसमें लड़के-लड़कियाँ एक साथ पढ़ते हैं। इन सब स्कूलों में अध्यापिकाएँ कार्य करती हैं। रिपोर्ट में बतलाया गया है कि ज़िला अमृतसर में "माता-पिता १५ और १६ वर्ष की कन्याओं को भी बालकों के साथ पढ़ने के लिये भेजने में आपत्ति नहीं करते। वे श्रेणी में एक साथ बैठते और एक साथ खेलते हैं। बालकों और बालिकाओं के मध्य एक बार भी कभी कोई कष्ट नहीं हुआ। बालक विनम्र और अच्छा व्यवहार रखनेवाले हैं।" यह बात अब प्रायः देखने में आ रही है कि कन्याओं के अधिक-से-अधिक संख्या में सह-शिक्षा का साहस करने से सहपाठी बालकों के व्यवहार में उल्लेखनीय अंतर आ रहा है, और यह अंतर निश्चित रूप से बेहतरी की दिशा में है।

पंजाब-शिक्षा-विभाग कन्याओं की शिक्षा पर दिल खोलकर धन व्यय कर रहा है। सन् १९३९-४० ई० में इस ख़र्च में २,३१,७२३ रुपए की वृद्धि हुई, जिससे कुल ख़र्च की रक़म ४१,९१,३९५ रुपए तक पहुँच गई। गवर्नमेंट की ओर से स्त्री-शिक्षा का इतना ध्यान सराहनीय है। पर यहाँ भी व्यय ऊपर की श्रेणियों में अधिक है। मोटे-मोटे वेतन पानेवाले अध्यापकों और अध्यापिकाओं की संख्या बराबर बढ़ाई जा रही है, जब कि छोटी श्रेणी के अध्यापकों की अवस्था पहले से भी बुरी मालूम पड़ती है। यदि ठिकाने से हिसाब किया जाय, तो पता लगेगा कि ख़र्च का एक बड़ा भाग डाइरेक्टरों, इंस्पेक्टरों, हेडमास्टरों और ऐंग्लो-वर्नाक्यूलर-स्टाफ़ की भेंट हो जाता है, और बेचारे वर्नाक्यूलर-स्टाफ़ के भाग्य में तो केवल जूठन ही आती है। कॉलेजों में प्रोफ़ेसरों को अत्यधिक वेतन दिया जाता है, और वेतनों की तुलना में उनका कार्य कुछ भी नहीं। इन लोगों की परीक्षकों और पाठ्य-पुस्तकों के लेखकों के रूप में भी अंधी कमाई है। वर्नाक्यूलर-अध्यापकों की शोचनीय दशा से जब इन लोगों के सौभाग्य की तुलना करते हैं, तो अन्याय इतना प्रत्यक्ष हो जाता है कि उसे देखकर वेदना होती है, और ख़याल आता है कि क्या शिक्षा की वास्तविक नींव बाँधनेवाले इन लोगों की हालत भी कभी सुधर सकेगी।

यूनियनिस्ट मंत्रिमंडल ने अधिकार में आकर वयस्क शिक्षा का बीड़ा भी उठाया है। पर उससे स्त्रियों को बहुत कम लाभ पहुँच रहा प्रतीत होता है। डॉक्टर फ्रैंक लयूबा के सिद्धांत "Each one Teach one" का शोर तो बहुत है, पर इसमें भी दिखावा अधिक है, और यदि कोई कार्य हो रहा है, तो उससे उर्दू की शिक्षा का विस्तार किया जा रहा है। लोगों को यह बताकर कि गवर्नमेंट प्रौढ़ों की शिक्षा का प्रबंध करना चाहती है, जनता के धन से उर्दू का प्रचार हो रहा है। जेलों, कारख़ानों के इलाक़ों, हरिजन-बस्तियों, जरायम पेशा लोगों की बस्तियों और पुलिस-लाइनों में जहाँ-तहाँ उर्दू की ही शिक्षा हो रही है। न्याय का तक़ाज़ा तो यह है कि हिंदी और गुरुमुखी की ओर भी समान ध्यान होना चाहिए।

पंजाब में शिक्षा—विशेषतः स्त्री-शिक्षा—का भविष्य क्या है, यह बताना कठिन है। पर इतनी बात स्पष्ट दिखाई दे रही है कि पंजाब में लोग अपनी कन्याओं को कटि-बद्ध हो उच्च शिक्षा दिला रहे हैं। आगामी दस वर्ष बता देंगे कि इस दौड़ का परिणाम प्रांत और उसके निवासियों के लिये कैसा रहता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खंजन खिलारी ये

[डॉक्टर रामशंकर शुक्ल 'रसाल' एम्० ए०, डी० लिट्०]

ह्वैके मंजु मीन मीन-केतन के केतन के
जन - मन - बन के बने हैं बनचारी ये;
रसिक 'रसाल' हाल ही मैं नेह - नीरज ह्वै
करत अली को अवनी - रज पुजारी ये।
देखत - ई - देखत ये सुंदर सुरंगवारे
ह्वै कुरंगवारे बने मानस - बिहारी ये;
अंजन अँजाए मन - रंजन अनोखी चारु
चोखी अभिहारी करैं खंजन खिलारी ये।

खिज़ाब छोड़ो !

इस परीक्षित तथा सत्य-प्रमाणित तेल ने हज़ारों का बाल काला किया, आपका भी अवश्य काला करेगा। इससे बाल का पकना रुककर, यदि पका बाल खूँटी से स्थायी काला पैदा नहीं होगा, तो दूना दाम वापस की शर्त। अधिक उम्र ५) रु०, ४० से ऊपर ७) रु० का तेल मँगावें।

पता—बाल काला स्टोर्स, पो० कंमी सिमरी (दरभंगा)

शीघ्रपतन—नामर्दी

धातु का गिरना रोक, पतला धातु को गाढ़ा बना, बेहद स्तंभन पैदा करेगी, काम-शक्ति इतनी अधिक बढ़ जायगी कि आप उसे क़ाबू में नहीं रख सकेंगे। शक्ति कभी कम न होगी, और जवानी की-सी उमंग बराबर बनी रहेगी। दोनो का १०) रु०, एक का ६) रु०

पता—रिसर्च केमिकल वर्क्स, पो० बिहार नरसरी (दरभंगा)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

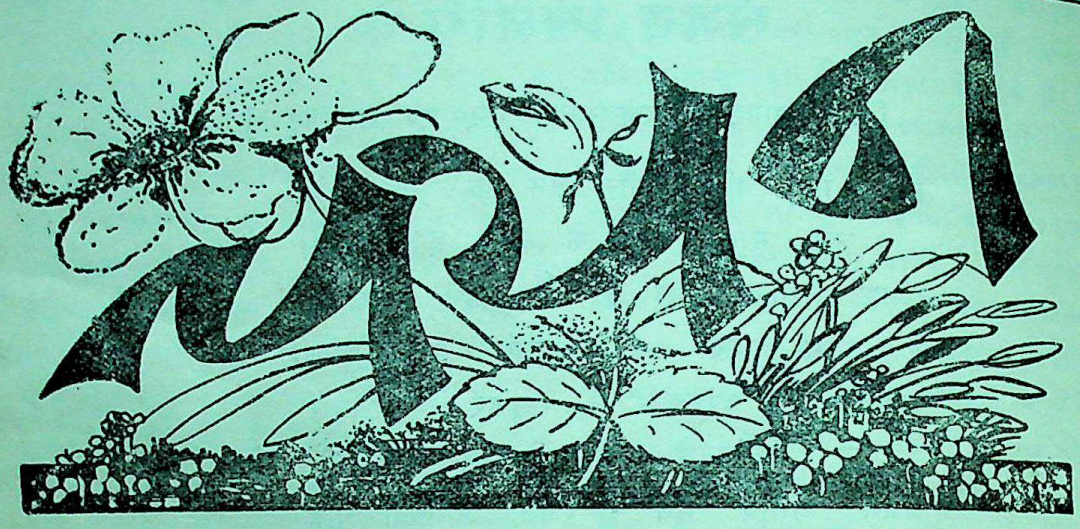

१. महाकवि रवींद्रनाथ ठाकुर

(८१वीं वर्ष-गाँठ पर श्रद्धांजलि)

आज भी भारत के पास तीन विभूतियाँ ऐसी हैं, जिनके बल पर वह संसार के सम्मुख गौरव के साथ अपना माथा ऊँचा कर सकता है। इनमें एक अमूर्त है, और दो मूर्त। वे हैं (१) हिंदू-धर्म और संस्कृति, (२) रवींद्रनाथ ठाकुर और (३) मोहनदास कर्मचंद गांधी।

ठाकुर और गांधी, दोनो की ख्याति विश्व-व्यापिनी है। इन दोनो में से अंतरजातीय विश्रुति पहले ठाकुर की हुई, जब १९१३ ई० में उन्हें अपनी 'गीतांजलि' पर नोबेल-पुरस्कार मिला। यह पुरस्कार एशिया में इनसे पहले किसी को न मिला था।

संपन्न घराने में जन्म लेकर विलासिता के स्थान पर आत्मोत्कर्ष में मनोयोग देना श्रीरवींद्रनाथ की असाधारण विशेषता है। हृदय की विशालता और दार्शनिक मनोवृत्ति उन्हें पैत्रिक संपत्ति के रूप में मिलीं, और रचनात्मक कला-प्रेम तो शायद ठाकुर-वंश के बच्चों को घुट्टी के साथ पिला दिया जाता है। इन पूर्वसंस्कारों से समलंकृत रवि बाबू ने अपनी प्रतिभा का विकास अनेक दिशाओं में किया। साहित्य, संगीत, दर्शन, राजनीति आदि विषयों में उन्होंने अपनी लेखनी का जो परिचय दिया, वह बहुत ही उच्च, असामान्य और मौलिकता-पूर्ण है। गंभीर अध्ययन, मौलिक विवेचना-शैली, सहृदयता और अपने देश, जाति तथा धर्म के प्रति उत्कट प्रेम ऐसे गुण हैं, जिनका साक्ष्य ठाकुर महाशय की रचनाओं में पद-पद पर मिलता है।

रवि बाबू के तीन मुख्य गुण ऐसे हैं, जो विशेषतः उल्लेखनीय हैं—(१) काव्य, (२) दर्शन और (३) देश-प्रेम। इन तीनो का घनिष्ठ समन्वय उनके साहित्य में हमें मिलता है। यद्यपि रवि बाबू महाकवि के रूप में ही विश्व-विख्यात हैं, परंतु यदि वह केवल महाकवि ही होते, तो कदाचित् हमारे सम्मुख इतने वंदनीय न होते। उनके दर्शन और देश-प्रेम ने उनकी कवि-मूर्ति को सभ्य संसार के हृदय-मंदिर में पूजनीय बना दिया है। उनके काव्य का अंतः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वरूप है दर्शन, और उसका बाह्य रूप है भारतीय जीवन की झाँकी। काव्य के अर्थ यहाँ व्यापक रूप में लें, तो गीत, कहानियाँ, नाटक और उपन्यास आदि सब उसी के अंतर्गत आ जाते हैं।

रवींद्रनाथ के दर्शन के दो पहलू स्पष्ट हैं—सिद्धांत-पक्ष से वह वेदांती हैं। समष्टि और व्यष्टि में एक रस, एक प्राण के वह न केवल विश्वासी हैं, प्रत्युत अनुभवी भी। इसी कारण वह दार्शनिकता की भूमि में स्वदेश और विदेश का अंतर नहीं रखते, और उनके गीत सार्वकालिक और सार्वभौमिक अखंड मानवता के गीत के रूप में हमारे सामने आते हैं। किंतु व्यवहार-पक्ष में वह संत हैं, मनीषी हैं, और महर्षि हैं। वह प्रार्थना करते हैं; भगवच्चरणों में 'गीतांजलि' अर्पित करते हैं, परंतु ऊँचे आदर्श को लेकर—"Into that heaven of freedom my Lord, let my country awake."

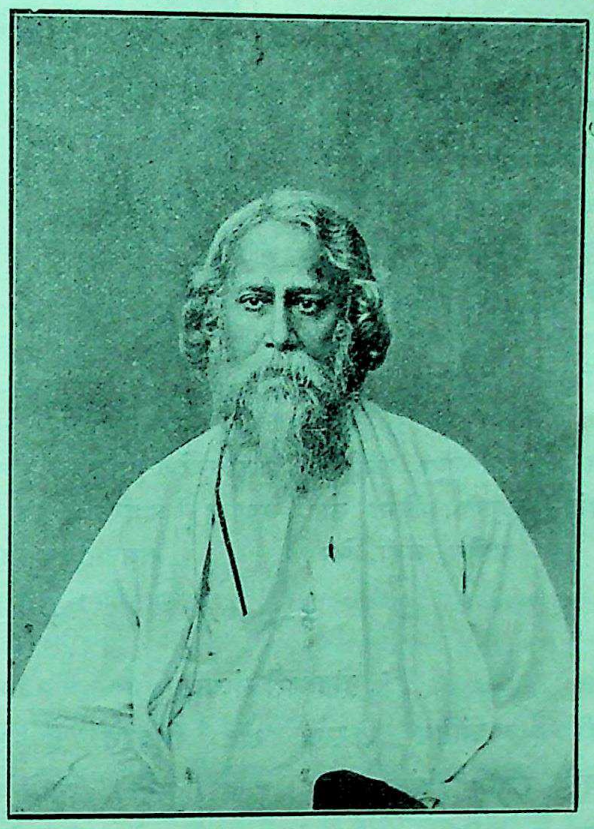

महाकवि रवींद्रनाथ ठाकुर

रवींद्रनाथ की राजनीति के भी इसी प्रकार हमें दो पहलू मिलते हैं—सिद्धांत-पक्ष से वह उस गरम दल के विचारवाले हैं, जो लोकमान्य तिलक और महात्मा गांधी के विचारों से किंचिदंश में न्यून नहीं। परंतु व्यवहार-पक्ष में उनका कवि-हृदय, उनका विश्व-प्रेम उन्हें सक्रिय मार्ग की अप्रियता से विरत-सा रखता है, यद्यपि इस दिशा में उन्होंने जलियाँवाला-बाग़-कांड के उद्वेग-पूर्ण अवसर पर अपनी 'नाइट' की उपाधि को तिलांजलि देकर अद्भुत क्षमता का परिचय दिया है। उनके उत्कट देश-प्रेम का ज्वलंत उदाहरण तो हमें तब मिलता है, जब हम उन्हें अपने व्या ख्या नों, गीतों, कथानकों और निबंधों में भारत वर्ष की ही विशालता का गीत गाते हुए पाते हैं—

"एकदा ए भारतेर कोन् बनतले,
के तुमि महान् प्राण, आनंद बले।
उच्चारि उठिले उच्चे—शोनो विश्वजन,
शोनो अमृतेर पुत्र यत देवगण।
दिव्यधामवासी, आमि जेनेछि ताँहारे,
महांत पुरुष यिनि आँधारेर पारे।
ज्योतिर्मय, तारे जेने, ताँर पाने चाहि,
मृत्युरे लंघिते पारो, अन्य पथ नाहि।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रवि बाबू का कवि-रूप इतना देदीप्यमान, इतना चमत्कृत है कि उससे बड़े-बड़े कला-मर्मज्ञों को भी चकाचौंध हो जाता है। इससे अधिक इस संबंध में और कुछ कहने के लिये इस छोटे-से निबंध में स्थान भी नहीं। लोक के सामान्य दैनिक दृश्य, जैसे आम की डाल पर से कोयल का बोलना, किसी गाय का अपने बच्चे को चाटना, यहाँ तक कि पुराने नौकर का अद्भुत व्यवहार, ऐसे विषय हैं, जो रवींद्रनाथ की क़लम का आश्रय पाकर अलौकिक आनंद के विधायक हो गए हैं। जिन साधारण बातों पर ध्यान देना हम अनावश्यक और समय का अपव्यय समझते हैं, वे ही कवि-सम्राट् के हृदय में लोकोत्तर भावों का उद्रेक करके विश्व-एकात्मवाद के गीतों की उद्भावना करती हैं।

इस प्रकार जब हम भारत की इस अप्रतिम विभूति की इस चूड़ांत बहुमुखी प्रतिभा को देखते हैं, तो हमारा हृदय असीम श्रद्धा, प्रेम

श्रीयुत रामनारायण मिश्र एम्० एस्-सी०

और स्वदेश-गौरव से भर जाता है। हमारी भगवान् से प्रार्थना है, वह चिरजीवी हों।

रामनारायण मिश्र (एम्० एस्-सी०)

× × ×

२. द्रोह-भरी संध्या

छिटक रही हैं अंतिम किरणें, खेत सिहरते हैं हरियाले,
और उधर रजनी अंबर में ढाल रही प्याले-पर-प्याले।
बरस पड़ा है तिमिर गगन का आज तुम्हारे कवि के ऊपर;
चला जा रहा वह खेतों की पगडंडी पर आहें भर-भर।
ख़ून चला पश्चिमी गगन में, ख़ून चला कवि के जीवन में;
यह कैसा उत्ताप समाया तृषा-दग्ध, रस-विरहित मन में।
अंधकार का पर्व अपावन इसे प्रकाशित कौन करेगा?
अंबर के इस रिक्त कलश को नव किरणों से कौन भरेगा?
कृषकों के इस महाक्लेश को कौन करेगा दूर, बताओ?
और रहेगा कब तक इन पर भाग्य-विधाता क्रूर, बताओ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये दुःखी हैं, दुख से इनका भरा हुआ है सारा जीवन;
ग्रीष्म चरण-तल में रोता है, आँखों में रोता है सावन।
भूखे, नंगे शिशुओं के वे दुर्बल प्राण निकल जाते हैं;
इस दुनिया को छोड़ अभागे क्षण-भर में ही टल जाते हैं।
उस क्षण कवि के क्या जाने उफ़! कितने गायन जल जाते हैं,
जब दुनिया के भूख-भरे ये जीवन-दिनकर ढल जाते हैं।
जिन किरणों से संसृति का यह मार्ग दिव्य होता आभामय,
जो दुनिया के पाप-ताप को दूर भगा देते हैं निश्चय,
फटे चीथड़ों को लपेटकर लज्जा जब झाँका करती है,
कृषक-कामिनी उनमें जीवन की क़ीमत आँका करती है,
तब कवि के प्राणों में क्या जाने कितने अंधड़ चिल्लाते;
क्या जाने उन्मत्त कहाँ से तूफ़ानों के दल घिर आते।
अंबर में जलधर रो-रोकर अगणित अंगारे बरसाते;
क्या जाने कितने झंझानिल कवि के मानस में घहराते!

गोपालदास मुंजाल

× × ×

३. श्रीअवधविहारी पांडेय और मारवाड़ का इतिहास

काशी-नागरी-प्रचारिणी पत्रिका की माघ, १९९७ की संख्या में श्रीयुत अवधविहारीजी पांडेय ने हमारे मारवाड़ के इतिहास के प्रथम भाग की समालोचना लिखी है। इसके पूर्वार्ध में उक्त इतिहास की जो प्रशंसा की गई है, उसके लिये हम आपके अत्यंत कृतज्ञ हैं। परंतु उत्तरार्ध में जो पांडित्य-पूर्ण सम्मतियाँ प्रकट की गई हैं, उनके विषय में कुछ निवेदन कर देना आवश्यक प्रतीत होता है।

पहली बात जो पांडेयजी को खटकी है, वह उक्त इतिहास में राजाओं की शासन-प्रणाली, प्रजा की आर्थिक दशा, व्यावसायिक जीवन, सामाजिक तथा धार्मिक संगठन और साहित्य तथा कला के वर्णन का अभाव है।

राजाओं की शासन-प्रणाली के विषय में हमारा नम्र निवेदन है कि मारवाड़ की राजतंत्र शासन-प्रणाली में मुग़ल-संपर्क से ही पहलेपहल परिवर्तन हुआ था, और उसका उल्लेख पुस्तक में यथास्थान कर दिया गया है। उसके पृष्ठ १९७ पर इस विषय में लिखा है—

"पहले लिखा जा चुका है कि इन(राजा शूरसिंहजी)के समय इनके प्रधान मंत्री भाटी गोविंददास ने राज्य का सारा प्रबंध बदलकर उस समय की प्रचलित शाही शैली के अनुसार कर दिया था। वही प्रबंध आज से क़रीब ५० वर्ष पूर्व तक चला आता था। परंतु भारत-सरकार के संबंध से आजकल उसमें थोड़ा-बहुत परिवर्तन कर उसे नया रूप दे दिया गया है।"

इसी प्रकार उसके पृष्ठ २४३ पर महाराजा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जसवंतसिंहजी प्रथम के विषय में लिखा है—"इन्होंने अपने राजकर्मचारियों के वेतन में वृद्धि कर रिश्वत की सख़्त मनाई कर दी थी।"

प्रजा की आर्थिक दशा और व्यावसायिक जीवन के विषय में हम सूचित करना चाहते हैं कि मारवाड़ निर्जल, रेतीला, कृषि-प्रधान और विरल जन-संख्यावाला देश है। इसके बड़े भाग में केवल एक ही फ़सल होती है, और वह भी वर्षा पर अवलंबित है। अतः यहाँ कृषि-कर्म में लगी प्रजा की आर्थिक दशा की हीनता और व्यावसायिक जीवन का अभाव प्रारंभ से ही सर्व-विदित है। बाह्य संपर्क के अभाव और विरल जन-संख्या होने से सामाजिक एवं धार्मिक संगठन का भी यहाँ अभाव-सा ही रहा है। हाँ, वैश्यों में जैन-धर्म के प्रचार के अतिरिक्त समय-समय पर राजाओं की विशिष्ट धर्मों की तरफ़ प्रवृत्ति होने के कारण नागरिक जनता में उसका थोड़ा-बहुत प्रभाव अवश्य पड़ा है, परंतु ग्रामीण जनता तो इससे भी अछूती ही रही है। साहित्य के विषय में इतना लिखना ही पर्याप्त होगा कि यहाँ के कवि अधिकतर अपने आश्रयदाता नरेशों की प्रसन्नता और प्रशंसा को आधार मानकर ही काव्य-रचना किया करते थे। इन विषयों का संक्षिप्त विवरण राष्ट्रकूट-नरेशों का प्रेम, धर्म और कला-कौशल-प्रेम नाम के इतिहास के आदि के अध्यायों में संक्षेप से दे दिया गया है।

दूसरी बात, जो पांडेयजी को खटकी है, पुस्तक में एक बड़े आकार के मारवाड़ और राजपूताना के नक़्शे का अभाव है। परंतु पुस्तक में इतने बड़े नक़्शे का जोड़ा जाना, जिसमें समग्र राजपूताने के छोटे-छोटे स्थानों का पता चल सके, नितांत असंभव है। फिर भी इस इतिहास के द्वितीय भाग के अंत में (जो प्रकाशित हो चुका है) मारवाड़-राज्य का एक नक़्शा लगा दिया गया है। इससे राज्य के मुख्य-मुख्य स्थानों के नामों, मारवाड़ के २२ प्रांतों की सीमाओं, मारवाड़ की सीमा और उससे मिलनेवाली सीमावाले देशों के नामों, झीलों, रेल और सड़कों आदि का बोध हो सकता है।

तीसरा अभाव, जो आपको खटका है, पुस्तक के चित्रों पर काल, निर्माता और प्राप्ति-स्थान का लिखा न होना है। परंतु ये सारे ही चित्र प्राचीन चित्रों के आधार पर बने नए चित्र हैं। अनुमान होता है कि आपका ध्यान इनकी रचना-शैली और कुछ चित्रों के नीचे अँगरेज़ी में लिखे चित्रकार के नाम की तरफ़ न जाने के कारण ही आपको इनकी प्राचीनता का भ्रम हो गया है।

आगे आपने मालदेव तथा हुमायूँ और जसवंतसिंह तथा दारा के संबंध दिखाने तथा राव चंद्रसेन और महाराणा प्रताप की तुलना करने में हम पर पक्षपात का दोष लगाया है। परंतु अधिक उत्तम तो यह होता कि आप हमारे दिए प्रमाणों का खंडन कर हमारे लिखे को भ्रांत सिद्ध कर दिखाते। ऐसा न करके पक्षपात का 'फ़तवा-मात्र' दे देने से तो स्वयं समालोचकजी का ही पक्षपात प्रकट होता है।

इसी के साथ आपने मोटा राजा उदयसिंह और कल्याणसिंह आदि के मुग़ल सम्राटों के साथ किए विवाह-संबंधों के उल्लेख के अभाव पर कटाक्ष किया है। यह किसी हद तक ठीक भी है। परंतु जब उक्त भाग में राजाओं की अन्य कन्याओं के विवाह-संबंधों का भी उल्लेख नहीं, तब उपर्युक्त संबंधों के लिये ही आपको इतनी चिंता क्यों हुई? क्या हम इसे आपकी परोत्कर्षासहिष्णुता समझ सकते हैं?

आगे अवधविहारीजी लिखते हैं—"पुस्तक का नाम मारवाड़ का इतिहास होते हुए भी इसमें न तो कहीं यही कहा गया कि इसमें मारवाड़ एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशिष्ट अर्थ में प्रयुक्त है, और न बीकानेर तथा किशनगढ़ का इतिहास ही दिया गया है।"

इन पंक्तियों से समालोचकजी की अभिज्ञता को ही ठेस पहुँचती है। यह भ्रम आपको कलकत्ता आदि नगरों में भ्रांत धारणा के आधार पर प्रयुक्त होनेवाले मारवाड़ी-शब्द को सुनकर ही हुआ है। परंतु वहाँवाले तो जयपुरवालों तक को भी मारवाड़ी ही कहते हैं। हम पांडेयजी को विश्वास दिलाते हैं कि बीकानेर और किशनगढ़ के नरेशों के मारवाड़-नरेशों के छोटे भाइयों में होने पर भी उनके बीकानेर और किशनगढ़-राज्य मारवाड़ के बाहर हैं। हाँ, उनकी सीमा मारवाड़ की सीमा से अवश्य मिलती है। मारवाड़-शब्द से तो केवल जोधपुर-राज्य का ही बोध होता है, जैसा आगे उक्त इतिहास से ही उद्धृत कर आपकी भ्रांत धारणा का निराकरण किया जायगा।

इसके बाद आपने लिखा है—"पुस्तक पढ़ने से प्रतीत होता है कि मारवाड़ वह लघुतम से लेकर महत्तम प्रदेश है, जो किसी समय वर्तमान जोधपुर-नरेश के पूर्व-पुरुषों के अधिकार में था। इसी कारण संभवतः मल्लिनाथ और जगमाल की रावों में गिनती नहीं की गई है।"

बलिहारी है आपकी इस प्रतीति की। अस्तु। यह भ्रम भी आपको मारवाड़-प्रदेश की अनभिज्ञता के कारण ही हुआ है। वास्तव में मालानी का प्रदेश, जिस पर रावल मल्लिनाथजी और जगमालजी की संतान का अधिकार है, मारवाड़ का ही एक प्रांत है। राव सलखाजी के बड़े पुत्र मल्लिनाथजी और पौत्र जगमालजी तो मालानी के ही शासक रहे, परंतु राव सलखाजी के छोटे पुत्र (राव वीरमजी) के द्वितीय पुत्र राव चूंडाजी ने मंडोर पर अधिकार कर लिया था। इससे उनकी शाखा मुख्य शाखा हो गई, और मालानीवालों की गौण रह गई। इसके बाद मालानीवाले स्वयं भी उपर्युक्त मुख्य शाखा के सामंत हो गए। इसी कारण मल्लिनाथजी और जगमालजी का नाम मुख्य शाखा में न रखकर गौण शाखा में रक्खा है।

इसके बाद तो पांडेयजी ने क़लम ही तोड़ दी है। आप लिखते हैं—"यद्यपि यह स्पष्ट है कि यह पुस्तक बड़े श्रम और छान-बीन का फल है, तो भी वर्तमान स्वरूप में यह इस नाम के योग्य नहीं, जो इस पर अंकित है।"

धन्य हैं हमारे समालोचक पांडेयजी, और धन्य है नागरी-प्रचारिणी पत्रिका का संपादक-मंडल, जो ऐसे विज्ञ समालोचकों से समालोचना लिखवाकर साहित्य की हत्या करने के साथ ही अपने गौरव को भी मलिन करता है।

मारवाड़-शब्द केवल उस प्रदेश का ही बोधक है, जो जोधपुर-राज्यांतर्गत है, उससे बीकानेर या किशनगढ़ - राज्य का कोई संबंध नहीं। यह बात इतिहास का एक साधारण जानकार भी जानता है, और यही बात हम उक्त इतिहास के प्रारंभ में भी स्पष्ट तौर से लिख चुके हैं। जैसे—

"यह देश राजपूताने के पश्चिमीय भाग में है, और इसका विस्तार यहाँ के सब राज्यों से अधिक है। इसकी लंबाई ईशानकोण से नैर्ऋत्यकोण तक ३२० मील और चौड़ाई उत्तर से दक्षिण तक १७० मील है।

"इसके पूर्व में जयपुर, किशनगढ़ और अजमेर, अग्निकोण में मेरवाड़ा और उदयपुर (मेवाड़); दक्षिण में सिरोही और पालनपुर, नैर्ऋत्यकोण में कच्छकारण, पश्चिम में थरपारकर और सिंध, वायव्यकोण में जैसलमेर तथा उत्तर में बीकानेर और ईशानकोण में शेखावाटी है।

"यद्यपि आजकल यह देश २४ अंश ३६ कला उत्तर अक्षांश से लेकर २७ अंश ४२ कला उत्तर अक्षांश तक तथा ७० अंश ६ कला पूर्व देशांतर से लेकर ७५ अंश २४ कला पूर्व देशांतर तक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फैला हुआ है, और इसका क्षेत्रफल ३५,०१६ वर्ग-मील है,……" (पृष्ठ १)

इतना लिखा होने पर भी यदि पांडेयजी को भ्रम हो, तो यह हमारा या उनका दुर्भाग्य ही है।

विश्वेश्वरनाथ रेउ

×

४. अंतर्ध्वनि

उस दिन क्या कुछ बोल सकूँगी ?
युग-युग से जो गाँठ पड़ गई, उसे कभी क्या खोल सकूँगी ?
सूनी रात, दिवस सूना-सा,
सूनी सेज, सदैव निराशा
कँप-कँप जाते रोम-रोम जब,
क्रंदित होती मौन पिपासा।
सूनी-सूनी इस तड़फन में, सूना हृदय टटोल सकूँगी ?
अपनी-अपनी गाँठ सँभाले
कितने घूम रहे मतवाले;
वही धन्य मधु-मास मनाते,
जो प्रीतम गलबहियाँ डाले।
तेरे सूने अभिनव जग का लगा कभी मैं मोल सकूँगी ?
कितना मोह-भरा यह जीवन!
भूल सकूँगी क्या अपनापन ?
सुनती हूँ, तुम झलक दिखाते,
जब जग में आता सूनापन।
इस सूनेपन, अपनेपन की पोल कभी मैं खोल सकूँगी ?
उस दिन क्या कुछ बोल सकूँगी ?

राजेश्वरप्रसाद वर्मा 'चक्र'

×

५. मैं बंधन-मुक्त हूँ !

बालुका में खड़ी कर्मयोगी की प्रस्तर-मूर्ति अस्फुट स्वर में कह रही है—"स्वराज्य मेरा जन्म-सिद्ध अधिकार है।"

घोर अंधकार है। अथाह सागर है। एक नाव है!

आकाश में तारावलियाँ लटक रही हैं। एक तारा टूटा, ब्रह्मांड में विलीन हो गया।

नौका छोड़ दी गई। पतवार नहीं है। मरना-जीना अनपेक्षित है।

"स्वराज्य मेरा जन्म-सिद्ध अधिकार है।" की आवाज़ मेरे कानों में आ रही है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

असीम मेरा बंधन है, अनंत मेरा लक्ष्य। यह सब कुछ जो मेरा है, मेरा कुछ नहीं। मैं चला जा रहा हूँ।

मैं न कर्मयोगी हूँ, न भुक्तभोगी। न मेरा घर है, न द्वार। अखिल विश्व मेरा परिवार है। समस्त योगायोग का मैं वाहक हूँ। और, मैं चला जा रहा हूँ।

सब कुछ असीम है; सब कुछ ससीम। पुण्य और पाप भी कुछ है या नहीं, मैं नहीं जानता। ईश्वर और अनीश्वर से मुझे कोई मतलब नहीं।

किसी ने कहा—"मैं सुख चाहता हूँ।" किसी ने कहा—"मैं दुख से घबरा गया हूँ।" पर सुख और दुख दोनों साथ चलते हैं। अभी किनारे से चला आ रहा हूँ। इस अंधकार-भरी, घोर निराशा-पूर्ण, नीरव रात्रि में भी एक बूढ़ी भिखारिन—जर्जरित देहवाली—बालुका में खड़ी थी। किसी अमीर द्वारा मीठा पानी पीकर और तरी खाकर जूठे फेके हुए कच्चे नारियल की खोपड़ी से अवशेष निकालकर खा रही थी। उसके पेट की ज्वाला ने मुझसे भिक्षा चाही। मैंने मुँह फेर लिया, और चला आया।

रास्ते में बड़ी-बड़ी अट्टालिकाएँ थीं। एक ओर खड़ी वारांगना ने मेरा आह्वान किया था। उसके रूप और यौवन-मद ने, नूपुर-झंकार ने भी मुझे लुभाया था; पर मैंने रास्ता बदल दिया, और दूसरी ओर से चला आया।

न मैं रागी हूँ, न विरागी। ये नए वस्त्र और अलंकार भी मुझे नहीं चाहिए। केवल लँगोटी रहने दो। मस्तक-किरीट उतार दो। तपस्या की अग्नि नहीं जलाना है। दिगंबर मत होने दो। और, मैं चला जा रहा हूँ।

संतोष की मैंने साँस ली है, और असंतोष को भी मैंने जाना है। न मैं भाग्याधीन हूँ, न कर्माधीन। कहाँ जाकर मेरी नैया लगेगी, या तूफ़ानों से ही टकरा जायगी, या गहरे गर्त में समा जायगी, इसका भी मुझे पता नहीं। जल-ही-जल है, तल नहीं। और, ऊपर अंधकार है। मैं बहा चला जा रहा हूँ।

"स्वराज्य मेरा जन्म-सिद्ध अधिकार है।" की आवाज़ मेरे कानों में आ रही है। पर मुझे न 'स्व-राज्य' चाहिए, न 'पर-राज्य'। किनारे पर आ-आकर लोल लहरियाँ मेरा संदेश सुनाए जा रही हैं—

"मैं बंधन-मुक्त हूँ!"

भानुकुमार जैन

× × ×

६. निशि-बालिका

आज पूर्णिमा है—

निशि-बालिका ने कई दिनों तक अपने वैभव पर गर्व किया था,……पर

पर आज अपने प्रियतम के वैभव के आगे आत्मसमर्पण करने में उसे और भी अधिक गर्व है।

उसके हृदय की, प्रणय-सुख की श्वासें न-जाने कितनी अधखिली कलियों को जीवन में फलने-फूलने का आशीर्वाद दे रही हैं।

उसका हृदय स्वागत के लिये उल्लसित हो रहा है।

पर आज उसने अपने चीर का प्रशस्त अंचल समेट लिया है।

चंद्र के कोमल कर-स्पर्श न-जाने क्यों उसे इतना अधिक संकुचित बना रहे हैं।

सुबोध अदावाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

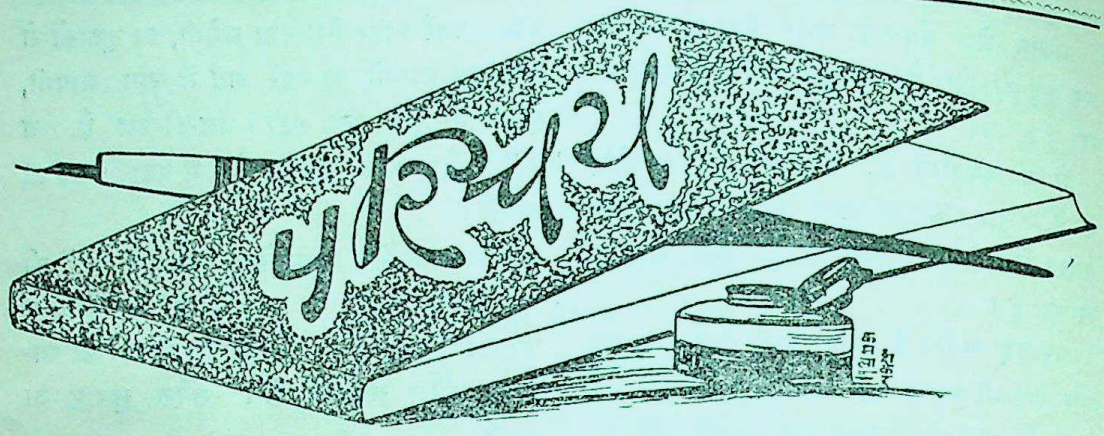

रूसी कहानी-संग्रह—लेखक, श्रीकांतिचंद्र सौनरिक्सा बी० ए०; प्रकाशक, इंडियन-प्रेस लिमिटेड, प्रयाग; पृष्ठ-संख्या १८०; मूल्य ॥)

यह सरस्वती-सीरीज़ की दूसरी पुस्तक है। अनुवादकर्ता ने इसमें श्रेष्ठ तथा प्रतिभाशाली रूसी कलाकारों की ग्यारह कहानियों का संकलन किया है। रूसी जीवन और भारतीय जीवन में बहुत कुछ साम्य होने के कारण, विशेषतया मध्य तथा निम्न श्रेणियों में, हिंदी पढ़नेवालों को ये कहानियाँ समझने में कठिनाई नहीं होती। कहानियाँ चुनने में संकलनकर्ता बहुत पटु हैं। प्रस्तुत पुस्तक में रूसी जीवन के ध्यान देने योग्य पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है। अंतिम कहानी में, जैसा संकलनकर्ता ने स्वयं कहा है, हास्य तथा व्यंग्य का अद्भुत सम्मिश्रण है। नौ कहानियाँ दुःखांत होने के कारण हृदय हिला देनेवाली हैं। केवल 'बड़ा दिन और विवाह' मामूली कहानी है। इसके स्थान पर विश्व-विख्यात उपन्यासकार डोस्टोएवस्की की और कोई उत्कृष्ट कला का सुंदर नमूना होता, तो बहुत अच्छा था।

पुस्तक के आरंभ में जो भूमिका दी गई है, उसमें जिन रूसी लेखकों की कहानियों का संकलन किया गया है, उनकी संक्षेप में जानकारी कराई गई है। पाद-टिप्पणी में रूसी शब्दों के अर्थ दे देने से पुस्तक की उपयोगिता बढ़ गई है। पुस्तक की भाषा सरल, सुबोध और चलती हुई है। फिर भी कहीं-कहीं परिमार्जन चाहती है। क्या-क्या है ?' (पृष्ठ ७३)—इस वाक्य से कोई मतलब नहीं निकलता। यत्र-तत्र छापे की भूलें भी खटकती हैं; जैसे 'नकुरलों' (पृष्ठ ९४)।

इन क्षुद्र त्रुटियों के रहने पर भी कहानियाँ मनोरंजक और अंत तक पाठकों का ध्यान आकृष्ट किए रहनेवाली हैं। हमें विश्वास है, कहानी-प्रेमियों द्वारा इस संग्रह का उचित आदर होगा।

× × ×

चक्र-भेद—लेखक, श्रीमहावीरप्रसाद गहमरी; प्रकाशक, इंडियन-प्रेस लिमिटेड, प्रयाग; पृष्ठ-संख्या २०८, मूल्य ॥)

प्रस्तुत उपन्यास सरस्वती-सीरीज़ की पाँचवीं पुस्तक है। लेखक की लेखनी में शक्ति है, और कल्पना में मौलिकता। पुस्तक की भाषा बड़ी संयत तथा शुद्ध है। उसमें प्रवाह है, और है एक मीठी चुलबुलाहट। कारण यह है कि छोटे-छोटे वाक्यों का प्रयोग है, और उर्दू के साधारण शब्दों को उचित ढंग से अपनाया गया है। फिर भी कहीं-कहीं भाषा-संबंधी दुर्बलताएँ हैं। भूतों के मानने के लिये 'भौतिक लीला' कहना अनुचित है। 'आकाश में काले मेघ छा रहे थे, अर्थात् भविष्यत् बड़ा ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनिश्चित था।' इस वाक्य की फूहड़ अलंकारिता पर तो हँसी आ जाती है।

उपन्यास का कथानक चुस्त तथा सुसंबद्ध है। घटनाओं का विकास क्रमिक एवं स्वाभाविक रूप से कराया गया है, यद्यपि यत्र-तत्र संयोग-तत्त्व (chance element) का आश्रय अधिक लिया गया है। सारा कथानक रोमांच तथा रहस्य से ओत-प्रोत है। पाठक की जिज्ञासा सदैव बनी रहती है। उपन्यास चरित्र अथवा भाव-प्रधान नहीं, प्रत्युत घटना-प्रधान है, और इस दृष्टि से सफल है। वर्तमान सभ्यता की स्थान-स्थान पर आलोचना और विहारी जीवन पर कड़ुए कटाक्षपात देखने को मिलते हैं। अंत में नारीत्व की श्रेष्ठता और गौरव का अंकन करने में लेखक का प्रयत्न प्रशंसनीय है। कहानी मनोरंजन-पूर्ण है, और कथोपकथन सुंदर तथा चुभते हुए हैं। जासूसी उपन्यास-प्रेमी इसे अवश्य पढ़कर देखें।

× × ×

मेरा संघर्ष—अनुवादक, श्रीगणेशप्रसाद द्विवेदी एम्० ए०; प्रकाशक, इंडियन-प्रेस लिमिटेड, प्रयाग; पृष्ठ-संख्या १७४+६ (परिशिष्ट) मूल्य ॥)

यह सरस्वती-सीरीज़ की सातवीं पुस्तक है। बचपन में जो परले सिरे का ज़िद्दी था, और साधारणतया अच्छा बालक न था, जिसे किसी तरह का बंधन असह्य था, जिसका मन स्कूलों के पाठ्य विषयों के पढ़ने में बिलकुल न लगता था, वह आगे चलकर संकल्प करता है कि 'जर्मनी को यदि अपना अस्तित्व रखना है, तो युद्ध के पहले की गई भूलों से बचना होगा। वह अपने सबसे भयानक भीतरी शत्रु को जितनी जल्दी पहचान सके, उतना ही उसके लिये अच्छा है।' एतदर्थ वह अध्ययनशील बनता है, मार्क्सवाद और यहूदीवाद को भयानक भीतरी शत्रु पहचानता है, और प्रथम विश्वव्यापी महायुद्ध के समय की भूलों से बचने के लिये 'दि नेशनल सोशलिस्ट जर्मन लेबर-पार्टी' की स्थापना करता है। आज ऐसा कौन व्यक्ति होगा, जिसकी ज़बान पर हिटलर-शब्द चौबीस घंटे में एक बार न आता हो? उसने अपना दृष्टिकोण अपनी अमर रचना 'मेनकैंफ़' में उपस्थित किया है। प्रस्तुत पुस्तक उसी का कुछ संक्षिप्त रूप में, सबके समझने योग्य भाषा में, साधु अनुवाद है। वस्तुतः मूल-पुस्तक के भावों की पूर्ण रक्षा करते हुए अनुवादक ने अपनी शैली सर्वथा सरल और सरस रक्खी है। इसलिये अनुवादक बधाई के पात्र हैं!

प्रस्तुत पुस्तक में दो भाग हैं। अठहत्तर पृष्ठों के पहले भाग में पिछले युद्ध में जर्मनी की अपमान-जनक पराजय के कारणों का अन्वेषण किया गया है, और दूसरे भाग में जातीय सामाजिक आंदोलन के सिद्धांतों और आदर्शों का दिग्दर्शन है। परिशिष्ट में पच्चीस धाराएँ दी हुई हैं, जिन्हें हिटलर ने १९२०वाली सभा में घोषित किया था। पुस्तक बहुत ही समयोपयोगी होने के कारण संग्रहणीय है।

हम दृढ़ता-पूर्वक कहेंगे कि जो एक पैर क़ब्र में रख चुके हैं, और इस पृथ्वी पर दूसरा पैर रहते हुए भी जिनकी चिंता परलोक के लिये ही चौबीस घंटे है, उन लोगों को छोड़कर बाक़ी जितने विचारशील हैं, जिनको वर्तमान संकट से अपनी और अपने देश की रक्षा का ज़रा भी ख़याल है, उन्हें इस पुस्तक को अवश्य एक बार पढ़कर मनन कर लेना चाहिए।

हिटलर की निम्न-लिखित बात की ओर हम विशेषकर विद्यार्थियों का ध्यान आकर्षित करते हैं—"आम तौर से तीस वर्ष की अवस्था से पहले किसी को राजनीति में भाग न लेना चाहिए।..... इस अवस्था तक विचारों में प्रौढ़ता आ जाती है, और इसके बाद जो कुछ वह सीखता है, उससे मौलिक विचारों का विस्तार और विकास होता रहता है।" (पृष्ठ १७)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक में 'पर मेरे भविष्य का निर्णय इतनी शीघ्रता से हो गया, जितने की मुझे आशा नहीं थी।' (पृष्ठ ७), 'इनको दंड नहीं दिया सकता।' (पृष्ठ १४०) - जैसे कुछ वाक्य खटकनेवाले हैं, और कहीं-कहीं छापे की भूलें भी हैं, जो आशा है, अगले संस्करण में दूर कर दी जायँगी।

अंत में एक बार पुनः कह देना आवश्यक जान पड़ता है कि इस पुस्तक को पढ़कर हिटलर की मनोवृत्ति समझ लेना वर्तमान स्थिति में हम सबका परमावश्यक कर्तव्य है। ऐसी उपयोगी पुस्तक निकालने के लिये हम इंडियन-प्रेस लिमिटेड को बधाई देते हैं!

कालीचरण चटर्जी (एम्० ए०)

× × ×

दैनिक जीवन और मनोविज्ञान—लेखक, श्री-इलाचंद्र जोशी; प्रकाशक, इंडियन-प्रेस लिमिटेड, प्रयाग; पृष्ठ-संख्या १६४; मूल्य ॥) ; छपाई स्वच्छ।

इंडियन-प्रेस, प्रयाग द्वारा प्रकाशित सरस्वती-सीरीज़ की यह छठी पुस्तक है। श्रीइलाचंद्र जोशी हिंदी के ख्याति-लब्ध, सुयोग्य लेखक हैं। प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने जीवन की अनेक मनोवैज्ञानिक घटनाओं पर प्रकाश डाला है। अँगरेज़ी में दैनिक जीवन की मनोवैज्ञानिक व्याख्या पर अनेक लेखकों ने भिन्न-भिन्न दृष्टिकोणों से प्रकाश डाला है। श्री-जोशीजी ने इन पुस्तकों का आश्रय तो अवश्य लिया है, पर फिर भी भारतीय प्रवृत्तियों की अवहेलना नहीं की। यह बात संतोष-जनक है।

इस पुस्तक में मनोविकारों का चित्रण, विभिन्न प्रकार के भयों का निरूपण, अहंकार, महत्त्वाकांक्षा, क्षति-पूर्तियाँ, जाग्रत् और स्वप्न, स्त्री-पुरुष, समाज और व्यक्तित्व आदि विषयों पर गंभीर विचार किया गया है। लेखक के विचारों से हम सभी स्थलों पर सहमत नहीं हो सकते। पर लेखक की अपनी एक विशेष धारा है, और उसकी अपेक्षा हमें उनके अध्ययन का अवसर प्राप्त होता है। पुस्तक में कुछ अनपेक्षित शीर्षक भी हैं—जैसे 'हमें उपन्यास क्यों प्रिय लगते हैं?' भाषा और विचार, दोनो की दृष्टि से पुस्तक उपादेय है।

× × ×

सूर-संदर्भ - संकलनकर्ता और भूमिका-लेखक, श्रीनंददुलारे वाजपेयी, एम्० ए०; प्रकाशक, इंडियन-प्रेस लिमिटेड, प्रयाग; पृष्ठ-संख्या १६४+३४; मूल्य ॥)

श्रीवाजपेयीजी द्वारा संकलित सूर की रचनाओं का यह संदर्भ सरस्वती-सीरीज़ का गौरव बढ़ानेवाला है। सूर, तुलसी और कबीर हिंदी-साहित्य में अमर व्यक्ति हैं। आशा है, सूर-संदर्भ की तरह इस सीरीज़ में तुलसी और कबीर को भी स्थान मिलेगा।

श्रीवाजपेयीजी ने सूर के पदों का सुंदर संकलन किया है। जहाँ तक हो सका है, सूर-सागर के सभी आवश्यक आख्यानों को इसमें स्थान दिया गया है। काव्य-सौंदर्य और कथा की रमणीयता, दोनो को अक्षुण्ण रखने में संपादक महोदय सफल हुए हैं। विद्यार्थियों के अनुपयुक्त शृंगारी स्थलों को निकाल दिया गया है। नागरी-प्रचारिणी-सभा द्वारा संपादित सूर-सागर में भाषा, छंद और तिथि-संबंधी जो नियम निर्धारित किए गए थे, उनका इस संदर्भ में भी पालन किया गया है। सूरदास के काव्य और उनकी जीवनी के संबंध में योग्य लेखक ने उदार और गंभीर विचार प्रकट किए हैं। मूल-पुस्तक में दी गई टिप्पणियाँ विद्यार्थियों के लिये अवश्य उपयोगी होंगी।

× × ×

रामकृष्णचरितामृत—लेखक, पं० लल्लीप्रसाद पांडेय; प्रकाशक, इंडियन-प्रेस लिमिटेड, प्रयाग; पृष्ठ-संख्या १६२; मूल्य ॥)

सरस्वती-सीरीज़ की यह दसवीं पुस्तक बंगाल के परमहंस श्रीरामकृष्णजी के जीवन से संबंध रखती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखक ने परमहंसजी का जीवन-चरित्र सुंदर और ललित भाषा में लिखा है। पुस्तक के उत्तरार्ध में रामकृष्णजी के वचनामृतों का भी सुंदर संकलन है। पुस्तक के अंत में रामकृष्ण-मंदिर, मठ और मिशन की शाखाओं की सूची दी गई है। श्रीरामकृष्ण के भक्तों के लिये ही नहीं, प्रत्युत सभी पुरुषों के लिये यह पुस्तक उपादेय है।

(श्रीमती) रत्नकुमारी (एम्० ए०)

× × ×

मोपासाँ की कहानियाँ—अनुवादक, श्रीइलाचंद्र जोशी; प्रकाशक, इंडियन-प्रेस लिमिटेड, प्रयाग; मूल्य ॥); पृष्ठ-संख्या २००।

प्रस्तुत पुस्तक सरस्वती-सीरीज़ की १४वीं पुस्तक है। इसमें मोपासाँ की १७ कहानियाँ संगृहीत तथा अनूदित होकर हिंदी-संसार के लिये प्रस्तुत की गई हैं।

हिंदी-जगत् में कहानियों की जो बाढ़ आई हुई है, उसके समानांतर यदि हम इन फ्रेंच-कहानियों को रखकर ज़रा विचार करने का प्रयत्न करें, तो हमें तुरंत अनुभव होगा कि अभी हिंदी-कहानी-कला में बहुत कुछ उन्नति की आवश्यकता है। मोपासाँ संसार के उन सर्वश्रेष्ठ कलाकारों में से हैं, जो अपने पीछे अपनी कला की अमिट छाप संसार के इतिहास में छोड़ गए हैं। अतएव इस छोटी-सी पुस्तिका द्वारा हिंदी-संसार को उसकी कला का जो कुछ भी परिचय प्राप्त होगा, वह वास्तव में अभिनंदनीय ही होगा।

मोपासाँ दांपत्य जीवन और काम-विज्ञान का अनन्य आचार्य हुआ है। पुरुष और नारी के वैध या अवैध प्रेम के विषय में उसका अनुभव और निरीक्षण बहुत ही विस्तृत था। इसीलिये उसकी कहानियाँ 'धर्मध्वजी' लोगों को अश्लील मालूम हो सकती हैं, किंतु मानव-स्वभाव से परिचित सभी सहृदय व्यक्ति उन कहानियों में समाज के अप्राकृतिक नियमों की एक सजीव समालोचना और प्राकृतिक प्रवृत्तियों का एक जाग्रत् रूप पाएँगे।

उसकी प्रत्येक कहानी एक अनमोल मोती है, उसमें एक विचित्र आकर्षण और हृदय को बेधने-वाली अनी है, जो पाठक के हृदय में रह-रहकर कसकती है।

इस कहानी-संग्रह में यद्यपि मोपासाँ की अच्छी कहानियाँ एक भी नहीं आईं, किंतु जो भी दी गई हैं, वे साधारणतः उसकी कला का पर्याप्त परिचय दे सकती हैं।

अनुवाद की भाषा चलती हुई है, छपाई-सफ़ाई सुंदर और आकर्षक।

× × ×

महान् अपराधी (उपन्यास)—लेखक, श्रीराजेश्वरप्रसादसिंह; प्रकाशक, इंडियन-प्रेस लिमिटेड, प्रयाग; मूल्य ॥)

'महान् अपराधी' एडगर वालेस के उपन्यासों के ढंग पर लिखा हुआ एक 'रहस्य रोमांच'-विषयक 'समय-काटू' उपन्यास है। गहमरी शैली के उपन्यासों, 'चंद्रकांता-संतति'-शैली के तिलिस्मी गोरखधंधों तथा 'कटोरा-भर ख़ून'-जैसे क़िस्सों के बाद हिंदी-जगत् में जिस पाश्चात्य वैज्ञानिक अपराधवाद ने पदार्पण किया, उसका यह उपन्यास एक नमूना है। न्यूयार्क और लंदन के गैंग्स्टर्स के जिन लोमहर्षक अपराधों की कथाएँ 'न्यूज़ ऑफ़् दि वर्ल्ड'-जैसे सनसनी-पसंद अख़बारों में निकला करती हैं, उन्हीं अपराधों की अवतारणा भारतीय महानगरी कलकत्ता और बंबई में धीरे-धीरे हो चली है, तदनुसार वैसे ही उपन्यासों और कहानियों की आवश्यकता भी पाठक शायद अनुभव करने लगे हैं। उसी आवश्यकता की तीव्र पुकार पर श्रीराजेश्वरप्रसादसिंहजी ने इस महान् अपराधी की रचना कर डाली।

पुस्तक की भाषा-शैली से प्रतीत होता है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखक महोदय ने पहले पुस्तक अँगरेज़ी में लिखकर फिर उसकी हिंदी बनाई है।

पुस्तक है बड़ी मोहक, एक बार लेकर फिर समाप्त करके ही उठना पड़ा।

यह भी सरस्वती-सीरीज़ की ११वीं पुस्तक है।

इसमें शेरसिंह-नामक एक प्रसिद्ध अपराधी तथा प्रसिद्ध जासूस रायबहादुर जतींद्रनाथ मुकर्जी की सावित्री-प्रेम-रूप रस्साकशी तथा तदनुवर्तिनी विविध अपराध-गाथाएँ बड़े ही रोचक ढंग से वर्णन की गई हैं। जासूसी उपन्यासों के प्रेमियों को इसे ज़रूर पढ़ना चाहिए।

× × ×

मृत्यु-किरण—अनुवादक, श्रीराजेश्वरप्रसादसिंह; प्रकाशक, इंडियन-प्रेस लिमिटेड, प्रयाग; मूल्य ।।)

दुःख है, लेखक महोदय ने असली ग्रंथ के लेखक का कोई पता इस पुस्तक पर नहीं दिया! किंतु यह तो निश्चित ही है कि पुस्तक अँगरेज़ी-उपन्यास का भावानुवाद है। व्यक्तियों को भी अनुवादकजी ने हिंदुस्थानी नाम देकर उन्हें हिंदुस्थानी जामा पहना दिया है।

पुस्तक की भाषा शिथिल और बेमुहावरा है। और, अनुवाद बहुत अच्छा नहीं हुआ।

'मृत्यु-किरण' Death Ray-नामक एक वैज्ञानिक आविष्कार द्वारा—जो बिजली द्वारा 'आणविक' विश्लेषण की चरम सीमा का ही दूसरा नाम है—संसार को क्षण-मात्र में विनष्ट करने के एक भयंकर प्रयत्न के अनुषंग में चलनेवाली एक प्रणय-लीला तथा तद्बाधक प्रयत्नों के घात-प्रतिघात का वर्णन करनेवाला एक रोचक उपन्यास है।

कहीं-कहीं पुस्तक में अच्छे, रोचक वर्णन हैं, और लोमहर्षक घटना-चक्र से पाठक प्रभावित हो उठता है। किंतु कहीं-कहीं वैज्ञानिक पहेलियाँ कुछ तिलिस्म का-सा रंग पकड़ लेती और असंभव की सीमा तक पहुँचकर 'हवाई उड़ान'-सी प्रतीत होने लगती हैं।

उपन्यास एडगर वालेस-प्रणाली का है, अतएव काफ़ी रोचक और 'समय-काटू' है।

यह सरस्वती-सीरीज़ का १२वाँ ग्रंथ है।

× × ×

अभिसारिका—अनुवादक, श्रीनरोत्तमप्रसाद नागर; प्रकाशक, इंडियन-प्रेस लिमिटेड, प्रयाग; मूल्य ।।)

यह भी सरस्वती-सीरीज़ की १३वीं पुस्तक है। इस पर लिखा है कि यह मैडेम बोवेरी के एक विश्व-विख्यात ग्रंथ का अनुवाद है। संभवतः लेखक महोदय का अभिप्राय 'गुस्ताव फ़्लाबर्ट' के 'मैडेम बोवेरी'-नामक प्रसिद्ध यथार्थवादी उपन्यास से है।

'अभिसारिका' में वर्णित कथा संसार के वैवाहिक जीवन की उलझी हुई समस्या का एक सुंदर विश्लेषण है। कोरी भावुकता से भरी हुई एक दुर्बल स्त्री के नैतिक जीवन का धीरे-धीरे, किंतु अवश्यंभावी रूप से किस प्रकार पतन होता है। वह एक डॉक्टर से शादी करती है। डॉक्टर दिल का अच्छा है, लेकिन थोड़ा मूर्ख। फल-स्वरूप थोड़े ही दिनों में स्त्री को अपना जीवन भार प्रतीत होने लगता है। वह फिर अन्य कई व्यक्तियों से प्रेम करने लगती है। पति की आमदनी की कमी तथा रोज़गार में व्यस्तता, दोनो ही उसे एक धनी महाजन की बाँहों में ढकेल देते हैं, और प्रोनोट पर प्रोनोट लिखकर वह रुपया पानी की तरह बहाती और अपना शरीर फूलों की तरह लुटाती है। ख़ूब मौज करती है। पति का धन भी उसी नाली में होकर बह जाता है। डॉक्टर बेचारा बर्बाद हो जाता है। प्रोनोट महोदय अंत में अपना रुपया माँगते हैं, और तब औरत को होश आता है। कोई चारा न देखकर, कार्बोलिक एसिड पीकर वह आत्महत्या कर लेती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसके मरने के बाद डॉक्टर को अपनी पत्नी के कुछ पत्र, जो उसने अपने प्रेमियों को लिखे, और जो 'डेड लेटर-ऑफ़िस' से वापस आए, मिलते हैं, तब उसे असलियत का पता चलता है, और वह भी सदमे के धक्के से मर जाता है।

पति की गौने के समय की जल्दबाज़ी और औरत को एकदम निगल जाने की इच्छा तथा बाद के ढलाव की ढीलमढाल तथा पत्नी से अधिक व्यवसाय की चिंता आजदिन प्रत्येक घर में देखी जाती है, और इसीलिये अधिकांश भावुक पत्नियाँ व्यभिचार की ओर प्रवृत्त होती पाई जाती हैं, क्योंकि पति की पहले की उतावली से एकदम उभरी हुई उनकी वासना, बाद के नीरस जीवन से बेमेल और बेसुरी होकर, तबले और साज़ की तरह ठोक-पीट और उमेठ की अपेक्षा करती है, और जो कोई उसे उमेठ सकता है, उसी की ओर वह अभिमुख हो जाती है। इसी यथार्थ रहस्य का उद्घाटन इस उपन्यास में किया गया है।

यदि कहीं अनुवाद ढंग का होता, तो सोने में सुगंध होती। अनुवाद की ऊटपटाँग, बेमुहावरे तथा ऊबड़-खाबड़ भाषा ने ग्रंथ का सब मज़ा किरकिरा कर दिया है। उसके पढ़ने में मन ही नहीं लगता। अगले संस्करण में उसे फिर से लिखवाना ठीक होगा।

सुधींद्र वर्मा (एम्० ए०, एल्-एल्० बी०)

छप रही है! हिंदी में नवीन पुस्तक !! छप रही है !!!

सत्ययुग-मीमांसा अर्थात् चेतावनी-रहस्य ; इसका मूल्य ।–) रक्खा गया है, किंतु एक मास के भीतर =) के डाक-टिकट भेजनेवालों को इसकी एक प्रति प्रचारार्थ भेजी जायगी। शीघ्रता कीजिए, मौक़ा न चूकिए।

चंद्र कार्यालय, हालू बाज़ार, भिवानी

अशक्ति का कट्टर दुश्मन
आंतकनिग्रह गोलियाँ

शरीर में खरा जोश पैदा करके कैसा भी अशक्त पुरुष हो, उसे नौजवान बना देती हैं। ३२ गोलियों की डिब्बी की क़ीमत १)

आंतक-निग्रह-औषधालय
जामनगर, काठियावाड़

लखनऊ-एजेंट—मेसर्स इंदरचंद ऐंड कंपनी, चौक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस स्तंभ में हम हिंदी-प्रेमियों की जानकारी और सुबीते के लिये प्रतिमास नई-नई पुस्तकों के नाम देते हैं। पिछले महीने में निम्न-लिखित पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं—

(१) 'युगारंभ' (काव्य)—लेखक, पं० भगवतीप्रसाद वाजपेयी ; मूल्य १॥)

(२) 'रसबिंदु' (कहानियाँ)—लेखक, प्रो० पीतांबरदत्त झा ; मूल्य ॥=)

(३) 'ब्रह्मविद्या-रहस्य' (शिक्षण)—लेखक, प्रो० शिवानंदजी गुप्त ; मूल्य १)

(४) 'दादा कामरेड' (उपन्यास)—लेखक, श्रीयशपाल ; मूल्य १॥)

(५) 'रिमझिम' (कहानियाँ)—लेखक, श्रीयुत रामनारायण चतुर्वेदी ; मूल्य ॥)

(६) 'दादी की कहानियाँ' (दो भाग)—लेखक, श्रीयुत कल्याणदास ; मूल्य प्रत्येक भाग ।)

(७) 'अवारागर्द' (उपन्यास)—लेखक, श्रीगिरीशचंद्र जोशी ; मूल्य ॥=)

(८) 'आधुनिक कामशास्त्र'—लेखक, र० धों० कर्वे एम्० ए० ; मूल्य २॥)

(९) 'यौवन' (काव्य)—लेखक, श्रीयुत श्रीनिधि द्विवेदी ; मूल्य ॥)

(१०) 'द्वंद्वगीत' (काव्य)—लेखक, श्रीयुत दिनकर ; मूल्य ॥)

(११) 'वैदेही-वनवास' (अनुवाद)—लेखक, श्रीयुत 'द्विजवर' ; मूल्य ॥)

(१२) 'नूरजहाँ' (आलोचना)—लेखक, श्रीयुत भगवतशरण उपाध्याय ; मूल्य २॥)

(१३) 'शरत्-साहित्य' (१९वाँ भाग)—ग्रामीण समाज (उपन्यास)—अनुवादक, श्रीरामचंद्र वर्मा ; मूल्य ॥=)

(१४) 'नवयुग-साहित्य-संग्रह', प्रथम भाग—(साहित्य)—ले०, श्रीसत्यवती जैन और श्रीपदुमलाल बख़्शी ; मूल्य ॥=)

(१५) 'मातृभाषा के पुजारी' (आलोचनात्मक जीवन-चरित)—लेखक, श्रीप्रेमनारायण टंडन बी० ए०, विशारद और श्रीलक्ष्मीनारायण टंडन एम्० ए० ; मूल्य ॥)

(१६) 'प्रेमचंद और ग्राम-समस्या' (आलोचना)—लेखक, श्रीप्रेमनारायण टंडन बी० ए०, विशारद ; मूल्य ॥=)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

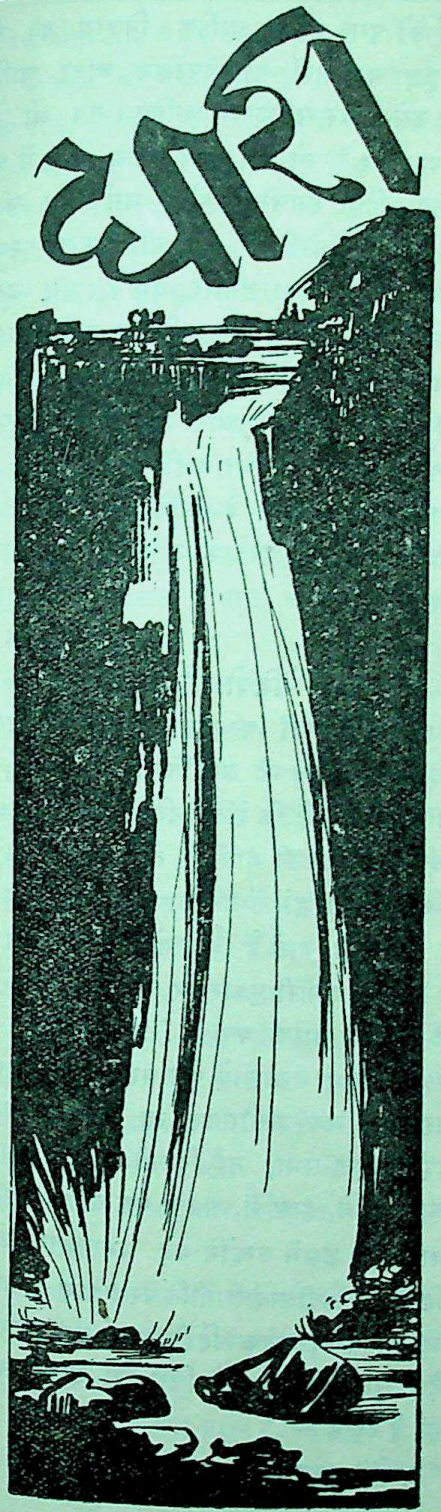

१. हिंदी-भाषी सचेत रहें

पिछले महीने की 'सुधा' में हमने निज़ाम की सरकार और उसके द्वेष-पूर्ण कर्मचारियों की करतूतों का दिग्दर्शन कराते हुए यह लिखा था कि सम्मेलन रोककर निज़ामशाही ने ठीक नहीं किया, और साधारण नागरिक अधिकार भी अपनी अधिकार-पूर्ण सत्ता के बल पर नष्ट कर दिए। साथ ही हमने यह आशा भी प्रकट की थी कि निज़ाम की समय-समय पर की गई घोषणाओं में जो प्रजा-प्रेम और समता का संदेश दिया गया है, उसे समझकर निज़ाम-सरकार हिंदी-भाषी जनता के आश्वासन के लिये अपने वरद हस्त बढ़ाएगी। लेकिन हमारी आशा, जैसा हम जानते थे, बिलकुल पूरी नहीं हुई, और हमें निराश होकर हिंदीवालों की सेवा में दो-चार बातें कहने को विवश होना पड़ा, जिससे हम अपने कर्तव्य को, अपनी संस्कृति की रक्षा की प्रधान वाहिका भाषा को भुलाकर न बैठें।

साहित्य-सम्मेलन के लिये निज़ामशाही आज्ञा देकर अपनी लोक-प्रियता का परिचय देगी या नहीं, यह तो हमें नहीं पता; हाँ, इतना अवश्य है कि वह अब और दमन की नीति अपनाने में संकोच न करेगी। इसका प्रमाण अभी-अभी हमें मिला है। हैदराबाद में एक मुहल्ले की सरस्वती-पाठशाला को बाद करते हुए हिंदी-माध्यम को नाजायज़ क़रार देकर, अपने अधिकार की तलवार का वार करके हिंदी पर जो भीषण संकट ढा दिया गया है, उसे पढ़कर कबीर की 'कथनी-करनी' के विभेद को सरलता से अपने ऊपर लादे हुए निज़ाम-सरकार का सच्चा रूप हमारे सामने आ जाता है।

स्थिति यह है कि राष्ट्र-भाषा के आंदोलन के साथ हिंदी के विस्तार और प्रसार का जो रूप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृष्टिगोचर हो रहा है, उससे मुसलमान भयभीत हो रहे हैं, और उनकी सारी कोशिशें इस ओर हो रही हैं, जिससे हिंदी का विकास रुक जाय। 'हिंदुस्तानी' का रूप भी उन लोगों को पसंद नहीं, और कांग्रेस तथा लीग के कई बार के मतभेदों में यह भूत भी डर का कारण बन गया है, और बन रहा है। चाहे आप विश्वास दिलाएँ कि हमारा साहित्य-सम्मेलन सांप्रदायिकता से दूर और राष्ट्र-भाषा के आंदोलन की उपेक्षा करते हुए विशुद्ध साहित्य की समस्याओं पर ही विचार करेगा, लेकिन निज़ाम-सरकार उसे अपने यहाँ होने देना ही नहीं चाहती। यही कारण है कि जनमत की अवहेलना की जा रही है। होना तो यह चाहिए था कि सरकार हमारे सांस्कृतिक प्रश्न पर हमारा सहयोग करती, अपनी स्वामिभक्त प्रजा के आँसू पोंछती, अपने नादान, सांप्रदायिक द्वेष के ज़हर से भरे दोस्तों की ख़बर लेती, और हिंदी-साहित्य-सम्मेलन करने की आज्ञा देकर अपने विरोध और निंदा का अवसर न देती, पर यह हुआ नहीं। और, कोई घोषणा इस प्रकार की हो, इससे पहले हिंदी को दबाने और उसे ख़त्म करने की ओर वह हाथ बढ़ाने लगी। हमें यह आशा तो थी कि हमारी प्रार्थना व्यर्थ जायगी, और हमारी आवाज़ की कोई क़द्र न होगी, फिर भी हमारा कर्तव्य था कि हम एक बार उस तक अपनी बात पहुँचाकर उसे वस्तुस्थिति समझा देते, और हमने वह किया भी।

अब हमारा कर्तव्य है कि हम एक उग्र विरोध और आंदोलन उठाकर निज़ामशाही फ़रमान की भीषणता लोगों को समझाएँ, और सक्रिय प्रयत्नों से हिंदी की रक्षा की ओर क़दम बढ़ाएँ। हिंदी-साहित्य-सम्मेलन को इस ओर केवल यह कहकर कि निज़ाम ने बुरा किया, संतोष नहीं करना चाहिए, वरन् संगठित आयोजन से इस कार्य को पूरा करना चाहिए। निज़ाम की सेवा में कुछ कर्णधारों का डेपुटेशन जाना चाहिए, और उसे जाकर समझाना चाहिए। तब भी यदि वह ध्यान न दे, तो फिर अन्य उपाय काम में लाने चाहिए। हिंदी हमारी संस्कृति, धर्म और जीवन की एकमात्र संरक्षिका है, और उसके स्वरूप और जीवन की रक्षा हमारा धर्म है। हम उसका अपमान नहीं देख सकते। यदि हम जीवित उसका अपमान देखते हैं, तो हमें जीने का अधिकार नहीं। हम कायर हैं, और हमें व्यर्थ की पुकार मचाने का कोई अधिकार नहीं।

आशा है, हिंदी के अधिकारी हमारी इन पंक्तियों पर ध्यान देकर शीघ्र हिंदी की रक्षा की ओर बढ़ेंगे।

× × ×

२. रेडियो और हिंदी

हम पहले इन्हीं कालमों में रेडियो-विभाग की हिंदी-संबंधी नीति की आलोचना कर चुके हैं, और यह बता चुके हैं कि रेडियो-विभाग में किस प्रकार हिंदी की उपेक्षा की जाती है, लेकिन यह प्रश्न ऐसा है, जो बार-बार हमें तंग करता है, और हम हल करने को विवश हो जाते हैं। रेडियो-अधिकारी भी ऐसे दृढ़ हैं कि वे हमारी पुकार पर बिलकुल ध्यान नहीं देते। इसका कारण क्या है? निरंतर विरोध करने पर भी हमारी आशाएँ पूरी नहीं होतीं, और हमें बार-बार मन मसोसकर रह जाना पड़ता है। हिंदी-साहित्य-सभा, नई दिल्ली के मंत्री श्रीकेशव रामसागर ने, हाल में, अपना एक वक्तव्य प्रकाशित कराया है। उसमें उन्होंने बड़े प्रभावशाली ढंग से रेडियो की हिंदी-संबंधी नीति पर प्रकाश डाला है। हम चाहते हैं, प्रत्येक हिंदी-भाषी उस वक्तव्य को पढ़े। 'सुधा' के पाठकों के लिये हम उसका सारांश यहाँ दे रहे हैं—

उन्होंने बताया है कि रेडियो-विभाग में आंप्र-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दायिक वातावरण सदैव बना रहता है। हिंदी और उर्दू के झगड़े को तय करने का प्रश्न तो ओट में छिपा दिया जाता है, और हिंदुस्तानी का नाम लेकर रेडियो से शुद्ध उर्दू का प्रचार किया जाता है। रेडियो-कर्मचारी और रेडियो के अधिकारी भी हिंदुओं की अपेक्षा मुसलमान अधिक हैं, और ऐसी हालत में भीतर की सांप्रदायिक मनोवृत्ति को बाहरी और प्रोपेगेंडा की शुष्क सहानुभूति द्वारा छिपाकर हिंदीवालों को संतुष्ट करने की चेष्टा की जाती है। रेडियो-विभाग में हिंदी जाननेवाले विद्वान् भी कम हैं। हिंदी की जितनी चीज़ें ब्रॉडकास्ट होती हैं, वे सब उर्दू की पॉलिश करके ही प्रकाश में आती हैं, और कहा यह जाता है कि हम (रेडियो-विभागवाले) भाषा के लिये किसी प्रकार का आग्रह नहीं करते।

रेडियो से जो Lexicon (सर्व-साधारण की समझ में आनेवाला कोष) बन रहा है, उसमें जो हिंदी के विद्वान् हैं, वे वेतन-भोगी हैं। ऐसी दशा में हिंदी के प्रति न्याय होने की संभावना ही बहुत कम है।

राष्ट्रीयता और संस्कृति की रक्षा करने की लगन तो उन्हें हो सकती है, जिनके हृदय में इन शब्दों के प्रति आदर हो, और जो पक्षपात से दूर हों। रेडियो-विभाग में जो अधिकारी काम करते हैं, वे इन शब्दों का प्रयोग करके हमें अँधेरे में रखना चाहते हैं। अतएव हमारा कर्तव्य है, हम इस ओर से सावधान रहें, और साथ ही अपनी शक्ति लगाकर हिंदी-भाषा और संस्कृति की रक्षा करने की चेष्टा करें।

समस्त भारत में, प्रोपेगेंडा की शुष्क सहानुभूति द्वारा, हिंदीवालों को संतुष्ट करने की रेडियोवाले चेष्टा करते रहते हैं। उर्दू के साधारण-से लेखक को जहाँ कलाकार कहा जाता है, वहाँ हिंदी के महान्-से-महान् लेखक की बात नहीं पूछी जाती। कभी यदि लेखकों के प्रति केवल दिखावे के लिये ऐसा किया भी जाता है, तो उनकी talks (बातचीत) को बड़ी शनि-दृष्टि से देखा जाता है, और यदि उन्हें हिंदी के प्रचलित शब्दों का प्रयोग उनकी कृति में मिलता है, तो वह भाषा का बहाना तो नहीं बनाते, बल्कि अन्य कोई नुक़्स निकालकर उसे ब्रॉडकास्ट नहीं करते।

इस वक्तव्य में दो बातों पर विशेष रूप से ध्यान आकर्षित किया गया है। वे हैं—(१) साधारण-तया समझ में आनेवाले कोष (Lexicon) का निर्माण और (२) ब्रॉडकास्ट होनेवाले प्रोग्राम तथा उर्दू के लेखकों के प्रति पक्षपात। गहराई के साथ देखने से पता चलता है कि कोष बनाने का कारण उठते हुए विरोध को रोकना है। पर जब उसमें हिंदी के विद्वानों की उपेक्षा की गई है, और उर्दू के ही अधिक जानकार हैं, तब यह आशा करना कि हमारी भाषा और संस्कृति के परंपरागत भावों के व्यंजक शब्दों के साथ वे न्याय करेंगे, असंगत है। अतः इसके विरुद्ध पूरी कोशिश इस बात की करनी चाहिए कि यह कोष हमारे लिये अन्याय का अस्त्र न बन सके। ब्रॉडकास्ट होनेवाले प्रोग्रामों के संबंध में तो और भी सतर्कता से काम लेना होगा। हिंदी-पुस्तकों के सामने उर्दू-पुस्तकों का प्रकाशन अनुपात की दृष्टि से न्यून ही नहीं, अति न्यून है, फिर भी वहाँ (रेडियो-विभाग में) अधिकांश महत्त्व उर्दू और उसके नव-सिखुए लेखकों को दिया जाता है।

अतः हिंदीवालों का कर्तव्य है, वे अपनी भाषा और साहित्य के रक्षणार्थ स्वयं सावधान रहें। सक्रिय विरोध और निरंतर छान-बीन के बिना हमारी संस्कृति की हत्या होती रहेगी, और रेडियो से वर्णसंकरत्व की सृष्टि भी होगी। हम सार्वजनिक दृष्टिकोण से और सामुदायिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हित की दृष्टि से यह उचित समझते हैं कि रेडियो, जो विचारों के प्रचार का एक प्रभावशाली साधन है, हमारी राष्ट्रीय भावनाओं को जगाए, हमारी सदियों की कलुष भावनाओं को धोए, और हमारी दिमाग़ी ग़ुलामी दूर करे। यही एक दृष्टि है हमारे पास, जिसके अनुकूल रेडियो-विभाग से प्रत्येक कार्य की हम आशा करते हैं।

× × ×

३. राष्ट्र-भाषा के प्रति

हम 'सुधा' के कालमों में राष्ट्र-भाषा-प्रचार-आंदोलन के प्रति जागरूकता की ओर संकेत कर चुके और यह बता चुके हैं कि राष्ट्र-भाषा का निर्माण स्वतः होगा। उसे कुछ व्यक्ति किसी कमरे में बैठकर नहीं बना सकते। साथ ही हमने यह भी लिखा है कि राष्ट्रीय रंगमंच पर उसे बार-बार लाकर हिंदी के प्रति एक घातक प्रवृत्ति का परिचय दिया गया है। हमें यह कहते भी संकोच नहीं कि राष्ट्रीय नेताओं ने उस पर केवल राजनीतिक दृष्टिकोण से विचार किया है, जब कि राष्ट्रभाषा का संबंध देश की सांस्कृतिक विकास-परंपरा से अधिक है। हम यह नहीं मानते कि राष्ट्रीय कार्यकर्ता इस बात से अनभिज्ञ हैं। वे तो संभवतः हमसे भी ज़्यादा उस विषय में दख़ल रखते हैं, पर उन्हें सांप्रदायिक एकता की ख़ातिर जो प्रयत्न करने पड़े हैं, उनसे उनकी दृष्टि एकमात्र इसी केंद्र पर संकुचित हो गई है कि राष्ट्र-भाषा को अधिक-से-अधिक मुसलमानों की राय से बनाया जाय। और, यही कारण है कि देश में एक प्रकार का मतभेद-पूर्ण वातावरण फैल रहा है, और राष्ट्र-भाषा की समस्या दिन-पर-दिन जटिल होती जा रही है। अभी बंबई में कर्मवीर पं० सुंदरलाल ने एक भाषण दिया था। उसमें उन्होंने उर्दू को मुसलमानों की ही नहीं, हिंदुओं की भाषा माना है, और सौ वर्ष पहले उसके एकमात्र व्यापक प्रभाव का ज़िक्र किया है, तथा कहा है कि उर्दू ही राष्ट्र-भाषा हो सकती है। कर्मवीर पं० सुंदरलाल ने धर्मों की एकता का भी बीड़ा उठाया है। हमारी तुच्छ सम्मति में उनकी सद्भावना की प्रशंसा करना आवश्यक है, पर यह तो अवश्य याद रखना चाहिए कि केवल अपने ही अध्ययन पर दुनिया को मूर्ख समझना भय से ख़ाली नहीं। हिंदी का इतिहास ही जब यह बताता है कि उर्दू केवल कुछ मुसलमानों के उखड़े दिमाग़ की सूझ थी, तब उसके विरुद्ध सुंदरलालजी जो विष-वमन कर रहे हैं, वह घोर निंदा का विषय है। भाषा के बारे में राष्ट्रीय नेताओं को बोलने का अधिकार नहीं, यह हम नहीं कहते, पर उन्हें बेसिर-पैर की बातें न कहनी चाहिए।

एक ओर तो इस प्रकार के राष्ट्रीय कार्यकर्ता राष्ट्र-भाषा के प्रचार द्वारा हमारे संस्कारों को विनष्ट करने का प्रयत्न कर रहे हैं, दूसरी ओर राजेंद्र बाबू जैसे प्रतिष्ठित व्यक्ति कहते हैं कि भारत की राष्ट्र-भाषा संस्कृत-मूलक होगी, क्योंकि भारत की प्रायः सभी भाषाओं की मूल संस्कृत-भाषा है। एक ही कार्य-क्षेत्र में रहनेवाले दो विचार-धाराओं के व्यक्तियों के ये विचार जनता में अनिश्चयता की नींव दृढ़ करते हैं।

हमारा मत है कि पूर्व-भारत-राष्ट्र-भाषा-प्रचार-सम्मेलन, कलकत्ता के सभापति-पद से श्रीराजेंद्र बाबू ने जो उपर्युक्त विचार व्यक्त किए हैं, वे सुंदरलालजी-जैसे व्यक्तियों के अनुकरण करने योग्य हैं। हम आशा करते हैं, समझदारी से काम लेकर अधिकारी व्यक्ति इस प्रकार के भाषणों का तीव्र विरोध करेंगे, और सांस्कृतिक संस्था के लिये भाषा की हत्या न होने देंगे।

× × ×

४. दुरंगी चाल

यदि इस युद्ध में ब्रिटेन को कोई आशा है, तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यही कि अमेरिका उसकी पीठ पर हाथ रख रहा है, चाहे किन्हीं विशेष कठिनाइयों के बावजूद ही यह कर रहा हो। यही कारण है कि प्रेसीडेंट रूज़वेल्ट से जब-जब अमेरिका के विकसित मस्तिष्कों ने ब्रिटेन को सहायता न देने या इसकी सफ़ाई माँगने का प्रयत्न किया कि ब्रिटेन के युद्धोद्देश्य क्या हैं, तब-तब लोकतंत्रवाद की दुहाई देकर नागरिकों का मुँह बंद कर दिया गया है। ब्रिटेन के प्रचार-विभाग ने अमेरिका की प्रशंसा करने और उसे अपनी ओर लाने में जान की बाज़ी लगाने में भी कसर नहीं रक्खी। अभी ब्रिटिश साम्राज्यवाद के स्वरूप के परिचय के लिये अमेरिका में लेखों और व्याख्यानों की प्रतियोगिता का जो ढोंग रचा गया था, वह कितना खोखला था, उसमें कितनी सार-हीन बातें थीं, इसे समझदार व्यक्ति को समझते देर न लगेगी। विश्व की लघु शक्तियों के रक्षार्थ फ़ैसिस्ट शक्तियों से मोर्चा लेने की मजबूरी और प्रजातंत्रवाद को क़ायम रखने के लिये कटिबद्ध होना, ये ही दो प्रधान कारण ब्रिटेन के युद्ध करने के संबंध में, इस प्रोपेगेंडा में, बताए गए हैं। साथ ही यह भी कहा गया है कि ब्रिटेन साम्राज्यवादी है ही नहीं, और न उसका साम्राज्य ही है, क्योंकि उसके अधिकृत उपनिवेशों में नाममात्र को ब्रिटेन की सत्ता है। इँगलैंड के प्रसिद्ध लेखक सर नार्मन एंजिल ने अभी हाल में एक लेख लिखकर अमेरिकन जनता को यह बताने का प्रयत्न किया है कि भारत में भी हम यह प्रयत्न कर रहे हैं कि वह अन्य उपनिवेशों की भाँति अपना कार्य करे, और हम उसे शासन की योग्यता ग्रहण करने योग्य बना रहे हैं। ब्रिटेन को यह चिंता है कि यदि वह युद्ध में हार गया, तो भारत भी अपनी भविष्य की स्वतंत्रता खो देगा। ब्रिटेन उसे ग़ुलाम रखने का इच्छुक नहीं। उन्होंने यह भी बतलाया कि भारत क़ानून बनाने, व्यापार करने और न्यायालयों का प्रबंध करने तथा सार्वजनिक कार्यों में स्वतंत्र है, और ४० करोड़ भारतीयों के बीच केवल १,००० अँगरेज़ अफ़सर हैं।

हम नहीं जानते कि अमेरिकन प्रजा इस साम्राज्यवादी सफ़ाई पर विश्वास कर भारत को ग़लत दृष्टिकोण से समझने की भूल कर सकती है या नहीं। हमें तो यह कहना है कि मि० एंजिल ने जिन एकांगी सुविधाओं को लेकर अमेरिकन जनता को बहकाने का प्रयत्न किया है, वे अन्याय-पूर्ण हैं। वास्तव में जितने विभाग हैं, सब कहने को ही भारतीयों के अधीन हैं, सारा कार्य ब्रिटेन की शोषक नीति के समर्थक या उसके सर्वेसर्वा करते हैं। विशेषाधिकार का भूत ही एक तो कार्य नहीं करने देता, और यदि कहीं होता भी है, तो उसे राक्षसी पंजे में दबाकर ख़त्म कर दिया जाता है। जिस देश के करोड़ों लोग बेकार हों, जहाँ के लोगों को भरपेट भोजन न मिलता हो, जहाँ भयंकर बीमारियाँ असमय नर-संहार करती हों, जहाँ अशिक्षा का तांडव होता हो, जहाँ के आदमी की औसत आय अन्य देशों के मुक़ाबिले न कुछ हो, जहाँ रात-दिन सांप्रदायिक झगड़े होते हों, वहाँ की स्थिति को ऊपरी आडंबर से चित्रित कर अमेरिकन जनता को धोखा देने का प्रयत्न हास्यास्पद है। और, हम समझते हैं, मि० एंजिल जिन १,००० अँगरेज़ों की बात करते हैं, क्या उन्होंने उनके अधिकारों और मोटी तनख़्वाहों का भी हिसाब लगाया है? भारतीयों को अयोग्य अँगरेज़ों के मुक़ाबिले तिरस्कृत समझकर ऊँची जगहें नहीं दी जातीं, और मामूली काम देकर संतुष्ट करने की व्यर्थ चेष्टा की जाती है। भारत के शोषण के लिये यह १,००० अफ़सर जोंक की तरह चिपके रहते हैं, और जी भरकर ख़ून पीते हैं। अमेरिकन जनता को यह बात अच्छी तरह समझ लेनी चाहिए कि भारतवर्ष किसी भी स्वतंत्र राष्ट्र के साथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतियोगिता में भाग ले सकता है, और उसके हाथ-पैर खुल जायँ, तो वह सबको धर्म, संस्कृति और राज्य-व्यवस्था में पीछे छोड़कर आदर्श भी उपस्थित कर सकता है। ब्रिटेन की यह दुरंगी चाल ही भारत को ग़ुलामी की ज़ंजीरों में जकड़ने का प्रमाण है। पर सत्य सत्य है, और अमेरिका-जैसे उन्नत राष्ट्र के नागरिक इस आवरण को दूर फेककर सत्य के दर्शन करेंगे, तथा ब्रिटेन की चाल शीघ्र समझ लेंगे, इसमें संदेह नहीं।

× × ×

५. भारत का शासन

लीड्स-विश्वविद्यालय के चांसलर और भारत के पार्लियामेंटरी उपमंत्री ड्यूक ऑफ़् डेवेनशायर ने एक भाषण उक्त विश्वविद्यालय में देते हुए भारत के शासन के संबंध में एक सिद्धांत की स्थापना करने की चेष्टा की है, और उसके स्थापन में सरकार की अनुमति का भी संकेत किया है। वह सिद्धांत है—"भारत का शासन भारतीयों द्वारा भारत में ही हो।" इससे सुंदर सिद्धांत और नहीं हो सकता, यह हम जानते हैं, पर हमें एनीबेसेंट के होमरूल के नारे की तरह इसकी सचाई में भी विश्वास नहीं। यदि यह सचाई से काम में लाया जाय, तो भारतीयों की स्वराज्य की माँग बहुत अंशों में पूरी हो जाय, और महात्माजी भी उसमें स्वराज्य की झलक पा सकें। लेकिन वस्तुतः बात ऐसी नहीं, क्योंकि भारत को स्वतंत्रता देने का ब्रिटेन का नैतिक निश्चय नहीं। यदि होता, तो पूना-प्रस्ताव के अनुसार वायसराय की कौंसिल के भारतीयकरण द्वारा राष्ट्रीय सरकार की स्थापना में सहयोग करना गवर्नमेंट अपना प्रधान कर्तव्य समझती। श्रीराजगोपालाचार्य और अन्य नेताओं ने अहिंसा के सिद्धांत को त्यागकर तथा एकमात्र कांग्रेस के संचालक गांधीजी को असंतुष्ट करके जिस प्रस्ताव को रक्खा था, उसी को सरकार ने उपेक्षा से ठुकरा दिया। यही निर्दल नेताओं के सेना-विभाग को हिंदुस्थानियों को सौंपने की माँग पर भारत-मंत्री ने किया। सभी दल भारतीय-करण के पक्ष में हैं, पर इस ओर ध्यान देना अँगरेज़ राजनीतिज्ञ ठीक नहीं समझते, और घूम-फिरकर अगस्तवाली थोथी घोषणा को दुहराते हुए संतोष कर लेते हैं।

यही बात है कि हमें लॉर्ड डेवेनशायर की यह घोषणा कि भारत का शासन भारतीयों द्वारा भारत में हो, और ह्वाइट हाल से कोई संबंध न रहे, ढपोरशंखी मालूम पड़ती है। साथ ही हम तो यह भी कहते हैं कि इससे हमारी राजनीतिक आकांक्षाओं की पूर्ति किन्हीं भी अंशों में नहीं हो सकती, और वायसराय की एकमात्र अधिनायकत्व-पूर्ण सत्ता स्थापित करना ही इस सिद्धांत-स्थापना का तात्पर्य है। युद्ध के आरंभ से जो भय ब्रिटेन के राजनीतिज्ञों में फैल गया है कि भारत कहीं स्वतः या आकस्मिक संयोग से युद्ध-काल में संबंध-विच्छेद न कर दे, उसी के फल-स्वरूप यह वायसराय के होमरूल की आवाज़ हमारी आशाओं को ठुकराकर बुलंद की जा रही है। ड्यूक ऑफ़् डेवेनशायर ने यह स्वीकार किया है कि भारतीय पूरा सहयोग दे रहे हैं, और वे ब्रिटेन के साथ हैं। लेकिन हम उन्हें याद दिलाना चाहते हैं कि भारत की नैतिक सहायता का मूल्य ब्रिटेन जब तक नहीं समझता, तब तक कोई हल भारतीय गति-अवरोध को दूर करने का नहीं निकल सकता, क्योंकि नैतिकता ही भारत का प्राण है, जिसके बल पर वह महान् से-महान् राक्षसी शक्तियों का प्रतिरोध करना असाधारण बात समझता है। अस्तु।

हमारा विश्वास है, जब तक ब्रिटेन के राजनीतिज्ञ उदारता से भारतीय माँगों का आदर नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करते, तब तक वायसराय के एकाधिकार-पूर्ण डेवेनशायर के स्थापित सिद्धांत पर होनेवाले शासन से भी ब्रिटेन और भारत के बीच का व्यवधान नहीं मिट सकता। उसका एकमात्र हल तो यही है कि कांग्रेस के साथ उसकी सम्मान-पूर्ण माँगों को पूरा करते हुए सहयोग किया जाय, और युद्ध में उसकी नैतिक सहायता ली जाय।

× × ×

६. पाकिस्तान-विरोधी सम्मेलन

दक्षिण-भारत में पाकिस्तान-विरोधी सम्मेलन कर देश के हितैषी और राष्ट्रीयता के पोषक मुसलमान बंधुओं ने जिस दूरदर्शिता और सच्ची लगन का परिचय दिया है, वह प्रशंसा के योग्य है। उस सम्मेलन का उद्घाटन करनेवाले प्रसिद्ध साम्यवादी श्रीओबेदुल्ला सिंधी ने अपने उस समय के भाषण में जातीय पक्षपात और राष्ट्र-विरोधी दृष्टिकोण रखनेवाले मुसलमानों को जो चेतावनी दी है, वह प्रत्येक देश-प्रेमी मुसलमान को हृदयंगम कर लेनी चाहिए, और उस चेतावनी का प्रचार करना अपना धर्म बना लेना चाहिए।

उन्होंने अपने भाषण में कहा—"मुसलमानों को यह समझ लेना चाहिए कि लोकसत्ता और राष्ट्रीयता के सिद्धांत स्वीकार कर लेने के अतिरिक्त और कोई मार्ग उनके लिये खुला नहीं। इस आधार पर संगठन करने के लिये उन्हें अपनी सारी शक्ति लगा देनी चाहिए।"

हम समझते हैं, ये ही विचार किसी पद-दलित राष्ट्र के गुमराह भाइयों के लिये पथ-प्रदर्शन का कार्य कर सकते हैं। पाकिस्तान द्वारा मुसलमानों को हिंदुओं से अलग खिचड़ी पकाकर शांति नहीं मिलेगी, इसे राजनीति की प्रारंभिक कक्षा का एक बालक भी जानता है। फिर इसी दूषित योजना के पीछे अपनी शक्ति और साधन जुटाकर देश और समाज के आंदोलनों के मार्ग में रोड़े बननेवाले मि० जिन्ना-जैसे व्यक्तियों को नेतृत्व करने योग्य समझना कितनी बड़ी भूल है। सहयोग ही वह अस्त्र है, जिसके बल पर हिंदू-मुसलमान, दोनों साथ-साथ अपने जीवन का स्वतंत्र राष्ट्र के नागरिकों के समान उपभोग कर सकते हैं।

पाकिस्तान-विरोधी सम्मेलन के सभापति श्री-मुहम्मद यूसुफ़ शरीफ़ ने भी इसी प्रकार की बातें कही हैं, और बतलाया है कि यदि हिंदू और मुसलिम दो राष्ट्र बना लिए जायँ, तो मुसलमानों को कोई लाभ तो होगा नहीं, उसके विपरीत उन्हें हानि ही होगी, क्योंकि भारत की इस परिस्थिति में प्राप्त की हुई स्वाधीनता आंतरिक वैमनस्य और पारस्परिक द्वेष की धधकती अग्नि में जलकर ख़ाक हो जायगी। उनके विचार से पाकिस्तान निहायत गंदी और नापाक चीज़ है, जिसे कभी अपने यहाँ स्थान देना ठीक नहीं! यह ठीक भी है, क्योंकि अल्पसंख्यकों की स्वाधीनता की समस्या तो तब भी बनी ही रहेगी, और मुसलिम बहुमतवाले प्रांतों में हिंदू और हिंदू बहुमतवाले प्रांतों में मुसलमान स्वतंत्र नागरिक अधिकारों से वंचित ही रहेंगे।

वास्तव में जब तक मुसलमान भारत को अपनी जन्मभूमि नहीं समझते, और भारत की पराधीनता को अपनी पराधीनता नहीं समझते, तब तक उनका जीवन ऐसी नाव के समान है, जिसका किनारा अनिश्चित है। उनका हित तो इसी में है कि वे जाति को पीछे रक्खें, और राष्ट्र को आगे तथा विदेशी राष्ट्रों को, चाहे वे मुसलमान हों या ग़ैर-मुसलमान, अपना शत्रु समझें। हमारा विश्वास है, लीग की नीति से संपर्क न रखकर इस प्रकार के स्वतंत्र विचारवाले मुसलिम नेता यदि अपना अलग संगठन करना आरंभ कर दें, तो लीग को जीना भी मुश्किल हो जायगा, और समय-समय पर व्यर्थ की ख़ुराफ़ातें पैदा करनेवाली यह मुर्ग़ी देश-द्रोह के अंडे नहीं दे सकेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम अपने मुसलमान भाइयों से प्रार्थना करते हैं कि वे आज की अंतरराष्ट्रीय स्थिति को समझकर अपने एकमात्र ध्येय पूर्ण स्वराज्य की ओर सहयोग से क़दम बढ़ाएँ, और इस कार्य के लिये आवश्यक योजनाओं द्वारा ऐसा संगठन करें कि हमारे शासक हमें स्वतंत्र कर दें, और विदेशी कोई शक्ति हमारी ओर क्रूर दृष्टि से देखने का साहस न कर सके।

× × ×

७. उपवास और स्वास्थ्य

अँगरेज़ी में एक कहावत है, जिसका अर्थ है, स्वास्थ्य ही सौंदर्य है। प्रत्येक स्वस्थ व्यक्ति, जिसके शरीर की गठन अच्छी हो, जिसका चेहरा भरा और रंग में चमक हो, सुंदर कहा जा सकता है। केवल रंग या अंगों की बनावट पर ही सौंदर्य आधारित नहीं। पाश्चात्य देशों में विविध प्रकार से अपने को सुंदर रखने का यत्न किया जाता है, और लाखों रुपया इसमें व्यय किया जाता है। लेकिन वह कृत्रिम सौंदर्य अधिक दिन तक नहीं चलता। स्वास्थ्य से उसका बड़ा संबंध है। जब स्वास्थ्य ही ठीक नहीं, तब सौंदर्य स्थायी कैसे रह सकता है?

स्वास्थ्य के लिये भी लोग बड़े-बड़े यत्न करते और दवाइयों में ख़ूब धन गँवाते हैं, फिर भी स्वस्थ नहीं रह पाते। मध्यम वर्ग की आय का अधिकांश डॉक्टरों के बिल चुकाने में ही चला जाता है, और परिवार की ज़रूरतों के लिये यों ही रह जाना पड़ता है। ग़रीब लोग तो इलाज करा ही नहीं सकते। यही कारण है कि आजकल प्राकृतिक चिकित्सा की ओर लोगों का ध्यान गया है, और उसमें भी उपवास को विशेष स्थान दिया गया है। विदेशों में भी इसकी बड़ी प्रशंसा हुई है। असाध्य-से-असाध्य रोगों को उपवास द्वारा दूर किया जा सकता है। भारत में जो बीमारियों का प्रकोप है, और उससे जिस प्रकार की क्षति हो रही है, उसका परिचय पाठकों को मई की 'सुधा' में 'जन-संहार'-शीर्षक धारा की टिप्पणी से हो गया होगा। प्राचीन काल में हमारे यहाँ उपवास की प्रथा थी, और घर में सब व्रत करते थे। आज फ़ैशन में हम न मानें, पर यदि व्रतों की संख्या गिनी जाय, तो कई सौ तक पहुँचेगी। भारतीय संस्कृति की यही विशेषता थी कि उसमें प्रत्येक प्रथा अपना वैज्ञानिक आधार रखती थी।

व्रत या उपवास चाहे जितने दिन तक हम कर सकते और उसकी विधियों के अनुसार अपने रोग दूर कर सकते हैं। प्रत्येक स्वस्थ व्यक्ति को सप्ताह में एक दिन के व्रत की सलाह दी गई है। महात्माजी ने एक बार स्वस्थता की अवस्था में २१ दिन का व्रत किया था, और वह व्रत के बाद भी पूर्ण स्वस्थ दिखाई दिए थे। जर्मनी के डॉ० लुईकूने ने उपवास-चिकित्सा के बारे में कहा है कि पेट ख़ाली रक्खो, तो मनुष्य की जीवन-शक्ति रोग को नाश कर देगी। यही बात ई० एच्० डेनी ने भी कही है कि रोगी के पेट में भोजन न रहने दो, इससे रोगी नहीं, बल्कि रोग भूखों मर जायगा। विदेशों में इस दिशा में बड़े-बड़े प्रयोग किए गए हैं। अमेरिका के डॉ० मेकफ़ेडन सदा रोगी रहते थे, उन्होंने उपवासों से स्वस्थता प्राप्त की थी। मामूली बुख़ार आदि के लिये तो उपवास से अच्छी चिकित्सा हो ही नहीं सकती।

भारत-जैसे ग़रीब देश में यह उपवास-चिकित्सा बहुत सफल हो सकती है, पर नियमित रूप से इसका प्रबंध भी ज़रूरी है। कई स्थानों में इस पर प्रयोग भी हो रहे हैं, और सफलता भी मिली है। सरकारी सहयोग से उपवास-चिकित्सा एक अत्यंत स्थिर, विकसित और प्राणवान् चिकित्सा-प्रणाली सिद्ध हो सकती है। इस प्रकार के अस्पतालों की भी हमारे यहाँ बड़ी ज़रूरत है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जहाँ उपवास द्वारा चिकित्सा की जाय। देश के निवासियों और सरकार का ध्यान हम इस ओर आकर्षित करते हैं।

× × ×

८. ६० वर्ष के ऊपर के स्वस्थ सज्जनों के जीवन-वृत्तांत

अमृतधारा के आविष्कारक, अमृतधारा-फ़ार्मेसी के स्वामी पं० ठाकुरदत्तजी शर्मा लाहौर के प्रतिष्ठित वैद्य हैं। वह बहुत ही सज्जन, सहृदय व्यक्ति हैं। मित्र होने के कारण हम उन्हें निकट से जानते हैं। कई बार लाहौर में हम उनके निवास-स्थान पर ठहरे हैं; एक बार उन्होंने भी कवि-कुटीर में ठहरने की कृपा की है। उन्होंने अपने स्वास्थ्य का बहुत अच्छा ख़याल रक्खा है, इसीलिये आप ६० वर्ष की अवस्था में भी ४५ वर्ष से ज़्यादा के नहीं जँचते। उन्होंने हमारे पास एक पत्र भेजा है। वह नीचे दिया जाता है। आशा है, हमारे पाठकों में से जिनकी आयु ६० वर्ष से ऊपर है, वे अवश्य आपसे पत्र-व्यवहार करेंगे—

"इस वर्ष मेरे तुच्छ जीवन के ६० वर्ष पूरे हो जाने पर मेरे प्रिय संबंधियों तथा मित्रों ने यह सम्मति दी कि मेरी 'डायमंड-जुबिली' बड़े समारोह से मनाई जाय। मुझे यह बात पसंद न आई। 'अमृतधारा' की जुबिली मनाना और बात है, परंतु अपनी जुबिली मनाने और जलसों, पार्टियों में अपनी प्रशंसा सुनने में मुझे लज्जा मालूम हुई, इसलिये मैंने इसकी

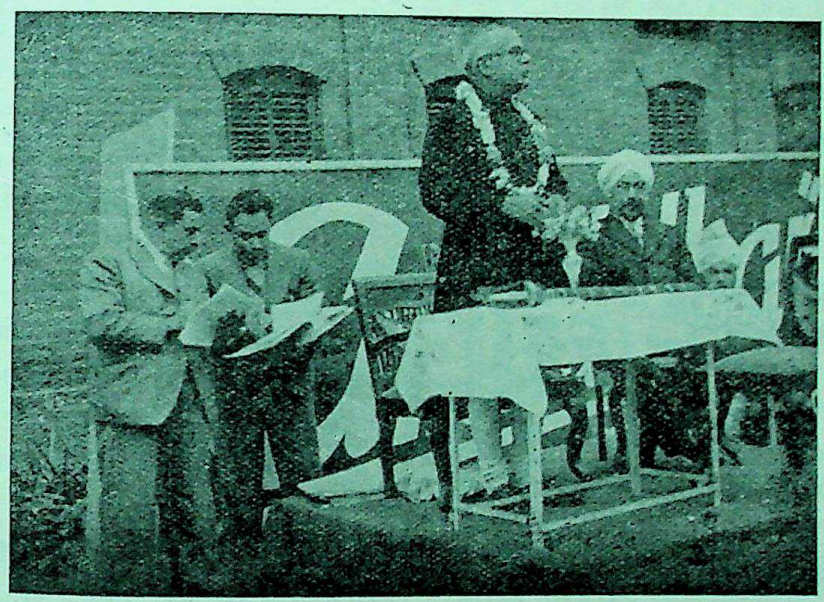

पं० ठाकुरदत्त शर्मा

[अमृतधारा की जयंती सन् १९३८ में हुई थी। उसी समय का यह चित्र है। पं० ठाकुरदत्तजी कुरसी पर साफ़ा बाँधे बैठे हैं। पुष्प-माला पहने हुए डॉ० गोकुलचंद अमृतधारा-टूर्नामेंट का उद्घाटन करते समय भाषण दे रहे हैं।]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज्ञा न दी। परंतु इस अवसर पर एक बात करने का विचार होता है कि ऐसे सुयोग्य स्त्री या पुरुष, जिनकी आयु ६० वर्ष से ऊपर है, और अपने स्वास्थ्य तथा बल को स्थिर रक्खे हुए हैं, उनकी जीवनचर्या और उनके स्वास्थ्य स्थिर रखने के रहस्य जानकर दूसरों को बतलाए जायँ। इसमें मैं भी अपनी जीवन-चर्या और स्वास्थ्य तथा बल के रहस्य लिख दूँगा। इससे जनता को बहुत लाभ होगा, क्योंकि अनुभव सबसे बड़ा पथ-प्रदर्शक है। ऐसे प्रश्न बनाए जायँगे, जिनसे उनके वस्त्र, भोजन, स्नान, व्यायाम, काम-काज, सब बातों का पता लगेगा। उनकी शारीरिक अवस्था, आँख, दाँत, नाक, कान, आंतरिक तथा बाह्य अंगों के स्वास्थ्य की पूरी जानकारी होगी, और पाठक जान सकेंगे कि प्रत्येक की स्वास्थ्य-स्थिरता में क्या रहस्य छिपा हुआ है। यह काम तभी हो सकेगा, जब इस भले कार्य में सब भाई-बहन सहायता करें। इसलिये इस पत्र द्वारा सब ऐसे भाई-बहनों से, जिनकी आयु ६० वर्ष से ऊपर हो चुकी है, और साधारणतया उन्होंने अपने स्वास्थ्य तथा बल को स्थिर रक्खा है, प्रार्थना की जाती है कि वे पहले एक कार्ड पर केवल इतना लिखकर भेज दें—'मेरी आयु ६० वर्ष से ऊपर है, मैं आपके प्रश्नों के उत्तर दूँगा या दूँगी, और फ़ोटो भी भेजी जायगी।' नीचे पूरा नाम तथा पता हो। पर्याप्त भाई-बहनों की स्वीकृति आने पर प्रश्न उनकी सेवा में भेज दिए जायँगे। उत्तर आने पर उन्हें पुस्तकाकार, उपसंहार-सहित, छापा जायगा। हर जाति, हर धर्म, हर संप्रदाय के स्त्री-पुरुष भाग लें।

ठाकुरदत्त शर्मा, अमृतधारा, लाहौर"

× × ×

६. ख़ाकसार और सरकार

निरंतर कई वर्ष से संगठित और दृढ़ होते ख़ाकसारों के आंदोलन को भारत-सरकार ने एकाएक दबाना आरंभ कर दिया, और ख़ाकसारों के प्रसिद्ध-प्रसिद्ध कार्यकर्ता और नेता गिरफ़्तार कर लिए गए, ये समाचार पाठकों ने पढ़े होंगे। पढ़े ही न होंगे, हमारा विश्वास है, हमारी तरह उन्हें भी आश्चर्य हुआ होगा, जो अवश्यंभावी था। सरकार को जब कोई उसके लाभ की बात सुझाई जाती है, और उसकी सुविधाओं का ख़याल रखने के लिये कहा जाता है, उस समय वह ज़रा भी उस ओर ध्यान नहीं देती। जिस समय ख़ाकसार-आंदोलन की नींव पड़ी थी, उसी समय देश के समझदार नेता और प्रसिद्ध विद्वानों ने इस ओर सरकार का ध्यान खींचा था, और ख़ाकसारों की कारगुज़ारियों की ओर कड़ी निगाह

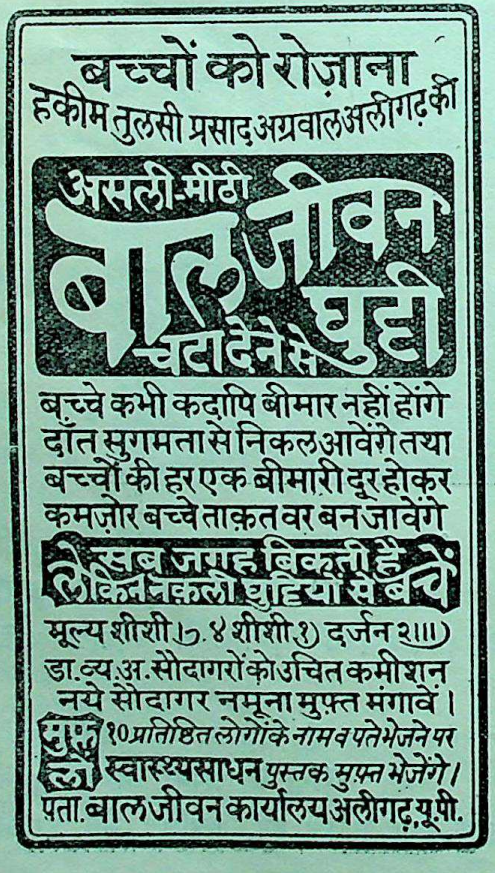

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रखने की प्रार्थना की थी। पंजाब में तो इस ओर कुछ थोड़ा ध्यान भी दिया गया था, लेकिन सरकार ने तब इन बेलचा-धारी परेड करनेवालों की ओर ज़रा भी ध्यान नहीं दिया। और, आज हम देखते हैं, ख़ाकसारों को गिरफ़्तार करके उन्हें दबाया जा रहा है, उनका साहित्य ज़ब्त किया जा रहा है, उनके घरों की तलाशी ली जा रही है, उनके दफ़्तरों पर पुलिस का अधिकार घोषित किया जा रहा है, यहाँ तक कि हैदराबाद-जैसी रियासत में भी बड़ी सरगर्मी से यह आंदोलन दबा दिया गया। जगह-जगह सभाएँ करके सरकारी अफ़सर यह बता रहे हैं कि गवर्नमेंट इस आंदोलन को आगे न चलने देने के लिये राज़ी नहीं, और किसी ख़ास कारण-वश ही यह किया जा रहा है।

ये विज्ञप्तियाँ स्पष्ट बताती हैं कि ख़ाकसार-आंदोलन कोई रहस्य-पूर्ण संगठन है, और विश्व की राजनीतिक तथा आर्थिक समस्याओं से संबंध रखनेवाले संगठनों से इसका भी सीधा संबंध है, जिसे भारत-सरकार अपने लिये और अपने सिद्धांतों की रक्षा के लिये घातक समझती है। किस प्रकार यह आंदोलन प्राण पाता जा रहा है, और कैसे सभी प्रांतों के शहरों में इसकी प्रगति तीव्रता से होती जा रही है, यह देखकर स्पष्ट प्रतीत होता है कि कोई शक्ति उसके साथ अवश्य है, जिसके बल पर यह बड़ा काम हो रहा है, चाहे वह शक्ति घर की हो या बाहर की। संतोष की बात तो यह है कि सरकार ने इस बात को महसूस कर लिया कि यह आंदोलन किसी प्रकार देश और समाज के लिये उपयोगी

गोल्डन

संदल-वुड

अत्युत्तम टॉयलेट साबुन

विशिष्ट पदार्थों और सफ़ेद चंदन के सर्वोत्तम तैल से
ख़ास तौर पर निर्मित।

अद्भुत रूप और सुगंधवाला
बिलकुल नया साबुन

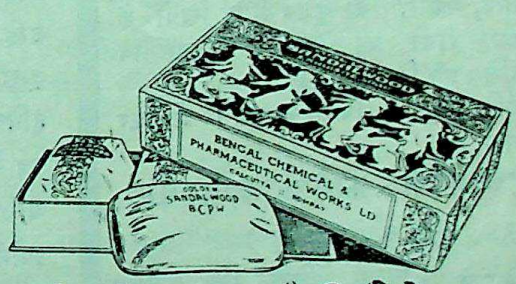

बेंगाल केमिकल ऐंड फ़ार्मास्युटिकल वर्क्स लिमिटेड

कलकत्ता : : बंबई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं। इस दृष्टिकोण का स्वागत करते हुए हम सरकार से यह प्रार्थना करते हैं कि इस प्रकार के कार्यों में यदि विवेक-बुद्धि से काम लिया जाया करे, तो शक्ति का व्यर्थ की बातों में अपव्यय न हो।

× × ×

मदनमंजरी

ये गोलियाँ क़ब्ज़ियत, सुस्ती, स्वप्नदोष, धातुक्षीणता, कमज़ोरी व धातु-विकार से होनेवाले रोगों को दूर करके बल व वीर्य को बढ़ाकर नया जीवन देती हैं। क़ी० ४० गोलियों की डि० रु० १) एक

पागलवटी

अनिद्रा, चित्तभ्रम, विचार-वायु, उन्माद और हर प्रकार के पागलपन की शर्तिया दवा। फ़ी डि० रु० ३)

गर्भामृतवटी

प्रदर, पेड़ू तथा कमर का दर्द, प्रसूती रोग, वंध्यात्व, गर्भाशय की सूजन आदि स्त्रियों के तमाम रोगों की परीक्षित विश्वसनीय ओषधि। फ़ी डि० रु० २)

वैद्यविद्या-पुस्तक बिलकुल मुफ़्त मँगाकर पढ़िए।

मदनमंजरी - फ़ार्मेसी, जामनगर
(काठियावाड़)

लखनऊ के एजंट व स्टोकिस्ट्स — निगम मेडिकल हाल, फ़तेगंज; कौशिक आयुर्वेदिक फ़ार्मेसी, श्रीरामरोड; किंग मेडिकल हाल, अमीनाबाद रोड

१०. क्रीट का पतन

ब्रिटेन के प्रधान मंत्री मि० चर्चिल ने जिस क्रीट की विजय के लिये अपनी संपूर्ण शक्ति लगाकर उसकी स्वतंत्रता की रक्षा की घोषणा की थी, वही क्रीट समाप्त हो गया। ब्रिटिश सैनिक वहाँ से हट गए, और नाज़ी-शक्ति के अधिकार-पूर्ण शासन में यह एक सौ पचास मील लंबा और तीस मील चौड़ा भूमध्य-सागर का प्रसिद्ध गढ़ अपने प्राचीन मालिकों की दुर्भाग्य-पूर्ण दशा पर मूक है। हाउस ऑफ़ कॉमंस में क्रीट के पतन पर जो बहस हुई, उसे देखते हुए यह कहा जा सकता है कि चर्चिल की सरकार और चेंबरलेन की सरकार में ज़मीन-आसमान का अंतर है। जहाँ केवल नार्वे की पराजय से चेंबरलेन की सरकार समाप्त हो गई थी, वहाँ बेलजियम, फ़्रांस, ग्रीस और क्रीट के बाद भी चर्चिल की सरकार क़ायम है, और क्रीट की पराजय स्वीकार करने में चर्चिल ने धैर्य और साहस का परिचय दिया है।

वस्तुतः क्रीट का पतन तो निश्चित ही था, क्योंकि वहाँ जर्मनों का जाल ऐसा बिछ गया था, जिसे तोड़कर निकलना अँगरेज़ों के लिये मुश्किल ही नहीं, असंभव भी था। हवाई अड्डों पर जर्मनों का पूर्ण अधिकार था, और तेल के क्षेत्रों पर वे पूरी तरह उड़ रहे थे, जिसके फल-स्वरूप तेल लेने में उन्हें कोई कमी नहीं थी। हवाई छतरी के सैनिकों द्वारा जर्मनी ने क्रीट में इटालियन क़ैदियों को हथियार देकर दुहरा काम किया था। तब क्रीट में यह कैसे संभव था कि अँगरेज़ जीत जाते। जैसा चर्चिल के स्पष्टीकरण से ज्ञात होता है, क्रीट में जर्मनों का सामना केवल इसलिये किया गया था कि शत्रु यह समझ जाय कि उसका मार्ग निरापद् नहीं।

क्रीट के पतन के बाद सारी शक्ति पूर्व की ओर लगा दी गई, और शत्रु का मार्ग रोकने की पूरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तैयारी कर ली गई। सीरिया में जर्मनों ने हवाई अड्डों पर पूरा अधिकार कर लिया, पर वहाँ अँगरेज़ी फ़ौजें भी तीन ओर घेरा डाल रही हैं, इसलिये स्थिति गंभीर तो अवश्य है, लेकिन कोई स्पष्ट रुख़ नहीं दिखाई देता। अनुमान यह था कि क्रीट के बाद साइप्रस पर हमला होगा, पर वह न हुआ, और अब सीरिया पर जर्मनों की शनि-दृष्टि डालने पर भी यह कहा जा रहा है कि अँगरेज़ों की शक्ति को जर्मनी एक ओर सीमित करके कुछ और ही करना चाहता है। यही कारण है, अभी वहाँ के कोई विश्वस्त समाचार नहीं मिले। जर्मनों का कहना है—"सीरिया की हमें कोई चिंता नहीं, हमारा उद्देश्य तो मिस्र है।" इससे यह स्पष्ट है कि जर्मनी मिस्र पर हमला कर सकता है, और सीरिया में धुरी राष्ट्रों के व्यापारियों का जो माल जमा है, उसकी रक्षा के लिये वहाँ मित्र राष्ट्रों को अटकाए रक्खेगा। यह भी संभव है कि प्रचार के बल पर वह किसी प्रकार सीरिया और मिस्र पर साथ ही पूरी ताक़त लगा दे, और जहाँ पहले विजय हो, वहाँ और तत्परता दिखावे।

जो कुछ भी हो, नाज़ी-संगठन के विरोध के लिये अँगरेज़ पूरी तरह तैयार हैं, और हिटलर इसी को समझकर अभी शांत-सा ही बैठा है। उसकी भीतरी तैयारी या योजना क्या है, यह तो वही जाने, पर इतना अवश्य कहा जा सकता है कि वह पूर्वीय राज्यों पर अधिक ध्यान देगा, क्योंकि युद्ध की आवश्यक सामग्री तेल का भांडार यहीं है, और स्वेज़, जो पूर्व का द्वार है, मित्र राष्ट्रों का ख़ज़ाना है, जहाँ से सारी मदद आ रही है।

इतना लिख लेने के बाद सूचना मिली कि जर्मनी ने रूस पर आक्रमण कर दिया है। इस संबंध में हम दूसरे नोट में प्रकाश डाल रहे हैं।

× × ×

११. चीन-जापान-युद्ध

चीन के शांसी के मैदान में चीनी और जापानी सेनाओं में घमासान युद्ध हो रहा है, और दोनो ओर से भीषण प्रहार हो रहे हैं। जापान दक्षिण-एशिया की ओर भी अपनी दृष्टि डाल रहा है, लेकिन जब तक वह चीन को पराजित नहीं कर देता या च्यांगकाई शेक से संधि नहीं कर लेता,

४० से ऊपर उम्रवालो ! चिंता छोड़ो !!

बुढ़ापे के आगमन से दुखी हो, तो नई बूटी सेवन करो। बुढ़ापे का एक-एक चिह्न दूर कर यह आपको जवान बना देगी, और जवानी की उमंग फिर से उभर आएगी। धातु की कमज़ोरी को दूर कर यह काम-शक्ति को बढ़ा देगी। आँख की रोशनी तेज़ कर चश्मा फोड़ देगी, बाल का पकना रोककर पका बाल खूँटी से काला पैदा करेगी। झुर्रियाँ नष्ट कर दाँतों को दृढ़ बना काया को पलट देगी। झूठा होने से हज़ार रुपया देने की शर्त। दाम ५) रु०

लाइलाज रोग का शर्तिया इलाज

कुष्ठ, श्वेतकुष्ठ, सूज़ाक, बवासीर, सुनबहरी, गर्मी, मृगी, उन्माद, छाजन (खड़ी) यदि जड़ से नाश करना चाहते हो, तो हज़ारों बार की परीक्षित सिद्ध फ़क़ीरी दवा मँगाकर सेवन करो। रोग जड़ से नहीं जायगा, तो दाम वापस मिलेगा। फ़ी दवा ४॥) रु०

पता—फ़क़ीरी कुटिया, पो० बिहार नरसरी (दरभंगा)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तब तक अपनी अभिलाषा की पूर्ति नहीं कर सकता। कारण स्पष्ट है, चीन उसे आगे बढ़ते देख हमला कर सकता है।

अमेरिका और रूस की मदद से ही अब तक चीन युद्ध में जापान-जैसे बर्बर राष्ट्र का मुक़ाबिला कर रहा है, और अपने संयुक्त मोर्चे के बल पर जापान की सुरसा के मुँह की तरह बढ़ती रक्त-पात की लालसा की बाट रोक रहा है। लेकिन संयुक्त मोर्चा आज कुछ अच्छी स्थिति में नहीं कहा जा सकता। च्यांगकाई शेक और कम्यूनिस्ट पार्टी, दोनो में सैद्धांतिक मतभेद है, और दोनो एक दूसरे की शिकायत कर रहे हैं। ऐसी स्थिति में राष्ट्र-हित की दृष्टि से यह बड़ी बुरी बात है कि दुनिया में आदर्श-स्वरूप यह संयुक्त मोर्चा टूटने की स्थिति में है। रूस, जो कम्यूनिस्ट पार्टी के कारण ही सहायता दे रहा है, यह कैसे देख सकेगा। च्यांगकाई शेक के भय का कारण रूस की वैदेशिक नीति कही जाती है, जिसके कारण रूस स्वसंबंधित राष्ट्रों से अपनी साम्यवादी सरकारें क़ायम करने की चेष्टा करता है। चीन की फ़ौज की राजनीतिक परिस्थिति बड़ी भयंकर है, क्योंकि अमेरिका की सहायता तथा रूस के प्रोत्साहन के बल पर ही चीन अब तक युद्ध-क्षेत्र में डटा रहा। यदि वहाँ आपस में ही गृह-कलह का रूप उग्र हो जाता है, तो चीन की स्थिति दयनीय हो सकती है, यह कहने में संदेह की गुंजायश नहीं।

× × ×

१२. समान अधिकार की माँग

अखिल भारतीय महिला-सम्मेलन की ओर से एक वक्तव्य प्रकाशित किया गया है, जिसमें कहा गया है कि धन, ज़मीन, जायदाद आदि के अधिकार के संबंध में पुत्र और पुत्री, पति और पत्नी, विधुर और विधवा तथा पिता और माता को समान अधिकार मिलना चाहिए। साथ ही महिलाओं को काम मिले, और उसके लिये सुविधाएँ भी हों।

यह माँग कोई विशेष नई नहीं। उसी प्रकार की है, जैसी साधारणतया महिला-सम्मेलनों में होती है। फिर भी अखिल भारतीय महिला-सम्मेलन की ओर से की गई है, इसलिये इसका महत्व बहुत है, और हम समझते हैं, इस माँग में तथ्य है। जहाँ तक समान अधिकार का प्रश्न संपत्ति का है, वहाँ तक तो कोई आपत्ति की बात नहीं, और वह हो, इसके लिये सब प्रकार के साधनों का उपयोग करना चाहिए। लेकिन काम और उसके लिये सुविधाएँ हों, इसकी मूल-धारणा स्पष्ट नहीं। निम्नवर्ग या मध्यवर्ग की उस महिला की अवस्था, जो अभी दुनिया से परिचित नहीं, और जिसका विकास अब भी बंद है, ऐसे वक्तव्य का क्या अर्थ लगाए? कहा जा सकता है कि अर्थ तो स्पष्ट है, पर क्या यह संभव भी है? हम मानते हैं, पुरुष की अन्यायी मनोवृत्ति और कलुषित दुर्भावना ही नारी की दासता की ज़िम्मेदार है, पर भारतीय नारी के आदर्श के अनुकूल इस वक्तव्य की पिछली बात अधिक युक्ति-युक्त या न्याय-संगत नहीं, और सब स्थितियों में उसका होना भारतीय जीवन को ख़तरे में डाल सकता है। हाँ, अपवाद स्वागत करने योग्य होंगे, और उन्हें हम आदर की दृष्टि से देखने में गौरव अनुभव करेंगे।

× × ×

१३. जले पर नमक

शासक और शासित का संबंध ही एक अभिशाप की चरम सीमा की ओर स्पष्ट अंगुलि-निर्देश करता है। यही कारण है, शासक-जाति का एक अदना व्यक्ति भी शासित जाति के महान्-से-महान् व्यक्ति और विशाल-से-विशाल उद्देश्य को निकम्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और पागलपन कहकर मज़ाक़ उड़ा सकता है, उपहास के साथ दोषारोपण भी कर सकता है। इँगलैंड की कुमारी एलिनार राथबोर्न ने कांग्रेसियों के नाम भारत में जो खुला पत्र भेजा है, और जिसमें कांग्रेसियों को ब्रिटेन का शत्रु बतलाकर सहयोग के अवसर पर ब्रिटेन की विजय के मार्ग में रोड़े अटकानेवाला कहा है, तथा व्यक्तिगत सत्याग्रह की निंदा की है, उससे प्रत्येक भारतवासी के हृदय को अपार दुःख हुआ है, यहाँ तक कि विश्ववंद्य कवींद्र रवींद्र को रोग-शय्या से उस पत्र का जवाब देना पड़ा, और उन्होंने कुमारी राथबोर्न के इस पत्र को 'जले पर नमक छिड़कनेवाला' बतलाया है।

कुमारी राथबोर्न के समान स्वदेश-प्रेमी, हृदय रखनेवाली महिलाओं को यह याद रखना चाहिए कि कांग्रेस ने कभी ब्रिटेन की पराजय की बात नहीं सोची, और न सहयोग करने से इनकार किया, परंतु जब ब्रिटेन ही सहयोग के लिये प्रस्तुत न हो, जब वह भारत को परमुखापेक्षी देखने में ही संतुष्ट हो, जब उसकी नैतिकता की माँगों का उसकी दृष्टि में कुछ भी महत्त्व न हो, तब भारत पर यह आक्षेप करना कि वह ब्रिटेन का नाज़ी-संगठन के समान ही विरोधी है, भयंकर भूल है। राजनीति के पंडित और प्रसिद्ध लेखक हैरेल्ड लास्की और क़ानून के प्राण-परीक्षक बैरिडल कीथ तथा अन्य अँगरेज़ों ने कांग्रेस की जिन माँगों का समर्थन किया है, उनका भारत-सरकार की ओर से आघात-पूर्ण, शुष्क उत्तर मिला। भारत-मंत्री कांग्रेस और मुसलिम-लीग की नीति से परिचित होते हुए भी दोनो के समझौते पर अनावश्यक ज़ोर देने की कृपा करते रहे हैं।

ब्रिटेन के युद्धोद्देश्य अस्पष्ट ही रहे हैं, लेकिन उसकी कभी-कभी निकलनेवाली सूचनाएँ यह बतलाती हैं कि ब्रिटेन प्रजातंत्र की रक्षा के लिये लड़ रहा है। यदि यह ठीक है, तो फिर भारत को स्वतंत्र करने में उसकी क्या हानि होती है? भारत के प्रति उसका रुख़ तानाशाही राजतंत्रों से कम घातक नहीं रहा है। और, ऐसी दशा में यदि वह अपनी स्वतंत्रता के लिये व्यक्तिगत सत्याग्रह चला रहा है, और उसे कोई पक्षपात-पूर्ण दृष्टि से अन्याय पूर्ण कहे, तो यह सत्य और न्याय का गला घोटना होगा। महात्माजी तो सत्याग्रह अभी बंद कर सकते हैं, और वह चाहते भी हैं कि ब्रिटेन को संकट-काल में परेशान न किया जाय, लेकिन कांग्रेस का ध्येय, भारत की आत्मा उन्हें बाध्य करती है कि वह भारत को स्वतंत्रता की भावना से जीता रक्खें, और ब्रिटेन की विश्वासघातिनी नीति के विरोध में खुलकर प्रदर्शन करें। उनकी सदा की जो नीति रही है, वह अब भी है, और आगे भी रहेगी। ब्रिटेन का अपने अधिकारों की लड़ाई में प्राणों की बाज़ी लगाना जहाँ न्याय-संगत है, वहाँ अपनी स्वतंत्रता के लिये वाणी-स्वातंत्र्य की छोटी माँग कहाँ तक अनुचित या हानिकर है, जिसे ब्रिटेन स्वीकार न कर दमन का चक्र चला रहा है।

भारत से तो अब भी सहयोग मिल ही रहा है, और सहयोग के प्रयत्नों में कोई बाधा नहीं डाली जा रही, यह कांग्रेस की उदारता है। कुमारी राथबोर्न जो चाहती हैं, उसके लिये भारत को स्वतंत्र राष्ट्र मानना और उसकी माँगें स्वीकार करना ब्रिटेन का सर्वप्रथम कर्तव्य है। जब तक ऐसा नहीं होता, कांग्रेस का मार्ग अलग है, और ब्रिटेन का अलग।

× × ×

१४. युद्ध और काच-उद्योग

युद्ध से जहाँ अन्य भारतीय उद्योग-धंधों को सहायता और प्रोत्साहन मिला है, वहाँ काच-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्योग को भी बड़ी मदद मिली है। भारत में काच के १०१ कारख़ाने हैं, और दो अरब का माल प्रतिवर्ष बनता है, जिससे पचास प्रतिशत आवश्यकता की पूर्ति देश में ही हो जाती है। औद्योगिक अनुसंधान-ब्यूरो के सुझावों से इस उद्योग के विकास की आशा है। यहाँ अब चूड़ियों की सजावट का चीना काच बनना प्रारंभ हो गया है, और चूड़ियों पर जो सोने का पानी चढ़ता है, वह भी अब देशी वस्तुओं से बन सकेगा। बिजली की बत्तियाँ, काच की नली, बोतलें इतनी सुंदर और काफ़ी मात्रा में बन सकती हैं कि विदेशों से न मँगानी पड़ें। दूरबीन, चश्मा, तश्तरी, नक़ली मोती आदि वस्तुएँ भी सुंदर बन सकती हैं, और युद्ध की आवश्यकताओं की पूर्ति हो सकती है। युद्ध के प्रभाव से आयात कम हो गया है, और निर्यात बढ़ रहा है। १ एप्रिल से ३१ दिसंबर, १९४० तक आयात घटकर ६३,००,००० रुपयों से कम रह गया है। १९३९ में यही आयात ७५,००,००० रु० था। इसी अवधि में निर्यात ९६,००० रुपए से कुछ अधिक है, जब कि अब बढ़कर ३,००,००० रु० हो गया है।

पर प्रश्न तो यह है कि यह प्रोत्साहन कब तक रहेगा। युद्ध के कारण ही यह हो रहा है। कुछ भी हो, एक बात अवश्य स्पष्ट है। भारतवर्ष में किसी भी उन्नतिशील राष्ट्र के समक्ष अपनी शक्ति के बल पर सिर उठाने की क्षमता अवश्य है, इसका पता युद्धकालीन परिस्थिति से अवश्य लग गया है।

× × ×

१५. भारत में जहाज़-निर्माण

सर बालचंद हीराचंद के सतत प्रयत्न से सिंधिया-स्टीम-नेवीगेशन-कंपनी की जहाज़-निर्माण की योजना को कार्य-रूप दे दिया गया, और विजयापट्टम में श्रीराजेंद्र बाबू द्वारा कारख़ाने का उद्घाटन भी हो गया। भारतवर्ष में जहाज़-निर्माण-कला का विकास पुराने ज़माने से है, और सच पूछा जाय, तो अँगरेज़ों की सत्ता द्वारा ही उसे नष्ट कर दिया गया। सर बालचंद हीराचंद ने उक्त अवसर पर जो भाषण दिया, उससे यह पता चलता है कि वह बड़ी कठिनाइयों के बाद इतना सब कर पाए हैं। सरकार तो अब भी जितना सहयोग चाहिए, उतना देने को तैयार नहीं। उन्होंने भारत-सरकार की आज की नाज़ुक स्थिति का उदाहरण लेकर बताया है कि इस समय भारत को अन्य उपनिवेशों की भाँति जहाज़-निर्माण में पूर्ण सहयोग देना सरकार का प्रधान कर्तव्य है। हमारी समझ में सरकार को जहाज़ों की दिन-दिन बढ़ती आवश्यकता को दृष्टिगत रखकर इस ओर से उदासीन रहने की आवश्यकता नहीं।

हम सर बालचंद हीराचंद और सिंधिया-स्टीम-नेवीगेशन-कंपनी को उनके इस साहस पर बधाई देते और आशा करते हैं कि वे सरकार का सहयोग प्राप्त कर अपने इस कारख़ाने द्वारा जहाज़ों की निर्माण-कला का विकास और भारतवर्ष का मुख उज्ज्वल करेंगे।

× × ×

१६. तुर्की-जर्मन-संधि

हाल में ही जो तुर्की-जर्मन-संधि हुई है, उसका मुख्य उद्देश्य क्या है, यह तो हम नहीं कह सकते, पर इतना अवश्य है कि वह महत्त्वपूर्ण है। उस संधि में ३ शर्तें हैं—

१—जर्मनी और तुर्की एक दूसरे की प्रादेशिक अखंडता भंग न करेंगे।

२—जर्मनी और तुर्की अपने भविष्य के सामान्य हितों को मैत्री-पूर्ण ढंग से हल करेंगे।

३—संधि की पक्की मंज़ूरी बर्लिन में होगी।

यह संधि १० वर्ष के लिये की गई है, और आवश्यकतानुसार कार्य-काल और बढ़ाया जा सकता है। इसमें यह भी कहा गया कि ब्रिटेन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और तुर्की के संबंधों पर इससे कोई असर नहीं पड़ता, यद्यपि यह स्पष्ट है कि ब्रिटेन के विरोध में यह अधिक है, और 'न्यूयार्क टाइम्स' के कथनानुसार यह संधि रूस की भी विरोधिनी है। रेडियो पर बोलनेवाले भी यही कहते हैं, और आज तो उसका प्रमाण भी मिल गया, जब जर्मनी की सेनाएँ रूस में तीर की तरह घुसी जा रही हैं।

× × ×

१७. रूस-जर्मन-संघर्ष

जर्मनी और रूस में चल ही गई। १९३६ से जिस दुर्घटना को रूस बचाता चला आ रहा था, वह अंत में घट ही गई। जर्मन फ़ौजों ने १५०० मील लंबे युद्ध-क्षेत्र में रूस की सेनाओं का आह्वान किया, और कुछ ही दिन में ४ शहरों पर क़ब्ज़ा भी कर लिया। अँगरेज़ और अमेरिकन सरकारों ने रूस की सहायता करना निश्चय किया है।

इस संघर्ष की संभावना बहुत कम थी। जिसने भी इस समाचार को सुना, वह आश्चर्यान्वित हुआ। सबके मुँह पर एक ही बात है—"जर्मनी ने रूस से लड़कर अपनी मौत को न्योता दिया है।" इधर अँगरेज़ों को इस संघर्ष से दम मारने की फ़ुरसत मिल गई है। सबसे बड़ी हानि यदि किसी को हुई है, तो वह हिंदुस्थान को। उसे स्वराज्य देने का वादा अब अनंत काल के लिये टल गया है। ब्रिटेन की बिभीषिका टल जो गई।

हिटलर के इस ऊपर से दिखाई देनेवाले पागलपन के पीछे उसकी एक अत्यंत महत्त्व-पूर्ण सामरिक चाल छिपी हुई है। रूस पर हमला करना उसके लिये आवश्यक हो गया था, क्योंकि वह योरप की इस प्रबल शक्ति का बल खर्व किए विना सीरिया, ईरान तथा भारत पर आक्रमण नहीं कर सकता था। यदि कर देता, तो तुरंत ही रूस उस पर पीछे से हमला करके हिटलर का सर्वनाश कर देता। दूसरा कारण यह था कि हिटलर को अब पेट्रोल, खाद्य सामग्री तथा अन्य कच्चा माल मिलना कठिन हो गया था। रूस पर हमला किए विना उसे ये वस्तुएँ प्राप्त नहीं हो सकती थीं। तीसरा कारण था रूस की बढ़ती हुई सेना—जो जर्मनी के लिये भय का कारण थी—को कम करना। क्योंकि अन्यथा जर्मनी पर दो पहलुओं से हमला होने का भय था। चौथी बात यह थी कि अमेरिका की सहायता प्राप्त करके ब्रिटेन मज़बूत हो चला था, और यदि रूस को भी ऐसा करने के लिये रहने दिया जाता, तो जर्मनी के लिये ख़तरा पैदा हो जाता। पाँचवाँ और सबसे मुख्य कारण था नाज़ीवाद और साम्यवाद की आंतरिक प्रबल शत्रुता। हिटलर सदा से ही बोलशेविक रूस का समूल नाश चाहता रहा है। स्टालिन को वह संसार के हितों का शत्रु समझता रहा है, और उसने प्रतिज्ञा की है कि वह इस 'ख़ूनी पशु' को ज़ंजीरों से जकड़कर शीघ्र ही बर्लिन लाएगा। अभी फ़ादर ओडो-नामक एक पादरी को उसने रूस के विरुद्ध प्रचार करने के लिये अमेरिका भेजा था। उसके हाथ उसने कुछ पुस्तिकाएँ भी अमेरिका में बाँटने के लिये भेजी थीं। इनमें साफ़ तौर पर उसने अपनी इस उपर्युक्त प्रतिज्ञा का ज़िक्र किया है। अतएव यह संघर्ष आकस्मिक नहीं, बल्कि जर्मन-सामरिक प्रोग्राम का एक विसृष्ट तथा परिष्कृत अंग ही है।

इस संघर्ष के परिणाम के विषय में अभी कुछ निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता। किंतु युद्ध की जैसी प्रगति इस समय चल रही है, उससे आशंका होती है कि रूस को जर्मनी से युद्ध करने में बहुत कठिनाई का सामना करना पड़ेगा। रूस की हवाई शक्ति यद्यपि बहुत अच्छी है, किंतु उसकी शिक्षा-दीक्षा अच्छी नहीं। रूसी उड़ाके भीरु तथा रद्दी हैं। इसीलिये जर्मन-उड़ाकों का वे अच्छी तरह सामना नहीं कर सकते। नौसेना भी रूस की अच्छी नहीं। केवल ३ लड़ाकू जहाज़ इस समय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसके पास हैं। किंतु पनडुब्बियों की संख्या १७० से अधिक है। ये पनडुब्बियाँ बाल्टिक और ब्लैक समुद्रों में समुद्र-तट की रक्षा करने में बहुत कुछ दक्ष हैं। बाक़ी सेना ऐसी-वैसी ही है। रही स्थल-सेना। वह संसार में सबसे बड़ी ज़रूर है, किंतु है निकम्मी। जर्मन-योद्धाओं का मुक़ाबिला करने लायक़ योग्यता और साहस उसमें नहीं। ऐसी दशा में परिणाम का अनुमान लगाना कठिन नहीं।

इधर जापान और टर्की का जो रुख़ दिखाई पड़ रहा है, उससे और भी आशंका हो चली है। यदि जापान जर्मनी के साथ हो गया, तो रूस को दुधारी मार खानी पड़ेगी, और उसे अपनी रक्षा करना दूभर हो जायगा। एक दूसरे से हज़ारों मील दूर दो विभिन्न युद्ध-क्षेत्रों पर अपनी रक्षा कर सकना उसके लिये अत्यंत कठिन होगा। टर्की अभी निष्पक्ष है, अतएव ब्रिटेन की सहायता पहुँचने के लिये कोई मार्ग ईराक़ की ओर से नहीं रह गया है। ईरान और अफ़ग़ानिस्तान भी ब्रिटेन को अभी रास्ता नहीं दे रहे हैं। ऐसी दशा में रूस को आत्मनिर्भर रहना होगा। अभी व्लाडिवोस्टक से अमेरिका की सहायता पहुँचने का समाचार मिला है। किंतु वह रास्ता शीघ्र ही बंद हो सकता है, क्योंकि जापान कभी अपने पड़ोस में अमेरिकन जहाज़ों का ठहरना सहन नहीं करेगा।

अंतरराष्ट्रीय स्थिति पर इस संघर्ष का काफ़ी प्रभाव पड़ेगा। बालकन रियासतों में जो विद्रोह की भावना चल रही थी, वह केवल रूस के बल पर ही थी। वह दब जायगी, और जर्मनी के लिये रास्ता साफ़ हो जायगा। उधर स्वीडन, नार्वे और फ़िनलैंड भी जर्मनी की सहायता कर रहे हैं। इसलिए उत्तरीय सागर से ब्रिटिश-सहायता पहुँचने का मार्ग भी बंद है। हाँ, ईराक़ और सीरिया, मिस्र और सूडान तथा स्वेज़ नहर का ख़तरा बहुत कुछ दूर हो गया है, और इन क्षेत्रों में गत कई मास के अनवरत युद्ध से थकी हुई ब्रिटिश सेनाएँ विश्राम लेकर तरोताज़ा हो सकती हैं।

भारत के भाग्य पर भी इस संघर्ष का बहुत बड़ा असर पड़ रहा है। अभी हाल में ब्रिटिश सरकार ने जो पुस्तिका 'टाकिंग पाइंट्स'-नाम से अपने प्रचार-विभाग के लिये प्रकाशित की है, उसमें पहला ही आदेश है कि सरकारी अफ़सर कहीं भी न कहें कि भारत को स्वराज्य या औपनिवेशिक स्वराज्य कब तक और किस हद तक दिया जायगा। ईराक़ की परिस्थिति सुधरते ही हिंदुस्थान की लल्लो-चप्पो कम हो चलेगी, और फिर वे ही ठोकरें, वे ही 'डैम ब्लैकी' निगर, 'यू इंडियन'-नामक गोरी गालियाँ हम लोगों के भाग्य में लिखी जायँगी। स्वराज्य और स्वतंत्रता का स्वप्न भी स्वप्न ही रह जायगा!

न-मालूम किस सायत में हिटलर को यह दून की सूझी कि शेख़ चिल्ली का यह बना-बनाया घर ही उजाड़ दिया!

× × ×

१८. सर चिंतामणि का शरीरांत!

इस फ़ार्म के छपते-छपते ख़बर मिली कि अँगरेज़ी के प्रसिद्ध दैनिक पत्र 'लीडर' के प्रधान संपादक सर सी० वाई० चिंतामणि अब इस लोक में नहीं रहे—उनका शरीरांत प्रयागराज में, कल १ जुलाई को, ५½ बजे शाम को, हो गया। आज ही हमें उनके सुपुत्र श्रीबालकृष्ण राव आई० सी० एस्० का पत्र नैनीताल से मिला, ३० जून का भेजा हुआ, उसमें भी उनकी कोई सख़्त बीमारी का उल्लेख नहीं। उनका देहावसान हृदय की गति एकाएक बंद हो जाने से हो गया। सुधा के सुकवि श्रीबालकृष्ण रावजी से हमें उनके इस दुःख में पूर्ण सहानुभूति है। ईश्वर सर चिंतामणि की आत्मा को सद्गति दें। हम आगामी संख्या में उनकी जीवनी देंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुधा-चित्रावली

श्रीमती पुखराजबाई जैन

[महिदपुर(ज़िला इंदौर)-महिला-परिषद् में, आपने सभानेत्री के पद से, अभी हाल में, एक महिलोपयोगी, सार-गर्भित भाषण दिया। देश-काल के अनुसार महिलाओं को क्या-क्या करना चाहिए, इस बात पर विशेष ज़ोर दिया। राजपूताने की महिलाओं में इस प्रकार की जागृति देखकर अपार हर्ष होता है।—सुधा-संपादिका]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

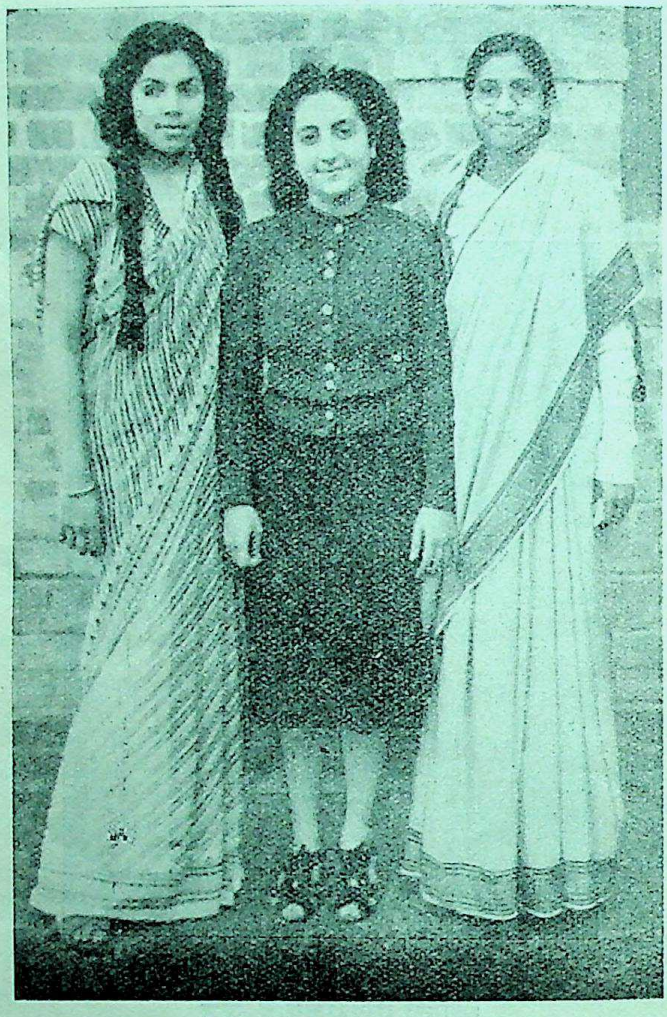

दिल्ली में इंटर-युनिवर्सिटी-डिबेट में महिला-पुरस्कार पानेवाली छात्राएँ

[बाएँ से दाहनी ओर—कुमारी लीला वर्धे से ने लॉ-कॉलेज में, कुमारी फ़्लोर एज़रा ने हिंदू-कॉलेज में अँगरेज़ी में और कुमारी जस्टिनसिंह ने लॉ-कॉलेज में उर्दू-डिबेट में पुरस्कार प्राप्त किया। तीनो कुमारियाँ लेडी इरविन-कॉलेज, नई दिल्ली की छात्राएँ हैं।]

प्रतिच्छविकार—श्रीललितगोपाल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

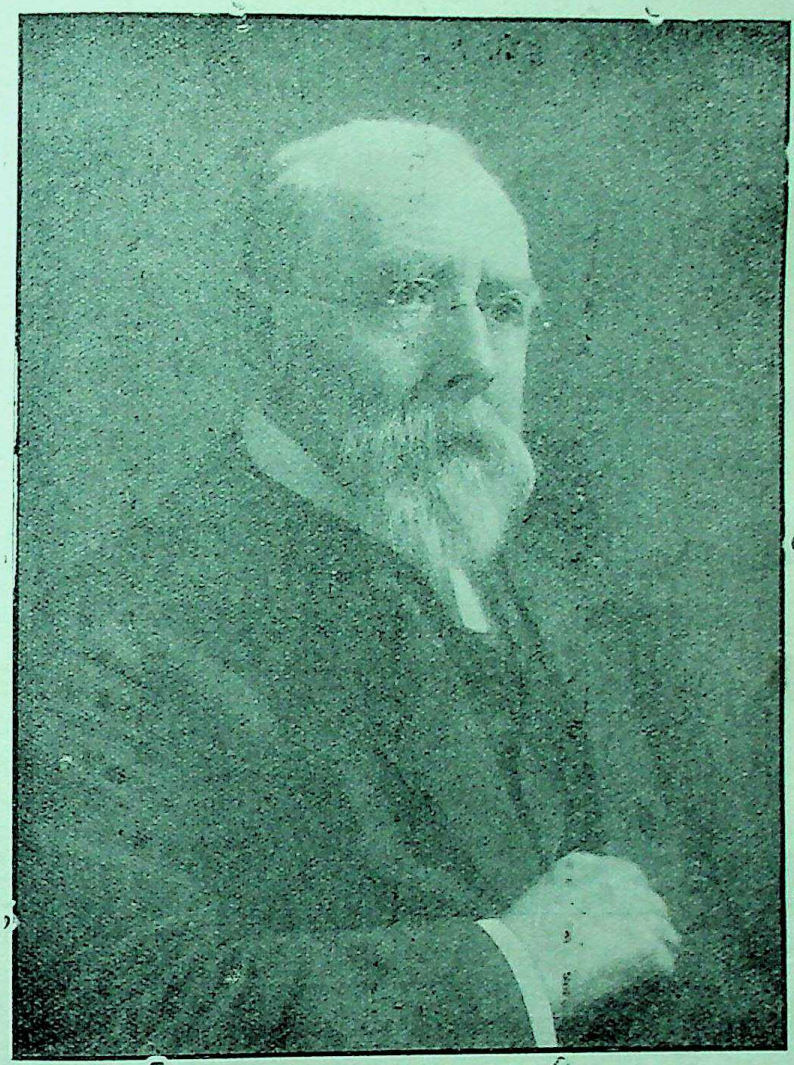

स्वर्गीय सर जॉर्ज ग्रियर्सन

[आपका अभी हाल ही में, ९० वर्ष की अवस्था में, शरीरांत हो गया !
ग्रियर्सन साहब लगभग २०० भाषाओं के पंडित थे।
आपके संबंध में सुधा के गत अंक में,
धारा में, एक नोट गया है।]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

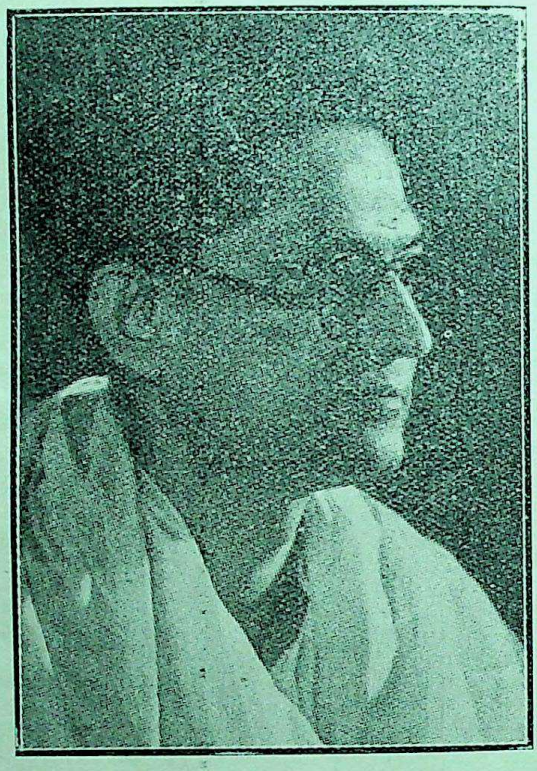

श्रीयुत असितकुमार हाल्दार

[हाल्दार साहब स्थानीय आर्ट-स्कूल के प्रिंसिपल हैं। आप उच्च कोटि के, कुशल, कृतविद्य कलाकार हैं। आपकी गणना भारतवर्ष के सर्वोच्च चित्रकारों में है। सुधा में आपके चित्र कभी-कभी निकलते रहते हैं।]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदेश-पत्र

संचालक गंगा-ग्रंथागार

(रामायण-विभाग)

३६, लाटूश रोड, लखनऊ

ग्राहक-नं० ..... ता० .....

प्रिय महाशय,

मैं आपकी २० खंडों में प्रकाशित होनेवाली सचित्र रामायण का, जिसका मूल्य ३०) होगा, स्थायी ग्राहक होना चाहता हूँ। कृपया मेरा नाम ग्राहकों में लिख लीजिएगा।

(१) रियायती मूल्य २०) $\frac{\text{मनीऑर्डर से भेजता हूँ}}{\text{प्रथम अंक वी० पी० भेजकर ले लें।}}$

(२) प्रथम ४ अंक के ५) $\frac{\text{मनीऑर्डर से भेजता हूँ}}{\text{पहला अंक वी० पी० भेजकर ले लें।}}$ और आगे के अंक बुक-पोस्ट से, निकलते ही, भेजते रहें।

(३) १।) का प्रत्येक अंक निकलते ही डाक-व्यय-सहित वी० पी० द्वारा भेज दें *।

भवदीय—

[हस्ताक्षर]

नाम और पता—

* इन तीनो शर्तों में जो मंजूर हो, उसे ही रखिए, शेष काट दें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदीसंसार की एक अलौकिक भेंट

क्या आप

भा र त का प्राचीन इतिहास	भा र त का प्राचीन विज्ञान
भा र त की प्राचीन सभ्यता	भा र त की प्राचीन पवित्रता
भा र त का प्राचीन भ्रातृप्रेम	भारत की ललनाओं का अपूर्व त्याग
भारत-सपूतों का पितृआज्ञा-पालन	प्राचीन भारत का स्वामी-सेवक-भाव

और

तो हमारी २० खंडों में प्रकाशित होनेवाली तुलसी-कृत रा मा य ण सटीक और सचित्र पढ़िए ?

पाप पर पुण्य की विजय, असत्य पर सत्य की विजय, पापी के सर्वनाश की कथा नहीं जानना चाहते ? **क्यों नहीं ?**

* बीस खंडों में *

यह रामायण २० खंडों में प्रकाशित होगी। प्रत्येकखंड में ८० पृष्ठ, १५-२० सादे और ६-७ रंगीन चित्र। साइज़ सुधा का-सा भव्य। मूल्य प्रतिखंड १॥)

ग्राहकों को विशेष सुविधा

अभी से सब खंडों के लिये ग्राहक बननेवालों से १) लिया जायगा, और ५) अभी भेजकर प्रथम चार खंड के लिये स्थायी ग्राहक बननेवालों से केवल ५) अर्थात् १।) प्रतिखंड लिया जायगा। प्रत्येक खंड का अलग-अलग मूल्य १॥) है।

दो खंड प्रकाशित हो गए ! तीसरा प्रेस में है !!

कृपा कर ग्राहक बनें, और अपने इष्ट-मित्रों से भी अनुरोध करें। इस सहायता से हमारी एक योजना पूर्ण हो जायगी, और आपके हाथों में एक अनुपम ग्रंथ-रत्न आ जायगा।

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस अमृत-तत्त्व की खोज में निरंतर भटकनेवाला—

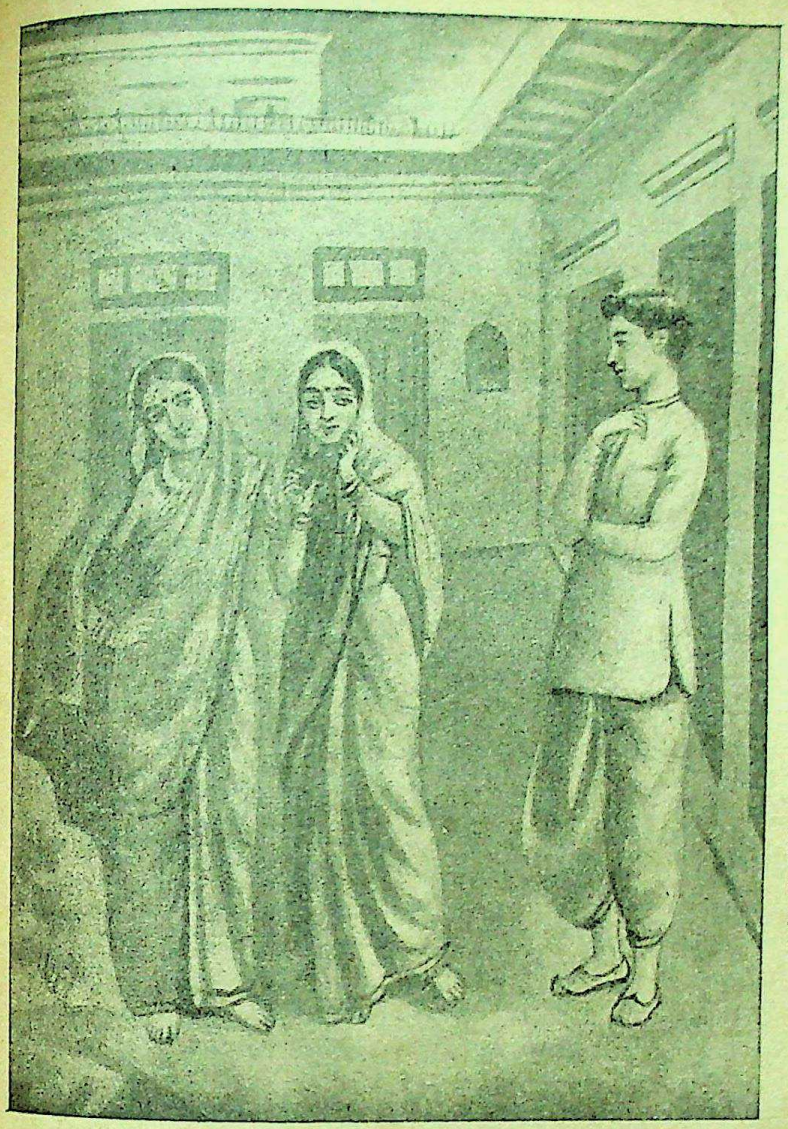

असहाय, अवहेलित,
अविश्वासी—
केवल नाम का

'कुबेर'

धन-राशि में लोटनेवाला, नए युग के पूँजीपतियों का अपवाद - रूप, अभिमानी,

कुबेर न था !

समाज की चोटों से तिल-मिलाकर, आत्मविश्वास और लोकोपकार की भावना के सहारे जीनेवाला, औरों के लिये अपनेपन को लुटा देनेवाला रंक

कुबेर

विधाता के विधान से एक दिन सचमुच 'कुबेर' बन गया ! कैसे ?

एक अबला के अंतःकरण से निकला हुआ आशीर्वाद !
एक नारी के कृतज्ञ-हृदय से मिलनेवाला वरदान !!
एक-एक अक्षर में सजीव होकर एक साधारण व्यक्ति को कितना ऊँचा उठा सका—यदि आप जानना चाहते हैं, तो

साम्यवाद,
यथार्थवाद,
जनवाद,
समाजवाद,

एक विवेचनात्मक रूप में आपके सामने आते हैं।

मानवता

का परिचय कौन देता है ?

'कुबेर'

गंगा-पुस्तकमाला की सबसे नई भेंट
कुबेर (उपन्यास) मँगाकर पढ़िए !

मूल्य सादी १)
सजिल्द १॥)

लेखक

श्रीयुत देवीप्रसाद धवन 'विकल'
सहायक संपादक 'वर्तमान'

मिलने का पता—
हिंदी-पुस्तकों की सबसे बड़ी दूकान—
गंगा-ग्रंथागार, ३६, लाटूश रोड, लखनऊ

आज ही तुरत मँगाकर पढ़ें !!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाइब्रेरी-संस्थापक स्थायी ग्राहकों के लिये नियम

(१) लाइब्रेरी-संस्थापक स्थायी ग्राहक बनने की प्रवेश-फ़ीस सिर्फ़ १) है।

(२) पुस्तकें प्रकाशित होते ही—१५ दिन पहले मूल्य आदि का 'सूचना-पत्र'* भेज देने के बाद—वी० पी० द्वारा भेज दी जाती हैं। ६) रुपए की ४-५ पुस्तकों का सेट एक साथ भेजा जाता है, जिसमें डाक-ख़र्च में बचत रहे।

(३) जो पुस्तकें हमारी प्रकाशित होती हैं, उन पर आपको २५) सैकड़ा तथा बाहर की—हिंदुस्थान-भर की पुस्तकों पर —) रुपया कमीशन दिया जाता है।

(४) लाइब्रेरी-संस्थापक स्थायी ग्राहक जिस पुस्तक को चाहें, लें, जिस पुस्तक को न चाहें, न लें, यह उनकी इच्छा पर निर्भर है। पर साल-भर में कम-से-कम ६) की पुस्तकें लेकर हिंदी-साहित्य-प्रचार में हमारी सहायता करनी पड़ेगी।

(५) कम-से-कम ६) की पुस्तकें एक साथ लेने पर डाक-ख़र्च हमारे ज़िम्मे रहेगा, यानी माल हम पहुँचता हुआ देंगे, अतएव ६) की पुस्तकें एक साथ मँगाइए।

(६) स्थायी ग्राहकों की भूल से वी० पी० लौट आने पर डाक-ख़र्च उन्हें ही देना पड़ता है, और दो बार बी० पी० लौट आने पर लाइब्रेरी-संस्थापक स्थाई ग्राहकों की सूची से उनका नाम काट दिया जाता है।

---

* नई पुस्तकों में से यदि कोई या सब न लेनी हों, अथवा और कोई पुस्तक मँगानी हो, तो 'सूचना-पत्र' मिलते ही हमें पत्र लिखना चाहिए, जिसमें इच्छानुसार कारवाई कर दी जा सके। १५ दिन के अंदर कोई सूचना न मिलने पर, आपकी स्वीकृति समझकर, सब नई पुस्तकें वी० पी० द्वारा भेज दी जाती हैं। ६) की पुस्तकें होने के कारण डाक-ख़र्च ख़ुद हम देते हैं।

लाइब्रेरी-संस्थापक का आदेश-पत्र

प्रिय महाशय,

मैंने गंगा-पुस्तकमाला के नियम पढ़ लिए हैं। कृपया मेरा नाम उसके लाइब्रेरी संस्थापक स्थायी ग्राहकों में लिख लीजिए, और नीचे लिखी पुस्तकें वी० पी० द्वारा भेजकर अनुगृहीत कीजिए। प्रवेश-फ़ीस का १) भी उसी में वसूल कर लीजिएगा। मैं अपने इष्ट-मित्रों को भी माला का ग्राहक बनाऊँगा।

भवदीय—

[हस्ताक्षर कीजिए]

मेरा पता .....

.....

पुस्तकों के नाम .....

.....

.....

.....

.....

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी के दो पठनीय गद्य-काव्य

१. शारदीया

लेखिका, कुमारी दिनेशनंदिनी चोरड्या। हिंदी में गद्य-गीतों की जो शैली चली है, वह नई होते हुए भी भावमय है। कुमारीजी गद्य-गीतों के लिखने में हिंदी-संसार में काफ़ी प्रतिष्ठा पा चुकी हैं। आपके गद्य-गीत बहुत ही सुंदर, सरल और सरस होते हैं। मूल्य सादी ॥), सजिल्द १)

२. एक दिन

लेखक, बाबू भगवतीचरण वर्मा। आप हिंदी के प्रसिद्ध और प्रतिभावान् कवि हैं। आपकी उत्कृष्ट रचनाओं से हिंदी-प्रेमी भली भाँति परिचित हैं। 'एक दिन' भी आपके ही गद्य-पद्यमय काव्य का संग्रह है। इसमें जीवन के सच्चे और गहनतम विचार सरल, सुबोध और सरस ढंग से वर्णन किए गए हैं। पुस्तक सांस्कृतिक शिक्षाओं से ओत-प्रोत है। मूल्य सादी ॥), सजिल्द १)

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी-
स मा लो च ना
के
अग्रदूत
— मासिक —
सा हि त्य-सं दे श
का ——— ही
यह
साहस
है

* शुक्ल-अंक का परिचय *

प्रस्तुत अंक तीन खंडों में है, और सचित्र छपा है।

परिचय—

१—परिचय	स्वर्गीय श्रीरामचंद्र शुक्ल
२—पंडित रामचंद्र शुक्ल जीवन-परिचय	बाबू श्यामसुंदरदास
३—आचार्य पं० रामचंद्र शुक्ल एक झाँकी	श्रीकेशवचंद्र शुक्ल
४—स्वर्गीय आचार्य का अंतिम दर्शन	श्रीशिवमंगलसिंह 'सुमन'
५—उन चार वर्षों की याद में	श्रीउदय एम्० ए०

समीक्षा—

६—शुक्लजी की मानसिक भूमिका	श्रीजैनेंद्र
७—शुक्लजी और हिंदी की परंपरा	श्रीरामविलास शर्मा
८—आचार्य शुक्ल और श्रीआई० ए० रिचर्ड्स एक अध्ययन	श्रीनगेंद्र एम्० ए०
९—हिंदी-आलोचना और आचार्य शुक्ल	श्रीनंददुलारे वाजपेयी
१०—आलोचक पं० रामचंद्र शुक्ल	श्रीरामस्वरूप शर्मा
११—आचार्य शुक्लजी और काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा	श्रीरामबहोरी शुक्ल
१२—शुक्लजी का आलोचकों में स्थान	श्रीशांतिप्रिय द्विवेदी
१३—रामचंद्र शुक्ल समालोचक और निबंधकार	श्रीनलिन विलोचन शर्मा एम्० ए०
१४—प्रबंधकार शुक्लजी	श्रीसद्गुरुशरण अवस्थी
१५—शुक्लजी के मनोवैज्ञानिक निबंध	श्रीगुलाबराय एम्० ए०
१६—हिंदी-साहित्य का इतिहास	श्रीविश्वंभरदयाल 'मानव' एम्० ए०
१७—आचार्य शुक्लजी की सर्वप्रथम मौलिक रचना	श्रीशिवपूजनसहाय
१८—शुक्लजी के इंदौरवाले भाषण की कुछ विशेषताएँ	श्रीप्रभाकर माचवे
१९—शुक्लजी के काव्य में रहस्यवाद की झलक	श्रीगुलाबराय एम्० ए०
२०—अनूदित बुद्ध-चरित	श्रीगोपाल व्यास एम्०ए०
२१—शुक्लजी के अनुवाद	श्रीकृष्णदेवप्रसाद गौड़
२२—शुक्लजी की तीन भूमिकाएँ—जायसी, तुलसी, सूर	श्रीकन्हैयालाल सहल एम्० श्रीसत्येंद्र एम्० ए०, श्रीगुलाबराय
२३—शुक्लजी की हिंदी-साहित्य को देन	श्रीअयोध्यासिंह उपाध्याय, श्रीनलिनीमोहन सान्याल, श्रीवासुदेवशरण अग्रवाल, श्रीउदयनारायण तिवारी और श्रीप्रभाकर माचवे

आभार—इसमें अनेकों लेखकों के व्यक्तिगत पत्र संकलित हैं, संपादकीय।

६ म ही नों में चा र विशे षां क
दो छप गए—दो और भी छपेंगे।
❀ नमूना मुफ्त मँगाइए ❀

मूल्य ३) वार्षिक, विद्यार्थियों के लिये २) पता—साहित्य-संदेश-कार्यालय, आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने प्यारे बच्चों को साहसी और वीर बनाने के लिये
'साहसी बालक' अवश्य पढ़ाएँ।

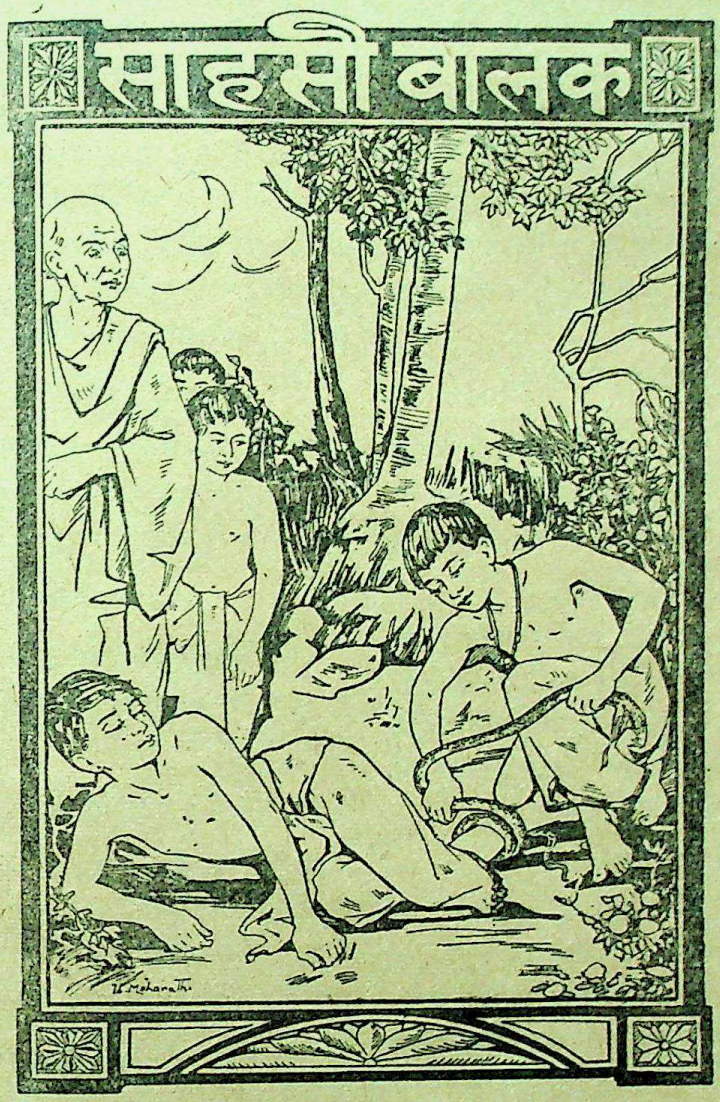

साहसी बालक (द्वितीयावृत्ति)

यह कहानी लिखकर लेखक ने बाल-साहित्य के एक मुख्य अंग की पूर्ति की है। बालक ही आगे चलकर मनुष्य और देश के कर्णधार होते हैं, इसलिये अपने बालकों को साहसी बनाइए। साहस के बल पर ही कल्याण हो सकता है। अपने बच्चों को मनोरंजन देने के साथ ही साहसी बनाइए, जिसमें वे जीवन की कठिनाइयों का सामना करने के लिये तैयार रहें। मूल्य सादी ।), जिल्ददार ।=)

मिलने का पता—मैनेजर बाल-विनोद-वाटिका, ३६, लाटूश रोड, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी के सर वाल्टर-स्कॉट बाबू वृंदावनलालजी वर्मा

की

सुंदर रचनाएँ

(१) गढ़-कुंडार

यह हर्षवर्धन की मृत्यु के बाद भारत के इतिहास के निर्माता चंदेलों, पँवारों, परिहारों और खंगारों के पारस्परिक संघर्ष से ओत-प्रोत, मध्यकालीन भारत की राजनीतिक चालों से भरा हुआ बुंदेलखंड का एक ऐतिहासिक उपन्यास है। मूल्य २॥), सजिल्द ३)

(२) बिराटा की पद्मिनी

इस मर्मस्पर्शी घटनाओं से पूर्ण ऐतिहासिक उपन्यास में बिराटा की 'पद्मिनी'-नामक वीर कन्या का वीरता-पूर्ण चरित्र-चित्रण है। मूल्य २॥), सजिल्द ३)

(३) लगन

विवाह में ठहराव की कुप्रथा, समधियों का झगड़ा, पति-पत्नी का अविरल प्रेम, पर-स्त्रियों पर नैन-सैन चलानेवाले गुंडों की दुर्गति और अंत में सच्चे प्रेम की विजय देखने के लिये इस उपन्यास को अवश्य पढ़ें। मूल्य ॥), सजिल्द १)

(४) संगम

गंगा, यमुना और सरस्वती के संगम से भी अधिक उपादेय और महत्त्व-पूर्ण यह जाति-गंगा का संगम है। इस उपन्यास में आपको अंतर-जातीय संबंध का अच्छा दिग्दर्शन होगा। मूल्य २), सजिल्द २॥)

(५) प्रत्यागत

मा का जितना सुंदर, सजीव, ज्वलंत, उज्ज्वल एवं स्वाभाविक चरित्र-चित्रण इस उपन्यास में वर्माजी ने किया है, अन्यत्र दुर्लभ है। इस उपन्यास की 'मा' संसार के सर्वश्रेष्ठ उपन्यासकारों द्वारा निर्णीत 'मा' से टक्कर ले सकती है। भारतीय साहित्य को छोड़िए, पश्चिमीय साहित्य के ज्वलंत औपन्यासिक भी एक बार इस 'मा' के लिये नवेंगे, तरसेंगे। मूल्य सादी १), सजिल्द १॥)

(६) कुंडली-चक्र

वर्माजी की लेखनी का चमत्कार यदि देखना हो, तो इसे अवश्य पढ़ें। यह काशी-विश्वविद्यालय में बी० ए० में कोर्स है। मूल्य १), सजिल्द १॥)

(७) प्रेम की भेंट

प्रेम के दीवाने एक युवक और एक सुंदर लड़की का सच्चा क़िस्सा पढ़कर आप चकित हो जायँगे। मूल्य १), सजिल्द १॥)

(८) कोतवाल की करामात

वर्माजी पर हिंदी-संसार को गर्व है। इस छोटे-से सामाजिक उपन्यास को रोचक बनाने में वर्माजी ने कुछ उठा नहीं रक्खा। वर्णित घटना बिलकुल सच्ची है। मूल्य १), सजिल्द १॥)

(९) धीरे-धीरे

इस पुस्तक में लेखक ने वर्तमान राजनीतिक हलचल का आश्चर्य-जनक चित्र खींचा है। मूल्य ॥), सजिल्द १)

मिलने का पता—गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सनसनीखेज़ पुस्तकें पढ़िए !

क्रांतिकारी लेखक पं० गुलाबरत्न वाजपेयी 'गुलाब' की अद्भुत पुस्तकें, जो उपार्जनशील व्यक्तियों के लिये अत्यंत उपयोगी हैं। यदि आप सुखी, उन्नत और सफल व्यक्ति बनकर जीवन-संग्राम में विजय चाहते हैं, तो 'आकर्षण-शक्ति', 'नई रोशनी' और 'स्त्री-पुरुष' फ़ौरन् पढ़िए। आपकी आमदनी बढ़ेगी, दिमाग़ तेजस्वी होगा, और गृहस्थ-जीवन आनंदों से भर उठेगा—

'आकर्षण-शक्ति' २)
'स्त्री-पुरुष' २)
'काँटा' १॥)
'दिल की प्यास' १)
'नई रोशनी' १॥)
'पपीहा' २)
'तारामंडल' १॥)
'मृत्युंजय' १)
'लतिका' १)

जनता और पत्र-पत्रिकाओं द्वारा प्रशंसित ! हज़ारों की तादाद में बिक रही हैं !! कोई दो पुस्तकें मँगाने से डाक-खर्च माफ़।

गंगा-ग्रंथागार
३६, लाटूश रोड, लखनऊ

विज्ञान-मंदिर
६ (सी०) ब्राह्मणपाड़ा लेन, कलकत्ता

कारख़ाना

असग़रअली मुहम्मदअली

ताजिर इत्र, लखनऊ

ने

माल की उम्दगी, सच्चाई
और सद्व्यवहार के साथ
१०० वर्ष के अनुभव का रहस्य
प्राप्त किया है।

स्थापित सन् १८३९ फ़ोन नं० १३९

हर प्रकार के
सुगंधित इत्र, रोग़न और ज़रदा
प्राप्त करने के लिये

मुहम्मदयूसुफ़ एंड संस

ताजिर इत्र, यूसुफ़-बिल्डिंग
नादानमहल रोड, लखनऊ
की सेवाएँ स्वीकारकीजिए।
आपको संतोष होगा।

हमारी कुछ विशेषताएँ

ज़र्दा, इत्र तथा रोग़न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Registered No. A—473

प्रसिद्ध ज्योतिर्विद्

श्रीगिरिजादत्त शुक्ल 'गिरीश' बी० ए०

से

हिंदी अथवा अँगरेज़ी में

साप्ताहिक राशि-फल	२) वर्ष-भर का
वैज्ञानिक कुंडली, साधारण आकार	५) में एक
वैज्ञानिक कुंडली, बड़ा आकार	१०) में एक
वैज्ञानिक वर्ष-फल	५) में एक
वैज्ञानिक प्रश्नोत्तर	१।) में एक

मँगवाकर अपने जीवन का प्रोग्राम बनाइए !

नोट—(१) साप्ताहिक राशि-फल यदि केवल एक सप्ताह का लेना हो, तो चार आने के टिकट भेजिए।

(२) वैज्ञानिक कुंडली अथवा वर्ष-फल के लिये जन्म का संवत् या सन्, महीना, दिन और ठीक समय लिखिए।

(३) वैज्ञानिक प्रश्नोत्तर के लिये पत्र लिखने का स्थान, समय और तारीख लिखिए।

पता— श्रीगिरिजादत्त शुक्ल 'गिरीश' बी० ए०
ऐस्ट्रोलॉजिकल इंस्टीट्यूट, दारागंज, प्रयाग

गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस, लखनऊ में श्रीदुलारेलाल (सोल प्रोप्राइटर) द्वारा मुद्रित और प्रकाशित
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रवेशांक

साधारण संस्करण मूल्य १)

'कहानी-अंक' दिसंबर में निकलेगा !

महोदय,

'सुधा' का विशेषांक आपकी सेवा में पहुँच रहा है। हम इस विशेषांक को गत वर्ष की भाँति २०० पृष्ठ का ही निकालना चाहते थे, पर कृतविद्य कवियों और लब्धप्रतिष्ठ लेखकों की रुचिर रचनाएँ हमें कुछ देर से मिलीं, और इच्छा होते हुए भी हम उन्हें इस समय नहीं दे सके। कारण, वैसा करने से 'सुधा' और लेट होती। अस्तु। इस विशेषांक की पृष्ठ-संख्या १६६ ही रहने दी है। ३४ पृष्ठों की जो कमी रह गई है, उसे हम दिसंबर-मास का अंक फिर विशेषांक के रूप में निकालकर पूरा कर देंगे। यह अंक 'कहानी-अंक' के नाम से प्रकाशित होगा। उसमें हिंदी के सभी प्रतिष्ठित कहानी-लेखकों की कहानियाँ दी जायँगी। आशा है, प्रेमी पाठक 'सुधा' के दोनों विशेषांकों की सुंदर सामग्री पसंद करेंगे।

इस प्रकार अभी से ग्राहक बननेवाले सज्जनों को २-२ विशेषांक प्राप्त करने का अवसर मिलेगा। विज्ञापनदाताओं को भी अभी से दूसरे विशेषांक के लिये विज्ञापन छपाने का कंट्रैक्ट करके रुपया भेज देना चाहिए। ऐसा हो जाने पर हम उनके विज्ञापन आकर्षक रूप में बनाकर विशेष महत्त्व-पूर्ण स्थानों पर छाप सकेंगे।

सुधा की आगामी संख्या में वे ही उत्कृष्ट लेख जा रहे हैं, जो विशेषांक के लिये आए थे, पर छप नहीं सके। यह परिशिष्टांक भी बहुत ही सुंदर निकल रहा है। लगभग १५ दिन में ही ग्राहकों के पास पहुँच जायगा।

भवदीय—
मोतीलाल भार्गव
मैनेजर 'सुधा', लखनऊ

सुधा
प्रधान संपादक
श्रीदुलारेलाल
श्रीसावित्री
श्रावण, १९९८
AUGUST, 1941

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Registered No. A—473

प्रसिद्ध ज्योतिर्विद्

पता— श्रीगिरिजादत्त शुक्ल 'गिरीश' बी० ए०
ऐस्ट्रोलॉजिकल इंस्टीट्यूट, दारागंज, प्रयाग

गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस, लखनऊ में श्रीदुलारेलाल (सोल प्रोप्राइटर) द्वारा मुद्रित और प्रकाशित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रवेशांक

साधारण संस्करण मूल्य १)

सुधा

प्रधान संपादक
श्रीदुलारेलाल
श्रीसावित्री

श्रावण, १९९८
AUGUST, 1941

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इत्र, तेल, तंबाकू

सब प्रकार के सुगंधित इत्र, तेल, तंबाकू मुश्की, दाना, पत्ती, तंबाकू की सुनहली रुपहली गोलियाँ, बर्क़ी क़िवाम, ज़ाफ़रानी पत्ती तथा लाल पत्ती, उत्तम अर्क़ केवड़ा, गुलाब तथा सब प्रकार के शरबत ताज़े तैयार किए जाते हैं।

सेंट (काठियावाड़ी तथा गुप्ता कंपनी) तथा हालैंड, फ्रांस, जरमनी शीशी, कार्क, इत्रदान हर समय तैयार मिलते हैं। परीक्षा प्रार्थनीय है।

लक्ष्मी	बड़े सूचीपत्र और विशेष	लक्ष्मी
बर्क़ी	विवरण के लिये	मोहनी
ज़र्दा	पत्र लिखिए	सुर्ती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी भी कारण से बिगड़ा हुआ ख़ून साफ़ करने के लिये—

रक्त-दोषांतक

(रजिस्टर्ड)

— सबसे अच्छी दवा है —

शरीर पर उठनेवाले फोड़े या फुंसियाँ ख़राब ख़ून की वजह से ही निकलती हैं। उनको मिटाने के लिये तथा उपदंशादि ख़राब ख़ून से पैदा होनेवाली सभी बीमारियों का नाश करने के लिये रक्त-दोषांतक प्रमाणित गुण श्रेष्ठ दवा है।

आयुर्वेदाश्रम-फ़ार्मेसी, लि०, अहमदनगर

लखनऊ-एजेंट—मातावदल पंसारी, अमीनाबाद

—और सभी जगह मिलता है।

INFORMATION

Eminent as specialist of Diabetes, Rajvaidya P. Krishna Gopal Jhingran, 32, Kutcherry Road, Lucknow wrought a marvellous cure of my wife's abdominal tumor being painlessly removed. The Doctors suggested operation as the only remedy.

In Diabetes and other ailments Vaidyaji's expert consultation is a boon.

NAWAB SAJJAD ALI KHAN, Ex. M. L. C.
SHEESH MAHAL, LUCKNOW.

डायबिटीज़ (मधुमेह), बल-क्षय तथा पेट की चिकित्सा,

पाश्चात्त्य चिकित्सकों तथा रोगियों द्वारा सम्मानित
डायबिटीज़-चिकित्सा का पूरा विवरण अँगरेज़ी-पुस्तिका मँगाकर देखें।
राजवैद्य पं० कृष्णगोपाल झिंगरण [आ० भि०] ३२, कचहरी रोड, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'सुधा' के नियम

['सुधा' के तीन संस्करण निकलते हैं—(१) राजसंस्करण, (२) साधारण संस्करण, (३) सस्ता संस्करण]

मूल्य

'सुधा' के राजसंस्करण का डाक-व्यय-सहित वार्षिक मूल्य १२), छ मास का ६) और प्रति संख्या का १) है। साधारण संस्करण का वार्षिक ६), छ मास का ३) और एक प्रति का ॥) है। सस्ते संस्करण का वार्षिक ४॥), एक प्रति का ।=) है। वी० पी० मँगाने में ≡) रजिस्ट्री के और देने पड़ेंगे। अतः ग्राहकों को मनीऑर्डर से ही चंदा भेज देना चाहिए। भारत के बाहर सर्वत्र वार्षिक मूल्य वही है, जो भारत में। सुधा की यह भी एक विशेषता है। वर्षारंभ श्रावण (अगस्त) से होता है, लेकिन ग्राहक चाहे जिस संख्या से बन सकते हैं।

अप्राप्त संख्या

अगर कोई संख्या किसी ग्राहक के पास न पहुँचे, तो उसी महीने के अंत तक कार्यालय को सूचना मिलनी चाहिए। लेकिन हमें सूचना देने के पहले स्थानीय पोस्ट-ऑफ़िस में उसकी जाँच करके डाकख़ाने का दिया हुआ उत्तर सूचना के साथ आना चाहिए। उन्हें उस संख्या की दूसरी प्रति भेज दी जायगी। लेकिन उक्त तारीख़ के बाद सूचना मिलने पर उस संख्या को ग्राहक एक प्रति का मूल्य १), ॥) या ।) के टिकटों द्वारा भेजने पर ही पा सकेंगे।

पत्र-व्यवहार

उत्तर के लिये जवाबी कार्ड या टिकट आना चाहिए, अन्यथा पत्र का उत्तर विलंब से दिया जाना संभव है। पत्र के साथ ग्राहक-नंबर का भी उल्लेख होना चाहिए। मूल्य या ग्राहक होने की सूचना मैनेजर 'सुधा', नं० ३६, लाटूश रोड, लखनऊ के पते से आनी चाहिए।

पता

ग्राहक होते समय अपना नाम और पता बहुत साफ़ अक्षरों में लिखना चाहिए। दो-एक महीने के लिये पता बदलवाना हो, तो उसका प्रबंध डाक-घर से ही कर लेना ठीक होगा। अधिक दिन के लिये बदलवाना हो, तो संख्या निकलने के १५ दिन पेश्तर उसकी सूचना देनी चाहिए।

लेख आदि

लेख या कविता स्पष्ट अक्षरों में, काग़ज़ की एक ओर, संशोधन के लिये इधर-उधर जगह छोड़कर, लिखी होनी चाहिए। क्रमशः प्रकाशित होने लायक़ बड़े लेख संपूर्ण आने चाहिए। किसी लेख अथवा कविता के प्रकाशित करने या न करने का, उसे घटाने-बढ़ाने तथा लौटाने या न लौटाने का सारा अधिकार संपादक को है। जो नापसंद लेख संपादक लौटाना मंज़ूर करें, वे टिकट भेजने पर ही वापस किए जा सकते हैं। यदि लेखक लेना स्वीकार करते हैं, तो उपयोगी और उत्तम लेखों पर पुरस्कार भी दिया जाता है। सुधा में प्रकाशित पुरस्कृत लेखों और कविताओं को पुस्तकाकार या किसी संग्रह में निकालने का अधिकार सुधा के अध्यक्ष को रहेगा। अपुरस्कृत रचनाओं पर लेखकों और सुधा-अध्यक्ष, दोनों का अधिकार होगा। सचित्र लेखों के चित्रों का प्रबंध लेखकों को करना चाहिए। चित्र प्राप्त करने के लिये आवश्यक ख़र्च प्रकाशक देंगे।

लेख, कविता, समालोचना के लिये पुस्तकें और बदले के पत्र इस पते से भेजने चाहिए—

श्रीदुलारेलाल
गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय
कवि-कुटीर, लखनऊ

विज्ञापन

किसी महीने में विज्ञापन बंद करना या बदलवाना हो, तो एक महीने पहले सूचना दें।

अश्लील विज्ञापन नहीं छपते। छपाई पेशगी ली जाती है। विज्ञापन की दर नीचे प्रकाशित है—

साधारण १ पृष्ठ या २ कालम की छपाई २५) ,, ,,
,, ½ ,, या १ ,, ,, ,, १५) ,, ,,
,, ¼ ,, या ½ ,, ,, ,, १०) ,, ,,
,, ⅛ ,, या ¼ ,, ,, ,, ६) ,, ,,

कम-से-कम आधा कालम विज्ञापन छपानेवालों को सुधा मुफ़्त मिलती है। विज्ञापनदाता द्वारा छपे हुए सुधा-साहज़ के ८ पृष्ठ के क्रोड़-पत्र की सिलाई, बटाई के चार्जेज़ ६०), ४ पृष्ठ के ३५) और २ पृष्ठ के २०) लिए जाते हैं।

सुधा में विज्ञापन छपाने से बड़ा लाभ रहता है। कारण, इसका प्रत्येक विज्ञापन लाखों पढ़े-लिखे, धनी-मानी और सभ्य स्त्री-पुरुषों की नज़रों से गुज़र जाता है। हिंदी की सर्वश्रेष्ठ पत्रिका होने के कारण इसका प्रचार उत्तरोत्तर बढ़ रहा है।

कृपया शीघ्र ही अपना विज्ञापन सुधा में छपाकर लाभ उठाइए। कम-से-कम एक बार परीक्षा तो कर लीजिए।

मैनेजर 'सुधा', लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख-सूची

		पृष्ठ
१.	गीत (कविता)—[लेखक, श्री-दुलारेलाल	१
२.	प्रेम-प्रदीप (कविता)—[लेखक, डॉ० रामशंकर शुक्ल 'रसाल' एम्० ए०, डी० लिट्०	२
३.	अखिल भारतीय ख़ालसा-कवि-सम्मेलन (सचित्र)—[लेखक, श्रीयुत क, ख, ग	३
४.	हाथी के दाँत (कहानी)—[लेखक, श्रीयुत विश्वंभरनाथ शर्मा कौशिक ...	२३
५.	चले हैं हम आज़ादी लेने !—[लेखक, श्रीयुत सुधींद्र वर्मा एम्० ए०, एल्-एल्० बी०	२८
६.	गीत (कविता)—[लेखक, श्रीपं० सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'	३४

अमृतांजन

सर्वश्रेष्ठ दर्दनाशक भारतीय महौषध। सिर-दर्द, जलन, पीड़ा, फोड़ा, सूजन, कटना, घाव, वात, गठिया, कमर का दर्द, सरदी, खाँसी, कीड़ों का डंक आदि सभी वेदनाओं में 'अमृतांजन' आश्चर्य-जनक फ़ायदा करता है।

अमृतांजन लिमिटेड

बंबई, कलकत्ता, मदरास

पो० बॉक्स नं० ६,८२५

[ई० सन् १९०१ में स्थापित]

च्यवनप्राश-३) सेर **अध्यक्ष मथुरा बाबू का** मकरध्वज-४) भरी

शक्ति औषधालय-ढाका

आयुर्वेदिक संसार में युगांतर उपस्थित कर दिया है।

कारख़ाना और हेड ऑफ़िस ढाका, बंगाल। तार का पता 'शक्ति' ढाका।

कलकत्ता हेड ऑफ़िस—५२। १, बीडन स्ट्रीट। चौरंघी

बंगाल से बाहर की शाखाएँ—दिल्ली, कानपुर, इलाहाबाद, पटना, भागलपुर, गया, बनारस, गोरखपुर, बुलानाला, जमशेदपुर, गौहाटी, तिनसुकिया (आसाम), मदरास, कटक, रंगून, वेसिन, मांडले (बरमा), बंबई, लखनऊ ब्रांच—२ श्रीराम रोड, लखनऊ आदि।

ब्रांच भारतवर्ष में सर्वत्र और बरमा में

मृतसंजीवनी सुरा (गवर्नमेंट से लाइसेंसशुदा) भारतवर्ष और बरमा में हमारी सभी ब्रांचों में मिलती है।

प्रोप्राइटर्स—श्रीमथुरामोहन, स्व० लालमोहन, फणींद्रमोहन मुखोपाध्याय चक्रवर्ती।

मैनेजिंग प्रोप्राइटर—श्रीमथुरामोहन मुखोपाध्याय चक्रवर्ती बी० ए०

हिंदू केमिस्ट और फ़िज़िशियन

पत्र और मनीऑर्डर आदि मथुरा बाबू मैनेजिंग प्रोप्राइटर के नाम भेजिए।

आयुर्वेदीय चिकित्सा-प्रणाली-संवलित सूचीपत्र मुफ़्त मिलता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृष्ठ

७. स्वर्गीय पं० कृष्णकांत मालवीय (सचित्र, संस्मरण)—[लेखक, श्रीपं० मंगलदेव शर्मा ३५

८. सेवाग्राम में कुछ घंटे (सचित्र)—[लेखक, साहित्यरत्न श्रीयुत लक्ष्मी-नारायण टंडन 'प्रेमी' एम्० ए० ... ४३

९. प्रोफ़ेसर पिल्ले का प्रेम (हास्य)—[लेखक, श्रीयुत 'बेढब' बनारसी ... ५५

१०. नर-सिर-मौर (कविता)—[लेखक, श्रीपं० अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' ५९

११. घटा घुँघराली उठी! (कविता)—[लेखक, द्वितीय देव-पुरस्कार-विजेता डॉ० रामकुमार वर्मा एम्० ए०, पी-एच्० डी० ... ... ६०

१२. साम्प्रदायिक एकता की समस्या—[लेखक, श्रीयुत संतराम बी० ए० ... ६१

१३. 'सेवाधर्मः परमगहनो मुनीनामपि दुर्लभः' (छतरपुर में मेरे अठ्ठारह वर्ष)—[लेखक, श्रीयुत गुलाबराय एम्० ए० ... ... ६६

१४. राजस्व क्या है? (अर्थशास्त्र)—[लेखक, श्रीयुत प्रोफ़ेसर दयाशंकर दुबे एम्० ए०, एल्-एल्० बी० ... ७१

१५. दर्शन (गद्य-काव्य)—[लेखक, श्रीयुत महावीरप्रसाद दाधीच बी० ए०, एल्-एल्० बी० ... ... ७६

१६. प्राणों के प्रति (कविता)—[लेखक, पु० श्रीप्रतापनारायण कविरत्न ... ७८

१७. निमंत्रण-पत्र—[लेखक, श्रीयुत डॉ० सत्यप्रकाश डी० एस्-सी० ... ... ८०

१८. मन का भ्रम (कहानी)—[लेखक, श्रीपं० उमाशंकर वाजपेयी 'उमेश' एम्० ए० (ऑनर्स) ९१

१९. प्यार का प्यासा है संसार (कविता)—[लेखक, श्रीयुत 'वचनेश' ९७

२०. दोहे (कविता)—[लेखक, श्रीयुत तेजनारायण काक एम्० ए० ... ९८

२१. कमज़ोरों पर क़यामत (हास्य)—[लेखक, श्रीहरिशंकर शर्मा ९९

२२. आवारागर्द (कहानी)—[लेखक, आचार्य श्रीचतुरसेन शास्त्री १०३

२३. तुलसी का प्रेम-चित्रण—[लेखक, स्व० प्रो० श्रीरमाशंकर शुक्ल 'हृदय' एम्० ए० ... ... ११०

२४. मुग्ध (कविता)—[लेखक, श्री-आरसीप्रसादसिंह ११७

२५. अपराधी विशी—[लेखक, श्रीपृथ्वीपाल-सिंह एम्० ए० (अमेरिका), जे० डी० (लंदन), एल्-एल्० बी० (लखनऊ) ११८

२६. रहस्योद्घाटन (व्यंग्य-चित्र) ... १२२

२७. चयन—[लेखकगण, श्रीयुत साहित्या-लंकार 'रसिकेंद्र', रायबहादुर श्रीपं० शुकदेवविहारी मिश्र बी० ए०, श्रीयुत बहकानाथ, श्रीयुत बुद्धिसागर वर्मा विशारद, बी० ए०, एल्० टी०, श्रीयुत भूपनारायण दीक्षित एम्० ए०, एल्०

खुशख़बरी! खुशख़बरी!! खुशख़बरी!!!

हीरे के बैंगिल्स, कंगन और पट्टरी

हर प्रकार के साइज़ और हर क़ीमत की हमारे यहाँ से ख़रीदिए!

काच, सैल्यूलाइड और कोरक की अँगरेज़ी, बनारसी, हैदराबादी, जर्मनी और जापानी भिन्न-भिन्न रंगों और डिज़ाइनों की चूड़ियाँ, हर साइज़ की, हमारी दूकान से हर साल थोक और फुटकर बड़ी संख्या में हिंदुस्थान के कोने-कोने में भेजी जाती हैं।

हमारा काम अँगरेज़ी ढंग पर होता है। चूड़ियाँ औरतें पहनाती हैं। हर प्रकार के नमूने के लिये पत्र लिखिए।

सुहाग-चूड़ी-भंडार, श्रीराम-रोड, अमीनाबाद, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

	पृष्ठ
टी० और श्रीसुधीन्द्र वर्मा एम्० ए०, एल्-एल्० बी०	१२३
२८. परिचय—[लेखकगण, श्रीयुत 'निष्पक्ष निरीक्षिक', श्रीयुत 'उमेश' एम्० ए०, श्रीयुत साहित्यरत्न लक्ष्मीनारायण टंडन	
'प्रेमी' एम्० ए० और श्रीयुत चिरंजीलाल 'एकाकी' बी० ए०	१३४
२९. कुसुम	१३६
३०. धारा (सचित्र, संपादकीय विचार)	१४०
३१. सुधा-चित्रावली	१६३

पेशाब के भयंकर दर्दों के लिये

एक नई और आश्चर्यजनक ईजाद ! याने—

सूज़ाक (गनोरिया) की हुक्मी दवा

डॉ० जसानी का

'गोनोकिलर' रजिस्टर्ड

जगत्-विख्यात

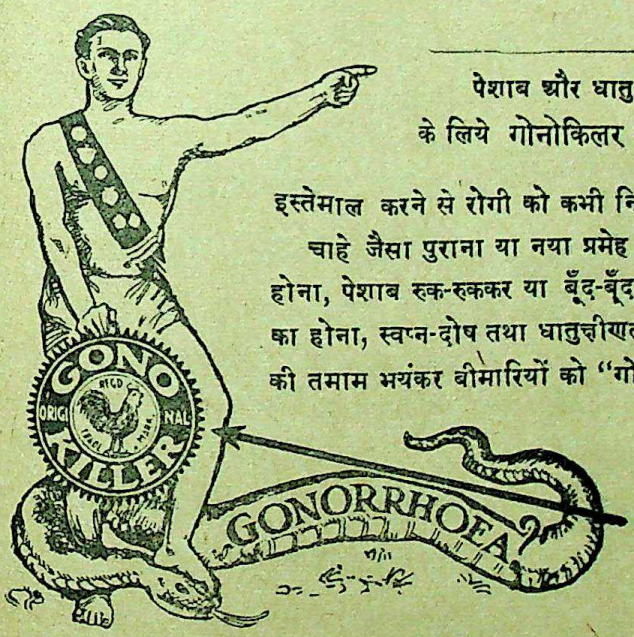

पेशाब और धातु के दर्दों को मार हटाने व निर्मूल करने के लिये गोनोकिलर एक ऐसी ही आश्चर्यजनक दवा है, जिसका इस्तेमाल करने से रोगी को कभी निराश होना ही नहीं पड़ता।

चाहे जैसा पुराना या नया प्रमेह या सूज़ाक, पेशाब में मवाद आना, जलन होना, पेशाब रुक-रुककर या बूँद-बूँद आना, मूत्राशय के अंदर घाव या सूजन का होना, स्वप्न-दोष तथा धातुक्षीणता और औरतों तथा मर्दों की इस क़िस्म की तमाम भयंकर बीमारियों को "गोनोकिलर" जड़ से नष्ट कर देता है।

नक़ली से सावधान !

ख़रीदने से पहले दवा का नाम गोनोकिलर और मुर्ग़ा-छाप सीलबंद पैकेट देख लीजिए

मूल्य ५० गोलियों की शीशी का ३) रु०, वी० पी० डाक-व्यय आठ आना अलग।

एकमात्र बनानेवाले—डॉ० डी० एन्० जसानी S. L. गिरगाँव, बैक रोड, बंबई नं० ४

लखनऊ-स्टाकिस्ट—किंग मेडिकल हॉल, अमीनाबाद-पार्क

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्र-सूची

पृष्ठ

(क) तिरंगा

१. रूप-गर्विता—[चित्रकार, श्रीयुत राधेश्याम भटनागर १

(ख) व्यंग्य

२. रहस्योद्घाटन—[चित्रकार, श्रीयुत शिक्षार्थी १२२

(ग) सादे

३. डॉ० रामशंकर शुक्ल 'रसाल' एम्० ए०, डी० लिट्० ... ... २

४. वीर-श्रेष्ठ श्रीगुरु गोविंदसिंहजी ... ३

पृष्ठ

५. श्रीमती सावित्री और श्रीदुलारेलाल ... ६

६. डॉ० जसवंतसिंह एम्० ए०, बी० एस्-सी०, एन्० डी० (लंदन)... ... ७

७. श्री 'सनेही' जी ११

८. श्रीयुत मिश्रबंधु १३

९. श्रीयुत 'प्रणयेश' शुक्ल १५

१०. श्रीयुत पं० सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' १६

११. सरदार बलदेवसिंह दुग्गल १७

१२. श्रीयुत द्वारकाप्रसाद गुप्त 'रसिकेंद्र' ... १८

१३. श्रीयुत कृष्णदेवप्रसाद गौड़ एम्० ए० 'बेढब' बनारसी २०

मुक्तिदाखाँ इक्तिदाखाँ
तंबाकू व इत्र-निर्माता
लखनऊ

ही एकमात्र ऐसी फ़र्म है, जिसने इलायची, तंबाकू (रजिस्टर्ड) का नवीन आविष्कार करके राजा-महाराजाओं, नेताओं, अफ़सरों तथा भारत के प्रत्येक निवासी को अपनी ओर आकर्षित कर लिया है।

MUQTIDAKHAN IQTIDAKHAN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृष्ठ

१४. श्रीयुत विश्वंभरनाथ शर्मा कौशिक २३
१५. श्रीयुत सुधींद्र वर्मा एम्० ए०, एल्-एल्० बी० ... ... २८
१६. श्रीयुत पं० मंगलदेव शर्मा ३५
१७-१८. स्व० पं० कृष्णकांतजी मालवीय (दो चित्र) ३६-३७
१९. साहित्यरत्न श्रीयुत लक्ष्मीनारायण टंडन 'प्रेमी' एम्० ए० ... ... ४३
२०-२४. महात्मा गांधी (५ चित्र) ... ४४-४८
२५. आचार्य कृपलानीजी ५०
२६. श्रीपं० अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' ५९
२७. श्रीयुत संतराम बी० ए० ... ६१
२८. श्रीयुत गुलाबराय एम्० ए० ... ६६
२९. श्रीयुत प्रोफ़ेसर दयाशंकर दुबे एम्० ए०, एल्-एल्० बी० ... ... ७२

पृष्ठ

३०. श्रीयुत महावीरप्रसाद दाधीच बी० ए०, एल्-एल्० बी० ... ... ७६
३१. पु० श्रीप्रतापनारायण कविरत्न ... ७८
३२. श्रीपं० उमाशंकर वाजपेयी 'उमेश' एम्० ए० (ऑनर्स) ८१
३३. श्रीयुत 'वचनेश' ८७
३४. श्रीयुत तेजनारायण काक एम्० ए० ... ८८
३५. श्रीहरिशंकर शर्मा... ... ... ९९
३६. आचार्य श्रीचतुरसेन शास्त्री ... १०४
३७. स्व० श्रीरमाशंकर शुक्ल 'हृदय' एम्० ए० ... ... ११०
३८. श्रीआरसीप्रसादसिंह ११७
३९. श्रीपृथ्वीपालसिंह एम्० ए० (अमेरिका), जे० डी० (लंदन), एल्-एल्० बी० (लखनऊ) ११९

यदि आप

तंबाकू के प्रेमी हैं

तो एक बार हमारे कारख़ाने का तैयार किया हुआ तंबाकू व्यवहार कीजिए। हमें इस संबंध में विशेष निपुणता प्राप्त है। हमारा बनाया तंबाकू लाभदायक और अत्यंत स्वादिष्ट होता है। इसमें नशीली अथवा धर्म-विरुद्ध कोई वस्तु नहीं पड़ती।

इसके अतिरिक्त हमारे यहाँ गोली तंबाकू, क़िवाम, दाना मुश्की, ज़र्दा-पत्ती तथा हर प्रकार के इत्र, रोग़न और अर्क़ भी तैयार किए जाते हैं।

दि अंबरी ज़र्दा तंबाकू-फ़ैक्टरी

चौक, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृष्ठ

४०. श्रीबुद्धिसागर वर्मा विशारद, बी० ए०, एल्० टी० ... ... १२८
४१. श्रीभूपनारायण दीक्षित एम्० ए०, एल्० टी० ... ... १३१
४२. सर अकबर हैदरी १४०
४३. श्रीअमरनाथ झा एम्० ए०... ... १४१
४४. स्वर्गीय कवींद्र रवींद्र १४२
४५. हर हिटलर १४४
४६. स्टैलिन १४५
४७. श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित ... १५३
४८. श्रीमती सौभाग्यवती कांतिदेवी 'दिनेश' १५६
४९. महामना मालवीयजी १६१
५०. प्रो० रामकुमार वर्मा एम्० ए०, पी-एच्० डी० ... ... १६३
५१. डॉ० सत्यप्रकाश डी० एस्-सी० ... १६४
५२. कुमारी दीप्ति सेन गुप्त १६५
५३. कुमारी शांता प्रभु १६५
५४. 'मेहनत और मशीनरी' १६६

चाँदी और सोना

हमारी दूकान पर हर तरह के चाँदी के बर्तन, जैसे टी-सेट, इत्रदान, गुलाबपाश और पाउडर-केस आदि पक्के माल के तैयार मिलते हैं। सोने के नए डिज़ाइन के गहने जैसे सीतारामी, बुंदा, नेक-लेस और अँगूठी वग़ैरा भी मिलती हैं। ये सब सामान तैयार मिलता है और ऑर्डर मिलने पर ग्राहक के इच्छानुसार भी माल तैयार कर देते हैं। नापसंद होने पर माल वापस भी कर लेते हैं। हमारा माल हिंदुस्थान के कोने-कोने में हज़ारों ग्राहकों के पास पहुँचता है। माल की सच्चाई और समय की पाबंदी पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

बदरीनारायण बेनीप्रसाद सर्राफ़, २७, २९, चौक, लखनऊ

क्या आपने कभी

विचार किया है कि गुजराती तथा मराठी में अपनी वस्तुओं का विज्ञापन, सूचीपत्र, हैंडबिल इत्यादि सुंदर, सस्ता, शुद्ध कहाँ छपवाया जाय? कई बार मन में इच्छा हुई, परंतु पूर्ण न कर सके। अब लोक-सेवा-प्रिंटिंग-प्रेस, शिवाजी-रोड, बड़ौदा आपका विज्ञापन, सूचीपत्र, हैंडबिल, जो भी आप चाहें, हिंदी से गुजराती, मराठी, अँगरेज़ी में सुंदर छापकर दे सकेगा। एक बार आप काम देकर देखें। इस प्रेस में गुजराती-साहित्य के प्रसिद्ध प्रकाशक आर० आर० शठ तथा मैकमिलन-कंपनी की पुस्तकें छपती हैं। पत्र-व्यवहार का पता—

श्रीपं० आनंदप्रिय बी० ए०, एल्-एल्० बी०
प्रोप्राइटर
लोकसेवा-प्रिंटिंग-प्रेस, शिवाजी-रोड, बड़ौदा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Approved by the Directors of Public Instruction in U. P., C. P., C. I., Bombay, Bihar, Punjab & Sin

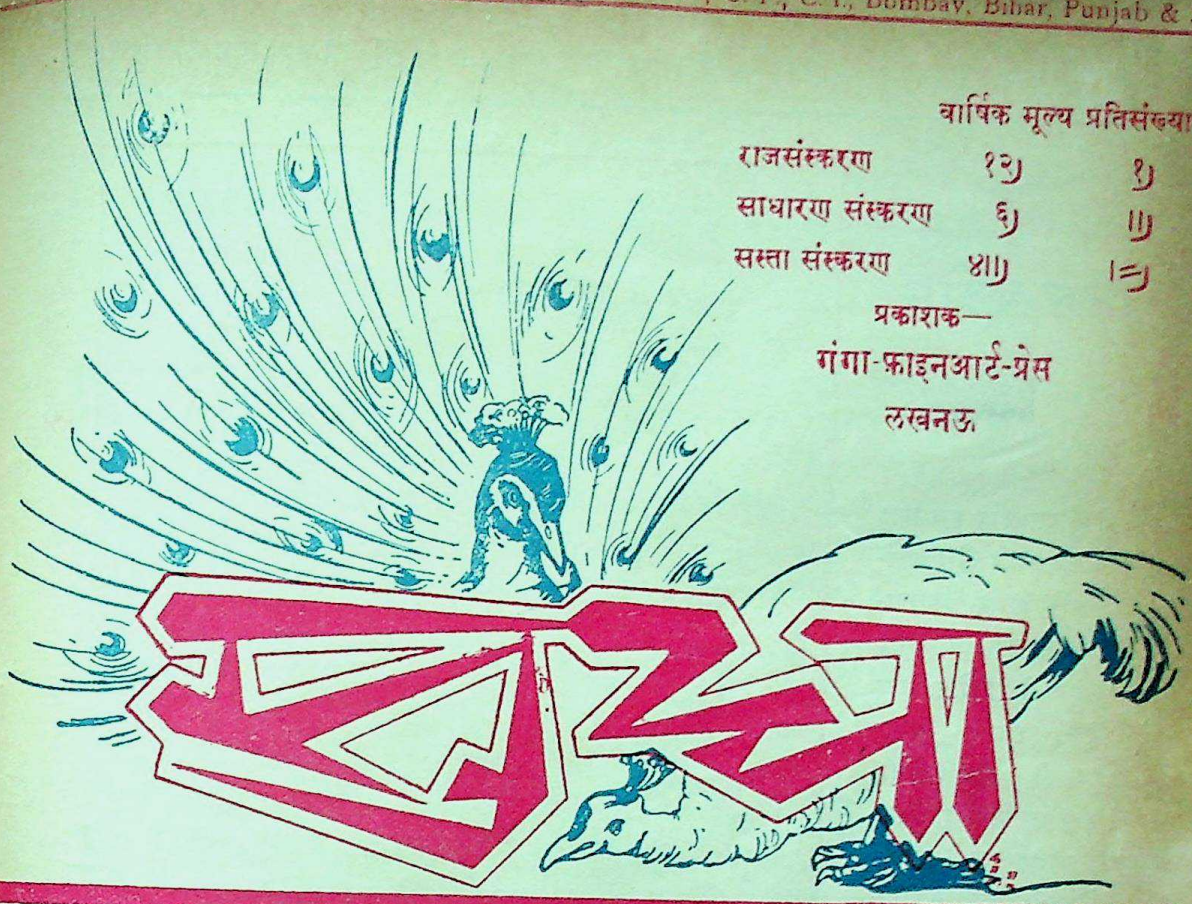

वार्षिक मूल्य प्रतिसंख्या

राजसंस्करण	१२)	१)
साधारण संस्करण	६)	॥)
सस्ता संस्करण	४॥)	।=)

प्रकाशक—
गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस
लखनऊ

वर्ष १५ खंड १	श्रावण, ३१६ तुलसी-संवत् (१६६८ वि०)— अगस्त, १६४१	संख्या २ पूर्ण संख्या १८१

गीत

[श्रीदुलारेलाल]

हरैंगे ही की हरि ही पीर ;
पंजर-पिंजर मैं परि आकुल तरफरात यह कीर।
मेरे हंस ! परौ यह मानस, भरौ खरौ दुख-नीर ;
तीर तुरत आवैं, बिलगावैं जो कछु इत सुख - छीर।
तो समान को रतन-पारखी, तेरो ग्यौंन गँभीर ;
नासैं कुकरम - काँच, प्रकासैं जेते सुकरम - हीर।
जे दृग आधे राधे राखैं, बाँधे प्रेम - जँजीर,
मो अधीर कौं धीर धरैंहै वेई हरि भव - भीर।
रँगौ पामरी रंग-स्याम री, जु चित कामरी बीर !
जगत-रंग तौ जमि न सकैगो कबहुँ तिहारे तीर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

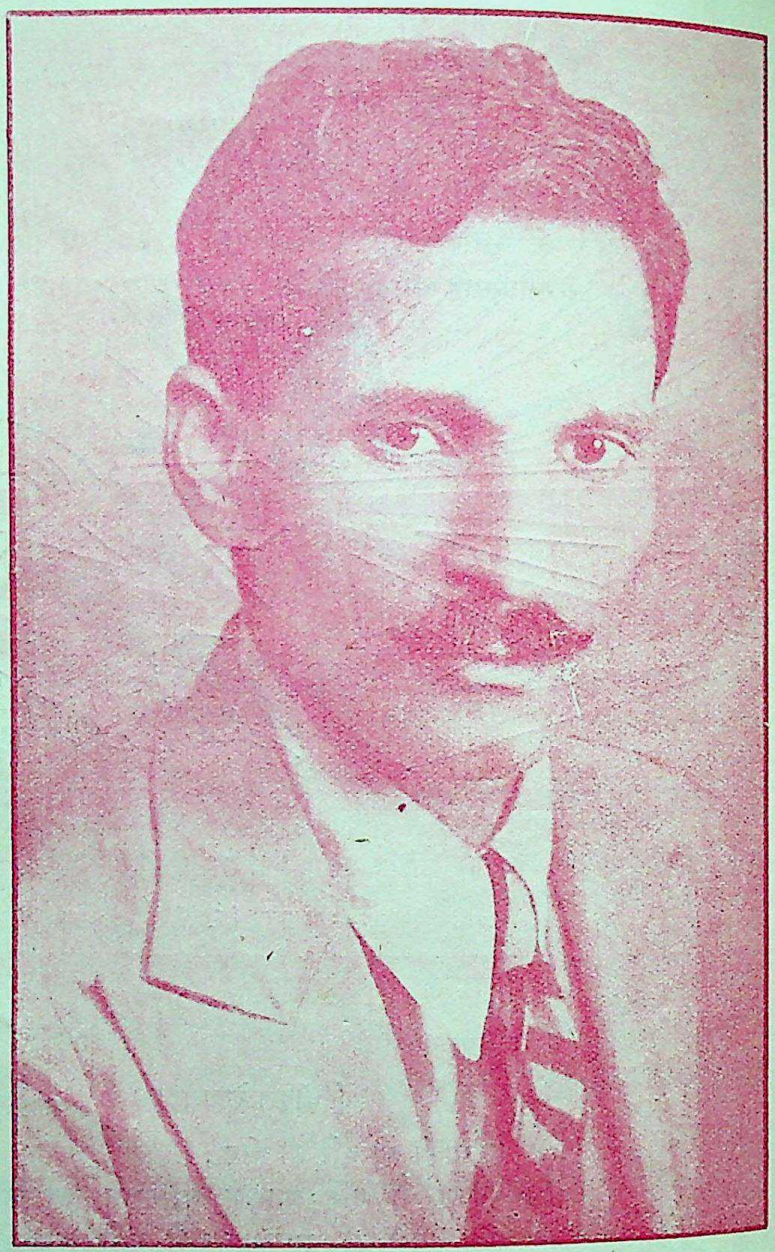

प्रेम-प्रदीप

[डॉक्टर रामशंकर शुक्ल 'रसाल' एम्० ए०, डी० लिट्०]

[रसालजी व्रजभाषा के श्रेष्ठ कवि हैं। अलंकार - शास्त्र, भाषा-विज्ञान, ज्योतिष आदि शास्त्रों के विशेष ज्ञाता हैं। आपने अनेक पुस्तकों और हिंदी-कोष का निर्माण किया है। किंतु जब से प्रयाग-विश्व-विद्यालय में हिंदी-अध्यापक हो गए हैं, तब से आपकी लेखनी शिथिल हो गई है। 'सुधा' - मंडल के श्रेष्ठ कवियों में आपकी गणना है।—

सुधा-संपादक]

एक लव लाए, त्यौं जगाए जग जोति एक,
एकै आनि तेजोरूप और लहते नहीं;
राखै जो सनेह, गेह करत उजेरो ताकौ,
रीतो नेह-पात्र लै 'रसाल' रहते नहीं।
प्यासे नित नेह के रहैहैं, त्यौं दहैंहैं देह,
जगत - महातम को दोष गहते नहीं;
दीपति है दीपति हमारी दीप-दीप, हम
प्रेम के प्रदीप बात तीखी सहते नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१ ओंकार श्रीवाहिगुरुजी की फ़तह

अखिल भारतीय ख़ालसा-कवि-सम्मेलन

[श्रीयुत क, ख, ग]

इस साल १३ एप्रिल को, लखनऊ के गंगाप्रसाद वर्मा-मेमोरियल-हॉल में, श्रीख़ालसा-दिवस के उपलक्ष में, यू० पी० सेंट्रल सिख दीवान की ओर से, एक विराट् कवि-सम्मेलन की योजना की गई। सम्मेलन श्रीमती सावित्री दुलारेलाल एम्० ए० के सभानेत्रीत्व में हुआ।

ख़ालसा-दिवस

इस वर्ष वैशाख की प्रतिपदा १३ एप्रिल को पड़ी थी। इसी दिन श्रीगुरु गोविंदसिंहजी महाराज ने अपने परीक्षित शिष्यों को अमृत-पान कराके ख़ालसा

वीर-श्रेष्ठ श्रीगुरु गोविंदसिंहजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(ख़ालिस, पवित्र) बनाया था । चैत्र-मास की अंतिम तिथि को गुरुजी ने एक विराट् दरबार करके उपस्थित लोगों से ५ सिर माँगे । पाँच वीर सिखों ने अपने आपको पेश किया । इन्हीं पाँचों को गुरुजी ने दूसरे दिन अमृत-पान कराया, और इन्हें 'पाँच प्यारे' कहकर पुकारा । वीरता एवं त्याग की परीक्षा में जो शिष्य विजयी हुए, उन्हीं पाँच प्यारों की स्मृति-स्वरूप यह ख़ालसा-दिवस हर साल बड़े उत्साह से मनाया जाता है ।

पाकिस्तान का एकमात्र जवाब

आज भी भारत को अपने नेता पर न्योछावर हो जानेवाले शिष्यों की ज़रूरत है, अतः यह दिवस भारतवासियों के लिये महत्त्वशाली है। श्रीगुरु गोविंदसिंहजी महाराज के प्रति भारतवर्ष के बच्चे-बच्चे को श्रद्धा है। उनकी वीरता, तेजस्विता, संगठन-शक्ति आदि अपूर्व गुणों का स्मरण करके आज भी हमें कार्य-क्षेत्र में उत्साह एवं प्रोत्साहन मिलता है । हमारे विचार में पाकिस्तान का एक-मात्र जवाब यही है कि ऊँच-नीच, जाति-पाँति का भेद-भाव मिटाकर गुरुजी की इस शिक्षा के अनुसार—"मानस की जाति सबै एकै पहचानबो"—हम सब ख़ालसा बन जायँ ।

गुरुजी का काव्य-कला-प्रेम

यह बात बहुधा लोगों को मालूम नहीं कि श्रीगुरु गोविंदसिंहजी महाराज नीति-कुशल नेता और विजयी वीर होने के साथ-साथ एक सिद्धहस्त एवं प्रवीण कवि भी थे । गुरुजी की ज़्यादा कविता व्रज-भाषा में है, पर अभी तक वह गुरुमुखी-लिपि में ही होने के कारण उसका हिंदी जाननेवालों में प्रचार नहीं । गुरुजी की काव्य-कला पर एक छोटा-सा लेख सुधा-पाठक सुधा के मार्च-अंक में, १६६-१७१ पृष्ठों पर, पाएँगे । जिन्हें विस्तृत रूप से इस बारे में जानना हो, और गुरुजी की ओजस्विनी वाणी का आस्वादन करना हो, उन्हें डॉ० सरदार जसवंतसिंह-रचित हिंदी में श्रीगुरु गोविंदसिंहजी की जीवनी तथा 'श्रीदशम गुरु-काव्यामृतसार' पुस्तक पढ़नी चाहिए ।

गुरुजी का अगाध कविता-प्रेम इस बात से भी जाना जाता है कि गुरुजी के दरबार में ५२ से अधिक श्रेष्ठ कवि रहा करते थे । इन कवियों से गुरुजी ने अनेक संस्कृत, अरबी, फ़ारसी-ग्रंथों का भाषानुवाद कराया । गुण-ग्राहकता का अंदाज़ा इससे लगता है कि गुरुजी ने महाभारत के एक-एक पर्व के अनुवाद के लिये साठ-साठ हज़ार रुपए तक इनाम दे दिए । एक कवि ने इसीलिये कहा है कि गुरुजी की "दान-धारा देख धारा-धर शरमाने हैं ।" आलम कवि ने आपके लिये लिखा है—"भोज की-सी मौज तेरे रोज-रोज पाइए ।"

गुरुजी के समय काव्य-कला का इतना प्रचार था कि दरबारी कवियों के अलावा बाज़ारों, गलियों, कूचों और घर-घर में काव्य-रस का प्रवाह बहा करता था । यह बात एक ऐतिहासिक घटना से सिद्ध होती है, जो इस प्रकार है—

गुरुजी का दरबार लगा हुआ था । चंदन-नाम के एक विद्वान् कवि वहाँ पहुँचे, और अपना यह छंद पढ़कर यह इच्छा प्रकट की कि कोई कवि इस छंद का अर्थ बतावे—

नव-सात तिए, नव-सात किए,
नव-सात पिए, नव-सात पियाए;
नव-सात रचे, नव-सात बदे,
नव-सात पिया पह दाइक पाए ।
जीत कला नव-सातन की,
नव-सातिन के मुख अंचर छाए;
मानहु मेघ के मंडल मैं
कवि 'चंदन' चंद कलेवर छाए ।

इस छंद का अर्थ किसी दरबारी कवि से न कराकर गुरुजी ने अपने घुड़साल के एक सेवादार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाई धन्नासिंह से कराया*, जिससे यह पता चलता है कि जैसे राजा भोज के ज़माने में तेलियों-तँबोलियों तक में काव्य-प्रवाह बहा करता था, इसी प्रकार गुरुजी के ज़माने में घुड़साल के सेवादारों में तथा घर-घर काव्य-रस का प्रवाह था।

ख़ालसा-कवि-सम्मेलन की आयोजना और कार्य-क्रम

गुरुजी को कविता से विशेष प्रेम था, इसीलिये लखनऊ की सिख जनता तथा यू० पी० की एक-मात्र सुप्रसिद्ध संस्था यू० पी० सेंट्रल सिख-दीवान की ओर से इस विराट् कवि-सम्मेलन की आयोजना की गई, जिसमें आजकल के कविगण भी गुरुजी की याद में अपनी पुष्पांजलि उन्हें समर्पण कर सकें।

सम्मेलन का कार्य-क्रम गंगाप्रसाद वर्मा-मेमोरियल-हॉल में ठीक ७½ बजे शाम को प्रारंभ हो गया। पहले रागी गोपालसिंह और उनकी पार्टी ने कुछ भजन गाए। पश्चात् संयोजक कवि-दरबार के आग्रह पर श्रीमती सावित्री दुलारेलाल (सुधा-संपादिकाजी) ने सभानेत्री का आसन ग्रहण किया। रंगमंच पर सरदार संतसिंहजी (सभापति यू० पी० सेंट्रल सिख-दीवान) और सुधा-संपादक श्रीदुलारेलाल तथा अन्य कविगण भी विराजमान थे।

रेडियो द्वारा रिले

सम्मेलन का ८ बजे से ९ बजे तक का कार्य-क्रम लखनऊ-रेडियो-स्टेशन द्वारा वहीं हॉल से विस्तारित किया जाना निश्चित हो चुका था। सम्मेलन तथा विशेषतः रेडियो द्वारा प्रोग्राम का रिले देखने के लिये शहर के प्रमुख सज्जनों से हॉल भरा हुआ था। हॉल में जितनी जगह थी, सब ठसाठस भरी हुई थी, और उपस्थित स्त्री-पुरुषों की संख्या एक हज़ार से कम न होगी।

रेडियोवालों ने, अपने दफ़्तर में, संयोजकजी से, रेडियो द्वारा रिले होनेवाला मैटर और उसका क्रम, लगभग ५ बजे शाम को, निश्चित रूप से तय कर लिया था। इस पर भी अभी ८ बजने में लगभग दस मिनट बाक़ी थे कि रेडियो के एक प्रमुख कर्मचारी ने हॉल में आकर कहा कि ये सब कविताएँ रिले नहीं की जा सकतीं, और यह भी कहा कि सभानेत्रीजी का वक्तव्य तो कदापि रिले नहीं किया जा सकता। कारण पूछने पर बताया गया कि जिस कविता या वक्तव्य में श्रीगुरु गोविंदसिंहजी का नाम है, वह रिले नहीं हो सकता। श्रीगुरु गोविंदसिंहजी के नाम से रेडियोवालों को इतनी चिढ़ क्यों थी, या क्यों है, यह बात अभी हमारी समझ में नहीं आई।

इसका परिणाम यह हुआ कि जो मैटर रेडियो से रिले के लिये उस समय पास किया गया, वह लगभग २० मिनट में ख़त्म हो गया, और बाक़ी ४० मिनट के लिये मैटर पूरा करने में संयोजकजी को अत्यंत कठिनाई उठानी पड़ी। इस अनुचित सेंसर के कारण सम्मेलन के लिये आई हुई उत्तम कविताएँ सुननेवालों को भेंट न की जा सकीं। इस

---

* अर्थ इस प्रकार है—

सुन धन्नासिंह अर्थ बखाना ;
त्रिय खोड़स बरखन बयबाना।
तन खोड़स शृंगार सुहायो ;
खोड़स मासन महिं पिय आयो।
खोड़स घर को चौपड़ रच्यो ;
खोड़स दाव लाय सुख मच्यो।
सोई खोड़स प्यारो ल्यायो ;
खोड़स की बाजी जय पायो।
खोड़स कला चंद मुख जोई ;
हार पाय त्रिय छादत सोई।
मनहु मेघ महिं निसपति छायो ;
इम अंचर महिं मुख दरसायो।

—गुरु-प्रताप-सूर्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

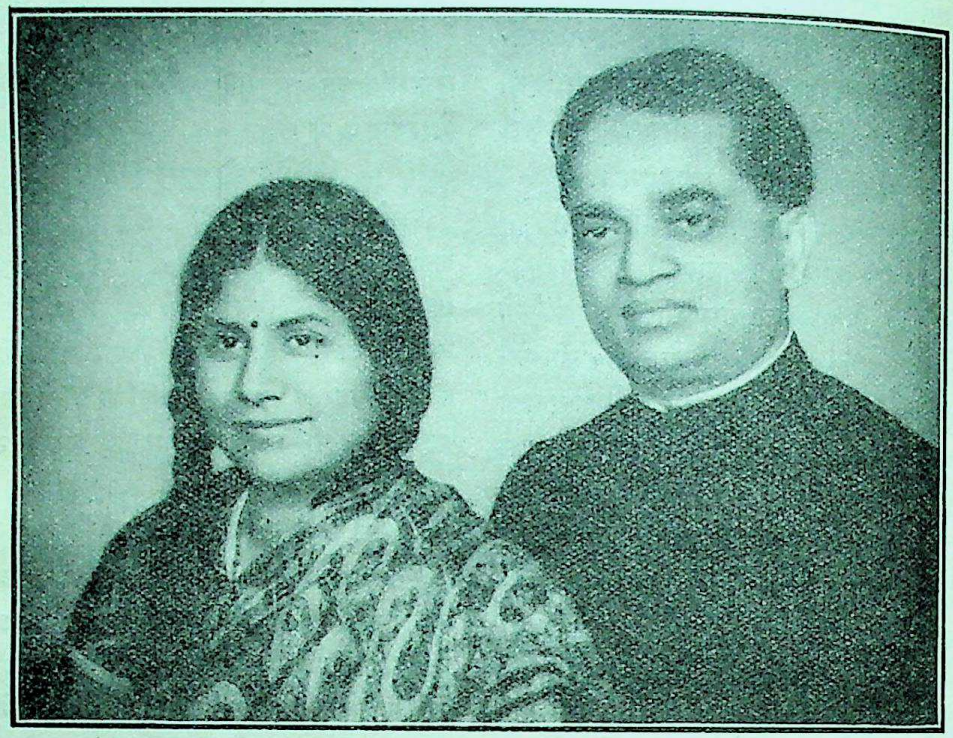

श्रीमती सावित्री और श्रीदुलारेलाल

गड़बड़ी के बारे में 'नेशनल हेरल्ड' के १६ एप्रिल, सन् १९४१ के अंक में इस प्रकार लिखा था—

"A new feature was arranged by the U. P. Central Sikh Diwan this year in the form of an All-India Kavi Sammelan held in the evening in the Ganga Prasad Verma Memorial Hall. Many poets had come from outside to participate in the Sammelan. The poets recited poems composed specially for the occasion in honour of Guru Govind Singh. The programme between the hours of 8 and 9 was relayed from the hall by the All-India Radio, Lucknow. The radio people at the spot, however, marred the programme by refusing to relay some of the best poems received which had been previously passed by the radio authorities for relay. The Sammelan came to a close with a speech from Dr. Jaswant Singh."

इसी तरह का एक विस्तृत लेख 'आकाश-वाणी' के मई के अंक १२-१३ में भी छपा है, जिससे यह पता चलता है कि रिले के बीच-बीच में रिकार्ड बजाकर सुनाए गए। जितनी कविताएँ रिले करना थीं, वे सब रेडियोवालों ने पहले से भले प्रकार सेंसर करके, काट-पीटकर ठीक कर ली थीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हॉल में जहाँ से रिले हो रहा था, वहाँ रेडियो के कर्मचारी कविताओं को सेंसर करने के लिये स्वयं मौजूद थे। जो-जो कविताएँ रेडियो-कर्मचारियों ने पढ़ने के लिये पास कीं, रिले के समय केवल वे ही पढ़ी गईं। यह सब होते हुए भी रेडियोवालों को कविताएँ काट-कर बीच-बीच में रिकार्ड बजाने की क्यों आवश्यकता पड़ी? ऐसे रिले करने से तो यही अच्छा था कि रिले ही न होता!

सम्मेलन का कार्य-क्रम

कविताएँ शुरू होने से पहले सभा-नेत्री श्रीमती सावित्री दुलारेलालजी का भाषण होना था, किंतु रेडियोवालों ने उसे न पढ़ने दिया, अतः वह उस समय नहीं पढ़ा जा सका। यह भाषण हम आगे दे रहे हैं, जिससे पाठकों को पता चले कि ऐसे निर्दोष वक्तव्य को भी रेडियो द्वारा सुनाया जाना रेडियोवाले पाप समझते हैं।

डॉ० जसवंतसिंह एम्०ए०, बी० एस्-सी० एन्० डी० (लंदन)

ठीक आठ बजे पहले कविवर 'निराला'जी की कविता पढ़ी गई। 'निराला'जी किसी कारण-वश स्वयं सम्मेलन में न पधार सके, इसलिये उनका वह कवित्त, जो उन्होंने इसी सम्मेलन के लिये ख़ास तौर पर लिखा था, किसी दूसरे सज्जन ने पढ़कर सुनाया। इसके बाद जिन-जिन कवियों की कविताएँ पढ़ी गईं, उनके नाम इस प्रकार हैं—श्रीसुमित्रानंदनजी पंत, श्रीमैथिलीशरणजी गुप्त, श्रीसावित्री दुलारे-लाल, श्रीव्रजेंद्रजी, श्रीकमलेशजी, सरदार बलदेवसिंह दुग्गल, रावराजा डॉक्टर श्यामविहारी-जी मिश्र, श्रीदुलारेलालजी, रायबहादुर पं० शुकदेवविहारीजी मिश्र, श्रीतोरणदेवी शुक्ल 'लली', पं० गयाप्रसादजी शुक्ल 'सनेही', श्रीप्रणयेश-जी, श्रीअलहड़जी, श्रीकरुणेशजी, श्रीमती सुमित्रा-कुमारी सिंह। प्रथम दो कवियों के अति-रिक्त बाक़ी सबों ने स्वयं अपनी कविताएँ पढ़ीं। श्रीगुरुजी के दरबारी कवि सुदामा और कवि हंसराम-जी के दो कवित्त डॉ० सरदार जस-वंतसिंहजी ने पढ़े।

इस समय ठीक ९ बज जाने के कारण रिले का प्रोग्राम समाप्त हुआ, और पश्चात् अन्य उपस्थित कविजनों ने अपनी रचनाएँ पढ़कर सुनाईं। इनमें से इन कवियों के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं—श्री'रसिकेंद्र'जी, श्रीजंगीराम वर्मा, श्री'उमेश'जी, सरदार खड्गसिंहजी 'खड्ग', कुमार गोविंदशरणजी गुप्त 'गोविंद', श्रीफूलचंदजी जैन 'पुष्पेंदु', श्रीसिरसजी, श्रीकेशवनाथजी मिश्र 'अशोक' आदि। श्री'बेढब'जी बनारसी आ नहीं सके थे। उन्होंने कविता भेज दी थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवि-सम्मेलन के संयोजक की ओर से

सम्मेलन विसर्जन करने से पहले संयोजक महोदय ने अपने एक छोटे-से भाषण में कुछ ऐसी बातों पर प्रकाश डाला, जिनसे आम तौर पर हिंदी जाननेवाले अज्ञात हैं, जैसे यह बात कि श्रीगुरु गोविंदसिंहजी महाराज हिंदी-भाषा के चोटी के कवि थे। गुरुजी तथा उनके दरबारी कवियों की रचनाओं के कुछ नमूने पढ़कर सुनाए गए। यह भी बताया गया कि महाभारत के उन पर्वों का भाषानुवाद, जिन्हें लिखवाने पर गुरुजी ने साठ-साठ हज़ार रुपए ख़र्च किए थे, इस समय पटियाला-लाइब्रेरी में सुरक्षित हैं। श्रीदशम ग्रंथ के अलावा हिंदी-भाषा के सुंदर काव्य-ग्रंथों में से, जो इस समय गुरुमुखी-लिपि में सुरक्षित हैं, कुछ के नाम इस प्रकार हैं—

(१) कवि सेनापति का किया हुआ चाणक्य-राजनीति का भाषानुवाद, जिसके बारे में यह प्रसिद्ध है कि गुरुजी ने ख़ुश होकर कविजी को इसके लिये एक-एक छंद के बदले पाँच-पाँच अशर्फ़ियाँ इनाम दीं।

(२) श्रीगुरु-सोभा—यह भी कवि सेनापति-रचित ग्रंथ है, जिसमें कविजी ने अपनी आँखों-देखा गुरुजी का चरित्र लिखा है। ऐतिहासिक दृष्टि से यह बहुमूल्य ग्रंथ है।

(३) भाई गुरुदासजी के कवित्त-सवैए।

(४) महाकवि संतोषसिंहजी-रचित 'राम-चरित - मानस', 'गुरु नानक-प्रकाश' और 'गुरु-प्रताप-सूर्य' आदि विशाल ग्रंथ।

संयोजकजी ने सभानेत्रीजी, कविजनों और सब उपस्थित सज्जनों को धन्यवाद दिया। पश्चात् महाकवि संतोषसिंहजी के ये दो छंद पढ़े जाने के अनंतर ११ बजे रात के लगभग सम्मेलन समाप्त हुआ—

राम१ छत्रि-बंध२ पर, राम दसकंध पर,
रामइ जरासंध पर, त्रै ज्यों नरसिंह हैं;
रुद्र जिउँ मार१ पर, वैनतेय मार२ पर,
पौन दीप-मार३ पर, मार४ पर सिंह हैं।
सूर५ तम-बृंद पर, सूर६ रन-दुंद पर,
सूर७ दितीनंदन पर, दूजे८ नरसिंह हैं;
काल सरबंस पर, दावा बन-बंस पर,
त्यों मलेच्छ-बंस पर श्रीगोविंदसिंह हैं* ॥१॥
छाय जाती एकता, अनेकता बिलाय जाती,
होवती कुचीलता कतेबन कुरान की;
पाप ही प्रपक्क जाते, धरम धसक्क जाते,
बरन गरक्क जाते सहित बिधान की।
देवी देव देहरे 'संतोखसिंह' दूर होते,
रीति मिट जाती कथा बेदन-पुरान की;
श्रीगुरू गोविंदसिंह पावन, परम सूर,
मूरति न होती जो पै करुनानिधान की ॥२॥

❀ ❀ ❀

सभानेत्रीजी का भाषण

प्रिय बहनो और भाइयो!

आज के कवि-सम्मेलन की सभानेत्री बनाकर आपने मुझे जो गौरव दिया है, उसके लिये धन्यवाद देना मैं अपना कर्तव्य समझती हूँ।

श्रीगुरु गोविंदसिंहजी महाराज ने चैत्र की पूर्णिमा को अपने शिष्यों को एकत्र कर एक विराट् सभा की। उपस्थित लोगों के सामने खड़े होकर गुरुजी ने कहा—"देश की भलाई के लिये मुझे कई सिर चाहिए।" पूरी सभा स्तंभित हो गई। एक भी व्यक्ति सिर देने को तैयार न हुआ। गुरुजी ने

१. परशुराम, २. क्षत्रियों को बाँधने, ३. बलराम।

१. कामदेव, २. सर्प, ३. दीपमाला, ४. शिकार, ५. सूर्य, ६. सूरमा, ७. वराह अवतार, ८. हिरण्य-कश्यप; ९. हिरण्य-कश्यप के दूसरे भाई हिरण्याक्ष (पर जैसे)।

* यह छंद महाकवि चंद और भूषण के छंदों की समता का है। भूषण के "त्यों मलेच्छबंस पर सेर सिवराज है" पद्यांश को दृष्टि में रखकर ही लिखा गया मालूम पड़ता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुनः गर्जना की—"मेरे लिये शीश देने को क्या कोई भी तैयार नहीं ?" इस बार दयाराम नाम के एक क्षत्रिय वीर अपना मस्तक गुरुजी को अर्पण करने को प्रस्तुत हुए। गुरुजी इन्हें तंबू के भीतर ले जाकर ख़ून से रँगी हुई तलवार लिए हुए बाहर सभा में आए, और एक शीश और माँगा। अब दिल्ली के एक जाट धर्मदास ने अपना शीश समर्पित किया। गुरुजी इसे भी तंबू के भीतर पकड़कर ले गए, और फिर लाल तलवार चमकाते हुए बाहर आकर और अधिक भयंकर रूप बनाकर कहने लगे—"ओ मेरे शिष्यो ! एक सिर और दो।" बहुत-से लोग डरकर भाग गए। जो बचे, उनमें से एक शूद्र मुहकमचंद उठा, और गुरुजी को मस्तक नवाया। गुरुजी इसे भी अंदर ले गए, और रक्त-रंजित तलवार लिए बाहर आकर पुकारा—"एक और।" इस बार क्रम से साहबचंद नाई और हिम्मत कहार ने अपनी भेंट दी। कुछ देर पश्चात् इन पाँचों को वस्त्राभूषणों से सुसज्जित करके गुरुजी सभा में पधारे। इन पाँचों का तेजस्वी रूप देखकर उपस्थित शिष्यों ने अपनी कायरता के लिये अत्यंत पश्चात्ताप किया। गुरुजी ने उन सबसे कहा—"तुम सब मेरे हो, मैं तुम्हारा हूँ। विमुख वे हैं, जो यहाँ से भाग गए। तुम सब सम्मुख हो, और ये पाँचों गुरुमुख हैं। ये मेरे पाँच प्यारे हैं, जो कसौटी पर खरे उतरे।" इतना कह गुरुजी ने उस दिन की सभा विसर्जन की, और दूसरे दिन की सभा के लिये सबको श्रीकेसगढ़-स्थान पर पहुँचने को कहा।

दूसरे दिन वैशाख-मास की प्रतिपदा थी। आज वही दिन है। आज ही के दिन गुरुजी ने उन पाँच प्यारे शिष्यों को अमृत-पान कराके ख़ालसा बनाया, और सदैव के लिये जाति-पाँति, खान-पान आदि का भेद-भाव दूर कर दिया। इसके बाद उपस्थित जनता से गुरुजी ने कहा—"जिसे मृत्यु का भय न हो, वह ख़ालसा बने।" बहुत-से शिष्य आगे बढ़े, और ख़ालसा बन गए। ख़ालसा के अर्थ हैं ख़ालिस, पवित्र। इसी घटना के स्मृति-स्वरूप प्रतिवर्ष ख़ालसा-दिवस मनाया जाता है।

गुरु गोविंदसिंहजी महाराज महान् आत्मा थे। उनके संगठन, प्रेम, वीरता, तेजस्विता, विद्वत्ता आदि गुणों को स्मरण करके आज भी हमें कार्य-क्षेत्र में उत्साह एवं प्रोत्साहन मिलता है। गीता में श्रीकृष्णजी ने कहा है—

"यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत,
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदाऽऽत्मानं सृजाम्यहम्।
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्;
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे।"

तात्पर्य यह कि जब धर्म दबाया जाता है, और अधर्म फैलता है, तब सज्जनों की रक्षा एवं दुर्जनों का नाश करने के लिये ईश्वर का अवतार होता है। बिलकुल यही बात गुरु गोविंदसिंहजी महाराज ने कही है—

"जब-जब होत अरिष्टि अपारा,
तब-तब देह धरत अवतारा।"

गुरु गोविंदसिंहजी महाराज ऐसे ही ईश्वरीय शक्ति-पूर्ण थे। उन्होंने अपने समय की राजनीतिक, सामाजिक तथा आर्थिक परिस्थितियों को सँभाला। ऊँच-नीच की भावना मिटाकर संगठन और प्रेम का पाठ पढ़ाया। वह केवल प्रकांड योद्धा, नीति-वेत्ता और धर्म-नेता ही न थे, प्रत्युत कुशल कलाकार और विख्यात कवि भी थे। उनके दरबार में बहुत-से विद्वान् तथा लगभग ५२ कवि थे। गुरुजी की लिखी हुई कुछ पुस्तकें—जैसे 'जापजी', 'अकाल-स्तुति', 'विचित्र नाटक', 'चंडी-चरित्र', 'चंडी की वार', 'चौबीस अवतार', 'शब्द-हज़ारा', 'तेंतीस सवैए', 'शस्त्रनाम-माला' और 'ज़फ़रनामा'—पाई जाती हैं। वह फ़ारसी, अरबी, पंजाबी, बिहारी, हिंदी, संस्कृत आदि भाषाओं के ज्ञाता थे। उन्हें कविता से विशेष प्रेम था। इसी से ख़ालसा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिवस के उपलक्ष में आज यह कवि-सम्मेलन किया जा रहा है।

❀　❀　❀

अब आगे गुरुजी के संबंध में पढ़ी गई कुछ चुनी हुई कविताएँ दी जाती हैं। इससे पाठक सम्मेलन का कुछ आनंद ले सकेंगे—

लाख-लाख पर भारी था

दसवीं दशा में पहुँचाया दुष्ट दस्युओं को,
गुरु दसवाँ था, दस दिशि अधिकारी था;
छोड़ के इताअ़त जमाअ़त में डाली जान,
रूप भगवान का महान क्रांतिकारी था।
मृतक जिलाता था, पिलाता था अमृत वह,
देके गुरु-मंत्र बना देता भट भारी था;
उसके प्रताप और प्रबल पराक्रम से
एक-एक सिंह लाख-लाख पर भारी था।

खेत सर हो गया

भौंहें हुईं वक्र, शर आ गया शरासन पै,
परहीन पर ❀ ऐसा तेज़ पर † हो गया;
सर-सर चला सर धड़ से उड़ाता हुआ,
अंधड़ कहो कि कहो सरसर ‡ हो गया।
अचल सचल हुए, विचल विरोधी गए,
भागे भट भीरु-सम, भर-भर हो गया;
आ गया अकाल काल कहता हुआ अकाल,
वैरी रेत-खेत हुए, खेत सर हो गया।

गुरु की कृपाण

पी गई गरल, जब गरल बुझाई गई,
अनुगामिनी हो नीलकंठ भगवान की;
सोख गई वैरी का सुयश-सिंधु पल ही में,
घूँट गई घूँटी है अगस्त्य-अभिमान की।

❀ शत्रु। † तीर में लगाया जानेवाला पर। ‡ आँधी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डूब - डूब रुधिर की धारा में न तृप्त हुई,
बान पड़ी बेढब उसे थी रक्त-पान की;
आप पानीदार किए, पानीदार पानी - हीन,
प्यास न बुझानी तो भी विकट कृपान की।

श्री'सनेही'जी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवि थे

प्रतिभा से उनकी प्रकाशमान देश हुआ,
अंधकार-युग को वे भासमान रवि थे;
ठाना धर्म-यज्ञ, धधकाई थी समर-अग्नि,
होता* कभी होते और होते कभी हवि थे।
जिसने निहारा चरणों में, वही झुक गया,
धारे दिव्य तेज, ओज और देव-छवि थे;
जल्पना नहीं थी कोरी, कल्पना नहीं थी वह,
कल्पतरु कवियों के कर्मशील कवि थे।

अड़े रहे

धर्म-भेंट किए सिंह-शावक सपूत कैसे,
पकड़े रहे जो सत्य-पथ पकड़े रहे;
आन पर धर्म की, विधान पर पूर्वजों के,
शान पर अपनी अडिग हो अड़े रहे।
कैसे त्यागवीर थे, जहान में जवाब नहीं,
बलिदान में न बाप से भी पिछड़े रहे;
गड़े पड़े जिस पृथिवी में हैं असंख्य वीर,
मरके वे छाती पर उसकी खड़े रहे।

—'सनेही'

श्रीगुरु गोविंदसिंह-चरित

लसत बाल बिधु भाल,
भ्रमर गुंजरत गंडथल,
एकरदन, सुख-सदन,
ताप-त्रय-कदन, महाबल,
रिद्धि-सिद्धि बस जासु,
लखे जेहि दारिद भागत,
अंग-अंग पर कोटि
काम-उपमा लघु लागत,
हे गननायक, करिवरबदन,
मो तन नेक निहारिए;
गोबिंदसिंह गुरुबर-चरित
के प्रभु, पार उतारिए॥ १॥

* यज्ञ करनेवाला।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सीस पै गंग-तरंग, जटान पै
नागन को बर मौर रह्यो फबि ;
भाल मयंक, गरे सिरमाल, प्रभा
तन की लखि कोटि लजैं रबि ।

केवल स्वार्थ-त्याग से जग में
ऐक्य - भाव थिर होता है ;
पाकर बल समुदाय जाति का
प्रति नर सुख से सोता है ।

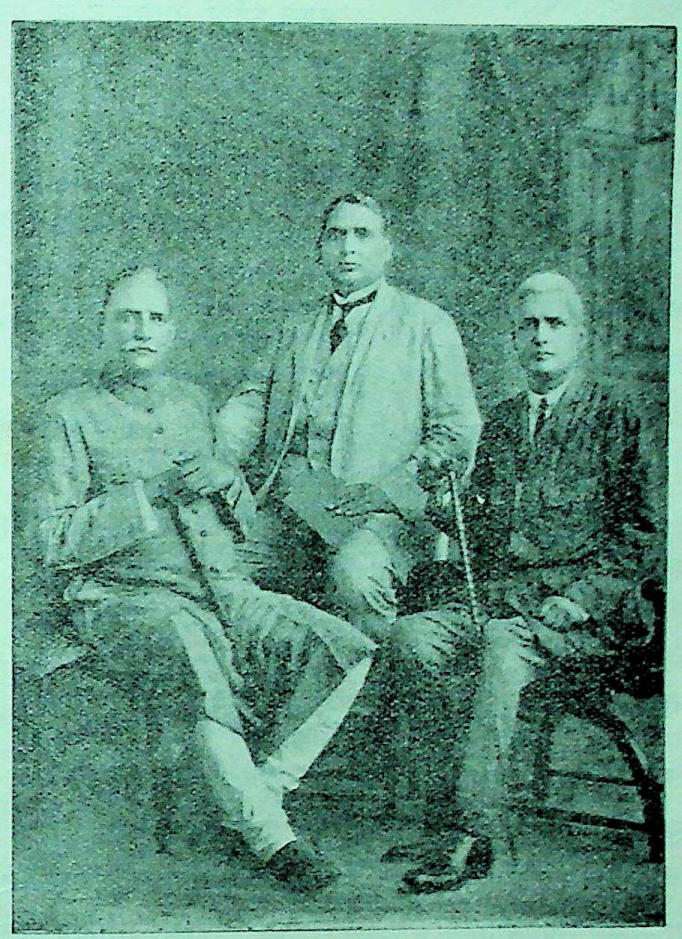

मिश्रबंधु

कंठ हलाहल, अंग बिभूति,
भनै 'सिरमौर' कहा बरनौं छबि ;
केहरि-छाल लखे कटि पै करि-से
भ्रम-जाल रहैं सिगरे दबि ॥ २ ॥

करता है प्रति पुरुष प्रकट में
यद्यपि स्वारथ - त्याग,
पर उससे सब भ्राताओं के
खुल जाते हैं भाग ॥ ३ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कटु ओषधि-सा स्वार्थ-त्याग भी
कुछ अवश्य दुखदाता है,
उसके विना देश पर तन-सा
कभी नहीं सुख पाता है।
एक अंग सह कष्ट देह को
लेता यथा उबार,
वैसे देश एक नर-बल से
होता दुख से पार ॥ ४ ॥
गुरु गोविंदसिंह ने भी निज
स्वार्थ-त्याग का दिया प्रमाण;
शांति-प्रिय, धार्मिक शिष्यों में
उपजाया स्वजाति का मान।
क्योंकर ऐसा हुआ, और क्या
सिक्खों ने कर दिखलाया,
इन विषयों का कुछ वर्णन कर
देना मुझे बहुत भाया ॥ ५ ॥

—श्यामविहारी मिश्र

तो सम को

जै गुरु गोबिंदसिंह कृपाल!
तो सम को गुरु जगत-बीच हे
सकल सिक्ख-कुल-पाल!
सँग मैं जाट-सहित खत्रीगन
लै करकस, बिकराल,
तिन कहँ करि संगठित निकारी
सक्ति कठिन, अरि-साल।
चहूँ ओर चमकै चपला-सम
तेरे कर करबाल;
तेरो तुरी नचै रन-मंडल,
मनौ काल को काल।

फुहारे-से

प्रबल प्रताप भासमान लौं प्रकासमान,
जामैं नृपगन छपि जात लघु तारे-से;
याही ते न तेरे सोहें आय कोऊ सक्यो कहूँ,
बाजे जग तेरिही दोहाई के नगारे-से।
सनमुख होत सदा पानिप बिलाय गयो,
सत्रु-मंडली के सदा लखे मुख कारे-से;
तेरी कित्ति फैलि रही दसहू दिसान, देस-
देस छहराय रहे सुजस-फुहारे-से।

—शुकदेवविहारी मिश्र

गुरु गोविंदसिंह

शौर्य-नभ के थे चंद दुचंद!
गुरू गोविंद, गुरू गोविंद!
जाति का सह न सके अपमान,
हथेली पर रखकर निज जान,
चल पड़े होने को क़ुर्बान
तोड़कर नश्वरता के फंद!
गुरू गोविंद, गुरू गोविंद!
पाँच प्यारे करके तैयार
एक भर दी ऐसी हुंकार,
मचाया भीषण हाहाकार।
विपक्षी हृदय हुए निष्पंद!
गुरू गोविंद, गुरू गोविंद!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हृदय है या कि कठिन पाषाण,
वज्र भी हो न सका उपमान,
किया ऐसा संगठन महान,
मिटाया छलियों का छल-छंद!
गुरू गोविंद, गुरू गोविंद!

वहै तूँ गोविंद

एक संग पढ़े अवंतिका संदीपन के,
सोई सुध आई, तो बुलाइ बूझी बामा मैं;
पुंगीफल होति तौ असीस देतो नाथजी कौ,
तंदुल ले दीजै बाँध, लीजै फटे जामा मैं।

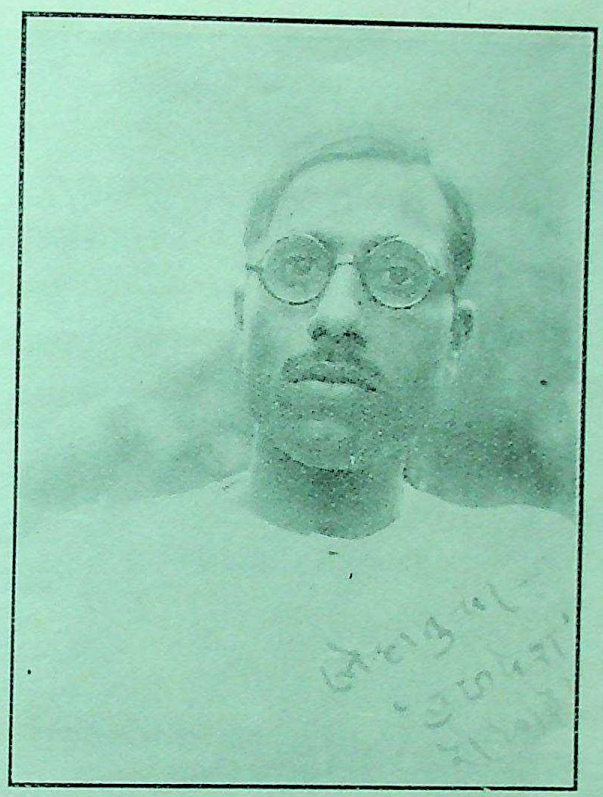

श्रीयुत 'प्रणयेश' शुक्ल

कहाँ वह कुसुम-सदृश सुकुमार,
अल्प वय के थे युगुल कुमार,
दबाती थी जिनको दीवार,
और थे जिनके आँसू बंद!
गुरू गोविंद, गुरू गोविंद!

—'प्रणयेश' शुक्ल

दीन दुआर सुनिकै दयार दरबार मिले,
एतो कुछ दीनो पाई अगनित सामा मैं;
प्रीत करि जाने गुरु गोविंद कै माने,
ताँते वहै तूँ गोविंद, वहै बामन 'सुदामा' मैं।

—सुदामा कवि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाँच प्यारे

जमा हुए भारत के सभी प्रदेशों से सिक्ख, "वीरो, शीश चाहिए हमें, बढ़ो, चढ़ाओ आज",
वैशाखी दिवस, लगा गुरुजी का दरबार; सुन सिक्खगण रह गए मन हार-हार;

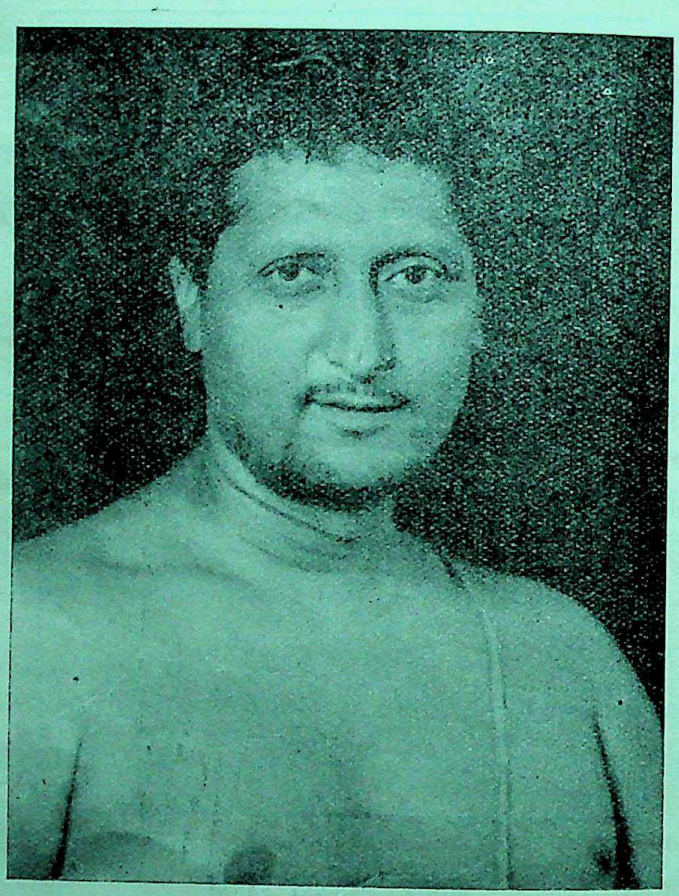

श्रीयुत पं० सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

हाथ तलवार लिए तेजोराशि गुरुजी ने उठे पाँच वीर एक-एक के अनंतर, ये
उठ सभा-मध्य वज्र की ध्वनि से की पुकार— 'पाँच प्यारे' कहलाए सच्चे सिक्ख सरदार।

—'निराला'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुहाए बेटे !*

किधरे विच्च पँघूड़े सुआए बेटे,
किधरे मिट्टी दे विच रुलाए बेटे ;
किधरे दहीआँ दे नाल नुहाए बेटे,
किधरे कंधाँ दे विच चुणाए बेटे।
तत्ती लू तों किधरे बचाए बेटे,
अखाँ साह्मणे किधरे कुहाए बेटे।
फ़ौजाँ मुक्कियाँ, लागू जवाब दे गए,
कोई कोल नहीं, ना परवाह कीती ;

सरदार बलदेवसिंह दुग्गल

घुट नाल छाती किधरे लाए बेटे,
किधरे पाणीओं वी तरसाए बेटे ;
पिता टोर बैठे, माता छोड़ बैठे,
वारे लाल, नहीं सी ते आह कीती।

—सरदार बलदेवसिंह 'दुग्गल'

* पंजाबी बोली में है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाहगुरु

बुद्धि-बल, वीरता की, धीरता, गँभीरता की,
साहस की, शक्ति की मिली क्या थाह गुरु की ?
'रसिकेंद्र' प्रबल पराक्रम - प्रवाहमयी
रोक क्या सके थे शत्रु कभी राह गुरु की ?
ज्यों-ज्यों गुरु धर्म की पताका फहराते गए,
त्यों-त्यों बढ़ती ही गई और चाह गुरु की ;
काम है अमर और नाम है अमर, आज
गूँज रही ध्वनि—'वाहगुरु, वाहगुरु' की।

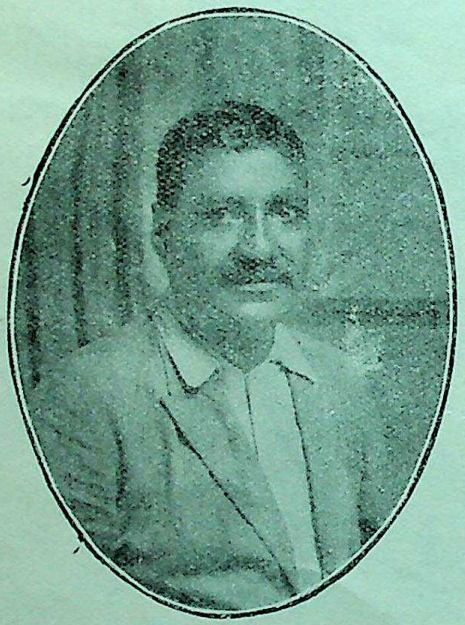

श्रीयुत द्वारकाप्रसाद गुप्त 'रसिकेंद्र'

तेग़ गुरु की

एक निराली कला को लिए हुए
काल की चंचला चाल दिखा गई ;
धर्म के रक्षण का प्रण पाल
अधर्म का तोड़ के जाल दिखा गई।
मेदिनी रक्त से लाल हुई,
रिपु-वृंद के काटके भाल दिखा गई;
जौहर, जोश, जमाल दिखा गई,
तेग़ गुरु की कमाल दिखा गई!

ख़ालसा-दिवस

देके जन्म गुरु को जुड़ाती जननी थी छाती,
सिंहिनी पिलाती पय, लेती थी वदन चूम ;
पाती निज गोद में दहाड़ता सिखों का सिंह,
मोद थी मनाती मातृभूमि जाती झूम-झूम।
पशुओं की ओट में परीक्षा रक्त-दान की ले—
गुरु ने अदा की दीक्षा देने की नई रसूम ;
जाँच से हुए थे सिद्ध पाँच रत्न ख़ालिस, तो
ख़ालसा-दिवस ने मचादी दुनिया, में धूम।

गुरु के बालक

बालक प्रसिद्ध गुरु के थे धर्म-वीर, धीर,
विचलित चित्त कभी अपना किया नहीं;
छोटी-सी अवस्था में बनाए गए बंदी, तब
जीवन का प्याला पर-धर्म का पिया नहीं।
जीते ही चुनाए गए, ताए गए ताप में भी,
नाम कलमा का किंतु मुँह से लिया नहीं;
साथ अमरों के सुरलोक की बढ़ाते ओक,
सिर दे जिन्होंने सार धर्म का दिया नहीं।

—'रसिकेंद्र'

गुरु के शिष्यों के प्रति

गुरु गोविंदसिंह के शिष्य बने हुए
आज भी क्यों बहरे हुए हैं ;
अपनत्व को स्वत्व को खोके, हृदय
अपमान का शैल धरे हुए हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम रोते नहीं मरों को, इन जीवितों
के लिये नैन भरे हुए हैं;
निज धर्म पै जो मरे, वे न मरे हुए,
जो न मरे, वे मरे हुए हैं॥ १॥
हँसते हुए जो चढ़े सूलियों पै,
उनके लिये अश्रु बहाना नहीं;
उनकी शुचि शूरता में तुम रोकर
कायरता दिखलाना नहीं।
यदि हो उनके दुख में दुखी, तो
उनके वे निदेश भुलाना नहीं;
मर जाना पड़े, कट जाना पड़े,
पर धर्म से पाँव हटाना नहीं॥ २॥
खालसा है, वहै खालिस वीर है,
जो बढ़िकै कबहूँ पिछरै नहीं;
'जंगजू' धर्म के सम्मर में, मरने
तक हूँ मुख नेक फिरै नहीं।
पुत्र मरै रन मैं समुहें,
तबहूँ तनिकौ मनुए अकिरै नहीं;
मुंड गिरै, चहैं रुंड गिरै,
पर आँख से अश्रु की बुंद गिरै नहीं॥ ३॥

पाँच ककार

'केश' रखे भाइयों के अश्रु पोंछने के लिये,
'कंघी' जाति-धूल झाड़ भेद पाटने को दी;
'कच्छ' पहनाई कटिबद्ध रहने के लिये,
ताने और बाने में सभी को साँटने को दी।
'कड़ा' बतलाता पड़ी बेड़ियाँ किसी के हाथ,
भूल-से गए थे, सो हमीं को डाटने को दी;
श्रीगुरु गोविंदसिंहजी ने ही 'कृपाण' हमें
वैरियों के रुंड और मुंड काटने को दी।

—जंगीराम वर्मा

सिखला गए

भूलकर भेद-भाव प्रेम का बढ़ाना और
अटल प्रतिज्ञा का निभाना सिखला गए;
दया दिखलाना, अपनाना दीन-दुखियों को,
खालसा-दिवस का मनाना सिखला गए।
सोते हुए सूरों को जगाना संगठन कर,
वीरता से 'वाह! गुरु'! गाना सिखला गए;
'गोविंद' हुए हैं ऐसे गुरु श्रीगोविंदसिंह,
धर्म पर जो कि मर जाना सिखला गए।

—कुमार गोविंदशरण गुप्त 'गोविंद'

उद्बोधन

इस देश के पूर्वज थे वही, जो
नहीं काल से भी मुख मोड़ते थे,
दुखदायियों के, अभिमानियों के
उठे ऊँचे जो मस्तक तोड़ते थे,
निज तेज-पराक्रम के बल से,
सदा नाता जो स्वर्ग से जोड़ते थे;
सिख-धर्म का झंडा लिए कर में
बड़ी शान से मूछ मरोड़ते थे।
पर आज तो हा! परतंत्रता की
कड़ी बेड़ियों में जकड़े हुए हैं;
हतभागी बने हम दासता का
लखो, आँचल ही पकड़े हुए हैं।
परदेशी हँसा करते हैं हमें,
हम फ़ैशन में अकड़े हुए हैं;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपमान के आह ! विरोध में भी
दिल खोल कभी न कड़े हुए हैं।
तुम भीरुता की प्रतिमूर्ति बने
सदा क्या अपमान सहा करोगे ?
इस नाश की वैतरनी में सखे,
चुपचाप सदा क्या बहा करोगे ?
अब लेश भी लाज न शेष रही,
इस वेश में यों ही रहा करोगे;
अपमान की आग में वीरो ! कहो,
सदा क्या इसी भाँति दहा करोगे ?
गुरू गोविंद के अभिमान उठो,
उठो ! देश के वीर जवान उठो ;
अरे ! विश्व की पीड़ित जान उठो,
श्रमजीवियों के बलिदान उठो !

—फूलचंद जैन 'पुष्पेंदु'

गुरु गोविंदसिंह

अंधकार था छाया चारों ओर देश में,
था अधर्म का राज चतुर्दिक घोर देश में ;
धर्म-हीन, कर्तव्य-हीन, सामर्थ्य-हीन थे,
भीषण था सब हाल, सभी विधि पराधीन थे ॥१॥
पूरब में आलोक एक हमको दिखलाया,
तेज-पूर्ण नक्षत्र उदय सुंदर हो आया ;
संवत सत्रह सौ तेईस पवित्र साल था,
पटना-नगर विहार-प्रांत का बेमिसाल था ॥२॥
वहीं लिया था जन्म धर्म के इस नेता ने,
तेगबहादुर गुरू पिता उनके मरदाने ;
मरनेवाला देश-जाति पर वीर सिंह था,
वह शहीद था, नाम गुरू गोविंदसिंह था ॥ ३॥
सदाचार से पूर्ण, धर्म पर मिटनेवाला,
भारत मा के गले विजय की डाली माला ;

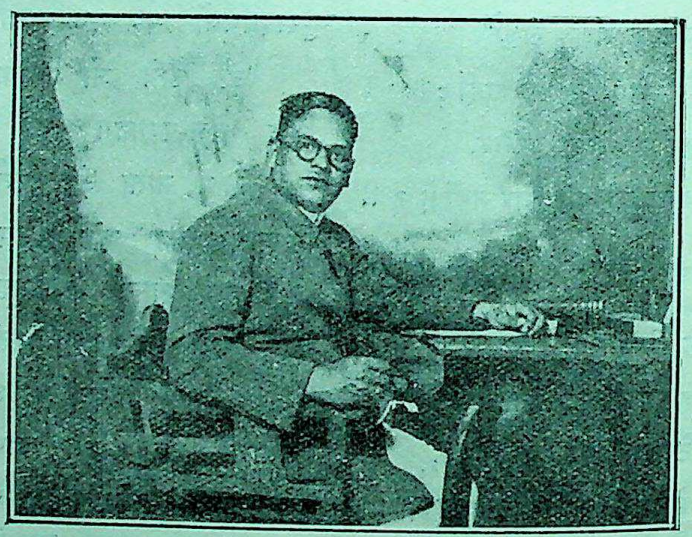

श्रीयुत कृष्णदेवप्रसाद गौड़ एम्० ए० 'बेढब' बनारसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोहा जिसने लिया वैरियों से सम्मुख हो,
पाला-सा गल गया देश का सम्मुख दुख हो॥ ४॥

भारत-गौरव की रक्षा के हित तबाह था,
तकिए का था शाह, या कि वह बादशाह था;
सैनिक का था वेष, मगर वह तो फ़क़ीर था,
मिट न सके जो कभी किसी से, वह लकीर था॥ ५॥

ऊँच-नीच का, व्यक्ति-व्यक्ति का भेद मिटाया,
हम सब तो हैं एक, भाव यह हमें सिखाया;
कायरता को भस्म किया, वह आग लगा दी,
सोई थी जो जाति, वीर ने शीघ्र जगा दी॥ ६॥

भिक्षुक था वह, किंतु देश की स्वतंत्रता का,
इच्छुक था वह, किंतु देश में समानता का;
मिथ्या उसके लिये एक केवल दुर्बलता,
अपने को समझा न बड़ा, बस यह थी लघुता॥ ७॥

हो तेरा आदर्श सदा सम्मुख हम सबके,
रहें नहीं हम दीन कभी दुनिया में दबके;
समझें सदा समान सभी को—भाई-भाई,
बने स्वर्ग संसार, न रह जाए दुखदायी॥ ८॥

—'वेढब' बनारसी

लीनो अवतार है

चारो चक्क सेवैं गुरु गोबिंद तिहारे पाइ,
मेरे जानै आज तू ही दूजो करतार है;
प्रबल प्रचंड खंड-खंड महिमंडल मैं
साचौ पातसाहु जाको साचो सिर भार है।
कामना के दान बान जाकी 'हंसराम' कहै,
परम धरम देखै बिबिध बिचार है;
परम उदार, पर-पीर को हरन-हार,
कौन जानै कौनै भाँति लीनो अवतार है।

—कवि हंसराम

[इन्होंने महाभारत के कर्णपर्व का भाषानुवाद किया था, जिस पर गुरुजी ने इन्हें ६०,०००) इनाम दिया था।]

धन्यवाद

कविताएँ समाप्त होने पर ख़ालसा-कवि-सम्मेलन के संयोजक डॉक्टर सरदार जसवंतसिंहजी ने इन शब्दों में धन्यवाद दिया—

मैं उन सभी महान् विभूतियों को धन्यवाद देना अपना कर्तव्य समझता हूँ, जिन्होंने पूर्ण सहयोग देकर सम्मेलन को सफल बनाया। यदि इन महानुभावों का सहयोग न होता, तो मैं कदापि इस कार्य को पूर्ण न कर सकता। सबसे पहले मैं श्रीमती सावित्री दुलारेलालजी एम्० ए० को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने मेरे आग्रह पर सम्मेलन की सभानेत्री बनना स्वीकार किया, और इस प्रकार सम्मेलन की शोभा बढ़ाई। दूसरे, सुधा-संपादक श्रीदुलारेलालजी भार्गव को मैं जितना धन्यवाद दूँ, थोड़ा है; क्योंकि उन्हीं की कृपा और तन-मन-धन से सहायता देने से यह सम्मेलन पूर्ण हो सका। पुनः धन्यवाद मैं उन कविवर सज्जनों को देता हूँ, जो हमारे आग्रह पर अपना बहुमूल्य समय देकर सम्मेलन में सम्मिलित हुए, और इस प्रकार सम्मेलन को सफल बनाने में जिन्होंने सहयोग दिया। विशेषतः वे कवि महोदय धन्यवाद के पात्र हैं, जिन्होंने हमारे सम्मेलन में सम्मिलित होने के लिये बाहर से आने की कृपा की। यदि हम उनकी समुचित सेवा नहीं कर सके, तो मैं सिख-जनता की ओर से क्षमा-प्रार्थी हूँ, और आशा करता हूँ कि आइंदा भी जब कभी हम उन्हें याद करेंगे, वे इसी प्रकार पधारकर हम लोगों के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्साह को बढ़ाया करेंगे। कुछ कवियों के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं—रावराजा डॉ० श्यामविहारीजी मिश्र, रायबहादुर पं० शुकदेव-विहारीजी मिश्र, पं० गयाप्रसादजी शुक्ल 'सनेही', श्रीसूर्यकांतजी त्रिपाठी 'निराला', सरदार बलदेव-सिंहजी 'दुग्गल', श्रीमती तोरणदेवीजी शुक्ल 'लली', श्री'प्रणयेश'जी, शुक्ल, श्री'रसिकेंद्र'जी, श्री'सिरस'-जी, श्री'उमेश'जी, श्रीसुमित्राकुमारीजी', श्री-'अरुण'जी इत्यादि। मैं उन कवियों को भी हार्दिक धन्यवाद देता हूँ, जो कारण-वश सम्मेलन में नहीं पधार सके, किंतु जिन्हें सम्मेलन से पूर्ण सहानुभूति थी। जैसा श्री'वचनेश'जी फ़र्रुख़ाबाद से लिखते हैं—

"प्रियवर, वंदे। मैं ज्वर-ग्रस्त हूँ। खेद है, मैं इस हास्यानंद का रस-पान न कर सकूँगा। ऐसे ही अवसर पर भाग्य मानना पड़ता है। इससे भी अधिक प्रसन्नता मुझे ख़ालसा-कवि-सम्मेलन में सम्मिलित होने से होती, क्योंकि मुझे गुरु गोविंद-सिंह पर परम श्रद्धा है। परंतु भाग्य! मेरी सहानुभूति और विवशता प्रकट कर दीजिएगा।

भवदीय

'वचनेश'।"

अंत में मैं अपने उन भाइयों को भी धन्यवाद दिए विना नहीं रह सकता, जिन्होंने सम्मेलन के प्रबंध में मेरा हाथ बटाया। सरदार संतसिंहजी सभापति यू० पी० सेंट्रल सिख दीवान का मैं अत्यंत कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने सम्मेलन के प्रबंध का पूर्ण अधिकार मुझे सौंपकर विना रोक-टोक सब कार्य करने में सहायता दी। सरदार साहब सरदार चूड़सिंहजी, सभापति तथा सरदार हरिसिंहजी, मंत्री श्रीगुरुसिंह-सभा, लखनऊ का भी मैं अत्यंत आभारी हूँ, जिन्होंने सभा की ओर से मायक सहायता देकर तथा वालंटियर भेजकर सिखी-प्रचार के ऐसे शुभ अवसर में सहायता दी। सरदार मन्नासिंहजी, सरदार जनकसिंहजी, डॉ० गुरुमुखसिंहजी, सरदार हुकुमसिंहजी, सरदार करतारसिंहजी आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं, जिन्होंने सम्मेलन के प्रबंध में विविध प्रकार से सहायता दी। रेडियो के कर्मचारियों ने यद्यपि हमारी इच्छा के अनुसार रिले नहीं किया, तो भी मैं उनका आभारी हूँ, जो उन्होंने ख़ालसा-कवि-सम्मेलन के रिले में हाथ बटाया। विशेष रूप से मैं इस संबंध में श्रीके० एस्० मलिक, श्रीअनसार साहब और श्रीबुद्धिभद्र साहब का कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने रिले के संबंध में कठिनाइयों और आपत्तियों के सुलझाने में अपनी पूर्ण सहानुभूति प्रकट की। अंत में मैं उन सब सज्जनों को भी हार्दिक धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने कृपा-पूर्वक सम्मेलन में कविताएँ सुनने के लिये पधारने का कष्ट किया, और कविजनों को उनकी रचनाओं पर दाद दी।

मैं अपनी ओर से तथा यू० पी० सेंट्रल सिख दीवान और लखनऊ की सारी सिख-जनता की ओर से दुबारा उपर्युक्त सब सज्जनों को धन्यवाद देते हुए यह आशा करता हूँ कि आइंदा भी ऐसे अवसरों पर आप सब हम लोगों को इसी प्रकार प्रोत्साहन देते रहेंगे। हम लोगों से जो त्रुटियाँ हुई हों, उनके लिये हमें क्षमा किया जाय।

दास—

डॉ० जसवंतसिंह

संयोजक ख़ालसा-कवि-सम्मेलन

सुधा के ग्राहक बनकर इसे अपनाइए!
हिंदी-सेवा में हमारा हाथ बँटाइए!!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाथी के दाँत

[श्रीयुत विश्वंभरनाथ शर्मा 'कौशिक']

(१)

शाम के पाँच बज चुके थे। पं० गिरिधारीलाल अपनी छोटी-सी बैठक में बैठे थे। उनके सम्मुख दो व्यक्ति उपस्थित थे। इनमें से एक युवा था, और दूसरा प्रौढ़। गिरिधारीलाल कह रहे थे—"भई, हम तो अहिंसा के माननेवाले हैं, हिंसा का समर्थन हम नहीं कर सकते।"

"परंतु पंडितजी, मैं आपसे हिंसा का समर्थन करने के लिये कहता ही कब हूँ। मेरा तो निवेदन केवल यह है कि आत्मरक्षा की जाय। "आत्मानं सततं रक्षेत्।" यह हमारे शास्त्रों का उपदेश है। अहिंसक बने रहकर आत्म-समर्पण करने को मैं निरी कायरता समझता हूँ।"

"अहिंसक कायर नहीं होता, अहिंसक ही सच्चा वीर होता है।"

"तब कायर की परिभाषा क्या होगी, यह समझ में नहीं आता।"

"कायर भागता है, रोता है, चिल्लाता है, अपने प्राण बचाने के लिये ख़ुशामद करता है। अहिंसक यह सब कुछ नहीं करता।"

"तो क्या करता है, अपने प्राण दे देता है?"

"हाँ, यदि प्राण देने की आवश्यकता पड़े, तो प्राण भी दे देता है। अहिंसक अपनी रक्षा में दूसरों के प्राण लेने की अपेक्षा अपने प्राण दे देना अधिक अच्छा समझता है।"

"तो इसका नाम, हमारी समझ में, आत्म-हत्या है। मान लीजिए, कोई व्यक्ति आप पर आक्रमण करता है, तो ऐसी दशा में न तो आप भागेंगे, न अपनी रक्षा में आक्रमण-कारी के प्रति हिंसा का व्यवहार करेंगे। परिणाम यह होगा कि आक्रमणकारी अपना काम कर जायगा, क्योंकि आपकी अहिंसा से उसका साहस और भी बढ़ जायगा। क्षमा कीजिए, ऐसी अहिंसा के हम क़ायल नहीं।"

श्रीयुत विश्वंभरनाथ शर्मा 'कौशिक'

"तुम क़ायल न होगे, यह मैं जानता हूँ।"

"जहाँ तक दूसरों पर आक्रमण करने का प्रश्न उठता है, वहाँ तक तो हम भी अहिंसा के समर्थक हैं, परंतु जहाँ आत्मरक्षा का प्रश्न सामने आता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है, वहाँ हम अहिंसा के क़ायल नहीं। आत्मरक्षा में की गई हिंसा को हम हिंसा मानने के लिये तैयार नहीं।"

"यह विवाद का विषय नहीं। यह है अपना-अपना सिद्धांत और अपना विश्वास। जो आपको अच्छा लगे, आप कीजिए; जो हमें अच्छा लगता है, हम करते हैं।"

"अच्छी बात है। परंतु मुहल्ला एकमत होना चाहिए। भिन्नमत होने से ठीक नहीं रहता। आजकल जैसा समय है, उसे देखते हुए पारस्परिक सहयोग के बिना काम नहीं चलता। और, सहयोग तथा संगठन तभी हो सकता है, जब सब एकमत हों। कोई मामला आ पड़ा, तो आप तो अहिंसक बने रहकर घर के बाहर भी न निकलेंगे, अथवा यदि निकलेंगे भी, तो कुछ करेंगे नहीं।"

"क्या नहीं करेंगे?"

"यही, यदि लड़ने-भिड़ने की आवश्यकता पड़ी।"

"हाँ, यह तो मैं नहीं करूँगा।"

"इसमें आप हानि उठा जायँगे, और बदनामी मुहल्ले की होगी। यदि आप यह आशा रखते हों कि दूसरे आपकी सहायता करेंगे, तो यह नहीं हो सकता। जब आप दूसरों की सहायता में हाथ-पैर नहीं हिलाएँगे, तो दूसरे आपकी सहायता क्यों करने लगे?"

"ख़ैर, आप मेरी चिंता छोड़िए, अपना प्रबंध कीजिए। मुझ पर जो बीतेगी, मैं सहन कर लूँगा। और, यह भी विश्वास रखिए कि मैं किसी से यह शिकायत नहीं करूँगा कि मुहल्ले-वालों ने मेरी सहायता नहीं की।"

"अच्छी बात है। जैसी आपकी इच्छा। हमने अपना कर्तव्य पूरा कर दिया।"

"इसके लिये मैं आपका कृतज्ञ हूँ।"

(२)

ये दोनो व्यक्ति गिरिधारीलाल के यहाँ से उठकर एक दूसरी जगह पहुँचे। इस स्थान पर पंद्रह-बीस आदमी जमा थे। इनके वहाँ पहुँचते ही उनमें से एक ने पूछा—"क्या नहीं आए?"

"जी नहीं। कहते हैं, हम हिंसा का समर्थन नहीं कर सकते, और न किसी ऐसे संगठन में सम्मिलित हो सकते हैं, जिसका उद्देश्य हिंसा हो।"

इतना कहकर प्रौढ़ व्यक्ति बैठ गया। युवक भी उसके निकट ही बैठ गया।

"बड़े विचित्र आदमी हैं। महात्मा गांधी से भी दो क़दम आगे।" उपस्थित लोगों में से एक ने कहा।

"ऐसे तो अहिंसक मालूम नहीं होते!" दूसरा बोला।

"अजी, राम का नाम लीजिए। 'हाथी के दाँत खाने के और होते हैं, दिखाने के और।' मुहल्ले के संगठन की बात है न, इसलिये अहिंसा-वादी बन गए, जिससे सबमें यह बात फैल जाय कि गिरिधारीलाल इस कारण से सम्मिलित नहीं हुए, अन्यथा जैसे वह अहिंसक हैं, हमें अच्छी तरह मालूम है। यदि आप लोगों की आज्ञा हो, तो कल ही दिखा दूँ कि पंडितजी कितने अहिंसक हैं!"

"कैसे दिखाओगे?"

"इससे आपसे क्या मतलब, दिखा देंगे।"

उपस्थित लोगों ने एक दूसरे की ओर देखा। एक वृद्ध बोल उठे—"भाई, देखना तो चाहिए।"

"आप ठीक कहते हैं। इनकी परीक्षा होनी चाहिए। अहिंसक निकलें, तो ठीक; अन्यथा इनका इलाज हो जाना चाहिए।"

"अच्छा भई, दिखाओ—तय हो गया।"

"बहुत अच्छा, कल ही लीजिए।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"समय तो बता दो, जिससे हम लोग भी उस समय उपस्थित रहें।"

"जब आप लोगों को सुविधा हो।"

"क्यों भई?" प्रश्नकर्ता ने सबकी ओर देखा।

"शाम को ही रखिए। उस समय सब लोग उपस्थित रहेंगे।"

"हाँ, और क्या। क्यों भई, शाम को ठीक रहेगा?"

"मैंने तो कह दिया, जब आप कह दें।"

"तुम्हें उस्ताद, उनकी कोई कल मालूम है, तभी इतने इतमीनान से कह रहे हो।"

इस पर सब लोग हँस पड़े। एक व्यक्ति बोला—"जिसका बंदर होता है, उसी से नाचता है।"

इस पर फिर क़हक़हा लगा।

"अच्छा, शाम को छ-सात बजे ठीक रहेगा।"

"बहुत अच्छा।"

"गिरिधारीलाल सस्ती ख्याति लूटना चाहते हैं।"

"सो धरी है, लूट लें। चर्ख़ा कात लेना और सत्याग्रह करके जेल हो आना आसान है; परंतु अहिंसक बनना बड़ा मुश्किल है।"

"निस्संदेह यह बात बड़ी कठिन है।"

"अहिंसक वही हो सकता है, जो क्रोध को जीत ले। और, क्रोध को जीतना कितना कठिन है, यह आप लोग जानते ही हैं।"

"ख़ैर, कुछ भी हो, हमें तो अब कामताप्रसाद की करामात देखनी है।"

"कल देख लीजिएगा। कल यदि पंडितजी हिंसा का अवतार न बन जायँ, तो मेरा नाम बदल दीजिएगा।" कामताप्रसाद ने कहा।

"अच्छी बात है, तो अब आप लोग जाइए, कल सात बजे यहीं आ जाइएगा।"

(३)

दूसरे दिन छ बजे के लगभग कामताप्रसाद मुहल्ले के एक व्यक्ति के पास पहुँचा। इस व्यक्ति का नाम रामसनेही था। रामसनेही कामताप्रसाद को देखते ही बोला—"सब ठीक है।"

"दाँव ख़ाली न जाय, नहीं तो बड़ी हँसी होगी।" कामताप्रसाद ने कहा।

"कैसी बातें करते हो भैया। भला, हमारा दाँव ख़ाली जा सकता है?"

"तो ठीक सात बजे आ जाना।"

"आ जाऊँगा। वहीं बाबू रामनारायण के मकान पर?"

"हाँ, वहीं सब लोग जमा होंगे।"

"अच्छी बात है।"

कामताप्रसाद वहाँ से चलकर सीधे गिरिधारीलाल के पास पहुँचा। गिरिधारीलाल घर पर मौजूद थे।

कामताप्रसाद ने "पालागूँ पंडितजी" कहा। पंडितजी "आनंद रहो।" कहकर बोले—"कैसे?"

"क्या बताऊँ पंडितजी, आज एक बड़ी वैसी बात सुनी है।"

"क्या सुना?" पंडितजी ने उत्सुकता से पूछा।

"हमने सुना है, आप दूसरा ब्याह करने जा रहे हैं?"

पंडितजी का मुख-मंडल तमतमा उठा, बोले—"कौन ससुरा कहता है?"

"अब यह न पूछिए।"

"यह तो तुम्हें बताना पड़ेगा।"

"तो क्या यह ख़बर ग़लत है?"

"सोलहो आने ग़लत। भला, सोचो तो, मेरे घर में पत्नी मौजूद है। ईश्वर की दया से देखने-सुनने में भी अच्छी है। दो लड़के हैं, एक लड़की। मुझे ब्याह करने की आवश्यकता ही क्या?"

"हाँ, यही तो मैं भी सोचता था। परंतु जब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहनेवाले ने इस प्रकार कहा, मानो यह ख़बर बिलकुल सच्ची है, तब मैंने सोचा, ज़रा पंडितजी से तो पूछूँ।"

"वह हरामज़ादा है कौन, जिसने यह ख़बर तुम्हें दी?"

"मुझे ही क्यों, सारे मुहल्ले में यह बात फैल गई है। बल्कि आपके पास मुहल्ले के कुछ लोग आनेवाले भी हैं।"

"ओफ़्फ़ोह! यहाँ तक बात बढ़ गई, और मुझे ख़बर ही नहीं। अच्छा, तुम उस आदमी का नाम बताओ।"

"रामसनेही को तो आप जानते ही होंगे।"

"हाँ-हाँ। वह ऐसा कहता था?"

"हाँ। उसी ने सारे मुहल्ले में यह ख़बर फैलाई है। कहिए, तो मैं उसे आपके पास ले आऊँ।"

"यदि ऐसा करो, तो बात बन जाय। तुम किसी तरह उसे मेरे पास ले आओ।"

"अच्छी बात है, ले आऊँगा। सात बजे के लगभग लाऊँगा। आप घर पर ही रहेंगे न?"

"हाँ, मैं अब कहीं न जाऊँगा।"

कामताप्रसाद वहाँ से चलकर रामनारायण के घर पहुँचा। वहाँ कुछ लोग आ गए थे। बाबू रामनारायण ने पूछा—"सब ठीक है?"

"हाँ, सब ठीक है। सुरंग बिछा आया हूँ, ख़ाली दियासलाई दिखाने की देर है।"

सब लोग हँसने लगे। रामनारायण बोले—"सात बजने में बीस मिनट बाक़ी हैं।"

"बस, ठीक सात बजे काम शुरू हो जायगा। तब तक दो-एक आदमी मेरा एक काम कर दें।"

"बोलो।" कई व्यक्ति बोल उठे।

"आप ज़रा पंडित गिरिधारीलाल के सामने से निकलें। पंडितजी सामने बैठक में ही बैठे हैं। उनसे इतना पूछ लीजिए कि पंडितजी, ब्याह कहाँ पक्का किया? वह कुछ कहें, तो इतना कहकर चल देना कि हमने जो सुना, वह कहा।"

"रामनारायण बोल उठे—"अच्छा उस्ताद, यह स्वाँग फैलाया है।"

दो व्यक्ति तुरंत उठकर चल दिए।

(४)

सात बजे रामसनेही आ गया। वे दोनो व्यक्ति भी लौट आए। उन्होंने कहा—"भई, पंडितजी बहुत बिगड़े। बोले, 'जिसने यह झूठी ख़बर फैलाई है, पहले उससे निबट लूँ, फिर आपको जवाब दूँगा।' हम लोग चुपचाप चले आए। पंडितजी बड़े ग़ुस्से में बैठे हैं।"

रामसनेही बोला—"आज पंडितजी हमें बिना मारे न छोड़ेंगे।"

"यही तो हम चाहते हैं।" रामनारायण ने कहा।

कुछ मिनटों में अन्य बहुत-से लोग आ गए। कामताप्रसाद बोला—"तो अब जाऊँ?"

"हाँ, अब जाओ।"

"जब हल्ला-गुल्ला मचे, तो आप लोग भी पहुँच जाइएगा।"

यह कहकर कामताप्रसाद रामसनेही को लेकर पंडितजी के यहाँ पहुँचा। पंडितजी रामसनेही को देखते ही तमतमा उठे, परंतु क्रोध दबाकर उन्होंने उससे पूछा—"तुम यह क्या ख़बर फैला रहे हो?"

"कौन-सी ख़बर?"

'यही हमारे ब्याह करने की?"

"हाँ। ख़बर झूठ थोड़े ही है।"

"क्या?"

"ख़बर झूठ नहीं है।"

"ऊपर से कहता है, ख़बर झूठ नहीं है।" पंडितजी ने चिल्लाकर कहा।

"देखिए पंडितजी, अगर आप इस तरह चिल्लाकर रुआब में लेना चाहते हों, सो हम रुआब में नहीं आ सकते।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अबे, रुआब में लेना गया ऐसी-तैसी में, अभी मैं तेरी खोपड़ी तोड़ूँगा। तूने यह ख़बर फैलाई कैसे ?"

इतना सुनते ही रामसनेही झटपट उठकर बाहर आ गया, और द्वार पर खड़ा होकर बोला—"खोपड़ी तोड़नेवाले ससुरे मर गए। एक तो महाराज एक स्त्री रहते हुए दूसरा ब्याह करने जा रहे हैं, शरम नहीं लगती, उलटे हम पर धौंस जमाते हैं।"

पंडितजी भी उछलकर द्वार पर आ गए, और चिल्लाकर बोले—"तुझे इसका प्रमाण देना पड़ेगा, अन्यथा आज मैं तेरा ख़ून पी जाऊँगा। तूने मेरी बदनामी फैलाई है। ग़ज़ब रे ग़ज़ब! हमारे कांग्रेसी भाई सुनेंगे, तो क्या कहेंगे ?"

"अरे महाराज, बड़े बने हुए हो। पाँच हज़ार ठहराए हैं। रुपए के पीछे ब्याह कर रहे हो।"

यह बातचीत पंडितजी की पत्नी ने भी सुनी। उसने तुरंत पंडितजी को बुलवाया। पंडितजी बोले—"ठहरो, आते हैं। पहले इस ससुरे से निबट लें।"

"देखो पंडित, ज़बान न चलाना, नहीं तो अच्छा न होगा।"

"ऊपर से अकड़ता है, अच्छा, ठहर तो। लाना तो मेरा डंडा। आज या तो यही है, या मैं ही।"

इतना कह पंडितजी ने लपककर बैठक से अपना डंडा उठा लिया, और रामसनेही की ओर लपके।

कामताप्रसाद रामसनेही से बोला—"काम तो तुमने मार खाने का ही किया है। पंडितजी को झूठा कलंक लगाया।"

इधर पंडितजी ने आव देखा न ताव, डंडे का वार कर ही तो दिया। रामसनेही ने दोनो हाथों से डंडा पकड़ लिया। उधर रामनारायण तथा और सब आ गए थे। दौड़ पड़े। रामनारायण बोले—"पंडितजी, यह क्या, आप तो अहिंसावादी हैं।"

"अरे, कैसा अहिंसावादी ! मैं इसका ख़ून पी लूँगा। इसने ऐसी झूठी बात कही कैसे ?"

रामसनेही बोला—"मैंने क्या कहा, पहले यह बताइए।"

"अब कहता है—'क्या कहा' ?"

इतना कहकर पंडितजी ने डंडा तो छोड़ दिया, और रामसनेही का गला पकड़ा।

रामनारायण इत्यादि ने बीच-बचाव कराके दोनो को अलग किया। रामनारायण बोले—"बात क्या है, पहले यह तो बताइए।"

"यह ससुरा यह ख़बर उड़ाता है कि मैं दूसरा ब्याह करने जा रहा हूँ।"

रामसनेही बोला—"भला, आप लोग बताइए, आप लोगों ने भी सुना है ?"

रामनारायण तथा अन्य लोग बोल उठे—"हमने तो नहीं सुना।"

"अबे, अभी तो तू कह रहा था कि मैंने कहा है।"

"आप जैसी कहते थे, वैसी ही मैं भी कहता था। वैसे मैं जानता भी नहीं, और न मैंने किसी से कहा।"

रामनारायण बोले—"ऐसी कोई बात मुहल्ले में नहीं सुनी गई।"

पंडितजी कामताप्रसाद की ओर देखकर बोले—"क्यों भई, यह क्या बात है ?"

"हाँ, कहा तो इसने किसी से नहीं।"

"बड़ा ग़ज़ब है। तुम्हीं ने तो मुझसे कहा था कि रामसनेही ऐसा कहता है, और तुम्हीं इसे यहाँ ले आए, और अब कहते हो इसने किसी से नहीं कहा।"

रामनारायण बोले—"पंडितजी, क्षमा कीजिए। आप बड़े अहिंसावादी बनते थे, इसलिये आपकी अहिंसा देखने के लिये यह नाटक रचा गया था। इसमें कोई असलियत नहीं। अब आप समझे ?"

पंडितजी का चेहरा उतर गया। सिर झुकाकर चुपचाप घर के अंदर चले गए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चले हैं हम आज़ादी लेने!

[श्रीयुत सुधींद्रवर्मा एम्० ए०, एल्-एल्० बी०]

(श्रीसुधींद्रजी सुधा के अपने श्रेष्ठ लेखक हैं। पुरातत्त्व, राजनीति, ललित कला तथा इतिहास पर बहुत अच्छा लिखते हैं। जब लखनऊ-विश्वविद्यालय में आप पढ़ते रहे हैं, तभी से आप सुधा में लिखते आए हैं। बी० ए० में आप प्रथम श्रेणी में प्रथम आए थे। हिंदी में आपको बड़े ऊँचे नंबर मिले थे। हिंदी के दुर्भाग्य-वश यदि आपको अपना समय वकालत में न लगाना पड़ता, तो हिंदी को आप बहुत कुछ देते।—सुधा-संपादक)

आज मुझे कुछ कड़ुई बातें कहने के लिये बाध्य होना पड़ा है। मैं अहिंसात्मक सत्याग्रह में विश्वास रखता हूँ, किंतु 'साहस' का जो लक्षण आजदिन कांग्रेसी कोष में समझा जाता है, उससे मैं सहमत नहीं। आती हुई विपत्ति या आक्रमणकारी सशस्त्र आततायी को केवल सत्याग्रह के अस्त्र से निवारण करने में मेरा विश्वास नहीं। न उस विपत्ति या आततायी से बचने के लिये सिर पर पैर रखकर भाग निकलना ही मेरे कोष में 'साहस' का पर्यायवाची हो सकता है। यदि कोई व्यक्ति इतना पागल हो उठे कि वह प्रार्थना-गृह के सामने गाना गाने से ही विचिस हो जाता हो, और अपने ऐसे ही पागल साथियों को लेकर निरपराध तथा विश्वासी पड़ोसियों पर अकारण ही हमला कर बैठे, तो उस अवस्था में डटकर उसका मुक़ाबिला करने और उसे इस पागलपन के लिये उचित नसीहत देने को ही मैं 'साहस' कहता हूँ। मेरे कोष में कृपलानी-जैसे लोगों के लिये—जो पाकिस्तान-जैसी विनाश-कारिणी, अनिष्ट वस्तु को अग्राह्य कहने का नैतिक साहस नहीं रखते—'कायर'-शब्द रक्खा गया है। हमें राजनीतिक झमेलों में पड़कर, अंतरात्मा की प्रबल पुकार दबाकर मुसलमानों की जायज़ या नाजायज़ माँगों के लिये जो दबी ज़बान निकालना पड़ती है, उसे भी मैं 'साहस' के विपर्यय 'कायरता' से ही संबुद्ध करता हूँ। फावड़े को फावड़ा कहना और वह भी ऐसी ऊँची आवाज़ में कि दुनिया उसे सुन सके, बदमाश आततायी की अच्छी ठोक-पीट के लिये सदा तैयार रहना, गुंडेपन को कभी न सहकर गुंडों की मरम्मत

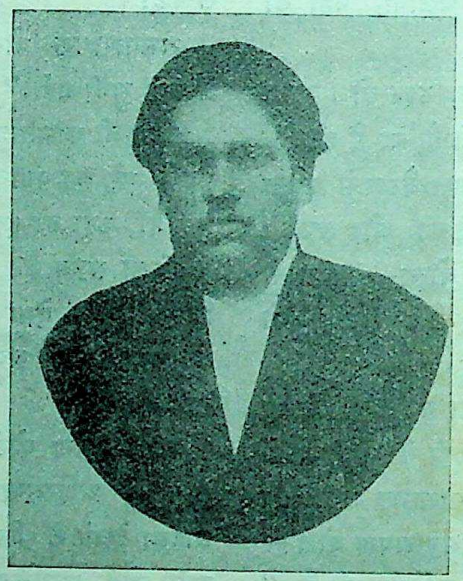

श्रीयुत सुधींद्रवर्मा एम्० ए०, एल्-एल्० बी०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिये सदा कटिबद्ध रहना और साथ ही सार्वजनिक आपत्ति के समय साधारण जनता का उत्तम नेतृत्व करके उस आपत्ति का डटकर मुक़ाबिला करने को ही मैं 'साहस' कहता हूँ।

हम आज़ादी चाहते हैं, किंतु आज़ादी के लिये आवश्यक हाथ-भर का कलेजा हमारे पास नहीं। जिस सार्वजनिक साहस और नियंत्रण की आवश्यकता आज़ाद राष्ट्र को होती है, वह अभी हमारे पास नहीं। आज २५ वर्ष के प्रयत्न के बाद भी नहीं।

❀ ❀ ❀

'जर्मन आला'

१६१८ के नारिकेलोत्सव की बात है। बंबई में, चौपाटी के मैदान में, बहुत बड़ा मेला लगा हुआ था। सैकड़ों दूकानें लाखों का माल लिए समुद्र-वेला पर सजाई गई थीं। सहस्रों नर-नारी मेले में क्रय-विक्रय करते-कराते विचरण कर रहे थे। चारों ओर आनंद, उल्लास और निर्भयता का साम्राज्य फैला हुआ था। एकाएक बड़े ज़ोर का धड़ाका हुआ, और चौपाटी के समुद्र-तट से धुएँ के साथ उठती हुई ऊँची, भयभीत आवाज़ चिल्ला उठी— 'जर्मन आला', 'जहाज़ आला', 'एमडन आला'।

इस आवाज़ ने बंबई के उस आनंदोत्सव में वह भगदड़ मचवा दी कि लोग सिर पर पैर रखकर भाग खड़े हुए। बच्चे दबे, स्त्रियाँ कुचली गईं, और लाखों का माल बात-की-बात में गुंडों ने लूटकर आत्मसात् कर लिया। यहाँ तक ही इस भीरुता का अंत न हुआ, पोर्ट-कमिश्नर और गवर्नर को तुरंत फ़ोन से इत्तिला दी गई, और तुरंत ही अँगरेज़ी फ़ौज बंबई के बाज़ारों में दिखाई देने लगी। देशी पुलिस के जो लोग वहाँ थे, वे सदा की पद्धति के अनुसार पहले ही नौ-दो ग्यारह हो चुके थे।

कई हज़ार हिंदुस्थानी वीरों की उपस्थिति में एक बहुत बड़े पटाख़े के धड़ाके की सहायता से इने-गिने गुंडों ने सारा बाज़ार लूट लिया, और हमारी वीर जाति के ये हज़ारों लाल सिर पर पैर रखकर भागे। किसी ने भी तो लौटकर न पूछा कि बात क्या थी। यह है हमारे सार्वजनिक साहस का हाल, चले हैं हम आज़ादी लेने !

❀ ❀ ❀

साँड़ लड़े

१६२१ के एक सुंदर संध्याकाल में २५ हज़ार नर-नारियों की श्रद्धालु भीड़, वीरप्रसूता श्रीमती महारानी लक्ष्मीबाई की प्रसिद्ध नगरी झाँसी के विशाल हार्डीगंज के प्रशस्त प्रांगण में एकत्र होकर, वंदनीय गांधीजी और भूधराकार अलीभाइयों के अभिनंदनीय दर्शनों तथा वचन-सुधा-पान के लिये उत्सुक, उत्कर्ण, उद्ग्रीव, उद्विग्न तथा उत्कंठित-सी बैठी है। इतना बड़ा विशाल जन-समूह एकदम शांत और निश्शब्द होकर 'बड़े भैया' की बड़ी-बड़ी जेबों से महात्माजी के प्रकट होने की बात सुनकर स्तब्ध और आश्चर्यान्वित हो गया है। अब गांधीजी उठने ही जा रहे हैं, लोग और भी आगे को खिसक रहे हैं। लेखक भी —जो उस समय एक भावुक लड़का था—भीड़ की अंतिम पंक्ति के पास, एक ऊँचे चबूतरे पर, खड़ा हुआ स्वराज्य और स्वदेश की चर्चा इतनी उत्सुकता और उत्साह से सुननेवाले अपने इन २५ हज़ार देशवासियों को देश के लिये मर मिटनेवाले अमर वीरों की श्रेणी में गिन रहा है, और समझता है, समय पड़ने पर ये वीर डटकर अँगरेज़ों का मुक़ाबिला करेंगे। कितना मर्मस्पर्शी, स्फूर्तिदायक और शौर्य-संवर्धक है यह दृश्य !

गांधीजी उठे, लोग खिसके, और पैरों की खिसखिसाहट बंद चली। तुरंत स्वयंसेवकों के कप्तान जलीलअहमद का बिगुल बजा, और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनता एकदम नीरव, निश्चेष्ट हो गई। क्षण-प्रतिक्षण घनीभूत सांध्य तामिस्र में एकाएक शीघ्र उठकर फिर तेज़ी तथा बल-पूर्वक गिरनेवाले बहुत-से पद-प्रहारों की आवाज़ उस निस्तब्ध और नीरव जनता के मस्तक पर होती हुई सीधी मंच तक जा पहुँची। लोग चौकन्ने हुए, भीड़ में से एक त्रस्त-सी, भयभीत-सी, क्षीण-सी आवाज़ उठी और पूछा—"क्या बात है?"

किसी ने कहा—"गोरे आ रहे हैं।"

क्षण-भर में ही बच्चों को कुचलती, स्त्रियों को ढकेलती, एक दूसरे पर गिरती-पड़ती उस पचीस हज़ार की भीड़ को झंझावात में उड़नेवाली, असहाय पत्तियों की तरह काँपते, दूकानों में छिपते, म्युनिसिपल नालियों में घुसते और बोरों के पीछे लुकते लेखक ने जब देखा, तो सहसा उसे हँसी आई, और वह दिल खोलकर हँसा। आह! लड़कपन की हँसी। आज वह दिल पर चोट करती है, आज उस दिन की हँसी रुला रही है। अपनी नासमझी में जिसे मैंने एक विनोद-पूर्ण घटना समझा था, आज २० वर्ष के अनुभव के बाद उसे ही अपनी जाति के सार्वजनिक साहस का दिवालियापन पाकर दिल टूटता है।

इन पचीस हज़ार हिंदुस्थानियों को भगानेवाले थे दो सांड। जिस चबूतरे पर मैं खड़ा था, उसी के पास बड़ी देर से बैठे थे वे। न-मालूम एकाएक क्यों उठे, और लगे टक्कर लेने। बड़े ने छोटे को खदेड़ा, और दूर तक पीछे हटाया। इसी खदेड़ने की आवाज़ को लोगों ने गोरी-पल्टन का डबल मार्च समझा, और हमारे उन बहादुरों ने 'क्विक मार्च' करके ही दम लिया! यह है हमारे साहस का नमूना, चले हैं हम आज़ादी लेने!

❀ ❀ ❀

सन् १९२४ के अंत के दिन थे, शायद सितंबर या ऑक्टोबर रहा हो। मैं उन दिनों लखनऊ, आग़ामीर की ड्योढ़ी में, चाँदीख़ाना कंपाउंड में, बहुत-से अन्य विद्यार्थियों के साथ रहता था। रात के ९ बजे होंगे कि एकाएक बड़े ज़ोर का शोर सुनकर मीठी नींद टूट गई। छज्जे पर बाहर आकर देखा, बूढ़े-बूढ़े आदमी सिर पर पैर रखकर भाग रहे हैं। दूकानदार भी दूकानें बंद करके और कुछ खुली ही छोड़कर भाग गए हैं। नीचे सरकारी सड़क भगोड़ों से भरी हुई है। कभी मुसलिम भगोड़े आते हैं, तो कभी हिंदू। पूछने पर भी इस भगदड़ का कारण न मालूम हुआ। मुहल्ले-भर में मुसलमान-ही-मुसलमान आबाद थे, केवल हम लोगों का छोटा-सा उपनिवेश हिंदुओं का था। पास ही 'छाछू का कुआँ' हिंदुओं का मुहल्ला था, वहाँ अपने दो-एक परिचित रहते थे।

जब तक छज्जे पर खड़ा रहा, तब तक कुछ पता न चला कि बात क्या है, क्यों ये लोग इतने त्रस्त और परेशान हैं। किंतु कमरे के अंदर जाकर जैसे ही चारपाई पर लेटा कि नीचे मुसलमानों का एक छोटा-सा झुंड जमा होकर बड़ी घबराई और डरी हुई आवाज़ में कह रहा था कि छाछू के कुएँ के हिंदू हथियार लेकर आ रहे हैं, और आग़ामीर की ड्योढ़ी पर रहनेवाले कहार और मज़दूर भी, जो शक्कर की दूकानों पर काम करते हैं, दूसरी तरफ़ से हमला करेंगे। अब हम लोगों को नवाब साहब के मकान से जुबली-कॉलेज के कंपाउंड में निकलकर जान बचाना चाहिए।

मुहल्ले के परिचित और वृद्ध मुसलमानों को इतना परेशान देखकर मैं नीचे उतरा, और उनसे कहा—"आप लोग फ़िज़ूल न घबराएँ, मैं छाछू के कुएँ पर जाता हूँ, और वहाँ के लोगों से कहूँगा कि वे इस प्रकार का कोई इरादा न करें।" मैंने वहाँ जाकर देखा, तो लोग बेतरह डरे हुए थे, और पूछ रहे थे कि आग़ामीर की ड्योढ़ी के मुसलमान तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आक्रमण की तैयारी नहीं कर रहे हैं ? वहाँ पूछने पर मालूम हुआ कि अमीनाबाद में छेदीलाल-धर्मशाला के पास दो इक्केवालों में झगड़ा हो गया, जिसने हिंदू-मुसलिम दंगे का रूप धारण कर लिया है। मेरे आश्वासन पर कि मेरे मुहल्ले के मुसलमान स्वयं डरे हुए हैं, और कोई आक्रमण नहीं करना चाहते, लोगों को सांत्वना मिली। इधर मुसलमानों को भी जब स्थिति समझाई गई, वे भी शांत हो गए। किंतु तो भी रात-भर लोग अमीनाबाद और वज़ीर-गंज की तरफ़ से आते और बेतहाशा भयभीत-से भागे चले जाते। कभी पाटेनाले और राजा के बाज़ार से आवाज़ें उठतीं कि हिंदू आए। लेकिन यह सब झूठी और काल्पनिक विभीषिका थी। सुबह तक कहीं भी कोई दंगा न हुआ। सुबह उठकर हम १५-२० हिंदू-विद्यार्थी अमीनाबाद गए, तो मालूम हुआ कि दो इक्केवालों के झगड़े के कारण सारा बाज़ार बंद हो गया, और जगह-जगह हिंदू और मुसलमान प्रतिद्वंद्वी दलों का संगठन कर उठे थे, जिससे शहर-भर में इतना आतंक छा गया था। पड़ोसी पड़ोसी का विश्वास नहीं करता था, और प्रत्येक व्यक्ति केवल अपनी ही रक्षा के लिये कृतयत्न था। दूसरे की उसे परवा न थी। अगर अमीनाबाद के ही दो-चार हिम्मतवाले हिंदुस्थानी लट्ठ लेकर खड़े हो जाते, और उन दोनो बदमाशों को वहाँ नसीहत दे देते, तो इतना बड़ा हंगामा होता ही क्यों ? किंतु यहाँ तो सब अपने ही लिये उपाय करते हैं। कोई कह भर दे कि "कौवा कान ले गया।" बस, फिर देखिए हमारे देश-वासियों की चौकड़ी। सीधे कानपुर या फ़ैज़ाबाद में दिखाई देते हैं। भले आदमी यह नहीं सोचते कि यदि विपत्ति एक बार आ भी जाय, तो डटकर-पुरुषों की तरह, हिम्मत से उसका मुक़ाबिला करना चाहिए, जिससे उसे फिर दुबारा उधर मुँह करने का दुःसाहस ही न रहे, न कि उससे डरकर भाग खड़े होना। यह है हमारी हिम्मत, चले हैं हम आज़ादी लेने !

❀ ❀ ❀

सन् १६३० के अंत के दिन थे। नमक-सत्याग्रह चल रहा था। लखनऊ में भी काफ़ी हलचल थी। युनिवर्सिटी से एक सायंकाल जो लौटा, तो अमीनाबाद में गोरों की फ़ौजी लारियाँ खड़ी हुई पाईं। भीड़ भी काफ़ी जमा थी। दोनो पार्क दर्शकों से भरे हुए थे। लोग गोरों को मुँह चिढ़ाते, फ़ब्तियाँ कसते और क़हक़हा लगाकर हँस रहे थे। गोरे भी बड़े मज़े में बंदर की सूरत को अपने दाँत निपोर-कर और भी बंदर-जैसी बना रहे थे। एकाएक जत्था निकला, गिरफ़्तारियाँ हुईं, और भीड़ उस तरफ़ उमड़ चली। तितिर-बितर होने का हुक्म दिया गया, पर भीड़ काहे को मानने लगी। लाठी-चार्ज हुआ, लोग भागे। भागते हुए लोग कुछ गोरों को धक्के भी देते गए। गड़बड़ देखकर पुलिस ने ख़ाली फ़ायर कर दिया। श्रीराम-रोड पर ७० लाशें बिछी दिखाई दीं। लेखक समझा, गोली चली है, और ७० आदमी धराशायी हुए हैं। ५-६ हज़ार की भीड़ में इतने आदमियों का मरना कुछ आश्चर्य की बात न थी। लेखक ने कहा—कैसे वीर और भाग्यशाली हैं ये लोग, जो देश की ख़ातिर आज काम आए। किंतु उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा, जब पुलिस के चले जाने के बाद ये ७० लाशें उठकर, कपड़े झाड़कर चल दीं घर की ओर ! डर के मारे गिरकर बेहोश हुए थे वे बहादुर। धन्य हमारे साहस, चले हैं हम आज़ादी लेने !

❀ ❀ ❀

११ मई, १६४१ की पहली रात में बेहद गरमी थी। रात-भर नींद नहीं आई थी, इसलिये प्रातः-काल ही उठकर बँगले से बाहर कंपाउंड में जो निकला, तो झोकन-बाग़ (झाँसी) की दशा ही बदली हुई पाई। ज़ोर की आँधी के लक्षण दिखाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पड़ रहे थे। चारो ओर धूल का घटाटोप छाया हुआ था, और उषा-काल बड़ी दयनीय दशा में उदित होकर दमघोटू मौत मर रहा प्रतीत होता था। प्रकृति निर्जीव, निश्चेष्ट तथा त्रस्त-सी थी, मानो उसका अंतकाल आ गया हो। एकाएक प्रबल झंझावात और अंधड़ ने झाँसी के उन्नत-मस्तक, विशाल दुर्ग को, फिर झरने की पहाड़ी को, फिर ग़दर में मारे गए अँगरेज़ों के स्मारक को और अंत में मेरे बँगले के पास खड़े हुए बड़े-बड़े पीपल और नीम के प्राचीन वृक्षों को धूल के आवरण से ढककर जड़ से हिला डाला। आँधी की उस भयंकर हहराहट में पास की मस्जिदों से उठनेवाली अल्लाहोअकबर की भयभीत अज़ाँ बड़े ज़ोर से सुनाई देने लगी, मानो सैकड़ों कंठ मिलकर भय के शिखर से अल्लाह को पुकार रहे हों।

घंटे-भर तक आँधी का ज़ोर रहा, और सैकड़ों पेड़, पत्ती और छप्पर गिराकर मत्त मातंग के समान धीरे-धीरे वह शांत हो गई। किंतु शहर में अशांति का बवंडर उठ खड़ा हुआ था। लोग शहर छोड़कर भाग रहे थे। ताँगे, बैलगाड़ियाँ और रेलें भरी हुई जा रही थीं। पड़ोस में रहनेवाले एक मुसलमान इंस्पेक्टर के नौकर को एक भारी बक्स वकील साहब के घर ले जाते देख-कर पूछा, तो मालूम हुआ कि आज क़यामत का अंदेशा है। हिंदू लोग मुसलमानों को मार डालेंगे, इसलिये ज़ेवरात हिफ़ाज़त से रक्खे जा रहे हैं। क़यामत की ख़बर बिजनौर के 'मदीना' में किसी ने छापी थी, और कई दिनों से ख़ाकसारों का आगमन भी शहर में होता था। बस, इतना ही काफ़ी था हमारे बहादुरों के लिये। डरकर भाग चले थे शहर से, मानो क़यामत से वे देहात में छुटकारा पा सकते हों। हज़ारों आदमी भाग निकले थे उस ११ मई को। यह है हमारी हिम्मत, चले हैं हम आज़ादी लेने!

❀ ❀ ❀

अभी ७ जून की रात की एक्सप्रेस से कानपुर के लिये मैं जब चला, तो बंबई से भागे हुए सैकड़ों आदमी मुझे ट्रेन में मिले। मालूम हुआ, बंबई में 'ब्लैक आउट' का अभ्यास होने के कारण लोग भयभीत हो गए हैं, और समझते हैं, जर्मन-आक्रमण शीघ्र ही होगा। इसी से बंबई ख़ाली किया जा रहा है। बड़ी धक्कमधक्का रही ट्रेन में। कानपुर उतरकर कुछ देर शहर में मैंने अपना काम किया, और २-४५वाली गाड़ी से लखनऊ चला, तो वहाँ भी बेहद भीड़ देखी। मालूम हुआ, डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट ने 'हवाई हमले से हिफ़ाज़त' के उपाय सीखने के लिये जनता को निमंत्रित करते हुए एक नोटिस निकाला है। लोग उसी से भयभीत होकर भाग रहे हैं। ९ तारीख़ को ११½ बजे जब फिर कानपुर आया, तो स्टेशन पर आग बुझाने का प्रदर्शन हो रहा था। लोग उससे और भी आतंकित हो उठे, और १०, ११, १२ जून की प्रत्येक ट्रेन कानपुर से बेहद भरी हुई गई। १३ जून को प्रातःकाल फिर जब झाँसी से कानपुर पहुँचा, तो ट्रेन कानपुर में बेतरह भर गई। मालूम हुआ, पिछले तीन दिन में ४० हज़ार रुपए से ज़्यादा का टिकट कानपुर-स्टेशन से बिका है।

अपनी हिफ़ाज़त करने के साधन सीखने के लिये बुलाए जाने पर तो हमारी यह दशा है, कहीं यदि सचमुच कोई आक्रमण हो जाय, तो शायद हम नेपाल भागने की सोचेंगे। बलिहारी है हमारे गुर्दे की, चले हैं हम आज़ादी लेने!

❀ ❀ ❀

तब फिर क्या हम आज़ादी न लेंगे? लेंगे अवश्य, किंतु तभी, जब हम सीख जायँगे विपत्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के समय न घबराकर, गंभीरता-पूर्वक सोच-विचार-कर उसका मुक़ाबिला करना, और अपने नेता में अखंड और अंध-विश्वास रखना तथा एकदम फ़ौजी नियंत्रण से काम करना।

सार्वजनिक साहस का उपर्युक्त दिवालियापन जब तक हममें रहेगा, तब तक हम आज़ादी न ले सकेंगे। क्या हमारे नेता इस ओर ध्यान देंगे ?

गोल्डन सैंडल वुड

स्नान का विशिष्ट साबुन

सर्वोत्तम श्वेत चंदन के तेल और विशुद्ध सामग्री की सहायता से
एक खास विधि से तयार किया हुआ।

अद्वितीय आकार और सुगंधि
लिए हुए एक बिलकुल
नया साबुन।

बेंगाल केमिकल : : कलकत्ता—बंबई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गीत *

[श्रीपं० सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला']

बादल छाए ;
ये मेरे अपने सपने,
आँखों से निकले, मँडलाए।
बूँदें जितनी,
चुनीं अधखिली कलियाँ उतनी,
बूँदों की लड़ियों के इतने
हार तुम्हें मैंने पहनाए।
गरजे सावन के घन घिर - घिर,
नाचे मोर वनों में फिर - फिर
जितनी बार,
चढ़े मेरे भी तार, छंद से तरह-तरह तिर ;
तुम्हें सुनाने को
मैंने भी कहीं नहीं कम गाने गाए।

* ऑल् इंडिया रेडियो के सौजन्य से।

'निराला'जी की उत्तमोत्तम रचनाएँ

१. परिमल—आपकी युगांतरकारिणी कविताओं का मज़ा, समय-समय पर, हिंदी-पाठकों को मिलता रहता है। इसमें इनकी लिखी हुई उत्कृष्ट कविताओं का अनुपम संग्रह है। मूल्य १॥), जिल्ददार २)

२. अप्सरा—इस उपन्यास-रत्न ने हिंदी-संसार में हलचल मचा दी है। उपन्यास-लेखन की नई शैली, नए भाव और नए चरित्र-बंधों के कारण इसने एक नया ही युग उपस्थित कर दिया है। मूल्य १), जिल्ददार १॥)

३. अलका—यह उपन्यास पढ़िए, और सुंदर, साहित्यिक तथा मधुर भाषा, हास्य-रस के स्वाभाविक फ़ौवारों और धार्मिक जीवन के साथ यहाँ के सामाजिक जीवन का अपूर्व संयोग देखिए। मूल्य १), जिल्ददार १॥)

मिलने का पता—गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामाजिक अवसरों पर

आगतों का स्वागत करने में कुशल, **श्रीमती श्रीवास्तव** का कथन है : "अपने अनुभव से मैं जानती हूँ कि कैसा भी अवसर हो, भारतीय चाय आदर्श पेय है।" चाय की लोकप्रियता का यह कैसा ज्वलन्त उदाहरण है। भारतके सामाजिक जीवन में चाय ने जो खास स्थान ग्रहण कर लिया है, यह उसका भी प्रमाण है। सचमुच, किसी भी विशेष अवसर या त्योहार को सफल बनाने के लिये, चाय पिलाना अत्यन्त आवश्यक है। व्यवहार-कुशल बननेके लिये अपने आगत अभ्यागतों को भारतीय चाय पिलाइये।

सम्भ्रान्त व्यक्ति सर्वदा भारतीय चाय पीते हैं

इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित

IK 128 S

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'विचार'

जो हिंदी का प्रमुख साप्ताहिक है !
जो कला और साहित्य का पहरेदार है !!

प्रति सप्ताह

योरोपीय महायुद्ध

हमारी उलझन

अंतर्राष्ट्रीय राजनीति पर गंभीर लेख

वर्तमान साहित्य की प्रगति पर विचार

संपादक
भगवतीचरण वर्मा

हिंदी में स्वस्थ विचारों का प्रतीक
जनता के विचारों का अग्रदूत

'विचार'-कार्यालय
४०२, अपर चितपुर-रोड
कलकत्ता

वार्षिक मूल्य छ रुपया
एक प्रति का दो आना

सी० पी०-सरकार द्वारा स्कूलों तथा पुस्तकालयों के लिये स्वीकृत

महाकौशल प्रांत का एकमात्र सचित्र साप्ताहिक

(स्थापित, सन् १८८७)

'शुभचिंतक'

प्रति सोमवार को प्रकाशित

वार्षिक मूल्य ३॥), अर्द्धवार्षिक २), एक प्रति ⁻) ताज़े-से-ताज़े देश-विदेश के समाचार, प्रांत के कोने-कोने की ख़बरें, सुंदर कविताएँ, मनोरंजक कहानियाँ और अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं पर विवेचनात्मक विचार पढ़ने के लिये—

शीघ्र 'शुभचिंतक' के ग्राहक बनिए

पत्र वी० पी० से नहीं भेजा जाता। मूल्य मनीऑर्डर द्वारा भेजिए।

नमूना मुफ़्त मंगा भेजिए।

प्रबंधक—'शुभचिंतक', जबलपुर-सी० पी०

प्रधान संपादक—बालगोविंद गुप्त, संयुक्त संपादक—हुकमचंद 'नारद'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाल-विनोद

का

'युद्ध-अंक'

शीघ्र निकलेगा !

आज की भयानक लड़ाई, लड़ाई का इतिहास, लड़ाई के ढंग, लड़ाई के हथियार, लड़नेवाले देश, लड़ाकू सिपाही, क़ैदी आदि सब बातें हमें जाननी चाहिए। नहीं तो हम कुएँ के मेढक बनकर रह जायँगे।

बाल-विनोद के इस 'युद्ध-अंक' में ऊपर लिखी सब सामग्री पाठकों को एक साथ मिलेगी।

अभी से ग्राहक बनकर अपनी कॉपी रिज़र्व करावें।

वार्षिक मूल्य २॥)

मैनेजर 'बाल-विनोद', ३६, लाटूश रोड, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज़र्दा-संसार में अपूर्व क्रांति

उत्तम-से-उत्तम तंबाकू का अपूर्व मिश्रण तथा केसर-कस्तूरी, देशी ख़ुशबुओं की मधुर सुगंध से परिपूर्ण दिलबहार ज़र्दा अवश्य खाइए। हर जगह मिलता है।

पता—काशी-विश्वनाथ-कंपनी चौक, बनारस

मिरज़ापुर के वैद्य सरजूप्रसाद ऊमर वैश्य औषधालय की बनी पेटेंट दवाएँ

दाद की
(अमीरी दवा)

न लगे, न गंधाय, न कपड़े पर दाग़ पड़े, हर तरह का नया-पुराना दाद, दीनाय जल्द आराम करनेवाली ख़ुशबूदार दवा है। तारीफ़ यह है कि कपड़े पर दाग़ नहीं लगता, यदि आप दाद से तकलीफ़ पाते हैं, तो अवश्य परीक्षा कीजिए। फ़ी शीशी ।=), ४ लेने से ५ शीशी डा० ।=)

अमीरी साबुन
बाल सफ़ा करने का

बिला जलन व तकलीफ़ के ५ मिनट में बाल सफ़ा करनेवाला अमीरी साबुन। ५ मिनट में बाल सफ़ा न हो, तो दाम वापस, ज़रूर परीक्षा कर देखें। मूल्य बड़ी बट्टी ।), ३ बट्टी का ॥=), ६ बट्टी का १=), बारह बट्टी का दाम २) ख़र्चा ज़िम्मे ख़रीदार के।

नारी-रक्षक
स्त्रियों के सर्व रोगों की प्रसिद्ध दवा

इसके सेवन से स्त्रियों के प्रदर, रक्त प्रदर, श्वेत प्रदर, ऋतु स्राव, गर्भाशय के रोग, जल्दी-जल्दी रजस्वला होना या पानी का जाना, गर्भ न ठहरना, बच्चा पैदा हो-होकर मर जाना, मूर्च्छा रोग (हिस्टीरिया) आदि स्त्रियों के रोग छूटते हैं। मूल्य ३० ख़ूराक की शीशी १), ३ शीशी २॥=), डाक-ख़र्च अलग।

दवा मँगाने का पता—वैद्य सरजूप्रसाद ऊमर वैश्य औषधालय
पो० वासलीगंज, मिरज़ापुर सिटी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वर्गीय पं० कृष्णकांत मालवीय (संस्मरण)

[श्रीयुत पं० मंगलदेव शर्मा]

(पं० मंगलदेवजी हिंदी के श्रेष्ठ पत्रकार और लेखक हैं, संस्मरण लिखने में विशेष पटु। आपने कहानियाँ भी लिखी हैं। पं० कृष्णकांतजी मालवीय का आपने निकट से अध्ययन किया था। अतएव इस संस्मरण में मालवीयजी के जीवन, रहन-सहन और स्वभाव का उचित और यथेष्ट विश्लेषण है।—सुधा-संपादक)

१

१९८ ई० के बड़े दिन पर हुई दिल्ली-कांग्रेस के दिनों में ही श्रीइंद्र विद्यावाचस्पति ने दैनिक 'विजय' दिल्ली से निकाला था। मैं दिल्ली गया था कांग्रेस देखने, किंतु पकड़ा गया 'विजय' में, और इंद्रजी का सहकारी बनकर काम करने लगा। रहने भी उन्हीं के साथ लगा, एक परिजन की भाँति। १९१९ ई० के पंजाब-हत्याकांड के बाद की बात है। एक दिन इंद्रजी ने कहा—"पं० कृष्णकांत मालवीय इलाज के लिये दिल्ली आ रहे हैं, और 'विजय' में ठहरेंगे।" एक बड़ा-सा कमरा ख़ाली करवाकर धुलवा दिया गया, और अतिथि के सुपास की सब सुविधाएँ कर दी गईं। इससे कुछ पूर्व ही स्वर्गीय पं० कृष्णकांत मालवीयजी-लिखित 'संसार - संकट'-नामक पुस्तक 'विजय' में समालोचनार्थ आई थी, उसे पढ़कर हम लोगों को गत महायुद्ध के संबंध में अनेक अज्ञात जानकारियाँ प्राप्त हुई थीं। पं० कृष्णकांतजी आए, और 'विजय' में ठहरे। उनके साथ ब्राह्मण रसोइया था, और भोजन के संबंध में वह हम लोगों से बिलकुल अलग-अलग रहे। स्वर्गीय हकीम अजमलख़ाँ से उनका बहुत प्रेम-पूर्ण संबंध था। हकीम साहब उनसे पुत्रवत् स्नेह करते थे। पं० कृष्णकांतजी की भी उनमें बहुत आस्था थी। कुछ दिन 'विजय' में ठहरने के उपरांत पं० कृष्णकांतजी रायबहादुर लाला श्रीरामजी की कोठी में, सिविल लाइंस, चले गए।

श्रीयुत पं० मंगलदेव शर्मा

इसी अवसर पर पहली बार मुझे पं० कृष्णकांतजी को समीप से देखने का मौक़ा मिला। मेरे गाँव के ज़मींदार स्वर्गीय ठाकुर उमरावसिंहजी (राजा बहादुर कुशलपालसिंहजी के पिता) के स्मारक में स्थापित 'श्रीउमराव-सरस्वती-पुस्तक-भंडार' में 'अभ्युदय' और 'मर्यादा', दोनो ही आते थे। 'मर्यादा' उस युग की अभूतपूर्व पत्रिका थी। उसका कलेवर कोरे साहित्य से ही भरा न रहता था, अपितु उसमें रहा करता था अंतरराष्ट्रीय और तत्कालीन भारतीय राजनीतियों का निचोड़, और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संसार-भर की राजनीतिक प्रगति के भारत पर पड़नेवाले प्रभाव का विशद विश्लेषण। 'अभ्युदय' और 'मर्यादा', दोनो का दृष्टिकोण एकमात्र राष्ट्रीय और उद्बोधक था, इसलिये उस युग में, जब, आज की तुलना में, हमारे देश में, सार्वजनिक जागरूकता और राजनीतिक विकास 'उर्दू पर सफ़ेदी' के बराबर भी न था, इन दोनो पत्रों-ने वह काम किया, जिसे हम आज अपने क्षेत्र में राष्ट्र-जागरण का मूलाधार कह सकते हैं।

बचपन के मुझे ख़ूब याद हैं वे दिन, जब मैं पुस्तकालय में बैठकर इन दोनो को अवश्य पढ़ता था, यद्यपि पठित भाग का अधिकांश मैं क़तई समझ न पाता था, किंतु मैं पढ़ता था, और इनके पढ़ने में मेरा जी ख़ूब लगता था। समस्त घटना-क्रम अथवा प्रसंग मुझे हृदयंगम न हो पाता, किंतु निष्कर्ष-मेरे हृदय पर खचित स्वरूप एक स्पष्ट रेखा हो जाती। कनाडा, ऑस्ट्रेलिया में फैले हुए तत्कालीन रंग-भेद और भारतीयों के प्रति दुर्भावना, कुली-प्रथा, कोमागाटामारू की दुर्घटना, आएदिन भारत में और भारत से बाहर गोरों की ठोकरों से हिंदुस्थानियों की फटनेवाली तिल्लियों और गोरों की गोलियों से मरनेवाले भारतीयों के समाचारों, घटनाओं और प्रसंगों पर पं० कृष्णकांतजी की लिखी टिप्पणियाँ मैं ख़ूब जी लगाकर पढ़ता। मेरे-जैसे न-मालूम कितनों ने तब इन्हें पढ़ा, और फलतः प्रभावित हुए बिना न रहे।

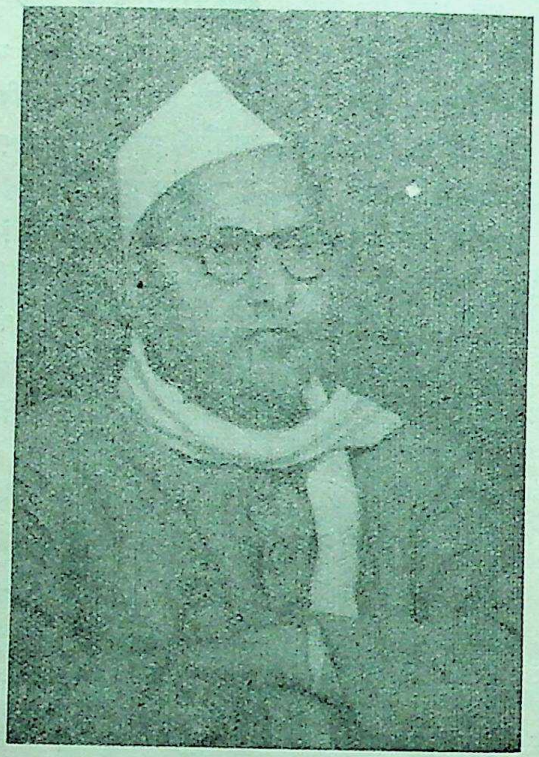

स्वर्गीय पं० कृष्णकांतजी मालवीय
(अवस्था ५७ साल)

इस कारण मेरे हृदय में पं० कृष्णकांतजी के लिये बड़ी श्रद्धा थी। दिल्ली में पूर्वोक्त अवसर पर मैं उन्हें जब भी आराम से बैठा पाता, जा पकड़ता, और बातें करने लगता। उनके पास बैठते समय पहली छाप उनकी निरभिमानता की मुझ पर पड़ी। मैं बात छेड़ देता, पीछे उनकी रुग्णावस्था देखकर मुझे संकोच होने लगता, पर वह बात ख़त्म किए बिना न मानते। एक दिन उन्होंने बातों-बातों में कहा—"अब तो राजनीतिक प्रगति में देश बहुत आगे बढ़ गया है, इस समय तो आप-जैसे नवयुवकों को अंतरराष्ट्रीय राजनीति का ख़ूब अध्ययन करना चाहिए।" मैंने पं० कृष्णकांतजी की बात गाँठ बाँध ली, और जब लाला लाजपतरायजी ने अमेरिका से लौटते ही लाहौर में तिलक-राजनीति-विद्यालय की स्थापना की, तो मैं सब छोड़-छाड़कर वहाँ पढ़ने चला गया।

पंजाब में हुए ज़ुल्मों के साथ ही टर्की की तक्काबोटी के कारण भारतीय मुसलमान बहुत क्षुब्ध थे। अतएव स्वराज्य की समस्या और पंजाब के प्रश्न के साथ ही ख़िलाफ़त का मसला भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जोड़ दिया गया। राजनीतिक दृष्टि से यह भूल हुई, अपनी इस धारणा को मैं यहाँ स्पष्ट नहीं कर रहा हूँ, और न यह इसके उपयुक्त अवसर ही है। किंतु मुझे भली भाँति ज्ञात है कि पं० कृष्णकांत मालवीय ख़िलाफ़त के बहुत बड़े हामी थे, बल्कि स्पष्ट बात तो यह है कि ख़िलाफ़त के प्रश्न को तत्कालीन

स्वर्गीय पं० कृष्णकांतजी मालवीय
(अवस्था ४५ साल)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय राजनीति में प्रमुखता प्रदान करानेवालों में वह प्रधान अग्रणी थे। सन् १९१४ में, गत महायुद्ध आरंभ होने पर, जब टर्की के तत्कालीन—अंतिम और अन्यतम—सुलतान अब्दुल हमीदख़ाँ और जर्मनी के तत्कालीन क़ैसर विलहैल्म का गठबंधन हुआ, और जर्मनी के साथ टर्की भी तब के मित्र राष्ट्रों के मुक़ाबिले मैदान में आया, तभी से पं० कृष्णकांतजी ने टर्की के पक्ष में 'मर्यादा' में कई बार लिखा, और १९१८ में जब मित्र राष्ट्र विजयी हुए, और जर्मनी तथा टर्की की गर्दनें नापी जाने लगीं, तब भी 'अभ्युदय' बराबर टर्की का पक्ष लेता रहा। एक नहीं, कई बार, इसी कारण, 'अभ्युदय' तथा 'मर्यादा' को चेतावनियाँ मिलीं।

१९१९ में ख़िलाफ़त का सवाल साकार रूप धारण कर खड़ा हो गया। अगर मैं भूलता नहीं, तो पंजाब के काले कारनामों के बाद ही सरकार को एक मेमोरियल टर्की के बटवारे के संबंध में सावधान करने के आशय से भेजा गया था, जिस पर अनेकानेक मुसलिम-लीडरों के साथ महात्मा गांधी और स्वामी श्रद्धानंद आदि के भी हस्ताक्षर हुए थे। इस मेमोरियल के बाद ही दिल्ली में भारत-भर के नेताओं की एक कॉन्फ्रेंस ख़ालिस तौर पर ख़िलाफ़त की मर्यादा-रक्षा के उपायों की खोज पर विचार करने को हुई। पं० कृष्णकांत मालवीय ने इस कॉन्फ्रेंस में प्रमुख भाग लिया, और यहाँ हुई उनकी स्पीच सर्वोत्तम मानी गई। उनका यह भाषण अकाट्य युक्तियों और दलीलों से भरा था। स्वर की गंभीरता और जँचते हुए व्यक्तित्व के कारण मेरी आँखों में वह नज़ारा घूम रहा है। 'इंडिपेंडेंट' के एडीटर मि० सैयदहुसैन का भाषण भी अच्छा था। पर लेखन-शैली के अनुकूल ही मि० सैयदहुसैन के भाषण में भी भावुकता की भरमार के कारण मैदान पं० कृष्णकांतजी के हाथ रहा। हकीम अजमलख़ाँ साहब मरहूम को ख़िलाफ़त-आंदोलन में लाने का श्रेय भी पं० कृष्णकांतजी को है। पीछे हकीम साहब भारतीय राजनीति के एक अग्रणी रहकर स्वर्गवासी हुए।

१९२० ई० में देश में असहयोग-आंदोलन की आँधी उठी। पं० कृष्णकांतजी क़ैद होकर आगरे आए। आगरा-जेल तब सूबे के ए-क्लास राजनीतिक क़ैदियों का केंद्र था। ज़िला-कांग्रेस-कमेटी के संयुक्त मंत्री की हैसियत से मैंने तत्कालीन अपने सहयोगी ठाकुर श्रीरामसिंह से भेंट करने की इजाज़त हासिल की, किंतु वस्तुतः पं० कृष्णकांतजी से भेंट करने की मेरी बड़ी तमन्ना थी। और, ए-क्लास राजनीतिक बंदियों के 'सर्किल' में मैं जब दाख़िल हुआ, तो एक अजब समा नज़र आया। मुशायरा जमा हुआ था, और उस वक्त अलीगढ़ के ख़्वाजा अब्दुलमजीद अपना कलाम फ़रमा रहे थे। मुझे देखते ही पंडितजी उठ खड़े हुए, और लपककर छाती से लगा लिया। ठाकुर श्रीरामजी भी अपनी दाढ़ी फहराते आ जुटे, और एक गुत्थमगुत्था का समा बँध गया। मुशायरा सुना गया, कुछ खाया-पिया गया, हू-हक़ रही। सभी लोग बड़े प्रेम से मिले मुझे आज पहली बार यह पता चला कि पं० कृष्णकांत मालवीय शायर भी हैं। उनका तर्ज़े-अदायगी, कविता कहने का ढंग प्रभावोत्पादक और आकर्षक न था, फिर भी उनके कलाम—उर्दू-कविता—में सोज़ोसाज़, दोनो भरपूर हैं। 'अभ्युदय' में रहते समय मैंने उनकी कॉपी से चीदा चीज़ें नक़ल कर रक्खी थीं, पाठकों के मनोरंजनार्थ मैं उन्हें इन संस्मरणों में आगे चस्पाँ कर रहा हूँ।

ख़्वाजा साहब की ग़ज़ल का संभवतः मक़ता (अंतिम शेर) यह है, जो मुझे याद हो आया—पाठकों की भेंट किए देता हूँ—

आगरा-जेल में इक छोटा-सा बयाबाँ होता,
हम भी होते, य दिले-बे-सरो-सामाँ होता!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ख़्वाजा अब्दुलमजीद साहब आजकल प्रयाग-हाई-कोर्ट में बैरिस्टरी कर रहे हैं।

इस प्रकार साक्षात्कार के साथ ही उनसे मेरा स्नेह-संबंध गाढ़ हुआ। जब-जब मैंने उन्हें पत्र लिखा, तत्काल उत्तर मिला। सन् १९२७ के शुरू में जब मैंने 'वर्तमान' के संपादक-पद का त्याग किया, तो कृष्णकांतजी को भी एक पत्र लिखा, जिसका उत्तर फ़ौरन् मुझे मिला—

'अभ्युदय'-प्रेस

प्रिय शर्माजी, प्रयाग, १०।५।१९२७

आपका कार्ड मिला। आप इस पत्र के मिलते ही प्रयाग के लिये रवाना हो जाइए।

आपका—

कृ० कां० मा०

लेकिन इस बीच 'माधुरी' में तय हो गया, और स्वर्गीय श्रद्धेय गणेशजी की अनुमति से मैंने 'माधुरी' में जाना निश्चय कर लिया। मैं 'अभ्युदय' में नहीं गया, किंतु पं० कृष्णकांतजी के सौहार्द और सहयोग की भावना मेरे हृदय में अपने पर बड़ी ग्लानि-सी उत्पन्न कर रही थी। मैंने क्षमा-याचना करते हुए उन्हें लंबा पत्र लिखा, जिसके उत्तर में उन्होंने जिस कोमलता और सहृदयता का परिचय दिया, उसे मैं न भूलूँगा। उन्होंने लिखा—"'अभ्युदय' आपका है। निःसंकोच आप जब चाहें, आ जाइए।"

सन् १९१९ से ही मेरी उत्कट इच्छा ऐसे उद्भट संपादक और अंतरराष्ट्रीय राजनीति-ज्ञाता के चरणों में बैठकर कुछ सीखने की थी। और, ऐसा सुयोग आते देर न लगी। परिस्थितियों-वश सन् १९२९ में ही यह मौक़ा आ गया, और मैं 'अभ्युदय' में पहुँच गया। इस बार भी पंडितजी का ऐसा ही तार-जैसा पत्र आया। प्रयाग-प्रस्थान की प्रतीक्षा में मैंने जल्दी-जल्दी सब सामान बाँधकर ठीक किया, और २ मई, १९२९ के दिन मैं घरवालों से भेंट करने के लिये प्रातःकाल की गाड़ी से आगरे से गाँव को रवाना हो रहा था। मैंने अपने मकान का सदर दर-वाज़ा खोला ही था कि क्या देखता हूँ, पुलिस मेरा मकान घेरे खड़ी है। गली में खड़े पुलिस-अफ़सर तेज़ी से मेरी ओर बढ़े, और ख़ाना-तलाशी का वारंट मेरे हाथ में दिया। देवगढ़ और लाहौर-षड्यंत्रों के संबंध में यह तलाशी आई थी। पंजाब-पुलिस का एक अफ़सर भी साथ था। ख़ैर, घर में घुसते ही इन लोगों ने उथल-पुथल मचा दी। मैं लखनऊ में भुगत चुका था कि तलाशी में काफ़ी देर लगेगी। अतएव मैंने डिप्टी-सुपरिंटेंडेंट को पं० कृष्णकांतजी का पत्र दिखाया, और कहा कि मैं एक तार इनके नाम लिखकर देता हूँ, आप अपने किसी सिपाही से इसे भिजवा दीजिए। किंतु उसने भलमनसाहत के साथ यह कहकर इनकार कर दिया कि आप हमारे हवाले हैं, बिना ख़ाना-तलाशी ख़त्म हुए हम ऐसी किसी बात की न तो इजाज़त देंगे, न उसमें सहयोग ही। सुबह ५½ से शाम के तीन बज गए, तब पीछा छूटा। नहा-धोकर थकान दूर की, भोजन किया, पालीवालजी को तलाशी का सब माजरा सुनाया, और पंडितजी को तार देकर तब रात की गाड़ी से घर रवाना हुआ। पं० कृष्णकांतजी बड़े ज़िंदा-दिल थे। प्रयाग पहुँचकर जब मैंने उनसे सारी घटना कही, और दो दिन देर से पहुँचने का कारण बतलाया, तो ख़ूब हँसे।

मैं 'अभ्युदय' में जाकर ठहरा, और पं० कृष्णकांत-जीवाला हिस्सा मेरे रहने के लिये खोल दिया गया। प्रातःकाल नहा-धोकर निश्चित भी न हो पाया था कि पंडितजी के नौकर ने नाश्ता लाकर रख दिया, दोपहर को घर पर भोजन। कई दिन यही क्रम चला। मैं चुपचाप अपने लिये किसी शुद्ध होटल में स्थान ढूँढ़ता रहा, किंतु मुझे क्या मालूम था कि प्रयाग अब तीर्थराज न रहकर 'अल्लाहाबाद' ही बन गया है। जिस होटल में भी पहुँचता, वहीं मांस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का पचड़ा। मैं ब्रजवासी, पूरा धर्म-संकट दिखाई देने लगा। अंततोगत्वा मैं सुंदरलालजी के यहाँ जाकर रहने लगा। पंडितजी इस पर कुछ खिन्न हुए। कहने लगे, यहीं 'अभ्युदय' में डेरा जमाइए। वह स्थान दिखाया, जहाँ पं० लक्ष्मणनारायण गर्दे, और पं० बनारसीदास चतुर्वेदी, 'अभ्युदय' में काम करते समय, भोजन बनाया करते थे। पर श्रीसुंदरलालजी के साहचर्य का लोभ मैं संवरण न कर सका।

'अभ्युदय'-प्रेस और कार्यालय तब जॉन्स्टनगंज में था। हमारा दफ़्तर नीचे था, ऊपर पं० कृष्णकांतजी रहा करते थे। हमारे दफ़्तर के बग़ल में ही, भीतर की ओर, पंडितजी के एकमात्र पुत्र पद्मकांत मालवीय का कमरा था। पद्मकांतजी का प्यार का नाम बच्चा है। बच्चा तब इंटर में पढ़ रहे थे। ऑफ़िस का चार्ज लेते ही एक बात देखकर मुझे बड़ी ख़ुशी हुई। भारत के प्रायः सभी प्रसिद्ध अँगरेज़ी दैनिक वहाँ आते थे। साथ ही पंडितजी के अपने पत्रों में 'इंटरनेशनल रिव्यू', 'एशियाटिक रिव्यू', 'लेबर मंथली', 'नेशन ऐंड ऐथीनियन', 'रिव्यू ऑफ़् रिव्यूज़', 'इंटरनेशन अफ़ेयर्स', 'मॉडर्न रिव्यू', 'इंडियन रिव्यू' आदि विदेशी और देशी पत्र आते थे। या तो 'प्रताप' में गणेशजी की मेज़ पर बढ़िया पत्र देखे थे, या यहाँ। पर इतनी अधिक संख्या में आनेवाले अँगरेज़ी के दैनिक और मासिक मैंने पहले किसी पत्र-कार्यालय में नहीं देखे थे।

सन् १९२९ का वर्ष भारतीय राजनीति में एक अजीब जागृति का वर्ष था। बारदोली-सत्याग्रह की विजय इसी वर्ष हुई थी, जिसके कारण मि० वल्लभभाई पटेल सरदार की उपाधि से विभूषित हुए, और उनके नाम को चारचाँद लगे। भगत-सिंह, दत्त और यतींद्र की बलिदान-गाथाओं का भारतव्यापी प्रचार और उससे उत्पन्न आंदोलन इसी वर्ष हुआ। सन् १९३० और १९३२ में सविनय अवज्ञा की जो ऐतिहासिक लड़ाइयाँ लड़ी गईं, उनका जन्मदाता यही साल है।

बताने की आवश्यकता नहीं कि 'अभ्युदय' ने इस वर्ष का संदेश अग्रसर करने में अग्रणी का काम किया। पं० कृष्णकांतजी स्वयं इन विषयों पर ख़ूब लिखते थे, और इन पर अधिकांश लिखे जाने की उनकी हिदायत थी। प्रायः मुख्य लेख और 'टेढ़ी, सीधी, खरी, मज़ेदार बातें'-शीर्षक से लिखा जानेवाला मनोरंजन वह स्वयं लिखा करते थे। बोलकर लिखाने का उन्हें अधिक अभ्यास था। पर मैं इस संबंध में सदैव उनका अपराधी रहा। उनसे इमला लेने के लिये मैं कभी समय पर उनके पास नहीं पहुँच पाया। अतएव या तो ख़ुद ही लिख डालते थे, या मेरे सहकारी पं० रामकिशोर मालवीय को बुलाकर डिक्टेशन दे दिया करते थे। भगतसिंहवाले लाहौर-षड्यंत्र-केस की ख़ास ख़बरें मँगाने का उन्होंने प्रबंध किया था। कभी ऐसी ख़बरें आ जाती थीं, जिन्हें 'अभ्युदय' में छापना ख़तरे को निमंत्रण देना होता। उस दिन पंडितजी बड़े खिन्न दिखलाई पड़े, जिस दिन सरे-अदालत अभियुक्तों के पुलिस द्वारा पीटे जाने की ख़बर आई, और यह ख़बर आई कि उस अत्याचार को देखकर हाईकोर्ट के एक जज मुँह फेरकर बैठ गए। उस दिन पंडितजी ने भोजन नहीं किया। उनकी राष्ट्रीय भावना इस कोटि की थी। मर्दानगी और बलिदान के वह मुक्त प्रशंसक थे। पिछले कुंभ में, अमावस्या के महास्नान के दिन, संगम पर, जब मैंने और मेरे एक महाराष्ट्र मित्र ने स्त्रियों के फ़ोटो खींचते हुए एक गोरे को पकड़ा, और पीटा, और उसे बड़े मालवीयजी के कैंप में ले जाकर उनके सामने पेश किया, तो महामना मालवीयजी ने जो कुछ कहा, वह यहाँ लिखने की बात नहीं। मालवीयजी वहाँ कल्पवास में थे, और उनका एक मास का व्रत चल रहा था। वह चौकी पर लेटे थे,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और बाबू पुरुषोत्तमदास टंडन, पं० कृष्णकांत मालवीय आदि अनेक पुरुष उनके इर्द-गिर्द बैठे थे। दूसरे दिन जब एक परामर्श के लिये मैं पं० कृष्णकांतजी के पास गया, तो उन्होंने विशेष रूप से मुझसे कुंभी की इस घटना को 'अभ्युदय' में छापने को कहा। हुआ यह कि फिर हम लोगों ने संगम पर पूरी खोज आरंभ कर दी, और उसके बाद कई गोरों और भारतीयों को इस नापाक हरकत में पकड़ा।

सन् १९३० के आरंभ में, नमक-सत्याग्रह छिड़ते ही, 'अभ्युदय' दैनिक हो गया, और जब गवर्नमेंट ने आर्डिनेंस पर आर्डिनेंस निकालने शुरू किए, और अख़बारों के गलाघोटू आर्डिनेंस के विरोध-स्वरूप जब कांग्रेस की वर्किंग कमेटी ने राष्ट्रीय पत्रों के प्रकाशन स्थगित किए जाने की आज्ञा निकाली, तो 'अभ्युदय' के दोनो संस्करण स्थगित कर दिए गए। सबके साथ ही इनका पुनः प्रकाशन प्रारंभ हुआ।

पं० पद्मकांत मालवीय का ज़िक्र यहाँ किए बिना प्रसंग पूर्ण नहीं होता। वह भी योग्य पिता के योग्य पुत्र हैं। पं० कृष्णकांतजी के सभी गुण मानो उन्हें विरासत में मिले हैं। हिंदी के वह उच्च कोटि के कवि हैं। इतना ही नहीं, वह योग्य, संगठनशील राष्ट्रीय कार्यकर्ता भी हैं। सन् १९३० में प्रयाग के मॉडर्न हाईस्कूल पर उन्होंने जो मोर्चा लगाया था, वह स्थानीय राष्ट्रीय आंदोलन का ख़ास चीज़ है। उसी में उन्हें जेल जाना पड़ा, और, जेल से लौटने पर कॉलेज से भी निकलना पड़ा, क्योंकि यह सरक्युलर जारी कर दिया गया था कि पद्मकांत मालवीय को किसी कॉलेज में भरती न किया जाय। बाप-बेटे दोनो जेल गए, पर 'अभ्युदय' का काम बराबर चलता रहा। पद्मकांतजी इधर भी भारत-रक्षा-नियमों की धारा १२६ के अधीन नज़रबंद रहे हैं। पिता की बीमारी और मृत्यु के अवसर पर कुछ समय के लिये पैरोल पर छूटे।

बच्चा (पं० पद्मकांत मालवीय) अपने कॉलेज-जीवन से ही राजनीति में अमली भाग लेने लगे थे। कविता लिखना तो इन्होंने स्कूल से ही आरंभ कर दिया है। उन दिनों से ही बच्चा की लीडर-संपादक डॉक्टर सर सी० वाई० चिंतामणि के पुत्र, मि० सी० बालकृष्ण राव (अब आई० सी० एस्०, सेक्रेटरी यू० पी०-सरकार) से गहरी काव्य-मैत्री थी। बालकृष्णरावजी तब बराबर पद्मकांतजी के पास आते-जाते थे। अपने विद्यार्थिजीवन से ही वह अद्भुत, प्रतिभा-संपन्न रहे हैं। प्रयागस्थ सुकवि-समाज का मैं मंत्री था, और अपने समाज की ओर से अक्सर कवि-सम्मेलन 'अभ्युदय'-कार्यालय में हुआ करते थे—अच्छे, बड़े प्रतिनिधिक सम्मेलन, जिनमें प्रयाग के प्रायः सभी प्रतिष्ठित कविगण होते ही थे, कानपुर, फ़ैज़ाबाद, प्रतापगढ़, लखनऊ तक से काव्य-मनीषी मनोयोग देने आया करते थे। श्रीबालकृष्ण रावजी अपने युग के सबसे छोटी अवस्था के कवि थे। किंतु उनकी काव्य-प्रतिभा देखकर दंग रह जाना पड़ता था। ये सब सम्मेलन बच्चा के शौक़ की चीज़ें थीं। पं० कृष्णकांतजी इनमें कभी भाग न लेते थे, किंतु इन सबमें ख़र्च उन्हीं का होता था।

सन् १९३० में, पं० कृष्णकांतजी के जेल चले जाने पर, 'अभ्युदय' के दैनिक और साप्ताहिक संस्करणों के संपादन का पूर्ण दायित्व इन पंक्तियों के लेखक पर आ पड़ा। पंडितजी के जेल जाने से पूर्व ही खरी नीति के कारण 'अभ्युदय' से ज़मानत माँगी गई, जो जमा कर दी गई। पंडितजी बड़े उदार और शंका-रहित व्यक्ति थे। अपने सहयोगियों का पूर्ण विश्वास करते। संपादकीय नोट्स मैं लिखा करता था। अपने पहुँचने के आरंभिक काल में मैं नोट्स लिखकर, उनकी इसलाह के लिये, उनके सामने रख दिया करता था, किंतु उन्होंने मुझे सदैव उत्साहित किया। मुख्य लेख के संबंध में भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्होंने बड़ी चिंता नहीं की। अपने सहकारियों का भरोसा करते थे। उन्होंने यह कभी प्रकट नहीं किया कि सब कुछ जानने और मुख्य लेख लिखने के वही एकमात्र अधिकारी हैं। इस संबंध में अपने सहायकों को प्रोत्साहित और प्रबोधित करने में मानो उन्हें आनंद अनुभव होता था।

जहाँ वह गंभीर, शांत और स्नेह-पूर्ण वृत्ति के व्यक्ति थे, वहाँ सरल, सहृदय और सहज विश्वासी भी, ऐसे कि किसी की भी सहायता को तत्काल उद्यत हो जाते। दो-चार ऐसे अवसर मैंने स्वयं देखे। एकाध बार उन्हें ऐसा करते समय आत्म-सम्मान का भी ह्रास करना पड़ा, पर उन्होंने इसकी चिंता नहीं की। एक मित्र ने अपने दुःख का रोना आकर रोया। अपनी ज़मानत पर उन्हें दो हज़ार रुपया क़र्ज़ दिला दिया, और वह रुपया पंडितजी को भुगतना पड़ा। लेकिन ऐसी बातों का औरों से रोना कैसा, ज़िक्र तक नहीं आने दिया। एक दिन एक तुर्क हमारे ऑफ़िस में आ गया, और सीधा ऊपर, पंडितजी के पास, चला गया। वह ख़ालिस तुर्की के सिवा और कोई भाषा बोलना न जानता था। पंडितजी की जेब में उस वक्त कुछ न था, अतएव उन्होंने उस तुर्क को मेरे पास भिजवा दिया, और कहला भेजा, ऑफ़िस से कुछ दिलवा दो। मैंने १) दिला दिया। जब पंडितजी को पता चला, तो कहने लगे, २) दिला देने थे।

(आगामी संख्या में समाप्य)

पि० वेंकटाचल पंडित की आयुर्वेदीय लोकामयहर कस्तूर-गोलियाँ

ये गोलियाँ बहुमूल्य पदार्थों से—जैसे सोना, चाँदी, नेपाली कस्तूरी, मूँगा आदि से—बनाई गई हैं। इनका अलग-अलग या २ से ४ तक पान में खाने से हाज़मा बढ़ता है। हर प्रकार का बुख़ार दूर होता है। जल-वायु और भोजन के परिवर्तन का असर बराबर होता है, रक्त साफ़ होता है, तथा उसकी चाल अबाध्य होती है, खाँसी, सरदी, जुकाम, पेट का दर्द, क़ब्ज़ियत, कमर और छाती का दर्द, कमज़ोरी, जूड़ी-बुख़ार और प्लेग को नाश करती हैं। जिस स्थान में छूत की बीमारियाँ फैली हों, वहाँ नित्य पान के साथ ३-४ गोलियाँ दीजिए। बच्चों के रोग में जादू के समान असर दिखाएँगी। दाम ३०० गोलियों की बोतल का ।), डाक-महसूल अलग। ६ बोतलों का १॥)

मिलने का पता—

१२ बोतल का मूल्य डाक-व्यय-सहित २॥।-)
२५ ,, ,, ,, ५=)

श्रीसीताराघव वैद्यशाला, मैसूर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दांपत्य जीवन का सच्चा सुख!

आजकल विज्ञापन की अधिकता के कारण दुनियावाले सच्चे विज्ञापन भी घृणा की दृष्टि से देखते हैं, और न उस पर विश्वास ही करते हैं। किंतु सोचने की बात है कि यदि इश्तहार न किया जाय, तो पब्लिक तक अपनी आवाज़ किस प्रकार पहुँचाई जा सकती है। आज हम उन्हीं भाइयों को पूरा विश्वास दिलाते हैं कि मेरा उद्देश्य धन कमाना ही नहीं, बल्कि सेवा और सचाई का विश्वास दिलाकर प्रत्येक मनुष्य-मात्र के हृदय में उच्च स्थान पाने की आशा रखता है। यही कारण है, आज हमारी ओषधियाँ भारतवर्ष में ही नहीं, देश-विदेशों, वैद्य-सम्मेलनों, कांग्रेस के लीडरों, बड़े-बड़े डॉक्टर-हकीमों, वैद्यों, सेठ-साहूकारों, रईसों तथा सरकारी ऑफ़िसरों, एवं समाचार-पत्रों ने हमारी दवाइयों के उत्तमोत्तम होने के प्रमाण-पत्र दिए हैं। यदि फिर भी आपने हमारे इश्तहार पर विश्वास न कर लाभ न उठाया, तो आपकी बदक़िस्मती है। भाइयो! हमारा यह इश्तहार नहीं, बल्कि आबे-हयात का प्याला है।

प्रायः देखा गया है, पुरुषों को शीघ्रपात की शिकायत हो जाती है, और वे इसकी तनिक भी परवा नहीं करते। परिणाम यह होता है कि उनकी स्त्रियों को भी अनेक प्रकार के शारीरिक और मानसिक रोग अवश्य पैदा हो जाते हैं। यह ईश्वरीय प्राकृतिक नियम है, इस नियम के अनुसार रति-क्रिया में जो पुरुष अपनी स्त्री को प्रसन्न तथा संतुष्ट नहीं कर सकता, वह अपनी स्त्री को अवश्य रोगी बना देता है। बिना रोग दूर किए स्त्री-प्रसंग करना महान् अज्ञानता है, क्योंकि अधूरे संभोग से प्रदर, मासिक धर्म की ख़राबी तथा दिल की धड़कन, हिस्टीरिया, उन्माद, कमर-पीड़ा, सर-पीड़ा आदि एक-न-एक रोग अवश्य ही उत्पन्न हो जाते हैं, और इधर शीघ्रपात के कारण मनुष्य चिंतित और उदास रहता है। हमने शीघ्रपात की शिकायतवाले पुरुषों की स्त्रियों की रोगी संख्या की अधिकता देखकर तथा पुरुषों के ज़बानी उनकी हालत सुनकर अथवा शीघ्रपातवाले पुरुषों की चिट्ठियों की अधिक संख्या देखकर स्त्री-पुरुष के उपकारार्थ आयुर्वेद का मथन कर यह 'जीवन-प्रभा-टॉनिक' ओषधि तैयार की है। इसे तैयार कर लेना साधारण बात नहीं। मकरध्वज, स्वर्ण-वंग, कस्तूरी, प्रबाल आदि बहुमूल्य ओषधियों तथा वन, उपवन, पर्वतों, तिब्बती जड़ी-बूटियाँ, जो बड़ी कठिनता से प्राप्त होती हैं, डालकर बड़े परिश्रम से तैयार किया जाता है। इस 'जीवन-प्रभा-टॉनिक' के सेवन करनेवाले पुरुषों से उनकी कामवती स्त्रियों को संतुष्टता होती है। जो पुरुष निर्बल, शक्ति-हीन हैं, कभी भी अपनी स्त्री को प्रसन्न नहीं कर सकते, वे सर्व-सुख होते हुए भी दांपत्य के सच्चे सुखों से सर्वथा वंचित रहते हैं, इधर उनकी स्त्रियाँ उन्हें दिन-रात ताने देती हैं, और अपने स्वामी से हताश हो जाती हैं। उन लोगों से हमारा अनुरोध है कि इस 'जीवन-प्रभा-टॉनिक' को ४० दिन अवश्य सेवन कर संतान का सुख प्राप्त करें। इसको नित्यप्रति सेवन करने से कामदेव की वृद्धि होकर जठराग्नि प्रदीप होती है, बल की वृद्धि होती है, और कुसमय में आए हुए बुढ़ापे को दूर करता है, स्त्री को प्रसन्न और संतुष्ट करता है, दांपत्य जीवन सुखमय व्यतीत होता है। यह केवल क्षणिक आनंद के लिये नहीं, वरन् शीघ्रपात, स्वप्नदोष, प्रमेह, डायबिटीज़ (मधुमेह) पेशाब के साथ आगे-पीछे धातु का गिरना, नपुंसकता, खाँसी, श्वाँस, क्षय, वातरक्त आदि केवल ४० दिन के सेवन से ही समूल नष्ट हो जाते हैं। यह जिस प्रकार पुरुषों के लिये लाभप्रद है, उसी प्रकार स्त्रियों के भी सब प्रकार के प्रदर, गर्भाशय के दोष, गर्भपात से बचाना, निर्बलता, श्वाँस, खाँसी, रज की क्षीणता, अरुचि, सुस्ती आदि दूर कर हृष्ट-पुष्ट, तेजस्वी, सुंदर संतान उत्पन्न होती है। शरीर की निर्बलता, वीर्य-क्षीणता, रगों की कमज़ोरी के लिये कुछ अधिक दिन सेवन कर आयुर्वेद-रसायन का चमत्कार देखें। विशेषता यह है कि यह हर मौसम में एकसाँ लाभ करता है।

क़ीमत फ़ी डिब्बा ४० दिन की ख़ूराक का ५), डाक-ख़र्च अलग

मँगाने का पता—रूपविलास-कंपनी, नं० ३, धनकुट्टी, कानपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी-संसार की एक अलौकिक भेंट

क्या आप

भा र त का प्राचीन इतिहास
भा र त की प्राचीन सभ्यता
भा र त का प्राचीन भ्रातृप्रेम
भारत-सपूतों का पितृआज्ञा-पालन
भा र त का प्राचीन विज्ञान
भा र त की प्राचीन पवित्रता
भारत की ललनाओं का अपूर्व त्याग
प्राचीन भारत का स्वामी-सेवक-भाव

और

तो हमारी २० खंडों में प्रकाशित होनेवाली तुलसी-कृत रा मा य ण सटीक और सचित्र पढ़िए ?

पाप पर पुण्य की विजय, असत्य पर सत्य की विजय, पापी के सर्वनाश की कथा नहीं जानना चाहते ? **क्यों नहीं ?**

* बीस खंडों में *

यह रामायण २० खंडों में प्रकाशित होगी। प्रत्येकखंड में ८० पृष्ठ, १५-२० सादे और ६-७ रंगीन चित्र। साइज़ सुधा का-सा भव्य। मूल्य प्रतिखंड १॥)

ग्राहकों को विशेष सुविधा

अभी से सब खंडों के लिये ग्राहक बननेवालों से १) लिया जायगा, और ५) अभी भेजकर प्रथम चार खंड के लिये स्थायी ग्राहक बननेवालों से केवल ५) अर्थात् १।) प्रतिखंड लिया जायगा। प्रत्येक खंड का अलग-अलग मूल्य १॥) है।

दो खंड

प्रकाशित हो गए !
तीरसा प्रेस में है !!

कृपा कर ग्राहक बनें, और अपने इष्ट-मित्रों से भी अनुरोध करें। इस सहायता से हमारी एक योजना पूर्ण हो जायगी, और आपके हाथों में एक अनुपम ग्रंथ-रत्न आ जायगा।

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदेश-पत्र

संचालक गंगा-ग्रंथागार

(रामायण-विभाग)

३६, लाटूश रोड, लखनऊ

ग्राहक नं०..... ता०.....

प्रिय महाशय,

मैं आपकी २० खंडों में प्रकाशित होनेवाली सचित्र रामायण का, जिसका मूल्य ३०) होगा, स्थायी ग्राहक होना चाहता हूँ। कृपया मेरा नाम ग्राहकों में लिख लीजिएगा।

(१) रियायती मूल्य २०) $\frac{\text{मनीऑर्डर से भेजता हूँ}}{\text{प्रथम अंक वी० पी० भेजकर ले लें।}}$

(२) प्रथम ४ अंक के ५) $\frac{\text{मनीऑर्डर से भेजता हूँ}}{\text{पहला अंक वी० पी० भेजकर ले लें।}}$ और आगे के अंक बुक-पोस्ट से, निकलते ही, भेजते रहें।

(३) १।) का प्रत्येक अंक निकलते ही डाक-व्यय-सहित वी० पी० द्वारा भेज दें *।

भवदीय—

[हस्ताक्षर]

नाम और पता—

* इन तीनों शर्तों में जो मंजूर हो, उसे ही रखिए, शेष काट दें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वर-विज्ञान-प्रवेशिका

(स्वरोदय-विज्ञान)

स्वरोदय-विज्ञान द्वारा अनेक रोग नष्ट करने का शुभाशुभ, हानि-लाभ इत्यादि जानने का आश्चर्य-युक्त प्रामाणिक और सरल उपाय इस पुस्तक में बड़ी सरलता और अनुभव-पूर्ण विधि द्वारा बतलाया गया है।

लेखक, सरस्वती सहोदर

प्रकाशक—श्रीऋषी मंडल-कार्यालय

अमरावती (बरार)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमला

[महिलाओं की अपनी मासिक पत्रिका]

संपादक—श्रीबाबूराव विष्णु पराड़कर

सहायक—श्रीशांतिप्रिय द्विवेदी

मैनेजर 'कमला',

गायघाट, बनारस

नारी जागरण का महान् संदेश सुनानेवाली हिंदी की प्रमुख सर्वोत्तम मासिक पत्रिका 'कमला' के प्रकाशन से हिंदी के पत्र-पत्रिकाओं की दुनिया में एक अजीब तहलका मच गया है। हरएक उसकी गंभीरता और उपयोगिता का क़ायल हो रहा है। यदि आपको विश्वास न हो, तो एक प्रति मँगाकर देख लें। नमूने के लिये ।=) के टिकट भेजिए। वार्षिक मूल्य ४॥) रक्खा गया है। आज ही चंदा भेजिए, या नमूना मँगाइये।

जन्म-निरोध BIRTH CONTROL

अर्थात् स्त्री के गर्भवती होने से बचने के उपाय और साधन

लेखक—ए० ए० खान

उपक्रमणिका-लेखक—[Lient-Colonel A. N. Bose, M. B. E. M.D. (Laus.) F. R. C. P. (Ed.) D. T. M. H. (Camb.), M. R. C. P. (Lond.) I. M. S.]

PRINCE OF WALES MEDICAL COLLEGE, PATNA.

(१) चित्र-संख्या ११२, (२) पृष्ठ-संख्या ६०० मूल्य ४), कमीशन काटकर ३), डाक खर्च ॥-)

अधिक जानने के लिये भार्गव-पुस्तकालय, गायघाट, बनारस से पत्र-व्यवहार कीजिए।

भारतीय स्त्रियों और कन्याओं के लिए ! भोजन और वस्त्रों से भी आवश्यक !!

विवाहोपलक्ष्य में भेंट देने की महान् वस्तु क्या ? वही

स्त्री-जगत् में हलचल मचानेवाली पुस्तक

क्या आप किसी के पिता और पति हैं ?

यदि हाँ, तो

भाभी के पत्र

पढ़िए और अपनी स्त्री तथा कन्याओं को पढ़ाइए,

भूमिका—लेखक—कृष्णदेवप्रसाद गौड़ 'बेढब' बनारसी

लेखक—श्रीव्यथित हृदय मूल्य सजिल्द १।)

पता—भार्गव-पुस्तकालय, गायघाट, ब्रांच चौक, कचौड़ी-गली, बनारस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संसार-प्रसिद्ध

चौखंबा-संस्कृत-पुस्तकालय, बनारस सिटी द्वारा प्रकाशित

आयुर्वेद के सुंदर परीक्षोपयोगी सस्ते संस्करण !

१. अभिनव-बूटी-दर्पण (सचित्र)—इस ग्रंथ में सहज में पहचानने-योग्य जड़ी-बूटियों के रंगीन चित्र नंबर के सिलसिले से वर्णन-सहित छपे हैं, तथा प्रत्येक रोगों पर बूटियों के प्रयोग-नंबर भी दिए गए हैं, जिनसे साधारण जन भी किस रोग पर किन-किन बूटियों का कैसे-कैसे प्रयोग हो सकता है, ज्ञात कर प्रयोग द्वारा लाभ उठा सकते हैं। मूल्य ६)

२. अष्टांग-हृदय—भागीरथी बृहत् टिप्पणी-सहित। मूल्य १॥।)

३. आयुर्वेदीय परिभाषा—अभिनव-प्रकाशिका, हिंदी-टीका-सहित। मूल्य ॥)

४. काकचंडीश्वर कल्पतंत्र— मूल्य ॥)

५. गूलर-गुण-विकाश—भाषा-टीका-सहित। मूल्य ॥)

६. चरक-संहिता—भागीरथी बृहत् टिप्पणी-सहित। मूल्य ३)

७. चक्रदत्त—भावार्थ संदीपिनी विस्तृत भाषा-टीका-टिप्पणी-परिशिष्ट-सहित। मूल्य ४)

८. नाड़ी-विज्ञान—विबोधिनी भाषा-टीका-सहित। मूल्य =)

९. नाड़ी-परीक्षा—वैद्यप्रिया भाषा-टीका-सहित। मूल्य =)

१०. निघंटु-सार-संग्रह—हिंदी-भाषा-टीका-सहित। मूल्य १)

११. भावप्रकाश—नवीन वैज्ञानिक विधोतिनी भाषा-टीका-सहित। पूर्वार्द्ध मूल्य ४), उत्तरार्द्ध मूल्य ६), संपूर्ण ग्रंथ मूल्य ९)

१२. भावप्रकाश (मूल)—संपूर्ण मूल्य ४)

१३. भावप्रकाश(पूर्वार्द्ध)—विवरण-सहित मू०२।)

१४. भावप्रकाश (उत्तरार्द्ध मूल)— मूल्य २॥)

१५. भावप्रकाश निघंटु—विवरण-सहित। मूल्य १।)

१६. भावप्रकाश निघंटु—आमयिक प्रयोगादि बृहत् विमर्श-सहित। मूल्य २)

१७. योग-रत्नाकर (गुटका)—संस्करण। मूल्य २॥)

१८. रसायन-खंड— मूल्य ॥)

१९. रसेंद्र-सार-संग्रह (सचित्र)—बालबोधिनी-भागीरथी बृहत् टिप्पणी-सहित। मूल्य १)

२०. रसेंद्र-सार-संग्रह (सचित्र)—नवीन वैज्ञानिक गूढ़ार्थ संदीपिनी संस्कृत-टीका-सहित। मूल्य ३)

२१. रसेंद्र-सार-संग्रह (सचित्र)—नवीन वैज्ञानिक रसचंद्रिका भाषा-टीका-सहित। मूल्य ३)

२२. रसार्णवनामरसतंत्रम्—बृहद्भागीरथी-टिप्पणी-सहित। मूल्य २)

२३. रसाध्याय—संस्कृति-हिंदी-टीका-सहित। मूल्य ॥=)

२४. रसरत्नसमुच्चय—मूल टिप्पणी-सहित। मूल्य १॥)

२५. रस रत्न समुच्चय—नवीन वैज्ञानिक सुरत्नो-ज्वला विस्तृत भाषा-टीका-सहित। मूल्य ५)

२६. वैद्य-जीवन—अभिनव-सुधा भाषा-टीका-सहित। मूल्य ॥=)

२७. वैद्यक-परिभाषा-प्रदीप—नवीन प्रदीपिका भाषा-टीका-सहित। मूल्य ॥=)

२८. शार्ङ्गधर-संहिता—टिप्पणी-सहित। मूल्य १)

२९. सुश्रुत-संहिता—नवीन वैज्ञानिक सुधा टीका-सर्गरी के अनेक यंत्र से सुशोभित। मूल्य ४॥)

ये सभी ग्रंथ आयुर्वेद-कॉलेज, आयुर्वेद-विद्यापीठ, साहित्य-सम्मेलन आदि परीक्षाओं में पाठ्य निर्द्धारित हैं!

आयुर्वेद-ग्रंथों के अलावा हमारे यहाँ और भी सभी शास्त्रों के लगभग ५०० ग्रंथ छपे हैं। इसके अलावा भारत तथा विदेश में छपे ग्रंथ भी बहुत सहूलियत के साथ प्राप्त होते हैं। सूचीपत्र मुफ़्त। निवेदन प्रार्थनीय है।

पत्र-व्यवहार का पता—

जयकृष्णदास हरिदास गुप्त

चौखंबा-संस्कृत-पुस्तकालय-विद्या-विलास-प्रेस

गोपाल टेंपुल पो०-बॉक्स नं० ८, बनारस सिटी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पढ़िए और हँसिए

हिंदी का एकमात्र

हास्य-रस-प्रधान सचित्र मासिक

नोक-झोंक

एक प्रति का =)] इसे पढ़कर [वार्षिक मूल्य १॥)

आप फड़फड़ा उठेंगे

जिसने देखा, उसी ने तारीफ़ की।
नमूना मुफ़्त नहीं भेजा जाता,
नमूने के लिये =) के टिकट
आना जरूरी है।

अपने एजेंट से लीजिए
या
व्हीलर के स्टाल से खरीदिए
या
हमसे मँगाइए—

नोक-झोंक - कार्यालय

आगरा

श्रीबालगोविंदप्रसाद श्रीवास्तव-लिखित

रेल की राह

कहानी-संग्रह

जीवन की हल्की मुस्कान के साथ आजकल के पढ़े-लिखे युवक - युवतियों से संबंधित विचित्र घटनाओं के मनोवैज्ञानिक चित्र इस पुस्तक में दिए गए हैं।

हिंदी के सुप्रसिद्ध लेखक
श्रीबालगोविंदप्रसाद श्रीवास्तव की
अनुपम रचना

शीर्षक
रेल की राह
कहानी लेखक
आधुनिका
जान की आफ़त
ससुराल - यात्रा
अर्धांगिनी
रिहर्सल
पत्नी-मिलन
भाभी की शरारत
विवाह का विज्ञापन
सिंदूर की होली इत्यादि - इत्यादि

सुंदर छपाई। मूल्य ॥)

धड़ाधड़ बिक रही है।

मैनेजर प्रकाश ब्रदर्स, आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूपविलास-कंपनी, कानपुर की तैयार की हुई जगत्-प्रसिद्ध अपूर्व गुणशाली कुछ ओषधियाँ

रूपविलास [रजिस्टर्ड]

इसके लगाने से चेचक के काले-काले दाग़, मुहाँसे, झाँईं, फुंसी, ख़ुश्की, बदरौनक़ी, झुर्रियाँ वग़ैरा जल्द आराम होती हैं। थोड़े ही रोज़ के लगाने से मलीन मुख चंद्रमा के समान चमकदार होकर गुलाबी छटा चेहरे पर दमकने लगती है। अगर काला बदन बदसूरतवाला मनुष्य लगावे, तो ख़ूबसूरत हो, चेहरा गुलाब के फूल-सा चमकने लगे और काली बदसूरतवाली औरत लगावे, तो इंद्र की परी के माफ़िक़ ख़ूबसूरती पावे। अगर आप अपना चेहरा ख़ूबसूरत बनाना चाहते हों, तो इस रूपविलासके ख़रीदने में देरी न कीजिए। यह स्त्री-पुरुष, दोनो का दिल ख़ुश करनेवाला है। इसकी ख़ुशबू भी इतनी प्यारी है कि तबियत को मस्त करती है। क़ीमत फ़ी डिब्बा १॥=), डाक-ख़र्च माफ़, मनीआर्डर-फ़ीस =)

कमज़ोर बच्चों को ताक़तवर बनानेवाला बालको [रजिस्टर्ड]

छोटे बच्चों को ताक़तवर व मज़बूत बनानेवाली और कोई दवा नहीं है। छोटे बच्चों की खाँसी, संग्रहणी, कमज़ोरी से पैदा होनेवाले मर्ज़ बहुत जल्द सेहत होते हैं। बच्चों का बदन भरकर वह वज़न में बढ़ता है, अन्न का हाज़मा अच्छी तरह से होता है। 'बालको' की ज़्यादा ख़ूराक देने से बड़ी उम्र के स्त्री-पुरुषों की खाँसी, कफ, तपेदिक़, सूबड़-रोग, स्त्री के दूध न आना वग़ैरा। रोगों पर मुफ़ीद है। बच्चों व मर्दों का खाँसी-रोग ज़्यादा दिनों तक ठहरने से फेफड़ा कमज़ोर हो जाता है, इसके सेवन से फेफड़ा ठीक हो जाता है। 'बालको' निहायत फ़ायदेमंद दवाहै। मू० फ़ी शी० ॥), डाक-ख़र्च ॥=), ३ शीशी का डा० सहित २॥=)

फ़क़ीरी सुरमा [रजिस्टर्ड]

बदन में आँख अमूल्य रत्न है। इसकी तरफ़ लोगों का ज़रा भी ध्यान नहीं रहता। सुरमा लगाकर आँखों की थकावट दूर करने की बड़ी भारी ज़रूरत है। ऐसा न करने से धुँधलापन, खुजलाहट, नज़ला, पानी भर आना, लाली रहना, कोए कटना, बरौनी झड़ना, निगाह कमज़ोर, रोशनी में फ़र्क़ मालूम होना, कम उम्र में चश्मा लगाना, कीचड़ निकलना, आँख दुखना आदि बीमारियाँ पैदा होती हैं, और बहुत हैरान करती हैं। हमारा फ़क़ीरी सुरमा लगाने से आँखों की कुल बीमारियाँ आराम होकर नई रोशनी पैदा होती है। बराबर लगाने से आँखों में कोई बीमारी नहीं होती। यह सुरमा बहुत-सी जंगली जड़ी-बूटियों के अर्क़ में शुद्ध कर असली गुलाब और मोती, ममीरा, भीमसेनी कपूर आदि उत्तम गुणदायक ओषधियाँ डालकर कई महीनों में तैयार किया गया है। एक सलाई लगाने से आँखों में जान डाल देता है। ठंडक लाता और आँखों में नई रोशनी पैदा करता है। क़ीमत फ़ी शीशी ॥), ३ शीशी का १।=), ६ शीशी का २॥), दर्जन का ४॥) डाक-ख़र्च अलग।

नारी संजीवन

प्रदर-रोग स्त्रियों का भयंकर शत्रु है। शर्म के मारे बेचारी रात-दिन घुलती रहती हैं। बस, इन्हीं बातों को देखकर मैंने कठिन परिश्रम से यह नारी संजीवन-नामक अपूर्व शक्ति प्रदान करनेवाली दवा का आविष्कार किया है। अनेकों स्त्रियाँ इस दवा से आनंद प्राप्त कर चुकी हैं। लाल, काला, धुमैला, पानी-सा रज निकला करता है। महीना ठीक समय पर न होने से कमर, रीढ़ और सिर में दर्द, हृदय में जलन, मन मलीन, उठने-बैठने में थकावट, भूख कम लगना, बदन दुबला और कमज़ोरी पैदा हो जाती है; जिससे घर के कामों में चित्त नहीं लगता। दूसरे, संतान नहीं होती, और हुई भी, तो बिलकुल दुर्बल, कमज़ोर और थोड़े दिन ज़िंदा रहती है, जिससे बड़ा भारी नुक़सान पहुचता है। ऐसी हालत में 'नारी संजीवन' खाने से कुछ बीमारियाँ आराम होकर बदन में बख़ूबी ताक़त आ जाती है। दूसरे, संतान बलवान् और दीर्घजीवी पैदा होती है। क़ीमत २॥), म० फ़ीस =)

लक्ष्मणधारा [रजिस्टर्ड]

इसकी दो-तीन बूँदें खाने से अजीर्ण, बदहज़मी, पेट फूलना, दर्द करना, पाख़ाना साफ़ न होना, वायु-गोला, शूल, ऐंठन, अपच, पेचिश, मरोड़, आँव, ख़ून मिला दस्त होना, हैज़े की बीमारी, गर्मी के पतले दस्त, जी मचलाना, उलटी होना, पेट में गड़गड़ाहट, भारी रहना, खट्टी डकार आना, वायु साफ़ न निकलना, यह कुल बीमारियाँ तुरंत आराम होती हैं। 'लक्ष्मणधारा' अचानक होनेवाली कठिन बीमारियों में जादू का काम करता है। इसे हमेशा पास रखना चाहिए। क़ीमत फ़ी शीशी ॥), तीन का दाम १।=), छ का २॥); डाक-ख़र्च अलग। दर्जन का ४॥), डाक-ख़र्च माफ़।

मँगाने का पता—रूपविलास-कंपनी, नं० ३, धनकुट्टी, कानपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेवाग्राम में कुछ घंटे

[साहित्यरत्न श्रीयुत लक्ष्मीनारायण टंडन 'प्रेमी' एम्० ए०]

इस वर्ष में राष्ट्रीय स्वयंसेवक-संघ के संबंध में नागपुर गया था। वहाँ से मुझे वर्धा-सेवाग्राम जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। २३ मई, १९४१, शुक्रवार को, लगभग ११-५० पर, दोपहर को, मैं वर्धा पहुँचा। २३ मई का महत्त्व-पूर्ण दिवस मेरे जीवन का एक ऐतिहासिक दिवस है। जीवन के उन सार्थक क्षणों का मेरे लिये बहुत अधिक मूल्य है। उसी दिवस का कुछ वर्णन मैं प्रस्तुत लेख में करना चाहता हूँ।

श्रीयुत लक्ष्मीनारायण टंडन 'प्रेमी'
साहित्यरत्न

वर्धा-स्टेशन के निकट ही एक धर्मशाला है, कदाचित् सेठ जमनालाल बज़ाज़ की। वहाँ गए, तो पता चला, कोई कमरा ख़ाली नहीं। मैनेजर साहब ने कहा—"अपना सामान इस खुले कमरे में रख दीजिए—कोई डर नहीं।" महात्मा गांधी के ग्राम के निकट भी शंका! हम लोगों ने सामान रक्खा, और सीधे सेवाग्राम के लिये ताँगा किया। उस धर्मशाला में कदाचित् हिंदू और मुसलमान, दोनो को टिकने की आज्ञा है। किंतु बाहर के कमरे में एक सदासुहागिन को टिके देखकर हृदय में आश्चर्य-मिश्रित ग्लानि उत्पन्न हुई। अस्तु। हम लोग सीधी, पक्की सड़क से ताँगे से चले। ऊपर से आग बरस रही थी, किंतु हृदय और मस्तिष्क उत्साह, शांति और संतोष से परिपूर्ण था। मार्ग का दृश्य मनोरम है। मार्ग के दोनो ओर मैदान हैं। रेल की पटरियों की ओर दूर पर पहाड़ियाँ दिखाई देती हैं। ताँगा बहुत धीरे-धीरे चल रहा था, क्योंकि न-जाने क्यों अश्वराज वेमन से सेवाग्राम की ओर जा रहे थे—वह प्रायः मार्ग में खड़े हो जाते थे। मार और पुचकार का जब कोई असर उन पर न हुआ, तो प्रायः ताँगेवाले को उतरकर स्वयं दौड़ना पड़ा। ऐसा लगता था, मानो अश्वजी अपनी परतंत्रता का विरोध तथा साम्यवाद के आदर्श का पालन करने के लिये ताँगेवाले को दौड़ने को बाध्य कर रहे हों। किंतु हम लोग तो बैठे ही रहे—पैसे जो ख़र्चे थे।

मार्ग में वर्धा-महिलाश्रम की बिल्डिंग दिखाई दी। उसी के एक भाग में अस्पताल है। हम लोग उसे न देख सके, क्योंकि उसे देखने का समय ८ से १० तक प्रातः और २½ से ४½ तक सायंकाल है। इसी में पहले महात्माजी का आश्रम था। कुछ आश्चर्य हुआ कि महात्माजी का आश्रम इतना मामूली, किंतु बाद में याद आया, वह दरिद्र-नारायण जो हैं। लगभग १½ बजे दिन को सेवाग्राम पहुँचे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेवाग्राम के पास पहुँचकर एक वृक्ष के किनारे ताँगा रुका । वृक्ष के नीचे एक व्यक्ति लेटे थे । बाद में हमारे एक मित्र ने उनसे वार्तालाप की, तो पता चला, वह स्यालकोट (पंजाब) के रहनेवाले हैं, नाम निर्मलसिंह है, पंजाबी राजपूत हैं, १७ तारीख़ को महात्माजी के दर्शनार्थ सेवाग्राम आए, जैसे प्रायः नित्य ही दो-चार आया करते हैं । उसी दिन प्रातः-काल घूमते समय महात्माजी से उनसे वार्तालाप हुआ । उक्त सज्जन महात्माजी के साथ घूमने चले गए । महात्माजी ने तीन प्रश्न पूछे—

१. कहाँ से आए ?
२. कब आए ?
३. कैसे आए ?

इन्होंने उत्तर दिया—स्यालकोट से आया । कई दिवस पूर्व प्रातःकाल आया । दर्शनार्थ आया । महात्माजी ने कहा—"दर्शन हो गए, अब जाइए ।" निर्मल-सिंहजी ने कहा—"महाराज, अभी दिल नहीं भरा ।" उन्होंने महात्माजी से पास रहकर कुछ सेवा करने की आज्ञा माँगी, और यहाँ तक क हा — "य दि और कुछ काम न हो, तो अपने घूमने के पूर्व सड़क पर जल छिड़कने की आज्ञा दीजिए ।" महात्माजी ने हँसकर कहा— "हमें गर्द अच्छी मालूम पड़ती है ।"

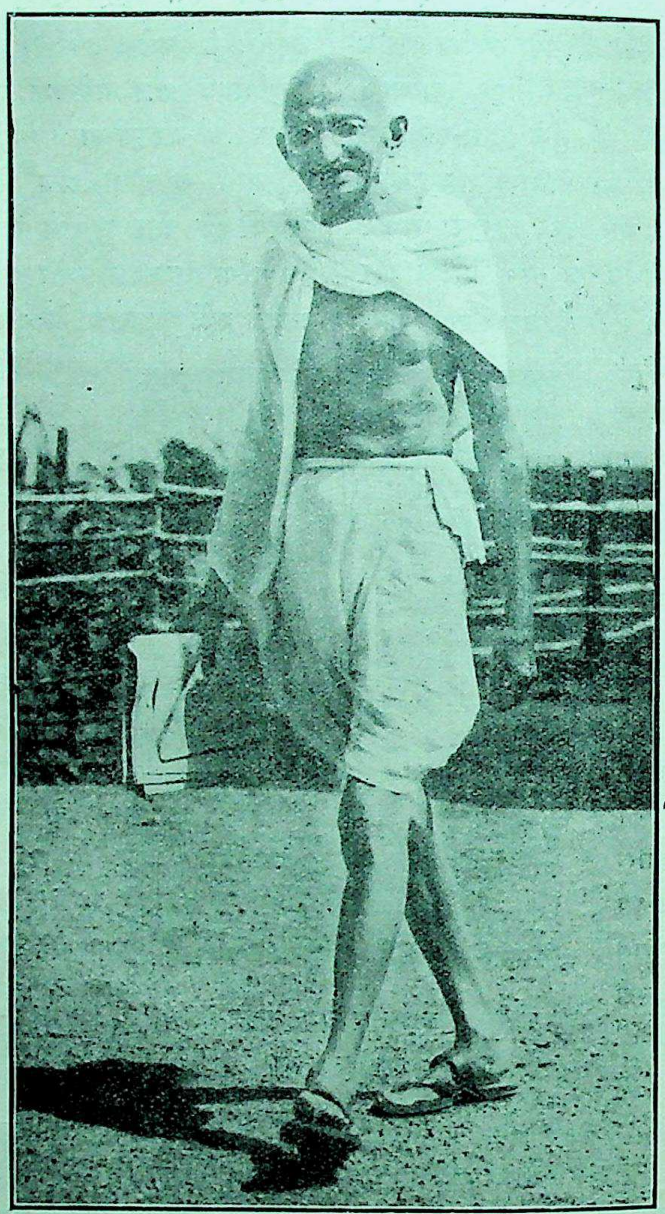

सेवाग्राम के संत

आज प्रातः-काल घूमते समय महात्माजी ने उनसे बहुत बातें कीं, और सलाह दी — "आप अपने देश जाकर 'कांग्रेस और पीपुल-सुसाइटी' में काम करें ।" निर्मलजी के यह कहने पर कि महाराज, जाने को तो जी चाहता ही नहीं, जाएँ कैसे, महात्माजी ने कहा—"मुझे अधिकार नहीं । यदि अधिकार होता, तो तुम्हें सज़ा देता, और कोड़े लगवाता, और दस घंटे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कड़ा काम लेता।" यह महात्माजी की विनोदी प्रकृति का एक साधारण उदाहरण है।

यह सब होते हुए भी उक्त सज्जन अपने हठ पर डटे हुए हैं। जब प्रार्थना की घंटी बजती है, प्रातः और सायं, तब वह प्रार्थना में सम्मिलित हो जाते हैं, और जब महात्माजी प्रातः, सायं घूमने जाते हैं, तो वह उनके साथ घूमने चले जाते हैं। बाक़ी समय वृक्ष के नीचे पड़े रहते हैं, और क्षुधा-निवारणार्थ निकट के ग्राम में चले जाते या जो कुछ संग में है, खाकर निर्वाह करते हैं। हमारे एक मित्र के यह कहने पर कि जहाँ हम लोग बैठे हैं, आप भी चलिए, उन्होंने कहा—"जब तक बापू न कहेंगे, अंदर न जाऊँगा।" उक्त सज्जन, अपनी धुन के पक्के, आश्रम के बाहर, वृक्ष के नीचे दिन-भर पड़े रहे। देखें, कौन अपने हठ में जीतता है। पंजाबी तगड़ा तथा अति विनम्र है। आशा है, जीत उसी की होगी। संभव है, महात्माजी उसे अपनी सेवा में ले लें।

पूज्य बापू

सड़क के किनारे ही सेवाग्राम है। इसके अंदर प्रवेश करते ही हृदय में अभूतपूर्व भावनाएँ उठने लगती हैं। हम लोगों की कल्पना थी कि सेवाग्राम में सुंदर बँगले होंगे। वर्धा-आश्रम की उस बिल्डिंग को देखकर ही, जिसमें पहले महात्माजी रहते थे, और जो पक्की बनी थी, हममें से एक सज्जन ने कहा था—"ऐसी ही साधारण बिल्डिंग में महात्माजी रहते थे!" उसे ही देखकर जब हम लोगों को आश्चर्य हुआ था, तो सेवाग्राम की कुटियों को देखकर अत्यधिक आश्चर्य होना स्वाभाविक ही था। हम लोगों ने समझा था, कम-से-कम ऐसी ही पक्की बिल्डिंग वहाँ होगी। किंतु जैसी हम लोगों की कल्पना थी, उसके बिलकुल विपरीत सेवाग्राम को पाया। पक्की तथा दुमंज़िली इमारतों का यहाँ नाम कहाँ!

ताँगेवाला हम लोगों को महात्माजी की कुटी के समीपस्थ एक और कुटी में ले गया (जहाँ महात्माजी अन्य आश्रम-निवासियों के साथ भोजन करते हैं)। आश्रम में प्रवेश करते ही देखा, वहाँ के दरवाज़े बाँस और चटाई के बने थे। सेवाग्राम की सादगी आदर्श है। कितने सस्ते में ये कुटियाँ बनी होंगी।

पहलेपहल हम लोग एक झोपड़ी में गए। एक नवयुवक सज्जन नंगे बदन बैठे थे। हल्की-सी दाढ़ी थी, चेहरे से ब्रह्मचर्य टपकता था। निकट ही एक नवयुवती बैठी थी। वह तकली कात रहे थे।

उनसे कहा—"महात्माजी के दर्शनार्थ आए हैं।"

उत्तर मिला—"सामने की कुटी में जाइए, वहाँ एक सज्जन हैं, आपको बता देंगे।"

आगे बढ़े। सीख़चेदार कटहरा लगा था। छोटे फाटक भी लगेथे, परंतु सब बाँस और खपच्चियों के। कुटी में एक सज्जन चटाई पर, ऊँचे गद्दे पर दो तकियों के सहारे, लेटे थे। बड़ी सौम्य मूर्ति थी—क्लीन शेव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और सफ़ेद फ्रेम की ऐनक लगाए। आज्ञा मिलने पर हम लोग भीतर गए। उन्होंने निकट पड़ी चटाई पर बैठने का संकेत किया। उनसे हम लोगों ने बहुत-से प्रश्न किए। प्रायः पौन घंटा वहाँ रहे। वह शांति-पूर्वक उत्तर देते रहे। उनकी स्पष्ट-वादिता और सद्व्यवहार से हम लोग बड़े प्रभावित

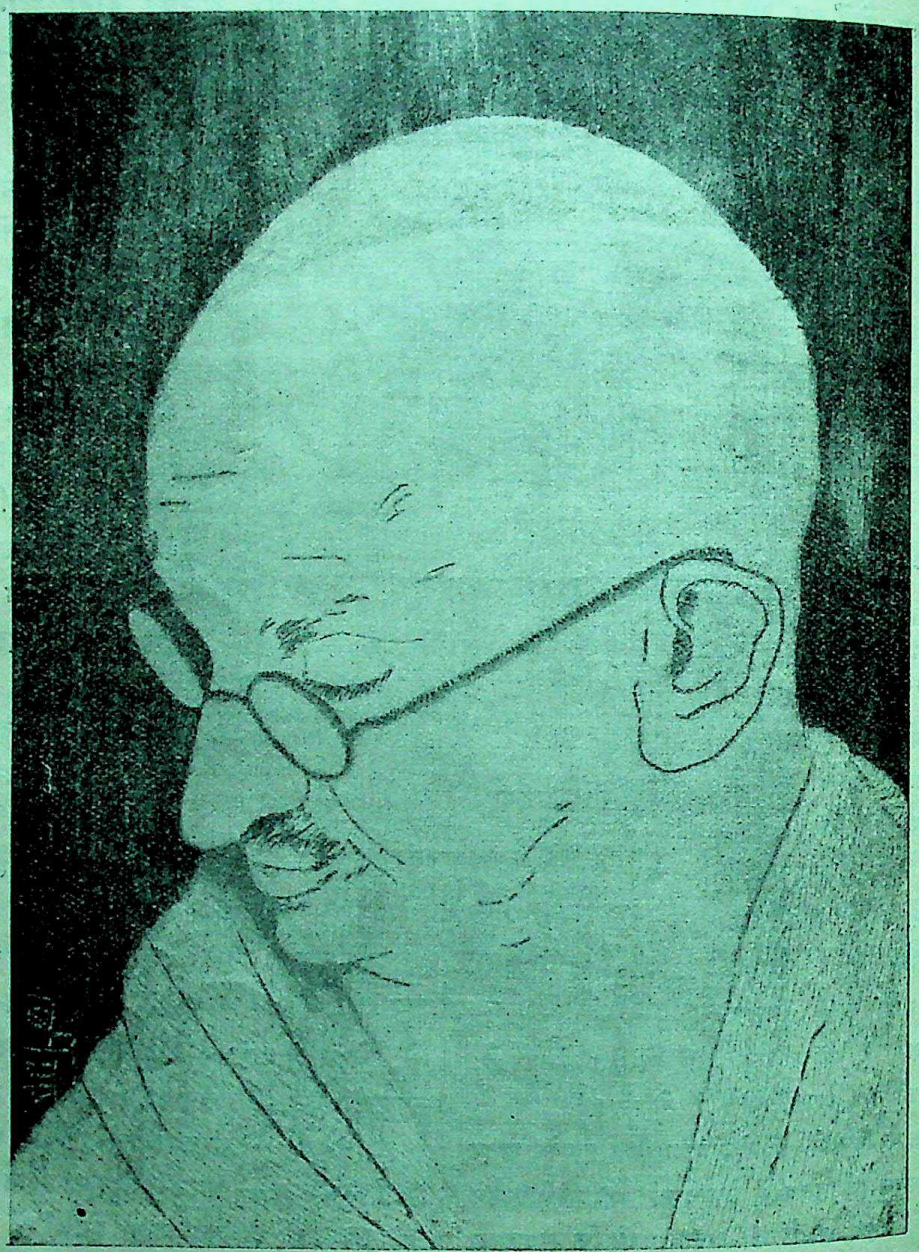

महात्मा गांधी

हुए। वह लेटे थे, और तकली कातते जाते थे। एक ओर अलमारी थी— लकड़ी या लोहे की नहीं,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वरन् चटाई की बनी हुई। 'डुक-शेल्फ़' क्या था, एक बाँस का बना टाँड़ था, जिसमें १५०-२०० फ़ाइलें क्रम से एक कोने से दूसरे कोने तक लगी थीं। चटाई की दीवारें थीं, जिन पर मिट्टी और

महात्मा गांधी
(चर्ख़ा कातते हुए)

गोबर का पलस्तर था। हर कमरे में प्रकाश और वायु के लिये छोटे-छोटे छेद थे। छतें लकड़ी और बाँस की थीं। ऊपर खपरैल थी। छत के नीचे बाँसों का बना एक चौड़ा-सा टाँड़ था। प्रायः सभी कुटियों की बनावट थोड़ी-बहुत ऐसी ही थी।

हम लोगों ने महात्माजी की दिनचर्या पूछी, तो उन्होंने कहा—"प्रातः चार बजे उठते हैं, प्रार्थना होती है, फिर पाँच बजे सो जाते हैं। अब ऐसा करते हैं, क्योंकि डॉक्टर आराम करने को बहुत ज़ोर देते हैं। छ तक शौच आदि से निवृत्त होकर कुछ नाश्ता करते हैं, और साढ़े छ पर घूमने चले जाते हैं। पहले तीन-चार मील तक घूमते थे, अब प्रायः एक मील घूमते हैं—कमज़ोरी के कारण। वहाँ से आकर मसाज (तेल-मालिश) कराते हैं। हम लोग ही कड़ुए तेल से मसाज करते हैं। नौ बजे तक स्नान होता है। फिर काम करते हैं। ग्यारह बजे भोजन होता है। फिर सो जाते हैं। दो बजे से चार तक फिर काम करते हैं। चार से पाँच तक जिनसे पहले निश्चित हो चुकता है, उनसे इंटरव्यू (मुलाक़ात) करते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं। स्नान आदि के पश्चात् ठीक ५-२० सायंकाल को बाहर आते और भोजन करनेवाले कमरे में जाते हैं। उसी समय कुछ क्षण के लिये उनके दर्शन होते हैं। फिर ६ से ७ तक टहलने जाते हैं। वहाँ से लौटने पर प्रायः ७ से ८ तक प्रार्थना होती है। प्रातःकाल गीता होती है, सायंकाल तुलसीकृत रामायण। महात्माजी का विचार है, रामायण संसार का सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ है। गीता से भी सर्व-साधारण का उतना हित नहीं हो सकता। भोजन के समय चुने हुए श्लोक कहे जाते हैं। टहलने के पश्चात् जो काम होता है, वह करते हैं। ९ बजे सो जाते हैं। यदि देर हुई, तो १० बजे तक सो जाते हैं। महात्माजी के एक प्राइवेट सेक्रेटरी श्रीप्यारेलालजी तो जेल में हैं, और दूसरे श्रीमहादेव देसाईजी हैं। श्रीप्यारेलालजी की स्थानापन्न श्रीअमृतकौर हैं। जब महात्माजी खाने या घूमने जाते हैं, तब भी उनके instructions (परामर्श तथा आज्ञाएँ) चलते रहते हैं। उनके पास बहुत काम रहता है, किंतु इस प्रकार समय के सदुपयोग, निश्चित कार्य-प्रणाली तथा प्राइवेट सेक्रेटरियों की सहायता से उनका काम चल जाता है।"

यात्रा करते हुए महात्मा गांधी

हम लोगों के पूछने पर कि—"महात्माजी के भोजन में कुछ परिवर्तन हुआ ?" उन्होंने उत्तर दिया—"विशेष परिवर्तन तो नहीं हुआ, विशेषकर दूध, हरी भाजी, कुछ फल, डबल रोटी, नीम की चटनी आदि ही उनका भोजन है। यों तो भोजन पर उनका experiment (परीक्षा) सदा चलता ही रहता है। नमक कदाचित् नहीं खाते, परंतु सिद्धांत ऐसा नहीं कि नहीं खायँगे। आश्रम के सब लोग उसी समय भोजन करते हैं। एक बड़ा दालान सामने के कमरे में है। उस समय यह भी पूछा जा सकता है कि किसने कितना सूत काता। तकली या चर्ख़ा कातना साबरमती-आश्रम में तो अनिवार्य था, किंतु यहाँ केवल कातनेवाले की इच्छा पर है। तो भी कम-से-कम आध घंटा, घंटा-भर तो सब कातते ही हैं। हाँ, यदि बीमार हो, तो और बात है। महात्माजी का सिद्धांत है, दिन के पश्चात् भोजन नहीं करते। यहाँ के निवासियों को दूध, गेहूँ का दलिया या कोई फ़सल का फल भोजन में मिलता है। प्रायः यही कार्य-क्रम यहाँ के निवासियों का है।"

यह पूछने पर कि "आश्रम का ख़र्च कैसे चलता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। क्या अपने यहाँ के काम से पूरा पड़ जाता है ? उन्होंने उत्तर दिया—"सौ-दो सौ एकड़ भूमि में खेती होती है । आप जानते हैं, किसानों को विशेष बचत नहीं होती । अपनी प्रायः ७० गाएँ हैं। अपनी गाएँ हम गाँवों में भिन्न-भिन्न घरों में देकर सिखाते हैं । अपनी डेयरी है। हम Self-supporting (अपने लिये स्वयं रुपया पैदा करनेवाले) हो सकते थे, यदि आश्रम-निवासियों (Inmates) की संख्या इतनी अधिक न होती। शहद भी निकाला जाता है।"

मैंने पूछा—"महात्माजी का ख़र्च कैसे चलता है ?" उन्होंने उत्तर दिया—"महात्माजी के मित्र हैं—वह रुपया दे देते हैं, और उसी से काम चल जाता है।" मैंने पूछा—"आप और महात्माजी क्या कसरत करते हैं ?"

उन्होंने उत्तर दिया—"महात्माजी तो प्रातः-सायं घूमने जाते हैं—अब कम। मैं टहलता हूँ, और प्रातःकाल चकिया चलाता तथा पानी भरता हूँ। रही तकली, वह तो बल और अवकाश पर है।"

मैंने पूछा—"आस-पास अन्य दर्शनीय स्थान कौन हैं ?" उन्होंने कहा—"नारबाड़ी में खादी का प्रबंध चलता है। खादी - प्रदर्शनी भी वहाँ है। वहाँ के दूसरे मैनेजर हैं। यदि उन्हें कुछ पूछना होता है, तो महात्माजी से आज्ञा ले लेते हैं। मगनबाड़ी में एक स्कूल है, जिसमें बेसिक ट्रेनिंग के अनुसार शिक्षा दी जाती है। वहाँ के सेक्रेटरी ही वहाँ का प्रबंध करते हैं। उन्हीं पर वहाँ का उत्तरदायित्व है। वर्धा-आश्रम में महिला-आश्रम का ट्रस्ट है। यदि कोई विशेष बात पूछना होती है, तो महात्माजी से परामर्श लेते हैं।"

मैंने पूछा—"यहाँ क्या-क्या सिखाया जाता है ?"

उन्होंने बतलाया—"मधु-मक्खी का पालन, खेती, डेयरी, अपनी गाएँ गाँवों में दिए हैं, उनसे दूध लेना और गायों के उचित रीति से पालन करने की विधि बताना, कताई, बुनाई, ताड़ का गुड़ बनाना, कुटियाँ बन रही हैं, उनमें सहयोग देना, ग्राम्य उद्योग तथा ग्राम-सुधार की शिक्षा देना आदि।"

आश्रम-निवासियों की संख्या पूछने पर उन्होंने कहा—"प्रायः ७० स्त्री-पुरुष-बच्चे होंगे। १०-१५ बहनें और १०-१५ बालक होंगे, और शेष पुरुष। बोर्डिंग-हाउस की भाँति अलग-अलग कमरे हैं रहने के लिये।" कदाचित् एक कमरे में कई मनुष्य रहते हैं।

उन्होंने यह भी बतलाया कि हमारी भूमि, जिसमें सेवाग्राम की कुटिया आदि बनी हैं, ४-५ एकड़ होगी।

उन्होंने यह भी बतलाया कि "१९३६ में सेवाग्राम में गांधीजी आए। यों तो १९३४ से ही गाँव-गाँव हो रहा था—गाँव में आने का विचार था। गांधीजी का विचार है, गाँवों को कुछ लाभ तथा ग्राम-सुधार का काम ठीक प्रकार से तभी हो सकता है, जब ग्राम में वास किया जाय। इसी उद्देश्य-विशेष से गांधीजी वर्धा से यहाँ चले आए।"

इस भाँति अनेक प्रकार के प्रश्न हम लोग उनसे करते रहे। उन्होंने कहा—"कहीं कोई ग़लत बात धोके से न छप जाय, इसका ध्यान रखिएगा, जिसमें पबलिक को ग़लतफ़हमी न हो जाय।" मैंने उन्हें विश्वास दिलाया—'प्रेस में भेजने के पहले मैं विशेष रूप से अपने लेख को बार-बार समझ और पढ़ लूँगा।" मेरा अपने पाठकों से नम्र निवेदन है कि यदि कोई बात इसमें तनिक भी उन्नीस-बीस हो गई हो, तो वे कृपया उसे ठीक कर सकते हैं, और वे मुझे इसके लिये क्षमा भी करें। सेवाग्राम पर लेख लिखना अत्यंत उत्तरदायित्व का काम है। और, यदि मेरे सुनने या नोट्स लेने में कोई त्रुटि हो गई हो, तो उसका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोषी मैं हूँ, यह मैं स्वीकार करता हूँ। कुछ घंटों में मैंने जो कुछ देखा-सुना या मुझे जो ज्ञात हुआ, उसी का वर्णन प्रस्तुत लेख में है।

उन्होंने कहा—"आप यहाँ घूमकर प्रत्येक स्थान देख सकते हैं, महात्माजी की कुटी को छोड़कर।" हम लोगों ने उनसे आज्ञा ली, और निकट के एक कमरे में २-३ घंटे आराम किया। चार बजे हम लोग घूमने निकले। सेवाग्राम का थोड़ा-बहुत वर्णन तो मैं पहले कर चुका हूँ, शेष अब करता हूँ।

सेवाग्राम सादगी, मितव्यय, प्रेम, सद्व्यवहार, स्वावलंबन सरल जीवन और उच्च विचार एवं कर्तव्य-परायणता आदि का आदर्श है। इसके निकट ही एक पोस्ट-ऑफ़िस है, जो सरकार को केवल महात्मा गांधी के ही कारण स्थापित करना पड़ा। सेवाग्राम में रेडियो, बिजली के तार और टेलीफ़ोन भी है। एक सुंदर बग़ीचा है। उसके एक ओर एक कमरा है, जिसमें गुड़ निकालने का प्रबंध है। थोड़ी दूर पर एक टीन शेड है, जिसमें शहद की मक्खियाँ पालने के लिये लकड़ी के संदूक़-से रक्खे हैं, जिसमें वे अपना छत्ता बनाती हैं। निकट ही एक बड़ा कुआँ है। पानी खींचने का ढंग नवीन है। बाल्टियाँ एक लंम्बे हार की भाँति बनी हुई हैं। बैल के घूमने से परशियन व्हील के पहिए चलते हैं, और बाल्टियाँ ऊपर-नीचे होकर पानी भरती और गिराती रहती हैं। थोड़ा आगे बढ़कर एक झोपड़ी में डिस्पेंसरी और अस्पताल है। उसके एक ओर निकट ही रसोईघर है। उस डाइनिंग हॉल के दाहनी ओर महात्माजी की कुटी है। सेवाग्राम के बिलकुल अंत में आचार्य कृपलानी का कमरा है। कृपलानीजी के दर्शन हुए। वह अपने कमरे में थे, क्योंकि ऑल इंडिया कांग्रेस-कमेटी का दफ़्तर आजकल सेवाग्राम ही में है। उसी ओर कदाचित् एक नया अतिथि-गृह बन रहा है। केवल यह

आचार्य कृपलानीजी

गेस्ट-रूम ही नवीन ढंग का बन रहा है—लकड़ी के किवाड़े, पक्का फ़र्श, हैंडिल, सिटकिनी आदि वहाँ दिखाई दीं, अन्यथा सेवाग्राम-भर में वही झोपड़े, देहाती ढंग पर। एक ओर गुम्मे, चूना आदि का ढेर था। जिस ओर सड़क के किनारे मैनेजर का कमरा था, उसी ओर लाइब्रेरी और रीडिंग-रूम है। एक ओर आश्रम-निवासियों के कमरे। बहुत बड़े क्षेत्र में झोपड़े बनते ही चले जाते हैं।

मुझे पहले से ही बता दिया गया था कि महात्मा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जी का दर्शन प्रातः-सायं प्रार्थना तथा घूमने के समय और ११ बजे दिन को तथा ५॥ बजे सायंकाल भोजन के समय, अपनी कुटी से भोजन के कमरे में जाते हुए, होता है। हम लोग ५-१५ पर डिस्पेंसरी में जाकर बैठ गए। चार-पाँच अन्य सज्जन भी वहाँ दर्शनार्थ आए हुए थे। ठीक समय पर घंटी बजी। एक १५ वर्ष की कन्या महात्माजी की कुटी में गई। ताड़ की एक सपाट डलिया-सी थी, वही छाता था, जो कन्या महात्माजी के सिर पर लगाए थी। महात्माजी के भोजन करने जाने पर हम लोग 'नर्स'* से आज्ञा लेकर महात्माजी की कुटी के अंदर गए—प्रायः ३० मिनट उसे देखते रहे। महात्माजी के लौटने के समय हम लोग उसमें से चले आए। महात्माजी की निजी देख-रेख के लिये एक 'नर्स' है, जो उनकी तथा उनकी कुटी आदि की देख-रेख करती है। महात्माजी की कुटी में केवल एक क्राइस्ट का चित्र टँगा है। दीवार पर एक ओर गौतम बुद्ध के जीवन से संबंध रखनेवाली एक सुंदर पेंटिंग है। पूछने पर पता चला कि नंदलाल बोस आदि मिलने आए होंगे, और यह चित्र बना गए होंगे। दीवार पर तीन दफ़्ती के कार्ड लटक रहे थे, जिन पर सिद्धांत-वाक्य लिखे हुए थे।

एक पर लिखा था—

"When you are in the right, you can afford to keep your temper and when you are in the wrong, you can not afford to lose it."

G. C. Lorimer

दूसरे पर लिखा था—

"Please
Be brief,
Be quick,
Be gone."

तीसरे पर लिखा था—

"The essence of lying is in deception, not in wording, a lie may be told by silence, by equivocation, by the accent on a syllable, by a glance of the eye attaching a peculiar significance to a silence; and all three kinds of lies are worse and baser by many degrees than a lie plainly recorded."

Ruskin

कुटी में एक आसन पृथ्वी पर लेटकर और एक बैठकर काम करने का था। गद्दियाँ पड़ी थीं। उस पर श्वेत चादर बिछी थी। पीठ को सहारा देने के लिये लकड़ी का समकोण बनाते हुए तख़्ते थे, जिन पर ख़ोल चढ़ा था। एक ओर एक बुक-शेल्फ़ है, जिसमें ३०-४० किताबें थीं—हिंदी, अँगरेज़ी और गुजराती में—विशेषकर हाईलीन की पुस्तकें थीं, या धर्म और राजनीति पर। कदाचित् स्वर्गीय रामचंद्र शुक्ल की भी कोई पुस्तक थी। किवाड़ों पर ख़स की टट्टियाँ लगी थीं। झोपड़ी लिपी-पुती बहुत स्वच्छ थी। खजुहा मिट्टी के रंग की पुती दीवारें थीं, जिनमें नीलिमा और कालिमा का मिश्रण था। झोपड़ी छोटी-सी थी, किंतु उसके अंदर एक और छोटा कमरा था, जिसमें महात्माजी के बक्स आदि रक्खे होंगे। एक छोटा-सा पार्टीशन और था, जिसमें एक ओर पानी का घड़ा आदि रक्खा था।

अब महात्माजी के शरीर का वर्णन करना कुछ

* महात्माजी की देख-रेख तो डॉक्टर सुशीला नैयर करती हैं। वह महिला कौन थीं, मैं नहीं कह सकता, क्योंकि मैं डॉक्टर नैयर को नहीं पहचानता। सुविधा के लिये मैं लाचारी से 'नर्स' शब्द का प्रयोग करता हूँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुचित न होगा। महात्माजी को मैंने २ वर्ष पूर्व देखा था। उनके तब के और अब के स्वास्थ्य में बहुत परिवर्तन मालूम पड़ा। आंतरिक परिवर्तन भले ही न हुआ हो, किंतु बाह्य रूप में महात्माजी अधिक क्षीण प्रतीत हुए। कुछ अधिक वृद्ध-से लगे वह। केवल हड्डी-ही-हड्डी दिखाई देती थी। आवाज़ बहुत क्षीण हो गई है—पहले भी बहुत धीरे बोलते थे। उस हड्डी के ढाँचे और उस निर्जन स्थान को देखकर हृदय में एक विशेष प्रकार की भावना उत्पन्न होती है, एक आश्चर्य-मिश्रित कौतूहल होता है। इसी निर्जन स्थान से यह क्षीणकाय मनुष्य, भारतवासियों का भाग्य-विधाता, भारत के ४० करोड़ भाग्यों को बनाने-बिगाड़ने का श्रेय रखता है।

इस क्षीण देह पर इतना तेजस्वी मस्तक देखकर स्वतः मनुष्य नत-मस्तक हो जाता है। महात्माजी का मुख देखकर nimbus (महापुरुषों के मुख के चारो ओर फैला हुआ प्रकाश) का ध्यान आ जाता है।

अस्तु। भोजन करने के पश्चात् आध घंटा महात्माजी आराम करते और फिर घूमने जाते हैं। महात्माजी के घूमने के १५ मिनट पूर्व ही हम लोग फाटक के बाहर आ गए। सोचा, सरदारजी से वार्तालाप किया जाय। वह निकट के गाँव में भोजन करने गए थे। वहाँ से जब आ गए, तब उन्होंने कहा—"मैनेजरजी ने मुझसे कहा 'तुम बीमार हो जाओगे, लू लग जायगी, तो महात्माजी को देखने आना पड़ेगा।' तो मैंने उनसे प्रतिज्ञा कर ली, 'यदि बीमार हो जाऊँगा, तो यहाँ से स्वयं चला जाऊँगा।' एक अन्य सज्जन ने मुझसे कहा, भीतर बेर-बेर व्यर्थ में आना ठीक नहीं।', तब से मैं भीतर नहीं जाता। मैं महात्माजी का निजी सेवक होना चाहता हूँ। यदि वह मुझे पुलिस में भी दे देंगे, तो भी कोई बात नहीं। भक्त तो २० वर्ष से हूँ, किंतु इधर दो महीने से आने-आने की सोच रहा था, अब आ पाया।"

हम लोगों ने कहा—"कृपया इस 'टच ऑफ़ वार' का फल अवश्य लिखिएगा।"

उन्होंने कहा—"लिखेंगे, किंतु चिट्ठी बैरंग भेजेंगे।"

मैंने उनकी इस स्पष्टवादिता को बहुत सराहा। पर अभी तक तो कोई पत्र सरदारजी का आया नहीं। भगवान् जाने, वह कौन थे।

सादी पोशाक में एक सिपाही भी वहाँ दिखाई दिया। मेरे पूछने पर पता चला कि प्रायः कोई-न-कोई सी० आई० डी० यहाँ बना ही रहता है। संभव है, महात्माजी के Movements (गति-विधि) का निरीक्षण करने को।

कुछ समय बाद महात्माजी और उनकी पार्टी आश्रम से बाहर आती हुई दिखाई पड़ी। हममें से एक ने कहा—"देखो, वह आ रहे हैं।" सब चुप हो रहे। जब महात्माजी आगे बढ़े, हम लोग भी उनके पीछे-पीछे हो लिए। मन में यह इच्छा थी कि वह जो कुछ शब्द बोल रहे हैं, उन्हें सुनें; साथ ही उनके शरीर और उनकी वेश-भूषा को भी ध्यान से देख रहे थे। उनके साथ श्रीराजकुमारी अमृतकौर सफ़ेद खद्दर की साड़ी और सैंडल पहने थीं। लगभग चार स्त्रियाँ, एक बच्चा और ४-५ पुरुष थे। महात्माजी चप्पल पहने थे। बाईं ओर एक महिला और दाईं ओर एक बच्चा था। उन दोनों के कंधों पर वह हाथ रक्खे हुए चल रहे थे। उक्त महिला ही उनकी पतली लकड़ी पकड़े थीं। बाद को यह लकड़ी अमृतकौरजी ने ले ली। महात्माजी खद्दर की लँगोटी घुटनों तक पहने थे। कमर के एक तरफ़ घड़ी लटक रही थी। एक अँगौछा कंधे पर था, और एक टुकड़ा, संभवतः रूमाल, लँगोटी से लटक रहा था। सिर पर कपड़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लपेटे थे, और कान भी कपड़े से ढके थे। कपड़े के कारण उनका मुँह स्पष्टतया दिखाई नहीं देता था, किंतु उनका चश्मा और लंबी नाक चमक रही थी। पूरे शरीर से तेज प्रस्फुटित हो रहा था। वह काफ़ी तेज़ चल रहे थे। एक विशेषता यह रही कि उनकी रफ़्तार में कहीं भी कमी नहीं रही—आए-गए एक ही चाल से। सरदारजी भी पीछे-पीछे चल रहे थे। मामूली चाल से लगभग एक मील घूमने गए। लौटने पर निर्मलसिंहजी ने महात्माजी को नमस्कार किया। कुछ दूर चलकर उन्होंने श्रीगिरिधारीलालजी (एक आश्रम-निवासी) से बुलाकर कुछ कहा। उसके पश्चात् सरदारजी कदाचित् वर्धा चले गए। अमृतकौरजी एक नवागंतुक जो (कार से आए थे, और महात्माजी को देखकर उतर पड़े थे) से बातें करती रहीं, जो संभवतः महात्माजी को वर्धा में उसी दिन होने-वाले राष्ट्रीय स्वयंसेविका-संघ के जलसे में सम्मिलित होने के लिये बुलाने आए थे। "दस मिनट से अधिक न लगें, उनसे आप बोलने का आग्रह न करें।... .."इस प्रकार वह उनसे कुछ कह रही थीं।

घूमकर जैसे ही महात्माजी आश्रम में घुसे, वैसे ही बच्चे 'बापू...हो हो.....'आदि कहकर उनके चारो ओर बड़ा हुल्लड़ मचाने लगे। महात्माजी भी बच्चों के साथ वैसे ही गुल मचाने लगे। महात्माजी बच्चों से बड़ा प्रेम करते हैं। उनके प्रेम से हृदय गद्गद हो गया।

फिर महात्माजी प्रार्थना-भूमि पर बैठ गए। बीच में व्यास-गद्दी-सी थी। चारो ओर घेरे में चटाई बिछी थी। बाएँ हाथ की ओर बहनें बैठी थीं। महात्माजी के सामने सितार बजानेवाले तथा भजन गानेवाले दो सज्जन तथा अन्य लोग और दाहनी ओर आश्रम-निवासी पुरुष और बच्चे थे। हम लोग भी दाहनी ओर बैठ गए। महात्माजी की निजी नर्स पहले तो उनके पैर इत्यादि धोती हैं, फिर सिर का कपड़ा बदलती हैं। फिर वह कुछ पिलाती हैं—संभव है, शरबत हो या दवा। कुछ मिनट आराम करने के पश्चात् महात्माजी के कहने पर घंटा बजा। सब लोग बैठ गए। १०-१२ रामायणें थीं— ३-४ आदमी एक-एक रामायण के पास थे। पहले एक सज्जन ने विचित्र प्रकार से ३ बार आवाज़ें दीं— मैं नहीं समझ सका, वह कौन भाषा थी, और क्या था। फिर सबने (महात्माजी ने भी) श्लोक पढ़े। फिर एक सज्जन ने मीरा का एक भजन गाया। फिर थोड़ी देर नाम का कीर्तन हुआ, फिर थोड़ी देर सितार पर रामायण पढ़ी गई—कदाचित् सुंदरकांड। वहाँ की प्रत्येक वस्तु में सादगी थी। गाने में भी गलेबाजी न थी, वरन् सहृदयता और आत्मिक प्रेम था। जब सब एक साथ रामायण का पाठ करते थे, तब अभूतपूर्व आत्मिक शांति का अनुभव होता था। मैं प्रत्येक की अलग-अलग आवाज़ पहचानने का प्रयत्न कर रहा था। स्त्रियों के कोमल कंठ से उस प्रार्थना का सौंदर्य और भी बढ़ जाता था। यह सब हो जाने के पश्चात् एक बालक ने एक कॉपी पर हाज़िरी ली। वह "भाई.....जी", "बहन.....जी" आदि कहता था, और उत्तर मिलता था "९०० गज़", "११०० गज़" आदि, अर्थात् जिसने जितना सूत दिन-भर में काता था, वह उतना लिखवा देता था। कितनी आदर्श 'हाज़िरी' थी! इसके पश्चात् प्रार्थना-समाज समाप्त होता है।

एक विशेष बात यह है कि २-४ को छोड़कर प्रायः सभी प्रार्थना में उपस्थित थे। एक साधारण घटना है, किंतु उसका प्रभाव हम लोगों पर विशेष पड़ा। एक ३-४ वर्ष का शिशु था, वह महात्माजी की कभी रामायण घसीटता, कभी कपड़ा। कभी इधर जाता, कभी उधर। उसकी कदाचित् माता ही होंगी, उसे बारंबार पकड़तीं, पर वह रोता, तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छोड़ देतीं। कहीं से एक लकड़ी शिशुजी के हाथ लग गई थी। वह उसी से खेल रहे थे। कई बार महात्माजी के लग गई। एक बार तो उन्होंने महात्माजी के सिर रसीद ही तो कर दी—कदाचित् धोके से पड़ गई होगी। बच्चा तो था ही। महात्माजी शांत भाव से बैठे अपनी प्रार्थना में व्यस्त रहे। शिशुजी के उपद्रव से बेचारे अपनी पोथी आदि बचाते, सिर पर लकड़ी पड़ जाती, तो उसे हटा देते। बच्चों से कितना अधिक प्रेम करते हैं वह—यह घटना इसका एक प्रत्यक्ष उदाहरण थी। दूसरे, कितनी तन्मयता उनकी प्रार्थना में थी, यह भी स्पष्ट था।

महात्माजी वर्धा चले गए कार पर। चारो ओर अँधेरा था। कुएँ में पानी पिया। उस सूनसान जंगल के अँधेरे में—जब सड़क तक नहीं दिखलाई पड़ती थी, जिसके दोनो ओर गहरे गड्ढे या खड्ड थे, जिनमें गिर जाने का भय था—हमारा ताँगा वर्धा की ओर बढ़ रहा था। ताँगे पर औंघाते हुए, वर्धा के बाज़ार होते हुए धर्मशाला पहुँचे, और वहाँ से सामान लेकर स्टेशन आ गए। अब वर्धा के विषय में दो बातें कहकर मैं अपना लेख समाप्त करता हूँ—

वर्धा एक बड़ा जंक्शन है। रुई के व्यापार के लिये अति प्रसिद्ध है। यहाँ रुई की एक बड़ी मंडी तथा कई मिलें हैं। यहाँ दो हाईस्कूल भी हैं। दर्शनीय स्थानों में स्वर्गीय रावबहादुर सेठ बच्छराजजी का बनवाया मंदिर तथा न्यू एडवर्ड-मेमोरियल हॉस्पिटल हैं। अन्य भी कई मिलें हैं।

वर्धा से ११ बजे रात्रि की गाड़ी से हम लोग 'मनमाड' चल दिए, जहाँ से 'इलोरा-केव्ज़' जाने के लिये औरंगाबाद जाना था। वर्धा में मुझे रहने का अवकाश तो केवल कुछ घंटों का ही मिला, किंतु ये कुछ घंटे ही मेरे जीवन में अपना ऐतिहासिक मूल्य रक्खेंगे, यह निश्चय है।

ESTABLISHED 1899

TELEPHONES:— 2 & 2 A

BHOLA NATH & CO.

36, Latouche Road

LUCKNOW

MANUFACTURE RUBBER STAMPS, BRASS & METAL BADGES, BRASS SEALS, BRASS & IRON PADL-OCKS, THUMB IMPRESSION OUTFITS, MILITARY BADGES, TURBAN MONOGRAMS, FILE LACES, EMBOSSING MACHINES, INKS Etc., Etc.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रोफ़ेसर पिल्ले का प्रेम

[श्रीयुत 'वेढब' बनारसी]

डॉक्टर चोवंटांगम पिल्ले गणित के प्रोफ़ेसर थे। जिस समय से यह कॉलेज में आए, देश में इनकी धाक बैठ गई। जर्मनी, वाशिंगटन और टोकियो-विश्वविद्यालय से प्रतिदिन डाक आती। कैंब्रिज और लंदन की तो बात न पूछिए, वहाँ के तो दर्जनों लिफ़ाफ़े इनकी मेज़ पर पड़े रहते। इन्हें इतना लिखना पड़ता कि एक शीशी पारकर-इंक की प्रतिदिन समाप्त होती। क़लम की निब कितने दिनों में घिसती थी, मैं नहीं कह सकता। किसी से मिलना-जुलना इनकी दिनचर्या में सम्मिलित न था, जैसे आर्य-समाज के धर्म-ग्रंथों की सूची में पुराण नहीं हैं। कॉलेज जाना, पढ़ाना और फिर पुस्तकों में धँस जाना या क़लम लेकर सफ़ेद काग़ज़ से जूझना, यही इनका काम था। हाँ, भोजन भी करते थे। एक बात जिसे वह नहीं भूलते थे, वह था उनका चाय का क्रम। संसार-भर में जाड़ा पड़े या गरमी, उनके यहाँ केटली में पानी सदा खौलता रहता। मेरा तो यहाँ तक विचार है कि यदि भारत-वासी चाय छोड़ देते, जैसे चीन ने अफ़ीम छोड़ दी, तो भी पिल्ले महोदय की कृपा से लिप्टन की कंपनी चल सकती थी। जैसे किसी ने गूलर का फूल नहीं देखा, वैसे ही पिल्ले महोदय को किसी ने हँसते नहीं देखा। उनके विद्यार्थी उन्हें मशीन समझते थे, या वह मनुष्य, जिसमें हृदय के स्थान पर भी दिमाग़ हो। ऐसी अवस्था में हत्थीमुट्टीबाई के आश्चर्य का ठिकाना न रहा, जब संध्या-समय, लेबोरेटरी के पीछे, जहाँ वह एकांत में कैलकुलस का अभ्यास कर रही थी, प्रोफ़ेसर साहब टहलते हुए आए, और बोले—"मैं तुमसे विवाह करना चाहता हूँ।"

संध्या की कालिमा यौवन की मादकता के समान फैल रही थी। सूर्य अस्त हो चुका था, परंतु प्रकाश की अदृश्य रेखाएँ अभी आकाश में भटक रही थीं, जैसे मुग़ल-साम्राज्य नष्ट हो जाने पर भी उसके वैभव की कहानी बहुत दिनों तक सुनी जाती रही। गोधूली-वेला थी, न दिन था, न रात, जैसे सीमा-प्रांत के पश्चिम किसी का राज नहीं। ऐसे ही समय प्रोफ़ेसर पिल्ले के मन में न-जाने क्या आया कि बँगले से उठे, और लेबोरेटरी के पीछे चले। मुट्टीबाई घास पर, एकांत में, लेटी थी। एक हाथ में पेंसिल थी। धरती पर कॉपी पड़ी थी, उसी के निकट एक पुस्तक थी। स्वर्गीय राजा रवि वर्मा ने जैसे शकुंतला की पत्र लिखनेवाली मुद्रा का चित्रांकन किया है, कुछ-कुछ वैसा ही दृश्य यह भी था। पिल्ले साहब पीछे से आए। पहले तो उनकी गति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीव्र थी, परंतु ज्यों-ज्यों हत्थीबाई के निकट पहुँचे, धीमी हो गई, जैसे स्टेशन पर पहुँचते - पहुँचते रेलगाड़ी की चाल मंद हो जाती है।

हत्थीमुट्टीबाई बी० ए० के पहले वर्ष में पढ़ती थी। विज्ञान उसका विषय था। गणित इन्हीं पिल्ले साहब से पढ़ती थी। मार्च का महीना था। जुलाई में पिल्ले साहब आए थे। एक दिन भी उन्होंने हत्थीबाई की ओर देखा नहीं। छिपे-छिपे देखा हो, तो नहीं कहा जा सकता। उसकी ओर देखकर एक दिन भी मुसकराए नहीं। उन्होंने यह सीखा ही नहीं कि मुसकराने के समय अधरों को कितनी डिगरियों का कोण बनाना होता है। ऐसी अवस्था में आप विचार कर सकते हैं कि हत्थीबाई के आश्चर्य की सीमा कहाँ तक पहुँची होगी, जब उसके कानों में विवाह के प्रस्ताव के शब्द पहुँचे होंगे। उसने सिर उठाया, फिर स्वयं उठी, फिर खड़ी हुई, और प्रोफ़ेसर साहब को देखा। नमस्कार करना तो अभ्यास-सा हो गया था, इसलिये उतना तो हो ही गया। इसके आगे उसके मुख से कोई शब्द न निकला, जैसे नव-विवाहिता वधू के घूँघट से मुख नहीं निकलता। उसने समझा, संभवतः उन्होंने कुछ और कहा, और मैंने विवाह का प्रस्ताव समझ लिया, या प्रोफ़ेसर साहब आइन्स्टीन की थ्योरी समझते-समझते पागल हो गए हैं। हत्थीमुट्टीबाई यही सोच रही थी कि पिल्ले साहब फिर बोले—

"अगर क का संबंध ख से है,
और ख " " ग से है,
तो क " " ग से हुआ

तो मैं गणित से प्रेम करता हूँ, तुम गणित से प्रेम करती हो, इसलिये मैं तुमसे प्रेम करता हूँ।"

हत्थीबाई, जो गणित की बड़ी-बड़ी समस्याएं सुलझा सकती थी, यह भी समझ गई। बोली—"महोदय, आप कृपा कर बैठ जाइए।"

पिल्ले साहब बैठ गए।

हत्थीबाई ने पूछा—"आप स्वस्थ तो हैं?" यद्यपि इसे अब विश्वास हो गया था कि प्रोफ़ेसर साहब का दिमाग़ उतना तो अवश्य ठीक है, जितना एक प्रोफ़ेसर का हो सकता है, फिर भी है प्रोफ़ेसर का ही दिमाग़। जैसे अच्छी-से-अच्छी मोटर-कार के बारे में नहीं कहा जा सकता कि कब फ़ेल हो जाय, जैसे ई० आई० आर० की गाड़ी के संबंध में नहीं कहा जा सकता कि कब पटरी से उतर जाय, जैसे सिनेमा-अभिनेत्रियों के लिये नहीं कहा जा सकता कि कब विवाह कर लें, और कब पुराने बंधन नवीन नेह की छुरी से काट दें, और जैसे हिंदी-पत्रों के लिये नहीं कहा जा सकता कि कब बंद हो जायँ, इसी प्रकार किसी प्रोफ़ेसर के दिमाग़ के लिये नहीं कहा जा सकता कि वह कब बिगड़ जाय। सो भी गणित के प्रोफ़ेसर का। जैसे उँगलियों में अँगूठा, बालों में चुंदी, पशुओं में दुम,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसी प्रकार प्रोफ़ेसरों में गणित के प्रोफ़ेसर। उनकी उपयोगिता उन्हीं के लिये है।

प्रोफ़ेसर पिल्ले बोले—"स्वस्थ—स्वस्थ—मैं उसी भाँति स्वस्थ हूँ, जैसे हवा में ऑक्सिजन होता है।"

हत्थीमुट्टी—"क्या आप गंभीर हैं?"

प्रोफ़ेसर—"वैसे ही, जैसे आइन्स्टीन का सिद्धांत।"

हत्थीमुट्टी—"क्या आप मुझसे प्रेम करते हैं?"

प्रोफ़ेसर—"उतना, जितना कोण की दो भुजाओं में होता है।"

हत्थीमुट्टी—"कब तक यही भाव रहेगा?"

प्रोफ़ेसर—"इनफ़िनिटी—अनंत तक।"

हत्थीमुट्टी—"मैं तो किसी योग्य नहीं हूँ। कुछ नहीं हूँ।"

प्रोफ़ेसर—"ठीक है, ठीक है। तुम कुछ नहीं हो, शून्य हो। ज़ीरो हो। मैं कुछ हूँ। जब तुम्हारी शक्ति मुझे मिल जायगी, हम लोग एक हो जायँगे। 'एनी फ़िगर टु दि पावर ज़ीरो इज़ ईक्वल टु वन।'"

हत्थीमुट्टी—"मुझे सोचने का अवकाश दीजिए।"

प्रोफ़ेसर—"अवश्य, अवश्य। सोच लो, ठीक उसी भाँति तर्क कर लो, जैसे पंचराशिक। परंतु मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ, मैं तुम्हारे चारो ओर उसी भाँति मँडराता रहूँगा, जैसे केंद्र के चारो ओर वृत्त; मैं तुम्हारे लिये उसी भाँति अपने को मिटा दूँगा, जैसे कोई अंक, जिसे शून्य से गुणा कर देते हैं; तुम्हारा-मेरा संबंध सदा वैसा ही रहेगा, जैसा ज्यॉमिति का त्रिकोण-मिति से है; तुम मेरे लिये उतनी ही महान् हो, जितना यह विश्व है; तुम्हें मैं अपने उतने ही निकट देखना चाहता हूँ, जितना नक्षत्र दूरबीन में दिखलाई देता है। और, मेरा प्रेम कभी तुम्हारे प्रति कम नहीं होगा, जैसे रिकरिंग डेसिमल का कभी अंत नहीं होता।"

हत्थीमुट्टीबाई ने कहा—"मैं कल पूर्ण विचार करके उत्तर दे सकूँगी।"

प्रोफ़ेसर महोदय अपने बँगले की ओर चले गए।

यह पहला अवसर नहीं था, जब मुट्टीबाई से प्रेम का प्रस्ताव हुआ था। तीन प्रस्ताव और हो चुके थे। पहला प्रस्ताव उसके पड़ोसी ने किया था, जो एक स्कूल के अध्यापक थे। दूसरा प्रस्ताव उसके दर्जे के एक विद्यार्थी ने किया था। तीसरा प्रस्ताव उसके भाई के एक मित्र ने किया था, जो उसी साल इंजीनियर होकर उस नगर में आया था, और चौथा प्रस्ताव प्रोफ़ेसर पिल्ले का था। किसी को हाँ अथवा नहीं का उत्तर मुट्टीबाई ने नहीं दिया था। और, सभी प्रस्ताव इन्हीं पंद्रह दिनों में आए थे, मानो यह भी कांग्रेस का अधिवेशन था कि सभी प्रस्ताव प्रायः एक ही समय पर भेजे गए।

तारे आकाश में एक के बाद एक निकल रहे थे, जैसे थानेदारों के मुख से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गालियाँ निकलती हैं। हरी-हरी दूब, नीला-नीला आकाश, श्यामल रजनी, अलसाया पवन प्रेम की समस्या सुलझाने के लिये बहुत उपयुक्त थे, जैसे कठोर प्रश्न, बगल में बुद्धिमान् विद्यार्थी और गार्ड का ऊँघना परीक्षा-भवन में नक़ल करने के लिये अच्छा अवसर प्रदान करते हैं। हत्थीमुट्टीबाई ने चमकती हुई पेंसिल हाथ में उठाई, और तारों के प्रकाश में अपनी कॉपी में लिखा—मान लीजिए, स्कूल-अध्यापक है क, विद्यार्थी ख, इंजीनियर ग, प्रोफ़ेसर घ।

ख क से छोटा है, क घ से छोटा है, ग और घ का मूल्य आँकना है।

क और ख दोनो घ से छोटे हैं, और ग से भी छोटे हैं, इसलिये क और ख निकाल दिए जाते हैं।

ग और घ रह गए।

ग घ से बड़ा है, या छोटा या बराबर। एक प्रोफ़ेसर है, दूसरा इंजीनियर, इसलिये बराबर नहीं हो सकते। इसलिये ग घ से बड़ा है या छोटा? दोनो गणित जानते हैं, दोनो नौकर हैं, इतना दोनो में समान (कॉमन) है। यह निकाल दिया। ग साढ़े चार सौ वेतन पाता है, घ ढाई सौ, इसलिये ग घ से बड़ा है।

इसलिये घ से विवाह नहीं हो सकता।

क्यू० ई० डी०

विवाह के प्रश्न के इस उत्तर को हत्थीबाई ने प्रोफ़ेसर पिल्ले के पास एक लिफ़ाफ़े में बंद कर भेज दिया, जैसे आई० सी० एस० की उत्तर-पुस्तकें भेजी जाती हैं।

जिस समय एक चपरासी यह लिफ़ाफ़ा प्रोफ़ेसर साहब के पास लाया, वह विश्व का टेढ़ापन नापने के लिये एक फ़ारमूला बना रहे थे। उन्होंने पत्र पढ़ा। पढ़ने के पश्चात् अपना कमरा बंद किया, और अलमारी से पुस्तकें निकालकर धरती पर रखने लगे।

पहले ज्योतिष की पुस्तकें रक्खीं, फिर कैलकुक्स की, फिर ज्यॉमिति की, फिर अलजबरा की और सबसे ऊपर ठोस ज्यॉमिति की। उस पर एक बोतल से स्पिरिट उँडेली, और उसी पर बैठ गए, और अपने नौकर शिवमंगल को पुकारने लगे—"शिवमंगल! शिवमंगल! जल्दी से दियासलाई ला।"

चश्मा फोड़ो! खिज़ाब छोड़ो!!

तेल और खिज़ाब से भरे हुए हज़ारों आदमी का पका बाल नई बूटी से स्थायी काला हुआ है। नई बूटी आँख की रोशनी तेज़कर चश्मा फोड़ देगी, और बाल का पकना रोककर पका बाल खूँटी से काला पैदा करेगी। गुणों की गारंटी है। विश्वास न हो, दाम वापस की शर्त लिखा लें। दाम ५) रु०

जड़ी-बूटी-दवाखाना पो० बिहार नरसरी (दरभंगा)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीरामतीर्थ-पब्लिकेशन लीग

२५ मारवाड़ी गली, लखनऊ

से

निम्न-लिखित पुस्तकें, जो नवजीवन, आत्मबल, शक्ति और शान्ति प्रदान करनेवाली हैं, मँगवाकर पढ़िये और

"व्यावहारिक वेदान्त"

मासिक पत्र के ग्राहक बन जाइये। यह सामाजिक, धार्मिक, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय विषयों पर वेदांत की व्यावहारिक दृष्टि से प्रकाश डालनेवाला उच्च कोटि का पत्र है, जिसका वार्षिक चंदा केवल ३।) वी० पी० सहित है।

अँगरेज़ी—

Complete works of Swami Rama in 8 Volumes. ... Rs. 8/-/-
Rama's Note Book. ... Rs. 2/-/-
Swami Rama, His life and Legacy. ... Rs. 3/-/-
The Story of Swami Rama. Rs. 2/8/-
The Parables of Ram. Rs. 2/-/-
Heart of Rama. ... Rs. -/4/-
Poems of Rama. ... -/8/-
How to excel in Mathematics. -/6/-
Swami Rama, Various aspects of His life. ... 1/-/-
The Light of Bhagwat Gita. 1/8/-
Adi Bhagwat Gita ... -/2/6
Satyugi Prarthana and Rama's practical Vedant, each Re. 1/- per 100.

हिंदी—

१०) स्वामीराम के लेखोपदेश २७ जिल्दों में।
२॥) बृहत् राम-जीवन-चरित्र
४) श्रीमद्भगवद्गीता श्रीमन्नारायण स्वामी-कृत दो भागों में
१) राम-वर्षा
१) राम-पत्र
२॥) वेदानुवचन
॥) आत्मशाक्षात्कार की कसौटी
॥) भगवत् ज्ञान के विचित्र रहस्य
४॥) ख़ुम ख़ाने राम (३ जिल्दों में) उर्दू—
।=) जगजीत प्रज्ञा
॥) नारायण-चरित्र पहला भाग
॥।) साधारण धर्म
१) राम वर्षा
॥) राम पत्र
१॥) वेदानुवचन
॥) मियारुल मुक़ाशिफ़ा
।=) अजायबुल इल्म

स्वामी राम और नारायण के चित्र ॥) से १५) तक। पीतल के प्रणव या ओंकार कोट और टोपी पर लगाने के लिये ॥)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शंकर महादेव के कहे हुए यंत्र, मंत्र, तंत्रों का अपूर्व ग्रंथ ६ अध्याय में

बृहत् साँवरि-तंत्र (सेकरे की विद्या)

(१) आकर्षण विद्या—मंत्र-बल द्वारा जिस प्रकार रावण ने अहिरावण को पाताल (अमेरिका) से क्षण-मात्र में लंका बुला लिया था आदि बातें। (२) वशीकरण विद्या—यंत्र, मंत्र, तंत्रों को सिद्ध कर चाहे जिस स्त्री-पुरुष को वशीभूत कर लो। (३) अष्टसिद्धि—हवा में उड़ना, अंगद के समान भारी होना, हाथियों का-सा बल प्राप्त करना, अंतर्धान हो जाना, फिर प्रकट होना इत्यादि क्रियाएँ लिखी हैं। (४) काया-कल्प—वही प्राचीन विद्या, जो ढाका, बंगाला, कामरू में प्रचलित है, जिससे मनुष्य की शक्ति और अक़्ल ही दूसरी हो जाती है—तोता, बकरा, बंदर बनाना तो बात ही क्या है? (५) यक्षिणी-विद्या—भूत, प्रेत, शंखिनी, डंकिनी इत्यादि को सिद्ध करके उनसे मनमाना काम लेना। (६) ओझा-विद्या—यंत्र, मंत्र, तंत्रों द्वारा रोगों की चिकित्सा करना, भूत, प्रेत, चुड़ैल इत्यादि को झाड़-फूँक द्वारा उतारना इत्यादि बातों का वर्णन है। सिद्धि कार्यकर्ता पर निर्भर है। मूल्य २), डाक-ख़र्च ।=)

ख़ाली बैठे बेकारों को धन कमाना

ख़ज़ाना रोज़गार

इसमें अनेक प्रकार की दवाओं के तथा ख़ुशबुओं के तेल व शर्बत, जवारिश, गुलक़ंद, माजूम, इतरीफल, सत्त तेज़ाब बनाना। अनेक प्रकार के अचार, मुरब्बा, चटनी, मिठाई, चावल, बिसकुट, दाल का मसाला बनाना। इसके उपरांत घड़ी, गिलटसाज़ी, रंगसाज़ी, आतिशबाज़ी, दियासलाई बनाना। अनेक प्रकार के साबुन, रंग, रोशनाई, चमड़े, शीशे का काम, सिगरेट, रबड़ की मुहर, कपूर, गंधक का कटोरा, गिलास और खाँड़ व हाथी-दाँत के खिलौने बनाना। गैस की रोशनी करना, सन व कपड़े का गुलदस्ता बनाना। पिपरमेंट की मिठाई, तांबूलविहार, ख़िज़ाब, ख़मीरा तंबाकू, बनारसी गोली, अर्क़ कपूर, अगर-बत्ती, सफ़री सोडावाटर, भीमसेनी कपूर, नमक सुलेमानी, च्यवनप्राश, लेवेंडर बनाना। फ़ोटोग्राफ़ी, तसवीर खींचना आदि सैकड़ों प्रकार की दस्तकारी सिखाने की तरकीबें इस ग्रंथ में लिखी हैं। कहाँ तक लिखें, इसका एक-एक हुनर पाँच-पाँच रुपए को भी सस्ता है। मूल्य १) पुस्तक, डाक-ख़र्च ।=)

तक़दीर का हाल बतानेवाला

धुरंधर ज्योतिषी

इस पुस्तक द्वारा जन्म-जन्मांतर का हाल कहना, पूरी जन्म-कुंडली बनाना और उसका फल कहना, मौत, ज़िंदगी बताना, गुप्त प्रश्नों तथा मूक प्रश्नों का ठीक-ठीक उत्तर देना, वर्ष-फल बनाना, माल की तेज़ी-मंदी तथा भविष्य-फल कहना, सब प्रकार के मुहूर्त और शकुन बताना, विवाह शोधना, बिना देखे जन्म-समय का हाल कहना, सूर्य-चंद्रमा आदि समस्त ग्रहों का स्पष्ट करना, हस्त-रेखा-ज्ञान, गणित और फलित आदि ज्योतिष के तमाम गूढ़ रहस्यों को ऐसी सरल भाषा में समझाया है कि जिसको थोड़ा हिंदी-पढ़ा मनुष्य भी पूरा ज्योतिष का ज्ञान प्राप्त कर सकता है। मूल्य २), डाक-ख़र्च ।=)

चौदह विद्या-निधान

(१) वैद्यक विद्या, (२) कोक विद्या, (३) सामुद्रिक विद्या, (४) योग विद्या, (५) यंत्र विद्या, (६) मंत्र विद्या, (७) तंत्र विद्या, (८) ज्योतिष विद्या, (९) शिल्प विद्या, (१०) क़ानून विद्या, (११) छंद विद्या, (१२) गान विद्या, (१३) रसायन विद्या, (१४) वशीकरण विद्या इत्यादि चौदहों विद्याओं के जानने की सरल विधि वर्णन है। मूल्य १), डाक-ख़र्च ।=)

मिलने का पता—बाबू गंगाप्रसाद गुप्त डी० पी० कंपनी (सु) अलीगढ़।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्राहकों को संतोष ! यही हमारा ध्येय है !!

कारख़ाना इत्र

व

तैल

अपने शुद्ध व्यवहार तथा शुद्ध माल के कारण यथेष्ट ख्याति प्राप्त कर चुका है। कार्यालय में तैयार होनेवाली प्रत्येक वस्तु पुष्पों द्वारा संचित की जाती है। सेंटों और ह्वाइट आइल्स का उपयोग बिलकुल नहीं होता।

हमें पूर्ण आशा है, आप हमारे साथ एक बार अवश्य व्यवहार करेंगे, और यदि सत्य हुआ, तो सदा हमसे सहयोग रक्खेंगे।

घनश्यामदास हरलालका परफ़्यूमर्स, जौनपुर

प्रकाशित हो गई !

गर्मी के बाद सावन की हरियाली

में

आनंद देनेवाली

और

दिल को मस्ताना बनानेवाली सुंदर कजलियों का विशाल संग्रह।

कजली कौमुदी

जिसमें बनारस और मिर्ज़ापुर के बड़े-बड़े शायरों की चुनी हुई क़रीब २५० अश्लीलता से रहित कजलियाँ हैं।

संग्रहकर्ता—

श्रीकमलनाथ अग्रवाल

पृष्ठ-संख्या १५०; तिरंगे टाइटिल के सहित। मूल्य केवल १)

बरसात के दिनों में आधे दाम में मिलेगी—

मिलने का पता—

काशी-पेपर-स्टोर्स

२१, बुलानाला, बनारस

नोट—हमारे यहाँ सब प्रकार की हिंदी की पुस्तकें बिक्री होती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत-सरकार से रजिस्टर्ड—

बृहदासवारिष्ट-संग्रह

'दैनिक हिंदुस्तान', दिल्ली की सम्मति—

लेखक, आयुर्वेदसूर्यः श्रीपं० कृष्णप्रसाद त्रिवेदी बी० ए०; प्रकाशक, वैद्य शंकरलाल हरिशंकर 'वैद्य'-कार्यालय, मुरादाबाद; काग़ज़ व छपाई उत्कृष्ट; प्रयोग-संख्या ५६० के ऊपर; मूल्य १।॥), डाक-ख़र्च ॥-)

इस ग्रंथ द्वारा हिंदी के आयुर्वेदीय साहित्य की एक बहुत बड़ी कमी की पूर्ति की गई है। देशीय चिकित्सा-पद्धति में आसव और अरिष्ट का बहुत ऊँचा स्थान है। वैद्य लोग इनका प्रयोग अक्सर छोटे-से-छोटे और बड़े-से-बड़े रोगों में किया करते हैं, किंतु इनके बनाने की विधि सरल न होने से और इनका एक जगह संपूर्ण संग्रह प्राप्त न होने से वे बेहद परेशान रहते हैं। आसव और अरिष्टों का प्रयोग रोगों में शीघ्र और अचूक फल देनेवाला होता है। इसलिये वे ऐसे संग्रह की खोज में निरंतर ही रहते हैं। बड़े परिश्रम और धन-व्यय से 'बृहदासवारिष्ट-संग्रह' नाम का ग्रंथ अधिकारी विद्वान् से, जो इस विषय के अनुभवी और पूर्ण पंडित हैं, अत्यंत सरल भाषा में, रोग की अवस्था के अनुसार प्रत्येक प्रयोग के साथ-साथ विशद विवेचन-सहित बहुत बड़े आकार में प्रकाशित किया गया है। पुस्तक स्कूली साइज़ के ५५० से अधिक पृष्ठों में समाप्त हुई है। काग़ज़ और छपाई उत्कृष्ट रक्खी गई है। इतना होने पर भी पुस्तक का मूल्य बहुत ही कम अर्थात् सजिल्द का मूल्य २) और अजिल्द का मूल्य १।॥) रक्खा गया है। यह पुस्तक आयुर्वेदिक परीक्षाओं में पाठ्य-विषय की भाँति काम में आ सकेगी। छोटे-से-छोटे और बड़े-से-बड़े वैद्य के यह बहुत ही काम की वस्तु है।

इस ग्रंथ की विशेषताएँ—

(१) यह अकारादि-क्रम से लिखा गया है। इसलिये किसी भी आसव-अरिष्ट का योग सहज में मिल जाता है।

(२) इस एक ही ग्रंथ के पास में होने से आसवारिष्ट-संबंधी निर्माण तथा चिकित्सा के लिये अन्य ग्रंथ की आवश्यकता नहीं रहती।

(३) एक-एक नाम के जितने आसवारिष्ट-संबंधी शास्त्रीय तथा अनुभवी विद्वान् वैद्यों के अनुभूत योग हैं, सब एक स्थान पर ही मिल जाते हैं। कौन योग उत्कृष्ट है, यह बात सहज में मालूम हो जाती है।

(४) इसके साथ में 'रोगानुक्रमणिका' भी दी गई है, जिसमें एक-एक रोग के सैकड़ों प्रयोग एक साथ दिखलाई दे जाते हैं।

(५) प्रयोगों के साथ आजकल प्रचलित मात्रा आदि का भी उल्लेख किया गया है।

(६) आसवारिष्ट-संबंधी चाहे जो प्रयोग हो, इसमें बड़ी आसानी से मिल जाता है।

(७) इसमें आसवारिष्टों के सिवा देशी टिंक्चर्स आदि बनाने की विधियाँ भी दी गई हैं।

(८) भूमिका में आसवारिष्ट-निर्माण-विधि बड़ी सरल रीति से समझाकर लिखी गई है।

(९) यह प्रत्येक वैद्य, डॉक्टर, हकीम, अत्तार, पंसारी और सर्व-साधारण, सभी के बहुत काम की वस्तु है।

इस तरह की सैकड़ों सम्मतियाँ हमारे पास मौजूद हैं। हमारे 'आयुर्वेदोद्धारक औषधालय' का बड़ा सूचीपत्र और सर्टिफ़िकेटों की लिस्ट मुफ़्त मँगाकर देखिए।

पुस्तक का द्वितीय संस्करण बढ़िया ग्लेज़ काग़ज़ पर छपकर तैयार है। शीघ्र ऑर्डर दें। सजिल्द का मूल्य २) और अजिल्द का १।॥), डाक-ख़र्च ।=) अलग देना होगा। कमीशन नहीं दिया जायगा।

प्राप्ति-स्थान—'वैद्य'-ऑफ़िस, मुरादाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नर-सिर-मौर

[श्रीपं० अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध']

वही है महि में नर-सिर-मौर,
नहीं छीनता रहता है जो कभी किसी के मुँह का कौर।
लगती बातें कह करता है वह न किसी छाती में छेद;
जिससे पड़े बला में कोई, नहीं खोलता है वह भेद।
भरी जवानी में भी उससे हो न सकेगी ऐसी भूल,
जिससे बने कलंकित जीवन, जो हो पूत भाव-प्रतिकूल।

श्रीपं० अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

पटी कपट से कभी न उसकी, उसे न छूता है छल-छंद;
करके सेवा सकल लोक की पाता है वह परमानंद।
हिंसा, प्रतिहिंसा, प्रवंचना, पामरता से रहकर दूर—
देश-जाति-हित व्रत-रत रह वह बनता है पातक-तम-सूर।
विभुवर की शुचि भक्ति मुक्ति से अधिक करेगा वह तो प्यार;
प्राणिमात्र का सुख-साधन ही होता है उसका संसार।
धरा-धाम में धर्म-प्राण ही जान सके हैं, क्या है धर्म;
वह मानव ही मानव है, जो समझ सका मानवता-मर्म।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घटा घुँघराली उठी !

[द्वितीय देव-पुरस्कार-विजेता डॉ० रामकुमार वर्मा एम्० ए०, पी-एच्० डी०]

यह घटा काली उठी !
किस अधर के चूमने को—
यह छलक प्याली उठी ?
प्रेम की-सी भ्रांति धुँधली छा रही नभ के किनारे,
और उसको यह हँसी की रेख खिल-खिलकर पुकारे—
"बरस लो परिताप आली,
सिहर हरियाली उठी।" यह घटा०
और यह सारंग भी रस-रंग में स्वर-भंग-सा है;
आज मेरा उर-विहार अनंग के भी अंग-सा है।
दृष्टि-पथ में जब छिपी
मुस्कान, मतवाली उठी। यह घटा०
अब न पल-भर सह सकूँगा बोलने की ध्वनित दूरी;
पास इतने खींच लूँगा, बात रह जाए अधूरी।
लो, तुम्हीं बरसो—समझ लूँ,
घटा घुँघराली उठी।
यह घटा काली उठी !

अशक्ति का कट्टर दुश्मन
आतंकनिग्रह गोलियाँ
शरीर में खरा जोश पैदा करके कैसा भी अशक्त पुरुष हो, उसे नौजवान बना देती हैं।
३२ गोलियों की डिब्बी की क़ीमत १)
आतंक-निग्रह-औषधालय जामनगर, काठियावाड़
लखनऊ-एजेंट—मेसर्स इंदरचंद ऐंड कंपनी, चौक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सांप्रदायिक एकता की समस्या

[श्रीयुत संतराम बी० ए०]

इस समय, जब संसार के दूसरे राष्ट्र आत्मरक्षा के लिये संगठित हो रहे हैं, हम भारतीय आपस में ही लड़-भिड़कर नष्ट होने की तैयारी कर रहे हैं। शायद ही कोई भाग्यशाली दिन ऐसा आता होगा, जब भारत के किसी-न-किसी भाग से हिंदू-मुसलमान - संघर्ष का समाचार न मिलता हो। ईद, बकरीद, मुहर्रम, होली, दशहरा आदि त्योहार तो दंगे-फ़िसादों के लिये पूर्व-संकेत-से बन गए हैं। लोग पहले से ही समझ लेते हैं कि ईद और मुहर्रम पर अवश्य रक्त-पात और सिर-फुटौवल होगा। इस सांप्रदायिक कलह ने भारत की स्वतंत्रता दूर भगा दी है। इस विद्वेष, वैमनस्य और दुर्भावना के रहते भारत में स्वराज्य हो ही नहीं सकता। इसलिये भारत के सभी हित-चिंतक सांप्रदायिक एकता के लिये चिंतित रहते हैं। परंतु आश्चर्य की बात यह है कि इस एकता को लाने के लिये राजनीतिक नेता जितना अधिक यत्न करते हैं, उतनी ही अधिक सांप्रदायिक कटुता बढ़ती है। केंद्रीय एसेंबली के उप-प्रधान श्रीयुत अखिलचंद्र दत्त ने हाल में एक वक्तव्य प्रकाशित कराया है। उसमें आप कहते हैं—

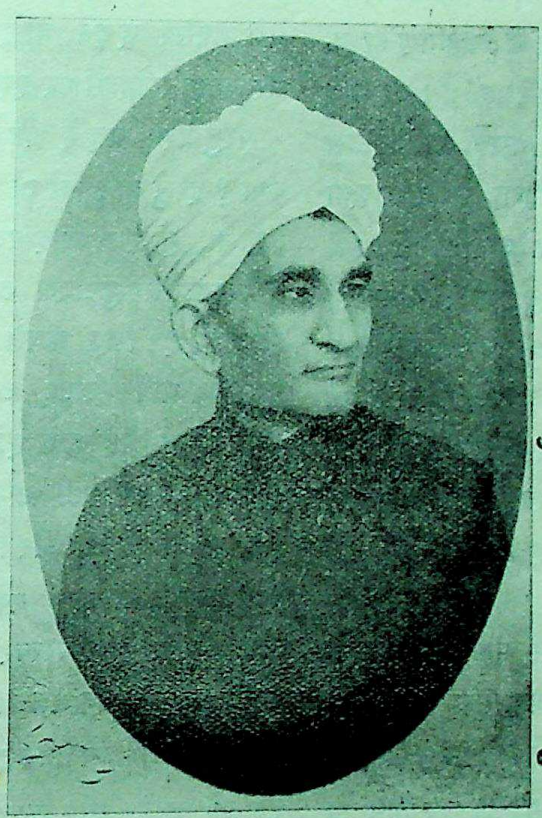

श्रीयुत संतराम बी० ए०

"हिंदू-मुसलिम-एकता का अब अंत हो चुका है। हमें यह स्वीकार करना पड़ेगा कि कलह ने भारत की स्वतंत्रता दूर भगा रही है, और यह समस्या दिन-पर-दिन तीव्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूप धारण कर रही है। हमें स्वीकार कर लेना चाहिए कि यदि एकता और सद्भाव स्थापित न हुआ, तो भारत का सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक भविष्य समाप्त है। श्रीएमरी भारत-मंत्री रहें या न रहें, औपनिवेशिक पद दिया जाय या न दिया जाय, ब्रिटेन अपना साम्राज्यवाद छोड़ें, या न छोड़ें, जर्मनी संसार के मान-चित्र से मिट जाय या न मिट जाय, हिटलर का समूचे योरप पर आधिपत्य छा जाय या न छा जाय, भारत पर पश्चिम और पूर्व से या दोनों ओर से आक्रमण हो या न हो, परंतु एक बात निश्चित है। वह यह कि जब तक हमारे घरेलू झगड़ों का निबटारा होकर शांति नहीं होती, भारत का भाग्य डूबा ही रहेगा। शेष दूसरी सब बातों के विषय में मतभेद हो सकता है, परंतु इस विषय में कोई मतभेद नहीं हो सकता कि यदि हिंदू-मुसलिम-समस्या का समाधान न हुआ, तो भारत का समूचा राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक भवन धड़ाम से धराशायी हो जायगा। अब प्रश्न यह है कि इसका समाधान कैसे हो ?"

उपरिलिखित शब्दों से पता लग जायगा कि राजनीतिक नेता सांप्रदायिक एकता को कितना अधिक महत्त्व देते हैं। परंतु खेद है, ये लोग रोग का मूल-कारण पकड़ने के स्थान में रोग के बाह्य लक्षणों को ही दूर करने के उपाय सोचते हैं। इससे रोग-शांति के स्थान में उसका प्रकोप और भी बढ़ता जा रहा है। हाल में लाहौर के अँगरेज़ी दैनिक पत्र 'ट्रिब्यून' में लाहौर-सनातनधर्म-कॉलेज के अध्यापक प्रोफ़ेसर गुलशन राय ने हिंदू-मुसलिम-ऐक्य के कुछ उपाय बताने की चेष्टा की है। परंतु दूसरे अनेक राजनीतिक विचारकों की भाँति वे भी रोग के मूल-कारण का निदान न करके उसके केवल बाह्य लक्षणों की ही तात्कालिक चिकित्सा सोच रहे हैं। इसलिये उनके बताए उपाय भी रोग का उन्मूलन नहीं कर सकते। उदाहरणार्थ आप कहते हैं कि ऐसे अवसर ढूढ़ने चाहिए, जब हिंदू और मुसलमान त्योहारों पर इकट्ठे हों।

परंतु प्रश्न यह है कि वे इकट्ठे होकर करें क्या ? इकट्ठे होने को तो वे अब भी वसंत, वैशाखी, मुहर्रम आदि पर्वों पर और रणक्षेत्र में परस्पर सिर-फुटौवल करने के लिये इकट्ठे हो जाते हैं। किंतु केवल इकट्ठा हो जाना तो कुछ अर्थ नहीं रखता, उन्हें परस्पर मिलानेवाली भी तो कोई चीज़ होनी चाहिए। प्राचीन काल से परस्पर रोटी-बेटी-व्यवहार ही वैमनस्य और शत्रुता को दूर और मित्रता तथा सद्भाव स्थापित करने का एकमात्र सच्चा उपाय चला आया है। परस्पर लड़ाई-भिड़ाई के पश्चात् जब दो विभिन्न राजाओं में संधि होती थी, तो बेटी-व्यवहार द्वारा ही वह मैत्री दृढ़ की जाती थी। आज भी दो रूठे हुए भाई एक दूसरे के यहाँ भोजन नहीं करते। उन्हें मनाने के लिये उनका सहभोज कराया जाता है। दो विभिन्न दलों के लोग यदि एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरे के हाथ का बना भोजन नहीं कर सकते, तो उनके एक जगह एकत्र होने से ही काम नहीं चल सकता। वरन् इसके विपरीत यदि वे अधिक संख्या में एकत्र होंगे, तो डर है कि ऐसे अवसर पर कहीं एक दूसरे का सिर न फोड़ डालें, जैसा मसजिद के सामने बाजा बजाते हुए जुलूस या बकरीद के अवसर पर हिंदू-मुसलमानों के इकट्ठा हो जाने पर बहुधा देखा जाता है।

कौंसिल ऑफ़् स्टेट के सदस्य सर दलाल अपनी पुस्तक 'Whither Minorities' (अल्पसंख्यक दल किधर ?) में कहते हैं—

"Social institutions, like education, marriage, or family life, can be utilized to develop a growing sense of unity and equality amongst the different peoples living in the same national home, so as to remove bitterness and antagonism. All institutions or establishments needed for the daily life of the people such as schools, means of transport, places of food and water supply, etc., must be provided on identical lines for all communities. These alone will foster and develop that sense of oneness and eleminate the sense of exclusiveness ..... If there is a genuine desire for a national solidarity, we must endeavour to prohibit and penalize every custom, usage or practice, which in any way tends to exclusiveness."

परंतु मैं नहीं समझता कि प्रो० गुलशन राय या कोई दूसरे सनातनधर्मी सज्जन हिंदू-मुसलिम के रोटी - बेटी - व्यवहार की बात तो दूर, एक ब्राह्मण को एक हिंदू शूद्र के हाथ का बना भोजन करने या एक अछूत के हाथ से गिलास लेकर पानी पीने की ही अनुमति दे सकता है, क्योंकि उसे डर है, ऐसा करने से ब्राह्मण जाति-च्युत हो जायगा। धर्म या मज़हब सांप्रदायिक दंगों का कारण नहीं। खान-पान और ब्याह - शादी पर लगाई हुई सामाजिक रुकावटें या जाति-पाँति ही इन झगड़ों के लिये उत्तरदाता है। जब तक यह जाति - भेद नहीं मिटा दिया जायगा, तब तक यही नहीं कि हिंदू और मुसलमान में मित्रता नहीं होगी, वरन् हिंदुओं के विभिन्न वर्णों और उपवर्णों में भी एकता न हो सकेगी।

हमारे नेताओं की इच्छा है कि धर्म प्रत्येक व्यक्ति की एक निजी या वैयक्तिक वस्तु समझी जाय—इसका समाज या राष्ट्र के साथ कोई संबंध न हो। परंतु जब तक जाति-भेद है, तब तक ऐसा होना संभव नहीं। कारण यह कि इस वर्ण-भेद के कारण भारत में बसनेवाली विभिन्न जातियों, उपजातियों, दलों और बिरादरियों के आर्थिक और राजनीतिक हित सम्मिलित नहीं। जो बात एक जाति या संप्र-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दाय के लिये अमृत है, वही दूसरी जाति या दल के लिये विष। कारण, सामाजिक रूप से वे एक दूसरे से उतने ही दूर हैं, जितना भेड़िया रीछ से। पाश्चात्य देशों में ऐसी सामाजिक बाधाएँ नहीं। लॉर्ड हेडले अपने को चाहे मुसलमान कहें, ईसाई लॉर्ड हैमिलटन उनका सामाजिक बहिष्कार नहीं करते। परंतु भारत में एक हिंदू कहार या जुलाहा ब्राह्मण या राजपूत के लिये, सामाजिक संबंध की दृष्टि से, एक अहिंदू है। कारण, वे आपस में न खान-पान कर सकते हैं, और न व्याह-शादी।

हिंदू-मुसलिम-एकता के लिये प्रो० गुलशन राय दूसरा उपाय यह बतलाते हैं कि धार्मिक शास्त्रार्थ बिलकुल बंद कर दिए जायँ, क्योंकि इनमें विभिन्न संप्रदायों के धार्मिक भावों को ठेस पहुँचती है, और यह कि लोगों को दूसरे धर्मों के विरुद्ध अपमान-जनक बातें कहने या लिखने से क़ानून के बल से मना कर दिया जाय। किसी के विरुद्ध अपमान-जनक बातें कहने या लिखने के पक्ष में कोई भी समझदार व्यक्ति नहीं हो सकता। परंतु प्रश्न होता है कि जिन स्मृतियों, पुराणों और दूसरे ऐसे नक़ली धर्म-ग्रंथों में शूद्रों और अछूतों के विरुद्ध परले दरजे की अपमान-जनक और हृदय-विदारक बातें लिखी गई हैं, उनके साथ प्रोफ़ेसर महोदय की राय में क्या सुलूक होना चाहिए। उदाहरणार्थ, व्यास-स्मृति कहती है—

वर्द्धिकनापितो गोप आशापः कुंभकारकः।
वणिक्किरातकायस्थमालाकारकुटुम्बिनः।
वरटोमेदचाण्डालदासश्वपचकोलकाः ॥ ११ ॥
एतेऽन्त्यजाः समाख्याता ये चान्ये च गवाशनाः।
एषां संभाषणात्स्नानं दर्शनादर्कवीक्षणम् ॥ १२ ॥
(व्यासस्मृति, प्रथम अध्याय)

अर्थात् नाई, अहीर, कुम्हार, बनिए, किरात, कायस्थ, माली, चांडाल, दास, भंगी, कोलक आदि अंत्यज हैं। इनसे बात करने पर नहाना चाहिए, और इन पर दृष्टि पड़ जाय, तो सूर्य का दर्शन करना चाहिए; तभी मनुष्य शुद्ध होगा।

क्या ऐसी स्मृतियाँ और धर्म-ग्रंथ रखते हुए राष्ट्र के विभिन्न दलों में प्रेम, मैत्री और सद्भावना रह सकती है? क्या ऐसी गंदगी के पुलिंदों का कथन-मात्र शूद्रों द्वारा जलाया जाना क़ानून की दृष्टि में दंडनीय अपराध ठहराया जायगा, क्योंकि इससे द्विजों के धार्मिक भावों पर ठेस पहुँचेगी, या क्या गवर्नमेंट को परामर्श दिया जायगा कि इस प्रकार की जाति-भेद-मूलक, ऊँच-नीच का प्रचार करनेवाली पुस्तकें ज़ब्त कर ली जायँ? सांप्रदायिक एकता का प्रश्न उतना सरल नहीं, जितना हमारे राजनीतिक नेताओं को ऊपर से दिखलाई देता है। इसकी जड़ें बहुत गहरी हैं। जब तक पूर्ण क्रांति न हो, इसका समाधान संभव नहीं। कारण यह कि जाति-भेद रखते हुए हिंदू और मुसलमान के बीच क्षणिक शांति हो जाने पर भी ब्राह्मण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और ब्राह्मणेतर, बनिए और जाट, भूमिहार और कायस्थ के झगड़े बराबर जारी रहेंगे। अछूतों में जागृति आ रही है। उनके हाथ में ज़रा शक्ति आते ही द्विज और अछूत का वह दंगल होने लगेगा कि उसके सामने हिंदू और मुसलमान के संघर्ष कोई चीज़ न रहेंगे।

सफल जीवन का महामंत्र

बाँझ स्त्रियाँ

१०० में ९९ स्त्रियाँ 'कनसैप्टो' के सेवन से पुत्र उत्पन्न कर चुकी हैं। सब डॉक्टरों का कहना है कि बाँझपन दूर करने के लिये इससे बढ़कर अन्य कोई ओषधि नहीं। केवल १ शीशी सेवन करके ही ख़ाली गोद में पुत्र खेलाएँ। क़ीमत ५।), डाक-ख़र्च ॥)

हिस्टीरिया का अचूक इलाज

इसके सेवन से हिस्टीरिया के दौरे, रोगी का उछलना, कूदना, चिल्लाना, रोना, पागलपन, बेहोशी आदि एक सप्ताह में ही दूर हो जाते हैं। क़ीमत २), डाक-ख़र्च ॥)

विद्युत्-तैल

इसमें बिजली-जैसी ताक़त भरी हुई है। यह तत्कालीन ज़रूरत की चीज़ है। ज़रूरत के ख़ास समय से थोड़ी देर पहले इस्तेमाल करने से अर्थात् एक ही बार सेवन करने से गए-बीते नामर्द की नपुंसकता भी जाती रहती है, और ४ मिनट में ही तरुण युवक के समान मर्द बन जाता है। शिथिल नसों की कमज़ोरी को दूर करके अपना गुण दिखा देना यह इसका तत्कालीन चमत्कार है। वास्तव में वृद्ध पुरुषों का अचूक शस्त्र और नव-विवाहित नामर्दों का आधार है। जीवन का वसंत और प्रकृतिदेवी की अमूल्य भेंट है। क़ीमत २), डाक-ख़र्च ॥)

अमर सुंदरी

रक्त-प्रदर, श्वेत-प्रदर, गर्भाशय की पीड़ा, गर्भ न रहना, गर्भ का गिर जाना, मासिक धर्म का अनियमित होना, दर्द या कष्ट के साथ होना, सिर-दर्द, अशक्ति, हल्का ज्वर, जी घबड़ाना, सोम-रोग, रक्त की कमी आदि रोगों के लिये एकमात्र अव्यर्थ महौषधि है। इसके सेवन से शरीर सुंदर, हृष्ट-पुष्ट और फुर्तीला हो जाता है। क़ीमत ॥।=), डाक-ख़र्च ॥)

गर्भ-रोक

निर्धनता व स्त्री की बीमारी के कारण और संतान पैदा न करनी हो, तो इस दवा का सेवन करें। इससे स्त्री के गर्भ नहीं रहता, और सांसारिक सुख को बंद करने की ज़रूरत भी नहीं होती। सर्वथा हानि-रहित दवा है। क़ीमत २), डाक-ख़र्च ॥)

ब्रेस्टोन

ज्यों मोर अपने पाँवों को देखकर रो देता है, त्यों स्त्रियाँ भी अपने ढीले, गिरे तथा लटके स्तनों को देखकर निराश हो जाती हैं। यह ४५ वर्ष तक की स्त्रियों के लटके हुए ढीले स्तनों को फिर से षोडशीय नवयुवती के समान सुंदर, कठोर, गोल तथा छोटे बना देता है। क़ीमत केवल २॥), डाक-ख़र्च ॥)

पता—रसायन-फ़ार्मेसी,
(सु) संगरिया (बीकानेर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'सेवाधर्मः परमगहनो मुनीनामपि दुर्लभः'

(छतरपुर में मेरे अट्ठारह वर्ष)

[श्रीयुत गुलाबराय एम्० ए०]

नौकरी की जड़ें बहुत गहरी नहीं बतलाई जातीं। देशी रियासतें तो अस्थायित्व के लिये बदनाम हैं। कुछ लोगों का कथन है, वहाँ के मुलाज़िम घड़ी-घड़ी की ख़ैर मनाते हैं। ताँगे के आविष्कार के संबंध में एक किंवदंती है कि उसे पहलेपहल एक रियासत के दीवान ने बनवाया था, जिससे वह राज-दरबार से लौटते समय पीछे की ओर मुँह किए हुए यह देखता रहे कि कहीं कोई सवार या हरकारा उसकी बर-ख़ास्तगी का परवाना तो नहीं ला रहा है। बात सोलह आना ऐसी नहीं। 'बद अच्छा, बदनाम बुरा।' कम-से-कम स्वर्गीय हिज़ हाइनेस महाराजा सर विश्वनाथसिंहजू देव के समय (और शायद अब भी) छतरपुर-राज्य अस्थायित्व का अपवाद बना हुआ है।

श्रीयुत गुलाबराय एम्० ए०

मैंने कई बार रस्सा तुड़ाकर भागने की कोशिश की, परम विनम्र भाव से महाराजा साहब से कहा—"जो काम मैं करता हूँ, उसे कोई मूर्ख से भी मूर्ख अधिक सफलता के साथ कर सकता है, मुझे घर जाने की छुट्टी दीजिए।" किंतु उन्होंने यही कहा—"तुम बड़े मूर्ख हो, जो ऐसा सोचते हो। प्रत्येक काम में व्यक्तित्व की छाप रहती है। प्राइवेट सेक्रेटरी का काम तो बहुत भारी है, मुझे जूते पहनाने का काम भी जो करता है, वही कर सकता है।"

मेरा तो यह अनुमान है कि देशी रियासतें पूर्णरूपेण अपरिवर्तनवादी (Conservative) होती हैं। वहाँ बंधेज लगते देर नहीं होती, और अगर कोई बंधेज बँध गया, तो शंभु-शरासन या अंगद के पैर की भाँति अटल हो जाता है, जिसकी स्थिति में परिवर्तन लाने के लिये राम या रावण-सा ही विश्व-विख्यात योद्धा चाहिए। यदि श्रीमान् महाराजा साहब रसोई में एक बार गुड़ की डली माँग लें, तो चार या पाँच वर्ष तक सेर-भर गुड़ का बंधेज लगा रहना कोई आश्चर्य की बात नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नौकरी तो क्या, वहाँ की मेहमानी में भी स्थायित्व था। 'एक रोज़ का मेहमान, दूसरे दिन का इंसान, तीसरे दिन का बेईमान और चौथे दिन का हैवान' का मसला देशी रियासतों पर नहीं लागू होता। वहाँ के मेहमान समय की अनंतता में विश्वास रखते हैं। मेरी नियुक्ति के पश्चात् भी डेढ़ वर्ष तक मेरी 'लाग' (भोजन-सामग्री) ईश्वर के प्रेम की भाँति नित्यप्रति सूर्योदय के साथ आती रही।

ब्राह्मण - वृत्ति धारण करते हुए भी मुझमें पूरा ब्राह्मणत्व नहीं आया था। मेरा उदर प्रेम-पयोधि की भाँति नाप - जोख के बाहर न था, जिसके संबंध में श्रीअन्नपूर्णानंदजी के शब्दों में कहा जाता है—

दावा बहुत है इल्मे-रियाज़ी में आपको ;
बाम्हन का पेट आके ज़रा नाप दीजिए।

भोजन-सामग्री सम्मान के अनुरूप निश्चित होती थी, किंतु सम्मान पाने पर जठराग्नि प्रायः मंद पड़ जाती है। 'धनञ्जये दीप्यति जाठराग्निः' पूर्ण प्रज्वलित होने पर भी डेढ़ सेर आटा और डेढ़ पाव घी भस्म नहीं कर सकती थी। उससे 'पीर-बबर्ची-भिश्ती-ख़र'-स्वरूप ग़रीब पंडा का अवश्य भला होता था, किंतु मैं इतना ब्राह्मण-भक्त न था कि उसकी चिंता न करूँ। दार्शनिक के नाते कुछ दिनों तो 'घृताधारं पात्रं वा पात्राधारं घृतम्' की समस्या की भाँति मुझे भी यह प्रश्न व्यग्र करता रहा कि मेरा वेतन मुझे भोजन - सामग्री दक्षिणा के स्वरूप मिलता है, या वह रोज़ का आटा - दाल: वेतन के परिशिष्ट रूप में प्राप्त होता है ? तर्क-शास्त्र के विद्यार्थी को अन्वय-व्यतिरेक के सहारे इस निर्णय पर पहुँचने में देर न लगी कि भोजन-सामग्री तनख़्वाह के साथ लगी है, किंतु उसका आवश्यक अंग नहीं, वह छिपकली की पूँछ की भाँति सहज में अलग हो सकती है। मैंने महाराज और दीवान की ख़ातिर-ख़ुशामद कर भोजन-सामग्री की रक़म तनख़्वाह में शामिल करा ली। मेरी तनख़्वाह सत्तर से एकदम सौ हो गई, और मैं महाराज के दार्शनिक सहचर (Philosophical Companion) का गौरवान्वित पद छोड़कर उनका प्राइवेट सेक्रेटरी बन गया, 'गा-बजाकर काठ में पैर देना' स्वीकार कर लिया। क्लर्क, मुहर्रिर, बिल, रजिस्टर, टाइपराइटर के आडंबर से सुसज्जित होकर मैं दफ़्तरी (यानी दफ़्तर से संबंध रखनेवाला) बन गया। पीछे मुझे श्रीशिवकुमार शर्मा, जिन्हें हम लोग गोस्वामीजी कहा करते हैं, असिस्टेंट मिले, लेकिन मैं अपनी अधिकार - लोलुपता - वश उन्हें पर्याप्त काम न दे सका। यह मेरे और उनके, दोनों के ही खेद का विषय रहा।

वैसे तो अट्ठारह वर्ष में अट्ठारह ही शिशिर-वसंत आए होंगे, लेकिन हरएक वसंत नई छटा लेकर आता था। रियासत में रहकर इतना मूर्ख न रहा कि मुझे वसंत की भी ख़बर न रहे, क्योंकि उस रोज़ धूमधाम से शिवजी पर जल चढ़ता और नारद-मोह का नाटक भी खेला जाता था। सूर्य और चंद्रदेव अपनी स्वर्ण-रजत-रश्मियों के ताने-बाने से नित्य नई समस्याओं का जाल बुन देते थे।

प्राइवेट सेक्रेटरी के नाते मेरी निजी ड्यूटियाँ तो थी हीं, किंतु तबेले के बंदर की भाँति दूसरों की अला-बला भी मेरे सिर पड़ जाती थी। सब बात के लिये 'ऐसा क्यों ?' का उत्तर मुझे ही देना पड़ता, यद्यपि मेरे पास किसी अफ़सर का वकालतनामा न था। बात यह थी कि दो-एक बार मैंने अफ़सरों की वकालत स्वेच्छा-पूर्वक कर दी थी, क्योंकि मैं उनकी कठिनाइयाँ समझता था। इस वकालत के लिये कोई समय निश्चित न था। महाराज सुनते सबकी थे, करते अपने या अफ़सरों के मन की। किंतु उस अफ़सर को, जिसके सार्वजनिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृत्य जनता की समालोचना का विषय बने हों, उन आलोचकों से मिला अवश्य देते थे। इससे बहुत कुछ सफ़ाई हो जाती थी।

मेरे कर्तव्य दो प्रकार के थे—एक खासगत से संबंध रखनेवाले, दूसरे रियासत से संबंध रखनेवाले। खासगत से संबंध रखनेवाले कामों में महाराज के पत्र-व्यवहार में मदद देना, बिलों और पर्चों पर दस्तख़त करना, मेहमानों की ख़ातिर और उन्हें महाराज से मिलाना, मोटरों, घोड़ों और गायों के ख़र्च का हिसाब रखना आदि बहुत-से काम शामिल थे। रियासत से संबंध रखनेवाले कार्यों की भी सूची कुछ कम नहीं। पत्र-लेखन में महाराज स्वयं बड़े कुशल-हस्त थे। लेख उनका बड़ा सुंदर था। फिर भी आवश्यक चिट्ठियों का मसौदा तैयार कराकर वह अपने प्राइवेट सेक्रेटरी को गौरव दे देते थे। महाराज के पत्र-लेखन का कार्य गरमियों में ४ बजे से और जाड़ों में ५ बजे से प्रारंभ होता था। महाराज स्वयं चिट्ठी पर मुहर लगाते थे। किंतु कभी-कभी यह काम मेरे सुपुर्द हो जाता था, तो मुझे मसौदा तैयार करने से भी अधिक दुष्कर मालूम होता था।

प्राइवेट सेक्रेटरी का सबसे कठिन कार्य था मेहमानों की ख़ातिरदारी और बिदाई। यद्यपि इस कार्य का अधिकांश भार पंडित माधव मिश्र और पंडित रामनारायण पर रहता था, तथापि इस कार्य में गुत्थियाँ पड़ जाने पर उन्हें सुलझाने के लिये प्राइवेट सेक्रेटरी का ही आवाहन होता था। महाराज के अतिथियों के आने की तो तिथि निश्चित रहती थी, किंतु जाने की सदा अनिश्चित। तिथि को पीछे हटाने में तिथि, वार, योग, करण, व्यतीपात, चंद्रमा बहुत कुछ सहायता देते थे। कभी-कभी धोबी कपड़ा देने में देर कर सहयोग कर देता था। बहुत-से लोगों का मेहमानी एक तरह का पेशा बन गया था। वे छ महीने रहकर साल-भर का बंदोबस्त कर लेते थे। रियासत उनके लिये कामधेनु थी। महाराज भी इस फ़िज़ूलख़र्ची से ख़ुश न थे, किंतु आँखों का शील-संकोच नहीं तोड़ना चाहते थे। बेमुरव्वती का काम दीवान और प्राइवेट सेक्रेटरी का था। वे लोग भी बिना शांति भंग किए जितनी काट-छाँट कर सकते थे, करते थे। ऐसे मेहमानों में आत्मसम्मान की मात्रा बहुत अधिक थी। उसकी रक्षा करना हम लोगों का धर्म था।

योरपियन मेहमानों में कुछ तो अफ़सर लोग होते थे, और कुछ ग़ैर अफ़सर। यद्यपि अफ़सरों के आने पर रियासत के अफ़सरों की दौड़-धूप और चिंताओं का भार बहुत बढ़ जाता था, तथापि उनके आने और जाने की तिथि निश्चित होने के कारण यह भार कुछ हलका हो जाता था। ये लोग मिष्टभाषी, कार्य-कुशल, वाक्पटु, क़ायदे-क़ानून के पाबंद, मानापमान के संबंध में संवेदनशील, अपने मतलब के चौकस और प्रायः राजा के हित-चिंतक होते हैं। अधिकार-प्रियता, शिकार और कैंप की सुविधा इनकी कुछ कमज़ोरियाँ कही जा सकती हैं। सौभाग्य-वश महाराज की वैष्णव-प्रवृत्तियों के कारण मुझे शिकार में सहयोग नहीं देना पड़ा।

ग़ैर-सरकारी मेहमानों में हरएक टाइप के लोग मिलते हैं। कुछ तो प्रोफ़ेसर मलबेनी और फ़ादर डगलस के-से साधु-वृत्तिवाले, जिन्हें नर-भूषण, लोचन-सुखदायक कह सकते हैं। वे न ऊधो के लेन में थे, न माधो के देन में, सदा प्रसन्न रहते थे। कुछ लोग गेस्टहाउस को पाकशास्त्र की प्रयोगशाला बनाए रखना ही अपना दैनिक कर्तव्य समझते थे। एक महाशय ने तो कटग्लास के एक अदद की इलाज़त लेकर अपने स्वार्थ से ग्लास का समूहवाचक अर्थ (Collective sense) लगाकर रियासत को उसकी रक्षा के भार से मुक्त करना चाहते थे। एक देवी खजराहे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की प्रस्तर-मूर्तियों को अपनी एकांत-साधना का विषय बनाना चाहती थीं। ऐसे लोगों से झगड़ा करना भी प्राइवेट सेक्रेटरी के कर्तव्यों में ही था।

यद्यपि जप, पूजा और अनुष्ठान का भार मेरे ऊपर न था, तथापि उसके छींटों से मैं अछूता न रहता था। उस विभाग का ख़र्च देखकर तो मेरी वणिग्बुद्धि कभी-कभी विद्रोह करने लगती थी, फिर भी इतना संतोष था कि सब कार्य विधिवत् होता था। यज्ञ-संबंधी शास्त्रोक्त पात्रों का भी दो-एक बार आयोजन करना पड़ा था।

जिस अधिकार से मैं अपने को स्थायी समझता था, उसी अधिकार से परमा मेहतर भी वहाँ अचल था। दो बार सारी तपस्या को तुला में रखकर ही मैं दो मोटर-ड्राइवरों को निकलवा सका। हर महीने एक टायर और चार ट्यूब का उन लोगों ने बंधेज-सा बाँध लिया था। उनका मील नापने का यंत्र सदा आउट ऑफ़् ऑर्डर रहता था। उनकी ऐसी कोई आवश्यकता न थी, जो मोटरकार से पूरी न हो सके। मोटर के हुड के लिये नारियल का तेल मिलता था, जो उनके केश-कलाप को सँभालने में भी काम आता था। मोटर के आबरों के कुरते या चद्दरें बनती थीं। एक मोटर-ड्राइवर को निकालने में मुझे ही पछताना पड़ा। उसके स्थान में एक कम तजुर्बेकार ड्राइवर रख लिया। उसने महाराज की सोलह हज़ार की मोटर झाँसी के पास नाव से नदी में गिरा दी। कोई जान ख़तरे में नहीं आई, यही ग़नीमत थी। फिर भी महाराज ने इतना ही व्यंग्य किया—"और बदल लो ड्राइवर!" मेरे ऊपर सैकड़ों घड़े पानी पड़ गया। एक्सीडेंट तो तजुर्बेकार से भी होते हैं, किंतु उस समय ड्राइवर बदलना भूल ही सिद्ध हुई। घर के नौकरों का तजुर्बा शायद बाबा सूरदासजी को भी था। उन्होंने अपने को मुँह-लगे नौकर की तरह ढीठ कहा है—"तुम प्रताप-बल बदत न काहू, निडर भए घर-चेरे।" महाराज के यहाँ पूर्ण नौकरशाही थी, लेकिन इतनी ग़नीमत थी कि वह अपने-ही-अपने विभाग में स्वतंत्र थे, उनका राजकार्य में कोई हस्तक्षेप न था। हरएक चीज़ का बंधेज था, चाहे उसका ख़र्च हो या नहीं। प्राइवेट सेक्रेटरी को सबसे वाग्युद्ध कर अख़ीर में समझौता करना पड़ता था। यह जानते हुए भी कि सोडावाटर-मशीन में घी की चिकनाई (Lubrication) नहीं दी जाती, पानी के पुरोहितजी को हर सप्ताह आध पाव घी देना ही श्रेयस्कर समझता था।

प्राइवेट सेक्रेटरीशिप के अवसर में मेरे द्वारा कई बार मनोरंजक भूलें भी हुई हैं। एक बार आगरे से तार देकर बीस सेर मोठ की दाल मँगवाई। मेरा अधिक दोष तो न था, किंतु आगरे से ही मँगाने के कारण रियासत के एक हित-चिंतक ने, जो वहाँ रहते थे, उसे दाल-मोट समझा। बीस सेर दालमोट आ गई। ठिकाने लगाना कठिन पड़ गया।

महाराज रहते तो बहुत सादे वेश में, लेकिन चटक-मटक पसंद करते थे। सनवीम का एडवर्टिज़्मेंट देखकर वह यह समझे कि उसका रंग सुनहला होगा, किंतु मँगा लेने पर बिलकुल भँवर-काली निकली। बड़ी हँसी रही। महाराजा साहब ने नामों की निरर्थकता बताते हुए 'कंडा बीने लच्छमी' वाली कहावत सुनाई।

यह सब फ़िज़ूलख़र्ची होते हुए भी महाराज बड़ी फ़िज़ूलख़र्चियों में सचेत रहते थे। बाहर के सौदागर आते थे। हज़ारों का सामान पसंद होता था। कई दिन सामान की उलट-फेर होती थी, आख़िर लिया उतना ही जाता था, जितनी गुंजाइश होती थी। ख़र्च के संबंध में वह हम लोगों की राय मान्य समझते थे। एक बार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक अँगरेज़ सौदागर ने उनसे पूछा—"आप महाराजा हैं, या आपका प्राइवेट सेक्रेटरी ?" महाराज ने हँसते हुए उत्तर दिया—"हूँ तो मैं ही महाराजा, किंतु जहाँ तक रुपए-पैसे का मामला है, मैं अपने दीवान और प्राइवेट सेक्रेटरी के शासन में चलना पसंद करता हूँ, ताकि आख़िर में मैं इन्हें ज़िम्मेदार ठहरा सकूँ।" सौदागर अपना-सा मुँह लेकर रह गया।

रियासत की नौकरी में यदि कठिनाई थी, तो केवल इतनी कि अक्सर विपरीत हित के लोगों को प्रसन्न रखना पड़ता था। अपरिवर्तनशील पंडित और साधुओं तथा प्रगतिशील दीवानों और पोलिटिकल अफ़सरों को एक साथ ख़ुश रखना कठिन कार्य था। यद्यपि दीवान और महाराजा, महाराजा और पोलिटिकल एजेंट में कोई विशेष संघर्ष तो नहीं रहता था, तथापि इन दोनों की रुचि के बीच में संतुलन रखकर ही कोई उच्च राजकर्मचारी सफल हो सकता है। मैं नहीं कह सकता, इस संतुलन में मैं कहाँ तक सफल रहा! महाराज के देहावसान के पश्चात् मुझे अवकाश ग्रहण करना पड़ा, क्योंकि उनके साथ ही उनके प्राइवेट सेक्रेटरी का पद भी गया। मुझे अट्ठारह वर्ष में बीस वर्ष के हक़ की पेंशन मिल गई। इसके लिये मैं अधिकारियों का अनुगृहीत हूँ।

क्या आप धन की तलाश में हैं ?

तो क्यों नहीं घर-बैठे ५००) माहवार कमाते ?

अमेरिकन न्यू गोल्ड की एजेंसी लेकर आप ५००) माहवार कमा सकते हैं। यह सोना कसौटी पर असली सोने का ऐसा रंग देता है, और असली सोने की तरह कूटा और पिघलाया जा सकता है। इसका रंग ख़राब नहीं होता। आजकल के फ़ैशन के हर प्रकार के जेवरात हमारे स्टाक में मौजूद हैं, आप अपने शहर की ऐजेन्सी के लिये आज ही दरख़्वास्त करें। तैयारशुदा ज़ेवरात की मुकम्मिल लिस्ट और ४ तोला अमेरिकन न्यूगोल्ड, एक जोड़ी फ़ैंसी चूड़ी, एक अँगूठी (बंबई-फ़ैशन), एक जोड़ी बुंदे (न्यू डिज़ाइन) नमूने के लिये भेजे जाते हैं। होशियार और तजुर्बेकार एजेंटों को हर प्रकार की सहूलियत दी जायगी। आज ही एजेंसी के नियम मँगाइए।

पता—अमेरिकन न्यू गोल्ड-सप्लाई-कंपनी, नं० ३७, कानपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजस्व क्या है ?

[श्रीयुत प्रोफ़ेसर दयाशंकर दुबे एम्० ए०, एल्-एल्० बी०]

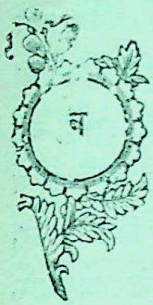

बड़े दिन की छुट्टियाँ आज से प्रारंभ हो गईं। स्कूल, कॉलेज और विश्वविद्यालय लगभग डेढ़ सप्ताह के लिये बंद हो गए। विद्यार्थी-जगत् में एक चहल-पहल आ गई। जो लोग दूर के निवासी हैं, वे अपने घरों को लौट रहे हैं। जिन लोगों को अपने नगर में ही पढ़ने का सुबीता है, वे भी इस छुट्टी को इच्छानुसार बिताने के लिये, अपने दोस्तों के साथ, घूमने निकल पड़े हैं।

मोहन भी अपने चाचा के साथ घर जा रहा है। उसका इरादा मंगलपुर भी जाने का है। वहाँ वह अपने मामा राजाराम से मिलने जायगा। उसके चाचा बिहारी भी उसके साथ रहेंगे। छुट्टियाँ समाप्त होते-होते ये लोग फिर एक साथ इलाहाबाद लौट आएँगे।

स्टेशन पर टिकट-घर के पास खड़े होकर जब मोहन टिकट के दाम देने लगा, तो टिकट-बाबू ने कहा—"चार आना और लगेगा।"

मोहन—"क्यों ? क्या किराया बढ़ गया ?"

टिकट-बाबू—"नहीं, यह महायुद्ध के कारण अलग से लिया जाता है।"

मोहन ने चार आने अधिक देकर टिकट ले लिया। दोनो प्लेट-फॉर्म की ओर चल पड़े। वहाँ पहुँचते-पहुँचते गाड़ी आ गई, और दोनो एक डब्बे में जा बैठे। कुली ने बिस्तर और सामान रख दिया। थोड़ी देर में गाड़ी चल दी।

मोहन अब दरी बिछाकर आराम से बैठा था। एकाएक बिहारी ने पूछ दिया—"क्या सोच रहे हो मोहन ?"

मोहन—"यही कि युद्ध चलाने के लिये यह पैसा हमसे ज़बरदस्ती वसूल किया जाता है !"

बिहारी—"शायद तुम्हारे कथन का अभिप्राय यह है कि सरकार को ऐसा करने का अधिकार नहीं ?"

अत्यंत गंभीर होकर मोहन बोल उठा—"अगर मैं ऐसा सोचूँ, तो सर्वथा उचित है।"

बिहारी—"सरकार के सामने संकट है। अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये उसे ऐसा करना पड़ता है।"

मोहन—"किंतु जिस समय बजट पास हो रहा था, उस समय भी क्या यह बात हमको मालूम होने का अवसर दिया गया था कि सरकार जन-साधारण से, इस तरह ज़बरदस्ती, युद्ध के लिये टैक्स वसूल करेगी ? मान लिया, उसका खर्च बढ़ गया है; किंतु इससे क्या ? खर्च तो सदा आमदनी के अनुसार करना चाहिए।"

बिहारी इस बात पर मुसकराने लगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोहन उसी समय बोल उठा—"क्या मैं कोई भूल कर रहा हूँ चाचा ?"

बिहारी—"भूल ही मैं उसे कहूँगा। किंतु यह ऐसी है, जिसका दायित्व तुम्हारे ऊपर

श्रीयुत प्रोफ़ेसर दयाशंकर दुबे एम्० ए०, एल्-एल्० बी०

नहीं। इस विषय का ज्ञान प्राप्त करने का अवसर अभी तक तुम्हें मिला ही कहाँ।"

मोहन—"मैं समझा नहीं, आप क्या बतलाना चाहते हैं। अर्थशास्त्र के मुख्य-मुख्य सिद्धांत मैं समझ ही चुका हूँ। फिर भी इस संबंध में मुझसे कोई भूल हो रही है, यह मैं समझ नहीं पाया। ख़ैर, आप साफ़-साफ़ बतलाइए। यदि मैंने कोई ग़लती की है, तो उसे सुधार लूँ, और भविष्य के लिये सावधान हो जाऊँ।"

बिहारी—"समाज में रहकर मनुष्य जिन ढंगों से आमदनी और ख़र्च करता है, शायद तुम जानते ही हो। किंतु अभी तुम्हें यह जानने का अवसर हीं मिल न सका कि सरकार किस प्रकार, किन सिद्धांतों के अनुसार, आमदनी और ख़र्च करती है।"

मोहन—"हाँ, यह तो अभी तक..... । लेकिन क्या इसके लिये अर्थशास्त्र में कोई अलग विभाग है ?"

बिहारी—"क्यों नहीं, उस विभाग का नाम है राजस्व।"

मोहन चुप रह गया। बिहारी ने कहा—"मनुष्य के लिये आवश्यक होता है कि वह अपना ख़र्च आमदनी के अनुसार करे; किंतु सरकार के लिये यह सिद्धांत न केवल अमान्य होता है, वरन् अनुचित भी समझा जाता है। उसके लिये तो उचित या आवश्यक यही होता है कि ख़र्च देखकर आमदनी करे।"

मोहन "किंतु यह तो एक विचित्र बात है। प्रजातंत्र के इस युग में, सरकार के लिये, ऐसी रियायत अर्थशास्त्र स्वीकार कैसे करता है ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिहारी—"बात यह है, मनुष्य के विकास के लिये आवश्यक है कि वह ऐसे ढंग से आमदनी और खर्च करे, जिसमें बचत अवश्य हो। परंतु सरकार अगर बचत करने लगे, तो उसका मतलब यह होगा कि उसने जन-साधारण की उन्नति करने में कंजूसी से काम लिया। इसीलिये सरकार के लिये बचत करना न केवल अनावश्यक, प्रत्युत अनुचित भी समझा जाता है। कभी-कभी इस नियम का अपवाद भी होता है। जब अयाचित रूप से अनायास सरकार की आमदनी बढ़ जाती है, सरकार कुछ टैक्स माफ़ कर देती है। इसी प्रकार जब उसे बजट के बाहर खर्च करना पड़ता है, वह क़र्ज़ भी लेती है। क़र्ज़ लेने और चुकाने के लिये कुछ सिद्धांत होते हैं, और उनका वर्णन भी राजस्व में किया जाता है।"

ट्रेन चली जा रही थी। डब्बे के कुछ यात्री बिहारी के निकट बैठे थे। इसी समय उनमें से एक बोल उठा—"आपने जो बातें बतलाईं, यह मान लेने पर भी कि वे अपनी जगह पर ठीक हैं, मजबूर होकर यह कहना ही पड़ता है कि जनता से लड़ाई के लिये जबरदस्ती कर वसूल करना सरासर अन्याय है।"

बिहारी—"राजनीतिक दृष्टि से आप चाहे जो कहें, किंतु जब आप अर्थशास्त्र की दृष्टि से इस विषय पर विचार करेंगे, तो आपको यह मानना ही पड़ेगा कि सरकारें ऐसा करती हैं, उन्हें ऐसा करना पड़ता है। सरकार पर तो देश की रक्षा का भार होता है। यदि वह ऐसा करे, विशेष रूप से संकट-काल उपस्थित हो जाने पर, तो अनुचित नहीं। रह गई बात यह कि जब साधारण जनता की आर्थिक दशा अत्यधिक गिरी हुई हो, तब उससे इस तरह टैक्स वसूल करना अनुचित है। किंतु यहाँ प्रश्न जनता की आर्थिक दशा में सुधार करने का तो है नहीं। यहाँ तो प्रश्न अधिकार का है। सो जो लोग अर्थशास्त्र के राजस्व-विषय से परिचित हैं, वे इसे अवश्य मान्य समझेंगे। मैंने ऐसे सैकड़ों ग्वाले, मछुहे, शाक-भाजी की खेती करनेवाले किसान देखे हैं, जो गंगा-पार के गाँवों से अपनी-अपनी चीज़ें बेचने के लिये आते हैं, और जिन्हें चीज़ों पर जो चुंगी ली जाती है, वह बहुत खलती है, वे भी सोचते हैं, सरकार चुंगी लेकर हम ग़रीबों का खून चूसती है! चुंगी की दरों की कमी-बेशी पर हम विवाद कर सकते हैं; किंतु यह सोच लेना कि चुंगी की मद ही अन्यायपूर्ण है, एक नादानी ही कही जायगी। यही स्थिति राजस्व की है। उसके सिद्धांतों पर विवाद उठाया जा सकता है, किंतु यह कहना कि कर लेना ही सरासर अन्याय है, एक तरह की मूर्खता होगी! ये चीज़ें आज की नहीं, जिन मस्तिष्कों ने इन्हें सोचकर निकाला है, उनकी दृष्टि में भी जनता के हित की कामना थी। सोचने को हम चाहे जो कुछ सोच लें, और कहने को चाहे जो कुछ कह डालें, किंतु शास्त्रीय ज्ञान के लिये यह आवश्यक है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहले उसकी छान-बीन अच्छी तरह कर ली जाय, तब कोई बात उठाई जाय।"

मोहन तो अब भी चुप था; क्योंकि वह राजस्व - विषय पर अधिक-से-अधिक सुनने का अभिलाषी था, किंतु वह सहयात्री चुप न रह सका। बोला—"अच्छा, तो अब यह बतला दीजिए कि राजस्व है क्या चीज़, और उसे जान लेना आप हमारे लिये आवश्यक क्यों समझते हैं?"

बिहारी—"सरकार किस प्रकार आमदनी और ख़र्च करती है, इस विषय में उसके कौन-कौन-से सिद्धांत होते हैं, अर्थशास्त्र के अंतर्गत जिस विभाग में इसका वर्णन किया जाता है, उसे राजस्व कहते हैं। और, सर्व-साधारण जनता के लिये इस विषय की जानकारी रखना इसलिये आवश्यक है कि वह जान सके कि जनता से जो द्रव्य लिया जाता है, उसका सद्व्यय होता है या नहीं।"

तब आश्चर्य के साथ सहयात्री बोला—"अच्छा, यह बात है! तब तो यह हमारे लिये दरअसल बहुत ज़रूरी है।"

गाड़ी स्टेशन-पर-स्टेशन पार कर रही थी। हाल में सिराथू-स्टेशन गुज़र चुका था। रात हो गई। लोग धीरे-धीरे आराम करने की स्थिति में आने लगे। थोड़ी देर चुप रहने के बाद मोहन ने पूछा—"अच्छा चाचा, राजस्व में यह भी विचारणीय होता होगा कि सरकार अपने कर्तव्य का पालन कहाँ तक कर रही है?"

बिहारी—"क्यों नहीं। जनता से कर वसूल करना, फिर उसे सद्व्यय के रूप में ऐसे अच्छे और उपयोगी परिणामों में वापस करना, जिससे जनता यह अनुभव करे कि टैक्स के रूप में जो द्रव्य उससे लिया गया है, अगर वह उसे न देकर उसकी बचत भी कर लेती, तो उससे उतना लाभ नहीं हो सकता था, जितना उसे राज्य द्वारा ख़र्च होने से मिला है, सरकार का कर्तव्य होता है।"

मोहन—"जो लोग व्यवस्थापिका सभा के सदस्य होते हैं, वे इस संबंध में सरकार को सावधान करते रहते होंगे?"

बिहारी—"निस्संदेह। प्रजा-पक्ष के सदस्य ऐसी ही चेष्टा में निरत रहते हैं। उन्हें ध्यान रखना पड़ता है कि सरकारी आय का अधिकांश रुपया साधारण श्रेणी के व्यक्तियों से ही वसूल किया जाता है। अतः उसकी एक-एक पाई का व्यय उचित रूप से होना चाहिए। जो सरकारें प्रजा-पक्ष की होती हैं, वे स्वतः इस विषय में सतर्क रहती हैं।"

मोहन—"तब तो चाचाजी, सच पूछिए तो, प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य हो जाता है कि वह इसका पूर्ण ज्ञान रक्खे कि कर क्यों लिए जाते हैं, वे किस परिमाण में, किस रीति से, वसूल किए जाते हैं, उनसे प्राप्त द्रव्य किस प्रकार, किन-किन मदों में ख़र्च किया जाता है, करों के निर्धारण में जनता के प्रतिनिधियों का कहाँ तक अधिकार रहता है, और उनके ख़र्च करने पर वे कहाँ तक नियंत्रण रख सकते हैं।"

बिहारी—"राजस्व इन्हीं सब बातों पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाश डालता है। लेकिन यहाँ यह स्पष्ट कर देना भी आवश्यक हो गया है कि राजस्व के अनेक रूप होते हैं। म्युनिसिपल बोर्ड तथा डिस्ट्रिक्ट-बोर्ड की व्यवस्था आजकल, स्थानीय स्वराज्य के कारण, बहुत कुछ जनतंत्र-शासन की भाँति होती है। नगर के शासन की दृष्टि से म्युनिसिपल बोर्ड भी एक तरह की छोटी सरकार है। इसलिये म्युनिसिपल कर भी राजस्व के अंतर्गत माने जाते हैं। किंतु विस्तृत क्षेत्र में चुंगी, लैंडरेवन्यू तथा इनकमटैक्स ही राजस्व माना जायगा। सरकार के लिये राजस्व में जहाँ बचत अनावश्यक है, वहाँ म्युनिसिपल बोर्ड-जैसी संस्थाओं के लिये वह कभी आवश्यक भी हो सकता है। इसी प्रकार यदि कोई कंपनी अधिक मुनाफ़ा उठाती है, तो सरकार सोचती है, उस मुनाफ़े का हिस्सा देश की प्रजा को भी मिलना चाहिए। इसलिये सरकार अधिक मुनाफ़े पर भी टैक्स लगाती है।

"किंतु इससे भी आवश्यक है इस विषय में यह जान लेना कि किसी भी शासन के लिये राजस्व अनिवार्य है। समाज के संगठन के लिये जितनी सरकार की आवश्यकता है, उतनी ही सरकार के लिये राजस्व की। देश में शांति तभी रह सकती है, जब सरकार सुव्यवस्थित होती है, और सरकार की सुव्यवस्था के लिये राजस्व की आवश्यकता अनिवार्य है। उत्पत्ति, उपभोग, विनिमय और वितरण के कार्य तभी चल सकते हैं, जब देश में शांति होती है। जनता के आर्थिक अभ्युदय का राजस्व की व्यवस्था के साथ बड़ा घनिष्ठ संबंध है। राजस्व का भी देश की शांति के साथ बड़ा घनिष्ठ संबंध है, क्योंकि वह जनता से वसूल किया जाता है। और, अशांति-काल में जब जनता से राजस्व की वसूलयाबी में अवरोध, विघ्न और कठिनाई उपस्थित हो जाती है, तो सरकार की शक्ति क्षीण होने लगती है। ऐसी स्थिति में राज्य-क्रांति भी हो जाती है।"

फ़तेहपुर-स्टेशन आ गया था। लोग मिठाई-पूरी ले-लेकर खा रहे थे। इसी समय वह व्यक्ति, जो अभी थोड़ी देर पहले इस वार्तालाप में भाग ले रहा था, मुँह बनाता हुआ बोल उठा—"यहाँ का घी अच्छा नहीं। हमारे यहाँ का डिस्ट्रिक्ट बोर्ड और म्युनिसिपल बोर्ड इस विषय में बहुत अच्छा है। वहाँ आपको शुद्ध घी की ही मिठाई-पूरी सब दूकानों पर मिलेगी।"

बिहारी ने इसी क्षण कह दिया—"मैंने अभी थोड़ी देर पहले कहा ही था कि जनता से कर वसूल करके फिर उसे सद्व्यय करना अथवा ऐसे परिणामों में लौटना सरकार का कर्तव्य होता है, जिससे राजस्वदात्री जनता यह अनुभव करे कि कर के रूप में जो द्रव्य उससे लिया गया है, उसे न देकर अगर उसकी बचत भी कर लेती, तो उससे हमारा उतना लाभ होना असंभव था, जितना उसके सरकार द्वारा खर्च होने से मिला है। राजस्व की उपयोगिता का यह एक प्रमुख सिद्धांत है ❀।"

❀ शीघ्र प्रकाशित होनेवाली सरल 'राजस्व' से।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दर्शन

[श्रीयुत महावीरप्रसाद दाधीच बी० ए०, एल् एल्० बी०]

(दाधीचजी से हमारा परिचय, अभी हाल में, बंबई-प्रवास में हुआ था। उन्होंने हमें वहाँ ख़ूब घुमाया और दर्शनीय स्थान दिखलाए। आप मारवाड़ी होते हुए भी गुजराती के प्रसिद्ध कवि हैं। हिंदी के अच्छे गद्य-काव्य-लेखक हैं। सर्वश्रेष्ठ गद्य-काव्य-लेखक आचार्य चतुरसेनजी शास्त्री को इस विषय में अपना गुरु मानते हैं।—सुधा-संपादक)

सृष्टि-सर्जन में विविध सौंदर्य और उसके संचालन की निश्चित सुचारुता देख मैं तेरे अलभ्य दर्शनों का अभिलाषी बना।

जहाँ देखा, वहाँ तेरा अद्भुत औदार्य फैला हुआ देखा। जो कुछ भी देखा, सारा तेरा ही देखा। पर मैं तुझे न देख सका। तू न-जाने कहाँ छिपा हुआ था।

बचपन में किसी ने तेरा स्थान विस्तृत गगन में बताया। पर मेरी कल्पना का क्षुद्र विमान उस समय तेरे पास पहुँचने में असमर्थ था। मैं श्रद्धा के संपुटों में तेरा दर्शन नहीं कर सका।

तत्पश्चात् सांसारिक जनों के कथन से मैंने तुझे मंदिरों में ढूँढ़ा, पर वहाँ तेरी जड़ प्रतिमा और मूक भावना के सिवा मैं कुछ भी नहीं देख सका।

तदनंतर भावुक भक्तों के संकेत से मैंने सारे तीर्थ-धामों में पर्यटन कर तुझे ढूँढ़ा; पर वहाँ भी तेरे दर्शन न हुए।

ज्यों-ज्यों तेरी सृष्टि का भ्रमण द्वारा मैं निरीक्षण करता जाता था, त्यों-त्यों तेरे दर्शन

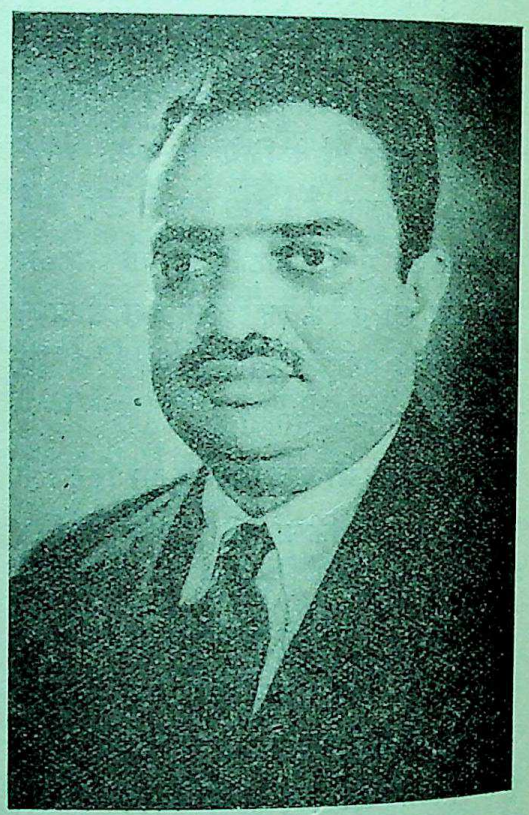

श्रीयुत महावीरप्रसाद दाधीच बी०ए०, एल्-एल्० बी०

की अभिलाषा बढ़ती जाती थी। पर तेरे दर्शन दुर्लभ प्रतीत होते थे। इतना पूछने और ढूँढ़ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर भी तेरे दर्शन न होने से मैं हताश होता जाता था।

एक बार तेरी कथा श्रवण करते-करते मैंने सुना कि तेरे दर्शन त्याग से होते हैं। संसारी जनों को, तेरी प्राप्ति के लिये, जब मैंने संन्यास लेते देखा, तब तेरे दर्शन के लिये मैंने भी संन्यास ले, तुझे हिमालय के सर्वोच्च शिखर पर चढ़कर और गंभीर कंदराओं में उतरकर ढूँढ़ा, पर वहाँ भी तू न मिला।

वहाँ से हताश हो जा रहा था। एक स्थान में चमकता हुआ दीपक देख मैं, कौतूहल-वश, वहाँ पहुँचा। पूछने पर पता लगा कि एक साधु पुरुष अपने कुटुंब के साथ वहाँ रहता है। उसका वह ज्ञान-दीपक तेरे दर्शन के लिये अहर्निश जलता था। उस दीपक की ज्योति से वह तेरे दुर्लभ दर्शन जब चाहे, तब कर सकता था।

मुझे आश्चर्य प्रतीत होने लगा।

तेरे दर्शन की मेरी उत्कट एवं उत्कृष्ट अभिलाषा देख उस दिव्य पुरुष ने वैसा ही ज्ञान-दीपक मुझे दिया। उसमें स्नेह भरकर दुनिया के अच्छे-बुरे पवन-झकोरों से उसे बचाने का आदेश किया।

उस दीपक को प्राप्त करते ही मैंने तुझे अपने अंधकारमय हृदय के कोने में बैठा देखा।

मैंने तेरे दर्शन किए। इतनी विशाल सृष्टि का स्रष्टा मेरे अंतस् के छोटे-से कोने में कैसे छिपा हुआ था?

और आश्चर्य! मार्ग के रजकणों में, पर्वतों के उच्च शिखरों में, गंभीर कंदराओं में, पवन-लहरों में, जल-प्रवाह की तरल तरंगों में, वन-श्री के विशाल वैभवों में, भ्रमर-गुंजन में, पक्षियों के कलरव में, पशुओं की पाशव वृत्ति में, अमीरों के उपहास्य-पूर्ण हास्य में और गरीबों के करुण क्रंदन में, सर्वस्थानों में, जड़ में, चेतन में, मैंने तुझे उसी स्वरूप में हँसते देखा।

ओ दुनिया के अजीब जादूगर! मैं समझ गया, ज्ञान-दीपक के बिना मैं तेरे दर्शन नहीं कर सकता था!

अब मैंने माना, मैं तू ही था, और तू मैं हूँ!

सफ़ेद बालवालो!

यदि यह तेल बाल का पकना रोक, सफ़ेद बाल खूँटी से काला पैदा कर, स्थायी काला नहीं रखेगा, तो दूना दाम वापस की शर्त। दाम ४) रु०

बाल काला-स्टोर्स, पो० कंसी सिमरी (दरभंगा)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राणों के प्रति *

[पु० श्रीप्रतापनारायण कविरत्न]

हरे-भरे सब खेत हो गए, जल-भुन गए जवासा-आक,
और पुज गई गिरियों पर भी उसकी हरियाली की धाक,
किंतु रह गया मन मसोसकर, कोई सहकर दुस्सह प्यास ;
यहाँ भाग्य के विना सभी हैं बूँद-बूँद के लिये उदास ॥१॥

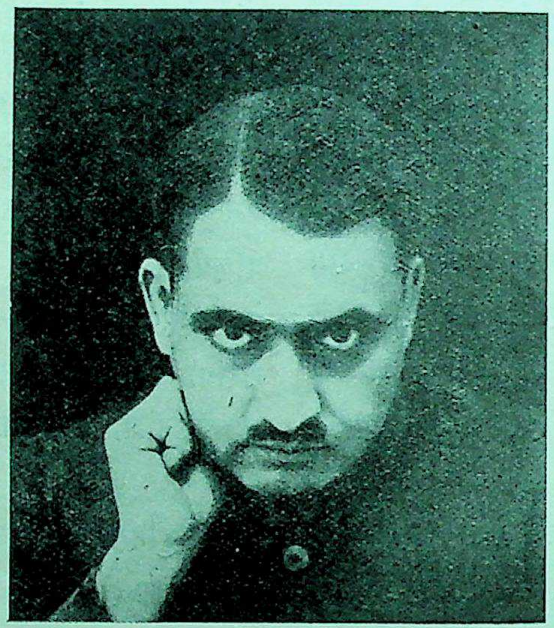

पु० श्रीप्रतापनारायण कविरत्न

झर-झर आँसू बहा-बहाकर केवल देख पूर्व की ओर—
किसी एक की बहुत बाट ही जोह रहा था दुखी चकोर ।
ठीक उसी अवसर पर वन में बोल उठे प्रमुदित वन-मोर ;
यों ही होता है जब काली भाग्य-घटा उठती है घोर ॥२॥
महाभयंकर इस जंगल में एक शिकारी अति सुकुमार—
किसी हरिण के बाण मारकर, होकर निर्दयता साकार—

* यह ध्वनि-कार्य है ।—संपादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने घर को खिसक गया है बिना किए ही उसका अंत ;
वह चाहे भूले, पर घायल क्यों भूले जीवन-पर्यंत ॥३॥
उसकी आह निकलने मत दो, जिसका है सच्चा अनुराग ;
वह निज आश्रय को भी खाती, पूरी सुलग चुकी जो आग ।
उसको पूर्ण-मनोरथ कर दो, वह होता है भस्मागार ;
प्राण गए पीछे क्या होगा, सोचो तो तुम प्राणाधार ? ॥४॥

आपकी प्रदररोग-नाशक दवा जादू है !

बाबू प्रकाशचंद्र कटियार, गाँव-पोस्ट सराय प्राग, ज़िला फ़तेहगढ़ से लिखते हैं—

आपकी दवाइयाँ आश्च-र्यजनक फलदायिनी हैं, जादू का-सा काम करती हैं, जो भी आपकी दवा सेवन करते हैं, सबका भला होता है ।

बाबू ब्रजमोहनसिंह, सराय प्राग, फ़तेहगढ़ से लिखते हैं—

Your msdicines have done wonders to my wife and have removed all troubles.

आपकी दवाओं ने मेरी स्त्री पर जादू का-सा आश्चर्य-जनक काम किया है, उसकी सारी तकलीफ़ें दूर हो गई हैं ।

प्रदरांतक चूर्ण

इस चूर्ण के सेवन से लाल, पीले, सफ़ेद प्रदर बात-की-बात में आराम हो जाते हैं, इसके समान और दवा नहीं है । मूल्य २), डाक-महसूल ।)

अशोकारिष्ट

इसके सेवन से लाल प्रदर, रज की खराबी वग़ैरा निश्चय ही आराम हो जाती हैं । मूल्य १), महसूल ।।)

सूचना

अगर आपके संतान न होती हो या और कोई गुप्त रोग हो, तो सारा हाल लिखें—

श्रीमती चमेलीदेवी वैद्या

जवाब देंगी, उनके हाथ में अमृत है ।

हरिदास एंड कंपनी, मथुरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निमंत्रण-पत्र

[श्रीयुत डॉक्टर सत्यप्रकाश डी० एस्-सी०]

हित्यिक प्रवृत्तियों का प्रदर्शन कभी-कभी हमारे छोटे-से व्यवहारों से भी होता है। यदि हम गत तीस-चालीस वर्षों की निमंत्रण-शैली का अध्ययन करें, तो हमें अनेक मनोरंजक बातों का पता चलेगा। कदाचित् ही कुछ लोग होंगे, जो निमंत्रण-पत्रों का संग्रह रखते हों—अधिकतर सप्ताह-दो सप्ताह के भीतर ही वे रद्दी की टोकरी में फेंक दिए जाते हैं। मेरी इच्छा तो थी कि मैं पुराने निमंत्रण-पत्रों का संग्रह करूँ, किंतु मैं अभी इसमें सफल नहीं हो पाया हूँ। पर मेरे संग्रह में कुछ ऐसे निमंत्रणों का संकलन है, जिनके आधार पर भिन्न-भिन्न शैलियों का अध्ययन किया जा सकता है।

निमंत्रण-पत्र दो प्रकार के होते हैं—व्यक्तिगत और सामान्य। सामान्य निमंत्रण-पत्र वे हैं, जो एक काग़ज़ पर लिखकर सभी परिचित व्यक्तियों के पास घुमा दिए जाते हैं। इनमें लिफ़ाफ़ों की बचत हो जाती है, और निमंत्रण छपाने की भी आवश्यकता नहीं होती। पर इनमें एक दोष भी है। कभी-कभी निमंत्रित व्यक्तियों से भेंट नहीं हो पाती, घर का कोई दूसरा ही हस्ताक्षर कर देता है, और निमंत्रित व्यक्ति के पास स्मृति के लिये कोई लेखा नहीं रहता। ऐसे निमंत्रण-पत्रों की शैली में बड़ा अंतर हुआ है। विवाह के अवसरों पर पुरानी शैली के घरों से नाई (या और कोई अनुचर) बड़े-बड़े पुलंदों के रूप में—बहुधा फ़ारसी-मिश्रित उर्दू में—यह निमंत्रण घर-घर घुमाता है, और निमंत्रित व्यक्ति इस पर 'स्वाद' कर देते हैं। १०० व्यक्तियों को निमंत्रण दीजिए, और ३०० का प्रबंध रखिए। आज की परिष्कृत शैली में इन सामान्य निमंत्रण-पत्रों का स्वरूप निम्न-लिखित प्रकार का हो गया है—

निम्न महानुभावों से निवेदन है कि मेरे पुत्र का उपनयन-संस्कार रविवार ता० .... को ९ बजे प्रातः-काल होगा। संस्कार के उपरांत ११ बजे के लग-भग प्रीति-भोज भी होगा। आपसे प्रार्थना है कि संस्कार और प्रीति-भोज में सम्मिलित होकर मुझे कृतार्थ करें।

कृपाभिलाषी—
धीरेंद्र वर्मा

नीचे या साथ में लगे हुए पत्र में निमंत्रित सज्जनों की सूची रहती है, जिस पर हस्ताक्षर करा लिए जाते हैं। मैं सामान्य निमंत्रण-पत्रों का उल्लेख किसी और लेख में करूँगा। इस लेख में तो मेरा विचार केवल वैयक्तिक निमंत्रण-पत्र देने का है। ये निमंत्रण-पत्र एक-एक लिफ़ाफ़े में बंद कर एक-एक व्यक्ति के पास भेजे जाते हैं। बहुधा विवाह के निमंत्रणों को छोड़कर सभी के लिये यह आवश्यक है कि जिसे बुलाया जाय, वही सम्मिलित हो। एक व्यक्ति के स्थान में परिवार का दूसरा व्यक्ति प्रतिनिधित्व नहीं कर सकता। यदि पुरुष और स्त्री आमंत्रित हैं, तो उन्हें चाहिए कि वे बच्चों को घर पर ही छोड़ आवें। यदि किसी को सम्मि-लित होना हो, तो वह अवश्य उत्तर दे दे। फलतः ऐसे निमंत्रणों में यदि १०० व्यक्तियों को बुलाया गया है, तो बहुधा ७५ व्यक्तियों का ही प्रबंध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करना होगा, क्योंकि २०-२५ व्यक्ति तो किसी-न-किसी कारण-वश उपस्थित न हो सकेंगे, और वे क्षमा माँग लेंगे।

निमंत्रण-पत्रों की शैलियों की मीमांसा करने से पूर्व मैं कुछ निमंत्रण-पत्रों की अविकल प्रतिलिपि यहाँ देना चाहता हूँ।

पुरानी शैली

(१) 'विज्ञान' के योग्य लेखकों में से एक श्रीरामस्वरूपजी चतुर्वेदी हैं। आपके विवाह का निमंत्रण-पत्र इस प्रकार छपा था—

श्रीगणेशाय नमः

यन्मायावशवर्तिविश्वमखिलं ब्रह्मादिदेवासुरा,
यत्सत्त्वादमृषेव भाति सकलं रज्जौ यथाहेर्भ्रमः;
यत्पादं प्लवमेकमेवहि भवां भोधेस्तितीर्षावतां
वन्देऽहं तमशेषकारणपरं रामाख्यमीशं हरिम्।

सेवा में श्रीमान् डॉ० सत्यप्रकाश डी० एस्-सी०,
संपादक 'विज्ञान', इलाहाबाद

सादर वंदे।

निवेदन है कि जगत्पिता जगदीश्वर की असीम अनुकंपा से मेरे कनिष्ठ पुत्र चिरंजीव रामस्वरूप चतुर्वेदी का शुभ विवाह उरई-निवासी पं० नाथूराम जारौलिया रईस ज़मींदार की ज्येष्ठ पुत्री के साथ होना निश्चित हुआ है। अतः आपसे नम्र निवेदन है कि अपने बंधु-बांधवों व इष्ट-मित्रों-सहित शुभ उत्सव में पधारकर अनुगृहीत कीजिए, और अवसर की शोभा बढ़ाइए।

२८, हज़ारीपुरा
उरई
२।६।४०

आपके दर्शनाभिलाषी
रामचरण चतुर्वेदी
रामकृपाल चतुर्वेदी

जिस लिफ़ाफ़े में रखकर यह निमंत्रण मिला, उस पर यह दोहा छपा था—

केवल याको पत्र ही आप समझिए नाँहिं;
पत्र-रूप धरि हम स्वयं आए सेवा माँहिं।

(२) श्रीदुर्गादत्तजी जोशी फ़ैज़ाबाद के इंटर-मीजिएट कॉलेज के प्रिंसपल रह चुके हैं। उनके पुत्र मेरे विद्यार्थी थे। उनके विवाह का निमंत्रण इस प्रकार था—

मुख-पृष्ठ पर—

शशि से रजनी, रजनी से शशि,
शशि-रजनी से शोभा नभ की;
मन चंद्रप्रकाश-युत मुदित अति,
सुकांति कांति भक्त सुलभ की।
वर से वरादि, वरादि से वर,
वर-वरादि से शोभा घर की;
मंगल-कार्य सिद्ध हों सब ही,
जब कृपा आपने आकर की।

भीतर—

श्रीमन्महामंगलमूर्तये नमः

मंगलं भगवान्विष्णुर्मंगलं गरुडध्वजः;
मंगलं पुण्डरीकाक्षो मंगलायतनो हरिः।
गंगा सिन्धुसरस्वती च यमुना गोदावरी नर्मदा
कावेरी सरयू महेन्द्रतनया चर्मण्वती वेदिका;
क्षिप्रा वेत्रवती महासुरनदी ख्याता तथा गण्डकी
पूर्णाः पूर्णजलैर्विवाहसमये कुर्वन्तु नो मंगलम्।

स्वस्तिश्रीसर्वोपमायोग्य श्रीडॉक्टर
सत्यप्रकाशजी, नमस्कार।

विशेष निवेदन यह है कि श्रीजगन्मंगलमंगल श्रीमत्परब्रह्म परमात्मा की कृपा से पं० नारायण-कृष्णजी के पौत्र, पं० दुर्गादत्त जोशी के पुत्र चि० प्रकाशचंद्रजी एम्० ए० का शुभ पाणिग्रहण श्रीमत्पंडित हीरावल्लभ जोशीजी, असिस्टंट सेक्रेटरी फ़ाइनेंस-विभाग, यू० पी० - गवर्नमेंट की श्रीमती सौ० कन्या के साथ लखनऊ में शुभ मिती फाल्गुन-कृष्ण ५, रविवार ५ गते फाल्गुन को, तदनुसार तारीख़ १६ फ़रवरी, १६४१ को होना निश्चित हुआ है।

अतएव आपसे प्रार्थना है कि कृपा-पूर्वक इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुभ अवसर पर नियत तिथि के पूर्व पधार-कर, वरादि-मंडली में सम्मिलित हो कृतार्थ कीजिए।

शुभम्—फ़ैज़ाबाद
मिती माघ शुक्ल, सं० १९९७
ता० १० फ़रवरी, १९४१

दर्शनार्थी
भवानीदत्त
दुर्गादत्त

पुरानी और नई शैली का सम्मिश्रण

(१) निमंत्रण-पत्रों के छपवाने में लोग नई-से-नई सूझ काम में लाते हैं। सुनहरी, रुपहली और रंग-बिरंगी स्याहियों का उपयोग करते हैं। हम यहाँ एक निमंत्रण-पत्र देते हैं, जो शैली में तो आधुनिक है, पर इसकी भूमिका और परिशिष्ट पुराने ढंग के हैं। जबलपुर में ब्यौहार राजेंद्रसिंह राजनीतिक और साहित्यिक क्षेत्र में प्रतिष्ठित स्थान रखते हैं। उनकी ओर से यह निमंत्रण-पत्र है—

निमंत्रण-पत्र के मुख-पृष्ठ पर—

विघ्नौघसंतमससंतरणाय शक्तं
मुक्तं कलङ्ककलया शकलं सुधांशोः ;
कुन्दावदाततरदन्तमिषाद्धानः
श्रेयः परं दिशतु वः परमं द्विपास्यः।

भीतर की भूमिका—

गणपति, गिरिपति, गिरापति,
श्रियपति, सियपति धीर,
यशोधारपति, गोपिपति,
जयति धरापति वीर।

मुख्य निमंत्रण-पत्र—

श्रीडॉ० सत्यप्रकाशजी, नमस्ते।

परमेश्वर की परम कृपा से श्रीश्यामाचरनजी राय ए० डिस्ट्रिक्ट-सेसंस जज (खंडवा) की सुपुत्री के साथ चि० रामप्रतापसिंह के शुभ विवाह का सुयोग प्राप्त हुआ है। निवेदन है कि इस शुभ कार्य में सकुटुंब सम्मिलित होकर कृतार्थ कीजिए।

जबलपुर
रामनवमी
सं० ९७

दर्शनाभिलाषी
ब्यौहार रघुवीरसिंह
ब्यौहार राजेंद्रसिंह

निमंत्रण-पत्र का परिशिष्ट—

परिजन, पुरजन, जातिजन,
सुजन, प्रजाजन धीर ;
सुफल सुकारज करहु मिलि,
बिनवत नित रघुवीर।

मैंने कार्य-क्रम की प्रतिलिपि नहीं दी, जिसमें लगुन, प्रीति-भोज, मंडपाच्छादन, मातृकापूजन, बारात-प्रस्थान, द्वारचार और पाणिग्रहण की तिथि, दिन और समय दिए हुए थे। मुख्य निमंत्रण-पत्र ब्यौहार रघुवीरसिंह के स्वाक्षरों में (ब्लॉक बना-कर) छपा है। पृष्ठों के शीर्ष पर श्रीगणेश की मूर्ति, ॐ और श्री अंकित है। अंतिम पृष्ठ पर वंदे मातरम्-युक्त भारतमाता का चित्र है।

(२) प्रयाग के प्रसिद्ध प्रकाशक और विक्रेता रायसाहब रामदयाल अग्रवाल और बाबू बेनी-प्रसाद अग्रवाल की ओर से निम्न-लिखित निमंत्रण-पत्र प्राप्त हुआ—

श्रीमंगलमूर्तये नमः

विघ्न-हरन, शंकर-सुवन, सकल सुमंगल-धाम,
पुत्री का शुभ ब्याह है, पूरन कीजै काम।

श्रीमान् डॉक्टर सत्यप्रकाश साहेबजी,

परमपिता परमात्मा की असीम अनुकंपा से स्वर्गीय लाला रामनारायणलालजी की सुपौत्री कुसुमकुमारी का शुभ विवाह कानपुर-निवासी सेठ लाला किशोरीलाल के सुपौत्र तथा लाला रामेश्वरप्रसाद के सुपुत्र चिरंजीव बाबू रमाशंकर के साथ मिति फाल्गुन सुदी एकम् रविवार, तदनुसार ता० १० मार्च, १९४० को होना निश्चित हुआ है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपसे सविनय निवेदन है कि इस शुभ अवसर पर सपरिवार पधारकर उत्सव की शोभा बढ़ावें, और हमें अनुगृहीत करें।

दर्शनाभिलाषी—

२, कटरा-रोड
प्रयाग

रामदयाल अग्रवाला
(रायसाहब)
बेनीमाधव
बेनीप्रसाद अग्रवाला

(३) इस प्रांत के ऐडवोकेट जनरल डॉ० नारायणप्रसादजी अस्थाना की ओर से निम्न-लिखित निमंत्रण-पत्र प्राप्त हुआ। निमंत्रण-पत्र स्पष्टतः किसी और का लिखा हुआ है, पर है उनके नाम से। पत्र के शीर्ष पर दिया हुआ दोहा उनकी श्रीमतीजी का है—

श्रीगणेशाय नमः

कर जोरे बिनती करूँ, सुनिए हे यदुनाथ,
पूर्ण हो यह कार्य सब सुनिए हे दीनानाथ!

श्रीमान्‌जी डॉ० सत्यप्रकाश,

सेवा में निवेदन है कि ईश्वर की असीम अनुकंपा से मेरे चि० पौत्र ओ३म्‌प्रकाश (पुत्र महाराज-बहादुर) का मुंडन-संस्कार तथा चि० पौत्र ज्योति-प्रकाश (पुत्र कुँवरबहादुर ऐडवोकेट) का अन्न-प्राशन १० मई, सन् १९४० अथवा वैशाख सुदी ३, संवत् १९९७ को होना निश्चित हुआ है।

इन शुभ अवसरों के उपलक्ष में १२ मई इतवार को सायंकाल ८॥ बजे प्रीति-भोज होगा। अतएव आपसे सविनय निवेदन है कि भोज में सम्मिलित होकर मुझे कृतार्थ करें।

विनीत—
डॉ० नारायणप्रसाद अस्थाना
२३, कैनिंग रोड, इलाहाबाद

(४) मेरे विश्वविद्यालय के एक अध्यापक श्रीकृष्णकुमार पाठक की ओर से निम्न-लिखित निमंत्रण-पत्र प्राप्त हुआ—

मुख-पृष्ठ पर—

श्रीगणेशाय नमः

शुभ विवाह

धन्य है उस ईश को, जो रम रहा सर्वत्र है;
सानंद सेवा में समर्पित यह निमंत्रण-पत्र है।

निमंत्रण-पत्र—

श्रीमंगलमूर्तये नमः

सिद्धि-सदन, वारन-वदन, एक-रदन, गनराज,
विघ्न-विदारन, दुख-दलन, सफल करहु सब काज।

श्रीमन्महोदय,

अखिलेश की असीम अनुकंपा से हमारे पूज्य भ्रातृवर श्रीपं० काशीप्रसाद पाठक की कनिष्ठा कन्या का शुभ विवाह हरदोई-निवासी मान्यवर श्रीचिरंजीव पं० सिद्धगोपालजी अग्निहोत्री वकील के साथ शुभ मिती फाल्गुन शुक्ल २ शुक्रवार तदनुसार तारीख २८ फ़रवरी सन् १९४१ को होना निश्चित हुआ है।

आपसे साग्रह निवेदन है, इस शुभावसर पर पधारकर, इस महोत्सव की शोभा बढ़ाने की कृपा कर हमें कृतार्थ कीजिए।

बेलीरोड
नया कटरा
प्रयाग
१२।२।४१

भवदीय दर्शनाभिलाषी—
दुर्गाप्रसाद पाठक
रामप्रसाद पाठक
कृष्णकुमार पाठक

(५) डॉ० पी० के० आचार्य प्रयाग-विश्वविद्यालय के संस्कृत-विभाग के अध्यक्ष हैं। आपने अपनी कन्या के विवाह का निमंत्रण अँगरेज़ी, बँगला और हिंदी, तीनों में छपवाया था। हिंदी का इस प्रकार था—

शुभ विवाह

जेहि सुमिरत सिधि होइ,
गणनायक, करिवरवदन,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करहु अनुग्रह सोइ,
बुद्धि-राशि, शुभ गुण-सदन।

सेवा में सविनय निवेदन है कि मेरी कन्या चिरंजीवनी मेखलादेवी का शुभ विवाह भागलपुर (बरारी स्टेट) के भरद्वाज-गोत्रीय स्वर्गीय श्रीकांत झाजी के सुपुत्र चि० श्रीलक्ष्मीकांत झा आई० सी० एस्० के साथ ता० १६ फ़रवरी, १९४१ को होना निश्चित हुआ है, जिसका कार्य-क्रम सामने छपा है। कृपया इस शुभानुष्ठान में और विशेषतः प्रीति-भोज में सपरिवार उपस्थिति तथा आशीर्वाद से अनुगृहीत कीजिएगा।

स्वस्तिक-भवन
जॉर्ज-टाउन, इलाहाबाद
अनुग्राह्य—
श्रीप्रसन्नकुमार आचार्य

(६) प्रयाग के प्रसिद्ध धनवान् व्यक्ति और साहित्य-सम्मेलन के अर्थ-मंत्री श्रीनिरंजनलाल भार्गव का निमंत्रण-पत्र इस प्रकार था—

श्रीमंगलमूर्तये नमः

सदा सुखद सुखमा-सहित सुखकर सुंदर वेष ;
हों सहाय सब सुख-सदन, बारन-बदन, गनेश।

श्रीमन्महोदय,

सेवा में निवेदन है कि परमात्मा की असीम कृपा से चिरंजीव कैलासचंद्र भार्गव बी० एस्-सी० का शुभ विवाह दिल्ली-निवासी श्रीमान् पं० द्वारिकाधीशजी भार्गव, रईस की आयुष्मती कन्या रूपकुमारी से शुभ तिथि माघ-सुदी, वसंत-पंचमी, रविवार, तदनुसार ता० २ फ़रवरी, १९४१ को होना निश्चित हुआ है। अतएव आपसे साग्रह निवेदन है कि इस शुभ अवसर पर सपरिवार पधारकर हमें अनुगृहीत करें।

है यह निमंत्रण नेम का, प्रिय, प्रेम करके आइए ;
मम सदन को पावन बना सुखमा सरस सरसाइए।

गोविंद-भवन
प्रयाग
२४।१।४१
दर्शनाभिलाषी—
निरंजनलाल भार्गव

(७) प्रयाग-विश्वविद्यालय के असिस्टेंट रजिस्ट्रार श्रीकृष्णदेव तिवारी स्वर्गीय श्रद्धेय पं० रामावतार शर्मा के दामाद हैं। तिवारीजी ने अपनी पुत्री के विवाह का निमंत्रण-पत्र निम्न-लिखित प्रकार का दिया—

श्रीगणेशाय नमः

दन्ताग्रचलेन धरणीतलमुन्नमय्य
पातालकेलिषु धृतादिवराहलीलम् ;
उल्लाघणोत्फणफणाधरगीयमान -
क्रीडावदानमिभराजमुखं नमामः।

परमेश्वर की महती अनुकंपा से मेरी* पुत्री का शुभ परिणय श्रीमान् रायबहादुर पं० चंडीप्रसाद मिश्र (डिस्ट्रिक्ट-इंजीनियर, मुँगेर) के सुपुत्र आयुष्मान् श्रीपं० अंबिकाप्रसादजी से वैशाख-शुक्ल १५, मंगलवार वि० संवत् १९९७, तदनुसार २१ मई, १९४० को संपन्न होना निश्चित हुआ है। आपसे करबद्ध प्रार्थना है कि इस परम शुभावसर पर सपरिवार उपस्थिति से मंडप की शोभा बढ़ावें, तथा वर-वधू को आशीर्वाद देकर अनुगृहीत करें।

'इंद्रनिकेतन'
लंका, बनारस
ता १०।५।४०
दर्शनाभिलाषी
देवभूषण तिवारी
कृष्णदेव तिवारी *

(८) प्रयाग की कायस्थ-पाठशाला के प्रिंसिपल श्रीगोकुलचंदजी की कन्या के विवाह पर उनके भाइयों की ओर से निम्न-लिखित निमंत्रण-पत्र प्रकाशित किया गया—

श्रीगणेशाय नमः

जेहि सुमिरत सिधि होइ,
गणनायक, करिवरवदन,

* इस निमंत्रण-पत्र में लाल पेंसिल से 'मेरी' और 'कृष्णदेव' दोनो शब्दों को चिह्नित करना पड़ा, जिससे स्पष्ट हो जाय कि किसकी पुत्री है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करहु अनुग्रह सोइ,
बुद्धि-राशि, शुभ गुण-सदन।

परमपिता जगदीश्वर की असीम अनुकंपा से हमारे छोटे भाई गोकुलचंद, प्रिंसिपल कायस्थ-पाठशाला इंटरमीजिएट कॉलेज, इलाहाबाद, की चिरंजीवी सुपुत्री राजेशकुमारी का शुभ विवाह स्वनाम-धन्य लाला माधोनारायणजी, हेडमास्टर सेंट चार्ल्स-हाईस्कूल, सर्धना, ज़िला इक्साइसेज़ ऐंड साल्ट, बिलासपुर (सी० पी०) के साथ मिती अगहन सुदी पूर्णिमा, संवत् १९९६ वि० तदनुसार तारीख़ २६ दिसंबर, सन् १९३९ ई० को होना निश्चित हुआ है। अतः सविनय निवेदन है कि सकुटुंब पधारकर कृतार्थ कीजिए।

नोट—कृपया इस पत्र का उत्तर निम्न-लिखित पते से दीजिएगा—

रमेशचंद्र एम्० ए०
४, कमला नेहरू-रोड, इलाहाबाद

विनीत
मूलचंद
रिछुपालचंद

इस निमंत्रण-पत्र की एक विशेषता है। अँगरेज़ी के निमंत्रण-पत्रों में एक बात होती है R. S. V. P., जिसका अभिप्राय यह है कि निमंत्रण-पत्र का उत्तर अमुक पते पर अवश्य भेजा जाय। यह आवश्यक नहीं कि निमंत्रण-दाता के पास ही उत्तर जाय। निमंत्रण-दाता स्वयं यह बात निमंत्रण-पत्र में लिख देता है कि उत्तर सीधे उसके पास भेजना है, अथवा किसी और व्यक्ति के पास। इस निमंत्रण-पत्र में निमंत्रण-दाता तो श्रीमूलचंद और रिछुपालचंदजी हैं, पर पत्रों का उत्तर श्रीरमेशचंद्रजी के पास जाना चाहिए। R. S. V. P. के लिये हिंदी में अभी कोई सर्वमान्य सूत्र प्रचलित नहीं है, अतः पूरे एक वाक्य से काम निकाला गया।

आधुनिक शैली के निमंत्रण-पत्र

आधुनिक शैली के निमंत्रण-पत्रों की कुछ विशेषताएँ ये हैं—

(१) श्रीगणेशाय नमः, सिद्धि-सदन, करिवर-वदन, श्लोक, दोहे आदि का अभाव।

(२) परमपिता परमात्मा की असीम कृपा आदि भूमिकाओं का अभाव।

(३) सीधे-सादे शब्दों का प्रयोग।

(४) शिष्टाचार का सारल्य।

कुछ निमंत्रण-पत्र उदाहरण-स्वरूप यहाँ दिए जाते हैं—

(१) माननीय पुरुषोत्तमदासजी टंडन के पुत्र के विवाह के संबंध में निम्न-लिखित दो निमंत्रण-पत्र मुझे मिले। दोनो हाथ के बने काग़ज़ पर छपे थे—

(क)

प्रिय महोदय,

मेरे पुत्र चि० संतप्रसाद का विवाह श्रीमहाशंकर सेठ की पुत्री के साथ रविवार माघ-बदी ११, ता० ४ फ़रवरी को देहरादून में होना निश्चित हुआ है।

बारात २ फ़रवरी को इलाहाबाद से शाम को ४-२० पर सहारनपुर-पैसेंजर से जायगी, और देहरादून ३ फ़रवरी की शाम को पौने सात बजे पहुँचेगी।

घोड़ी की रसम इलाहाबाद में पहली फ़रवरी की रात को लगभग ८ बजे है, और तनी-कढ़ाई ३१ जनवरी को लगभग ४॥ बजे शाम को।

आपसे नम्र निवेदन है कि अपनी उपस्थिति से इलाहाबाद में उपर्युक्त अवसरों की और बारात के साथ देहरादून चलकर विवाहोत्सव की शोभा बढ़ावें, और वर-कन्या को आशीर्वाद दें।

१०, क्रास्थवेट-रोड
इलाहाबाद
रविवार ८ माघ, १९९६

विनीत
पुरुषोत्तमदास टंडन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(ख) श्री

१०, क्रास्थवेट-रोड

इलाहाबाद

२६ । १ । ४०

प्रिय भाई,

मेरे पुत्र चि० संतप्रसाद का विवाह देहरादून में ४ फ़रवरी को होनेवाला है। विवाह-संस्कार-संबंधी काम आरंभ करने की रीति बुधवार ता० ३१ जनवरी को है। आपसे सविनय निवेदन है कि उस दिन शाम को ५॥ बजे मेरे स्थान पर पधारकर अपनी मंगल कामना से हमें उपकृत करें।

विनीत

पुरुषोत्तमदास टंडन

(२) डॉ० बाबूराम सकसेना, भूतपूर्व प्रधान मंत्री हिंदी - साहित्य - सम्मेलन, प्रयाग ने अपने भाई के विवाह के अवसर पर यह निमंत्रण-पत्र भेजा। यह हाथ से बने काग़ज़ पर छपा था—

ओ३म्

२४, चैथमलाइन, प्रयाग

४ । २ । १९४०

श्रीडॉक्टर सत्यप्रकाशजी,

सेवा में सहर्ष निवेदन है कि चिरंजीव अर्जुन वर्मा का शुभ विवाह मोहतशिमगंज (प्रयाग)-निवासी श्रीभगवतीप्रसादजी की सुपुत्री से होना निश्चित हुआ है। विवाह-संस्कार मंगलवार, माघ, शुक्ल ५, सं० ९६ तदनुसार ता० १३ फ़रवरी, सन् ४० को रात्रि के समय होगा, और बरात उसी दिन सायंकाल ४ बजे मोहतशिमगंज के लिये रवाना होगी। आपसे सविनय प्रार्थना है कि इस शुभ अवसर पर सपरिवार सम्मिलित होकर कृतार्थ करें।

निवेदक

पुत्तूलाल गयाप्रसाद

ब्रह्मदीन सुरेंद्र वर्मा

बाबूराम सकसेना

पर इस निमंत्रण-पत्र से भी अधिक सीधा-सादा निमंत्रण-पत्र यह था—

२४, चैथमलाइन, प्रयाग

५ । २ । ४०

श्रीमान्‌जी,

मेरे भाई श्रीअर्जुन वर्मा के विवाह के उपलक्ष्य में शुक्रवार ता० १६ फ़रवरी, ४० को सायंकाल आठ बजे प्रीति-भोज में सम्मिलित होकर कृतार्थ करने की कृपा करें।

निवेदक

बाबूराम सकसेना

सेवा में—

श्रीडॉ० सत्यप्रकाशजी,

इस निमंत्रण-पत्र से भी सीधा-सादा निमंत्रण-पत्र यहाँ नीचे देता हूँ, जो डॉ० बाबूरामजी ने "निरुपलक्ष्य" दिया था—

२४, चैथमलाइन, प्रयाग

२७ । ३ । ४१

श्रीसत्यप्रकाशजी,

आपसे सविनय निवेदन है कि शनिवार तारीख़ ५ एप्रिल, १९४१ को सायंकाल ८ बजे मेरे स्थान पर भोजन करके कृतार्थ कीजिए।

आपका

बाबूराम सकसेना

(३) मेरे एक मित्र श्रीदरबारीलालजी ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने पुत्र के विवाह के उपलक्ष में जो निमंत्रण-पत्र दिया, वह मुझे बहुत रुचा—

ओ३म्

श्रीसत्यप्रकाश, श्रीमती रतनकुमारीजी

सप्रेम नमस्ते ।

मेरे पुत्र चिरंजीव वेदप्रकाश के शुभ विवाह के उपलक्ष में एक प्रीति-भोज मंगलवार २३ जनवरी को ६ बजे सायंकाल होगा ।

आपसे सविनय निवेदन है कि प्रीति-भोज में सम्मिलित होकर मुझे कृतार्थ करें ।

१३२, बहादुरगंज
(कला-प्रेस के पास)
इलाहाबाद

विनीत—
दरबारीलाल

(४) प्रसिद्ध साहित्यिक श्रीसत्यजीवन वर्मा ने अपने बच्चे के चूड़ा-कर्म के उपलक्ष में एक निमंत्रण-पत्र छपाया था, जो हम लोगों को अत्यंत आकर्षक प्रतीत हुआ ।

卐

चिरंजीव आनंदजीवन वर्मा (मदनजी)
के मुंडन तथा चूड़ा-कर्म-संस्कार के उपलक्ष में
रविवार ५ नवंबर, ३६
६॥ बजे संध्या-समय
संगीत तथा प्रीति-भोज
में सम्मिलित होकर अनुगृहीत करें ।

'अंतर्वेदी'
नया कटरा, इलाहाबाद

दर्शनाभिलाषी—
सत्यजीवन वर्मा

(५) श्रीकमला नेहरू-अस्पताल के उद्घाटन के अवसर पर दिया गया निमंत्रण-पत्र अपनी शैली के लिये विशेषता रखता है—

श्रीमान्

श्री० कमला नेहरू-स्मारक अस्पताल, इलाहाबाद का उद्घाटन महा० गांधीजी द्वारा शुक्रवार, ता० २८ । २ । १६४१ को शाम को ४ बजे, हाशिमपुर-रोड पर (आनंद-भवन के पीछे), होगा । बोर्ड ऑफ़ ट्रस्टीज़ आपसे उक्त अवसर पर सम्मिलित होने की प्रार्थना करता है ।

पी० ए० नारियलवाला
उमाशंकर दीक्षित
अवैतनिक मंत्रीगण

(६) किसी संस्था की ओर से दिए गए निमंत्रण-पत्रों में विज्ञान-परिषद्, प्रयाग की रजत-जयंतीवाला निमंत्रण-पत्र कई विशेषताएँ रखता है । ये विशेषताएँ निमंत्रण-पत्र से स्पष्ट हैं—

माननीय श्रीसंपूर्णानंदजी, शिक्षा-मंत्री
के सभापतित्व में
विज्ञान-परिषद् की रजत-जयंती
और
ऐट-होम

म्योर कॉलेज में मंगलवार २१ फ़रवरी, १६३६ को ४॥ बजे सायंकाल । परिषद् के सभापति और सदस्य श्री.....से

प्रार्थना करते हैं कि इस अवसर पर पधारकर कृतार्थ करें ।

४॥ बजे— कृपया उत्तर शीघ्र भेजें ।
जयंती-अधिवेशन गोरखप्रसाद, डी० एस्-सी०
६॥ बजे— मंत्री विज्ञान-परिषद्
सार्वजनिक व्याख्यान १, डी० बेली-रोड

हिंदी-उर्दू के निमंत्रण-पत्र

हिंदी-उर्दू की समस्या का प्रतिबिंब हमारे निमंत्रण-पत्रों पर भी विद्यमान है । उर्दू के निमंत्रण-पत्र किस प्रकार के होते हैं, इसका अध्ययन मुसलमान महोदयों के पारस्परिक व्यवहार से किया जा सकता है । इनकी शैली अध्ययन का पृथक् और स्वतंत्र विषय हो सकता है । हिंदुओं के यहाँ आजकल या तो निमंत्रण-पत्र हिंदी में या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अँगरेज़ी में छपते हैं। उर्दू का रिवाज उत्तरोत्तर उठता जाता है। कहीं-कहीं अब भी ऐसा देखने में आता है कि निमंत्रण-पत्र उर्दू और हिंदी, दोनो में छपें। इस प्रांत में कुछ कायस्थ-घरों में ऐसी प्रथा बहुधा देखने में आती है। मैं यहाँ दो नमूने देता हूँ—

(१) श्री एस्० पी० वर्मा इस प्रांत के प्रतिष्ठित एकाउंटेंट जनरल हैं। आपने अपनी पुत्री के विवाह के निमंत्रण-पत्र उर्दू और हिंदी, दोनो में छपवाए। (एक पृष्ठ पर हिंदी और दूसरे पर उर्दू थी।)

हिंदी—

मेरी सुपुत्री शीलवती का ब्याह मुरादाबाद के स्वर्गीय रईस रायसाहब बाबू गिरधारीलाल के सुपुत्र डॉक्टर रामकुमार गोयल एम्० बी०, बी० एस्० (पंजाब), एम्० आर० सी० पी० व एम्० आर० सी० एस्० (लंदन), पी-एच्० डी० (एडिनबरा), डी० एस्-सी० (पेरिस) के साथ होना निश्चित हुआ है। विवाह शादी-क़ानून (सिविल मैरेज-ऐक्ट) के अनुसार बँगला-नंबर ५, थॉर्नहिल रोड, शहर इलाहाबाद में तारीख़ १२ एप्रिल, सन् १९४० को ९ बजे प्रातःकाल और उसी दिन सायंकाल ८ बजे सहभोज होगा। अतः आपसे सादर प्रार्थना है कि कष्ट उठाकर वर-वधू को अपने शुभाशीर्वाद से अभिव्यंजित करें, तथा ब्याह व दावत में सम्मिलित होकर मुझे कृतार्थ करें।

५, थॉर्नहिल-रोड
इलाहाबाद

प्रार्थी—
सिद्धेश्वरीप्रसाद वर्मा

उर्दू—

मेरी लड़की शीलवती की शादी मुरादाबाद के रईस रायसाहब बाबू गिरधारीलाल महरूम के साहबज़ादे डॉक्टर रामकुमार गोयल एम्० बी०, बी० एस्० (पंजाब), एम्० आर० सी० पी०, एम्० आर० सी० एस्० (लंदन), पी-एच्० डी० (एडिनबरा), डी० एस्-सी० (पेरिस) के साथ क़रार पाई है। शादी मुताबिक़ क़ानून शाही (सिविल मैरिज-ऐक्ट) बमुक़ाम बँगला-नंबर ५ थॉर्नहिल-रोड, शहर इलाहाबाद बतारीख़ १२ एप्रिल, सन् १९४० ई० बवक़्त ९ बजे सुबह होगी। आपसे मलतमस हूँ कि तकलीफ़ फ़रमाकर नौशा व नौशी को अपनी दुआए-ख़ैर से मुमताज़ फ़रमावें, और शिरकत शादी व दावत से, जो उसी दिन ८ बजे शाम को होगी, कमतरीन को इज़्ज़त बख़्शें।

सिद्धेश्वरीप्रसाद वर्मा

(२) डॉ० ताराचंदजी के भाई बाबू सूर्य-नारायण माथुर के पुत्र के विवाह का निमंत्रण-पत्र हिंदी और उर्दू, दोनो में छपा। कार्य-क्रम का भाग छोड़ शेष की प्रतिलिपि यहाँ दी जाती है।

हिंदी—

श्रीमान् सत्यप्रकाशजी,

मैं सहर्ष आपको सूचित करता हूँ कि मेरे सुपुत्र चिरंजीव आनंदनारायण माथुर बी० एस्-सी० (पाइलट इंस्ट्रक्टर, यू० पी० फ़्लाइंग-क्लब, लखनऊ) का शुभ विवाह डॉक्टर रामनारायण की पोती कुमारी शकुंतला रानी माथुर के साथ होना निश्चित हुआ है। आपसे सविनय प्रार्थना है कि कार्य-क्रमानुसार इस शुभ अवसर पर परिवार-सहित सम्मिलित होकर मुझे अनुगृहीत करें।

१६, बैंक-रोड
इलाहाबाद

दर्शनाभिलाषी
सूर्यनारायण माथुर

उर्दू—

मुकर्रम बंदह तसलीम।

गुज़ारिश है कि मेरे साहबज़ादे नूरचश्म आनंद-नरायन माथुर बी० एस्-सी० (पाइलट इंस्ट्रक्टर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यू० पी० फ़्लाइंग-क्लब, लखनऊ) की शादी डॉक्टर रामनरायन साहब की पोती नूरचश्मी शकुंतला रानी माथुर के साथ क़रार पाई है। जनाब से इस्तदुआ है कि बराहकरम मय अयाल व अतफ़ाल औक़ात मुक़र्ररह पर प्रोग्राम के मुताबिक़ शिरकत फ़रमाकर ममनून फ़रमावें।

१६, बैंक-रोड
इलाहाबाद

सूरजनरायन माथुर

'हिंदुस्तानी' के निमंत्रण-पत्र

'हिंदुस्तानी' के परम हिमायती डॉ० ताराचंदजी ने अपनी पुत्री के विवाह का जो निमंत्रण-पत्र छपवाया, वह 'हिंदुस्तानी' का उत्कृष्ट उदाहरण है। निमंत्रण नागरी और उर्दू, दोनो लिपियों में छपा था, पर भाषा एक ही थी—

नं० ११, चैथमलाइंज़
इलाहाबाद

मेरी लड़की चाँदकुमारी का व्याह स्वर्गवासी (उर्दू में सुरगबासी) लाला वज़ीरसहाय साहब के छोटे लड़के श्रीपरमेश्वरसहायजी से तै पाया है (उर्दू में तै हुआ है)।

२१ जनवरी इतवार के दिन शाम के छै बजे बरात आएगी और फेरे होंगे।

मिसेज़ व डॉक्टर सत्यप्रकाश साहब से प्रार्थना है कि मेरे साथ बरात की अगवानी लें, और फेरों के बाद ८ बजे दावत में शरीक हों।

ताराचंद

इस पत्र में उर्दू-लिपि में सुरगबासी, श्री, प्रार्थना, ये तीन शब्द ग़नीमत हैं। हिंदी में फ़ारसी के कितने शब्द आए हैं, इसकी गिनती व्यर्थ है।

कुछ विशेष निमंत्रण-पत्र

(१) देवर के विवाह में भाभी की ओर से निमंत्रण-पत्र—

२४, चैथमलाइन, प्रयाग
५।२।४०

श्रीमतीजी,

मेरे प्रिय देवर श्रीअर्जुन वर्मा के विवाह के उपलक्ष्य में शुक्रवार, ता० १६ फ़रवरी' ४० को सायंकाल सात बजे मेरे स्थान पर प्रीति-भोज होगा, उसमें बच्चों-समेत सम्मिलित होकर अनुगृहीत करें।

निवेदिका
श्यामदेवी सकसेना

सेवा में—
श्रीमती रत्नकुमारीजी,

भाभी की ओर से निमंत्रण-पत्र होना कौतूहल-जनक अवश्य है, पर बात समझ में आ जाती है। डॉ० बाबूराम सकसेना ने अपने भाई के विवाह में पुरुषों को निमंत्रित किया, तो भाभीजी देवियों को क्यों न बुलातीं। पर भाभीजी को चाहिए था कि देवरानीजी के आगमन के उपलक्ष्य में महिलाओं को आमंत्रित करतीं। अँगरेज़ी-शैली में श्रीमान् और श्रीमतीजी की ओर से श्रीमानों और श्रीमतियों को ऐसे अवसरों पर एक साथ एक ही निमंत्रण - पत्र द्वारा निमंत्रित किया जाता है।

(२) श्रीमान् की ओर से श्रीमतियों को निमंत्रण-पत्र

मेरे एक पड़ोसी विधुर हैं। उनकी कन्या के विवाह में महिलाओं का आना भी आवश्यक था। महिलाओं को अलग एक दिन चाय के लिये निमंत्रण दिया गया। पत्नी के अभाव में बेचारे को स्वयं निमंत्रण देना पड़ा—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री

महोदया,

मेरी पुत्री कुमुदिनी का शुभ विवाह श्रीश्री-कृष्ण जोशी के साथ २३ ता० जनवरी को निश्चित हुआ है। इस शुभ अवसर के उपलक्ष्य में, २२ ता० जनवरी, बुधवार को, ४ बजे सायं, आपकी उपस्थिति, ६ बेली-रोड पर, चाय के लिये प्रार्थनीय है। आशा है, आप इस उत्सव की शोभा बढ़ाकर मुझे बाधित कीजिएगा।

विनीत—

कृष्णानंद पांडे

इस लेख में मैंने निमंत्रण-पत्रों के कुछ उदाहरण दिए हैं। मेरे पास कुछ और भी मनोरंजक निमंत्रण-पत्र हैं, जिन्हें स्थानाभाव के कारण देने में असमर्थ हूँ। हिंदी में अभी तक निमंत्रण-पत्र मध्यम पुरुष में संबोधित किए जाते हैं। अँगरेज़ी में अन्य पुरुष का प्रयोग अधिकतर किया जाता है। अँगरेज़ी निमंत्रण-पत्रों की सरलता हिंदी के लिये अब भी आदर्श है।

अन्य पुरुष में दिया गया निमंत्रण-पत्र निम्नलिखित प्रकार का होगा—

डॉक्टर और श्रीमती सत्यप्रकाश

की विनम्र प्रार्थना है कि

श्रीमान् और श्रीमती दुलारेलालजी

उनके घर डी० बेली रोड, प्रयाग पर शनिवार २४ मई, १९४१ को सायंकाल ६ बजे चाय - पार्टी में सम्मिलित होकर उन्हें कृतार्थ करें।

उत्तराभिलाषी

अरविंद

[R. S. V. P. का अनुवाद मैं उत्तराभिलाषी उपयुक्त समझता हूँ।]

दुलारे-दोहावली पर

आचार्य रामचंद्रजी शुक्ल की नई सम्मति

हिंदी-साहित्य के सर्वश्रेष्ठ समालोचक और इतिहासकार स्व० पं० रामचंद्रजी शुक्ल अपने 'हिंदी-साहित्य का इतिहास'-नामक ग्रंथ के नए संस्करण में लिखते हैं—

"कविवर बिहारीलाल की परंपरा के वर्तमान प्रतिनिधि श्रीदुलारेलालजी भार्गव के दोहों की बारीकी साहित्य-क्षेत्र में अपना कमाल खड़ी बोली के इस ज़माने में भी दिखाती रहती है। बिहारी की प्रतिभा जिस ढाँचे की थी, उसी ढाँचे की श्रीदुलारेलालजी की भी है, इसमें संदेह नहीं। एक-एक दोहे में सफ़ाई के साथ रस से स्निग्ध या वैचित्र्य से चमत्कृत कर देनेवाली प्रचुर सामग्री भरने का गुण इनमें भी है। कुछ दोहों में देश-भक्ति, अछूतोद्धार, राष्ट्रीय आंदोलन इत्यादि की भावना का अनूठे के साथ समावेश करके इन्होंने पुराने ढाँचे में नया मसाला डालने की अच्छी कला दिखाई है। आधुनिक काव्य-क्षेत्र में श्रीदुलारेलालजी ने व्रजभाषा-काव्य-चमत्कार-पद्धति का एक प्रकार से पुनरुद्धार किया है। इनकी दुलारे-दोहावली पर टीकमगढ़-राज्य की ओर से २,०००) का देव-पुरस्कार मिल चुका है।"

दुलारे-दोहावली का सातवाँ, सुंदर सस्ता संस्करण तैयार है। अपनी प्रति मँगा लीजिए। मूल्य ॥)

सजिल्द १) मिलने का पता—गंगा-ग्रंथागार, ३६, लाटूश रोड, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रांतिकारी युग की चार अमूल्य पुस्तकें

उद्योग-धंधा—इस पुस्तक में देश के सर्वमान्य नेता और विद्वान्, जैसे पूज्य पंडित मदनमोहन मालवीय, महात्मा गांधी, श्रीरवींद्रनाथ ठाकुर, बाबू भगवानदास, देश-रत्न बाबू राजेंद्रप्रसाद, पंडित जवाहरलाल नेहरू, श्रीकुमार भा आदि अनेक मनीषियों के कृषि, गोधन, ग्राम-सुधार, कल-कारख़ानों तथा तरह-तरह के उद्योग-धंधों से संबंध रखनेवाले उपयोगी निबंध हैं। इस बेकारी के युग में यह पुस्तक प्रत्येक मनुष्य के लिये जीविका-उपार्जन के कठिन प्रश्नों को हल करती है। पुस्तक का विषय नाम से ही प्रकट है। मूल्य १)

दहेज़—दहेज़-कुप्रथा का जीता-जागता हृदयद्रावक चित्र अंकित करनेवाला सामाजिक उपन्यास। लेखक, श्रीपं० देवनारायण द्विवेदी ; भूमिका-लेखक, श्रीश्रीप्रकाशजी।

यह उपन्यास हमारे देश की उस बड़ी कुरीति को लक्ष्य करके लिखा गया है, जिससे इस बीसवीं शताब्दी में हिंदू-समाज पीड़ित है। अब भी देश में कुछ ऐसे राक्षस मौजूद हैं, जो दहेज़ ऐंठने और लड़के का मोल-भाव करने में अपना गौरव समझते हैं। 'दहेज़' इस बुराई की ओर बड़े ज़ोरों से हिंदू-समाज का ध्यान आकर्षित करता है। यह उपन्यास हिंदी के अच्छे उपन्यासों की श्रेणी में रक्खा जा सकता है। मूल्य २)

किसान-सुख-साधन—ग्राम-सुधार-पुस्तकालयों के लिये बिहार तथा संयुक्त प्रांत की सरकार ने इस पुस्तक को स्वीकृत किया है। यह भारतीय किसानों तथा ग्राम-सुधारकों के लिये कृषि-संबंधी उपयोगी ग्रंथ है।

इस पुस्तक में खेती की बातों का बढ़िया ख़ाका खींचा गया है। जैसे उत्तम खाद, अच्छे हल, बैल, आवश्यक बीज, खेती के औज़ार, खेती-बारी के तरीक़े, बाग़-बग़ीचे के ढंग तथा ग्रामीण संगठन आदि पर बड़ी ख़ूबी के साथ प्रकाश डाला गया है। मूल्य १)

लव-लेटर्स—भूमिका-लेखक, श्रीपं० कृष्णकांत मालवीय एम्० एल्० ए० ; केंद्रीय संग्रहकर्ता, ठा० सूर्यबलीसिंह। किसी पाठक को 'लव-लेटर्स' नाम से ही भड़क न उठना चाहिए, क्योंकि इसमें आदर्श उपस्थित करनेवाले प्रेम-पत्रों के संग्रह किए गए हैं। प्रत्येक पत्र में प्रेम की पवित्र परा काष्ठा के दर्शन होते हैं। यह पुस्तक विवाहितों के लिये बहुत सुंदर दहेज़ है। बहुत दूर से एक व्यक्ति पत्रों में अपने हृदय का भाव किस प्रकार प्रकट कर सकता है, वह इस पुस्तक में भली भाँति दिखाया गया है। मूल्य ३॥)

उत्तमोत्तम पुस्तकों के मिलने का एकमात्र पता—

काशी-पुस्तक-भंडार, एम्० बी० सिंह, चौक, बनारस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिलकुल नया प्रकाशन

संसार के सर्वोत्कृष्ट उपन्यासों की श्रेणी में

निःसंकोच रक्खा जानेवाला

हिंदी का महान् गौरव

दो भाग में

'विकास'

मूल्य प्रत्येक भाग २), २॥)

[सामाजिक उपन्यास]

लेखक

हिंदी के युगांतरकारी उपन्यासकार

श्रीप्रतापनारायण श्रीवास्तव बी० ए०, एल्-एल्० बी०

('बिदा' और 'विजय' के यशस्वी रचयिता)

'विकास' की विशेषताएँ—

(१) साम्य तथा समाजवाद का स्पष्टीकरण।
(२) हिंदू-समाज के गूढ़ रहस्यों का उद्घाटन।
(३) कुली-प्रथा की आह और कराह।
(४) पूर्वजन्म के प्रेम की पीड़ा।
(५) चारु चरित्रों का विचित्र विश्लेषण। इत्यादि-इत्यादि।

उच्च कोटि के चरित्र-चित्रण, भाव-व्यंजना और घटना-वैचित्र्य के लिये लेखक का नाम ही पर्याप्त है।

यह अप-टु-डेट उपन्यास आपको सामाजिक और राजनीतिक गुत्थियाँ सुलझाने में सहायता तथा सहयोग प्रदान करेगा।

श्रीवास्तवजी के समस्त उपन्यासों के

मिलने का एकमात्र पता—

गंगा-ग्रंथागार, ३६, लाटूश रोड, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोस्वामी तुलसीदास की धर्मपत्नी

रत्नावली

जीवनी और रचना

(सचित्र)

संपादक और टीकाकार

रामदत्त भारद्वाज

संशोधक

कविकुमार पंडित भद्रदत्त शर्मा

एवं

पंडित कृष्णदत्त भारद्वाज

(एम्० ए०, आचार्य, शास्त्री, साहित्यरत्न)

——:०:——

यह पुस्तक हिंदी-संसार में नई गवेषणा का फल है, और गोस्वामी तुलसीदास के आद्य जीवन एवं उनकी साध्वी धर्मपत्नी पर प्रचुर प्रकाश डालकर अनेक प्रचलित भ्रमों को दूर करती है। इसमें अन्य अनेक हस्त-लिखित ग्रंथों के आधार पर रत्नावली का विशद जीवन-चरित है, उसके २०१ दोहे तथा संपादक द्वारा उनकी सरल टीका भी विद्यमान है। अब तक उक्त चरित और दोहों की जो अनेक हस्त-लिखित प्रतियाँ उपलब्ध हुई हैं, उन सबकी तथा अन्य हस्त-लिखित पुस्तकों के कतिपय पृष्ठों के चित्र भी मनोविनोदार्थ यथास्थान दे दिए गए हैं।

यद्यपि गत दो-तीन वर्षों में इस विषय की चर्चा उक्त संपादक और टीकाकार द्वारा अनेक पत्र-पत्रिकाओं में समय-समय पर हुई है, तथापि यह पुस्तक हिंदी के स्थायी-साहित्य में सर्वथा नई और अत्यंत महत्त्व-पूर्ण वस्तु है।

रत्नावली की रचना बालक-बालिकाओं एवं नर-नारियों के बड़े काम की है, और इतिहास, साहित्य तथा भाषा के मर्मज्ञों के लिये भी भव्य विचारों की सामग्री उपस्थित करती है।

गोस्वामी तुलसीदास-कृत रामायण का जो हिंदू-गृह में गौरवान्वित स्थान है, वैसा ही उनकी विदुषी पत्नी के दोहों का भी है। मूल्य लगभग १), सजिल्द १॥)

मिलने का पता—

गंगा-पुस्तकमाला, लखनऊ

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदू-जाति के विश्व-मान्य सिद्धांतों का सजीव, सार-गर्भित चित्रण

संगठन, एकता और बंधुत्व का आदर्श उदाहरण !!

कला, कल्पना, मनोविज्ञान-नीति—

सब बातों का एक ही स्थान पर मिलकर आपके हृदय की कोमल भावनाओं को छू लेने का प्रयास कितना पवित्र—कितना सफल ! एक बार अवश्य पढ़िए—

* निःसहाय हिंदू *

सोचिए तो—आप स्वयं ही कह देंगे—

* यह सुंदर उपन्यास *

आपके मनोनुकूल पाठ्य-सामग्री

का चयन है !

साहित्य के सुपरिचित कलाकार श्रीयुत राधाकृष्णदास

की ओज-भरी लेखनी का अनुपम चमत्कार, जिसका एक-एक शब्द आपके लिये अनमोल प्रमाणित होगा।

संपादक

रा० ब० बाबू श्यामसुंदर दास बी० ए०

'हिंदू' होकर आपने इस पुस्तक को न पढ़ा, तो आपने जाति के प्रति एक अन्याय किया !

अभी-अभी छपकर तैयार है !!

सजिल्द १), सादी ॥)

आज ही अपना ऑर्डर भेजिए।

गंगा-ग्रंथागार, ३६, लाटूश रोड, लखनऊ

स्वास्थ्य-वर्द्धक भोजन का चुनाव सरलता से कर लें !

कैसे?

'भोजन और स्वास्थ्य'

नामक हमारी नई प्रकाशित पुस्तक द्वारा !

"स्वास्थ्य-वर्द्धक भोजन का चुनाव साधारण जन भी, अपनी आय के अनुसार, कर सकते हैं। इसके लिये अमीर-ग़रीब का कोई प्रश्न नहीं।" मूल्य १), सजिल्द १॥)

लेखक—डॉ० सत्यप्रकाश डी० एस्-सी०, एफ़्० आई० ए० एस्०

तथा डॉ० संतप्रसाद टंडन एम्० एस्-सी०, डी० फ़िल्०

गंगा-ग्रंथागार, ३६, लाटूश रोड, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मन का भ्रम

[श्रीपं० उमाशंकर वाजपेयी 'उमेश' एम्० ए० (ऑनर्स)]

वे दोनो एक दूसरे को जानते थे।

कुछ बरसों बाद—

दूर देश से आया—

प्रकाश—बहुत कुछ बदलकर—

स्वभाव में वैसा ही।

तब—

विमल—हीरा-सी चमक उठी थी—

खराद में चढ़कर।

प्रकाश देखता—

उस पहचानी को, जो थी अब अनजानी-सी, और देखता ही रह जाता।

विमल ने भी देखा—चौंककर।

फिर—शांत हो गई।

उस शांति में क्या था। वह न जान सका।

उसने निश्चय किया—

उस शांति के आवरण को हटाकर—विमल के रूप में—झिलमिलाते उसके हृदय को जानने का।

❀ ❀ ❀

वह उसे देखता—

जब—

पढ़ने जाती,

घूमने निकलती,

फाटक तक पहुँचाने आती—किसी अपनी सगी या सखी को।

और—

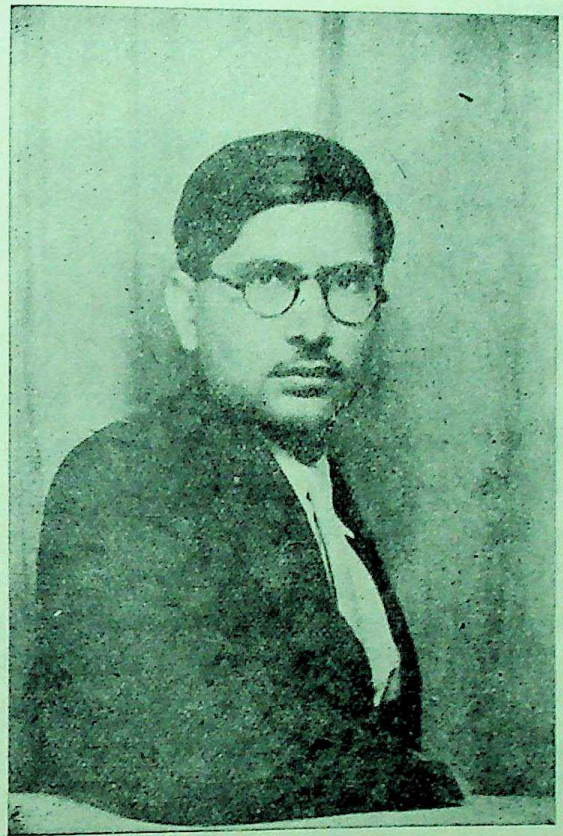

देखता—

हँसती, खेलती,

उठती, बैठती,

बनती, चुनती,

लिखती, पढ़ती—

जो कुछ झलकता चिक के बँधे आलोक में—दूर से।

वह आतुर हो उठता—

न-जाने किस-लिये, सब कुछ भूल—केवल प्राणों की गति में उसकी स्मृति लिए।

❀ ❀ ❀

उस दिन—

विमल के वहाँ कीर्तन था।

कल्पनाओं की कितनी स्वर्ण-रश्मियाँ उसके रक्त के साथ नाच उठीं।

सारे दिन वह उसे गूँथता रहा—पलों की लड़ी में।

श्रीपं० उमाशंकर वाजपेयी 'उमेश' एम्० ए० (ऑनर्स)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज उसे वह देखेगा समीप से—
सोया परिचय जगेगा।
उसके बाद—
'यह होगा'—
'नहीं-नहीं, वह होगा'—
उसका मन आकांक्षाओं से तन उठा।
वह उठा—उठती हुई उमंगों के साथ।
संध्या झूल रही थी छाया के हिंडोले पर—दूर—बादलों की परिधि में—एक तारक-फूल हिल रहा था उसके कंपित हृदय पर, रेशमी डोर में बँधा—प्रकाश के मन-सा ही झलमलाता।
न-मालूम वह कब तक वहाँ खड़ा रहा—उस मौन स्वर्गीय सौंदर्य में बेसुध-सा।
ढोल, करताल बज उठे।
वह चौंका!
उसने देखा—
लोग जा रहे थे शामिल होने कीर्तन में।
वह भी चला—
आशा और निराशा की धड़कन लिए।
वह खड़ी थी—
कीर्तन-हॉल के दरवाज़े पर, छोटी-छोटी लड़कियों के साथ—कलियों में फूल-सी—ज्योति में लहराती, अपनी मधुर, सविलास चेष्टाओं से अभ्यागतों का स्वागत करती हुई।
वह बढ़ा—
मन में सोचते हुए उन शब्दों को, जो वह उससे कहेगा।
पर—
विमल ने देखा—गंभीर होकर,
और—
फिर चल दी।
उसने सोचा—
'नहीं पहचाना?'
'असंभव।'
'तब?—'
'लज्जा थी?'
'नहीं, कभी नहीं,—मॉडर्न लड़कियों में लज्जा!'
'छिः!'—
'फिर?'—
'उपेक्षा थी?'
वह कुछ न समझ सका—और उलझन-भरे दिल से बैठ गया जाकर कीर्तन में, जहाँ बैठे थे कुछ लोग
ऐसे—
जैसे उन्हें चाहिए था बैठना—
और—
एक आदमी थिरक रहा था,
घुँघरू बाँधे,
ओढ़नी ओढ़े,
पोपले मुँह पर
तिलक लगाए,
जटा बढ़ाए,
ऐली-गैली भाषा में गाता हुआ।
बाक़ी के कुछ लोग
ढोल-मँजीरे पीट रहे थे,
चिल्लाते थे
बीच-बीच में,
जनकनंदिनी की जै हो।
उनके थे भगवान् सामने
सजे सजाए,
जिनको करके लक्ष्य
दृष्टि से देख
उधर चिक के अंदर भी—
'सुनो ध्यान से बहनों
यह अवसर जाने ना पाए'
सब-के-सब थे धूम मचाए।
प्रकाश—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ देर तक बैठा समझने की कोशिश करता रहा कि आख़िर यह जो कुछ हो रहा है—इसका मतलब क्या है ?

'क्या यही आत्मिक उत्थान का साधन है ?'

वह समझा रहा था—अपने को

'सब ठीक ही होगा'—

पर—

उसकी अंतरात्मा सब स्वाँग-सा देख रही थी

और—

वह भी महसूस कर रहा था

अपने को—

उस धमा-चौकड़ी में

एक स्वाँग-सा।

उसे उस 'पवित्र' वातावरण में रहना असह्य हो गया।

वह उठा, एकाएक—

और—

कमरे से बाहर आ गया,

उसने देखा—

विमल को किसी से बातें करते हुए।

उसने समझा कि वह देखेगी,

उसकी ओर—

ज़रूर एक बार।—

पर, उसने न देखा।

जूते पहन, वह चल दिया—

निराशा के शिथिल डगों में

गहरी अँधियारी सुषुप्ति में डूबी—

अपनी सूनी डगर पर—

❀ ❀ ❀

दूसरे दिन—

प्रकाश की एक दोस्त शशी ने पूछा—

"कैसा रहा कीर्तन ?"

"अच्छा रहा, उनके लिये जो उसे समझें, पर मेरी तो समझ के बाहर था।"

"मिली थी, विमल ?"

"हाँ ! वह वहाँ थी।"

"वह हमारे यहाँ आई थी"—शशी ने कहा—अपनी आँखों की माया-ज्योति में प्रकाश को बाँधती-सी।

प्रकाश को वह दिन याद हो आया—

'जब विमल शशी के घर जा रही थी, तब अचानक वह ठीक उसके सामने पड़ गई। वह ठिठक-सी गई, जैसे उसके पैरों के नीचे की ज़मीन निकल गई हो, तब वह लौट पड़ा था इस दुख में कि उसके कारण उसे ऐसा हुआ। शायद इसी दिन की बात शशी कहती हो।'

क्षण-भर में ऊपर की घटना उसके दिमाग़ में घूम गई। उसने पूछा—

"तब—?"

"वह तुम्हारी बुराई करती थी"—शशी ने कहा, गंभीर मुद्रा से।

"अच्छा—!" चौंककर उसने पूछा—"क्या बुराई करती थी ?"

"कितनी ही बातें कहती थी।"

"आख़िर, क्या ? मैंने तो कभी उसकी बुराई नहीं की, फिर वह मेरी बुराई क्यों करेगी ?"

"आप क्या जानें ?—अभी मुझे देर हो रही है, फिर कभी मिलूँगी, तब सब बातें बताऊँगी।"

कौतूहल-वश प्रकाश ने जानना चाहा था विमल के विचार अपने प्रति—

पर—

विमल-जैसी लड़की के मुँह से कोई ओछी बात किसी के प्रति निकले, इसका उसे स्वप्न में भी विश्वास न होता था।

❀ ❀ ❀

इसी तरह—

दिन बीतते जाते थे।

गर्मियों की छुट्टियाँ हुईं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छुट्टी हुई साथ ही क्षणिक दर्शन की भी।
तब—
प्रकाश का रंगीन संसार बदल गया था—
रह गया था—
केवल—
कल्पना-लोक—
जिसमें वह खींचता था
विमल के काल्पनिक चित्र—उसकी सारी दिन-चर्या के—
अनुमान के चित्र-पट पर।
मित्र आते,
उसका सिर चाटने,
बहस करने,
वही पुरानी, बासी बातें।
उसका बदला मिज़ाज देख मित्रों ने भी आना बंद कर दिया था।
पर—
उनमें से एक—
न-मालूम क्यों—?
चिपका रहता उससे
लेकर—
दुनिया-भर की चिंता—
दुनिया—
जिसे वह देखा करता
एक दूसरे ही दृष्टिकोण से।
तब—
वह एकाकी होने पर भी,—
खिंचता उसकी ओर—
भूलकर—भीतर के दुख को थोड़ी देर।

❀ ❀ ❀

उस दिन—
प्रकाश अपने मित्र के साथ घूमता-फिरता आ रहा था।
सेनिमा-सेक्स से,
विश्व-क्रांति से,
बढ़ते-बढ़ते,
बातों-बातों ही में—
पहुँच गए थे वे दोनो
आत्मतत्त्व के गहन विषय पर।
वह चौंक पड़ा
देख—
सामने से आती,
लहरी-सी चलती,
विमल को—
विमल वेश में।
वह सँभल भी न पाया था कि विमल ने एक बार मुड़कर देखा,
और—
अंदर चली गई—
यौवन की सीढ़ी पर मदिर चरण रखती हुई।
किंतु,
आज—
उसकी शांत आकृति में परिवर्तन था।
प्रकाश का मन आशा से खिल उठा, और उसने मित्र से कह दिया—
कुछ समझ-बूझकर मित्र ने कहा—
"ऑक्सिजन का प्रभाव है यह?"
प्रकाश मित्र पर बिगड़ उठा।

❀ ❀ ❀

प्रकाश न भूल सका—
उसका मुड़कर देखना।
उसके समस्त प्राण उत्कंठित रहने लगे, उसे देखने के लिये। वह विमल के हृदय, उसकी संपूर्ण लाली, उसकी छाया-बीच छिपी समस्त सौंदर्य-श्री से रंजित करना चाहता था अपने नेत्रों की यवनिका—
पर—
वह न दिखाई देती।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस दिन—
वह घूमने निकला ही था कि उसने देखा—
उसे जाते हुए किसी मकान के अंदर।
उसने सोचा—
'रुकूँ, उसके निकलने तक ?'
'नहीं, क्या कहेंगे लोग ?'
'पर—'
'महीनों में तो यह मौक़ा मिला—'
'खो दूँ इसे क्या हाथ से—?'
'नहीं—'
'कहने दो—जो जिसका जी चाहे—'
पर—
नैतिक बल टूटने लगा।
'तब,
क्या करूँ ?'
उसने देखा—उपाय के लिये—
उसका मित्र आ रहा था।
दोनो घूमने लगे उस छोटे-से दायरे में।
मित्र की ज़मीन-आसमान की बातों पर वह 'हाँ' करता जा रहा था, पर उसकी मनोवृत्तियाँ केंद्रित थीं—उस मकान के अंदर। विमल के पैरों की आहट भी मालूम पड़ रही थी उसे मीठे पवन में गूँजती-सी।
एकाएक उसने मित्र से कहा—
"वह देखो, बोल रही है—"
जब कि उसका मित्र कहे जा रहा था—
"यह साम्यवाद और पूँजीवाद का संघर्ष तब तक—"
मित्र घबराया—
फिर,
कुछ समझकर, उसने कहा—
मुस्कराते हुए—
"You are a healthy youngman."
(तुम स्वस्थ युवक हो)
"क्यों ?"—प्रकाश ने पूछा।
"जिस उम्र में जो चाहिए, वह न होने पर—
या तो कोई केमिकल की कमी है—या कोई ग्लैंड कमज़ोर है।"
"तब
उसे डॉक्टर को दिखाना चाहिए ··"
मित्र की बातों में प्रकाश का ध्यान न था। उसकी आँखें झूम-सी रही थीं, और उसका मन विमल के हृदय की सुगंधि में डूब-सा रहा था।
इतने में—
उसे दिखाई दी—
ग्रामोफ़ोन के गाने पर नाचती हुई उसकी एक झलक—एलेक्ट्रिक के उजाले में।
वह लौटा—
फिर देखने के लिये।
पर—
उसने देखा, विमल ने किवाड़े बंद कर दिए, दरार से उसकी ओर देखते हुए एक पैनी दृष्टि से।
एकाएक—
बड़ी-बड़ी बूँदों में बादल गरज उठा।
उसका मित्र दौड़कर—सामने के ख़ाली बरामदे में चला गया।
प्रकाश खड़ा रहा—
उसकी एक साँस के साथ—
हवा के तीव्र झोंके ने खड़खड़ाया वह बंद द्वार—
लेकिन—
वह न खुला।
वह देखता रहा—
उन किवाड़ों की ओर, जो उसकी जान में सदा के लिये बंद हो गए थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मित्र ने बुलाया।

वह जाकर बैठ गया—कपड़ों की परवा न कर, धूल-पानी से सने उस फ़र्श पर।

पानी बरस रहा था ज़ोरों में, और बीच-बीच में बिजली कौंध उठती थी—विमल की पैनी दृष्टि-सी ही—प्रकाश के मनोगगन को चीरती-सी। हृदय के रुदन के साथ-साथ चमक-चमक पड़ती थी अपमान की एक रेखा।

उसे याद आ गई अपनी गर्ल दोस्त शशी की उस दिन की बात—

'तब क्या जो उसने विमल के लिये कहा था, ठीक था?'

उसने मित्र की ओर देखा—
बिजली की कौंध में—
उसके उन्नत ललाट के नीचे—
उसके नेत्र चमक रहे थे—
खींचते-से उसे—
ज्योतिर्मय लोक में।
मित्र ने कहा—
"यह बदली बदल जायगी।"

तकमीलुत्तिब हॉस्पिटल, लखनऊ

हर प्रकार के रोगों के लिये हमारे औषधालय में कंपाउंड और पेटेंट दवाइयाँ उचित मूल्य पर मिलती हैं, जिनकी परीक्षा ७ लाख रोगियों पर सफलता-पूर्वक की जा चुकी है।

अस्पताल में धनी रोगियों से जो धन प्राप्त होता है, वह दीन रोगियों पर व्यय कर दिया जाता है।

ओषधियों की पूरी सूची पत्र मिलने पर मुफ़्त भेजी जाती है।

पत्र-व्यवहार इस पते पर करें—
इंचार्ज तकमीलुत्तिब हॉस्पिटल
हकीम अब्दुलअज़ीज़-रोड, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्यार का प्यासा है संसार

[श्रीयुत 'वचनेश']

खोजती हैं खिलकर कलियाँ,
कहाँ अलियों की आवलियाँ,
पखुरियाँ खोल, सुवास पसार।

बढ़ रहे गगन ओर तरुवर,
बुलाते पत्र हिला नभचर,
लिए फल-फूल सरस उपहार।

उच्च पद तज, नदियाँ बहकर,
चाहतीं बहु चोटें सहकर
सिंधु-संगम, जो निज संहार।

भागती, सलज निशा लखकर
खेलता खेल नित्य दिनकर,
बैठता विधु बनकर अँकवार।

जीव ये विपुल रूप भरते,
न भव-संभव दुख से डरते,
जोड़ते सुत, दारा, परिवार।

किसी को पर न तुष्टि आती,
ओस चाटे न प्यास जाती,
भरा भव-निधि-जीवन में क्षार।

अरे घनश्याम, स्वरस बरसा,
न बूँदाबाँदी कर तरसा,
हुए हैं नीरस उर-कासार।

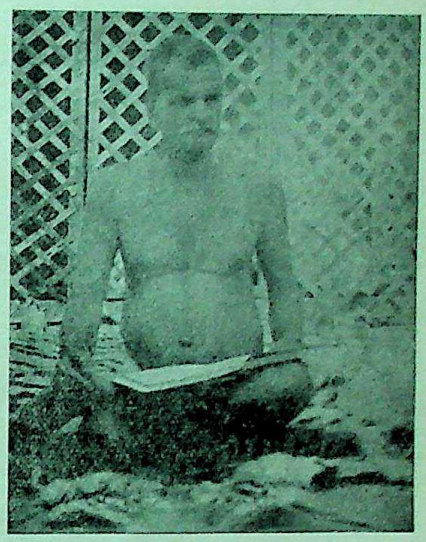

श्रीयुत 'वचनेश'

उमड़ हो जायँ एक सब सर,
रहे 'वचनेश' न कुछ अंतर,
चतुर्दिक हो लहराता प्यार।
प्यार का प्यासा है संसार।

खिज़ाब छोड़ो !

इस परीक्षित तथा सत्य-प्रमाणित तेल ने हज़ारों का बाल काला किया, आपका भी अवश्य काला करेगा। इससे बाल का पकना रुककर, यदि पका बाल खूँटी से स्थायी काला पैदा नहीं होगा, तो दूना दाम वापस की शर्त। अधिक उम्र ५), ४० से ऊपर ७) का तेल मँगावें।

पता--बाल काला स्टोर्स, पो० कंसी सिमरी (दरभंगा)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहे

[श्रीयुत तेजनारायण काक एम्० ए०]

साजि उरज-गज, चख-तुरग, फहरावत चित-केतु ;
बाला-थल आयौ अतनु रसिक-हृदय-जय-हेतु ॥ १ ॥
जा तन धन छन एक हू हेरै नैंन घुमाय ;
तन हारै, मन हू छकै, धन की कहा चलाय ? २ ॥

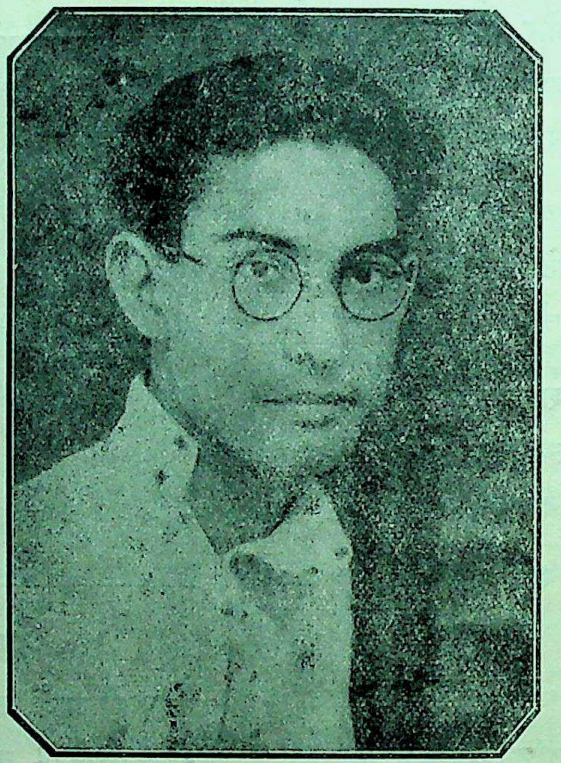

श्रीयुत तेजनारायण काक एम्० ए०

कस रस-बस ए अर परे खरे जुआरी नैंन ;
तन, मन, धन हारैं, तऊ जुरनि-जुआ छोरैं न ॥ ३ ॥
गोकुल - गाँवु - गुवालिनी, नागरु ना गरु लागु ;
बारक बरि बुझिहै नहीं बिषम प्रेमु की आगु ॥ ४ ॥
बिरह-बिबस, बूझति बृथा, व्यथा-बिकल बूझैं न ;
नैन लगे घनस्याम सन, अब कस लागैं नैंन ? ५ ॥
बिरह-झार जरि, छार बनि परौं जाहि वा ठाउँ ;
प्रिय-मग-माटी मिलि अली, पिय-पग-रज बनि जाउँ ॥ ६ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

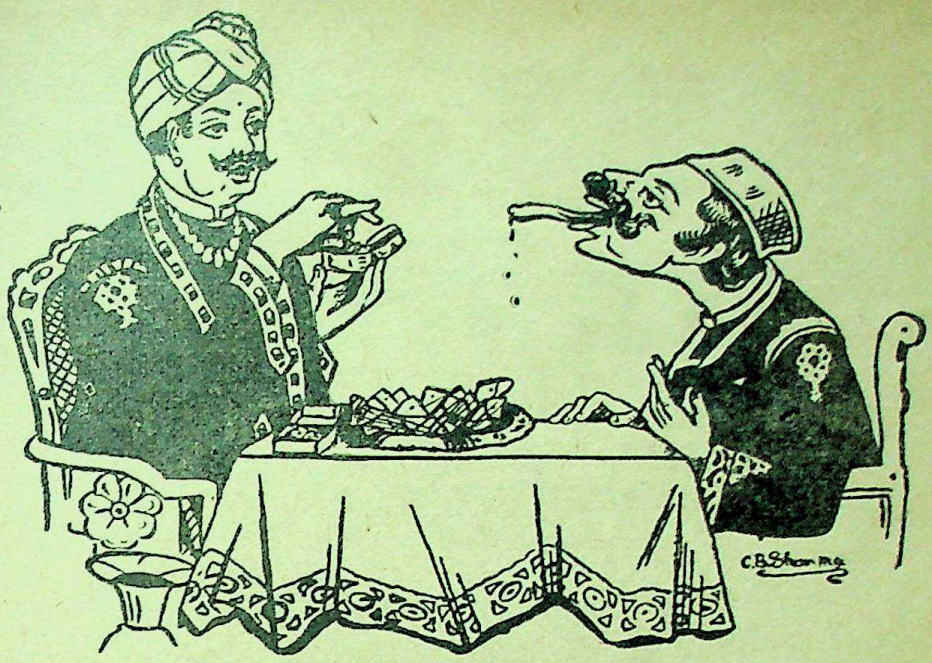

यह लीजिए, भारत का सर्वश्रेष्ठ ज़र्दा !

'पतिनज़ार'

की डिब्बी खुलते ही उसकी सुगंध एवं स्वाद के आभास - मात्र से इन महाशय के मुँह से लार टपक पड़ी, और अब तो रोज़ ही आप इस ज़र्दे का सेवन कर रहे हैं।

आप भी अवश्य खाकर देखिए !

'पतिनज़ार' बंद डिब्बों में मिलता है, और उसकी तीन क़िस्में हैं—

१—तोता मार्का　　२—हवाई जहाज़ मार्का　　३—गोल्ड मोहर मार्का

इन तीनो की अपनी अलग-अलग विशेषताएँ हैं। सर्वप्रकार के काशी सुर्ती, ज़र्दा तथा पान के मसालों आदि के लिये मुफ्त सूचीपत्र मँगाइए। सर्वत्र एजेंटों की आवश्यकता है।

बदलराम लक्ष्मीनारायण, बनारस स्वर्ण-पदक प्राप्त

ब्रांच—१४४।ए, हरिसन-रोड, कलकत्ता　　८२, कार्नवालिस-स्ट्रीट, कलकत्ता

२८८, एडवर्ड-स्ट्रीट, रंगून　　३०२, कालवादेवी-रोड, बंबई ४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालयों और हिंदी-प्रेमियों को

शुभ सूचना

सचित्र, साप्ताहिक—

लोकमत

नागपुर से प्रति रविवार को प्रकाशित-

वार्षिक मूल्य ३॥)

लोकमान्य

कलकत्ता से प्रति गुरुवार को प्रकाशित

वार्षिक मूल्य ३॥)

केवल ५) में एक साल तक दिए जायँगे

ये दोनो पत्र साप्ताहिक के रूप में अर्द्ध साप्ताहिक
की भाँति आपका मनोरंजन करेंगे।

मनीऑर्डर भेजकर शीघ्र ग्राहक बनें।

लोकमत-कार्यालय

नागपुर सिटी

लोकमान्य-कार्यालय

१६०, हरिसन-रोड, कलकत्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

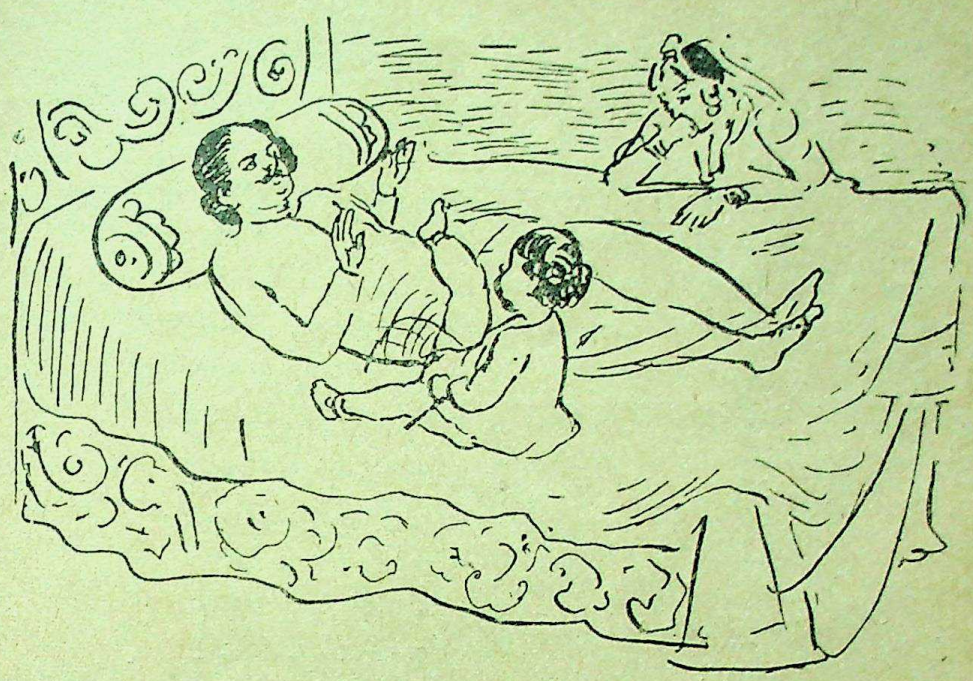

कथा-कहानियाँ

लेखक हैं मदरास-प्रांत के प्रसिद्ध वकील श्रीवि० रामनाथ ऐयर बी० ए०, बी० एल्०। दक्षिण-भारत की भाषाओं का साहित्य संस्कृत-साहित्य के समान ही बालोपयोगी कथा-कहानियों का ख़ज़ाना है। लाखों वर्ष पुरानी द्रविड़-संस्कृति और सभ्यता ने जीवन के अनुभव से जिस सत्य को ढूँढ़ निकाला है, वही सत्य इन कहानियों द्वारा आजदिन भी महाराष्ट्र, आंध्र, तामिल और कनोटक-देश में बालकों को हृदयंगम करा दिया जाता है। बालकपन से इस प्रकार सुशिक्षित किए जाने के कारण ही मदरासी युवक जीवन-संग्राम में सभी भारतीय युवकों से अधिक सफल होते हैं। यदि आप भी अपने पुत्र को श्रीनिवास शास्त्री, डॉ० सुब्रह्मण्य ऐयर और सर शंकरन नैयर बनाना चाहते हैं, तो उन्हीं मदरासियों द्वारा लिखी गई इन कहानियों को उन्हें सुनाइए। मूल्य सादी ।), जिल्ददार ॥)

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या आपने अब तक नहीं देखा ?

हिंदी के सुप्रसिद्ध विद्वान्, नाटककार

श्रीयुत गोविंदवल्लभ पंत

का सबसे नवीन बौद्धकालीन नाटक

* अंतःपुर का छिद्र *

[इतिहास के पृष्ठों का रोमांचकारी छाया-चित्र]

अभी-अभी प्रकाशित हुआ है।

कौशांबी के राजमहल में होनेवाली प्रणय-लीला, महाराज उदयन की प्रेम-कथा का दुःखद प्रसंग, अधिकार-लिप्सा का रोमांचकारी दृश्य। एक सार-गर्भित कथानक ! भगवान् बुद्ध के समय का इतिहास !!

स्टेज पर भी खेला जा सकता है !!!

गंगा पुस्तकमाला कार्यालय लखनऊ

सजिल्द ॥) सादी ।=)

जरा मेरी भी तो सुन लीजिए !

आपकी पुस्तकों की सूची अधूरी न रह जाय !!

एक बात ऐसी है—ध्यान रखिए !!!

बिहारी-सुधा

[लेखक, 'मिश्रबंधु']

महाकवि बिहारीलाल के २७० सर्वश्रेष्ठ दोहों का अर्थ-सहित सुंदर संग्रह

आपकी घरेलू लाइब्रेरी व पुस्तकालयों की शोभा बढ़ाने-योग्य अनुपम

काव्य-ग्रंथ

सजिल्द ॥) सादी ।=)

गंगा-ग्रंथागार, ३६, लाटूश रोड, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमज़ोरों पर क़यामत !

[श्रीहरिशंकर शर्मा]

ज़ हैवीनैस श्रीस्वामी गड़बड़ानंद गुणाकर की अध्यक्षता में गड़बड़-गोष्ठी का असाधारण अधिवेशन बड़ी सफलता के साथ संपन्न हुआ। जिस प्रकार आज की सभा असाधारण थी, उसी प्रकार उसका कार्य-क्रम भी असाधारण था। सभा का मुख्य विषय था—"सफलता-मार्ग में आने-वाली रुकावटें किस तरह दूर की जायँ ?" सबसे पूर्व सभा-पति महोदय ने अपना प्रारंभिक भाषण देते हुए कहा—

"भाइयो, यह सफलता का युग है, तरक़्क़ी का ज़माना है। जो व्यक्ति उन्नति का अवसर पाकर उससे लाभ नहीं उठाता, वह कर्म-हीन और अभागा है, इसमें ज़रा भी संदेह नहीं। मेरे पास ऐसी कितनी ही शिकायतें आई हैं, जिनमें निर्बल जातियों की हिमाक़तों, उद्दंडताओं और धृष्टताओं का वर्णन है। सबलता-प्रधान युग में कमज़ोरों की ऐसी करतूतें देखी-सुनी नहीं जा सकतीं। आज का अधिवेशन ऐसी ही कठिनाइयों पर विचार कर उन्हें दूर करने के लिये किया गया है। आप लोग अपने विचार संक्षिप्त रूप से, मगर साफ़-साफ़ प्रकट करें, जिससे यह सभा किसी निश्चित परिणाम पर पहुँच सके। मैं जिस-जिस बोलनेवाले को आज्ञा दूँ, वही बोले, शेष सब सदस्य शांति-पूर्वक सब बातें सुनते रहें। सर्व-प्रथम स्वामी स्वा र्थ सिं धु जी अपने विचार प्रकट करेंगे।"

श्रीहरिशंकर शर्मा

स्वामी स्वार्थ-सिंधु—"भाइयो, क्या बताऊँ, इन परमार्थियों ने नाक में दम कर रक्खा है। जहाँ जाता हूँ, और जिधर देखता हूँ, उधर ही परोपकार, परमार्थ, देश-सेवा, चंदा, सहायता, दान आदि की बेढंगी पुकार सुनाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पड़ती है। अगर पाजी परमार्थ की इसी तरह धूम मचती रही, तो सत्य समझना, संसार से सदा के लिये स्वार्थ की सत्ता मिट जायगी, और हम लोगों के हितों पर भयंकर कुठाराघात होगा।"

मुंशी ख़ुदग़रज़ख़ाँ—"हज़रात, अभी मेरे मुअ-ज़्ज़िज़ दोस्त ने जिन ख़यालात का इज़हार किया है, वे वाक़ई क़ाबिले-ग़ौर हैं। फ़ी ज़माना रिफ़ाह आम की सदा बलंद की जा रही है। आप लोग ज़रा ठंडे दिल से ख़याल फ़रमावें कि अगर यही रविश रवाँ रही, तो हम लोगों का क्या हश्र होगा। हम लोग किधर जायँगे, और क्या करेंगे। बिलाशक फिर हमारी ज़िंदगी मौत से भी बदतर हो जायगी।"

ठाकुर ज़ालिमसिंह—"अरे साहब, कुछ न पूछिए, बड़ा बुरा ज़माना आ गया है। जो लोग हमेशा हमारी एड़ी के नीचे दबे रहते थे, चींटी की तरह चूँ न कर सकते थे, वे भी आज सर उठाने लगे हैं। भला, कमज़ोरों की ऐसी हिम्मत, इतना हौसला! ये लोग तो पिटने-कुटने और पद-दलित होने के लिये ही बनाए गए हैं। अधिकार-अधिकार, चारों तरफ़ अधिकार-अधिकार। भला, कहीं कम-ज़ोरों के भी अधिकार होते हैं? उन्हें तो परमात्मा ने हम लोगों की फ़रमाबरदारी और सेवा-शुश्रूषा के लिये उत्पन्न किया है। मगर आज इन कमबख़्तों की मूँज़ोरी देखकर बड़ा ग़ुस्सा आता है। ऐसे नाचीज़ कमज़ोरों के हौसले पस्त करने पर इस सभा को ज़रूर विचार करना चाहिए। हम हरगिज़ नहीं चाहते कि ये नातवाँ हमारी कारगुज़ारी को 'ज़ुल्म', 'अन्याय' या 'अत्याचार' कहकर किसी तरह की तहरीक खड़ी करें।"

श्रीबिलौटानंदजी—"महाशयो, और तो और, ये तुच्छ चूहे भी बड़े बदज़ात हो गए हैं। ये नाचीज़ भी अपनी जान छिपाने का उद्योग करते हैं। जब कभी मैं दिखाई दे जाता हूँ, ये लुक-छिपकर भागने लगते हैं। मुझे धोखा देना चाहते हैं, कभी धोखा दे भी जाते हैं। इन मूसटों की ऐसी हिम्मत! इन्हें तो एक फ़रमाबरदार रियाया के रूप में मेरे आगे ख़ुशी या नाख़ुशी से आत्मसमर्पण कर देना चाहिए।"

चौधरी नाहरसिंह—"सज्जनो, आप देखते हैं, मैं काफ़ी वृद्ध हो चुका हूँ, शरीर में शिथिलता आ गई है, नखों और दाँतों में भी पहली-सी तेज़ी नहीं रही। कमर टूट गई है। मैं चाहता हूँ, मेरी ख़ूराक अपने आप मेरे मुँह में पहुँच जाया करे। किसी समय जो जंतु मेरी दहाड़ सुनकर थर्रा जाते थे, आज वे बड़ी ख़ुशी से मेरे दाएँ-बाएँ चरते-विचरते रहते हैं। उनकी ऐसी बेजा हरकत देखकर मुझे बड़ा क्रोध आता है। परंतु क्या करूँ, बस की बात नहीं। क्या अब इस युग में वनराज को ऐसे घोर दुःखों का सामना करना पड़ेगा? क्या इन प्राण-लोलुप पशुओं की कायरता के कारण मैं भूखा मरूँगा?"

श्रीमान् नक्रदेव—"भाइयो, आपको मैं हाल की एक घटना सुनाता हूँ। उस दिन एक जंतु मेरे पल्ले पड़ गया। वह बहुत तड़पा, घबराया, बड़-बड़ाया, और ग़ुर्राया भी। भागने की बहुत कोशिश की, मगर जाता कहाँ? मैंने उसे अच्छी तरह क़ाबू में कर रक्खा था। फिर भी मैं इस सभा के सामने यह कहे बिना नहीं रह सकता कि क्या उस जानवर की यह गुस्ताख़ी न थी। इसे बेअदबी न कहा जाय, तो क्या कहा जाय। जो चीज़ें हमारे भोग के लिये बनाई गई हैं, वे इस तरह छटपटाएँगी, और बेजा हरकतें करेंगी, तो कैसे काम चलेगा। और, हम लोग, जो जंगलेश्वर सिंह महाराज के कुटुंबी हैं, इन सब बातों को कैसे और कहाँ तक बर्दाश्त करेंगे?"

पंडित वानरदेव—"महाराज, मैं बड़ी मुसीबत में हूँ। आप जानते हैं, मेरा नाम शाखामृग है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिस ख़ुशी से मैं चरता-विचरता हूँ, उसे संसार जानता है। इंसान कहे जानेवाले इस अक़्ल के पुतले पर तो मेरे अनेक महान् उपकार हैं। मैं सहायता न देता, तो मजाल थी, जो भगवान् कहा जानेवाला राम-नामक राजकुमार लड़ाई में जीतता, और अपनी चोरी गई औरत वापस लाता। मगर इसका बदला? आह! किस रूप में दिया गया। हज़रत इंसान मुझे नचा-कुदाकर अपना पेट पालता है। क्या महावीर हनुमान् की संतान के साथ यही व्यवहार होना चाहिए था? क्या हमारी क़ौम के बहादुर सरदार इसी प्रकार के बर्ताव के अधिकारी हैं? और लीजिए, सुना है, अब हमारी खाल उधेड़-उधेड़-कर गिल्टियाँ निकाली जायँगी, और उन्हें बूढ़े बाबा अपने शरीरों में लगा-लगाकर छैल-छबीले तथा बाँके-बिहारी बनेंगे। यह है वह उपहार, जो आज उस महान् उपकार के बदले में स्वार्थी इंसान की ओर से हमारी क़ौम को दिया जा रहा है। मैं चाहता हूँ, इस अत्याचार का बदला लिया जाय, और इंसानों को तबाह किया जाय। मैं जहाँ जाता हूँ, लोग लट्ठ लेकर मेरे पीछे पड़ते हैं। कोई ईंटे मारता है, कोई डंडा फटकारता है, और कोई दरवाज़ा बंद कर लेता है। यह है इंसान की कृतघ्नता, जिसका फल उसे सूद-समेत मिलना चाहिए।"

श्रीयुत नागराज—"देखा मनुष्य का ढोंग। एक ओर तो वह मुझे अपना देवता मानकर मेरी पूजा करता है, दूसरी ओर मेरे पराक्रम और परिवार को नष्ट करने के लिये नाना प्रकार के उपाय सोचता है। कितना दंभ और कैसी प्रवंचना है! कौन नहीं जानता कि मैं साम्राज्य-शाही में विश्वास रखता हूँ। जिसका बिल ख़ाली देखता हूँ, उसी में घुस बैठता हूँ। कभी-कभी तो लड़ाकू राष्ट्रों की तरह इस अधिकार-प्राप्ति के लिये मुझे घोर संघर्ष करना पड़ता है, और कोई-कोई राष्ट्र अपना घर-बार छोड़कर प्रसन्नता-पूर्वक भाग जाता है। अगर आज मैं संसार में न रहूँ, तो सच कहता हूँ, लोग साम्राज्यवाद के सिद्धांत भूल जायँ, और इस प्रकार संसार राजनीति के एक इतने बड़े अंग से हीन हो जाय।"

मिस्टर नागराज अपना भाषण अभी समाप्त भी न कर पाए थे कि सभा का समय हो चुका, और सभापतिजी उन्हें बीच में ही रोकते हुए बोले—

"भाइयो, समय अधिक हो चुका है, आज की कार्यवाही समाप्त की जाती है। आगामी अधि-वेशन अनिश्चित काल तक के लिये स्थगित रहेगा। मैंने आप लोगों की वक्तृताएँ बड़े ध्यान से सुनी हैं। वास्तव में निर्बलों का ज़ोर और ज़ोम बहुत बढ़ता जाता है। ये लोग सबलों की ज़रा भी परवा नहीं करते, बल्कि कभी-कभी तो गुस्ताख़ी से पेश आते हैं। मैं जानता हूँ, श्रीनाहर-सिंह, भाई भेड़ियासिंह, श्रीमान् नक्रराज, पं० मर्कटमणि, सरदार व्याघ्रदेव, महाराज नागराज आर्थिक दृष्टि से संसार का कितना उपकार कर रहे हैं। अर्थ-शास्त्रियों का मत है कि जन-संख्या अधिक बढ़ने से खाद्य पदार्थों की महँगी हो रही है, अतः आबादी घटानी चाहिए। आप लोग बढ़ती हुई मनुष्य-संख्या ही नहीं, प्राणिमात्र की संख्या घटा-कर संसार में आर्थिक संतुलन की अवस्था स्थापित करना चाहते हैं। अपने मुखों, नखों और आमाशयों को घोर कष्ट देकर इस प्रकार का अलौकिक परोपकार करना बच्चों का खेल नहीं। ऐसे भगीरथ प्रयत्न में आप-सदृश वीरवर, परोप-कार-मूर्ति ही सफल हो सकते हैं। आप धन्य हैं, जो देश की—नहीं-नहीं, संसार की—आर्थिक विषमता दूर करने में प्रयत्नशील हैं।

"मेरे पास श्रीहंसराजजी का पत्र आया है। वह लिखते हैं—'मैंने इंसान को नीर-क्षीर-विवेक की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षा देकर निष्पक्ष न्याय करना सिखाया, परंतु वह मेरी बात तक नहीं पूछता। स्त्रियों ने मेरी चाल की नक़ल की, मगर इसका बदला क्या? पं० तोताराम, कुँवर कुरंगदेव आदि अपनी नाक और आँख की समता में इंसान को सदैव प्रयत्नशील पाते हैं, परंतु इस उपकार का परिणाम कुछ भी नहीं, इत्यादि।' मेरी राय में सब कमज़ोर जंतुओं और ख़ासकर इंसान के विरुद्ध यह सभा लानत-मिश्रित घोर घृणा का प्रस्ताव पास करे, क्योंकि ये लोग अपनी गर्दनें आप लोगों के मुँह में स्वयमेव नहीं दे देते, प्रत्युत प्रयत्न-पूर्वक पकड़ने पर भी छटपटाने की गुस्ताख़ी करते हैं। कमज़ोरों का कोई हक़ नहीं कि वे ज़बरदस्तों का मुक़ाबला करें। इनका तो एक ही 'नेम' और एक ही 'व्रत' होना चाहिए, अर्थात् वे 'काय', 'मन' और 'वचन' से बलवानों की सेवा करें, और उनकी स्वेच्छाचारिता के विरुद्ध कान भी न हिलावें।

"आशा है, इस प्रस्ताव से आप सब लोग संतुष्ट होंगे, क्योंकि इसमें आपके वास्तविक भावों और भावी कार्य-नीति का स्पष्ट प्रदर्शन या प्रतिनिधित्व किया गया है।"

'सर्व-सम्मति से', 'सर्व-सम्मति से' कहकर सबने एक स्वर से उक्त प्रस्ताव का समर्थन किया, और इस प्रकार गड़बड़-गोष्ठी का यह असाधारण अधिवेशन बड़ी सफलता से संपन्न हुआ।

खुशबूदार बर्फ़ी दाना

नारायणी सोहनी तंबाकू

सुंदरजी सोहनी तंबाकू

सुंदर वस्तुओं द्वारा बड़ी ही सावधानी से तैयार की जाती है। दर्शनीय और सुगंधित है। मन में एक नवीन स्फूर्ति उत्पन्न करती है। कोई भी हानिकारक चीज़ शामिल नहीं है।

हमारे यहाँ

शुद्ध तथा सुगंधित इत्र, तैल, अर्क़, मुरब्बे, शर्बत, तंबाकू इत्यादि के लिये हमारा कारख़ाना बहुत प्रशंसा प्राप्त किए हुए है। हम हर प्रकार से माल की विशेषता तथा सस्तेपन का हर समय ध्यान रखते हैं।

गयादीन नारायणदास

परफ़्यूमर्स व जर्दे के व्यापारी, चौक, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्त्री ! खुफ़िया !! मृत्यु !!!

श्वेतप्रदर बंद

घर-घर चर्चा ! हर घर चर्चा !!

अनीस मस्तूरात—(रजिस्टर्ड) वे स्त्रियाँ कैसी दया के योग्य हैं, जो श्वेतप्रदर के रोग से ग्रसित हैं। आजकल ६५ प्रतिशत स्त्रियों को समय-बे-समय सफ़ेद रंग का बदबूदार पानी या रतूबत जारी रहती है, जो धीरे-धीरे उनकी यौवनावस्था को ख़तम कर देती है, जिसके कारण स्त्री का शरीर दुर्बल, रंग पतला, हाथ-पैर में जलन, दिमाग़ में चक्कर, कमर दुर्बल हो जाती है, और कमर तथा पिंडलियों में ऐंठन हर समय मालूम होती है। तबियत हर समय उदास रहती है। निर्बलता, रुधिर का कम उत्पन्न होना, दिल की धड़कन, मासिक धर्म की अनियमितता, कभी-कभी मासिक धर्म का रुक-रुककर आना, दर्द के साथ आना। बच्चेदानी की दुर्बलता तथा उसमें सूजन इत्यादि पैदा हो जाती है। सारांश यह कि अंत में राजयक्ष्मा तक होकर स्त्रियों के जीवन का सर्वदा के लिये अंत हो जाता है। यदि किसी दवाख़ाने में इस प्रकार की सफल ओषधि इस रोग के लिये हो, तो हम भारत के हर छोटे-बड़े दवाख़ाने को चैलेंज देते हैं कि जिसका दिल चाहे, आज़मा ले। सहस्रों स्त्रियाँ दिन-रात इससे स्वस्थ हो रही हैं, और सैकड़ों हकीम और डॉक्टर रोगियों को प्रयोग करा रहे हैं। इतना लाभ होने पर भी मूल्य २), डाक-खर्च ।=) अलग। आज ही आकर ले जाइए या कार्ड लिखकर दवाख़ाने से मँगाइए। प्रयोग के दो दिन बाद ही श्वेतप्रदर का आना बंद हो जाता है।

देहली का नामी कारख़ाना—

दफ़्तर इंडो-जर्मन केमिकल वर्कस,

जामा मस्जिद डाकख़ाने के पास, देहली नं० १२५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसको न पढ़िए !

अगर पढ़िए, तो फ़ायदा उठाइए !!

भाइयो ! इसमें संदेह नहीं कि आजकल इश्तिहारी दुनिया ने झूठा प्रचार करके जनता के हृदय में बहुत बड़ी घृणा पैदा कर दी है। यही कारण है कि 'सच और झूठ' पहचानना कठिन हो गया है। लेकिन अगर विज्ञापन न दिया जाय, तो अपनी आवाज़ किस तरह पहुँचाई जाय। अगर आप आवश्यकता पड़ने पर भी इश्तिहारी दवा मँगाने से डरते हों, तो परमात्मा पर भरोसा करते हुए हमसे मँगा लीजिए। दवा हमारे विज्ञापन के अनुसार सिद्ध न हो, तो दाम वापसी के अतिरिक्त १०) इनाम। हमें आशा है कि इस एलान के पढ़ने के बाद आप हमारी सत्यता की प्रशंसा करने लगेंगे। अगर किसी तरह आपसे धोखा करें, तो परमात्मा से धोखा करें। अनुभव ही किसी की वस्तु की सत्यता-असत्यता की परख है।

साइंटिफ़िक ऑयल (रजिस्टर्ड)

इस सदी का अनमोल जौहर, ग्रीष्म-ऋतु का एक ख़ास उपहार है। इस आश्चर्य-जनक तेल के प्रभाव से लाभ उठाइए, जिसमें न पान बाँधने की आवश्यकता है, न कपड़ा लपेटने की और न छाले उठने का डर। लगाते ही अत्यंत उत्तेजना बढ़ जाती है। मुर्दा विचारों में भारी परिवर्तन हो जाता है। एक शीशी के व्यवहार से सब बुराइयों, चाहे वह किसी कारण से पैदा हो गई हों, जैसे टेढ़ापन, छोटापन दुर्बलता, नामर्दी, अनिच्छा, नसों के फूल जाने आदि—को दूर करके लौहवत् बना देता है। विश्वास कीजिए, इससे बढ़िया तेल आपको दुनिया के परदे पर न मिलेगा। इसके इस्तेमाल से नसों-पुट्ठों में नया जीवन, आश्चर्यजनक कड़ाई, असह्य स्फूर्ति उत्पन्न हो जाती है, जिसे प्रकट करना सभ्यता के विरुद्ध है। सब बातों के लिये मित्रवत् है। हर आयु और ऋतु में व्यवहार हो सकता है। सब त्रुटियाँ दूर करके बेकार आदमी को गर्वशील मनुष्य बना देता है। मूल्य २), डाक-व्यय ग्राहक के ज़िम्मे। इसके प्रयोग के बाद सदा के लिये सब पुरुष-रोग दूर हो जाते हैं। नुक़सानदेह ज़रा भी नहीं और पूर्ण मनोमोहक। थोड़ा भी कष्ट पाए बग़ैर इंद्रिय में नया जीवन और नई जवानी पैदा कर देता है। इस मौसम में यह दवा देहली-बाज़ार में सर्वश्रेष्ठ है।

दाफ़े जिरयान व एहतिलाम (रजिस्टर्ड)

यह जादू के-से प्रभाववाली टिकिया हर प्रकार के पुराने-से-पुराने प्रमेह और स्वप्नदोष की अधिकता को दावे के साथ दूर करती है। पेशाब से पहले और बाद में सफ़ेद, लसदार वस्तु के निकलने और वीर्य के पतलेपन को दूर करके पौरुष उत्पन्न करती हैं। शरीर में ताज़गी और मोटाई आने लगती है, और चेहरे को मोती की भाँति लाल कर देती है। इसका कुछ ही दिनों प्रयोग करने से शरीर में वीर्य गाढ़ा और दृढ़ होकर काफ़ी परिमाण में पैदा होता है। इसके प्रयोग के बाद यह शिकायत जीवन-भर के लिये दावे के साथ जाती रहती है। हज़ारों आदमी अनुभव कर चुके हैं। मूल्य फ़ी शीशी ८० टिकिया २), डाक-व्यय अलग। हमारी यह दवा जवाहिरातों से तौलने योग्य है। हज़ारों निराशों को आशा दिला दी है। विदेशों तक में इस दवा की धूम मची है। प्रमेह का नाश करने के लिये अगर किसी दवाख़ाने में इतनी सफल दवा हो, तो हम भारत के हर दवाख़ाने को चैलेंज करते हैं कि जिसका दिल चाहे, आजमा ले।" इसके प्रयोग के बाद शरीर में शक्ति, तबियत में चुस्ती, और मन में जवानी की उमंग और इंद्रिय संतानोत्पत्ति करने योग्य हो जाती है। आज ही आकर हमारी सचाई की परीक्षा कीजिए या पत्र लिखकर मँगा लीजिए।

हुबूबइशरत

ये गोलियाँ अत्यंत स्तंभक हैं। समय-विशेष की लज्जा से रक्षा करती हैं। शीघ्रपतन की शिकायत ज़रा भी न होगी। अभिमानी स्त्री भी दासी बन जाती है। मूल्य फ़ी शीशी २)। हज़ारों व्यक्तियों की आज़माई हुई गोलियाँ हैं। इस दवा में कोई नशीली और शरीर को हानि पहुँचानेवाली वस्तु नहीं है यह स्थायी स्तंभन करती है। डाक-व्यय ग्राहक के ज़िम्मे। दो या दो से अधिक दवा एक साथ मँगाने से डाक-व्यय माफ़। इस फ़र्म का जर्मनी से कोई संबंध नहीं है।

देहली का प्रसिद्ध कारख़ाना
सरकार से रजिस्टर्ड

कार्यालय इंडो-जर्मन केमिकल वर्क्स
जामा मस्जिद डाकखाने के पास, देहली नं० १२५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवारागर्द

[आचार्य श्रीचतुरसेन शास्त्री]

(१)

जो आवारागर्द नहीं, उन्हें आवारागर्दी के मज़े कैसे समझाए जायँ। लोग सभ्य हैं, इज़्ज़त-आबरू-वाले हैं, उनकी समाज में पद-मर्यादा है, बहुत लोग उन्हें जानते हैं, वे यदि आवारा-गर्दी के चक्कर में पड़ें, तो बस, सब ख़त्म। उनका रुआब उठ जाय, प्रतिष्ठा धूल में मिल जाय, और देखनेवालों की नज़र से वे गिर जायँ।

परंतु मेरी बात ही निराली है। वह निराला-पन आवारागर्दी में ही आ जाता है। बात यह है, न मेरी समाज में कोई इज़्ज़त है, न कोई मेरा मुलाक़ाती दोस्त है, न कहीं मेरा घर-बार, ज़मीन-जायदाद है, न नौकरी, न लीडरी। न मैं कवि, न संपादक। मैं महज़ आवारागर्द हूँ। जिधर मुँह उठा, चल दिया; जहाँ भूख लगी, खा लिया; जहाँ थक गया, सो गया; जो चीज़ चाही, माँग ली, मौक़ा मिला, चुरा ली। ग़रज़ जैसे बने, जीवन की गाड़ी चलाए ही जाना, दुःख, शोक, चिंता और निराशा को पास न फटकने देना मेरी आवारागर्दी का ख़ास रूप है, औरों की और जानें।

मन में जो सनक समाई, तो काश्मीर जा पहुँचा। कैसे? यह आप सभ्य पुरुष न समझ पाएँगे। फिर भी संक्षेप में सुनिए—रेल में पूरा सफ़र किया बिना टिकिट। अक्सर टिकिट-चेकर को चकमे दिए—कभी पाख़ाने में घुसकर और कभी दूसरी ओर आँख बचाकर, कूदकर। कभी पकड़े भी गए, तो हँस दिए, जेबें उलटकर दिखा दीं। किसी ने गालियाँ देकर छोड़ दिया, किसी ने गर्दनिया देकर उतार दिया, किसी ने पुलिस के हवाले किया। मैं जानता हूँ, दुनिया में पद-पद पर विघ्न आते हैं, पर धुन के पक्के लोगों के सामने वे ठहर नहीं पाते। मेरे सामने भी ये विघ्न न ठहर सके। सिर्फ़ इतना हुआ, दो-चार दिन देर करके पिंडी जा उतरा। आधी मंज़िल फ़तह हो गई। वहाँ से चला पैदल। रास्ते-भर चट्टियों पर दूध, दही, पूरी और चाय-पानी का सामान बिक रहा था, पर अपने पास तो पैसा नहीं था। जब किसी भारी-भरकम को खाते देखता, सामने जाकर मुस्करा देता, और वह मुझे प्रायः खिला-पिला देता। कभी गाकर, कभी हाथ देखकर पैसे बनाए। एक-दो बार बोझा भी ढोया, और सिर्फ़ एक बार चोरी की। आधा रास्ता पार हो गया।

एक दूकान पर बैठा गर्मागर्म पूरी-तरकारी उड़ा रहा था। सात पैसे जेब में थे, उनमें से छः पैसे की पूरी और सातवें का पान खा डालने का इरादा था। एक आदमी घबराकर आया, और दूकानदार से पूछने लगा—'क्या पास में कोई दवा-दारू की दूकान है? हमारे सेठ खड्ड में गिर गए हैं, हड्डी-पसली चूर-चूर हो गई है। पास में कोई डॉक्टर हो, तो फ़ीस चाहे जो देनी पड़े, उसे बुलवा दीजिए।"

आदमी नवयुवक था। टूटी-फूटी हिंदी बोल रहा था। मैंने धीरे से दूकानदार से कहा—"कहीं इस गधे से यह मत बता देना कि हम डॉक्टर हैं, नाहक़ हमें अटकना पड़ेगा। आए हैं तफ़रीह को, और बला सिर पड़ेगी। अरे भाई, नाक में दम है इन मरीज़ों के मारे—कमबख़्त यहाँ भी दम नहीं लेने देते।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूकानदार ने क्षण-भर ग़ौर से देखा, और यथा-संभव आदर-प्रदर्शन करके कहा—"डॉक्टर साहब,

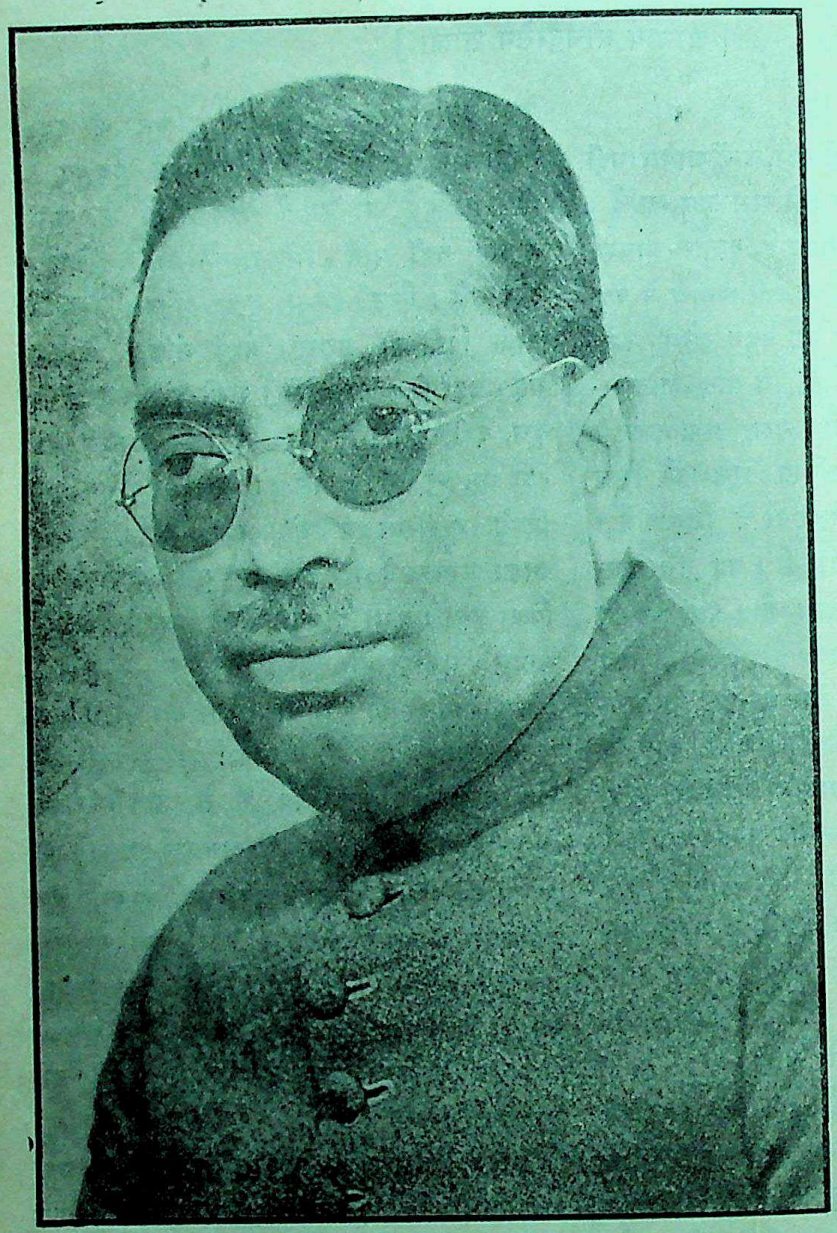

आचार्य श्रीचतुरसेन शास्त्री

अब इस मुसीबत में तो इस बेचारे की मदद कर ही दीजिए।" फिर उसने ज़ोर से युवक से कहा—"भाग की बात समझो कि डॉक्टर सामने बैठे हैं।"

युवक एकदम पास आकर मिन्नतें करने लगा। मैंने कहा—"तो बुख़ार की तरह सिर पर क्यों चढ़े आते हो? बाबा, खा तो लेने दो। घबराओ मत; जाओ, कह दो—'डॉक्टर साहब आते हैं।' चुटकी बजाते सब ठीक हो जायगा।"

तसल्ली पाकर युवक दौड़ गया। मैं सोचने लगा—अब डॉक्टरी धज बनाई जाय, तो कैसे? मैला, फटा कोट, धूल-भरे पैर, दवा न दारू, और डॉक्टरी तो सात पीढ़ी ने न की थी। कॉलेज में जब पढ़ते थे, स्काउट में नाम लिखा लिया था। पास में काम की चीज़ सिर्फ़ एक वेस-लीन की शीशी थी। मैंने उसी से तमाम मतलब हल करने की ठान ली।

जाकर देखा, कुछ चोट-ओट नहीं आई थी—न घाव हुआ, न हड्डी टूटी, यों ही ज़रा खाल छिल गई थी। जितनी गंभीरता धारण की जा सकती थी, धारण करके मरीज़ देखा—कपड़ा मँगाकर पट्टियाँ बनाईं, और ज़रा-सी वेस-लीन चुपड़कर लपेट दीं। बाद में डॉक्टरी धज से साबुन से हाथ धोकर चल देने की ठानी। इतमीनान हुआ कि ५ रुपए अभी जेब में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खनखना उठेंगे। श्रीनगर तक का चाय-पानी हो जायगा।

परंतु सेठ कोई गुजराती गावदी था। हाथ जोड़कर बोला—"बैठ जाइए, डॉक्टर साहब, अब आप जा नहीं पावेंगे। आपको साथ चलना होगा। आपके आराम की पूरी व्यवस्था हो जायगी।"

जै गंगा। थोड़ा नख़रा करके मैं राज़ी हो गया। सवारी, कपड़े, चाय, टोस्ट, मक्खन, खाना, सब जुट गए। काश्मीर में मज़े की कटने लगी।

(२)

एक दिन संध्या-समय एक सकरी गली के सामने झूमता हुआ जा रहा था। क्यों? यह आप समझ जाइए। बदनाम मुहल्ला था, कभी-कभी उधर से यों ही घूम आया करता था। थोड़ी तबियत में गुदगुदी पैदा हो जाती थी। यहाँ और सब तो मौज-बहार थी, पर नक़द-नारायण जेब में न था, सेठ से कभी माँगा नहीं। और तिकड़म सब छोड़ दी थी। इसी से सिर्फ़ उधर घूमना-मात्र ही हो जाता था, और कुछ नहीं।

हाँ, तो मैं एक सकरी गली के सामने झूमता हुआ जा रहा था। संध्या के धुँधले प्रकाश में देखा—एक पुराने, छोटे-से मकान की दहलीज़ पर एक श्वेत-वसना स्त्री खड़ी एक बाबू से बातें कर रही है। अँधेरे में ठीक-ठीक उसकी आयु और सुंदरता नहीं भाँपी जा सकी। परंतु ज्यों ही मेरी दृष्टि उस पर पड़ी, बाबू ने उससे कहा—"नमस्ते।" और उसने भी हाथ जोड़कर नमस्ते कहा। बाबू चल दिए। मगर उस स्त्री ने जो नमस्ते शब्द कहा, उसकी झंकार ने मेरे शरीर में रोमांच कर दिया। कुछ विचित्र, मधुर स्वर था। फिर मैंने सोचा—इस बदनाम, गंदी गली में 'यह शुद्ध नमस्ते' कैसा?

मैंने मुँह उठाकर देखा—वह घर के भीतर लौट रही थी। मैंने साहस किया—एक क़दम आगे बढ़कर कहा—"नमस्ते।"

वह लौटी, और आश्चर्य-चकित मेरी ओर उस अँधेरे में देखने लगी। मैंने और निकट जाकर कहा—"आपने पहचाना नहीं—मैं डॉक्टर हूँ।" मैंने ढेला फेंका।

उसने भुनभुनाकर होंठों ही में कहा—'डॉक्टर'! फिर उसने सिर का पल्ला ठीक किया, हाथ जोड़कर उसी मधुर स्वर से नमस्ते किया, और उससे भी अधिक मीठे स्वर में कहा—"आइए, भीतर आइए डॉक्टर साहब!"

और, फिर हम एकदम मकान के भीतर। दरवाज़े की कुंडी बंद कर दी गई। घर छोटा और साधारण था, पर साफ़ और सुरुचि-पूर्ण। कमरे में एक शतरंजी बिछी थी—कोने में पलँग था। दीवार से लगा एक लैंप टिमटिमा रहा था। शतरंजी पर बैठूँ या पलँग पर, यह निर्णय नहीं कर सका। उस पीली, धुँधली रोशनी में मैंने फिर उसकी ओर देखा—एक दुबली-पतली, सुंदर, छरहरी युवती थी। उम्र बीस से ऊपर होगी। बरबादी और वेदना की छाप उसकी आँखों और होठों पर थी।

उसने आगे बढ़कर, पलँग की ओर इशारा करके कहा—"बैठिए।" सिर से टोपी उतारकर खूँटी पर टाँग दी, बेत हाथ से लेकर एक कोने में रख दिया। फिर कहा—"कोट उतारकर इतमीनान से बैठिए। इस वक्त कुछ गर्मी है, और आप बाहर से आए हैं। ठहरिए, खिड़की खोले देती हूँ। आप इतमीनान से बैठिए।"

मैं कोट उतारकर इतमीनान से बैठ गया। उसने खिड़कियाँ खोलीं, लैंप ज़रा तेज़ किया, दो अगर-बत्तियाँ जलाईं, और चुपचाप पैरों के पास फ़र्श पर बैठ गई।

अभी दो मिनट भी न बीते थे कि ऐसा मालूम हुआ कि आवारागर्दी ख़त्म हो गई। मानो चिरकाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाद शरीर और मन थकाकर अब घर लौटा हूँ, हालाँकि पृथ्वी के इस छोर से उस छोर तक मेरा कहीं घर था ही नहीं।

मेरा मुँह बंद था। सोच रहा था, कौन है यह दुखिया, सुशीला स्त्री। इतनी मधुर, इतनी स्त्री-गुणों से विभूषित। परंतु क्या उससे पूछूँ कि तुम कौन हो? इतनी आत्मीयता से परिपूर्ण स्वागत पाने पर भी। मैं चुप ही रहा। कभी उसे, कभी घर को घूर-घूरकर देखता रहा। उसने कहा—"चश्मा क्या हर वक्त लगाते हो—इतना काला! क्या रात में बुरा नहीं मालूम होता?" उसने हाथ बढ़ाकर चश्मा आँखों से उतार लिया। ग़ौर से आँखों को देखा—हथेली से आँखें दबाईं। ओह! कितनी कोमल थी वह हथेली!

मैंने दोनो हाथों से उसका हाथ थामकर कहा—"ख़ूब मिलीं दोस्त।"

"तो क्या आप मुझे ढूँढ़ रहे थे?"

"अजी तीन दिन से।" मैंने अटकल-पच्चू कहा।

"आपको यह मालूम कैसे हुआ कि मैं आ गई हूँ।"

मैंने शान से कहा—"वाह, यह भी कोई बात है, आप यहाँ आवें, और मुझे न मालूम हो!"

वह ग़ौर से देखने लगी। शायद यह भाँपने के लिये कि यह इतनी आत्मीयता से बातें करने-वाला है कौन, और मैं उसके मनोभाव समझकर मुस्कराने लगा।

एकाएक मैंने कहा—"वहाँ फ़र्श पर क्यों बैठी हो, यहाँ बैठो।" मैंने हाथ पकड़कर खींचा। उसने मेरे घुटनों पर सिर रखकर वेदना से टूटे स्वर में कहा—"तुमने सुना तो होगा, साहब अब नहीं रहे। एक महीना हुआ, हार्ट फ़ेल हो गया। मरने से दो-चार दिन पहले तो चिट्ठी आई थी—पढ़ो तो, देखो, क्या लिखा है।"

वह लपककर उठी। एक पुलिंदा बहुत-सी चिट्ठियों का रूमाल में बँधा था, उठाकर खोला—एक ख़त निकालकर पढ़ा—"मेरी परम प्यारी, प्राणों की दुलारी....." फिर कहा—"आप ख़ुद पढ़िए।"

मैंने आगे पढ़ना शुरू किया—"तुम राज़ी-ख़ुशी काश्मीर....."उसने बाधा देकर पत्र को दोनो हाथों से ढाँप लिया, और ऊपर की पंक्ति पर मेरी उँगली रखकर कहा—"यहाँ से पढ़िए।"

मैंने पढ़ा—"मेरी परम प्यारी, प्राणों की दुलारी!" उसने मेरे साथ प्रत्येक अक्षर को दुहराया, उसकी आँखों से आँसुओं की धार बह चली, और वह फिर मेरे घुटनों पर सिर रखकर सिसकने लगी।

मैं धपले में पड़ गया। सच कहूँ, मैं इतना द्रवीभूत हो गया कि उसकी पीठ और सिर पर हाथ फेरने लगा। कुछ देर बाद मैंने कहा—"लाओ, चिट्ठी पढ़ूँ तो।" उसने चिट्ठी मोड़-कर कहा—"मत पढ़ो—मत पढ़ो—मैं सुन नहीं सकती। जिन्होंने लिखी थी, वह अब नहीं हैं। उन्होंने इतने ख़त लिखे हैं। गिनकर देखो, कितने हैं। पर अब नहीं लिखेंगे। उसने ऊपर मुँह उठाया—टपाटप आँसू गिर रहे थे, होंठ काँप रहे थे। उसने घुटनों के बल उकसकर अपने को मेरी गोद में डाल दिया।

उस सुखद अनुभूति का कैसे वर्णन करूँ। उसके केश-गुच्छ में खोंसे हुए फूलों की सुगंध से, उसके प्रेमी हृदय के हाहाकार से, उसके कोमल गात्र के आलिंगन से जैसे मैं अपने ही में मूर्च्छित हो गया। मैंने सोचा—क्या यह मुझे अपना कोई पूर्व-परिचित समझती है, या इसे होश-हवास ही नहीं। मैंने भी तो अपनी बातों से उसे ख़ूब मुग़ालते में डाला। ख़त में मैंने उसका नाम पढ़ लिया था—रुक्मिणी।

मैंने आर्द्र स्वर से कहा—"रुक्मिणी, इतना रंज न करो। जो चला गया, उस पर सब्र करो,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और मिल गया, उसके लिये ईश्वर को धन्यवाद दो।"

मैंने एक वासना से ललचाई दृष्टि उसके शोक-कातर मुख पर डाली। उसने आँसू पोंछ डाले। चुपचाप चिट्टियाँ इकट्ठी करके गाँठ बाँधी, और फिर उठकर दूसरे कमरे में चली गई। क्षण-भर बाद आकर फिर बोली—"कुछ पियोगे?"

मैंने वास्तविक अर्थ न समझकर कहा—"नहीं, प्यास नहीं है।"

उसने क्षण-भर ठहरकर कहा—"कुछ पीते हो या नहीं?"

मैं अब समझा, और कहा—"नहीं, कभी नहीं पीता।"

उसने और निकट आकर कहा—"पैसा ख़र्च नहीं करना होगा, घर में है। लाऊँ—थोड़ी पियो।"

इतनी देर बाद मुझे स्मरण आया कि यहाँ जो मैं बेफ़िक्री से पलँग पर बैठा शाही ठाट से बातें कर रहा हूँ, सो गाँठ में तो फूटा पैसा भी नहीं। अब यहाँ से विना कुछ दिए जाना कितना ज़लील काम होगा। यह सोचते ही मैं एकदम उठ खड़ा हुआ, और कहा - "अच्छा, अब चला, फिर कभी आऊँगा।"

उसने मृदुल स्वर में कहा—"यही हाल उनका था। कभी नहीं पीते थे, पीने को कहती थी, तो उठकर चल देते थे। अच्छा, मत पियो, मगर जाओ मत। नाराज़ मत हो।" और वह एकदम आगे बढ़कर मेरे ऊपर गिर पड़ी, जैसे बहुत-सी फूल-मालाएँ किसी ने ऊपर फेंक दी हों। और, मैंने आत्मविस्मृत होकर उसे कसकर छाती से लगा लिया। मैंने तन-मन से द्रवित होकर कहा—"इतना दर्द, इतना दुःख, इतना प्रेम लिए तुम इस गंदे घर में बैठी हो सजनी!", और फिर मैंने उसके अनगिनत चुंबन ले डाले। शिथिल-गात होकर मैं पलँग पर पड़ रहा। उसने धीरे से मेरे बाहु-पाश से पृथक् होकर कहा—"नाराज़ मत होना—तुम इजाज़त दो, तो मैं ज़रा-सी पी लूँ। न पिऊँगी, तो तुमसे बात भी न कर सकूँगी।"

मैंने कहा—"पियो, मैं नाराज़ नहीं हूँ।"

पीकर जब वह आई, तो मुस्करा रही थी, आवाज़ करारी थी, शरीर में फुर्ती थी। उसने कहा—"बीड़ियाँ तो हैं, क्या सिगरेट मँगाऊँ?"

"कैसे कहूँ कि मँगाओ।" मेरे पास तो पैसे न थे। मैंने कहा—"मगर मैं तो पीता-खाता नहीं।"

"इसका मतलब यह कि एकदम संत हो गए हो।" उसने लड़के को आवाज़ देकर बुलाया। एक रुपया उसे देकर कहा—"क़ैंची की सिगरेट एक पैकेट, माचिस और पान ले आ।" मैं चुपचाप देखता रहा।

धीरे-धीरे जैसे मैं जगत् को भूल गया, अपने को भूल गया, रात को भूल गया, दिन को भूल गया। अपने को मैंने चुपचाप पलँग पर डाल दिया—शिथिल-गात और मूर्च्छित मन।

उसने सिगरेट निकालकर मेरे होंठों में लगा दी, और फिर जला दी। धीरे से सिर ऊँचा करके एक छोटा-सा तकिया नीचे रख दिया। दो पान के बीड़े मुँह में रख दिए। उसने फिर अगर-बत्तियाँ कमरे में जलाईं। चारों तरफ़ देखा, मेरे आराम के लिये जो कुछ किया जा सकता है, वह उसने सब कर दिया या नहीं। फिर वह कमरे के बाहर गई। मैं समझ गया, वह पीने गई है—अपना दर्द दूर करने के लिये। क्षण-भर बाद वह आई, और मेरे पैरों को गोद में लेकर बैठ गई। उसकी कोमल हथेलियों का सुखद स्पर्श प्राणों को हरा करने लगा। मैं चुप था—वह भी चुप थी—लैंप धीरे-धीरे टिमटिमा रहा था। रात का सन्नाटा बढ़ रहा था। ऐसा प्रतीत होता था, अंधकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से व्याप्त इस भूमंडल पर केवल वह छोटा-सा घर ही आलोक की रेखा बखेर रहा है। और, सनक्षत्र लोक में केवल दो प्राणी ही जीवित हैं—मैं और वह। और, हम दोनो अटूट सुख-सागर में डूब गए हैं।

मैं तो पहले ही अपनी आवारागर्दी की बात कह चुका हूँ। कहने को एक ही बात रह गई थी, वह यह कि स्त्री से यथार्थ परिचय जीवन में नहीं हुआ था। और, अब मैं सोच भी न सकता था कि स्त्री क्या है, उसका मूल्य क्या है।

एकाएक मैं जैसे चौंक उठा। मैंने कहा—"अब जाऊँगा मैं।"

उसने जैसे भयभीत होकर नेत्रों में कहा—"कहाँ? क्यों?"

मैंने कहा—"मैंने अभी खाना भी नहीं खाया है, महराज बाट तकता होगा।"

"आह! तब तुमने कहा क्यों नहीं। खाना मैं मँगवाती हूँ।" और, लाख मना करने पर भी उसने खाना मँगवाया। मेरे सामने थाल रखकर वह पंखा ले बैठी। मैंने हाथ पकड़कर कहा—"यह नहीं, तुम्हें खाना होगा मेरे साथ।"

उसने कहा—"तो पियो फिर तुम भी।" उसके नेत्रों में एक गहरी वेदना थी। मैंने सहमति दी, और जीवन का दूसरा अध्याय शुरू हुआ। कौन उसे सोच सकता है। एक आवारागर्द के जीवन का दूसरा अध्याय—लोग जिसे सुहागरात कहते हैं। सचमुच वही।

और प्रातःकाल—जब आँखों में शराब और नींद की ख़ुमारी बढ़ रही थी, पैर लड़खड़ा रहे थे, शरीर झूम रहा था। अभी अँधेरा था—उसने मुझे चूमा, कोट मेरे कंधों पर डाला। दोनो हाथों में हाथ लेकर हँसी, और फिर कहा—"नमस्ते।"

इतना तो होश मुझे था कि मैं ख़ाली, बिना कुछ दिए, जा रहा हूँ—मैं लाज से मरा जा रहा था, पर मैंने कुछ कहा नहीं। दो क़दम आगे बढ़ाए। वह हाथ में हाथ दिए साथ थी। उसने कान में होंठ लगाकर कहा—"कल जल्द आना।"

और, फिर उसने द्वार पर आकर एक बार नमस्ते किया। वह हँसी, उसका पीला और सूखा चेहरा—वेदना-पूर्ण, गहन आँखें—उस हँसी की आभा से जैसे दिप गईं।

मैं बोला नहीं—बोल सका नहीं—उसी भाँति लड़खड़ाता हुआ—ऊषा से आलोकित एकांत सड़क पर लुढ़कता चला—जैसे स्वप्न में चल रहा होऊँ। ओह, कैसी अभूतपूर्व, सुखद रात रही वह।

(३)

दो मास ऐसे बीत गए, जैसे खेल हो गया हो। हाँ, मैंने एक पैसा भी नहीं दिया। उस नारी के हृदय का मैंने संपूर्ण अध्ययन कर डाला। उसके प्रियतम के संपूर्ण ख़त पढ़ डाले। वह भी डॉक्टर था, मेरे-जैसा आवारागर्द नहीं, प्रतिष्ठित सिविल सर्जन। उसके बीवी थी, बच्चे थे, उसने इस प्रेम-लतिका को पत्नी की ही भाँति घर में रक्खा था। वह उसकी पत्नी के साथ खाती, सोती, रहती और पत्नी ही समझी जाती थी। उसने मुझसे एक-एक दिन की बातें कहीं। अपने छ वर्ष के स्वप्न-सुख के मधुर संस्मरण कहती हुई वह हँसी, रोई और नाची, उन्माद में आवेशित होकर।

मैं दिन-भर अपने सेठ के यहाँ रहता—कहना चाहिए सोता, और संध्या होते ही झूमता हुआ वहाँ आता, जहाँ सुखद सेज, गर्म खाना, उन्मादक मद्य, मृदुल नारी एक साथ ही उपस्थित थी—सब झंझटों और खटपटों से रहित। एक यंत्र की भाँति मैं उस सुख-सागर में डूब जाता। खाता-पीता, सिगरेट पीता, और कहने-न कहने योग्य क्या-क्या करता-न करता।

दिन बीतते गए, और एक बोझ मेरे हृदय पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लदता गया। मैंने उसे कभी कुछ नहीं दिया। अभागिनी, असहाय नारी मुझे कहाँ से खिलाती-पिलाती है! कुछ देना तो होगा ही। परंतु कहाँ से? मैं जानता था, मेरा साथी सेठ कहाँ रुपए-पैसे रखता है। मैं सेठानी के ज़ेवरों के रखने की जगह भी जानता था। सब मेरा विश्वास करते थे। मेरी रात की ग़ैरहाज़िरी भी सबको सह गई थी। कोई मेरे राज़ को जानता न था। अंत में मैंने संकल्प किया—किसी तरह यह सब रुपया चुराकर उसे दे आऊँ। संकल्प दृढ़ होता गया, और मैं अवसर की ताक में लगा। अंततः एक दिन मुझे सफलता मिली। सब ज़ेवर और रुपया लेकर मैं उसी भाँति झूमता-झामता चिर-परिचित मार्ग पर संध्या के धूमिल प्रकाश में आगे बढ़ रहा था। वह सब मैंने एक तरफ़ छिपा दिया, उसे मालूम नहीं हुआ। मैंने भी सोचा—बस, यही अंतिम रात है। फिर अब और नहीं। उस दिन मैंने उसे जी भर-कर प्यार किया, बहुत किया। अपना हृदय और आत्मा मैंने उसे दे दिया। पिछली रातों के साथ यह रात भी बीत चली, और ऊषा के आलोक में जब उसने हँसकर 'नमस्ते' कही, तब मैंने चुपचाप, नीरव भाव से चिर-बिदा कहा।

मैंने लौटकर नहीं देखा, और चला। सेठ के डेरे की ओर नहीं, लंबी, बलखाती, पेचीली पहाड़ी सड़क पर, जो नीचे की दुनिया की ओर जा रही थी। उसी आवारागर्दी के आलम में, जिसमें नया आनंद और मस्ती का झरना झर रहा था। दिन बीता, और संध्या-समय एक चट्टी पर, बाहर पड़ी बेंच पर, पड़ा हुआ मैं बीती रातों को सोच रहा था। सब कुछ सपना-सा दीख रहा था। आँखें झपते ही वह आती, देखती, प्यार करती, सिगरेट पिलाती, माथा सहलाती, परंतु आँख खुलने पर सुदूर आकाश के टिमटिमाते तारे, टूटी बेंच और अपना एकाकी आवारागर्द जीवन!

रास्ते में खाता, पीता, सोता, बैठता, अपनी चिर-अभ्यस्त आवारागर्दी से चला आ रहा था। एक दिन पुलिस ने मुझे पकड़ लिया। सेठजी साथ में थे—उनके क्रोध का ठिकाना न था—बक रहे थे, और मुट्ठियाँ बाँध रहे थे। मैं हँस रहा था। एक अँगूठी मेरी उँगली में थी, उसी से पकड़ा गया। उतारना भूल गया था। सोचा था, चलती बार उसे पहनाऊँगा। मैंने चोरी स्वीकार की, पर माल कहाँ है, नहीं बताया। मुझे पीटा गया, और भी यातनाएँ दी गईं, परंतु उन यातनाओं में, मार में कितना सुख था, कितना मज़ा था। वे यातनाएँ उस प्रिय नारी के सुखद स्पर्श, कोमल प्रेमालिंगन से कहीं अधिक अच्छी लग रही थीं। और, जब जेल की कोठरी मुझे मिली, तो उस एकांत में मैं था, और उस सजनी की जाग्रत् स्मृति। ओह, इसके बाद तो फिर हमारा न कभी बिछोह हुआ, न मिलना। मैं प्रतिक्षण एक ही बात सोचा करता हूँ—काश्मीर की उन मनोरम घाटियों में वह मेरी प्रतीक्षा कर रही होगी, जीवन के अंत तक प्रतीक्षा करेगी।

लाइलाज रोगवालो!

यदि आप कुष्ठ, श्वेत कुष्ठ, सुनबहरी, बवासीर, मृगी, उन्माद, भगंदर, झाँई, प्रमेह, धातु-क्षीणता, स्वप्नदोष, शीघ्र पतन, नामर्दी, गर्मी, सूज़ाक या दीगर बेइलाज रोग से पीड़ित हैं, तो आज ही मेरी सिद्ध फ़क़ीरी दवा सेवन करें। फ़ी दवा ४॥) रु०

पता—फ़क़ीरी कुटिया, पो० बिहार नरसरी (दरभंगा)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुलसी का प्रेम-चित्रण

[स्वर्गीय प्रो० श्रीरमाशंकर शुक्ल 'हृदय' एम्० ए०]

(१)

किसी भक्त कवि की वाणी में प्रेम-चित्रण का स्वरूप देखने की उत्कंठा साधारण व्यक्ति के लिये जिस प्रकार साहस का कार्य है, उससे अधिक कठोर, साहसमय है किसी महाकवि की रचना में प्रेम-मीमांसा की चर्चा। भक्त और उनकी प्रेम-कल्पना कदाचित् आज के युग में आकर्षण-हीन बन गई है। भक्तिकालीन कृष्ण-मार्गी कवियों ने आज तक जिस रस-धारा को सूखने से बचाया, ऐसा जान पड़ता है, सफ़ेद परदे पर छाया-चित्र की नायक-नायिकाओं ने जनता के—भारतीय जनता के—मानस से इसकी बूँद-बूँद खींचकर उस स्रोत के उद्गम ही को बाँध देने की प्रतिज्ञा कर ली है। साहित्य-निर्माण के कार्य में हमारे जीवन के इस पहलू ने भावुकता के किया कि कवियों की हृदय पर ऐसा आघात वाणी का वैभव क्वेटा के ध्वस्त प्रासादों के समान हमारी दुख-भरी सहानुभूति-मात्र का पात्र रह गया। तुलसीदासजी ने लिखा है—

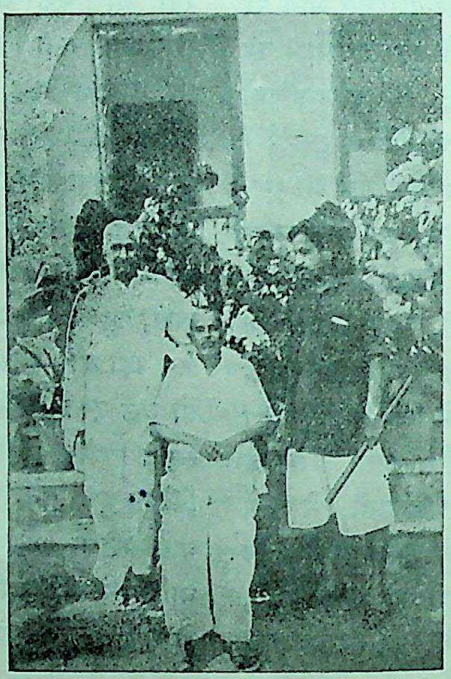

स्व०प्रो० श्रीरमाशंकर शुक्ल 'हृदय' एम्० ए०
(कुर्सी पर बैठे हुए)

सूर सुजान सपूत सुलच्छन
गनियत गुन गरुआई;
बिनु हरि-भजन इँदारुन के फल
तजत नहीं करुआई।

और यह हरि-भजन भी—

रामहिं सुमिरत, रन भिरत,
देव परत गुरु पाय;
तुलसी जिनहिं न पुलक तन,
ते जग जीवित जाय।

उपर्युक्त दोनो उदाहरणों में 'हरि-भजन' और 'पुलक तन' के विना संसार को ही निस्सार बताया गया है। भारतीय साहित्य में भक्ति और तज्जन्य हर्ष-आनंद को ही साहित्य का सर्वोच्च आदर्श माना गया है, और ज्ञानवाद की प्रत्येक शाखा का समन्वय इसी आदर्श के साथ कर दिया गया है। गोस्वामी तुलसीदास का काव्य भक्ति की भित्ति पर खड़ा रहकर भी ज्ञान के आकाश के नीचे है, और उसके इस उँचाई की ओर बढ़ने में ही उसका गौरव प्रतीत होता है। निस्संदेह उनका काव्य भक्ति-रस से आप्लुत है, और आज जिस कसौटी पर हम उनके प्रेम-चित्रण की परख करना चाहते हैं, वह स्वयं इस बात की साक्षी देगी कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनकी विचार-रेखा वस्तुतः सुवर्ण की सचाई से युक्त है। 'सर्वदेवनमस्कारः केशवं प्रति गच्छति' के अनुसार हमारी धारणा है कि सत्काव्य में कवि-चित्रित प्रत्येक रूप रेखाओं के पीछे जिस अभिव्यंजना को लिए रहता है, उसकी छवि सदा वही है, जिसकी ओर हमारा जीवन अनंत धाराओं में प्रवाहित होकर बढ़ता जाता है।

क्षण-भर के लिये हम तुलसी-काव्य में वर्णित राम और सीता के प्रेम-चित्रण की ओर दृष्टिपात कर यह देखना चाहते हैं कि जीवन के—प्रेम-जीवन के विकास से लेकर उसके छोर तक पहुँचने में कवि ने किस कुशलता का परिचय दिया है, और आरंभ में ही जिस प्रतिज्ञा को लेकर हम चले हैं, उसका निर्वाह वस्तुतः उनकी रचनाओं में होता है या नहीं।

किंतु प्रेम-चित्रण की कल्पना के पूर्व यह भी तो जान लेना चाहिए कि स्वयं 'प्रेम' क्या वस्तु है। इस प्रेम के तत्त्व को तुलसीदासजी ने स्वयं भगवान् राम के मुख से यों कहलवाया है। लंकाधिपति रावण के अशोक-उपवन में विरहिणी सीता के प्रति संदेश भेजते हुए हनुमान् से राम ने कहा था कि वहाँ सीता से जाकर कह देना—

तत्त्व प्रेम कर मम अरु तोरा—
जानत प्रिया, एक मन मोरा,
सो मन सदा रहत तोहिं पाहीं;
समुझि प्रीति-रस इतनेहि माहीं।

राम और सीता के इस 'प्रीति-रस' को समझने और समझा देने की क्षमता किसी तीसरे में कैसे हो सकती है, जब कि उस रस को राम का ही मन जानता था, और वह मन था सीता के पास। यहाँ तो दूसरे का भी काम नहीं रहा। प्रेम की यह एकता ही उसकी सच्ची परिभाषा है। तब मर्यादा की रक्षा करनेवाले, नीति-कुशल राम का प्रेम-वर्णन करनेवाले तुलसी के लिये क्या कहा जाय? 'प्रेम और सदाचार', 'प्रेम और नीति' तथा 'कला और नीति' के त्रिफला से आँख धोकर काव्य-परीक्षा करनेवाले आलोचकों की दृष्टि से तुलसी के काव्य की ओर किस प्रकार देखा जा सकेगा, यह हमारे लिये सचमुच बड़े ही असमंजस की बात है।

कॉलरिज-नामक एक अँगरेज़ी-कवि ने अपनी 'लव'-शीर्षक कविता में लिखा है—

All Thoughts, all passions,
all delights,
Whatever stirs this mortal
frame,
All are but ministers of love
And feed his sacred flame.

प्रेम के ही भरोसे हमारा नश्वर शरीर गति-युक्त है, वही हमारी दिव्य ज्योति का स्नेह है; यह वही प्रेम है, जिसके लिये किसी शायर ने कहा है—

दर्द है, जौर है, बला है इश्क़;
शेख़, क्या जाने तू कि क्या है इश्क़?

सचमुच ही—

उलटा-पुलटी करहु निखिल जग की सब भाषा,
मिलहि न पर कहुँ एक प्रेम पूरी परिभाषा।

परंतु जब हम जनक के बाग़ में फूल चुनते हुए राम को यह कहते पाते हैं—

जासु बिलोकि अलौकिक सोभा,
सहज पुनीत मोर मन छोभा।

और, उसी के बाद राम को देखकर जब सीता-जी की यह दशा हो जाती है—

अधिक सनेह देह भै भोरी,
सरद-ससिहि जनु चितव चकोरी।

तो हम प्रेम के आघात का कुछ अनुभव अवश्य करते हैं। राम ने कुछ अनुभव किया, और वह क्षोभ में पड़ गए। क्यों? कारण क्या? राम कहते हैं—"सो सब कारन जानु बिधाता।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रेमांकुर की यह व्यक्त होकर भी अव्यक्त-सी स्थिति कौन जान सकता है? यह उलझन सुलझाने के लिये तुलसी की लेखनी सुकुमारी-सी बन जाती है, जिसके लिये किसी ने लिखा है—

A maiden hath no tongue but thought.

तब यही समझ में आता है—

समझ में जो न आए और बेसमझे न रहने दे,
उसी का नाम शायद इश्क़ में नामे तमन्ना है।

यह तमन्ना, यह लालसा, मन का यह क्षोभ किस प्रकार उत्पन्न हुआ, यह तुलसी ने 'जासु बिलोकि अलौकिक सोभा' कहकर ही व्यक्त किया है। शोभा, छवि, सौंदर्य आदि का ही नाम आकर्षण है, और नेत्र, हृदय तथा बुद्धि इस सौंदर्य के अनुभूति-केंद्र हैं। इंद्रिय-ग्राह्य सौंदर्य, मानसिक सौंदर्य तथा आध्यात्मिक सौंदर्य इन्हीं के विशिष्ट नाम हैं। देखिए—

बड़े नयन, कटि, भ्रकुटी, भाल बिसाल;
तुलसी मोहत मनहिं मनोहर बाल।
कुंकुम-तिलक भाल, स्रुति कुंडल लोल;
काकपच्छ मिलि सखि! कस लसत कपोल।
भाल तिलक-सर सौंहत, भौंह कमान;
मुख अनुहरिया केवल चंद-समान।

यह वर्णन तुलसी-कृत बरवै-रामायण से लिया गया है। यह रूप सहज ही इंद्रिय-ग्राह्य है। मानस में वर्णित—

कंकन-किंकिनि-नूपुर-धुनि सुनि—
कहत लखन सन राम हृदय गुनि।
मानहुँ मदन दुंदुभी दीन्हीं;
मनसा बिस्व बिजय कहँ कीन्हीं।

आदि वर्णन भी इंद्रिय-ग्राह्य आकर्षण-सौंदर्य का उदाहरण है। तुलसी की यह 'विश्व-विजय' की उक्ति कितनी सत्य है, यह बतलाने की आवश्यकता नहीं। हममें से कितने ऐसे हैं, जो इस विश्व-विजयी, इंद्रिय-ग्राह्य सौंदर्य से पराजित नहीं हुए? सौंदर्य की यह सचेतन भावना है। तुलसी ने इस इंद्रिय-ग्राह्य सौंदर्य का वर्णन वसंतागम से प्रसन्न जनक-बाग़ से लेकर राम-सीता के प्रथम दर्शनोत्पन्न पूर्वानुराग तक इस सफलता के साथ किया है कि उसकी संपूर्ण विवेचना के लिये यहाँ सामर्थ्य ही नहीं। तुलसी ने सीता के इस सौंदर्य की परा काष्ठा इन शब्दों में कर दी है—

गरब करहु रघुनंदन, जनि मन माँह,
देखहु आपनि मूरति सिय कै छाँह।

फ्रायर ने रोमियो का उल्लेख करते हुए कहा था—

Youngmen's love, then, lies not truly in their heart, but in their eyes.

जहाँ मन बाह्य सौंदर्य पर अड़ जाता है, वहाँ हृदय को स्थान नहीं मिलता; मानसिक सौंदर्य की छटा वहाँ नहीं फैल सकती। किंतु राम का पौरुष जहाँ उनसे यह कहलाता है—

मोहिं अतिसय प्रतीत मन केरी,
जेहिं सपनेहु पर-नारि न हेरी।

वहीं सीताजी क्या करती हैं, यह भी देखिए—

लोचन-मग रामहिं उर आनी—
दीन्हें पलक-कपाट सयानी।

राम ने इंद्रिय-ग्राह्य सौंदर्य की मुग्धता पर न रीझकर मन की गवाही दिलाई, क्योंकि सच्चा प्रेम ही 'मन को क्षोभ' में डाल सकता है। राम जब क्षुब्ध होते हैं, तो मन से पूछते हैं—आँखों या किंकिनि-धुनि सुननेवाले कानों द्वारा वह प्रेम के सुंदर चित्र को दूषित नहीं करना चाहते। उधर सीताजी इंद्रिय-ग्राह्य सौंदर्य की ओर से आँखें मूँदकर हृदय में वह मूर्ति भर लेती हैं। "My eyes make pictures, when they are

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

shut"—सीता और राम, दोनो ही आँखों में होकर हृदय में जा बैठते हैं।

धरि बड़ि धीर राम उर आने।
(सीता)

प्रभु जब जात जानकी जानी—

तब उन्होंने भी—

परम प्रेममय मृदु मसि कीन्हीं;
चारु चित्त-भीती लिखि लीन्हीं।

सीता ने राम को उर में बैठा 'पलक-कपाट' में बंद कर लिया, और राम ने सीता की छवि अपने हृदय-पटल पर अंकित कर ली। हृदय-ग्राही सौंदर्य का दर्जा इस प्रकार पहले से ऊपर है। इस सौंदर्य का विकास वियुक्तावस्था में ही होता है। दुनिया से आँखें फेरकर भी जब हृदय में सौंदर्य का प्रकाश जगमगाता रहता है, लंका से लौटकर हनुमान् जब राम को सीता की दशा का अनुभव कराते हैं, उस समय के उनके ये मार्मिक वाक्य सुनिए—

नाम पाहरू, दिवस-निसि ध्यान तुम्हार कपाट,
लोचन निज-पद-जंत्रित जाहिं प्रान केहि बाट।

प्रेम की यह दृढ़ता और तन्मयता तभी स्थिर रह सकती है, जब वह दिल पर असर कर गया हो।

सौंदर्य-दर्शन का एक तीसरा क्षेत्र भी है, और वह है बुद्धि। बुद्धि-ग्राह्य सौंदर्य विज्ञान का विषय है। वह सौंदर्य की विशद स्थिति अवश्य है, किंतु उसकी गति और तीव्रता वहाँ पहुँचते-पहुँचते शिथिल हो जाती है।

नँद-नंदन की मुख-सुंदरता
कहि न सकत स्रुति, सेस, उमावर।

यहाँ बेचारी बुद्धि हार खाकर ही बैठ रहती है। जिस प्रकार प्रेम की प्रारंभिक स्थिति में आदमी पतंग बनकर ज्वाला में जल मरता है, उसी प्रकार प्रेम की इस अंतिम स्थिति में वह बूँद बनकर सिंधु में समा जाता है। यहाँ आत्मसमर्पण की भावना ही नहीं रहती; अपना अस्तित्व ही मिटा देना पड़ता है। यही वह स्थिति है, जब ज्ञानी अणु-परमाणु में प्रियतम की खोज करते हुए एक विश्वात्मा की आराधना करते हैं। सौंदर्य की यह अज्ञात और अचेतनावस्था है।

सियाराममय सब जग जानी—
करहुँ प्रनाम जोरि जुग पानी।

प्रेम-भावना की यह अंतिम परिस्थिति तुलसी ने बड़े विस्तार से लिखी है।

अब ज़रा इसके आगे बढ़िए—

तुलसी ने बरवै-रामायण, जानकी-मंगल और बालकांड में संयोग-शृंगार, का जहाँ मधुर मिलन की आराधना होती है, वर्णन कई प्रकार से किया है। यह न समझिए कि वह भक्ति के आवेश में प्रेम की स्वाभाविकता भुला बैठते हैं। राम-सीता के विवाह के पश्चात् वह सखियों से प्रेम के विनोद-वर्णन द्वारा भावना की प्राकृतिकता की रक्षा अवश्य कर लेते हैं। सखियाँ सीताजी से कहती हैं—

का घूँघट मुख मूँदहु नवला नारि?
चाँद सरग पर सोहत यहि अनुहारि!

इसी प्रकार के विनोद द्वारा वह मिलन-रात्रि की कैसी सांकेतिक छवि अंकित कर देते हैं—

उठी सखी हँसि मिस करि, कहि मृदु बैन;
सिय-रघुबर के भए उनींदे नैन!

(२)

अब इस प्रेम पर धीरे-धीरे वियोग की छाया आती है। आरंभ में वियोग की छाया ही रहती है। राम के वन-गमन का समय आता है। राम सीता को अयोध्या में ही छोड़ जाना चाहते हैं। क्षण-भर के लिये सीताजी राम के वियोग की कल्पना से क्षुब्ध हो बैठती हैं। वह कहती हैं—

पिय निठुर बचन कहे, कारन कवन?
जानत हौं सबके मन की गति,
मृदु-चित, परम कृपालु रवन!

× × ×

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुलसिदास प्रभु-पद-सरोज तजि
रहिहौं कहाँ करौंगी भवन ?

शीघ्र ही यह वियोग की छाया दूर हो जाती है, जब राम कहते हैं—

जो चलिहौ, तो चलौ चलिकै वन
सुनि सिय - मन अवलंब लही है।

प्रेम-शृंगार में 'वियोग की छाया' अपनी विशेषता इसलिये रखती है कि उसमें प्रेम कसौटी पर कसा जाता है। प्रेमी और प्रियतम के क्षण-वियोग की कल्पना का सुख तुलसी ने दांपत्य भाव की पवित्रता सुरक्षित रखते हुए ही उठाया है। द्वैत और अद्वैत की भावना ऐसे ही अवसरों पर अपना प्रभाव दिखाती है। सीताजी राम के साथ चल देती हैं, इसका वर्णन यों किया है—

प्राननाथ के साथ चलीं उठि,
अवध सोक-सरि उमँगि बही है;
तुलसी सुनी न कबहुँ काहु कहुँ,
तनु परिहरि परिछाहिं रही है।

अयोध्या-कांड में वर्णित वन-गमन-प्रसंग सामाजिक कर्तव्य की दृष्टि से एक अत्यंत जटिल समस्या है। सीता का घर में रहने का तक़ाज़ा कर्तव्यशीलता करती है; किंतु तुलसी ने इस समस्या को यों कहकर सुलझा दिया है—

मैं पुनि समुझि दीख मन माहीं—
पिय-बियोग - सम दुख जग नाहीं।
× × ×
जहँ लगि नाथ! नेह अरु नाते,
पिय बिनु तियहिं तरनि तें ताते।

प्रेम और कुछ नहीं चाहता। वह प्रियतम के सान्निध्य-सामीप्य का सुख चाहता है। प्रेम की इस सूक्ष्म, किंतु व्यापक परिस्थिति पर विचार करते हुए हमें इन शब्दों की ओर ध्यान देना चाहिए—

बैठि नमित-मुख सोचति सीता—
रूप-रासि, पति-प्रेम - पुनीता।
चलन चहत बन जीवननाथू;
केहि सुकृती सन होइहि साथू।
की तनु प्रान कि केवल प्राना;
बिधि-करतब कछु जात न जाना।
× × ×

जहाँ यह तैयारी है कि या तो शरीर और प्राण दोनो ही साथ जायँगे, या फिर केवल प्राण ही, वहाँ प्रेम की संलग्नता पहचानने के कारण राम को भी यही कहकर चुप हो जाना पड़ता है—

देखि दसा रघुपति जिय जाना—
हठि राखे, नहिं राखिहि प्राना।
× × ×
कहेउ कृपालु भानु - कुल-नाथा—
परहरि सोचु चलहु बन साथा।
× × ×

वन का एकांत विहार और राम का सान्निध्य। सीता के सौंदर्य से वन निखर उठा; किंतु अब वियोग का आघात निकट ही है। राजकवि टेनीसन ने लिखा है—

In every land
I saw, wherever light illuminates,
Beauty and anguish waiting hand in hand.

दिव्य सौंदर्य की प्रतीक सीता भी रावण द्वारा हरी जाकर राम के लिये इस anguish—पीड़ा—को प्रस्तुत कर देती हैं। कुटी में सीता को न पाकर वियोगी राम का चित्र अंकित करने में—काव्य की परमोत्कृष्टता प्रदर्शन करने में तुलसी ने बड़ी सहृदयता से काम लिया है। देखिए—

आस्रम निरखि भूले, द्रुम न फले न फूले,
अलि, खग-मृग मानों कबहुँ न हे।
मुनि न बधूटी, उजरी परनकुटी,
पंचबटी पहिंचान ठाढ़ेइ रहे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उठी न सलिल लिए, प्रेम-प्रमुदित हिये,
प्रिया न पुलकि प्रिय बचन कहे।
पल्लव सालन हेरी, प्रानबल्लभा न टेरी,
बिरह बिथकि लखि लषन गहे।

यह एक विरही का चित्र है। कवि ने इस विरह की दशा का, वियोग के आघात का चित्र बनाते हुए राम की मनोव्यथा कितनी मार्मिकता से अंकित की है। यह वियोग स्वभावतः धीरे-धीरे प्रिय-प्राप्ति की ओर प्रयत्नशील होता है। कृष्ण के वियोग में राधा तड़पती रह जाती है, और निष्ठुर कृष्ण राधा के प्रेम को विश्व-व्यापी बनाने के लिये ज्ञानवादी के रूप में उद्धव को भेजकर चुप हो जाते हैं; किंतु राम की यह खोज प्रेम-साहित्य में मर्यादा, कर्तव्य और सरसता का परिपाक करती है।

हे खग - मृग, हे मधुकर - स्रेनी!
तुम देखी सीता मृगनैनी?
सुनु जानकी, तोहिं बिनु आजू—
हरषे सकल पाइ जनु राजू।
किमि सहि जात अनख तोहि पाहीं;
प्रिया, बेगि प्रगटसि कस नाहीं!

इसके बाद जब एक दिन सुग्रीव सीताजी द्वारा ऊपर से फेंके गए वस्त्राभूषणों को लाकर राम के सामने रख देते हैं, तो राम की दशा क्या हो जाती है—

भूषन-बसन बिलोकत सिय के।
प्रेम-बिबस मन, कंप-पुलक तनु,
नीरज-नयन नीर-भरे पिय के।

यह है उनका उस क्षण का मानसिक चित्र।

कुछ ऐसी ठेस लगी इंतहाए-जब्त पै भी--
टपक पड़ी मेरी हसरत मेरी निगाहों से।

अच्छा, और आगे बढ़िए—

ऋष्यमूक-पर्वत पर पत्थर का दिल बनाए राम बैठे हैं, और समुद्र के उस सुदूर तट के दूसरी ओर सीता के हृदय में वियोग का पारावार व्याकुल हो रहा है। हनुमान् राम का प्रेम-संदेश और सहिदान—चिह्न—सीता के पास ले जाते हैं। संदेश क्या था—वही—

तत्त्व प्रेम कर मम अरु तोरा—
जानत प्रिया, एक मन मोरा।

मर्यादा-पुरुषोत्तम राम, वन-वन सीता की खोज में रोते हुए राम, जब सीता के पास संदेश भेजते हैं, तो दो शब्दों में उनकी। यह भाव-अभिव्यंजना कवि की सफल वाणी की प्रशंसा करते हुए नहीं अघाती। संयमशील राम इन्हीं पंक्तियों में अपने प्रेम की गहराई और विवशता, सभी कुछ तो भर देते हैं—

सो मन सदा रहत तोहिं पाहीं;
समुझि प्रीति-रस इतनेहि माहीं।

उधर जब राम का संदेश सुनाकर हनुमान् लौटना चाहते हैं, तो सीता क्या कहकर उन्हें बिदा करती हैं? सुनिए—

कपि के चलत सिय को मनु गहबरि आयो;
पुलक-सिथिल भयो सरीर, नीर नयनहिं छायो।
कहन चह्यो सँदेस, नहिं कह्यो,
पिय के जिय की जानि हृदय दुसह दुख दुरायो।

'जानत प्रिया, एक मन मोरा' और 'पिय के जिय की जानि' में कौन-सा अंतर है? राम और सीता के प्रेम की यह एकात्मता किसी भी कलावान् की रचना-सृष्टि का शृंगार बन सकती है; किंतु तुलसी तो अपने आराध्य राम की ही भाँति मर्यादा और संयम की रक्षा करनेवाले हैं। वह कहते हैं—

यह सनेह-सरबस समौ,
तुलसी रसना रूखी, ताहीं ते परत गायो!

तुलसी ने इस अवसर को 'सनेह-सरबस समौ' कहकर उस स्नेह में रसना की रस-हीनता की युक्ति पेश कर अपनी विरह-संगीत की मर्यादा साफ़ बचा ली है। यही है उनकी सूझ-बूझ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विरहिणी सीता का एक चित्र महाकवि भवभूति के उत्तर राम-चरित में देखने को मिलता है। 'तन धारी बियोग' और 'बिरह-मूरति' में व्याप्त अंतर को आप स्वयं ही परखिए—

पियरी परी ओप कपोलन की,
तन में दुबराई बढ़ी अति भारी;
लटकाएँ लटें बिखरीं मुख पै,
उर सोचति, मोचति लोचन बारी।
अति दीसत आकुल सोग-सनी,
करुना-रस की जनु मूरति प्यारी;
तनधारी बियोग - बिथा-सी, किधौं
बन आइ रही मिथिलेस-दुलारी।

आइए, ज़रा तुलसी द्वारा अंकित विरह-चित्र का भी दर्शन करें—

रघुकुल-तिलक! बियोग तिहारे।
मैं देखी जब जाइ जानकी
मनहुँ बिरह - मूरति मन मारे।
चित्र-से नयन अरु गढ़े-से चरन-कर,
मढ़े - से स्रवन नहिं सुनत पुकारे।

× × ×

हमारे पास अवकाश नहीं कि हम तुलसी द्वारा प्रस्तुत विरह-चित्रों को यहाँ उपस्थित करें। राम के विरह की यह कथा बड़ी लंबी है। किंतु एक अंतिम प्रसंग उपस्थित किए बिना यह चित्रण पूरा नहीं हो सकता। वह प्रसंग है सीता-परित्याग का।

Our sweetest songs are those
That tell of saddest thoughts.

कथा सभी लोग जानते हैं—यह धर्म-संकट तो था ही, किंतु यह था सबसे कठोर प्रेम-संकट! तुलसी लिखते हैं—

परिहरे बिनु जानकी नहिं और अनघ, उपाउ;

× × ×

पालिबे असि-धार-व्रत प्रिय-प्रेम-पाल सुभाउ।

किंतु राम अपने जीवन-प्रेम पर किए गए इस आघात को भी किस धैर्य से सहन करते हैं—

निपट असमंजसहु बिलसति मुख मनोहरताउ;
परम धीर-धुरीन हृदय कि हरष-बिसमय काउ?

सीता के लिये भी यह अग्नि-परीक्षा का अवसर था। प्रेम-जीवन के आरंभ से सीता ने संसार के वैभव से वैराग्य ले लिया था। राजरानी होनेवाली महाराजकुमारी मैथिली ने तपस्विनी बनकर अपने प्रेम का निर्वाह किया था। राक्षसों के हाथ पड़कर भी उन्होंने अपनी प्रेम-प्रतीति का निर्वाह बड़ी सजगता से किया था। प्यारे के प्रेम पर न्यौछावर हो जानेवाली सीता आज उसी द्वारा परित्यक्त की जाती है। कैसा भयंकर प्रसंग है यह! तुलसी ने दो पंक्तियों में प्रेमियों की मनोव्यथा अंकित करते हुए लिखा है—

राम जोगवत सीय-मनु प्रिय मनहि प्रान प्रियाउ;
परम पावन प्रेम-परिमिति समुझि तुलसी गाउ।

किंतु क्या राम भी शेक्सपियर के सीज़र की पत्नी की भाँति सीता को संदेह से परे रखने ही में प्रेम-परिमिति समझते थे? कविता का यह प्रसंग तुलसी की अपनी गढ़ंत नहीं, प्रत्युत ऐसे अवसरों पर विचार-स्वातंत्र्य की रक्षा प्रत्येक सत्कवि के लिये कर्तव्य है। तुलसी ने स्पष्ट लिखा है—

राम सद्गुन-धाम परिमिति भई कछुक मलानि!

राम के अनन्य भक्त तुलसी प्रेम के प्रति यह अत्याचार कर्तव्य के नाम पर सहन नहीं कर सकते। 'परिमिति भई कछुक मलानि' कहकर उन्होंने 'प्रेम' नाम की सचमुच रक्षा कर ली है। रस्किन ने महाकवि दांते के लिये जो शब्द कहे थे, वे तुलसी के लिये भी अक्षरशः कहे जा सकते हैं—

He has entire command of himself and can look around calmly at all moments.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुग्ध

[श्रीआरसीप्रसादसिंह]

आह ! प्राण, तुम कितने शीतल !
जब मैं पास तुम्हारे आता
तन की सारी सुध-बुध खोकर,
अपने मन की प्यास बुझाने
प्रेम-व्यथा से व्याकुल होकर,
क्या अनिमेष देखते मेरी
ओर अचल तुम हिम-से शीतल ?
आह ! प्राण, तुम कितने निष्ठुर !
मैं झुकता हूँ तुम्हें समर्पित
करने को ज्यों अपना यौवन,
औ' भुज-पाश बढ़ाकर देता
ज्यों ही आलिंगन का बंधन,
हो जाते अवाक्-से तत्क्षण
तुम पाषाण-सदृश क्यों निष्ठुर ?
आह ! प्राण, तुम कितने नीरस !
एक शब्द भी नहीं प्रणय का,
एक हास भी नहीं उमड़ता ;
एक तार भी हाय ! तुम्हारी
हृदय-बीन का कभी न बजता !
एक बूँद भी जिसमें दुर्लभ,
प्रियतम, तुम उस मरु-से नीरस !
आह ! प्राण, तुम कितने दुर्गम !
इतना धैर्य और यह संयम,
जीवन में न तनिक भी कौतुक ;
टकराकर फिर-फिर जाती हैं
आँधी - सी इच्छाएँ उत्सुक ।
जिसे समझने में मैं अक्षम,
प्रियतम, तुम उस गिरि-से दुर्गम ?
आह ! प्राण, तुम कितने दुस्तर !

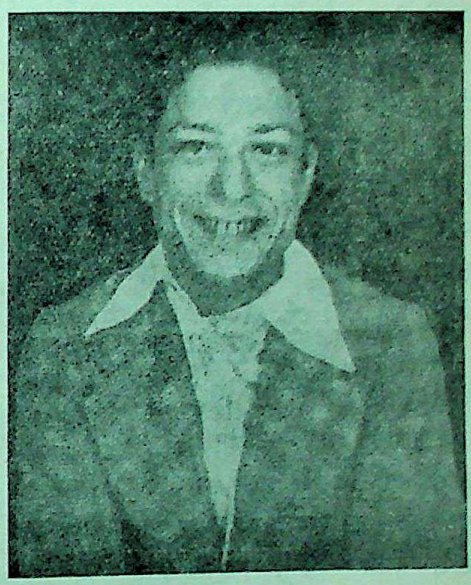

श्रीआरसीप्रसादसिंह

मेरी सारी लज्जा को कर
अपनी मर्यादा में सीमित,
चिर - गंभीर बने हो ज्वाला-
मुखी हृदय में लेकर जीवित ।
मैं तट का कलरव हूँ मर्मर;
प्रियतम, तुम सागर-से दुस्तर !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपराधी विशी

[श्रीपृथ्वीपालसिंह एम्० ए० (अमेरिका), जे० डी० (लंदन), एल्-एल्० बी० (लखनऊ)]

विशी के हरी-भरी लताओं से आच्छादित, साएदार सैरगाहों में आज एक मनहूस ख़ामोशी छाई हुई है। पहले विशी का नाम उजियाला था वहाँ के अक्सीर पानी के कारण। आज विशी का नाम दुनिया की ज़बान पर है वहाँ की कमज़ोर, नात्ज़ियों के ज़ेरे-असर, गुनाहों से लदी हुई नई फ़्रांसीसी सरकार के कारण, जिसका चौधरी है ८५ वर्ष का बूढ़ा मार्शल फ़िलिप पेताँ। यह वही विशी है, जहाँ से ज़माना हुआ, एक बार फ़र्मान जारी हुआ था कि फ़्रांस का सिद्धांत आज़ादी, समता, मनुष्य - मात्र का बंधुत्व (Liberty, Equality, Brotherhood of Man) के बजाय काम, कुटुंब और विश्वास (Work, Family, Faith) हो गया। जुलाई, १९४० को वहीं से एक और विज्ञप्ति प्रकाशित हुई, जिसके द्वारा मार्शल पेताँ ने एक नवीन फ़्रांस की रचना की, और अपने को उसका मुखिया घोषित किया। इस नवीन फ़्रांस की सरकार ही विशी - सरकार के नाम से प्रसिद्ध है। विशी-सरकार आज़ादी की दुश्मन, अपने पुराने मित्रों की दुश्मन और दुश्मन की दोस्त है। विशी-सरकार अपराधी है। क्या-क्या अपराध किए हैं विशी-सरकार ने—हमसे सुनिए उन अपराधों की रामकहानी।

वह उनका है

जब लड़ाई शुरू हुई थी, तब फ़्रांस अँगरेज़ी-राज्य का अभिन्न मित्र और सहायक था। बरतानिया को उस पर, उसकी शक्ति पर, उसकी ईमानदारी पर बड़ा भरोसा था। फ़्रांस के सैनिकों पर उसे नाज़ था, और उसकी जंगी शक्ति पर गर्व।

लेकिन जर्मन-प्रोपेगेंडा के विषाक्त धुएँ ने फ़्रांसीसियों के हृदय और मस्तिष्क पर एक नशीली चादर डाल दी थी। उन्हें पथ-भ्रष्ट कर दिया था। वे वैरियों के मुक़ाबिले में आए, लेकिन लड़े नहीं—लड़ने का अभिनय किया उन्होंने। फ़्रांस ने कंधा दे दिया। वह फ़्रांस, जो बरतानिया का घनिष्ठ मित्र था, सहज ही वैरियों के जादू का शिकार हो गया। वह आज उनका है। उन्हीं की-सी कहता है। उन्हीं की-सी करता है।

लेकिन फ़्रांस की स्वतंत्रता-प्रेमी आत्मा अभी जीवित है। वह जीवित है जेनरल डेगाल के रूप में और आज़ाद फ़्रांस के सैनिकों के रूप में।

जून २५, १९४० को मार्शल पेताँ ने फ़्रांस को जर्मनी के हाथों बेचकर शांति का सौदा किया। उस दिन स्वतंत्र फ़्रांस—ब्रायन, क्लीमेंसू, ज़ोला और अनातोले का स्वतंत्र फ़्रांस मर गया। एक नए फ़्रांस का जन्म हुआ, जिस पर स्वस्तिका की छाया थी।

उसी दिन दुनिया ने विशी-सरकार के मुखिया मार्शल पेताँ को भर्राई हुई आवाज़ में कहते हुए सुना—"ख़ैर, हमारी इज़्ज़त तो बच गई।... हमारे समुद्री और हवाई बेड़े को कभी कोई ताक़त इस्तेमाल न कर सकेगी। देश पर हमारा ही शासन रहेगा। हमारी सरकार स्वतंत्र होगी। हमारे फ़्रांस पर राज्य होगा केवल हम फ़्रांसीसियों का।"

मौत और तबाही

दुनिया को भुलावे में डालने के लिये वे वादे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किए थे मारशल पेताँ ने। आज फ्रांस की धरती नाज़ी हवाई बेड़े और जंगी शक्ति का अड्डा बन

और पनडुब्बियाँ घेरा डाले पड़ी हैं। फ्रांसीसी आफ्रिका में डाकर और फ्रांस के अनेक बंदर-

श्रीपृथ्वीपालसिंह एम्० ए० (अमेरिका), जे० डी० (लंदन) एल-एल्० बी० (लखनऊ)

रही है। फ्रांस के तट से वे उड़-उड़कर जाते हैं, और इँगलिस्तान पर मौत और तबाही बरसाते हैं। फ्रांसीसी बंदरगाहों में जर्मन जंगी जहाज़

गाहों में नात्ज़ियों के समुद्री और हवाई बेड़े के जमघटे के समाचार आते रहे हैं। फ्रांस के शस्त्र बनाने के कारख़ानों में जर्मनी के लिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हथियार ढाले जा रहे हैं। फ्रांसीसी जहाज़ों में फ्रांस के नाम से सामान आता है, और ढो-ढो-कर जर्मनी पहुँचा दिया जाता है। फ्रांस हिटलर के हाथों में खेल रहा है। फ्रांस दुश्मनों की सहायता कर रहा है। और, विशी-सरकार ही यह सब करवा रही है।

विशी-सरकार ने बरतानिया और मित्र राष्ट्रों के दो लाख पचास हज़ार टन के तिजारती जहाज़ों को ग़ैरक़ानूनी तौर पर फ्रांसीसी बंदरगाहों में बंदी बना रक्खा है। पिछली गरमियों की बात है। बरतानिया ने इँगलैंड में स्थित फ्रांसीसियों को फ्रांस पहुँचाने के लिये चार फ्रांसीसी जहाज़ों को क़ैद से मुक्त कर दिया, और शर्त यह थी कि विशी-सरकार भी बरतानिया के चार जहाज़ों को छोड़ देगी। लेकिन जब चारों जहाज़ कुशल से फ्रांस पहुँच गए, तो विशी-सरकार वादे से मुकर गई—बरतानिया का एक भी जहाज़ न मुक्त किया।

हल्का-सा जवाब

यह सब कुछ होते हुए भी बरतानिया ने कुछ न कहा। बरतानिया सदैव उदारता का व्यवहार करता रहा। कोई पूछे विशी-सरकार से कि फ्रांस और सीरिया में कितना खाने-पीने का सामान बरतानिया की इच्छा और सहायता से पहुँचा। उत्तरी आफ्रिका, अलजीरिया और ट्यूनीसिया से सैकड़ों फ्रांसीसी जहाज़ तरह-तरह का सामान ढो-ढोकर मार्सई पहुँचाते रहे। इसी प्रकार सीरिया में सामान पहुँचाने के लिये बरतानिया ने विशी-सरकार को विशेष आज्ञा-पत्र दे रक्खे थे। यह भी सुविधा दे रक्खी थी कि रोग-ग्रस्त फ्रांसीसियों को एक जगह से दूसरी जगह विना किसी रोक-टोक के ले जायँ। परंतु जब यह सूचना मिली कि ६० प्रतिशत माल जर्मनी हड़प कर जाता है, तो बरतानिया ने सख़्ती शुरू की। ऑक्टोबर, सन् १९४० से जून १, सन् १९४१ तक विशी-सरकार के एक लाख टन के व्यापारी जहाज़ बंदी बनाए गए। विशी-सरकार जर्मनी को रसद पहुँचाती रही, और उसने बरतानिया के ढाई लाख टन के जहाज़ क़ैद कर रक्खे—इन्हीं सब हरकतों का यह हल्का-सा उत्तर है, और मसियो दारलाँ इसी पर लाल-पीले हो रहे हैं।

बरतानिया की मेहरबानियों का भी दुरुपयोग किया विशी-सरकार ने। रोगी बताकर ऐसे फ्रांसीसियों को, जो बरतानिया से प्रेम करते थे, फ्रांस ले गए—उन पर अभियोग चलाया, और उन्हें दंड दिया।

सहस्रों जर्मन, जो हिटलर के सिद्धांतों में विश्वास नहीं करते थे, अपने प्राण लेकर जर्मनी से भाग आए थे, और आकर फ्रांस में शरण ली थी। विशी-सरकार ने उन ग़रीबों को हिटलर के हवाले कर दिया।

पूरब दिशा की ओर

युद्ध के काले बादल पूरब दिशा की ओर बढ़ रहे थे, और उधर विशी-सरकार नात्ज़ियों के फैलाए हुए जाल में दिनोंदिन और ज़्यादा फँसती जा रही थी। संसार ने सुना कि ईराक़ में हिटलर का संकेत पाकर हज़रत रशीदअली ने क्रांति कर दी, और सीरिया में जर्मनी के हवाई जहाज़ों का क़ाफ़िला उतर रहा है, और जर्मन यात्री भी पहुँचने लगे हैं। यह भी सुनने में आया कि विशी-सरकार जर्मनी को मेडिट्रेनियन और विशेषकर सीरिया के किनारे के समुद्री और हवाई अड्डे प्रयोग करने का अधिकार देने जा रही है। एक के बाद दूसरे समाचार आने लगे। बात साफ़ हो गई। सीरिया की फ्रांसीसी सरकार भी कमर कसकर खड़ी हो गई। बरतानिया को विश्वास हो गया कि देशी सरकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और रशीदअली नात्ज़ियों की गोली खेल रहे हैं। और, यह बात संसार को भी विदित हो गई थी।

अमेरिका की चेतावनी

जून ६, १६४१ को अमेरिका के राजसचिव मिस्टर कारडेल हल ने विशी-सरकार को सचेत किया। मिस्टर हल ने विशी-सरकार को जो चेतावनी दी, उसका सार यही था कि यदि विशी-सरकार नात्ज़ियों के साथ सहयोग बढ़ाना बंद नहीं करती, तो यह समझा जायगा कि फ्रांस भी वैरियों के दल में जा मिला है। और, फ्रांस का नात्ज़ियों को युद्ध में सहायता देना अन्य राष्ट्रों के प्रति दुश्मनी का द्योतक समझा जायगा। विशी-सरकार ने कारडेल हल की चेतावनी सुनी, और सुनकर बात बना दी।

इधर बरतानिया ने एक क्षण-भर की भी देर न की। बरतानिया की सेनाएँ ईराक़ और सीरिया के मोर्चे पर जा पहुँचीं। स्वेज़, मिस्र, हिंदुस्थान—सभी ख़तरे में थे न।

बरतानिया के सैनिकों ने ईराक़ के धधकते हुए ज्वालामुखी का मुँह बंद कर दिया। रशीदअली और उनके साथियों के पैर उखड़ गए। सीरिया में भी जर्मन अभी जम नहीं पाए थे। आज़ाद फ्रांस के लीडर जेनरल डेगाल ने विशी-सरकार को ललकारा, और सीरिया में बसे हुए फ्रांसीसियों और फ्रांसीसी सैनिकों को उत्तेजित किया कि वे वैरियों के विरुद्ध तथा सीरिया की स्वतंत्रता के लिये युद्ध करें। जेनरल डेगाल और बरतानिया की सेनाओं ने सीरिया और ईराक़ की नाज़ुक स्थिति को किस ख़ूबी से सँभाला! जर्मनी का दाँव ख़ाली गया।

बरतानिया के प्रधान मंत्री मिस्टर चर्चिल ने अपनी १० जून, १६४१ की वक्तृता में कहा कि किसी को नात्ज़ी और विशी-प्रोपेगैंडा के चक्कर में न आना चाहिए। हमारा सीरिया या अन्य किसी फ्रांसीसी उपनिवेश पर अधिकार करने या उनसे किसी प्रकार का लाभ उठाने का उद्देश्य नहीं। हम तो उल्टे लड़ रहे हैं फ्रांसीसियों की खोई हुई स्वतंत्रता वापस दिलाने के लिये।

अनहोनी घटनाएँ

हमने कैसी-कैसी अनहोनी घटनाएँ देखीं इस जंग में। मित्र को वैरी और वैरी को मित्र बनते देखा। आज विशी-सरकार ने फ्रांस और बरतानिया के पुराने संबंध भुला दिए हैं। आज फ्रांस अँगरेज़ों के वैरियों के गिरोह में जा मिला है। लेकिन इसका उत्तरदायित्व क्या फ्रांस पर या वहाँ के सीधे-सादे, सच्चे और ईमानदार नर-नारियों पर है? कदापि नहीं। इसका उत्तरदायित्व है फ्रांस के चंद सस्ते नेताओं पर—दारलाँ, डेंज़ और लैवाल-ऐसे नेताओं पर, जिन्होंने अपना उल्लू सीधा करने के लिये फ्रांस की इज़्ज़त ख़ाक में मिला दी। वरदून का वीर विजेता—बूढ़ा मार्शल पेताँ भी सहानुभूति का पात्र है। बुढ़ापे में वह भी उनकी घातों का शिकार हो गया।

स्वतंत्र फ्रांस—स्वतंत्रता-प्रेमी फ्रांसीसी और उनका लीडर जेनरल डेगाल आज भी बरतानिया के साथ हैं। बरतानिया को उन पर गर्व है। ऐसे मित्रों की सहानुभूति और सहायता के बल पर ही बरतानिया आज जीवित है।

सुधा के ग्राहक बनकर और बनाकर सहायता कीजिए!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहस्योद्घाटन

(युद्ध का कारण—मित्रता का स्वाँग)

[चित्रकार—श्रीयुत शिक्षार्थी]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संसार-रहस्य

अथवा

अधःपतन

लेखक

ठाकुर प्रसिद्धनारायणसिंह बी० ए०

यह उपन्यास हिंदी में एक नए ही ढंग का है। इसमें भौतिक और आध्यात्मिक जगत् का चित्र खींचा गया है। इस उपन्यास में लेखक ने संसार के द्वंद्व—पुण्य-पाप, उचित-अनुचित, यह-वह, मैं भला और तू बुरा और मैं बुद्धिमान् और तू मूर्ख···आदि ऐसे ही प्रश्नों को सुलझाकर यथातथ्य प्रकाश डाला है। छपाई-सफ़ाई सुंदर। मूल्य १॥), सजिल्द २)

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सब तरफ़ से इलाज कराकर निराश हुई देवियों

और

वंध्या व संतान-हीन स्त्रियों को

अब इधर-उधर भटकने की जरूरत नहीं

मथुरा की सुप्रसिद्ध

चपलादेवी वैद्या ने

अब तक

मथुरा-शहर और दूर-दूर की सैकड़ों औरतों को जो बाँझपन, पानी पड़ना, मासिक धर्म का ठीक न होना, समय पर न होना, खून का कम-ज्यादा जाना, मासिक धर्म के समय पीठ, पेड़ में ज्यादा दर्द होना तथा हिस्टीरिया वग़ैरा किसी भी गुप्त रोग से दुखी थीं, आराम कर दिया। भगवान् की कृपा से आज वे पूर्ण स्वस्थ हैं। उनकी आत्मा वैद्याजी को आशीर्वाद दे रही हैं—

अगर आप या

आपकी सखी-सहेली, पड़ोसिन या कोई रिस्तेदार औरत बाँझपन, प्रदर तथा तपेदिक़ वग़ैरा किसी भी कठिन रोग से दुखी है—

सब तरफ़ से इलाज कर निराश हो चुकी है, तो

आप उसे 'चपलादेवी वैद्या' का पता बता दें, और साथ ही यह विश्वास दिला दें कि—

चपलादेवी वैद्या

औरतों के तमाम गुप्त रोगों की चिकित्सा में पूर्ण अनुभवी और सिद्धहस्त हैं। उनके हाथ में यश है, जिस दुखी बहन का इलाज हाथ में लेती हैं, उसे आराम हो जाता है। बहुत-से प्रशंसा-पत्र मिल चुके हैं। एक बार आप भी परीक्षा कर देखें।

विश्वास रक्खें

आपका पैसा वृथा नहीं जायगा।

सरकार से रजिस्टर्ड

पता—**चपला देवी वैद्या**

स्त्री-जीवन-औषधालय, गली रावलिया, मथुरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

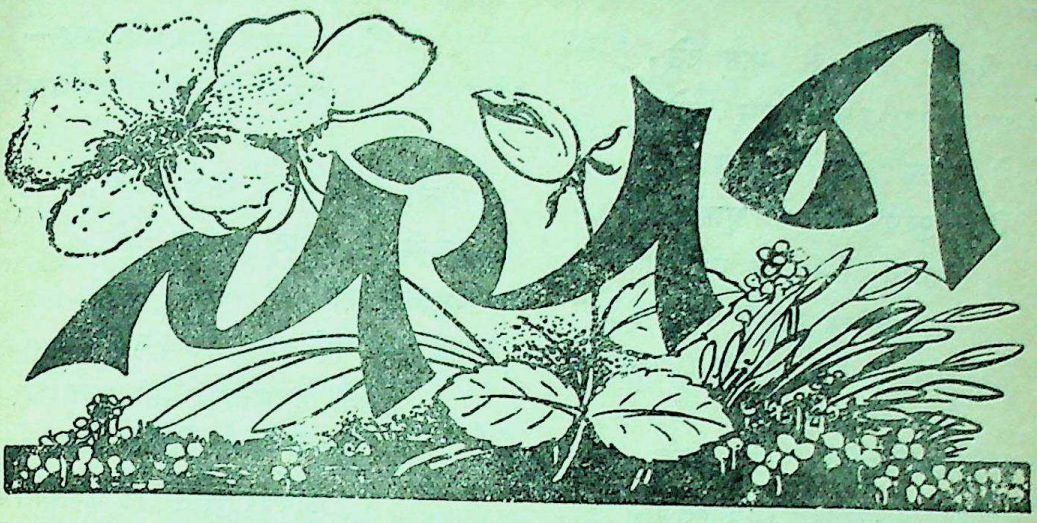

१. कविवर तुलसी की करामात

(१)

जब बहक रहे थे लोग यहाँ,
था विषम विषय-रस-भोग यहाँ,
ढक रहा ढोंग से योग यहाँ,
बढ़ रहा मतों का रोग यहाँ,
हो रहा भक्ति का छिन्न गात,
आई कमाल दिखलाने तब—
कविवर तुलसी की करामात।

(२)

जब फूल-फूल फ़ारसी फली,
शाहों द्वारा शायरी पली,
हो 'सूर' सूर की कला भली—
बन 'दृष्टि-कूट' जब डूब चली,
लाने को हिंदी का प्रभात—
तब प्रकटी बनकर रामायण—
कविवर तुलसी की करामात।

(३)

कर प्रेम-नदी को पार चकी,
पा प्राणप्रिया का प्यार चुकी,
समुचित शिक्षा उर धार चुकी,
जीवन बन संत सुधार चुकी,
दी हटा अविद्यामयी रात।
हुलसाकर हुलसी को हुलसी—
कविवर तुलसी की करामात।

(४)

कुटिया प्रकाश से चमक उठी,
लेखनी दीप्ति से दमक उठी,
वीणा से गहरी गमक उठी,
भावों की लहरी तमक उठी,
स्वर एक साथ बज उठे सात,
गा उठी अलौकिक राग रुचिर—
कविवर तुलसी की करामात।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(५)

हरि-भक्त प्रेम से झूम उठे,
हर ओर मचाते धूम उठे,
थे भ्रांत, नेत्र वे घूम उठे,
प्रिय - पुण्य - पदों को चूम उठे।
भारत की भी रह गई बात।
साहित्य-सुरसरी सिद्ध हुई—
कविवर तुलसी की करामात।

(६)

मानस-मंदिर में शंख बजे,
झाँकी के सुंदर साज सजे,
भावुक दौड़े, गृह-काज तजे,
बाधक जन अपने आप लजे,
जय राम-नाम की हुई ख्यात।
हो अजर-अमर है रही विचर—
कविवर तुलसी की करामात।

(७)

कविता-खेती को खाद मिली,
रसना रस में आबाद मिली,
'चौपाई' होकर शाद मिली,
अक्षर-अक्षर पर दाद मिली,
है लाजवाब आबे - हयात।
सच्चा जादू दिल पर करती—
कविवर तुलसी की करामात।

(८)

सिद्धियाँ सिद्धियाँ वार चुकीं,
भक्तों को दे उपहार चुकीं,
टीका - टिप्पणियाँ हार चुकीं,
अर्थों का मोह बिसार चुकीं,
होती है नित्य नवीन ज्ञात।
ऐसी समर्थ, सार्थक है यह—
कविवर तुलसी की करामात।

(९)

सीखी है जिसने चाल नहीं,
रखती है खोटा माल नहीं,
भूलती एक भी ताल नहीं,
कमज़ोर नहीं, वाचाल नहीं,
हँसती है धन पर मार लात।
कितनी सीधी, कितनी सादी—
कविवर तुलसी की करामात।

(१०)

कायर को वीर बनाती है,
वीरों को धीर बनाती है,
धीरों को पीर बनाती है,
पीरों को मीर बनाती है,
मीरों को दे देती नजात।
है जंत्र - मंत्र - मोहिनी - मढ़ी—
कविवर तुलसी की करामात।

(११)

उपदेशों से बद होड़ चुकी,
उपमाओं का मद तोड़ चुकी,
लिख राजनीति बेजोड़ चुकी,
प्रियता का सार निचोड़ चुकी,
कर चुकी पातकों का निपात।
'रसिकेंद्र' वंदनीया सब विध—
कविवर तुलसी की करामात।

(साहित्यालंकार) 'रसिकेंद्र'

× × ×

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२. स्वास्थ्य-रक्षा

मिश्रबंधुओं को पंडित-मंडली केवल साहित्य-समालोचक समझती है, किंतु हम लोगों ने कुछ पत्रों आदि का संपादन भी किया है। यद्यपि स्वास्थ्य के विषय में एक साहित्य-समालोचक का कुछ लिखना अनधिकार चेष्टा समझ पड़ेगी, तथापि संपादक अपने को सर्वज्ञ समझते हैं, और किसी विषय पर अपना कथन अनधिकार चर्चा नहीं मानते। इसलिये मेरी इस दर्पोक्ति पर आप अप्रसन्न नहीं हो सकते, ऐसी आशा है। और, यदि हुए भी, तो वह अप्रसन्नता मुझ पर न होकर संपादकों की जाति-भर पर होगी, जिससे बटते-बटते उसकी मात्रा मुझ पर नहीं के बराबर रह जायगी। अतएव निर्भय होकर आज आपको स्वास्थ्य-संबंधी थोड़ी-सी शिक्षा दिए ही डालता हूँ, विशेषतया इसलिये कि बहुतेरे रोगियों पर डॉक्टरों की शिक्षाओं का उतना प्रभाव नहीं पड़ता, जितना साथी रोगियों के अनुभवों का। मैं बहुत रोगी रह चुका हूँ, इस नाते भी अपने अनुभवों का कुछ कथन करता हूँ। आजकल संसार ने जैसे अन्य विषयों की भारी उन्नति की है, वैसे ही स्वास्थ्य की भी हुई है। अनुभवी डॉक्टरों का विचार है, यदि मनुष्य जिह्वा का स्वाद छोड़कर केवल शरीर-धारण के विचार से अच्छे-से-अच्छा लाभप्रद भोजन करे, और स्वाद के कारण उसे तनिक भी न बिगाड़े, तो वह सुगमता-पूर्वक १५० वर्ष जी सकता है। इतना जीवन बढ़ाने की आवश्यकता ही क्या? यह एक दार्शनिक या धार्मिक प्रश्न है, जिस पर न जाकर मैं केवल रोज़ाना अनुभव पर जाता हूँ। यह प्रकट ही है कि मरना प्रायः कोई नहीं चाहता, केवल जीवनेच्छा को युक्ति से सहायता न देने के कारण मनुष्य इस विषय पर विफल-मनोरथ होता है।

आजकल स्वास्थ्य के संबंध में प्रकृति-वाद (Naturopathy) के विचार निकले हैं, जो सबकी समझ में आ जाते हैं। प्रत्येक मनुष्य को प्रोटीन, फ़ैट (चर्बी), कार्बोहाइड्रेट, चूना, लोहा, फोंक और विटामिन समुचित मात्रा में खाना चाहिए। मामूली काम करनेवाले को साठ-पैंसठ माशे प्रोटीन, एक छटाक फ़ैट, साढ़े सात छटाक कार्बोहाइड्रेट, एक माशा चूना, ½ रत्ती लोहा, प्रायः दो तोले फोंक और विटामिन नित्य समुचित मात्रा में खाना चाहिए। दो-दो, चार-चार आने की पुस्तकों में इन बातों का हाल सुगमता-पूर्वक प्राप्त हो सकता है। जो लोग कार्बोहाइड्रेट कम खायँ, वे उसके बदले में फ़ैट अधिक लें, तो काम चल सकता है। चूना इसी रूप में हज़म नहीं होता, इससे जिन वस्तुओं में नमक के रूप में चूना होता है, उन्हें समुचित मात्रा में खाना चाहिए। सन् १६२२ से १६३० तक मुझे हर साल कोई-न-कोई सख़्त बीमारी हुई, किंतु इसके पीछे जब से मैंने खाना सँभाला, तब से फ़स्ली बुख़ार भी नहीं होता। प्रायः पाँच साल से प्राकृतिक भोजन कर रहा हूँ, जिसका फल बहुत अच्छा हुआ। अधिकतर कम उबाला दूध, दही, हरी तरकारियाँ, बिना चोय निकाली हुई मूँग, उर्द, चना आदि की दालें तथा बिना चोकर छाना हुआ आटा लाभप्रद हैं। जहाँ तक हो सके, कड़ाही में भूना खाना न खाकर उबाला हुआ खायँ। दही प्रत्येक जवान को आध सेर से एक सेर तक रोज़ाना खाना चाहिए, किंतु वह खट्टा न हो गया हो। फल क़रीब आध सेर तक रोज़ाना खाय, जहाँ तक बर्दाश्त हो सके, फलों और तरकारियों के छिलके भी खाय। साग दोनो वक्त क़रीब एक छटाक खाना चाहिए। मक्खन आधी छटाक तथा घी तरकारी आदि में एक छटाक रोज़ाना खाना चाहिए। यदि इतने घी, दही आदि से मोटापा बढ़े, तो समुचित मात्रा में इन्हें घटा देना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दाल एक छटाक रोज़ाना से अधिक न खानी चाहिए। इससे अधिक बातें जानने के लिये प्राकृतिक चिकित्सा करनेवाले डॉक्टरों से सलाह लेनी चाहिए। दही खाने से भूख बढ़ती तथा बुढ़ापे की अवाई दूर जाने की संभावना रहती है।

(रायबहादुर) शुकदेवविहारी मिश्र (बी० ए०)

× × ×

३. बहकीनाथ की बहक
(एक नई योजना)

पाकिस्तान और ज़नानिस्तान की योजनाएँ इतनी सुंदर होते हुए भी असफल ही रहीं। इसका कारण अपने राम की राय में उनका एकपक्षीय होना है। पाकिस्तान में सिर्फ़ मुसलमान ही रह सकेंगे, और ज़नानिस्तान में केवल स्त्रियाँ। भला, फिर 'बे-चारे' (बिचारे) हिंदू और मर्द कहाँ रहेंगे? वरना मि० जिन्ना की योजना कभी असफल न होती, जब कि मुसलमानों को संतुष्ट करना ही कांग्रेस-नेताओं का फ़र्ज़ हो रहा है। अतः अपने राम एक नई योजना बनाने का विचार कर रहे हैं, जिसे सुनकर मि० जिन्ना भी फड़क उठेंगे।

यहाँ हिंदू और मुसलमान, दोनो रहते हैं। तब हिंदुस्थान से मुसलमानों को आपत्ति अवश्य ही होनी चाहिए। इसलिये अपने राम की सलाह है कि इसका नाम अब 'हिंदू-मुसलिमस्तान' रख दिया जाय। अपने राम को यह पूरा-पूरा विश्वास है कि यह योजना अवश्य सफल हो जायगी। अतएव आप शीघ्र-से-शीघ्र अपनी-अपनी अनुमति दे दें, जिसमें इसे पास करा लिया जाय।

एक दूसरी योजना

'विद्या-मंदिर' भला फिर क्यों न आपत्ति-जनक माना जाय, जब कि उसमें दोनो शब्द 'संसकिरत' के हैं। इसका अगर 'इल्म-मंदिर' या 'विद्या-मसजिद' नाम रक्खा जाय, तो कितना सुंदर हो! इससे मुसलमानों को भी कोई गिला न रह जायगा, और 'राष्ट्रीय ऐक्य' का भी नमूना पेश हो जायगा, क्योंकि 'हिंदी' नहीं, अब तो वह 'हिंदुस्तानी' राष्ट्र-भाषा होगी, जिसमें 'हिंदी' के साथ 'उर्दू'-शब्द ज़रूरी हैं, और जो नागरी तथा 'अरबी'-लिपि में लिखी जायगी। केवल 'नागरी' का तो कोई अस्तित्व नहीं। उसे 'अरबी' को अपने साथ ही नहीं, वरन् अपने सिर पर रखना ही होगा।

कैसे लगेगी नाव किनारे?

आप सच मानिएगा, अभी उस दिन अपने राम ने एक विचित्र स्वप्न देखा। स्वप्न यों था कि एक कांग्रेसी मित्र महोदय बड़ी दूर से पधारे हैं। उनसे भेंट करने को स्थानीय कितने ही सज्जन भी उपस्थित हैं। आएदिन होनेवाले दंगों पर चर्चा चल उठी है। एक महाशय का कहना था—"हिंदुओं को भी अब क्रांति और हिंसा का मार्ग स्वीकार करना चाहिए। गुंडों पर अहिंसा का कोई असर नहीं होगा। अतः ईंट का प्रत्युत्तर पत्थर से देना होगा।"

मित्र महाशय बड़ी शांति से उन्हें समझाने लगे—"देखो, हिंदू और मुसलमान, दोनो एक ही नौका पर सवार हैं। स्वराज्य समुद्र के किनारे—उस पार है। यदि तुम लोग बीच में ही लड़ोगे, तो समुद्र में डूब जाओगे। इसलिये वे अच्छे हों या बुरे, तुम्हें सब सहते हुए साथ-साथ रहना होगा।"

इतना समझाने पर भी वहाँ एकत्र मंडली मानने को तैयार नहीं, हुई यह देखकर पहले तो अपने राम को क्रोध हो आया, और उन लोगों की बुद्धि पर तरस भी। पर उनमें से एक ने अपना मंतव्य यों प्रकट ही तो कर दिया—"नाव जब तक किनारे लगेगी, तुम लोग एक-एक करके समुद्र में फेंक दिए जाओगे।" अब 'सपना' तो ख़ैर सपना हो गया संपादकजी, पर अपने राम के हृदय को यह 'सूझ' बेचैन किए दे रही है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत की रक्षा-हेतु विधि के नियत किए
प्रहरी प्रजागर हैं अथवा खड़े हुए;
स्थान-भ्रंश होने नहीं देते जो ख-मंडल को,
सुधा-धौत अथवा ये स्तंभ हैं गड़े हुए?
विधि की विडंबना से गुण-गण भारत के
या हैं वैजयंत-धाम जाने को अड़े हुए;
सोहैं हिम-मंडित ये शृंग ही हिमालय के,
स्वर्ग के सोपान हैं या हीरों से जड़े हुए? २॥

श्रीपं० भूपनारायण दीक्षित एम्० ए०, एल्० टी०

हिम-श्वेत शृंग पर अभ्र-माला राजती है,
रजत की नालवाला छत्र या लखाता है;
पुंज कल-हंसों के हैं उड़ रहे जहाँ-तहाँ,
चमर-समूह शुभ्र अथवा दिखाता है?
सरिता है अथवा ये मुक्ता-माल गले पड़ी,
वन-राजि रसना-कलाप सरसाता है;
लसित गुणों से निज सोहता हिमालय है,
राजचिह्न-युक्त या नरेंद्र शोभा पाता है? ३॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उमा की बिदा का काल आया जान निकट जो
उत्सव के बीच ताप-छाप पड़ने लगी;
व्याकुल कुटुंबी हुए, मोह-भरी मेनका का
कंठ अवरुद्ध हुआ, वाणी रुकने लगी।
कातर अपत्य-स्नेह से हुए नगाधिराज,
पत्थर की भी छाती तुम्हारी फटने लगी;
अश्रु की अजस्र धार होकर सहस्रमुखी
तेरे अंतराल में निकल बहने लगी॥४॥
प्रकटी थी सागर से कमला-समान जब,
भारत-वसुंधरा का रूप बना न्यारा था;
देवों ने प्रदान की थी रत्न की अनंत राशि,
प्रेम से प्रकृति ने सर्वस्व निज वारा था।
किया था त्रिपथगा ने आप अभिषेक, फिर
पद-पद्म आप रत्नाकर ने पखारा था;
भाल में तुषार-हार उज्ज्वल, अनोखा यह
विधि ने किरीट निज हाथ से सँवारा था॥५॥

भूपनारायण दीक्षित (एम्० ए०, एल्० टी०)

× × ×

६. हिंदी में नए जीवन-साहित्य की आवश्यकता

शृंगार और करुण, शांत और विरक्त साहित्य का ज़माना, बहुत दिन हुए, बीत गया। विलासी मुग़लों के दरबारों तथा उनके चपड़क़नाती हिंदू-नरेशों के शयनागारों में बैठकर चंचल कटाक्षों, उन्नत उरोजों, कदली-स्तंभ-विनिंदनी, मांसल, श्लक्ष्ण जंघाओं, कठिन, विकट नितंबों तथा विद्रुम-विद्रूपकारी बिंबाधरों और कामिनी के कमनीय कलेवरों के कामुक वर्णनों का चित्रण करनेवाले हमारे कविराजों तथा दुनिया से विरक्त होकर, मूड़ मुड़ाकर बाबाजी बन जाने का उपदेश देनेवाले हमारे भक्त कवियों का युग भी चला गया। चैन से चुपड़ी खाते थे वे। उनके ज़माने में बाप के देखते-देखते भूख से तड़पकर बूँद-भर दूध न मिलने से नन्हे बच्चे जान नहीं देते थे। दिन-भर मेहनत करके भी किसान भूखा नहीं सोता था। ग़रीब-से-ग़रीब रमणी भी लज्जा ढकने-भर को वस्त्र न मिलने से असूर्यंपश्या नहीं बनती थी। खाने और पहनने के लिये काफ़ी था। धर्म के लिये कभी-कभी पागल बादशाहों के इस्लामी जोश के सिवा दिन-रात हिंदू-मुस्लिम दंगों की बिभीषिका भी सामने न थी। हिंदू-संस्कृति और धर्म, हिंदी-भाषा और हिंदुत्व को जड़ से उखाड़ फेंकने का कोई संगठित प्रयत्न भी उस समय न था। इसीलिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चैन-चिकारे पर तान-तंबूरे की साज-सज्जा फबती थी, और नायिका-भेद, नख-शिख-वर्णन तथा वैराग्य-भक्ति के तराने गाए और सुने जाते थे। जीवन का जो कठिन संघर्ष आज हम दरिद्र, गुलाम हिंदोस्तानियों के सामने है, वह उस ज़माने में हमारे पुरखों के सामने न था। इसीलिये वे इन रसों का स्वाद ले-लेकर 'अमिय घूँट' पिया करते होंगे।

आज हमारे सामने रोटी का, वस्त्र का, स्वतंत्रता का, ऊँच-नीच का, पूँजी और परिश्रम का प्रश्न है। दिन-भर हम उसे ही सुलझाने में लगे रहते हैं। उस पर भी आज हमारे दीनदार पड़ोसी प्रतिदिन हमारी पसलियों में घूँसे मारकर विना बात हमें परेशान किया करते हैं। हम असहाय और कमज़ोर हिंदोस्तानी इस नीरस जीवन के दिन इसी तरह चुपके-चुपके, सब कुछ सहकर, पार करते हैं। दो सदियाँ हुईं ऐसा ही करते हमें। अब शायद हम दो-एक शताब्दि बाद श्मशान के भूत की तरह चुपचाप सब कुछ सहन करने के आदी हो जाना चाहते हैं। हमारा जीवन ही हमसे धीरे-धीरे खिसक रहा है। हमारा हाड़-मांस तो पहले ही जा चुका है, और ख़ून उससे भी पहले चूसा गया।

तब फिर हमारे कवियों और लेखकों को श्मशान के इन भावी भूतों के सामने नरलोक के केलि-कौतूहलों, हास-परिहासों और हाड़-मांस की शोभाओं का वर्णन रखने से क्या लाभ? भस्त्रा में साँस फूँककर उसे स्त्री-सौंदर्य की ओर आकर्षित करने चले हैं हमारे ये वीर। भला, पूछिए तो इनसे, भूखे, विवस्त्र और ग़ुलाम हिंदोस्तानियों को प्रेम, केलि और सुस्वादु भोजनों का संदेश देकर वे क्यों इनका परिहास करते हैं?

हमें नहीं चाहिए ऐसा साहित्य। ताक़ में रखिए अपनी स्त्रैण और शृंगारी रचनाएँ। गोमुखी में बंद कीजिए अपनी भक्ति और वैराग्य। बंद कीजिए अपने ये सुरीले, मोहक और मूर्च्छनामय, किंतु असामयिक तराने।

अब तो हमें आप दीजिए, यदि दे सकते हों तो, पौरुष और वीरत्व के गीत, युद्ध के मार्च और जीवन का संदेश, जिससे हमारी नसों के पल-प्रतिपल ठंडे पड़नेवाले रक्त में गर्मी आवे, और हम अत्याचार, अनाचार, गुंडेपन और अन्याय के विरुद्ध खड़े होना सीखें। हम एक दूसरे की सहायता करना, नियंत्रित होकर अपने नेता के पीछे चलना और सच्चे सिपाही की तरह अपने अधिकार के लिये मरना सीखें। वीर, रौद्र और भयानक रसों का आस्वादन हमें कराइए, जिससे हम तांडव-नृत्य के लिये तैयार हो सकें, और महादेव के गणों के समान 'प्रजा के कुशल मालिक' दक्षप्रजापति के इस सर्वग्रासी या सर्वाहुति यज्ञ का विध्वंस करके अभीष्ट-प्राप्ति का प्रयत्न कर सकें, और उस प्रयत्न के असफल होने की हालत में प्रलयकालीन तांडव का आरंभ कर सकें।

ज़नाने और केवल मनोविनोद-पूर्ण साहित्य की अभी फ़िलहाल हमें ज़रूरत नहीं।

सुधींद्र वर्मा (एम्० ए०, एल्-एल्० बी०)

भावनाओं का सागर मथकर उसकी प्रतिभा ने क्या दिया?—मानवता की सजीव, मर्मस्पर्शी, स्पष्ट और सारगर्भित कहानियों का संकलन! छप रहा है! शीघ्र प्रकाशित होगा!! सजिल्द १॥), सादी १)

अमृत

ले० 'अरुण' बी० ए० मैनेजर गंगा-ग्रंथागार, ३६, लाटूश रोड, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

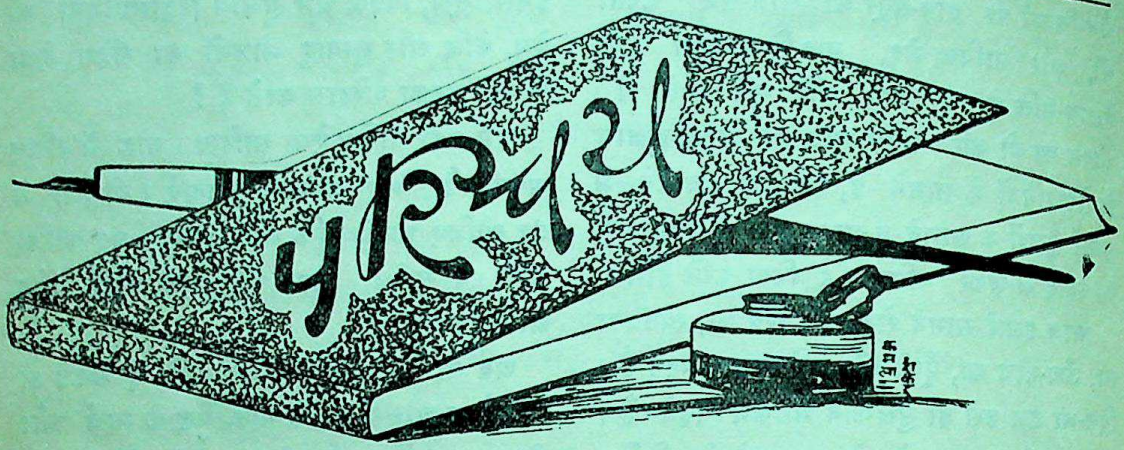

पृथ्वी का इतिहास—लेखक, श्रीसुरेंद्रदेवजी बालूपुरी; प्रकाशक, इंडियन-प्रेस प्रयाग; मूल्य ॥)

हिंदी-साहित्य के अनुरागियों के लिये सरस्वती-सीरीज़ का जन्म इंडियन-प्रेस की अभिनवता और विशेषता है। श्रीयुत दुलारेलालजी भार्गव ने अनेक सुंदर, साहित्यिक पुस्तकें हिंदी में सुलभ की हैं, और दो-दो सुंदर मासिक पत्रिकाओं को जन्म देकर एक नवीन क्षेत्र का निर्माण किया है, इसी तरह यह सीरीज़ भी अपनी विशेषता लिए हुए है।

'पृथ्वी के इतिहास' में, जो इस सीरीज़ की चौथी पुस्तक है, डार्विन के विकासवाद और मार्क्स के 'इतिहास में आर्थिक विवेचन' का आश्रय ग्रहण किया गया है, अतएव इस इतिहास का आधार आधुनिक दृष्टिकोण पर अवलंबित हो गया है। पृथ्वी के जन्म, विकास, समयादि का यदि पौराणिक आधार लिया जाता, तो शायद इस पुस्तक में भारतीय भावना को विशेष परिपोष मिलता, किंतु, जैसा कि लेखक महोदय ने स्वयं स्वीकार किया है, पृथ्वी का इतिहास लिख सकने-भर की तैयारी मेरी न होते हुए भी मैं इस पुस्तक का लेखक हूँ। इससे स्पष्ट है कि लेखक ने अपने को इस इतिहास के आलेखन में विशेष श्रम में नहीं डाला। जो पाश्चात्य दृष्टिकोण का साहित्य उपलब्ध है, उसी पर निर्भर रहकर एक छोटा-सा, किंतु सुंदर इतिहास उपस्थित कर दिया है। हमें पाश्चात्यों का इतना श्रेय मानना चाहिए कि उन्होंने इस प्रकार का समस्त साहित्य सुलभ कर दिया है, हमें अपने दृष्टिकोण से गहराई में जाने की उतनी ज़रूरत नहीं रही। वेल्स, नेहरूजी प्रभृति लेखकों की 'हिस्ट्री' से लेखक ने बहुत कुछ सहायता ली है। आरंभ में साधारणतः विवेचन वैज्ञानिक पद्धति से हुआ है, इसलिये भाषा में दुरूहता आ गई है, परंतु आगे भाषा सरल और सीधी-सादी है, पढ़ने में उपन्यास-जैसा आनंद आता है।

द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ प्रकरण में बृहत्तर भारत का परिचय है। परंतु लेखक महोदय यदि इस संबंध में गत दो-तीन वर्षों के मासिकों का ही उपयोग करते, तो सुमेरियन्, इजिप्शियन्, एसीरियन् सभ्यता के विषय में जो विभिन्न विचार इधर प्रकट हुए हैं, उनके आधार पर काफ़ी नवीनता का समावेश कर सकते थे। यहूदियों के प्राचीन इतिहास पर भी इधर नवीन प्रकाश डाला गया है। उनकी ६ हज़ार वर्ष पूर्व की सभ्यता पर भी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहूदियों के गत आंदोलन के अवसर पर चर्चा हुई है, और काफ़ी लिखा-पढ़ा गया है।

इतिहास का संक्षेप में दिग्दर्शन-मात्र होने से विषय का विस्तार तो नहीं हो सकता, परंतु कहीं-कहीं अस्पष्टता भी रह गई है। आठवें प्रकरण में (पृष्ठ ११७) मिहिरकुल और हूणों के अत्याचार का जहाँ वर्णन आया है। वहाँ यशोधर्मा के नेतृत्व में हूणों से मोर्चा लेना कहा गया है, परंतु यह नहीं बतलाया गया कि यह यशोधर्मा कहाँ का शासक था, और कहाँ जनता ने संगठन कर हूणों से मोर्चा लिया था। पाठक इस भ्रम में ही रहेंगे कि यशोधर्मा का शासन कहाँ था, और कहाँ से उसने हूणों के विरुद्ध लड़कर उन्हें हिमालय के पार भगाया! लेखक ने उसी युग के फ़ाहियान का ज़िक्र करके और कई विद्वानों तक का उल्लेख किया है, तब उक्त छोटी-सी बात का रहजाना ठीक नहीं हुआ। इसी प्रकार विक्रम और कालिदास पर भी भ्रम फैलने दिया गया है। कालिदास को लेखक ने 'उसी समय' कह-कर संभवतः पाँचवीं शताब्दि में मान लिया है। उन्हें चाहिए था कि वह अपने देश की इन महान् विभूतियों के विषय में कुछ जानकारी प्राप्त करके ही 'इतिहास'-जैसी पुस्तक में कुछ लिखने का कष्ट उठाते। भारतीय इतिहास में तो ऐसी कई छोटी-छोटी भूलें रह गई हैं। १२६ पृष्ठ पर "मालवा के राजा ने कन्नौज पर चढ़ाई कर दी" लिखा है, पर यह राजा कौन-सा था, इसका कहीं ज़िक्र नहीं। तथापि श्रीबालूपुरी ने यह सरल, सुंदर पुस्तक लिखने में श्रम उठाया है। और इससे पाठकों का अवश्य मनोरंजन होगा। लेखक महोदय यदि अगले संस्करण में भारतीय इतिहास का एक बार पुनः मार्जन कर लें, तो उत्तम होगा।

× × ×

आधुनिक जापान—लेखक, श्रीसुरेंद्रदेवजी बालू-पुरी; प्रकाशक, इंडियन-प्रेस, प्रयाग; मूल्य ॥)

आधुनिक जापान की चतुर्मुखी उन्नति का यह संक्षिप्त परिचय है। इसे लिखने में लेखक ने लगभग दो दर्जन पुस्तकों से सहायता ली है। पं० नेहरूजी ने अपने 'विश्व के इतिहास' में चीन-जापान के क्रमिक विकास पर अच्छा प्रकाश डाला है। लेखक महाशय उसी के आधार पर अपनी हिस्ट्री लिखते हैं, संक्षिप्तीकरण करते, तो शायद अपने राष्ट्रीय दृष्टिकोण से अधिक औचित्य पाते, तथापि अनेक विद्वानों की रचना के आधार पर यह पुस्तक भी जापानी प्रगति का सुंदर चित्र उपस्थित करती है। जापान की आधुनिक विचार-धारा, वहाँ की औद्योगिक एवं सामाजिक उन्नति का थोड़े में सरलता से विवरण पेश किया गया है, जो जापान के समझने में काफ़ी सहायक होता है। लेखक ने प्रामाणिक अंक देकर जापानी जीवन के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालने का प्रयत्न किया है। जापान का स्थान इस समय बहुत महत्त्व का है। समस्त एशिया उसकी गति-विधि पर ध्यान लगाए हुए है। अतएव इस पुस्तक की आवश्यकता थी। लेखक ने इसे सरल, रोचक भाषा में लिखा है। वह तथा इंडियन-प्रेस के स्वामी इसके लिये प्रशंसा के पात्र हैं।

'निष्पक्ष निरीक्षक'

× × ×

मृग-मरीचिका—लेखक, श्रीअखौरी गंगाप्रसाद-सिंह; प्रकाशक, हिंदी-साहित्य-समिति, बनारस; मूल्य १।)

इस उपन्यास का नायक है मृगांक और नायिका मरीचिका। मरीचिका का पति दिवाकर-नाथ है, पर वह मृगांक की ओर आकर्षित होती है, और वह उसे भगा ले जाता है। बाद में मरीचिका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसे घृणा की दृष्टि से देखने लगती है। वह उससे शादी करने को तैयार नहीं होती। मृगांक उससे कहता है—"तुम्हारे तेज-रूप ने मुझे इस तरह मुग्ध कर लिया है कि यह कलुषित शरीर मुझे कुछ दिनों के लिये चाहिए और चाहिए ही।" मरीचिका उसकी बेंत से ख़बर लेती है। मरीचिका के चरित्र-चित्रण में ही इस उपन्यास की परिसमाप्ति है। पुस्तक अच्छी और पढ़ने योग्य है।

'उमेश'

× × ×

हमारा देश—लेखक, श्रीयुत त्रिवेणीप्रसादजी; प्रकाशक, सरस्वती-प्रकाशन-मंदिर, आरा; पृष्ठ-संख्या ४०; कॉपी-साइज़; काग़ज़ अच्छा और मोटा; एकरंगे चित्र १६; मूल्य ।=)

प्रस्तुत पुस्तक बच्चों के लिये लिखी गई है। इसकी भाषा अत्यंत सरल और सरस है। शैली रुचि-पूर्ण और चित्ताकर्षक है। मेरा ६½ वर्ष का बच्चा इस पुस्तक को दो घंटे में पढ़ गया। इसी से इस बालोपयोगी पुस्तक का महत्त्व जाना जा सकता है। इसमें धर्म, इतिहास, भूगोल, समाज, देश, कला, कृषि तथा अर्थ-संबंधी विषयों पर प्रकाश डाला गया है। पुस्तक की विषय-सूची इस भाँति है—भार—तराजा भरत का देश; राजा भरत की कहानी; भारतकी आत्मा—वाल्मीकि, व्यास, बुद्ध, महावीर, शंकराचार्य, महात्मा गांधी; भारत—प्रकृति का लाड़ला देश; हमारी ग़ुलामी; आज़ादी के दीवाने—महाराणा प्रताप, शिवाजी, बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपतराय, बाबू राजेंद्रप्रसाद, पं० जवाहर-लाल नेहरू, पं० मदनमोहन, मालवीय, कुछ और लोग; भारत की कारीगरी—अजंता की चित्रकारी, आबू के मंदिर, ताजमहल, विक्टोरिया-मेमोरियल, लोहे का अद्भुत खंभा, चालीस हाथ ऊँची मूर्ति, एलोरा का मंदिर, कपड़े की बुनाई; आजकल के धंधे—कपड़ा, जूट, चीनी, लोहा, खान, खेती; ग़रीबों का देश—राजे-महाराजे, ज़मींदार, किसान, मज़दूर और अछूत। स्थानाभाव और बच्चों का ध्यान रखकर इससे अधिक और इससे अधिक सुंदर और लिखा ही क्या जा सकता था। दो-एक मामूली ग़लतियाँ हैं, जैसे पृष्ठ २५ की अंतिम पंक्ति में 'नुक़सानी'। संक्षेप में पुस्तक सर्वांग-सुंदर है। अनेक चित्रों ने ग्रंथ में और भी जान डाल दी है। मेरा विचार है, प्रत्येक बच्चे के लिये यह पुस्तक हितकर सिद्ध होगी।

(साहित्य-रत्न) लक्ष्मीनारायण टंडन 'प्रेमी'
(एम्० ए०)

× × ×

विरह-गान—लेखक, श्रीमहेशचंद्र सिंहल एम्० ए०; प्रकाशक, हिंदी-भवन, हॉस्पिटल-रोड, लाहौर; मूल्य ॥)

जैसा नाम से ही प्रकट है, यह पुस्तक महेश-चंद्रजी की दुःख-भरी कविताओं का संग्रह है, जिनमें उनके उर का क्रंदन और उनकी आत्मानुभूति उनके जीवन से गहरा संबंध दिखाती है।

अनुभूति का कल्पना से गहरा संबंध है, अतः कल्पना को हम किसी भाँति भी छोड़ नहीं सकते। कोरी अनुभूति या कोरी कल्पना के बल पर कविता करना धोखे की बात है। कल्पना अनुभूति के विना निस्सार है, और अनुभूति कल्पना के विना नीरस। जब तक दोनो का पूर्ण समन्वय न हो, तब तक कविता में माधुर्य नहीं आ सकता।

महेशजी की कविता में आत्मानुभूति की तीव्रता अधिक है, जिसके कारण चित्र कुछ खुरदरे-से दिखाई पड़ते हैं। तथ्यवाद की प्रबलता के कारण कविता कहीं-कहीं व्यंजना-रहित विवेचना-मात्र ही रह गई है, जो पाठक के हृदय के कोमलतम स्थल को नहीं छू पाती, और जिसमें कला की चतुर अभिव्यक्ति नहीं हो पाई है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कला का अभाव स्वयं कवि ने 'अपनी बात' में स्वीकार किया है—"कला की दृष्टि से मेरी रचनाएँ बहुत पीछे हैं। न मैंने इनमें बहुत परिश्रम किया है, और न प्रयत्न। इसलिये न इनमें चुने हुए शब्द हैं, न चुनी हुई कल्पनाएँ।"

हो गई भेंट चलते-चलते,
मिल गए नयन छिपते-छिपते;
मैं था सवार साईकिल पर,
वे आती थीं पैदल पथ पर;
अपनी आँखों को नीचा कर
दुनिया की आँखों से बचते।

अंतिम पंक्ति में 'बचते'-शब्द 'छिपते' और 'चलते' से तुक का मोह दिखाता है, किंतु ठीक नहीं बैठता। 'बचती'-शब्द उपयुक्त था।

शब्दों की तोड़-मरोड़ की पुरानी चाल और व्याकरण की अशुद्धि आजकल के कवि के लिये वांछनीय नहीं—

रहते हो इसी नगर में तुम,
पर पता नहीं मुझको मालुम।

'मालुम' में भी तुक के लिये शब्द के शुद्ध उच्चारण का बलिदान किया गया मालूम पड़ता है।

इस पुस्तक में संगृहीत कविताएँ छोटी-छोटी हैं। इसका कारण कवि महोदय यह देते हैं कि कविताओं के लंबे होने में विचार या बुद्धि की क्रिया का आश्रय लेना पड़ता है, और आवेग के स्थायी न होने के कारण उनमें कृत्रिमता आ जाती है। पहले तो आवेग को अस्थायी मानना संदेहास्पद है। प्रेम और विरह अस्थायी नहीं होते। इनमें भावों की नए-नए रूप में पुनरावृत्ति होती रहती है। भावों की पुनरावृत्ति कुशल कवि का ही काम है, इसलिये अगर नवीनता के साथ भावावृत्ति न हो सके, तो कविता का छोटा रहना ही श्रेयस्कर है।

विरह के ये गान चाहे कला की दृष्टि से छोटे बैठें, किंतु वास्तविक जीवन के साथ संबंधित होने के कारण उनमें विशेष बल है। यदि इनमें कल्पना का भी रंग होता, तो सोने और सुगंध की बात हो जाती।

× × ×

भ्रमर-गीत—श्रीस्वामी नंददासजी-कृत; संपादक, 'नाम-माहात्म्य'-संपादक श्रीदानविहारीलाल शर्मा; प्रकाशक, व्रजसाहित्य ग्रंथमाला, वृंदावन; मूल्य ⊃)

इस संस्करण में एक बहुत छोटी-सी भूमिका के साथ मूल का पाठ दिया हुआ है। भूमिका में नंददास को सोरों के निकट रामपुर का निवासी माना गया है, और शायद इसी के साथ लेखक महोदय इनको गोस्वामी तुलसीदास का भाई भी मनाते हैं, किंतु यह स्पष्ट नहीं किया गया। हिंदी-भाषा के एक अमूल्य रत्न को सस्ते मूल्य में प्रकाशित कर जन-सुलभ बनाने का श्रेय संपादक महोदय को अवश्य है, किंतु इसे यदि पाठांतर और पाद-टिप्पणी आदि से पूर्ण बनाते, तो जनता का अधिक उपकार होता।

× × ×

आशावती-उपाख्यान—मूल-लेखक, महात्मा विजयकृष्ण गोस्वामी; अनुवादक, श्रीमहेंद्रकुमार सरकार; प्रकाशक, श्रीमोतीलाल बनारसीदास, संस्कृत-हिंदी-पुस्तक-विक्रेता, लाहौर; मूल्य ॥)

इस पुस्तक में उपाख्यान के रूप में प्रेम-भक्ति का प्रतिपादन किया गया है। इसके मूल-रचयिता बड़े उच्च कोटि के साधक थे। वह ब्रह्म-समाज से लीलावतार भगवान् कृष्ण की शरण में गए थे। पुस्तक में एक सच्चे साधक का मानसिक उत्थान दिखाया गया है, और अंत में योग-तत्त्व का भी गूढ़ विवेचन है।

श्रीवृंदावन-धाम की मधुर लीला का आस्वादन भी पंचम पुरुषार्थ या प्रेम-भक्ति का सर्वप्रधान लक्ष्य है। भूमिका में भी योग्य लेखक ने इसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तत्त्व का प्रतिपादन किया है, किंतु यह पुस्तक उन्हीं के काम की है, जो इनमें विश्वास रखते हैं। आजकल के बुद्धिवाद के उपासक लोगों को इसकी बहुत-सी बातें विश्वास-योग्य प्रतीत नहीं होंगी।

× × ×

जन्म-भूमि—लेखक, श्रीछबीलदास 'मधुर'; प्रकाशक, श्रीछबीलदास रामदास सामंत, २४ चेवुल-बाड़ी, कालबादेवी-रोड, बंबई ; मूल्य १)

देश-भक्ति से तो आजकल का प्रायः सभी काव्य प्रभावित है, किंतु प्रस्तुत काव्य जननी-जन्म-भूमि की भक्ति को ही लक्ष्य करके लिखा गया है, और इसकी प्रायः सभी कविताएँ 'हे भूमे' से आरंभ होती हैं। इसमें देश के आंदोलनों और पंजाब के हत्याकांड-जैसी भीषण घटनाओं का उत्तम वर्णन है।

काव्य में जहाँ सीधा उपदेश और विवेचन आ जाता है, वहाँ उसके कवित्व में कुछ कमी दिखाई देती है, और यही बात इस पुस्तक के संबंध में भी है। काव्य में व्यंजित अर्थ का ही अधिक महत्त्व है।

इसमें भी व्यंजना से काम लेने के लिये प्रतीकों का प्रयोग किया गया है, किंतु अँगरेज़ों के लिये जो मेघ का प्रतीक रक्खा गया है, वह पूरे तौर से नहीं घटता। भूमि और मेघ का संघर्ष दिख-लाया गया है। तुलसीदासजी ने और अन्य हिंदी-कवियों ने मेघ का उपकारक रूप ही माना है। कहीं-कहीं मेघ के खोखलेपन को भी दिखाया है, जैसे 'रे रे चातक सावधानमनसा'वाले श्लोक में। हम मेघों के हटने की अभिलाषा नहीं कर सकते, वरन् मेघों के बरसने की। मेघ सफ़ेद होते अवश्य हैं, लेकिन अधिकतर श्याम ही होते हैं, इसीलिये इसके प्रतीक उपयुक्त नहीं कहे जा सकते, तो भी गांधीवाद का अच्छा दिग्दर्शन कराया गया है, जैसा नीचे के पद्य से प्रकट है—

धन हैं हिरण्यकशिपु,
प्रह्लाद होंगे हम ;
हैं ये शक्ति दिखा रहे, हम
इन्हें देंगे दिखा संयम।
देंगे ये यदि ठेल शैल पर से,
लेंगे व्यथा झेल ही ;
छोड़ेंगे न कदापि यज्ञ,
करना हो दार या जेल ही।

कहीं-कहीं इन्होंने युद्ध और संघर्ष का भी पक्ष लिया है, लेकिन धर्म-युद्ध को ही महत्ता दी है।

चिरंजीलाल 'एकाकी' (बी० ए०)

मोतियों के साथ तोलने-योग्य अनुपम पुस्तकें

रोशनाई का व्यापार ॥=), जोड़ने के सीमेंट ॥), स्वर्णकार-विद्या १=), अनुभूत मुलम्मासाज़ी १=), आचार शिक्षक =), कुबेर भंडार -), इँगलिश-स्वयंशिक्षक ॥=), नूतन तार-शिक्षक ॥=), मुनीमी का कोर्स १), प्रेम का मूल्य ।), सत्ययुग-मीमांसा अर्थात् चेतावनी-खंडन ।-)। कला-कौशल-संबंधी पुस्तकों का सूचीपत्र मँगाइए। प्रत्येक पुस्तक का डाक-ख़र्च ग्राहक के ज़िम्मे होगा।

चंद्र-कार्यालय, भिवानी (पंजाब)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैद्यों को अपने रोगियों पर लाभ उठाने का मौक़ा

संग्रहणी रिपु

शर्त बाँधकर, बाज़ी लगाकर, पुरानी-से-पुरानी असाध्य संग्रहणी को दूर करने में भगवती का वरदान है, यह कभी फ़ेल होनेवाली दवा नहीं, सभी प्रकार के स्वाभाववालों के लिये हितकर है, छोटे से बड़े, सभी खा सकते हैं। किसी भी पथ्य और अनुपान की इसमें विशेष ज़रूरत नहीं। सिर्फ़ प्रातः-सायं आध सेर धारोष्ण दुग्ध से, जिसमें मिश्री मिली हो, ले लें; बाद को भूख लगने पर यथा-रुचि भोजन करें। सिर्फ़ सात दिन में ही संग्रहणी का नामोनिशान मिटा देती है। यह पेट को साफ़ करके उसके विषैले माद्दे को निकालकर दस्त बंद करती है, और इसमें स्तंभक गुण न होकर सारक गुण होने से रोगी को कोई हानि नहीं होती। बिना किसी विचार के दी जा सकती है। कोई नशा भी इसमें नहीं, सिर्फ़ वानस्पतिक प्रयोग है। वैद्यों को बहुत लाभ पहुँचानेवाली है। वह शर्त लगाकर रोग भगाने में प्रसिद्ध हो सकते हैं। सात दिन की दवा का दाम २) है।

मँगाने का पता—

श्रीहरिहर-औषधालय

बरालोकपुर, इटावा (यू० पी०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवाहोत्सवों पर उन्हें भेंट दीजिए !!

वर-वधुओं का पथ-प्रदर्शन करनेवाला अमूल्य साहित्य !

१—दांपत्य जीवन

लेखक, श्रीरामनारायण 'यादवेंदु' बी० ए०, एल्-एल्० बी०। यह नवविवाहित दंपतियों को आनंद देनेवाली अद्वितीय पुस्तक है। इस ग्रंथ में विवाह के उपरांत के गहन प्रश्न—आलिंगन, चुंबन तथा सहवास आदि—पर बहुत ही मार्मिक एवं वैज्ञानिक विवेचन किया गया है। वैवाहिक जीवन को संसार में स्वर्ग बनानेवाली यह राष्ट्र-भाषा में केवल एक ही पुस्तक है। मूल्य सादी १), सजिल्द १॥)

२—काम-विज्ञान

रचयिता, उदीयमान लेखक पंडित दीनानाथ व्यास विशारद। इस विषय पर हिंदी-भाषा में इने-गिने ग्रंथ हैं, किंतु उनमें वैवाहिक समस्याओं को समझाने की चेष्टा तक नहीं की गई। वैवाहिक शिक्षण, विषय का नैतिक धरातल, वैषयिक उत्कंठा, दांपतिक साम्य, सच्चा वैवाहिक जीवन आदि इसकी प्रमुख विशेषताएँ हैं। मूल्य सादी १), सजिल्द १॥)

३—फूलों की सेज

लेखक, श्रीविजयबहादुरसिंह बी० ए०। इस अपूर्व पुस्तक में वयस्क युवक-युवतियों एवं नव-विवाहित वर-वधुओं के हित की बातों का बड़ा ही मार्मिक वर्णन हुआ है। इसके मुख्य-मुख्य विषय ये हैं—यौवन, स्त्री-पुरुष के कर्तव्य, स्तन, ऋतु-धर्म, शय्या, समागम, अप्राकृतिक गमन, ऋतु-बाधा, प्रदर, हिस्टीरिया, वीर्य और आर्तव, गर्भाधान, वंध्यात्व, गर्भावस्था-समय, गर्भ रहने के लक्षण, दौर्हृद, गर्भ-स्राव और गर्भ-प्रसव इत्यादि। पुस्तक तरुणियों के लिये जीवन-प्रदीप है। इसमें अश्लीलता, अभद्रता एवं कामासक्तता का लेश-मात्रा भी समावेश नहीं। मूल्य सादी २), सजिल्द २॥)

४—आदर्श पत्नी अर्थात् इंदिरा के पत्र

लेखक, श्रीरामनारायण 'यादवेंदु' बी० ए०, एल्-एल्० बी०। इस पुस्तक में नारी-हृदय और पुरुष-हृदय की ऐसी रहस्यमयी बातें बतलाई हैं कि जिनके समझे बिना दांपत्य विवाहित जीवन सुखी नहीं बन सकता। इसमें केवल-मात्र सिद्धांतों (Theories) का विवेचन नहीं है, प्रत्युत क्रियात्मक रूप से प्रत्येक विषय पर प्रकाश डाला गया है। पुस्तक सर्वथा शिष्ट, संयत और सुंदर भाषा में लिखी गई है। मूल्य १), सजिल्द १॥)

५—सुखी जीवन

लेखक, आचार्य श्रीचतुरसेन शास्त्री। प्रस्तुत पुस्तक में आचार्यजी ने अधिकार-पूर्ण सिद्धांतों का प्रतिपादन किया है। स्त्रियों का बचपन, उनका गार्हस्थ्य जीवन, उनकी तंदुरुस्ती आदि विषयों की जानकारी प्राप्त कर लेने पर स्त्रियाँ अपना जीवन निस्संदेह सुख-पूर्वक बिता सकती हैं। मूल्य सादी ॥), सजिल्द १)

मिलने का पता—गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वर्गीया 'चकोरी' जी की

अमर कृतियाँ

किंजल्क

[द्वितीयावृत्ति]

लेखिका, स्वर्गीया रामेश्वरीदेवी 'चकोरी'। हिंदी-साहित्य में वर्तमान काल में तीन ही सर्वश्रेष्ठ कवयित्रियाँ हैं—श्रीमती महादेवी वर्मा, श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान और 'चकोरी'-जी। 'चकोरी'जी ने अपना एक स्थान बना लिया है। किंजल्क में 'चकोरी'जी की सुंदर कविताओं का संग्रह है। सभी कविताएँ सरल और सरस हैं। काव्य की दृष्टि से पुस्तक सभी भाँति उपयोगी है। छपाई सुंदर। मूल्य ॥), सजिल्द १)

मकरंद

लेखिका, स्वर्गीया श्रीमती रामेश्वरीदेवी 'चकोरी'; संकलनकर्ता, श्रीयुत 'अरुण' बी० ए०। हिंदी-साहित्य में 'चकोरी'जी की रचनाओं को कितना उच्च स्थान मिला, इसे सभी काव्य-प्रेमी जानते हैं। इस प्रतिभाशालिनी कवयित्री की रचनाओं का यह दूसरा संग्रह 'किंजल्क' से भी बढ़कर लोक-प्रिय बनेगा। कविताएँ उपयोगी हैं। छपाई सुंदर। मूल्य सादी ॥=), सजिल्द १=)

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'अज्ञान के भूत' से डरकर आप भाग खड़े होते हैं! क्यों?

सत्साहित्य का पठन-पाठन

आपको मानसिक और आत्मिक बल तथा साहस प्रदान करता है!

आपका सबसे बड़ा अपराध है कि आप अपने को नहीं जानते, और न जानने का प्रयत्न ही करने की लालसा है।

विद्या और ज्ञान

मानव-जीवन के लिये आवश्यक है! आदि-सृष्टि के क्रमिक विकास का विवेचनात्मक विवरण, मनुष्य का सच्चा इतिहास, संसार के गूढ़तम निर्माण-रहस्य का प्रत्यक्षीकरण।

मनुष्य का विकास

जिसमें

हमारी ज़मीन पर सबसे पहले जानवर कैसे पैदा हुए? मनुष्य-जाति कैसे प्रकट हुई? क्या आदमी आसमान से बरस पड़े थे? या पाताल से निकल पड़े थे? इन सभी प्रश्नों का विस्तृत और प्रासंगिक उत्तर देनेवाली एकमात्र

पुस्तक

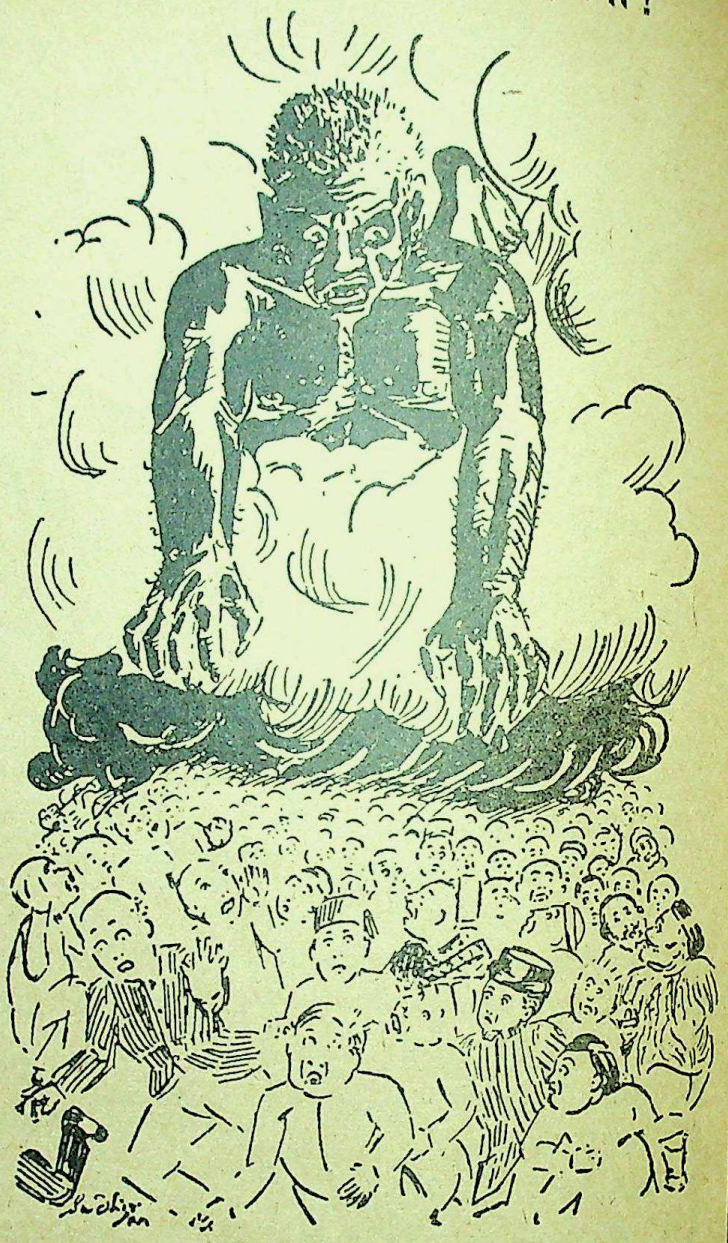

मनुष्य का विकास

{ लेखक, श्रीज्योतिलाल भार्गव बी० ए०, एल्-एल्० बी०, हिंदी-पब्लिसिटी ऑफ़िसर, बिहार-गवर्नमेंट } छपकर तैयार है! मँगाएँ!!

सजिल्द ॥=) सादी ।=)

अपनी संतान को इस ज्ञान से विमुख न रक्खें !!!

आज ही ऑर्डर भेजें

मिलने का पता—

गंगा-ग्रंथागार, ३६, लाटूश रोड, लखनऊ

गंगा पुस्तक माला कार्यालय लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस स्तंभ में हम हिंदी-प्रेमियों की जानकारी और सुबीते के लिये प्रतिमास नई-नई पुस्तकों के नाम देते हैं। पिछले महीने में निम्न-लिखित पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं --

(१) 'ममता' (सामाजिक उपन्यास)—लेखक, बाबू कमलाप्रसाद राय शर्मा बी० ए० ; मूल्य ।=)

(२) 'अन्याय' (सामाजिक उपन्यास)—लेखक, बाबू देवनारायण द्विवेदी ; मूल्य ।=)

(३) 'अशर्फ़ी का हार' (सामाजिक उपन्यास)—लेखक, बाबू देवनारायण द्विवेदी ; मूल्य ।=)

(४) 'अंतिम अभिलाषा' (सामाजिक उपन्यास)—लेखक, श्रीकृष्णचंद्र भट्ट ; मूल्य ।=)

(५) 'रहस्यमयी युवती' (जासूसी उपन्यास)—अनुवादक, बाबू परमानंद खत्री ; मूल्य ।=)

(६) 'जज का रहस्य' (जासूसी उपन्यास)—अनुवादक, बाबू परमानंद खत्री ; मूल्य ।=)

(७) 'दग़ाबाज़ दोस्त' (जासूसी उपन्यास)—अनुवादक, बाबू परमानंद खत्री ; मूल्य ।)

(८) 'सुंदरी सोफ़िया' (जासूसी उपन्यास)—अनुवादक, बाबू परमानंद खत्री ; मूल्य १)

(९) 'ख़ूनी आँख' (जासूसी उपन्यास)—अनुवादक, बाबू परमानंद खत्री ; मूल्य १)

(१०) 'क़ैदी का भेद' (जासूसी उपन्यास)—अनुवादक, बाबू परमानंद खत्री ; मूल्य १)

(११) 'दस गाँठों का भेद' (जासूसी उपन्यास)—अनुवादक, बाबू परमानंद खत्री ; मूल्य १)

(१२) 'शैतानी मंडल' (जासूसी उपन्यास)—अनुवादक, बाबू परमानंद खत्री ; मूल्य १)

(१३) 'शैतानी करामात' (जासूसी उपन्यास)—अनुवादक, बाबू परमानंद खत्री ; मूल्य १)

(१४) 'हत्या का रहस्य' (जासूसी उपन्यास)—अनुवादक, बाबू परमानंद खत्री ; मूल्य १)

(१५) 'पाक-विद्या' (पाक-शास्त्र)—लेखिका, श्रीकुमारी विद्योत्तमादेवी ; मूल्य ॥।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

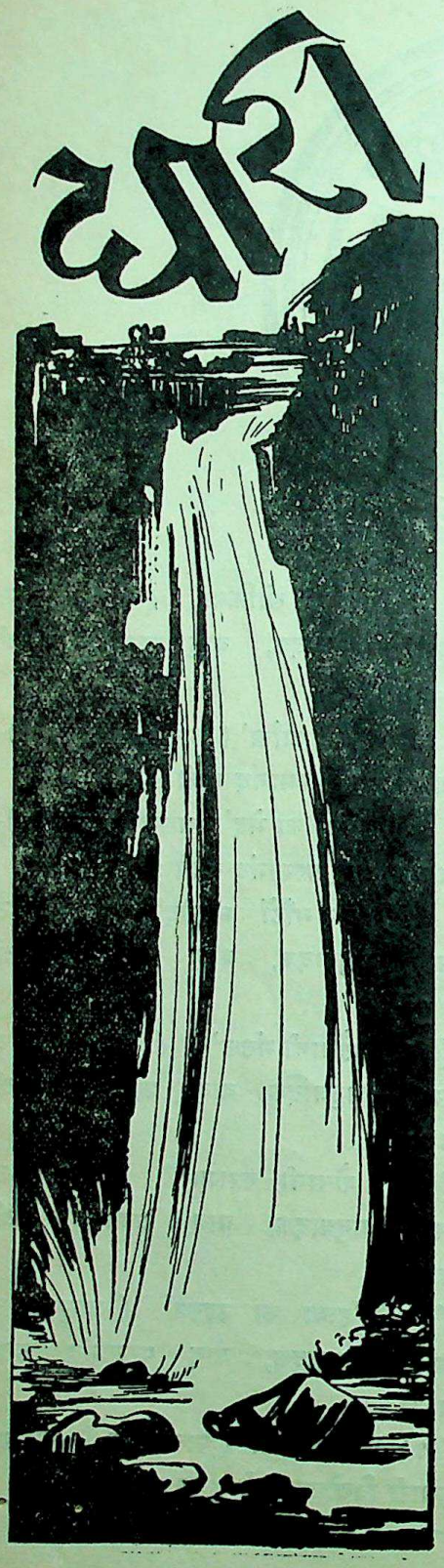

१. आगामी हिंदी-साहित्य-सम्मेलन

दी - साहित्य - सम्मेलन का जो अधिवेशन हैदराबाद में होने-वाला था, उस पर लगाई गई पाबंदी हटाने की बुद्धि-मत्ता हैदराबाद की निज़ाम-शाही सरकार ने नहीं दिखाई! हिंदीवालों ने भी केवल प्रस्ताव पास करके ही संतोष कर लिया, और मासिक पत्रों में भी कुछ ज़ोर की चर्चा न चली। इलाहाबाद से हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के कार्यवाहक सभापति श्रीअमर-नाथ झा ने सर अकबर हैदरी को जो पत्र लिखा

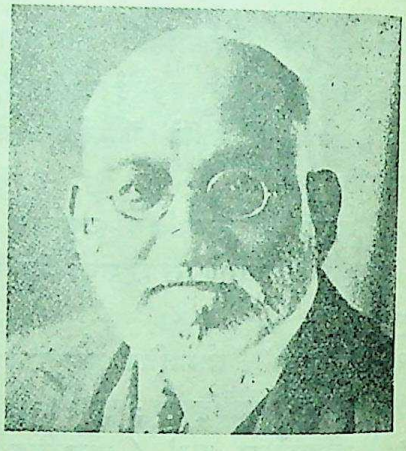

सर अकबर हैदरी
(जिन्होंने हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के हैदराबाद में होने की आज्ञा नहीं दी।)

था, उसके उत्तर में सर हैदरी ने लिखा कि उन्हें सम्मेलन के हैदराबाद में होने में आपत्ति नहीं है, कुछ विशेष कारणों से केवल इसी वर्ष वह इसकी आज्ञा नहीं दे सकते। यह बात अभी उस दिन, लखनऊ में, स्वयं श्रीअमरनाथ झा से, उनके सम्मान में की गई कवि-गोष्ठी में, मालूम हुई। सर हैदरी का पत्र गोपनीय है, इसलिये उन विशेष कारणों पर झा साहब ने प्रकाश नहीं डाला। अस्तु। हैदराबाद के भी किसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज़िम्मेदार व्यक्ति ने आज तक सम्मेलन की रोक को युक्ति-संगत बताने की चेष्टा नहीं की। परंतु अभी-अभी हैदराबाद के एक उर्दू-पत्र (पयाम) ने, अपने संपादकीय में, सम्मेलन न करने के कई कारण पेश किए हैं, जिनमें प्रमुख ये हैं—

१—हिंदी-प्रचार एक राजनीतिक कार्य है, जिसका हैदराबाद में न होना ही ठीक है।

२—हिंदी एक ग़ैर-मुल्की ज़बान है, जिसका हैदराबाद में प्रचार करने की आवश्यकता नहीं।

३—तेलुगी, मराठी, कनाडी, उर्दू, ये ही हैदराबाद की प्रमुख भाषाएँ हैं, और किसी भाषा से संख्या-वृद्धि न की जाय।

४—उर्दू ही राष्ट्र-भाषा के लिये उपयुक्त है, और पक्षपात से हिंदी राष्ट्र-भाषा मान ली गई है।

५—हिंदी विदेशी भाषा है, और उर्दू-हिंदी के विवाद से नागरिकता में कमी आती है।

इतने दिनों की चुप्पी के बाद 'पयाम' की संपादकीय पढ़कर हमें आश्चर्य नहीं हुआ, क्योंकि उस सचाई का, जो हिंदी के साथ है, विरोध करने के लिये तैयारी की भी तो बड़ी ज़रूरत थी। पर दुःख की बात है कि अब भी जो दलीलें दी गई हैं, वे किसी प्रकार भी न्याय्य या युक्ति-युक्त नहीं। आपका यह कहना कि हिंदी-प्रचार राजनीतिक है, प्रलाप है। और, यदि हम मान भी लें, तो किस भाषा का प्रचार राजनीतिक नहीं? जहाँ तक विचारों के व्यक्तीकरण के माध्यम का प्रश्न है, भाषा ही एकमात्र साधन है, और इस दशा में सभी भाषाओं के साहित्य में नवीन विचारों के समावेश के समय राजनीति की गंध आ ही जाती है। क्या उर्दू में नए-नए विभिन्न विषयों के ग्रंथों का अनुवाद नहीं होता होगा, और क्या जिन प्रमुख विचार धाराओं से विश्व-संघर्ष जीवित है, वे हैदराबाद की हवा में नहीं जी रही हैं?

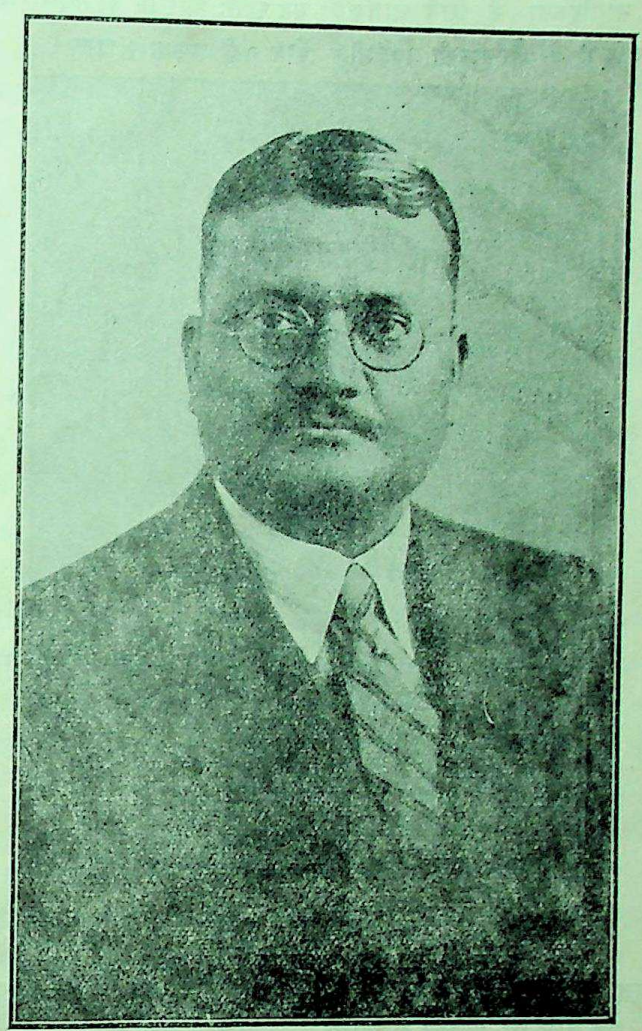

श्रीअमरनाथ झा एम० ए०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैदराबाद भारत की एक रियासत है, जिसमें ८५ प्रतिशत हिंदू रहते हैं, जिनकी घर-बाहर के व्यवहार की भाषा हिंदी है। उन हिंदुओं की भाषा को विदेशी भाषा कहकर हैदराबाद में उसका प्रचार रोकना और नागरिकता के लिये घातक बताना सरासर अन्याय है। ग़ैर-मुल्की, विदेशी आदि विशेषण देकर हिंदी का अपमान होने पर भी यदि हैदराबाद की सरकार चुप रहेगी, तो यह मौन उसकी प्रजा के कोमल हृदय को गहरी ठेस पहुँचाएगा।

हैदराबाद की मुख्य भाषाएँ ४ हों या और भी कम, पर हिंदी को हैदराबाद की मुख्य भाषा न मानना कहाँ तक ठीक है, इसे वहाँ के निवासियों से पूछना चाहिए। राष्ट्र-भाषा के पद पर हिंदी पक्षपात से बिठा दी गई है, तथा उर्दू की उपेक्षा हुई है, यह बात भी अज्ञान से ख़ाली नहीं। हम बार-बार इन बातों को दुहरा चुके हैं, और हमारे पाठक जानते हैं कि राष्ट्र-भाषा के लिये हिंदी ने भीख नहीं माँगी, न किसी का मुँह देखा। उसमें शक्ति है, सौंदर्य है, विस्तार है, जीवन है, प्रकाश है, बँगला, मराठी, गुजराती, पंजाबी, राजस्थानी, मैथिली, नैपाली आदि भाषाओं से निकटता है, लोगों ने झुककर प्रणाम किया, सिर आँखों पर उठाया, और कांग्रेस ने प्रेम और सम्मान से उसे यह पद दे डाला। न भी देती, तो वह स्वतः आसीन हो जाती और होगी, उसे कोई रोक नहीं सकता। अस्तु।

स्वर्गीय कवींद्र रवींद्र

सम्मेलन की स्थायी समिति के सामने इस समय आगामी साहित्य-सम्मेलन के स्थान के संबंध में चार प्रस्ताव हैं—(१) शोलापुर का, (२) अबोहर का, (३) अजमेर का, (४) लखनऊ का। सर हैदरी के विचार मालूम होने के बाद अब, हमारी राय में, शोलापुर में सम्मेलन करने की आवश्यकता नहीं रही। इस वर्ष लखनऊ में सम्मेलन कर दिया जाय, और आगामी वर्ष हैदराबाद में।

× × ×

२. कवींद्र रवींद्र का निधन!

कवि-सम्राट् श्रीरवींद्रनाथ ठाकुर की मृत्यु से आज समस्त संसार शोकातुर है। रवि के समान उनका प्रकाश संपूर्ण पृथ्वी-मंडल पर फैला था। गत ७ अगस्त को, पूर्णमासी के दिन, कवींद्र ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८१ वर्ष की उम्र में यह लोक त्यागकर हमें अनाथ बना दिया। इस महान् आत्मा ने सन् १८६१ ईस्वी में बंगाल के सुप्रसिद्ध ठाकुर-घराने में शरीर धारण किया था। आपकी शिक्षा-दीक्षा घर पर ही हुई थी। आपको स्वाध्याय और पृथ्वी-पर्यटन से विशेष प्रेम था। आप देश-विदेश, सभी स्थानों पर भ्रमण करते थे। सन् १६१३ ईस्वी में आपको संसार का सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार 'नोबल प्राइज़' प्राप्त हुआ था। आपकी प्रतिभा सर्वतोमुखी थी—उपन्यास, कहानी, निबंध आदि लिखने में आप उतने ही कुशल थे, जितने काव्य-कला में। आपके द्वारा स्थापित बोलपुर का शांति-निकेतन संसार के लिये वास्तव में शांति का स्थान, कला का स्रोत और विश्व-प्रेम का आगार है। वह कवींद्र रवींद्र की अमर कीर्ति का स्तंभ है। कवींद्र ने यद्यपि प्रत्यक्ष रूप से राजनीति में भाग नहीं लिया, परंतु उनकी वाणी, उनके भाव, उनकी विचार-धारा एवं उनकी प्रत्येक गति में राष्ट्र-प्रेम भरा हुआ था। महात्मा गांधी आपको 'गुरुदेव'-शब्द से पुकारते थे। आपके निधन पर पूज्य बापू तथा देश के धन्य नेताओं ने महान् शोक प्रकट किया। परमात्मा से प्रार्थना है, यह महान् आत्मा पुनः भारत में आकर हमारा उद्धार करे।

× × ×

३. अनुकरणीय सलाह

भारत के राष्ट्रीय आंदोलन की प्रगति का रोड़ा बनकर यदि कोई भावना आई है, तो वह है सांप्रदायिक भावना। इस भावना का सुरसा के मुख की भाँति दिन-प्रतिदिन बढ़ता रूप देखकर महात्मा गांधी भी यही कहते हैं कि यदि स्वराज्य की मंज़िल तय करनी है, स्वतंत्रता का लक्ष्य पाना है, तो यह हिंदू-मुसलिम-मतभेद दूर होना चाहिए। वह यह भी कहते हैं कि वास्तव में ब्रिटिश राज्य की सबसे बड़ी ख़ूबी, जिस पर वह जमा हुआ है, यही है कि यह विभेद फैलाने में वह सफलता प्राप्त कर गया। शायद इसीलिये किसी ने कहा था कि जब तक गवर्नमेंट हिंदू-मुसलमानों को आपस में लड़ाने में सफल होती रहेगी, तब तक ब्रिटिश सत्ता का तिल-भर भी हिलना असंभव है। साथ ही यह भी सत्य है कि मुसलमानों को उभाड़ने में गवर्नमेंट अधिक सफल हुई है। यही कारण है कि एक ही मा के बेटे में घर फोड़कर—दो टुकड़े करके—अलग-अलग जीना चाहते, और पाकिस्तान की मूर्खता-पूर्ण बातों पर विश्वास करते हैं।

लायलपुर की छात्र-कॉन्फ्रेंस में सर सिकंदर हयातख़ाँ ने उसके सभापति-पद से जो भाषण दिया है, वह किसी भी ऐसे मुसलमान नेता के लिये, जो घातक, सांप्रदायिक जोश से भरे भाषण देकर नवीन मुसलिम युवकों के मस्तिष्कों को विकृत किया करता है, अनुकरणीय है। विद्यार्थी यह समझते हैं कि पाकिस्तान भारतीय दिमाग़ की उपज है। लेकिन वस्तुतः ऐसा नहीं, और जैसा सर सिकंदर ने बताया है, इसकी जड़ सन् सत्तावन के विद्रोह में पड़ी थी, और हमारे मालिक ही इस बीज के बोनेवाले थे। जब उन्होंने देखा कि हिंदू-मुसलिम, दोनो एक हैं, दोनो में एक ही जोश है, भाई-भाई का-सा प्रेम है, तब वे घबराए, और सोचने लगे कि यदि यही हाल रहा, तो हम यहाँ ठहर ही न सकेंगे, और यह सोचकर ही उन्होंने हिंदू-हितों और मुसलिम-हितों की दुहाई दी। हिंदू-मुसलमान, दोनो की अलग-अलग राजनीतिक संस्थाएँ बनीं, पृथक् निर्वाचन की दूषित प्रणाली जारी की गई, और जब ये सारी बातें असफल रहीं, तब पाकिस्तान का स्वप्न दिखाकर मुसलमानों को बहकाने की कोशिश की गई। अस्तु।

विद्यार्थियों को राजनीति में सक्रिय भाग न लेने की सलाह और चरित्र-निर्माण और गंभीर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्ययन की ओर झुककर आत्मनिर्माण करने की प्रेरणा देना सर सिकंदर-जैसे व्यक्ति की महत्ता सिद्ध करता है। उन्होंने अन्य भारतीय विद्वानों की तरह भारत के इतिहास के अध्ययन और पठन-पाठन में जो सांप्रदायिक दुर्भावनाएँ हैं, उनकी कड़े शब्दों में निंदा की है, और विद्यार्थियों को बताया है कि इतिहास असांप्रदायिक ढंग से लिखे जाने चाहिए, और उनका अध्ययन केवल सांप्रदायिक रूप में ही न होना चाहिए। हम उनकी इस राय से सहमत हैं, और हमारा भी यह विश्वास है कि केवल अत्याचारों के बल पर ही औरंगज़ेब नहीं जीता था, और न उसमें सब बुराइयाँ ही थीं। कमज़ोरी प्रत्येक में होती है, और उसके बिना मनुष्य मनुष्य नहीं। होता यह है कि हमारी आँखों में वह ज्योति नहीं, जो मानव को भेदकर देख सके। भारत की सांप्रदायिक समस्या विकृत करने में यही बचपन के इतिहास की पढ़ाई हमेशा कार्य करती रही है, और जब तक ये इतिहास नहीं मिटते, यह भावना बढ़ती जायगी, कम न होगी। सर सिकंदर की यह सुंदर सलाह प्रत्येक विद्यार्थी के लिये जहाँ लाभप्रद है, वहाँ अपने को राष्ट्रीय समझकर सांप्रदायिक भावना फैलानेवाले मुसलमान भी इससे सबक़ सीख सकते हैं।

× × ×

४. रूस-जर्मन-युद्ध

क्रीट के पतन के बाद हमारा ही नहीं, बहुत-से व्यक्तियों का यह अनुमान था कि हिटलर अब पूर्व की ओर बढ़ेगा, या अपनी रक्त-पिपासा शांत करने के लिये आफ्रिका के युद्ध-क्षेत्रों को अपनाएगा। परंतु जब एकाएक कुछ दिन शांत रहने के बाद उसने रूस पर हमला कर दिया, और निरंतर भीतर बढ़ता चला जा रहा है, तब संसार की आँखें भय और आश्चर्य से भर गई हैं, और मुँह से सहसा यह निकल जाता है कि यह क्या हुआ? हिटलर ने योरप के छोटे-छोटे सभी राष्ट्रों को हड़प लिया, और अब यह चाहता है कि रूस को भी हथिया लिया जाय, और यदि पूरा रूस नहीं आता, तो कम-से-कम योरपीय भाग तो आ ही जाय। इसी उद्देश्य से अगस्त तक वह यूराल तक अपनी सेनाएँ भेजदेना चाहता है। लेकिन प्रश्न यह उठता है कि क्या हिटलर अपनी

हर हिटलर
(जर्मनी के सर्वेसर्वा)

आकांक्षा पूरी कर सकेगा? समाचार-पत्रों में, मोटे-मोटे शीर्षकों में, जर्मन-प्रगति की ख़बरें पढ़कर साधारण मस्तिष्क का व्यक्ति यही सोचता है कि इस प्रकार जर्मनी की रूस में प्रविष्ट होने की शक्ति से यह स्पष्ट है कि रूस को वह समाप्त कर देगा। यह बात तब और भी स्पष्ट होती है, जब उसकी भविष्य-वाणी की सार्थकता पिछली कार्य-वाहियों से अविश्वसनीय नहीं कही जा सकती।

पर क्या रूस—वह रूस, जहाँ किसान-मज़दूरों की एकता पर संसार की आदर्श राष्ट्र-व्यवस्था द्वारा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शासन हो रहा है—यह सब हो जाने देगा ? क्या उसकी जड़ें इतनी कमज़ोर हैं कि वह अपने को स्थिर भी न रख सके ? उसकी लाल सेना और वायुयान-भांडार क्या जर्मनी को खदेड़ने की शक्ति नहीं रखता ? क्या उसके मानवता-प्रेमी नागरिक विश्व की स्वतंत्रता पर होते कुठाराघात को रोकने की सफल चेष्टाएँ नहीं कर सकते ? ये कुछ प्रश्न हैं, जो जर्मनी की बढ़ती शक्ति की विशालता देखते हुए भी हमारे मस्तिष्क में उठते हैं।

रूस ने पिछले महायुद्ध में बुरी तरह अपने मित्रों को खुले दिल से सहयोग देकर स्वयं को मिटा लिया था। वहाँ बड़ा प्रयत्न हुआ कि मार्क्स और लेनिन की अमर तपस्या की सफलता द्वारा भूषित होनेवाली पवित्र भूमि पर शोषण की सत्ता क़ायम रहे, पर १६१६ के दो आक्रमण और १६२० के एक आक्रमण द्वारा भी ज़ारशाही का शासन पूँजीपति राष्ट्र क़ायम न करा सके, और वहाँ वह सरकार क़ायम हो गई, जिसकी शक्ति जनता की थी, जिसका राज्य कुछ शोषकों के लिये नहीं, बल्कि जनता-जनार्दन के लिये ही था। तब से वह अब तक अपनी शक्ति बढ़ाने का प्रयत्न कर रहा है। यद्यपि ऊपर से उससे मित्रता का ढोंग भी होता रहा है, पर राजनीति सिद्धांतों पर जीवित रहती है, सोशलिज़्म के उपासक रूस को हार्दिक सहयोग देनेवाला कोई नहीं मिल पाया। उसका कारण यही था कि रूस ने वह पथ पकड़ा, जो अन्य नहीं पकड़ सकते थे। वह एकाकी, शांत, मौन अपनी शक्ति के संवर्द्धन की चेष्टा में रत रहा, और अपने सिद्धांतों को क्रियात्मक रूप देने में ही लगा रहा। उसने अपने हृदय में एक सत्य की सफल स्थापना के अतिरिक्त कोई स्वप्न ही नहीं देखा, युद्ध की ओर से उसकी विरक्ति का यही कारण है। फ़िनलैंड में उसकी शक्ति का परिचय मिला, पर लोगों ने उसे कमज़ोर समझने की भूल की, और उसे अंदर से खोखला समझ लिया। वस्तुस्थिति यह है कि रूस की शक्ति का पता ही नहीं कि वह है कितनी। स्पेन-युद्ध के दिनों में जो सैन्य शक्ति की तालिका प्रकाशित हुई थी, उसमें रूस की हवाई सेना का प्रथम स्थान था। स्टेलिन ने भी कहा है, वर्तमान युद्ध के अनुभवों से लाभ उठाकर हमने लाल सेना

स्टैलिन
(रूस के सर्वेसर्वा)

को और संगठित कर लिया है, तथा नए शस्त्रास्त्र भी तैयार कर लिए हैं।

कुछ भी हो, युद्ध का रुख़ कुछ-कुछ भीषणता की ओर अग्रसर हो रहा है। रूस के पास शक्ति का अभाव नहीं, और उसके पास एक ही मोर्चा है, जब कि जर्मनी के चारो ओर हाथ हैं, और शक्ति बिखरी है। रूस का भविष्य स्पष्टतः उज्ज्वल प्रतीत होता है, यह कहने में हमें संकोच नहीं। पर जर्मनी की शक्ति और लड़ने का ढंग देखकर निर्णय देना कुछ कठिन अवश्य है।

× × ×

५. रूस और इँगलैंड की संधि

मि० चर्चिल ने अपने २२ जून के भाषण में, रेडियो से, रूस-जर्मन-युद्ध के आरंभ पर, जो घोषणा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की थी, उससे यह स्पष्ट था कि जो नाज़ीवाद से लड़ेगा, वह हमारा मित्र होगा, उसे हमारी सहायता मिलेगी, और जो हिटलर का साथ देगा, वह हमारा शत्रु होगा, और हमारी ओर से कुछ न पा सकेगा। इसलिये हमसे जो भी सहायता हो सकेगी, वह रूस और रूस की जनता को देने में कमी न करेंगे, और यही कारण है कि रूस में एक मिशन भी उसी समय भेज दिया गया। वह मिशन वहाँ तीन हफ़्ते तक प्रतीक्षा करता रहा, युद्ध की गति देखता रहा और अब मोशिए मालोटोव और सर स्टेफ़र्ड क्रिप्स के पारस्परिक हस्ताक्षरों से संधि-पत्र पर मुहर लगा दी गई। इसमें दो शर्तें हैं—(१) नाज़ी जर्मनी के विरुद्ध लड़ाई जारी रखने में दोनो देश एक दूसरे की भरसक सहायता करेंगे। (२) इस युद्ध के समय विना एक दूसरे के पूछे समझौते या अस्थायी संधि की बात भी दुश्मन से न करेंगे। इस संधि का सर्वत्र स्वागत हुआ। रूस के महकमा मालूमात के डिप्टी चीफ़ मौ० लोजोवस्की ने इसे अंतरराष्ट्रीय स्थिति में मौलिक परिवर्तन करनेवाली, महत्व-पूर्ण, ऐतिहासिक दस्तावेज़ कहा है। 'टाइम्स' ने सुदूर पूर्व की समस्याओं के स्थायित्व के लिये इसे स्वागत-नीय कहा है। 'डेली मेल' कहता है—"यह संधि दो साधन-संपन्न और योद्धा राष्ट्रों का वास्तविक मेल है।" 'डेली टेलीग्राफ़' की राय में यह "ब्रिटेन की शक्ति और रूस के साधनों का तब तक के लिये सम्मिश्रण है, जब तक नाज़ीवाद का नाश नहीं कर दिया जाता।" मांचेस्टर गार्जियन ने इसे 'सुदूर पूर्व की दृष्टि से सामयिक लाभ' कहा है, और 'शांति के दिनों में भी क़ायम रहनेवाली' बताया है। 'न्यूज़ क्रॉनिकल' ने हिटलर पर विजय पाने के लिये इसे 'शक्ति-संवर्द्धन का स्रोत' कहा है।

लेकिन, हम समझते हैं, यह ब्रिटिश पत्रों की राय और मौ० लोजोवस्की की धारणा किसी ठोस तथ्य पर आधारित नहीं। रूस-जर्मन-समझौते की कड़ियाँ टूटने की किसे आशा थी, और कौन जानता था, यह दृढ़ संबंध इतने क्षणिक परिवर्तन में सदा को बदल जायगा। यही क्यों, हम युद्ध के आरंभ से देख रहे हैं कि म्यूनिच के समझौते में रूस की उपेक्षा करके ब्रिटेन ने जर्मनी के चरणों पर ज़ेकोस्लेवाकिया की बलि चढ़ाई, और मौ० लिटविनाफ़ की यह शिकायत कि योरपियन राष्ट्रों ने नाज़ीवाद के विरुद्ध सोवियट रूस की चेतावनियों और अपीलों को ध्यान देने योग्य नहीं समझा, इस बात का प्रमाण है कि संधि में स्थायित्व कहाँ तक है। आगे भी उदाहरणों की कमी नहीं। हिटलर के डर से जो बलवान् राष्ट्र रूस की छत्रच्छाया में स्वेच्छा से गए थे, वे ही अब उसके दुश्मन हैं। रूमानिया भी जर्मनी की ओर से लड़ रहा है, तुर्की की ब्रिटेन की तरह ही जर्मनी के साथ संधि आशंका से ख़ाली नहीं कही जा सकती, और वह ख़िलाफ़ जाने में चूक नहीं सकता। इसलिये यह संधि ऐसी नहीं कही जा सकती कि कभी टूट ही न सके, और न यह परस्पर संदेह और अविश्वासों को दूर कर सकती है।

लेकिन यदि इस संधि का अर्थ नाज़ीवाद को मिटाना है, हमेशा के लिये इसे दफ़नाना है, तो अमेरिका और ब्रिटेन को मिलकर अपनी सारी शक्ति इधर लगानी चाहिए। और, जब हिटलर पश्चिमी मोर्चे से हटाकर पूर्व की ओर सारी शक्ति लगा रहा है, तो क्यों न फिर पश्चिम से हमला किया जाय। अब यह मौक़ा छोड़ने लायक़ नहीं, और मौ० लिटविनाफ़ के शब्दों में ज़रा-सी शक्ति से कार्य हो जायगा। पर शायद ब्रिटेन इसके लिये तैयार नहीं, और उसे पश्चिमी मोर्चे पर अपनी सेनाएँ भेजने में यह ख़तरा है कि वह अपनी रक्षा की तैयारियों में कमज़ोर हो जायगा। इँगलैंड को इस अवकाश के समय नाज़ी जर्मनी के विरुद्ध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यूह-रचना करके आगे क़दम बढ़ाने की आवश्यकता है। यदि अमेरिका और ब्रिटेन निर्भीकता से यह कर सकें, तो संधि का उद्देश्य सफल हो सकता है, और मानव-जाति को दुर्गति से बचाने का प्रयत्न भी किया जा सकता है।

× × ×

६. जापान की निराली नीति

जापान-सरकार के प्रधान मंत्री प्रिंस कौनोए ने १७ जुलाई को, पूरे एक वर्ष बाद, अपने मंत्रि-मंडल से इस्तीफ़ा दे दिया। प्रिंस कौनोए के मंत्रित्व में जापान ने विश्व के साथ अपनी सत्ता काफ़ी ऊँची स्थिति में पहुँचा दी, और जापान के सभी राजनीतिक दलों का एक राष्ट्रीय दल बनाकर राष्ट्रीय सेवा-संघ की स्थापना करना, त्रिराष्ट्र-संधि पर हस्ताक्षर करना, नानकिन में चीन के लिये नई सरकार क़ायम करना, सोवियट रूस के साथ अनाक्रमण-संधि करना आदि उसके कार्य महत्त्व से ख़ाली नहीं। फिर भी जापानी मंत्रि-मंडल ने इस्तीफ़ा देकर नया मंत्रिमंडल बनाया है, और वह भी प्रिंस कौनोए की ही प्रधानता में। इसे लोग रहस्यमय समझते हैं, पर रहस्य की बात नहीं। संसार की जीवित शक्तियों में जापान से अधिक तीव्र, तीक्ष्ण दृष्टिवाला राष्ट्र कोई नहीं। उसने कभी किसी अन्य राष्ट्र के स्वार्थों को दृष्टि में रखकर सुदूर पूर्व की ओर नहीं देखा। वह तो केवल जापानी हित का ही ख़याल रखता है, और उसे भुलाना उसके लिये असंभव है। यही वजह है कि जापान अपने ध्येय पर बढ़ता चला जा रहा है, और प्रिंस कौनोए के नए मंत्रिमंडल पर, जो तीव्र मतभेदों के कारण सुधरे रूप में बना है, संतोष प्रकट किया जा रहा है, तथा नीति की पूर्व-परिपाटी उसके द्वारा क़ायम रहेगी, यह आशा की जा रही है।

जापान ऐसा क्यों सोचता है? क्यों वह स्वतंत्रता से अपने ही ध्येय पर बढ़ना चाहता है? इसका एकमात्र कारण है वह 'नूतन व्यवस्था', जिसे जापान सुदूर पूर्व में क़ायम करना चाहता है। वह चाहता है, एशिया में योरपियन राष्ट्रों का कोई स्थान न रहे, और उनका प्रभाव सदा के लिये हट जाय। इसीलिये अपनी शक्ति भी वह इतनी बढ़ाना चाहता है कि अन्य राष्ट्रों का मुक़ाबिला कर सके। उसका प्रधान उद्देश्य है, एशिया में जापान—एकमात्र जापान—का आधिपत्य हो, उसके बाज़ारों में जापान के बने माल की खपत हो। पूँजी जापान की लगे, उद्योग-धंधों का विकास उसकी मदद से हो। इसीलिये प्रिंस कौनोए ने जापानी जनता से कहा था कि अन्य देश क्या करते हैं, इसका ख़याल न करते हुए जापान अपने निश्चित मार्ग पर बढ़ रहा है, और उसका अपने स्रोतों पर विश्वास है। वैदेशिक मंत्री मि० मत्सुओका ने रूस-जर्मन-युद्ध पर कूटनीति-पूर्ण विचार व्यक्त किए हैं, और अपने को उससे बँधा पाया है।

रूस की चीन के साथ जो नीति है, वह किसी क़दर भी वांछनीय समझना जापान के लिये असंभव है, और जहाँ रूस-जापान-पैक्ट हुआ है, वहाँ उससे, पूर्ववत्, आंतरिक दुश्मनी बनी है, मित्रता का कोई लक्षण ही नहीं। वैसे भी चीनी कम्युनिस्ट जापान के विरोधी रहे हैं। साथ ही चीन को रूस से मिलनेवाली मदद भी लगातार मिलती जा रही है। यही रूस की मदद चीन-जापान-युद्ध को समाप्त नहीं होने देती, और जापान आगे नहीं बढ़ पाता।

पूर्व में शक्तिशाली होने के लिये ही जापान चाहता है कि साइबेरिया पर क़ब्ज़ा हो जाय, पर लाल सेना उसके मनसूबे पूरे नहीं होने देती। जब से जापान ने अलास्का के साइबेरियन प्रदेश पर अमेरिकन हवाई अड्डों की बात सुनी, तब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से जापान और भी चिंतित है, क्योंकि ऐसा होने पर उसका अस्तित्व अमेरिका के कारण ख़तरे में पड़ जायगा। ब्रिटेन की संधि के बाद अमेरिका और रूस का मिलना और भी आशंका-पूर्ण है। यही कारण है, वह पूर्वी साइबेरिया का स्वास्थ्यप्रद, प्रकृति-सामग्री से पूर्ण, मोर्चे के उपयुक्त प्रदेश चाहता है।

पर इसे रूस से विना छीने वह पा नहीं सकता, और रूस उसे देने भी नहीं जा रहा। तभी तो वर्तमान मंत्रिमंडल की स्थापना हुई है, क्योंकि रूस-जर्मन-युद्ध पर पहले मंत्रिमंडल में तीव्र असंतोष था। आगे क्या होगा, हम नहीं कह सकते। पर जापान रूस की ओर आँखें लगाए है, और अपनी महत्त्वाकांक्षा पूरी करने के लिये अवसर की बाट देख रहा है।

× × ×

७. अखंड भारतका मोर्चा

अहिंसा द्वारा आत्मरक्षा की अशक्तता पर टिप्पणी करते हुए कांग्रेस के एकमात्र तीव्र गति और तरल वेग के धनी नेता श्रीयुत कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी ने कांग्रेस से इस्तीफ़ा दे दिया। इस्तीफ़ा देते समय उन्होंने जिस ईमानदारी और सचाई का सबूत अपने स्पष्टीकरण में दिया, वह उनके व्यक्तित्व के अनुकूल है, और हमारी समझ में इससे ज़्यादा साफ़ वक्तव्य नहीं हो सकता था। प्रो० इंद्र ने भी अहिंसा की नीति से विरोध प्रकट करते हुए अपना संपर्क हटा लिया। संभव है, और भी बहुत-से व्यक्ति ऐसे निकल आवें, जो मि० मुंशी के क़दम-ब-क़दम आगे बढ़ें, और कांग्रेस से एकदम संबंध-विच्छेद कर लें। लेकिन प्रश्न यह है कि क्या इस प्रकार का व्यवहार इस समय ठीक है? हम यह मानते हैं कि महात्मा गांधी की अहिंसा का पालन करना और उनकी शांति-सेना का सिपाही बनकर, अपनी जान हथेली पर रखकर दंगाइयों को रोकना या अवसर पड़े, तो शहीद हो जाना मुश्किल काम है, परंतु कांग्रेस के सत्याग्रह-आंदोलन के इस अवसर पर जब उसके विश्वस्त व्यक्ति ही कांग्रेस से अपना हाथ खींच लें, तो यह कांग्रेस का ही दुर्भाग्य नहीं, हमारे राजनीतिक आंदोलन और संघर्ष के क्षणों का भी दुर्भाग्य है।

मदनमंजरी

ये गोलियाँ क़ब्ज़ियत, सुस्ती, स्वप्नदोष, धातुक्षीणता, कमज़ोरी व धातु-विकार से होनेवाले रोगों को दूर करके बल व वीर्य को बढ़ाकर नया जीवन देती हैं। क़ी० ४० गोलियों की डि० रु० १) एक

पागलवटी

अनिद्रा, चित्तभ्रम, विचार-वायु, उन्माद और हर प्रकार के पागलपन की शर्तिया दवा। फ़ी डि० रु० ३)

गर्भामृतवटी

प्रदर, पेड़ू तथा कमर का दर्द, प्रसूती रोग, वंध्यात्व, गर्भाशय की सूजन आदि स्त्रियों के तमाम रोगों की परीक्षित, विश्वसनीय ओषधि। फ़ी डि० रु० २)

वैद्यविद्या-पुस्तक बिलकुल मुफ़्त मँगाकर पढ़िए।

मदनमंजरी - फ़ार्मेसी, जामनगर
(काठियावाड़)

लखनऊ के एजंट व स्टोकिस्ट्स — निगम मेडिकल हाल, फ़तेगंज; कौशिक आयुर्वेदिक फ़ार्मेसी, श्रीरामरोड; किंग मेडिकल हाल, अमीनाबाद रोड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिन व्यक्तियों का अहिंसा में विश्वास नहीं, वे भी कांग्रेस के कार्यकर्ता हैं, और आगे भी रहेंगे। उन सबमें महात्माजी के इच्छानुकूल अहिंसा-भावना की स्थापना असंभव है। पर जैसे आज तक वे कार्य करते चले आ रहे हैं, वैसे ही करते चले जाना कहीं अधिक उचित प्रतीत होता है, क्योंकि यह समय इस प्रकार के सैद्धांतिक मत-भेदों के प्रदर्शन का नहीं। महात्माजी ने यद्यपि बार-बार कहा है कि मेरे साथ अगर एक भी सिपाही रहेगा, एक भी अहिंसा का माननेवाला मेरे साथ चलेगा, तो मैं अपने ध्येय का अनुष्ठान पूर्ण करने का प्रयत्न करता रहूँगा। साथ ही वह यह भी चाहते हैं कि केवल मुझे ख़ुश करने के लिये ही यह कार्य नहीं होना चाहिए कि कांग्रेस के प्लेटफ़ॉर्म से अहिंसक राननीति पर भाषण दिया जाय। वह तो मनसा, वाचा, कर्मणा अहिंसा का

युद्ध के लड़खड़ाते हुए ज़माने में आपकी सबसे बड़ी ज़रूरत

ताक़त, ताज़गी और जीवन में स्थायी आनंद-प्राप्ति के लिये आपको उद्योग करना ही चाहिए। यदि आप इस ओर से उदासीन हैं, तब आपका मनुष्य होना कोई अर्थ नहीं रखता।

आज दुनिया क्रांति की ओर बढ़ रही है। तोपों की गड़गड़ाहट और मशीन-गन की गोलियों के बीच निर्बल रहकर आप कुछ भी न कर सकेंगे। इसलिये—

आपके लिये यह परमावश्यक है कि आप शक्तिशाली बनें, और आनेवाले ज़माने में जिस शक्ति की मानवता को ज़रूरत होगी, उसमें आप ज़ोरदार योग दे सकें।

स्वप्नदोष, प्रमेह, शीघ्रपतन और धातुक्षीणता आदि ऐसे रोग हैं, जो मनुष्य का जीवन नष्ट कर देते हैं। यदि आप इनमें से किसी भी रोग से पीड़ित हैं, तो आपके सामने जीवन का सबसे बड़ा ख़तरा है। आपको स्वास्थ्य लाभ करना सबसे पहला कर्तव्य समझना चाहिए। जब आप स्वस्थ हो जायँगे, तभी आपको काम करने की शक्ति मिलेगी—और इस युग में शक्तिशाली होना ही चाहिए।

और स्वास्थ्य के लिये, आज के इन्क़लाबी ज़माने में, सभी को संसार-प्रसिद्धि ओषधि का सेवन करना चाहिए।

कामिनी-विलास-वटी

डाक-व्यय-सहित मूल्य २॥) मात्र बड़ा सूचीपत्र और कलेंडर मुफ़्त

पता—श्रीमहावीर-रिलीफ़-सोसाइटी, इटावा (यू० पी०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रचार चाहते हैं। वह कहते हैं, यदि कांग्रेस के ध्येय की पूर्ति का सवाल है, तो उसके लिये शुरू से अख़ीर तक सार्वभौमिकता, सर्वव्यापकता के रूप में अहिंसा की सत्ता माननी पड़ेगी, और जब तक यह नहीं होता, स्वराज्य दूर होता चला जायगा। उनकी यह वाणी ग़लत या अदूरदर्शिता की नहीं। हम देख रहे हैं कि उनके साथी, सच्चे साथी कम हैं, और हमें यह भय है कि कहीं एक दिन गांधीजी अकेले ही न रह जायँ। यदि ऐसा हो गया, तो क्या हम यह समझें कि अहिंसा हमारे काम की बिलकुल नहीं। कुछ भी हो, कांग्रेस की नीति और गति में नैतिकता का अतिरेक उसकी शिथिलता का कुछ हद तक उत्तरदायी अवश्य है।

परंतु उससे मतभेद रखनेवालों को भी कुछ अपनी ज़िम्मेदारी अनुभव करनी चाहिए। उससे अलग होकर एकदम अपनी नई योजना जनता के सम्मुख रखना ठीक नहीं। मि० मुंशी को चाहिए तो यह था कि वह अपने विचारों के अनुकूल ही कार्य शुरू कर देते। वैसे गुंडेशाही के विरोध के लिये महात्माजी ने शायद एक नहीं, हज़ार बार कायरता की निंदा की है, और स्पष्ट रूप से हिंसा का समर्थन नहीं, तो दृढ़ता के लिये उनके शब्दों में एक शक्तिशाली अपील ज़रूर है। मि० मुंशी यदि कांग्रेस में रहते हुए ही अपने विचारों के अनुकूल कार्य शुरू करते और महात्माजी की शांति-सेना के एक प्रमुख नेता के रूप में शांति-संघ का

भारत-सरकार से रजिस्टर्ड

ताक़त की मशहूर दवा

कैलास-वीर्य-वज्र-चूर्ण

कैसा ही वीर्य पानी के समान क्यों न निकल जाता हो, केवल ७ दिन में १४ ख़राक से वीर्य का निकलना, स्वप्नदोष, शीघ्रपतन और नामर्दी को दूर कर मनुष्य को पुरुषार्थी बना देता है। मूल्य २); लाभ न हो, तो दाम वापस।

कैलास-तिला—यह तिला अपना सानी नहीं रखता। इसके इस्तेमाल से न छाले पड़ते हैं, न कोई तकलीफ़ होती है। इंद्रिय की प्रत्येक कमज़ोरी को दूर करता है। मूल्य २), डाक-व्यय अलग। फ़ायदा न होने पर दाम वापस।

कैलास-प्रदर-निवारण-चूर्ण

यह दवा स्त्रियों के प्रदर के लिये अचूक है। बदबूदार पानी का निकलना, हथेली की जलन, हाथ-पैरों का ऐंठना, झुनझुनाहट, कमर तथा पिंडली में दर्द, सिर में हमेशा दर्द का रहना, मुँह का सूखना, प्यास का लगना, ये कुल बीमारियाँ इस दवा से शीघ्र ही आराम होती हैं। धब्बा पड़ना, कमर तथा पिंडली के दर्द को केवल तीन ही दिन में आराम करता है, और सात दिन में जड़ से खो देता है। मूल्य एक डिब्बा २); डाक-व्यय पृथक्।

पता—कैलास ऐंड कंपनी, सेंट्रल धर्मशाला, कानपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्य आगे बढ़ाते और उस समय आवश्यकता होती, तो स्वतः नहीं, पर महात्माजी के कहने से कांग्रेस से अलग हो जाते, तो उनका यह कार्य अधिक उपयुक्त होता। हम यह जानते हैं कि महात्माजी, जहाँ तक स्पष्टवादिता का सवाल है, सचाई और ईमानदारी को ख़ुशामद से अधिक पसंद करते हैं, और इसीलिये अहिंसा से विरोध रखने के कारण मि० मुंशी की विचार-धारा पर उन्होंने कोई खेद प्रकट नहीं किया, और उनके त्याग-पत्र को विचारों की सचाई के दर्पण में देखकर स्वीकार कर लिया। लेकिन कांग्रेस के कार्य का जहाँ प्रश्न आता है, वहाँ महात्माजी बाहर से चाहे यह कहें कि कोई हानि नहीं, पर धक्का ज़रूर लगता है, और उस धक्के को साधारण जनता के साथ कार्य करने वाले अधिक महसूस करते हैं।

वास्तव में देखा जाय, तो अखंड भारत के मोर्चे के लिये मि० मुंशी को आह्वान करने की आवश्यकता ही न थी, क्योंकि यदि वैसा मोर्चा संभव होता, तो सांप्रदायिकता की दिन-दिन चौड़ी होती खाई में आज हमारी स्वराज्य की नाव डगमगाती न रहती, हमारी आशाएँ किनारे पहुँचकर भी यों निराशा में परिणत होती दिखाई न देतीं। अखंड भारत के मोर्चे के लिये शायद कांग्रेस से उपयुक्त और कोई चीज़ खड़ी हो सकेगी, यह भी संदेह की बात है। मि० मुंशी और इंद्र के त्याग-पत्रों के कारण बहुत-से लोग कांग्रेस की नीति से असंतोष प्रकट करते

आयुर्वेद की परीक्षा देनेवालों के लिये

खुशख़बरी !

चिकित्सा-चंद्रोदय

आयुर्वेद-विद्यापीठ की उत्तमा परीक्षा में शामिल।

(पहला भाग)

इस ग्रंथ के प्रथम भाग को ही पढ़ने से आचार्य-परीक्षा तक में आसानी। परीक्षार्थी इसे ही मँगाकर पढ़ें।

मूल्य ३), डाक-खर्च ।।।=)

पता—हरिदास एंड कंपनी, मथुरा

नोट—याद रक्खो, चिकित्सा-चंद्रोदय ७ भाग पढ़कर अनेकों परीक्षार्थी आयुर्वेदाचार्य-परीक्षा में संस्कृतवालों से अच्छे रहे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतीत होते हैं, पर ऐसा कोई कारण हमें प्रतीत नहीं होता। सेनापति यदि हमारी सेना के पथ-प्रदर्शन में अपने मस्तिष्क की धारणाओं और नैतिक मान्यताओं को खोकर केवल अपने कुछ सिपाहियों की आकांक्षा का ही ध्यान रक्खे, तो यह बात ठीक नहीं। इसका अर्थ यह नहीं कि सिपाही या सेना की एक इकाई का कोई अर्थ नहीं, कोई महत्त्व नहीं—उसके विना तो सेना पूरी ही नहीं हो सकती। परंतु कांग्रेस के साथ ध्येय के रूप में अहिंसा की जो व्यापक प्रवृत्ति है, उसे खोकर कांग्रेस दुनिया की नज़रों में कुछ नहीं रह सकती और महात्माजी की इतने जीवन की तपस्या भी व्यर्थ चली जायगी।

वैसे हम मि० मुंशी की नेकनीयती या तपस्या में संदेह नहीं करते, हम उनके व्यक्तित्व का आदर करते हैं, उनकी प्रतिभा, कार्य-शक्ति और निरंतर लगन और धैर्य से प्रभावित हैं, और हमीं क्या, सारा देश उनके कार्य का ऋणी रहेगा। पर कांग्रेस से उन-जैसे व्यक्ति का अलग होना कांग्रेस के लिये ठीक नहीं, और अखंड भारत के मोर्चे के लिये उनका प्रयत्न और भी शक्ति का अपव्यय है।

× × ×

८. प्रौढ़ स्त्रियों की शिक्षा

प्रौढ़-शिक्षा-संबंधी योजना का कार्य बढ़ता जा रहा है, और उस ओर बड़ी तीव्रता से प्रगति हो रही है, परंतु केवल पुरुषों की ओर अधिक ध्यान देना, हमारी राय में, प्रौढ़-शिक्षा की सफलता में पूर्णता न ला सकेगा। स्त्री-पुरुष से मिलकर ही समाज की गाड़ी चलती है, और दोनो पहियों का एक साथ रहना ही गति दे सकता है, इसलिये यह बहुत आवश्यक हो जाता है कि हम प्रौढ़ स्त्रियों की शिक्षा की ओर ध्यान दें। पुरुषों को पढ़ाने के लिये जैसे स्कूल हैं, वैसे ही स्त्रियों के लिये भी होने चाहिए। यदि पुरुष बाहरी कामों में अपनी साक्षरता का उपयोग करता है, तो स्त्री को घर में उसकी ज़रूरत है। शिक्षा के विना मनुष्य की उपमा पशु से दी गई है, और संस्कृत व्यक्तियों के समाज में उसे बैठने का अधिकार भी नहीं दिया गया। तब गार्हस्थिक समस्याओं की एकमात्र कर्णधार स्त्री को भी शिक्षित बनाना हमारा प्रधान कर्तव्य है। हमें इस ओर उसी प्रकार शीघ्रता से ध्यान देना चाहिए, जिस प्रकार पुरुषों को पढ़ाने के लिये हम ध्यान दे रहे हैं। लेकिन उनकी पढ़ाई की व्यवस्था में कुछ अंतर होगा। उन्हें गार्हस्थिक जीवन की शिक्षा ही प्रधानतया देनी होगी। केवल अक्षर-ज्ञान से बेचारी अपना समय ही ख़राब करेंगी। नहीं, उन्हें रहने, गृह-प्रबंध करने, बच्चों के

अपनी सखी की
फ़ैंसी और नए डिज़ाइन की चूड़ियाँ देखकर आप चकित क्यों हैं ?
कृष्ण चूड़ी-भंडार
७, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ
में आइए। हम आपको उससे भी बढ़िया हर तरह की चूड़ियाँ दिखावेंगे। हमारी चीज़ों के नमूने देखकर आपकी प्रसन्नता का ठिकाना न रहेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पालने, भोजन-संबंधी व्यवस्था करने आदि की शिक्षा देनी होगी। इसका अर्थ यह नहीं कि अक्षर-ज्ञान को कोई स्थान ही नहीं। है, और उसके महत्त्व को हम भुला नहीं सकते। पर विशेष ज़ोर इसी बात पर हो कि उनके क्षेत्र के अनुकूल ही उन्हें शिक्षा दी जाय।

हम प्रांतीय सरकार से अनुरोध करते हैं कि इस ओर ध्यान दे, और प्रौढ़ स्त्रियों की शिक्षा के लिये शीघ्र व्यवस्था करे।

× × ×

६. हमारा ध्येय

अभी हाल में ही कुछ अँगरेज़ औरतों ने, जिनमें अधिकांश मानवता के प्रति अपार श्रद्धा और विश्वास के भावों से भरी हैं, एक मार्मिक अपील भारतीय महिलाओं के नाम की थी। उस अपील में उन्होंने अपनी युद्ध-जनित कठिनाइयों और परेशानियों का वर्णन करते हुए भारतीय महिलाओं से सहानुभूति-पूर्ण उत्तर की आशा की है। श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित ने उस अपील का जो उत्तर दिया है, वह इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि आज भारतीयों की आत्मा अपने स्वयंभू स्वामियों की निरंतर होती चालों को समझकर व्यथा और संताप की चोटों से क्षत-विक्षत हो गई है।

श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित

वास्तव में आज दो सौ वर्ष से अँगरेज़ों की छत्रच्छाया में रहते हमें मिला क्या? अपमान, तिरस्कार, दमन, अनीति और दरिद्रता के घृणित उपहारों के कारण भारत को सोचने की शक्ति भी खो देनी पड़ी है। श्रीमती पंडित के शब्दों में जब हम अपने ही देश में अपने इच्छानुसार जीवन-यापन नहीं कर सकते, अपने इच्छानुसार किताबें नहीं पढ़ सकते, मनमाने गीत नहीं गा सकते, न उन स्त्री-पुरुषों की इज़्ज़त ही कर सकते हैं, जिन्हें हम महान् समझते हैं, तब हम अपनी आज़ादी को ख़तरे में डालकर विदेशों में ख़ून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहावें, यह बुद्धिमानी नहीं। हमें अपनी बात कहने का, युद्ध के बारे में समुचित सुझाव देने का अवसर न देकर ब्रिटेन ने हमारी राय की उपेक्षा की, इसका हमें दुख नहीं। दुख तो इस बात का है कि ब्रिटेन को अपनी भूलों को दरगुज़र करने में ज़रा भी देर नहीं लगती। हमसे यह कहना कि मतभेदों को भूलकर हम आज उनके लिये लड़ें, और वे हमारी माँगें युद्ध के बाद मंज़ूर कर लेंगे, कोई अर्थ नहीं रखता। श्रीमती पंडित ने कहा कि यह बात विश्वास-योग्य नहीं, क्योंकि गवर्नमेंट ने अपने वादों की लंबी सूची भुलाकर ही यह कहा है, और हमारी मदद करने की प्रत्येक तजवीज़ व्यर्थ समझी गई है। इसमें कोई संदेह नहीं कि सरकार की वफ़ादारी का सबूत अभी तक भारतीयों को नहीं मिल पाया है। यहाँ वादों के मसविदे देकर व्यर्थ समय नहीं बरबाद करना है, परंतु इतना ज़रूर कहना है कि गवर्नमेंट के ज़ुल्मों की यदि याद भी करें, तो हृदय काँप जाता है।

श्रीमती पंडित ने कहा—"हम ब्रिटेन की घोषणाओं से नहीं, बल्कि उसके कामों से ही उसकी परख कर सकते हैं। अतएव हमने अपना रास्ता चुन लिया है। हम किसी को चोट नहीं पहुँचाना चाहते, न हमें दूसरों पर राज्य करने की इच्छा है। हम तो अपने देश के लिये ही स्वतंत्रता चाहते हैं, जिसे ख़ुद आप इतना मूल्यवान् समझते हैं। इसके लिये जो भी क़ुरबानी करनी पड़े, उसके लिये हम तैयार हैं।.....भारत को हम ऐसी श्रद्धा से प्यार करते हैं कि उसकी इज़्ज़त पर बट्टा नहीं लगने दे सकते। हमारा पथ मानव-दासता

"कई वर्षों से— मैं आपकी जड़ी का व्यवहार करता आ रहा हूँ, इसी के द्वारा अभी हाल ही में मुझे एक मुक़दमे में कामयाबी मिली है।" एक सज्जन २७ अगस्त, १९३४ को बंगलोर से लिखते हैं—

इन्हीं महात्मा लामा योगी से तिब्बत की कंदराओं और हिमालय की गुफाओं में ३७ साल भ्रमण कर यह जड़ी और तांत्रिक कवच मिला है, जिससे नीचे लिखे सब कार्य ज़रूर सिद्ध होंगे, इसमें संदेह नहीं। ज़रूरतवाले मँगावें।

विशुद्ध प्रेम के लिये इससे ज़्यादा आज़माई हुई कोई चीज़ संसार में नहीं। स्त्री-पुरुष, दोनो के लिये मूल्य ३॥); (२) रोग से छुटकारा—पुराना, बुरे-से-बुरा असाध्य कोई भी रोग क्यों न हो, इससे शर्तिया आराम होता है। मूल्य ३॥); (३) मुक़दमा—चाहे जैसा पेचीदा हो, मगर इससे शर्तिया जीत होगी। मूल्य ३॥); (४) रोज़गार में लाभ न होता हो, हमेशा घाटा होता हो, इससे उनका रोज़गार बढ़ेगा और लाभ होगा। मूल्य ३॥); (५) नौकरी—जिनकी नौकरी न लगती हो, बेकार बैठे हों, या हैसियत की नौकरी न मिलती हो, ज़रूर होगी, मूल्य ३॥); (६) परीक्षा—प्रमोशन में इससे ज़रूर कामयाबी मिलेगी। विद्यार्थी और नौकर-पेशा ज़रूर आज़माइश करें, मूल्य ३॥); (७) तंदुरुस्ती के लिये यह अपूर्व है, थोड़े ही समय में स्वास्थ्य पर इसका प्रभाव पड़ता है, मूल्य ३॥); मँगाते वक्त अपना नाम, काम ज़रूर लिखें। १ जड़ी का मूल्य ३॥), ३ जड़ी का ९), डाक-ख़र्च अलग। एक जड़ी से सिर्फ़ एक ही काम होता है। विदेश के लिये एक जड़ी के लिये ७ शिलिंग और ३ जड़ी के लिये २० शिलिंग पेशगी मनीऑर्डर से भेजना चाहिए, वी० पी० नहीं जाती।

पता—विजय लॉज (502), पो० ऑ० बड़ा बाज़ार, कलकत्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के विरुद्ध मानव-स्वतंत्रता का है, इसलिये हम आपकी मदद नहीं कर सकते।"

ये पंक्तियाँ भारतीय महिला के हृदय के स्वतंत्र उद्गार हैं, और हम समझते हैं, जिन स्त्रियों ने भारतीय महिलाओं से यह आशा की थी कि वे पिछली चालों को भुलाकर हमें एक संतोषप्रद उत्तर देंगी, उन्हें इससे निराशा होगी। पर निराशा की बात नहीं। हमारी राय में श्रीमती पंडित का अँगरेज़ महिलाओं को दिया गया उत्तर अक्षरशः सत्य है, और इससे एक सत्य, एक ईमानदारी और स्पष्ट व्यवहार की झलक मिलती है। अँगरेज़ महिलाओं ने भारतीय जनता के हृदय को, उसकी वर्तमान कठिनाई को समझे बिना जो अपील निकाली थी, उसकी प्रतिक्रिया एक भारतीयता की उपासिका महिला के हृदय में होना स्वाभाविक था। हमारा विश्वास है, वे महिलाएँ श्रीमती पंडित के शब्दों को ध्यान से पढ़ेंगी, और इन पर विचार करेंगी कि किस प्रकार भारत को एक दमन की चक्की में पीसने की भयंकर नीति से पीड़ित रक्खा गया है, और आज भी जब विश्व की स्वतंत्रता की देवी आठ-आठ आँसू रो रही है, दमन का वह चक्र भारत में चल रहा है।

× × ×

१०. दंगे कैसे रोके जायँ

इस वर्ष भारत के विभिन्न प्रांतों में हुए दंगों ने देश की स्थिति नाज़ुक बनाने में कमी नहीं रक्खी है, और आज देश के सच्चे कार्यकर्ताओं का बहुत कुछ समय इन्हीं की समस्या

कप और मेडिल

हम हर साइज़ और दाम के मेडिलों की डिज़ाइनें तैयार करके दूर-दूर शहरों से हज़ारों चैलेंज-शील्ड, कप व मेडिलों के आर्डर हर साल लिया करते हैं।

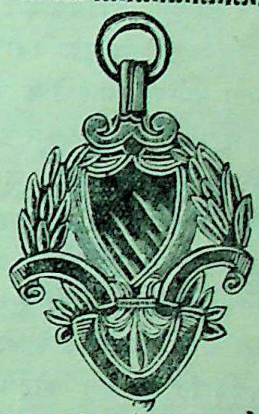

अँगरेज़ी और बँगला आदि हर प्रकार के और हर डिज़ाइन के गहने हमारे यहाँ बनाए जाते हैं। साथ ही कप, मेडिल, गिलास, तश्तरियों और घड़ियों पर इंग्रेविंग भी करते हैं। धातुओं पर सोना-चाँदी चढ़ाने का भी काम करते हैं।

काम अँगरेज़ी ढंग पर होता है। हमारे पास आर्ट स्कूल के सार्टिफ़िकेट मौजूद हैं।

श्रीवास्तव मेडिल वर्क्स (रजिस्टर्ड)

मैन्युफ़ेक्चरिंग ज्वेलर्स ऐंड इंग्रेवर्स

३६, श्रीराम रोड, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में व्यतीत हो रहा है। देशरत्न राजेंद्र बाबू ने इस ओर सबसे अधिक कार्य किया है। उन्होंने अभी हाल में एक वक्तव्य दिया है, जिसमें दंगे के रोकने के उपायों को काम में लाने की ओर संकेत किया गया है। वास्तव में दंगे हिंदू-मुसलमानों में ग़लत सांप्रदायिक प्रचार और परस्पर विरोधिनी भावनाओं के उत्तेजन के परिणाम हैं। जब एक शहर में दंगा हो जाता है, तो दूसरे शहरों में भी उसी प्रकार की सनसनी फैल जाती है, और वह उग्र रूप धारण करती चली जाती है, और वहाँ भी दंगे होने लगते हैं। आपने एक 'शांति-सेना' बनाने की योजना रक्खी है, जो दंगा-पीड़ित शहरों में दंगाइयों को समझाकर शांत करेगी। यह दल बिलकुल अहिंसक होगा।

हम राजेंद्र बाबू की इस बात से सहमत हैं कि इस दल को पूर्ण अहिंसक रूप में, जान हथेली पर रखकर, दंगाइयों का मुक़ाबिला करना होगा, और वे अपना सर्वस्व दंगाइयों के बीच में समर्पण कर देंगे। पर क्या दंगे इस प्रकार रुक जायँगे? अहिंसा का अस्त्र समझदारों का है। क्रूरों पर उसका प्रभाव उतना नहीं होगा, फिर दंगे केवल कुछ गुंडों की ही करतूतों का फल नहीं होते। जब मालिक ही चोर हो, तो घर के अन्य लोगों से यह आशा करना कि वे चोरी न करेंगे, जब कि वे चोरी करने को बाध्य भी हैं, नितांत भूल है। कोई भी व्यक्ति हो, कैसे अपनी जान हथेली पर रखकर आगे बढ़ सकेगा, यह हम नहीं जानते। गोलियाँ और सशस्त्र पुलिस जिन्हें बंबई में अब तक नहीं रोक पाई, उन्हें शांति-सेना कैसे रोक सकेगी? हमारी समझ में दंगों का उत्तरदायित्व सरकार पर है, और केवल अहिंसा ही नहीं, बल्कि किसी भी उपाय से गवर्नमेंट की मदद से ही वे रोके जा सकते हैं। फिर भी शांति,-सेना की बात स्वागत करने योग्य है। गवर्नमेंट भी इधर ध्यान देगी।

× × ×

११. श्रीमती क्रांतिदेवी का भाषण

ग्वालियर - राज्य - सार्वजनिक - सभा के २३वें वार्षिक अधिवेशन के अंतर्गत राष्ट्रीय महिला-सम्मेलन की अध्यक्षा श्रीमती सौभाग्यवती क्रांति-देवी 'दिनेश' का भाषण बहुत महत्त्वशाली हुआ। आपने अपनी बहनों के सामने देश की वर्तमान राजनीतिक और सामाजिक स्थितियों का चित्रण

श्रीमती सौभाग्यवती क्रांतिदेवी 'दिनेश'

करके महिलाओं को उनमें भाग लेने का निर्देश किया। आपके विचार में पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियाँ सत्य, अहिंसा, धीरज, वीरता और बलिदान की परीक्षा में ज़्यादा सफल होती हैं। भविष्य में देश उसी के पीछे चलेगा, जो क़ुरबानी करेगा, अतः महिलाओं को देश के लिये अधिक-से-अधिक कष्ट सहने और सेवा करने के लिये तैयार हो जाना चाहिए। परदा-प्रथा का निवारण तथा खादी-वस्त्र-धारण करने पर आपने विशेष महत्त्व दिया। आपके प्रभावशाली भाषण से उपस्थित महिलाओं को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपना कर्तव्य-पथ दृष्टिगोचर हुआ। आपका जैसा क्रांतिदेवी नाम है, वैसे ही आप देश में सत्य और अहिंसा की क्रांति फैलाने की शक्ति भी रखती हैं। देश को आपसे बड़ी आशाएँ हैं।

× × ×

१२. भारतवर्ष का भाग्य

गत मास में अंतरराष्ट्रीय स्थिति में जो थोड़े-से परिवर्तन हुए हैं, उनके कारण भारत की भावी आशाओं की पूर्ति के लिये हमारे जो प्रयत्न हैं, उनका आशातीत फल मिल सकेगा, यह दूर की बात हो गई है, और, हम समझते हैं, यह स्वतंत्रता का संग्राम कहीं व्यर्थ न सिद्ध हो। हम जान नहीं पाते, लेकिन ऊपर-ऊपर जो साम्राज्य-वादी-संघ-स्थापना के प्रयत्न हो रहे हैं, वे भारत के भाग्य के कुटिल अंकों की सूचना देनेवाले हैं।

अमेरिका ने आइसलैंड में सामरिक कारणों से अपनी सेना उतार दी, और मि० चर्चिल ने उसके औचित्य का समर्थन भी कर दिया। ब्रिटिश फ़ौजों के वहाँ से हटाने की जो बात सुनी जा रही थी, सो खटाई में पड़ गई, और चर्चिल की यह घोषणा सुनने को मिली कि यदि द्वीप-रक्षा में कोई मतभेद होगा, तो दोनो देशों के सेनापति मिल-कर तय कर लेंगे। यह ऐंग्लो-अमेरिकन साम्राज्य की भूमिका का प्रथम परिच्छेद है। उधर आयर्लैंड और स्कॉटलैंड में भी अमेरिका ने नौसेना के हवाई अड्डे बनाने का प्रस्ताव रक्खा है, और उसका स्वागत हुआ है, तथा बहुत संभव है, वहाँ कार्य भी आरंभ हो गया हो। सुना तो यह जाता है कि कुछ अड्डे अमेरिकन मज़दूरों द्वारा आयर्लैंड में तैयार भी हो रहे हैं। अमेरिका की यह परोपकार-वृत्ति क्या विशुद्ध परोपकार से पूर्ण है, या उसमें कोई स्वार्थ भी है, यह विचारणीय है। हमारी राय में जो अमेरिका गोला-बारूद के लिये नक़द दाम और टापू ले रहा है, वह निःस्वार्थ सहायता नहीं दे सकता। कम-से-कम साम्राज्य-निर्माण में उसका सम्मिलित होने का अभिप्राय अवश्य है। ब्रिटेन से सर फ़ीरोज़ख़ाँ का अमेरिका जाना भी हमारी बात की पुष्टि करता है। यदि ऐसा हुआ, तो क्या भारत की स्थिति आज से भी बदतर न होगी।

फिर एक और पूर्वीय साम्राज्य-रसद-परिषद् में आस्ट्रेलियन प्रतिनिधि ने बटन से लेकर वायु-यान तक भारत को देने का वचन दिया है, और दूसरी ओर अध्यात्मवाद की शिक्षा लेने की प्रतिज्ञा की है। साथ ही लंदन में होनेवाली साम्राज्य-परिषद् में भारत-सरकार का प्रतिनिधित्व नहीं, और ब्रिटिश सरकार अगस्त के प्रस्ताव को दुहराने में ही प्रसन्न है। तब युद्ध के बाद

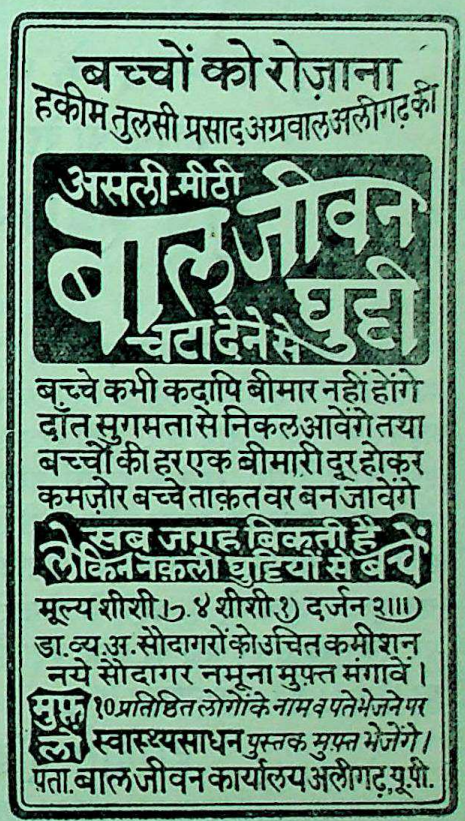

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत की स्थिति कैसी होगी, यह कौन जान सकता है। यदि एक के अलावा बहुत से उसका शोषण हुआ, तो उसका शेष भी चुक जायगा। शायद यही सोचकर सत्याग्रह लंबा करने की सलाह महात्माजी ने दी है। भारतवर्ष का भाग्य अंधकार में है। देखें, इस पवित्र भारत-भूमि के तप-त्याग से क्या फल निकलता है?

× × ×

१३. डिफ़ेंस-कमेटी

मध्य-पूर्व की दिन-दिन विकट होती परिस्थिति और बढ़ती परेशानियों के बीच सर-आर्चिबाल्ड वॉवेल ने भारतीय कमांडर-इन-चीफ़ का पद स्वीकार किया है। उनकी नियुक्ति रहस्य से भरी है, इसमें संदेह नहीं। जब हमने यह परिवर्तन देखा, तो हमें यह विश्वास था कि मध्य-पूर्व में सैनिक संगठन द्वारा युद्ध में ब्रिटिश साम्राज्य की प्रतिष्ठा क़ायम रखनेवाले मि० वॉवेल अपनी स्वतंत्र सत्ता, निष्पक्ष विचार और दृढ़ता का परिचय देंगे, और राष्ट्रीय भावनाओं के अनुकूल भारतीय संरक्षण की सीमाओं को सुरक्षित करने का भी प्रयत्न करेंगे। लेकिन उन्होंने आते ही अपनी अदूरदर्शिता का जो परिचय दिया, उससे हमें उनके व्यक्तित्व में कोई श्रद्धा नहीं रह गई। यद्यपि उन्होंने सर क्रिप्स आर्चिनलेक के सुधारों पर कार्य करने की ही घोषणा की थी, और कहा था कि वह उनकी कार्य-प्रणाली पर काम करते हुए अवांछनीय परिवर्तन न करेंगे, तथापि डिफ़ेंस-कमेटी की नियुक्ति की घोषणा से उनकी कूटनीति

मनुष्य-मात्र के पढ़ने-योग्य पुस्तक—

ज़िंदगी का बेड़ा सुख से पार करनेवाली

स्वास्थ्य-रक्षा

(१३वाँ संस्करण)

इस ग्रंथ के १३ एडीशन छप जाना ही इस बात का काफ़ी प्रमाण है कि हिंदी में यह अद्वितीय ग्रंथ है। रामायण के सिवा और किसी ग्रंथ के इतने संस्करण नहीं छपे। इसे पढ़नेवाला सदा नीरोग और सुखी रहकर जीवन का बेड़ा सुख से पार कर सकता है। इसमें सदा नीरोग रहने के हज़ारों तरीक़े लिखे हुए हैं। साथ ही प्रायः सभी तरह के रोगों पर एक-से-एक बढ़कर कौड़ियों से लेकर अशर्फ़ियों तक में बननेवाले, ४५ साल में हज़ारों मरीज़ों पर आज़माए हुए, अनगिनती नुसख़े लिखे गए हैं। जिस घर या गाँव में यह पुस्तक पहुँच गई है, वहाँ के लोग रोग-शोक से दुखी नहीं होते। यह ग्रंथ समय पड़े पर एक बड़े-से-बड़े वैद्य का काम देता है। मनुष्य की अनमोल जान बचाता है। पुस्तक का दाम ३) है। डाक-महसूल ।।।=)

हरिदास एंड कंपनी, मथुरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का पूरा-पूरा परिचय मिल गया, और अब इस बात में संदेह करने की गुंजायश नहीं रह गई कि हिंदुस्थान को सुधारों के नाम पर कोरा अँगूठा दिखाना या बहकाना सदैव जारी रहेगा, और कोई ऐसी शक्ति नहीं, जो ब्रिटिश राजनीतिज्ञों को भारत की सचाई का क़ायल कर सके। साथ ही यह भी स्पष्ट है कि हमारे दुर्भाग्य से ही सही, प्रत्येक अँगरेज़, सदियों की बनी परंपरा के अनुकूल, 'राम कहो बेटा'वाली तोते की-सी रटी लाइन दुहराने में ही अपना गौरव समझता है, इससे आगे जाने का संभवतः उसे अवकाश ही नहीं।

परंतु हमें यह समझ लेने पर एक बात कहनी है, और वह यह कि इस प्रकार मि० बॉवेल सफल नहीं हो सकेंगे। जिस प्रकार की लोकप्रियता वह प्राप्त करना चाहते हैं, वह लोकप्रियता नहीं। उनकी डिफ़ेंस-कमेटी का स्वरूप क्या है? दस मेंबरों में पाँच नामज़द, एक योरपियन, चार निर्वाचित, जिनमें भी दो 'सर' और एक रायबहादुर, यहाँ तक कि माननीय हृदयनाथ कुँजरू-जैसे सच्चे व्यक्ति ने तो इस कमेटी में भाग लेने से इनकार ही नहीं किया, किसी प्रकार का सहयोग देने की आंकाक्षा भी प्रकट नहीं की। इससे अधिक इस असफल, अधूरे नाटक का खोखलापन और क्या हो सकता है। निरंकुश और एकतंत्रशाही शासन द्वारा जीवित ब्रिटिश सत्ता को पंचर हुई साइकिल में हवा भरने की भाँति अनिच्छा से अवधि बढ़ाकर जीवित रखने का अर्थ क्या हो सकता है, यह हम ब्रिटिश राजनीतिज्ञों से पूछते हैं, और उन्हें इस मामले पर ठंडे दिल से विचार करने के लिये आमंत्रित करते हैं। युद्ध-प्रयत्नों में यह

॥ श्री ॥

मथुरा ता० १।६।१६३३

मैं कुरुक्षेत्र से लौटते हुए श्रीमथुराजी आया, और श्रीमान् पं० क्षेत्रपालजी शर्मा-संचालित सुख-संचारक कंपनी का कारोबार देखकर नितांत प्रसन्न हुआ। एक वैद्य होने के कारण मैंने आपके आयुर्वेदिक विभाग को चिकित्सक बुद्धि से देखा। इस विभाग का काम नितांत संतोषजनक है। मकरध्वज, चंद्रोदय, सहस्र पुटी अभ्रक, धातूपधातु भस्म, रसोपरस, आसव, अरिष्ट, गुटी, चूर्ण, अवलेह, घृत, तैलादि सभी शास्त्रीय पद्धति से तैयार कराए जाते हैं। इस विभाग का सारा काम आयुर्वेदाचार्य श्रीमान् पं० विश्वंभरदत्तजी शर्मा की अवधानता में होता है। प्रयोगों की शास्त्रीय विधि में कोई कसर नहीं रक्खी जाती। आशा है, बहुत जल्दी यह विभाग अत्युच्च दर्जे का गिना जायगा। यहाँ की बनी ओषधियों का प्रयोग मेरे कई मित्रों ने अपने रोगियों पर कर देखा, और वे सफलीभूत हुए। इसका कारण इस विभाग की सत्यता ही है। इतिशम्।

श्रीगोवर्धन शर्मा छागाणी, नागपुर-निवासी

वैद्य-भूषण, भिषगाचार्य—प्रधान संपादक, वैद्य-सम्मेलन-पत्रिका, आयुर्वेद-विद्यापीठ-परीक्षक भूतपूर्व अध्यक्ष राजपूताना प्रांतीय वैद्य-सम्मेलन इत्यादि तथा भूतपूर्व अखिल भारतवर्षीय आयुर्वेद-महामंडल-सभापति।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमेटी क्या, ऐसी सैकड़ों कमेटियाँ भी कुछ कार्य नहीं कर सकतीं, और न जनता की रुचि ही अपनी ओर कर सकती हैं। यह आकाश-वृत्ति पर जीना अब भारतीयों को शोभा नहीं देता, और न शायद वे किसी स्थिति में जीना ही चाहेंगे।

वायसराय लॉर्ड लिनलिथगो ने ८ अगस्त को जो कौंसिल की अवधि बढ़ाने और सेंट्रल डिफ़ेंस एडवाइज़री कमेटी नियुक्त करने की घोषणा की थी, वह आज ठीक दो वर्ष बाद सामने आई है, सो भी पूरी तरह नहीं; और, एक पत्रकार के शब्दों में वह 'खोदा पहाड़ और निकली चुहिया।'-वाली उक्ति चरितार्थ करती है। सर क्राइड ने १९४० के बजट-अधिवेशन में भी एक कमेटी बनाने की सलाह दी थी, जो सेंट्रल कमेटी नियुक्त कर सके, और उसी के लिये यह कमेटी बनी, पर जिस प्रकार वायसराय अब तक किसी दल का सहयोगी प्राप्त न कर सके, उसी प्रकार यह भी केवल 'शो' बनकर रह जायगी, यह स्पष्ट ही है। वायसराय की कौंसिल में बड़े आदमी क्या होंगे, और उसका स्वरूप क्या होगा, यह भी साफ़ है। इस डिफ़ेंस-कमेटी के निर्माण करने का अर्थ है भारतीय जनमत की अवहेलना और वायसराय की कौंसिल की शोभा बढ़ानेवाले खिलौनों की प्रदर्शनी का तात्पर्य होगा हमारी आत्मा पर और कुठाराघात। ऐसी परिस्थिति में हम किसी प्रकार की आशा लेकर राष्ट्रीयकरण की माँग या भारतीय-

पढ़कर फेंक देनी चाहिए

वे मासिक, साप्ताहिक और दैनिक पत्र-पत्रिकाएँ, जो केवल आपका क्षणिक मनोरंजन करती हों!

बिना पढ़े फेंक देना चाहिए

वह साहित्य, जो पुराना, निर्जीव, रस-हीन, कला-हीन और आंदोलन-मात्र बनकर हाथ में आ पड़े!

पढ़ना, पढ़ाना और संचय करना चाहिए

केवल वही साहित्य, जो नए युग की नई भावनाओं का प्रतिनिधि हो, जिसमें जान हो, जो नवराष्ट्र और नवसमाज की सृष्टि कर सके।

वही हमारा इतिहास होगा!

'सुधा' में आपको सब कुछ मिलेगा

यह आपके, आपकी गृहदेवियों के, आपके समाज के अनुकूल पत्रिका है!

इसका यह नवीन विशेषांक संग्रहणीय है!! ग्राहक बनकर विशेषांक मुफ्त लीजिए!!!

वार्षिक मूल्य साधारण संस्करण ६)	मैनेजर 'सुधा' ३६, लाटूश रोड लखनऊ	राजसंस्करण १२) सस्ता संस्करण ४॥)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करण का प्रश्न उठाकर क्या आशा कर सकते हैं ? भारत-मंत्री मि० एमरी की लंबी चुप्पी और जब-तब बेसिर-पैर की बातें हमारी आँखों में धूल झोंकने में समर्थ न हो सकेंगी। और, हम अँगरेज़ राजनीतिज्ञों को भी यह आश्वासन दिलाते हैं कि वे भारतीय स्थिति समझने का कष्ट करें, और उसे नापने के लिये अपनी समझ का पैमाना काम में लाएँ। केवल ऊपरी बातों पर विश्वास करके वे ग़लत धारणाओं के जाल में फँसे रह जायँगे, उनके हाथ कोई ठोस वस्तु नहीं आ सकती।

× × ×

१४. दंगों पर मालवीयजी

देश के वयोवृद्ध और अनुभवी नेता महामना मालवीयजी को इस अवस्था में भी देश की चिंता है। आपने उस दिन हिंदू-महासभा के प्रमुख व्यक्तियों के साथ दंगों और उनसे आत्मरक्षा के प्रश्न पर बनारस में बातचीत की। इन व्यक्तियों में डॉ० श्यामाप्रसाद मुकर्जी, मा० तारासिंह, डॉ० मुंजे आदि का नाम उल्लेखनीय है।

महामना मालवीयजी

आपने लगभग सवा घंटे तक इस समस्या पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विचार प्रकट किए, और कहा—"दंगे बढ़ रहे हैं, और देश-वासियों की चिंता बढ़ा रहे हैं। लोगों में शिथिलता दिखाई दे रही है। यद्यपि दंगों के न होने देने का उपाय यही है कि सब जातियाँ परस्पर मिलकर रहें, और हिंदू-राज्य या मुसलिम-राज्य की बात ही न उठाई जाय, क्योंकि भारत का भावी राज्य तो हिंदू, मुसलमान, पारसी, सिख, ईसाई, सबका संयुक्त होगा। यह भी सच है कि हमें प्रामाणिकता के साथ अहिंसा का प्रचार करना है। लेकिन जब हमारे प्रिय जन आपत्ति में हों, उनका जान-माल ख़तरे में हो, और संरक्षण की आशा में हों, तो हम उनकी दोनो मार्गों में से किसी से भी सहायता कर सकते हैं, और दोनो का अवलंब लेना चाहिए।"

यह परिषद् तीन घंटे तक रही, और समस्याओं पर विचार किया। दंगों के संबंध में आत्मरक्षा का प्रश्न हमारी समझ में भी यही है कि यदि अहिंसा साथ न दे, तो हिंसा द्वारा ही धन-जन और मा-बहनों के सतीत्व की रक्षा गुंडों द्वारा हो।

सखियों की बातचीत

रमा—"अरी मालती, देखूँ-देखूँ क्या छिपाए लिए जाती है?"

मालती—"फिर बताऊँगी, अभी जल्दी में हूँ।"

रमा—"और, तू शांता, इसके पीछे क्यों भाग रही है?"

शांता—"बड़ी सुंदर पत्रिका आई है मालती के नाम। मैं भी उसके साथ जाकर देखूँगी।"

रमा—'कौन-सी?"

शांता—"लखनऊवाली 'सुधा'! तुम अगर देखो, तो लोट-पोट हो जाओ। विशेषांक निकला है बड़ा ज़ोरदार!"

रमा—"तू खुद नहीं मँगाती? माँगकर पढ़ लेती है दूसरे से, क्यों?"

शांता—"क्या करूँ, ग़रीब हूँ, पर 'सुधा' बेजोड़ पत्रिका है!"

रमा—"अच्छा, कोई बात नहीं। मैं रुपए दूँगी। तू मेरे नाम से मँगा ले। अभी पत्र लिख दे।"

शांता—"वाह मेरी बहन, धन्यवाद! मैं लिखती हूँ अभी कि वी० पी० भेज दें। ६) साल तो है ही।"

पता—मैनेजर 'सुधा'

३६, लाटूश रोड, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुधा-चित्रावली

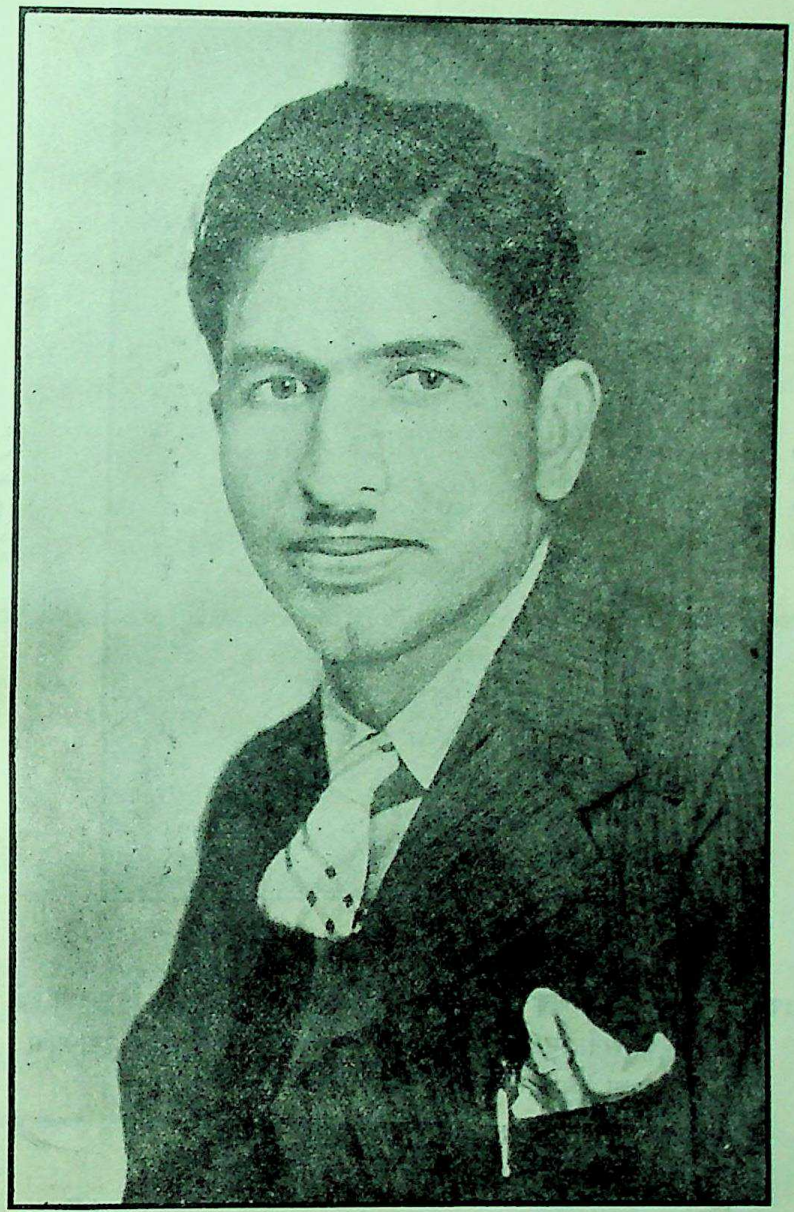

प्रो० रामकुमार वर्मा एम्० ए०, पी-एच्० डी०

[आप सुधा-मंडल के चिर-परिचित लेखक तथा कवि हैं। इस अंक में आपकी 'घटा घुँघराली उठी'-शीर्षक कविता पृष्ठ ६० पर छपी है। पाठक उसके रस में डूबने की कृपा करें।]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

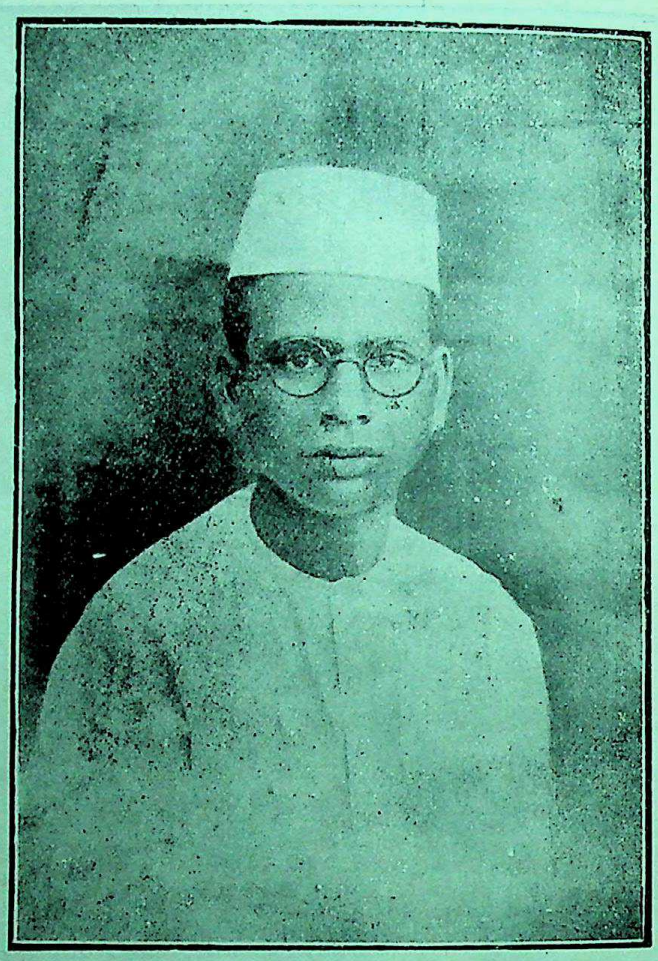

डॉ० सत्यप्रकाश डी० एस्-सी०

[आप सुधा-मंडल के श्रेष्ठ लेखक हैं। सुधा में आपकी जो रचनाएँ निकलती रही हैं, उनसे आपकी सर्वतोमुखी प्रतिभा का अच्छा परिचय मिलता है। इस अंक में आपका 'निमंत्रण-पत्र'-शीर्षक लेख पृष्ठ ८० पर छपा है। इस विषय पर शायद यह हिंदी में पहला ही लेख है। उपयोगी और ज्ञान-वर्धक है।]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुमारी दीप्तिसेन गुप्त

[इंद्रप्रस्थ-गर्ल्स-कॉलेज की छात्रा कुमारी दीप्ति सेन गुप्त बी० ए० में, दिल्ली-युनिवर्सिटी-भर में, सर्व-प्रथम आई हैं। हम आपकी उत्तरोत्तर उन्नति के इच्छुक हैं। प्रतिच्छविकार—श्रीयुत ललित-गोपाल]

कुमारी शांता प्रभु

[इंद्रप्रस्थ-गर्ल्स-कॉलेज, दिल्ली की छात्रा कुमारी शांता प्रभु को वार्षिकोत्सव पर प्रथम पारितोषिक दिया गया। प्रतिच्छविकार—श्रीयुत ललितगोपाल]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'मेहनत और मशीनरी'

[रीगल, नई दिल्ली में नृत्यकला-प्रवीण श्रीयुत उदयशंकरजी के
'मेहनत और मशीनरी'-शीर्षक नाटक का एक दृश्य ।
यह नाटक आपका सबसे नवीन है ।
प्रतिच्छविकार—श्रीयुत ललितगोपाल]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* श्रीः *

सुधा

सामाजिक, साहित्यिक और राजनीतिक

मासिक पत्रिका

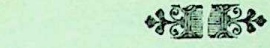

वर्ष १४, खंड २

माघ-आषाढ़, ३१८ तुलसी-संवत् (१९९७-९८ वि०)

फ़रवरी-जुलाई, १९४१ ई०

—:❀:—

संपादक

श्रीदुलारेलाल

श्रीसावित्री

—:०:—

प्रकाशक

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

राजसंस्करण		साधारण संस्करण	
वार्षिक मूल्य	१२)	वार्षिक मूल्य	६)
एक प्रति का मूल्य	१)	एक प्रति का मूल्य	॥)
विदेश के लिये वार्षिक	१२)	विदेश के लिये वार्षिक	६)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुद्रक तथा प्रकाशक
श्रीदुलारेलाल अध्यक्ष गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय
और गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस
लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख-सूची

१—पद्य

संख्या	लेख	लेखक	पृष्ठ
१.	अनाहूत	श्रीआरसीप्रसादसिंह	१६४
२.	अभ्यर्थना	श्रीमती सावित्री दुलारेलाल एम्० ए०	१६७
३.	आकुल आह्वान	श्रीसोहनलाल द्विवेदी एम्० ए०, एल्-एल्० बी० ...	२
४.	आत्मार्पण	श्रीयुत 'वचनेश'जी	३१
५.	इच्छा	कुंकुम-संपादक श्रीयुत श्रीनिधि द्विवेदी	२४७
६.	कवि-कोकिल	श्रीप्रो० श्रीधर पंत एम्० ए०	३६३
७.	किधर ?	श्रीयुत तेजनारायण 'काक' एम्० ए०	४६
८.	खंजन खिलारी ये	डॉ० रामशंकर शुक्ल 'रसाल' एम्० ए०, डी० लिट्० ...	५७५
९.	गर्व-गंजन	पु० श्रीप्रतापनारायण कविरत्न	२६१
१०.	गीत	कुमारी रूपकुमारी वाजपेयी बी० ए०	२४८
११.	गीत	श्रीसुधींद्र एम्० ए०	२६३
१२.	गीत	श्रीसोहनलाल द्विवेदी एम्० ए०, एल्-एल्० बी० ...	४५६
१३.	चल रे ! हव्य माँगता गांधी !	श्रीसोहनलाल द्विवेदी एम्० ए०, एल्-एल्० बी० ...	४२६
१४.	छवि	देव-पुरस्कार-विजेता श्रीश्यामनारायण पांडेय ...	३२३
१५.	छवि का जाल	श्रीयुत गोपालसिंह नेपाली	४५०
१६.	तरुणी	श्रीआरसीप्रसादसिंह	५३०
१७.	दो कुसुम	श्रीदुलारेलाल	४०१
१८.	धार्मिक स्वानुभव	रावराजा डॉक्टर श्यामविहारी मिश्र डी० लिट्० तथा रायबहादुर पं० शुकदेवविहारी मिश्र बी० ए० ...	१२६
१९.	नारी	श्रीमती विद्यावती कोकिल	३४१
२०.	प्रेमी	श्रीपं० उमाशंकर वाजपेयी 'उमेश' एम्० ए० (ऑनर्स)	१
२१.	बदला	श्रीयुत 'वचनेश'जी	४५६
२२.	बुलाता वल्लभ बाँह पसार ...	श्रीयुत 'वचनेश'जी	१०१
२३.	मन का दास	श्रीपं० अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'	४०२
२४.	मुझे भूल ही जाओ	श्रीयुत चंद्रप्रकाश वर्मा 'चंद्र' बी० ए० (ऑनर्स) ...	१०२
२५.	विजय-पथ	द्वितीय देव-पुरस्कार-विजेता डॉ० रामकुमार वर्मा एम्० ए०, पी-एच्० डी०	५०६
२६.	शिव-समाधि	देव-पुरस्कार-विजेता श्रीश्यामनारायण पांडेय	५५४
२७.	सीढ़ियाँ	कुसुम-संपादक श्रीयुत श्रीनिधि द्विवेदी	१४०
२८.	हृदय	श्रीयुत 'वचनेश'जी	२२५

२—गद्य

१.	अब्दुल्ला इस्माइल क़ाज़ी (सचित्र, संस्मरण)	श्रीयुत भवानीदयाल संन्यासी	३२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संख्या	लेख	लेखक	पृष्ठ
२.	अज्ञात आकर्षण	श्रीयुत महावीरप्रसाद दाधीच बी० ए०, एल्-एल्० बी०, ऐडवोकेट, बंबई	२०४
३.	आदमी (कहानी)	श्रीयुत 'अरुण' बी० ए०	२६४
४.	आदि-निवासी कौन और क्यों ?	एक दलित आत्मा	५४४
५.	आधुनिक युद्ध का भयंकर अस्त्र—वैदेशिक राजदूत (सचित्र) ...	श्रीज्योतिलाल भार्गव बी० ए०, एल्-एल्० बी० ...	५५५
६.	आर्य-समाज	मंगलाप्रसाद-पारितोषिक-विजेता श्रीयुत गंगाप्रसाद उपाध्याय एम्० ए०	४२१
७.	उपहार (कहानी)	श्रीयुत आनंदलाल साह 'गंगोला'	५३४
८.	उस दिन जब मैं रोया, बच्चे हँसने लगे ! (कहानी) ...	श्रीयुत 'उग्र'	३५७
९.	कायर (कहानी)	श्रीमहावीरप्रसाद जैन बी० ए०, एल्-एल्० बी० ...	२१४
१०.	कालसी में अशोक-आश्रम की प्रस्तावित योजना	श्रीयुत प्रो० धर्मदेव शास्त्री	४१३
११.	कुसुम	... ... ८६, १८१, २७६, ३८०, ४९१ और ५९०	
१२.	कौन ? (कहानी)	श्रीयुत सुरेंद्रदेव मिश्र	५६
१३.	ख़ून की खाद (कहानी) ...	श्रीयुत तेजनारायण काक एम्० ए०	४३७
१४.	ख़ूनी की खोज (कहानी) ...	श्रीयुत बदरीनारायण शुक्ल एम्० ए०, बी० टी० ...	२२६
१५.	ख्याति का मूल्य (कहानी) ...	श्रीयुत 'अरुण' बी० ए०	१७
१६.	गद्य-काव्य	कुमारी विद्या कुमारी भार्गव	१५१
१७.	घरेलू नौकर	दैनिक हिंदी-मिलाप-संपादक पं० आत्मस्वरूप शर्मा ...	३२४
१८.	चयन (सचित्र)	क़ाज़ी अशरफ़महमूद, श्रीअविनाशचंद्र पांडेय 'चातक' बी० ए०, साहित्याचार्य, श्रीबुद्धिसागर वर्मा विशारद, बी० ए०, एल्० टी०, श्रीयुत अमरनाथ शर्मा 'अमर', श्रीयुत गंगाधर जोशी, श्रीयुत प्रेमनाथ शांडिल्य, श्रीयुत कन्हैयासिंह 'काँधा', साहित्यभूषण शिवदुलारे शर्मा 'शिव' एच्० एम्० बी०, डॉ० जसवंतसिंह एम्० ए०, बी० एस्-सी०, एन्० डी० (लंदन), श्रीयुत सुरेशचंद्र अग्रवाल, श्रीयुत 'मित्तल', श्रीयुत 'चच्चन', श्रीयुत जगदीशचंद्र सोलंकी 'प्रेमी', श्रीयुत गंगाप्रसाद 'कौशल', श्रीशांताकुमारी भार्गव हिंदी-भूषण, श्रीयुत श्रीकुमार शर्मा, श्रीयुत श्रीराम शर्मा साहित्यरत्न, कुमारी मालती डिंडा, श्रीयुत चाँदमल अग्रवाल 'चंद्र' विशारद, काव्य-मनीषी श्रीयुत शिवकुमार शर्मा, कुमारी शिबोला रानी, श्रीयुत रामकृष्ण पाठक, साहित्याचार्य श्रीपं० विश्वेश्वरनाथ रेउ, श्रीयुत बाबूलाल भार्गव बी० ए०, बी० टी०, साहित्यरत्न, श्रीयुत प्रकाश सक्सेना श्रीयुत करुणकुमार, श्रीयुत लोचनप्रसाद पांडेय, कुमारी लीला ऐरी वैद्या, हिंदी-प्रभाकर, कुमारी उर्मिला श्रीवास्तव, श्रीमती शांति दुबे,	३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संख्या	लेख	लेखक	पृष्ठ
		श्रीयुत रामनारायण मिश्र एम्० एस्-सी०, श्रीयुत गोपालदास मुंशाल, श्रीयुत राजेश्वरप्रसाद वर्मा 'चक्र', श्रीयुत भानुकुमार जैन और श्रीयुत सुबोध अदावाल ...	७३, १६६, २६२, ३६५, ४७७ और ५७६
१९.	चिंतामणि (कहानी) ...	श्रीगँवार एम्० ए०, डी० लिट्०	५६२
२०.	छोटा मुँह, बड़ा ग्रास ! (व्यंग्य-चित्र)	श्रीयुत शिक्षार्थी	३६४
२१.	जवाहर (सचित्र)	आचार्य श्रीचतुरसेन शास्त्री वैद्य	५४६
२२.	जाति-पाँति या मृत्यु ? ...	श्रीयुत संतराम बी० ए०	२६
२३.	झूठे विज्ञापन	श्रीयुत पृथ्वीपालसिंह एम्० ए० (अमेरिका), जे० डी० (लंदन), एल्-एल्० बी० (लखनऊ)	१३६
२४.	तुलसी का बाल-वर्णन ...	श्रीयुत तेजनारायण 'काक' एम्० ए०	२४०
२५.	दुश्मन का लड़का (कहानी) ...	श्रीयुत श्यामवदन पाठक 'श्याम'	२४६
२६.	दूसरा सत्य (कहानी) ...	श्रीयुत 'अरुण' बी० ए०	१०३
२७.	धारा (सचित्र, संपादकीय विचार)	... ...	८७, १८२, २७७, ३८१, ४६२ और ५६१
२८.	नूरजहाँ (आलोचना) ...	श्रीयुत हरिशंकर टंडन	२०६
२९.	परिचय	श्रीयुत गोपाल व्यास एम्० ए०, साहित्यरत्न, साहित्याचार्य पं० जितेंद्र भारतीय शास्त्री, श्रीयुत चिरंजीलाल 'एकाकी' बी० ए०, श्रीयुत 'अरुण' बी० ए०, श्रीयुत 'ग०', श्रीमती सावित्री दुलारेलाल एम्० ए०, श्रीयुत 'च', श्रीपं० भगवतीप्रसाद वाजपेयी, श्रीयुत कालीचरण चटर्जी एम्० ए०, श्रीमती रत्नकुमारी एम्० ए० और श्रीयुत सुधींद्र वर्मा एम्० ए०, एल्-एल्० बी० ...	८२, १७६, २७३, ३७५, ४८५ और ५८४
३०.	'पल्लविनी' (आलोचना) ...	कुमारी विद्या श्रीवास्तव	३४२
३१.	पुराने और नए विचार (कहानी)	श्रीयुत आत्माराम देवकर	४६६
३२.	पृथ्वीराज—रासो के संबंध की नवीन चर्चा	महामहोपाध्याय, रायबहादुर, साहित्यवाचस्पति डॉ० गौरीशंकर हीराचंद ओझा डी० लिट्०	३
३३.	पंजाब में स्त्री-शिक्षा—कुछ विशेष बातें	श्रीचक्रधर 'हंस' नौटियाल एम्० ए०, एल्० टी० ...	१४७
३४.	प्रोफ़ेसर भोलानाथसिंह डी० एस्-सी० (सचित्र, जीवनी) ...	दैनिक हिंदी-मिलाप-संपादक पं० आत्मस्वरूप शर्मा ...	५६७
३५.	भाई (एकांकी नाटक) ...	श्रीमती रत्नकुमारी एम्० ए०	१३०
३६.	भारतीय लिपियों की एकता एवं उनका एकीकरण (सचित्र) ...	डॉ० दुर्गादत्त गंगाधर ओझा बी० एस्-सी०, एम्० बी०, बी० एस्०	३०६ और ४४२
३७.	मध्य-भारत का एक और बौद्ध स्तूप (सचित्र)	ज्योतिषाचार्य श्रीयुत सूर्यनारायण व्यास	६०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संख्या	लेख	लेखक	पृष्ठ
३८.	मातृभाषा हिंदी बलि-वेदी पर ...	श्रीरामदत्त शुक्ल एम्० ए०, एल्-एल्० बी०, ऐडवोकेट ...	११५
३९.	माधुर्यमय भगवद्भक्ति ...	प्रो० धर्मेंद्र एम्० ए० (त्रितय)	४५१
४०.	मेरी देहरादून-यात्रा (सचित्र, भ्रमण)	साहित्य-रत्न श्रीयुत लक्ष्मीनारायण टंडन 'प्रेमी' एम्० ए०...	३१५
४१.	मेरी राजगृह-यात्रा (सचित्र, भ्रमण)	साहित्य-रत्न श्रीयुत लक्ष्मीनारायण टंडन 'प्रेमी' एम्० ए० ...	१४१
४२.	मेरी विंध्याचल और टाँडा-फ़ॉल की यात्रा (सचित्र, भ्रमण) ...	साहित्य-रत्न श्रीयुत लक्ष्मीनारायण टंडन 'प्रेमी' एम्० ए० ...	५२०
४३.	मेरी हरद्वार-यात्रा (सचित्र, भ्रमण)	साहित्य-रत्न श्रीयुत लक्ष्मीनारायण टंडन 'प्रेमी' एम्० ए० ...	४२७
४४.	यह क्या था ? (कहानी) ...	श्रीपं० उमाशंकर वाजपेयी 'उमेश' एम्० ए० (ऑनर्स)	५११
४५.	'रसवंती' (आलोचना) ...	श्रीयुत गोपाल व्यास एम्० ए०, साहित्य-रत्न	५२६
४६.	राजा राममोहन राय के विदेश के पत्र	श्रीप्रो० प्रभाकर माचवे एम्० ए०, साहित्य-रत्न... ...	५५०
४७.	राष्ट्रीयता का रोड़ा—संप्रदायवाद	श्रीमती हीरादेवी चतुर्वेदी .., ...	४६०
४८.	विश्वेश्वर-स्मृति	साहित्याचार्य श्रीपं विश्वेश्वरनाथ रेउ १५६, २१७, ३५० और	४५५
४९.	वैदिक रहस्य-विज्ञान का एक दृष्टिकोण (सचित्र) ...	ज्योतिषाचार्य श्रीयुत सूर्यनारायण व्यास	४०३
५०.	शाहज़ादी ज़ेबुन्निसा 'मख़फ़ी' (सचित्र जीवनी)	श्रीयुत व्रजरत्नदास बी० ए०, एल्-एल्० बी०	३२८
५१.	श्रीरामजीप्रीत्यर्थं	श्रीयुत गुलाबराय एम्० ए०	१५२
५२.	साथी (कहानी)	श्रीयुत कालीचरण चटर्जी एम्० ए०...	४१८
५३.	साहित्य और राजनीति का समन्वय (सचित्र, जीवनी) ...	श्रीयुत देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त'	३१८
५४.	सीसे की चवन्नी (हास्य) ...	श्रीयुत कालीचरण चटर्जी एम्० ए०	४३
५५.	सुधा-चित्रावली	... ... ३९७, ४७३ और	६०९
५६.	संसार की नवीन व्यवस्था में भारत का स्थान	सर अकबर हैदरी	१९९
५७.	स्वर्गीय आचार्य पं० रामचंद्र शुक्ल (जीवनी)	श्रीयुत हरिश्चंद्र अग्रवाल एम्० ए०...	४६४
५८.	स्वस्थ रहने के दस नियम ...	श्रीयुत प्रिंसिपल केदारनाथ गुप्त एम्० ए०	५१६
५९.	हाय ! 'हृदय'जी (सचित्र, जीवनी)	श्रीयुत दुर्गाप्रसाद शर्मा बी० ए०	३४६
६०.	हिंदी-नाटक	काव्यतीर्थ, साहित्य-शास्त्री, सांख्याचार्य प्रो० श्रीधर पंत एम्० ए०	५०
६१.	हिंदी में प्रमत्त रचना ...	प्राध्यापक चेतराम शर्मा	६६ और ११६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्र-सूची

क—रंगीन

(आर्ट-पेपर पर)

संख्या	चित्र	पृष्ठ
१.	उषा-स्वप्न—[चित्रकार, श्रीयुत काशिनाथ-गणेश खातू (तिरंगा) ...	४०१
२.	ज्योति-प्रवाह—[चित्रकार, श्रीकमला-शंकरसिंह (तिरंगा)	१९७
३.	देश के प्राण महात्मा गांधी (दुरंगा)	४००
४.	बलि-नृत्य—[चित्रकार, श्रीप्रद्योत-कुमार सेनापति (तिरंगा) ...	१०१
५.	बलि-नृत्य (एक रंग में)	३९५
६.	मृगनयनी—[स्वर्गीय कविवर बाबू जगन्नाथदास 'रत्नाकर' के संग्रह से (तिरंगा)	२९३
७.	लक्ष्मीजी—[स्व० मियाँ वसंतसिंह जागीरदार की कृपा से प्राप्त (तिरंगा)	१
८.	शेषशायी—[स्वर्गीय मियाँ वसंतसिंह के संग्रह से (तिरंगा)	५०९

ख—व्यंग्य

१.	छोटा मुँह, बड़ा ग्रास !—[चित्रकार, श्रीयुत शिक्षार्थी	३६४

ग—सादे

१.	अखिल भारतवर्षीय महिला डॉक्टरनियों का सम्मेलन	४७४
२-६.	आधुनिक युद्ध का भयंकर अस्त्र—वैदेशिक राजदूत-संबंधी ५ चित्र ५५५, ५५७ और ५५८-५६०	
७.	इंद्रप्रस्थ-गर्ल्स-कॉलेज, दिल्ली का वार्षिक व्यायामोत्सव	४७६
८.	कन्या-महाविद्यालय, जालंधर का वार्षिकोत्सव	४००
९.	कमला नेहरू-अस्पताल का उद्घाटन...	५०६
१०.	कमला नेहरू-अस्पताल का भव्य भवन...	५०६
११.	कुमारी शांतादेवी	३९९
१२.	गुच्छूपानी	३३७
१३.	गुच्छूपानी का बाह्य दृश्य (घाटी से बाहर)	३३६
१४.	टपकेश्वर महादेव (देहरादून) ...	३३५
१५.	डॉक्टर जसवंतसिंह एम्० ए०, बी० एस्-सी०, एन्० डी० (लंदन) ...	१७०
१६.	दिल्ली में अखिल भारतीय हिंदी-समाचार-पत्र-संपादकों का सम्मेलन ...	४७३
१७.	दिल्ली में इंटर-युनिवर्सिटी-डिबेट में महिला-पुरस्कार पानेवाली छात्राएँ ...	६१०
१८.	देव-समाज-गर्ल्स-हाईस्कूल, लाहौर का पारितोषिक-वितरण	४००
१९.	नालंद-म्यूज़ियम (देवपालदेव के ताम्र-पट्ट की मुद्रा)	१४३
२०.	नालंद-म्यूज़ियम (महाराज शर्ववर्मा की मिट्टी की मुद्रा)	१४३
२१.	नालंद-विश्वविद्यालय का एक भग्नावशेष	१४२
२२.	पं० आत्मस्वरूप शर्मा	५६७
२३.	पं० जवाहरलाल नेहरू	५४९
२४.	पं० ठाकुरदत्त शर्मा	५९९
२५.	प्रोफ़ेसर भोलानाथसिंह डी० एस्-सी०	१४७
२६.	बिंबसार-रोड – वैभारगिरि (राजगृह)	१४४
२७.	भारतवर्ष के एकमात्र प्रतिनिधि कवि बाबू मैथिलीशरण गुप्त	३९७
२८-३२.	भारतीय लिपियों की एकता एवं उनका एकीकरण-संबंधी ५ चित्र ४४३ और ४४९	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संख्या	चित्र	पृष्ठ
३३-३९.	मध्य-भारत का एक और बौद्ध स्तूप-संबंधी ७ चित्र	६१-६४
४०.	महात्माजी को नारियल-प्रदान ...	५०५
४१.	महामहोपाध्याय, रायबहादुर, साहित्य-वाचस्पति डॉ० गौरीशंकर हीराचंद ओझा डी० लिट्०	४
४२.	मिर्ज़ापुर से गंगा-नदी का एक दृश्य ...	५२१
४३-४६.	मेरी हरद्वार-यात्रा-संबंधी ४ चित्र	४२७, ४३० और ४३१
४७.	विंध्यवासिनीदेवी का मंदिर ...	५२३
४८.	शाहज़ादी ज़ेबुन्निसा	३२८
४९.	श्रीअब्दुल्ला इस्माइल क़ाज़ी ...	३२
५०.	१. श्रीअब्दुल्ला इस्माइल क़ाज़ी, २. श्रीमगनलाल, ३. श्रीमती गायत्रीदेवी और ४. श्रीभवानीदयाल संन्यासी (सामूहिक चित्र)	३५
५१.	श्रीगुरुगोविंदसिंहजी	१७१
५२.	श्रीजयदयाल विद्यार्थी बी० ए० ...	३९९
५३.	श्रीपं० विश्वेश्वरनाथजी रेउ ...	५०८
५४.	श्रीबुद्धिसागर वर्मा विशारद, बी० ए०, एल्० टी०	७७
५५.	श्रीमती पुखराजबाई जैन	६०९
५६.	श्रीयुत अध्यापक चेतराम शर्मा ...	६६
५७.	श्रीयुत असितकुमार हाल्दार ...	६१२
५८.	श्रीयुत आरसीप्रसादसिंह ...	१६४ और ५३०
५९.	श्रीयुत कालीचरण चटर्जी एम्० ए० ...	४३
६०.	श्रीयुत गुलाबराय एम्० ए० ...	१५२
६१.	१. श्रीयुत नारायणरावजी सोर्टी एम्० ए०, २. स्व० श्रीकरंदीकरजी, ३. श्रीकरंदीकरजी के भानजे और ४. ज्योतिषाचार्य श्रीयुत सूर्यनारायण व्यास (सामूहिक चित्र)	६०
६२.	श्रीयुत बदरीनारायण शुक्ल एम्० ए०, बी० टी०	२२६
६३.	श्रीयुत महेंद्रजी	३९७

संख्या	चित्र	पृष्ठ
६४.	श्रीयुत रामनारायण मिश्र एम्० एस्-सी०	५७८
६५.	श्रीयुत व्रजमोहनजी और कुमारी ऊषा...	४७५
६६.	श्रीयुत संतराम बी० ए०	२६
६७.	श्रीरवींद्रनाथ ठाकुर ...	५०४ और ५७७
६८.	श्रीसी० एफ़्० ऐंड्रयूज़	३९२
६९.	श्रीसुभाषचंद्र बोस	१८४
७०.	श्रीसोहनलाल द्विवेदी एम्० ए०, एल्-एल्० बी०	२
७१.	षट्चक्र-मूर्त्ति (सिद्धासन) ...	४०४
७२.	सतपर्णी-गुफा—वैभारगिरि पर (राजगृह)	१४५
७३.	सर अकबर हैदरी...	१९९
७४.	१. सर रहीमतुल्ला चिनोइ, २. डॉ० टी० एम्० क़ाज़ीजी, ३. हिंदुस्थान-सरकार के शिक्षा, स्वास्थ्य और भूमि-विभाग के वज़ीर कुँवर सर जगदीशप्रसाद, ४. सर पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास, ५. स्वामी भवानीदयाल संन्यासी और ६. श्रीमावजी सेठ (सामूहिक चित्र)	३७
७५.	साहित्य-शास्त्री पं० नर्मदाप्रसादजी मिश्र बी० ए०, एम्० एल्० ए०... ...	३१८
७६.	सी० एफ़्० ऐंड्रयूज़ तथा रानी लक्ष्मीबाई	३९१
७७.	स्वर्गीय आचार्य पं० रामचंद्र शुक्ल ...	९४
७८.	स्वर्गीय डॉक्टर महेशचरण सिनहा ...	३९८
७९.	स्वर्गीय श्रीपं० रमाशंकरजी शुक्ल 'हृदय'	३४६
८०.	स्वर्गीय श्रीभूमानंदजी	३९८
८१.	स्वर्गीय सर जॉर्ज ग्रियर्सन	६११
८२.	स्वर्गीय सेठ श्रीनिवासजी	३८५
८३.	स्वर्गीया श्रीमती कमला नेहरू ...	५०७
८४	स्वर्गीया श्रीमती फूलदुलारी और उनके पति श्रीरामकृष्ण त्रिपाठी	३९७
८५.	स्वर्गीया श्रीमती बच्चनकुमारी ...	९९
८६.	स्वामी कृष्णानंदजी (शेरवाला) ...	३९०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप अपनी मातृभाषा और राष्ट्र-भाषा को क्यों ऊँचा मानते हैं ?

इस प्रश्न का उत्तर देने के लिये पढ़िए

हिंदी-साहित्य

का

इतिहास

[लेखक—'मिश्रबंधु']

आपकी कमनीय कृति 'मिश्रबंधु-विनोद' में भी यद्यपि हिंदी-साहित्य का इतिहास और कवि-कीर्तन है, फिर भी उसमें कवि-वर्णन बहुत अधिकता से है। और, सिर्फ़ साहित्यिक इतिहास जानने के लिये इतने बृहद् ग्रंथ का पढ़ना सबके लिये संभव नहीं। इसलिये ऐसे संक्षिप्त ग्रंथ की बहुत आवश्यकता थी। इन्हीं बातों पर विचार करके माननीय मिश्रबंधुओं ने इस अनुपम ग्रंथ की रचना की है। यह ग्रंथ बड़ी खोज, अध्ययन, परिश्रम और अनुभव से लिखा गया है। साहित्य के भांडार में अब तक ऐसा महत्त्व-पूर्ण ग्रंथ आपने न देखा होगा। मिश्रबंधु ही सबसे प्रथम इस प्रयास में आगे बढ़े हैं।

मूल्य सजिल्द २), सादो १॥) ; पृष्ठ-संख्या ३७०

गंगा-ग्रंथागार, ३६, लाटूश रोड, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरानी पुस्तकों के नए संस्करण

दुलारे-दोहावली
(अष्टमा वृत्ति)

लेखक, सुधा-संपादक पं० दुलारेलाल भार्गव। व्रजभाषा-साहित्य की वर्तमान सर्वोत्तम कृति। इसमें महामहोपाध्याय डॉक्टर सर गंगानाथ झा एम्० ए०, डी० लिट्० की लिखी संक्षिप्त भूमिका और पं० लोकनाथ सिलाकारी की विस्तृत भूमिका भी है। मू० १), १॥)

बिहारी-रत्नाकर
[तृतीयावृत्ति]

महाकवि बिहारी की जगत्प्रसिद्ध सतसई पर हिंदी-भाष्य। भाष्यकार स्व० 'रत्नाकर'जी। मूल्य ५)

हृदय की प्यास
[तृतीयावृत्ति]

आचार्य चतुरसेन की अनुपम कृति। मित्रता के लक्षण, सौंदर्य की विषमता, आधुनिक शिक्षा से उत्पन्न सौंदर्योपासना आदि का जीता-जागता चित्र। ६ रंगीन और सादे चित्रों से सुशोभित उपन्यास। मूल्य २), सजिल्द २॥)

गोरी
[द्वितीयावृत्ति]

इस उपन्यास में श्रीरमाशंकर सकसेना ने विलायत में गए भारतीय विद्यार्थियों के चरित्र-पतन का आँखों-देखा वर्णन किया है। लंदन-रहस्य से भी अधिक मनोरंजक। मूल्य १), सजिल्द १॥)

लिली
[द्वितीयावृत्ति]

'निराला'जी की चमत्कार-पूर्ण, सुंदर, काव्य-मय श्रेष्ठ कहानियाँ। मूल्य १), सजिल्द १॥)

अक्षत
[द्वितीयावृत्ति]

आचार्य चतुरसेन शास्त्री की ८ अमर कहानियाँ। मन को उन्मत्त करके मोर की भाँति नचानेवाले भाव-पूर्ण चित्रण। मूल्य १), सजिल्द १॥)

निठल्लू की राम-कहानी
[द्वितीयावृत्ति]

श्रीपरिपूर्णानंदजी की हास्य-रस-पूर्ण लेखनी का चमत्कार। हँसते-हँसते आप लोट-पोट हो जायँगे। मूल्य ॥), सजिल्द १)

सुघड़ चमेली
[षष्टमावृत्ति]

स्वर्गीय पं० रामजीदास भार्गव की सुंदर कृति। आप अपनी लड़कियों को इसे अवश्य पढ़ाइए। सचित्र पुस्तक का मूल्य ⁻), सजिल्द =)

खिलवाड़
[षष्टमा वृत्ति]

पं० भूपनारायण दीक्षित की सरल कहानियों और अनूठी कविताओं का संग्रह। बालोपयोगी २८ चित्र। मूल्य =), सजिल्द ।)

कर्मयोग
[द्वितीयावृत्ति]

आत्मविद्या की विशेषज्ञा श्रीमती ओहण्णुहारा की 'Practical Yoga'-नामक पुस्तक का अनुवाद। अनुवादक, श्रीसंतराम बी० ए०। मू० ॥), स० १)

लबड़धोंधों
[चतुर्थावृत्ति]

हास्य-रस के अद्वितीय लेखक स्वर्गीय पं० बदरीनाथ भट्ट की अनुपम कृति। न हँसनेवाले को हँसाकर लोटन-कबूतर कर देनेवाली पुस्तक सचित्र। मूल्य ॥), सजिल्द १)

योग की कुछ विभूतियाँ
[द्वितीयावृत्ति]

योगी रामचारक-लिखित 'Fourteen lessons in Yogi Philosophy and Oriental Occultism' का हिंदी-अनुवाद। अनु०, ठा० प्रसिद्धनारायणसिंह बी० ए०। मूल्य ॥), सजिल्द १)

विश्व-साहित्य
[द्वितीयावृत्ति]

इस पुस्तक में सरस्वती-संपादक श्रीपदुमलाल-पुन्नालाल बख़्शी बी० ए० ने अंतराष्ट्रीय साहित्य के प्रत्येक अंग की सुबोध व्याख्या की है। साहित्य-सम्मेलन की उत्तमा-परीक्षा में पाठ्य-ग्रंथ। मूल्य १॥), सजिल्द २)

हिंदी
[चथुर्थावृत्ति]

स्व० पं० बदरीनाथजी भट्ट के विद्वत्ता-पूर्ण निबंधों का संग्रह। शिक्षा-विभागों द्वारा स्वीकृत पाठ्य-पुस्तक। मूल्य ॥), सजिल्द १=)

कृषि-मित्र
[द्वितीयावृत्ति]

कृषि-संबंधी सभी आवश्यक विषय इसमें सरल, सुंदर भाषा में समझाए गए हैं। प्रत्येक किसान को इसे अवश्य देखना चाहिए। लेखक, पं० गंगाप्रसाद पांडेय। मूल्य ।⁻). सजिल्द ।=)

क्यों और कैसे ?
[तृतीयावृत्ति]

भूकंप क्यों आता है, पेड़ से फल क्यों नीचे गिरता है आदि वैज्ञानिक विषयों का मनोरंजक वर्णन। बच्चे बड़ी सुगमता से समझ लेंगे। लेखक, श्रीनारायणप्रसाद अरोड़ा बी० ए०। मूल्य ।), सजिल्द ।=)

गंगा-ग्रंथागार, ३६, लाटूश रोड, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसा दुःखद प्रसंग गृहस्थी में लाने की जिम्मेदारी पुरुषों पर है !

आपकी गृहिणी का स्वास्थ्य क्या आपके ध्यान देने का विषय नहीं ? अस्वस्थ ललनाएँ घर की अशांति और चिंता का कारण बनती हैं ! दांपत्य जीवन की **विषमता** का अपराध किसका है ? पति-पत्नी का मनोमालिन्य तलाक झगड़ा विरोध का कारण बनता है !

अब भी सावधान हो जाइए गृहस्थी की रक्षा के लिये !

स्त्री-सौंदर्य और स्वास्थ्य

लेखक, श्रीयुत बुद्धिसागर वर्मा बी० ए०, एल्० टी०

इस बार
बड़े दिन का उपहार !
नए वर्ष की भेंट !!

अपनी ललनाओं के हाथों में शीघ्र-से-शीघ्र पहुँचाने का प्रयत्न अवश्य करें !

अभी-अभी छपकर तैयार हुई है !

प्रत्येक महिला को इसे पढ़ना चाहिए !

शरीर के अंगों का बनाव-शृंगार, सौंदर्य-रक्षा के नियम, व्यायाम, रोग तथा उनकी सरल चिकित्सा, देशी और विदेशी सौंदर्य बढ़ाने के साधनों की उपयोगिता सरल भाषा में वर्णित है !

सचित्र, सुपाठ्य, सुंदर, स्थायी साहित्य !

सजिल्द २॥)] [सादी २)

मिलने का पता—गंगा-ग्रंथागार, ३६, लाटूश रोड, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी के दो पठनीय गद्य-काव्य

१. शारदीया

लेखिका, कुमारी दिनेशनंदिनी चोरड्या। हिंदी में गद्य-गीतों की जो शैली चली है, वह नई होते हुए भी भावमय है। कुमारीजी गद्य-गीतों के लिखने में हिंदी-संसार में काफ़ी प्रतिष्ठा पा चुकी हैं। आपके गद्य-गीत बहुत ही सुंदर, सरल और सरस होते हैं। मूल्य सादी ॥), सजिल्द १)

२. एक दिन

लेखक, बाबू भगवतीचरण वर्मा। आप हिंदी के प्रसिद्ध और प्रतिभावान् कवि हैं। आपकी उत्कृष्ट रचनाओं से हिंदी-प्रेमी भली भाँति परिचित हैं। 'एक दिन' भी आपके ही गद्य-पद्यमय काव्य का संग्रह है। इसमें जीवन के सच्चे और गहनतम विचार सरल, सुबोध और सरस ढंग से वर्णन किए गए हैं। पुस्तक सांस्कृतिक शिक्षाओं से ओत-प्रोत है। मूल्य सादी ॥), सजिल्द १)

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिस्टीरिया अर्थात् मूर्च्छा-नाशक

चेतना

हिस्टीरिया-रोग की शर्तिया ओषधि

आजकल आहार-विहार के नियम ठीक न रखने से स्त्रियों में हिस्टीरिया-रोग की भी अधिकता देखी जाती है। अभी तक गाँव के आदमी इस रोग को भूत का दौरा मानते हैं, और दौरा होते ही झारा-फूँकी होने लगती है। इसी कारण गाँवों में इलाज नहीं है, और शहरों में दवा का ज़्यादा प्रचार है। मुझे इस रोग के पैदा होने का असली कारण मालूम होते ही मैंने वैद्यक-किताबों से खोजकर इस रोग के लिये दवा तैयार की है, और सैकड़ों औरतों का रोग दूर कर भूत-बाधा के भ्रम-जाल को काट डाला है। हिस्टीरिया-रोग भी प्रायः पति के दोष के कारण देखा गया है, जिसके पति नहीं है, उस हिस्टीरिया-रोगवाली को अन्य कारणों से भी रोग उत्पन्न होता है, इसलिये रोगी का पूरा हाल और जिसके पति है, उसके पति का भी पूरा हाल अवश्य लिखना चाहिए।

हिस्टीरिया-रोग के लक्षण

हिस्टीरिया-रोग गर्भाशय की ख़राबी, रक्त प्रदर, प्रदर की बीमारी या ख़ून ज़्यादा ख़र्च होने से, मासिक धर्म ठीक न होने से, पति के प्रेम न करने या कड़ा व्यवहार करने, प्रिय-वियोग या विधवा होने पर अधिक अवस्था तक शादी न होने, किसी कारण से पुरुष-संग न होने से युवती नाज़ुकबदनी, शौक़ीनी मिज़ाज, बेकारी में ख़राब उपन्यास पढ़नेवाली या मनचली औरतों के उठती जवानी से ४० वर्ष तक की कमज़ोर स्त्रियों के रंज, शोक करने में इस कष्टदायक रोग का आक्रमण होता है। दौरे के समय अधिक हँसना, अकारण रोना, चीख़ना, शरीर में दर्द, पेट में गोला-सा उठकर गले की तरफ़ जाने में श्वाँस का रुकना, पेट में गड़गड़ाहट, हाथ, पैर में ऐंठन, मुट्ठी का मुड़ जाना तथा शरीर तख़्ता-सा अकड़ जाना, अफ़रा, आहें भरना, कुत्ते की तरह भौंकना आदि लक्षण होकर बेहोशी हो जाती है।

चेतना—से रोगी स्त्री को शीघ्र ही फ़ायदा होता है, इससे और रोग भी दूर होते हैं। दिल की धड़कन, चक्कर आना, हौलदिली, जी का मचलाना, अम्ल, पित्त, उलटी होना इत्यादि नया-पुराना हिस्टीरिया-रोग इस ओषधि से शर्तिया फ़ायदा होता है। एक डिब्बा का मूल्य २॥=) सिर्फ़। ३ डिब्बा का ७), ६ डिब्बा का १३), डाक-महसूल अलग होगा।

दवा मँगाने का पता—

मैनेजर आरोग्य-मंदिर

इटावा, यू० पी०, नं० २

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभी तक ऐसा कोई साधन नहीं था, जिसके द्वारा हम अपने साहित्यिकों के परिचय प्राप्त कर सकें

— पर अब—

हिंदी-साहित्य के धुरंधर विद्वानों और लेखकों का पूर्ण परिचय जानने के लिये

मासिक पत्रिका **साधना** का **परिचयांक** पढ़िए

जो पहली एप्रिल को ही प्रकाशित हो चुका है, पृष्ठ-संख्या २५०

साधना का वार्षिक मूल्य २) केवल परिचयांक का १)

परिचयांक की २०० प्रतियाँ साधना के वार्षिक ग्राहक बननेवालों को मुफ्त दी जायँगी, ग्राहक बनने में शीघ्रता करें।

व्यवस्थापक—'साधना'-कार्यालय, बाँके-विलास, आगरा

सुविधा ! सुविधा !! सुविधा !!!

विद्यार्थी परेशान थे

जब से हिंदी-साहित्य-सम्मेलन और गवर्नमेंट की ऐडवांस, विशेष-योग्यता की परीक्षाएँ प्रारंभ हुई हैं, तब से इनके कोर्स की सब पुस्तकें न मिलने के कारण विद्यार्थी बड़े परेशान रहते थे, और पुस्तकों की खोज में इधर-उधर भटकते फिरते थे। सौभाग्य की बात है कि आगरे के सुप्रसिद्ध पुस्तक-विक्रेता गयाप्रसाद ऐंड संस ने इस कमी को पूरा कर दिया। हिंदी-साहित्य-सम्मेलन की प्रथमा, मध्यमा, उत्तमा, साहित्यिक, नाटक, उपन्यास, जीवन-चरित्र, इतिहास, किसी भी प्रकार की पुस्तक चाहिए, किफ़ायत के साथ मिलती है।

इसके अतिरिक्त

प्राइमरी स्कूल, हाईस्कूल, कॉलेजों की भी हिंदी, अँगरेज़ी, उर्दू और संस्कृत की समस्त पुस्तकें यहाँ अत्यंत किफ़ायत से मिलती हैं, एक बार अवश्य पधारें, बुक्सेलरों को विशेष सुविधा।

पता—गयाप्रसाद ऐंड संस, बुक्सेलर्स, शफ़ाखाना-रोड, आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने प्यारे बच्चों को साहसी और वीर बनाने के लिये
'साहसी बालक' अवश्य पढ़ाएँ।

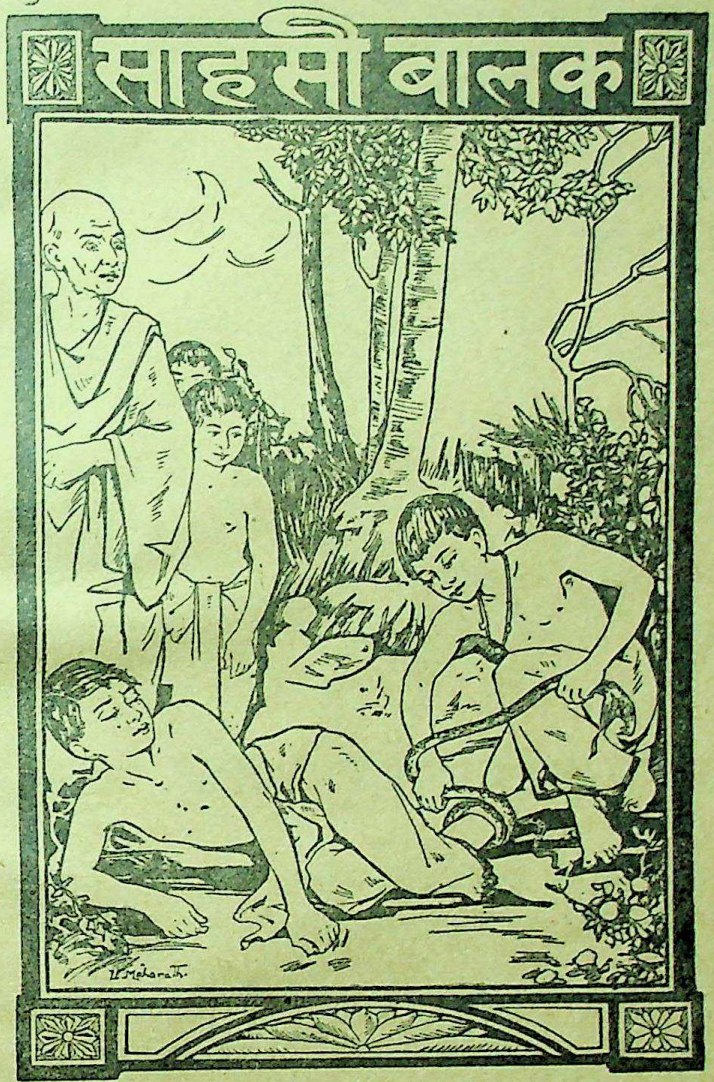

साहसी बालक (द्वितीयावृत्ति)

यह कहानी लिखकर लेखक ने बाल-साहित्य के एक मुख्य अंग की पूर्ति की है। बालक ही आगे चलकर मनुष्य और देश के कर्णधार होते हैं, इसलिये अपने बालकों को साहसी बनाइए। साहस के बल पर ही कल्याण हो सकता है। अपने बच्चों को मनोरंजन देने के साथ ही साहसी बनाइए, जिसमें वे जीवन की कठिनाइयों का सामना करने के लिये तैयार रहें। मूल्य सादी ।), जिल्दवार ।=)

मिलने का पता—मैनेजर बाल-विनोद-वाटिका, ३६, लाटूश रोड, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मशहूर पान-मसाला और सुर्ती जर्दा

अपने अनुपन स्वाद और मनोहर सुगंध के लिये प्रायः
सभी पान खानेवालों में सर्वोच्च स्थान प्राप्त कर लिया है।

आप भी अपने व्यवहार के लिये हमारे सैकड़ों पेटेंट चीज़ों
में से किसी एक को चुन लीजिए, और पान खाने का सच्चा
आनंद लीजिए। अपने पड़ोस के पान बेचनेवाले से
हमारा नाम लेकर चाहे जो पान-मसाला और ज़र्दा माँगिए।

या

हमसे सूचीपत्र मुफ़्त मँगाइए—

निवेदक—**नंदूराम खेदनलाल**

पो० बा० नं० १० चेतगंज, बनारस

पुस्तकालय 112583 गांधी विश्वविद्यालय हरिद्वार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फ़ैंसी !
और नए डिज़ाइन की निहायत
नफ़ीस चूड़ियाँ, कंगन, बिजलियाँ
आदि
के लिये इधर-उधर भटकने की
आपको ज़रूरत नहीं।

आर्य-चूड़ी-भंडार

नं० १७, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ का
(महावीरजी के मंदिर के सामने)
पता नोट कर लीजिए।

ऑर्डर भेजिए या स्वयं पधारिए !
हमारी सेवाओं से आप प्रसन्न होंगे !!
मा-बहनों को चूड़ियाँ पहनाने का ख़ास
इंतज़ाम है !!!

विना मूल्य

महाबली श्वेत कुष्ठ नाशक

जो अपना गुण १५ रोज़ में दिखाएगी।

डाक-खर्च वी० पी० ।=) छ आने

[सर्वप्रकार के कुष्ठ (कोढ़) की दवा मुफ़्त]

(विशेष पथ्य की आवश्यकता)

तुलसीदेवी—स्त्री पं० कृपाराम

नं० ८, भैरवदत्त-लेन, सलकिया (हवड़ा)

कारख़ाना

असग़रअली मुहम्मदअली

ताजिर इत्र, लखनऊ

ने

माल की उम्दगी, सचाई

और सद्व्यवहार के साथ

१०० वर्ष के अनुभव का रहस्य

प्राप्त किया है।

स्थापित, सन् १८३९ फ़ोन-नं० १३९

हर प्रकार के

सुगंधित इत्र, रोग़न और ज़रदा

प्राप्त करने के लिये

मुहम्मदयूसुफ़ एंड संस

परफ़्यूमर्स, यूसुफ़-बिल्डिंग

नादानमहल-रोड, लखनऊ

की सेवाएँ स्वीकार कीजिए।

इत्र ज़ाफ़रानी हिना

जो दर्शनीय और सुगंधित होने

के कारण लोक-प्रिय हो गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

112583
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Registered No. A—473

अहमद हुसेन दिलदार हुसेन

ताजिर तम्बाकू खुर्दनी

लखनऊ

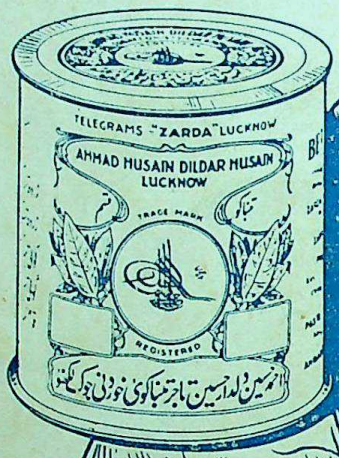

हिन्दोस्तान में आलादरजे का खुशबूदार उम्दा नफीस

खाने का तम्बाकू

ज़र्दा तम्बाकू मुश्की फी सेर	.... ३२) १६) ८) ४)
ज़र्दा तम्बाकू ज़ाफ़रानी फी सेर	.... २)
गोली तम्बाकू मुश्की [सोने के वर्क चढ़ी हुई] फी तोला	१)
गोली तम्बाकू मुश्की [चांदी के वर्क चढ़ी हुई] फी तोला	.... ॥=) ॥) ।=)
गोली तम्बाकू ज़ाफ़रानी बिला वर्क फी तोला	.... ।)
केवाम तम्बाकू मुश्की फी तोला	१) ॥) ।=)
केवाम तम्बाकू ज़ाफ़रानी फी तोला	.... ।) =)

फ़ेहरिस्त तम्बाकू व ईतर कारख़ाने से मंगाकर दखिये

गंगा-फ्राइनआर्ट-प्रेस, लखनऊ में श्रीदुलारेलाल (सोल प्रोप्राइटर) द्वारा मुद्रित और प्रकाशित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri